खोज में उपलब्ध

हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों

का

त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण

[सन् १९२६-१९२८ ई०]

संपादक

स्वर्गीय रा० ब० डा० हीरालाल, डी० लिट्, एम० आर० ए० एस०

(श्री बटेकृष्ण एम० ए० द्वारा अंगरेजी से हिंदी में रूपांतरित)



उत्तर प्रदेशीय शासन के संरक्षण में काशी नागरीप्रचारिणी सभा
द्वारा संपादित और प्रकाशित

काशी

सं० २०१० वि०

सूची

वक्तव्य

प्रस्तुत खोज-विवरण को हिंदी में रूपांतरित करके सं० २००५ वि० (सन् १९४९ ई०) में ही उत्तरप्रदेश के राज्यशासन के पास प्रकाशनार्थ भेज दिया गया था। परंतु राजकीय मुद्रणालय के अत्यधिक कार्यव्यस्त रहने के कारण इसकी छपाई न हो सकी। इस प्रकार यह अप्रकाशित ही रह गया। इस विवरण के अतिरिक्त १९२९ से १९४० ई० तक के और भी सात त्रैवार्षिक बृहत्काय विवरण अप्रकाशित पड़े हुए हैं और आठवाँ तैयार हो रहा है। कहना नहीं होगा कि इनके अप्रकाशित रहने से हिंदी साहित्य के अनुसंधान कार्य में बड़ी बाधा पड़ रही थी। अनुसंधायकों की सुविधा के लिये आवश्यकता पड़ने पर अप्रकाशित विवरण भी उन्हें देखने को दिए जाते हैं। परंतु इसका एक दुष्परिणाम यह होता है कि विवरणों के जीर्ण पन्ने बार बार खोलने-बाँधने से नष्ट हो जाते हैं। नष्ट पन्नों के स्थान पर नये पन्ने लिखकर जोड़ने पड़ते हैं। परंतु कई हाथों द्वारा प्रतिलिपि होने में मूल पन्नों के पाठ के कुछ-न-कुछ बदल जाने की आशंका बनी रहती है। इन सब बातों को देखते हुए इनका अप्रकाशित रहने देना उचित नहीं था। सभा इन्हें छपाने के लिये बहुत उत्सुक रही। सं० २००७ (सन् १९५१) में सभा ने खोज विभाग के तत्कालीन निरीक्षक डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के सुझाव के अनुसार उत्तर प्रदेशीय राज्य शासन के सम्मुख एक योजना रखी। इसमें राजकीय मुद्रणालय की व्यस्तता देखते हुए विवरणों को अन्यत्र से छपा लेने का सुझाव था। उस समय इन सात विवरणों को कुछ संक्षिप्त करके छपाने का व्यय ९०७००) कूता गया था। राज्यशासन ने उदारतापूर्वक इस प्रस्ताव पर ध्यान दिया और संपूर्ण व्यय तो नहीं परंतु १७ दिसंबर १९५२ के आज्ञा पत्र द्वारा १००००) का अनुदान स्वीकार किया। इस अनुदान को दृष्टि में रखते हुए यथासंभव संक्षेप करके विवरणों को प्रकाशित कर देने का निश्चय किया गया। सभा ने इसके पूर्व भी विवरणों को कुछ संक्षिप्त करके छापने का निश्चय किया था। और मिति २० श्रावण २०१० वि० (तदनुसार ५ अगस्त १९५३ ई०) की खोज विभाग की उपसमिति ने निश्चय किया कि लगभग एक एक हजार पृष्ठों की तीन जिल्दों में जितने भी विवरण छप सकें प्रस्तुत किए जाँय। इसी निश्चय के अनुसार ये विवरण छापे जा रहे हैं। प्रथम जिल्द पाठकों के सामने है। इसमें सन् १९२६–२८ का त्रैवार्षिक विवरण है जिसका मूल रूप अब तक के प्रकाशित सभी विवरणों से अधिक विशाल था। संक्षेपीकरण के कारण ही यह एक जिल्द में प्रकाशित किया जा सका है। हमें आशा है कि शेष दो जिल्दों में आगे के कम से कम दो और त्रैवार्षिक विवरण अवश्य छाप लिए जायँगे। संक्षेप करने में इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि विवरणों का मूल उद्देश्य नष्ट न होने पाए। उदाहरणों की मात्रा कम अवश्य कर दी गई है, पर कवि-परिचय ऐतिहासिक महत्व की बातें, ग्रंथ का काल निर्णय करने वाला अंश तथा अन्य आवश्यक बातें ज्यों-की-त्यों

रहने दी गई हैं। जिन निर्देशों में केवल ग्रंथ का परिचय मात्र दिया गया है उनकी पुष्पिकाओं में यदि कोई महत्त्व की बात दिखी है, या उसी के समान ग्रंथों की पुष्पिका से भिन्न बात दिखी है तो उसे भी छाप दिया गया है। प्रस्तुत निरीक्षक के हाथ में आने के पूर्व प्रस्तुत त्रैवार्षिक विवरण एकाधिक संपादकों के हाथों से गुजर चुका था। इसका संक्षेपीकरण भी कर लिया गया था। फिर भी प्रस्तुत निरीक्षक ने उन्हें फिर से देख लिया है और प्रयत्न किया है कि अनुसंधायकों की दृष्टि से जो बातें महत्त्वपूर्ण हैं वे छूटने न पाएँ। इसीलिये कई जगह काटे अंशों को भी छापने का आदेश देना पड़ा है। विवरण अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार सजाए गए हैं। पं० विश्वनाथ प्रसाद जी मिश्र द्वारा लिखित 'पूर्व पीठिका' में उनके परिवर्तित न करने का कारण बताया गया है। हिंदी पाठकों की सुविधा के लिये नागरी अक्षरों के क्रम से ग्रंथकारों और ग्रंथों की अनुक्रमणिकाएँ दे दी गई हैं। उन्हें देखने से पता चल जाएगा कि किस लेखक या ग्रंथ का विवरण कहाँ दिया गया है।

दीर्घ व्यवधान के बाद ये विवरण प्रकाशित हो रहे हैं। इसके लिये हम उत्तर-प्रदेश राज्यशासन के आभारी हैं जिसकी सहायता से यह संभव हो सका है और जिसको इस कार्य के संरक्षण का श्रेय प्राप्त है। हमें पूर्ण आशा है कि राज्यशासन की सहायता से अप्रकाशित सभी विवरण अब शीघ्र से शीघ्र छप जाएँगे।

वक्तव्य को समाप्त करने से पहले मैं सभा के प्रधान मंत्री डा० राजबली पांडेय के प्रति आभार प्रकट कर देना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने इस कार्य में पूर्ण रुचि लेते हुए इस बृहत्काय विवरण को नागरी मुद्रणालय में छपवाने का शीघ्र प्रबंध कर दिया। मुद्रणालय के मैनेजर बाबू महताबराय जी का मैं विशेष अनुगृहीत हूँ जिन्होंने प्रस्तुत विवरण को समय पर छापने के अतिरिक्त प्रूफ संशोधन के कार्य में बड़ी सहायता पहुँचाई है। खोज विभाग के अन्वेषक श्री दौलतराम जुयाल के परिश्रम और लगन से ही यह कार्य शीघ्र संपन्न हो सका है। वे और उनके सहायक श्री रघुनाथ शास्त्री भी हमारे विशेष धन्यवाद के भाजन हैं।

काशी,
पौष शुक्ल ५, सं० २०१० वि०

हजारीप्रसाद द्विवेदी
निरीक्षक,
खोज विभाग

पूर्व पीठिका

सं० २००० में काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने अपना अर्धशती उत्सव मनाया और उस अवसर पर यह निश्चय किया कि खोज-विभाग की विवरणिकाएँ हिंदी भाषा और नागरी लिपि में ही प्रस्तुत की जायँ। इसके पूर्व युक्त प्रांतीय सरकार को प्रकाशित करने के लिए जितनी विवरणिकाएँ दी गई थीं उनमें ग्रंथों के उद्धरणों और उनके साथ दिए उन ग्रंथों के विषय परिचय के अतिरिक्त प्रायः शेष सब अँगरेजी भाषा और रोमन लिपि में ही रहते थे। सरकार ने सन् १९२५ तक की विवरणिकाएँ प्रकाशित कर दी हैं। इसके अनंतर सभा द्वारा लिखा पढ़ी होने पर सरकार ने आगे की विवरणिकाओं के छापने की भी व्यवस्था की और उसके लिए सभा से सन् १९२६ से १९२८ तक की त्रिवर्षी की विवरणिका छापने के लिए माँगी। यह विवरणिका भूतपूर्व निरीक्षक श्री हीरालाल जी ने खोज-विभाग के साहित्यान्वेषकों की सहायता और प्रस्तुत सामग्री के आधार पर अँगरेजी में ही संपादित की थी। सभा के निश्चय के अनुसार इस और इसके आगे की विवरणिकाओं का पूर्णतया हिंदी भाषा और नागरी लिपि में होना आवश्यक था। पर पूर्णतया हिंदी भाषा में करने में सब से बड़ी बात यह उत्पन्न हुई कि सभा सन् १९०० से १९४४ तक के खोज विवरणों का जो 'संक्षिप्त विवरण' प्रकाशित कर रही है और जिसका कार्य सभा का पूर्वोक्त निश्चय होने के पूर्व ही समाप्त हो चुका था उसमें खोज के प्रस्तुत विवरणों और विवरणिकाओं का ही संकेत दिया हुआ है। अब यदि आगे की विवरणिकाओं में परिशिष्ट २ में दिए गये उद्धरणों के संकेत द्वारा हिंदी में अकारादि क्रम से कर दिए जाते तो संक्षिप्त विवरण का सारा परिश्रम निष्फल हो जाता या उसे नए सिरे से संपादित करना पड़ता। उस संक्षिप्त विवरण का कुछ अंश मुद्रणालय में छप भी गया है। ऐसी स्थिति में यही ठीक समझा गया कि रोमन लिपि के अनुसार ग्रंथों का जो अनुक्रम बनाया गया है वह ज्यों का त्यों रखा जाय और शेष अंश हिंदी भाषा में कर दिया जाय तथा सर्वत्र नागरी लिपि का नियमपूर्वक व्यवहार किया जाय। श्री हीरालाल जी द्वारा प्रस्तुत विवरणिका को हिंदी भाषा में रूपांतरित करने का कार्य सभा के अनुशीलन विभाग के अनुसंधायक और श्री पशुपति सिंहानिया छात्रवृत्ति भोक्ता श्री वटकृष्ण बी० ए० (आनर्स) एम० ए० को सौंपा गया और उनकी सहायता के लिए खोज-विभाग के वर्तमान साहित्यान्वेषक श्री दौलतराम जुयाल तथा श्री कृष्णकुमार वाजपेयी को आदेश दिया गया। श्री वटकृष्ण जी ने अत्यंत सावधानी और धैर्यपूर्वक यह कार्य संपन्न किया और कई स्थलों पर विवरणिका में भूलें भी निर्दिष्ट कीं। जब विवरणिका का छपना आरंभ किया तो अद्यतन प्राप्त सामग्री के आधार पर उसमें अनेक परिवर्तनों की आवश्यकता प्रतीत हुई। इन त्रुटियों को परिमार्जित करने और विवरणिका को समयानुकूल कर देने में दो बाधाएँ थीं। एक तो संक्षिप्त विवरण में बहुत उलट फेर करना पड़ता, दूसरे ऐसा करने में पर्याप्त समय भी लगने की संभावना है। विवरणिकाओं का बहुत

काल तक अमुद्रित पड़ा रहने देना अनुसधान की दृष्टि से हानिकर और अनुचित है। हिंदी के प्राचीन काव्यों के प्रकाशन और विवेचन तथा अनुशीलन और अनुसधान की बढ़ती हुई अभिरुचि में इन विवरणिकाओं का अति शीघ्र प्रकाशित हो जाना आवश्यक है। अत' संपादक के निश्चयों पर कोई टिप्पणी या उनके कथनों का सस्कार सुधार कहीं नहीं किया गया है। आगे की विवरणिकाएँ भी इसी क्रम से और इसी रूप में प्रस्तुत हो रही हैं। यदि सरकार ने इन्हें शीघ्र प्रकाशित कर दिया तो प्राचीन हिंदी-साहित्य के शोध के लिए बहुत कुछ सामग्री अनुसधायकों और अनुशीलकों के समक्ष अविलब प्रस्तुत हो जायगी। सक्षिप्त विवरण भी यथा शक्य शीघ्र प्रकाशित कर दिया जायगा। उसमें यत्र तत्र अनेक प्रकार की त्रुटियों का परिमार्जन करने का भी प्रयास किया गया है। मेरे विचार से अब तक की खोज स्वत' अनुसधान का एक विषय है। यदि कुछ परिश्रमी अनुसधायक इसमें श्रम करें तो हिंदी-साहित्य के इतिहासो के लिए नूतन सामग्री तो बहुत कुछ मिलेगी ही साथ ही खोज की विवरणिकाओं को भी टिप्पणियो और निष्कर्षों के द्वारा बहुत कुछ प्रामाणिक कर दिया जा सकता है। मेरा विचार है कि कुछ प्रमुख ग्रथकारों पर खोज की सामग्री के आधार पर कुछ पुस्तकें पृथक् रूप में क्रमश प्रकाशित की जायँ। इनमे अनुसधान करने वालों को विशेष लाभ तो होगा ही आलोचना करने वालों और ग्रथ सपादित करने वालो को भी सरलता होगी। अनायास उन्हे बहुत सी सामग्री घर बैठे मिल जायगी। इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नही पड़ेगी।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा
नाग पचमी, स० २००५ वि०

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र,
प्रधान मंत्री
निरीक्षक खोज-विभाग
काशी नागरीप्रचारिणी सभा

आमुख

जब मैं अपने तिरसठवें वर्ष के समीप पहुँचा, तब अपनी वृद्धावस्था को विचारते हुए मैंने यही निश्चय किया था कि मेरी प्रस्तुत की हुई चतुर्थ त्रैवार्षिक विवरणिका ही अंतिम होगी। अतः मैंने काशी नागरीप्रचारिणी सभा को लिख दिया कि सन् १९२९ ई० में कार्यकाल समाप्त होने पर मुझे अवैतनिक निरीक्षक के पद से मुक्त कर दिया जाय। किंतु सभा ने यह इच्छा प्रकट की कि अपना कार्य-भार सौंपने के पूर्व अपने भावी उत्तराधिकारी को इस कार्य में भली भाँति शिक्षित कर दें। अतएव मुझे उन रचनाकारों पर टिप्पणी लिखने का कार्य सौंपा गया है जिनके हस्तलेख आगरा स्थित सेंट जान्स कालेज में हिंदी के अध्यापक बाबू हरिहरनाथ टंडन को मिले हैं। आरंभ में उन्होंने यह कार्य बड़े उत्साह से उठाया। वे समझते थे कि इसके लिए दो मास पर्याप्त हैं। किंतु जब वे कार्य करने बैठे तब इस अवधि में वे स्वयं ही इसे पूरा न कर सके। अंततः दो वर्ष के पश्चात् समस्त कागज पत्र मेरे पास भेज दिए गए। उनके साथ बना हुआ ढाँचा भी मेरे पास आया जिसका ऐसा विस्तृत संशोधन अपेक्षित था जिससे उसका स्वरूप ही बदल जाता जिसमें उसके निर्माता का कोई लाभ न था। ऐसी स्थिति में मैंने यही निर्णय किया कि भविष्य में इस प्रकार के क्लेशकारक एवं कष्टकारक कार्यों से दूर रहना ही अच्छा है। ऐसा करने से विवरणिका के उपस्थित करने में जो विलंब हुआ उसकी क्षतिपूर्ति तो नहीं हुई, किंतु इससे कोई असुविधा भी नहीं हुई। क्योंकि विगत विवरणिका अब तक मुद्रणालय में ही पड़ी हुई है और उसके प्रकाशित होने में अभी विलंब प्रतीत हो रहा है। फिर भी मुझे खेद है कि यह देर से उपस्थित की जा रही है।

कटनी
१-१०-३१

हीरालाल

हिंदी हस्तलेखों की खोज की तेरहवीं विवरणिका

(सन् १९२६, १९२७ और १९२८ ई० की)

१ कार्य विवरण—यह सन् १९२६-२८ ई० की त्रिवर्षी में हुए कार्य की विवरणिका है। इस कालकाल में अवैतनिक निरीक्षक मैं था और मेरे निरीक्षण में तीन पर्यटनकारी साहित्यान्वेषक कार्य करते थे। इनमें से दो तो स्वास्थ्य से विधिवत् कार्य करते रहे, किंतु तीसरे व्यक्ति के अस्थिर होने के कारण उन्हें कई बार कई कारणों से अलग होना भी पड़ा। वस्तुतः उनका स्थान लगभग संपूर्ण वर्ष तक रिक्त ही रहा। फिर भी यह प्रसन्नता की बात थी कि साहित्यरत्न पंडित बाबूराम बित्थरिया अपनी उस कठिन बीमारी से स्वस्थ होकर अपने पद पर पुनः आ गए जिसके कारण खोज कार्य में हुई बाधा का उल्लेख गत विवरणिका में करना पड़ा था। इस त्रिवर्षी में कुल १२०८ हस्तलेख उपलब्ध हुए हैं जो गत त्रिवर्षी से संख्या में १४८ अधिक हैं। गत त्रिवर्षी में कुल ११६० हस्तलेख मिले थे जो संख्या में तब तक की अर्थात् पचीस वर्षों के बीच की त्रिवर्षियों में सबसे अधिक थे। यह संख्या और भी बड़ी होती यदि संयुक्त प्रांत के सभी हिंदी अध्यापकों ने हमारा साथ वैसे ही सहयोग किया होता जैसे उनके सहधर्मी तिलोई मिडिल स्कूल के एक अध्यापक ने बहुत से हिंदी हस्तलेखों का विवरण स्वयं भेज कर किया और इसके लिए उन्हें यथोचित पुरस्कार भी दिया गया। यह देखकर कि अब तक ऐसे एक उपप्रांत में ही खोज कार्य पूरा करने में उन्तीस वर्ष लग गए, इस कार्य में सहयोग करने की विशेष सूचना सभी अध्यापकों को उनके अधिकारियों के जरिये दी गई। किंतु कहीं से कोई उत्तर न मिला। इस त्रिवर्षी में ८०७ ग्रंथों के हस्तलेखों का विवरण लिया गया है जिनमें से १६० ग्रंथ अज्ञात रचयिताओं के हैं। इस प्रकार शेष ७४७ ग्रंथ ५०८ रचयिताओं की कृतियाँ हैं जिन सबका विवरण प्रथम परिशिष्ट में पृथक् पृथक् दिया गया है। इनमें १ रचनाकार बारहवीं, ४ पंद्रहवीं, ११ सोलहवीं, ५९ सत्रहवीं, ९५ अठारहवीं और १९८ उन्नीसवीं शती के हैं। १३९ रचनाकारों का समय अज्ञात है।

२ हस्तलेखों का समय—निर्माण काल के अनुसार हस्तलेखों का विभाजन इस प्रकार किया गया है—

शतियाँ	बारहवीं	तेरहवीं	चौदहवीं	पंद्रहवीं	सोलहवीं	सत्रहवीं	अठारहवीं	उन्नीसवीं	अज्ञात	जोड़
हस्तलेख	२	–	–	९	३९	२०१	२०९	४२०	३९७	१२०८

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सबसे अधिक हस्तलेख उन्नीसवीं शती के हैं। यदि सत्रहवीं और अठारहवीं शतियों की संख्याएँ जोड़ दें तो जोड़ इससे विशेष अधिक नहीं होगा, क्योंकि प्रत्येक में दो दो सौ से कुछ ही अधिक हस्तलेख हैं। सोलहवीं शती में कुल ३६ ही और पंद्रहवीं में तो उसके चौथाई हस्तलेख ही मिले हैं। तेरहवीं और चौदहवीं शतियों का तो एक भी हस्तलेख नहीं है। प्राचीनतम हस्तलेख बारहवीं शती के हैं जो केवल दो ही हैं।

चतुर्थ परिशिष्ट में महत्वपूर्ण हस्तलेखों के समय की तालिका दी हुई है। यह तालिका सन् १९२०-२२ की त्रैवार्षिक विवरणिका (देखिए पृष्ठ ५ से १६) से अधिक उपयुक्त है, क्योंकि एक तो उसमें दी हुई संख्याओं में छापे की अनेक अशुद्धियां हो गई हैं और दूसरे उसके निवारणार्थ कोई शुद्धिपत्र भी उसमें नहीं दिया गया है। यह तालिका हिंदी के विद्वानों और ग्रंथ प्रकाशकों की सहायता के उद्देश्य से प्रस्तुत की गई है जिससे उन्हें सक्षेप में हस्तलेखों की जानकारी तो हो ही साथ ही उन्हें प्राप्त करने में भी सुविधा हो। यह लिपिकारों द्वारा हुई गलतियों से बचकर शुद्ध पाठ प्राप्त करने में विशेष सहायक होगी कम से कम मुझे तो विभिन्न पाठों के उपलब्ध होने से सन्देहास्पद स्थानोंपर समय-निर्णय में इससे विशेष सहायता मिली ही है। जैसे कवि तरग की एक प्रति में समय दिया है--

गये जो विक्रम वीर विताय। सत्रह सै अरु आठि गिनाय।

—(देखिए द्वितीय परिशिष्ट सख्या ४४० ए० और बी०)

दूसरी प्रति में 'आठि' की जगह 'साठि' पाठ है। गणना से मैंने 'साठि' पाठ ठीक पाया और 'आठि' गलत (विस्तृत विवरण के लिए देखिए प्रथम परिशिष्ट सख्या ४४०)। उसी हस्तलेख में एक और भयंकर भूल थी। 'सत्रह सै संवत समय और साठ निरधार' के स्थान पर 'एकादश सवत् समय और साठ निरधार' लिखा हुआ है (इसका भी विवेचन वहीं किया जा चुका है)।

२ हस्तलेखों के विषय—हस्तलेखों के विषय का विवरण निम्नलिखित है—

धर्म	३५८ हस्तलेख
दर्शन	११४ ,,
पिंगल	२१ ,,
अलंकार	५० ,,
शृंगार	१४१ ,,
रागरागिनी	५१ ,,
नाटक	२ ,,
जीवन चरित	२५ ,,
उपदेश	४३ ,,
राजनीतिक	१२ ,
कोश	१६ ,,

ज्योतिष	१२४ हस्तलेख
सामुद्रिक	९ ,,
गणित व विज्ञान	६ ,
वैद्यक	७४ ,,
शालि-होत्र	११ ,,
कोक	११ ,
इतिहास	६० ,
कथा कहानी	४४ ,,
विविध	८० ,
योग	१२०८ हस्तलेख

जैसा कि स्वाभाविक ही है धार्मिक ग्रंथ अन्य विषयों के ग्रंथों से कहीं अधिक हैं। यहाँ यह दुहराने की आवश्यकता नहीं कि भाषा कवियों का झुकाव धर्म की ओर क्यों अधिक था। विगत विवरणिकाओं में इसके कारणों का विचार किया जा चुका है। धर्म के भीतर सांप्रदायिक साहित्य की भी गणना कर ली गई है जिसके अंतर्गत सतनामी, कबीरपंथी, दादूपंथी, धामी और राधास्वामी संप्रदाय भी परिगणित हैं। सतनामी संप्रदाय के बहुत से ग्रंथ इस खोज में भी मिले हैं जिनमें दोहावली नामक ग्रंथ नया है। इस संप्रदाय के प्रवर्तक बाराबंकी जिले में कोटवा के श्री जगजीवनदास थे। उन्होंने 'सत्य नाम' की उपासना का उपदेश किया है। इसे उन्होंने सर्व सृष्टिकारक ईश्वर का वास्तविक नाम बताया है, जो माया से परे है और जो अनादि तथा अनंत है। उन्होंने मांस, मसूर (इसका लाल वर्ण रक्त सूचक माना गया है) मद्य और मादक द्रव्यों को ग्रहण करने का निषेध किया है। श्री जगजीवनदास ने स्वतः तो अनेक ग्रंथ लिखे ही हैं, उनके शिष्यों ने भी बहुत सा साहित्य प्रस्तुत किया है जिससे ईसा की सत्रहवीं सती के अंत में इस संप्रदाय की स्थापना के बाद इसका प्रचुर साहित्य निर्मित हुआ। इस संप्रदाय के विषय में यह बात उल्लेखनीय है कि इस प्रधान स्थान में उतने अधिक व्यक्ति दीक्षित नहीं हो सके जितने अधिक इस संप्रदाय के छत्तीसगढ़ शाखा में हुए जो मध्य प्रांत में अवस्थित है। वहाँ लाखों चमारों ने जो निपट निरक्षर तथा अनेकानेक अंध-विश्वासों से ओत प्रोत हैं सदियों से मूर्ति एवं भूत पूजा त्याग दी है और मांस-मदिरा तथा रक्तवर्ण की वस्तुएँ जैसे मसूर मद्य लाल मिर्चा आदि भी नहीं ग्रहण करते। उनमें इसका प्रचार एक मजदूर की गुना देशी दशा जिसने कभी कोई उपदेश नहीं किया थे केवल उसके अनुकरण पर ही सत्यनाम की अमूर्त भावना की उपासना करने लगे हैं। सन् १८२० से जब से उसने सत्यनाम की उपासना आरंभ की थी अब तक उस संप्रदाय में प्रायः ७ लाख व्यक्ति दीक्षित हो चुके हैं। आश्चर्य तो यह है कि उसके मत संबंधी और गाँव वाले ही उसका उपहास करते हैं। एक बार रायपुर जिले के उन्हीं के गाँव 'गिरोद' में उसके एक बाबा से मेरी भेंट हुई। उसने पाठक मनिया का उल्लेख बहुत ही अपमानजनक ढंग से किया। यह तब की बात है जब लाखों व्यक्ति उसे वास्तविक ज्ञानी समझकर पासी

दास के नाम से उसको पूजते थे। विगत विवरणिकाओं में दादूपंथी और कबीरपंथी धामी संप्र- के विषय में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। केवल इसी खोज में राधा-सोआमी (राधा-स्वामी नहीं) सम्प्रदाय का एक ग्रंथ मिला है। यह सम्प्रदाय अभी नया उभड़ा है और हिंदी में अभी इसका अधिक साहित्य निर्मित नहीं हुआ है। दार्शनिक साहित्य में वेदांत प्रमुख है और एतद्विषयक जितने हस्तलेखों का ऊपर उल्लेख हुआ है वे सब वेदांत के ही हैं। हिंदी साहित्य के दर्शन और धर्म के ग्रंथों में वास्तविक भेद करना बहुत कठिन है। दोनों एक दूसरे में ऐसा घुल-मिल गए हैं कि उन्हें पृथक नहीं किया जा सकता। इसके बाद परिमाण और श्रेष्ठता के विचार से शृंगारी रचनाएँ आती हैं। यद्यपि कुछ कवियों ने इन रचनाओं को रहस्यात्मक या आध्यात्मिक अर्थ पहना कर ऊँचे उठाने का प्रयत्न किया है किंतु वस्तुत. ये धर्म-प्रतिकूल ही हैं। शृंगार के बाद ज्योतिष का क्रम है जिसका राष्ट्रीय जीवन पर बहुत ही प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। प्रत्येक पढ़े लिखे के घर में एक न एक ऐसा हस्तलेख मिलता ही है जिसमें घर से बाहर निकलने का शुभाशुभ विचार वर्णन रहता है। यदि किसी का इस ओर झुकाव हुआ तो वह ज्योतिषी बन जाता है और यदि कुछ पढ़ा-लिखा भी हुआ तो इस विषय का कुछ साहित्य भी प्रस्तुत कर देता है। इस विषय के अधिकांश ग्रंथों के रचनाकारों के नाम नहीं मिलते। वैद्यक के ग्रंथों की भी यही स्थिति है जो इसके बाद आते हैं। इतिहास और कहानियों की भी बहुत बड़ी संख्या है जो आपस में मिल जुल गई हैं किंतु कोई महत्वपूर्ण ग्रंथ नहीं मिला है। वास्तविक इति-हास तो अत्यंत अल्प है। छंद और अलंकार शास्त्र के हस्तलेख अपेक्षाकृत कम हैं किंतु जो हैं वे विभिन्न रचनाकारों के अवश्य हैं। संगीत के भी ५१ हस्तलेख मिले हैं किंतु प्राय सभी एक ही ग्रंथ की विभिन्न स्थानों पर विद्यमान प्रति लिपियाँ ही हैं। प्रकीर्णक में कुछ रोचक *ग्रंथ भी हैं जैसे विद्यारंभ कराने के नियमादि का ग्रंथ। विद्यारंभ* में सर्व-प्रथम 'ओम् नम सिद्धम्' कहा जाता है। विद्यार्थी उसका उच्चारण करता है—'ओ ना मा सी धम्' जो अशुद्ध है। तत्पश्चात् पाँचो पाटियों से युक्त खड़ियाँ सिखाई जाती हैं जो संस्कृत का अपभ्रष्ट रूप है। यह 'बतक धुनि' और तुलसीदास जी के शब्दों में दादुर-रोर से अधिक कुछ नहीं है। यह पद्धति लगभग ६० वर्ष पूर्व प्रचलित थी। मुझे स्मरण है उस समय अपना नाम एक सरकारी पाठशाला में लिखा लेने से मैं कम से कम चार पाटियाँ रटने से बच गया। इसमें 'व्यंजन सार' ऐसे ग्रंथ भी मिले हैं जिनमें स्वादिष्ट भोजन का वर्णन है।

४ **नवोपलब्धियाँ**—नवोपलब्ध रचनाएँ अधिक से अधिक १८८ हैं। नवोपलब्ध से यह तात्पर्य नहीं कि इसके पहले इन्हें कोई जानता ही न था। वस्तुत ये काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा उन्तीस वर्षों से कराए जाने वाले खोज कार्य के लिये ही नई हैं। इनमें से कुछ रचनाएँ तो टूटे-फूटे पद्यों की छोटी छोटी पुस्तिकाएँ मात्र हैं जिनका कोई महत्त्व नहीं है। जैसे बारहमासा, लावनी, स्तुति आदि। नवयुवक पति से वियुक्त विरहिणियाँ की प्रेमभरी उक्तियों में विशेष आनंद लेते हैं। बारहमासा में ऐसी ही विरहिणियों की उक्तियाँ प्रत्येक मास के क्रम से वर्णित होती हैं। इसे एक प्रकार का मासिक रोजनामचा

समझना चाहिए। लावनी सुमति व्यक्तियों की भाव रचना है जिसमें वे यथावसर अपनी अस्पष्टासक्ति का प्रदर्शन समाज को आश्चर्य चकित करने के लिये बड़ी उत्सुकता से करते हैं। इन भाव पदकारों के सामान्यतः दो संप्रदाय हैं—(१) कलंगी और (२) तुर्रा। इनमें पहला नाम स्त्रीलिंग है और दूसरा पुल्लिंग। अतः स्त्री और पुरुष दोनों एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए गहरी होड़ लगाते हैं। जब इनके चंग या ढोल भी इस वाग्युद्ध में अस्त्र की भाँति सहयोग करने लगते हैं तब कभी कभी तो यह मुर्गों की लड़ाई का सा रूप धारण कर लेती है। लावनीबाजों का अब उतना प्रचार नहीं रह गया है जितना पहले कभी था। किसी लावनीबाज की अवस्था ज्यों ज्यों बढ़ती चलती है, त्यों त्यों उसमें भक्ति भावना का विकास भी होता चलता है। वह टेक के रूप में अपने उपास्यदेव को विशेष महत्त्व देने के लिए उसका नाम अधिक से अधिक जितनी बार अपनी स्तुतियों में ला सकता है लाने का प्रयत्न करता है। ऐसी रचना के लिए द्वितीय परिशिष्ट में संख्या ९१ (भी) को देखिए। एक कट्टर हिंदू के लिए ऐसे अशुद्ध पद वर्जित हैं, किंतु धार्मिक गीतों को छूट मिल जाने से साधुओं को ऐसे पदों के लिए प्रोत्साहन मिल गया है। इसके परिणाम स्वरूप बहुत सा कूड़ा करकट अवश्य एकत्र हो गया है, फिर भी इसमें कुछ वास्तविक काम भी हुआ है। कुछ साधुओं की रचनाएँ भी उत्तमकोटि की मानी जाती हैं। हिंदी का सर्वोत्कृष्ट कवि एक साधु ही था। वर्तमान खोज में वास्तविक महत्त्व की भी कुछ रचनाएँ उपलब्ध हुई हैं जिन्हें प्रथम एवं द्वितीय परिशिष्टों में देखा जा सकता है। यह मैं पाठकों पर ही छोड़ देता हूँ कि आप उन्हें स्वतः पढ़ें और अपने मतानुकूल उनके अच्छे बुरे का निर्णय करें क्योंकि मेरे संकेत करने का अर्थ होगा स्वतंत्र निर्णय पर अनावश्यक प्रहार।

५. खोज की कुछ उल्लेखनीय बातें - वर्तमान खोज में मूल गोसाईं चरित नामक एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण ग्रंथ मिला है जिसने श्री तुलसीदास जी के जीवन चरित्र से संबद्ध अनेक परंपरित धारणाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया है। उनकी मृत्यु संबंधी दोहा 'संवत् सोरह सै असी असी गंग के तीर। श्रावण शुक्ला सत्तमी तुलसी तज्यो शरीर।' अब अशुद्ध प्रमाणित हो गया है। इस ग्रंथ ने यह सिद्ध कर दिया है कि श्री तुलसीदास जी की मृत्यु 'श्रावण श्यामा तीज शनि' अर्थात् शनिवार श्रावण बदी ३ को हुई, श्रावण सुदी ७ को नहीं जो उनकी जन्मतिथि है। रामान्यदास कृत 'तुलसी चरित' के भी दो हस्तलेख मिले हैं जिनका समीक्षात्मक अध्ययन उक्त महाकवि के जीवन चरित्र की प्रामाणिकता के लिए अभी तक नहीं हुआ है।

खानखाना नवाब अब्दुर्रहीम ने 'मदनाष्टक' नामक आठ मनोहारी पदों का एक संग्रह रचा है जो उनका उत्कृष्ट काव्य माना जाता है। उसमें हिंदी-संस्कृत की एक-एक पंक्ति क्रम से संयोजित की गई है। वर्तमान खोज में एक हिंदू कवि लक्षण बिहारी भी मिले हैं जिन्होंने इसी तरह अपनी रचना में क्रम से हिंदी और फारसी की पंक्तियाँ रखी हैं। जैसे, 'पिया बिन चैनु न रहत रही घर, ता बिरही जिय आवा सपाय। बिरह दे न दुखिया मन में चक माह मर्दुमि सपाल्मो अजाब।" रहीम अपने मदनाष्टक का आरंभ करते हैं— मसनि मम निशान्तम् आय कैं बासु कीया। सब धन सब मेरा मान तें छीन लीया।" एक बार

फिर चरनदास के बड़े बड़े ग्रंथों के बहुत से हस्तलेख मिले हैं जिनमें उनकी शिष्या दयाबाई की भी एक रचना पहली ही बार उपलब्ध हुई है।

सीतापुर जिले में पीर नगर के ईश्वरी त्रिपाठी ने 'रामायण राम-विलास' नामक रामायण सन् १८५९ ई० में लिखी है। तुलसीकृत रामायण की भाँति यह भी सातों कांडों में विभक्त है और विभिन्न छंदों में रचित है। यह रचना महत्वपूर्ण है। अन्य अनेक रत्न जैसे रामप्रसाद कृत आनंद रस, जुगतरायकृत तिलकनक, कालीदत्त कृत नग शिख, मोहन कृत देवी-देवताओं की स्तुतियां एवं वंदनाएं आदि नवोपलब्ध कृतियों में हैं। इस त्रिवर्षी की एक विशिष्ट बात यह है कि इसमें गद्य के अनेक ग्रंथ मिले हैं। उनमें से ठाकुर लेखराज कृत पदार्थ-तत्व-दीपिका नामक भी एक ग्रंथ है जिसमें सृष्टि-विकास, ज्योतिष, पदार्थ-विज्ञान, अंतरिक्ष-विद्या, रसायन, धातुशोधन, वस्त्रप्रक्षालन, उद्यान रंग, रजावट, चारविद्या, भूमिपामन, पर्याय शब्द-व्यवस्थापन, शृंगार पुराण, वैद्य, आदि जितने भी विषय हो सकते हैं सबका संग्रह है। ठाकुर शिवसिंह के जो हिंदी साहित्य के प्रथम इतिहासकार माने जाते हैं, प्रसिद्ध हिंदी साहित्य का इतिहास का हस्तलेख भी इस त्रिवर्षी में उपलब्ध हुआ है।

अज्ञात समय हरिहर ब्रह्म ने शारदास्तोत्र संस्कृत गर्भ भाषा में रचा है जो बंकिमचंद्र के वंदेमातरम् गान से मिलता जुलता है। दुर्भाग्यवश उक्त हस्तलेख अपूर्ण है, फिर भी उसमें १२ छंद हैं। कुछ रचनाकारों के संबंध में गणना करने पर यह ज्ञात हुआ है कि उनका समय हिंदी के उत्पत्ति-काल के भी पहले चला गया है। उदाहरण के लिये पांडव बंधुओं में से नकुल को ही ले सकते हैं। वे पशु-विज्ञान के प्रसिद्ध विशेषज्ञ थे और उन्होंने 'अश्व चिकित्सा' नामक ग्रंथ भी रचा है। इसका अनुवाद नकुल को हिंदी कवि मानकर नकुल कृत शालिहोत्र के नाम से मिला है। इसी प्रकार शतपंचाशिका नामक एक ग्रंथ पृथ्वीजस नामक हिंदी कवि की कृति बताया गया है। किंतु वास्तविकता यह है कि यह ग्रंथ मूलत संस्कृत में छठी शती के वराहमिहिर के पुत्र पृथुयश द्वारा रचा गया था, जिसका हिंदी अनुवाद बाद में उन्ही के नाम से कर दिया। कालांतर में मूल ग्रंथकार को लोग भूल गए और उनका संस्कृत नाम अपभ्रष्ट होकर हिंदी कवि की भाँति विख्यात हो गया। संस्कृत शीघ्रबोध के कर्ता काशिनाथ भट्टाचार्य हिंदी में उसके अनुवादक के रूप में काशीनाथ दूबे बन गए हैं। परिशिष्ट में इस प्रकार के सभी प्रसंगों का स्पष्ट उल्लेख कर दिया गया है।

६ आलोचनात्मक भावना का विकास—

अपनी विगत विवरणिका अर्थात् क्रम से बारहवीं में मैंने यह संकेत किया है कि खोज कार्य का महत्वपूर्ण परिणाम यह भी हुआ है कि हिंदी विद्वानों में आलोचना की भावना विकसित हो रही है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण कुछ आलोचनात्मक ग्रंथों का प्रकाशन है जिनमें सबसे महत्वपूर्ण रायसाहब श्यामसुंदर दास कृत हिंदी भाषा और साहित्य, विद्या भास्कर सूर्यकांत शास्त्री कृत प्रधान कवियों के आलोचनात्मक अध्ययन सहित हिंदी साहित्य का इतिहास और मिश्रबंधुओं के 'हिंदी नवरत्न' का संशोधित संस्करण तथा 'विनोद' है। इनमें से कुछ तो इस त्रिवर्षी के मध्य ही में और कुछ इसके समाप्त होते होते प्रकाशित हुए हैं। तुलना करने पर इनमें प्राचीन आलोचकों द्वारा बँधे बँधाए ढंग से आलोचना सिद्धान्तों के

प्रयोग में स्पष्ट अंतर दृष्टिगोचर होता है। रायबहादुर श्यामसुंदरदास को अभी हाल ही में अपने इस महत् ग्रंथ पर स्वर्ण पदक मिला है। हिंदी के सुप्रसिद्ध आलोचक पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी (जो पदक के दाता भी हैं) ने इसके गुणों की प्रशंसा करते हुए यह घोषित किया है कि वस्तुतः इस ग्रंथरत्न ने पदक को ही गौरवान्वित किया है, न कि पदक ने ग्रंथ को। हिंदी के क्षेत्र में यह बहुत ही संतोषप्रद उन्नति हुई है।

७ परिशिष्ट—अपनी विगत विवरणिका सन् १९२३–२५ में जो अब भी छप ही रही है मैंने लिखा था कि हिंदी के उत्साही विद्वानों के लिए ये परिशिष्ट बहुत ही उपयोगी सिद्ध होंगे, जिसका समर्थन सर जार्ज ग्रियर्सन ऐसे महान् भाषाविद् ने भी किया है। मेरी विवरणिकाओं सन् १९१७–१९ और १९२०–२२ की प्राप्ति पर उन्होंने निम्नलिखित विचार प्रकट किए हैं—

'मुझे ये दृष्टिग्राहक प्रतीत हुई हैं। निश्चय ही वे भारतीय साहित्य के प्रत्येक विद्वान् के लिए बहुमूल्य सिद्ध होंगी।'

प्रथम परिशिष्ट में क्रमानुसार उन सभी रचनाकारों पर टिप्पणियाँ लिखी गई हैं जिनकी इस त्रिवर्षी में प्राप्त कृतियों में उनके समय या इतिहास संबंधित कोई भी नई बात ज्ञात हुई है। इसमें विगत विवरणिकाओं के विवादास्पद स्थलों की विवेचना भी की गई है। द्वितीय परिशिष्ट में प्रत्येक उपलब्ध हस्तलेख के उद्धरण के साथ साथ उसके रूप, आकार, प्रतिलिपिकाल तथा अन्य विशेषताओं का भी उल्लेख किया गया है जिससे कोई विद्वान् आवश्यकता पड़ने पर उन्हें प्राप्त भी कर सके। इसमें विगत विवरणिकाओं की अपेक्षा ग्रंथों के विषय का विवरण विस्तार से दिया भी गया है। केवल उन्हीं का विवरण नहीं दिया गया है जिनका विगत विवरणिकाओं में विस्तृत रूप में विवरण है। ऐसा सर जार्ज ग्रियर्सन के सुझाव से ही किया गया है जो उपादेय तो अवश्य है किंतु इससे विवरणिका का विस्तार बहुत हो गया है। यहाँ यह उल्लेख कर देना भी अप्रासंगिक न होगा कि विस्तार रोकने का भी प्रयत्न किया गया है किंतु नवोपलब्ध हस्तलेखों की अधिकता से विवरणिका का आयाम प्राकृतिक ही है अस्वाभाविक नहीं। इसी विचार से ही तृतीय परिशिष्ट जिसमें अज्ञातनामा व्यक्तियों की कृतियों का विवरण दिया जाता है संक्षिप्त कर दिया गया है। उसमें उद्धरणों के स्थान पर एक सूचीमात्र दे दी गई है जिसमें ग्रंथों के नाम उनके पर्यायस्वरूप रचनाकाल तथा लिपिकाल और वर्णित विषय के उल्लेख हैं। चतुर्थ परिशिष्ट में पुस्तक प्रस्तुत करनेवालों के लिए उपयोगी सूचनाएँ हैं जिनके विषय में मैं उपर्युक्त द्वितीय अनुच्छेद में कह चुका हूँ। अंत में दो और सूचियाँ दी गई हैं जिनमें से प्रथम में अकारादि क्रम से रचनाकारों के और द्वितीय में उसी क्रम से रचनाओं के नाम दिए हैं।

हीरालाल
अवैतनिक निरीक्षक,
हिंदी हस्तलेखों का खोज विभाग,
संयुक्तप्रांत

प्रथम परिशिष्ट

उपलब्ध हस्तलेखों के रचयिताओं पर टिप्पणियाँ

प्रथम परिशिष्ट

रचयिताओं पर टिप्पणियाँ

१ अब्दुल मजीद—दिल्ली के अब्दुल मजीद नवीन उपलब्ध लेखक हैं। इन्होंने चिकित्सा-विज्ञान पर अपना मूल ग्रंथ फारसी में लिखकर उसका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया है जिसके दो हस्तलेख प्राप्त हुए हैं। दोनों अपूर्ण हैं, एक का लिपिकाल संवत् १८३० (सन् १७७३) है और दूसरे का संवत् १८३६ (सन् १७७९ ई०)। ग्रंथ हिंदी गद्य में है।

२ अचलदास—अचलदास का जन्म बैसवाड़ा के बुरहैमीपुर ग्राम में हुआ था और ये बाराबंकी जिले के सूरजपुर बहरेला की गद्दी के वैष्णव महंत थे। ये अनंत दास के शिष्य कहे जाते हैं। इनकी मृत्यु संवत् १९२० (सन् १८६३ ई०) में हुई। इन्होंने वेदांत और भक्ति के धार्मिक विषयों पर सात ग्रंथ रचे—(१) शब्द सागर, (२) नाम-सागर, (३) शब्द-गुंजार, (४) अमरावती, (५) अनुभव प्रकाश, (६) रामावली और (७) रत्न-सागर। इनका कविताकाल सन् १८५० ई० के लगभग प्रारंभ हुआ। इनकी रचना से यह प्रकट होता है कि इनकी दृष्टि वस्तु पर अधिक थी शैली पर कम।

३ आधार मिश्र—वैद्य-योग-संग्रह के रचयिता आधार मिश्र का पता सन् १९२२–२५ की विवरणिका में लग चुका है। उसी की भाँति इस बार भी इनकी रचना के तीन हस्तलेख उपलब्ध हुए हैं जिनमें सबसे पुराना हस्तलेख सन् १७९९ ई० का है। इनकी रचना से इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं होता।

४ अग्रदास—अग्रदास जयपुर राज्य के निवासी थे और गलता की वैष्णव गद्दी पर थे। इस खोज में इनकी रचना ध्यान मंजरी के तीन हस्तलेख प्राप्त हुए हैं जिनमें सबसे पुराना सन् १७९८ ई० का है। सन् १९२०–२२ की खोज विवरणिका में भी इनके ग्रंथों का विवरण है। देखिए प्रथम परिशिष्ट संख्या १।

५ अजबदास—अजबदास ने कुछ ग्रंथ रचे हैं। सबसे पहले उनका (ग्रंथों का) विवरण सन् १९१७–१९ की विवरणिका में दिया गया है। उनकी दो प्रतियाँ सन् १९२२–२५ की खोज में फिर मिलीं। इस बार भी दो हस्तलेख प्राप्त हुए हैं जिनमें से एक का लिपिकाल सन् १८१९ ई० है और दूसरे का १७०३ ई०। इस बार 'शब्दावली' नामक इनके एक नवीन ग्रंथ का भी पता लगा है जो अब तक अज्ञात था। जाँच पड़ताल से यह ज्ञात होता है कि इनका जन्म सुलतानपुर जिले के पसिया (कायस्थ) नामक स्थान में हुआ था। इनके जानकी दास नामक एक पुत्र थे जो कवि भी थे और जिनके ग्रंथ भी इस खोज में प्राप्त हुए हैं। अजबदास कान्यकुब्ज ब्राह्मण (अमरमठ के दुबे) और वैष्णव थे। इनकी मृत्यु अयोध्या में सन् १८९२ ई० में हुई।

६ **अजीत सिंह मेहता**—जयसलमेर के दीवान अजीत सिंह मेहता का उपस्थिति-काल १८६० ई० है। इनके दो ग्रंथ मिले हैं—(१) शिक्षा-बत्तीसी और (२) विद्या-बत्तीसी। पहला नैतिक शिक्षा विषयक तथा दूसरे ज्ञान-प्रशस्ति संबंधी हैं। इनकी मातृभाषा गुजराती थी जिसके मुहावरे यत्रतत्र इनकी रचना में मिलते हैं जिससे इनकी शैली शक्तिशाली एवं महत्वपूर्ण हो गई है। गुजराती और हिंदी का नैकट्य भी ध्यान देने योग्य है जो गुजरातियों को हिंदी का सफल लेखक बनने में सहायक होता है। समसामयिक कवि श्रीधर इनके विषय में लिखते हैं—

'कहैं कवि श्रीधर रणजीत नरेश पर मेहता अजीत सिंह मंत्री बुद्धिमान है'। जो इनकी रचना से डंके की चोट प्रमाणित है। विद्या-बत्तीसी का रचनाकाल इस प्रकार उल्लिखित है—

उगनी सौ अट्ठारवे दीपमाल शनि दिन्न।

ईसवी सन् के अनुसार यह दिन २ नवंबर सन् १८६१ ई० शनिवार को पड़ता है।

७ **अमरसिंह**—चिकित्सा-विज्ञान (वैद्यक) पर लिखनेवाले अमरसिंह का ज्ञान प्रथम बार हुआ है। इनके ग्रंथ का नाम है 'अमर-विनोद'। इस खोज में इनके तीन हस्तलेख मिले हैं। ग्रंथ में रचनाकाल नहीं दिया है किंतु प्राचीनतम प्रति सन् १८१२ ई० की लिखी है। ग्रंथ पद्य में है, किंतु व्यवस्था पत्र सामान्यतया गद्य में है।

८ **अवरदास**—भक्त विरुदावली के रचयिता अवरदास की सूचना सन् १९०६–०८ और १९२२–२५ ई० की खोज विवरणिका में दी जा चुकी है। इस बार इनकी रचना के दो हस्तलेख मिले हैं जिसमें सन् १७२७ ई० में लिखा गया हस्तलेख अब तक प्राप्त सभी हस्तलेखों में प्राचीनतम है। अवरदास जो अमरदास के नाम से भी प्रसिद्ध हैं सत्रहवीं शती के अंत में विद्यमान थे। अतः यह हस्तलेख रचनाकाल के बहुत बाद का नहीं है।

९ **अमोलक**—अमोलक का विवरण सर्वप्रथम सन् १९२२–२५ की खोज विवरणिका में दिया गया है। उसमें इनके ग्रंथ का नाम 'खाँ खवास की कथा' दिया है किंतु इस खोज में उसका नाम 'खवास खाँ की कथा' मिला है। कवि सूरवंशी शासकों का समकालीन था। अतः इन्हें सोलहवीं शती का समझना चाहिए।

१० **आनंद**—कोकसार, कोक-मंजरी या कोक-विलास के रचयिता आनंद कवि का विवरण पहले की कई खोज विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। इस खोज में इनके ग्यारह हस्तलेख मिले हैं जिनमें से छः का लिपिकाल इस प्रकार है—सन् १८१३, १८३५, १८५०, १८६९, १८७५, १८९८ और १९०१ ई०। कुछ हस्तलेखों में रचयिता का नाम मकुंद दिया हुआ है जो संभवतः अशुद्ध पढ़ लिया गया है। विभिन्न हस्तलेखों में रचनाकाल भी भिन्न भिन्न दिया हुआ है, किंतु किसी का विस्तृत विवरण नहीं है जिससे गणना करके वास्तविकता की जाँच की जा सके। एक का स्पष्ट पाठ यह है—

'रितु बसंत संवत सरस सोरह सै अरु आठ।
कोक मंजरी सहकरी धर्म कर्म करि पाठ'।

इससे रचनाकाल सोलहवीं शती का मध्य ज्ञात होता है। दूसरे हस्तलेख में इसी दोहे के अशुद्ध पाठ से रचनाकाल संवत् १६६० (रितु बसंत संवत सत्सोरह सागत साठि । बोध मंजरी यह कहौं करम करम के पाठि ॥) ठहरता है। हिंदी में 'आठ' और 'साठ' इस ढंग से लिखा जा सकता है कि उसे दोनों ही पढ़ सकते हैं। फिर भी यह तो निश्चित ही है कि ग्रंथ की रचना या तो सोलहवीं शती के मध्य में हुई या सत्रहवीं के आरंभ में।

११ आनंददीन—आनंददीन उपनाम आनंदी प्रथम बार ज्ञात हुए हैं। राम और हनुमान की भक्ति विषयक इनकी दो रचनाएँ (१) प्रार्थना और (२) हनुमत् पद मिली हैं। रचनाओं से इनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं होता किंतु पूछताछ करने से ज्ञात हुआ है कि ये लखनऊ जिले के महमामऊ के समीप एक ग्राम में रहते थे और महमामऊ के जमींदार ठाकुर जंगबहादुर सिंह के मंदिर में पुजारी थे।

१२ आनंदघन—आनंदघन या घनआनंद अट्ठारहवीं शती के बहुत प्रसिद्ध कवि थे। पूर्व की विवरणिकाओं में इनके ग्रंथों के विवरण दिए गए हैं। जिनमें से सन् १९१७-१९ ई० की विवरणिका में इनका विस्तृत विवरण है। वर्तमान खोज में इनके दो ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं—(१) पदावली और (२) कवित्त। इनमें से पहला (पदावली) प्रथम बार उपलब्ध हुआ है। इस ग्रंथ से यह पता चलता है कि ये हिंदी की विभिन्न बोलियों को भी जानते थे जिनमें राजस्थानी भी है।

१३ आनंदराम—भगवद्गीता के हिंदी अनुवादक आनंदराम का विवरण पूर्व विवरणिकाओं में है। वर्तमान खोज में जो हस्तलेख उपलब्ध हुआ है वह सन् १७१८ ई० का है। एक विलक्षणता यह इस खोज में है कि भगवद्गीता भाषा के बालगोविंद नाम के एक तीसरे रचयिता भी घुस पड़े होते। आनंदराम कृत पद्यबद्ध अनुवाद बालगोविंद के अनुवाद से अक्षरशः मिलता है। सन् १९१७-१९ ई० की विवरणिका के ग्यारहवें अनुच्छेद में मैंने इस ग्रंथ के रचनाकार का विचार किया है और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि इसके वास्तविक अनुवादक हरिवल्लभ ही हैं। इस प्रकार आनंदराम और बालगोविंद दोनों निष्प्रयोजन ही इसमें प्रविष्ट हो गए हैं और दूसरे की रचना अपनी बताने लगे हैं।

१४ अनन्य या अक्षर अनन्य—अनन्य या अक्षर अनन्य रचनाओं का विवरण सन् १९२०-२२ ई० और १९२३-२५ ई० की विवरणिका में दिया हुआ है। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ फिर मिले हैं—(१) प्रेमदीपिका की तीन प्रतियाँ (२) सिद्धांत बोध की दो प्रतियाँ और (३) दुर्गापाठ या सुंदरी चरित की एक प्रति। सिद्धांत बोध जो पहली बार उपलब्ध हुआ है वेदांत का ग्रंथ है।

१५ अनाथपुरी—अनाथपुरी अनाथदास या अब अनाथ का विवरण पूर्व विवरणिकाओं में है। वर्तमान खोज में इनके विचारमाला नामक ग्रंथ के दो हस्तलेख मिले हैं। समय इस प्रकार है—"सत्रह सै छब्बीस संवत माधव मास शुभ। सो मति जिनक दुर्लभ नैनिह बासी प्रगट कर।" विवरणिकाओं सन् १९०६-०८ ई० और १९०९-११ ई० में दिए समय की इससे पुष्टि होती है। इनका दूसरा ग्रंथ प्रबोध-चंद्रोदय भी मिल चुका है जिसका विस्तृत विवरण सन् १९२०-२२ की विवरणिका में है।

१६ **अंगद शास्त्री**—अंगद शास्त्री नए मिले रचनाकार हैं। इन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता के दशम स्कंध का अनुवाद व्यासों की पंडिताऊ हिंदी गद्य में किया है। इन्होंने निश्चित रूप से व्रजभाषा का प्रयोग किया है। ये जमामर्दपुर के निवासी थे। इन्होंने विश्वामित्रपुर के राजा जयकृष्ण के पुत्र गिरिप्रसाद के अनुरोध पर यह ग्रंथ रचा।

१७ **अंगनेराय**—अगनेराय रसाल कवि के नाम से रचना करते थे। मिश्रबंधुओं ने इन्हें उपनाम से ही रखा है। 'बारहमासा' के अतिरिक्त 'बरवै अलंकार' तथा 'नखशिख' इनके दो ग्रंथ और हैं। ये साधारणत अच्छे कवि थे और अनुप्रास इन्हें विशेष प्रिय था। वास्तव में बारहमासा के अंत में इनका यह कथन कि "छन्द और कवित्त चारु सोरठा सु बरवै ये जटित किये हैं लाय प्रेम के नगीना में। सुवरण सोधि उक्ति युक्ति कै नवीनी विधि वृत्ति अनुप्रासन को नावै कियो मीना में॥" अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है। अंगनेराय हरदोई जिले के बिलग्राम निवासी थे। बारहमासा का रचनाकाल गुरुवार कार्त्तिक बदी १० संवत् १८८६ वि० तदनुसार गुरुवार २२ अक्टूबर सन् १८२९ ई० है।

१८ **असगर हुसेन**—हकीम असगर हुसेन, फर्रुखाबाद के निवासी थे। इन्होंने चिकित्साशास्त्र विषयक यूनानीसार नामक ग्रंथ सन् १८७५ ई० में रचा। ग्रंथ का लिपिकाल सन् १८८२ ई० है।

१९ **अवधविहारी कायस्थ**—अवधविहारी कायस्थ या अवधविहारी लाल सुलतानपुर जिले के दिखौली निवासी थे और प्रतापगढ़ गवर्नमेंट हाई स्कूल में अध्यापक थे। इनकी रचनाएँ प्रथम बार उपलब्ध हुई हैं। पाँच उपलब्ध हस्तलेखों में से दो का कोई नाम नहीं दिया है, और दो क्रमशः आल्हा खंड और आल्हा नाम से अभिहित हैं। पाँचवें का नाम बारहमासा है जिसकी रचना, संवत् १९२७ वि० (सन् १८८८ ई०) में हुई है। अन्य किसी हस्तलेख में कोई समय नहीं दिया गया है। अवधविहारी लाल फारसी के अच्छे ज्ञाता जान पड़ते हैं। जिन ग्रंथों में कोई नाम नहीं है उनमें इन्होंने अब्दुर्रहीम खानखाना की भाँति प्रत्येक छंद में क्रम से एक चरण हिंदी का और एक चरण फारसी का रखा है। जैसे, कहा निज लाली पै बिम्ब मरे। लबे लाल निगारम रा दरियाब या दौलत जान निसार कुनम जद देखूँ बिहारी जू मोहनी मूरत। जुमले गम इजहार कुनम जो मिलैं हँम के वो साँवरी सूरति। हयाते अब्दी गर शब्द बिला दोस्त बेकार। मीत पास जाको सदा ताके बस ससार। मीत हू न अंक लग्यो बजि के कलंक लग्यो, मुफ्त दर इश्क वे बिहारी बदनाम शुद। प्राय दो हजार अनुष्टुप श्लोकों में कवि ने द्विभाषिक रचना बहुत चातुरी से की है। बारहमासा शुद्ध रूप से हिंदी में लिखा है और वह भी निम्न कोटि की रचना नहीं है। जहाँ तक आल्हा का संबंध है, ऐसा जान पड़ता है कि ग्रामीणों के द्वारा गाए जानेवाले अवधी के प्रसिद्ध गीतों का संग्रह है। यद्यपि गँवारों के बीच यह भद्दा एवं कुरुचिपूर्ण होता है, किंतु एक कुशल व्यक्ति के हाथों पड़कर यह हिंदी की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं के समकक्ष पहुँच गया है।

२० बौरीलाल—बौरीलाल नए मिले कवि हैं। इन्होंने बैताल पचासा रचा है जो अपूर्ण है। ये सामान्य कवि जान पड़ते हैं और इनकी भाषा प्रादेशिक प्रयोगों से भी मुक्त नहीं है।

२१ अयोध्या प्रसाद वाजपेयी—अयोध्याप्रसाद वाजपेयी (औध कवि) ने रघुनाथ मचारी ग्रंथ रचा है जिसका उल्लेख सन् १९२३–२५ ई० की विवरणिका में हो चुका है। ये रायबरेली निवासी थे और सन् १८८५ ई० में दिवंगत हुए।

२२ बाबूराम पांडे—बाबूराम पांडे नए मिले कवि हैं। इनका औषध संग्रह वैद्यक का ग्रंथ है जो गद्य-पद्य दोनों में रचित है। इसका रचनाकाल और लिपिकाल दोनों एक ही है, अर्थात् सन् १९२५ ई०। हस्तलेख स्वयं रचनाकार के ही हाथों लिखा हुआ है। इन्होंने यह प्रति अपने बाबा के लिए प्रस्तुत की थी। इन्होंने बंगसेन, उड़ीस और सारंगधर से अपना संग्रह तैयार करना स्वीकार किया है। बाबूराम प्रतापगढ़ जिले के गोंडा निवासी थे। किंतु इन्होंने अपने ग्रंथ की रचना प्रयाग में की है।

२३ बद्रीलाल—बद्रीलाल नए मिले कवि हैं। इनके ज्योतिष-विषयक 'सत पंचाशिका' ग्रंथ की तीन प्रतियाँ मिली हैं जिनमें सबसे पुरानी प्रति सन् १८७० ई० की है।

२४ बैजनाथ—बैजनाथ नए मिले कवि हैं। ये जौनपुर जिले के बादशाहपुर निवासी बाबू सीताराम के आश्रित थे। वर्तमान खोज में इनके दो ग्रंथ—(१) गोपी-विरह छंदावली और (२) नाम विलास मिले हैं। पहले का विषय श्रीकृष्ण से अलग हो जाने पर गोपियों का विरह और दूसरे का नायिकाभेद है। पहले का रचनाकाल सन् १८६० ई० है। दूसरे का समय-सूचक दोहा अस्पष्ट होने के कारण रचनाकाल संवत् १९१७ और १०१७ दोनों ही हो सकता है, जो इस बात को ध्यान में रखते हुए नितांत असंगत है कि लिपिकार ने इसकी प्रतिलिपि संवत् १९२८ (सन् १८७१ ई०) में स्वयं लेखक की आज्ञा से प्रस्तुत की। यदि १०१७ को शक संवत् भी मानें तो भी ग्रंथ का रचनाकाल सन् १८७१ ई० नहीं हो सकता। ग्रंथ की पुष्पिका से यह भी प्रकट होता है कि बैजनाथ के पिता दिनेश भी अच्छे कवि थे।

२५ बैजू—जैसा कि ग्रंथ के नाम से प्रकट है बैजू ने 'कवित्त संग्रह' नामक कवियों का एक संग्रह सन् १८१८ ई० में प्रस्तुत किया। उपलब्ध हस्तलेख इसके पाँच वर्ष बाद का है।

२६ बैरीलाल—खोज विवरणिका सन् १९२३–२५ ई० संख्या ९५ और सन् १९०६–०८ ई० संख्या १३२ में बैरीलाल का विवरण दिया हुआ है। ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १८१५ (सन् १७५८ ई०) तथा लिपिकाल संवत् १९३१ (सन् १८९९ ई०) है।

२७ बैताल कवि—खोज में बैताल पचीसी का जो हस्तलेख मिला है, केवल उसकी पुष्पिका में ही बैताल कवि का नाम आया है। इससे यह संदेह उत्पन्न होता है कि कहीं लिपिकार ने तो ग्रंथ के नाम के आधार पर रचनाकार का नाम बैताल नहीं लिख

दिया है। इस ग्रंथ की भाषा प्राकृत से कुछ कुछ मिलती-जुलती है जिससे इस बात का संकेत मिलता है कि रचना सत्रहवीं शती के बैताल कवि के पूर्व की है। कछति, गमंति, जंपियो जैसे शब्दों का प्रयोग चंदवरदाई ऐसे पुराने राजपूत कवियों तक की भाषा का स्मरण दिलाते हैं। शिवदास कृत संस्कृत की पंचविंशतिका की रोचक कहानियों ने हिंदी के बहुत से कवियों का ध्यान अनुवाद के लिए आकृष्ट किया है जिनमें से चार का उल्लेख सर जार्ज ग्रियर्सन ने अपने माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आव् हिंदुस्तान में भी किया है और उसके कतिपय हस्तलेख साहित्यान्वेषकों को भी खोज के आरंभ में ही मिल चुके हैं (जैसे, देखिए प्रथम त्रैवार्षिक विवरणिका, संख्या ८६, द्वितीय, संख्या १३, छठीं, संख्या २७; सातवीं, संख्या २३४ (बी), आठवीं, संख्या २६)। इनमें से कुछ में रचयिताओं के नाम दिए हैं। जैसा ऊपर कहा जा चुका है संक्षिप्त पुष्पिका के उपलब्ध होते हुए भी मैं वर्तमान खोज में प्राप्त हस्तलेख को इसी श्रेणी में गिनता हूँ। ऐसी परिस्थितियों में बैताल कवि की जीवनी के विषय में कुछ स्थिर कर देना पूर्णतः काल्पनिक ही होगा।

२८ बाजीलाल—बाजीलाल ने कान्यकुब्ज वंशावली विस्तार से लिखी है जो केवल कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के ही काम की हो सकती है। रचयिता स्वयं कान्यकुब्ज ब्राह्मण था। वह सीतापुर जिले में कोढवा का निवासी था। ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १८६० (सन् १८०३ ई०) है। रचयिता ने पद्य में भी कुछ लिखा है जो सामान्यतः गद्य में ही होना चाहिए था। उसने ऐसा शायद इस लिए किया होगा कि संभवतः बिना पद्य-रचना के उसे कोई महत्त्व न मिले। वास्तव में वह इसके योग्य है भी नहीं। इस महत्त्वहीन वंशावली के अतिरिक्त इसकी और किसी रचना का पता नहीं चलता।

२९ बलभद्र—बलभद्र बुंदेलखंड के ओरछा के प्रसिद्ध कवि केशवदास के भाई थे। वर्तमान खोज में इनकी रचना नखशिख के दो हस्तलेख मिले हैं, जो अपने विषय अर्थात् नायिका के शारीरिक सौंदर्य के वर्णन का प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। इस ग्रंथ का विवरण पूर्व की कई विवरणिकाओं में उपलब्ध है (देखिए सन् १९२३–२५ ई० की त्रैवार्षिक विवरणिका में संख्या २८ के अंतर्गत)। सोलहवीं शती के अंत में ये विद्यमान थे।

३० बालचंद—स्वरोदय के रचयिता बालचंद या बालनदास नए मिले कवि हैं। उपलब्ध हस्तलेख खंडित है और रचयिता तथा रचनाकाल के विषय में उससे कुछ भी ज्ञात नहीं होता। मिश्रबंधु विनोद में (देखिए संख्या १०८१) रमल भाषा के रचयिता एक बालनदास का उल्लेख है। 'रमल भाषा' में पासा फेंककर भविष्य बताने की क्रिया का वर्णन है और इसमें इनाम के लेने छोड़ने के आधार पर। इसलिए दोनों के एक होने की संभावना है। रमल के रचयिता सत्रहवीं शती के अंत में विद्यमान थे।

३१ बालदास—चितावोध और ब्रह्मवाद के रचयिता बालदास का विवरण सन् १९१७–१९ ई० की विवरणिका के संख्या १४ पर भी दिया जा चुका है। उस समय केवल पहला ग्रंथ ही उपलब्ध हुआ था। दोनों ग्रंथ वेदांत के ही हैं। रचयिता के विषय में ज्ञात

हुआ है कि वे रायबरली जिले के जगतनगर निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम चिरंजीव प्रसाद तिवारी था। रचयिता स्वामी द्वारा के दिगंबर अखाड़े के थे, जो वैरागियों का एक उपसंप्रदाय है। ये सामान्य कोटि के लेखक हैं।

३२ बलदेव—बलदेव जाति के कायस्थ (वास्तव) थे। वे रहते थे जिला फतहपुर के कल्याणपुर परगनांतर्गत शेखपुर में। वर्तमान खोज में इनके ग्रंथ 'जानकी विजय' के दो हस्तलेख प्रथम बार मिले हैं यद्यपि 'मिश्रबंधु-विनोद' में संख्या २१२० पर इनका उल्लेख है। प्रस्तुत ग्रंथ का रचनाकाल सन् १८०९ ई० है और एक प्रतिलिपित हस्तलेख इसके तीन वर्ष बाद का है। ग्रंथ में अद्भुत रामायण के आधार पर सहिरावण पर जानकी विजय की कथा वर्णित है। रचना शुद्ध एवं सामान्य कथा मात्र है। ग्रंथकार ने तुलसीदास की शैली के अनुकरण का प्रयास किया है और कुछ स्थानों पर तो उनके छंद ज्यों के त्यों उद्धृत कर दिए हैं।

३३ बलदेव—बलदेव नवीन उपलब्ध महत्वहीन पद्यकार हैं। इन्होंने 'कृष्ण लीला' नामक एक ग्रंथ लिखा है जिसमें शब्दों की तोड़मरोड़ में इनकी विशेष स्वच्छंदता दिखाई पड़ती है। जैसे, छंद भंग के बचाव के लिए इन्होंने 'औतारि' और 'हिमारि' के तुक पर 'मारी' का 'मारे' कर दिया है। ये उन्नीसवीं शती के मध्य में विद्यमान थे।

३४ बलदेवप्रसाद—बलदेव प्रसाद अग्रवाला वैश्य नवोपलब्ध रचनाकार हैं। ये कानपुर जिले के अमरोहा-निवासी थे और हम्मीरपुर में पोतदार का कार्य करते थे। इनकी छोटी सी पुस्तक विरहनीक बारहमासा सन् १८७३ ई० में रची गई थी। रचयिता के कथनानुसार राय शिवसहाय और चरखारी के मक्खिलाल इनके आश्रयदाता थे।

३५ बालगोविंद—नवोपलब्ध रचनाकार बालगोविंद की एक नामविहीन पोथी मिली है जिसमें इन्होंने कुछ संस्कृत के श्लोकों को आधार रूप में सामने कर कवित्त और सवैयों में उनका विस्तार किया है। इन्होंने अपने तथा अपने कविताकाल के विषय में कुछ भी संकेत नहीं किया है।

३६ बालगोविंद वैष्णव—बालगोविंद गोंडवा निवासी नवोपलब्ध रचनाकार हैं। इस त्रिवर्षी में इनका भागवतगीता का अनुवाद मिला है। ग्रंथ का लिपिकाल संवत् १८०९ वि० (सन् १७५२ ई०) है। इनका समय अज्ञात है। इनके इस ग्रंथ के रचनाकार होने में भी संदेह है।

३७ बालकराम नैनसुख—बालकराम नैनसुख नवोपलब्ध रचनाकार हैं किंतु अनैसर्गिक दोहरे नामों में संदेह होता है। बालकराम नामके चिकित्सा-शास्त्र के कोई भी रचयिता अब तक नहीं मिले हैं किंतु नैनसुख नाम के एक प्रसिद्ध वैद्य हो गए हैं जिन्होंने सन् १५९१ ई० में वैद्यमनोत्सव नामक ग्रंथ रचा है। यदि उपलब्ध रचना ईसा की सोलहवीं शती के अंत की सिद्ध हो जाय तो इनके रचयिता और वैद्य मनोत्सव के कर्ता को एक मान लेने में

में कोई कठिनाई न होगी। किंतु इस ग्रंथ का रचना-काल सन् १८१३ ई० दिया हु
जिससे त्राण पाना असंभव है।

३७ बालमकुंद—बालमकुंद नवोपलब्ध रचनाकार हैं। इनके बारहमा
वर्ष के बारह महीनों के क्रम से प्रेमिका का पति-वियोग वर्णित है। कवि ने अधिक
भी नहीं छोड़ा है, किंतु उसमें उसने अपने गुरु बासी से भेंट का वर्णन किया है।
आज्ञा से इसने यह बारहमासा संवत् ४७ में चैत्र शुक्ल अष्टमी को संपूर्ण किया। इ
लिपिकाल संवत् १९२६ होने से यह निश्चित है कि इसकी रचना संवत् १८४७
नहीं हुई है। तथापि ग्रंथ की भाषा भी इसी स्थापना का समर्थन करती है। बा
मुरादाबाद के ठाकुरद्वारा के थे।

३८ बलवीर द्विवेदी—बलवीर द्विवेदी कन्नौज-निवासी थे। इनका
सन् १९२३–२५ ई० की खोज-विवरणिका में संख्या ३४ पर हो चुका है। वर्तमा
में इनके ग्रंथ रससागर उपनाम दंपतिविलास की तीन प्रतियाँ तथा नखशिख की दो
प्राप्त हुई हैं। इन दोनों का विवरण पहले दिया जा चुका है। रस-सागर की अब त
सबसे पुरानी प्रति सन् १७९० ई० की है और नखशिख की सन् १७८९ ई० की।

३९ बनारसीदास जैन—बनारसीदास जैन गोस्वामी तुलसीदास के सम
थे। ये आगरे के रहनेवाले थे और सन् १९२३–२५ ई० की विवरणिका में सं
पर इनका कुछ विवरण भी दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में इनके तीन ग्रंथ
में आए हैं—(१) बावन सवैया, (२) वेद-निर्णय-पचासिका और (३) सूक्त मुक्त
ये सब ग्रंथ जैन-धर्म से संबंधित हैं तथा अन्य धर्मों के विरोध में हैं। वर्तमान खोज
सबसे प्राचीन प्रति सन् १६२९ ई० की है।

४० बाँकेराम दीक्षित—नवोपलब्ध बाँकेलाल दीक्षित के विषय में कुछ
नहीं है। इन्होंने सामुद्रिक शास्त्र (हस्तरेखा शास्त्र) पर एक पोथी लिखी है।
द्वारा भविष्य-ज्ञान जन-रोचक होने के कारण यह बहुत से लेखकों को प्रिय रहा है
मान खोज में बाँकेराम के नाम पर दो हस्तलेख मिले हैं, किंतु एक छंद में त
उल्लेख होने से यह संदेह होता है कि कहीं यह ताहिरकृत संस्कृत के सामु
अनुवाद न हो। (ज्ञान घटै दरसन किये काया घटै रतिकेलि। भूलि न अमृत डालि
विष की बेलि॥)। ताहिर उपनाम अहमद ने भी सामुद्रिक पर ग्रंथ लिखा है
युक्त दोहे में उसके नाम का संकेत है। चाहे जो हो दोनों रचयिताओं के छंद
नहीं मिलते जिससे स्पष्ट है कि बाँकेराम ने अपने छंद अलग बनाए हैं। ताहिर ने
ग्रंथ सन् १६२१ ई० में रचा, किंतु बाँकेराम ने समय का कोई संकेत नहीं दिया है
मान खोज में उपलब्ध एक प्रति का समय सन् १७९२ ई० है जिससे प्रकट है कि
इसके पहले के अवश्य होंगे। अतः समय-निर्धारण के लिए १६२१ और १७९२
बहुत बड़ा अंतर है।

४१ बंसीधर— मित्र-मनोहर के रचयिता बंसीधर का पता पहले भी मिल चुका है किंतु जो हस्तलेख बाबू राम मनोहर बिसपुरिया के पास है वह अब तक प्राप्त सबसे पुराना है। इसका समय १७९० है जो रचनाकाल के इक्कीस वर्ष बाद का है। बंसीधर ने मित्रमनोहर नाम से हितोपदेश का अनुवाद किया है (दखिए खोज-विवरणिका सन् १९१७–१९ ई० संख्या २०)।

४२ बेनीबख्श—बेनी बख्श का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२–१४ ई० की संख्या १४ पर दिया जा चुका है। इनके ग्रंथ हरिश्चंद्र कथा की दो प्रतियाँ मिली हैं और दोनों का लिपिकाल सन् १८०४ ई० है। पुस्तक में उन्हीं राजा हरिश्चंद्र की प्रसिद्ध कथा वर्णित है जिन्होंने स्वपन-रक्षण में अपना सर्वस्व होम कर दिया था।

४३ बेनीमाधव—बेनी माधव ने बारहमासी लिखी है जिसमें मासक्रम से राधा का श्रीकृष्ण-वियोग वर्णित है। ऐसे साहित्य का तो प्राचुर्य है, किंतु ये कवि प्रथम बार ही मिले हैं। इन्होंने अपने विषय में कुछ भी नहीं लिखा है।

४४ बेनीमाधव दास बाबा—बेनीमाधवदास बाबा गोस्वामी तुलसीदास के शिष्य थे। इन्होंने गोस्वामी जी का जीवन चरित लिखा है। इनका ग्रंथ मूल गोसाईं चरित सर्व प्रथम इसी खोज में मिला है। इस पुस्तक ने तुलसीदास के संबंध में प्रसिद्ध कुछ परंपरागत धारणाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित कर दिया है। काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने इसे प्रकाशित कर इसकी आलोचना का आवाहन किया था जो नागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी है। बेनीमाधवदास ने इसकी रचना अपने गुरु की मृत्यु के सात वर्ष बाद की थी अतः उनकी सभी बातें इनके ध्यान में थीं। उपलब्ध हस्तलेख का लिपिकाल सन् १७९१ ई० है।

४५ बेनी प्रवीन—बेनी प्रवीन अपने को लखनऊ का बाजपेयी बताते हैं। इन्होंने नवरस तरंग नामक ग्रंथ लिखा है जो पिछली कई विवरणिकाओं में विवरित हो चुका है। एतत्संबंधी सभी ज्ञातव्य सूचनाएँ खोज विवरणिका सन् १९२३–२५ ई० संख्या ४० में उपलब्ध हैं। नवरस तरंग की रचना सन् १८१७ ई० में हुई थी।

४६ भड्डरी—भड्डरी या भड्डली नाम हिंदी भाषा भाषी प्रांत में विशेषतः किसानों के बीच वर्षा एवं कृषि संबंधी ज्योतिष विषयक सूक्तियों तथा कहावतों के लिए प्रसिद्ध है। प्रायः सभी कृषकों की जिह्वा पर इनकी विशिष्ट छाप से अलंकृत कुछ न कुछ कहावतें रहती ही हैं। जैसे, सावन पहिली पाँच में जो मेघा बरसाय। ऐसा भाखै भड्डरी साख सवाई आय।

इतने प्रसिद्ध होते हुए भी इनके विषय में बहुत कम ज्ञात है। फिर भी इनके विषय में पौराणिक ढंग की कुछ कथाएँ अवश्य गढ़ी गई हैं जो छींक पड़ना, अंग फड़कना, पक्षियों के कलरव, पशुओं की ध्वनि, बिस्तुइया पतन, शकुन-प्रभाव आदि संबंधी इनके असाधारण ज्ञान की परिचायिका हैं। भड्डरी ने इन सब विषयों पर रचना की है और सौभाग्य से वर्तमान

खोज में इनके बहुत से ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं। उनके नाम हैं—(१) भड्डरी पुराण, (२) बृहस्पति कांड और (३) सगुनावली या सगुन-विचार जिसकी तीन प्रतियाँ मिली हैं। पहला ग्रंथ जो सन् १९०० की खोज में भी मिल चुका है, अवधी गद्य में है। इसमें डक्क ऋषि तथा उनकी पत्नी के बीच हुए ज्योतिष संबंधी संवाद का वर्णन है। दूसरा ग्रंथ संस्कृत के छंदों से आरंभ होकर तुरंत ही हिंदी के छंदों की ओर बढ़ जाता है जिसमें आवश्यकतानुसार यत्र तत्र गद्य का भी मिश्रण हो गया है। तीसरा ग्रंथ हिंदी पद्य में है तथा उसकी शैली औरों से कुछ अच्छी है। इससे यह भी संदेह उत्पन्न होता है कि ये ग्रंथ वस्तुतः एक ही व्यक्ति के लिखे हैं या नहीं। इससे कथन की पुष्टि इससे भी होती है कि सगुन-विचार का एक हस्तलेख उसका भड्डरी सहदेव का रचा होना बताता है, और भड्डरी* शब्द ज्योतिषी अर्थ का द्योतक प्रतीत होता है। अतः इसका वास्तविक रचयिता सहदेव होना चाहिए (मिश्रबंधुओं ने भ्रमवश उसे शाहाबाद पढ़ लिया है, देखिए मिश्रबंधु-विनोद, तृतीय भाग, पृष्ठ ९९२, संख्या १६१०, द्वितीय संस्करण) जो जाति का भड्डरी था। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ज्योतिष विषयक इस प्रकार की रचनाएँ विभिन्न व्यक्तियों ने कीं और जिनके लिए ये लिखी गईं थीं उनमें विश्वास उत्पन्न करने के लिए ये सर्वाधिक प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम पर प्रचारित कर दी गईं।

४७ **भद्रनाथ दीक्षित**—छंद-शिरोमणि (छंदशास्त्र का ग्रंथ) के रचयिता भद्रनाथ दीक्षित नवोपलब्ध कवि हैं। ये कानपुर जिले के बिठूर निवासी थे। ग्रंथ का रचनाकाल इस प्रकार दिया है—संवत ठारह सै असी शुक्ल छठि बुद्ध। मृग सिर को रजनीस सुभ भयो ग्रंथ यह सुद्ध ॥ तदनुसार ईसवी दिनांक है १६ अप्रैल सन् १८२३ ई० बुधवार। उस दिन सूर्योदयोपरांत मृगशिरा नक्षत्र कम से कम पैंतालिस मिनट तक था। भद्रनाथ वैद्यक के भी ऐसे ही पंडित थे। इन्होंने इस विषय का भी एक ग्रंथ संस्कृत के रचनाकारों से संग्रह करके 'संग्रह-शिरोमणि' नाम से लिखा है।

४८ **भगवानदास**—अमृतधर के रचयिता भगवानदास निरंजनी सन् १९०६-०८ ई० और १९२३-२५ ई० की खोज में भी मिल चुके हैं। अमृतधर वेदांत का ग्रंथ है और सन् १९०६-०८ ई० की खोज विवरणिका के अनुसार सन् १६६५ ई० में रचा गया है। वर्तमान खोज में प्राप्त प्रति सन् १८२७ ई० की लिखी है।

४९ **भगवंतराय खीची**—भगवंत राय खीची ने हनुमान जी के कवित्त या हनुमत-पचासा लिखा है। ये पहले भी मिल चुके हैं। देखिए खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ ई० और १९२३-२५ ई०, संख्या ४३।

५० **भागवत**—भागवत नाम के कई रचनाकार खोज में मिल चुके हैं, किंतु ये सबसे भिन्न हैं। इनके ग्रंथ नागर-सभा का समय अनिश्चित है, किंतु उपलब्ध हस्तलेख

---

* भड्डरी जोगियों की एक जाति है जो चारों ओर घूम-घूमकर भिक्षा माँगकर, भविष्य बताकर तथा सैद्धांतिक रक्षावर्ते कहकर अपनी जीविका निर्वाह करते हैं (देखिए रसेल तथा हीरालाल कृत ट्राइब्स एंड दि कास्ट्स ऑव दि सेंट्रल प्राविंसेज, तृतीय भाग, पृष्ठ २५६)।

सन् १८३५ ई० का लिखा है। यह ग्रंथ खड़ी बोली में लिखा गया है और इसमें फारसी-अरबी से व्युत्पन्न शब्दों का प्राचुर्य है। सागर सभा इंद्र सभा के ढंग पर लिखा गया प्रतीत होता है, जिसमें जादू की सहायता से काम होता है। ग्रंथ का दूसरा नाम किस्सये सुंदर-नागरी भी है जो उसके अंत में लिखा हुआ है।

५१ भागवतदास—भागवतदास की सर्वप्रथम उपलब्धि सन् १९०९-११ की खोज में हुई थी जब कि इनका भागवतचरित नामक ग्रंथ मिला था। वर्तमान खोज में साहित्यान्वेषक ने सन् १९०९-११ ई० में ही हस्तलेख को पुनः प्राप्त कर उसमें से तीसरे अध्याय का वह छंद ढूँढ निकाला जिसमें रचनाकाल, स्थान आदि दिए हुए हैं और जो पहले नहीं मिला था। ग्रंथकार ने भागवत का माहात्म्य प्रयाग में अपने गुरु से सुना और मथुरा में पद्य-बद्ध किया। ऐसे ही तुलसीदास ने भी राम की कथा सूकरखेत में अपने गुरु से सुन कर अध्यात्म रामायण के रूप में लिपिबद्ध की थी। ग्रंथ का समय इस प्रकार दिया है—अष्टदस सै सिरसठ संमत। कहीं कथा हरिजन जस मंतत। कार्तिक शुक्ल पक्ष बुधवारा। नौमी तिथि सुभ जोग बखारा॥ अर्थात् रचना कार्तिक शुक्ल पक्ष नवमी संवत् १८६१ बुधवार को तदनुसार १९ नवंबर सन् १८०४ ई० बुधवार को आरंभ हुई। जिस प्रकार भागवतदास का 'भागवत चरित्र' पद्मपुराण के आधार पर निर्मित हुआ है जिसका संकेत इन्होंने अपनी रचना में दिया भी है, उसी प्रकार इनका दूसरा ग्रंथ सप्ताह-माहात्म्य भागवत चरित्र पर आधारित है। ऐसा प्रतीत होता है कि भागवतदास तुलसीदास जी के पद-चिन्हों का ही अनुसरण करना चाहते थे, किंतु वे सफल न हो सके।

५२ भागवतदास—रामस्मारिणी के रचयिता भागवतदास इसी नाम के अन्य कवियों से भिन्न हैं और इस खोज में नए मिले हैं। इनका ग्रंथ तुलसीदास कृत रामायण के पात्रों की कार्य-सूची है।

५३ भागवत शरण पांडे—भागवत शरण पांडे सरयूपारी ब्राह्मण प्रतापगढ़ जिले के पुरवा हरदत्त मिश्र के रहनेवाले थे। ये कानपुर में ब्राह्मण सेना में जमादार थे। वर्तमान खोज में इनके दो ग्रंथ मिले हैं—(१) ज्ञानदीपिका और (२) अक्षरज्ञान प्रापतिका। इनमें से प्रथम वेदांत की और द्वितीय धार्मिक विषय की पुस्तक है। दूसरी का प्रत्येक छंद हिंदी वर्णमाला के क्रम से आरंभ होता है। दोनों का समय अज्ञात है।

५४ भगवतीदास—प्रसिद्ध जैन कवि भगवतीदास या भैया भगवतीदास के दो ग्रंथ चेतन चरित्र और निर्वाणकांड पहले मिल चुके हैं (द्रष्टव्य खोज विवरणिका सन् १९०० ई० और सन् १९२३-२५ ई०)। वर्तमान खोज में पुष्पपचीसी नाम का इनका एक ग्रंथ और मिला है। इसकी रचना सन् १६७१ ई० में हुई। इसमें जैन तीर्थंकरों की प्रशस्ति है तथापि कुछ धार्मिक शिक्षा भी कथित है।

५५ भगवतीदास द्विज—भगवतीदास द्विज का विवरण शालिहोत्र पुराण या शालिहोत्रोपाख्यान के रचयिता के रूप में खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ ई० संख्या ४८

पर दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में इसका नाम नासिकेत कथा प्रसंग मिला है। हस्तलेख में रचनाकाल इस प्रकार दिया है—

संवत सोलह सौ अठासी। जेठ मास दुतिया परकासी।
सुकल पक्ष औ सोमक वारा। मृगसिर लगत कीन्ह उपचारा॥

अर्थात् जेठ सुदी २ संवत् १६८८ वि०, सोमवार तदनुसार २३ मई सन् १६३१ ई०। डाक्टर ग्रियर्सन ने भ्रम से इसे रचयिता का जन्मकाल मान लिया है। मिश्रबंधुओं ने ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १७१७ (सन् १६७४ ई०) माना है जो अशुद्ध है।

५६ भक्तराम—जालंधर (पंजाब) निवासी भक्तराम ने विभिन्न कवियों कृत कृष्ण-लीला के पदों का भक्त-चिंतामणि नामक संग्रह राग-रागिनियों में किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस हस्तलेख के अंत में रागमाला नामक एक स्वतंत्र ग्रंथ ही जुड़ा हुआ है जिसमें संगृहीत पदों के गाने के समय तथा ढंग का विवरण दिया है, क्योंकि संग्रह की पुष्पिका में भक्त-चिंतामणि की समाप्ति का उल्लेख है, रागमाला का नहीं। संग्रहकर्ता के अनुसार ग्रंथ में ९९९ राग रागिनियों का संग्रह किया गया है जिसे तानसेन गवैये ने गाया था। हस्तलेख में दो संवत दिए गए हैं—(१) चैत वदी २ संवत् १८७७ शुक्रवार जो गणना से अशुद्ध है क्योंकि उक्त तिथि शुक्रवार को न पड़कर शनिवार को पड़ती है, (२) माघ मास द्वितीया संवत् १९०७, शुक्र जो लिपिकाल है। इस संवत (१९०७) में निधा-धर ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करमसिंह पोतदार की आज्ञा से की थी। किंतु पक्ष का उल्लेख न होने से तथा किसी भी पक्ष की द्वितीया का शुक्रवार को न पड़ने से यह तिथि भी दोषपूर्ण है। ऐसी स्थिति में न तो रचनाकाल का ही निर्णय हो सकता है और न लिपिकाल का ही। अन्य साधनों से भी इस समस्या का कोई हल नहीं निकलता।

५७ भौन कवि—सन् १९२३-२५ ई० की खोज-विवरणिका में भौन कवि संबंधी पूर्व विवरणिकाओं के सभी उल्लेखों की तालिका दी जा चुकी है। इनकी शक्ति-चिंतामणि पहले भी एक बार मिल चुकी है और उसका विवरण भी दिया जा चुका है। दुर्भाग्य से रचनाकाल का विवरण न होने से समय का निर्णय नहीं हो सका है। ज्ञात हुआ है कि भौन ब्रह्म भट्ट थे और रायबरेली जिले के बेन्ती निवासी थे।

५८ भवानी—अयोध्या-निवासी भवानी ने रामचंद्र की बारहमासी लिखी है जिसमें राम के जन्म से लेकर उनके निर्वासन तक की कथा वर्णित है। इस ग्रंथ में छंदो-विधान का कोई विचार नहीं है, सामान्य पद्यकार की सी रचना है। अंत में शब्दों की ध्वनि जोर से हो इसी का विचार रखा गया है।

५९ भवानीदास—भवानीदास नाम के कई कवि हुए हैं, किंतु भेदसूचक पर्याप्त सामग्री के अभाव में उन्हें अलग अलग करना अभी संभव नहीं है। सर जार्ज ग्रियर्सन ने किसी भवानीदास का १८४५ में जन्म होना लिखा है और उनके पुत्र जयकृष्ण को भी कवि बताया है। सन् १९०० और १९०९-११ ई० की खोज-विवरणिकाओं ने इस

की पुष्टि की है और यह स्थापना भी की है कि ये पुष्कर्म ब्राह्मण थे। सन् १९०७ ई० की खोज विवरणिका में इसी नाम के एक कायस्थ का भी उल्लेख है जिसका पुत्र रामसहाय काशी के महाराज उदित-नारायणसिंह का दरबारी कवि था और जिसने रामसतसइका जैसी पुस्तक लिखी है। रामसहाय १८११ के लगभग विद्यमान था जिसके अनुसार उसके पिता अठारहवीं शती के अंत तक रहे होंगे। ये भवानीदास मिश्रबंधुओं द्वारा उल्लिखित उस भवानी दास से नहीं मिल सकते जिनका जन्म उन्होंने १८१४ ई० में बताया है। सन् ११२०-२२ ई० और १९२३-२५ ई० की खोज-विवरणिकाओं में भी दो भवानीदासों का उल्लेख है। पहले सूर्य माहात्म्य के रचयिता हैं, दूसरे स्वरोदय-मनोबोध के। ब्रजराज-विनोद के रचयिता प्रस्तुत भवानीदास इन सबसे भिन्न हैं। इनकी रचना कुछ महत्वपूर्ण भी है। इस ग्रंथ में कृष्ण की ब्रजकेलि वर्णित है और यह कवि के छंदशास्त्र विषयक सम्यक् ज्ञान का द्योतक है। अधिकतर छंद तो गाने के लिए हैं। हस्तलेख में रचनाकाल और लिपिकाल दोनों नहीं हैं, केवल कवि का नामोल्लेख है जो प्रायः सभी छंदों में मिलता है। अपूर्णावस्था में भी इस ग्रंथ में १२०० श्लोक हैं।

६० भवानीदास—चाणक्य-नीति के रचयिता भवानीदास संख्या ५६ वाले भवानीदास से भिन्न प्रतीत होते हैं। गद्य और पद्य दोनों में इनकी शैली आधुनिकता की परिचायक है। ग्रंथ में रचनाकाल नहीं दिया है, किंतु हस्तलेख का लिपिकाल सन् १८५२ ई० है। जब तक कुछ विशेष सूचना नहीं मिलती तब तक इन्हें संख्या ५९ में वर्णित भवानीदासों में से किसी से मिलाना व्यर्थ है।

६१ भिखारीदास—भिखारी दास प्रसिद्ध कवि हैं और कई विवरणिकाओं में इनका उल्लेख हो चुका है। वर्तमान खोज में अठारह हस्तलेख ऐसे मिले हैं जिनमें इनके सबसे अधिक ग्रंथ हैं। वस्तुतः संख्या १ ४ और ५ तो बिलकुल नए मिले हैं जिनका अब तक पता ही नहीं लगा था। प्राप्त ग्रंथों की सूची निम्नलिखित है—

(१) अमर तिलक की दो प्रतियाँ।
(२) काव्य निर्णय की पाँच प्रतियाँ।
(३) तेरीज रस-सारांश की एक प्रति।
(४) शृंगार निर्णय की तीन प्रतियाँ।
(५) छंदार्णव की दो प्रतियाँ।
(६) तरिज काव्य निर्णय की एक प्रति।
(७) विष्णु-पुराण की दो प्रतियाँ।
(८) रस सारांश की दो प्रतियाँ।

अमर-तिलक संस्कृत के प्रसिद्ध निघंटु अमर कोश का पद्यानुवाद है। मिश्रबंधुओं द्वारा कथित नामप्रकाश यही ग्रंथ है। प्रतापगढ़ के राजा ने, भिखारीदास वहीं के निवासी थे, यह ग्रंथ मिश्रबंधुओं के पास परीक्षार्थ भेजा था। उनका विश्वास है फारसी का बाग

वहार इसी का अनुवाद है। इसकी रचना संवत् १७९५ (सन् १७३८ ई०) में हुई थी। कोश जैसी रचना बिना किसी प्रकार के छांदिक दोष के विभिन्न छंदों में प्रस्तुत करना बहुत बड़ी बात है जो इस ग्रंथ में स्पष्ट है। इनका दूसरा ग्रंथ विष्णु पुराण का अनुवाद है मिश्र-बंधु जिसे इनकी प्रथम पद्य रचना मानते हैं, (देखिए ऊपर सं० ७)। यह रचना इनकी और कृतियों से कुछ हलकी है। इस कवि के शेष ग्रंथ अलंकार तथा छंद शास्त्र के हैं जो अपने ढंग के अद्वितीय हैं। इन ग्रंथों का रचनाक्रम निम्नलिखित है—

(१) रस सारांश नभ (श्रावण) सुदी ६ गुरुवार संवत् १७९१ तदनुसार दिनांक २५ जुलाई सन् १७३४ ई०, गुरुवार को समाप्त हुआ।

(२) छंदार्णव मधु (चैत्र) वदी ९ संवत् १७९९ (मिश्रबंधु विनोद में छपा १७१९ अशुद्ध है) तदनुसार दिनांक २ अप्रैल सन् १७४२ ई० को समाप्त हुआ।

(३) काव्य निर्णय का आरंभ आश्विन शुक्ल १० (विजयादशमी) संवत् १८०३ तदनुसार दिनांक १३ सितंबर सन् १७४६, शनिवार को हुआ।

(४) शृंगार निर्णय का आरंभ माधव (वैशाख) सुदी १३ संवत् १८०७ गुरु को हुआ। संयोग से उस दिन दिनांक ८ मई सन् १७५० था, किंतु गुरुवार नहीं था। यदि संवत् १८०७ को चालू वर्ष मान लें तो भी १८०६ की सुदी १३ बुधवार को पड़ी थी, गुरुवार को नहीं। संवत् १८०७ में सन् १७५० थी।

(५) छंद प्रकाश, (६) तेरिज रस सारांश और (७) तेरिज काव्य निर्णय के सन् संवत् ज्ञात नहीं हैं। अंतिम दो के स्वतंत्र ग्रंथ होने में भी संदेह है। 'तेरिज' का अर्थ स्पष्ट नहीं है। यदि कुछ हो तो 'परिशिष्ट' से मिलता जुलता हो सकता है। भिखारी दास ने अपने छंदार्णव में एक छंद दिया है जिसमें एक एक अक्षर छोड़कर पढ़ने से इनकी जाति, संबंधियों तथा स्थान का विवरण ज्ञात होता है। यह छंद इस विवरणिका के परिशिष्ट २, संख्या ५६ (डी०) पर दिया है। एक एक अक्षर छोड़कर पढ़ने से उसका रूप इस प्रकार हुआ—भिखारीदास कायस्थ, बरन वही वार भाई चैन लाल को, सुत कृपाल दास को, नाती वीर भानु को, पन्नाती रामदास को, अरवर देश टेउँगा नगर ता थल। इसका तात्पर्य हुआ भिखारी दास कायस्थ चैनलाल के भाई, कृपाल दास के पुत्र, वीर भानु के पौत्र, रामदास के प्रपौत्र तथा अरवर देशांतर्गत (प्रतापगढ़, संयुक्त प्रांत) टेउँगा ग्राम निवासी थे (यह स्थान प्रतापगढ़ किले से एक मील दूर है)।

६२ भीष्म—भीष्म कवि का विवरण खोजविवरणिका सन् १९०३ ई० और १९१७-१९ ई० में दिया जा चुका है। सन् १९१७-१९ ई० की विवरणिका में यह मत व्यक्त किया गया है कि भीष्म नाम के दो कवि हुए हैं जिनमें समय का अंतर एक शती का है। किंतु मिश्रबंधुओं ने अपने विनोद के द्वितीय संस्करण में एक ही भीष्म स्थिर किया है। यह विषय अब भी संदेहास्पद है। वर्तमान खोज में नखशिख नाम का एक ग्रंथ भी मिला है जिसकी शैली देखने से अन्य विवरणिकाओं में उल्लिखित भागवत के अनुवादक और इसके रचयिता एक ही ठहरते

थे। मातादीन के कवित्त-रत्नाकर में वर्णित भीष्म जो कोड़ा जहानाबाद निवासी तथा नवाब मंसूर अली खाँ सफदर जंग के सूबेदार हिम्मत गिरि गोसाईं के समकालीन थे अब भी पृथक् ही हैं। उनकी भाषा में पूर्वी हिंदी मिली हुई है किंतु हमारे भीष्म शुद्ध पश्चिमी हिंदी के हैं।

६३ भोगीलाल—बखत विलास के कर्ता भोगीलाल का उल्लेख सन् १९२३-२५ की विवरणिका में हो चुका है। जिसमें उनके अलंकार-प्रदीप नामक अलंकार-ग्रंथ का विवरण है। ये प्रसिद्ध कवि देव के प्रपौत्र थे और मैनपुरी जिले के कुसमरा के रहनेवाले थे। उपलब्ध हस्तलेख रचयिता के हाथों का ही लिखा हुआ है। इसका रचनाकाल कार्तिक सुदी ५ शुक्रवार संवत् १८५६ तदनुसार १ नवंबर सन् १७९९ ई० शुक्रवार है। 'उस दिन पंचमी सूर्योदय के ७ घंटा ४० मिनट बाद लगी थी, अर्थात् लगभग दो बजे दिन में। कवि ने ग्रंथ की प्रतिलिपि अपने आश्रयदाता के लिए ग्रंथ समाप्ति के ठीक दस महीने बाद भाद्रपद शुक्ल १५ बुधवार, संवत् १८५७ तदनुसार ३ सितंबर १८०० ई० बुधवार को की थी। इस हस्तलेख की पुष्पिका ने बख्तावर सिंह को निर्विवाद कछवाह कुलभूषण श्रीमहाराव राव राजा बख्तावर सिंह ही सिद्ध कर दिया है। ''अलवर के महाराजे नरूका राजपूत जाति के हैं जो कछवाहा राजपूतों की एक शाखा है, जिसके अग्रणी जयपुर नरेश हैं। वर्तमान अलवर राज्य के संस्थापक प्रतापसिंह जी थे जिनका जन्म १७४० में हुआ था तथा मृत्यु १७९१ में। मृत्यु के बाद उनके दत्तक पुत्र बख्तावर सिंह सिंहासनारूढ़ हुए। बख्तावर सिंह की मृत्यु के बाद उनके भतीजे बन्नीसिंह और औरस पुत्र बलवंत सिंह के बीच सिंहासन के लिए युद्ध हुआ। दस वर्ष तक दोनों पक्ष बारी बारी से युद्ध में लगे रहे जिसके परिणामस्वरूप राज्य नष्ट भ्रष्ट हो गया। अंत में बेनी या बन्नी सिंह की जीत हुई और १८५७ में उनके दुर्दांत जीवन की समाप्ति हुई।'' यह छोटा उद्धरण नवाब किशोर से दिया गया है जो भारत में भोगी लाल के आश्रयदाता के विषय में सन् १९२३-२५ की विवरणिका में उठे संदेहों को दूर करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि भोगीलाल ने बख्त विलास व अलंकार प्रदीप की रचना बख्तावर सिंह के पुत्र बलवंत सिंह के लिए की थी। किंतु बन्नी सिंह की जीत के बाद उसमें से बलवंत सिंह का नाम हटा कर बन्नी सिंह या बेनी सिंह का नाम लिख दिया। इससे उक्त विवरणिका की भ्रांति का निराकरण हो जाता है। अलंकार-प्रदीप में एक दोहा है—सुखद सात-सर ईस नृप बंस कर्म अवतंसु। अलवर गिरिवर उदय में विलसितु दिनकर अंसु॥ कवि युद्ध के निर्णय का उल्लेख इस प्रकार करता है—धर्म प्रतिपालक है कवि भोगीलाल कहै सुजस बिसाल कै बढ़ाए करतो ऐसे है॥ इससे स्पष्ट है कि ग्रंथ की रचना १८१५ ई० के बाद ही हुई होगी और यह १८२५ ई० के बाद ही प्रकाशित हुआ होगा जब कि दोनों प्रतिपक्षियों का झगड़ा समाप्त हो गया। इस समय के बीच कवि तटस्थ बना रहा और जब बेनी सिंह की जीत देखी तब तुरंत उनकी ओर हो गया।

६४ शेख गुलाम—शेख गुलाम भरतपुर निवासी थे और ''मिलन श्री महाराज को लाट साहब सै'' नामक एक ग्रंथ लिखा है जिसमें भरतपुर नरेश महाराज श्री रणधीर सिंह का भारत के गवर्नर जनरल से सन् १८११ ई० में मिलन का वर्णन है।

६५ **भूप कवि**—भूप कवि का 'श्रृंगार-तिलक' नवोपलब्ध ग्रंथ है। ये कानपुर जिले के काकापुर के भाट थे और नवाब शूजाउद्दौला के समकालीन थे जो सन् १७५३ ई० के लगभग विद्यमान था। ऐसा कहा जाता है कि इन्होंने शिवराजपुर के राजा की वंशावली तथा बहुत सी शिक्षात्मक कविताएँ लिखी हैं। उपलब्ध रचना श्रृंगार-रस की है।

६६ **भूपति**—भूपति अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह का उपनाम है, देखिए खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ६० जिसमें इनका विस्तार से वर्णन किया गया है। ये बहुत से सुकवियों के आश्रयदाता थे तथा स्वयं भी बहुत अच्छे कवि थे। इनकी सतसई पहले मिल चुकी है। उसका रचनाकाल निम्नलिखित है—

सत्रह शत एकानवे, कातिक सुदि बुधवार।
ललित तृतीया में भयो, सतसैया अवतार॥

किंतु यह त्रुटिपूर्ण है क्योंकि संवत् १७९१ की कातिक सुदी ३ बुधवार को नहीं पड़ी थी।

६७ **भूषण**—भूषण ऐसे हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि का परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं। इनका उल्लेख प्रायः सभी खोज-विवरणिकाओं में मिलता है। वर्तमान खोज में इनके 'शिवभूषण' की दो प्रतियाँ मिली हैं। ग्रंथ की रचना सन् १६७३ ई० में हुई थी।

६८ **विहारीलाल महाकवि**—विहारीलाल महाकवि इतने प्रसिद्ध हैं कि इनका विवरण देना निरर्थक है। इनका उल्लेख कई खोज-विवरणिकाओं में हो चुका है। वर्तमान खोज में इनकी सतसई की पाँच प्रतियाँ मिली हैं। उनमें से सबसे पुरानी का लिपिकाल १७७१ ई० है।

६९ **विस्राम**—विस्राम नवोपलब्ध कवि हैं। वर्तमान खोज में इनके दो ग्रंथ मिले हैं—(१) मानलीला और (२) संगीत लैला मजनूँ। पहले की दो प्रतियाँ और दूसरे की एक प्रति मिली है। मानलीला व्रजभाषा में है और संगीत लैला मजनू खड़ी बोली में मानलीला की रचना सन् १८४३ ई० में हुई जो मूल की प्रतिलिपि है तथा जिनका लिपिकाल क्रम से सन् १८४४ ई० और १८४५ ई० है। संगीत लैला मजनूँ का रचनाकाल अज्ञात है।

७० **बोधमल्ल**—बोधमल्ल उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध के हैं। इनके ग्रंथ भक्ति-विनोद का विवरण सन् १९२३-२५ ई० की खोज विवरणिका में संख्या ६६ पर दिया जा चुका है, विस्तृत जानकारी के लिए जिसका आलोड़न किया जा सकता है।

७१ **बोधीदास**—बोधीदास ने संस्कृत के योगवासिष्ठ का हिंदी पद्य में अनुवाद किया है जिसकी अपूर्ण प्रति वर्तमान खोज में मिली है। इसकी प्रतिलिपि का समय सन् १८१८ ई० है। सन् १९०९-११ ई० की खोज-विवरणिका में इनके झूलना तथा शिक्षात्मक पद्यों का विवरण दिया जा चुका है।

७२ **व्रजवासीदास**—व्रजवासी दास प्रसिद्ध कवि हैं और इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११, १९२०-२२ और १९२३-२५ में दिया जा चुका है। वर्तमान

खोज में इनके प्रजविलास की दो प्रतियाँ मिली हैं। ग्रंथ का रचनाकाल सन् १७०० ई० है। सन् १९२०-२२ की खोज विवरणिका में वर्णित प्रति सबसे पुरानी है।

७३ बुध—बुध बनारस निवासी थे। इसके अतिरिक्त इनके संबंध में और कुछ भी ज्ञात नहीं है। वर्तमान खोज में इनके ज्योतिष विचार नामक ग्रंथ की तीन प्रतियाँ मिली हैं जिनका लिपिकाल क्रम से यह है—सन् १७८३, १८१३ और १८७०। ग्रंथ की रचना संवत् १८१० वि० में कुँआर सुदी ११ को हुई थी। दोहा—

संवत ससि वसु ससि बहुरि तिथि विक्रम परिवान।
क्वार सुदी एकादसी यह शुभ संवत जान॥

इसमें दिन का नाम न होने से दी हुई तिथि की परीक्षा नहीं हो सकती। यह तिथि सोमवार २० अक्टूबर सन् १७५० ई० को पड़ी थी।

७४ बुध जन—बुध जन का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०० संख्या ११८ में योगींद्रसार के रचयिता के रूप में दिया जा चुका है। किंतु मिश्रबंधु विनोद में संख्या ११६६ के अंतर्गत दिए हुए चार ग्रंथों में इस ग्रंथ का उल्लेख नहीं है, यद्यपि वर्तमान खोज में उपलब्ध बुधजन सतसई का उल्लेख उसमें है। बुध जन सतसई का रचना काल सन् १८१८ सिद्ध होता है, किंतु 'विनोद' में सन् १८२४ ई० लिखा है। बुध जन जयपुर राज्य के जैन खंडेलवाल बनिया थे। ये सामान्य रचनाकार हैं। इनकी रचनाओं में सतसई ही सर्वोत्तम रचना है।

७५ चंद या चंद बरदाई—चंद या चंदबरदाई चारण काव्य के सुप्रसिद्ध कवि हैं जो दिल्ली के पृथ्वीराज के राजकवि थे। इनका उल्लेख खोज विवरणिका सन् १९०० १९०१, १९०२, १९०६ ०८ १०-१०-१२, १९२०-२२, १९२३ २५ में हो चुका है। वर्तमान खोज में इनके ग्रंथ पृथ्वीराज रासो के दो भाग—पदमावतीखंड और आल्हा खंड (या महोबा खंड) पुनः प्राप्त हुए हैं। हस्तलेखों का क्रमशः लिपिकाल है संवत् १९१५ (सन् १८५८ ई०) और संवत् १९१६ (सन् १८५९ ई०)।

७६ चद—भगवतीता के रचयिता चद का विवरण खोज विवरणिका सन् १९०६ ०८ में संख्या १८ पर दिया जा चुका है। इस खोज में प्राप्त हस्तलेख का समय संवत् १८०२ (सन् १७४५ ई०) है। रचनाकाल है—संवत् १७१५ तदनुसार १६५८ ई०।

७७ चंदन—काव्याभरण सिंगारसार और प्रज्ञा-विलास के रचयिता चंदन का विवरण गत खोज-विवरणिका में भी दिया जा चुका है (देखिए विवरणिका सन् १९२३ २५ संख्या ७१)। वर्तमान खोज में काव्याभरण का दूसरा हस्तलेख भी मिला है जिसका समय संवत् १९३४ (सन् १८८० ई०) है। इसका रचना तिथि संवत् १८४५ माघ सुदी ९ बुधवार है जो गणना से ठीक नहीं उतरती किंतु वर्ष संवत् १८४५ (सन् १७८८ ई०) निश्चित है।

७८ चरनदास—गत विवरणिकाओं में चरणदास के विवरण दिए जा चुके हैं। वर्तमान खोज में उपलब्ध इनके ग्रंथ निम्नलिखित हैं—

(१) स्वरोदय, ५ प्रतियाँ, (२) ब्रह्म-ज्ञान सागर, ४ प्रतियाँ, (३) भक्ति सागर, दो प्रतियाँ, (४) योग संदेह सागर, ३ प्रतियाँ, (५) अमरलोक निजधाम, १ प्रति, (६) पच उपनिषद, १ प्रति और (७) शतरूप मुक्ति, १ प्रति। अतिम दो ग्रथ पच उपनिषद और शतरूप मुक्ति पहली बार मिले हैं जिनमें से पहला उपनिषदों का अनुवाद है और दूसरे में मुक्ति पाने के विभिन्न उपायों का कथन है। इन हस्तलेखों में से कुछ जैसे भक्ति सागर का लिखना चैत्र सुदी १५ सवत १७८१ सोमवार तदनुसार ८ अप्रैल १७२३ ई० को आरभ हुआ। उस दिन पूर्णिमा सूर्योदय के साढ़े बारह घटे बाद लगी थी। तात्पर्य यह कि रचनाकार ने सायँ सात बजे से इसे लिखने का विचार किया। सन् १९२०-२२ की खोज विवरणिका में असावधानीवश इस ग्रथ की ईसवी तिथि अशुद्ध हो गई है। उपर्युक्त तिथि के अनुसार उसे शुद्ध कर लेना चाहिए। इससे रचनाकार के समय का पता लगता है। ये राजपूताना के अलवर राज्यान्तर्गत देहरा के निवासी थे।

७९ **चतुरदास**—चतुरदास ने अपने गुरु के निरीक्षण में भागवत दशम स्कध का अनुवाद सवत् १६९२ (सन् १६३५ ई०) में किया। इस ग्रथ का विवरण पहले भी कई बार दिया जा चुका है। गत खोज विवरणिका १९२३-२५ में सख्या ७६ के अतर्गत पहले के सभी विवरणों का उल्लेख है। उपलब्ध प्रति के अनुसार ग्रथ का रचनाकाल सवत् १६९२ जेठ शुक्ल षष्ठी कुज अर्थात् मगलवार १२ मई सन् १६३५ ई० है।

८० **चेतन चद**—शालिहोत्र या अश्व विनोद के रचयिता चेतन चद का उल्लेख खोज विवरणिका सन् १९०९-११ तथा १९२३-२५ में हो चुका है। वर्तमान खोज में उपलब्ध दो हस्तलेखों में से एक में रचनाकाल सवत् १६२८ दिया हुआ है जो सन् १९२३-२५ के विवरण की पुष्टि करता है। अत रचनाकार सन् १५७१ ई० में विद्यमान था।

८१ **छबीलेदास**—छबीलेदास नवोपलब्ध रचनाकार हैं जिन्होंने भक्ति-विलास नामक ग्रथ भक्तिमार्ग की और मार्गों से विशिष्टता सिद्ध करने के लिए लिखी है। कथन की पुष्टि में इन्होंने पुराणों की कथाओं का उद्धरण दिया है। मिश्रबधुओं ने दो छबीले का का वर्णन किया है, किंतु सामग्री के अभाव में यह नहीं कहा जा सकता कि हमारे छबीले उनमें से कौन थे।

८२ **छविनाथ**—राजनीति के नाम से हितोपदेश का छदोबद्ध अनुवाद करनेवाले छविनाथ पहली बार मिले हैं। इनकी रचना का समय जिस दोहे में दिया है वह अशुद्ध है। दोहा है—

> सवत् श्रुति शुभ नाग शशि, कृष्ना कार्तिक मास।
> रामरसा तिथि भूमिसुत वासर कीन्ह प्रकास॥

शुभ के स्थान पर जुग किए विना कोई अर्थ नहीं बैठता। जुग कर देने पर समय होगा सवत् १८२४ कार्तिक कृष्ण १३, भौमवार तदनुसार मगलवार २० अक्टूबर सन् १७-६७ ई०। वस्तुत रचयिता को यही सवत् अभीष्ट था।

८३ छत्रसिंह—छत्रसिंह कायस्थ ग्वालियर राज्य में भदावर के अटेर नामक स्थान के रहने वाले थे। इन्होंने विजय मुक्तावली अर्थात् महाभारत की कथा हिंदी पद्य में लिखी। यह ग्रंथ सन् १७०० में निर्मित हुआ और सन् १९०६-०८ और १९०९-११ की खोज-विवरणिकाओं में इसका उल्लेख हो चुका है। इनका भाषा पर अच्छा अधिकार था और अनुप्रास से इन्हें विशेष प्रेम था।

८४ छेदीलाल—छेदीलाल नवोपलब्ध ग्रंथकार हैं। इन्होंने प्रेम पीयूष नामक शृंगार-रस का ग्रंथ लिखा है जिसमें अपने विषय में कुछ भी संकेत नहीं किया है। मिश्र बंधुओं ने भी इसका उल्लेख नहीं किया है।

८५ दादू दयाल—दादू दयाल सुप्रसिद्ध धर्म-सुधारक हुए हैं और उनका तथा उनकी रचनाओं का जिसमें दादू की बानी भी शामिल है, विवरण विभिन्न खोज-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। सन् १९१७-१९ ई० की विवरणिका में इनकी जीवनी तथा रचनाओं के विषय में विस्तृत विवरण मिलेगा।

८६ दलपति राय—दलपति राय अलंकार के रचयिता हैं, जिसका कुछ वर्णन खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ में संख्या ८२ के अंतर्गत किया जा चुका है। ये और इनके सहयोगी बंसीधर मेदपाट या मेवाड़ के श्रीमाली ब्राह्मण थे। उपर्युक्त ग्रंथ की दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं जिनमें एक का नाम अलंकार रत्नाकर है दूसरी का भाषा भूषण, किंतु दोनों प्रतियों से उद्धरण अक्षरशः नहीं मिलते यद्यपि दोनों के मंगलाचरण तथा विषय एक ही हैं। दुर्भाग्यवश रचनाकाल का छंद छूट जाने से दोनों में से किसी का भी ठीक समय-निर्धारण नहीं हो सकता जो अब तक अनिश्चित ही है।

८७ दामोदरदास—दामोदरदास ने हस्तरेखा तथा प्रश्नविचार विषयक ज्ञान प्रश्नप्रश्नी नामक ज्योतिष का ग्रंथ रचा है। इसमें पाँच और चार के हिसाब से बीस खाने बने हैं और सब खानों में एक एक करके एक से लगाकर बीस तक की संख्या लिखी हुई है। प्रत्येक संख्या में प्रश्न के शुभाशुभ का संकेत है। प्रश्नकर्ता को किसी भी संख्या पर उँगली रखनी होती है और उसी संख्या का फल पढ़ा जाता है। जैसे संख्या एक का फल इस प्रकार है—तुम्हारी मनोकामना ईश्वर पूरी करेंगे। तुम्हें कुछ धन मिलेगा उससे व्यापार करो सफलता मिलेगी। फल की परीक्षा के लिए अपने मुख की ओर देखो तुम्हें एक मेवका मिलेगा। भैरव की स्तुति करो और एक काले कुत्ते को रविवार के दिन मिठाई खिलाओ (जिससे सफलता निश्चित मिलती)। ग्रंथ गद्य में है। रचयिता के कई नाम हैं किंतु उन नामों के किसी कवि से यह नहीं मिलाया जा सकता।

८८ दरिया साहब—दरिया साहब विख्यात रचयिता हैं जिनके १३ ग्रंथ पहले मिल चुके हैं (देखिए खोज-विवरणिका १९१७-१९ संख्या ११)। इस बार अलिफनामा मिल जाने से इनकी संख्या १४ हो गई है। अलिफनामा का समय नहीं दिया है किंतु प्राप्त प्रति का लिपिकाल सन् १८३३ ई० है। ग्रंथ में वर्तनी तथा अन्य प्रकार की अशुद्धियाँ भी हैं। दरिया साहब अठारहवीं शती के थे और अपने को कबीर का अवतार बताते थे।

८६ दमन्य दास—दमन्य दास ने तुलसी-चरित्र लिखा है जिसकी दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं। यह ग्रंथ सर्व प्रथम खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ में मिला। वर्तमान खोज के अनुसार इसके अतिरिक्त और कोई विशेष बात नहीं बताई जा सकती कि प्राप्त दो प्रतियों में से एक गत खोज में प्राप्त प्रति से तीन वर्ष पहले की है, अर्थात् संवत् १९१८ (सन् १८६२ ई०)। रचनाकाल अज्ञात है। बाबा माधोदास कृत मूल गोसाईं चरित को दृष्टि में रखकर ग्रंथ का आलोचनात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता है।

९० दाताराम—दाताराम या दीनदास बदल शुक्ल के पुत्र थे, और इलाहाबाद जिले के चतुरपुर नामक स्थान के निवासी थे। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित चार ग्रंथ मिले हैं—(१) गोपी-विरह-माहात्म्य (२) मदचरित्र, (३) संगृहीत लतिका तथा (४) कवित्त दाताराम। इनमें से किसी का भी रचनाकाल नहीं दिया है जो इनके समसामयिक बैजनाथ के समय से मिलाया जा सके। बैजनाथ ने गोपी विरह छंदावली संवत् १९२४ (सन् १८६७ ई०) में लिखी। पहले ग्रंथ में गोपियों का विरह वर्णन है, दूसरे में मद का दुष्परिणाम, तीसरे में अन्य कवियों की रचनाओं का संग्रह और चौथे में रचयिता के स्वनिर्मित मुक्तक छंद हैं।

९१ दत्तदास—दत्तदास नवोपलब्ध रचनाकार हैं जिन्होंने कृष्ण और राम की भक्ति से परिपूर्ण कमल नेत्र तथा रामाष्टक नामक ग्रंथ लिखे हैं। दूसरा तो कठिनता से ही ग्रंथ कहा जा सकता है। इसमें राम के २१ पर्यायवाची शब्दों का राम का संपुट है।

९२ दत्तराम माथुर—दत्तराम माथुर ने वैद्यक का ग्रंथ लिखा है। वर्तमान खोज में इनके तीन ग्रंथ प्रकाश में आए हैं—(१) अर्जुन मंजरी, (२) नाड़ी प्रकाश और (३) रमल नवरत्न दर्पण। सबके सब गद्य में हैं। प्रथम मंदाग्नि रोग विषयक है, दूसरा नाड़ी-ज्ञान विषयक तथा तीसरा फलित ज्योतिष में उसी नाम के संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद है। प्रथम ग्रंथ की रचना सन् १८६४ में हुई थी, दूसरे की सन् १८८६ तथा तीसरे की १८५५ ई० में। अत: यह स्पष्ट है कि रचनाकार ने प्रारंभ में ज्योतिष का ग्रंथ लिखा और बाद में वैद्यक के ग्रंथ रचे। नाड़ी प्रकाश के दो हस्तलेख मिले हैं जिनमें रचनाकाल के दो संवत् दिए हुए हैं, किंतु प्रतीत होता है कि एक ग्रंथ दूसरे ग्रंथ में जो खनिज धातुओं को फूँककर औषध-निर्माण के संबंध में है, मिल गया है। पहले में संवत् विस्तार से इस प्रकार दिया है—संवत् १९३७ आश्विन शुक्ल १० बुधवार जो गणना से १३ अक्टूबर १८८० ई० ठीक ठीक ठहरता है। रमल नवरत्न में तीन संवत् दिए हुए हैं जिनमें से एक मूल संस्कृत ग्रंथ का रचनाकाल है। यह संस्कृत श्लोक में ही दिया हुआ है—विक्रम संवत् १८६७ फाल्गुन शुक्ल ३ चंद्रवार (तदनुसार सोमवार, २५ फरवरी १८११ ई०)। अनुवाद का समय भी श्लोक में इस प्रकार दिया हुआ है—शशि युग नग चन्द्रे वैक्रमे ज्येष्ठ शुक्ले ग्रह तिथि कवि वारे। इस तिथि को शुक्रवार, ज्येष्ठ शुक्ल ९ संवत् १९२१ वि० या १९४१ वि० कह सकते हैं, किंतु दोनों में कोई भी परीक्षा का आधार नहीं हो सकती, क्योंकि दोनों तिथियाँ शुक्रवार को पड़ती हैं सोमवार को नहीं।

६३ दयाबाई—दयाबाई चरनदास की शिष्या थीं। यह पहला ही अवसर है जब इनकी रचना दयाबाई की बानी मिली है। इसका रचनाकाल नहीं दिया गया है, किंतु इसे निश्चित रूप से अठारहवीं शती के मध्य का मान सकते हैं जब इनके गुरु विद्यमान थे। यह भक्ति विषयक ग्रंथ है।

६४ दयाराम—वैद्यक ग्रंथ दया विलास के रचयिता दयाराम का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०१, १९०२, १९०९-११ और १९२०-२२ ई० में है। ये दिल्ली निवासी थे और सन् १०२१ ई० में इन्होंने अपना ग्रंथ रचा।

६५ देवदत्त—देवदत्त उपनाम देव हिंदी कविता के नवरत्नों में से एक हैं और सन् १९२०-२२ तथा १९२६-२८ ई० की खोज विवरणिका में इनका विस्तार से वर्णन है। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित ६ ग्रंथ मिले हैं—(१) अष्टयाम, (२) देवमाया-प्रपंच नाटक, (३) जाति-विलास, (४) काव्य रसायन, (५) नखशिख और (६) प्रेमचंद्रिका। इनमें नखशिख खोज में प्रथम बार मिला है। मिश्रबंधु-विनोद के दूसरे भाग में प्रथम संस्करण के २० के स्थान पर दूसरे संस्करण में २६ ग्रंथ ही दिए गए हैं। उसमें दो ग्रंथ नखशिख और प्रेम-दर्शन एक में मिला दिया है, किंतु अनुसंधान से यह प्रकट है कि दोनों दो ग्रंथ हैं एक नहीं। एक वर्तमान खोज में मिला है और दूसरा सन् १९०९-११ और १९२०-२२ ई० की खोज-विवरणिकाओं में। देव का संस्कृत में भी नायिका-भेद लिखने का ग्रंथ प्राप्त है जिसकी एक प्रति नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी के पुस्तकालय में है जो अहिंदी होने के कारण हिंदी ग्रंथों के साथ विवरणिका में नहीं ग्रहण किया गया। अब भी इनके २६ ग्रंथ बचे हैं जिन सब के हस्तलेख नहीं मिल सके हैं।

६६ देवकीनंदन—देवकीनंदन ने रागसंग्रह नामक ग्रंथ में विभिन्न कवियों के गीतों का संग्रह किया है। यह संग्रह सन् १८०० ई० में प्रस्तुत हुआ। यही इनका विद्यमान काल भी है। मिश्रबंधु इनके रचे ११ ग्रंथ बताते हैं किंतु उनमें रागमाला की गणना नहीं है। किंतु दोनों के रचनाकाल का एक होना दोनों की एकता सिद्ध करता है।

६७ देवस्वामी—गत त्रैवार्षिक विवरणिका के अयोध्या-बिंदु के रचयिता और इस त्रिवर्षी के जानकी-बिंदु के रचयिता दयाराम एक ही हैं। ये काशी के वही देव कवि काष्ठजिह्वा स्वामी हैं, खोज में जिनके अन्य प्राप्त ग्रंथ हैं—पदावली, रामलगन और रामायण परिचर्या। इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०१ १९०४, १९०६-०८ में है। देव कवि सन् १८४० ई० के लगभग काशी नरेश महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह के गुरु थे। ये सुकवि और सुपंडित दोनों थे। एक बार इन्होंने अपने गुरु से ही शास्त्रार्थ किया जिसके बाद इन्होंने अपनी जिह्वा पर काठ का ढक्कन लगा लिया और फिर कभी न बोले। इसी से इन्हें काष्ठ जिह्वा के नाम से पुकारते हैं। इनकी रचना मनोहर शैली में भक्तिपूर्ण है।

९८ **देवीदास**—देवीदास (बुंदेलखंडी) ने प्रेम रत्नाकर लिखा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५, संख्या ९६ में है।' ग्रंथ करौली के महाराज रत्नपाल की आज्ञा से सन् १६८५ या १६८९ ई० में बना, क्योंकि लिपिकार ने संवत् सत्रह सै छालीस लिखा है और दूसरे ने सत्रह सै ब्यालीस। कोई और सामग्री भी उपलब्ध नहीं है जिससे इस अशुद्धि का परिमार्जन किया जा सके।

९९ **देवीदास**—देवीदास जैन कवि हैं। इन्होंने पुकारपचीसी नामक पुस्तक लिखी है जो वर्तमान खोज में पहली बार मिली है। इस ग्रंथ में जिनराज का स्तवन किया गया है। ये जयपुरराज्यातर्गत विसवा निवासी थे और संवत् १८४४ (सन् १७८७ ई०) के लगभग विद्यमान थे। इनके ग्रंथ जो जैनों के बीच प्रसिद्ध हैं, ये हैं—(१) सिद्धांतसार संग्रह वचनिका और (२) तत्त्वार्थसूत्र वचनिका।

१०० **देवीदास**—गौड़ क्षत्रिय देवीदास सत्नामी मत के अधिष्ठाता जगजीवन-दास के शिष्य थे और जिला बाराबंकी के एक गाँव में रहते थे जो इन्हीं के नाम पर देवी-दास का पुरवा नाम से प्रसिद्ध है। वर्तमान खोज में उपलब्ध 'लीला' ग्रंथ के अतिरिक्त इन्होंने और ग्रंथ भी लिखे हैं, जैसे—भ्रमरगीत, विनोद-मंगल, सुख-सनाथ, भ्रम-विनास, चरन-ध्यान, गुरुचरन, ज्ञान-ऐन, भक्ति-मंगल, नारद-ज्ञान, वैराग्य और शब्द-सागर।

१०१ **देवीसिंह**—कौसल्या जी की बारहमासी के रचयिता देवीसिंह सामान्य कवि हैं। ये चंदेरी के राजा थे और इन्होंने बहुत से ग्रंथ लिखे हैं जिनमें एक बारहमासी भी है जिसकी शैली वर्तमान खोज में उपलब्ध ग्रंथ से मिलती है। राजा देवी सिंह सन् १६७६ ई० के लगभग विद्यमान थे।

१०२ **धनपति**—धनपति उपनाम धनूलाल ने बदरेमुनीर नामक एक प्रेमाख्यान संवत् १९२८ (सन् १८७५ ई०) में लिखा है। यह खड़ी बोली में लिखा गया है और इसमें फारसी-अरबी के तद्भव शब्दों की बहुलता है।

१०३ **धनीराम**—धनीराम ने राम की प्रशंसा में रामगुणोदय तथा तत्त्वार्थ-प्रदीप नामक दो ग्रंथ लिखे हैं। पहले का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०३ में दिया जा चुका है। काव्य प्रकाश नाम की इनकी रचना भी जो इसी नाम के संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद है सन् १९२३-२५ ई० की खोज में मिल चुकी है। राम गुणोदय का संवत् इस प्रकार दिया है—रस रस सिद्धि निसीस बुध द्वार शुक्ल तिथि नैन, अर्थात् बुधवार आश्विन शुक्ल २ संवत् १८६६ ई० तदनुसार ११ अक्टूबर सन् १८०९ ई०। उस दिन द्वितीया सूर्योदय के ३ घंटे २० मिनट बाद समाप्त हो गई थी। और तृतीया १० बजे के लगभग लग गई थी। तत्त्वार्थ-प्रदीप संवत् १८६३ में आश्विन कृष्ण १५ तदनुसार सोमवार ७ अक्टूबर सन् १८०६ ई० को समाप्त हुई। इन्होंने दोनों रचनाओं के मध्य संवत् १८६७ वि० (सन् १८१० ई०) में काव्य प्रकाश की रचना की। इसकी समाप्ति का ठीक समय

दिया है शुक्र (ज्येष्ठ) बदी ११, शुक्रवार, रेवती नक्षत्र, संवत् १८९७ वि०। यह संपूर्ण विवरण १९ मई सन् १८१० ई० से मिलता है, किंतु दिन का नाम शुक्रवार न मिल कर मंगलवार मिलता है। धनी राम असनी के ठाकुर कवि के पुत्र थे और शंकर कवि तथा सेवक राम के पिता थे।

१०४ धर्मदेव—धर्मदेव आगरे के जैन कवि थे। इन्होंने पारसनाथ पुराण नामक ग्रंथ बनाया है। जिसमें जैन दर्शन के सिद्धांतों का कथन है तथा जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जीवन चरित्र वर्णित है। ग्रंथ संवत् १७८९ तदनुसार सन् १७३२ में समाप्त हुआ।

१०५ ध्रुवदास—ध्रुवदास का विवरण खोज विवरणिका सन् १९०० और १९०९-११ ई० में दिया जा चुका है। इनकी रचना वृंदावनशतक की दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में उपलब्ध हुई हैं। ये अत्यधिक रचना करनेवाले कवियों में से हैं। खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ ई० में इनके ३८ ग्रंथों का उल्लेख है जो उस निवर्षों में मिले थे। वृंदावन सत या शतक संवत् १६८६ (सन् १६२९ ई०) में समाप्त हुई।

१०६ दिग्विजयसिंह—दिग्विजय सिंह प्रतापगढ़ जिले के भुजवरा के क्षत्रिय तालुकेदार थे। इन्होंने दुर्गाकाल कायस्थ से काव्यशास्त्र का अध्ययन किया और भागवत दशम स्कंध का अनुवाद आरंभ किया, किंतु १० अध्याय से अधिक का अनुवाद न कर सके। इन्होंने अपने अनुवाद का नाम रखा अनुराग-विलास। इन्होंने अपने ग्रंथ का रचना काल नहीं दिया है किंतु दुर्गाकाल के समसामयिक होने से इन्हें उन्नीसवीं सदी के चतुर्थ पाद का मान सकते हैं। क्योंकि दुर्गाकाल सन् १८६२ ई० के लगभग विद्यमान थे।

१०७ दीनानाथ—दीनानाथ ने महीपर खंड का हिंदी पद्य में अनुवाद किया है। ग्रियर्सन और मिश्रबंधुओं ने एक दीनानाथ का उल्लेख किया है, किंतु सामग्री के अभाव में इन्हें किसी दीनानाथ से संप्रति नहीं मिलाया जा सकता। अपने विषय में इन्होंने केवल इतना बताया है कि मैं कान्यकुब्ज ब्राह्मण हूँ। हस्तलेख का समय सन् १८२० ई० दिया है अतः ये इस समय के पहले अवश्य विद्यमान रहे होंगे।

१०८ दूधधारी—अपूर्ण रचना 'ज्ञान विलास' (जो पहले पहल मिली है) के रचयिता दूधधारी नामक किसी व्यक्ति की अपेक्षा किसी साधु का नाम होने की अधिक संभावना है। हस्तलेख इतना जीर्ण-शीर्ण हो गया है कि यदि उसमें इनके विषय में कुछ लिखा भी हो तो भी कुछ ज्ञात नहीं हो सकता। कुछ छंदों से ऐसा प्रतीत होता है कि ये किसी भैया भवानी सिंह के आश्रित थे।

१०९ दूलनदास—धर्मई के दूलनदास प्रसिद्ध कवि हुए हैं। इनके ग्रंथों का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ ई० और १९२३-२५ ई० में दिया हुआ है। वर्तमान खोज में इनके उपदेशों का एक संग्रह शब्दावली के नाम से मिला है। इसका विवरण

दो वार दिया जा चुका है, (देखिए खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ और १९२०-२२)। दूलन सत्नामी सम्प्रदाय के अधिष्ठाता जगजीवनदास के अनुयायी थे।

११० **डूँगरलाल**—डूँगरलाल नवोपलब्ध कवि हैं। इन्होंने राजा गोपीचंद का ख्याल नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें राजा गोपीचंद के योगी होने की कथा वर्णित है। हस्तलेख से रचनाकार और रचना के समय आदि के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं होता।

१११ **दुर्गालाल कायस्थ**—प्रतापगढ़ जिले के दिग्विजयसिंह के प्रकरण में दुर्गालाल कायस्थ का भी उल्लेख हो चुका है। इनका जन्म संवत् १८८० (१८२३ ई०) में हुआ था और ये संवत् १९५४ (१८८८ ई०) में परलोकवासी हुए। ये मुजाखेर के तालुकदारों के आश्रित थे और उनमें से एक को कवि कहलाने की इच्छा से अत्यधिक प्रभावित भी किया। इनकी नाममाला, औषधवर्गनामे और कलाधर-वंशावलीविधान नामक तीन रचनाएँ वर्तमान खोज में मिली हैं। पहली तो ठीक नंददास की नाममाला की तरह है, दूसरी में सोमवंसी राजपूतों की वंशावली तथा इतिहास है और तीसरी औषधकोश है जिसमें उनके गुण, लक्षणादि बताए गए हैं। केवल वंशावली का रचनाकाल दिया हुआ है जो इस प्रकार है—पौष शुक्ल १२, भृगुवार, भवनाम संवत्सर, संवत् १९१९ तदनुसार शुक्रवार, २ जनवरी, १८६३ ई०।

११२ **दुर्गाप्रसाद**—दुर्गाप्रसाद ने संवत् १९३१ (सन् १८७४ ई०) में लिंग-पुराण का हिंदी अनुवाद किया है। इनका विद्यमान-काल भी वही है। यह रचना इस खोज में पहली बार मिली है।

११३ **दुर्गाप्रसाद त्रिपाठी**—मालवा के सरखेम निवासी दुर्गाप्रसाद त्रिपाठी ने 'वैद्य-विनोद' नामक वैद्यक का ग्रंथ शार्गधर और भावप्रकाश के आधार पर लिखा है। हस्तलेख अपूर्ण एवं अज्ञातकालीन है।

११४ **द्वारिकाप्रसाद**—द्वारिकाप्रसाद सारस्वत ब्राह्मण ने राधाविलास नाम की एक छोटी सी पुस्तक ख्यालों में लिखी है। तीन उपलब्ध हस्तलेखों में से केवल एक में लिपिकाल संवत् १९२८ (सन् १८७१ ई०) दिया हुआ है।

११५ **द्वारिकाप्रसाद**—मुहम्मद पुर चमसना के द्वारिकाप्रसाद उपनाम सुकदेव ने तत्व-ज्ञान की बारहमासी नामक पुस्तक लिखी है जिसकी दो प्रतियाँ मिली हैं। रचना-काल इस प्रकार है—'कार्तिक सुदि रविवार संवत् इनइस सैं इकसि' तदनुसार रविवार १३ नवंबर, १८६४ ई०। दोहे में शुक्ल पक्ष की तिथि नहीं दी है। उस वर्ष कार्त्तिक शुक्ल पक्ष में दो रविवार थे एक सप्तमी को पड़ता था दूसरा पूर्णिमा को। वस्तुत: रचनाकार को अंतिम ही अभीष्ट था।

११६ **द्विज छुटकन**—द्विज छुटकन वर्तमान खोज में नवोपलब्ध रचनाकार हैं। इनकी रचना चौताला चितामणि चौताला छंद में लिखी है जिसमें राम-सीता और

राधा-कृष्ण की कीर्तियों की प्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन है। इन्होंने अन्य कवियों के गीतों को भी अपनी रचना में स्थान दिया है जिसके नाम उन रचनाओं में दृष्टिगोचर होते हैं।

११७ द्यानतराय—मंगलआरती के रचयिता द्यानतराय सामान्यतः अच्छे जैन कवि थे। इनका विवरण खोज-विवरणिका १९२३-२५ (संख्या ११०) और १९०१ (संख्या १०१) में दिया जा चुका है। इनकी रचनाओं का एक संग्रह 'धर्मविलास या द्यानतविलास' के नाम से छप चुका है जिसका कुछ अंश आगरे में और कुछ दिल्ली में लिखा गया है और जो संवत् १७८० (सन् १७२३) में संपूर्ण हुआ। ये अग्रवाल वैश्य थे और आगरे में संवत् १७३३ या सन् १६७६ में उत्पन्न हुए थे। तेरह वर्ष की अवस्था में इन्होंने जैन धर्म ग्रहण कर लिया।

११८ सी० ई० ईलियट—सी० ई० इलियट संयुक्त प्रांत में प्रथम भूमिकर निर्णय के समय फर्रुखाबाद जिले के अधिकारी थे। 'आल्हा खंड' का प्रथम संग्रह प्रकाशित करने का श्रेय इन्हीं को है। वर्तमान खोज में प्राप्त हस्तलेख का समय संवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) है।

११९ फकीरदास बाबा—फकीरदास बाबा धार्मिक रचनाकार थे और सन् १८१८ के लगभग विद्यमान थे। ये बहराइच जिले के नरोत्तमपुर में रहते थे और जाति के मुराई या मुराऊ थे। ये अपने को रामानंद का शिष्य बताते थे और इनके शिष्य का नाम मुरलीदास था। इनके ग्रंथ का नाम बानी या आनंदबर्धनी था जिसका विवरण खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ में दिया जा चुका है। इनके अन्य तीन उपलब्ध ग्रंथ हैं—गारी राम की, होरी राम की और राम का बारहमासा। इनका फसली सन् इस प्रकार है—

बानी—१२३५ या सन् १८२७ ई०।
होरी बारहमासा—१२३८ या सन् १८३० ई०।
गारी—१२२० या सन् १८१२ ई०।

१२० फतहसिंह—फतहसिंह उपनाम हितराम नवोपलब्ध लेखक हैं जिनका श्रीकृष्ण स्तुति का 'हरि-भक्ति सिद्धांत' नामक ग्रंथ वर्तमान खोज में पहली बार मिला है। इन्होंने अपना अपने माता-पिता तथा अपने गुरु का विवरण दिया है जिससे यह ज्ञात होता है कि ये कछवाहा क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए थे और इनके पिता का नाम रामसाहि नरेस था। यह वंश हितहरिवंश का अनुयायी था। फतहसिंह वर्णनात्मक रचनाकार हैं और हिंदू धर्मशास्त्र विषयक ग्रंथ की रचना की है। ग्रंथ का समय इस प्रकार दिया है—नयन नयन रिषि चन्द्र शुभ अति मंगल मत। पुनि पवित्र वैसाख सुकुल पक्ष तीज सर्व रत। अर्थात् वैसाख शुक्ल अक्षय तृतीया संवत् १७२२ तदनुसार शनिवार ८ अप्रैल १६६५ ई०। मासादिक दिवस नहीं दिया गया है जो ठीक समय की कसौटी है।

१२१ गदाधरदास—गदाधरदास नवोपलब्ध कवि हैं। इनकी 'अपराधबली' वेदांत विषयक रचना है। कवि सरयूपारी ब्राह्मण थे और बाराबंकी जिले के हरिचंदपुर के

बाबा रामसेवकदास के शिष्य थे। ये सुल्तानपुर जिले में फूलमऊ नामक स्थान पर रहते थे। अमरावली बुधवार ज्येष्ठ शुक्ल ६ संवत् १८८६ तदनुसार १० जून सन् १८२९ ई० को समाप्त हुई। उस दिन सूर्योदय के समय अष्टमी थी किंतु पंद्रह मिनट बाद ही नवमी लग गई।

१२२ गल्लूजी—गल्लूजी ने 'राधा रमण के नित्य कीर्तन के पद' भगवान के वार्षिक पूजन एवं कीर्तन के लिए बनाए। ये गोस्वामी थे और किसी धार्मिक गद्दी के महंत भी थे। ग्रंथ में रचनाकाल तो नहीं दिया है, किंतु लिपिकाल संवत् १९३० या सन् १८७३ ई० दिया हुआ है।

१२३ गणेशदास ब्राह्मण—गणेशदास ब्राह्मण ने अपने 'वैद्य प्रकाश' की रचना सन् १८१७ ई० में मद्रदेश में की जब कि लाहौर में महाराजा रणजीतसिंह राज कर रहे थे। ये कन्ह ग्राम के निवासी थे, जो इन्हीं के कथनानुसार कुसपुरा के रास्ते पर लाहौर से बारह कोस है। ये लाहौर का दूसरा नाम लवपुर भी बताते हैं। इस प्रकार ये प्राचीन भौगोलिक नाम का भी प्रयोग करते हैं जो ध्यान देने योग्य है। प्राचीन काल में रावी और चनाब के बीच का प्रदेश मद्र देश कहा जाता था। यहाँ महाभारत के राजा शल्य का राज्य था जिसकी राजधानी 'शकल' थी जो आजकल सियालकोट के नाम से पुकारा जाता है। कुशपुरा राजा कुश की राजधानी थी, ठीक उसी प्रकार जैसे लवपुर लव की। लव और कुश दोनों अयोध्या नरेश राजा रामचंद्र के पुत्र थे। कुस पुरा अब सुलतानपुर के नाम से प्रसिद्ध है और अवध में गोमती किनारे बसा है। रचयिता अपने ग्रंथ की समाप्ति का समय देता है 'संवत १८७४ कृष्ण पक्ष सावन षष्ठी पट्ट' तदनुसार २७ अगस्त सन् १८१७ ई०।

१२४ गणेशजी—आगरा के गणेशजी नवोपलब्ध रचनाकार हैं। वर्तमान खोज में इनके वेदांतविषयक ग्रंथ 'परतत्त्व प्रकाश' के दो हस्तलेख मिले हैं। इन दोनों में से सबसे पुरानी प्रति संवत् १९२८ तदनुसार सन् १८७१ ई० की है।

१२५ गणेशप्रसाद—फर्रुखाबाद के गणेशप्रसाद ने 'बुद्धि विलास' और 'राग रत्नावली' दो ग्रंथ लिखे हैं। पहले में हिंदू देवी देवताओं की जैसे गंगा, राम, कृष्ण, आदि की प्रशंसा है। दूसरे में प्रसिद्ध गेय छंद लावनी में भागवत दशम स्कंध की कथा वर्णित है। मिश्रबंधुओं ने इनके रचे चार ग्रंथ बताए हैं किंतु इन दोनों में से कोई भी उनमें नहीं गिने गए हैं। हस्तलेख में उपलब्ध प्राचीन समय सन् १८७१ ई० है जो रचनाकाल से बहुत दूर का नहीं जान पड़ता।

१२६ गंग—नवोपलब्ध 'गंग-पचीसी' के कर्ता गंग अपने विषय में कुछ नहीं लिखते। गंगपचीसी की तीन प्रतियाँ मिली हैं जिनमें से सबसे पुरानी संवत् १८२६ (सन् १७६९ ई० की है। इसकी रचना शैली उस प्रसिद्ध कवि गंग से नहीं मिलती जो कवित्तों के लिए विख्यात है और जिन्हें हाथी के पैर के नीचे कुचलवा कर मार डालने की आज्ञा दी गई

थी, (गंग ऐसे गुनी के गर्वन से सिराइए)। ये दूसरे वे गंग भी नहीं हैं जिन्होंने सबसे पहले खड़ी बोली में रचना की है।

१२७ गंगादास—गंगादास (साधु) ने रागलावनी और बैंगनीरंगत लावनी नामक दो पुस्तकें लिखी हैं जिनका नामकरण रचना में प्रयुक्त छंदों के नाम पर हुआ है, विषय के आधार पर नहीं। लावनी 'चंग' या छोटी ढोलक पर गाई जाती है। पहले ग्रंथ में इन्होंने अपने गुरु तथा रामानुज का स्तवन किया है, जो इनके संप्रदायाचार्य थे और दूसरे में राजा भर्तृहरि का वर्णन किया है जो योगी हो गए थे। बैंगनी रंगत का लिपिकाल संवत् १९२४ सन् १८६७ ई० है।

१२८ गंगाधर शास्त्री—आगरा के गंगाधर शास्त्री ने संस्कृत की सत्यनारायण कथा का हिंदी गद्य में अनुवाद किया। इनकी शैली पंडिताऊ है, ठीक वैसी ही जैसी सत्य नारायण के पूजन में उत्तरी भारत में प्रचलित है। यह अनुवाद संवत् १८५४ सन् १७९७ में प्रस्तुत हुआ। यह बहुत संभव है कि रचनाकार आगरा कालिज का संस्थापक ही हो।

१२९ गंजन—कमरुद्दीन खाँ हुलास के रचयिता गंजन का विवरण खोज-विवरण सन् १९०३ (संख्या ६५) और १९०६-०८ (संख्या ६२) में दिया जा चुका है। ये गुजराती ब्राह्मण थे और संवत् १७८५ (सन् १७२८ ई०) में इन्होंने अपनी रचना प्रस्तुत की। यह समय सम्राट मुहम्मदशाह के सिंहासनारूढ़ होने के नौ वर्ष बाद का है। कमरुद्दीन खाँ जिसके नाम पर इस ग्रंथ की रचना हुई है, इसी सम्राट् का प्रधान मंत्री था। कमरुद्दीन खाँ हिंदी कविता के प्रेमी थे और इन्होंने काव्य में अपना नाम अमर कर देने के लिए गंजन को पर्याप्त धन दिया था। ग्रंथ में भाव और रस का वर्णन है तथा अंत में आश्रयदाता कमरुद्दीन खाँ की प्रशस्ति है। गंजन अच्छे कवि हैं और रचना में वस्तुतः सफल हुए हैं।

१३० गन्धाराम—गन्धाराम के विरह वर्णन बारहमासा के दो हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। गन्धाराम भी उन्हीं पद्यकारों में से हैं जिन्होंने हिंदी साहित्य में विरह मासों की बाढ़ ला दी है। इनकी शैली देखने से ज्ञात होता है कि ये राजपूताने के रहने वाले थे।

१३१ गरदी राम—रागमाला के रचयिता गरदी राम लक्ष्योपलक्ष्य रत्नाकर हैं। ये संवत् १८५५ (सन् १७९८ ई०) में विद्यमान थे। इन्होंने तानसेन द्वारा आविष्कृत संगीत-विधान का उपयुक्त प्रामाणिक ग्रंथ संपादित किया है। हस्तलेख का रचनाकाल सन् १७९८ है जो उसमें दिया हुआ है। रचनाकार का नाम कुछ विलक्षण सा है।

१३२ गरीबदास—गरीबदास ने एक सामान्य पोथी गंगाष्टक लिखी है जिसका शायद ही कोई महत्व हो।

१३३ गौरीशंकर भट्ट—काव्यामृत प्रवाह और राग रत्नाकर के कर्त्ता गौरी शंकर भट्ट कानपुर जिले के अमरमपुर निवासी थे। काव्यामृत प्रवाह में अनेकानेक प्रसिद्ध कवियों की वीर और शृंगार रसों की रचनाओं का संग्रह है। रत्नाकर में रागों और [illegible] में

सभी समय के गाने योग्य गीतों का संग्रह है। दूसरे ग्रंथ का संग्रह सन् १८७१ ई० में हुआ है जिससे संग्रहकर्त्ता का विद्यमान काल भी ज्ञात होता है।

१३४ **घनश्यामराय**—स्वप्नार्थ-चिंतामणि या स्वप्न परीक्षा के रचयिता घनश्यामराय उन्नीसवीं शती के मध्य में विद्यमान थे। इनके ग्रंथ की दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में उपलब्ध हुई हैं। ग्रंथ में शुभाशुभ स्वप्नों का विचार है।

१३५ **घनश्याम व्यास**—घनश्याम व्यास ज्योतिषी थे और इन्होंने 'ज्योतिष की लावनी' नामक ग्रंथ लावनी छंद में बारह राशियों के फल के विषय में लिखा है। इसकी रचना सन १८७० ई० में हुई।

१३६ **घासीराम**—पक्षी-विलास के रचयिता घासीराम सन १८२५ ई० के लगभग विद्यमान थे। इनका और इनके ग्रंथों का विवरण खोज विवरणिका सन १९०९-११ और १९२३-२५ (संख्या १२३) में दिया जा चुका है।

१३७ **घीसाराम**—मेरठ जिले के माटीपुर निवासी घीसाराम ने रामायण का बारहमासा संवत १९२४ (सन १८६७ ई०) में लिखा है। इसमें रामायण की कथा वर्णित है।

१३८ **घिसियावनदास बाबा**—रामरस के कर्त्ता घिसियावनदास बाबा अठारहवीं शती के अंत में विद्यमान थे। इनका जन्म रायबरेली जिले में महाराजगंज तहसील के जमुली ग्राम में हुआ था। इनका संबंध अयोध्या के बाबा रामप्रसाद से था जहाँ ये पहुँचे हुए साधु माने जाते थे। रामरस में राम-नाम का स्तवन है, जो अनेकानेक महात्माओं के जीवन की घटनाओं से संबद्ध है।

१३९ **गिरिधरचंद**—गिरिधरचंद नवोपलब्ध रचनाकार हैं। इनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं है। इनकी कृति दानलीला में कृष्णदास की दानलीला के दो तीन पद ज्यों के त्यों मिलते हैं। अतः समस्त रचनाएँ नहीं बल्कि कुछ ही दूसरों की नकल पर बनी कही जा सकती हैं।

१४० **गिरिधरदास**—प्रसिद्ध कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र के पिता बाबू गोपालचंद्र उपनाम गिरिधरदास ने बलरामकथामृतांतर्गत विदुर नीति नामक ग्रंथ रचा है। ये सन् १८२५ ई० के लगभग विद्यमान थे और इनका विवरण एक बार सन् १९१२-१६ (संख्या ६०) की खोज-विवरणिका में दिया जा चुका है। पिता-पुत्र दोनों अल्पायु थे जिसमें पिता की मृत्यु तो २७ वर्ष की ही अवस्था में हो गई और पुत्र की ३५ वर्ष में। किंतु दोनों ही उच्च कोटि के और अधिक परिमाण में लिखने वाले रचनाकार थे। पुत्र तो पिता से भी बढ़कर हो गए हैं।

१४१ **गिरिधारीदास**—श्यामविलास के रचयिता गिरिधारीदास का विवरण पूर्व विवरणिकाओं में कृष्णचरित के कर्ता और भागवत दशम स्कंध के अनुवादक के रूप में दिया जा चुका है। किंतु ये तीनों पुस्तकें एक ही हैं। गिरिधारी दास रायबरेली जिले के

सातनपुरा के रहनेवाले थे। खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ (संख्या १२४) में सुदामा चरित्र एवं रहस्य मंजरी के कर्ता के रूप में भी इनका विवरण दिया जा चुका है।

१४२ गिरिधरदास—भक्त-विनय-दोहावली या केवल दोहावली के कर्ता गिरिधरदास का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ (संख्या ५०) तथा १९२३-२५ (संख्या १२८) में दिया जा चुका है। इनके पितामह कोटवा के बाबा जगजीवनदास प्रसिद्ध सतनामी संप्रदाय के संस्थापक थे और बाद में ये भी उनकी गद्दी पर बैठे।

१४३ गोकुल कायस्थ—बलरामपुर के गोकुल कायस्थ राजा दिग्विजयसिंह के आश्रय में रचना करते थे। इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९ ११ (संख्या ९५) तथा १९२३-२५ (संख्या १२९) में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में इनके दो ग्रंथ अष्टयाम प्रकाश तथा दिग्विजय भूषण मिले हैं जिनमें प्रथम तो पहले मिल चुका है किंतु दूसरा इस खोज में मिला है। पहले की रचना सन् १८९२ ई० में हुई है किंतु सन् १९२३ २५ की विवरणिका में प्राप्त हस्तलेख के लिपिकार के प्रमाद से सन् १८९१ हो गया है। काल-विषयक छंद में दिन का नाम न होने से पूरी गणना न हो सकने से कोई निश्चय नहीं किया जा सकता। दिग्विजय भूषण में ग्रंथकर्ता के आश्रयदाता की वंशावली एवं अलंकार, नायक-नायिका भेद आदि अनेक काव्यांगों का वर्णन है।

१४४ गोकुलनाथ बंदीजन—काशी के गोकुलनाथ बंदीजन ने महाभारत के वनपर्व का भाषानुवाद किया है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०४ (संख्या २१) में दिया जा चुका है। ग्रंथकर्ता का विवरण सन् १९२० २२ की खोज विवरणिका में दिया जा चुका है जिसमें इनकी समस्त उपलब्ध कृतियों की सूची दी हुई है। ये अधिक परिमाण में रचना करने वाले व्यक्तियों में थे और काशी के राजा के आश्रय में अठारहवीं शती के अंत में रहते थे।

१४५ गोमती गिरि परमहंस—गोमती गिरि परम हंस ने तत्त्वार्थदीपिका नामक वेदांत विषयक ग्रंथ की रचना की है।

१४६ गोपाल—श्रीमद् भागवत के अनुवादक गोपाल गोरखपुर जिले में प्रतापपुर के निवासी थे। इन्होंने अपने ग्रंथ का आरंभ संवत् १७८९ में चैत्र की राम नवमी मंगलवार तदनुसार १० मार्च १७३० ई० को किया। उपलब्ध प्रति शनिवार सावन कृष्ण ३ संवत् १८५९ तदनुसार १७ जुलाई १८०२ ई० की है।

१४७ गोपाल (सुकवि)—गोपाल (सुकवि) कृत पुरुषपक्षी-संवाद या चारों दिशा के कुतूहल नामक ग्रंथ की दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं। गोपाल (सुकवि) संभवतः बुंदेलखंड के रहने वाले थे। इन्होंने वहीं महाराज रतनसिंह के आश्रय में कार्य किया था। ये चरखारी के बंदीजन के नाम से प्रसिद्ध थे। इनका ग्रंथ 'दंपति काव्य विलास' नाम से प्रकाशित भी हो चुका है। इनको सुकवि की उपाधि मिली थी। किंतु मिश्रबंधुओं ने सुकवि नाम के एक अन्य कवि को ही माना है (देखिए मिश्रबंधु विनोद संख्या १०९४ १२७८ और १२८१)।

१४८ **गोपाल द्विज**—रामायण के माहात्म्य के रचयिता गोपाल द्विज का विवरण खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ (संख्या १३३) में दिया जा चुका है। इन्होंने अपने ग्रंथ की रचना गुरुवार मार्ग (शीर्ष) शुक्ल एकादशी संवत् १९०८ तदनुसार ४ दिसंबर सन् १८५१ ई० को की। जैसा कि इनकी रचना से ही व्यक्त है, गोपाल द्विज रामनगर के निकट लखनपुर में उत्पन्न हुए थे और रामकोल की सत्नामी गद्दी के अधिकारी हुए। ये स्वामी रामप्रसाद से पाँचवीं पीढ़ी में हुए और उन्हें ये बहुत ही प्रसिद्ध एवं पहुँचे हुए मानते थे।

१४९ **गोपीनाथ**—काशी के गोपीनाथ गोकुलनाथ बंदीजन के पुत्र थे जिनका विवरण पहले दिया जा चुका है। इन्होंने देव के साथ महाभारत का हिंदी अनुवाद काशीनरेश महाराज उदितनारायणसिंह के आश्रय में किया था। 'महाभारत दर्पण' का शांतिपर्व इन्हीं का लिखा है। ये अठारहवीं शती के अंत के लगभग विद्यमान थे।

१५० **गोरेलाल पुरोहित**—गोरेलाल पुरोहित लाल कवि के नाम से कविता करते थे। इन्होंने छत्रप्रकाश नामक ग्रंथ रचा है जिसका विवरण खोज विवरणिका सन् १९०६-०८ में दिया जा चुका है। ग्रंथ की रचना संवत् १७७२ (सन् १७१५) में हुई। गोरेलाल पन्ना के महाराज छत्रसाल के आश्रय में थे और इन्होंने प्रशंसक होते हुए जहाँ उचित समझा वहाँ निर्भीकतापूर्वक महाराज की आलोचना की है। उपलब्ध हस्तलेख अपूर्ण है, किंतु इसके पाठ काशी नागरीप्रचारिणी सभा के संस्करण से अच्छे जान पड़ते हैं।

१५१ **गोसाईंदास**—गोसाईंदास नवोपलब्ध रचनाकार हैं। इन्होंने शब्दावली नामक पुस्तक राम की प्रशंसा में तथा भगवान् की स्तुति के लिए लिखी है। ये सत्नामी संप्रदाय के अनुयायी थे और बाराबंकी जिले के कमोली नामक स्थान के रहनेवाले थे। ये सन् १६७० ई० के लगभग विद्यमान थे। इन्होंने दो और ग्रंथ ककहरा और दोहावली की भी रचना की है।

१५२ **गोवर्धनदास सारस्वत**—कोटपुतली के गोवर्धनदास सारस्वत ने सुंदरी तिलक नामक एक संग्रह प्रस्तुत किया है जिसमें तुलसीदास, मोतीराम तथा भारतेंदु हरिश्चंद्र की राधाकृष्ण प्रेम विषयक रचनाओं का संग्रह है। इसका रचनाकाल तथा लिपिकाल दोनों संवत् १९३७ (सन् १८८० ई०) है।

१५३ **गोवर्धनदास (मिश्र)**—शिव विलास, शिव विनोद और विष्णुविनोद शिवविलास के रचयिता गोवर्धनदास कानपुर जिले के बिलौरा के रहनेवाले थे। वर्तमान खोज में उपलब्ध ग्रंथों की रचना क्रमश. संवत् १९२४ (सन् १८६७ ई०), संवत् १९२६ (सन् १८६९ ई०) और १९३० (सन् १८७३ ई०) में हुई थी। ये सब भक्ति-विषयक रचनाएँ हैं।

१५४ **गोविंददास**—बारहमासा लिखनेवाले गोविंददास खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ सं० ५३ वाले ही जान पड़ते हैं। उसमें इन्होंने अपने को बहुत से भक्ति

विषयक गीतों का रचयिता बताया है। बारहमासा में राधा और कृष्ण का वियोग में बारह महीनों तक काल-यापन का वर्णन है।

१४५ गुरु गोविन्दसिंह—गुरु गोविन्दसिंह ने त्रियाचरित्र नामक ग्रंथ लिखा है जिसका नृप-मंत्री-संवाद अर्थात् राजा और मंत्री की वार्ता नामक ४०४ अध्याय मात्र ही वर्तमान खोज में मिला है। ग्रंथ की रचना संवत् १७५३ (सन् १६९६) में हुई थी। रचनाकाल-विषयक छंद दोषपूर्ण प्रतीत होता है। उसमें 'सहस' के स्थान पर 'सत' पढ़ना पड़ेगा। छंद है—

संवत सत्रह सहस भीजजै। अरध सहस पुनि तीन कहिजै।
भाद्रव सुदि अष्टमि रवि वारा। तीर सतुद्रव ग्रंथ संभारा।

इसका तात्पर्य हुआ कि ग्रंथ की रचना संवत् १७५३ भादों सुदी ८ रविवार को हुई। यह वास्तव में संवत् १७५४ में घटित होता है जब अष्टमी रविवार को पड़ी थी, अर्थात् १२ अगस्त सन् १६९७ ई० को। संवत् १७५३ में तिथि मंगल को थी।

१४६ गुलजारीलाल रसीले—कानपुर जिले में मकनपुर के गुलजारीलाल रसीले ने रसीले तरंग नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें रामायण की कथा लावनी छंदों में वर्णित है। ग्रंथ की रचना संवत् १९२८ (सन् १८७१ ई०) में हुई।

१४७ गुमान मिश्र—गुलालचंद्रोदय के रचयिता गुमान मिश्र बहुत प्रसिद्ध रचनाकार हैं। इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२-१४ (सं० ९८) में दिया जा चुका है। इस ग्रंथ के दो हस्तलेख इस खोज में मिले हैं। इसका रचनाकाल संवत् १८२० पूस सुदी (शुक्ल) दसमी गुरु तदनुसार बृहस्पतिवार १२ जनवरी सन् १७६४ ई० दिया हुआ है। ग्रंथ में पुरानी परिपाटी का नायक-नायिका भेद आदि वर्णित है। गत खोज-विवरणिकाओं में इनके कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ मिले थे। जैसे, कृष्णचंद्रिका और छंदाटवी (देखिए खोज-विवरणिका १९०५ और खोज-विवरणिका १९०६-०८)।

१४८ गुमानी—गुमानी ने संस्कृत के चाणक्यनीति का भाषानुवाद चाणक्य नीति भाषा के नाम से किया है। हस्तलेख का समय संवत् १९२० (सन् १८६३) है।

१४९ गुरुदत्तदास—गुरुदत्तदास ने रत्नावली और दोहावली नामक ग्रंथ राम नाम की प्रशंसा में लिखे हैं। ये नवोपलब्ध रचनाकार हैं। ये सतनामी संप्रदाय के थे और बाराबंकी जिले में पुरवा साहेब देवीदास के निवासी थे। ये संवत् १८७७ (सन् १८२० ई०) में उत्पन्न हुए थे और संवत् १९५८ (सन् १९०१) में परलोकवासी हुए।

१५० गुरुप्रसाद—गुरुप्रसाद ने स्वरोदय नामक ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख के अंतिम पन्ने से एक पद पहले में इन्होंने संवत् १९३७ (सन् १८८० ई०) दिया है जो रचनाकाल ही होगा।

१५१ ग्वाल—प्रसिद्ध कवि ग्वाल के गोपी पचीसी, कृष्ण जू को नखशिख और रसिकानंद नामक ग्रंथों के हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। इनमें से प्रथम दो ग्रंथों की प्रतियाँ

का विवरण विगत खोज विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। देखिए खोज-विवरणिका सन् १९२२-२३ (सं० ५८)। अंतिम रचना पहली बार मिली है। यह नायिकाभेद का ग्रंथ है और महाराज जसवंतसिंह के लिए लिखा गया है। निम्नलिखित दोहे में ग्रंथ का रचना काल दिया है—

संवत निधि ऋषि सिद्धि ससि श्याम पक्ष मधुमास।
अदित वार सुद्वादशी रसिकानंद प्रकास॥

यह रविवार चैत्र वदी १२ संवत् १८७९ तदनुसार ९ मार्च सन् १८२३ ई० है। यह वही समय है जब ये विद्यमान थे जैसा कि अन्य प्रमाणों से भी सिद्ध है।

१६२ **हैदर**—हैदर ने कासिदनामा लिखा है जिसके दो हस्तलेख पहली बार मिले हैं। ये दिल्ली निवासी थे और मुसलमान होने के कारण इनकी भाषा अरबी और फारसी के शब्दों से परिपूर्ण है। ग्रंथ छोटासा है और उसमें प्रेमी का संदेश प्रियतमा के प्रति वर्णित है।

१६३ **हलधर**—सुदामा चरित्र के रचयिता हलधर का विवरण खोज विवरणिका सन् १९०६-०८ (स० ५९) में दिया जा चुका है। किंतु इस बार उससे पुराना हस्तलेख मिला है। इसका रचनाकाल कुछ संदिग्ध सा लिखा है—

ब्रह्म सहस रस वेनि मत कुसुमाकर सुदि पंच दश

इसका तात्पर्य होगा एक हजार और ६ + २ = ८ सौ अर्थात् १८००। किंतु दिन नाम न दिया रहने से गणना करके तिथि मिलाई नहीं जा सकती। हस्तलेख की प्रतिलिपि संवत् १८८२ या सन् १८२५ में हुई थी।

१६४ **हमीदउद्दीनकाजी**—हमीदउद्दीनकाजी ने तवल्लुद नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें मुहम्मद का चरित्र तथा इस्लाम धर्म का प्रसार वर्णित है। यह अवधी भाषा में लिखा हुआ है जिससे स्पष्ट है कि रचयिता अवध प्रांत का ही निवासी था। यह ध्यान देने योग्य है कि रचयिता ने कुरान को चतुर्थ वेद माना है और महादेव, पार्वती और नारद का भी उल्लेख अपनी रचना में किया है।

१६५ **हंसराज बक्सी**—हंसराज बक्सी ने पन्ना के राजा अमानसिंह के आश्रय में कई ग्रंथ लिखे हैं। इनके तीन ग्रंथ (१) सनेह सागर, (२) विरह विलास और (३) चुरिहारिन लीला वर्तमान खोज में मिले हैं। इनमें से पहला और तीसरा ग्रंथ पहले भी मिल चुके हैं, किंतु विरह विलास नई उपलब्ध रचना है। इसकी रचना संवत् १८११ या सन् १७५४ में हुई। इस ग्रंथ में रचयिता ने पन्ना के राजाओं तथा अपनी वंशावलियाँ भी दी हैं। धामी सम्प्रदाय के अधिष्ठाता प्राणनाथ का पद्मावती या पन्ना आगमन की भी रचयिता ने चर्चा की है, जिसके कारण वह (पन्ना रियासत) इतनी प्रसिद्ध हो सकी। कवि अपने को श्रीवास्तव कायस्थ तथा अपनी मातृभूमि को हम्मीरपुर जिला कहता है।

१६६ **हरदास**—हरदास नवोपलब्ध रचनाकार हैं जिनके तीन ग्रंथ (१) कृष्ण जी का बारहमासा, (२) गिरधारी जी की मुरली और (३) श्री कृष्ण जी की

बारहमासी खोज में मिले हैं। गिरधारी जी की मुरली के हस्तलेख में रचनाकाल संवत् १९२० (सन् १८००) दिया है।

१६७ हरनाम—हरनाम ने हरनाम का बारहमासा लिखा है जिसके दो हस्तलेख मिले हैं। इसकी रचना संवत् १९१० (सन् १८५३) में हुई थी।

१६८ हरदेव—हरदेव ने रंगभाव माधुरी नामक पुस्तक लिखी है जो पहली बार मिली है। इसमें नायिकाओं और उनकी सखियों एवं दूतियों का वर्णन है। रचयिता ने कवि बिहारीलाल की शैली तथा रस ग्रहण करने का प्रयास किया है।

१६९ हरिहर प्रसाद—हरिहर प्रसाद ने स्तोत्र नामक एक प्रार्थना लिखी है जो बंकिमचन्द्र के वंदेमातरम् की भाँति ही स्तोत्र है। शैली और भाषा भी ऐसी है जिससे रचना हिंदी की न होकर संस्कृत की सी हो गई है।

१७० हरिप्रसाद—हरिप्रसाद उपनाम हरचंद ने साहित्य सुधा निधि नामक ग्रंथ लिखा है जिसके दो हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। रचयिता रीवा के महाराज रघुराजसिंह का आश्रित था तथा उन्हीं की प्रसन्नता के लिए उक्त ग्रंथ की रचना संवत् १९३१ (सन् १८७४) में की है। हस्तलेख रचयिता की ही हस्तलिपि में लिखा है और रचनाकाल तथा लिपिकाल दोनों करीब करीब एक ही है। समय है माघ मास कृष्ण पक्ष द्वितीया था सोमवार १० अगस्त १८७४ ई०। इसी दिन ग्रंथ समाप्त हुआ था और हस्तलेख ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया गुरु था गुरुवार २५ मई १८७५ ई० को तैयार हो गया था। ग्रंथ में बघेल राजाओं की बहुत बड़ी वंशावली जो चालुक्य या सोलंकी राजाओं से आरंभ होती है और रचयिता के आश्रयदाता तक चली आई है, दी हुई है। प्रत्येक राजा का नाम के अनुरूप ही प्रशंसा की गई है। इसमें यदि ऐतिहासिक महत्व की कोई वस्तु है तो केवल क्रम बद्ध सूची ही जो व्याघ्रदेव से आरंभ होती है जिन्होंने गुजरात से आकर चित्रकूट के निकट गहोरा में आकर निवास किया। कवि ने कुछ गद्य में भी लिखा है। यह व्याघ्र के विषय में लिखता है, जैसे "४५ वर्ष ९ मास ४ रोज राज्य किया और संवत् ५११ शाके ४२६ मार्गशीर्ष कृष्ण १२ को गुजरात छोड़ा।" इसका कुछ महत्व भी होता यदि इन्होंने दिन नाम भी दे दिया होता जिससे गणना करके शुद्धाशुद्ध परीक्षण का सुयोग मिलता। जैसा कि इन्होंने कहा है उनका समय होगा सन् ४७१ ई० के लगभग। किंतु रियासत के लेखों से ज्ञात होता है सन् ५११ हिजरी में यह स्थानांतरण हुआ था। अतः यह शक संवत् ११५५ है ४२६ नहीं। इस वर्ष ईसाई संवत् १२३३ था जिससे ७६० वर्षों का अंतर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। किंतु कवि तो कवि ही होते हैं। वे ऐसी कल्पना करते हैं जिससे समय का सामंजस्य ही नहीं बैठता। ग्रंथ का वास्तविक विषय शृंगार रस है और जब तक इसकी प्राचीन परंपरा संतोषजनक ढंग से चली चलती थी तब तक कोई इसके लिए इन्हें दोष नहीं दे सकता।

१७१ हरिप्रसाद मिश्र—हरिप्रसाद मिश्र अयोध्या के समीप पार्वती नदी के तट पर पार्वती नामक ग्राम में रहते थे। इन्होंने 'रत्न मुहूर्त' नामक ज्योतिष का ग्रंथ मुहूर्त

के विषय में लिखा है। इसके दो हस्तलेख मिले हैं। इसका रचनाकाल संवत् १६१६ सन् १८६२) है और सन् १९२३-२५ (संख्या १५८) की खोज-विवरणिका में भी इसका विवरण है।

१७२ हरिशंकर—हरिशंकर ने 'गणेश माहात्म्य अंतर्गत संकट-व्रत-कथा' नामक ग्रंथ लिखा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ (नं० २५८) में है। ग्रंथकर्ता ने अपनी रचना राजा बरजोरसिंह के आश्रय में प्रस्तुत की है। ग्रंथ की रचना संवत् १६५४ (सन् १५९४ ई०) में हुई।

१७३ हरिवल्लभ—हरिवल्लभ बहुत ही महत्त्वशाली और प्रसिद्ध रचनाकार हैं। वर्तमान खोज में इनके तीन हस्तलेख मिले हैं—(१) भाषा गीता ज्ञान, (२) श्रीमद् भगवत्गीता भाषा और (३) संगीत सार, सुराध्याय। प्रथम दो तो एक ही हैं सिवा सामान्यतः अंतर के जिनसे दो ग्रंथों का भ्रम उत्पन्न होता है। वस्तुस्थिति यह है कि उसमें बहुत तरह की बातें जोड़ दी गई हैं जैसे, मूल संस्कृत पाठ, दोहों का मूल रूप, इन दोनों का मेल और प्रसंगानुकूल अन्य छंद। जैसा मैंने खोज-विवरणिका सन् १९१७-१९ के पृष्ठ १४ के ग्यारहवें अनुच्छेद में लिखा है, किसी आनंदराम ने इनके सारे अनुवाद हड़प लिए और उन्हें अपना घोषित कर दिया (देखिए सं० १३ ऊपर)। प्रत्येक श्लोक का यह सुंदर हिंदी अनुवाद हरिवल्लभ का ही है इसका एक प्रमाण यह भी है कि हरिवल्लभ ने संवत् १७०१ (सत्रह सै जु एकोतरा माघ मास तिथि ग्यारसै) में अनुवाद प्रस्तुत किया और आनंदराम ने संवत् १७६१ में (जैसा उसने कहा भी है—'ससि रस उदधि-धरा समति कातिक उज्जल मास। रवि पाच्यौ पूरन भयो यह गीता परगास) जो गणनानुसार रविवार २ अक्टूबर सन् १७०४ ई० से ठीक ठीक मिलता भी है।

दूसरी पुस्तक संगीत सार जिसका एक अध्याय मात्र वर्तमान खोज में मिला है, खोज-विवरणिका सन् १९०१ की संगीत भाषा और खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ का संगीत दर्पण दोनों से मिलती है। राय साहब बाबू श्यामसुंदरदास ने इसे इसी नाम के दूसरे व्यक्ति की रचना मानी है जो विवादास्पद प्रश्न है और जिसके लिए पुष्ट प्रमाणों की आवश्यकता है।

१७४ हरिवंश—हरिवंश नायक नायिका-भेद का ग्रंथ 'रसिक विनोद' के रचयिता थे। इसके तीन हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। इसका रचनाकाल है—

राम नयन वसु इंदु के कातिक पिछले पाप।
दसमी मंगल को रच्यो पूरन रस को दाप॥

अर्थात् कार्तिक शुक्ल १० संवत् १८२३ मंगलवार-तदनुसार मंगलवार ११ नवंबर सन् १७६६ ई०।

१७५ हरिवंशराय—हरिवंशराय (मुंशी) ने भगवद्गीता का हिंदी गद्य में अनुवाद करके उसका नाम भगवद्गीता भाषा रखा। वर्तमान खोज में इसके दो हस्तलेख

मिले हैं। इसकी भाषा ब्रजी भाषी है। रचनाकाल है संवत् १९२८ वि० (१८७१ ई०)। रचयिता काशीवासी था।

१७६ हरिविलास—कवित्त-विलास के रचयिता हरिविलास का विवरण खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ (संख्या १६१) में दिया जा चुका है। ग्रंथ जन्मकुंडली तैयार करने की विधि बताता है। इसका रचनाकाल अज्ञात है, किंतु इसकी प्रतिलिपि संवत् १९३० (१८७३ ई०) में प्रस्तुत हुई है।

१७७ हरिविलास—हरि विलास लक्ष्मणपुरी या लखनऊ के निवासी थे। वर्तमान खोज में इनकी तीन रचनाएँ प्राप्त हुई हैं—(१) गाने के पद (गीतों का संग्रह), (२) हरिविलास संग्रह (राधा और कृष्ण विषयक गीतों तथा अन्य छंदों का दूसरा संग्रह) जिसकी रचना संवत् १९१९ (सन् १८६२ ई०) में हुई थी और (३) राग कल्पण (पिंगल का ग्रंथ) जिसकी रचना संवत् १९१९ (सन् १८६२ ई०) में हुई।

१७८ हेमराज—आगरा के हेमराज प्रसिद्ध जैन रचनाकार थे। ये सत्रहवीं शती के चतुर्थ चरण में विद्यमान थे। इनके ग्रंथ रोहिणी व्रत की कथा का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ (सं० १६४) में पहले ही दिया जा चुका है। इस बार मानतुंगाचार्य कृत भक्तामर पर इनकी टीका प्राप्त हुई है। इसकी रचना प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ की प्रशंसा में हुई है और इसकी ऐसी ख्याति है कि इसके पाठ करने पर बाघ भी छोड़ देता है आक्रमण नहीं करता।

१७९ हितहरिवंश—हित हरिवंश सोलहवीं शती में विद्यमान थे। वर्तमान खोज में इनके 'चौरासी पद' की दो प्रतियाँ मिली हैं। इस ग्रंथ का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ में पहले हो चुका है और इसकी टीका पहले की बार विवरणिकाओं में भी मिल चुकी है। हितहरिवंश राधावल्लभी संप्रदाय के संस्थापक थे।

१८० हृदयराम—कृष्णदास के पुत्र हृदयराम पंजाबी थे। इन्होंने संस्कृत के हनुमन्नाटक का हिंदी अनुवाद १६८० (सन् १६२३ ई०) में प्रस्तुत किया। इसका विवरण खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ में (संख्या १६९) में भी है। वहीं तद्विषयक अन्य पूर्व विवरणों की सूचना भी दी हुई है।

१८१ हुकमराज—हुकमराज धामी संप्रदायानुयायी थे और इन्होंने 'प्रभाती' नामक प्रातःकाल गाए जाने वाले गीतों का छोटा सा संग्रह रचा है। इसमें इनके संप्रदाय के सिद्धांतों का संक्षेप में वर्णन है। रचयिता ने अपने को धामी संप्रदाय के संस्थापक प्राणनाथ का शिष्य बताया है। अतः इन्हें सत्रहवीं शती का मानना ही माना जा सकता है।

१८२ हुलासराय वैद्य—आगरा निवासी हुलासराय वैद्य ने स्वप्नपरीक्षा नामक ग्रंथ में स्वप्नों के शुभाशुभ विचार तथा तज्जनित दुष्परिणामों से बचने के उपाय बताए हैं। रचयिता और रचना दोनों ही पहली बार मिले हैं। ग्रंथ की रचना संवत् १९२० (सन् १८६३ ई०) में हुई और इसकी प्रतिलिपि संवत् १९२४ (सन् १८६७ ई०) में हुई।

१८३ हुलास पाठक (कवि)—हुलास पाठक ने वैद्यक का ग्रंथ लिखा है। इनके दो ग्रंथ मिले हैं—(१) शालिहोत्र और (२) वैद्य-विलास। इनमें से प्रथम पुस्तक अश्वविषयक है और दूसरी मानवी रोगों की चिकित्सा संबंधी है। प्रथम ग्रंथ हुलास कवि कृत है और दूसरा हुलास पाठक कृत। निश्चय ही दोनों कवि एक ही व्यक्ति हैं, क्योंकि दोनों ग्रंथों में त्रिपुरासुंदरी की वंदना एक ही शब्दों में की गई है। संपूर्ण शालिहोत्र पद्य में है, किंतु वैद्यविलास गद्य और पद्य दोनों में है।

१८४ इलाहीबक्श—इलाहीबक्श लिखित अवधी के पाँच ग्रंथ मिले हैं जिनमें फारसी अरबी के शब्दों की बहुलता है। वे इस्लाम धर्म संबंधी तथा उपासनात्मक हैं। उनमें से प्रथम 'अदहम नामा' 'अरेबियन निहट्स' के ढंग पर प्रेमाख्यानक काव्य है जिसमें आश्चर्यजनक घटनाओं का संविधान है। इस कहानी में अदहम नामक एक भिक्षुक एक राजकुमारी से प्रेम करने लगता है जिसका पता चलने पर उसे दंड दिया जाता है। वह शाप दे देता है और राजकुमारी मर जाती है। किंतु वह उसे फिर जीवित कर देता है और उससे विवाह भी कर लेता है। उस राजकुमारी से एक पुत्र उत्पन्न होता है जो आगे चलकर अपने मातामह के राज्य का उत्तराधिकारी होता है। संपूर्ण कथा का अंत दुःखात्मक होता है। ग्रंथ की रचना ११ मुहर्रम सन् १२८९ हिजरी तदनुसार गुरुवार २१ मार्च सन् १८७२ ई० को हुई। दूसरी पुस्तक हश्र नामा उसी नाम के फारसी ग्रंथ का अनुवाद है जिसमें इस्लाम धर्म और तदनुसार स्वर्ग और नरक का वर्णन है। ग्रंथ की रचना ११ सव्वाल सन् १२५७ हिजरी को जुमा के दिन हुई जब रविवार को पूर्णिमा थी। देखने में रचनाकाल देने का यह विलक्षण ढंग प्रतीत होता है। किंतु गणना में यह बिलकुल ठीक है। ईसाई सन् के अनुसार यह समय शुक्रवार २६ नवंबर सन् १८४१ ई० है। इसके बाद की पूर्णिमा जो तत्कालीन कार्तिक मास की थी रविवार १८ नवंबर को पड़ी थी। तीसरा ग्रंथ खुर्शेद बेनजीर में दो विवाहित व्यक्तियों की कथा वर्णित है। इसका रचनाकाल भी उसी ढंग से दिया हुआ है जैसा अभी बताया जा चुका है अर्थात् १८ जिलकदा सन् १२९४ हिजरी सोमवार जिसके बाद फागुन की पूर्णिमा हुई। गणना से यह तिथि खरी नहीं उतरती क्योंकि न तो १८ जिलकदा ही सोमवार को पड़ा और न उस महीने में फागुन पूर्णिमा ही। जिलकदा के महीने में हिंदू मास कार्तिक था। चौथा ग्रंथ रमजाननामा जो रमजान महीने की प्रशंसा में लिखा गया है सवास सन् १२९० हिजरी अर्थात् अक्टूबर सन् १८७३ ई० को रचा गया। पाँचवीं पुस्तक साद फकीरी छोटी सी धार्मिक शिक्षा संबंधी पुस्तिका है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि रचयिता का दूसरा नाम रमजानशेख था। इसमें समय नहीं दिया है।

१८५ ईश्वरदास—महाभारत के स्वर्गारोहण पर्व का ईश्वरदास कृत अनुवाद से उसके रचयिता और समय का ज्ञान नहीं होता। ग्रंथ आरंभ तो होता है रामप्रसाद के नाम से (राम प्रसाद कहि कर जोरी) किंतु समाप्त होता है ईश्वरदास के नाम से (स्वर्गारोहण कथा यह (गाइ) व्यास ऋषि राय। जनमेजय सुख पायउ ईश्वरदास कविराय)। ऐसा प्रतीत होता है कि आरंभ में छंदानुरोध से ईश्वर के स्थान पर राम लिख दिया गया है।

१८६ ईश्वर त्रिपाठी—ईश्वर त्रिपाठी सीतापुर जिले की सिधौली तहसील में पीरनगर के निवासी थे। इन्होंने राम का संपूर्ण चरित्र गोस्वामी तुलसीदास जी की भाँति सात अध्यायों में किंतु उनसे भिन्न छंदों में लिखा है और उसका नाम रामायण राम विलास रखा। ये नवोपलब्ध रचनाकार हैं। ग्रंथ का समय संवत् १९१६ (सन् १८५९) है।

१८७ जगजीवनदास—सतनामी संप्रदाय के अधिष्ठाता जगजीवनदास सुप्रसिद्ध रचनाकार हैं। वर्तमान खोज में इनके तीन ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं—(१) दोहावली, (२) लीला और (३) शब्दसागर। दोहावली को छोड़ कर अन्य समस्त ग्रंथों का विवरण पिछली खोज विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। रचनाकार का विस्तृत विवरण खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या १२५ में है।

१८८ जगन्नाथ—जगन्नाथ ने जुगलकिशोर की बारहमासी नामक पुस्तक लिखी है। इनके विषय में इससे अधिक ज्ञात नहीं है।

१८९ जगन्नाथ—जगन्नाथ ने गुरु-चरित्र या गुरु-महिमा नामक ग्रंथ लिखा है जिसके दो हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। यह खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या १०९ में भी उल्लिखित हो चुका है। जहाँ तक रचना के समय का संबंध है दोनों हस्तलेखों में अंतर है। वर्तमान खोज में उपलब्ध एक हस्तलेख में समय दिया है—संवत् सत्रह सै अरु आठै। माघ मास उजियारी आठै। भारती रवि अरु मंगलवारा। गुरु-चरित्र भाषा विस्तारा। अर्थात् मंगलवार माघ शुक्ल ८ संवत् १७०८। किंतु गणना से यह तिथि मंगलवार को नहीं पड़ती। दूसरे हस्तलेख में समय सूचक पद्य इस प्रकार है—

संवत सत्रह सै अरु सातै। महामास उजियारी आठै।
बरणी ईश मंगल वारा। गुरु चरित्र भाषा विस्तारा।

इसके अनुसार संवत् १७०७ होता है और विस्तृत विवरण अशुद्ध वर्तनी के कारण अस्पष्ट है। फिर भी जितना स्पष्ट है वह भी मंगलवार को सिद्ध नहीं होता। किंतु सन् १९२३-२५ की खोज-विवरणिका में दिया हुआ समय संवत् १७६० मंगलवार माघ शुक्ल ८ गणना से बिलकुल ठीक बैठता है अर्थात् मंगलवार १ फरवरी सन् १७०४ ई०। वस्तुतः वर्तमान खोज में उपलब्ध दोनों हस्तलेखों के लिपिकारों ने 'साठै' (६०) शब्द को अशुद्ध पढ़ लिया। एक ने आरंभ के 'सा' अक्षर को 'आ' पढ़कर 'आठै' लिखा और दूसरे ने दूसरे अक्षर 'ठै' को 'तै' समझकर सातै लिखा। अतः सन् १९२३-२५ की खोज-विवरणिका में दिया हुआ समय ठीक है।

१९० जगन्नाथ—वर्तमान खोज में उपलब्ध 'बारहमासा' के रचयिता जगन्नाथ कानपुर जिले में महाराजपुर के रहनेवाले थे। हस्तलेख संवत् १९३७ (सन् १८८० ई०) का है और ऐसा प्रतीत होता है कि यही उनका रचनाकाल भी है।

१९१ जगन्नाथ—जगन्नाथ ने श्रीकृष्ण जी की बारहमासा नामक पोथी लिखी है जिसकी दो प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। ये उपर्युक्त जगन्नाथ (संख्या १९०) से एक नहीं

किये जा सकते, यद्यपि उन्होंने भी बारहमासा लिखा है। क्योंकि दोनों की वर्णनशैली में भिन्नता है।

१६२ जगतसिंह बिसेन—गोंडा जिले के जगतसिंह बिसेन ने साहित्यसुधानिधि और जगत-विलास नामक रसिकप्रिया की टीका लिखी है। ये भिनगा नरेश के सबंधी थे। ये उन्नीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में थे और खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ (स० १७९) में इनका विवरण दिया जा चुका है। उसमें इनके प्रायः एक दर्जन ग्रथों की सूची भी दी हुई है। इनकी गणना उच्च कोटि के कवियों में होती है।

१६३ जन दयाल—खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ (सख्या २६८) में वर्णित प्रेमलीला के रचयिता और वर्तमान खोज में उपलब्ध धरम सवाद के रचयिता जन दयाल एक ही व्यक्ति हैं। ग्रथ में युधिष्ठिर और चाडाल वेशधारी धर्म का सवाद वर्णित है। जन दयाल ने इस कथा के वर्णन के लिए गुरु गोविंद की आज्ञा का उल्लेख किया है। हस्तलेख का समय सन् १७७६ ई० है अर्थात् गुरु गोविंद के सौ वर्ष बाद का समय।

१६४ जन जगन्नाथ—मोहमर्दराजा की कथा और होली संग्रह कर्ता जन जगन्नाथ का वर्णन खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ सख्या १७७ में हो चुका है। इनका होली सग्रह नवोपलब्ध रचना है जो सवत् १७७५ (सन् १७१८ ई०) में रची गई। मोहमर्द की रचना एक वर्ष बाद हुई थी।

१६५ जानकी मंगल—जानकी मंगल ने छोटा सा शिवस्तोत्र लिखा है जिसका कोई महत्त्व नहीं है।

१६६ जानकी प्रसाद—जानकी प्रसाद पुवार ने भगवतीविनय और रामनवरत्न विनय नामक ग्रथ लिखे हैं। शिवसिंहसरोज में इन्हें अनेक ग्रथों का रचयिता माना गया है। भगवती विनय में कोई सन्-संवत् नहीं दिया है, किंतु रामनवरत्न विनय की प्रति रचयिता ने स्वहस्त से माघ शुक्ल पंचमी भौमे सवत् १९२१ को लिखी है ऐसा कहा जाता है। गणना से यह तिथि ३१ जनवरी सन् १८६५ ई० मगलवार को पड़ती है। यह कवि का विद्यमान काल भी प्रतीत होता है। रचयिता रायबरेली जिले का निवासी था। वह फारसी और सस्कृत का अच्छा ज्ञाता भी था जो उसकी पुष्पिका से प्रमाणित है जिसमें उपर्युक्त तिथि का उल्लेख हुआ है।

१६७ जानकीप्रसाद—बनारस के जानकी प्रसाद ने युक्ति रामायण ग्रथ लिखा है जिसमें राम की कथा वर्णित है। मिश्रबधु ने इन्हें रामभक्ति-प्रकाशिका और राम-चद्रिका-टीका का कर्ता भी बताया है, किंतु खोज-विवरणिका सन् १९०३ के अनुसार दोनों ग्रंथ एक ही माने जाते हैं।

१६८ जानकी सहाय—जानकी सहाय भजन-विनोद के रचयिता थे जिसमें विनय के पद सगृहीत हैं। ग्रथ की रचना संवत् १८८३ (सन् १८२६ ई०) में हुई।

१६९ जन राम हित—जन रामहित ने 'गणक आल्हादिका' नामक ज्योतिष का ग्रथ लिखा है जो सर्वप्रथम मिला है। ग्रथ का रचनाकाल इस प्रकार दिया हुआ है—

एक आठ पुनि भाद्र ए सागर चारि धरेहु । संवत् शुभ पहिचानिए ग्रंथ पूर कृत एहु ॥
चैत्र शुक्ल नौमी सुतिथि । गुरु वासर सुखरूप । ग्रंथ सनक आसदर्दिश कीन्हों मति अनुरूप ॥

अर्थात् गुरुवार चैत्र सुदी ९ संवत् १८८४ तदनुसार गुरुवार ५ अप्रैल १८२७ ई० ।

२०० जनार्दन भट्ट—वैद्य रत्न के कर्ता जनार्दन भट्ट का वर्णन खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ (संख्या १८१) में हो चुका है । वर्तमान खोज में इसी के तीन हस्त लेख मिले हैं । उनमें सबसे पुराना संवत् १८८६ (सन् १८२९ ई०) का है ।

२०१ जसवंतसिंह—जोधपुर नरेश राजा जसवंतसिंह अठारहवीं शती में विद्यमान थे । इनके भाषा-भूषण की चार प्रतियाँ और अपरोक्ष सिद्धांत की एक प्रति वर्तमान खोज में मिली है । ग्रंथों का वर्णन पूर्व खोज विवरणिकाओं में विशेषतः सन् १९२०-२२ की विवरणिका में हो चुका है । उसमें मैंने कुछ विस्तार से इनका विवरण दिया है । भाषा भूषण की नवोपलब्ध एक प्रति संभवतः अब तक प्राप्त सभी प्रतियों से पुरानी है । इसका समय संवत् १७८४ (सन् १७२७ ई०) है । जसवंतसिंह महान् पंडित थे और साथ ही उच्चकोटि के कवि भी थे ।

२०२ जसवंतसिंह—शृंगार-शिरोमणि के रचयिता जसवंतसिंह फर्रुखाबाद जिले के तिरवा के राजा थे और सन् १७९७ के लगभग विद्यमान थे । इनका उक्त ग्रंथ शृंगारी कविताओं का संग्रह है और उसका वर्णन खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ और १९२३-२५ में हो चुका है ।

२०३ जयचंद—दिल्ली निवासी जयचंद कायस्थ सरनागत ने भागवत पुराण या कथा लिखी है जो नवोपलब्ध कृति है । ग्रंथ की रचना संवत् १६६२ (सन् १६०५ ई०) में हुई, किंतु समय का विस्तृत विवरण गणना से ठीक नहीं उतरता । समय सूचक छंद यह है—

संवत सोरह से बासठा । तब हरि कृपा करी जगदीसा ।
गुरु वासर रेवती नखत जानि । माघ मास सुकल साते मुनि ।

तात्पर्य यह कि ग्रंथ की रचना गुरुवार माघ शुक्ल ७ को रेवती नक्षत्र में संवत् १६६२ में हुई । यह तिथि ८ जनवरी सन् १६०५ ई० को थी जिस दिन रेवती नक्षत्र भी था किंतु उस दिन रविवार था गुरुवार नहीं । यदि गुरु के स्थान पर रवि हो जाय तो सब ठीक है किंतु लिपिकार ने रवि को गुरु कैसे पढ़ लिया यह बतलाना कठिन है ।

२०४ जयलाल—जयलाल ने चार ग्रंथ लिखे हैं जो वर्तमान खोज में मिले हैं—(१) श्री कृष्ण जी की विनती (२) शिवजी की विनती (३) श्रीरामनाम की महिमा और गर्भ-चिंतामणि । प्रथम तीन ग्रंथों में समय नहीं दिया है, किंतु चौथे में है । इसकी रचना सन् १८२० ई० में हुई थी । इससे कवि का विद्यमान-काल भी ज्ञात होता है ।

२०५ जयराम सारस्वत—जयराम सारस्वत (गुसाईं) ने लावनी और ख्याल में 'महिरावण लीला' लिखी है । हस्तलेख का समय संवत् १९१४ (सन् १८५७) है । इससे पूर्व रचयिता अवश्य विद्यमान रहा होगा । लावनीबाजों के दो दल थे—(१) तुर्रा और

(२) कलगी। दोनों का अर्थ एक ही है। पहला पुल्लिंग है और दूसरा स्त्रीलिंग। तुर्रावाले पति पत्नी की जोड़ी लेते हैं और मातृपक्ष को पुत्रपक्ष से अत्यधिक अच्छा बताते हैं। लखनऊ आगरा और फिरोजाबाद मे तो उन लोगों में लावनी गाने का नियमित ताम्रचूड़-युद्ध होता है। कभी कभी तो दर्शकों के लिए यह अत्यधिक रोचक होता है। जयराम तुर्रा सम्प्रदाय के थे।

२०६ **जयसुख**—जयसुख नवोपलब्ध रचनाकार हैं। इनके दो ग्रथ—राधा-विलास और ज्ञानगीता, वर्तमान खोज में मिले है दोनों में राधाकृष्ण की लीलाओं का वर्णन है। हस्तलेख में कोई समय नहीं दिया है।

२०७ **जेठमल**—नागपुर के जेठमल ने 'नरसिंह मेहता की हुडी' लिखी है जिसकी तीन प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली है। ग्रथ की रचना सवत् १७१० (सन् १६५३ ई०) में हुई। इसका वर्णन खोज-विवरणिका सन् १९०१ सख्या ७७ में भी हो चुका है। इसमें नरसी मेहता की एक साधु को दी हुई हुडी भगवान् श्री कृष्ण द्वारा सकारे जाने का वर्णन है।

२०८ **झामराम**—झामराम ने रामायण पिंगल नामक ग्रथ लिखा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ सख्या १९२ मे दिया जा चुका है। उपलब्ध हस्तलेखो में सबसे पुराना सवत् १९०१ (सन् १८४४ ई०) का है। खोज विवरणिका सन् १९२०-२२ और १९२३-२५ में इस विषय में जितना दिया हुआ है उससे अधिक इन हस्त-लेखों से नहीं जाना जा सकता।

२०९ **ज्ञानदास**—बाराबकी जिले में धेवा के ज्ञानदास अचलदास के शिष्य थे। इन्होंने पचरत्न और अनुभव ग्रथ नामक दो ग्रथ लिखे हैं। प्रथम की रचना सवत १९३३ (सन् १८७३) में हुई है। उपलब्ध प्रति रचयिता की स्वहस्त लिखित है। दूसरी सवत् १९२७ (सन् १८७०) की कृति है।

२१० **ज्ञानी जी**—शब्द पारखी के रचयिता ज्ञानी जी कबीरपंथी प्रतीत होते हैं। इनका कथन है कि स्त्रीपरित्याग से इन्द्रिय-निग्रह होता है। ये पडित, भक्त, हिंदू, मुसलमान आदि की विशेषताएँ भी अपनी धारणानुसार बतलाते हैं। रचयिता और उसके विषय में इससे अधिक कुछ ज्ञात नहीं है।

२११ **जुगलदास**—यद्यपि खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ में जुगलदास के अन्य दो ग्रथो का विवरण दिया जा चुका है किंतु 'जुगलदास की बानी' का नहीं जो इस खोज में प्रथम बार मिली है। ये राधावल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे और सवत् १८२१ के लगभग विद्यमान थे। हस्तलेख का लिपिकाल संवत् १८७१ (सन् १८१३ ई०) है।

२१२ **जुगतराय**—जुगतराय ने 'तिलशतक' नामक एक ग्रथ लिखा है जो नवोपलब्ध कृति है। हस्तलेख का लिपिकाल सवत् १८९० (सन् १८३३ ई०) है। ग्रथ में १०० दोहों में तिल का वर्णन है और यह ग्रथ मुबारक के 'तिलशतक' से अच्छा जान पड़ता है।

२१३ **ज्योतिपराज**—ज्योतिपराज ने 'प्रश्न-विचार' नामक छोटी सी पुस्तक लिखी है।

२१४ कबीरदास—कबीरदास प्रसिद्ध रचनाकार हैं और इनके विवरण अनेक पूर्व खोज-विवरणिकाओं में दिए जा चुके हैं। वर्तमान खोज में इनकी निम्नलिखित रचनाएँ मिली हैं—(१) संतों की गारी, (२) अक्षरावली (३) उग्रगीता, (४) ज्ञानस्वरोदय, (५) कबीर मांड्यो। इनमें से पहली और पाँचवीं सर्वप्रथम उपलब्ध हुई हैं। किसी भी उपलब्ध हस्तलेख में रचनाकाल नहीं दिया है। 'संतों की गारी' तो विवाहोपलक्ष में गाई जानेवाली गारी के रूप में लिखी हुई है किंतु उसका आध्यात्मिक अर्थ है। अक्षरावली में 'सत्-नाम' और 'सत-गुरु' अर्थात् 'शब्द' के प्राधान्य का महत्व प्रतिपादित किया गया है। 'उग्रगीता' में आध्यात्मिक विषयों पर धर्मदास और कबीरदास के बीच प्रश्नोत्तर है। ज्ञानस्वरोदय भी इसी विषय का ग्रंथ है। 'कबीर मांड्या' राजस्थानी की रचना प्रतीत होती है जो कबीरमाला के रूप में गुरु विनय, बुद्धि आदि की प्रशंसा में संकलित की गई है। इसका अंतिम दोहा है—

> कबीरमाला पहिरयाँ कुछ नहीं भगति न आई हाथ।
> माथाँ मूछ मुँडाय करि चला जगत के साथ॥

२१५ कालीदत्त नागर—उरई के ब्राह्मण कालीदत्त नागर ने दो ग्रंथ लिखे हैं—(१) रसिक विनोद और (२) छविरत्न। पहला नायिकाभेद का ग्रंथ है जिसके तीन हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं और दूसरा नखशिख का है जिसमें नायिका के सिर से पैर तक समस्त अंगों का वर्णन बहुत अच्छे छंदों में किया गया है। 'प्रभा' नाम्नी उसकी टीका भी उसी से संलग्न है। रचनाकार और उसकी रचनाएँ सब नवोपलब्ध हैं। उनका रचनाकाल नहीं दिया है, किंतु रसिक विनोद के दो हस्तलेखों का लिपिकाल संवत् १९२१ (सन् १८६४ ई०) और संवत् १९३४ (सन् १८७७ ई०) दिया हुआ है। छविरत्न की प्रति संवत् १९५२ (सन् १८९५) की है। इन संवतों से स्पष्ट है कि कालीदत्त सन् १८६४ के पहले के हैं। किंतु दीवान प्रतिपाल सिंह कृत बुंदेलखंड का इतिहास (देखिए भाग १, पृष्ठ २७५) में इनका समय संवत् १९५० (सन् १८९३) बताया गया जो ठीक नहीं हो सकता। इन्हें उरई (जालौन) के ब्राह्मण बताते हुए दीवान जी ने इनके साथ 'हनुमत पताका' का कर्तृत्व भी जोड़ दिया है जो ठीक हो सकता है, किंतु उन्हें उन दोनों ग्रंथों का पता नहीं है जिनका उल्लेख ऊपर हुआ है।

२१६ कालिका सेठ—कालिका सेठ शाहजहाँपुरी ने रामविलास नामक एक ग्रंथ लिखा है जिसमें सीता स्वयंवर का स्थान वर्णित है। ग्रंथ की समाप्ति संवत् १९१० फागुन सुदी २ बुधवार तदनुसार १ मार्च सन् १८५४ ई० को हुई।

२१७ कालिकाचरन—कालिकाचरन कृत कृष्णक्रीड़ा के तीन हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। उनमें रचनाकाल तो नहीं दिया है किंतु सबसे पुराना हस्तलेख संवत् १९२० (सन् १८६३ ई०) का है।

२१८ कमला—कमला या कमलाजन ने दस्तूर मालिका नामक पोथी लिखी है और इसका वर्णन खोज विवरणिका सन् १९०६-०८ (संख्या ५६) में हो चुका है। ग्रंथ

का आरंभ रचनाकाल और विषय वर्णन से होता है। रचनाकाल बताया गया है—सावन कृष्ण १३ भानुवार सवत् १८४७ तदनुसार रविवार (८ अगस्त सन १७९० ई०) रचना का उद्देश्य अक्षर से लेकर आय-व्यय का विवरण रखने तक का संपूर्ण ज्ञान कराना है। अनेक रचयिताओं ने इस विषय के ग्रथ लिखे हैं, जैसे फतहसिंह देखिए खोज विवरणिका १९०५ और १९२०-२२) रामसिंह (खो० वि० १९०६-०८); बंसीधर-खो० वि० १९०९-११)। अन्य लेखकों ने रचना के नाम में थोड़ा परिवर्तन भी किया है, जैसे, दस्तूर सागर, दस्तूर चिंतामणि, दस्तूर-अमला आदि।

२१९ **कमलदास वैष्णव**—कमलदास वैष्णव ने सवत १८८० (सन् १८२३) में ज्ञानमाला की रचना श्रीशुकदेव और राजा परीक्षित के सवाद रूप में की। इन्होंने खड़ी बोली गद्य का वैसा ही रूप प्रयुक्त किया है जैसा लल्लूलाल के प्रेमसागर में।

२२० **कमलाकर भट्ट**—रामकृष्ण के पुत्र कमलाकर भट्ट ने गोत्र-प्रवर-दर्पण नामक ग्रथ रचा है जिसमें ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों के गोत्र और प्रवर का वर्णन विवाहादि के निमित्त किया है। इसके दो हस्तलेख मिले हैं जिनमें प्राचीनतर सन १८७३ ई० का है। इसकी भाषा आधुनिक खड़ी बोली है। रचना गद्य में है।

२२१ **कनकसिंह**—कनकसिंह ने बभ्रुवाहन की कथा लिखी है जो नवोपलब्ध रचना है। ग्रथ अवधी में है।

२२२ **कन्हैयाबक्श पाल**—कन्हैयारत्नमंजरी नामक नायिकाभेद ग्रथ के रचयिता कन्हैयाबक्श पाल नवोपलब्ध रचनाकार हैं। रचयिता अपने को सूर्यवंशी क्षत्रिय बताता है और कुमायूँ से अपना वश जोड़ता है जहाँ से आकर उसका परिवार महुलीगढ़ में बस गया।

२२३ **कान्हरदास**—कान्हरदास (बाबा) ने भजन की छोटी सी पुस्तक पद रामायण लिखी है। ये आगरा के गोकुलपुरा में लल्लूजी लाल के निवास स्थान में ही रहते थे।

२२४ **कपूरचद**—कपूरचद उपनाम चंद दिल्ली निवासी ब्राह्मण थे और इन्होंने रामचरित्र नामक पोथी लिखी है। खोज-विवरणिका सन १९०३ संख्या ९९ में इनका वर्णन हो चुका है जहाँ इनका रचनाकाल इस प्रकार दिया है—

सत्रह सै संवत भूप विक्रम को गनिए। एक हजार पचा हजार सन हजार गनिए।
फेर वदी वैसाख चातुरन जाने ज्ञाता। साहिजहाँ पातिसाह दिल्ली अदल विज्ञाता।

यह पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है। होना चाहिए था—'सत्रह सै सवत भूप विक्रम को गनिए। इक हजार पचास चार सन हिजरी गनिए। फेर वदी वैसाख चातुरन जाने ज्ञाता। शाहजहाँ-पतसाह दिल्ली अद्दल विज्ञाता।' इसका तात्पर्य हुआ विक्रम संवत् १७०० और हिजरी सन् १०५४ जब सम्राट् शाहजहाँ दिल्ली में राज्य करता था। कुंडलिया छद में दिया हुआ यह समय संप्रति प्राप्त हस्तलेख में दिए हुए इस दोहे से पुष्ट होता है—

सत्रह सै विक्रम को बरस्यो सन हजार पंचास ।
चार हजार (हिजरी) ताके गिन्यौ केरि बदी बैसाख ।

यह हुआ विक्रम संवत् १७०० और हिजरी सन् १०००+५०+४, महीना बैसाख कृष्ण पक्ष । हिजरी सन् १०५४ फरवरी २९ सन् १६४४ ई० को आरम्भ हुआ अर्थात् चैत्र शुक्ल २ विक्रम संवत् १७०० । किंतु ग्रंथ रचना चैत्र के बाद बैसाख शुक्ल में हुई ।

२२५ करनेस महापात्र—करनेस महापात्र ने कल्याण प्रकाश नामक जसवंत सिंह कृत भाषा भूषण की टीका राजा बलभद्रसिंह की संरक्षता में लिखी है । टीका की रचना संवत् १९१७ (सन् १८६०) में हुई । यह नवोपलब्ध रचना है ।

२२६ काशीदास—काशी दास ने ज्योतिष भाषा ग्रंथ लिखा है जो पहली बार मिला है । इसमें विवाहादि की लग्न वर्णित है । हस्तलेख संवत् १९८४ (सन् १९२७ ई०) का है ।

२२७ काशी गिरि बनारसी—काशी गिरि बनारसी ने लावनी (मराठी ख्याल) और गंगालहरी लिखी है जो नवोपलब्ध रचनाएँ हैं । एक में गंगा की स्तुति है और दूसरी में विभिन्न देवी देवताओं के स्तवन हैं । रचनाकाल अज्ञात है किंतु लावनी के हस्तलेख का समय संवत् १९२७ (सन् १८७० ई०) है और गंगालहरी का संवत् १९१४ (सन् १८५७ ई०) ।

२२८ काशीनाथ—काशीनाथ भट्टाचार्य शीघ्रबोध नामक ज्योतिष के संस्कृत ग्रंथ के मूल लेखक थे । किसी ज्योतिषी ने इसका हिंदी अनुवाद किया और अपना नाम छिपाकर मूल लेखक का ही नाम रहने दिया जिससे हिंदी अनुवादक के विषय में भ्रम उत्पन्न हो गया है । वर्तमान खोज में इस अनुवाद के चार हस्तलेख मिले हैं । चारों थोड़ा बहुत मिलते हैं किंतु सब का सम्यक् रूप से एक ही पाठ नहीं प्रतीत होता । कुछ लिपिकारों ने रचयिता का नाम काशीराम लिखा है जो संस्कृत के रचनाकार से हिंदी अनुवादक का विभिन्न व्यक्त कर भ्रम उत्पन्न करता है । किंतु पूर्वापर विचार करने से इसका निराकरण हो जाता है । हस्तलेखों का समय है—सन् १८१३ १८३० और १८५४ ई० ।

२२९ काशीनाथ—काशीनाथ ने भर्तृहरि चरित्र लिखा है, वर्तमान खोज में जिसके तीन हस्तलेख मिले हैं । ग्रंथ की रचना संवत् १८०५ सन् १७४८ ई०) में हुई थी । प्राचीनतम हस्तलेख संवत् १८७८ (सन् १८२१ ई०) का है ।

२३० केशवप्रसाद द्विवेदी—केशवप्रसाद द्विवेदी ने तीन ग्रंथ रचे हैं— (१) ज्योतिष सार (२) पथ्यापथ्य और (३) मयूर चित्रम् । इनमें से पहला और तीसरा ज्योतिष का ग्रंथ है दूसरा वैद्यक का । रचयिता आगरा कालिज में संस्कृत के अध्यापक थे । इन्होंने क्रमशः सन् १८६९ में मयूर चित्रम् की सन् १८७३ ई० में ज्योतिषसार की और सन् १८७५ ई० में पथ्यापथ्य की रचना की ।

२३१ केशव—केशव ने वैद्यक का ग्रंथ लिखा है । इनकी पुस्तक 'वैद्यक' में विभिन्न रसों एवं धातुओं के भस्मों को तैयार करने की विधियाँ बताई गई हैं ।

२३२ केशवदास (कायस्थ)—गणेश-चौथ-कथा के कर्ता केशवदास का वर्णन खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ में हो चुका है। वर्तमान खोज में उपलब्ध हस्तलेख संवत १८४० (सन् १७८३ ई०) का है।

२३३ केशवदास मिश्र—ओड़छा के केशवदास सुप्रसिद्ध एवं महत्त्वशाली रचनाकार हैं। इनके ग्रंथ भूतपूर्व अनेक खोज-विवरणिकाओं में वर्णित हैं और सभी उपलब्धियों की विस्तृत तालिका मेरी खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या २०७ में दी हुई है। निम्नलिखित हस्तलेख वर्तमान खोज में उपलब्ध हुए हैं—

(१) विज्ञान-गीता के दो हस्तलेख—समय संवत १७०५ अर्थात सन् १६४८ (रचनाकाल सन् १६१० ई०)।

(२) रसिक प्रिया के दो हस्तलेख—समय संवत् १७३७ अर्थात सन् १६८० ई० (रचनाकाल सन् १५९१ ई०)।

(३) कवि प्रिया के तीन हस्तलेख—समय संवत् १७३७ अर्थात १६८० ई० रचनाकाल (सन् १६०१ ई०)।

(४) रामचंद्रिका की एक प्रति (रचनाकाल सन् १६०१ ई०)।

(५) बारहमासा की एक प्रति।

अंतिम ग्रंथ पहली बार प्राप्त हुआ है और प्रथम तीन ग्रंथों के हस्तलेख अब तक सभी प्रतियों में प्राचीनतम हैं। केशवदास का समय लगभग १६०० ई० है।

२३४ खैराशाह—मेरठ के खैराशाह ने एक छोटी सी पुस्तिका 'बारहमासा' लिखी है जिसका उल्लेख खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ संख्या ९१ में हो चुका है। वर्तमान खोज में इसका एक हस्तलेख और मिला है।

२३५ खेमकरन द्विज—खेमकरन द्विज ने पक्षी चेतावनी या चिरई चेतन नामक एक पुस्तिका ३१ दोहों में लिखी है जिसके प्रत्येक दोहे में एक पक्षी का वर्णन है, साथ ही उसके दूसरे अर्थ से किसी नायिका के प्रवासी प्रिय के आगमन की प्रतीक्षा भी व्यंजित होती है। पुस्तिका में सोलह स्तंभों में सोलह पक्षियों के नाम की एक तालिका भी है, किंतु इसका उपयोग नहीं बताया गया है। निश्चय ही यह अपूर्ण है। इससे संलग्न और भी तालिकाएँ होनी चाहिए थीं जिनमें नामों का परिवर्तित क्रम इस प्रकार दिया होता कि यदि कोई प्रश्नकर्ता किसी पक्षी का नाम न बताकर केवल इतना ही बताए कि अमुक तालिका में अभीष्ट पक्षी का नाम बता दे। इन तालिकाओं में कुछ संख्याएँ इस ढंग से बैठाई रहती हैं कि उनके जोड़ से उस छंद का पता चल जाता है जिसमें अभीष्ट पक्षी का वर्णन होता है।

२३६ खेतसिंह—खेतसिंह ने वैद्यप्रिया नामक वैद्यक का एक ग्रंथ लिखा है जिसकी रचना संवत् १८८० (सन् १८२३ ई०) में हुई। इसके दो हस्तलेख मिले हैं जिसमें एक सन् १८४७ ई० का है और दूसरा १८३५ ई० का है।

२३७ खुमान या मान—खुमान उपनाम 'मान' वर्तमान खोज में प्राप्त निम्नलिखित चार ग्रंथों के रचयिता हैं—

(१) लक्ष्मणशतक, (२) नरसिंह चरित्र, (३) हनुमान के नखशिख और (४) रामरासो। इनका वर्णन खोज-विवरणिका सन् १९२३ २५ संख्या २१० तथा अन्य विवरणिकाओं में भी हो चुका है। रामरासो की उपलब्धि पहली बार हुई है। इसमें तुलसीकृत रामायण के लंका-कांड की कथा वर्णित है। खुमान चरखारी राज्यांतर्गत सेरागाँव के निवासी थे और वहीं के राजा विक्रमशाह के आश्रित भी थे।

२३८ खुशाल दूबे—खुशाल दूबे दौसरिहा ने जातक माला और भवनसार नामक ज्योतिष के दो ग्रंथ रचे हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं का समय नहीं दिया है, किंतु प्राचीनतम प्रति सन् १८४२ ई० की है। अतः ये उस वर्ष के पूर्व के अवश्य ही होंगे। संभवतः ये अठारहवीं शती के मध्य के भी हो सकते हैं। क्योंकि य उन्हीं प्रसिद्ध देव कवि की पाँचवीं पीढ़ी में थे जिनका जन्म सन् १६७३ ई० में हुआ था।

२३९ खुशालचंद काला—'सद्भाषितावली या सुभाषितावली की भाषा' के कर्त्ता खुशालचंद काला का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३–२५ में दिया जा चुका है। यह ग्रंथ इसी नाम के प्राकृत ग्रंथ का संवत् १७९४ सन् १७१७ ई०) में प्रस्तुत किया हुआ अनुवाद है। हस्तलेख का समय १८६० = सन् १८०३ ई० है। रचयिता साँगानेर का निवासी था। यह कोई महत्त्वशाली रचनाकार नहीं, वरन् अनुवादक था।

२४० गयालीराम—ग्यालीराम मथुरा निवासी थे। वर्तमान खोज में इनकी 'नंदोत्सव लीला' की दो प्रतियाँ मिली हैं। ग्रंथ में कृष्णजन्मोत्सव की कथा वर्णित है। इसकी रचना संवत् १९२३ (सन् १८६६ ई०) में हुई।

२४१ किंकरप्रभु—किंकरप्रभु ने गोपी बलदेव की बारहमासी लिखी है जिसमें कृष्ण के चले जाने पर गोपियों का उलाहना तथा उनकी जीवन संबंधिनी अन्य घटनाओं का भी वर्णन है। हस्तलेख का समय संवत् १९१४ (सन् १८५७ ई०) है।

२४२ कीर्तिसेन—कीर्तिसेन राजनीति भाषा के रचयिता हैं जो वृद्ध चाणक्य विरचित उसी नाम के ग्रंथ का अनुवाद है। इस विषय में अन्य अनेक रचनाकारों को आदृत किया है जिन्होंने इससे अच्छे ही अनुवाद उपस्थित किए हैं।

२४३ कोविद—कोविद ने रमल विचार नामक ज्योतिष ग्रंथ लिखा है। ओरछा के किसी चंद्रमणि मिश्र की उपाधि भी कोविद थी जो सन् १७२० के लगभग विद्यमान थे, किंतु उनकी उपलब्ध रचनाएँ ज्योतिष से इतर विषयों की हैं। हस्तलेख का समय संवत् १९३३ (सन् १८७६ ई०) है।

२४४ कृपानिवास स्वामी—कृपानिवास स्वामी ने लगनपचीसी नामक ग्रंथ रचा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२० २२ संख्या ८५ में दिया जा चुका है। ग्रंथ प्रधानतः भक्ति-विषयक है और हस्तलेख का समय संवत् १८९८ (सन् १८४१ ई०) है। रचयिता अयोध्या में रसिक संप्रदाय के महन्त थे।

२४५ **कृपाराम**—समय-बोध और भाषा भागवत एकादश स्कंध के रचयिता कृपाराम का वर्णन अनेक खोज-विवरणिकाओं में हो चुका है, देखिए खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या २२६। समयबोध का रचनाकाल संवत् १७७२ (सन् १७१५ ई०) है।

२४६ **कृष्ण-विहारी**—कृष्ण-विहारी कृत सर्वसंग्रह पहली बार मिला है। ग्रंथ में गीतों तथा सामुद्रिक पर स्फुट विचारों का संग्रह है। हस्तलेख में कोई समय नहीं दिया है।

२४७ **कृष्णदास पयहारी**—दानलीला के रचयिता कृष्णदास पयहारी का वर्णन खोज-विवरणिका सन् १९०३ और १९२३-२५ संख्या १९ में हो चुका है। वर्तमान खोज में उक्त ग्रंथ के पाँच हस्तलेख मिले हैं जिनमें से दो में ही सन-संवत् दिया है और प्राचीनतर प्रति का समय सन् १८५६ ई० है।

२४८ **कृष्णदत्त कवि**—कृष्ण कवि बिहारी-सतसई के प्रसिद्ध टीकाकार हैं। इन्होंने अर्थ स्पष्ट करने के उद्देश्य से उसके प्रत्येक दोहे पर सवैया बाँधी है, साथ ही विषय को सुबोध बनाने के लिए गद्य में भी लिखा है। कृष्ण कवि ओड़छा के निकट भंडर के निवासी थे। इनका वर्णन भूतपूर्व विवरणिकाओं में हो चुका है। वर्तमान खोज में इनकी इसी टीका के दो हस्तलेख प्राप्त हुए हैं जिनमें से एक का समय संवत् १८२४ (सन् १७६७ ई०) है।

२४९ **कृष्णमणि**—नवीन रचयिता कृष्णमणि अपने को भगवद्गीता के अनुवादक बताते हैं। इनकी रचना हरिवल्लभ की रचना से ज्यों की त्यों मिलती है। मैंने अपनी त्रैवार्षिक विवरणिका सन् १९१७-१९, पृष्ठ १४, अनुच्छेद ११ में इस नकल पर विचार किया है, तथापि इस विवरणिका में भी आनदराम और हरिवल्लभ के प्रकरणों में इस पर अपने विचार प्रकट किए हैं। वास्तव में किसी बालगोविंद वैष्णव ने ही आनंदराम की ही भाँति उनकी नकल की नकल कर ली है, (देखिए संख्या ११३ बी)। निस्संदेह यह अंतिम नकल है जिसके कर्ता ने ठीक-ठीक संवत् लिखा है, अर्थात् शुक्रवार, २१ अगस्त १८१८ ई० और इस नैश्चिन्त्य के साथ और द्व्यर्थक शब्दावली में लिखा है कि यदि कभी पकड़ जायँ तो निकल भागने का रास्ता खुला रहे।

२५० **कुलपति मिश्र**—कुलपति मिश्र प्रसिद्ध रचनाकार हैं और इनका विवरण विगत अनेक विवरणिकाओं में दिया जा चुका है (देखिए खोज विवरणिका १९२३—२५ संख्या २२८)। वर्तमान खोज में इनके रस-रहस्य की तीन प्रतियाँ मिली हैं। यह अलंकार का ग्रंथ संस्कृत के मम्मटाचार्य कृत 'काव्य प्रकाश' के आधार पर निर्मित हुआ है। इन्होंने कहीं कहीं मतभेद होते हुए भी मम्मटाचार्य की आलोचना नहीं की है। ग्रंथ का रचनाकाल इस प्रकार दिया हुआ है—बनीस या बृहस्पतिवार कातिक बदी ११ संवत् १७२७ तदनुसार २७ सितंबर १६७० ई०। एक हस्तलेख में इनका उपनाम 'दास कवि' भी दिया हुआ है जो संभवत निम्नलिखित दोहे से व्यक्त होता है—

बसत आगरे आगरे गुनियन की जहँ रास।
विप्र मथुरिया मिश्र है हरि चरनन के दास॥

दैवयोग से मिश्र बंधुओं ने इन्हें दास कवि की श्रेणी का माना भी है। दास कवि (सुप्रसिद्ध कवि भिखारीदास) हिंदी के मान्य आलंकारिक थे, साथ ही सुमधुर कवि भी।

२५१ कुंदनप्रसाद—कुंदनप्रसाद ने तुलसीदास कृत रामायण की प्रशंसा में रामायण माहात्म्य लिखा है। यह नवोपलब्ध रचना है।

२५२ कुंजमन—कुंजमन या कुंजमणि का विवरण जिन्होंने पचासा और उषा चरित्र बारहखड़ी लिखे हैं, खोज-विवरणिका सन् १९०६–०८ और १९२०–२२ में दिया जा चुका है। पचासा में रचनाकाल इस प्रकार दिया है—

एक सहस पर आठ सै संवत सुभ तेतीस।
दुतिया सुदी बैसाख में कृपा करी जगदीस॥

तदनुसार २० अप्रैल सन् १७७६ ई०। उषा-चरित्र की समाप्ति सन् १७७९ में हुई थी। (देखिए खोज-विवरणिका १९२०—२२ संख्या ९१)।

२५३ कुँअरसेन कायस्थ—दिल्ली के कुँअरसेन कायस्थ ने दो ग्रंथ संगीतबाल चरित्र और संगीत गोवर्द्धन लीला लिखे हैं। दोनों में कृष्ण की बाल लीला गीतों में लिखी गई है। पहले की रचना १८३६ में और दूसरे की १८४० ई० में हुई। फारसी और अरबी की शब्दावली का बीच बीच में प्रयोग लेखक की कायस्थता व्यक्त कर देता है।

२५४ कुशलसिंह—बाराबंकी जिले के मथुरा निवासी कुशलसिंह गीता, अर्जुन-गीता या राम रत्नगीता नामक ग्रंथ के रचयिता हैं। इनका वर्णन विगत खोज-विवरणिका सन् १९२६–२८ संख्या २६१ में हो चुका है।

२५५ लछीमन—लछीमन या लछिमनदास ने दो ग्रंथ गोपीचंद भरथरी लीला और प्रह्लाद चरित्र लिखे हैं और प्रत्येक की दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं। ये ग्रंथ सर्वप्रथम इसी बार उपलब्ध हुए हैं। दोनों ही रचनाएँ गाने के लिए प्रस्तुत की गई हैं। खोज-विवरणिका सन् १९१७–१९ संख्या १०३ में इसी नाम के एक और रचयिता का उल्लेख है जिन्होंने रामरत्नावली और हनुमान जी का तमाशा नामक ग्रंथ लिखे हैं। उन ग्रंथों का रचनाकाल वर्तमान खोज में उपलब्ध उपर्युक्त लछीमन कृत ग्रंथों के निर्माणकाल से मिलता है। *यदि लिपिकार ऐसे न रहे हों कि अवधी के स्थान पर कुछ राजस्थानी शब्दों* का प्रयोग कर दिया हो तो दोनों की रचनाशैली में भिन्नता है और यदि ऐसा ही है तो दोनों रचनाकार एक ही हैं। *दोनों ही उन्नीसवीं शती के मध्य में विद्यमान थे।*

२५६ लक्ष्मणसिंह राजा—लक्ष्मणसिंह राजा प्रसिद्ध कवि हुए हैं। इनके शाकुंतला अनुवाद का एक हस्तलेख वर्तमान खोज में मिला है। इसकी रचना १८६१ ई० में हुई थी किंतु बटेश्वर के किसी ज्ञानसिंह ने स्वपठनार्थ इसकी प्रतिलिपि रचना के पाँच वर्ष की थी। नौ वर्ष बाद यह यौरप में मुद्रित हुआ था और इंडियन सिविल सर्विस की परीक्षा के लिये पाठ्य ग्रंथ स्वीकृत हुआ था। राजा लक्ष्मणसिंह खड़ी बोली के आरंभिक रचनाकारों में गिने जाते हैं।

२५७ लक्ष्मीपति—लक्ष्मीपति ने श्रीकृष्णरत्नावली लिखी है जो नवोपलब्ध कृति है। इसमें गीतादर्शन वर्णित है तथा निश्चित रूप से इसकी रचना सन् १८३६ ई० में हुई थी। रचना के समय-वर्णन के ढंग से भ्रम उत्पन्न हो सकता है। काल सूचक छंद इस प्रकार है—

हर भूषन ८ हर बनन ५ बर, हर तल, ७ हर सिर १ रूप।
एते अंक मिलायके कीने साके भूप।
हर रिपु निधि हर नयन मुख (मल ?) मास पच्छ सनिवार।
लछन कृष्ण रत्नावली पोथी कियो तयार॥

इसमें संदेहास्पद ढंग से शक संवत् १७५८, शनिवार मलमास १० लिखा गया है। शक संवत् १७५८ में मलमास (अधिक मास) आषाढ़ में पड़ा था और इस मास के शुक्ल पक्ष की दशमी शनिवार को अर्थात् २३ जुलाई सन् १८३६ ई० को पड़ी थी।

२५८ लक्ष्मीप्रसाद तिवारी—वैद्यकसार के कर्ता लक्ष्मीप्रसाद तिवारी प्रतापगढ़ जिले में सरायराजा के निवासी थे। वे इस शताब्दी के आरंभ के लगभग परलोकवासी हो गए। इनके ग्रंथ में स्त्रियों एवं बच्चों के रोगों की चिकित्सा का वर्णन है।

२५९ लालकवि—हनुमान पंज के रचयिता लाल कवि का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२२-२५ संख्या २४४ में दिया जा चुका है। ये सुल्तानपुर जिले के निवासी थे।

२६० लालचंद जैन—लालचंद जैन ने जैन तीर्थंकरों की स्तुति में जयमाला नामक एक ग्रंथ लिखा है। इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१७-१९ संख्या १०६ में दिया जा चुका है। ये अठारहवीं शती में विद्यमान थे।

२६१ लालचराम—भागवत पुराण दशम स्कंध के अनुवादक लालचराम का विवरण विगत कई खोज-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है (देखिए खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या २३८)। इनकी उक्त रचना के दो हस्तलेख मिलते हैं और दोनों में भिन्न भिन्न रचना काल दिए हुए है। एक हस्तलेख में संवत् १५२५ (सन् १४६८ ई०, दिया हुआ है और दूसरे में संवत् १५८५ (सन् १५२८ ई०) किंतु किसी में विस्तार से तिथि का उल्लेख नहीं है जिससे वास्तविकता का निर्णय किया जा सके।

२६२ लालदास बरेली निवसी—बरेली निवासी लालदास ने अवध-विलास और भरत की बारहमासी नामक ग्रंथ क्रमशः सन् १६४३ और सन् १६३२ ई० में लिखे हैं। इनके कथनानुसार उस वर्ष अधिक मास और ग्रहण भादों और अगहन में पड़े थे। उस वर्ष वैशाख में अधिक मास अवश्य था और भादों में सूर्यग्रहण भी था किंतु अगहन में नहीं। लालदास का विवरण विगत अनेक विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। (देखिए खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या २३९)।

२६३ लालदास वैश्य—आगरे के लालदास वैश्य ने इतिहास सार समुच्चय और मानसी तीर्थ माहात्म्य नामक ग्रंथ लिखे हैं। ये सत्रहवीं शती के तृतीय माह में विद्यमान

थे। प्रथम ग्रंथ जिसमें महाभारत की कथा वर्णित है खोज-विवरणिका सन् १९०१ और १९०२ में सूचित किया जा चुका है। दूसरा ग्रंथ भवापलक्ष्य कृति है। इसमें तीर्थयात्रा को निम्नकोटि का बताया गया है और हृदय शुद्धि का ही विशेष महत्व प्रतिपादित किया गया है।

२६४ ललन पिया—फर्रुखाबाद निवासी ललन पिया प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए हैं। इन्होंने दुमरी गीतों की रचना की है। इनका ग्रंथ इश्करंग या गानों की पुस्तक की रचना संवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) में हुई है।

२६५ ललिताप्रसाद—आल्हा खंड रामायण के कर्ता ललिता प्रसाद कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और उन्नाव जिले में पादरी कस्बे के निवासी थे। इनके ग्रंथ का केवल एक अध्याय ही मिला है जिसमें समय का छंद इस प्रकार है—

> युग सर अंक मयंक सु संवत माधव मास शशी सुत वा ।।
> पूरण सुन्दर कांड भयो कवि नायक गायक के अनुसारा।

यह कुछ संदिग्धास्पद सा है क्योंकि युग का अर्थ 'दो' और 'चार' दोनों होता है। इस प्रकार संवत् होगा या तो १९५२ या १९५४। मास का नाम दिया हुआ है माधव या वैशाख। लिपिदोष से सुतवारा लिख गया है जो होना चाहिए बुधवारा। तिथि के लिए 'शशि' शब्द का व्यवहार किया गया है जिसका तात्पर्य है पूर्णिमा। यदि इसे ही ठीक मानें तो संवत् होगा १९५४ क्योंकि इसी वर्ष वैशाख पूर्णिमा रविवार १६ मई सन् १८९७ ई० को पड़ी थी। १९५२ में यह तिथि बुधवार को पड़ी थी और इस बात की कोई संभावना नहीं है कि लिपिकार ने 'बुधवारा' को 'सुतवारा' पढ़ लिया हो। रामायण आल्हा छंदों में लिखी हुई है जो ग्रामीणों के बीच बहुत प्रचलित है।

२६६ लल्लूजी लाल—आगरा के लल्लूजी लाल प्रसिद्ध रचनाकार हो चुके हैं जिनके तीन निम्नलिखित ग्रंथ वर्तमान खोज में मिले हैं—

(१) सभाविलास (दो प्रतियाँ)

(२) राजनीति (एक प्रति)

(३) माधवविलास (एक प्रति)

इनमें से कुछ ग्रंथ तो हिंदी-विद्यालयों में पाठ्य ग्रंथ की भाँति स्वीकृत थे। राजनीति की रचना सन् १८१२ ई० में हुई और माधवविलास की उसके दूसरे वर्ष।

२६७ लेखराज मिश्र—गिधौली के लेखराज मिश्र ने गंगा की स्तुति में गंगा भरण लिखा है। गंग शब्द के कौतुक से रचनाकार ने रचनाकाल का उल्लेख बड़े विलक्षण ढंग से किया है। छंद है—

> गंग नाम गंग मग निधि दीन्हें शशि गंग
> गंगा गति गनि अंक की संवत् लिखतु सुढंग
> मास पक्ष तिथि वार गुरु के उमंग कहि गंग
> गंगा गंगाभरण को जन्म भयो यह गंग।

इसके अनुसार समय संवत १६३५ वैशाख शुक्ल ७ गुरुवार तदनुसार ९ मई १८७८ ई० होता है। लेखराज चमत्कार-प्रिय रचनाकार थे जिन्होंने अनुप्रास के लिए भावों का हनन तक किया है। एक दोहे में तो इन्होंने एक ही अक्षर का प्रयोग आद्यन्त किया है। दोहा इस प्रकार है—

गगी गो गो गोग गे गुगी गो गो गुग।
गगा गगे गं गना गगा गगे गग।

२६८ लेखराजसिंह ठाकुर—लेखराजसिंह ठाकुर ने गद्य में पदार्थ तत्त्व दीपिका नामक एक ग्रंथ लिखा है जिसमें विविध प्रकारों के उपयोगी-विज्ञान, ऋतु-विज्ञान, रसायन-शास्त्र, धातुविद्या, वस्त्र-प्रक्षालन-विद्या, उद्यान विद्या, सजावन-कला, पाकशास्त्र, भूमि-माप-विधान, पर्यायवाचन, काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, वेद आदि सभी विषय। रचयिता आधुनिक युगीन प्रतीत होते हैं, किंतु इन्होंने कोई सन-संवत् अपनी रचना में नहीं दिया है जिससे इनका समय निर्धारित किया जा सके। इन्होंने दैवयोग से इतना ही लिखा है कि मैं क्षुशाली गाँव का निवासी हूँ जिसका पुराना नाम करहरा था और आधुनिक नाम मेरे पितामह के नाम पर रखा गया है। यह स्थान आद गंगा के किनारे है।

२६९ लोचनसिंह—लोचनसिंह-ज्योतिषी ने जातक दर्शसार भाषा ग्रंथ लिखा है जो संस्कृत के ज्योतिष ग्रंथ का अनुवाद है। रचनाकाल है संवत् १९१० पौष कृष्ण कुज द्वादशी तदनुसार मंगलवार, २७ दिसंबर सन् १८५३ ई०।

२७० लोकसिंह बाबू—लोकसिंह बाबू ने बलवंत प्रकाश ग्रंथ लिखा है जिसमें प्रतापगढ़ जिले के बीसेन राजपूतों का पूरा इतिहास विस्तार से दिया है। ग्रंथ की रचना रामपुर के बलवतसिंह के आग्रह से हुई है जिन्होंने रचयिता को अपने पिता एवं पितामह के निकट संपर्क में रहने वाले तथा जानकार वृद्ध पुरुष समझकर यह कार्य सौंपा था। इस प्रकार यह ग्रंथ रचयिता ने पूर्ण वृद्धावस्था में लिखा था। यह ग्रंथ बहुत ही सुष्ठ और शक्ति-शाली शैली में लिखा गया है।

२७१ लोनेदास—स्वर्गारोहण के रचयिता लोने का विवरण खोज-विवरणिका १९२३-२५ संख्या २४९ में दिया जा चुका है। ग्रंथ में रामचंद्र के स्वर्गारोहण की कथा वर्णित है। वर्तमान खोज में उपलब्ध प्रति में कोई सन्-संवत् नहीं दिया है, किंतु खोज-विवरणिका १९२३-२५ में सन् १८३५ ई० दिया हुआ है।

२७२ मदनगोपालसिंह—मदनगोपाल सिंह उपनाम सलस ने विनयपत्रिका नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें स्तुति एवं भक्ति विषयक रचनाएँ संगृहीत हैं। हस्तलेख का समय संवत् १८९६ (सन् १८३९ ई०) दिया हुआ है।

२७३ मदनपाल—मदन विनोद निघंटु (औषधियों तथा गुणों का कोश) के रचयिता मदनपाल का वर्णन खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या १७६ में हो चुका है। पुष्पिका में इनके नामोल्लेख के ढंग से यह निश्चित प्रकट होता है कि ये मूल संस्कृत ग्रंथ

के रचयिता थे। इस प्रकार हिंदी अनुवादक का नाम अज्ञात है। उपलब्ध चार हस्तलेखों में से एक तो सन् १९०९ ११ की प्रति से ज्यों का त्यों मिलता है। प्राचीनतम हस्तलेख का समय १८५५ ई० है।

२७४ माधव या माधो—माधव या माधो ने संवत् १९२६ (सन् १८०९ ई०) में रेल वर्णन नामक एक छोटी सी पुस्तिका लिखी है जिसमें रेलगाड़ी का वर्णन बहुत ही रोचक एवं विनोदी ढंग से किया गया है।

२७५ माधवदास—कवच बत्तीसी के रचयिता माधवदास का विवरण खोज विवरणिका सन् १९०१ संख्या ७४ में दिया जा चुका है। मिश्रबंधु इन्हें मुहूर्त चिंतामणि का और नारायण लीला के कर्ता (देखिये खोजविवरणिका सन् १९०९ ११) मानते हैं। माधवदास बागोर निवासी कायस्थ बताए गए हैं।

२७६ माधवजू—माधव जू ज्योतिषविषयक ग्रंथ सारस्वतसारमुक्तावलि के रचयिता हैं। इनकी रचना शैली से यह प्रकट होता है कि ये रीवावाले माधव ही हैं जिन्होंने महाराज विश्वनाथसिंह के आश्रय में संवत् १९०० के लगभग आदि रामायण रची थी। उस ग्रंथ में इन्होंने अपने को काशीराम का पुत्र और गंगाप्रसाद का पौत्र बताया है विचाराधीन हस्तलेख संवत् १९१६ या सन् १८५९ ई० का है। एक ढंग से इससे भी दोनों की एकता की पुष्टि ही होती है।

२७७ माधवानंद भारती—माधवानंद भारती रामकृष्ण भारती के शिष्य थे। वर्तमान खोज में इनके दो ग्रंथ मिले हैं—(१) कैलाश मार्ग (स्कंदपुराण के ब्रह्मोत्तर खंड का अनुवाद) और (२) माधवी शंकर दिग्विजय। पहले का रचनाकाल इस प्रकार दिया है—

> इंदु अंक विंशति परमाला। आनंद बन यह चरित रसाला।
> फागुन सुदर पाख उजियारा। दशमी तिथि पुन्य शनिवारा॥

अर्थात् शनिवार फाल्गुन सुदी १० संवत् १९२९ तदनुसार १२ मार्च सन् १८०० ई०। हस्तलेख का समय संवत् १९२८ (सन् १८७१ ई०)। दूसरे हस्तलेख में रचनाकाल नहीं दिया है, किंतु इसकी प्रतिलिपि उसी वर्ष हुई थी जिस वर्ष पहले हस्तलेख की हुई थी।

२७८ मधुसूदनदास—मधुसूदनदास का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९ १९११ संख्या १८१; सन् १९२०—२२ संख्या ९० और १९२३—२५ संख्या २५१ में दिया जा चुका है। इनके रामाश्वमेध की तीन प्रतियाँ वर्तमान खोज में उपलब्ध हुई हैं। ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १८३९ (सन् १०८२ ई०) है। इस खोज में प्राप्त प्राचीनतम हस्तलेख सन् १८६७ ई० का है।

२७९ महादेव—महादेवने सामुद्रिक नामक ग्रंथ लिखा है। ग्रंथ में रचनाकाल नहीं दिया है किंतु लिपिकाल संवत् १९४० (सन् १८८३) दिया है।

२८० **महादेव बनिया**—मैनपुरी के महादेव अयोध्यावासी बनिया ने ध्रुवलीला नामक गीतों का एक संग्रह लिखा है जिसमें भक्तध्रुव की कथा वर्णित है। ग्रंथ में रचनाकाल नहीं दिया है, किंतु इसकी प्रतिलिपि संवत् १९५० (सन् १८९३ ई०) में हुई थी।

२८१ **महादेव क्षत्रिय**—शाहजादापुर (इलाहाबाद) के महादेव क्षत्रिय ने नीति संदोह नामक ग्रंथ संवत् १९२४ (सन् १८६७ ई०) में लिखा। यह चारित्रिक शिक्षा विषयक ग्रंथ है और नवोपलब्ध कृति है।

२८२ **महाराजदास**—महाराजदास ने सुदामा चरित्र लिखा है जिसका रचना काल है—

संवत् चौनइस सै वोनइस। माघ मास कुज वार।
चरित्र सुदामा को रचेउ। पिय महराज विचार॥

अर्थात् संवत् १९१६ माघ मास में मंगलवार। इसमें तिथि नहीं दी है। यदि यह दिन पूर्णिमा का हो तो उस दिन ३ फरवरी सन् १८६३ ई० थी। इसका लिपिकाल है १८९७ ई०।

२८३ **महावीर**—महावीर ने सोने-लोहे का झगड़ा नामक पुस्तिका लिखी है जिसमें संवाद के रूप में दोनों का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। यह बाल-विनोद के लिये अच्छा विषय है। हस्तलेख का समय है १९३० (सन १८७३ ई०)।

२८४ **महावीरप्रसाद कायस्थ**—गोरखपुर जिले में उनवल के महावीर प्रसाद कायस्थ ने कृष्ण गीतावली नामक एक संग्रह प्रस्तुत किया है जिसमें केवल तुलसीदास और सूरदास के पद संगृहीत हैं। वर्तमान खोज में इस ग्रंथ की तीन प्रतियाँ मिली हैं और तीनों में तीन भिन्न भिन्न रचनाकाल दिए हैं जिसमें कुछ अंशों तक लिपिकारों का ही दोष है। एक हस्तलेख का समयसूचक छंद किसी प्रकार परीक्षायोग्य है और इस प्रकार उसे ठीक मान सकते हैं। छंद है—

मास मधुप तिथि दशमी कृष्ण पक्ष रविवार।
संवत सैंतिस विक्रमी भै पुस्तक तैयार॥

गणना से यह तिथि ४ अप्रेल सन् १८८० ई० को पड़ती है।

२८५ **महेशदत्त**—बाराबंकी के धनौली निवासी महेशदत्त ने 'अठारह पुराण की नामावली और सांख्य तथा पच्चीस अवतारों के नाम' नामक एक छोटा सा परिपत्र तैयार किया है जिसमें प्रत्येक पुराण का नाम और उसकी छंद-संख्या तथा पच्चीस अवतारों के नाम उनके प्रसिद्ध चरित्रों के विवरण सहित वर्णित हैं।

२८६ **मक़सूद**—मकसूद ने अपने नाम पर ही मकसूद बारहमासा नामक एक बारह-मासा लिखा है। हस्तलेख का समय सन् १२९० हिजरी (सन् १८७३ ई०) है। इसकी भाषा फारसी मिश्रित हिंदी है जिसे उर्दू भी कहते हैं।

२८७ **मखदूमशाह दरियाबादी**—अमनशाह के पुत्र मखदूमशाह दरियाबादी ने हसजवाहर नामक एक प्रेमकाव्य लिखा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०२

संख्या १११ में दिया जा चुका है। उसमें कासिमशाह को इस ग्रंथ का रचनाकार बताया गया है, किंतु उसके समर्थन में कोई उद्धरण प्रस्तुत नहीं किया गया है। ग्रंथ में राजा हंस का जवाहर नामी किसी स्त्री से प्रेम का ईश्वर विषयक रहस्यात्मक (सूफी मत का) वर्णन है।

२८८ मक्खनलाल शर्मा—झाँसी के मक्खनलाल शर्मा ने भागवत दशमस्कंध का भाषानुवाद 'सुखसागर' नाम से किया और अन्य ६ अध्यायों का अनुवाद 'गोकर्ण माहात्म्य' नाम से, जिसमें भक्ति और ज्ञान का वर्णन है। दोनों की रचना सन् १८४९ ई० में हुई थी।

२८९ मलिक मुहम्मद जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी प्रसिद्ध रचनाकार हुए हैं जिनके दो ग्रंथ पद्मावत और अखरावट इस खोज में मिले हैं। पद्मावत का विवरण तो विगत अनेक खोज-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है जिसका अवलोकन खोज-विवरणिका सन् १९२०–२२ संख्या १०९ और सन् १९२३–२५ संख्या २८४ के आधार पर किया जा सकता है। 'अखरावट' नवीन रचना अवश्य है जिसमें ईश्वर भक्ति का प्रतिपादन किया है। पद्मावत की रचना इस भवसागर के कष्ट से तर जाने के उद्देश्य से संवत् १५९७ (सन् १५४० ई०) में की गई थी। दूसरे ग्रंथ का रचनाकाल नहीं दिया है। इसका हस्तलेख संवत् १८२७ (सन् १७७० ई०) में तैयार किया गया था।

२९० मलूकदास—मलूकदास तुलसीदास के समकालीन थे और इलाहाबाद के समीप कड़ा मानिकपुर के रहनेवाले थे। इनके ग्रंथ 'भगत बच्छल' का विवरण विगत खोज विवरणिका सन् १९०४ संख्या ८० और १९०९–११ संख्या १८५ (ग) में दिया जा चुका है। इस रचनाकार के विषय में जो कुछ ज्ञात हो सका है सब का संग्रह खोज-विवरणिका सन् १९१७–१९ संख्या १०९ में है।

२९१ मनरंगलाल पल्लीवाल—कन्नौज के मनरंगलाल पल्लीवाल जैन कवि थे। इन्होंने चौबीसी पाठ नामक ग्रंथ लिखा है। खोज विवरणिका सन् १९२३–२५ संख्या २६० में इसका विवरण दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में तीर्थंकर नेमिनाथ का जीवनचरित्र विषयक नेमि चंद्रिका नामक इनका एक ग्रंथ मिला है। खोज-विवरणिका सन् १९२३–२५ में समय सूचक छंद के अनुसार रचना का समय मार्गसिर शुक्ल १० गुरुवार संवत् १८८० तदनुसार २५ नवंबर १८२३ है।

२९२ मंडन—मंडन की रसरत्नावली के चार हस्तलेख इस खोज में मिले हैं। रचनाकार का विवरण खोज-विवरण सन् १९२०–२२ संख्या १०३ और १९२३–२५ संख्या २६२ में दिया जा चुका है। इस खोज में सबसे प्राचीनतम हस्तलेख संवत् १७०० (सन् १६४३ ई०) का है। ग्रंथ नवरस विषयक है और इसी विषय के संस्कृत ग्रंथ का हिंदी रूप है।

२९३ मणिदेव भट्ट—मणिदेव भट्ट बंदीजन काशी के राजा उदितनारायण के आश्रित थे। इन्होंने अपने अन्य दो साथियों गोपीनाथ और गोकुलनाथ के साथ महाभारत

का हिंदी अनुवाद करना आरंभ किया। इस खोज में उस ग्रंथ के दो अध्याय आंशिक पर्व और दर्प विशोक पर्व (देखिए) खोज-विवरणिका सन् १९०४ संख्या ६५) मिले हैं। एक हस्तलेख का समय संवत् १९३२ (सन् १८७५) है।

२९४ मंजु मिश्र—मंजु मिश्र ने गद्य में भगवत्गीता भाषाटीका नामक पुस्तक लिखी है जिसकी सन् १७५० ई० की एक प्रति इस खोज में मिली है। अनुवादक के विषय में इसके अतिरिक्त और कुछ ज्ञात नहीं है।

२९५ मन्नालाल—मन्नालाल आंध्रदेशीय ने वेदांतत्रयी नामक वेदांत दर्शन पर एक ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख का समय सन् १८६८ ई० है।

२९६ मनोहरदास—मनोहरदास ने फूल चरित्र लिखा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९–११ संख्या १९२ में हो चुका है। हस्तलेख में कोई समय नहीं दिया है।

२९७ मातादीन शुक्ल—प्रतापगढ़ जिले में अजगर के मातादीन शुक्ल का विवरण रस सारिणी और संग्रहावली के कर्ता के रूप में खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या ३५ (परिशिष्ट २) और खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या २७४ में दिया जा चुका है। इन दोनों के साथ इस खोज में इनके तीन ग्रंथ और मिले हैं। वे हैं—

(१) रामायण का ला० (रचना काल संवत् १८९९, सन् १८७१ ई०) की दो प्रतियाँ।

(२) ज्ञान-दोहावली (रचनाकाल संवत् १९०३, सन् १८४६ ई०) की दो प्रतियाँ।

(३) राम गीता अष्टक (रचनाकाल संवत् १८९९, सन् १८४२ ई०) की दो प्रतियाँ।

(४) रस सारिणी (रचनाकाल संवत् १९०३, सन् १८४६ ई०) की दो प्रतियाँ।

(५) नानार्थ नव संग्रहावली (रचनाकाल १८९९, सन् १८४२ ई०) की चार प्रतियाँ।

रस सारिणी में काल-सूचक दोहा निम्नलिखित है—

एक सहस नव सै त्रिजुत मिती मास सुदि ज्येष्ठ
तेरस तिथि रवि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ठ

ईसाई सन् के अनुसार यह तिथि रविवार ७ जून सन् १८४६ ई० को पड़ी थी।

२९८ मथुरादास ब्राह्मण—मथुरादास ब्राह्मण ने वाल्मीकीय रामायण के लंकाकांड का भाषानुवाद सीधे संस्कृत से न करके कालीप्रसन्न कृत वाल्मीकीय रामायण के बँगला अनुवाद से किया है। हस्तलेख का समय संवत् १९४१ (सन् १८८४ ई०) है।

२९९ मथुरादास कायस्थ—मथुरादास कायस्थ ने वैद्यक्सार (सर्व) संग्रह सन् १८७० ई० में लिखा है। इसमें रोग और उनके उपचार का विचार किया गया है।

३०० मतिराम—कानपुर जिले में तिकवाँपुर के निवासी मतिराम सुप्रसिद्ध कवि हो गये हैं। इनका विवरण विगत अनेक खोज-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है जिसका विस्तृत विचार खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १०५ में किया गया है। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

(१) रसराज के सात हस्तलेख जिनमें प्राचीनतम संवत् १८०९ (सन् १७५२) का है।

(२) ललितललाम की तीन प्रतियाँ जिनमें प्राचीनतम संवत् १८३४ (सन् १७७७ ई०) की है।

(३) मतिराम सतसई के दो हस्तलेख जिनमें से एक संवत् १८६२ (१८०५ ई०) का है।

ये सब ग्रंथ सन् १९२३-२५ ई० की खोज में मिल चुके हैं। (देखिए संख्या २५९)।

३०१ मेवेशाह—मेवेशाह कानपुर जिले में बिल्हौर के वैश्य थे। इनकी मृत्यु संवत् १९२४ (सन् १८६७ ई०) में अस्सी वर्ष की अवस्था में हुई। इन्होंने भक्ति विषयक रचनाएँ की हैं जिनका संग्रह 'मेवेशाह कृत कवित्त सवैया' के नाम से हुआ है। रचना काल एवं हस्तलेख का समय संवत् १९१० (सन् १८५३ ई०) है।

३०२ मेघराज—मेघराज जैन थे। ये पंजाब के जालंधर जिले में फगुवार में रहते थे। इन्होंने ज्योतिष पर मेघमाला नामक ग्रंथ संवत् १८१७ (सन् १०६० ई०) में लिखा। इनकी भाषा में पंजाबी और खड़ी-बोली दोनों का मिश्रण है। रचना में काव्यत्व नहीं है। इनकी पद्यरचना प्रायः दोषपूर्ण है। इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या २७८ में दिया जा चुका है।

३०३ मीराबाई—मीराबाई बहुत ही प्रसिद्ध भक्तिन हो गई हैं जिसका परिचय इनके गीतों से मिलता है। वर्तमान खोज में इनके गीतों का एक संग्रह मिला है जिसमें न तो संग्रहकर्ता का नामोल्लेख है और न समय ही दिया है। मीराबाई का समय १५१६ और १५७३ ई० के बीच है।

३०४ मीर पनाह अली—दिल्ली के मीरपनाह अली ने व्यंजनसार नामक ग्रंथ पाकशास्त्र का लिखा है। हस्तलेख का समय सन् १८८८ ई० है।

३०५ मोहन (कवि)—मोहन हिंदी भाषा के शक्तिशाली लेखक थे। इन्होंने देवी देवताओं की स्तुतियाँ रची हैं। इनमें पाँच विभिन्न ग्रंथों के निम्नलिखित सात हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं—

(१) हनुमान कसीदा विनय के दो हस्तलेख।

(२) वासुदेव अष्टक का एक हस्तलेख।

(३) राम अष्टक का "

(४) नरसिंह अष्टक का एक हस्तलेख।
(५) आदिशक्ति के कवित्त का „
(६) हनुमानजी के कवित्त का „

इन सब में प्राचीनतम संवत् १८७६ (सन् १८१९ ई०) का है इन लेखों से रचनाकार के विषय में कुछ नहीं ज्ञात होता। इतना अवश्य ज्ञात होता है कि बहुत से मोहन कवियों में ये मोहन कवि मध्यभारत के चरखारी स्थान के रहने वाले थे।

३०६ **मोहनदास कायस्थ**—मोहनदास कायस्थ जो पवनविजय स्वरोदय के रचयिता हैं, हरदोई जिले में कुरसठ के रहनेवाले थे। इनके ग्रंथ का विवरण विगत खोज-विवरणिका सन् १९०६–०८ संख्या १०७ में दिया जा चुका है। रचयिता संवत् १६८७ (सन् १६३० ई०) के लगभग विद्यमान थे क्योंकि इसी वर्ष ग्रंथ समाप्त हुआ था। समय सूचक दोहा इस प्रकार है—

संवत सोरह से रची ऊपर अस्सी सात।
विष्णु मतै बीता बरण मारग सुदि तिथि सात॥

अर्थात वैष्णवों के अनुसार संवत् १६८७ मार्गशीर्ष शुक्ल ७। यदि दिन का नाम भी दिया होता तो निश्चयपूर्वक कहा जा सकता कि उस दिन बुधवार १ दिसंबर सन् १६३० ई० थी। उस दिन सूर्योदय के १। घंटे बाद सप्तमी समाप्त होकर अष्टमी लगी थी। मंगलवार को रिक्ता तिथि थी और सोमवार २९ नवंबर को षष्ठी थी। जो भी हो समय बिलकुल ठीक है।

३०७ **मोहनदास (जन)**—मोहनदास या जनमोहन ने जो ओड़छा राजप्रासाद में मंदिर के पुजारी थे सनेह-लीला नामक पोथी लिखी है जिसके दो हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। इस ग्रंथ का विवरण खोज विवरणिका सन् १९०६–०८ ई० संख्या २९७ में दिया जा चुका है।

३०८ **मोहनसूरत**—बारहमासा लेखकों में मोहनसूरत भी एक हैं जिन्होंने राधा जी का बारहमासा लिखा है जिसमें राधा को कृष्णवियोग में दुःखी दिखाया गया है। उसके साथ ही इन्होंने ललितासखी का बारहमासा भी जोड़ दिया है जिसमें राधा की सखी ललिता का भी वही कृत्य वर्णित है।

३०९ **मोतीलाल**—मोतीलाल ने गणेशपुराण लिखा है जिसके पाँच हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३–२५ संख्या २८२ में भी लिखा जा चुका है। प्राचीनतम हस्तलेख संवत् १८७५ (सन् १८१८) का है।

३१० **मूलचंद**—मूलचंद ने जुगल-विहार लिखा है जो खोज में पहली बार उपलब्ध हुआ है। हस्तलेख का समय संवत् १९१४ (सन् १८५७) है।

३११ **मुन्ना**—मुन्ना ने सनातन कल्पलतिका नामक पोथी संतति-निग्रह पर लिखी है। खोज में यह पहली बार मिली है।

३१२ मुरली—मुरली ने गुरु की स्तुति में गुरुमहिमा लिखी है। ये राधास्वामी संप्रदायानुयायी थे। हस्तलेख का समय संवत् १८२९ (सन् १७७२ ई०) है। यही रचना-काल भी प्रतीत होता है।

३१३ नागरीदास—नागरीदास की रास पंचाध्यायी इस खोज में मिली है। यह सुप्रसिद्ध कवि नंददास की इसी नामकी राधा-कृष्ण-केलि-विषयक रास पंचाध्यायी से थोड़ी बड़ी पुस्तक है। इनका यह ग्रंथ काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला में प्रकाशित भी हो चुका है। इसके संपादक बाबू राधाकृष्णदास ने इसे इनकी मधुरतम रचना बताई है। किंतु नागरीदास के और ग्रंथ भी कुछ कम मधुर नहीं हैं। दुर्भाग्य से इनका रचनाकाल नहीं दिया है जिससे यह पता लगाना कठिन हो गया है कि ब्रजमंडल में बसनेवाले इसी नाम के चार या पाँच कृष्णभक्त नागरीदासों में से ये कौन थे। इनमें से सबसे पुराने तो बिहारिनदास के शिष्य थे जिनका विवरण खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या २९१ में दिया जा चुका है। ये सोलहवीं शती के अंत में विद्यमान थे। दूसरे कृष्णगढ़ के महाराज थे जो विरक्त होकर वृंदावन में बस गए थे और अपना नाम नागरीदास रख लिया था। इनका समय लगभग १७२५ ई० है। तीसरे इनसे दस वर्ष बाद के बताये गए हैं और चौथे तीस वर्ष और बाद के। मेरे विचार से काव्यक्षेत्र में महाराज नागरीदास सर्वोत्कृष्ट थे और यह ग्रंथ उन्हीं का रचा है। इन्होंने प्रचुर परिमाण में रचना की है। मिश्र बंधुओं ने इनके रचे ७० ग्रंथों का उल्लेख किया है किंतु उनमें रास पंचाध्यायी का नाम नहीं है। वह सूची निश्चित रूप से अपूर्ण है। अतः नामाभाव सामान्य बात है। रचनाशैली और उपनाम नागर या नागरीदास जो हम लोगों से परिचित हो गए हैं और जिनका प्रयोग इस रचना में हुआ है इन्हीं के रचनाकार होने का समर्थन करते हैं।

३१४ नकुल—नकुल के सालिहोत्र का विवरण खोज विवरणिका सन् १९०९-११ में दिया जा चुका है। पाँचों पांडवों के नकुल के समय हिंदी का जन्म नहीं हुआ था। नकुल पशु-विद्या में निपुण प्रसिद्ध थे और संस्कृत में नकुल कृत अश्व-चिकित्सिक ग्रंथ भी है जिसका उल्लेख इस उपलब्ध ग्रंथ के अंत में है। अनुवादक ने अपना नाम छिपा लिया है।

३१५ नानक—सिख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानक का विवरण विभिन्न खोज-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। देखिए खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या २९३। इस बार उनकी 'सुखमनी' की एक प्रति मिली है।

३१६ नंददास—नंददास प्रसिद्ध कवि हुए हैं इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०२, १९०६ १९०९, १९१७-२० और १९२३-२५ में दिया जा चुका है। इस बार इनके अनेकार्थनाममाला के आठ हस्तलेख और राजनीति की दो प्रतियाँ मिली हैं। राजनीति की एक प्रति का समय संवत् १९२३ (सन् १८६६) है। अनेकार्थनाममाला का प्राचीनतम हस्तलेख संवत् १८११ (सन् १७५४ ई०) का है।

३१७ नंदकिशोर—नंदकिशोर लखनऊ निवासी ने सत्यनारायण की कथा नामक पुस्तक लिखी है जिसका रचनाकाल निम्नलिखित छंद में है—

वर्तमान खोज में मिले हैं। जिनमें से प्राचीनतम सन् १६७८ ई० का है। ग्रंथ की रचना संवत १६४६ (सन् १५९२ ई०) में हुई थी।

३३३ नज़ीर—अकबराबाद के नजीर ने रहस्यवादी गाथा की कथा हंस नामा रची है। वर्तमान खोज में इसके दो हस्तलेख मिले है। रचनाकाल है संवत् १९१८ (सन १८६१ ई०)।

३३४ निधान कवि—निधान कवि ने अश्वसंबंधी पशु-विज्ञान पर सालिहोत्र ग्रंथ लिखा है जिसे इन्होंने नवीन अनुवाद कहा है और जिसका आरंभ इन्होंने बुधवार माधव शुक्ल ५ संवत् १८१२ तदनुसार १६ अप्रैल सन् १७५५ ई० को किया। उपर्युक्त ग्रंथ किसी सरदार सैयद अकबर अली के अनुरोध पर रचा गया था। इसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ संख्या १२४ और १९२३-१५ में दिया जा चुका है किंतु दोनों ही में समय सूचक पद्य का अर्थ गलत करने से रचनाकाल अशुद्ध हो गया है। लिखा है—'संवत् वसु[१८००] दस सै जहाँ उत्तर जानौ भानु[१२]।' इसका तात्पर्य १८१२ है, १८०० नहीं।

३३५ निधिरानी—उन्नाव जिले में पुरवा रणजीत के राजा गिरिजादक्श सिंह की पत्नी निधि रानी ने अपने गुरु और राम की स्तुति में राम मिलन नामक ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख का समय संवत् १९४० (सन् १८८३ ई०) है।

३३६ निहालदास—निहालदास के श्री राधा कृष्ण हिंडोल, रासलीला और संग्रह सत्र नवोपलब्ध रचनाएँ हैं। इनका रचनाकाल नहीं दिया है। प्राचीनतम हस्तलेख सन् १८४१ ई० का है। रचनाकार के विषय में कुछ ज्ञात नहीं है।

३३७ नित्यानंद—नित्यानंद ने 'ग्रह-कर्म-विचार' नामक ज्योतिष का ग्रंथ लिखा है जो पहली बार मिला है। इसकी रचना संवत् १८८५ (सन् १८२८ ई०) में हुई। हस्त-लेख दो वर्ष बाद तैयार किया गया था।

३३८ पद्माकर भट्ट—पद्माकर भट्ट प्रसिद्ध कवि हुए हैं और इनका विवरण कतिपय खोज-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है, किंतु विस्तार से खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १२३ में दिया गया है जिसमें भूल से इनका मृत्यु-संवत १८३३ ई० के स्थान पर १८०३ ई० लिख गया है और इसकी पुनरुक्ति सन् १९२३-२५ की खोज विवरणिका में भी हो गई है। ये सन् १७५३ ई० में उत्पन्न होकर अस्सी वर्ष पर्यंत जीवित रहे और इन्हें जयपुर उदयपुर, ग्वालियर, सतारा, बुंदेलखंड की अनेक रियासतों आदि के दरबार देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जहाँ इनका शानदार स्वागत हुआ था। ये बहुत ही शक्तिशाली कवि थे और सोलह वर्ष की ही अवस्था में अपनी जन्मभूमि सागर के मराठा दरबार से सम्मान प्राप्त कर चुके थे। इस खोज में प्राप्त ग्रंथों में जगद्विनोद जयपुराधीश जगतसिंहके लिए लिखा गया था और हिम्मत बहादुर विरुदावली हिम्मत बहादुर गोसाईं की प्रशंसा में जो अपने समय में बुंदेलखंड के राजनीतिक सरदार थे। तीसरा ग्रंथ 'गंगालहरी' गंगा की स्तुति में स्वपाप प्रक्षालनार्थ-लिखा गया है जो कोढ़ के रूप में इनके शरीर में प्रकट हो गया था।

३३९ पदुमनदास कायस्थ—पदुमनदास कायस्थ ने हितोपदेश का अनुवाद इसी नाम से हिंदी में सरदार सरदार वख्तसिंह की संरक्षता में किया है। यह नवोपलब्ध ग्रंथ है और इसकी रचना बुधवार १० मार्च सन् १६८० ई० को आरंभ हुई। अनुवाद पद्य में है और अच्छा है।

३४० पहलवानदास—पहलवानदास सत्नामी संप्रदाय के थे। इनका मूल स्थान सुलतानपुर जिले में था किंतु ये रायबरेली के शीशोपुर में जाकर बस गए थे। इनकी निम्नलिखित चार पुस्तकें मिली हैं—

(१) सुख ध्यान (२) विरहसागर, (३) अरिल्ल और (४) उपाख्यान विवेक। अंतिम ग्रंथ का विवरण पहले दिया जा चुका है (देखिए खोज-विवरणिका १९२३-२५ संख्या ३०८)। ये उन्नीसवीं शती के प्रथम चरण में विद्यमान थे।

३४१ परमानंददास—परमानंददास ने दानलीला या दधिलीला लिखी है। इसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ तथा अन्य विगत विवरणिकाओं में दिया जा चुका है।

३४२ परमानंद (स्वामी)—परमानंद (स्वामी) ने परमानंद-विलास या बहुरंगी सार में भक्ति-विषयक प्रचलित गीतों की रचना की है। इस ग्रंथ की दो प्रतियाँ मिली हैं एक संवत् १९१० की और दूसरी संवत् १९२६ की। रचनाकाल दिया है—

संवत शशि निधि वसु गगन शुद्ध वदी माघ मास।
बहुरंगी भजनावली परमानन्द प्रकास।।

यदि इसे अंकानां वामतो गतिः के नियम से पढ़ें तो विलक्षण संवत् आन पड़ेगा। यदि इसे दाहिने से बाएँ पढ़ें तो इसकी रचना कुछ कुछ मास ही पूर्व होगी जो असंभव है। क्योंकि संवत् १९१० (सन् १८५३ ई०) में तो इसकी प्रतिलिपि ही हुई थी। यह संभव है कि लिपिकार ने 'वसु' को अस्थानस्थ कर दिया है। यदि वसुनिधि हो तो संवत् होगा १८९०। किंतु साप्ताहिक दिवस का उल्लेख न होने से इसे गणना करके नहीं मिलाया जा सकता।

३४३ परसनदास पाँडे—अवधपुर या अयोध्या के निकट मगरसी परगना में पंडितपुर के निवासी परसनदास पाँडे ने सोनार-विद्या ग्रंथ लिखा है जिसका विषय इनके लिए अद्वितीय ही है। इन्होंने विभिन्न प्रकार के स्वर्ण रजत और उनके मेल, उनके परीक्षण एवं सोनारों की बोलियों का वर्णन किया है। इन्होंने उन लोगों को बहुत बड़ा शाप भी दिया है जो इनके ग्रंथ से दूसरों को ठगेंगे। इसका रचनाकाल निम्नलिखित है—

संवत् नभ सो नंद बिधु, माघ कृष्ण तिथि धाम।
दिन बुधवार विचारि कै, ग्रंथ जन्म अभिराम।।

अर्थात् संवत् १९२० माघ बदी १० बुधवार। 'सो' को 'दो' मानने से ठीक गणना होगी बुधवार ३ फरवरी १८६४ ई०।

३४४ **परसुराम**—परसुराम ने उपा चरित्र (वाणासुर की कन्या का वृत्तांत) लिखा है। इनका विवरण विगत खोज विवरणिकाओं सन् १९१२-१६ सख्या १२७ और १९२३-२५ सख्या ३११ में दिया जा चुका है। ये सन् १६३० के लगभग विद्यमान थे।

३४५ **परवतदास**– राम कलेवा रहस्य और सत रहस्य के कर्ता परवतदास का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १२५ और १९२३-२५ सख्या ३१२ में दिया जा चुका है। पहले में कुछ विस्तृत विवरण है। सत रहस्य के तीन हस्तलेख और राम कलेवा रहस्य या जनक राम सवाद के दो हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले है। इनमें से प्राचीनतम सवत् १७७० ई० का है।

३४६ **पतितदास स्वामी**—बैसवाड़ा में गिरिधरपुर के स्वामी पतितदास ने निम्नलिखित ग्रथ लिखे हैं—

(१) वैद्यक कल्प, औषधि एव झाड़फूँक विषयक ग्रथ	१ प्रति
(२) कुडली फल या ज्योतिप (रचनाकाल १८८० ई०)	२ प्रति
(३) राजस्वत विधान	३ प्रति
(४) देवी-स्तुति	१ प्रति
(५) गगा स्तुति (रचनाकाल १८४० ई०)	१ प्रति
(६) अस अंस ग्रहण गुण या नीति (रचनाकाल १८७८ ई०)	१ प्रति
(७) शिव-स्तुति	१ प्रति
(८) विश्वरूप-विनय	१ प्रति
(९) नदी, ओपधि-विपयक (रचनाकाल १८७४ ई०)	१ प्रति
(१०) दोहावली, भक्ति एव नीति-विपयक	१ प्रति
(११) यात्रा-गुण	१ प्रति
(१२) रमलादि फलित ज्योतिप-विपयक	१ प्रति
(१३) तत्रमत्र जत्रावली, झाड़फूँकविपयक	१ प्रति

उपरिलिखित सवत् रचयिता का विद्यमान-काल सूचित करते हैं। इनका अतिम जीवन अयोध्या में बीता जहाँ इनके नाम से सबद्ध एक मदिर भी है।

३४७ **प्रगन**—प्रगन के भ्रमरगीत का विवरण खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ सख्या ३१६ में दिया जा चुका है। इसके दो हस्तलेख वर्तमान खोज में भी मिले हैं। उनमें से एक का समय सवत् १८६५ (सन् १८०८ ई०) है।

३४८ **प्रानकिसन**—कश्मीरी ब्राह्मण प्रानकिसन ने मोहिनीचरित्र लिखा है जिसकी दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं। इसमें जान आलम की कथा वर्णित है जो उर्दू से अनुवादित है। इसका रचनाकाल सवत् १९२१ (सन् १८६४ ई०) है।

३४९ **प्राणनाथ**—धामी सप्रदाय के प्रवर्तक प्राणनाथ का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ और १९२०-२२ में दिया जा चुका है। यद्यपि ये अच्छे रचयिता

नहीं थे, फिर भी इन्होंने विभिन्न भाषा मिश्रित मधुर सांप्रदायिक साहित्य प्रस्तुत किया है जिसमें हिंदी और अरबी का संयोग है। इनके लिखे निम्नलिखित ग्रंथ वर्तमान खोज में उपलब्ध हुए हैं— १) फरमान, (२) तारतम्य (३) धनी जी की वाले की चौपाई, (४) अंकुर कल्स (५) तीनों स्वरूप की प्रथक (६) प्रकरण सगरस का (७) रमत रहस की (८) लीला नौतन पुरी। ये इनके अलग अलग पूर्ण स्वतंत्र ग्रंथ नहीं हैं, इनके प्रधान ग्रंथ 'कुलजम स्वरूप' के अंश हैं। इनका विचार सन् १९२३ २५, पृष्ठ ४ और उसके पहले की खोज-विवरणिकाओं में हो चुका है। खोज-विवरणिका १९२० २२ पृष्ठ २७ तथा उसके पहले की खोज-विवरणिका भी द्रष्टव्य। वर्तमान खोज में उपलब्ध हस्तलेखों में से एक को छोड़कर जिसमें संवत् १८५२ (सन् १७९५ ई०) दिया हुआ है, और किसी में सन्-संवत् नहीं दिया है।

३५० प्रताप जैन—प्रताप जैन कृत मोक्ष-मार्ग निरूपण ग्रंथ पहली बार मिला है। हस्तलेख का समय संवत् १८२८ (सन् १७७१ ई०) है। रचनाकार के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है।

३५१ प्रताप साही—प्रतापसाही ने काव्य विलास नामक ग्रंथ लिखा है जिसके पाँच हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। कवि का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०६ ०८ और १९०५ संख्या ४२ में दिया जा चुका है। ग्रंथ का निर्माण संवत् १८८६ (सन् १८२९ ई०) में हुआ था। प्राचीनतम हस्तलेख का समय सन् १८४४ ई० है।

३५२ प्रतापसिंह—जयपुराधीश महाराजा प्रतापसिंह ने अमृतसागर नामक वैद्यक का ग्रंथ सन् १७०१ ई० में लिखा है। इस ग्रंथ का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३ २५ संख्या ३२२ में दिया जा चुका है। इसके चार हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं जिनमें से प्राचीनतम संवत् १८४५ (सन् १७८८ ई०) का है।

३५३ प्रयागदास (स्वामी)—प्रयागदास ने प्रयागविज्ञानविनय नामक ग्रंथ धार्मिक उपासना संबंधी लिखा है। ये ब्रह्मचारी थे और फैजाबाद के निकट रामपुर में एक कुटिया में रहते थ। अंत में ये प्रतापगढ़ जिले में सई नदी के तट पर चले गए थे। वे उन्नीसवीं शती में विद्यमान थे।

३५४ प्रयागदत्त पाठक—कानपुर जिले के बिरहौरा निवासी प्रयागदत्त पाठक ने काशिराज वंशावली में बनारस के राजाओं का यश वर्णन किया है। वर्तमान खोज में उपलब्ध हस्तलेख रचयिता की ही कलम से संवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) का लिखा हुआ है। यही इसका रचनाकाल भी है।

३५५ प्रेमदास—प्रेमदास ने विमानित लीला लिखी है जिसका विवरण खोज विवरणिका सन् १९०९ ११ संख्या २२६ बी) में दिया जा चुका है। ये अग्रवाल वैश्य थे तथा रामानुजी संप्रदाय के अनुयायी थे। वे बुंदेलखंड के जयनगर में रहते थे। मिश्रबंधुओं ने ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १८२७ (सन् १७७० ई०) माना है।

३५६ **प्रेमदास**—गोरखपुर जिले में बड़ागांव के प्रेमदास ने जैमिनी पुराण का हिंदी अनुवाद किया है जिसे उन्होंने हाजीपुर के धरणीधर पंडित से सुना था।

३५७ **प्रेमनिधि** प्रेमनिधि ने कुछ भक्ति विषयक छंद करुणा-पचीसी नाम से लिखा है। हस्तलेख का समय संवत् १८९१ (सन् १८३९ ई०) है।

३५८ **प्रेमसागर**—प्रेमसागर ने कुंवरी संग विहार बारहमासा लिखा है। हस्तलेख का समय संवत् १९१४ (सन् १८५७ ई०) है।

३५९ **पृथ्वीजस**—पृथ्वीजस ने शत पंचाशिका नामक ज्योतिष का ग्रंथ लिखा है। ये उसी सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर के विख्यात पुत्र हैं जिनकी मृत्यु सन् ५८७ ई० में हुई थी। वास्तविकता यह है कि वराहमिहिर के पुत्र ने जिनका शुद्ध नाम पृथुयश था, संस्कृत में शत पंचाशिका या होड़ा शत पंच नामक ग्रंथ लिखा था जिसका आधुनिक हिंदी में छंदानुवाद वर्तमान खोज में उपलब्ध यह ग्रंथ है। अनुवादक ने अपना नाम नहीं दिया है, किंतु वह ग्रंथ के लिपिकाल संवत् १९१८ (सन् १८६१ ई०) से बहुत दूर नहीं हटाया जा सकता। ग्रंथ में जन्मकुंडली तथा तत्संबंधी ज्योतिष गणित के अंकों को तैयार करने की विधि बताई गई है। यह ग्रंथ एक बार पहले भी सन् १९१७-१९ की खोज में मिल चुका है जिसकी विवरणिका में इनके दो हस्तलेखों का उल्लेख तृतीय परिशिष्ट में संख्या ८१ और ८२ पर हो चुका है। उसमें पृथुयश नाम शुद्ध दिया हुआ है।

३६० **पृथ्वीलाल**—पृथ्वीलाल ने स्वर्गीय वैद्य धन्वंतरि की स्तुति में धन्वंतरि स्तुति नामक ग्रंथ सन् १८६१ ई० में लिखा है। उसका समय सूचक छंद निम्नलिखित है—

सावन वदि एकादशी गुरु वासर सुखदाई।
संवत् उनइस सै बरस, अनइस ऊपर आई॥

तात्पर्य यह कि ग्रंथ गुरुवार, सावन वदी ११ संवत् १९१९ को संपूर्ण हुआ। संवत् १९१९ (या विगत संवत् १९१८) में यह तिथि गुरुवार १ अगस्त सन् १८६१ ई० को थी उस दिन एकादशी सूर्योदय के ६ घंटा ५० मिनट बाद थी। रचयिता भदावर राज्य में भिंड का निवासी था। उसने लिखा है कि मैंने इसी नाम की संस्कृत की रचना का अनुवाद किया है।

३६१ **प्रियादास**—प्रियादास भक्तमाल की अपनी भक्तिरस बोधिनी टीका के लिए सुप्रसिद्ध हैं। वर्तमान खोज में उसकी दो प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं। इसकी रचना संवत् १७६९ (सन् १७१२) में हुई। एक हस्तलेख का समय संवत् १८६५ (सन् १८०८ ई०) है। रचयिता का विवरण खोज विवरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १५५ और खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ३२३ में दिया जा चुका है। रचना में क्षेपक भी बढ़ रहा था इसका प्रमाण यही है कि सन् १८५६ की प्रति में लैला मजनूं भी जोड़ दिए गए हैं। प्रियादास संग्रह नामक सन् १८५६ ई० का दूसरा हस्तलेख भी मिला है जिसमें कृष्णलीला तथा गीत हैं और कुछ गजलें भी हैं।

३६२ पूरन—पूरन ने वाणी-भूषण नामक एक अलंकार ग्रंथ लिखा है जिसके दो हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं।

३६३ पुरुषोत्तमदास—आगरा के पुरुषोत्तमदास ने जैमिनी-पुराण का हिंदी अनुवाद किया है। ये बहुत अच्छे रचनाकार प्रतीत होते हैं।

३६४ पुरुषोत्तम शुक्ल—पुरुषोत्तम शुक्ल ने भारतेंदु हरिश्चंद्र की आज्ञा से विभिन्न कवियों के छंदों का संग्रह संवत् १९२६ (सन् १८६९) में किया है। हस्तलेख का समय संवत् १९३० (सन् १८७२ ई०) है।

३६५ राधाकृष्ण चौबे—राधाकृष्ण चौबे ने बिहारी सतसई की पद्यबद्ध टीका की है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ संख्या ६६ में दिया जा चुका है। हस्तलेख का समय संवत् १८७० (सन् १८५० ई०) है।

३६६ राघव या राघवदास—राघव या राघवदास ने राघवचेतावनी प्रश्न नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें कौड़ी फेंककर प्रश्नों का उत्तर वर्णित है। हस्तलेख का समय संवत् १८७४ (सन् १८१७ ई०) है।

३६७ रघुनाथ—रघुनाथ ने रस-मंजरी नामक नायिकाभेद का ग्रंथ लिखा है। वस्तुतः यह इसी नाम के संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद है। इसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ संख्या ११० में दिया जा चुका है। रघुनाथ गंग कवि के शिष्य थे और जहाँगीर के समकालीन थे। हस्तलेख संवत् १७४१ (सन् १६८४ ई०) का है।

३६८ रघुनाथ—सीतापुर जिले में सेंधौली के रघुनाथ ने कृष्ण ग्वालिनी का झगड़ा नामक छोटी सी पुस्तिका संवत् १८८४ (सन् १८२७ ई०) में लिखी है।

३६९ रघुनाथ बंदीजन—काशी के रघुनाथ बंदीजन का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १५८ और १९२३-२५ संख्या ३२६ में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में काव्य कलाधर और बालगोपाल चरित्र नामक इनकी दो पुस्तकें मिली हैं। अंतिम ग्रंथ इस खोज में ही मिला है। रचयिता अठारहवीं शती के मध्य में विद्यमान थे।

३७० रघुनाथदास जी—तुलसीबाद (अयोध्या) के रघुनाथदास जी राम सनेही ने 'मनमाथ को माहात्म्य' नामक ग्रंथ संवत् १९१४ (सन् १८५७ ई०) में लिखा है। इनका विवरण एक बार खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ३२८ में हरिनाम सुमिरिनी के रचयिता के रूप में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में उपलब्ध ग्रंथ इनकी नवोपलब्ध रचना है।

३७१ महाराज रघुराजसिंह—रीवा-नरेश रघुराज सिंह प्रसिद्ध रचनाकार थे। इनकी आनंदांबुनिधि और राम स्वयंवर नामक पुस्तकें वर्तमान खोज में मिली हैं। इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०१ और १९०३ में दिया जा चुका है। पहले ग्रंथ की रचना संवत् १९११ (सन् १८५४ ई०) में और दूसरे की संवत् १९३४ (सन् १८७७ ई०) में हुई थी।

३७२ रघुनाथदास—मानसदीपिका के रचयिता रघुनाथदास का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ३२७ में दिया जा चुका है। यह ग्रंथ फिर मिला है और इसके साथ इनके दो और ग्रंथ विश्राम मानस और संकावली रामायण मिले हैं। सबका एक ही विषय है अर्थात् तुलसीदास कृत रामायण का स्पष्टीकरण। निस्संदेह रघुनाथ तुलसी कृत रामायण के मर्मज्ञ थे और काशीनरेश ने इन्हें इन टीकाओं को रचने के लिए इसलिए प्रोत्साहित किया था कि ये टीकाएँ अयोध्या के बाबा रामचरनदास लाहौर के संत-सिंह बक्सरा के राजा गोपालशरण सिंह और अपने गुरु विद्यारण्य तीर्थ के नाम पर रामायण परिचर्या के लेखक काशी के स्वामी जी महाराज की टीकाओं से भी उत्कृष्ट हों।

३७३ रामकवि—बलभद्र विलास के रचयिता रामकवि कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और मल्लनपुर के बलभद्रसिंह की संरक्षता में रहते थे। रचना का समय निम्नलिखित पद्य में दिया हुआ है—

राम रन्ध्र वसु चन्द्र लिपि सवत सहित विलास।
कातिक सुदि दिग तिथि विदित सुर गुरुवार प्रकास॥

अर्थात् संवत् १८९३ गुरुवार कार्त्तिक सुदी १० तदनुसार १७ नवंबर सन् १८३६ ई०। इस दिन नवमी सूर्योदय के ५ घंटे ४५ मिनट बाद समाप्त हो गई थी और दसमी लग गई थी।

३७४ रामआसरे—रामआसरे ने वैद्यकसार संग्रह नामक वैद्यक का ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख का समय संवत् १९१० (सन् १८५३ ई०) है।

३७५ रामचंद्र वसु—रामचद्र वसु ने कादंबरी का गद्यानुवाद संवत् १९२४ (सन् १८६७ ई०) में किया। इसके चार हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं जिनमें से प्राचीनतम उपर्युक्त संवत् का ही है।

३७६ रामचंद्र—आगरा के रामचद्र ने उपदंश-चिकित्सा नामक ग्रंथ लैंगिक रोगों की चिकित्सा के लिए संवत् १९२७ (सन् १८७० ई०) में लिखा है।

३७७ रामचंद्र—राम-विनोद के कर्ता रामचद्र का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२, पृष्ठ १७ और खोज-विवरणिका १९२३-२५ संख्या ३३७ में दिया जा चुका है। ग्रंथ की रचना संवत् १७२० (सन् १६६३ ई०) में हुई। इस ग्रंथ की दो प्रतियाँ इस खोज में मिली हैं जिनमें एक गद्य में है और दूसरी पद्य में।

३७८ रामचरनदास—अयोध्या के रामचरनदास का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११, १९१७-१९ और १९२३-२५ में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं जिनमें काव्य श्रृंगार नामक ग्रंथ इनके ज्ञात ग्रंथों के अति-रिक्त है—(१) मत पचासिका, (२) अष्टयाम सेवाविधि, (३) राम जानकी चरण चिह्न, (४) रामायण बालकांड की टीका, (५) दृष्टांत बोधिका और (६) काव्य श्रृंगार।

प्रथम तीन ग्रंथों में रचयिता का नाम रामचरन दिया है और शेष में अयोध्या के रामचरनदास। सत पंचासिका चित्रकूट में रची कही जाती है जिससे दो भिन्न रचयिताओं के होने का भ्रम होता है, किंतु पर्याप्त सामग्री के अभाव में संप्रति दोनों को स्पष्टतः अलग बताना अभी संभव नहीं। किसी मत के पक्ष या विपक्ष में जब तक कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिल जाता, तब तक यह विषय खटाई में ही पड़ा रहेगा।

३७९ रामचरन—औंवाने के रामचरन कृत कालज्ञान खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ३४० में मिलता है। हस्तलेख का समय संवत् १७६१ (सन् १७०४ ई०) है।

३८० रामदास—रामदास ने तीर्थ माहात्म्य लिखा है जिसमें प्रयाग, काशी, गया, बैजनाथ, रामेश्वर, अयोध्या, मथुरा आदि स्थानों की यात्रा करने के पुण्य का वर्णन है। हस्तलेख संवत् १८९१ (सन् १८३४ ई०) का है।

३८१ रामदास—रामदास ने गंगा-विवाह लिखा है। यह साधारण रचना है जिसका विशेष महत्व नहीं।

३८२ रामकृष्ण—रामकृष्ण ने रामलीला लिखी है जो रचना आरंभ करनेवालों के लिए अनुकूल विषय है। रचना उर्दू शैली में है और उसमें संस्कृत के तद्भव शब्दों के साथ फारसी के शब्द भी घुले मिले हैं।

३८३ रामानंद—रामरक्षा के कर्ता रामानंद का विवरण खोज विवरणिका सन् १९०० संख्या ७६ में दिया जा चुका है। हस्तलेख का समय संवत् १८८४ (सन् १८२७ ई०) है।

३८४ रामनाथ—रामनाथ ने यशोदा श्रीकृष्ण का झगड़ा और रामलीला का बारहमासा लिखा है। दोनों ग्रंथों का लिपिकार एक ही है तथापि उनका समय भी चैत्र सुदी ७ संवत् १९२७ (सन् १८७० ई०) है।

३८५ पंडित रामनाथ—जौनपुर के समीप बादशाहपुर के पंडित रामनाथ ने एक छोटी सी पुस्तिका कालियादमन नामक लिखी है जिसमें श्रीकृष्ण द्वारा यमुना में कालिया नाग को वश में करने की कथा वर्णित है। यह ग्रंथ पहली ही बार मिला है। शैली अत्यधिक मानुप्रासिक है। हस्तलेख में कोई सन्-संवत् नहीं दिया है।

३८६ रामनाथ प्रधान - रामनाथ प्रधान कृत राम कलेवा रहस्य का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२० २२ संख्या १५३ और खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ३४६ में दिया जा चुका है। इसी ग्रंथ के दो हस्तलेख वर्तमान खोज में उपलब्ध हुए हैं। ग्रंथ की रचना संवत् १९०२ (सन् १८४५ ई०) हुई थी।

३८७ रामनाथ सहाय—अक्षमाल के रचयिता रामनाथ सहाय खोज में पहली ही बार मिले हैं। हस्तलेख में कोई सन्-संवत् नहीं दिया है और रचयिता के विषय में भी कुछ ज्ञात नहीं है।

३८८ रामनेस या रमणविहारी—रामनेस या रमणविहारी ने करुणाष्टक और राम मल्ल लीला नामक ग्रंथ लिखे हैं। प्रथम स्तुति विषयक ग्रंथ है और दूसरे में राम द्वारा किए जाने वाले शारीरिक व्यायाम का वर्णन है। तीन हस्तलेखों में से एक संवत् १९१४ (सन् १८५७ ई०) का है।

३८९ रामप्रसाद कथिक—विहार में वेतिया निवासी रामप्रसाद कथिक ने वेतियानरेश आनंदकिशोर के नाम पर आनंदरस नामक नायक-नायिका भेद का ग्रंथ रचा है जिसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें नायक के भी उतने ही भेद किए गए हैं जितने नायिकाओं के होते हैं। इसे रचनाकार ने एक छंद में स्पष्ट भी किया है। छंद है—

सूर केसो मंडन विहारी कालिदास ब्रह्म चिन्तामणि मतिराम भूपन सु आनिये।
लीलाधर सेनापति निपट निवाज निधि नीलकंठ मिश्र सुखदेव देव मानिये।
आलम रहीम रसखान सुन्दरादिक अनेक सुकवि भये कहाँ लौ वखानिये।
इन भाषा हेतु जितनी नायिका करी हैं ते ते नायक हूँ होत इहाँ आदि होते जानिये।

रचयिता ने ग्रंथ समाप्ति पर समय का उल्लेख इस प्रकार किया है—

सवत् दिन मुनि नाग महि कातिक मास सुपंथ
शुक्ल अष्टमी वार रवि भो संपूरन ग्रंथ

तदनुसार रविवार १२ नववर सन् १८२० ई० हुआ यद्यपि उस दिन अष्टमी सूर्योदय के १९ घंटे बाद लगी थी। रचनाकाल ने अपना वर्णन एक पहेली के रूप में दिया है जिसमें १२८ खाने हैं और प्रति खाने में एक अक्षर है। इसे यदि विशिष्ट ढंग से पढ़ा जाय तो सुखदायक देवता की स्तुति का एक छद बन जाता है और यदि सामान्य रूप से एक अक्षर छोड़ कर पढ़ा जाय तो निम्नलिखित गद्य सामने आता है—

राम परसाद कथिक वरन महाउर, भाई
आशलदीन के, सुत मुरली करह, नाति
वेनी राम को, पनाति नौल राम कर,
परगना अगुली ताखा, नगर मवासुर

अर्थात् रामप्रसाद जाति के कथिक (कथावाचक) थे। इनका वर्ण महाउर था। ये आशलदीन के भाई, मुरली के पुत्र, वेनीराम के पौत्र और नौलराम के प्रपौत्र थे। ये निवासी थे परगना अगुरी ताखा में नगर मवासुर के। ठीक यही ढंग भिखारीदास का भी है। उन्होंने भी अपना विवरण ठीक ऐसे ही और इसी तरह की शब्दावली में दिया है। (देखिए भिखारीदास का विवरण)।

३९० रामप्रसाद—वारहमासा और वभ्रुवाहन की कथा के रचयिता रामप्रसाद ने अपने विषय में कुछ नहीं लिखा है। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि ये जैमिनी पुराण के कर्ता बिलग्राम के रामप्रसाद भाट ही हैं। वभ्रुवाहन की कथा उस ग्रंथ का एक अंश मात्र है। इनका दूसरा ग्रंथ जुगल पद है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ सख्या २५४ (बी) में दिया जा चुका है। ये अठारहवीं शती के मध्य में विद्यमान थे।

३११ रामदास या रामराज—रामराव या रामराज अवध के सरदार या जमींदार (महीपाल या भूमिपाल) थे। ये संस्कृत के जानकार थे तथा हिंदी कवियों के संरक्षक थे। एक कवि ने इनके लिए काव्य प्रकाश का हिंदी अनुवाद काव्य प्रभाकर नाम से किया है। वास्तविक अनुवादक ने ध्यानपूर्वक अपना नाम व्यक्त नहीं किया है और उसे अपने संरक्षक के नाम से कर दिया है। ग्रंथ की रचना संवत् १८८० बसंत पंचमी गुरुवार तदनुसार ५ फरवरी सन् १८२४ ई० को आरंभ हुई। इसके प्राप्त दो हस्तलेखों में से एक की पुष्पिका विशेष आकर्षक है जिसमें लिखा है कि सपूर्ण ग्रंथ की एक प्रतिलिपि फतह पुर जिला महोली अममी के मिश्र कृष्ण शर्मा कवि ब्रह्मभट्ट ने महाराजाधिराज को समर्पित की। यह उल्लेख स्पष्टतः सीतापुर जिला मल्लापुर के राजा प्रकाशसिंह से संबंधित है जिनके यहाँ यह प्रति सुरक्षित है। यह ग्रंथ एक बार पहले और मिल चुका है लेकिन खोज विवरणिका सन् १९०६-०८ संख्या ३१५ जिसमें रचयिता का नाम रामराव दिया हुआ है।

३१२ रामराम—रामराम ने राम चरितावली या राम बारह खड़ी लिखा है। वर्तमान खोज में इसके दो हस्तलेख प्राप्त हुए हैं तथापि इसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १५६ में दिया जा चुका है।

३१३ रामराय—सैना भजन् के रचयिता रामराय का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ संख्या ३१४ में दिया जा चुका है। इस खोज में प्राप्त तीन प्रतियों में से सबसे पुरानी प्रति संवत् २०१९ (सन् १९६२ ई०) की है।

३१४ रामसहाय कायस्थ—रामसहाय कायस्थ ने वृत्त तरंगिणी की रचना की है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०४ संख्या १४ में दिया जा चुका है। इसकी दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं। दोनों का समय संवत् १९०० (सन् १८४३ ई०) है। रचनाकाल है संवत् १८७३ (सन् १८१६ ई०)।

३१५ रामसखे—मंगलाष्टक के कर्ता रामसखे का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१७-१९ सं० १४८ में तथा बाद की दो त्रैवार्षिक विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। रचयिता अठ्ठारहवीं सती के मध्य में विद्यमान था तथा महंत था है।

३१६ रामसिंह—ग्वालियर के समीप नरवर के राजा रामसिंह ने मनमोहन अग्नि विलास युगल-विलास तथा रस-सिरोमणि नामक ग्रंथ लिखे हैं जो वर्तमान खोज में उपलब्ध हुए हैं। रचनाकार का समय संवत् १०२० ई० है।

३१७ रणजीतसिंह महाराज—महाराज रणजीतसिंह ने धर्मांदर्श नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें धार्मिक कृत्य एवं उनके माहात्म्य का वर्णन है।

३१८ राय रणकरण—राय रणकरण ने आनंद मंजरी नामक भगवती स्तवन का एक ग्रंथ लिखा है। इसकी प्राप्ति पहली ही बार हुई है। न तो इसके लेखक के ही विषय में कुछ ज्ञात है और न रचना के समय के ही विषय में। हस्तलेख का समय संवत् १८२८ (सन् १७७१ ई०) है।

३९९ **रंगीलाल**—आगरा के रंगीलाल ने तोता मैना की कहानी नामक ग्रंथ में एक छोटी सी कथा लिखी है जो पहली ही वार उपलब्ध हुई है। यह सुग्गा-सुग्गी का संवाद है जिसमें पुरुप ने सारा दोप मादा के सिर मढ़ा है और मादा ने पुरुप के। रचना खड़ी बोली की है। हस्तलेख का समय संवत् १९०७ (सन् १८५० ई०) है।

४०० **रंगीलाल** मथुरा के रंगीलाल ने वैद्यक जर्राही लिखी है जिसकी रचना संवत् १९२७ (सन् १८७० ई०) म हुई। यह भारतीय शल्य-विज्ञान विपयक सचित्र ग्रंथ है।

४०१ **रंगीलाल द्विज**—रंगीलाल द्विज ने वारहमासा निपट निदान ग्रंथ लिखा है जिसमें अल्प वयस्क लड़के से विवाह के दुष्परिणाम वर्णित हैं।

४०२ **रसनिधि**—रसनिधि ने श्रीकृष्ण स्तुति में १००० छंदों का रत्न हजारा नामक ग्रंथ रचा है। इसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०३ संख्या ९४ में भी दिया जा चुका है। रचनाकार सत्रहवीं शती का है।

४०३ **रसरूप**—रसरूप उपनाम सुकवि ने 'उपालभ शतक' नामक उद्धव गोपी-संवाद लिखा है। उपलब्ध हस्तलेख ठीक वही है जो खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या २६१ में उल्लिखित है और उसमें वही संवत् भी दिया है अर्थात् स० १८८९ (सन् १८३२ ई०)। रचनाकार अच्छा लेखक है और संस्कृत तथा फारसी का उसे अच्छा ज्ञान है। उसने फारसी शब्दों का ऐसा स्पष्ट व्यवहार किया है कि जिससे रचना अरुचिकर न हो जाय।

४०४ **रसिकराम**—रसिकराम कृत सनेहलीला का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ संख्या ३१० में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में उक्त ग्रंथ के दो हस्त-लेख मिले हैं जिनमें से एक संवत् १८२६ (सन् १७६९ ई०) का है और दूसरा संवत् १८७२ (सन् १८१५ ई०) का।

४०५ **रसिकरूप**—रसिकरूप ने मॉझ वत्तीसी नामक ग्रंथ रचा है जो नवोपलब्ध रचना है। इसमें श्रीकृष्ण के भक्ति विपयक गीत हैं। हस्तलेख में कोई सन् संवत् नहीं है।

४०६ **रतन कवि**—फतहप्रकाश नामक ग्रंथ के कर्ता रतन कवि का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०६-११ संख्या २६६ और खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ३६० में दिया जा चुका है। उपर्युक्त ग्रंथ पन्ना के फतहसिंह के नाम पर लिखा गया है। हस्तलेख का समय संवत् १९०६ (सन् १८९९ ई०) है।

४०७ **रविदत्त**—रोहतक जिले में वेरी के गौड़-ब्राह्मण रविनाथ ने सुखेण वैद्यक लिखा है जो सुपेण कृत संस्कृत ग्रंथ आयुर्वेद महोदधि का अनुवाद है। यह अनेक परंपरा-युक्त महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है।

४०८ **रिपभदेव**—फलित ज्योतिप के ग्रंथ रमल ग्रंथ प्रश्नावली के कर्ता रिपभ देव पहली वार वर्तमान खोज में ही मिले हैं। रचयिता के विपय में और कुछ ज्ञात नहीं है। हस्तलेख का समय संवत् १९१२ (सन् १८५५ ई०) है।

४०९ रुद्रनाथ—बिसहीर के रुद्रनाथ उपनाम कुशली कवि ने बारहमासा लिखा है जिसमें पति वियोग में नायिका-विरह वर्णित है। इसका रचनाकाल दिया है संवत् १८७६ सावन बदी २ शुक्र तदनुसार ९ जुलाई सन् १८१९ ई०।

४१० रूपचंद्र—रूप चंद ने पचकल्याण नामक जैन धर्म का ग्रंथ लिखा है। रचनाकार के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। ये पहली बार वर्तमान खोज में ही मिले हैं।

४११ रायचन्द्र नागर—राय चंद्र नागर का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या २१९ में चित्रित मालिका के कर्ता के रूप में और खोज-विवरणिका सन् १९१७-१९ संख्या १६३ में गीत गोविंद टीका के रचयिता के रूप में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में दूसरी पोथी के तीन हस्तलेख मिले हैं जिनमें से एक का नाम गीत गोविंदादर्श है। सबसे पुराना हस्तलेख संवत् १९०१ (सन् १८४४ ई०) का है।

४१२ सबलसिंह—सबलसिंह चौहान महाभारत के प्रसिद्ध अनुवादक हैं। विगत अनेक खोज विवरणिकाओं में इनका विवरण दिया हुआ है जिनमें से अंतिम सन् १९२३-२५ की है जिसमें संख्या ४११ पर अन्य उल्लेख किये हुए हैं। सबलसिंह बहुत ही योग्य लेखक थे। इन्हीं से इनके ग्रंथों की प्रतिलिपियों की भारत में एक परंपरा हो चली। वर्तमान खोज में इनकी रचना के निम्नलिखित हस्तलेख मिले हैं—

	रचनाकाल	लिपिकाल	संख्या
(ए) महाभारत कर्णपर्व	१६७७ ई०	१८६० ई०	४
(बी) शल्य पर्व	१६६७ ई०	१८६१ १८८७	२
(सी) उद्योगपर्व	"	१८०६ १८७८	२
(डी) विराट पर्व	"	१८६७ १८०९	२
(ई) शांति पर्व	"	१८७७	१
(एफ) वन	"	१८६७	१
(जी) भीष्म पर्व	१६६१	१९३२	४
(एच) सभा पर्व	१६७०	१८९५ १८८४	२
(आई) स्वर्गारोहण पर्व	१६७४	१८७७	२
(जे) द्रोण पर्व	१६७०	१८५०	१
(के) गदा पर्व	"	१८००	१
(एल) आश्रम वासिक	१६८४	१८७७	१
(एम) आदि पर्व	"	१८०७	१
(एन) स्त्री पर्व	"	"	१

	रचनाकाल	लिपिकाल	संख्या
(ओ) अश्वमेध पर्व	१६९४	१८७७	१
(पी) महाप्रस्थान पर्व	,,	१८७७	१
(क्यू) मूसल पर्व	१६७३	१८७७	१

प्राचीनतम हस्तलेख कर्णपर्व का है जिसका समय सन् १८६० ई० है।

४१३ **सबल स्याम**—सबल स्याम ने भागवत दशम स्कंध भाषा या हरिचरित्र लिखा है, जिसके दो हस्तलेख वर्तमान खोज में उपलब्ध हुए हैं। इसका रचनाकाल निम्न-लिखित छंद में दिया हुआ है—

सवत सत्रह सै सोरह दस, कवि दिन तिथि रजनीस वेद रस।
माघ पुनीत मकर गत भानू, असित पक्ष ऋतु शिशर समानू।

अर्थात् कवि दिन माघ वदी ११ संवत् १७२६ तदनुसार शुक्रवार ७ जनवरी १६७० ई०।

४१४ **सहदेव**—रामगढ़ के सहदेव ने एक छोटी सी पुस्तिका 'नंदगाँव बरसाने की होली' लिखी है। हस्तलेख में कोई सन् संवत् नहीं है।

४१५ **सहजराम**—प्रह्लाद चरित्र और हनुमान बाललीला के कर्ता सहजराम का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ और १९२३-२५ संख्या ३६७ में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में प्रह्लाद-चरित्र के दो और हनुमान बाललीला का एक हस्तलेख मिले हैं।

४१६ **सहजो बाई**—सहजोबाई ने भक्ति विषयक गीत लिखे हैं जो सहजोबाई की बानी के नाम से संगृहीत हैं। इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १७१ में दिया जा चुका है जिसमें विगत-खोज-विवरणिकाओं में दिए इनके विवरण का भी उल्लेख है। ये चरणदास की शिष्या थीं और ईसा की अठारहवीं शती के मध्य में विद्यमान थीं।

४१७ **शालिग्राम परमहंस**—सालिग्राम परमहंस ने सद्गुरु विनय नामक भक्तिविषयक ग्रंथ रणजीत पुरवा के जमींदार की विधवा निधिरानी के हृदय में भक्तिभावना जगाने के लिए रचा था। निधिरानी ने इन्हें अपना गुरु मान लिया था। रानी स्वयं कवि-यित्री थीं और उसने 'राममिलन' नामक ग्रंथ लिखा है जिसका विवरण इसी विववरणिका में ऊपर दिया जा चुका है। वह अठारहवीं में विद्यमान थीं और वही समय उसके गुरु का भी मानना शाहिए।

४१८ **सालिग्राम वैश्य**—मुरादाबाद के सालिग्राम वैश्य ने श्रीमद्भागवत के दशमस्कंध का अनुवाद किया है। भाषाभागवत दशमस्कंध के दो हस्तलेख मिले हैं, एक पूर्वार्द्ध है और दूसरा उत्तरार्द्ध। रचनाकाल अज्ञात है। हस्तलेखों का समय है १९५० (सन् १८९३) और संवत् १९५१ (सन् १८९४ ई०)।

४१९ **सामरदास**—मगरौदा के सामरदास का विवरण खोज-विवरणिका सन्

१९२३–२५ संख्या ३७० में दिया जा चुका है। इनकी रचनाओं के निम्नलिखित हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं—

(१) रामायण बालकांड की एक प्रति रचनाकाल सन् १८५१ ई०।

(२) रामायण किष्किंधाकांड की दो प्रतियाँ रचनाकाल १८६६ ई०।

(३) रामायण सुंदरकांड की एक प्रति रचनाकाल १८६२ ई०।

(४) लंकाकांड की दो प्रतियाँ, रचनाकाल सन् १८६२ ई०।

(५) सुजस पताका की एक प्रति, रचनाकाल सन् १८९८ ई०।

(६) भजनावली की एक प्रति।

केवल अंतिम को छोड़ और सब ग्रंथ मिल चुके हैं।

४२० सामर्थी मिश्र—सामर्थी मिश्र ने श्रीकृष्णलीला विषयक प्रेममंजरी ग्रंथ लिखा है जो नवोपलब्ध रचना है और उसमें सन संवत् नहीं दिया है।

४२१ समुनाथ त्रिपाठी—समुनाथ त्रिपाठी का विवरण खोज विवरणिका सन् १९२३–२५ संख्या ३०१ में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

(१) बैताल पचीसी की एक प्रति रचनाकाल सन् १०७२ ई०।

(२) मुहूर्त चिंतामणि या मंजरी या कल्पद्रुम की तीन प्रतियाँ, रचनाकाल सन् १७४१ ई०।

(३) जातक चंद्रिका, रचनाकाल संख्या २ के पूर्व।

पहला ग्रंथ किसी रघुनाथ ब्राह्मण के लिए रचा गया था और शेष बक्सर के राजा अचलेस या अचलसिंह के लिए।

४२२ समर कवि—समर कवि ने किसी जैन महिला राजुल का बारहमासा लिखा है, जो पति से वियुक्त हो गई है। रचयिता भी जैन ही था। हस्तलेख या ग्रंथ की समाप्ति कुवार वदी ८ बुधवार संवत् १८२७ तदनुसार १२ सितंबर सन् १७७० ई० को हुई।

४२३ राजा समामसिंह—सिरमौर के राजा संमतसिंह ने संवत् १८६६ (सन् १८०९ ई०) में काव्यार्णव लिखा है। ग्रंथ में छंद तथा काव्यकला संबंधी अन्य विषयों का वर्णन है। इसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९–११ संख्या २७६ में दिया जा चुका है।

४२४ शंकराचार्य—परम दार्शनिक शंकराचार्य ने संस्कृत में दशावतार और नारायण स्तोत्र लिखा है। पहली का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२–१४ संख्या १६७ और खोज-विवरणिका सन् १९०६–०८ संख्या १६८ में दिया जा चुका है। दूसरा ग्रंथ पहली बार इसी खोज में मिला है। अनुवादक ने अपना नाम नहीं दिया है।

४२५ शंकरदत्त—प्रतापगढ़ के शंकरदत्त अध्यापक ने बीमर कृत भूगोल के आधार पर ज्योतिष तथा प्रकृति संबंधी भूगोल का ग्रंथ सिरोही राज के बाबू अजीतसिंह

के लिये लिखा है। रचयिता उसी राज्य के अतर्गत वीरज ग्राम का निवासी था। ग्रंथ की रचना संवत् १९२७ (सन् १८७२) में हुई थी। यह ग्रथ ६० वर्ष पूर्व सरकारी पाठशालाओं में व्यवहृत होने वाली भाषा का नमूना है।

४२६ शंकर दीक्षित—वेदांत विषयक ग्रंथ माधुरी-विलास के कर्ता शंकर दीक्षित इटावा जिले में लखुना के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। ये गोस्वामी उमरावपुरी के शिष्य थे। माधुरी-विलास की रचना संवत् १९३२ (सन् १८७५ ई०) में हुई थी। यह नवोपलब्ध रचना है।

४२७ संतदास—संतदास उपनाम शिवदास का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९–११ संख्या २८१ और खोज-विवरणिका सन् १९२३–२५ संख्या ३७५ में संतदास शब्दावली और संतदास की बानी के कर्ता के रूप में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में इनके तीन ग्रथ और प्रकाश में आए हैं—(१) काया विलास, (२) विपर्यय को अंग और (३) स्वास विलास। ग्रथ में हिंदू विचारधारा के अनुसार शरीर-रचना, पुनर्जन्म, ज्ञान, चक्र आदि का वर्णन है। केवल संख्या (२) में कवि सुंदरलाल कृत उसी नाम के ग्रथ के उलटवासियों की व्याख्या है। संतदास सन् १८३० के लगभग वर्तमान थे और कबीर के अनुयायी थे।

४२८ संतदास—संतदास ने गोपीकृष्ण की बारहखड़ी लिखी है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२–१६ संख्या १६९ में दिया जा चुका है। मिश्रबंधुओं का अनुमान है कि ये सत्रहवीं शती के प्रथम चरण में विद्यमान थे।

४२९ संतसिंह सिख—संतसिंह सिख ने तुलसीदास कृत रामायण के बालकांड और अयोध्याकांड की टीका की है जिसका विवरण खोज विवरणिका सन् १९०९–११ संख्या २८२ में दिया जा चुका है। हस्तलेख का समय सन् १८९४ और १८९५ ई० है।

४३० सरयूदास—सरयूदास कलचुरि क्षत्रिय अगदसिंह के पुत्र थे और राय बरेली जिले में शंकरगंज के निवासी थे। इन्होंने कवितावली और विरहसागर ग्रथ रचे हैं। इनमें से प्रथम तो पहली बार इसी खोज में मिला है; किंतु दूसरा सन् १९२३–२५ ई० की खोज में मिल चुका है। देखिए विवरण संख्या ३७७। रचयिता अठारहवीं शती में विद्यमान थे।

४३१ सरयूराम पंडित—सरयूराम पंडित ने जैमिनि पुराण (महाभारत) का अनुवाद सन् १७४८ ई० में प्रस्तुत किया। यह नवोपलब्ध रचना है।

४३२ सवितादत्त—हरदोई जिले में हरदोई निवासी सवितादत्त ने कृष्ण-विलास नामक नायिका-भेद का ग्रथ लिखा है। इसका नामकरण किसी राजा के पुत्र के नाम पर हुआ है। जिस दिन वे बाईस वर्ष के पूरे हुए उसी दिन कवि को इस ग्रंथ की रचना की आज्ञा दी, जिसका विस्तृत विवरण इस प्रकार दिया है—

जा दिन वैस कुमार की भई बरष बाइस।
साके विक्रम भूप के, सत्रह सै पैंतीस॥

भादों मास पुनीत अति, आते हरपति छोगु
कृष्ण जन्मतिथि अष्टमी सोमवार सिद्धि योगु ॥

अर्थात् संवत् १७३५ भादों बदी ८ सोमवार, किंतु गणना से यह ठीक नहीं उत रता। १७३५ में कृष्ण जन्माष्टमी बुधवार (३१ जुलाई १६७८ ई०) को थी, सोमवार की नहीं। यदि पैंतीस के स्थान पर सैंतीस हो और वह चालू वर्ष हो, तो तिथि सोमवार (१८ अगस्त १६७९ ई०) को पड़ती है।

४३३ सेनापति—सेनापति सुप्रसिद्ध कवि हैं और इनका विवरण विगत अनेक खोज-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। देखिए खोज-विवरणिका १९२३-२५ संख्या ३७२ जिसमें सबका उल्लेख है। वर्तमान खोज में इनके कवित्त-रत्नाकर के दो हस्तलेख मिले हैं। ग्रंथ की रचना संवत् १७०६ (सन् १६४९ ई०) में हुई थी।

४३४ सेवादास—सेवादास ने सृष्टि पुराण लिखा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका १९२३-२५ संख्या ३६१ में दिया जा चुका है। हस्तलेख का समय संवत् १७७१ (सन् १७१४ ई०) है। रचयिता रामपुरा में एक महंत था।

४३५ सेवकराम—सेवकराम ने स्तुतियों और गीतों का एक संग्रह तैयार किया है जिसका नाम रखा है संग्रहग्रंथ साका। संप्रति इतने प्रमाण नहीं मिले हैं कि इन्हें या तो जसवी के सेवकराम से मिला दिया जा सके जिनका विवरण सन् १९२३-२५ की खोज विवरणिका में संख्या ३८३ पर दिया हुआ है या अन्य विवरणिकाओं में उल्लिखित और सेवकराम से।

४३६ सेवासिंह ठाकुर—सीतापुर जिले में फतेहपुर के सेवासिंह ठाकुर ने नैपध चरित का अनुवाद नैपध ग्रंथ के नाम से किया है। इसमें नल-दमयंती की कथा वर्णित है। यह नवोपलब्ध रचना है। हस्तलेख का समय संवत् १९५२ (सन् १८९५ ई०) है।

४३७ सिघादास—इरगवा के सिधदास सत्यनामी संप्रदाय के थे और इनके गुरु का नाम दूलनदास था। इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ३६६ में दिया हुआ है। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

(१) शब्दावली, (२) विरह सरप (३) साखी और (४) कवित्त स्फुट। इनकी रचना सन् १७५३ में हुई थी और सब भक्ति-विषयक ग्रंथ हैं।

४३८ सीताराम—हसनपुरा के सीताराम ने माधव निदान का अनुवाद रिक कमाल चिकित्सा नाम से किया है। इस ग्रंथ की तीन प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं जिनमें से एक का रचनाकाल इस प्रकार दिया है—

संवत् ठारह सै तिरपना सावन अधिक सुहायो।
कृष्ण पक्ष तिथि तेरसी चन्द्रवार शुभ आयो ॥

अर्थात् संवत् १८५३ सावन कृष्ण १३ चंद्रवार तदनुसार १ अगस्त सन् १७९६ ई०। दो प्रतियों में लिपिकार ने 'ठारह सै तिरपना' को 'ठारा सै सत्तर महीना' लिख दिया

है जिसमें छंदोभंग तो है ही, साथ ही गणना से भी यह अशुद्ध है क्योंकि संवत् १८७० में सावन वदी १३ शनिवार को थी, सोमवार को नहीं।

४३९ सीताराम शुक्ल—गोंडा (जिला हरदोई) के सीताराम शुक्ल ने अपने शृंगारी छंदों का संग्रह संवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) में कवित्त संग्रह के नाम से किया है।

४४० सीताराम उपाध्याय—सीताराम उपाध्याय (सरयूपारी ब्राह्मण) ने 'काव्य कल्पतरु' या 'वंशावली तिलोई राज्य की' तिलोई के राजा शंकर सिंह की संरक्षता में रची। इसमें राजा की वंशावली वर्णित और इसकी रचना सन् १८७८ ई० में हुई। उपलब्ध हस्तलेख एक वर्ष बाद सन् १८७९ ई० का लिखा है।

४४१ सीताराम वैद्य—सीताराम वैद्य ने फारसी के तिब्बा सहाबा के आधार पर कवितरंग नामक ग्रंथ रचा है। इन्होंने ग्रंथ की रचना सोमवार मार्गशीर्ष संवत् १७६० (१५ नवंबर सन् १७०३ ई०) को आरंभ की और शुक्रवार मकर कृष्ण तृतीया संवत् १७६० (१४ जनवरी सन् १७०४) को समाप्त की। अर्थात ठीक दो महीने बाद। किंतु लिपिकारों ने प्रतिलिपि में ऐसी भयंकर भूलें की हैं कि ग्रंथारंभ का समय 'एकादश संवत् समय और साठ निःधार' हो गया है जिसका अर्थ होगा १० ६० ७० जो निरर्थक है। पहला शब्द 'एकादश' सत्रह सै' होना चाहिए अर्थात् १७०० + ६० = १७६० जो समाप्ति काल के पद्य से सिद्ध हो जाता है।

(गये जो विक्रम वीर विताय। सत्रह सै अरु साठि गिनाय॥)

ऐसे ही एक लिपिकार ने साठि' का 'आठि' करके ५२ वर्ष का अंतर कर दिया है। फिर भी यह तो बहुत ही आश्चर्यजनक है कि दो भिन्न भिन्न लिपिकारों ने 'सत्रह सै' को 'एकादश' कैसे पढ़ लिया जो निर्विवाद है।

४४२ सिवबक्श—शिवबक्श ने पवन परीक्षा नामक ग्रंथ में विभिन्न देवताओं की स्तुति लिखी है। इसकी रचना संवत् १८७५ (सन् १८१८ ई०) में हुई। ग्रंथ के अंत में रचयिता ६ कहावतों की समस्या पूर्ति में उलझ गया है।

४४३ शिवदत्त—शिवदत्त रामप्रसाद कृत ब्रह्मावर्त माहात्म्य या उत्पलारण्य माहात्म्य की तीन प्रतियाँ तथा ज्ञान की बारहमासी इस खोज में मिली हैं। पहला ग्रंथ संवत् १९२६ (सन् १८६९ ई०) में रचा गया और दूसरा संवत् १९३३ (सन् १८७७ ई० में। ये सामान्य कवि हैं और पहली बार इसी खोज में मिले हैं।

४४४ शिवदयाल—जलालाबाद (फर्रुखाबाद जिला) के शिव दयाल ने राधा जी की बारहमासी संवत् १९१५ (सन् १८५८ ई०) में रची। हस्तलेख का समय संवत् १९१८ (सन् १८६१ ई०) है।

४४५ शिवदीनदास—कंधरपुर (प्रतापगढ़ जिला) के शिवदीनदास ने गूढ़ार्थक श्रीकृष्ण लीला विषयक राधाकृष्ण विहार कुंजकल्पलतिका नामक ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख का समय संवत १८९२ (सन् १८३५ ई०) है।

४४६ शिवलाल पंडित—शिवलाल पंडित ने अभिप्राय दीपक नामक ग्रंथ लिखा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०४ संख्या ११२ में दिया जा चुका है। इस खोज में प्राप्त हस्तलेख का समय संवत् १९०२ (सन् १८४५ ई०) है।

४४७ शिवानंद स्वामी—शिवानंद स्वामी ने त्रिमूर्ति भारती या भगवत् स्तुति नामक छोटी सी पुस्तिका लिखी है।

४४८ शिवनारायण—गाजीपुर के शिवनारायण राजपूत ने संत उपदेश लिखा जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या ११ में दिया जा चुका है। इन्होंने प्रचुर मात्रा में रचना की है और पूरे एक दर्जन ग्रंथ रचे हैं जिनमें से एक इनके ही द्वारा अपने नाम पर स्थापित सम्प्रदाय के अधिकार में है। ये अठारहवीं शती के मध्य में विद्यमान थे।

४४९ शिवनाथ—शिवनाथ ने रस रंजन ग्रंथ लिखा है जिसकी पाँच प्रतियाँ वर्तमान खोज में पहली बार मिली हैं। यह नायिका भेद का ग्रंथ है। इसका रचना काल दिया है संवत् १८३६ या शक १७११ माघव सुदी १० चन्द्रवार तदनुसार ४ मई सन् १७७९ ई०।

४५० शिवप्रसाद कायस्थ—शिवप्रसाद कायस्थ ने छंदसार पिंगल नामक ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख का समय संवत् १९१९ (सन् १८६२ ई०) है। ग्रंथ रचना सिंग बासा (प्रतापगढ़ जिला) के राजा महीपालसिंह की संरक्षता में हुई है।

४५१ शिवप्रसाद सिंह ठाकुर—गाजीपुर के शिवप्रसाद सिंह ठाकुर ने विभिन्न कवियों जैसे पुरुषोत्तम, नरहरि तोष और पद्माकर के छंदों का एक संग्रह प्रस्तुत किया है जिसका नाम है 'अनेक कवियों की कविताओं का संग्रह'।

४५२ शिवसिंह सेंगर—शिवसिंह सेंगर ने जिन्होंने सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'शिवसिंह सरोज' लिखकर हिंदी साहित्य के प्रथम इतिहासकार होने का यश प्राप्त किया है, गोकरन माहात्म्य नामक एक पुस्तक लिखी है जिसकी दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं। यह उपयुक्त इतिहास के ठीक एक वर्ष बाद संवत् १९३३ (सन् १८७६ ई०) में प्रस्तुत हुई। इस छोटे से ग्रंथ से यह स्पष्ट है कि इनमें उच्च कोटि की कवित्व शक्ति विद्यमान थी।

४५३ सियाराम—सियाराम ने 'जानकी-विजय' रचा है जिसकी तीन प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं। इसका रचनाकाल है संवत् १८१३ चैत्र सुदी ९ तदनुसार गुरुवार १ अप्रैल सन् १७५६ ई०। इस रचनाकार का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या २७ में भी दिया जा चुका है।

४५४ श्रीधर गौड़—अजमेर के निकट पुष्कर के निवासी श्रीधर गौड़ ने निम्न लिखित तीन ग्रंथ रचे हैं—

(१) हनुमान विजय, रचनाकाल संवत् १९२१ (सन् १८६४ ई०)।

(२) शिक्षा अक्षर बत्तीसी (बालोपयोगी शिक्षा-संबंधी)।

(३) सामुद्रिक (हस्तरेखा-संबंधी), रचनाकाल संवत १९२८ (सन् १८७१ ई०)।

४५५ श्रीधर—शालिहोत्र के कर्ता श्रीधर का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ संख्या ११७ और १९२३-२५ संख्या ४०१ में दिया जा चुका है। ग्रंथ का रचना काल है संवत् १८९६ (सन् १८३७ ई०)।

४५६ श्रीधर पंडित—श्रीधर पंडित ने 'छींक तथा सकुन विचार' नामक पोथी रची है। पुस्तक भड्डर की प्रसिद्ध कहावतों की नक्ल जान पड़ती है। श्रीधर ने भड्डर का नाम छिपाने का प्रयत्न नहीं किया है, फिर भी इसमें संदेह नहीं कि कुछ रचनाएँ इनकी भी है।

४५७ श्रीकृष्ण मिश्र—प्रश्नतंत्र मात्रा के कर्ता श्री कृष्ण मिश्र का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ में तिमिर दीपिका के कर्ता के रूप में दिया जा चुका है। दोनों ही ग्रंथ ज्योतिष के हैं। प्रश्नतंत्र वाराह मिहिरकृत जातक के आधार पर है।

४५८ श्रीलाल—श्रीलाल ने चाणक्य नीति दर्पण संवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) में रचा है। यह गद्य में शुद्ध भाषा के ढंग से लिखा गया है।

४५९ श्रीपति मिश्र—कालपी के श्रीपति मिश्र ने काव्य सरोज की रचना सन् १७२० ई० में की है। इसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या ३०४ में दिया जा चुका है।

४६० सुभकरन—सुभकरन ने विहारी सतसई की टीका अपने आश्रयदाता अनवरखाँ के नाम पर 'अनवरचंद्रिका' नाम से संवत् १७७१ (सन् १७१४ ई०) में की है। इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ४०६ तथा अन्य विगत विवरणिकाओं में दिया जा चुका है।

४६१ सुदामा—सुदामा ने बारह खड़ी और नैना भेष नामक ग्रंथ रचे हैं। वर्तमान खोज में पहले के चार और दूसरे के दो हस्तलेख मिले हैं। पहले ग्रंथ का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ में दिया जा चुका है। दूसरी नवोपलब्ध रचना है।

४६२ सुदर्शन वैद्य—हमीरपुर के सुदर्शन वैद्य ने भिषग-प्रिया नामक पोथी रची है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ४०९ में दिया जा चुका है। ये कायस्थ थे और ओरछा के सुजानसिंह की संरक्षता में ग्रंथ रचना करते थे। समय-सूचक पद्य निम्नलिखित है—

संवत् सत्रह सै वरष, लगी साल उनतीस।
ऋतु बसंत फागुन सुभग, कृष्ण पक्ष वृत ईस॥
सनि दिन सुभग चतुर्दशी सिद्ध जोग तिथिवार।
प्रथम पहर आरंभ यह ता दिन भयो विचार॥

तात्पर्य यह कि कवि को ग्रंथ-रचना का विचार संवत् १७२९ फागुन वदी १४ बसंत ऋतु शनिवार तदनुसार सन् १६७२ ई० में हुआ। अतः इसे ठीक समय समझना चाहिए।

४६३ सुदर्शन मिश्र—सुदर्शन मिश्र ने भुसुंडी माहात्म्य सन् १७२० ई० में रचा जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ४०८ में दिया जा चुका है।

४६४ सुकवि—सुकवि ने रामाष्टक लिखा है जिसका कुछ भी महत्व नहीं है।

४६५ सुखदेव मिश्र—सुखदेव मिश्र प्रसिद्ध रचनाकार हुए हैं और इनका विवरण विभिन्न खोज-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। अंतिम विवरण खोज-विवरणिका १९२३-२५ संख्या ४१२ में दिया हुआ है। इस खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

(१) फाजिलअली प्रकाश की दो प्रतियाँ, रचनाकाल संवत् १७३३ (सन् १६७६ ई०)।

(२) वृत्त विचार पिंगल की एक प्रति, रचना काल संवत् १७२८ (सन् १६७१ ई०)।

(३) छंद विचार की दो प्रतियाँ, रचनाकाल संवत् १७२८ (सन् १६७१ ई०)।

(४) अध्यात्म प्रकाश की दो प्रतियाँ रचनाकाल संवत् १७५५ (सन् १६९८ ई०)।

४६६ सुखानंद—भागर के सुखानंद ने गुलाब केवड़ा नामक छोटी सी पुस्तिका संवत् १९२७ (सन् १८७० ई०) में रची है। इसका विवरण पहली बार इसी खोज में दिया गया है।

४६७ सुखानंद—सुखानंद ने वैद्य जीवन नामक वैद्यक ग्रंथ संवत् १९१० (सन् १८५३ ई०) में रचा। हस्तलेख की प्रतिलिपि संवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) में हुई।

४६८ सुखाराम—सुखाराम ने ज्योतिष का ग्रंथ पाराशरी का अनुवाद पाराशरी भाषा के नाम से किया है। ग्रंथ का रचनाकाल एवं लिपिकाल दोनों संवत् १९३७ (सन् १८८० ई०) है।

४६९ सुंदरदास—ग्वालियर के सुंदरदास ने सुंदर श्रृंगार की रचना की थी जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१७-१९ संख्या १८७ और १९२० २२ संख्या १८८ में दिया जा चुका है। कुछ विवरणिकाओं में भ्रम से इन्हें सुंदरदास दादूपंथी मान लिया गया है। उदाहरणार्थ सुंदरदास दादूपंथी का ज्ञान समुद्र ग्रंथ सुंदरदास ग्वालियर वाले का मान लेने से खोज-विवरणिका सन् १९०९ ११ संख्या ३११ और बाद में खोज-विवरणिका सन् १९२० २२ में भ्रम हो गया है। अब तक इनका केवल एक ही ग्रंथ मिला है और वह सुंदर श्रृंगार है। वर्तमान खोज में प्राप्त भू-खंडित ग्रंथ अनुमान से ही इनका माना जाता है। इसकी पुष्टि की आवश्यकता है।

४७० सुंदरदास दादूपंथी—सुंदरदास दादूपंथी बहुत प्रसिद्ध कवि हुए हैं और विगत अनेक विवरणिकाओं में इनका विवरण दिया जा चुका है। उनके निम्नलिखित ग्रंथ वर्तमान खोज में मिले हैं—

(१) सर्वांगयोग की एक प्रति ।

(२) वेदांतसार की एक प्रति ।

(३) सवैया की दो प्रतियाँ ।

(४) सुंदर-विलास की एक प्रति ।

संख्या १ और २ के ग्रंथ विगत विवरणिकाओं में नहीं मिले हैं। संख्या ३ का विवरण खोज-विवरणिका १९०२ संख्या २५, १९१२-१६ संख्या १८८ और १९२३-२५ संख्या ४१५ और संख्या ४ का खोज-विवरणिका १९२३-२५ संख्या ४१५ में दिया जा चुका है ।

इनके अन्य ग्रंथ जो विभिन्न खोज-विवरणिकाओं में उल्लिखित हैं वे इस प्रकार हैं—

(५) हरिबोल चिंतामणि (खोज-विवरणिका १९०० संख्या ७७) ।

(६) ज्ञान-समुद्र और सागर (खोज-विवरणिका १९०३ संख्या ३४, खोज-विवरणिका १९०६-०८ संख्या ४२) ९-११ संख्या ३११ और १९२३-२५ संख्या ४१५)

(७) सुंदरदास की बानी (खोज-विवरणिका १९०९-११ संख्या ३११) ।

(८) विचारमाला (खोज-विवरणिका १९०९-११ संख्या ३११) ।

(९) विवेक-चिंतामणि (खोज-विवरणिका १९०९-११ संख्या ३११) ।

(१०) पचेंद्रिय निर्णय (खोज-विवरणिका १९१२-१६ संख्या १८४) ।

(११) अष्टक (खोज-विवरणिका १९२३-२५ संख्या ४१५) ।

(१२) शब्दसार (खोज-विवरणिका १९२३ २५ संख्या ४१५) ।

४७१ **सूरदास**—सूरदास इतने प्रसिद्ध हैं कि इनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है । इनके निम्नलिखित ग्रंथ इस खोज में मिले हैं—

(१) सूरसागर की दो प्रतियाँ ।

(२) नागलीला की एक प्रति ।

(३) विसातिन लीला की एक प्रति ।

(४) बारहमासासंग्रह की एक प्रति ।

(५) राधाकृष्ण मंगल की दो प्रतियाँ ।

(६) महादेव लीला की एक प्रति ।

(७) राम का बारहमासा की तीन प्रतियां ।

(८) बाँसुरी लीला की एक प्रति ।

(९) बेनी माधव की बारहमासी की एक प्रति ।

(१०) सूररत्न की एक प्रति ।

४७२ **सूरदास**—अर्जुन गीता के कर्ता सूरदास साधारण रचनाकार हैं । उपलब्ध हस्तलेख संवत् १९३९ (सन् १८८२ ई०) का है ।

४७३ **सूरजदास**—सूरजदास ने एकादशी माहात्म्य और रामजन्म नामक दो ग्रंथ लिखे हैं और दोनों का विवरण खोज-विवरणिका १९२३–२५ संख्या ४१७ में दिया जा चुका है ।

४७३ सूरति मिश्र—सूरति मिश्र का उल्लेख विभिन्न विवरणिकाओं में हो चुका है। इस खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

(१) बैताल पचीसी की ४ प्रतियाँ।

(२) अमर चंद्रिका की २ प्रतियाँ।

(३) जोरावर प्रकाश या रसिक प्रिया की टीका की १ प्रति।

(४) रस रत्नाकर की एक प्रति।

(५) रस ग्राहक चंद्रिका की एक प्रति।

इसका अंतिम विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३–२५ संख्या ४१९ में मिलेगा।

४७४ सुवंश कवि—सीतापुर जिले में बिसवाँ के सुवंश कवि प्रसिद्ध रचनाकार हुए हैं। ये ठाकुर उमराव सिंह तालुकदार के आश्रय में थे। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित चार ग्रंथ मिले हैं—

(१) उमराव कोष की दो प्रतियाँ।

(२) रसतरंगिनी, रचनाकाल संवत् १८६१ (सन् १८०४ ई०) की एक प्रति।

(३) रसमंजरी की एक प्रति।

(४) पिंगल की दो प्रतियाँ।

इनका उल्लेख अनेक विवरणिकाओं में है, किंतु अंतिम संवत् १९२३–२५ संख्या ४२२ में है।

४७६ स्वरूपदास—स्वरूपदास उपनाम रसुम ने पांडव-यशेंदु-चंद्रिका संवत् १८९२ (सन् १८३५) में रचा जैसा कि खोज-विवरणिका सन् १९२३–२५ संख्या ४२३ से स्पष्ट है।

४७७ तेजसिंह ठाकुर—तेजसिंह ठाकुर ने ज्ञान पंचादय नामक हस्तरेखा का ग्रंथ रचा है। ये पहली बार इसी खोज में मिले हैं। ये आगरा जिले में किरिया के रहनेवाले थे। ग्रंथ की रचना संवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) में हुई थी। यह खड़ी बोली गद्य की रचना है।

४७८ ठाकुर कवि—ठाकुर कवि फतहपुर जिले में असनी के रहनेवाले थे। इन्होंने बिहारी सतसई की टीका अपने आश्रयदाता देवकीनंदन काशीवासी के नाम पर देवकीनंदन तिलक नाम से की है। ऐसा जान पड़ता है कि इन्होंने स्वरचित सतसैया नाम की कोई दूसरी टीका भी की है जिसका उल्लेख इन्होंने देवकीनंदन तिलक में किया है। देवकीनंदन तिलक का विवरण खोज-विवरणिका १९०४ संख्या १८ में दिया जा चुका है। ठाकुर अठारहवीं शती के मध्य के लगभग विद्यमान थे।

४७९ ठाकुरप्रसाद पंडित—तिब्ब रत्नाकर के कर्ता ठाकुर प्रसाद पंडित पहली बार इसी खोज में मिले हैं। इन्होंने किसी फारसी ग्रंथ से अनुवाद करके उक्त ग्रंथ प्रस्तुत किया है। हस्तलेख का समय संवत् १९४२ (सन् १८८५ ई०) है।

४८० थाना कवि या थानाराम—थाना कवि या थानाराम ने दलेल-प्रकाश नामक अलंकार विषयक ग्रंथ लिखा है। इसका रचनाकाल दिया हुआ है गुरुवार माघ सुदी

१० सवत् १८४८ तदनुसार २ फरवरी १७९२ ई० । अंत में भी समय सूचक छंद दिया हुआ है जो देखने से तो रचनाकाल मालूम पडता है, किंतु वस्तुत' वह लिपिकाल ही है। दोहा है—

रस श्रुति निधि शशि वर्ष अरु आश्विन कृष्ण सुमास।
दर्श कुजहि दिन पूर्ण भो सिंह दलेल प्रकास॥

अर्थात् आश्विन कृष्ण दर्श या अमावास्या सवत् १९४६ मंगलवार तदनुसार १४ सितंबर १८८९ ई०। उस दिन सूर्योदय के १ घटा १५ मिनट बाद चतुर्दशी समाप्ति हो गई थी और अमावस्या आरभ हुई थी। ग्रथ का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ सख्या ३१७ और १९२३-२५ संख्या ४२७ में भी दिया जा चुका है।

४८१ **तीथराज**—समर-विजय के कर्ता तीर्थराज का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ सख्या ४२३ में दिया जा चुका है। उसमें इस ग्रंथ का नाम समर सूर दिया हुआ है। सन् १९०६-०८ की खोज-विवरणिका में सख्या ११५ पर इसी ग्रथ का नाम समर सार दिया हुआ है। इस ग्रथ में युद्ध आरभ करने के मुहूर्त का विचार है। इसकी रचना सवत् १८०७ (सन् १७५० ई०) में अलीपुर के राजा अचलसिंह के लिए हुई थी। वर्तमान खोज में इसकी चार प्रतियाँ मिली हैं। हस्तलेख का समय है संवत् १८२६ (सन् १७६९ ई०)।

४८२ **टोडरमल जैन**—जयपुर के टोडरमल जैन ने आत्मानुशासन नामक ग्रथ सवत् १८१८ (सन् १७८१ ई०) में रचा। इनका उल्लेख खोज-विवरणिका १९०० सख्या १३४ और १९२३-२५ सख्या ४२६ में हो चुका है। ग्रथ ज्ञान-विषयक है।

४८३ **तोमरदास**—तोमरदास सत्नामी सम्प्रदायानुयायी और दूलनदास के शिष्य थे। इन्होंने एकाक्षरी या शब्दावली नामक ग्रथ राम की महत्ता के प्रतिपादन में लिखा है। ये सोमवशी क्षत्रिय थे। इनका जन्म रायबरेली जिले के टड्डीपुर नामक स्थान में हुआ था और ये सवत् १९१३ (सन् १८५६ ई०) में परलोकवासी हुए। इनके ग्रंथ का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ सख्या ३१८ और सन् १९२०-२२ संख्या १९५ में दिया जा चुका है।

४८४ **तुलसीदास गोस्वामी**—हिंदी के सर्वोत्कृष्ट कवि तुलसीदास गोस्वामी का उल्लेख विगत सभी खोज विवरणिकाओं में हुआ है। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिलिखित ग्रंथ मिले हैं—

(१)

१—रामायण की	२ प्रतियाँ।
२—बालकाड की	३ ,, ।
३—अयोध्याकाड की	५ ,, ।
४—अरण्यकाण्ड की	१ ,, ।
५—किष्किंधाकांड की	१ ,, ।

६–सुंदरकांड की १ प्रतियाँ।
७–लंकाकांड की १ „ ।
८–उत्तरकांड की १ ।
९–विनयपत्रिका की ५ „ ।
१०–कवितावली या कवित्त रामायण की १ „ ।
११–दोहावली या दोहावली रामायण या सतसई की ४ „ ।
१२–वैराग्य संदीपनी की १ प्रति।
१३–बरवै रामायण की १ „ ।
१४–राम सलाका या सगुनौती की ४ „ ।
१५–जानकी-मंगल या सीता स्वयंवर की १ ।
१६–कृष्ण गीतावली की १ „ ।
१७–बाहुक विनय या हनुमान बाहुक की ४ „ ।
१८–गीतावली की २ „ ।
१९–हनुमान-चालीसा की १ „ ।
२०–हनुमान साठिका, बंदी मोचन या बजरंगबाणकी ४ „ ।
२१–संकटमोचन की १ „ ।
२२–विनय दोहावली की २ „ ।
२३–धर्मराज की गीता की १ „ ।
२४–हनुमान-स्तोत्र की १ „ ।
२५–भरत मिलाप की १ „ ।

यह पूर्ण संदेहास्पद है कि संख्या १९ से २५ तक के ग्रंथ तुलसीदास कृत हैं या नहीं। जो कुछ भी हो अंतिम चार रचनाएँ तो इतनी हल्की हैं कि वे तुलसीदास की हो नहीं सकतीं। इसी नाम के अन्य व्यक्ति भी हुए हैं जिन्होंने कुछ ग्रंथ रचे हैं, किंतु पर्याप्त प्रमाण के अभाव से वास्तविक रचनाओं की परीक्षा संभव नहीं है।

४८५. तुलसीदास—सूर्यपुराण के कर्ता तुलसीदास रामायण के कर्ता तुलसीदास से भिन्न हैं। इस खोज में इसके आठ हस्तलेख मिले हैं जिनमें प्राचीनतम संवत् १८०० (सन् १७४३ ई०) का है।

४८६. उदयनाथ—सीतापुर जिले में रतौली के उदयनाथ ने सगुन विचार किया है जिसका उल्लेख खोज-विवरणिका सन् १९१७–१९ संख्या १९८ तथा १९२३-२५ संख्या ४२६ में है।

४८७. उदयराजदास—उदयराजदास ने भगवद्गीता का अनुवाद किया है। हस्तलेख का समय संवत् १७७१ (सन् १७१४ ई०) है। रचनाकार के विषय में और कुछ ज्ञात नहीं है।

४८८ **उमादत्त त्रिपाठी**—उमादत्त त्रिपाठी ने अध्यात्म रामायण का अनुवाद किया है।

४८९ **वहाब**—वहाब ने बारहमासा लिखा है जिसकी तीन प्रतियाँ मिली हैं। सबसे पुरानी प्रति सन् १८४८ ई० की है। इसकी भाषा फारसी अरबी मिश्रित खड़ी बोली है।

४९० **वल्लभ रसिक**—वल्लभ रसिक ने वल्लभरसिक बाइसी नामक शृंगार रस की पोथी लिखी है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ संख्या १४ और १९१७-१९ संख्या १५६ में दिया जा चुका है। इनके अन्य ग्रंथ बानी या हिंडोर बारह बात सनेही-विनोद और प्रेम चंद्रिका हैं। इनका जन्म संवत १६८१ (सन् १६२४ ई०) में हुआ था।

४९१ **वसंत**—वसंत ने नरसी मेहता या नरसी मेहता की जीवनी लिखी है जो नवोपलब्ध रचना है। हस्तलेख का समय संवत् १८७३ (सन् १८१६ ई०) है।

४९२ **वसंतराज**—वसंतराज अलीगढ़ जिले में कोइला के निवासी थे। इनके दो ग्रंथ सकुन विचार और कार्तिक माहात्म्य के दो दो हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। कार्तिक माहात्म्य की रचना संवत् १९२५ (सन् १८६८ ई०) में हुई। इसी को रचयिता का विद्यमान काल भी समझना चाहिए।

४९३ **वासुदेव स्वामी**—कानपुर जिले में कहिजरी के वासुदेव स्वामी इस खोज में नए रचनाकार ज्ञात हुए हैं। ये अपने अंतिम समय में संन्यासी हो गए थे और काशी में रहते थे। इन्होंने सन् १८७० ई० में विज्ञान - प्रकाश की रचना की है।

४९४ **वेंकटेश**—वेंकटेश स्वामी ने आत्म प्रकाश नामक वेदांत का ग्रंथ लिखा है जिसका उल्लेख खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ संख्या ३४१ में हो चुका है।

४९५ **विद्यारण्य स्वामी** - विद्यारण्य स्वामी ने युगल सुधा नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें राम और कृष्ण के भक्तों का आपसी विरोध दूर करने का प्रयत्न किया गया है। इसकी रचना काशी के राजा के लिए संवत् १८९८ (सन् १८४१ ई०) में हुई।

४९६ **विक्रमाजीत विजय बहादुर**—विक्रमाजीत विजय बहादुर बुंदेलखंड की चरखारी रियासत के राजा थे। इनके आश्रय में अनेक कवि रहते थे। इन्होंने विक्रम सतसई नामक ग्रंथ रचा है जिसका एक हस्तलेख गद्य टीका सहित वर्तमान खोज में मिला है। ग्रंथ का उल्लेख खोज-विवरणिका सन् १९०५ संख्या ५६ और १९०६-०८ संख्या ११६ में हो चुका है। महाराज ने सन् १७८२ ई० से सन् १८२९ ई० तक राज्य किया था

४९७ **वीरभद्र**—वीरभद्र ने एक छोटी सी पुस्तिका उड्डीस लिखी है जिसमें मंत्रों तथा उद्देश्य पूर्ति के लिए अव्यवहार्य उपायों का वर्णन है। इसी नाम का लंका के राक्षस-राज रावण का भी एक तंत्र है जिसके आधार पर इस ग्रंथ की रचना हुई है।

४९८ **विष्णुदास**—विष्णुदास कृत रुक्मिणी मंगल की दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं। इसका उल्लेख खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ संख्या १९३ में भी दिया जा चुका है। मिश्रबंधुओं ने इन्हें सन् १४३५ ई० में ग्वालियर के किले में रहनेवाला कवि बताया है।

४९९ विष्णुदास—सनेहलीला के कर्ता विष्णुदास का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२०–२२ संख्या २०४ में दिया जा चुका है।

५०० विष्णुदत्त—विष्णुदत्त ने बसंत विलास ग्रंथ अलंकार का लिखा है। इसका उल्लेख खोज-विवरणिका सन् १९१७–१९ संख्या २०३ में हो चुका है। ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १८६५ (सन् १८०८ ई०) है। रचनाकार फतेहपुर जिले में असनी के रहनेवाले थे। ये नसरथपुर के राजा सरनामसिंह के आश्रित थे।

५०१ विष्णुगिरि गोस्वामी—विष्णुगिरि गोस्वामी के सुगमनिदान का उल्लेख खोज-विवरणिका सन् १९०२ संख्या १०६ में हो चुका है। इस खोज में इनका दूसरा ग्रंथ बृहत् चाणक्य नीति भाषा पहली ही बार उपलब्ध हुआ है। इसमें रचनाकाल का उल्लेख नहीं है। किंतु खोज विवरणिका सन् १९०२ संख्या १०६ में सुगम निदान का समय संवत् १८०१ (सन् १७४४ ई०) दिया हुआ है जिससे विष्णुगिरि का समय ज्ञात हो जाता है।

५०२ विश्वंभर—विश्वंभर ने स्वरोदय नामक योग विषयक ग्रंथ लिखा है जो नवोपलब्ध रचना है।

५०३ विश्वनाथसिंह महाराज—रीवानरेश महाराज विश्वनाथसिंह ने शांतशतक लिखा है जिसका विवरण खोज विवरणिका सन् १९०३ संख्या ५४, १९०९–११ संख्या ३२९ (इसमें महाराज के रचे ग्रंथों की एक बड़ी सूची दी है), १९२०–२२ संख्या २०२ और १९२३–२५ संख्या ४४२ में दिया जा चुका है। विश्वनाथसिंह का समय लगभग सन् १७७८ ई० है।

५०४ वृंद कवि—भाव पंचाशिका के कर्ता वृंद कवि का विवरण खोज विवरणिका सन् १९०९–११ संख्या ३३० और १९२३–२५ संख्या ४४६ में दिया जा चुका है। रचनाकाल है संवत् १७४५ (सन् १६८७ ई०)।

५०५ वृंदावन—वृंदावन ने ज्योतिषसार नामक ज्योतिष का ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख का समय संवत् १८७० (सन् १८१३ ई०) है।

५०६ व्यास—व्यास ने फलित ज्योतिष की एक पोथी 'सगुनौती' लिखी है। खोज-विवरणिका सन् १९२३–२५ संख्या ४४९ में वर्णित ज्योतिषपत्र के कर्ता व्यासदेव और ये एक ही जान पड़ते हैं। हस्तलेख का समय संवत् १८२७ (सन् १७७० ई०) है।

५०७ यदुनाथ शास्त्री—काशी के पंडित मथुरानाथ मालवीय के पुत्र यदुनाथ शास्त्री का विवरण खोज विवरणिका सन् १९०६–०८ संख्या १४४ में दिया जा चुका है। इन्होंने संवत् १८०१ (सन् १७४४ ई०) में सामुद्रिक नामक हस्तरेखा का एक ग्रंथ लिखा है।

५०८ युगलकिशोर मिश्र—युगलकिशोर मिश्र ने युगलाकृति नामक पोथी श्रीकृष्ण और राधिका के सौंदर्य पर रची है। यह नवोपलब्ध रचना है।

५०९ **ज़ाहरसिंह**—जाहरसिंह ने 'श्रीकृष्ण फाग' नामक पोथी लिखी है जिसमें श्रीकृष्ण की होली का वर्णन है। हस्तलेख का समय है संवत् १९३२ (सन् १८७५ ई०)।

५१० **ज़ोरावर मल**—ज़ोरावरमल नागपुर के माथुर कायस्थ थे। इन्होंने शनिश्चर देव की कथा नामक पोथी लिखी है जो वर्तमान खोज में मिली है। इसका रचनाकाल है संवत् १८२४ (सन् १७६७ ई०), किंतु तिथि गणना से ठीक नहीं बटती। उसमें संवत् १९२६ भी दिया है जिससे वह तिथि ठीक उतरती है। इसकी भाषा राजस्थानी मिश्रित हिंदी है।

———

द्वितीय परिशिष्ट

प्रथम परिशिष्ट में वर्णित रचनाकारों की कृतियों के उद्धरण

द्वितीय परिशिष्ट

रचनाकारों की कृतियों के उद्धरण

संख्या १ ए—कहेस मंजिनी या तोफतुल गुर्बा—रचयिता—अब्दुल मजीद (दिल्ली) कागज—देशी पत्र—६० आकार१२ × ६ इंचों में पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) २१ परिमाण (अनुष्टुप) १६००० खंडित रूप—पुरानी, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८१० (सन् १७५३ ई०) प्राप्तिस्थान—वैद्य, ग्राम—बोहारा इमदादी, डाकघर –बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्रीगणेशायनमः—अथ कहेश मंजनी तोफतुल गुर्बा लिख्यते । अफलातून हकीम जालीनूस हकीम लोकमानहकीम, अरस्तू तालीस हकीम, सकराती हकीम, अब्दकीमन्द मिल के इलाज तूपण का समय पोथी से जो जो आजमाइस बीच आया सो एक जगह की के पोथी वैद्यक की बनाइ के नाम तोफतुल गुरबा फारसी मई हिन्दी मई कहेश मंजनी राषा । बरकत रसमाल की सी मी बह अहाम कबीर हक मेम उरूक अबदुल मजीद अनुसार लिखाय पोथी का की देर काफियत सो तमाम होतीस । पीछे इलाज सबन दुसाय का बनाई दिया कि दुखित के काम आवै और इलाज आँरति मरद का । मदर की कमरद जियादा होइ और गुम गरम होइ ।

अंत—तरकीब इलाज आँख का जिस भाँति होइ तिसका पैसा भर पात नीम के साये में सुखाई । एही बराबर सब लेइ । हरदी, मिरच मोथा बाय बिडंग, पैतरा सोठि हर्रा बहेरा, आवरा, सेधानोन, संघ मिसरी दारूहल्दी, बेल बिबिरा छूटि पीपरि सब दारू बराबर लेइकै कूटे छाने मिमास सुरमा के मिही करै बीच दूध मेढ़ी मिलोवै तब दूध को दारू पी जाय तब गोली मेकदार मिरच बांधे साये मी सुखावै जब सूखे तब आँखि दुखी दरद कर ती मेढ़ी के दूध मह घसि के आँखि मह अंजन करै तो आँखि दरद न करै दुखी दूर होय । जो किसी की आँखि में कमल होइ तौ कांजी सों घसि के लावै सात रोज कमल दूरि होय जो किसी की आँख में माड़ा होय तो जो औरति बेटी जनी होय उसके उसके दूध मों घसि के सात रोज अंजन करै माड़ा दूर होइ । जो आंख मैंह छाया छाया होय तो बासी पानी में घिसी के अंजन करै सात रोज तो छाया दूर होइ । जो आँखि मह रोसनी न होय तिमिरि होइ एक को दूर देखै तो पानी ताजे में घिसि कै अंजन करै सात रोज तिमिरि दूरि होय आँखि रोसन होय खूब । जो कोई खाना जियादा खावे दो पचा न होय एक गोली खाय दी मिलावी मे हजम होय भूख लगि सिताब जो किसी को सर्प काटा होय तो एक गोली खिलाइ देइ जहर दूर होय । जो किसी का सन्निपात होइ तो चौदह रोज गोली खिलावै ती सन्निपात दूर होय ॥

विषय—वैद्यक

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के संग्रहकर्ता अब्दुल मजीद हैं। पुस्तक बहुत अशुद्ध लिखी गई है। लिपिकाल १८३० वि० है।

संख्या १ बी—क्लेशभंजिनी या तोफतुल गुर्बा—रचयिता अब्दुल मजीद, दिल्ली। कागज देशी, पत्र ६०, आकार—१२″ × ६″, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप) १६०० श्लोक। खंडित रूप-प्राचीन। लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३६ = १७७९ ई० प्राप्तिस्थान—पं० गणपति जी द्विवेदी, ग्राम—नयागांव, डाकघर सादरपुर, जिला सीतापुर (अवध)।

आदि—ॐ श्री गणेशायनमः ॥ कीवाकी इलाज कै दुषण को दूर करने का अफला तूण हकीम, जालीनूर हकीम। लोकमान हकीम। अरस्ता तालीम हकीम। मकराती हकीम। सब हकीमन्ह मिलि इलाज दुषण का सबन पोथी से जो जो अजमाइया ॥ इस बीच आया सो एक जगह कइ कइ पोथी वैदक बनाइ नाम पोथी तोफतुल गुरबा फारसी मह हिंदूइ कलेस भजनी रापा। बरकत उसनास की से मैं चंद अदान फकीर एक। मेन उरूफ अब्दुल मजीद अनुसार लिषण पोथी का की गैर आफियत मो तमाम होतीस पीछे इलाज सबन दूषण का बनाइ दिया कि दुखिन के काम आवें × × × × × × × × × × × × × तरकीब इलाज नामर्द का ले आवे नारों री बीसठो जबेह करिके उसके पेट में ग्रेर एक लरी सो सबै जो दारू गिरै न आध सेर मधु महँ डारि देइ की दूवा रहै सात रोज तब निकाल कै रखै तिस पीछे एक एक चीरा रोज गाय के घीव में पकाइ के खाइ करम से दुबारा मरद होइ बीस × × व से सबगे रोज एक ही तरह से पकाय खाय मरदी बहुत होय। जितना पोस्तक मिली उतनी लिखी करीम खाँ जिल्दसाज देहली सवत् १८३८ मिय मीर दरवाजा माह बैशाख दसमी रोज ॥

विषय—वैद्यक

संख्या २ ए—अमरावली—रचयिता—(स्वामी) अचलदास, कागज देशी, पत्र ७४ आकार—८″ × ५″, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) ५०० श्लोक। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०८ = १८५१ ई० प्राप्तिस्थान—बाबा साहब दास गणेशमंदिर—मसानी देवी वाले, डाकघर सहादतगंज, जिला लखनऊ

आदि—श्री अपडानद साहेब की दया ॥ रिषि संत की दया ॥ सब देवन की दया ॥ अमरावली ग्रंथ लिख्यते जो चौपाई ॥ अमरपुरी सतन की वासा। तहवाँ शब्द राम परकासा ॥ जो आवे मन दृढ़ विस्वासा। मिलै राम पूरण परकासा ॥ आदि × × नामै की आसा। जब लग रहे घट भीतर स्वासा ॥ राम नाम रस चाखौ दासा। और न राखो दूसरि आसा ॥

अंत—दोहा—सुनिन्ह पारब्रह्म है जोति करै परकास। दास अचल सतगुरु मिले शब्दै करि विश्वास ॥ सन् बारा सै अट्ठावन मां ग्रंथ कीन परकास। दास अचल सत्तगुरु मिले पूरन ह्वै गइ आस ॥ संवत बनइस सै आठ मा ग्रंथ कीन यह भास। दास अचल सत्तगुरु मिले रहौ चरण के पास ॥ जोति जगमगी सीस पर निरखो सत सुजान ॥ दास अचल सतगुरु मिले करु नैनन पहिचान ॥ जहलग जग मां जीव है जोतिन ते निरधार। दास अचल सत्त-

गुरु मिले मैनम मध्य विचार ॥ अचल साहेब का ग्रंथ सम्पूरन । सतगुरु उपदेश नाम पर गास ॥ अगहन सुदी दूइज दिन सोमवार ॥

विषय—रामनाम महिमा ।

संख्या २ बी—अनुभव प्रकाश—रचयिता—(स्वामी) अचलदास, सूधपुर मद रेस, कागज नया पत्र, ८, आकार—११ × ८″, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुष्टुप) १७० श्लोक । रूप—नवीन । लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा साहब गणेशमंदिर ममानी देवी वाले, डाकघर महाराजगंज, जिला लखनऊ ।

आदि—ग्रंथ अनुभवी प्रकाश लिख्यते ॥ सत गुरौवाच ॥ दोहा ॥

इस प्रकार अनहद बजैं सुनौं सिष्य दै कान ।
आवा गवन दुविधा मिटै पावै पद निर्वान ॥
जोति सरूपी नीरजन सो हृदै अस्थान ।
सोहं सोहं जो सत पावै अमर्मा ज्ञान ॥

निर्वाहाच—अब आई विश्राम हिरिद गुरुहर चरण का ध्यान । अवर कछु मानौं नहीं सत्य वचन परमान ॥ दास अचल के सीस पर तुम्हरी हा निशान । करि दाया आपन करौं कारा न माया मान ॥ इड़ा पींगला सुखमना त्रिकुटी मध्य मुकाम । तुम्हरी दाया तें पाइहीं भक्ति सहित तब नाम ॥ सतगुरौवाच ॥ यही परतु निज जानिले और नहीं कछु काम । जो कोई मानैं सर्व छह ब्रह्म सुख ध्यान । आदि सरस आमा सर्व मैनम मध्य समान । सा शामी का सुकम है सत्य करि परमान ॥ × × × ×

अंत—दोहा ॥ ग्रंथ अमर्मा प्रकाश यह पद गुनै चितलाय । सकल भर्म बिनसा मिटै सतगुरु दीन लखाय ॥ १ ॥ साहब अचल गुरु जोगिया आन जगत औतार । भक्ति मुक्ति जीवन की दई कीन्हेउ पतित उधार ॥ २ ॥ इति श्री ग्रंथ अमर्मा प्रकाश अचल साहेब को संपूर्ण ॥ शुभ मस्तु ॥ इति ॥

विषय—संवाद रूप में ईश्वर-महिमा और भक्ति निरूपण

संख्या १ सी—नाम सागर—रचयिता—(स्वामी) अचलदास, कागज देशी मिल, पत्र १४६, आकार—१० × ७, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८ परिमाण (अनुष्टुप) ११५० श्लोक रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १६०१=१८४८ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा साहबदास (गणेश मंदिर ममानी देवी वाले) डाकघर महाराजगंज, जिला लखनऊ ।

आदि—ॐ तत्सत् श्री तत्सत् ॥ श्री कर्मदा संत साहेब की दया ॥ ग्रंथ नाम सागर लिख्यते ॥ चौपाई ॥ दुई अच्छर का सुमिरन जानी । सम्भु सहित गनेश बखानी ॥ नाम महातम सुधा भवानी । अनहद शब्द करौं पहिचानी ॥ १ ॥ कहा शंभु अति निर्मल बानी । सबही निरदै कान भवानी ॥१॥ धेदै नै सुमन मनमानी । शुक्राचार्य भये महाज्ञानी । ४ । कहँ लगि महिमा नाम की गाई । जाको वेद बिमल गाहराई ॥ ५ ॥ × × ×

अत--दोहा—धरती औ आकास मां रहा शब्द भरपूर। कहै दास अचल सतगुरु मिले हय हिय शब्द हजूर ॥ जो देखा सो मति कहा सत्यनाम उपदेश। पठन श्रवन जो कोट करै रहै न दुख लवलेस ॥ चैत सुदी चतुर्दस संवत बनइस मैं पांच। ग्रथ अलप प्रकाश यह भयो पूर्ण मन राच ॥ इति ॥

विषय—नाम की महिमा तथा भक्तों की विस्तार पूर्वक कथा।

सख्या २ डी०—रामावली, रचयिता—(स्वामी) अचलदास, कागज—देशी, पत्र ६६ आकार—६ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुष्टुप) ९३६ श्लोक, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०६ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा साहबदास जी गणेश मदिर मसानी देवी वाले,—डाकघर महादतगज, जिला लखनऊ ।

आदि—श्री अखडानद साहेब की दया ॥ रिसी मुनी संत की दया ॥ सब देवन की दया ॥ रामावली ग्रथ लिख्यते ॥ चौपाई ॥ बदो गुरु पितु मातु मनाई। बदों चांद सुरज हरषाई ॥ वन्दो रिषि मुनि सत मनाई ॥ वन्दौं धरनि अकास महाई ॥ वन्दौं अगिनि पवन मन लाई। वन्दौं जल रससीस नवाई ॥ वन्दो ब्रह्मा बिष्नु गुसांई। वन्दौं महादेव गुण गाई ॥

अत—दोहा—जो कछु रच्यो बनायो रघुपति दीन दयाल। दास अचल सत गुरु मिले सब्द सिरोमनि लाल ॥ अचल साहेब का ग्रथ सम्पूरण। सत्य महीना फागुन सुदी २ दिन एतवार ॥ साखी ॥ सन् बारा सै उनसठ ग्रथ भये सपूर ॥ दास अचल सत गुरु मिले सौदा पूरमपूर ॥ सवत् १९०९ है ग्रथ भये भरपूर। दास अचल सत् गुरु मिले हाजिर रहौं हजूर ॥ दस नारी बरनन करौं जानो ज्ञानी लोग। दास अचल सत गुरु मिले लागे न माया रोग ॥ समाप्त ॥

विषय—राम यश वर्णन। इसमें रामचद्र ने सतों की रक्षा के लिये जो जो कार्य किये हैं उन का वर्णन है। विशेषता यह है कि हर एक चौपाई में राम का याने रकार व मकार अक्षर में न कहीं आ गया है। यह भक्ति रस का ग्रथ है।

सख्या २ ई०—रत्नसागर, रचयिता –(स्वामी)अचलदास, सूर्यपुर बहरेल, कागज—नया, पत्र—२६, आकार—१३ × ८ इंच, पक्ति—(प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप) ५२३ श्लोक, रूप – नवीन, लिपि—नागरी रचनाकाल—स० १९०६ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा साहबदास गणेश मदिर मसानी देवी वाले—डाकघर—महादतगज जिला—लखनऊ।

आदि—श्री अखडानंद साहेब की दया। ऋपि मुनि सत की दया ॥ ग्रथ रतन सागर लिख्यते—झूलना ॥

काया मक्का मकान जाहूत बना आला जोति सो आप विराजत जी।
काजी मोलना दर्स दिदार करो तेरा साहेब हिया के माझ है जी ॥
घट भीतर बाहर ज्योति बरै हिय सब्द अखड आपार है जी।
अचल साहेब विचार कहै ले नाम भवसागर पार है जी ॥१॥

चारि यारी मुहम्मद पीर मिलैं कलिमा जाय कै बीच पैठाइये जी।
बहुतो पंथ अपार इसी कोइ विरलै मुरसद जानिये जी ॥
कुरान किताब की गम्म नहीं रोजा जाय निमाज पढ़ाइये जी।
अचल साहेब विचार कहै छै नाम भवसागर पार है जी ॥२॥

अंत—इस अनंद बसै घर मा जैसे कोइ नहीं मो तो है जी।
अचल साहेब विचारि कहै से नाम भवसागर पार है जी ॥१०३॥
गुरु संत तै विनती करौं मोरी छोड़ न कबहूँ विसारिये जी।
मैं तो तुम्हरे भरोसे रहैछ फिरि और के पास न जाइये जी ॥
सत्त लोक बसै घर मा वह अलख मयाली हमार है जी।
अचल साहेब विचारि कहैं से नाम भौसागर पार है जी ॥१०४।

इति श्री ग्रंथ रतन सागर सम्पूरण शुभमस्तु ॥
साघ महीना पक्ष का रविदिन तेरस जान। संवत् उनइस सै तीं कही पूरन ग्रंथ प्रमान ॥

॥ समाप्त ॥

विषय—वेदांत। इसमें सत्य ब्रह्म निरूपण है।

संख्या २ एफ—शब्द गुंजार, रचयिता—(स्वामी) अचलराम, सुर्यपुर महोल, कागज मधा, पत्र २१, आकार—११ × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १० परिमाण (अनुष्टुप) ४३१ श्लोक, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा साहब राम गणेशमंदिर समाजी दुबी बाम, डाकघर सहादतगंज, जिला लखनऊ

आदि श्री गणेशायनमः ॥ श्री जगजीवनदास साहेब की कृपा ॥ सब भुवन की कृपा ॥ ऋषि मुनि संतन की कृपा। ग्रंथ शब्द गुंजार लिख्यतयम् ॥ चौपाई ॥ दस प्रकार अनहद परिचासी। अचल समाधि विचारै ज्ञानी ॥ संगा मध्य गर्जै अविनासी। बड़े विदेह पुरुष निर्बानी ॥ १ ॥ × × × × × × ×
अंत—बिन सतगुरु नहिं सूझै ज्ञानी। अंधा इयस सों पहिचानी ॥ बिन सतगुरु को जाने ज्ञानी। मिथ्या राम सुमिरैं अभिमानी ॥ २७६ ॥ दोहा ॥ सत् बारा सै अठारह ग्रंथ कीन परगास। साहेब अचल सतगुरु मिलै पूरन होइगी आस ॥ २७७ ॥ संवत् उनइस मैं आठ मों ग्रंथ लिख्यो पद भाष। साहेब अचल सतगुरु मिले मिटिगै यम कै त्रास ॥ २७८ ॥ ना इस मरण जियन नहीं ना इक आवन जान। साहेब अचल सतगुरु मिले सार शब्द मिलि जान ॥ २७९ ॥ ग्रंथ शब्द गुंजार यह सकल सिद्धि की खान। पढ़ै सुनै जो कोइ करै। पावै पद निर्वान ॥ २८० ॥ इति ॥

विषय—वेदान्त। इसमें परम पद प्राप्ति का वर्णन है। विचार द्वारा अष्टांग मार्ग प्राण वायु के भेद लिखे हैं। निर्गुण सगुण ब्रह्म का निरूपण भी है।

संख्या २ जी—शब्द (बानी) सागर, रचयिता—(स्वामी) अचलराम सुर्यपुरा

वहरेल, कागज देशी, पत्र ९०, आकार—१३' × ८", पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३२, परिमाण (अनुष्टुप) १६८०, खंडित। रूप—प्राचीन, जीर्ण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०६ = १८४९ ई० प्राप्तिस्थान—बाबा साहबदास गणेश मंदिर मगानी देवी वाले, डाकघर सहादतगंज, जिला लखनऊ।

आदि—अथ शब्द बानी उचारणम् ॥ शब्दसागर ॥ दोहा ॥ श्री अखंडानंद साहेब विनै करौं कर जोरि। सहेब अचल अपना करौं बिसरैं ना सुधि मोरि ॥ १ ॥ श्री अगदा नंद साहेब तुमरे चरण पर ध्यान। सहेब अचल अपना करौं लगे न माया बान ॥ २ ॥ महा सुन्य ते शब्द भे शब्द हिते ॐकार। सहेब अचल सत्तगुरु मिले लखि पायो धद्धकार ॥ ३ ॥

अंत— बाजे बाजे अनहद धुनि विमल तान।

कोई सुनै सत जाकी लागी कान। परमातम पूरण धरौं ध्यान ॥ बाजे ॥
जाकी जोति बरै लखु घट समान। हिरदै उजयारी कोटि भान ॥ बाजे२ ॥
जम माया लाये आन तान। तोहि सूझत नाहीं सुन रे नदान ॥ बाजे२ ॥
लखि दास अचल छवि के मस्तान्। मोहि और न भावै आन ज्ञान ॥ बाजे२ ॥

सम्पूरण सत माघ सुदी १३ संवत् १९०६ ॥ समाप्त भई ॥

विषय—भक्ति निरूपण

संख्या ३ ए,—वैद्यक जोग संग्रह, रचयिता—आधार मिश्र, कागज देशी, पत्र १२८, आकार—१२ × ८इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप) २०४८ श्लोक, खंडित। रू०—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५६ = १७९९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० श्रीकृष्ण लाल दूबे, ग्राम—बलगवाँ, डाकघर थानागांव, जिला सीतापुर, (अवध)

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्यक जोग संग्रह लिख्यते ॥ जीर्ण ज्वर लक्षन ॥ उदर पीड़ा छर्दि होइ गरो जरै विरोचन हुकार ॥ मलज्वर ॥ कठ सूपै दाह अग होइ पीड़ा अंग भर्म सिर पीड़ा ॥ पित्त ज्वर लछन ॥ सिर पीड़ा भर्म मूर्छा अस्ति पीड़ा दाह रक्त मुप कटुक ॥ पेद ज्वर लक्षन ॥ देह पीड़ा निंद्रा आलस स्वेद जभ नेत्र पीड़ा ॥ वात ज्वर लक्षन ॥ सीत कप महा दाह तृपा चित्त भर्म विकलौं जीभ कटक फटी ॥

अंत—अथ कपूर सोधै ॥ गुऊ दुग्ध में डोला जत्र करिकै चुरवै ॥ सुद्ध होइ। अभ्रक मारन विधि ॥ कृष्ण अभ्रक अग्नि बीच लाल करै गो दुग्ध में बुझावै कूटि कै अर्क दुग्ध में घोटे चक्र करि अर्क पत्र लपेटे पर्त ४ गज पुट आच देइ' अर्क दुग्ध में घोटि घोटि गज पुट करै बारह बार फिरि वह जटा क्वाथ में घोटि घोटि आंच देइ बार ३ चंद्र देपि कै तव सिद्धि करै चमकै तौ फिरि मारै वट दुग्ध में वा क्वाथ फूं कि कै रस लाल कै सर्व काम करै ॥ इति वैद्यक जोग संग्रह आधार मिश्र कृत सपूर्ण समाप्त. लिखत वेनी वकस मुराऊ सैदापुर वाले संवत १८५६ चैत्र प्रतिपदा ॥

विषय—वैद्यक,

संख्या ३ बी—वैद्यक नाम जोग संग्रह, रचयिता—आधार मिश्र, कागज—देसी, पत्र—१०८, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप) १८२८ । रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७० = १८१३ ई० प्राप्तिस्थान—पं० सिद्धिनाथ वैद्य ग्राम—कुसमगंज बावली, जिला—लखनऊ (अवध)

आदि—श्री गनेसायनमः ॥ अथ वैद्यक नाम जोग संग्रह ग्रंथ लिख्यते ॥ अथ नाड़ी परीक्षा लिख्यते ॥ हाथ के अँगूठे की जड़ में जो नाड़ी चलती है सो जीव की साक्षी है वैद्य उसकी गति का ज्ञान करके सुख और दुख जान लेते हैं सोक सर्प की नाई दोसे वायु प्रधान नाड़ी चलती है ॥ कुलिंग कोल मेढ़क की गति कुदकती पित्त की नाड़ी चलती है, हंस कबूतर बतक मोर इनकी चाल कफ की नाड़ी चलती है संनपात की तीतर बटेर की चाल चलती है और दो दोष नाडिका की नाड़ी कहीं धीरे और कहीं सीघ्र चलती है और जो नाड़ी अपने स्थान को त्याग दती प्राण के हरनेवाली है ॥ जो नाड़ी दस पांच बेर चलके बंद हो हो के चले और अति ठंढी हो तौ रोगी न जिये ॥

अंत—पुनः पारद मारन विधि । अमकोला की नाजी सों घोरि कै घरीजै ताके बीच पारद धरं गज पुट आँच दीजै अमिली की मूर्छा तर ऊपर करि दीजै । अमिली न मिली तौ पीपरि को लीजै ऐसी दश भट्टी सो ३ दिवस प्रवै । जौमे दिम रस मिळारि रोगी छपि प्रवै ॥ ऐता दम दम कास पाई को मारे चारि प्रकार जूड़ी रस पहुचत में डारे ॥ इति श्री आधार मिश्र विरचिते वैद्यक नाम जोग संग्रह पंचमों विलासा सपूर्न समाप्त । लिपा ज्ञानी राम वैद्य चैत्र शुक्ला १ संवत १८७० वि० ॥

विषय—वैद्यक ।

संख्या ३ सी—वैद्यक जोग संग्रह, रचयिता—आधार मिश्र, कागज—देसी, पत्र—१०६, आकार—१२ × ५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६ परिमाण (अनुष्टुप) १९०६ खंडित । रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ वि० प्राप्ति स्थान—ठाकुर शिवरतनसिंह, ग्राम—रामपुर मथुरा, डाकघर—बसोरा जिला—सीतापुर (अवध) आदि—श्रीगनेसायनमः । श्रीमतेरामानुजायनमः ॥ अथ पोथी वैद्यक जोग संग्रह लिख्यते ॥ जीर्णज्वर लक्षण ॥ उदर पीड़ा छर्दि होइ गर जरै विरोधन हुँकार ॥ अथ मरु ज्वर लक्षण ॥ कंठ सोष दाह अंग अंग पीड़ा मर्म सिर पीड़ा ॥

अंत—अथ सीसा मारन नागरस नाम । माटी को कराही में सीसा को धरै चूल्हे पर चढ़ाइ तरे अच्छी आँच करै सुरकी सुरकी करमी सीसा ऊपर तै छोड़े ससे ससे खाक परै सीसा को मारै । रत्ती एक पान पर धरि नित प्रभात जो पाइ छुधा प्रबल बलवान सो २० प्रमेह मिटाइ ॥ इति जितनी पोथी पाई तितनी लिपी लिपाई ४॥) रुपया लिपी गया प्रमाद पाँडे समुभा स्थान संवत १९३२ वैसाष मासे कृष्ण पक्षे बुधवासरे ॥ शुभमस्तु । श्रीराम श्रीराम ।

विषय—वैद्यक (रोग और उनकी औषधियाँ यंत्र मंत्र तंत्र सहित रसायन रस, धातु मारन विधि, सेवन विधि और उससे लाभ आदि)

संख्या ४ए—ध्यान मंजरी, रचयिता—अग्रदास, कागज—देसी पत्र—१२, आकार—१०

५×४, इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट) ७, परिमाण (अनुष्टुप) १०६, खडित, रूप - नवीन, पद्य—लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५१ = १७६४ ई०, प्राप्तिस्थान — पं० सुखदेव प्रसाद, ग्राम—पुरासेवकराम, डाकघर—लक्ष्मीकातगज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)

आदि—श्री गणेशायनम· ॥ अथ ध्यान मंजरी लिप्यते ॥

श्री सुमिरौं श्री रघुवीर धीर रघुवंश विभूषन ।
सरन गहे सुप रासि हरत अघ सागर दूषन ॥
सुन्दर राम उदार वानकर सारँग धारी ।
हिय धरि प्रभु को ध्यान विदुप जन आनँद कारी ॥

अंत—सुनौ आगम विधि अरथ कछुक जो मनहिं सुहायौ ।
यह मगलकारी ध्यान जथा मति वरन सुनायौ ॥
श्री गुरु सत अनुग्र हर हत अंसो गोपुर वासी ।
रसक जनन हित करन रहस यतहि प्रकासी ॥
ध्यान मजरी नाम सुनत मन मोद वढ़ावौ ।
श्री रघुवर को दास मुदित मन अग्रा सो गावौं ॥
यह लीला विनोद हृदै धरि चित लावै ।
परम सुभग वैकुठ पाइ बहुरे नहिं आवै ॥

इति श्री ध्मानमंजरी सपूरणम् सवत् १८५१

विषय— राम के समाजादि के वर्णन के साथ उनके ध्यान का वर्णन ।

सख्या ४ बी ध्यानमजरी, रचयिता—अग्रदास, कागज देशी, पत्र २६, आकार—६ × ३½ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ट) ६, परिमाण (अनुष्टुप) ६०, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० रामावतार शर्मा, ग्राम—कृष्णदासपुर डाकघर परियावॉ, जिला प्रतापगढ़, (अवध)

सूचना—आरंभ और अंत ४ ए के समान ही हैं । पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री स्वामी अग्रदास कृतं रामध्यान मजरी संपूर्ण ।

सख्या ४ सी—ध्यान मजरी, रचयिता—अग्रदास, कागज सामान्य, पत्र ६, आकार—८×४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ट) ६, परिमाण (अनुष्टुप) ५४ । रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मानिकलाल जवाहिरलाल चौकी नवीस, डाकघर चरखारी ।

सूचना—आदि—अत ४. ए के समान हैं । पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री अग्रदास कृत ध्यानमंजरी सपूर्ण सवत १९०८ की लिखी भई पोथी से उतारी वैसाख व० १३ संवत १९५३ में लिखी चौकी नवीस हीरालाल की जै जै श्री सीता राम पहुँचै जो कोउ वांचे सुनै ताको ।

सख्या ५ ए—अजबदास का झूलना, रचयिता—अजबदास, कागज देशी, पत्र १६, आकार—७½×४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ट) ९, परिमाण (अनुष्टुप) १०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७६ = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—रामेश्वरप्रसाद, ग्राम—देवा = जिला प्रतापगढ़, (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथा श्री अजबदास को झूलना लिख्यते ॥ राम ॥ का कर्म के फंद में मंद मन बांधिया लेत जिमि आर पीग मानि फेरी ॥ मस्त गजराज को जोह जब का रहेउ एन अब हारी पग होइ घरी । संत के संग में बैठि के पार तुम पात यह पुत्र आ मानु मेरी ॥ अजबदास राम क नाम का गाह के फेरि नहीं जगत में होवे फेरी ॥१॥

अंत—ये प काहो पार को जिमि है याह दीन विति गे ठाही तू माही जाना ॥ शोच को छोड़ि कै काच मन हाइ रहा हुन हा बात का ठाम ठाना ॥ पोत हाथे लिया हारि हीरा दिया हानि औ लाभ कछु नाहि जाना ॥ अजबदास झूलनी रीति यह देखि के सिम का बाल करि भेदि माना ॥ ६२ ॥ इति श्री अजबदास कृत झूलना संपूरन ॥ सवत १८०६ दमस्त मीरहीम लाल के । जो देखा सो लिखा मम दोषो न दीयते ॥ मिती फागुन सुदी ७ राम राम राम राम राम ।

विषय—वर्ण माला के प्रत्येक अक्षरों के क्रम से बारह झूलनों के मर्हांके पर राम नाम की महिमा का वर्णन ।

संख्या ५ बी—झूलना, रचयिता—अजबदास, कायस्थन की पकिया, जिला—सुल्तानपुर कागज भारत बादामी, पत्र २८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ६, परिमाण (अनुष्टुप) ३२, रूप—नवीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—लगभग, १७३५ = १६७८ ई०, लिपि काल—सं० १६६० = १६०३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर जगदंबा बख्श सिंह ग्राम—पसुरा डाकघर निमोई, जिला रायबरेली, (अवध)

आदि—'क' कर्म के फंद मा मंद मन बाँधिया मस्त मृगराज जिमि जाल फेरी ।
मस्त गजराज को जार तब का रहा दुन अब हारि पग आइ घेरी ॥
संत के संग में बैठि के पार तू जात यह गुरु जो मान मेरी ।
अजबदास राम क नाम का गायके फेरि नहि जग मे होत फेरी ॥१॥

अंत—'ह' हरन की युक्ति को छाड़ि ह पार तू, शुद्ध कर आयु मैं हेरू करता ।
एहि को जारि कै भिन्न हुटे नहीं लाग लाख्‌ना बचन मीर मरता ॥
करि लागे चला देखता भाइसा दान ओंकार नहि पलक परता ।
अजबदास अन्नग की झलक मैं पूरि दै भानु मार्तंड जहँ कान्ति परता ॥

× × × ×

इत्यलम् ।

विषय—संसार की असारता—वैराग्य ईश्वर की भक्ति प्रेम और भजन की विधि ।

संख्या ५ सी—झूलनाष्टमी रचयिता—अजबदास कायस्थन की पकिया जिला—बाराबंकी, कागज मटैल रंग पत्र—१०, आकार—८ × ६½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १० परिमाण (अनुष्टुप) ६० खंडित रूप—नवीन; लिपि—देवनागरी प्राप्तिस्थान—ठा० शारदा बख्श सिंह ग्राम—पसुरा डाकघर निमोई जिला रायबरेली (अवध) ।

आदि—दो०—गुरु समान कोउ वैद नहिं, राम नाम सम मूरि।
दास अजव परतीति से, होत व्याधि सव दूरि॥
दास अजव गुरु तो मिल्यो, शिष्य रह्यो वे होम।
मूरि न मुख रोगी धरै, काह वैद कर टोप॥

अंत—विदेसिया छाए केहि देश। टेक।
पिय परदेसी ह्वै गए, निशि दिन यही अँदेस।
अव आए पन तीसरो, सेत भये सिर केश॥
जाको विछुरन होत है, ताको कठिन कलेस।
विरहिनि होय सो जानिए, जाको पिय परदेस॥
पाती लिखि जावै नही, आवै नही सँदेस।
मैं वन २ हेरत फिरौं, करि योगिन को भेप॥
कोइ कहै वैकुंठ में, कोइ कहै सिर शेश।
दास अजव कैसी करै, विन साँचै उपदेश॥
विरह की मारि मरि जैये, नेह काहू सों नहि लैये। टेक।
नेह करै तेहि सँग रहै, मति कोइ होय अकेलि॥
विछुरन में वह हाल है, पावक लागी वेलि॥
नेह करै तवहूँ मरै, छोड़त छूटत प्रान।
औपधि लावै नहि लगै, ज्यों विप वारो वान॥ विरहकी०।

× × × ×

विपय—ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, विरह, और, राम नाम की महिमा, निहग मार्ग की भक्ति।

संख्या ६ ए—शिक्षा वत्तीसी, रचयिता—अजीतसिंह, (जैसलमेर), कागज-देशी, पत्र ३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप) ३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रतनलाल, ग्राम—मोहारी, डाकघर सदारपुर, जिला सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ शिक्षा वत्तीसी प्रारंभ॥ दोहा॥ श्री वल्लभ विट्ठल प्रभू गिरधर गोविंद राय। वाल कृष्ण गोकुल रघू यदू श्याम घन साय॥ गढ़ जेसाणे पै तते रावल श्री रणजीत। यह शिक्षा वत्तीस का म्हेता करी अजीत॥ मन्त्री सेवन कीजिये नृप सेवन के काज। केवल नृप नहिं सेविये सेव्या हुए अकाज॥ पहिलो भय भगवान को भय दूजो भुव पाल। तीजो भय लोकीक को राख्यां विन मत चाल॥

अंत—क्षमा दया रख शील सत रख संतोप सुध प्रीति। ज्ञुरत फुरत अरु सुरत से सिध कारज सब होय। म्हेता अजीत को कियो निश्चय यह करि जोय॥ भूल चूक

सब समझ कै करि कमेज्ञ सुष सोभ। सुभ अजीत की बीनती सो मैं नहिं बहु बोध। प्रात उन्नीस अट्ठारवे आश्विन सुदि दसराव भयो समापत ग्रंथ ये करि अजीत सिंह चाव ॥ इति सिक्षा बत्तीस मेहता अजीतसिंह कृत संपुरणम् ॥ लिप्त गिरधर लाल संवत् १९४० वि०

विषय—नीति संबंधी उपदेश

संख्या ६ बी—सिक्षा बत्तीसी, रचयिता—अजीतसिंह, (जैसलमेर), कागज—मूंची पत्र ३, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुष्टुप) ५० रूप—नवीन, पद्य। लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ शुक्ल, ग्राम—सगरावाँ डाकघर बीघरा, जिला—उन्नाव (अवध)

सूचना—आदि अंत ६—ए के समान हैं। आरंभ में विशेषता इतनी ही है—श्री गणेसायनमः ॥ अथ सिक्षा बत्तीसी लिप्यते ॥

अंतिम वाक्य इस प्रकार है—"इति सिक्षा बत्तीसी मेहता अजीत कृत संपूर्ण समाप्त।

संख्या ६ सी—सिक्षा बत्तीसी, रचयिता—अजीतसिंह कागज—देसी, पत्र ३, आकार—८×६" इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) ५४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१८, प्राप्तिस्थान—पं० रामाधार मिश्र, ग्राम—नगर, डाकघर, मन्नीमपुर, जिला—खीरी (अवध)।

सूचना—आदि अंत ६ ए, के समान ही है।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति सिक्षा बत्तीसी अजीतसिंह कृत संपूर्ण समाप्तः ॥

संख्या ६ डी—शिक्षा बत्तीसी रचयिता—अजीतसिंह, कागज—नया पत्र—५, आकार—६×४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८ परिमाण (अनुष्टुप) ६०, पूर्ण। रूप—नवीन, पद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१८, प्राप्तिस्थान—पं० रमाकांत शुक्ल ग्राम—गरीबदास का पुरवा, डाकघर—गोड़वारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

सूचना—आदि अन्त ६ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री महता अजीतसिंह कृत सिक्षा बत्तीसी।

संख्या ६ ई—विद्या बत्तीसी, रचयिता—अजीतसिंह (जैसलमेर), कागज देशी, *पत्र—३, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुष्टुप) ४१*, रूप—नवीन, लिपि-नागरी रचनाकाल-सं० १९१८ = १८६१ ई० लिपिकाल सं० १९२१ = १८६४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ, ग्राम—सगरावाँ, डाकघर—बीघरा, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विद्या बत्तीसी लिप्यते ॥ दो० ॥ श्रीकृष्णहिं की सरण हैं सुधि बुधि दे ततकाल। विघन हरन सब सुष करन नमो नमो गोपाल ॥ गाढ़ो जैसल नगर को राजेश्वर रनजीत। यह विद्या बत्तीस को मेहता करी अजीत ॥ प्रातहिं उठि गुर ध्यान धरि प्रभु के चरण संभार सादर गणपति सुमिरि के कर विद्या उपचार ॥ अर्थों मे गुरु वाक्य सुभ मुष सों करो उचार ॥ फेरि हृदय धरि कर लिखौ

अक्षर नैन निहार ॥ पांच वर्ष मे आदि लैं करु विद्या अभ्यास। जब लग कारे श्वेत ह्वै छांड न विद्य आस ॥

अन्त—अरज करत जगजीत ए वहुत नमामै वोध। चूक भूल को जाच कर सुद्ध करौ कवि सोध ॥ उगनी सौ अठारवैं दीप माल शनि दिन्न। कियो सपूरण ग्रथ को पढ़ मन होय प्रसन्न है ॥ इति श्री अजीत मेहता कर विद्या वत्तीसी सपूर्ण समास लिखत कन्नू मल सवत् १९२१ वि० ॥

विषय—विद्या की महिमा का वर्णन ॥

सख्या ६ एफ—विधा वत्तीसी, रचयिता—अजीतसिह (जैसलमेर), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ३२, परिमाण (अनुष्टुप) ५०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१८ = १८६१ई०, लिपिकाल—स० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामाधार मिश्र, ग्राम—नगर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी (अवध)।

सूचना—६ ई के समान आदि अंत। पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री विद्या वत्तीस मेहता अजीत कृत सपूर्ण समाप्त ॥ लिखते पन्नालाल खत्री विस्वां वाले स्व पठनार्थ ॥ सवत् १९२६ वि०।

सख्या ६ जी—विद्या वत्तीसी, रचयिता—अजीतसिह, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ३२, परिमाण (अनुष्टुप) ३६, पूर्ण। रूप—जीर्णशीर्ण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१८ = १८६१ ई०, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रतनलाल, ग्राम—मोहारी, डाकघर—सदारपुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

सूचना—आदि अंत ६ ई के समान। पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री विद्या वत्तीसी म्हेता अजीत कृत सपूर्ण समाप्त। लिखत जीयालाल वैश्य सवत १९४०। शुभ मस्तु। राम राम राम ॥

सख्या ७ ए—अमर विनोद, रचयिता—अमरसिंह, कागज देशी, पत्र १७२, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप) ११७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—शिवपाल सिंह, ग्राम—रामनगर, डाकघर राजेपुर, जिला उन्नाव (अवध)।

आदि—श्रीगणेशायनम. ॥ अथ अमर विनोद लिप्यते ॥ दो० ॥ परमानद पद वद कै श्री शाकभरिध्यान। गुरु गणेश अरू शारदा ईश्वर जगपति भान ॥ विविध शास्त्र को देखिकै सुगम करौं अधिकार। अमर विनोद जो ग्रथ ही सकल जीव सुप सार ॥ श्री धनवतर चरण जुग प्रणम धरौं आनद। शेप फूट इस ग्रथ कौ उपज्यो आनद कद ॥ इति ॥ निर्घंट मते द्रव्य गुण ॥ अथ जल अष्ट प्रकार विधि लिप्यते ॥ दो० ॥ वर्षा जल पुन नदी जल अंतरिक्ष पुनि कूप। ऊसर डाभ तड़ाग जल कहे आठ जल रूप ॥ अथ नदी जल

गुन । लघु रूपा गुन सोन जन अति पवित्र गुनि साइ । वस्त्र हरत कष का करत भारत भौहीं सोच ॥

अंत—द्वितीय वंध्या चिकित्सा ॥ कर्पौजी हाथी का मद वती कर जाम में राखे १ माजम टंक १ ढक त्रिफले का पानी रुई की वती भिगाय दिन १ भग मै धरे ४,५ में भमार की कली का पानी अलसी तेल गुलाब मम औषधी में पाती कर जान में रखी दिन ३।१ बच बानी जीरी कर्पौजो बाबची तिल का तेल बाती करके दिन १ जाम में राखे पश्चात संगम करी गर्भ रहै ससम दोष में पंच सिर्पे यत्र माहि मग मोर का पांग हलद महदी हरती दाड़ के रस की किमें घी का मध्य में नाम लिखै फिर कमर मै पांधे ससम दोष मिट गर्भ रहै इति श्री अमरसिंह विरचितायां अमर विनोद भाषायां ग्रंथ संपूर्ण समाप्तः लिख्या संवत् १८७० बवार विजयादशमी लषक मोतीलाल मालो ॥ श्री राम सीताराम श्री सारदायनम ॥

विषय—वैद्यक

संख्या ७ बी—अमर विनोद रचयिता—अमरसिंह, कागज—देसी, पत्र ११० आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २४ परिमाण (अनुष्टुप) १४५१ रूप—प्राचीन लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९०७=१८५० ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर जोधसिंह ग्राम—सिठसिया डाकघर इमादनगर, जिला खीरी (अवध) ।

सूचना—आदि अंत ७ ए के समान है । पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री अमरसिंह विरचिते अमर विनोदभाषायां पुरुष स्त्री वंध्या प्रयोग विधि उत्तर खंड प्रत्यक्ष सिद्धि प्रद नाम पष्ठोऽध्यायः समाप्तार्थ ग्रंथः शुभमस्तु शुभे लिखतं तिरबेद बाबराई संवत् १९०० पाती दर्शन ॥

संख्या ७ सी—अमरविनोद रचयिता—अमरसिंह कागज-देसी, पत्र ८८, आकार—८×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप) १५०० रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१९=१८६२ ई० प्राप्तिस्थान—पं० गणपति द्विवेदी, ग्राम—बघागाँव डाकघर—मछरहटा, जिला—सीतापुर (अवध)।

सूचना—आदि अंत ७ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री अमरसिंह विरचित अमर विनोदे भाषायां पुरुष स्त्री वंध्या प्रयोग विधि उत्तर खंड प्रत्यक्ष सिद्धि प्रदे नाम षष्ठाध्याय समाप्तार्थ ग्रंथ शुभमस्तु शुभ संवत १९१९ मि० पाती—दर्शन. ॥

संख्या ८ ए—भक्त विरदावली रचयिता—अंबादास, कागज-देसी पत्र—८, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२ परिमाण (अनुष्टुप) ५० रूप—प्राचीन लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १७८४=१७२७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० दीनानाथ मिश्र, ग्राम—कनेपुर चौरासी, डाकघर—सफीपुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भक्ति विरदावली लिख्यते ॥ तुम अती दीन सु धीजिय रघुनाथ यह जस लीजिये ॥ मोहि मन्द बदी दीजिये । जन बरवा बर लीजिय ।

तुम दीनबंधु दयाल हौं तिहू लोक के प्रतिपाल हौं ॥ तुम राधिकापति रमण हौं । परगाम चौदह भुवन हौं तुम ज्ञान गोकुलचंद हौ । हरि बश कंम निकट हौं । हम पतित पावन सुनत हैं । नित नाम निर्मल भजत हैं ।

अंत—भगत छंद सिरावली । गावैं सुनैं वरदावली । ते मुक्ति फल नर पावहीं । दुष पाप जल भव भाजहीं ॥ वैकुंठ उनको वास है सो कहत अम्मर दास है ॥ इति श्री अम्मरदास कृत भक्त विरुदावली सपूर्णम् । लिखा गगादास सेवक सावन शुक्ला सप्तमी संवत् १७८४ वि० जेनारायण की ॥ राम राम राम राम राम राम राम ॥

विषय—भगवत्स्तुति

संख्या ८ बी-भक्त विरुदावली, रचयिता—अंबरदास, कागज-देशी, पत्र ८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) ५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७९० = १७३३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामरत्न शुक्ल, ग्राम—दरियाबाद, जिला—उन्नाव (अवध) ।

सूचना—आदि अंत ८ ए के समान है । पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री अम्मरदास कृत भक्ति विरुदावली सपूर्णम् लिखत शिवशंकर माथुर नजीबाबादी कार्तिक सुदी ६ संवत् १७९० वि० ॥

संख्या ९—खवास खां की कथा, रचयिता—अमोलक कवि, कागज-देशी, पत्र ४०, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप) १३००, रूप—प्राचीन जीर्ण, लिपि-नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर हनुमान सिंह, ग्राम—गोधनी, डाकघर जैतीपुर, जिला उन्नाव (अवध) ।

आदि—सपियो सपी खवास खा सब सतिअन पर तू सती । मुष अबल कहे पाले सोई वचन जहर सो धरपती ॥ सिर धड़ दियो समेत कियो हीयो जगदेव को ॥ चल्यो सुजस के हेत खा खवास सब आस तज ॥ र व न देप र वनि आ कोमल विध करे विआने ॥ वार वार वारने वरपत श्रुत श्रवन जवाने कमला वानू कुमला गई आपना दी आवली ॥

अंत—अहमद आयो कोपसों सुणयो शाह सलेम । दसत कराय या अवसो टेर कहा मुप मर वाह आसो जो कछु लिपा हुआ सु अहिमद राइ । पाग बाधिये सीस पर चारा हुआ खुदाय ॥ वखशी मिदाद पान तिन क्षिपान चुराय कै लै गयो कांधे । वुह चडते कावल दल भजत कोऊ टिक्त दोऊ दल साधे ॥ काम परा अब येही पछाना अकल परी छत्रय आधे ॥ इस सैदन उत शाह अंध लो अहमद पाग काह पर बाँधे ॥ जोड़ कटक भटकन के कव तीर तुफंगन बाँध लियो है । बाँह गही उतरि पोगड़ ते उन नाम साहव को याद कियो है मनै नरू सिंह लिपी जु लिलाट सुमेटन हार न कोई भयो है ॥ सपी खान खवास रंग गये गीही तूही मुझ्यो जाका बोल गयो है ॥

विषय—दिल्ली के बादशाह सलेम जो शेरशाह का पुत्र था । इनके यहां राजा जगदेव नौकर था । बादशाह की स्त्री ने जगदेव से अनुचित संबंध रखना चाहा परंतु

जगदेव ने इनकार किया। इससे बादशाह की मीने जगदेव को विरुद्ध समझकर बादशाह से चुगली करदी जिसके कारण राजा जगदेव सिंह भागकर आगरा के पास बयाना पहुँचा और वहां के नवाब खवास खाँ से मिला उन्होंने राजा जगदेव को अपनी शरण में आया जान कर जान बकसी और जब सलेम ने खाँ खवास नव्वाब से राजा जगदेव को मांगा तो नवाब ने इसे से इनकार किया जिसपर खाँ खवास और शाह सलेम दोनों का युद्ध हुआ। खाँ खवास हारा और मारा गया। इस कारण से खाँ खवास की मीने राजा जगदेव को अपना पुत्र समझ कर राज गद्दी पर बैठाया ॥

संख्या १० ए—कोक मंजरी, रचयिता—आनंद कवि, कागज-देशी, पत्र ६०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३६ परिमाण (अनुष्टुप) १२०१, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२८ = १७७१ ई० लिपिकाल—सं० १८५९ = १७९१ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० शिवरत्नसिंह ग्राम—रामपुर मथुरा, डाकघर बसोरा, जिला सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कोक मंजरी लिख्यते दो० ॥ ललित सुमन धनु धारि निज तन छबि अमित अनंद। मधु रति संग जो रति रमन पै जै मदन अनंद ॥ बरनी काम अभिराम छबि बरनी भामिनि भोग। मकरंद कोक बुधि मथन करि। रच्यो सार सुप भोग ॥ मनुज रूप ह्वै अवतर्‌यो तीनि भांति को जोग। बरन उपावन हरि भजन औ भामिनि को भोग ॥ जगति भली भगवंत की भोग सो भामिनि भोग। यह संकट मे दुख हरन यह सुख करन प्रयोग। कहित बचन सब कबिन के सुरति करत सब कोय। त्रिग अंकित सब कामिनी भेद सबन में होइ।

अंत—छंद ॥ पढ़ि सकल काव्य करि करि विचार बरन्यो आनंद कवि कोकसार सर्गों जो हास्यरस सरति सर अवचे कुमो बहु छंद। पढ़त पढ़त रति रंग बढ़ विविधित हित आनंद। इति श्री कोक मंजरी आनंद कृत काम केलि वर्णनम् कोक मंजरी समाप्तम् संवत १८२८ वि रसिकन की सुप हेत है कोकसार बहु भांति। लिपत सुम्न् स्वरूप पाठक मिरौरा निवासी संवत १८५६ क्वार मासे कृष्ण पक्षे तिथौ दसम्यांम् दशमी ॥

विषय—पुरुष स्त्रियों के गुप्त स्थानों के रोग और उसकी औषधियां और अंगों का वर्णन इस पुस्तक में तीन खण्ड हैं पहले में जंत्र मंत्र दूसरे में औषधियां और तीसरे में सचित्र आसन वर्णित हैं।

संख्या १० बी—कोक मंजरी, रचयिता—आनंद कवि, कागज-साधारण, पत्र २६, आकार—$9\frac{1}{2}$ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ७ परिमाण (अनुष्टुप) २२५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १६६० = १६०३ ई० लिपिकाल—सं० १८५७ = १८०० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० गयादीन मिश्र ग्राम—पंडित का पुरवा डाकघर—सामामगढ़ जिला प्रतापगढ़ (अवध)।

संख्या १० सी—कोकसार, रचयिता—आनंद कवि (कोटा हिसार), कागज देशी, पत्र ३०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १० परिमाण (अनुष्टुप) ५२५,

रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७० = १८१७ ई० प्राप्तिस्थान—प० नंदलाल शर्मा वैद्य, ग्राम—भैंकूलाल भवन, डाकघर अमीनाबाद, जिला लखनऊ।

संख्या १० डी—कोकसार, रचयिता—आनंद कवि, कागज-देशी, पत्र ६४, आकार—६⅞ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप) ८२२, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९२ = १८३५ ई०, प्राप्तिस्थान—नैपालसिंह, ग्राम—भौली, डाकघर तालाबबख्शी, जिला लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ कोक सार लिख्यते ॥ दोहा ॥ ललित सुवन धन अलि वचन तन छवि अभिनव कद। मधु रति सग जोरति रवन जै जै मदन अनद ॥१॥ वरनौं काम अभिराम छवि वरनौं भामिन भोग।

अंत—दोहा ॥ स्वर्ग जो द्वादस रति सर सब तेजु ते बहु छद।
पढ़त पढ़त रति रग नव विधि चित हित आनंद ॥ ४७ ॥ इति श्री कोकसार विरचितो आनद कवि कृते कामकेलि वर्णन कोक्सार समाप्त ॥ लिख्यते श्री चौहान वश श्रीमानसिंह भौली के तरफ पढे हैं।

विषय—स्त्री पुरुष के लक्षण व्याधि आदि के निदान तथा उनसे रक्षा पाने के उपाय व रति केलि आदि का वर्णन।

संख्या १० ई०—कोकसार, रचयिता—आनद कवि (हिसार), कागज देशी, पत्र ४२, आकार—८ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुष्टुप) ५६७, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—ओंकारनाथ पाडे, ग्राम—स्कूल चचेहरा, डाकघर कोयानौरिया, जिला प्रतापगढ़ (अवध)।

संख्या १० एफ—कोकसार या कोकमजरी, रचयिता—आनद कवि कायस्थ (कोटा हिसार), पत्र ७८, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुष्टुप) ७४६, रूप-प्राचीन फटी, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०८ या १५५१ ई०, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान ठा० रनधीर सिंह जमींदार, ग्राम—मोखानीपुर, डाकघर, तालाब बक्सी, जिला लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाये नम अथ कोक सास्त्र आनद कृत लिप्यते ॥ ललित सुमन धनु अलिपनिच तन छवि अतिनव कंद। मधु रितु हितु अति रति रवन जय जय मदन अनद ॥ वर्न काम अभिराम छवि वरनो भामिनि भोग। सकल कोक दधि मथन कै रच्यो सार सुख जोग ॥ २ ॥ भक्ति येक भगवत की भो भामिनि भोग। वह सकठ में सुप करन वह दुख हरन वियोग ॥३॥ मनुस रूप ह्वै अब तरयौ तीनि बात को जोग। द्रव्य उपावन हरि भजन और भामिनी भोग ॥ ४ ॥ कायथ कुल आनद कवि वासी कोट हसार। कोक कला इहि रुचि करन जिन यह कियो विचार ॥५॥ रितु वसत सवत सरस रचे जो बहु विधि छद। सोरह सै अरु आठ। कोक मंजरी यह करी धर्म कर्म कर पाठ ॥६॥ पंद पंचदश अति सरश रचे जो बहु विधि छंद। पढ़त चढ़त अति चोप चित वाढ़त अति आनंद ॥ ७ ॥ चतुर सुकवि पढित सरश जो जानै छवि छद। भूल्यो कहूँ सवारियो विननी करत अनद ॥ ८ ॥

ललित बचन सब कबिन के सुरत करत सब कोय । प्रग अंजन सब कामिनी भेद सबन मो होय ॥ ९ ॥ पिंगल बिन छंदहि रच अरु गीता बिन ज्ञान । कोक पढ़ें बिन रति करें ते नर पंच समान ॥ १० ॥

अंत—अब बंधेज पुष्ट बल स्तंभन की दवा ॥ वार्ता ॥ अफीम और × × × और लौंग सब चीज बराबरि ल्यावै और छोहारा की गुठुली निकारि × × × × × के भीतर जेतना अंबाइ तेतना भरै तब दूध १ सेर चढ़ावै । छोहारा × × × खावै छोहारा पाइ दूध पिवै बंधेज बहुत हो पुष्ट होय बल होय ॥ ४९ ॥ × × × चौपाई सिव बीरज और कूर मंगावै । मोथा चमियौं आनि पिसावै । × × पार्थी आनि । पुरी बांधि पानी महं डारि ॥ सारी सुप कु तजि जाइ । येह औष × × हू ॥ जोनि कुवाछ दुरम ॥ चौपाई मधुर तक नागर ले आवै ॥ त × × × × करा जोनि बाछ अति होई ॥ तबली तैल लगावै सोई × × × × चौपाई ॥ मोथा अरु इलायची आनि मच कपूर पुनि प × × दुवा कोई ॥ अति सुवासु निज तन में होई ॥ ५२ ॥ कोक सार × × × पुन्य सर्व शरीर काल विहार अर्थमो नाम पंचमुखी पता × × समाप्त मार्ग शीर्ष मासे कृष्ण पक्षे तिथा पं० संवत् १९१२ × × × × भौसी मौजे पानीपुर के ॥ जैसी × × लीपी मम दोषो न दीय × × × × × × × इम शुभ्य × × ×

विषय—नं० १०—ई में देखो।

संख्या—१० बी—कोकसार रचयिता—आनंद (कोटा हिसार), कागज-साधारण, पत्र ७१, आकार—७¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप) ६४५, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५५ = १८९८ ई० प्राप्तिस्थान—पं० वासुदेवसहाय, ग्राम—कमास, डाकघर-मार्यागंज जिला-प्रतापगढ़।

संख्या—१० सी—कोकसार, रचयिता—आनंद, कागज-बदामी नया, पत्र १४ आकार—८ × ६½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप) ४०७, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५८ = १९०१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्ण बिहारी मिश्र मारैल हाउस, जिला-लखनऊ।

संख्या—१० डी—कोकसार, रचयिता—आनंद कवि, कागज देसी, पत्र १९, आकार—६ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११ परिमाण (अनुष्टुप) ५९७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२८ प्राप्तिस्थान—आनंद भवन पुस्तकालय ग्राम—बिसवाँ जिला सीतापुर (अवध)।

संख्या—१० ई—कोकसार, रचयिता—आनंद कवि कागज-साधारण, पत्र १४, आकार—७¾ × ५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुष्टुप) ४०२, खंडित, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भगवती प्रसाद त्रिगुनायत, ग्राम—तरहटा, डाकघर पट्टी, जिला-प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कोक सार ॥

ललित सुमन धनु अलि पनच, तन छवि अभिनव कंद।
(मधु रितु हितु अति रति रदन जय जय मदन अनंद) ॥
वरणों काम अभिराम छवि, वरणों भामिन भोग।
सकल कोक दधि मथन करि, रच्यो सार सुख जोग ॥
भक्ति एक भगवत की, भोग सु भामिनि भोग।
वह सकट में सुख करन, यह दुख हरन वियोग ॥
मनुष्य रूप ह्वै अवतरैं, तीनि वात के जोग।
द्रव्य उपार्जन हरि भजन, अरु भामिन को भोग ॥

अंत—पिय ठाढ़े तिय कटि गहैं, लेइ अक भरि वाल।
तिय उठाय भुज पर धरैं, आसन कहौं मराल ॥ १४ ॥

कामिनि पभ लागि निजु ठाढ़ी।
कामी गहै अलिगन वाढ़ी ॥
लेइ उठाय भुजनि पर वाल।
कटि ताकी गहै यह आसन आय मृणाल ॥ १५ ॥
तिय पौढ़ि के जंघ उभय पकरैं।
कर उन्नत कत को सीस धरैं ॥
पिय पौढ़ि रहैं कुच केलि करैं।
सुख पल्लव आसन नाम धरै ॥ १६ ॥
विमल आसन ... ...
... .

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १३ तक ... प्रथय खंड।

मगला चरण, कोक की उपयोगिता, ग्रथ रचने की प्रतिज्ञा, पद्मिनी आदि स्त्रियों के लक्षण, उनके नाम तथा योनि प्रमाण।

(२) पृ० १६ से पृ० १७ तक—तृतीय तरंग।

समरति, सामान्य रति, उत्कृष्ट रति वर्णन।

(३) पृ० १३ से पृ० १५ तक—द्वितीय खड।

पुरुष लक्षण उनके नाम तथा लिङ्ग-माप।

(४) पृ० १८ से पृ० २४ तक—चतुर्थ और पंचम खड।

चहुँकला, मदन निवास वर्णन, द्रवणि विधि, अंग मर्दनादि विधि, प्रौढ़ा तथा वृद्धा के लक्षन।

(५) पृ० २५ से ३५ तक—षष्टम, सप्तम और अष्टम खड।

भोजनादि वर्णन, व्यभिचारिणी लक्षण, विरक्ता, अनुरागवती तथा कामवती के लक्षण, कला वर्णन, स्त्रियों के गुण दोष।

(६) पृष्ठ ११ से पृष्ठ १८ तक—नवम खंड।
जाति वर्णन स्त्री का प्रेम परिचय।
(७) पृ० १९ से पृ० ४७ तक—दशम खंड।

औषधियाँ—पौष्टिक, मदन मोदक, कामेश्वर, कामेश्वर द्रवण की औषधि, (पुरुष व स्त्री के लिए पृथक २) कठोर मर्दन, सद्योबन स्तम्भन, रति पौष्टिक, प्रमेह तथा प्रदर की औषधि, गर्भ निवारण तथा गर्भ रखने की औषधि। योनि वर्णन। आसन विधि—योग तथु आ० रति आ० इन्द्रासन, रासमा आसमा, विपरीत आसन कपि आसन, हित आसन, मृग आसन, परस्पर आसन, मालासन, मराल आसन, तथा सुख पद्धव आसन।

(८) पृ० ६८ से पृ० तक सुख।

संख्या १० के—कोक विलास, रचयिता—आनंदचंद, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—८ इंच X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) ५२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला सीताराम वैश्य, ग्राम—बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—अंग कोमल विचित्र अति तन लच्छन अतिलीन। प्रगट दामिनी देह द्युति आनंद चंद बखानत बदन सदा अंग निर्मल रहै। आदर निमिष रहित अमल सुविमल धीर धैर्ये चहै॥ सयावल मी हँसि रहै सबही दिन मानु करै अति ती कहु स्यावै। सेत सरोज को मेहु धरै अरु उज्जल चीर सरीरहिं रावै। वारिज भ्रमर बस्यो गृह काम को नीरज नीरज बास विराजै॥ अथ चित्रनी वर्णन॥दो०॥ चित्र रूप सम चित्रनी अति विचित्र रस रीति। चित्त चावत सब काम तजि निरपि चित्र संगीत॥ नहिं भारी दुर्बल नहीं लघु दीरघ नहिं अंग॥ छंद॥ कमल कमल दल नयन मैन चंचल अति भारे। मधुर मधुर मुख बचन चाह कुंचित कच कारे। लघु दीरघ नहिं अंग सर्व तन गर्व जनावत। माया यंत बहु होत पुष्प परमल बहु भावत। ग्रीव कपोल उर पूँघट तुरीय गति गयंद आनंद गतिहि सीलवंत सुचिचित्र अति (इसके आगे नहीं)।

अंत—मदनांकुश जिहि पुरुष को अति ही होइ विशाल। दृढ़ कठोर अति होत नहिं द्रवति सुरति उत्ताल। जाके सूक्ष्म अतिहि लघु नहिं तुसति दै नारि। अंत होइ व्यभचारिनी स्त्रीकी चतुर बिचारि। जाके सुभ्र कठोर अति लघु दीरघ नहिं होइ आसन उचित और नहिं जानत रसिक सु कोइ। मदनांकुश के सिर सुभर जात है जाको धाम। प्रथम समागम तीय की सरै न ताकों काम। करै जतन कामी बड़े जरत है जाको धाम। दवै वेग भग परसि तैं तृप्ति न मानै भाम॥ अथ बप दान॥ कांप जंघ उर उरज पंच अंग बप दान अधर कपोल बिच अरु तीलठ पेठ न जान। जतपनि काम कलोल की सुगढ़ु रसिक सब कोइ। न विलास तबही बनै तिय विचित्र जब होइ। रसि विधि। पूछ ईनि रति कीजिये दोई। जानत रसिक चतुर जो कोई। जो मदि करै पड बल तासु। ई बिन तियहिं न होइ हुलास॥ औषध समाप्त। कंद सुभ विधि सोंठि मुंडी मही बप पीपरि परिमान। सात रती मधु सीं भष करै सु किमर गान। मिर्च कुलिंजन सम कर दोई पुरुष होइ जा मापक

कोई । मधुर अमल कछु पाइ न मोई । पिक सम कंठ तासु कर होई । अद्रक भद्रक पीत रस वच वा वच मह्यीस घृत । जो चाहै कोक विजत्र माघ चतुर्दश कृष्ण दिन स्नातवरी करि राषै जल महँ वूंदै खाई । कंठ होइ सम किन्नर गाइहून किन्नर भाइ ॥

विषय—स्त्री पुरुषों के भेद लक्षण उनके गुप्त स्थानों के रोग व औषधियाँ, वशीकरन मंत्र व उनकी विधि वर्णन ॥

संख्या ११ ए०—श्री हनुमत यश, रचयिता—आनदीदीन, कागज—देशी, पत्र ७, आकार—१३३/४"×७", पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ७, परिमाण (अनुष्टुप) ४९, रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० विष्णुदत्त उर्फ (पुत्ती महाराज) ग्राम—भाटली, डाकघर—तालाब वक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री जानकी वल्लभो जयति ॥ सोरठा ॥

॥ सो० ॥ श्री वाणी गण नाथ दिन मणि प्रणमों शिव शिवा ।
हनुमत के गुण गाय तामें कछु वरणन चहौं ॥१॥
॥ दोहा ॥ अहिपति व्यास वसिष्ट गुरु दैत्य पूज्य कवि आदि ।
गाधि तनय अरु घटज शुक लोमस मुनि सनकादि ॥२॥
वदि महान सुचारि दस जिन्ह वरने प्रभु गाथ ॥
निजु किंकर वपि करि कृपा मोंकह करहु सनाथ ॥३॥
स्वामी राम प्रसाद जस अवध प्रगट जग जान ।
तिनके दासके दास मे करुणा सिंधु वखान ॥४॥
मम गुर निजु करि जानियों तिनके पौत्र विसेषि ।
राम तापिनी अर्थ जिन्ह भाषा भनित सुवेस ॥५॥
पार्चो स्वामी मोहि पर कृपा करौ जन जानि ।
आनदी चरणन पर्यो देखि दयानिधि वानि ॥६॥
श्री हनुमत जस विसद शुभ वरनों तव वल पाइ ।
सिसु अनुगामी मोहि लषि करिये सिद्धि सहाय ॥७॥

अंत—मधुर वचन सुनि पूँछत भयऊ ।
को तुम मोहि परम सुष दयऊ ॥५॥
तवहि पवन सुत नाम वतावा ।
प्रभु किंकर कहि प्रेम दृढ़ावा ॥६॥
दीना नाथ दास निजु जानी ।
भेटे भरत हरष गहि पानी ॥७॥
हिय न समात प्रेम की भीरा ।
गद गद कंठ नैन वहैं नीरा ॥८॥
रघुपति प्रिय तव दरसन पाई ।
अति सुष भो सव दुषन × × ×

विषय—श्री हनुमान जी का यश वर्णन और उनसे प्रार्थना ।

संख्या ११ बी—प्रार्थना, रचयिता—आनंदगिरि, कागज—देसी, पत्र १०, आकार—७×५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुष्टुप) ६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा काशी (बनारस) ।

आदि—भजन बिना बदि बूझि है बंद निपटहि हानि नहिं सूझत नर ॥१॥
गृह कुटुंब स्वारथ के साथी कहत बेद सुभ संतत टेर ॥
निसि दिन बिपति जाल में बीतत तबहु न चेतत काल नारे ॥२॥
काम क्रोध मद लोभ मोह बस इन्द्री चखत विष रस घेरे ॥
अंत कसूर जीव पर परि है आन होस जमराज द्वारे ॥३॥

अंत—सुंदर बाँकी छबि छाइ रही जबतें रघुनंदन आये इतै ।
मन मोहि लियो हमरो सजनी अंखियाँ रसखानि की ओर चितै ॥१॥
मिथिलेस स्वयंबर ठानि सखी बड़ साम दियो नर नारि हितै ।
सिय मातु कहै धनु जाग करी टूटै धनु सोच हमार चितै ॥२॥
जिन्ह पाहन तें रिषि नारि कियो तिन्ह को धनुही सम होत किते ॥
कहै आनंद ईस पिनाक कहै अबहीं रघुनाथ न रोप चितै ॥३॥

विषय—इस पुस्तक में ९ भजन हैं । सब राम के गुण गान एवं प्रार्थना से परिपूर्ण हैं ।

संख्या १२ ए—आनंदघन जू के कवित्त, रचयिता—घनआनंद जी, कागज—देसी, पत्र—८७, आकार १०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुष्टुप) १५६६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री भगवतसिंह जी, ग्राम—महापुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री आनंद घन जू के कवित्त लिख्यते ॥ सवैया ॥ नेही महा ब्रज भाषा प्रवीन औ सुंदरिताम के भेद को जानै । जोग बियोग की रीति में कोविद भावना भेद स्वरूप को ठानै । चाह के रंग में भीज्यो हियो बिछुरे मिलें प्रीतम सांति न मानै भाषा प्रवीन सु छंद सदा रहै सो घन जू के कवित्त बखानै ॥१ । प्रेम सदा अति ऊँचो लहै सु कहै यहि भाँति की बात छकी । सुनि कै सब के मन लालच दौरे पै बौरे लखै सब बुद्धि चकी । जग की कविताई के धोखे रहै ह्याँ प्रबीनन की मति जाति जकी । समुझै कविता घन आनंद की हिय आंखिन नेह की पीर तकी ।

अंत—नेह मकरंद भर कैधों भर बूंद बूंद निरपत नसत मनन तापा ही के हैं ॥ कैधों सुघरन के कलम पै सुधा सो भरे स्वाद पाये जगत सवाद सब फीके हैं ॥ कैधों अद्भुत जलधर मनभाय कहै घन रस रंग बरसत अति ही के हैं । चोर चित चित केकि पैठि चाओर हिय कैधों चिकनत ये कवित्त घन जी के हैं । इति श्री घनानंद जी के कवित्त संपूरनम् संवत १९३९ लिपि गुमान साहन्सिंह ग्राम शंकरपूर ॥

विषय—घनानंदजी के नवरस पर कवित्तों और सवैयों का संग्रह।

संख्या १२ बी—आनंदघन जू श्री पदावली, रचयिता—आनंदघन, कागज—सामान्य, पत्र—१२५, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप) १७५०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—शारदा प्रसाद, सतना।

आदि—श्री राधा माधवौ जयति ॥ अथ श्री आनंदघन जू श्री पदावली लिष्यते ॥ प्रथम राग भैरव ॥ चौताल ॥ ए जग तारण करुणासिन्धु उदार दीन असभागन लेत संभार अधम उद्धारन बहु विधि सुष विस्तारण स्वामी दयाल पर पूरण पावन मत धार ॥ अघ वारन करी रव दारुन दुष दल विदारन गुन अपारन को सकन विचार ॥ आनंद घन रस धारन सकल संताप निवारन चमदि विराजो प्रान पपीहनि पार ॥१॥

अंत—भोला कान जी थे कि हाँ होली षेलाँ ॥ आँगं या धोपा
म्हाँ म्हारी आप्नो बूका मेलाँ ॥ पराई म्हाँजी छन्या
कौण छै थानू होमी भेलाँ ॥ आठ पहर अमल्या
रामाता देता ढोलाँ हेलाँ ।
आनंद घन म्हन्याँई आवाँ कोई गाली देलाँ ॥२॥
इति आनन्द घन जी का पद संपूर्ण × १॥ श्रीरस्तु ॥

॥ कल्याण मस्तु ॥

विषय—पृ० १ से २२ तक—मंगलाचरण, लगन, तरणि तनूजा, वन, आर्ती, मार्ग, गोरस, बहियाँ पर प्रसंग, स्मरण, वंशी और बात आदि के संबंध से उपालम्भ वर्णन।

पृ० २३ से ५६ तक—राधिका के चरण, जमुना, लीला, विलास, प्राकृतिक शोभा, मन की लगन, रस केलि, जोबन बल, वाद विवाद, कृष्ण छवि, वियोग, दान लीला, मन की चंचलता, पारस्परिक प्रेम तथा वंशी की प्रबलता का वर्णन।

पृ० ६० से १३५ तक—महादेव गोपेश्वर संबंधी छन्द, कृष्ण सौन्दर्य, मोह-स्तम्भादि, रति, राधा का अनुराग, प्रेम, विनय, दर्शन, नृत्य, गोदोहन, उत्सुकता, वियोग, वृन्दावन महिमा, मान तथा कृष्ण के गुणानुवाद का वर्णन।

पृ० १३६ से २५० तक—भक्ति, स्तुति (बलभद्र) रामजन्म की बधाई, वावन जू के पद, पावस, हिंडोरा, वर्ष ग्रन्थि महोत्सव, ठकुरानी जी को बधाई, साँझी, रास, वसन्त, हिंडोरा, होली, यात्रा, चाँचरि, वियोग होली आदि का वर्णन।

संख्या १३ ए—भगवद्गीता भाषाटीका, रचयिता—आनंदराम, कागज देशी, पत्र ६०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुष्टुप) ९५९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल सं०—१७६१ = १७०४ ई०, लिपिकाल—सं० १८०५ या १७४८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० गंगापति दूबे ग्राम—नयागाँव, डाकघर सदरपुर, जिला सीतापुर (अवध)

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भाषा टीका भगवद्गीता लिष्यते ॥ दो० ॥ धर्म क्षेत्र कुरु क्षेत्र में मिले जुद्ध के साज। संजय मो सुत पाडवनि कीन्हे कैसे काज ॥ पांडव

सेना व्यूह रूप दुर्योधन ढिग आय । निज आचारज द्रोण सों बोल्यो असे भाय ॥ पांडव सेना मति बड़ी आचारज तू देखि । धृष्ट द्युम्न तव शिष्य ने व्यूह रच्यो सु विशेषि ॥

अंत—सद्गुन रूप श्री कृष्ण को सुमिरि सुमिरि हौं ताहि । हर्ष होत मोको महा विस्मय मानत बाहि ॥ जोगीस्वर श्री कृष्ण अर्जुन हैं जा ठौर तहाँ विजय अरु नीति है राज संपदा और संवत शशि रस वसुधि मांहि कार्तिक उज्जल मास रवि पंचमि पूरण भयो यह गीता परनाम ॥ इति श्री मद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां जोग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे भाषा टीका वो मास संन्यास जोगा नामाष्टादशोऽध्याय समाप्तः ॥ लिखत ब्रह्मगिरि वैरागी संवत १८०५ वि० चैत्र शुक्ल पूर्णमासी ॥

विषय—श्री मद्भगवद्गीता का भाषा में अनुवाद ।

संख्या १४ ए. दुर्गा पाठ भाषा, रचयिता—अनन्य कवि, कागज—देशी, पत्र—८१, आकार—१२×८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप) ४९०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२२ = १८०६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० ज्ञानदत्त मिश्र, ग्राम—दौलतपुर, डाकघर बिसवाँ, जिला सीतापुर ।

आदि—ॐ श्री गणेशायनमः । अथ दुर्गा पाठ भाषा अर्थात सुंदरी चरित्र लिख्यते ॥ राम कृत । दो० । सुंदर पद गुरु भाव के सुंदर गुरु उपदेश । सुंदर चरित भवानि के सुंदर सुरथ नरेश ॥ (त्रिभंग) । सुरथ नाम राजा भयो केवल परम विधान । सकल नगर कुल जन प्रजा पालहिं पुत्र समान ॥ सक ॥

अंत—॥ दोहा ॥ दुख भरे प्रगटे बहु निकट रहे भी दूरि । श्री भवानि त्रिभुवन विच रही सबनि भरि पूरि ॥ जो जिहि भांति भजै जहां ताको तहां प्रकाशि । त्रिभुवन व्यापक शक्ति नित श्री भवानि शुभ भक्ति ॥ श्री भवानि शुभ रूपिनी परम सुंदरी जानि । ताके सुंदर चरित यह अक्षर अनन्य बखानि । जा यह सुंदरि चरित को पढ़ सुनै मन लाय । मन वांछित फल देहि तिहि श्री भवानि जग माय ॥ इति श्री मार्कंडे पुराणे सावर्णि क मन्वंतरे देवी माहात्म्ये सुरथ वैश्य का प्रसंग १३ अध्याय । इति सुंदरी चरित्र संपूर्ण समाप्तः । लिखतं शीतल प्रसाद वैश्य बहादुर निवासी संवत् १९२२ वि० चैत्र शुक्ल राम नवमी ॥ इति शुभम् राम राम राम श्री जय माता जगदंबा ॥

विषय—दुर्गा माहात्म्य वर्णन तथा सुरथ वैश्य संवाद कथा ।

संख्या १४ बी. प्रेमदीपिका, रचयिता—अनन्य, कागज—देशी पत्र—२८, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुष्टुप) ६१० रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८०० = १८१३ ई० प्राप्तिस्थान—पं० मर्यादाराम तिवारी गंगापुर, डाक—मिश्रिख डाकघर-मिश्रिख, जिला सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रेम दीपिका लिख्यते ॥ कवित्त ॥ जाकी शक्ति पाइ ब्रह्मा विष्णु शिव विरच रचैं जाकी शक्ति पाइ सेस धामी धरत है । जाकी शक्ति पाइ औतार धरनी करै जाकी शक्ति पाइ भानु तम का हरत है । जाकी शक्ति पाइ शारदा गवरनि

गुनी जाकी शक्ति पाइ जगत जीवत मरत है । अक्षर अनन्य आनि अमर उपा छांडि ताही आदि शक्ति को प्रनामहि करत है ॥

अंत—॥ छपय ॥ प्रीति इकंगी नेम प्रेम गोपिन को गायो । लीला विरह विहार तरकि सब्दनि रस छायो । ग्यान जोग वैराग मधुप उपदेसन भाष्यो । भक्ति भाव अभिलाप मुप्य वनितानन मनु राष्यो ॥ बहुविधि वियोग संयोग सुप सकल भेद समुझौ भगत ॥ यह अद्‌भुत प्रेम सो दीपिका कहि अनन्य उदित जगत ॥ इति श्री प्रेम दीपिका सपूर्ण समाप्तं ॥ मिती वैसाप सुदी पष्ठी भृग वासरे लिपत मिदं दित पुस्तक त्रिपाठी राम गुलामेण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण ॥

विषय—श्री कृष्ण गोपियों का नेम प्रेम, विरह लीला, विहार लीला, ज्ञान योग, वैराग्य जो कृष्ण जी ने ऊधो द्वारा गोपियों को बताया है, भक्ति भाव, संयोग वियोग, भक्ति आदि का वर्णन है ।

संख्या १४ सी. प्रेम दीपिका, रचयिता—अनन्य, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९७ = १८४० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० विक्रमासिंह, ग्राम—तढ्या, डाकघर इंदा मऊ, जिला उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ प्रेम दीपिका लिप्यते ॥ कवित्त ॥ जाकी शक्ति पाइ ब्रह्मा विश्नु शिव विस्व रचैं जाकी शक्ति पाइ शेष धरनी धरत हैं । जाकी शक्ति पाइ औतार करतूति करैं जाकी शक्ति पाइ भानु तम को हरत है ॥ जाकी शक्ति पाइ शारदा हू गनपति गुनी जाकी शक्ति पाइ जगत जीवत मरत है ॥ अक्षर अनन्य आनि अमर उपा छांडि ताही आदि शक्ति को प्रनाम हि करत है ॥

छप्पय ॥ प्रीति इकंगी नेम प्रेम गोपिन को गायो लीला विरह विहार तरकि सब्दनि रसु छायो । ज्ञान जोग वैराग मधुप उपदेसन भाषो । भक्ति भाव अभिलाप मुप्य वनितान मनु राष्यो । वह विधि वियोग संजोग सुप सकल भेद समुझौ भगत । यह अद्‌भुत प्रेम सुदीपिका कहि अनन्य उदित्त जगत ॥ इति श्री प्रेमदीपिका सपूर्ण समाप्त मिति वैसाप शुक्क पष्ठी भृगुवासरे लिपतं मिद पुस्तक त्रिपाठी राम गुलामेण ॥ सवत १८९७ वि० ॥ कृष्ण कृष्ण कृष्ण ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का ऊधो को ब्रज में भेजकर गोपियों को समझाना और समाधान करना और ऊधो जी का ब्रज मडल में जाकर गोपियों को उपदेश देना ॥

संख्या १४ डी प्रेमदी पिका, रचयिता—अक्षर अनन्य, कागज—साधारण, पत्र—५१, आकार—५ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुष्टुप) ४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला गजाधरप्रसाद, ग्राम—कुराडीह, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री प्रेम दीपिका लिप्यते ॥ कुडरिया

माधो जू इक दिन कह्यो, मधुकर सो सति भाउ ।

गोपी गोप प्रबोध कौं, तुम ब्रज मंडल जाउ ॥
तुम ब्रज मंडल आइ प्रेम अतिही उर कीनी ।
जबते भयौ वियोगु सोधु हम कबहुँ न लीनी ॥
तुम ममतु परमाद, हरौ दुख सिन्धु अगाधी ।
कहियो सब सों यहै, दूरि तुमते नहिं माधौ ॥

ऊधौ बाच—त्यागौ हठ नेमु अरु उपासना प्रेम पौंसि
ज्ञान कौं विचारो मंत्र वेद की उकति कौं ।
कुब्जी रस रीति प्रीति बसती अतीतौ सुधा
चेतनि कौ चीतौ ध्यान जोग की जुगति कौं ।
विरह विनासि ब्रह्म आनँद प्रकासि सदा
अक्षर अकम्प ..
.. ॥

विषय—(१) पृ० १ से २२ तक—कृष्ण का उद्धव को प्रबोध कर ब्रज में गोपियों को समझाने के लिये जाने की आज्ञा देना। अपने वस्त्रालंकार से उन्हें सुसज्जित करना। उद्धव का प्रस्थान। ब्रज में आगमन, नंद यशोदा मिलन। कृष्ण के वियोग से दुखित दम्पति का उनका क्षेम समाचार पूछना। उद्धव का ब्रह्म निरूपण करते हुए दोनों को प्रबोधना।

(२) पृ० २३ से ५० तक—उद्धव का यमुना तट पर आगमन, गोपियों का उनसे सम्मेलन, गोपियों द्वारा उद्धव के बिना कुछ कहे ही उनके अभीष्ट का बताया जाना, कृष्ण के छल कपट तथा कठोर हृदय का प्रमाण देते हुए सखियों का उपालंभ, अपने पति व्रत त्याग पर पश्चात्ताप।

(३) पृ० ५१ से ६१ तक—मुरली की प्रभुता, कृष्ण का अपने साथ रास-विलास तथा प्रीति प्रतीति का कथन, कृष्ण के राज ठाठ तथा राज महिषी रुक्मिणी इत्यादि के साथ विहार की वासना का स्मरण कर और अपने नागरिता के सुलक्षणों का अभाव वर्णन कर कृष्ण-वियोग में दुखित होना। कृष्ण की ब्रज में रुचि न देखकर कम से कम उनकी कुशल क्षेम पर ही सन्तुष्ट रहने का कथन कर उद्धव को इस कार्य्य भार लेने के लिये बाध्य करना।

(४) पृ० ६१ से—उद्धव का ज्ञानोपदेश कर गोपियों को समझाने का प्रयत्न करना। एक भ्रमर का वहाँ आगमन। भौंरे के व्याज से गोपियों का अनेक प्रकार से उपालंभ देना। उद्धव द्वारा ब्रज वनिताओं को कृष्ण का संदेश सुनाया जाना। योग के संदेश का गोपियों द्वारा खंडन। बड़े सारगर्भित भाव से कृष्ण के परिवार तथा उनके कतिपय कृत कर्मों का कथन कर उनके सखा के भाव को उपहास के योग्य सिद्ध करना। गोपियों को उद्धव का आत्मोपदेश, उनका अपनी आत्मा का हरि में ही हिरा जाने का कथन निर्गुण उपासना में अपनी अक्षमता दिखाकर अपने को कृष्ण में ही अनुरक्त सिद्ध करने का गोपियों का उद्योग वर्णन। 'प्रेम जोग' की विषमता। उद्धव द्वारा विषम वासना का निषेध गोपियों द्वारा

इसका प्रतिवाद, माया तथा ब्रह्म, शिव तथा शक्ति आदि से उदाहरण देकर गोपियों का स्त्री तथा पुरुष प्रसंग अनिवार्य सिद्ध करना। गोपियों का अन्तिम कथन। "निर्गुन का खंडन करके हमारी उपासना की यही रीति है"... . शेष अंश खंडित।

संख्या १४ ई. सिद्धांतबोध, रचयिता—अनन्य, कागज-देशी, पत्र—३८, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप) ३५५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९१ = १८३४ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला कन्नूमल, ग्राम—गोंरियाकलाँ, डाकघर—फतेहपुर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सिद्धांत बोध लिष्यते ॥ दो०। श्री सतगुर पद उर परम वर सरवस्व सरूप। सिद्धांत बोध इमि नाम धरि बरनौं ग्रंथ अनूप ॥१॥ गुरू सिष्य वरणन प्रथम वरनाश्रम जुगधर्म। भक्त जोग सिद्धात सव कह्यो हरन भव मर्म ॥२॥

गुरू वर्णन दंडक ॥ एकै ब्रह्म ज्ञान के प्रमान में मगन होत एकै जोग ध्यान के विधान मह रूरे है। एकै देवतानि की उपासना विलास जानै एकै जप तप नेम सजमन रूरे हैं ॥ एकै एक मत ऐसे निमित सुपक्षपात आप मत जानै अन जानिवे को कूरे हैं ॥ सर्व मत जानै सर्व अनुभव अनन्य भनै सदा सर्वज्ञते परम गुरु पूरे है ॥३॥

अंत—इहि विधि सव सिद्धांत मय कहि अनन्य यह ग्रंथ। इहि समुझै समुझ सकल लोक वेद गुरू पथ ॥ ७ इति श्री सिद्धात बोध अनन्य कृत संपूर्ण समाप्त ॥ लिषतं ज्ञान दत्त शुक्ल पौष वदी ११ दशी सवत १८९१ वि० ॥ दसखत ज्ञानदत्त के ॥ इति सिद्धांत बोध समाप्त. ॥

विषय—गुरू शिष्य, ज्ञान वैराग्य, भक्ति ब्रह्म ज्ञान आदि का वर्णन ॥

संख्या १४ एफ. सिद्धांत बोध, रचयिता—अनन्य (सेवाहुरा, दतिया स्टेट), कागज—देशी, पत्र-३८, आकार—१०½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ६, परिमाण (अनुष्टुप) ३५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९१ = १८३४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रघुबर दयाल मिश्र, इटावा।

आदि—श्री गणेशाय नम' ॥ अथ सिद्धात बोध लिख्यते।

दोहा—श्री सत गुरु पद उर परम वर सरवस्व स्वरूप।
सिद्धात बोध इमि नाम धरि वरनौं ग्रथ अनूप ॥ १
गुरु शिष्य वरनन प्रथम वरनाश्रम जुग धर्म।
भक्त जोग सिद्धान्त सब कह्यौ हरन भव भर्म ॥ २
अंत—यहि विधि सव सिद्धांत मथि कहि अनन्य यह ग्रथ।
इहि समुझै समुझै सकल लोक वेद गुरु पंथ ॥१६७

मिति पौष वदी ६ सवतु १८९१ वि० दसखत चोध कृष्ण के ॥ इति सिद्धांत बोध समाप्तः ॥ इति

विषय—छंद १ से ११ तक—गुरु उपासना, गुरु वर्णन, माया और ज्ञान भेद वर्णन, गुरु लक्षण, गुरु महिमा वर्णन,

छंद २१ से ३१ तक—शिष्य लक्षण, शिष्य धर्म, धर्म कथन, वन रीति व धर्म कथन, स्त्री धर्म, पतिव्रता धर्म कथन,

छंद ३२ से ३२ तक—आश्रम धर्म, ब्रह्मचारी कथन, गृहस्थ धर्म, वान प्रस्थ, सन्यास वर्णन व निवृत्ति कथन, माता, पिता, गुरु भक्ति कथन धर्म मर्यादा वर्णन,

छंद ३३ से ४० तक—गुरु धर्म व धर्म चरण कथन ४ भेद। देश धर्म कुल धर्म, गुरु धर्म, वेद धर्म, मुख्य मर्यादा वेद की वर्णन। कर्म—उपासना—ज्ञान कांड कथन,

छंद ४१ से ५४ तक—चार वेद वर्णों की शिव उपासना तीन देव व शक्ति कथन, अद्वैत वर्णन, शिव महिमा, शिव भक्ति की पुष्टता कथन शक्ति से त्रिदेव शक्ति उत्पत्ति वर्णन। ब्रह्म स्वरूप वर्णन। तीनों शक्तियों से तीनों देवताओं की उत्पत्ति कथन,

छंद ५५ से ७३ तक—तीनों गुण और उनसे सृष्टि वर्णन। पाप भाव तथा कर्म वर्णन। अनन्त रूप वर्णन गुरु स्वरूप कथन, अज्ञानकी सात दशाओं का कथन। बीज जागृत, जागृता, महा जागृत, स्वप्न जागृति, सुषुप्त, स्वप्न सुषुप्ति कथन तक,

छंद ७४ से ११४ तक—मन्त्र महत्व कथन, सदा दृढ़ लक्षण कथन। गायत्री मन्त्र मानसी मन्त्र, गायत्री मन्त्र वर्णन। अष्टांग भक्ति कथन। अष्टांग योग कथन। यम, नियम, आसन, प्रत्याहार, प्राणायाम धारणा ध्यान, और समाधि वर्णन पर कथन।

छंद ११५ से १४१ तक—ज्ञान वर्णन—भासित होने का वर्णन। संत मार्ग व कुमार्ग त्याग वर्णन। तितिक्षा व दया का होना, इत्यादि की निवृत्ति। जिज्ञासा कथन, बुद्धि वर्णन इत्यादि भाव वर्णन। तत्पश्चात भाव कथन उसकी सातों भूमियों का कथन। चारि पदार्थ का अभाव ही ज्ञान की पूर्णता है। गुरुका भाव कथन। ज्ञान व मन बुद्धि चित्त अहंकार संबंध कथन इससे वैराग्य की उत्पत्ति कथन।

छंद १४२ से १६७ तक—वैराग्य लक्षण सिद्धि कथन। प्रेम निवृत्ति साधना, प्रकार व मान कर्म। अष्टांग योग अथवा भक्ति, इ गुण व गत भूमि पर आकर निर्योग प्राप्ति। ज्ञानरूप नेत्र औषध सुनिश्चित प्राप्ति। परम हंस गति इत्यादि भेद दूर होना। कल्याण निश्चय अवस्था प्राप्ति सबमें ब्रह्म की व्यापकता माया से अलग रहना। उस समय पार्वती आदि से निवृत्त हो जाना। आत्माराम कर्म विशिष्ट रहकर करना।

संख्या १४ औ। रुक्मिणी चरित्र रचयिता—अमर अनंत कागज-देशी, पत्र—१०, आकार—८ × ४ इंच, परिमाण—(अनुष्टुप) १५० पूर्ण रूप—उत्तम पद लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८५३, प्राप्तिस्थान—प्रधान अध्यापक लाल बनारसी दास जी बनारसी।

आदि—अथ श्री रुक्मिणी चरित्र लिख्यते ॥ दोहा ॥ रुक्मिणी पद गुरुनाथ के उत्तम शुभ उपदेश। रुक्मिणी चरित्र मर्यादा के उत्तम सुख अशेष ॥ १ ॥ सुख नाम राजा भये धर्म धर्म निवास देश भार पूर्ण उन भक्त पालहिं पुत्र समान ॥ २ ॥

× × × × ×

संख्या १५ ए. विश्वनाथ रचयिता—अमरपुरी, कागज—देशी पत्र—१०, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८ परिमाण (अनुष्टुप) १०० रूप—प्राचीन

लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७२६ = १६६६ ई०, लिपिकाल—स० १९२६ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामप्रसाद मिश्र, ग्राम—जगजीवनपुर, डाकघर ओयल, जिला खीरी (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ गीता भारत को मतो एकादश की युक्ति। अष्टा वक्र वसिष्ट पुनि कछुक आपनी जुक्ति ॥ नमो नमो श्री राम जू सचिदानद सरूप। जेहि जाने जग सून्य वत नासै भ्रम तम कूप ॥ राम मया सत गुरु दया साध संग जव होय। तव प्राणी जानै कछू रह्यो विपय रस भोय ॥ पग वदन आनद जुत कर श्री देव मुरार। विचार माल वर्णन करू मौनी ज्यों उर धार ॥ यह मैं मम यह नहिं मम सव विकल्प भय छीन। परमात्मा पूरण सवल जानि मौनता लीन।

अंत—सो० ॥ सत्रह सै छव्वीस संवत् माधव मास शुभ मो मति जितक हुतीस तेतिक वरनी प्रगट कर ॥दो०॥ गीता भारत को मतो एकादश की जुक्ति अष्टावक्र वशिष्ट पुनि कछुक आपनी युक्ति ॥ सर्वे इंद्रिय के गुणन को ग्राहक विश्वेवीश। वर्जित सव इंद्रियन सों अनाशक्त जगदीश ॥ विना ज्ञान ये पंच ही परे फद में जाय। योही जीव अज्ञान ते रह्यो विपय मन लाय ॥ इति श्री विचार माल अनाथपुरी सन्यासी कृत अष्टमो विश्राम समाप्तम् लिपत रामसागर ग्रामा मध्ये सवत् १९२९ वि० ॥

विपय—गुरू और शिष्य का आचारिक और आध्यात्मिक विपय पर सवाद ॥

संख्या १५ वी. विचारमाल, रचयिता—श्री अनाथपुरी, कागज—साधारण मिल, पत्र—२२, आकार—८ × ३½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट) ८, परिमाण (अनुष्टुप) २००, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२६ = १६६९ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला पुरुषोत्तमदास रईस, कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥

नमो नमो श्री राम जू सत चित आनँद रूप।
जेहि जानै जग स्वपन वत नासै भ्रम तम कूप ॥१॥
राम मया सत गुरु दया साधु सग जव होइ।
तव प्रानी जानै कछू रह्यो विपय रस भोइ ॥२॥

अत—हौ अनाथ केतक सुमति वरनो माल विचार।
राम मया सत गुरु दया साध संग निरधार ॥३९॥

× × × × ×

लिपै पढ़ै अति प्रीति जुत अरु पुनि करै विचार।
छिन छिन ज्ञान प्रकास ते होइ सो रुचिर प्रकार ॥४१॥

× × × × ×

गीता भरथरि को मतो येकादस की जुक्ति।
अष्ट वक्र वसिष्ट मुनि कछुक वेद की उक्ति ॥४३॥
इति श्री विचार माल अष्टमो विश्राम सपूर्ण शुभ मस्तु ॥

संख्या १६. श्री मद्भागवत दशमस्कंध भाषा, रचयिता—अंगदशास्त्री (अमामर्दपुर), कागज—देशी, पत्र—४००, आकार १०×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप) ६६५७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४२ = १८८५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० मुरलीधर दूबे ग्राम—लहरपुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दशम स्कंध भाषा लिख्यते ॥ श्री राजा परीक्षित प्रश्न करते हैं सुकदेव जी से कि हे महाराज पूर्व नवम स्कंध में सूर्यवंश और चन्द्रवंश विस्तार पूर्वक कहो और दोनों वंश के राजान को आश्चर्य चरित्र कहो। हे मुनिन में श्रेष्ठ धर्मशील महाराज यदु को वंस निरंतर अच्छी तरह से कहो तिन महाराज यदु के वंश में परिपूर्ण रूप से अवतार लेकर श्री कृष्ण महाराज ने जो लीला चरित्र कर सो हमारे संमुख वर्णन कीजिये। संपूरन प्राणिन के रक्षा करन हारे भगवान ने यदु वंश में अवतार लेकर जो लीला करी तिनको हमारे आगे विस्तार पूर्वक कथन कीजिये ॥ संसार में तीन प्रकार के मनुष्य है एक तो ज्ञानी द्वितीय मुमुक्षु। तृतीय विषयी इन तीनो प्रकार के मनुष्यन को उत्तम श्लोक भगवान के चरित्र प्रिय है।

अंत—इति श्री यजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिनी शाखाध्ययन वैयाघ्रपद गोत्र जात श्री मधुपति जयकिशोर देवारमज विश्वामित्र पुराधिप श्री गिरि प्रसाद वर्मांज्ञा अमामर्दपुर निवासी पंडित अंगद शर्मा शास्त्रि विरचितायां श्री मद्भागवतार्थ दशम स्कंध पूर्वार्ध व उत्तरार्ध सम्पूर्ण समाप्त। ॐ तत सत गोपी जन वल्लभार्पण मस्तु ओं शांति शांति शांति ॥ संवत १९४२ लिपतं रामगिरि गोसाईं लहरपुर मध्ये चैत्र कृष्ण ७ सप्तमी ॥

विषय—दशम स्कंध भागवत का पूर्वार्ध व उत्तरार्ध का भाषा में वर्णन।

संख्या १७. बारहमासा, रचयिता—भंगनराय उर्फ रसाल कवि (बिलग्राम) कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—९×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११ परिमाण (अनुष्टुप) ५२०, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८८६ = १८२९, लिपिकाल—सं० १९६१ = १९०४, प्राप्तिस्थान—ठा० बलवंतसिंह ग्राम—छोमामऊ, डाकघर संडीला, जिला हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ रसाल कवि रचित बारहमासा लिख्यते। हरिगीतिका छंद—कारी अषाढ़ घुमड़ गाजी पीर नीर बढ़ावई, धुरि जोरि चहुँओर निबरे झक झोर पवन सतावई। मनि सदपि सप र धाव करि तम सदपि वनिता तावई। उन रसिक रास रसाल हरि बिन धीर बीर न आवई।

अंत—वसु[8] वसु[8] सिद्धि[8] अरु चन्द्र[1] संवत् कार्तिक दशमि तिथि। कृष्ण पक्ष गुरु वार बासर जानहु देवगुरु ॥ ६० ॥ विनय रसाल कविन सों करत अपार। बिगरो वर्ण सँवारहु सोधि विचार ॥ इति सुकवि रसाल रचित विरह बारहमासा समाप्त ॥ शुभ ॥ गुण[3] रस[6] निधि[9] शशि[1] साल माह अमावस सोमदिन माधि लिख्यो हरिलाल सुरति निरखि समिपो सुजन। राज कुंज बलवन्त नृपति सुथान छोमामऊ। मत प्रियवर गुणवन्त तिनके हित प्रति लिपि किसो

॥ शुभ श्री रस्तु ॥

विषय—इस पुस्तक में कवि ने राधिका का विरह कृष्ण प्रति बारहो महीनों में वर्णन किया है।

संख्या १८. यूनानीसार, रचयिता—हकीम शेख मुहम्मद असगर हुसेन (फर्रुखाबाद), कागज—देशी, पत्र-८०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २३, परिमाण (अनुष्टुप) १२२०, पूर्ण, रूप—दीमक लगी, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, लिपिकाल—सं० १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवनारायण, ग्राम—बड़ेला, डाकघर बिसवाँ, जिला सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ यूनानी सार लिष्यते ॥ दोहा ॥ अलह नाम छवि देत यों ग्रंथन के शिर आइ। ज्यों राजन की मुकुट तें अति सोभा सर साइ ॥ परमेश्वर को प्रणाम करके असगर हुसेन रहने वाला फरुखाबाद का वास्ते बेहतरी और फायदे हिन्दुस्तानी भाइयों के यह ग्रंथ सूक्ष्म रचता है ॥ इस कारन की वैद्यक की विद्या तो अब पृथ्वी पर से अलोप हो गई क्योंकि वह विद्या तो परीक्षा की है ॥ और सैकड़ों बरस से वैद्यों में कोई ऐसा बुद्धिमान मनस्वी तेजस्वी पैदा नहीं हुआ कि वह तजरुबा करके इस विद्या को बढ़ाता बल्कि जब मुसलमानों की अमलदारी हिन्दुस्तान में हुई तब से इसका नाम हो गया। बहुत पुराने और मातबर ग्रंथों का तो नाम भी बाकी नही रहा दो चार ग्रंथ जैसे शुश्रुत, चरक व बहार करन, भोज, भेद, बागभट, रस रत्नाकर, सारंगधर व बहंगसेन व चिंतामणि व माधौ निदान व चक्रदत्त रहि गये थे। उनका अब कोई पढ़ने वाला नहीं है यह सब ग्रंथ संस्कृत में हैं ॥ जब तक विद्यार्थी व्याकरण व काव्य व कोष विद्याओं का अभ्यास न करले तब तक वह ग्रंथ समझ नहीं सक्ता है ॥ × × × × तिव्य यूनानी की रीति व दवा करना बनिस्वत वैद्यक के आसान है और सुद्ध भी है इस वास्ते मैंने चाहा कि छोटे छोटे ग्रंथों में थोडा थोड़ा हाल तिव्य यूनानी और डाक्टरी का भाषा में उल्था किया कि वैदों को इसके पढ़ने से दवा इलाज करने का अभ्यास हो जावै और रोगियों की जान बचे इसलिये यह सूक्ष्म पुस्तक निदान चिकित्सा स्थान वर्णन निदान मुताबिक कायदे तिव्य यूनानी के भाषा में उल्था किया और नाम इसका यूनानीसार रखा।

अंत—इति यूनानी सार वैद्यक समाप्त। लिखने वाला प० रामप्रसाद आगरे वाला संवत् १९३९ है ॥

विषय—यूनानी वैद्यक

संख्या १९ ए आल्हाखंड, रचयिता—अवधविहारी लाल (दिसौली) कागज—साधारण, पत्र—१७९, आकार—९½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुष्टुप) ५२३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ब्रजबहादुरलाल, प्रतापगढ़ जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—पानी लै के धावन चलिभा ओ मोहबा में पहुँचा जाइ। क्या गति बरनौं मैं मोहवा की मोसो कछू कही ना जाय ॥ बावन बेंतर की है बेंतर छप्पन बेंतर ऐल मकोइ।

लागे बहुरी बन औ गिरवा चहु दिस लागी है सकच्याइ। चदन ममो मकया गिर के कारे लाग रहे कपटाय।

अंत—बीर बखानी लछिमन जी का जिनका सेषनाग अवतार। बीर बखानी भारत की का सब के सिरे बीर हनुमान। पुरी बखानी नगर अयुध्या जहँ पै रामकिया अवतार। उत्तर ताके सरगद्वारी तापैं बही घाघरा आइ।

विषय—आल्हा ऊदल की अनेक लड़ाइयों का वर्णन।

संख्या १६ बी. आल्हा (हंसल हरन), रचयिता—भवमविहारी काछ (दिसौली सुलतानपुर) कागज—सामान्य, पत्र—९०, आकार—९×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप) १८००, खंडित रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर कन्हैयासिंह, ग्राम—पवियागार, डाकघर—कटरा मेदिनीगंज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ सावर्णंड ॥

नगर वर्णन

पाती लैकै धावन चलिमा औ मोहबा में पहुँचा आइ। क्या गति बरनौं मैं मोहबा की मोसो कछू कही ना जाइ॥ बावन बँगर औ है मेंतर छप्पन बँगर पे कमलोइ। लागे बहुरी बन औ गिरवा चहुँदिसि लागी हैं सकच्याइ॥ चंदन लागे मलिया गिरि के कारे नाग रहे लपटाइ। टेसू फूले हैं जंगल मा मानों घरी अंगारन ढार॥ ऊँचे ऊँचे हैं घन बहुरी तिनके नीचे तार खजूर। तिनके बिच बिच है बनवासी ऊपर दिखै पुरैया बाँस॥

अंत—बीर बखानें लछिमन जी को जिनका सेष नाग अवतार। बीर बखानें भारत की का सबके सिरे बीर हनुमान॥ पुरी बखानीं नगर अजुध्या जहँ पै राम किया अवतार। उत्तर ताके सरगद्वारी तापैं बही घाघरा आइ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—नगर वर्णन।
(२) ,, ६ से ,, ७ तक—बँगला वर्णन।
(३) ,, ८ से ,, ११ तक—समाज वर्णन।
(४) ,, १२ से ,, १६ तक—घोड़ा वर्णन।
(५) ,, १६ से ,, १८ तक—हाथी वर्णन।
(६) ,, १८ से ,, २० तक—ढैर वर्णन।
(७) ,, २० से ,, २२ तक—तोप वर्णन।
(८) ,, २१ से ,, २७ तक—सुभटों के शृंगार का वर्णन।
(९) ,, २८ से ,, ३० तक—तम्बू वर्णन।
(१०) ,, ३० से ,, ३४ तक—जोगी शृंगार वर्णन।

॥ साज खंड समाप्त ॥

(२) पृ० ३५ से ४४ तक—ब्याह अर्थात् मड़वखंड। न्योता वर्णन, जोगी बीज वर्णन, विवाह समाचार वर्णन।

(३) पृ० ४५ से ६१ तक—लड़ाई खंड। फौज वर्णन, फौजा वर्णन, रथ इत्यादि वर्णन। बीर शृंगार वर्णन, भातों की तैयारी घोड़ा चलने व देवी के समाज का वर्णन।

(४) पृ० ६४ मे १२१ तक—इंदल हरण पर सोना का विलाप, फैटी वर्णन, सोना चील्ह वर्णन, ऊदल का इदल को खोजना। छोहरिन का खोजना।

(५) पृ० १२२ मे १४५ तक (विलाप खड) ऊदल के थदी होने पर विलाप, तीनों हाथियों का वर्णन।

(६) पृ० १४६ से १८० तक—सुमिरन खड।

(७) पृ० १८० मे अन्त तक—लुप्त।

संख्या १६ सी वारहमासा, रचयिता—अवधविहारी लाल (डिखौली सुल्तानपुर), कागज—देशी, पत्र—८६, आकार—७½×४½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप) ६४५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३७=१८८० ई०, प्राप्तिस्थान—व्रजवहादुर लाल, प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—शिव, श्री गणेशायनम । सोरठा। रसिक शिरोमनि श्याम जय नंद नदन गुन भवन। करहु कृपा सुप धाम मुरली धर रावा रवन॥ पुरवहु दीन दयाल करौं विनय कर जोरि मैं। कहत विहारी लाल वारह मासा प्रेम का।

अत—॥दोहा। विछुरो प्रीतम पाइ धन मन में अति हरखाति। मिलि मिलि तन मन वारती पिय लखि वलि वलि जाति। सम्वतसर विक्रम सरस नव दस शत सैंतीस श्रावण शुक्ला सप्तमी उत्तम दिन रजनीस। नदी गोमती तट वसैं वसै डिखौली ग्राम। धन्य जिले सुलतानपुर सकल गुनिन को धाम। चित्रगुप्त वशावली का यथा वरन उदार। अवध विहारीलाल कवि अति मति मंद गँवार॥ पढ़ै गुनै समुझै सुनै जो कवि कुल सिरताज। ताकी सव मन कामना पुरवहिंगे व्रज राज। इति श्री वारहमास अवध विहारी लाल कृत समाप्त। शुभ मस्तु।

विपय—विरहिनी की वारहों महीने की विरह दशा का करुणापूर्ण वर्णन॥

संख्या १६ डी अज्ञात, रचयिता—अवधविहारी लाल (डिखौली सुलतानपुर) कागज—सामान्य, पत्र—५१, आकार—८½×६¾ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ११, परिमाण (अनुष्टुप) ८४५, खडित, रूप—प्राचीन जीर्ण, लिपि—फारसी, नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० महावीर प्रसाद मिश्र, ग्राम—भैंगवा, जिला—प्रतापगढ़, (अवध)।

आदि—कहा निज लाली पै विम्व मरै, लवे लाल निगारम रा दरियाव। वटे वढ़ै क्या तु वमण्ड करै, रुखे रोशन ऊ रा वुर्वा महताव॥ सकट अनित्य तु फूले झरै, वर खूविये ऊ वुर्वा यारे गुलाव। सचेत हो जावै विहारी परै, वनिगाहश दावा कुनी चि शराव॥ ७॥ खेहदया डाँड़ सो मलाह पिया प्यारे वेगि, किश्तिये फिराक·रा व साहिले नजात आर॥१०१॥ कैसो उत्तम हो अशन लगै फीक विन लौन, ताते विरची रस लिये, कविता मे गुन भौन॥

विपय—विरह वर्णन, उपालभ, मिलनोत्कंठा निज दैन्यदशा कृपा कटाक्ष की प्रार्थना आदि।

(३) पृ० १०२—कवि परिचय '—गंगा सरजू मध्य मैं, वसै दिखौली ग्राम। धन्य जिला सुल्तानपुर, सकल गुनन को धाम॥ कायथ श्री वास्तव्य हौं, अवध विहारी नाम। है प्रतापगढ़ वास अव, जानहु सद्गुन धाम॥

संख्या १६ ई. अख़ाम, रचयिता—अवध बिहारी लाल दिवौली, (सुल्तानपुर), कागज साधारण, पत्र-१७, आकार—८३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११, परिमाण (अनुष्टुप) १२२५, खंडित, रूप—प्राचीन, जीर्ण, लिपि—फ़ारसी, प्राप्तिस्थान—पं० महावीर प्रसाद मिश्र, ग्राम—भैंगवा जिला प्रतापगढ़।

आदि—दौलत आम निसार कुनम जब दर्शे बिहारी ब मोहनी मूरति। कुनसी गम हजहार कुनम, जो मिलै हँस के वो साँवरी सूरति ॥ वाव के सबो क्यार कुनम, रही चौरसी बिजोग में मैं गुन तोरति। हासिल वस्ल सिंगार कुनम, दिन रैन रहै चित माँहिं बिसूरति ॥ ५ ॥ × × × वाद बहार बियाग हरिम्द करी जान जौहम कारन कारन। रग ब रग कहाँ गरचीद लगे तद फूलन वास बिगारन ॥ दौर सबाब बयार्वा रमीद, बिसारी बिहारी पिया केहि कारन। कुज्जते वस्ल दिरमन म चशीद, अबी किम आय मिले गिरिधारन ॥ ६ ॥ हयाते अज्री गर शावद मिला दोस्त बेकार। मीत पास आओ सदा, ताके बस संसार ॥ मिस्ल मफ्क शुद चश्म मा, पि जाम सुरत मसाल। मिलन दिवस गँवाय अब बीतत रैन जँजाल ॥ अगवे बा कसी राज दिल करद पिनहाँ हार। प्रगट भये ते हानि है बिदपै या संसार ॥

अंत—आवन बिहग लगी गुंजन सुअ ग लगे आमद बहार ईक यारम न ददार। कोयल की सुनि कूक हिये में समानी हूक। हरस लाँ शुदंद चश्मा हा जि चश्मतर ॥ बिरह अनल दहि रति पति रार सहि। बाव आर बसे शुदह बेकरारो मजतर। स्याम जू के बिछुरन भाव ते बिहारी अब, खून शुदा जि दर्द दिल व पारा पारा शुद जिगर ॥ हम अनुमानी कन्त मिलि हैं वसन्त माँहिं, हासिल न शुद बमन ई ग्याल खाम शुद। मिलन की औध अई पाती हू पठाई नाहिं, मारा घरर ताब शुद व रक्क जिगर फाम शुद ॥ दौरा चाही स्याम मई पै न हीं मकाम मई आरज़ में शवाब दरीं आरजू तमाम शुद। मीत हू न अंक लग्यो बलि के कलंक लग्यो, दुनिया दर इश्क वे बिहारी बदनाम शुद ॥

विषय—(१) पृ० १ से ४ तक—नष्ट हो गये हैं। (२) पृ० ५ से ८ तक—संयोग सुख का मूल्य। (३) पृ० ८ से १२८ तक—वियोग वर्णन तथा कृष्ण भक्ति सम्बन्धी दोहावली।

संख्या २० चौताल पचासा, रचयिता औरी ख़ास, कागज साधारण, पत्र ९, आकार—८ × ६३/४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १० परिमाण (अनुष्टुप) १२५, रूप—नवीन, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—पं० सत्यनारायण त्रिपाठी (कौंडा निवासी) डाकघर गढ़वारा जिला प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ चौताल पचासा—सैजिया पर सावन हार यार नहिं आये। वैसी सोच करत मनिवन में हमरी सुधि बिसराये। बिरहिनि पिया दई नहिं आवत मोहि काम कल करपावे ॥ यार० ॥ १ ॥ भूषण अङ्ग बसन तजि दीन्हो स्याम पाम बिसरावे। अमर गुलाब धाहि नहिं भावत सखि आवन जोर जनावे ॥ यार० ॥ २ ॥ जोगिन होइ गलियन में घुमरौं अङ्ग भभूत लगावे। खोजि उधा चहुँ ओर गिहारत पिया हमरी

सुधि बिसराये ॥ यार० ॥ ३ ॥ नागिन सेज देखि डर लागत काम कला छवि छाये। औरी लाल काम नहिं मानत दोउ नयनन नीर भरि आये ॥ यार नहि० आये ॥४॥

अंत—शिवशंकर जै महादेव शम्भु त्रिपुरारी। वाहन वृषभ दग मन शोभित वसन विभूषण धारी ॥जटा मुकुट शिर गग विराजत तुम हौ जनके सुखकारी ॥ शम्भु त्रि० ॥ १ ॥ मुंडमाल कर डमरु विराजत शोभित शैल कुमारी। नाचत शिवगण विनय करतु हैं जहाँ गावत है श्रुति चारी ॥ शम्भु त्रि० ॥ २ ॥ जै शिवशंकर जै वम्भोला जय प्रभुपति मदनारी। जाको ध्यान किये दुख छूटत सब होत है जीव सुखारी ॥ शम्भु त्रि० ॥ ३ ॥ करिये कृपा जानि जन मोपर आये शरण तिहारी। औरी लाल मजु श्याम ललित छवि हरिये शिव विपति हमारी ॥ शम्भु त्रि० ॥ ४ ॥

विषय—विरह, राधाकृष्ण मिलन, गेंदलीला, गेंद के व्याज से सखी से परिहास, शृंगार वर्णन, रामचन्द्रजी के चरण सरोज की प्रशंसा व शोभा का वर्णन। द्विज भागीरथी का एक चौताला। वृषभानु किशोरी का (प्रातः काल) सखियों द्वारा जगाया जाना। शंकर विनय। इत्यादि।

संख्या २१. रघुनाथ सवारी, रचयिता—अवध या अयोध्याप्रसाद वाजपेयी सातनपुरवा (रायबरेली), कागज—साधारण, पत्र—२५, आकार—७¾ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुष्टुप) १८६, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्ति-स्थान—ठाकुर रनधीर सिंह जी जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री रघुनाथ सवारी ॥ १ ॥ छंद त्रिभंगी ॥ जागो जग जीवन शोभा सीवन जननी जीवन धन वारे। वंदी गुण गाये अनुज सखाये बोलन आये प्रिय कारे ॥ प्राची दिन काली विदित वताली कर कर माली झल कारे। ग्रह दीपक हीके अंशु ससी के लागत फीके नभ तारे ॥ १ ॥

अंत—मम सठता साठी हरि गुन गांठी पूरन पाठी राम कृपा। रघुनाथ सवारी घरनि सुवांरी 'अवध' गवाँरी त्रपित प्रपा ॥ दस आठ आठ पट कला सरन ठट राग सहित रट शिव सगी। ज्ञानी गुन गेहिक भवतिक जेहिक दैविक देहिक तिर भंगी ॥ ६१ ॥ छंद ॥ नृप वर कुमार रघुपति उदार संतन अधार सुदर शिकार ॥ ६२ ॥ इति श्री मन्महाराज चक्र-चिंता मणि श्री रामचन्द्र आपेटस्य वर्णनो नाम द्वितीयो कला ॥ २ ॥ श्रावन मासे कृश्न पक्षे तिथौ पंचम्यां बुधवासरे मिदं पुस्तकं लिखा शिवप्रसाद खानी पुरस्य सुभम् ॥

विषय—श्री रघुनाथ जीके आखेट और सवारी का वर्णन (त्रिभंग छंदों में)।

संख्या २२. औषधि संग्रह, रचयिता—वाबूराम पांडे (गोंड़ा—प्रतापगढ़), कागज—साधारण, पत्र—७३, आकार—८ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुष्टुप) २००७, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०२, लिपिकाल—सं० १८०२, प्राप्तिस्थान—पं० भगवानदत्त, ग्राम—बेनीपुर, डाकघर, माधोगंज, जिला प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—(पृष्ठ १५) ॥ अथ लहसुनादि ॥ लहसुने कर जबा सेर दुराइ तिकस्याइ पसेरी ५ ॥ ५ धरिसब पसेरी ५ ॥ ५ सोंठि बड़ी पीपरि मरिच अतिशा मैथी-पिपरामूर जीरा अजमोदा चीतमाव जवाइन छोटी पुरासानी जवाइन कूठ हींगु इन्द्राइनी सौंग तज पत्रजनाम केसरि तालीस पांचो लोन टंक एक एक अबर औषध टांक तीन तीन लै किया है पहले ऊपर लहसुन तिकके तेल में पीसब तौं सब औषध चूरन कै कै सावब लहसुने क जबा थोई कै पीसब संधि राषब दिन सात ७ पाछे गोली दिमाइ कै मोवा बांधब सिद्धि मवाति पैसा भरि पाइ तौ सर्व वायु जाइ व्याधि सर्व जाइ पुष्ट होइ भूप लागी ॥ ० ॥

अंत—सीता राम के धर्म सों, रेवती तुम्ह जस होइ। वाबुहि मन में राषियो, कृपा रावरी सोइ ॥ १ ॥ रेवति राम नाम कइ, जासहिं नर भीर ईस। मनीकों मन में राषियो, हूँ मीर बकसीस ॥ २ ॥ रेवति राम तुम्ह जस बढ़ो, अब दाया कइ मोहि। संतति संपति जसु बढ़ो, देहि विधाता तोहि ॥ ३ ॥ सो विधना मोही करै, जाइ रेवति के पास। मनी के मन में बाधि हैं जासि आपनो दास ॥ ४ ॥ × × × सकल सभा के धर्म सों। औषध हम लिपि दीन्ह। रेवति राम तुम जस बढ़ै, यही हमारी चीन्ह ॥ ७ ॥

ग्रंथ का आधार—तीनि ग्रंथ मथि देषि कै, पोथी हम लिपि दीन्ह।
बंगसेनि उद्दीस औ सारंगधर को चीन्ह ॥

संख्या २१ ए. पद पंचासिका रचयिता—बलीलाल, कागज-देशी, पत्र-१४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप) ४२१, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९७ = १८४० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवकंठ दूबे, ग्राम—देवरापुर, डाकघर खीरी, जिला खीरी (अवध)

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पद पंचासिका भाषा लिष्यते ॥ चौ० ॥ श्री रवि को करिकै प्रणाम। वाराह मिहर सुत पृथुयश नाम। अर्थ गहन प्रश्न को सार। कियो ग्रंथ में पर उपकार ॥ जो प्रश्न समय इतने प्रश्नस्थान विचारने जिस समय प्रश्न कर्ता प्रश्न पूछे तिस समय लग्न विचारना और तात्कालिक लग्न ते बिछुरना सो देखना। जब प्रश्नक पूछे अमुक स्थान से बिछुरना होगा वा नहीं इसका विचार प्रश्न लग्न से देखना स्थान स्थान से प्रवेश जाना देखना सप्तम से प्रवेश से आगमन विचारना यह विचार ग्रहों के बलाबल से कहना योग्य जो लग्न विषे चर लग्न होय और अपना स्वामी बैठा होय अथवा शुभ ग्रह देखता होय तो च्युति अर्थात बिछुरना न होय ॥

अंत – अथ लग्न स्वामिनः वर्ण नाम माह तहाँ शुक्र बृहस्पति लग्नाधिपति होय तौ ब्राह्मण जानिये और सूर्य मंगल होय तौ क्षत्री बूझिये। चंद्रमा होय तौ वैश्य बुध होय तौ शूद्र शनिश्चर होय तौ वर्णसंकर जानिये हीन वर्ण भी कहिये यह अपनी बुद्धि के बल से विचार करना श्री पंडित बलीलाल कृत ॥ पद पंचासिकायां भाषा मिश्रक कृत प्रश्नाध्याय समाप्तः लिपर्त भट्ट मुकुंदराम आगरे मध्ये संवत १८९७ वि० श्रावण शुक्ला ७

विषय – ज्योतिष।

संख्या २३ बी पट पचासिका, रचयिता—वद्री लाल, कागज देशी, पत्र–३२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप) ६७२, पूर्ण, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० अजयपाल सिंह, ग्राम—सिकोरावाद, डाकघर मुरादावाद, जिला उन्नाव (अवध)।

आदि—२३ ए के समान

अंत—इति श्री प० वद्रीलाल कृत पट पचासिकायां भाषायां मिश्र फल प्रश्नाध्याय समाप्तः लिषत गौरी शकर त्रिपाठी जनकपुर मध्ये श्रावण शुक्ल सप्तमी संवत १९३३ – वि०क्ष और अति वृद्ध सत्तर वर्ष से उपर का जानिये ॥

विषय—ज्योतिष।

संख्या २३ सी. पट पंचासिका, रचयिता—वद्रीलाल, कागज-देशी, पत्र–३२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप) ६७२, पूर्ण, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६३३ = १९७६ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवदुलारे, ग्राम—लखनपुर, डाकघर मगरैरा, जिला उन्नाव।

आदि—२३ ए के समान

संख्या २४ ए. गोपी विरह छंदावली, रचयिता—वैजनाथ (वादशाहपुर) कागज-देशी, पत्र–२८, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २६, परिमाण (अनुष्टुप) ४२८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२४, लिपिकाल—सं १६४८, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रामपाल सिंह, ग्राम—दातागांव, डाकघर वड़ताला, जिला सीतापुर।

आदि—अथ गोपी विरह छंदावली लिष्यते ॥ श्री गणेशायनमः ॥ दोहा सत कृपाल समान चित तिनके पद रज वदि। कवि जन तुलसी आदि जे तिन कहुं वदि अनदि ॥ १ ॥ छद हरिपद ॥ वदौं श्री गिरजा सुत गिरजा गिरजा पति गिरधारी ॥ गुरु पद वदि मातु पितु के पद कहौं कथा सुष सारी ॥ सवत वनइस से चौविस में अगहन दुइज विचारी कृष्ण पक्ष वुध नषत रोहिनी कृष्ण चरण उर धारी ॥ जिला जवनपुर परगन मुगर वादशाहपुर जाऊ ॥ वास हमारो तेहि के उत्तर नौवाडांदी ठांऊ। नाम हमारो वैजनाथ है विप्र त्रिपाठी होमैं। व्रज में ऊधौ जेहि विधि आये सो कछु चरित कहौं मैं ॥ जो सव लीला नद लाल की वरनि सकौं मै नाही ॥ ताते कछुक विरह वरनत हौं समुझि सुगम मन माहीं ॥ श्री नद लाल कहेउ ऊधौ सो वृन्दावन को जाहू। हमरे विगह विकल व्रज वाला देहु ज्ञान सव काहू ॥ अस कहि पाती लिषत सांवरो नद जसोदा जी को प्रेम पियारी मिलन हमारी सषी सषा सवही को ॥ ७ ॥

अत—यह गोपी ऊधौ की वातें कहेव यथा मति गाई। भूल चूक जो होय हमारी कवि जन लेहिं वनाई ॥ २१ फिरि फिरि संत चरण वदन करि वर मांगौ कर जोरी। कृष्ण चरण रति होहि अधिक मोहिं जांची इहै निहोरी ॥ २२ ॥ नहिं कछु पिंगल मत मैं जानौ नहिं कविजन संग कीन्हे। एक भरोस कृष्ण पद वंदन और उपाय न कीन्हे ॥ २३ ॥ तीस वर्ष की उमरि हमारी नहीं वेद अधिकारी। जेहि तेहि विधि हरि चरित वषानौ जान्यौ

मिव उपकारी ॥ २४ ॥ श्री कंज गावै यह लीला को तेहि सुख देहि मुरारी । अवर बड़ाई करि नहिं आवै नाम महातम भारी ॥ २५ ॥ दो० । श्री सिव सिवा समेत पद बन्दौं बारहिं बार । राधाकृष्ण चरण रति चाहौं सबनिधि पार ॥ सोरठा श्री काशी में आय फागुन दसमी जानि कै भाप्यो ग्रंथ बनाय शुक्ल पक्ष में थापि गुरु ॥ इति श्री गोपी विरहे त्रियोदशो अध्याय समाप्तः संवत् १६७८ लिपत यथा राम ब्राह्मण सरयूपारी मार्ग सीर्ष ७ शुक्ल पक्ष ॥

विषय—श्री कृष्ण का उद्धव को ब्रज में भेजना और गोपियों की विरह कथा का वर्णन ॥

संख्या २४ बी. काम विलास, रचयिता—बैजनाथ कवि, कागज—सामान्य, पत्र—१४१, आकार—८½ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ७, परिमाण (अनुष्टुप) १२५०, खंडित । रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० ११२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नू लालजी पुस्तकालय, गुराखपुर, गया ।

आदि—अथ काम विलास लिख्यते ॥ श्री लम्बोदर गज बदन, असरन सरन हमेस । विघ्न हरन सब सुख करन, सो इक रदन गनेस ॥ १ ॥ कवित्त कुलिस समान मेरु विपन विनासिबे मैं का कमन प्रमगल कुठार है विसार हैं । हरि ताप सकल अनेक सित भानु है कै, अरितम नासिबे में भानु से निहारे हैं ॥ दावानल दारिद दवाइबे में मानो धन, अनै बैज नाथ आस सावरी बिचार हैं । परम पुनीत औ प्रताप भाम त्यौं प्रताप, सुंदर रदन गन नायक तिहारे हैं ॥ २ ॥

अंत—मुकुट कमल मुगदर चँवर, चक्र ढाल तलवार । धनुषबान तिरसूल कहि, अंकुस बहुरि कुठार ॥ कंकन रसना कूर्म पुनि मोर भरनि पर हाठ । पुनि कपाट कहि अभय गति, त्रिपदी बहुरि पहार ॥

इति श्री मद्भगत आश्रिर प्रतापवकी बाबू सीताराम ज्ञान सारेन, सुकवि द्विजेशात्मज बैजनाथ विरचिते काम विलासे पंचधा विरह वर्णन नाम एकादशो उल्लास ॥ ११ ॥ समाप्तः शुभ मस्तु लिपा सूर्य्य गुलाम सिंह सोहनी बासी जिला जउनपुर आज्ञानुसार श्री ब्रह्म मूर्ति बैजनाथ कवि संवत् ११२८ माघ कृष्ण १० सोमवासरे सायकाले समाप्ते ।

विषय—(१) पृ० १ से ७७ तक—मंगलाचरण राजवंस वर्णन—'भनै बैजनाथ बाबू सीताराम तेरो ज्ञान गौरव बड़ाई सेस सारदा गनेस से' ।

× × × ×

आठ सुवन सिय राम के आठहुँ बुधि अगाध । दया दान विद्या निपुन, निपुनराम अबराध ॥ × × × × गुरु बकस लाल । × × भक्ति चित दयाल ॥ × × × ॥ कुशलाल हरचंद के आवत जग व्यवहार । × × × × ॥ रैयतलाल कृपाल चित्त कर जब सजि चढ़त तुरंग ॥ × × × मौयतलाल मित्र रहै तजत करि उमंग ॥ सहायु कहत × × ॥ पसिराम लाल × × ॥ मुकुटसहाय × × ॥ ठाकुर दयाल × × × ॥

पृ० ७५ से २८२ दान वर्णन, नायिका वर्णन नायक लक्षण इत्यादि ।

ग्रंथ-निर्माण—गुनिये जुग ग्राह्मन सिपा, रसि ससि संका चार। माघ शुक्ल श्री पंचमी, भयो ग्रंथ अवतार ॥

सख्या २५. कविता सग्रह, रचयिता—वैजू कवि, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—६×४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप) ६१, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७५ = १८१८ ई०, लिपिकाल १८८० = १८२३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूबे, जिला—गाजीपुर।

आदि—वैठी सीस मंदिर में सुंदरी सवारैं केस मूदि कै केवाड दोऊ छवि को छकतु है। प्रीतिपट लकुट मकुट वनमाल धरे पीको किये भेपु प्रतिविंवना लखतु है। होति निरशेक उर अंक भरि भेटिवे को भूपण पसारत समेटत जगतु है। चौंकत वकत उचकत लचकत झूम झूमत झुकत मुख चूमि ना सकतु है।

अत—कवित्त—सांवली मूरति मेरे वसी कवि वैजू कहै एह लगी रहै सूरति। सूरति स्याम औ राधिका की विसरै न छिनौं में उहा रही ढोरति। छोडि छोडाइ पाइ उहा दधि घाते कृष्ण की तान सो पूरति। पूरति प्रेम तू पूरो रहै मन मेरे वसी रहै सावरी मूरति ॥ २ ॥ कवित्त—सांवली मूरति मेरे वसी चित सोहैं न लोग सुहात न गांवरी। गांवरी मे घव कुजन में हरि हाय कहां मैं ढूदन जाउरी। तौ कुलकानि वड़ी अव लोग लुगाई घरैं सव नाउरी। नाउरी तेरो तिहू पुर में मोहिं आनि वुलाइदे मूरति सांवरी ॥ ४ ॥

विपय—(४) कलियुग में चारों वर्णों द्वारा अपने २ कर्त्तव्यों का त्याग। (५) राम विनय। (६) मित्र के प्रति कविता। (७) शिव का वालकृष्ण के दर्शन के लिये यशोदा से प्रार्थना करना (८) एक सखी की वार्ता दूसरी सखी से (कृष्ण के प्रति) (९) शृगार रस के कवित्त। (१०) कृष्ण की वशी सुनकर गोपियों का आत्मविस्मरण। (११) कृष्ण की दानलीला। (१२) राधा और कृष्ण का सम्मिलन।

सख्या २६. भाषा भरण, रचयिता—वैरीलाल सारस्वत, कागज-देशी, पत्र—३३, आकार—१२×८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २९, परिमाण (अनुष्टुप) ६८७, पूर्ण, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १८२५ = १७६८, लिपिकाल—सं १९४६ = १८८९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णविहारी मिश्र, नयागाँव माडेल हाउस, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः मंगलाचरण दोहा। वेद स्मृति दधि मथन ते मिल्यौ यही घृतसार। व्यापक पुरुप प्रसिद्धि जो सकल श्रृष्टि आधार ॥१॥ चेतन को जो जड़ करै जडहि करै चेतन्य। ताको पाप प्रसिद्धि नर सुख सो भजत अनन्य ॥ २ ॥ × × × ×

रचनाकाल—शर[५]कर[२] वसु[८] विधु[१] वर्ष मे निरमल मधु को पाइ। त्रिदशि और वुव मिलि कियो भाषा भरण सुभाइ ॥८॥

अंत—इति श्री सरस्वती विरचितं भाषा भरण संपूर्ण शुभ मसतु श्री राधा कृष्णाय नमः सवत। रस श्रुति निधि शशि अव्द अरु आश्विन कृष्ण विहारी जीव तृतीया को लिख्यो भाषा भरण सुधारि ॥

संख्या २७ बैतालपचीसी, रचयिता—बैताल कवि, कागज—देसी, पत्र—१२, आकार—५×३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ६ परिमाण (अनुष्टुप) ११६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, मुंडा मिश्रित, लिपिकाल—सं० १७६८=१७११ई०, प्राप्तिस्थान- पं० उमाशंकर दूबे, गाजीपुर।

आदि—श्री गणेशायनमः। दो०—सकल सुगत सेवाति है, सुनि भारत सु कहति। ता परि पुन न जम्मही ससकृत बिर्क गर्मति सीमसैनि सुनि पमकीयो मुख महु पुन न आहि। कौन सुर्ग का स् कहु अगम अमरस काय। सो महि प्रम्म जसंपि नृपति पुनि तैस सब। भारा लख हूँ पुरी गज चीह सहस सुखाहक। कासित कुल अपरम देव सकल गुन मंडन। लोक लोक संत बन महा पातिक भरि पंडन। इन चरैली मन पसे स सुनि अगम अकारम आइ सुख। किहि बिधि कलक सुख रतरै सुक पूर्ण भुप राइ सुख। इहै सुनियै पुनि राइ गयो आतुर सुरपुर कठ। ब्रह्मा-बिसन महेस इंद्र आदि बैठे स ऊ। अरि भंजन रिपु दलन दीर्घा आदरसउ मुनिवर। इषि संकर जंपियो कामि किहि आयौ पुनिवर। बंदि पम मनि मुख बंध अमि तुम संकर आसान करि। बिहसीयो इस जंपी सुश्रम दीयी पुत्र बरदेव सरि।

अंत—बिक्रम नरिंद बेताल कुं सुहरी और बहुथ्यों दयों। हीर चीर पट कूल तीन सै गज मुक्ताहल। अरथ सहसमयमंत हंसि सोमित सुंडाहल। तेजी सहस तुषार पंच सै गांव प्रसिधी॥ बेस सहित पुरवास तास दीनी बहुरिधी। अगबन बसन बहु बिविधि परि भयो महल बिर्क की पो। बिक्रम नरिंद। बेताल कुं सुहरी और बहुथ्यों दीयो॥ परचंड दंड भुव मंड मैं सुनहौ कोई बिक्रम जु सरि। गढ न लंक सम सरिस समबसर नहिं कोइ सायर। गिरि न मेर सम सरिस प्रह न कोई सर्मा दिवा हर। कंचन सम नहीं पात पात बैकी कासिपसिर। काम सरि न कोइ अम देव कोई सर्मा नहीं हरि। मनि बेताल हरि चंद मत अइकार रावनपरी। परचंड दड भुव मंड मैं सुनही कोइ बिक्रम सरी। इति श्री बेताल कवि कृत बेताल पचीसी संपूर्ण।

विषय—प्रसिद्ध बैताल पचीसी की कहानियाँ और नृप बिक्रम की प्रशंसा।

संख्या २८. कान्यकुब्ज बंसावली, रचयिता—पं० बाजीलाल शुक्ल, (ईंदुवा, तह सीरु बिसवाँ, जिला सीतापुर), कागज—देसी, पत्र—१६, आकार—१६×११ ½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप) ६००, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६०=१८०३ लिपिकाल—सं० १८९८=१८४१ ई० प्राप्तिस्थान—पं० गयादीन शुक्ल, ग्राम—मानपुर, डाकघर—बंबौरा जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गनेशायनमः अथ बंसावली लिष्यते॥ अथ कस्यप गोत्र को ब्यौरा लिष्यते॥ कस्यप कस्मीर के बासी। तिनके तनय दयाल सुपरामी। देवल प्रथम अनावर आये। राजा महबर तिन्हे टिकाये। फिर देवल सुराज पुर आये। हित प्रोहित कर तिन्हे दिखाए। देवल तनै भ्यामादत्त भये। तिन्ह बासादत्त के भारे बस घर भये। सिवकी सम्गरोज, गाहरी सुराजपुर उमरी, मनोढ़, गुरसुर, बरुवा, हरिबंसपुर पचौर सिंगामपुर, भयो है तेरह घर भये × × × × ×

अंत--अथ खट कल का व्योरा भरद्वाजोपमन्यश्च सांडिल्यो कस्यो कात्यायन साकृतश्चै व पडैत गोत्र श्रेष्ठ अथ समधिन को व्योरा समाप्त' कवित्त ॥ पढ़ि हैं पुनीत गगाजल से गंगे सों वाले पोरिवाले परे थाप थाप पासे घर के, तिलक तिवारी चत्तूवाले हैं सुगंध वाले सोभित अवस्थी यामें जानों प्रभाकर के । छने चपाकर जग जाहिर नमेले वाले वाला के वेलंद न्याउ भेती सौक्ष वर के । बीस विस्वा बीस के वटेश्वर के हीरावाले उदित उदंद वाजपेई पीत करके ॥ दीक्षित अटेर वाले जाहिर सीकात के और मिश्र धाविहा प्रगट सरवार के । पगट त्रिवेदी हरीवाले नीलकठवाले दुवे धरवाम के निवास कछु घर के आकिन को आकु सिरताज सोठि आये वाले माझ गाव वाले मिश्र ऊंचे घर के गोपिनाथी गरगे गभीरे प्रसिद्धि परसू के उदित मिश्र हैं हिमकर के । इति श्री कान्य कुब्ज वशावली समाप्त कार्तिक मासे कृश्न पठे परेवायां रविवासरे सवत १८९८ लि० प० भैरोप्रसाद शुक्ल ।

विषय—कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की उत्पति और वंशावली ।

संख्या २९ ए. नख शिख वर्णन, रचयिता—बलभद्र, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ४३, परिमाण (अनुष्टुप) ३००, रूप-प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०२ = १७४५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रघुबीरचरण मिश्र डाकघर—बिल्हौर, जिला—कानपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ वलभद्र कृत नख सिख लिख्यते ॥ कवित्त केश वर्णन मरकत सूत किधौं पन्नग के पूत किधौं राजत अभूत तमराज कैसे तार हैं ॥ मख थूल गुन ग्राम सोभित सरस स्याम काम मृग कानन कि कुहू के कुमार हैं ॥ कोप की किरनि जज नील की जरी के तत उपमा अनत चारु चमर सिंगार है ॥ कारे सटकारे भीजे सौंधे सौं सुगध वास वलभद्र ऐसे नव बाला तेरे वार हैं ॥

अंत—॥ छप्पय ॥ सुजानता सीलता सुलज्जता सुदरताई ॥ गुन गभीर ग्यानता चतुर गरुवता गुराई ॥ उज्जवलता सुचि अंग धीरता चित अचलाई ॥ अलपमान मन विमल कमल मुख पिय सुखदाई ॥ मीठे वयन प्रफुल्लित वदन पट परिमल भूषन धरनि ॥ सो भाग भोग सोभित सरस सुविचित्र विधिके सिखनख वरनि ॥ इति श्री वलिभद्र कवि विरचिते सिख नख सपूरन ॥ सवत १८०२ वि० हरी पुकारन मैं गई हरी मिलन की आस । हरी हरी करि टेरती हरी हरीके पास ॥

विषय—नख से सिख तक नायिका की सुदरता का वर्णन ।

संख्या २९ वी. नखशिख वर्णन, रचयिता—बलभद्र, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ४इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ४०, परिमाण (अनुष्टुप) ३१५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८०२, प्राप्तिस्थान—प० शिवकुमार, ग्राम—अहनापुर, डाकघर बसोरा, जिला सीतापुर (अवध) ।

आदि—२९ ए के समान ।

अत—इति श्री वलिभद्र कविकृत सिख नख सपूर्णम् शुभ मस्तु संवत १८०२ वि० जेष्ठ अष्टमयाम सोमवासरे मुकाम विजैपुर सुभस्थान ॥

संख्या ३० स्वरोदय रचयिता—बालचंद उर्फ बालमदास, कागज—सामान्य, पत्र—१८, आकार—८½ × ५½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११, परिमाण (अनुष्टुप) ४५०, खंडित, रूप—जीर्ण, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शिवशंकर राम मिश्र, ग्राम—परिसावाँ, जिला प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—पानी बीच को चर्ण, सेत रंग परकाम। बारू ग्राम तेहि क रूपी, सोरह अंगुल पास ॥ ११ ॥ रंग हरो पवन कौ, तिरछी चाल प्रमान। आठ सु अंगुल मोचले, एवौसम के अस्थान ॥ १२ ॥

अंत—पंक्ति—करि कमल मुच विसुच आतम छोरि रार मरी करे। है मूल कब चढ़ाव आतम आठ सेतु के गढे ॥ आदि मनु तहि यादि आतम मुक्त मग पछिम दिशा। चढ़ि मधुर मग तन पचरि तबि रासिरवि दिन सत गुर किया गुप छेरि पद रज गगन धरि मन त्यागी त्रिकुटी का वसा। पाछ बधि मिवेषि पाँदी मागनी कोटिन कम्म ॥ तब पोतु कपट कपाट कर बिनु मैन बिनु निरखा चहा। तहाँ दधिर अमृत —

विषय—स्वरोदय।

संख्या ३१ ए ब्रह्मवाद रचयिता—माधवदास (जयनगरा, रायबरेली) कागज—मोटा, पत्र ८१, आकार—६ × ५½ च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुष्टुप) ४९८, रूप—साधारण, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—पं० त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी विशारद, मिलिक स्थूम तिलोई, जिला (रायबरेली)।

आदि—दो० जबलौं आतम देह में, तबलौं सुखदुख होय।
तामें मोहि भय करि परत, हंमको सुख दुख हाय ॥

गुरवाच—दो० आतम को सुख दुख नहि, तन को सुख दुख नाहि।
निश्चय करि मम मानिए, सुख दुख मानहि नाहि ॥

अंत—देह गुमान भूम्न, मत्कृ दह के धर्म। नाम धाम पहिरन निसम, पिगुरन सबौं कर्म ॥

× × × × ×

संख्या ३१ बी चिंतामणि रचयिता—रामदास, कागज—पुरानी, पत्र ८० आकार—८ × ५½ च पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १७, परिमाण (अनुष्टुप) १५४०, खंडित। रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२९ = १७९९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर गंगाबक्स सिंह, ग्राम—बंगलाबाद, डाकघर महमूदाबाद जिला सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गनेशाय नमः ॥ अथ चिंता बोध लिख्यते श्री राम चंद ॥ जै गुरु महा प्रभू अनंत धरम धाम धू। समस्त जग लोचनं। समूह पाप मोचनं। आनंद रूप सोहितं। महेश शेष मोहितं पदार बिंद पकजं। अजादि दपना मजं ॥ गंभीर ग्रंथ को धरौं। विचारि चिरि को धरौं। प्रचंड चंद निर्मितं। कवींद्र मानु को हितं। पयाद सुख कीजिये। दिशार दान दीजिये। मजत धाम दाय दे। प्रचंड जन्म आमय ॥ × × × × × चौ० पृथ्वी के बीच घर करई। जुग जुग अमर रहे नहि मरई। जिहि का

प्रान सिद्धि भा होई। जीवत बहुत दिन जानौ गोई। फिरि रस क्रिया भूचरि माहीं। जासु मंत्र सुमिरत मन माहीं ॥ अब पेचरि केर सुन वानी। जाकी सिद्धि रहे तर पानी। रवि गति होई दक्षगत स्वासा चद्र ही की तिथि वार प्रकासा। मत्र ॐ अं ॥ जापर एह मत्र केरि नित करिये। जब जलतत्व स्वास निरधरिये।

अंत—यहि विधि साधे पेचरीगुरु चरन चित लाइ। कुजी रापी आपु ते तारा देय बताइ। मुद्राकहो अगोचरी तामें सबै हवाल। जोग भोग स्वान उभय बरणि सुनावो बाल। अगिन तब जब चढ़ै प्रचडा। तब तब देहि भुजंगिहि दंडा।

विषय—शरीर के साधन और युक्ति के द्वारा चिंता मे प्रथक् रहने के उपायों का वर्णन।

संख्या ३२ ए. जानकी विजय, रचयिता—बलदेव, (सतवार, फतेहपुर), कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—१० × ६ इ०, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप)—४००, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, लिपिकाल—स० १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० ज्ञानदत्त मिश्र, ग्राम—शकरपुर, डाकघर—बिसवॉ, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ श्री जानकी विजय बल्देव दास कृत लिष्यते ॥ दो०। श्री वास्तव कायस्थ कुल दीन दयाल प्रवीन। तेहि सुत सत जन सहज रत नाम सक्टादीन। जिला फतेहपुर परगना है कल्यानपुर नाम। तह दौलतपुर ग्राम एक तहाँ सो तिनकर धाम ॥ श्री गुरु छात्र दास प्रभु महाराज गुन गेह। दीन सुमंजुल मत्र तेहि उर उपज्यो सिय नेह। तेहि हित यह उपदेस मन तेहि सहायता पाय। तरउ चहत भव सिंधु जन विनु श्रम सिय गुन गाय। राजापुर श्री जमुन तट तासु निकट सतवार। तह लघु मति बलदेव जन कीन्ह ग्रथ अवतार। जानौ कहुँ न कवित्त गति सिय गुन गावन साध। सादर सुनिहहिं साधु जन छमि अपराध अगाध।

अत—श्री दुर्गा दुर्गति दलन गिरिजा गिरा भवानि। बुध विद्या बलदेव मोहि सुत सेवक निज जानि ॥ इति श्री अद्भुत रामायगमते श्री मद जानकी विजय नाम ग्रथे श्री बल्देव जी विरचिते भाषा सपूर्ण समाप्त लिखत ज्ञानी राम कानपूर शहर मध्ये संवत १९३९ वि० ॥ श्री राम जी की जय ॥ राम राम शिव राम राम।

विषय—जानकी का दुर्गा रूप धारण कर महिरावन को मारना ॥

सख्या ३२ बी. जानकी विजय, रचयिता—बलदेव, कागज—नवीन, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इ०, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप) ४३२, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, लिपिकाल स० १९५० = १८९३ ई०, प्राप्तिस्थान—सेठ मगनी राम सौदागर, खीरी लखीमपुर (अवध)।

आदि—३२ ए के समान।

अत—कवित्त ॥ पूरण पवित्र और विचित्र है चरित्र यामे माया का प्रभाव आदि मध्य अवसान है ॥ जासु के पढ़ेते औ सुने गुने ते भाग मोद मिलत अर्थ धर्म का निवीन

है ॥ मुंशी बलदेव प्रसाद चेले हैं सप्रेम जब दास बलदेव तब श्रीमद्धों गुन गाय है ॥ जानकी विजय है नाम परम पुनीत । ग्रंथ सीता के उपासक को गीता के समान है ॥ इति श्री अद्भुत रामायण मत श्रीमद् जानकी विजय नाम ग्रंथ श्री बलदेव जी विरचिते भाषा सम्पूर्ण संवत १९५० बैसाष सुदी ८ इति ॥

विषय—अद्भुत रामायण के आधार पर जानकी का दुर्गारूप धारण कर सहिरावण पर विजय प्राप्त करना।

संख्या ३३ कृष्ण लीला, रचयिता—बलदेवा, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८×६ इ० पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, रूप—साधारण लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९०१=१८४४, लिपिकाल—सं० १९३७=१८८० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० मुरलीधर अवस्थी, ग्राम—नारायनपुर, डाकघर—गोला गोकरननाथ, जिला—खीरी (अवध)

आदि—अथ कृष्ण लीला लिष्यते ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ दो०—महावीर के मंत्र मे लगा हमारा ध्यान । बलदेवा आधीन के है हिरदे में ज्ञान ॥ चौ० ॥ हे हिरदे में ध्यान ध्यान में धरता तेरा । दीजो मुझे कुछ ध्यान रहूँ चरनन का चेरा ॥ प्यारे जी मैं हूँ तेरा दास अर्ज मैं करता तेरा । बलदेवा आधीन भव दुखों का फंदा ॥ जनाब सहेली का रहीं देवकी कैद में ताले दिये लगवाय । कन्याई राजा हुआ पहरे दिये बिठाय ॥ कहा ॥ हुआ कृष्ण औतारे । ताले गये सब टूट पैसते नर औ नारे ॥ गकुल हुआ आनंद हाल सुनो है मैं बारे ऐसे चले वसुदेव गये जमुना के किनारे ॥

अंत—गावत गावत धेनु संग पहुँचे गोकुल आय । यह लीला पूरन भई सुनी भक्त चित लाय ॥ इति बलदेवा कृत कृष्ण लीला समाप्तम् संवत् १९०१ श्रावण शुक्ल पक्षे पंच म्याम् । लिखितं गौरीसंकर भट्ट संवत् १९३७ चैत्रशुक्ल रामनवमी ॥ श्री राम जी की ॥

संख्या ३४ बिरहनी बारहमासा, रचयिता—बलदेवप्रसाद (अमरौधा कानपुर) कागज—देसी, पत्र—८ आकार—६×४ इं०, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११ परिमाण (अनुष्टुप) ४८, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० विष्णु भरोस, ग्राम—बालामऊ, डाकघर—अजगैन, जिला—उन्नाव (अवध)

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बिरहनी बारह मासा लिष्यते ॥ पीत बिरहनी यों कहत व्याकुल होइ घबरात । पीतम परदेसवा बसो घर अगना न सुहात । खान पान फीके लगे नहिं बनपरत उपाय कहा करौं एरी सखी सुख दुख गई भुलाय । साईं मेरे निठुर हैं हठ नहिं छाँड़त नेक । जस ईश्वर को मानि हौं जो पिय आवै टेक ॥ बैसाष ॥ बैसाष निकट नारी कहत अति आवो तुम कंत । भाग्य लिखी जग अमिट है कहा करूं भगवंत ॥ मात पिता घर त्याग कर पिय आई तुम पास । अबला नारि अधीन पति वेगि करौ सुख वास ॥ चूक हमन ने अब करी नेक न आये पिय । मंद मधुर मुख प्रीति सों हंसि बोले ही लिय ॥

अंत—इति बिरहनी बारहमासा बलदेव कृत संपूर्ण समाप्त संवत् १९३० पौष पूर्णमा ॥ लिखा सिवदीन पाठक संवत् १९३६ वि० महीना क्वार ॥ श्री श्री श्री श्री श्री राम राम राम ॥

संख्या ३५. अज्ञात, रचयिता—बालगोविंद, कागज—देशी, पत्र-४८, आकार—५ × ३ इंच, आकार-८ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ ८, परिमाण (अनुष्टुप) २८८, खंडित। रूप— प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रमाकांत त्रिपाठी 'प्रकाश', ग्राम—वांदा, डाकघर गोदवारा, जिला प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—नैष्कर्म मप्यच्युत भाव विवर्जितम् ॥ निर कर्महु अच्युत भाव विवर्जित ज्ञान निरंजन सोभित नाहीं। परि पूरन फेर निरंतर कैसे अभद्र महाशय ईश्वर माहीं॥ अति मैं जोइ कर्म महा अति उत्तम ताहि कियो सु समर्थन नाहीं। सर्वातम भावहिते भजिये नित वाल गुविन्द सदा मन माहीं ॥ १ ॥ वत्मान् मुचन् क्वाचित् समये ॥ विन वेलहि छोरत हैं वछरान को ओरह से वरजे मन माहीं। दधि दूध चुराय के खात सदा करि और उपाय जो नीठ सदाही ॥ करिके सु विभाग खवावत है कवि को उनमें पुनि खात जु नाहीं। तव फेरत हैं मटुकी विन लाभ सकोप भजै वन वाल रवाहीं ॥ २ ॥ वाहु प्रसार परिरम कराल वोन् ॥

अंत—टोइ वाहु पसार अलिंगन ते सु विशाल उर वरनी विनकाई। कुच मर्दन नर्मन खाग्र निपातन ते वहु भाँत सुहात दिठाई ॥ अति केलि सुमेलन हास विलोकन ते ब्रज सुंदरि को अधिकाई। रति के पति के अति वेग वढावत वाल गुविन्द रमावत गाई ॥ सवाग्विसर्गो जनतावु मंप्लवो ॥ सोइ वाग विसर्ग अहै जनता अघ नासन हार सदा जिहि माँहीं। पुनि श्लोक अवद्ध प्रयोगहु में वह योग असेप विशेप लखाहीं ॥ भगवान अनन्त के नाम अनेक महा जस अंकित सादर जाहीं ॥ सुनते अरु गायन को करते स्तुति वाल गुविन्द सुसज्जन चाहीं ॥

विषय—भागवत के कुछ श्लोकों का अनुवाद।

संख्या ३५/१. भगवद्गीता, रचयिता—बालगोविंद, वैष्णव (गोंटवा कागज देशी, पत्र-९५, आकार—१० × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट) ८, परिमाण (अनुष्टुप) ८३१, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०९ = १७५२ ई०, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर दूबे, जिला गाजीपुर,

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री कृष्णायनमः।

दोहा—धर्म्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र में मिले युद्ध के साज। सजय मो सुत पाडवन्ह कीन्हें कैसे काज। पांडव सेना व्यूह लखि दुर्योधन ढिग आइ। निज आचारज द्रोण से वोले ऐसे भाइ।

अत—वार २ सुमिरत जहाँ या संवादहिं राज। हर्ष होत मोकौं महाँ अति पवित्र के साज। अदभुत रूप श्री कृष्ण को सुमिरत मरिहौं ताहि। हर्ष होत मो कौं वहुत विस्मै को निरवाहि योगेश्वर श्री कृष्ण जी हे जो ठौर। तहा विजै अजा जोति है अरल सम्पदा और।

सन्यासयोगो नाम अष्टादसो ध्याय भगवद्गीता सपूर्णम्।

संख्या ३६. वालचिकित्सा, रचयिता—वालकराम, नैनसुख, कागज-देशी, पत्र-४८,

आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप) १०८०, रूप-प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७० = १८१३ ई०, लिपिकाल—सं० १९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामप्रसाद पटवारी ग्राम—बेहटा, डाकघर—उंधौरा, जिला सीतापुर, (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बाल चिकित्सा लिख्यते ॥ सरस्वति अंबे आद भवानी सिसु को सिर नाऊँ। गननायक दायक रिधि सिधि के तिनको आद मनाऊँ। माघ प्रकाश और माधव सुश्रुत चक्रंदिक दर्साई। स्कंद पुराण की बाल चिकित्सा सो तैरे प्रत गाई। बालक जन्म पिंड औ ग्रपरा भिन्न भिन्न सुन लीजै। रोग काल औ समा विचारे तब कछु जतन करीजै। मूढ वैद जापूगर पंडत बालक रोग न जानै। सब प्रथम मत सुगम चिकित्सा बालक रूप पहिंचानै ॥

अंत—इति श्री बाल चिकित्सा बालकराम वैनसुष कृत संपूर्ण समाप्ता संवत् १९१४ वि० वैसाष तृयोदसी कृष्ण पक्ष ॥ इति शुभ मस्तु ॥ श्री राम श्री राम श्री राम ॥

संख्या १७ बारहमासा, रचयिता—बालमुकुंद, ठकुरद्वारा, (मुरादाबाद), कागज देशी, पत्र-३, आकार—८ × ६ इंच, परिमाण (अनुष्टुप) ६१, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४० लिपिकाल—सं० १९१६, प्राप्तिस्थान—प० रामावतार मिश्र, ग्राम—नगसा, डाकघर लखीमपुर, जिला खीरी (अवध)

आदि—बाल मुकुंद कृत बारह मासा ॥ श्री गणेशायनमः अथ बालमुकुंद कृत बारह मासा लिख्यते ॥ शुरू असाढ़ अए प्यारे। छुटे संगाके जगत सारे। भरे आनंद घन कारे। कहुं आया न निरमोही। मिलावै मेरे दिलबर से है ऐसा जक में कोई ॥ हुआ सावन शुरू जब से। जले तूला जिगर तब से। न पाया मैं किसी ढब से अगस यों ही सबै खोई। मिलावै मेरे दिलबर से। है ऐसा जक में कोई ॥

अंत—चौद में मिले गुर वासी। कही सुदर बारा मासी। कथन की बाल मुकुंद जासी। है ठाकुर द्वार का वासी ॥ के आज्ञा गुरुदेव की पूरन बिस्वावीस। चैत्र शुक्ल तिथि अष्टमी संवत ठैतालीस। सदा पढते है पी बारे। तुम मिला दो दिलबर प्यारे ॥ इति श्री बाल मुकुंद कृत बारामासी संपूर्ण समाप्तः ॥ लिखा शिव अधार मिश्र स्वपठनार्थ संवत १९१६ वि०, श्रावण शुक्ला ८ अष्टमी ॥ राम ॥

विषय—विरहिणी विलाप।

संख्या १८ प नखसिख वर्णन, रचयिता—बलवीर कागज—देशी, पत्र-१०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ४२, परिमाण (अनुष्टुप) २०० रूप—पुराना, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४६ प्राप्तिस्थान—ठाकुर शिवसिंह, ग्राम—हिम्मतपुर, डाकघर सिधौली जिला सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ नष सिष वर्णन लिख्यते ॥ चरणोपमालंकार ॥ दोहा ॥ पदन से कोमल कमल अंगुली कौस समान। आवक पावक राज गुन भूषन भेद बषान ॥ कथा ॥ दिन मनि मित्र पितु पावन विरंचि जूके सुंदर सुमन सुभ सोभित

जमल से। ललित अरुन पर जावक रजो को गुन पावक अरुन मुप घूमसोममलसे ॥ अगुली अरन कोम भूपन-अरुन नप वरनत कवि रवि द्वादम अमल से ॥ पल्लव नवीनता रूप रमा परम सारु प्यारी के चरन चारु कोमल कमल से ॥

अत—॥ दोहा ॥ अलक वरनन ॥ दृग पुतरिन को किरनि सम कहै कसौटी धीर। मधु कुल माला रैनि सो मछम सी वलवीर ॥ जथा ॥ किधौं है मयूप दृग तारिनि की राही धौं कनक कसौटी पै कसौटी लीक कसी है ॥ किधौं मार मधुकर कज कमनीय पर हाटक धरित सी किधौं मछम सी है ॥ किधौं वलवीर प्याली वलित पयूप काज उपमा न आवै और याही मति टसी है ॥ प्यारी के वदन पर अलक सुमिल किधौं कलानिधि ऊपर ते तमी धार धसी है।

(अपूर्ण अंत के पृष्ठ नहीं है)

सख्या ३८ बी. नख सिग्व वर्णन, रचयिता—वलवीर, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८ × ६३ंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ४२, परिमाण (अनुष्टुप) ३१२, खडित। रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स०१८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० जनार्दन जी, खाले की बाजार, जिला लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ वलवीर कृत नख सिख वर्णन लिप्यते ॥ अथ उपमालंकार नख सिख वर्णन ॥ दोहा ॥ कछुक भेद कवि कहत हैं उपमा समता कीन। मिहदी जुत करवीर यो जावक पगन प्रवीन ॥१॥ अथ चरणोपमालकार ॥ पल्लव से कोमल कमल अगुली कोम समान। जावक पावक राज गुन भूपन भेद वपान ॥ यथा ॥ दिन मनि मित्र पितु पावन विरचि जुके सुदर सुमन सुभ सोभित जमल से। ललित अरुन पर जावक रजो को गुन पावक अरुन भुप घूम सो ममल से ॥ अंगुली अरुन को सभूपन अरुन नप वरनत कवि द्वादस अमल से। पल्लव नवीनता रूप रमा परम सारु प्यारी के चरन चारु कोमल कमल से ॥

अंत—॥ अकल वर्णन ॥ दोहा ॥ दृग पुतरिन की किरनि सम कहै कसौटी धीर। मधुकुल माला रैन सी मछम सी वलवीर ॥ जथा ॥ कीधौं है मयूप दृग तारिन की राही धौंकि कनक कसौटी पै कसोटी लीकसी है। किधौं मार मधुकर कंज कमनीयपर हाटक धरित सी किधौं मछ ससी है ॥ किधौं वलवीर व्याली वलित पयूप काज उपमा न आवै और याही मति डसी है ॥ प्यारी के वदन पर अलक सुमिल किधौं कलानिधि ऊपर ते तमीधार धसी है ॥ इति श्री नख सिख उपमालकार समाप्त लिखा मुन्ना मिश्र कँधा निवासी सवत् १८७० वि० जेष्ट शुक्ल दशमी ॥ मम को दोप न देव जैसा का तैसा लिखा। जानत सब हरि भेव समुझि लेउ सय चतुर नर ॥ श्री गंगा जी सदा सहाइ करैं ॥

संख्या ३८ सी रससागर (दंपतिविलास), रचयिता—वलवीर (कन्नौज), कागज—देशी, पत्र—५६, आकार—१० × ६इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ४८, परिमाण (अनुष्टुप) १५००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४७, प्राप्तिस्थान—पं० मन्नीलाल तिवारी गगापुत्र, ग्राम—मिश्रिख, जिला सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रस सागर (दंपति विलास) लिष्यते ॥ छंद माधा सवैया ॥ सिद्धि सदन गुन बुद्धि करन दुनि विघन हरन सुपदेश अर्वत। गिरिजा नंदन जग के वदन सवु निकंदन गनवर कंठ ॥ सब सुष दायक सदा सहायक हैं सब लायक अपत सुरस ॥ सरन के सबुना पूर्फे रहगा गज बर मधुना नमो गनेस ॥ दो० ॥ कर जोर विनती करौं काकी को सिर नाइ। रस सागर के करन को तरनि तिहारे पाइ ॥

अंत—छंद बंद रस नाइका नाइक श्री गोपाल। बूझो कयौ न दृष्टि मरि कवि बलबीर रसाल ॥ दंपति कह्यो विलास मैं राधे श्री ब्रजराज। देइ भरी जिय जिन जगत में बीर भक्त के काज ॥ इति श्री दंपति विलास समाप्तं ॥ लिषतं सिवबक्स तिवारी संवत १८४० चैत्र शुक्ल द्वितीयां ॥ श्री गणेशायनमः ॥ राम राम

संख्या ३८ बी रससागर (दंपतिविलास), रचयिता—बलबीर (कन्नौज), कागज—देशी पत्र–५६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ४२, परिमाण (अनुष्टुप) १४७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १७५९ = १७०२ ई०, लिपिकाल—सं० १८८८ = १८३१ ई० प्राप्तिस्थान—ठाकुर मन्ना सिंह, ग्राम—सरवतपुर डाकघर कुतुबनगर, जिला सीतापुर (अवध)।

आदि—३८ सी के समान।

अंत—इति श्री रस सागर अर्थात दंपति विलास संपूर्ण समाप्त लिषतं मया राम मिश्र कार्तिक शुक्ल मितीयां संवत १८८८ वि० राम राम राम ॥

संख्या ३८ ए रस सागर (दंपति विलास), रचयिता—बलबीर (कन्नौज) कागज—देशी, पत्र–५९, आकार—१०—६इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ४६, परिमाण (अनुष्टुप) १३९०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५९ = १७०२ ई०, लिपिकाल—सं० १८८८ = १८३१ ई० प्राप्तिस्थान—पं० गंगादीन कवि, ग्राम—समरहा, डाकघर बारूमपुर, जिला उन्नाव (अवध)।

आदि—३८ सी के समान।

अंत—इति श्री बलबीर कृत रस सागर दंपति विलास संपूर्ण समाप्तः लिषतं देवगिरि संवत १८८८ वि० जै सिव सिव सिव ॥

संख्या ३९ ए. बावन सवैया रचयिता—बनारसी दास, कागज—देशी पत्र–२४ आकार—९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२ परिमाण (अनुष्टुप) ३४० पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९८९ = १९२९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कालिका प्रसाद, ग्राम—रसूलपुर, डाकघर राजेपुर, जिला उन्नाव (अवध)।

आदि—अथ बावनी लिष्यते सवैया। इकतीस ॥ ॐ कार सबद बिहदया के उभय रूप एक आतमीक भाव एक पुद्गल कौ ॥ सुधता विभाव लिये उमें राह विपरीत अशुद्धता विभावण प्रभाव जड़ बलकौ ॥ त्रिगुन त्रिकाल तात ध्यय अभ्य उतपात ध्याता की सुहात बात नही तास थल कौ ॥ बानारसीदास जू हृदय ॐकार बास जैसो प्रकास ससि पक्ष सुकल कौ ॥ १ ॥ निर्मल ज्ञान के प्रकार पंचवर लोक तामें भुत ज्ञान परधान करि

पायो है । ताके मूल ढोढ़ रूप अक्षर अनअक्षर अग्र पिट सग्रन मे वतायो है ॥ बावन वरन ताके अंम स्यात सनियात तामें नृप ऊकार सर्जन सुनायो है । वाणारसीदास अंग द्वादस विचार यामें अैसो ऊकार कठ पाठ तुहि आयो है ॥ २ ॥

अंत—हेत वत जेते ताको सहज उदार चित आगे कहौ एतो वरदान मोहिं दीजिये । उत्तम पुरुष रीरीवा वाणारसीदास जस पन्नग सुभाव इक ध्यान त्यों सुणीजिये । पवन सुभाव विसतार कीजो देस देस भ्रमर सुभाइ निज स्वाद रस पीजियो । बावन कवित्त एतो मेरी मति मान भए हंस के सुभाव ग्याता गुण गहि लीजियो ॥ इति वानारसी नामा कित वावनी सवैया सपूर्ण ॥

विषय—धर्म सबधी उपदेश ।

सख्या ३८ बी सूक्ति मुक्तावली, रचयिता—बनारसीदास (आगरा), कागज—देसी, पत्र—४७, आकार—६ × ४½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ३४, परिमाण (अनुष्टुप) १३६०, खडित । रूप—प्राचीन, लिपि-नागरी, रचनाकाल—स० १६९१ = १६३४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कृष्णविहारी मिश्र, माडेल हाउस, अमीनावाद पार्क, लखनऊ ।

आदि—सुपुरुप तीन पदारथ साधहि । धरम विशेष जानि आराधहिं ।' धरम प्रधान कहै सव कोई । अरथ काम धरमहि ते होई ॥ दो० ॥ धरम करत ससार सुप धरम करत निरवान । धरम पथ साधक विना नर तिर जंच समान ॥ अथ मनुष्य भवका अधिकार ॥ जैसे पुरुष कोई धन कारन ढूढ़त दीप दीप चढ़ि जान । आवति हाथ रतन चिंता मनि डारत जलधि जानि पापान ॥ तैसे भ्रमत भ्रमत भव सागर पावतनर सरीर परधान ॥ धरम जतन नहिं करत वनारसि खोवत वाहि जनम अज्ञान ॥

अत—दो० ॥ नाम सुक्ति मुक्तावली द्वाविंशतिअधिकार । सत इलोक पर वान सव इति ग्रथ विस्तार ॥ कौंर पाल वानारसी मित्र जुगल इक चित्त । तिन्ह गरंथ भाषा कियो वहु विधि छद कवित ॥ सोलह सै इक्यानवे रितु ग्रीपम वैसाप । सोमवार एकादसी करन छत्र सित पाप ॥ इति सिंदूर प्रकरण सुचि मुक्तावली समाप्त ॥

सख्या ३९ सी. वेदनिर्णय पचासिका, रचयिता—बनारसीदास (आगरा), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ × ४ इच, पंक्ति प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप) ३४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८६ = १६२९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कालिका प्रसाद, ग्राम—रुस्तमपुर, डाकघर—राजेपुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—अथ वेदनिर्णय पचासिका लिप्यते । जगत विलोचन जगत हित जगतारन जग जान । वदौ जग चूड़ामणि जगनायक जगत प्रधान ॥ नमो रिषभ स्वामी प्रमुष जिन चौवीस महंत । गुरू चरन चित भाषौ सुप भाषौ वेद विरतत ॥ सवैया इकतीसा ॥ प्रथम पुनीत प्रथम मानु जोग वेद जामे ६३ त्रेसठ सिल का महा पुरुष की कथा है । दूजा वेद करमानु जोग जाके गरभ में वरनी अनादि लोकान्त लोक थिति पथा है ॥ चरनानु जोग वेद तीसरो प्रगट जामें मोंप पथ कारण अचार सिधु मथा है ॥ चौथा वेद दरवानु जोग जामें दरव के पट भेद करम उछेद सरवथा है ॥ केवली उकत वेद अतर गुपत भए

जिनके उपद में अमृत रस भरा है ॥ अब त्रिगुण युगुबेद, नाम अथर्वण इनही का प्रभाव जगत में हुवा है । कहत बनारसी तथापि मैं कहूंगो कछु तेई समझेंगे जिनका मिथ्या मुवा है ॥ मतवाला मूरख न मान उपदेश जैसे उलू जान जाने किधि ओर भानु उवा है ॥ कहीं वेद पयासित जिन वाणी प नाम । नर अज्ञान जाने नहीं जो जाने सो ज्ञान ॥ मद्य नाम शुगादि जिन रूप चतुर्मुख धारि । नमो शरण महान मैं बेद चयारि चारि ॥

अंत—पर दुविध विस्तार त्यों पर बाप उपज्ञा । जिम रोवै जिम मैं हंसी ज्यों मदमतवता ॥ त्यों कुहू बारी मांझ मीन दाम संभाला । समदिष्टी सज्जन कर्म कुहू नीं इसमता ॥ १५ ॥ जाति कुहू त्रिधि इकक ज्या मनि पयर रहा । जल विचार संभव सों कहिए मद मता ॥ उज्ज्वल जल परवाह मैं ज्यों नीर गुम्ता ॥ १६ ॥ कुहू दा थपिर गुमाव है नहिं कछु अटिता । ऊंच नीच इक सम करै कहि कोम पयता ॥ अब ऊपर आप बपो पिति उपल मुखता । अर इट हाड विहार मैं बसा उप्पर तता ॥ १७ । पाया देह सरीर ज्यों मल नीर उपता ॥ मम पुरम करि थाह पया पिरि जल ज्यों दता । पुन पार बिच पेद ह यद भेदन मता ॥ ग्यान क्रिया निरदाय है जहं मोप महता ॥ १८ ॥ बतन गुमारा मोह मैं ज्यों शाह गहता ॥ पिति प्रमाण गुरुको मया गुर ग्यान गुरुता ॥ जब पर अंतर पट गहू अब नीर शुद्धता ॥ परम थाह परगट भइ सिव लहु गुरुता ॥ १९ ॥ ग्यान दिवाकर ऊगिया मति किरिण प्रभता ॥ ई न मत पड विहंटिया भ्रम तिमिर पयता ॥ २० ॥ सत्य प्रतीति मंजिया गुरग पिरता ॥ अगि अंगोर दहिया ज्यों तूल पदता ॥२१॥ दो० । मद मतगुरु का देसनाकरिय अपनी पाडि ॥ कही पंडी मोख की कम कपादि उपादि । २२ । मतपिति त्रिगुन घटि गई निमल पद उपदेश । कहत बनारसि ग्रन्थ यौं मूढ न समुझै लेस ॥ इति श्री मोक्ष मार्ग पैडी समाप्तः इति श्री बद निर्णय पंचाशिका समाप्त ॥

विषय—जैन मतानुसार वेदों की व्याख्या । चारों वद, मतगुर्वे नाम निश्चय, मतवाल मिथ्यात वाणी, अर्थात पौडह निपा बत्तीस पान मोक्ष मार्ग वर्णन ॥

संख्या ४७ ए सामुद्रिक, रचयिता—दौलतराम दीक्षित, कागज—देशी, पत्र—२९, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६ परिमाण (अनुष्टुप) ३५८, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४१ प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ शुक्ल ग्राम—गढ़वा डाकघर—महोली, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः । श्री सरस्वत्यै नमः ॥ श्री परमात्मने नमः ॥ अथ सामुद्रिक लिख्यते ॥ दो० ॥ गुन अवगुन सबही प्रथम विचारी आइ जौं मनिका जनु नारिन अंग बरन की भाइ ॥ बालक और परन के लाभ दिए एक धीर । पहिले दुलह चाहिये जा बांधै सिरमौर ॥ मध्य अंत लक्षन कहौं गुन अवगुन क भेद । गुन गुन औरन माम क रच दिपला बद । पहिले आयु विचारि कै तब मन लक्षन देइ । सामुद्र अंग बनाइके पीछ भिन्न करेइ ॥ जा गुन गुन अरु भेद गुन लक्षन गुने द बान । राज समा तेई बचन अंग प्रगट निदान ॥

अंत—मध्य न जानी निरिप एम मानी दई बुझाइ ॥ सा रस मन। सा बाम मैं

तिरिया दुप की पानि। विरस किये चिंता वढ़े रस में जी की हानि ॥ ग्यान घटै दरसन किये काया घटै रति केल। भूलि न अमृत धारिये ताहरि विप की वेलि ॥ तरवरि देपि सुहावना छाया वैठि न भूल। विप फूले विपई करेन विप सर वा विप मूल ॥ जिन जानी तिन परि हरी परे जु औगुन दीठि। वात न पूछी फेर सुप सिछहु दई जु पीठि ॥ धन पोवै धन कारने काया मानुप सुभाइ। गुन मानै न.हें कामिनी तीरा वैठी आइ। परिहरि सकौ न परि हरौ जनि भूलौ त्रिय भाउ। सीस काटि देउ वैठका चूकै न अपनो दाउ ॥ इति सामोद्रक लछन सपूरन समापता चैत सुदी ३ गुरौउ सवत १८४६ मुकाम नये गांउ लिपत लाला पदम सिंघ ॥ जैसी प्रति देपी तैसी लिपी भूल चूक सव माफ जौ वांचे तिनकौ प्रनामु ॥

विपय—सामुद्रिक।

सख्या ४० वी सामुद्रिक, रचयिता—वांकेराम दीक्षित, कागज–नया, पत्र–२५, आकार—६½ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) ५४०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० रमाकांत शुक्ल, ग्राम–पुरवा गरीव दास, डाकघर–गडवारा, जिला प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—सिधि श्री गणेसायन्मः श्री सरस्वती गुर भेन्यः ॥ अथ सामुद्रिक लिपते ॥ रिपि वाच ॥ त्रभंगी गनपति सुप दाइक भक्त सहाइक त्रभुवन नाइक जसवता ॥ वहु दुःप विहंडन भुवपति मंडन सव सुख संतन पतिवता ॥ दुति रूप उजागर सोभा सागर देवन नागर सावता ॥ जनकाज सहाइक अहो विनाइक दुष्ण भगाइक भगवंता ॥ अथ सामुद्रक ॥ दोहा ॥ गुन औगुन सव ही भले, प्रथम विचारै आउ। ज्यौं सलिता जुल नाहिनै। कौन काज की नाउ ॥ वाजे जोरि वरात के। किये सवै इक ठौर। पहिलै दूलह चाहिजै। जो सिर वाधै मौर ॥

अंत—चित्रकोट पदमावती। लई छिनाई साइ। जानत यह ससार है। कौन त्रियहि हित पाइ ॥ वढ़ौ उपद्रह देस मैं। त्रिया जु विप की पानि। विरसु करै चिंता वढ़ै। रस में जिय की हानि ॥ ग्यानु घटै दरसन किये। काम घटै रस केलि। भूलि न अंम्रत ढारिये। ताहर रस की वेलि ॥ तरवर देपि सुहावनै। छाया वैठि न भूलि। विसु फूलै विसु ही फलै। विप सापा विप सूल ॥ जिन जानी तिन परिहरी। परै जु औगुन डीठि। गुन मानै नहिं कामिनी। तिरनी वैठी नीठि ॥ इति सामुद्रिक रिपि विरचितायां अस्त्री पुरिप लछिन सुभा सुभ संपूर्ण स्मापता सुभं भवतु मंगलं ददातु ॥ १ ॥

विपय—सामुद्रिक लक्षण।

संख्या ४१ मित्र मनोहर, रचयिता—वशीधर कायस्थ (वसीपुर), कागज—देशी, पत्र—१२३, आकार—६½ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुष्टुप) ४०५९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचना काल—स० १७७४ = १७१७, लिपिकाल—सं० १८५४ = १७९७, प्राप्तिस्थान—वा० राममनोहर विचपुरिया, ग्राम—पुरानी वस्ती, डाकघर—कटनी मुरवारा, जिला—जवलपुर (सी. पी.)।

आदि—श्री महादेव जू श्री गनेस जू श्री सीताराम जू ॥ अथ मित्र मनोहर लिष्यते ॥ छप्पय ॥ धनिय धन्य बड़ एक धनिय जाति रचना अति । सकल भाइ मद भड रचित भानइ अद्भुत गति ॥ स्याम छत्र सजि सीस बिबिध बिधा सुवरन मय । पद अनूप सम रूप हीर भारुन हवठ द्रप ॥ दिल सुदेस सुई देस सम मधम धर्म गनि की करहि । कहि बंसीधर बर बचन तेह प्रजा साज राजहि करहि ॥ १ ॥ दोहा ॥ नीती हित उपदेस मी । सज्जन रुपी जू मोहि । भाषा हित उपदे सु यह । ग्रंथ सुगम को होहि ॥ २ ॥ कथा चार है मुख्य है । बरनौ जथा बिधान । मित्र लाभ हित भेद पुनि । बिगृहु संध निदान ॥३॥ मित्र लाभ याते कहत । किये मित्रता लाभ । सुहृद भेद हित पंथ मै । जामै भेद के लाभ ॥ ४ ॥ बिगृह जाकै मुख्य की । जथा जीम प्रिय होय । संधि कहावति सीष करी । बिगरी सुघरै सोय ॥ ५ ॥

अंत—चंद्र हीन छिति पाल के । नंदन चपल बिसाल । चारि कथा पूरन सुनी । हय चित भै काल ॥ १० ॥ राज सुवन पाई सुमत । संपति पाई बित्र । सीता मम संपत सुमति । सुमत पाइ हीं मित्र ॥ ११ ॥ छप्पय ॥ बढहि मित्र सम प्रीति अति सज्जन सह बाढहि । बढहि धर्म की वेलि सुमत्व दीरघ तर बाढहि ॥ बढहि पुन्य दिन भानु बढहि संपत समता छत्र । बढहि आयु बहु बर्ष बढहि प्रभु संपम अद्भुत ॥ सकलमे समंद आनंद मय भाग महीप महीप मय । कहि बंसीधर यह ग्रंथ गुनि मित्र मनोहर नाम मय ॥१२॥ इति श्री हितो पदेस राज नीति सास्त्रे प्रभाव बंसीधर बानी बिरचिते मित्र मनोहर नाम प्रतिष्ठते संधि बिख्यात बर्नने चतुर्थम कथाइ इति गृ थ स ~ १८५४ साके १७१९ चैत ~ लिष्यतं लाला राम परसाद बिजावर राज्य ।

विषय—संस्कृत हितोपदेश का पद्यानुवाद । (ग्रंथ निर्माण काल) । प्रभु कै पंचम रूप पर मिलवहु बेद पुरान । सत्रह सै पर बाढते संवतु गयै प्रमान । पूस मास गम रूप ज्यौं गृ थ सरस रस चाहि । हरि तिथि रवि सुख सुदिन सुभ दीपक कयो सराहि ॥

संख्या ४२ हरिश्चन्द्र कथा, रचयिता—बेनीबक्स, कागज—देशी, पत्र—८० आकार—६ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २० परिमाण (अनुष्टुप) ९००, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८३६ = १७७९, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई० प्राप्तिस्थान—श्री गयाप्रसाद, ग्राम—मर्भीमा डाकघर महमूदाबाद, ज़िला सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नम: ॥ श्री हरिचंद्र कथा लिष्यते ॥ चौपाई प्रथम देव प्रनवौं गननायक । गौरिमहेस तनय सबलायक ॥ मैं मतिमंद कथा कछु नाहीं ताते प्रभु बिनवौं तोहि पाहीं । देहु बुद्धि बंदौं तोहि चरना । जै जै गनपति भय भय हरना ॥ सुमरौं प्रथम बिष्नु त्रिपुरारी । जाते मिटहि दुख भव भारी ॥ सरस्वती मैं बिनवौं तोही । चरन कमल की आसा मोही ॥ जहं लगि देव मनुज अरु नागा । तुव चरनन सुमिरहिं अनुरागा । कारहु कृपा निज सेवक जानी । भोहे लछिमी आदि भवानी ॥

अंत—नृप हरिचंद समान को भयो न दूसर मनुष्य । अति सुचरित्र पावन अमित

भाप्यो वेनी वक्स ॥ इति श्री हरिचद पुरान समाप्त सुभ मस्तु लिपतं राम सुप वैसाप वदी तीज संवत १९३१ वार सुकर ॥

विषय—राजा हरिचद के सत्य की कथा।

संख्या ४३. वारहमासी, रचयिता—वेनी माधव, कागज—देशी, पत्र-८, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुष्टुप) ३०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—व्रज बहादुर लाल, प्रतापगढ़। (अवध)

आदि—श्री गणेशाय नम.। अथ वेनीमाधो की वारह मासी प्रारभः (कार्तिक। कातिक किलोल करैं सव सखियां राधा विचार करैं मन मेरे। माधो चिमाओ आन मिला मिलाओ नहीं अब प्रान तजू छिन मेरे॥ हमको छोड चले वेनी माधो राधा विचार करैं मन मेरे॥ कातिक किलोल करैं सव संखिया० ॥

अत—कुआर–कुआर मास निर्मल भये चन्दा गौरी सोवत अपने आंगन मेरे, सूरदास तव आन मिले हरि सुखी भई राधा मेरे। हमको छाड चले वेनी माधो राधा विचार करैं मन मेरे॥ १२ ॥ इति श्री वेनी माधो की वारह मासी समाप्त।

विषय—श्री राधिका जी का वारहो महीने का विरह वर्णन ॥

संख्या ४४. मूलगोसाई चरित, रचयिता—वेनी माधवदास, कागज—देशी, पत्र-५४, आकार—६½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) ४८६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६८७ = १६३० ई०, लिपिकाल—स० १८४८= १७९१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामाधारी पाडे, ग्राम—मरुवा, डाकघर ओवरा, जिला गया।

आदि—श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥ अथ मूल गोसाई चरित प्रारभ ॥ सोरठा ॥ संतन कहेउ वुझाय मूल चरित पुनि भापिये। अति सछेप सोहाय कहौं सुनिय नित पाठ हित ॥ चरित गोसाईं उदार वरनि सकै नहिं सहस फनि। हौं मतिमद गंवार किमि वरनौं तुलसी सुजस ॥ २ ॥ तोटक ॥ ऋपि आदि कवीस्वर ग्यान निधी। अवतरित भये जनु आपु विधी ॥ सत कोटि वपानेउ राम कथा। तिहुं लोक में वाटेउ संभु जथा ॥ दस स्यदन वेद दसाग मय। स्रुति त्रैविधि तिनिउ रानि जय। श्रीराम प्रनव स्रुति तत्व पर। निज असनि स्रुतवर देह धर ॥ इमि कीन्ह प्रवध मुनीस जथा। हरि कीन्ह चरित्र पवित्र तथा ॥

अत—अंत समय हनुमत दिये तत्व ग्यान को वोध। राम नामही वीज है सृष्टि वृच्छ नयग्रोध ॥ ११६ ॥ पर प्रस्थान की शुभ घड़ी आयो निकट विचारि। कहेउ प्रचारि मुनीस तव आपनि दसा निहारि ॥ ११७ ॥ रामचद्र जस वरनि के भयो चहत अव मौन। तुलसी के मुप दीजिये अवही तुलसी सोन ॥ ११८ ॥ संवत सोरह सै असी असी गंग के तीर। सावन स्यामा तीज सनि तुलसी तज्यो सरीर ॥ ११९ ॥ मूल गोसाईं चरित नित पाठ करै जो कोय। गौरी सिव हनुमत कृपा राम परायन होय ॥१२०॥ सोरह सै सत्तासि सित नवमी कातिक मास। विरच्यो यहि निज पाठ हित वेनी माधव दास ॥ १२१ ॥ इति श्री वेणी माधव दास कृत मूल गोसाईं चरित समाप्तम् ॥ श्री शाण्डिल्य गोत्रोत्पन्न

पंक्ति पाठमा त्रिपाठी राम रक्ष मणि रामदासेन तदात्मजेन च लिखितम् ॥ मिति विजया दशमी संवत् १८४८ ॥ शुभमस्तु ॥

विषय—गोस्वामी तुलसीदास जी का जीवन चरित्र इनके जीवन से संबंध रखने वाली अनेक घटनाओं सहित मनोरिचार दोहे चौपाई में वर्णित है।

संख्या ४५. नवरस तरंग, रचयिता—बेनी प्रवीन कागज—देशी, पत्र—६७, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २१, परिमाण (अनुष्टुप) १७५७, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७८ = १८२१ ई०, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—प० कृष्णबिहारी मिश्र, मयागंज, मार्टेस हाउस लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नौरस तरंग लिख्यते ॥ दोहा ॥ गनपति गुरु गौरी गिरा गंगाधरहि मनाइ। बरनत बेनी दीन कवि बंसीधर के पाइ ॥ १ ॥ मनहरन ॥ अमल कमल सम कोमल प्रवीन बेनी ममल रहत निरखत छवि जाके के। सिसु दिन परम प्रकासित त्रिलोकपितु चंदन अगर धूप बासित बिसाल के ॥ सोभित समूह मनि मानिक सिंगारे मना कलगी किरीट महिपालन के भाल के। दारद हरन दुख हरन करन सुख सेवत चरन हीं गोसाईं बंसीलाल के ॥ २ ॥

अंत—कवित्त ॥ जामे लोभ लहरि उठै न भमर माया छाया दाया संतन की मंजत सुभावरे। मोह मद मत्सर मगर मच्छ कच्छ क्रूर तिनको कछु न चलि सकति कुदावरे ॥ सुमत समीर है भगत प्रवीन बेनी नाव नाम विदित सुसंग चित चावरे। राम नाम बोहित करनधार गुर पाइ भव पारावार में मगन होत बावरे ॥ ८० ॥ इति श्री मन्महाराजा धिराज महाराज मणि श्री नवल राय आज्ञास प्रवीन बेनी बाजपेई कृतौ नवरस तरंग नाम ग्रंथ संपूर्ण समाप्तं शुभमस्तु ॥ संवत् दोहा ॥ महावेद निधि ससि बरष पक्ष शुक्ल माघ सुम्धाम। पूरन कीन्हो दिवस तिथि श्री रस तरंग ललाम ॥१९४१॥

विषय—नव रसों का वर्णन तथा उनके उदाहरण।

संख्या ४६ ए. भड्डर पुराण रचयिता—भड्डरी, कागज—साधारण, पत्र—४६, आकार—७ × ५½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १० परिमाण (अनुष्टुप) ३५०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९१२ = १८५५ ई० प्राप्तिस्थान—रामप्रसाद मुराऊ, ग्राम—पुरवा विश्राम दास डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री रामचंद्राय नमः ॥ अथ पापी भड्डर पुराण लिख्यते ॥ एक दिपीसर महमी कृस्त्री के आगे कहै है मैं तेरे आगे विचार कहौं हों भद्र की नक्षत्र को मेह को सुभाम की सुकाल को संजोग मो कातिक बदि अमावस मो रूप करिके देखाप ताई जोग इथिए रोहिनी नक्षत्र में न बरसै तौ गत पूरा गया जानी जौ रोहिनी नक्षत्र में न बरसै ता गत पूरा गया जानी। जा रोहनी नक्षत्र में बरसै तौ गरम गल्ल जानिये ॥ १ ॥

अंत—अधिक मास कथ। मंगल सनीचर बक्र होइ तौ प्रजा कै पीडा होइ मंगल सनीचर राहु एक रासि पै आवै तौ प्रजा का पीडा होइ ॥ जम कर्मी जोग कहावै तारा उदै होत देखिये हर सनीचर होइ बीच म गुरु होइ ऊपर मंगल होइ तौ मूसक आग कहिए

अथवा पश्चिम दिसा की तरफ सूर्य अस्त होत वेरिआ नीचे मंगल बीच म गुरु उपर शनीचर होइ तौ भी मूसल जोग कहिये ।

× × × ×

वस्तु वेचत जौ छींक होइ तौना वेची आगे महग होई ॥ इति भड्डुर पुरान सपूर्ण ॥ संवत् १९१२ फागुन सुदी ५ लिपा विश्राम दास ॥

विषय—पृ० १ से पृ० ४ तक—भूमिका, रोहिणी नक्षत्र में वरसने या ना वरसने का फल। कार्तिक सुदी १२ के दिन गरभादि होने के फलाफल, कातिक सुदी पंचमी—कातिक फल समाप्त।

(२) पृ० ५ से पृ० ७ तक—मार्गशीर्ष फल और पौष फल वर्णन ।

(३) ,, ७ से ,, १२ तक—माघ, फाल्गुन, और चैत्र फल ,,

(४) ,,१३ से ,, २८ तक—वैसाख से लेकर आश्विन तक का विचार तथा ग्रह नक्षत्र वर्णन ।

(५) पृ० २९ से पृ० ४६ तक—वर्षा के लक्षण, होली का विचार, दिवाली का विचार, रसालरी शाखा, उन्हालरी शाखा का विचार। जेठ अषाढ़ की पहिली वर्षा का विचार। जेठ मास की प्रथम पड़िवा का फल। चैत्र वदी पड़िवा का विचार। पौष मास की संक्रांति का विचार। संक्रांतियों के पृथक २ फल। तिथिमास क्षय फल। परिवेष्ट फल। मडलविचार। अधिक मास फल। पवन विचार। छींकादि विचार।

सख्या ४६ बी. बृहस्पति कांड, रचयिता—भड्डरी, कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार—९ × ४½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप) १०२०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८२ = १८२५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामनिवास तिवारी, ग्राम—परियावाँ, डाकघर परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ बृहस्पतिकाड लिप्यते ॥ मेप राशि गुरुं चैव तक्षको मेघ उच्यते ॥ चैत्र सम्वत्सरो नाम सोपि राजा भविष्यति ॥ १ ॥ बहुतोयं भवेन्मेघा सुभिक्ष मारोग्य तथा ॥ सर्वान्नं समह कृत्या तुलाभि गरंच कारयेत् ॥ श्रावणे विक्रि यद्वि गुणो लाभो भवतु ॥ २ ॥ पार्वत्यौ वाच ॥ मेघ राशि यदा बृहस्पति तदा मेघ वर्ष हि दिन ७२ जेष्ट वर्षिह दिन ७ अषाढ़ वर्षहि दिन १० श्रावण वर्षहि दिन २२ भाद्र वर्षहि दिन १८ आश्विन वर्षहि दिन १२ कार्तिक वर्षहि दिन ३ पूर्व सस्त ॥ पश्चिम महर्घ ॥ उत्तर पीड़ा ॥ दक्षिन सुर्भिक्ष ॥ अषाढ़ श्रावन छत्र भङ्ग होइ ॥ भो देवी पार्वती पृछति ॥ भोईश्वर मम कथ्य ता बृहस्पति फलम् ॥

अंत—श्रावग शुक्ला सप्तमी, पुन. जो स्वांती जोग। अंमर वायु वहै पुनि, सुखी होंहि सब लोग ॥ अमर वायु वहै विनु पानी। तौ निश्चै के जानी ॥ तुम तौ जैहहु मालवा हम तीजा वढ़ हार ॥ कूपौ कौ जल सुपहि पुहुमी परी पभार ॥ स्वाँती दीपक जौ वरै खेलु विशाषा गाइ ॥ अैसावोलै भड्डरी तरुनिः फल होइ जाइ ॥ वारह मास पोज जिनि मरहु ॥ पूस मास अमावरण कै सुधि करहु ॥ पूस अमावस होहि जवही ॥ मूल विशाषा पूरवति तवही ॥

मेदिनि मन्द मन्द कम्पने ॥ नवस्य बहु पीडने ॥

इति शनिश्चर काण्ड समाप्तः ॥ इति श्री बृहस्पति काण्ड सम्पूर्णं शुभ मस्तु ॥ चैत्र मासे कृष्ण पक्षे तिथौ तृतीयायाँ चन्द्र वासराम्य तायाँ ॥ संवत् १८८१ ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ११ तक—बृहस्पति काँड। बृहस्पति फल; वृष, मिथुन तथा कर्कादि राशियो के सबंध से।

(२) पृ० १२ से पृ० १७ तक—साठ सम्वत्सरों के फलों का वर्णन। अर्थात् प्रभव, विभव, शुक्ल प्रमोद तथा अंगिरादि नामधारी सम्वत्सरों के फलों का कथन।

(३) पृ० १८ से पृ० ६१ तक—द्वादश राशि के संबंध से शनीश्चर का फल कथन।

(४) पृ० ९२ से पृ० ९५ तक—कूर्मचक्र।

(५) „ ६१ से „ ६९ तक—सूर्य काण्ड। शुक्रास्त फल, शुक्रोदय फल, रोहिणी फल।

(६) पृ० ९९ से पृ० ···· तक—आर्द्रा प्रवेश फल कृत्तिकादि नाड़ी फल।

संख्या ४८ सी—सगुनावली, रचयिता—भड्डरी कागज—देशी, पत्र—११, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २५, परिमाण (अनुष्टुप) १८०, रूप—मामूली, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२५=१८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवकुमार, ग्राम—गोपालपुर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भड्डरी कृत सगुना वली लिख्यते प्रथम छींक विचार ॥ चौ० ॥ प्रथमहि भाषौं छींक विचारहि। सकल सुभासुभ मति अनुसारहि ॥ छींक पीठ की कुशल उचारै। बायें काज सबै संवारै ॥ संमुख छींक कराई आप। छींक दाहिनी द्रव्य विनासै ॥ ऊँची छींक करै जय कारी। नीची छींक होय भय भारी ॥ अपनी छींक महा दुखदाई। ऐसे छीक विचारो भाई ॥ छींक सूँघनी उच्च करि कीन्हीं सरदी खांस कही फल हीनी ॥ बांई ऊँची पीठ की छींक कही सुपकार नीची संमुख दाहिनी अपनी छींक असार ॥ सगुन सोरठा दक्षिण पगवे स्याल दक्षिण अंग सुहावई। जैस कूप कर ब्याम तिह दहि जै सुख करै ॥ दो० स्याल दाहिने पांचवें नवै पाव सिर सीस। राज्य लाभ अरु उदर सुख कंठ सुख पग दीस ॥ हृदय कंप आदर अधिक नाक महा सुख भार। पीठ सुबाहन लाभ हवै ॥ कोटी सुफल असार ॥ दो०। जो दुम जगत स्याल पगै नाक पग बाम मो। ती फल अशुभ बखान काज न कीजै अप सगुन ॥

अंत—अथ शब्द विवरी—

असार = अशुभ
कूप = पसुली
पगे = पंजुरी
रायम = गरदा
ससार = पिराई
गीदर = सियार
दहिना = पिराई
सींगा = डोमपी
काछी = घोड़ी
मोरन करे = कूकनाक बतावे

उपल = विनौरी
रिप = नक्षत्र
तूर = अवाज
महार्गो = महगा
वधावणा = वधाई
गर्भ सहित = वादल होना
अवसरिया = हुता
कोरो = झूरा
सगला = सब
गोय = छिपै
वियाल = हवा
पाल = मेंड
पायल = मंडल
नील धंस = नीलकठ
सुसा = खरगोश
रूपारेलतो = चिरई है
सागोणी = चिरई विपेस
मलहारी = चिरई विपेस
वायस = पक्षी मात्र
सहुतो = सय
धडेकीयाँ = गर्जने से
पेर्ज = समी
पण = लेकिन
प्रथम = पड़िवा
अपाढ़ = पूर्वापाड
पिरजा = प्रजा
दुर्भिप = काल
सुकै = सुपा
साप = समय
झमौनी = चमक
धुर = वदी
धामधामो = जोर से
कोर वरी=कहूँ कहूँ

तूर = वाजा
माह=मपा
मातसी=अमावस
औस = अवस्य
गभ = गर्भ
ववी = वोना
झल = जवर
चाक चहड़े = हैजा होय
वर्ती वीती = होय
स्याला = जाड़ा
ऊध्या = गरमी से
ऊमी = पढी
सूवी = अशुभ
खी खांडो = सूर्य ग्रहण
पूगे = होय
अदद = अद्रा
पूडर = पीछे
चौंपदना = चौंपाया
वापड़ी = गरीवनी
पाती = कुवार वदी १
अैलों = पाली
जोवारी = जिस वार को
पा लै = देपै
करती = सक्राती
रस कुसुंम = गुड
कति = कृतिका
सीठ = छूआ
कोकको = नेवता
गुरहसो = चिरई
ऊभै = उसी में
छावकी = वीस्तुह्या
कर कांप्या = गीर गिदान
मोधा = वस्तुह्या

विपय—शरीर लक्षग, छींक, पशु पक्षियों की वोली आदि से शुभ अशुभ वर्णन

संख्या ४६ डी. शकुनावली, रचयिता—भड्डरी, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ४६, परिमाण (अनुष्टुप) २७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामदत्त दूबे, ग्राम—मुबारकपुर, डाकघर—अहमदपुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भड्डरी कृत शकुनावली लिख्यते ॥ अथ प्रथम छींक विचार ॥ चौ०॥ प्रथमहिं भाषौं छींक विचारहि । सकल शुभाशुभ मति अनुसारहिं ॥ छींक पीठ की कुशल उचारै । बाईं कारज सबै सुधारै छींक दाहिनी द्रव्य बिनासै ॥ ऊँची छींक कहै जय कारी । नीची छींक होय भय कारी ॥ अपनी छींक महा दुखदाई । ऐसी छींक विचारौ भाई ॥ छींक सूँघनी × × × ×

अंत—चौ० ॥ निहचै पीठ पड़े सुख पावै परे कोख प्रिय बंधु मिलावै । कटिके परे वस्तु बहु रंगा । गुदा परे मित्र मिलै अभंगा जुगुल जांघ पर भ्रम को परइ । पनगाह सकल सरीरण मरई । परे जांघ नर होय निरोगी । पांव परे तन जीव वियोगी । या विधि पल्ली सरठ विचारा कही भड्डलिया ज्योतिष सारा ॥ इति भड्डली कृत सगुनावली समाप्त लिपतं हरदोई निवासी पंडित मनसाराम संवत् १९२८ वि०

विषय—छींक, अंग फरकने, १२ मासों के विचार, आदि के शुभाशुभ फल पर्यन्त।

संख्या ४६ ई. शकुन विचार, रचयिता—भड्डरी सहदेव, कागज—साधारण, पत्र—१८, आकार—९ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११ परिमाण (अनुष्टुप) २५० रूप—नवीन लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ पांडे हेडमास्टर, प्राइमरी स्कूल, ग्राम—कुरही, डाकघर—औठवारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भड्डर कृत ज्योतिष लिख्यते ॥

शकुन विचार

प्रथमहिं भाषौं छींक विचारा । सकल शुभाशुभ मति अनुसारा ॥
छींक पीठि की शकुन उचारे । बाईं कारज सबै सँभारै ॥
सन्मुख छींक लड़ाई भाषै । छींक दाहिनी द्रव्य विनासै ॥
ऊँची छींक कहै जै कारी । नीची छींक होय भय कारी ॥
अपनी छींक महा दुख दाई । ऐसे छींक विचारौ भाई ॥
छींक सूँघनी छक्कर लीन्ही । सारी चौंस कही फल दीनी ॥

अंत—छिपकली और गिरगिट विचारा—

॥ अंग फल ॥

सिर पै राज्य बतावै भूर । दै ललाट ऐश्वर्यहिं पूर ॥
नासा भौंहि मुदतहि देई । मुख मधुरो भोजन नित सेई ॥
कंठ मिलावै प्रिय की साईं । कंधे परै विजय दरसाई ॥
कान और मुगल भुजाहू । गोधा गिरत होइ धन लाहू ॥

भनै भगवत पिंग लोचन । ललित सौंहै कृपा कोर हेन्यो विरदैत ऊंचेकर को ।। पवन को पूत कपि कुल पुरुहूत सदा समर सुपूत वंदौ दूत रघुवर को ।

अंत ।।५१।।--रोमावली वर्णन ।। लहरि ललित यों कलान सों कलित अति निंदरत सोभा स्वच्छ सोभा सूत की ।। चूम्यों पय मान सुप पावन मो प्यार करि देपे द्रय मालिका मिहात पुरुहूत की ।। भनै भगवंत कहा ओर्ज की जुगुति जोति भान मान कैमी प्रभु पद नेह नून की ।। रापे जन राजी कपितन मे विराजी वह वंदौ सुभ माजी रोम राजी राम दूत की ।। इति भगवत राय कृत हनूमान जी के सुदर कांड के और नप मिप के फुट कर कविता मंपूर्ण सुभ मस्तु सवत् १९३० चैत्र शुक्ला द्वादसी ।। श्री राम जी की जे । हनूमान वाला की जैं ।।

विषय—हनुमान जी के ५२ कवित जिनमें उनकी वीरता का वर्णन है ।।

संख्या ४६ वी. हनुमत पचासा, रचयिता—भगवत कवि, कागज—सामान्य, पत्र—२५, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ६, परिमाण (अनुष्टुप) १५०, रूप–साधारण, लिपि–नागरी, प्राप्तिस्थान–प्रधान जवाहिर लाल पेशकार, चरखारी दर्बार ।

आदि—अथ हनुमान जू कौ हनुमत पचास्मा भगुंन कवि कृत लिप्यते कवित्त–सुवरन गिर सौ सरीर प्रभा नित्त तामें झल भलै अग रग वाल दिवाकर कौं । दनुज गहन वन दहन अमान मानों तेज सौ विराजै अवतार एक हर कौं । भनै भगवंत पिंग लोचन ललित कृपा कोर सों कलित विरदैत ऊंचे कर कौं । पवन कौ पूत कार्य कुल पुरहूत सदा समर सपूत वंदौ दूत रधुवर कौं ।

अंत—इति श्री हनुमत पचासा भगुत कवि कृत सपूर्ण समाप्त सुभ संवत चैत्र वदि ११ भौमे स० १९५२ गत मुकाम महराज नगर चरखारी जो कोउ वांचे सुनै ताकौ जै जै श्री राम जी की जैं जैं श्री लछमन जी की जैं जै श्री भरत सत्रहन जी की जै जै श्री हनुमान जी की चौकी नवीस हीरालाल को पहुचै ।

संख्या ५०. नागर सभा, रचयिता—भागवत, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप) ३०८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल स० १९३२ = १८७५, प्राप्तिस्थान – लाला सीताराम, ग्राम—दीनापुर संगीत सत्त, डाकघर—गोला गोकरणनाथ, जिला—खीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम' ।। अथ नागर सभा ग्रथ लिप्यते ।। होली आमद नागर ।। नागर आता है आज वढ़ी सज धज को वनाये । कुंडल कान विच सेली अग भभूत रमाये । काधे कावर हाथ में तोंवी ढडुआ सीस सुहाये । सव गुन में आगर छवि सुदर दामिनि देपि लजाये ।। वन जवही सय काम तुम्हारे गोविंद के गुन गाये ।। दोहरा ।। सुमिरौं गनपत सारदा गुरू गोविंद महेश । वर मागौं तुम मे यही दाया करौ हमेश ।। पैंया पर कर जोरि कै चरनन सीस नवाय । कहौं सिंपैरा मैं नया भगवत आज्ञा पाय ।। सैर मैं खूव दिखाऊं । तेरी जो मरजी पाऊं ।। सवाल पहला सौदागर का नागर से । दोहरा में ।। जोगी हो किस देस के कौन तुम्हारा नाम । छाड़ि देश परदेश में आये हो

किस काम ॥ जवाब नागर का ॥ सुन ध्यागर नागर मेरा नाम जगत मसहूर। देस हमारा कामरू जादू से भरपूर ॥ सवाल सौदागर ॥ जोगी कुछ देखा नहीं सीखा तुमने जोग। दुनियाँ में लाखों पड़े हैं जादू गर लोग ॥ जवाब नागर का ॥ सौदागर तू क्या करै किधर है तेरा ध्यान। क्या समझा तू दमी मुझे इतना रे नादान ॥

अंत—मंतर पढ़के खिलाया मोती का। मेघ करै बैराई चंगा करै सुराई ॥ जीता मोती का ब कहना। छंद ॥ ले चल अपने देस को नागर मुझको साथ। चेरी हूँ दिन रात की बिकी तुम्हारे हाथ ॥ बिकी तुम्हारे हाथ संग में ले चल अपने मुझको। माल मुल्क घरबार सभी कुछ दीना मैंने तुझको ॥ गुन में नागर एक बड़ा है तेरी सुंदर नारी। गुरू गोबिंद से ले करके मुझको अपनी भी घरवारी ॥ ठुमरी जवाबी सुंदर ॥ इस नगरी से काम नहीं है। खास वतन को जाना है दुनियाँ दौलत लोग कुटुंब पर नाहक की भटकाया है। दिल मिल के चले लोगन से फेर यहाँ नहिं आना है भगवत आठ पहर मा मूके हरि को मुँह दिखलाना है ॥ दोहरा ॥ कहि कर चलना नागर का और पहुँचना अपने देस कामरू में ॥ आता हूँ मैं देस को कर सबको परनाम। भगवत के परताप से हुआ हमारा काम ॥ गजल मुबारिक बादी॥ नाम दुनिया में होय कुल कुल और गुरू की शादी। नागनाम देने आता है मुबारिक बादी ॥ मिसल गुल क्यों न रहे लोग खुसी से खनंदा। बागू आलम की नए सिर से हुई आबादी ॥ आज कल खिज्र के मानिंद सबा आलम में। गुंचये गुल को नये सिर से हुई शादी ॥ कसरते ऐश से हर गुल ने किया बस कि हुजूम ॥ मिल गया सारी गुलिस्तां को बस आजादी ॥ किस्सये सुंदरो नागर जो कहा खुश मैंने सुनके सब दिल में करैं अपने निहायत शादी इति श्री नागर समा संपूर्णम् लिखा बार लाल कर ताल बाला संवत् १९६१ वि० ज्येष्ठ मास दसहरा शुक्ल पक्षे ॥ श्री राम जी की।

विषय—नागर का कामरू देश से आकर बंगाल में पहुँचना और वहाँ पर एक सौदागर का मिलना उससे वार्तालाप करना मोती का समाचार पाना, उसपर आसिक होना, उससे मिलने के लिये खोज करना, मोती का मिलना, एक दूसरे पर जादू करना, मोती का हारना, आदि फिर मोती को लेकर नागर का अपने देस जाने का वर्णन ॥

संख्या ५१ ए. भागवत चरित्र, रचयिता—भागवतदास कागज—साधारण, पत्र—२५६, आकार—१३ × ६½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४ परिमाण (अनुष्टुप) १०७५२, रूप—नवीन, लिपि नागरी, रचनाकाल—सं० १८६१ = १८०४, लिपिकाल—सं० १८९४ = १८०६ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह, कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री मते रामानुजायनमः ॥ अथ भागवत चरित्र लिख्यते ॥ श्लोक ॥

स्यामा वदाताम्बर विंद विभ्रमम् मैत्रं वधूक पुष्प सख सोदर पानि पादं ॥ सीता सहाय मुदितं भ्रू व चाप बाणं, रामं नमामि सिर सारमणीय वेषं ॥१॥ × ×

छप्पै—जय जय जय जगदीश, जयति श्री पति सुख सागर।

जय मुकुंद छवि धाम, राम रघुपति अति नागर ॥

जय श्रुतीश भव ईश, जयति गणपति निधि दायक।
जय नारद सनकादि, सारदा हरि गुण गायक॥
जय भाष्यकार त्रैलोक्य गुरु, श्री रामानुज धरनिधर।
भागवत दास पद कज रज, वंदे सिर धरि जोरि कर॥१॥

अंत—श्री हरिहर जन गुरु हृदय, पावन विसद अकास।
रवि मणि सम तहँ नित लसी, चरित भागवत दास॥
कामिहि नै त्रिय, धनु कपटि, पितु मातिहि लघु बाल।
इमि त्रिह लागहि मोहि नित, हरि गुरु सत कृपाल॥

इति श्री भागवत चरित्रे पवित्रे हरिजन मित्रे चतुर्थ व्यूहे सुचानिका वर्णनोनाम अष्टदशाध्यायः॥ १८॥ सपूर्णमसम मस्तू सम्वत्॥

प्रथम व्यूह

(१) श्री रामनाम महात्म वर्णन। (२) हरिचरण तथा सत्सग का प्रभाव वर्णन। (३) ग्रंथकार का गुरु से कथा सुनना और कथा सुनने का स्थानः—

तीरथ राज प्रयाग अति पावन। पाप तिमिर कह रवि दुख दावन॥
अथ पट पुष्ट जीव कसि लीन्हे। अट पट फटै न कोटिहु कीन्हे।
दरजी पूव माधव गति वरनी। कतरत सग मति ग्रक तरनी॥
तिथि थल गुरु यह कथा रसाला। मोंहि सुवाई करि प्रति पाला॥
गूढ़ तत्त्व वरनी सिसु ताते। समुझि परी कछु गुरु करु नाते॥
भाषावद करा करि सोधू। मोरे मन जिहि होय प्रवोधू॥
श्री गुरु पद पा थोज मनाई। वरनौ भक्ति जन्म चरिताई॥

भक्ति का जन्म वर्णन, ग्रंथ निर्माण काल तथा ग्रंथ प्रकाशन स्थानः—

अष्टादस सै तिरसठ समत। करौं कथा हरिजन जस रंभन॥
कार्तिक शुक्ल पक्ष बुधवारा। नौमी तिथि सुभ जोग वदारा॥
जिहि दिन सत जुग कर अवतारा। तिथि दिन ग्रंथ प्रगट संसारा॥
कृष्ण जन्म धरनी सुचि जानी। नाम मधुपुरी वेद वखानी॥
त्यहि पुर मध्य कथा विस्तारी। निरखत जाहि मिटहि अघभारी॥

भागवत चरित्र की महिमा।

(४) ईश्वर के अवतारों का सूक्ष्म वर्णन। (५) नमुच्य असुर वध वर्णन। (६) शकराचार्य जी तथा उनके अद्वैत मत वर्णन। (७) श्री रामानुज महाराज जी का जीवन चरित्र वर्णन। (८) कृष्णदास तथा उनके शिष्यों, पृथ्वीराज तथा द्विज वैजनाथ आदि की कथा। (९) नाभा तथा तुलसी मेलाप वर्णन। (१०) नारायण की काम पर विजय। (११) अर्जुन गर्भ मोचन वर्णन। (१२) प्रेम लक्षण भक्ति वर्णन। (१३) कुल

लेकर प्रेम वर्णन। (१४) अगस्त्य शंकर संवादान्तर्गत अध्याय वर्णन। (१५) राम जन्म लीला वर्णन। (१६) रामचन्द्र जी की बाल लीला। (१७) राम की बाल क्रीड़ा गेंद खेलना, पतंग उड़ाना और धनुष संधानादि। (१८) राम चरित्र वर्णन, शिकार, धनुष भंग से लेकर रावण-वध संक्षेप में वर्णन। अध्याय की समाप्ति, लेखक काल वर्णन संवत् १८९३ लिखा चरणदास पाँडे गौड़ ब्राह्मण प्रयाग जी में।

द्वितीय व्यूह

(१–२) नरसिंह पुराण के मतानुसार प्रह्लाद-चरित्र वर्णन हरिण्यकश्यप के शाप तथा राक्षस होने और प्रह्लाद के जन्म तथा राम भक्ति की कथा। प्रह्लाद के कष्टों, राक्षस के वध और नृसिंह जी के अवतार का वर्णन। इस कथा के पढ़ने का फल। (३) गुरु भक्ति, भक्ति के प्रकार और गुरु द्वारा उसमें सफल होने के उपाय। (४) प्रपन्न चरित्र प्रपन्न के दो प्रकार दृप्त और आर्तके वर्णन उन दोनों के लक्षण, व्याख्या की दृष्टि से जैमिनि चरित्र वर्णन, जैमिनि के लिये भगवान का युद्ध करना और जैमिनि के चित्त में भक्ति का भाव बढ़ना। (५) मीरा चरित्र। उसका विवाह, भक्ति लोकाचार में अनभक्ति, विषपान, पति पितृ त्याग तथा हरि अनुराग का वर्णन। (६) पद्म-कल्प के चरित्र, ब्रह्म सृष्टि वर्णन। (७) देवहूती कर्दम विवाह तथा प्रेम और उनकी संतति का विस्तार–कपिल आख्यान। (८) ऋषभ देव तथा उनके तीस पुत्रों का वर्णन और जनक तथा योगिराज के व्याज से ब्रह्म तथा मायादि निरूपण। (९–१०) ध्रुव जी की जीवनी। उसकी भक्ति, नारायण जी का उपदेश, उनकी ज्ञान गरिमा तथा परमपदादि वर्णन। (११) करमैती, परशुराम की पुत्री का चरित्र, उसके वैराग्य तथा भक्ति का वर्णन। (१२–१३) नरसी भक्त का चरित्र, उसको शिवजी के दर्शन और भक्ति द्वारा वर प्राप्ति हुंडीलेखन, कन्या तथा पुत्र के विवाहों की करतूत का वर्णन। (१४) निम्बार्क तथा उनके सम्प्रदाय का वर्णन। भक्ति के प्रभाव से देवी की दीक्षा देकर अनेक माँस भक्षियों को अपने सम्प्रदाय की कंठी पहिनाकर उक्त पापाचार से उनको छुड़ाना। (१५) एकादशी जन्ममाहात्म्य वर्णन। (१६) द्विज हरि भक्ति का चरित्र, हरि भक्त का भक्ति में लीन होना और पुरवासियों के अनुरोध से निज पत्नी को बुलाने के लिये ससुराल जाना, मार्ग में उसका चोरों द्वारा मारा जाना और पत्नी की भक्ति के प्रभाव से भगवान का आकर चोरों को निधन कर ब्राह्मण को जीवित कर वर देने को कहना। ब्राह्मण का चोरों को जीवित करा उनको साधु बनवाना। (१७) बन माधव का चरित्र, ईश्वर की उन पर कृपा माधव की भक्ति, अहंकारी पुजारियों के अनादर करने पर भगवान का उन पर कोप और पुजारियों के मत्सर का भंग होना। माधव की काशी में शास्त्रार्थ करने पर विजय, भगवान और माधव का संग। माधव का कई लोगों को उपदेश और परमगति। (१८) गीत गोविन्द के रचयिता कवि जयदेव जी का चरित्र वर्णन। उनके उपरान्त ग्रंथ बनाने का वर्णन। पद्मावती के साथ विवाह। एक राजा द्वारा उनका

त्राण और उसी राजा द्वारा उनकी आराधना। भक्ति भाव के प्रभाव से अपनी मृतक पत्नी इत्यादि का पुनर्जीवित करना।

तृतीय व्यूह।

(१) वसुदेव विवाह, दोनों का कंस के वन्दीगृह में निवास, बालकों का कंस द्वारा क्रमश: वध—हरिजन्म। (२) कृष्ण का गोकुल में जाना, पूतना वध, कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन। (३) नंद गोपादि सहित कृष्ण का वृन्दावन जाना। वत्सासुर, बकासुर, अघासुर, आदि राक्षसों का वध। चतुरानन मोह भंग। धेनुक का वध। नाग नाथन। प्रलंब वध। चीर हरण लीला। याज्ञिक द्विज-पत्नियों का कृष्णप्रेम। गोवर्धन पूजन और इन्द्र का गर्व प्रहार। (४) नंद का कृष्ण द्वारा वरुण पाश से मुक्त होना। गोपियों के दृढ़ कृष्णानुराग तथा रास रचना वर्णन। कृष्ण और गोपियों के संयोग तथा वियोग का वर्णन। नंद का सर्प से बचाना और उसका विद्याधर रूप होकर अपने शाप का वर्णन। वृषभासुर तथा केशीवध। (५) अक्रूर वृन्दावन गमन, उनका कंश का संदेश सुनाना और कृष्णादि द्वारा नंद का मथुरा गमन। स्वफल्क सुत को हरि का चतुर्भुज रूप से दर्शन देना। उसकी स्तुति। मथुरा वासियों की कृष्ण में श्रद्धा। रजक-वध। कृष्ण का सुदामा के घर जाकर उससे पूजित होना। कुब्जा को सौन्दर्य प्रदान। धनुप भंग। (६) कृष्ण का मल्लयुद्ध। चाणूरादि वध। कंश-वध। देवकी वसुदेव बंध मुक्ति। कृष्ण के विद्याध्ययन और दक्षिण में मृतक पुत्रों के ला देने का वर्णन। (७) गोपी उद्धव संवाद। हरि हलधर तथा उद्धव का अक्रूर ग्रह गमन। अक्रूर द्वारा उनकी पूजा तथा स्तुति। (८) कृष्ण जरासंध युद्ध। कालयवन और मुचकुंद की कथा। कृष्ण के अनेक विवाह। (९) कृष्ण रुक्मिणी का विवाह। (१०) नारद तथा सुदामा जी की कथा। (११) माधव सम्प्रदाय का विस्तृत वर्णन। (१२) अंवरीप की कथा, दुर्वासा गर्भ मोचन अंवरीप की भगवान के चक्र द्वारा रक्षा होना। दुर्वासा का क्षमा याचना करना। (१३) रामानंद के सम्प्रदाय का वर्णन। आचार्यों का गौण तथा कबीरदास विशेष वर्णन। (१४) पीपा भक्त का वर्णन। (१५) रैदास भक्त का वर्णन। (१६) गज मोक्ष वर्णन। (१७) धनुप भंग, श्री परशुराम क्रोध वर्णन। (१८) श्री रामादि चारों भाइयों का विवाह वर्णन, इस अध्याय के लिखने का समय सम्वत् १८९४ लिखा चरणदास पाँडे गौड़ ब्राह्मण प्रयाग जी में।

चतुर्थ व्यूह।

(१) परशुराम का धनुप बाण छोडकर वन को जाना और भीष्म को ज्ञान सम्बोध करना। भीष्म का महाभारत पश्चात् धर्मपुत्र को उपदेश देना। वैशम्पायन तथा जन्मेजय संवादान्तर्गत धर्म पुत्र मोह वर्णन। (२) भीष्म पितामह का धर्म

पुत्र के प्रति मोह पर गौतमी की कथा सुनाना और उसके अन्तर्गत कर्म की गति को समझाना। (३) सुदर्शनोपाख्यान के अन्तर्गत गृही द्वारा मृत्यु के जीतने का वर्णन। आतिथ्य सत्कार की महिमा। (४) शुक अनुशासनान्तर्गत भागवत धर्म का वर्णन तथा मेधावी की कथा। (५) शिव उमा संवाद। तुलसी महात्म्य वर्णन। (६) जै मुनि तथा जनमेजय संवाद के अन्तर्गत श्री भीष्म पितामह की अनुपम मृत्यु। (७) श्री तुलसी के अवतार लेने, उनके अमृत अंश से जन्म लेने, तुलसी का आदि शक्ति होने तथा उसके पूजन का फल। (८) तुलसी के वृन्दा में और जालंधर से उसके विवाह होने का चरित्र वर्णन। तुलसी का महात्म्य। वृंदापतिव्रत भंग—जालंधर-वध। वृंदा का हरि को अभिशाप। (९) 'राम तै अधिक राम कर दासा" इस कथन को हनुमान जी की कथा सुनाकर शिवजी का पार्वती को समझाना। हनुमान का गर्भ प्रवेश उनके जन्म तथा चरित्र का वर्णन। उनकी भगवद्भक्ति और रामसेवा का कथन। हनुमान जी की महिमा। (१०) श्री कृष्ण स्वामी के अद्वैत द्वैत वाद मत का वर्णन उनके सम्प्रदाय के प्रसिद्ध साधु नामदेव का वेद पढ़ाना। त्रिलोचन भक्त की कथा। (११) नामदेव की विधवा कन्या से नामदेव का जन्म लेना। उनके भागवत होने और बाल्यपन में अपने बाल हठ तथा भक्ति के द्वारा भगवान को पयपानादि कराने का वर्णन और अनेक अन्य विस्मय सूचक कार्यों का वर्णन। (१२) वल्लभ स्वामी, विट्ठल स्वामी, कृष्णदास और सूरदासादि का वर्णन, विट्ठल के पुत्रों का वर्णन (सरस चरित्र वर्णन)। (१३) भगवद्भक्ति संपन्न, नृप पृथ्वी राज कुल वधू रत्नावती और उसकी भगवान के पावन पदों में अपूर्व भक्ति तथा साधु सेवादि वर्णन। राजा का सिंह को उसके मारने के लिये छोड़ा गया था। उसका रानी की भक्ति द्वारा नृसिंह रूप होना। (१४) सत समुदाय वर्णन। (१५) तुलसी दास जी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए नाभादास जी का कलि निरूपण करना। (१६) कलि चरित्र कथन। (१७) तुलसी दास जी का चरित्र वर्णन। (१८) नाभादास जी का चरित्र कथन। ग्रंथ की सूची का संक्षिप्त वर्णन। हरिधाम तीर्थादि वर्णन। ग्रंथ के पठन पाठन का फल। भक्ति विमुख लोगों को नर्क यातनाएँ जो नर्क में भोगनी पड़ती है।

संख्या ४१ बी भक्तमाल रचयिता—भागवतदास कागज—साधारण, पत्र—१९ आकार—१० × ४½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९ परिमाण (अनुष्टुप) २९०, रूप—प्राचीन पद्य लिपि – नागरी, लिपिकाल—सं० १८९९ = १८४२ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर महावृत सिंह, ग्राम—मदौली, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—बार-बार बंदन करौं, नाना भाग प्रेम। कहउँ नाभा वेद को, भक्त माल नृप देम ॥ ७ ॥ भक्त माल जिन जिन पढ़ी, सुनी श्रवन मन लाय। ते नर भे अरु होहिंगे, हरि अनुचर सुर पाय ॥ ८ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ विष्णु न मानिय संत से, मरि सेवरी इयपचादि। जैहै नर

श्री पति भजे, जग्य सजी द्विज वादि ॥ १३ ॥ जन भगवत गुण साधु के, जो सुनि मन हरखाइ । सुजसु लोक सुप सपदा, नित नूतन अधिकाइ ॥ १४ ॥ इति श्री भागवत चरित्रे भक्त माल महात्मे भागवतदास कृते तृतीयोध्याय: ॥३॥ शुभ मस्तु ॥ संवत् १८९९॥

संख्या ५२. राम सावित्री, रचयिता—भागवतदास, कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुष्टुप) ११९, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२१ = १८६४ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर नैपाल सिंह, ग्राम—भडली, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम सावित्री श्री भगवः दास कृत लिप्यते ॥ दोहा ॥ श्रीनारायण चरण अस्मद गुरु परजंत । श्री रामानुज आदि दै बदौं श्री गुरु सत ॥ १ ॥ सावित्री श्री रामकी पावित्री श्रुति मूल । विरची भगवत दास सुनि ... ... मूल भव सूल ॥ २ ॥ ब्रह्माते नारद सुनी बानी घर से व्यास । कही वसिष्ट हनुमत ते जग जिमि सूर्य प्रकास ॥ ३ ॥

अंत—रामहि पुत्र समर्पि सिया किय भूमि प्रवेशा । अयुत वर्ष करि राम राज्य पुत्रन उपदेसा ॥ अमित जज्ञ तप दान धर्म कै विप्र लड़ाये । प्रजा बधु पुर सहित हरपि निज लोक सिधाये । यह श्री राम चरित्र प्रेम जुत सुनै जो गावै । सर्व पाप मिटि जाहि चारि फल सहजहि पावै ॥ विरची भगवत दास राम सावित्री येहा । सुनै एक हू बार लहे श्री राम सनेहा ॥ ४३ ॥ इति श्री भगवत दास कृत (सावित्री) राम सावित्री संपूर्णम् ॥ सवत १९२१ ॥ साके १७८६ ॥ फाल्गुन मासे सुकुल पछे तिथौ अष्टम्या रवि वासरे ॥ मैं विलोकि प्रति पर लिपेउ जानुउ नहि कछु भेव । सुध असुद्ध विचारि कै कवि जन दोप न देव ॥ ०००० (समाप्तम्)

विषय—राम चरित मानसके आधार पर राम, लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न आदि की जन्म तिथि, मरण तिथि तथा वनवास तिथि व लव कुश व जानकी आदि के कार्य आदि की तिथियां ।

संख्या ५३ प. अक्षर शब्द प्रपाटिका, रचयिता—भागवत शरण पांडेय (पुरवा हरदत्तमिश्र), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुष्टुप) ८१, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प रामनाथ पांडेय, हेड मास्टर प्राइमरी स्कूल, ग्राम—कुरही, डाकघर—जिठवारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—अथ अक्षर शब्द प्रपाटिका प्रारंभः ॥ का कलि कालहु मैं कल्की अवतार कला धरते । खा खल खडित खड नवो पट कर्म पड़ाक्षर को घरते ॥ गा गणि ज्ञान गणेश गनै गति ज्ञान गनै परमेश्वर को । घा घर ये घर भीतर ध्यान धरै घनस्याम छटा रघुनंदन को ॥ ना नँद नद रहैं भगवंत अनदित रंजन सतन को ॥१॥

अंत—दोहाः—अक्षर भास प्रपाटिका, पढ़ै सुनै मन लाय । सकल पदारथ परम पद सत्य देहिं रघुराय ॥ भाषा भणित अनेक गुण अक्षर उपमा जोय । भगवत शरण नवाय शिर क्षमहुँ चूक सब कोय ॥ इति श्री भगवच्छरण कृत अक्षर भास प्रपाटिका संपूर्णम् ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—भक्तों के संबंध से उपदेश—वर्णन ॥

(२) पृ० ६ से पृ० ९ तक—ग्रंथकार परिचय—

दक्षिण दिशा में जाके तीरथ प्रयागराज पर दश कोस की प्रमाण बतलाइये । उत्तर दिशा में सुरसरी राम घीराघाट, प्रभ अभिराम संतजन मन भाइये ॥ तीस कोस पश्चिम दिशा में लछमनपुर पूरब पचास कोस काशी जी गनाइये । राजापुर मध्य हरदत्त मिश्र पुरवा में सज्जन निवास सांई बास मम गाइये ॥ दोहा ॥ ग्राम प्रदेश शुभ देस लखि है प्रतापगढ़ नाम । धनिक वणिक बर बसत जहँ जातिवर्ग अभिराम ॥ पाँडे श्रीधराम के सुत राधेगोविन्द । सज्जन मन रंजन सुभग निज कुल सर अरविन्द ॥ चारिपुत्र तिनके भये अति बल शील विशाल । पहिलो में भगवत शरण, द्वितीय रामगोपाल । रामभरोसे सुत तृतीय चौथ नारायण नाम ॥ सरयूपारिण द्विज जनम पाँडे कुल अभिराम । गोत्र हमारो सावरनि जाकर बग बसियार । × ×

× × × ×

पश्चिम अंगी जीम साहब फिरंगी केरी सब परगनिन को मध्य सिरताज है । संग्या में तीसरी पलटन है आदि सब गगावार कानपुर छावनी विराज है ॥ जामें द्विज पाँड़े कुल मंडल अबरपुर बीर हम वाही के सिपाही चुनि आये हैं । पाँच कंपनी को जमादार अधिकार मम हाड़ सरकार की सेवा के काज है ॥

॥ अरिल्ल छन्द ॥

सुर महि सुर हरिजन पद चेरे ह्वै पालक हैं मेरे । नाम प्रथम श्री रामाचित नारायण कहि टेरे ॥ लघु बालक का नाम अनूपम रामकीर्ति नारायण । संतन की दया सों होयहिं राम सुयश परायण ॥

संख्या ५१ बी ज्ञानदीपक (ज्ञानदीपिका), रचयिता—भगवतशरण पांडेय, पुरवा हरदत्त मिश्र (राजापुर प्रतापगढ़), कागज—देशी, पत्र—२१, आकार—९½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११, परिमाण (अनुष्टुप) ४५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ पांडेय, हेडमास्टर प्राइमरी स्कूल ग्राम—पुरहो, डाकघर—जिट वारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री सच्चिदानन्द मूर्तये नमः ॥ अथ श्री ज्ञान दीपक प्रारंभः ॥

दोहा—गणपति कमलापति उमापति वाणी पति पद्पानि । वदन ज्ञानदीपक सुभग भगवत निज मति छन्द ॥

सवैया—संसार सागर घन्न अगर जीव चराचर माहि रहैया । बाहर भीतर व्यापक अन्तरु भरम अमरम अहैं दरैया ॥ भगवत देव निवारि माहि अपार भौ मुनि भार रहैया । चन्द्रहु सो अवधेश कुमार सदा भगवन्त की आस पुरैया ॥१॥

अंत—सूरज को कर ज्ञान विराजत बास को काट कहत हुँनाया । काम कहा मर्यो मीन भरावे भुजंग कहा मर्यो भूप निम्नार्यो ॥ मीन विचार सुधा रस का बर प्रीति के जाको देखु सजायो । श्री भगवन्त जान सिन्धु भर वारि गयो सब बेद पराया ॥९१॥

॥ इति ज्ञान दीपिका संपूर्णम् ॥

विपय—(१) पृष्ठ १ से १९ तक—मगला चरण, ब्रह्म तथा जीव विचार, राम नाम की महत्ता, कुछ पापियों के तारे जाने के उदाहरण उपस्थित कर अपने तारे जाने की प्रार्थना। चैतन्य विचार, अद्वैत तिमि दूर होने का प्रकार। चैतन्य अथवा आत्मा की भूतादि से विभिन्नता का वर्णन।

(२) पृ० २० से पृ० ३१ तक—भक्ति महिमा, भगवत का प्रभुत्त्व (प्रशंसा से, प्रेम से, भय से) माया की प्रवलता और उससे मुक्त होने का उपाय, मनुष्य के अनन्त भेद न मिलने और जीव तथा ब्रह्म अन्तर जान पड़ने का कारण। सत्सङ्ग माहात्म, आत्म वोध का उपदेश और उसके लाभ।

(३) पृष्ठ ३२ से पृ० ५० तक—राम नाम जाप से लाभ, लावनी, पूर्वी में राम-नाम की महिमा एवं ब्रह्मजीव एकत्व वर्णन लावनियों में कुछ भक्ति से भरे वचन। सत माहात्म्य साधु की परिभापा, संत, परमहस, योगी, उदासी, तथा सन्यासी आदि की परिभापाएँ। नर कौन है। द्विजादि के कर्म, रघुनाथ जी के न चीन्हे जाने का कारण तथा मूर्ख की राम में किसी प्रकार की रति न होने का वर्णन।

सख्या ५४. रचना—पुन्यपचीसी, रचयिता—भगवतीदास, (आगरा), कागज—देशी, पत्र—१२, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप) १०८, रूप—प्राचीन, रचनाकाल—स० १७३३ = १६७६।

आदि—अथ पुन्न पचीसी लिप्यते ॥ छप्पे ॥ प्रथम प्रणमि अरहित वहुरि श्री सिधन मीजै ॥ आजारज उवझाय तास पदवदन कीजै ॥ साधु सकल गुणवत सत मुद्रा लखि वंदऊ ॥ श्रावक प्रतमा धरन चरननमि पाप निकदऊ ॥ सम्यक वत सुभाव धर जीव जगत महि होहि तित ॥ तिल तिल त्रिकाल वदत भविक भव सहित सिरनाय निज ॥१॥

अत—दोहा ॥ पुन्न धर्म एकौ करै निहचै भेद न कोय ॥ तातै पुन्न पंचीस का पढ़ै धर्म फल होय ॥ २५ ॥ सत्रह सै तैतीस कै उत्तम फागुन मास। आदि पपि नमि भाव सों कहै भगौतीदास ॥ २६ ॥ इति श्री पुन्य पचीसी समाप्तम्।

शुभम् शुभम् शुभम् शुभम्

विपय—जैन धर्म की स्तुति और सम्यक् दृष्टि का माहात्म्य।

सख्या ५५. नासकेत कथा प्रसंग, रचयिता—भगवतीदास द्विज, पत्र—३७, आकार—९$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुष्टुप) ६७५, खंडित। रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८८ = १६३१ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर ब्रजभूपण सिंह, ग्राम—शुकवारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—.. ... . गुन गावैं भगौतीदास ॥

चौ० ॥ सोमवंस जन्मे दोठ राजा। तिनके माथे छत्र विराजा ॥ धर्म सुरति औ ज्ञान विवेकी। निरभै भक्ति विष्णु की टेकी ॥ एक वार सहजहि मति आइ। वोलिये विप्रन जग्य कराय ॥ लोग कुटुम्व प्रजा सुख माना। सुरसरि तीर जो आसन ठाना ॥ विप्र रिपि न कहँ नेवति पठावा। विधिवत् जग्य सुनत सव आवा ॥ आठों तप तपत जो आगी।

जिनके मानस हरि अनुरागी ॥ आए विप्र जे पढ़हिं पुराना । स्मृति करैं अरु वेद बखाना ॥ वेद शास्त्र जिनके है ध्याना । ते नकि आए नृप अस्थाना ॥ आग रिषि रहैं बन वासी । कंद मूल फल पवन अभ्यासी ॥ धैम्य आदि रिषि तहवाँ आये । असतुति कै आसन बैठाये ॥ सब कर समाधान नृप कीन्हा । वैशम्पायन को पूछहिं लीन्हा ॥

अंत—दोहा मासकेत अमृत कथा, सुनि सो होइ हुलास । पाप विवर्जित सुनहिं जो, बहुत मर्गाती वास ॥

इति श्री मासकेत कथा प्रसंग सप्त रिषय संबोधनो नाम अष्टदशोध्याय ॥ १८ ॥

विषय—नासिकेत कथा ।

संख्या ५६ भक्त चिंतामणि संग्रहकर्त्ता—भजनराम (आडंबर), कागज—देशी, पत्र—४२७, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २१, परिमाण (अनुष्टुप) ४८७०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३५ = १७७८ लिपिकाल—सं० १९०७ = १८५० ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर मकरसिंह, ग्राम—सरवतपुर, डाकघर—कुतुबनगर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ श्री निकुंज विहारिणे नमः ॥ दोहा ॥ श्री गुरु श्री गोविंद पद मंगल हित करूँ ध्यान । मंगल श्री ब्रजराज वर पाऊँ जो सम्मान ॥ गोपी गोपी जगत में जिनकी उत्तमी रीति । तिनके पग वंदन करूँ जिन करी कृष्ण सों प्रीति ॥ हाथ जोर विनती करूँ सुनो गरीब निवाज अपनो ही कर जानिये बाँह गहे की लाज ॥ नंद राय के लाड़ले भक्तन प्राण अपार भक्त राम के उर बसो पहिरे फूलन हार ॥ श्री ब्रज राज कुमार वर गाइये आनंद की निधि वर गाइये । भक्तन को मन भाव तो गाइये श्री लाडली ललन वर गाइये ॥ दो० । नव रस में कवियन कह्यो सरस अधिक श्रृंगार । ताहू में अति सरस सुनि सो यह रास विहार ॥ नवहिं अंग श्रृंगार के होरी चोरी दान । छकहि करम वन ऋतु गमन विरह मिलन अरु मान ॥

अंत—सारंग के सुर सों मिलि करी गौंड का ज्ञान । तामें पूरी पूरबी राग परिया जान । आये जी पै राग है कहे गनीत जग गाय भेद राग अरु रागिनी पै सब दिये बताय ॥ इति श्री भक्त चिंतामणि संपूर्ण समाप्त राग ६ रागनी १० राग रागनी १६ आमेजी राग रागनी ९९९ तालमेल मिर्ता गाई संवत १८३५ चैत बदि ७ शुक्रवार लिप्यं विद्याधर राय संवत १९०७ शुक्ल द्वितीया माघ मास करमसिंह पोतदार के पठनार्थ ॥

विषय—अनेक कवियों द्वारा राग रागनी में वर्णन । श्री कृष्ण जी की लीला । अंत में राग रागनी का वर्णन ।

संख्या ५७ भक्ति चिंतामणि रचयिता—मौज कवि (बेंती, रायबरेली), कागज—देशी बादामी पत्र—११, आकार—१२½ × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप) ७७१, पूर्ण रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णविहारी मिश्र, माडेल हाउस ग्राम—गनेशी शुक्ल का तालाब, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरुभ्योनमः ॥ गंगा की धार अपार लसै सिर

सर्वज्ञ ॥ ३ ॥ उपदेशत शिष मूढ़ कहं । व्यभिचारिणी दिग वास । अरि को करत विश्वास उर विदुखहु लहत विनास ॥ ४ ॥

अंत—सोरठा ॥ वक्र दुर्लभ अहि वाम विफल पक जनि कटकी । सकल दोष किय नाश । गुध गुण ते केतकि हित ॥ इति वृद्धि चाणक्य नीति भाषा भवानीदास कृत सपूर्ण समासः ॥ लिषतं मनोहरलाल कायस्थ सवत् १९०९ वैसाख शुक्ल सप्तमी ॥ शुभम् ॥

विषय—चाणक्य नीति की टीका कवित्त, सोरठा, छंद आदि में की गई है ॥

संख्या ६१ ए. अमर तिलक, रचयिता—भिखारीदास 'दास' (टेउँगा , कागज—देशी, पत्र—१३८, आकार—१३½ = ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) २५७६, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—शुभ सिद्धि । श्री गणेशायनम. । आदि गुर लायक विनायक चरन रज अंजन सी रजित सुमति दिष्टि करि कै । देषि कै अमर कोक तिलक अनेकनिसी वूझि कै वुधन जो सकल सेस सीर कै । शंसक्रित नामनि के अर्थनि जानि जानि औरो नाम आनि भाषा ग्रंथ ······ वही क्रम सब के समुझिवे के कारन प्रकाशो दास भाषा जोग छंद वृद भरि कै ॥ १ ॥ दोहा । सुगम ठानिवो शशक्रित ····· ॥ पाहन सुतीय करन चरन सरन भरोसा एक ॥ २ ॥ दोहा ॥ ज्यौं अहि मुष विष सीप मुख मुक्त स्वाति जल होइ । ······ वनत त्यौंही अक्षर सोइ ॥ ३ ॥

अंत—पृयजन के । दोहा, हृय अभी प्सित देत पृय वल्लभ और अभिष्ठ । इंहै नाम पृय जन वही भाषा सिगरो सिष्ट ॥ ९२ ॥ अधम के दोहा, जाय्यरेक कुत्सित अधम पेट अवध निकृष्ट । गकूक फम अनक अधम अर्वत्रि दश प्रति किष्ट ॥ ९३ मलिन के दोहा । मल दूषित कचर मलिन कही मलीम सचारि मलिन नाम गनि लीजि ···

विषय—कोष-सस्कृत अमर कोष का क्रम वद्ध पद्यमय तिलक है ॥

संख्या ६१ वी. अमर तिलक, रचयिता—भिखारीदास (टेउँगा), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—३१०, आकार—८½ = ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १७, परिमाण (अनुष्टुप) ३०८९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—के अत्र नाम पुन । पंच जन्य जुमेष को चक्रारि सुदर्सन मानु । गदाकी कौ मोद की मनि को कौस्तुभ जानु । को नदक कहै पंच पाचैउ नाम । विश्नु के एक चक्र तिन्हको ······ मन अभिराम ॥ १६ ॥ गरुड़ के नाम दोहा । गरुत्मान नार्गत कहो तार्क्ष्य संपर्न पगेस । वैनतेय अरु विस्तुरथ गरुड़नाम वसु वेस ॥ १७ ॥

अत—क्ष शब्द रूपमाल छंद । पत्र पासादिव्य काले काम्पान धन समुदाइ ॥ जाति को सरवादि संग्रह आठ कोष गनाइ ॥ कर्ष इन्द्रिय चक्र पासा तुष्ट तुष व्योहार । नैन सौ वचले आत्मजे दशो अक्ष विचार ५ । कषू विष पौरूप शब्द ॥ रूपमाला छन्द ॥ वरता करिवो नटी क्रिति मन्त्रि कर्ष होइ । जग तरल विष कहै जानै सुधी सव कोइ,

पुरुष भावी पुरुष नारि सो पुरुष शक्ति विलास। पुरुष कर्मों चारि पौरुष शब्द नाम प्रकास ॥ २६ ॥ आमिष किल्बिष वर्ग मेलो शब्द रूप माला छंद। भोग वस्तु अंकोर पास संभोग आमिष चारि। पाप अपराधी दुकिल्बिष नाम के।

विषय—संस्कृत अमरकोष का हिन्दी पद्य मय अनुवाद पुस्तक खंडित है। आदि अंत के पत्र नहीं हैं।

संख्या ६१ सी छंदार्णव रचयिता—भिखारीदास दास' (टेउँगा), कागज—देशी, पत्र—१४२, आकार—११ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुष्टुप) १४१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९९ = १७४२, लिपिकाल—सं० १८८१ = १८२४, प्राप्तिस्थान—श्री यदुवंश लाल कायस्थ ग्राम—मौवस्त, डाकघर—लालगंज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ कर चंदन मंडित सोभ अपंडित पूरन पंडित ध्यान परै ॥ गिरि नंदिनि नंदन असुर निकंदन सुर उर चंदन प्रीति करै ॥ भूषन भुग कदम्ब धीर पितांबर जन पून रसम पास परै ॥ जय जय गन नायक एक गन पायक दास सहायक विघ्न हर ॥ १ ॥ एक रद है न हाना सापा करि ध्याई लम्बोदर में विवेक तामी है ह्यम वेस को ॥ सुंडा दंड कै तब हम्या रूको है उदंड पद शासत न लेस अघ निमेष असेस को ॥ यह कौं भूमि न हरत सुभा दाय यह ध्यान धीत हीको रिद्ध इरम जसेस्य को ॥ दास यह विजय विचारो तिहुँ तापनि को दूरि का करम वारो कलम गनेस को ॥ २ ॥

अंत—रागनि के पय कीजिए ॥ ताहि प्रबंध बखानि ॥ छंद लिप सो पद है ॥ गय छंद बिन जाम ॥ ग्यारह तै छब्बिस लगि ॥ बरम भुपन्नु तुक ०क ॥ सो मिर है पहु छंद दल ॥ पर प्रबंध विवेक ॥ मद छंद दंड कवि को। दीरछ पारावार ॥ बामन पंथ बताइ मैं दीन मति अनुसार। सत्रह सै निनानवे ॥ मधु बदि नवे कवि इन्दु दास कवे छंदारनव सुमिर माधरा बिन्दु ॥ इति श्री भिखारी दास कायस्थ कृते छंदार्णवे दंडक भेद ग्रंथ संपूर्णतः वर्णन नाम पंच दसम तरंग ॥ ॥१५॥ संवत १८८१ शाके १७४६ ॥

विषय—पिंगल अर्थात् विविध छंदों का मद १४ तरंगों में।

संख्या ६१ डी छंदार्णव, रचयिता—भिखारीदास कायस्थ कागज-साधारण, पत्र ६९, आकार—८ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १७ परिमाण (अनुष्टुप) १४०२, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९९ = १७४२ ई०, लिपिकाल—सं० १९४२ = १८८५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० लक्ष्मीकांत तिवारी रईस, ग्राम—मधुबापुर, डाकघर लक्ष्मीकांतगंज, जिला प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि अंत—६१ सी के समान।

ग्रंथ निर्माण काल :—

सत्रह सै निन्यानवे, मधु बदि नवैं बिधु। दास कवे छंदार्णवे, सुमिरि माधवा इन्दु ॥

को नप संजुत चारु मयूर सिपानि को हार लसै ॥ विचरैं पट पानिन अगन में कुलकै किलकै हुलसै विहँसै । अधराधर पोलनि तोतरि वोलनि दास हिये दिन रैंन वसै ॥५७६॥

× × ×

इति श्री भिपारी दास कृते रस सारांश ग्रंथ संपूर्ण शुभं भूयात् ॥ श्री गणाधिपतयेनम. ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्रीमते रामानुजायनम श्री शिवायनमः ॥ × × ×

विशेष—(१) पृ० १ से २४—तक—लुप्त । ग्रंथ-निर्माण-काल—सत्रह सै इक्यानवे, नभ सुदि छठि बुधवार । अरवर देस प्रतापगढ़, भयौ ग्रंथ अवतार ॥ लिपि कर्त्ता का परिचय :—

ग्रंथ रसनि को सार यह, दास रच्यो हरषाइ । सो बाबू मलतत कहँ, लिप्यो भीप कविराइ ॥१॥ लिपिकाल :—

संवत् दिशि ग्रह तेहि उपर, रुद्र और गुरुवार । पौष वदी तिथि नेत्र कहँ, पुस्तक भई तयार ॥२॥

संख्या ८१ के रस सारांश, रचयिता—भिखारीदास, कागज—देशी, पत्र—४२, आकार—१४½ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुष्टुप १०२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९१ = १७३४ ई०, लिपिकाल—स० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्रीगणेशायनम. । अथ पोथी रस सारस कविताई भिपारी दास कृत लिप्यते । दोहा० । प्रथम मगला॰चरण को तीनि आतमक जानि । नमस्कार अरु ध्यान पुनि आसिरवाद वपानि ॥ १ ॥ नमस्कार आतमक मगला चरण० ॥ कदनि अनेकनि विघनको येक रदनगणराउ । वदन जुत वदन करौं पुष्कर पुष्कर पाउ ॥ २

अत—नव नील सरोरुह अगनि केशरि रग दुकुल प्रभासरसै । उरनाहर को नप संजुत चारू मयूर शियानि को हार लसै । विचरे पट पानिन आगन में कुलकै किलकै हुलसै विलसै । अधराधर वोलनि तोतरि वोलनि दास हिये दिन रैंनि वसै ॥ ५८४ ॥ दोहा । सत्रह सै इक्यानवे नभ सुदि छठि बुधवार । अरवर देश प्रतापगढ भयो ग्रथ अवतार ॥ ५८५ ॥ कुमति कुदूपन लाइ है विगरयो वरन सुधारि । सुमति समुझि सुख पाइ है, विगरयो वरन सुधारि ॥ ५८६ ॥ इति श्री रस सारस भिपारीदास कायस्थ कृत सपूर्ण शुभमस्तु । सवत ॥ १९१६ सन् १२६७ फ० अपाढ कृष्न येकादस्यां गुरु वासरे समाप्त शुभं भूयात ० । हरि को वोलत हरि सुना हरि आये हैं धाइ हरि देपत हरि हर गये हरि रहे पिसि आइ । टीका । हरि नाग हरि मेघा हरि जल ॥ १ ॥ सोवत थी पितु भवन में पिता गोद पति साथ अचल छुइ छुइ जात है पुरुप पराये लात । २ । टीका । लक्ष्मी को पिता सुमुद्र विश्नु के भृगुलात । हरि से निसरी हरि माह गई हरि की पतिनी हरि केरि सुता । कैसे करो ऐसे नेहरी सजनी सैयाके सैया पिता के पिता । ३ । टीका । हरिनाम समुद्र हरि भगवान है समुद्र में सयन किहे है ता समय को दोहा है ।

विषय—रस वर्णन, (नायक नायिका भेद)

संख्या ६१ एल. शृंगारनिर्णय, रचयिता—भिखारीदास (प्रतापगढ़), कागज—देसी, पत्र—६६, आकार—१४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुष्टुप्) १००२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०७ = १७५० ई०, लिपिकाल—सं० १८९७ = १८४० ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्रीगणेशायनमः पुस्तक शृंगार निर्णै भिषारीदास कृत लिष्यते ॥ कवित्त, भूसि भुगेस बसी वृष वाहन किंकर कीन्हों करोरि तितीसको। हाथनि में फरसा कर वाल त्रिसूल पर पल पोइये पीस को। जक्त गुरु जग की जननी जगदीस भरे सुष देत असीस को। दास प्रनाम करे कर जोरि गनाधिप को गिरिजा को गिरीस को ॥ १ ॥

अंत—न सूत करि बरनिए तब रस भंग वराइ ॥११८॥ यथा ॥ मारी न हाय रही जहि नारी के मारि निमोही मनोज महा की। जीवन रंग कहांते रह्यो पर अंक में अंगरही मिलि जाकी। बात को बोलिबो गात को डोलिबो हेरि को दास उसांसक याकी। सीरी है आई तताई पियारि कह्यो मरिबे में कहा रहि बाकी ॥ ११६ ॥ इति श्री भिषारी दास कृते शृंगार निर्णय ग्रंथ संपूर्ण शुभ मस्तु मिति जेष्ठ शुक्ल दशम्यां भौम बासर सवत १८९७ दसषत जवाहिरलाल कायस्थ लिषा श्री बाबू भवानी बकस सिंह के बरे जा प्रति देष सो लिषा ॥ राम० ॥

विषय—नायिकाभेद आदि शृंगार रस वर्णन।

संख्या ६१ एम. शृंगारनिर्णय, रचयिता—भिखारीदास, कागज—बादामी, पत्र—६०, आकार—१२½ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २३, परिमाण (अनुष्टुप्) १०३५, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०७ = १७५० ई०, लिपिकाल सं० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णबिहारी मिश्र, गोलेगंज हाउस, लखनऊ।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ शृंगार निर्णय लिष्यते ॥ सवैया ॥ भूसि भुगेस बसी वृष वाहन किंकर कीन्हों करोरि तेतीस को। हाथन मैं फरसा करवाल त्रिसूल धरे पल बेधक ईस का ॥ जक्त गुरू जग की जननी जगदीस भरे सुख देत असीस को। दास प्रनाम करौ कर जोरि गनाधिप को गिरिजा को गिरीस को ॥ १ ॥ दंडक ॥ गच्छ है कै वेद करणी कच्छ है रतन काढ़ी कोल है कै गोल रद राख्यौ कीन्हों है हिरनाक्ष आदि दिति छय नाम है। राम ह्वै दसासि वंस ध्वंस है मंदराषी कंस कोप है कै कीन्हो जिन साधक प्रकाम है ॥ कल्कि है रावे रहे हिंदू पति पति है भरोसे दति मोस गति दामता को दास है ॥२॥ दोहा ॥ श्री हिंदू पति रीझि कै समुझि ग्रंथ प्राचीन। दास कियो शृंगार को निरणय सुनी प्रवीन ॥ ३ ॥ सम्वत् विक्रम भूप को अट्ठारह सै सात। माधव सुदि तेरसि गुरौ अरवर थर विख्यात ॥ ४ ॥

अंत—स्वामता यथा—कोड की धर दार के तंत मै कोऊ पराग मै उमगानी। कुकुरी मकरंद के बूंद मैं दास कहै जमजा गुन शानी। स्यामता पाइ रमा है गई परजंक कहा करौ राधिका रानी। कंस मैं स्याम निवास किये है वसाम किये है न पावन पानी ॥ ३३१ अद्भुता रसाल लक्षण दोहा ॥ अद्भुता × × × पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री भिषारीदास कायस्थ कृत शृंगार निर्णय संपूर्णम श्री संवत् १९४० ॥

संख्या ६१ एन. शृगार निर्णय, रचयिता—भिखारी दास, कागज—देशी, पत्र—१२८, आकार—९३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १७, परिमाण (अनुष्टुप) ८८४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८०७ = १७५० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामबहादुर सिंह, ग्राम—बढ़वा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि-अंत—६१ एल की भाँति ।

संख्या ६१ ओ. काव्य निर्णय, भिखारीदास (टेंउँगा, प्रतापगढ़), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—५७, आकार—१२×५१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुष्टुप) ६१८, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि नागरी, लिपिकाल—सं० १९१५ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, प्रतापगढ़ (अवध) ।

संख्या ६१ पी. तेरिज रस सारांश, रचयिता—भिखारीदास, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—१२१/२×५१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुष्टुप) २३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, प्रतापगढ़, (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ तेरिज रस सारांश के । नौरस नाम कथन दोहा । नव रस प्रथम सिंगार पुनि हांस करूण अरु वीर । अद्‌भुत रुद्र विभत्स भय शांत सुनो कवि धीर ॥ १ ॥ रसके विभाव अनुभाव स्थाई भाव जासो रस उत्पन्न है सो विभाव उर आनि । आलंबन उद्दीपनी सों द्वै विधि पहिचानि ॥ २ ॥ कहूँ क्रिया कहुँ वचन ते कहूँ चेष्टा देपि । जिय की गति जानी परैं सो अनुभाव विशेषि ॥ ३ ॥

अंत—सब के कहत उदाहरण ग्रंथ बहुत बढ़ि जाइ । ताते संपूरण कियो बाल गोपाल हिं ध्याइ ॥ १५८ ॥ इति श्री रस सारांश के तेरिज सम्पूर्णं शुभ मस्तु सिद्ध रस्तु ॥ संवत १९१४ ॥ मार्ग मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यां सोम वासरे दशपत दुरगालाल हेतवे भवानी वकस सिंह जीव, समाप्ता:

विषय—रस वर्णन ।

संख्या ६१ क्यू. विष्णुपुराण, रचयिता—भिखारीदास (प्रतापगढ़), कागज—प्राचीन देशी, पत्र—८६२, आकार—१० × ६१/२ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप) ६०३४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल = सं० १९३३=१८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम. । अथ पोथी विष्नु पुराण प्रारम्भः । छप्पै ॥ जो इन्द्रियन को ईश विश्वभावन जगदीश्वर । जो प्रधान बुध्यादि सकल जगको प्रपंच कर । परम पुरूष पूरबज सृष्टि स्थिति लय को कारण विष्नु पुंडरीकाक्ष मुक्ति पद मुक्ति सुधारण । जेहि दाम ब्रह्म अक्षर कहिय, जो गुण उदधि तरंग मय । तेहि सुमिरि सुमिरि पायन परिय । करिय जयति जय जयति जय । दोहा । विनय विष्नु ब्रह्मादि पुनि गुरू चरणन शिर नाइ । वातैं विष्नु पुराण की भाषा कहौं बनाइ ॥ १ ॥ पुनि अध्यायनि सोरठा किय छप्पै ग्रंति अन्त । आठ आठ तुक चौपई अनियम छंद प्रशंश ॥ २ ॥ चौपाई ॥ वेद पुराण भेद को

जाता । ऋषि वशिष्ट सब जग विख्याता ॥ तिनके भई शक्ति सुत सामर । जिन जाये सुत पुत्र परासर ॥ जासु गिरा सब जग सुख पूरति । सकल शास्त्र विद्या की मूरति ॥

अंत—नैवासप्रय सद्मवस्य पतितः किंवाइरे भूयतां ॥ २ ॥ इति विधि यस्य मजस्य रूपं प्रकृति परारम मय सनातनस्य । प्रदि सतु भगवान सेप पुंसो हरि रयजन्म यराधिर्व सखिधिम् ॥ ३ ॥ मुरैतं मद्मया सम्यों पूजये द्वारकं द्विजं । गोमू हिरण्य बंसी मो रत्ना संकर भोजनै ॥ ४ ॥ एवं विमार्चनं कृत्वा वित्तशाठ्य विवर्जितं । सर्वां कामान माप्नोति याति विष्णो परं पदं ॥ ५ ॥ इति श्री विष्णु पुराणे पारासरीय संहितायां षष्ट मांशे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ समप्तम् ॥ जादसी पुस्तकं दृष्ट्वा तादसी लिखितं मया यदि शुद्धं शुद्धं वा ममदोषो न दीयते ॥ १ ॥ स्वस्ति श्री संवतसरे १९११ शाके १७१८ फाल्गुण मद मासे षष्टम्यां तिथौ ६ रविवासरे द्वितीय प्रहरे समाप्तमिदं ॥ ॐ श्री राम ॐ लिखित मिदं पुस्तकं पंडित शंकर दत्त तिवारी साकिन मौजा लखई जिला प्रतापगढ़ पोढ़ा ॥ यह पोथी शंकर लिखा सबसों कहत पुकारि । पढ़िहहु सुजन सुधारि कै मम अपराध बिसारि ॥ श्रीराम सीताराम जै राम जै जै राम श्री गोविंदाय नमो नमः ।

विषय—विष्णु पुराण का हिन्दी अनुवाद ॥

संख्या ६१ आर विष्णुपुराण भाषा, रचयिता—भिखारीराम (प्रतापगढ़), कागज—साधारण, पत्र—२३७, आकार—१४ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११ परिमाण (अनुष्टुप) १००००, रूप—नवीन, लिपि—नागरी । प्राप्तिस्थान—पं० महावीर दूबे, ग्राम—हसनपुर, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ छप्पय ॥ जो ईशनि को ईश विश्व पावन जगदीश्वर । जो प्रधान पुरुषादि सकल जग को प्रपंच कर ॥ परम पुरुष पुरब्रह्म तिहि थिति सै को कारन । विष्णु पुंडरीकाक्ष मुक्ति प्रद मुक्ति सुधारन ॥ जेहि दास महा अक्षर कहिय जो गुन उदधि तरंग मय । तेहि सुमिरि सुमिरि पायन्ह परिय करिय जयति जय जयति जय ॥ १ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ तुम कहि रत्न सिलीक को यह मसुर्म हो तात । कहत सुनत यह होइगो कहि कल्मष को घात ॥ ३५ ॥ याकी दस अध्याय जो सुनि है सहित विधान । तिन्ह जनु सामग्री सहित दीन्हों कपिला दान ॥ ३६ ॥

× × × ×

यह सब सुन्दर ग्रन्थ में, षट सहस्र परिमान । राम संस्कृत ते कियो भाषा परम सुजान ॥ १ ॥

विषय—संस्कृत के विष्णुपुराण का भाषा में पद्यानुवाद ।

संख्या ६२ भक्तगिरा, रचयिता—भीष्म, कागज—साधारण, पत्र—१२, आकार—७½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) २२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९१६ फसली = १८४८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० दुलमचंद चतुर्वेदी ग्राम—मऊंदू गंज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ पोथी नपशिप लिप्यते ॥ कवित्त ॥ आगमन सुनि गिरिनाथ जदुनाथ को, तुरत करिहौं को सूत्र कीन्हों फनिराज को। भीपम भनत आगे लीवे को हरप हर, कीन्हों है कोपीन छीनि छाला मृगराज को॥ आवत पुरारि को निहारि कै मुरारि तजि, चाहत मिलन महाराज पगराज को। तव लोम यम गन पराने शेप भूतल, गन हर हेरत सगन शुभ साज को ॥ १ ॥ वार वर्नन दडक सुप अरविंद जानि घेरे हैं अलिंद वृन्दु, इन्दु अमी चूमत की पन्नग कुमार है। कचन सिपर के किडार पैं सुधा की सींचि, मरकत तार उपजाये करतार है॥ निसि के कुमार मपतूलनि के तार कैधौं, भीपम सरुप सरिता के ये से वार हैं। मार के विपिन की सिंगार के चँवर चारु, कारे सटकारे को तरुनि तेरे वार है ॥ २ ॥

अत—सोरठा—नप शिप लो तिय गात, निरपि निरपि शोभा वरनि। दिन त्यौं वरप विहात, वहु विधि कहि अभिलापहि ॥ ५१ ॥ इति श्री शिप नप भीपम कृत समाप्त शुभमस्तु पौप शुक्ल नवम्यॉं गुरवासरे सन् १२६६ ॥

विपय—नख-शिख वर्णन

संख्या ६३. वसतविलास, रचयिता—भोगी लाल (कुसुमरा मैनपुरी) कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—७½ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप) १८०५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५६ = १७९९ ई०, लिपिकाल—सं० १८५७ = १८०० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० मातादीन द्विवेदी, ग्राम—कुसुमरा, जिला—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ वखत विलास लिप्यते ॥ कवित्त—सर्म वितरण भव भर्म सतरण सुभ कर्म आचरण धरा धर्म के धरण हैं। दानव दरण सुर मानव भरण छल छोम के छरण यदुकुल आभरण हैं ॥ पकज वरण सोहैं आभा आवरण हैं अधम उधारण वृज वीथी विहरण हैं। सकट हरण है सरण वखतावरके आनद करण वलि देवके चरण है ॥ १

अत—निर्माण संवत्—संवत रस सर नाग ससि कार्तिक सुदि भृगुवार। सुतिथि पंचमी योग सुभ पूरन ग्रथ विचार ॥ ४९ जव लगि श्री पति की कथा दीपति है दिनु राजु। तव लगि अटल करौ सकल वखतावर नृप राजु ॥ ५० यथा—जाहिर जहान जानि देखे राजा रान कोई लागत न सान दान मान मजवूती की। गाहत गुननिवार वाहर न माह सवै पौरुप अथाह ता सराहत सपूती की॥ कूर मनेरम, यखतेसके निकट योग संपति हमेश हीं प्रगट पूर हूत्तीकी। मारतंड मंडन अदंड नृप दडन की जाको भुज दडनि घमंड रजपूती की ॥ ५० इति श्री कछवाह कुल भूपन श्री नरूका राउ राजा वखतावर सिंह आनंद कृते भोगी लाल कवि विरचिते वखत विलासे नायका वर्णन नाम नवमो विलासः ॥ शुभं पठनार्थ श्री ५ राउ राजा जी श्री वखतावर सिंह जी शुभम् ॥ संवतु १८५७ भाद्रपद शुक्ला १५ वुवे ॥ इति

विपय—रस वर्णन

संख्या ६४ मिजाप श्री महाराजा को लाट साहब से, रचयिता—चौधरी मुकुन्द (भरतपुर राज्य), कागज—देसी, पत्र—३७, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप) २५८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं १८७६, लिपिकाल—सं० १८७६, प्राप्तिस्थान—पं० रामस्वरूप शुक्ल, सुभानपुर निवासी ग्राम—सरैयाँ, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ बिना कृपा भगवंत की कलम न पकरी जाय सदा भवानी दाहिनी सुकंठ सरसुती माय ॥ मिजाप श्री महाराज की लिख्यते। हुई सहर में फतरि यह सुन् स्याम से जारी। सरकार की अंगरेज से मिलने की तयारी। और सहर भरतपुर में यही सोर है जारी। करते हैं सभी साथ के ससकर की तयारी। सरकार ने समकर के हुकुम डेरों का दिया। सेप इमाम बक्स को उनके साथ कर दिया। दीवान बहादुर खास और फौजदार मोतीराम। उन पास जो सरकार के रहते हैं सब से काम। महाराज का वकील है जानी जी साहूकार। जिसका जु लाट साहब से जु है गा बड़ा प्यार। लीक कूं देखा है जिसने नजर काठ कूं। देखा है जिसने सबसी फिरंगी की जात कूं। सबसे अव्वल को राव साहब मिजाये। और गुर की मंडी पै डेरे पड़े बनाये। बह मेरे पै राजजी और आगे हैं डेरा। ससकर की चमार देते हैं सब स्याम सवेरे। है बीच में बजार और फौज है भारी पड़ा परी के डेरा में मिलने की तयारी ॥

अंत—सुदामा के जु हमराही थे वे जैसे कृष्ण चंद। एक एक में एक हरके सब करि दिये चंद। मैं उनकी सभी पानी में कहता हूँ नये छंद तुम जैसे श्री महाराज हौ मेरी गै मेरे चंद ॥ जैसा मिजाप जग में हमने कहीं न देखा। जिन पायों में पनहीं नहीं जिनको दियी गजराज। करि देव राउ कै है ते मैं तुम जैसे हो महाराज ॥ दुनियाँ महाम पढ़क के सिद्धि करते होंगे काज। हमारी दूसी भरज की है आप को यह काज। जैसा मिजाप हमने जग में नहीं देखा। कुदूरे जवान सबके दिखमर बयार जारी। राजा अमीर बकसी हो मुलक बवादाबी। अंगरेज और भरतपुर यह सब दृढ़ है कहानी ये खुसी रहें ये मुलक जब तक नहर में पानी। जैसा मिलाप जग में हमने कहीं न देखा। इति श्री मिलाप महाराज श्री महेन्द्र श्री श्री श्री श्री श्री रणधीर सिंह जी अंगरेज कौ मिलाप सम्पूर्णम्। श्री राधा रमण जी सहाय श्री हरये नमः मिती फाल्गुन सुदी नौमी संवत १८७६ शुभ संवत्

विषय—लाट साहब से भरतपुर के महाराज रणधीर सिंह का मिलाप।

संख्या ६५ श्रृंगार तिलक भाषा, रचयिता—भूप कवि, कागज—देसी, पत्र८, आकार—६ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप) ७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर शिवराम सिंह, ग्राम—श्रीनगर, डाकघर अमीनपुर, जिला खीरी (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भूपकवि कृत श्रृंगार तिलक भाषा लिख्यते ॥ चाहु है दौड़ चुनाल मराल हैं आनन चीर है सुंदर ताई ॥ भाती है तीर्थ निका दौड़

लोचन मत्स्य है केश सेवार लपाई ॥ प्यारी के जोबन दीठ चकोर है काम दरयो जेहि बान चलाई ॥ तासु निमित्त बनायो विरंचि सो ताल की सीतल होहि नहाई ॥१॥

अत—पीतम बानिज को परदेस गये जब से न हवाल मिली है। सासु के पूत भयो चिठिया घर प्रात गई सोट आज चली है ॥ जोग नहीं निसि सैन दुहों हमहूँ अबही अबला नवली हैं ॥ जाहु बटोही रहौ कहु और ए गॉव अनेकन राह गली हैं ॥१॥ घोर अंधेरी है देखहु रैन घिरे चहुँ ओर है बादर कोरे। सोए हैं गाढ़ीहि नींद सो प्रीतम कर्म दुखी सोई आप निचारे। बाल हौ नारि हौं कांपत हौं पुनि भूप मनोज के त्रास के मारे। फूल फूल पर ऊपजत सुन्यों न देख्यो जात। क्यों तिय नव मुख कंज पै लोचन कंज लखात ॥१०॥ लखों न नैन तरेरि रूखी तौ रूखी रहौ ॥ देहु मोहि सब फेरि चुबन आलिंगन सबै ॥ इति भूप कृत शृंगार तिलक का अनुवाद समाप्तः ॥ लिषते गौरीचरन संवत् १९३३ वि० जेष्ठ शुक्ला १० ॥ राम राम राम राम राम

विषय—शृंगार रस के कवित्त सवैया दोहा आदि ॥

संख्या ६६. सतसैया, रचयिता—राजा गुरुदत्त सिंह, (भूपति) अमेठी। कागज बादामी' फुलिस्केप, पत्र-८१, आकार—८ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १९, परिमाण (अनुष्टुप) ९१४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७९१ = १७३४ ई०, लिपिकाल—स० १९५८ = १९०१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कृष्णविहारी मिश्र, माडेल हाउस, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः दोहा ॥ विघन विनाशन है सदा गण पति को शुभ नाम। लोक लोक में धाम है लोक लोक में धाम ॥ सत्रह शत एकानवे कातिक सुदि बुध वार। ललित तृतीया में भयो शतसै अवतार ॥२॥ मोर मुकुट सिर पर लसत बसत सघन के प्रान। तऊ न हरि के रूप को नेकु मिलत पर मान ॥३॥ रसे बसे ब्रज से सदा गो गोपिन के साथ। करत विचार विचार पर हिये बसत ब्रजनाथ ॥ ४॥ जाके हिय में बसत हौ आनि गोपाल छपाइ ॥ तदपि फनूस प्रदीप लौं प्रतिभा परम लखाइ ॥५॥

अंत—सोरठा ॥ अवधि किया तुम वास ॥ यह बन बध है ओधि बन मेरो इह निवास किये बनै प्रतिपाल अब ॥७०१॥ मेरी है अति अलप मति क्यों छ करि कहौं स्वरूप ॥ हरि हरि भांतिन सब कहत नहि पावत तुअ रूप ॥७०२॥ इति श्री भूपति विरचितायां सतसैया समास सुभ भूयात ॥ श्री सवत १९५८ ॥ अधि श्रावण मासे कृष्ण पक्षे तिथौ पचम्यां सोम वासरे लिखित मिदम् पुस्तक बलदेव मिश्रेण मिश्र जुगुल किसोरस्य पाठार्थम् श्रम भूयात्।

सख्या ६७ प. शिवराज भूषण, रचयिता—भूषण कवि (तिकवाँपुरा, कानपुर,) कागज देशी, पत्र-८०, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनु-ष्टुप) ८०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३० = १६७३ ई०, लिपिकाल—स० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामभरोसे विशारद, ग्राम—मनोपुर, डाकवर इटौंजा, जिला लखनऊ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शिवराज भूषण ग्रंथ लिख्यते ॥ छपै ॥ जय जयति जय आदि शक्ति जय कालि कपर्दिनि ॥ जय मधु कैटभ छलनि देवि जय महिष विमर्दिनि ॥ जय चमुंड जय चंड मुंड भंडासुर खंडिनि । जय सुरक्ति जय रक्त बीज बिडाल बिहंडिनि ॥ जय निशुंभ शुंभ दलनि भनि भूषण जय जय भननि ॥ सरजा समर्थ शिवराज कहं देहि विजय जय जग जननि ॥ दोहा तरनि जगत जल निधि तरनि जै जै आनंद ओक । कोक कोक मद शोक हर लोक लोक आलोक ।

अंत—सम सत्रह सै तीस पर सुचि बदि तेरस मान । भूषण शिव भूषण कियो पढ़ियो सुनौ सुजान ॥ एक प्रभुता को धाम सजे तीनौ वेद काम रहै पंचानन षडानन सर्वदा सर्वदा कामी बार आठौ याम याचक निवाजि बौ औतार थिर राजै कृष्णा ज्यों हरि गंगा ॥ शिवराज भूषन अटल रहै तौ लौं जौलों त्रिदश भुवन सब गंग औ नर्मदा ॥ साहि तनै साह सोक सौसत्य सूरज बंस दाशरथि राज तौलौं सरजा थिर सदा इति शिवराज भूषण भूषण कवि कृत संपूर्ण समाप्त लिखतं शिवदीन माहे चैत्र कृष्ण अष्टमी संवत १९०० वि० ॥

विषय—शिवाजी की वीरता का वर्णन ॥

संख्या ६७ पी. शिवराज भूषण रचयिता—भूषणकवि (तिकवांपुर), कागज—बादामी, पत्र—५२, आकार—११ × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुष्टुप) ७८७, पूर्ण । रूप—नवीन, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३० = १६७३ ई० लिपिकाल—सं० १९४३ = १८८६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्ण बिहारी मिश्र, माडल हाउस, लखनऊ ।

संख्या ६८ ए. बिहारी सतसई रचयिता—बिहारीलाल कागज—देशी पत्र—६०, आकार ६ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप) ९५०, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२८ प्राप्तिस्थान—आनंद भवन पुस्तकालय, बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गनेसायनमः ॥ अथ बिहारी सत सैया लिख्यते ॥ मेरी भव बाधा हरौ राधा नागर सोइ । जा तन की झाईं परे स्याम हरित दुति होइ ॥ १ ॥ सीस मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल । या बानक मो मन बस्यो सदा बिहारी लाल ॥ अथ मुकुट वर्णन ॥ मोर मुकुट की चंद्रिकनि यो राजति नंद नंद ॥ मनो ससि सेखर की अकस किय सत सेखर चंद ॥

अंत—मादू दई मोय ज्यो अनाक पतितन दयो ज्यो बांधा हि तोय त्यो बांधों अपन गुननि ॥ हुकुम पाइ जै साहि को हरि राधिका प्रसाद । करी बिहारी सतसई । भरी अनेक सवाद ॥ इति श्री बिहारी लाल विरचितायां सप्त सतिकायां नव रस वर्न नाम चतुर्थ प्रकरन परिछेद इति श्री सतभया संपूरन । अश्वनि स्यामित पक्ष सप्तमी बुधवासर लिखतं कबीर अनूप पुस्तकं शुभ स्थाने संवत १८२८ श्री रामायनमः ॥

संख्या ६८ बी. बिहारी सतसई मूल रचयिता—बिहारीदास कागज—देशी

पत्र—१३२, आकार—५ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुष्टुप) ८५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं १८४० = १७८३ ई०, प्राप्ति-स्थान—मुंशी ब्रजमोहन लाल साहब, ग्राम—टेढ़आ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गनेशायनमः । शत शैआ विहारी ॥ मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोइ । जा तन की झाईं परे श्याम हरित दुति होइ ॥ १ ॥ नमस्कारात्मक मंगला चरन । राज तीरथ हरि राधिका तन दुति कहि अनुराग जेहिं बृज केलि निकुंज मग पग पग होत प्रयाग । २ ।

अंत—शोरठा । कौडा आंसू बूंद कशि शीकर बरूमी राज । कीने वदन निमूंद दग मलग डारे रहत ॥ दोहा जौ जलिये भलि पैवनी नागर नंद किशोर । जौं तुम नीके कैल प्यौं मो करनी की ओर ॥ इति विहारी शतगई शपूर्न शुभ । लिपा फाल्गुन वदि १ शनि । लिपा मनसाराम कायस्थ अस्थान बांगा । सवत १८४० सन ११९१ । जो देपा शो लिपा मम दोप न दीयते । तै लं रक्षति जल रक्षति रक्षन दिग्वंधनं । मूर्प हस्ते न दातव्यं इदन्वदति पढितं ॥

विपय—शृंगार

संख्या ६८ सी. विहारी सतसई, रचयिता—विहारीलाल, कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुष्टुप) ८७९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९८ वि० = १८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शीतल प्रसाद जी दीक्षित, ग्राम—सीकरी, डाकघर—तबूरा, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ सतसैया लिप्यते ॥ दो० । मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ । जा तन की झाईं परे स्याम हरित द्युति होइ । १ । सीस मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल । या वानिक मो मन वसौ सदा विहारी लाल ।

अंत—इति श्री विहारी लाल विरचितायां भाषा सप्त शतिकायां नव रस वर्णन नाम चतुर्थ प्रकरण परिछेद सतसैया समाप्त सुभ मस्तु आसाढ़ मानसे कृश्न पक्षे सूर्ज वासरे तिथौ नौमीयाम् दसखत धनीराम तिवारी के गोधनी अस्थान सवत १८९८ वि० ।

संख्या ६८ डी. विहारी सतसई, रचयिता-विहारीलाल, कागज—देशी, पत्र—७६ १९२, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) ८६४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्ण विहारी मिश्र, माडेल हाउस, लखनऊ ।

संख्या ६८ ई. विहारी सतसई, रचयिता—विहारीलाल, कागज—देशी, पत्र—७६ आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप) ७३६, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भालचन्द्र मिश्र, ग्राम—शीतलन टोला, डाक-घर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—नेक न हुरसी विरह हर नेह लता कुम्हिलाति । नित नित होत हरी हरी परीहाल रति जाति ॥ ९८ हेरि हिंडोरे गगन ते परी परी सी टूटि । धरि धाई पिय वीचहि करी × रस × लूटि ॥ ९९

अंत—परिम्ल बचन अब पुलित दग कलित स्वदकन कोति। भरन बदन छवि मदछकी परी छबीली होत ॥ १६६ ॥ बद छिनहूहि बहि ना पुनी अब तब नीर बिमासु ॥ बचे न बड़ी सबीलहू चीलह्यो मुवा सासु ॥ १६७ ॥ कहि रति मुपु लगिये हिये छपी स्नोहो मीठि। पुलति न मो मन बधिर ही यह अब पुनी दीठि ॥ १६८ ॥ किमो सयानी सपिम सो नहि सयान बह मूस ॥ दुरे दुराई पूस को कोपि × × × ॥

संख्या ६ ए. मानलीला, रचयिता—बिसराम, कागज—देसी, पत्र—११, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) १०८, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर गंगासिंह, ग्राम—मझगवाँ, डाकघर—मोचळ, जिला—खीरी (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मानलीला लिख्यते ॥ दो० ॥ फूलमक गुंजत मधुप भत छबि बरनी न जाइ ॥ रसिक छबीलो सांवरो जहं बिहरत सुख पाइ ॥ एक समैं निसि सरद की रास रच्यो गोपाल। मुरली धुनि सुनि कै सकल उठ धाइ ब्रज बाल ॥ गई सबै ब्रज सुंदरी जहँ सुंदर नंदकुमार। कालिंदी के कूल पर कीनों रास बिहार ॥ लीला रास बिनोद मैं चंद्रावलिहि बुलाइ। सुमन माल आपी हिए कै पहराई ताहि ॥ बहुरि बिहंसि बीरी दई सुंदर स्याम सुजान ताही छिन श्री राधिका किनो मान को ठान ॥ कबित्त ॥ बैठी रिसाय महा मुरझाइ कै मान को गर्व सिंघासन छाई ॥ बोले न काहू सों उत्तर देइ सुने जु ना काहू की बात सुहाई ॥ क्रोध भरी अति आतुर कै अंग तरेर कै भौंह चढ़ाई ॥ रूप को गर्व कहा करि बैठी भामिनि भूमि सिंसे मुख मंद दुराई ॥

अंत—द्वार कै पौरिया पौरिके पौरिया पाहरुआ घर के घनश्याम हैं। वासिन के वास सखियन के सेवक पार परोसिन के धन धाम हैं। घर आगन घर अति भामिनि मान भरी सुख बासी बास हैं ॥ एक कहै बिसराम यशो मयभान लली की गली के गुलाम हैं ॥ इति श्री मानलीला संपूर्ण शुभं भवत् लिखते सिवसेवक दुबे बेट शाकु एयामी संवत् १९०१ वि०

विषय—श्री राधिका जी का श्री कृष्ण जी से रूठ जाना और श्री कृष्ण जी का मनाना ॥

संख्या ६६ बी. मानलीला, रचयिता—बिसराम कागज—देसी, पत्र—११, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप) १२०, रूप—साधारण लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, लिपिकाल—सं० १९०२ = १८४५ ई०, *प्राप्तिस्थान—पं० शिवचंद वाजपेयी, ग्राम—कुमारा,* डाकघर—बैतीपुर जिला—उन्नाव (अवध)।

संख्या ६६ सी मांगीत हुलासमजन्, रचयिता—बिसराम, कागज—देसी, पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप) ११८, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२० = १८६३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० रामभरोसासिंह, ग्राम—तारापरवा-मिश्राह, डाकघर—महिपा बुजुर्ग, जिला—खीरी (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ।। सांगीत लैला मजनू का लिष्यते ।। दो० ।। सुन खवास महवूव की विरहा वचन विचार ।। जा लैली से अर्ज कर मजनू ठाढे द्वार ।। जो तुम खास हो इतनी कहो सुनाय । मजनू तालव दीद का खड़ा रहे या जाय ।। चौ० । होगा अहसान वहुत मुझ पर तेरा । तन मन कुरवान सभी तुझ पर मेरा ।। आया हूँ छोड़ माल मुलक खजाना । फिरता हूँ दीद का मैं विस के दिवाना ।। लैली से अरज इतनी कीजै । मजनू उम्मेदवार दरशन दीजै ।। दीजे दीदार मुझे लैला प्यारी । तुम तो हो शाह और मैं हूँ भिषारी ।।

अत—चौवोला । मजनू का ।। आशक का विसराम कहों भावे प्यारी । आशक का काम है इक याद तुम्हारी ।। आशक है शेफता गुल आलम जानी आशक पेदावर खुदा आप वखानी ।। इति श्री सागीत लैला मजनू विसराम कृत समासम् लिषत प्रभुदयाल कायस्थ श्री वास्तव छपरा निवासी चैत्र शुक्ल नवमी सवत् १८६० वि० ।। ओ३म् गगा जी की जय । राम राम राम

विषय—लैला मजनू का प्रेम वर्णन

संख्या ७०. भक्त विनोद, रचयिता—वोधमल्ल (कागदी टोला, लखनऊ), कागज—नीला मोटा, पत्र—४६, आकार—७$\frac{3}{4}$ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुष्टुप) ४१४, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९११ = १८५४ ई० , लिपिकाल—स० १९८० = १९२३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पुरे परान पाडे, डाकवर—तिलोई, जिला—रायवरेली (अवध) ।

आदि—दो० सत गुरु समरथ साहव, तुम्हरि न मोहिं अलम्भ । ज्ञान प्रगट कछु होय मोहिं, कथा करौं आरम्भ ।। निज गुरु सत गुरु सत गुरू, तिन्ह गुरु का वलिहारि । कृपा करहु साधन सहित, कीरति कहौं तुम्हारि ।। छद—जे सिधि दायक, भगतन नायक एक दंत वलिहारी । गिरजा शिव वालक जन प्रति पालक विनती सुनहु हमारी ।। मो मन यह आई कीरति गाई तन धारी भगतन केरी । जव होहु सहाई वुधि कछु पाई वार २ कहि के टेरी ।।

अंत—दो० वोध केरि यह विनती, भक्त हु सुनि चित देहु । जडताई औ मोह मद, मो मनते हरि लेहु ।। सो० पढ़हि सुनिहि जो कोय, भक्त विनोद सुग्रथ यह । भला ताहि का होय, कठिन कर्म कटि जायँ सव ।। दो० वोध मल्ल के सतगुरू, कृपा कीन्ह भरपूर । पढ़े सुनै चित लायकै, पाप होहि सव दूर ।।

विषय—श्री सतगुरु जगजीवन साहव महाराज जी का जीवन चरित्र वर्णन ।

संख्या ७१. जोग वशिष्ठ, रचयिता—वोधीदास, कागज—साधारण, पत्र—६१, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ३$\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ ७, परिमाण (अनुष्टुप्) ५३४, खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७५ = १८१८ ई०, प्राप्तिस्थान—प० देवकीनदन शुक्ल, ग्राम—रामपुर गधौली, डाकघर—सग्रामगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—पृष्ठ—८४—८५ ॥ दोहा ॥ ब्रह्म बिलोकै ब्रह्म को ब्रह्म ब्रह्म को पावै। ब्रह्म ब्रह्म सों बोलि ब्रह्म ब्रह्म पर जाए ॥ सोरठा ॥ ब्रह्म ज्ञान विग्यान, मनसा वाचा कर्मना। आप होय निर्वान, अपर न जानै ब्रह्म तजि ॥ चौपाई ॥ ज्ञान ही सब को वा मम उर बासी। हम सरबग्य ब्रह्म अविनासी ॥ आदि अंत हमरा कछु नाहीं। हम सब व्यापीक तिहु पुर माहीं ॥ हम निरजै हम करै सँघारा। हम पाहैं हम अरूप अपारा ॥ ब्रह्म विवेक जाके उर माहीं। चैतम ब्रह्म तासु परिछाहीं ॥ इच्छा रमी ब्रह्म की भाई। घट-घट व्यापी है सब ठाईं ॥

अंत—पृष्ठ-१२१ व १२२ ॥ दोहा ॥ नीमी तम तेज ही सो ज्ञान, जोही ही परम पद कीन। बहुरि बिलोकहि ताहिते, जानि परो कछु भीन ॥ जिमि नर की ऐसी न, सब बिसरै सुप सरूप। तीमि मूल तन मन, सभाए अब तनु मो ॥ सोरठा ॥ ब्रह्म कहहि जो ग्यान कहा सकल मैं ताकैं पावहि पद निर्वान, जो मुन हिए बसाव ही ॥ जोग वसिष्ट अपार है, गुन मै ग्यान निधान। दास बोधी कछु कथा मती कीन्हीं कथा बखान ॥ सम्वत् १८७२ साल मैं लिखा ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ८२ तथा ८७ से ८८ तक—स्तुत। (२) पृ० ८३ से पृ० ८६ तक व पृ० ८६ से पृ० १०० तक—सब में एक ब्रह्म के ही होने का कथन, सब वस्तुओं को निस्सार समझना तथा ब्रह्म की सार वस्तु मानने का उपदेश, परमात्मा के निराकार होने का कथन। ध्यान की महत्ता, भक्ति में प्रेम का प्राधान्य, दुःख सुख की समता का वर्णन, तत्वादि संबंधी रूपक, वृक्ष के रूपक में जीव तथा आत्मा का संबंध। ब्रह्म विवेक होने का विधान। अहम् ब्रह्मोपदेश। (३) पृ० १०१ से पृ० १२२ तक—चैतन्य के केवल एक होने का वर्णन, तन के जड़ होने का वर्णन परब्रह्म के देह में होने के उदाहरण ब्रह्म तेज का वर्णन दुविधा विनाश से ब्रह्म में रत होने का कथन ब्रह्म की व्यापकता तथा चैतन्यता का निरूपण, सत्य का ग्रहण तथा असत्य का त्याग, मन की चंचलता, ब्रह्म ज्ञान का वर्णन, ग्रंथ पढ़ने का फल व ग्रंथ निर्माण कारण।

संख्या ७२ प, व्रजविलास, रचयिता—व्रजवासीदास, कागज-साधारण, पत्र ३१६, आकार—१२½ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२७ = १७७०ई०, लिपिकाल—सं० १८९५ = १८३८ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर गयादीन सिंह, जमींदार, ग्राम—जोगीपुर, डाकघर दरावा, जिला प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री कृष्ण चरित्र व्रज विलास लिख्यते ॥ सोरठ ॥ होय गुनन की खानि, जाके गुन उर गुनत ही। दया सो कृपा निधान, वासुदेव भगवंत हरि ॥१॥ मिटत ताप त्रै ग्राम, जासु नाम सुमरत कहत। वंदौं सो सुख धाम नंद सुवन सुंदर सुन्दर ॥२॥

अंत—॥ सोरठा ॥ यहि विधि कही बुझाइ महिमा वृज गोपीन की। ध्याम कही मोद गाइ। पावन बहुरि पुरान को ॥ व्रज बासी गाऊं सदा, जन्म जन्म करि नेह। मो

जपतप वृत यहै। फलदीजै पुनि एह ॥ इति श्री वृज विलासे सच सुप रासे भक्ति प्रकासे कृष्ण वृजवासी दासे भापा कृते समस्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्री कृष्णायनमः जो प्रति देपा सो लिपा मम दोप नदीयते ॥ दसपत गंभीर सिंह वछ गोती सवत् १८९५ शाके १७६० कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे भौम्यवासरे गते पूरन सुभ मस्तु ॥ हरेनम. ॥

विपय—श्रीकृष्ण-चरित ग्रथ निर्माण काल :—सम्वत् सुभ पुरान सत जानो। तापर और नछत्र न वानो ॥ माघ सुमास पक्ष उजियारा। तिथि पचमी सुभग ससि वारा ॥ श्री वसत उत्सव दिन जानी। सकल विश्व मन आनदँ दानी ॥ मन में करि आनद हुलासा। वृज विलास करि कियो प्रकासा ॥ ग्रथ कार के गुरु का परिचय :—

श्री मोहन जी नाम गुसाईं। सुदर स्याम स्याम की नाईं। × × × तिन तीरथ पति मधि दियो, कृष्ण नाम मोहि दान। दीन जानि राप्यो सरन, लगि के मेरे कान ॥ व्यास तथा सूर की वन्दना, अन्य सन्तादि की वन्दनाएँ।

संख्या ७२ बी. ब्रजविलास, रचयिता—ब्रजवासी दास, कागज—देशी, पत्र-२९६, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ४८, परिमाण (अनुष्टुप) ९९६०, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० श्यामविहारी, ग्राम—कवरा, डाकघर—महमूदावाद; जिला सीतापुर (अवध)।

आदि—अंत—७२ ए की तरह।

संख्या ७३ ए जोतिप विचार, रचयिता—वुध (काशी), कागज—देशी, पत्र-२४, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप) ३३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४० = १७८३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामदुलारे मिश्र, ग्राम—गणेशपुर, डाकघर मिश्रिख, जिला सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ज्योतिक विचार लिप्यते ॥ दोहा ॥ सुमिरि राम घन श्याम उरैं धरैं धनुप वुर वान। अव ज्योतिप के ग्रंथ को वरनत वुध समान। काशी को वासी कहत मैं पडित मति मंद। भापा जोतिप की करौं सुनौ सकल वुधि वंत ॥ अच-रज अज कमलज करत कमलज अज ते खर्व। सिंधु वुद अरु वुंद ते सिंधु सुगम सुप सर्व ॥ जोतिप जाको रूप है रेपि निमेप अरु इंड। तिथि दिन जोग नक्षत्र शिर छत्रमड ब्रह्मंड ॥४॥

अत—वल वर्ण ज्ञान ॥ चद होय तन भवन के देपे तन को सोइ तौ गोरो उज्जल वदन अति सुंदर सुत होय। इति ज्योतिप विचार सपूर्ण समाप्त। लिपतं गंगादीन तिवारी विसवा मध्ये सवत १८४० चैत्र शुक्ल परिवा ॥ श्री

विपय—ज्योतिप

संख्या ७३ बी. ज्योतिप विचार, रचयिता—वुध, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप) ५६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८१७ = १७६० ई०, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगादीन मुराऊ, ग्राम—लक्ष्मणपुर, डाकघर—मिश्रिख, जिला सीतापुर (अवध)।

आदि—अंत—७१ ए. के समान।

संख्या ७३ सी ज्योतिष विचार, रचयिता—बुध, कागज—देशी, पत्र ५७, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप) ३००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७०, प्राप्तिस्थान—पं० मनिया तिवारी, ग्राम—बैजेगाँव डाकघर—कमालपुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

संख्या ७४ बुध जन सत सही, रचयिता—बुध जन, कागज—देसी, पत्र ६४, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३०, परिमाण (अनुष्टुप्) ६४०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९१ = १८३४ ई०, लिपिकाल सं० १९०५ = १८४८ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला प्रभूदयाल, ग्राम—लाखमनगर, डाकघर, लखनऊ।

आदि—अब बुध जन सत सही लिख्यते ॥ दो० । सबमति पद सनमति करन वंदूं मंगल कार। करों बुध जन सत सई निज पर हित करतार ॥ १॥ परम धरम करतार हो मविजन सुष करतार। नित वंदन करता रहूं मेर गहि कर तार ॥२॥

अंत—दुख में तो कृत कृत भव भया चरण सरण अब पाय। सर्व कामना सिद्ध भई हर्ष हिये न समाइ ॥ इति श्री बुध जन सतसही जितनी मिली तितनी लिपी। लिषतं बाबू राम मिश्र संवत् १९०५ वि० ॥

विषय—इस ग्रंथ में कुल ७०० दोहे हैं परन्तु इस प्रति में ७०० से कम हैं। इसमें भगवान की महिमा और भक्त के विनय का वर्णन है ॥

संख्या ७५ प. आल्ह खंड (पृथ्वीराज रासो), रचयिता—चंद कवि, कागज—देसी पत्र—१०९ आकार—९½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप्) १४३१, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्ण बिहारी मिश्र ग्राम—गंधौली, माडेल हाउस लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ आल्ह खंड लिख्यते ॥ दोहा ॥ कहत चंद गुन छंद पढि ओपउ दंगल साह ॥ चाहु आन चंदेल कुल चंदेल उपजन होइ ॥ १ ॥ चाहु आन पुच्छत नगरि कौन परस किम नाम ॥ कौन बार को तिथि सुकवि कहौ विचार विचास ॥२॥ ग्यारह सै चालीस इक सुद अनुठ भर होंइ ॥ कातिक सुदि बुध ओदसी समर सामि का कोइ ॥ ३ ॥ चाढ सहस असवार सजि परस्थान नृप कीन ॥ पूरब दिसि गमन किय सुभ्भ वचन सुनि लीन ॥ ४ ॥ छप्पय ॥ सयद सिषिरि गढ परसि राज दिस्सीय दिय चल्लिय ॥ पातसा ह सुनि पवरि धाई त्रिय हीरन मिल्लिय ॥ सब्बल सिमिट्टि सामंत चंद कम नाम सुनि बर ॥ कहिव पुत्र चहुआन गहिव प्रथिराज आप्पुब्ब ॥ राजपूत छूट पंचा सात सुद्दिय घर सेवा धमिय ॥ पठान साहि हजार पर जीति चल्यो समर धमिय ॥ १ ॥

अंत—चाहु आन दिल्ली नगर कीनों नृपति प्रवेस ॥ घर घर मंगल गाय हीं आयो जीति नरेस ॥ संभिम राय कुमार को बोलि हजूर नरेस ॥ दश गय मनि मानिक बकसि अथ आसन बप देस ॥ १ ॥ और सूरमा संत सब घर इनाम पहुचाइ। हूर प्रमद बैठे तरन सोरह संभरि राइ ॥ २ ॥ याम्भे सुनि कछु कीजिये पया सक्ति सनमान ॥ कबहूँ हारन आवहीं पाँच पचास प्रमान ॥ ३ ॥ जो न देय कछु सुनि प्रया हाय न कबहूँ जीत ॥

यहु कलेस पीड़ा वढै रहै न चद सुगीत ॥ ४ ॥ आरह पड पूरन भयो कह्यो चंद कविराय ॥ पढै सुनै सीपै रहै ताको सुभट सहाय ॥ १ ॥ इति श्री चंद विरचितायां आल्ह पंड सम्पूरन ॥ वैसाप मासे कृष्णपक्षे तिथौ पचमय भृगुवासरे मिटं पुस्तक सवत् १६१६ प्रतियथा देपी तथा लिपित मम दोपो नदीयत्ते ॥

विपय—दिल्लीपति चौहान पृथ्वीराज की महोवे पर जीत ।

संख्या ७५ वी. पद्मावती पड, रचयिता—चद, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार ९$\frac{3}{4}$ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुप्टुप) २०२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१५ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्ण विहारी मिश्र, मु०—नयागॉव, माडेल हाउस, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ श्री राधा रमनो जयति ॥ अथ पद्मावती पंड लिप्यते ॥ दोहा ॥ पूरव दिसि गढ़ गढ़नि पति ममद सिपरिगढ़ दुग ॥ विजय पाल राजा रहत जादव कुलहि अभग ॥ १ ॥ हय वितंड जाके वहुत पातसाहि जिमि चाल ॥ प्रवल भूपसेवन रहत कहत करत मोहाल ॥ २ ॥ छप्पय ॥ धन निसानि वहुसाय नाद स्वर वजत पच दिन ॥ दस हजार हय चढ़त हेम नग जटत साजतिन ॥ गज अनेग सत पॉच प्रवल सेना तहं लप्यह ॥ इक नायक दलन चल भमामंत सुरप्यह ॥ दस पुत्र एक दारा विमल दया धरम चौकस उधर ॥ भंडार लछि मालिक अधिक पद्म सैनि कुंवर सुवर ॥ दोहा ॥ पद्म सेनि कुवर सुघर ताघर नारि सुजान ॥ ताकर (इक) पुत्री प्रगट भइ मनहु कला ससिमान ॥

अंत—दोहा ॥ घायल परे अचेत रण अरु गुण मजरि वान ॥ भये चेत जेते उठे दिल्ली चले विहान ॥ २ ॥ सो मग भूले परि गये वाट महोवे माहि ॥ विकल वहुत मोहे सुनर कछु भई सुधि नाहि ॥ ३ ॥ वाग मध्य डेरा कियो राजा वर परिमाल ॥ वरजे माली ने जहॉ पथ्यर दियो कराल ॥ ४ ॥ लग्यो आइ रजपूत के रिस करि दीन्ही तेग ॥ गिरयौ शीश कटि धुकि धरा मर्यो सो माली वेग ॥ ५ ॥ इति श्री सुकवि चंद विरचिते श्री आल्हा खड की सूचीका की भूमिका श्री पद्मावती पड सपूर्ण समाप्त सुभ भूयात ॥ संवत् १९१५ ॥ मिती फाल्गुन पप शुक्ले ६ भृगुवासरे मिधि श्री मन्महाराज कुंवार श्री व्याघ्र वंसावतसे श्री कुमार लछिमन सिह प्रति लिपयतं ॥

विपय—पद्मावती खड-अर्थात् विजयपाल राजा की पुत्री-कुमारी पद्मावती का जन्म उसका सखी सहेलियों के साथ वन उपवन में भ्रमण करना। उसपर राजा पृथ्वीराज चौहान का आसक्त होना उसे हर ले जाना पश्चात् लडाई होना आदिका इसमें वर्णन है । यह आल्हा खड की लडाई का पूर्व वृत्तांत है ।

संख्या ७६. नाग लीला, रचयिता—चंद कवि, कागज—देशी, पत्र-१०, आकार—६ × ४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३६, परिमाण (अनुष्टुप) १८०, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७५ = १६५८ ई०, लिपिकाल—सं० १८०२ = १७४५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रघुवीर चरण मिश्र, डाकघर—विल्हौर, जिला—कानपुर ।

आदि—श्रिश्र श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वते नमः श्री पर्म गुरुभ्यो नमः अथ नाग लीला लिष्यते ॥ श्री गुन पति गुन विस्तरौं सिधि बुधिदातार ॥ अष्ट सिधि नव निधि बुधि करिय कृपा करतार ॥ अरिल ॥ जे मुनि गुन गंधर्प के गनैं बिना नाथ करि चरन मनाथै सुंडादण्ड सुमिरन चित लावै । ते छविन सुषि संपति पावै ॥ दो० । सुष सपति ते पावहीं इय गय लछि अपार । सुंडादण्ड कृपा करै बिलसै मोम भंडार ॥ अरिल्ल ॥ हेम अब मुक्ता मनि तोमिर सोहियं । नग मुक्ता बलहार अनूपम राजहीं ॥ परि होकु कंकन अति पुत्र सुनूपर बाजहीं ॥ सुरिल ॥ नूपुर सबद अनूपम बाजै अनहद सबद धार मन गाजै ॥ सुर नर मुनि सुप चंदक नाइक । बाहन हंस बुधि बल दाइक । सुष लव अति बर दाइका किये मूढ़ कबि-राई । बुधि विचित्र कवि चंद कहे दे अब सारद माइ ॥ अरिल्ल ॥ संबत से दस पच अर्म छवि मै सही । सुदि सावन तिथि पंचमी चंद कवियों कही । भंडौ ग्रंथ गुन मूल महा बुध बार है पहिदौ नाग पूजन को छंद करयो विस्तार है ॥

अंत—परो पियाक प्याक सौं तिन्है तौं काक सों कहीं ॥ जगाव बेगि नाग कौं । प्रचारि सुत हौं कहीं । पुर्न पुनी सहस तौं । बतारि विप सीं धरौं ॥ मगेत नाग पुत्रिका । समुझि बोल सुत ही गऊ तौं कल्पनि बुधि कुरं न तंनं बुध ही ॥ इते सप्त बालिके । रहे न कछू हाथ मैं । सुकम काल कोप को । भरे न भस्म बात मैं । पै बापु मात आपु कैं । मिलौं कुटुंब तात कैं । रमौं सु गाद मातु की । करो कलोल मित्र कौ ॥ कही न कान्ह मानहीं । भली बुरी न जान हीं । पचारि सेस कौ कहै । ती नंद को सपूतई ॥ दु डारिहै सपी बिचार । सुप तौं न लावहीं । गचारि आहि आपु तौं सुभात कौन पावहीं ॥ बकसिये इमै अका कहीं सुहाय आरि के ॥ पुनी परे सोई करी । पै सुमि सौंन सोर कै । निदाम सुत जो करी ॥ तौ ऐंकि देयौ तात कौ जो हुकुम वे करैं ॥ ता बैठ पत्र पाइहौ । वही गौ बाम तीसर तर्थ तौं बेगि आइयो ॥ कबित्त ॥ तप सु पैज करि कृष्ण रो अरिस करि अधि अरिस ॥ हौं श्री पति अनुनाथ बास सुमि पर्मग नारिथ ॥ द सु कहै मह जादु कुटुम पृछि फिरि आऊँ । तब तहाँ कहौं यह होइ बहुरि सो को कित पाऊँ बहुरि न समयौ कहि हौं घा सौं आदि न पैद बहुरि न पंनग मिलैं किलौं चौगान किन गेंद ॥ सपूर्ण ॥

विषय—श्री कृष्णजी का जन्म, पूतना, अघा बका सकटासुर आदि का मारना और नाग लीला ।

संख्या ७७ काव्याभरण रचयिता—चंदन कवि (रायबरेली) कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—१२३×८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २१, परिमाण (अनुष्टुप्) १०५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४५ = १७८८ ई०, लिपिकाल—सं० १९४४ = १८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णबिहारी मिश्र, गोलैंड हाउस, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मंगलाचरण दोहा ॥ महादेव देवी तनै गणनायक वरदानि । पद चंदन विधि आनिए चंदन सब सिधि लानि ॥ १ ॥ अमरी सुन्दरी रूप सदा असरी कवरी भार ॥ गौरी पद पङ्कज सुमिरि दूरी करन विचार ॥ २ ॥

अंत—दोहा ।। ग्रंथ संस्कृत देखि मैं समुझि अलंकृत अर्थ ।। जथा तथा ही मैं कह्यो जनिहै बुद्धि समर्थ ।। ९७ ।। अधर मधुरता कुच कठिन दृगतीक्षनता योग ।। कविता के परिपाक को जानत विरले लोग ।। १९५ ।। इति श्री कवि चंदन विरचिते काव्याभरणे अलंकार निरूपण समाप्तं शुभम् संवत दोहा ।। संवत शशि निधि वेद श्रुति माधव वदि ग्रह मद निजकर जुगुल किशोर लिखियश श्री हरि सुख कंद ।। सवत १९४४ वैशाख कृष्ण ९ शनौ श्री राधा रमण की जै ।।

संख्या ७८ ए. अमरलोक निज धाम लीला, रचयिता—चरनदास (देहरा अलवर), कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुष्टुप) १७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० राधा वल्लभ, ग्राम—खैरावाद, डाकघर—राजेपुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री राधा कृष्णभ्यांनम ।। श्री सुखदेव जी सहाय ।। अथ श्री महाराज स्यामचरण दासजी कृत अमर लोक निज धाम लीला लिप्यते ।। दो० । परणम श्री सुखदेव कूँ सोहैं गुरु दयाल । काम क्रोध मोह लोभ सौं काटैं मेरे साल ।। १ ।। वानी विमल प्रकास दी वुधि निरम की तात, मोहिं मूरप अज्ञान कूँ नहिं आवत ही वात ।। २ ।। अमर लोक वरनन करूँ वेही करैं सहाय । दृष्टि हिये में पोलि के सवही दई दिपाय ।। ३ ।

अत—प्रेम वढ़ै अव सव हरै करुह कलपना जाय । पाठ करै या लोक को ध्यान करत दरसाय ।। इति श्री अमर लोक निज धाम निज स्थान पुरुपोत्तम पुरुप विराजमान प्राप्ते नरो दुर्लभो ।। इति श्री सुखदेव जी के दास चरनदास जी कृत अमर लोक लीला संपूर्णम् लिपतं कार्तिक शुक्का १५ रविवासरे संवत् १९२८ वि० शा० १७९३ ।।

विपय—अमर लोक निजधाम लीला में मनुष्य शरीर की दशा का वर्णन ।।

संख्या ७८ वी. भक्ति सागर, रचयिता—चरनदास, कागज—देशी, पत्र—३१८, आकार—८ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३६, परिमाण (अनुष्टुप्) ६४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८१ = १७२४ ई०, लिपिकाल—स० १८४० = १७८३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० गणपति जी दूबे, ग्राम—नयागाँव, डाकघर—सादरपुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम. ।। अथ भक्ति सागर लिप्यते ।। श्री त्रिभुवन चंद्रायनमः श्री सुपदेव जी नमः श्री कृष्णयनम. ।। प्रहलाद नारद पारासुर सुक ।। व्यासावरीक सुक सौनक भीप्म काधा । रुक्मा गदार्जुन विसिष्टि विभीपणाद्या । एतानुहं परम भागवता नमामि ।। १ ।। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे । हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे । अथ श्री महाराज साहिव चरनदास जी कृत ग्रंथ भक्त सागर लिप्यते ।। मथुरा मंडल परम पवित्र सकल शिरोमन धाम वृजचरित्र वर्नते ।। श्री सुपदेव गुसाई का गुलाम ।। अथ श्री चरनदास कृत व्रज चरित्र वर्नते ।। दोहा ।। दीना नाथ अनाथ की विनती यह सुनि लेव । मम हिरदे में आयकर, वृज कथा कहि देव ।। चार वेद तुमको रटे शिव सारद गन्नेश

औरन सीस नवाय हूँ। श्री कृष्ण करा उपदेस ॥ कै गुरु कै गोविंद कू भक्ति कै हरिदास। सब कुल कू एकै गिनूँ जैसे पुहुप और बास ॥ नारद मुनि और व्यास जू किरपा करऊ दयाल। अक्षर मूर्खी जो कहूँ कहो मोहिं तत्काल ॥ श्री सुखदेव दयाल गुरु, मम मस्तग पर हैस। विरज बासियर कहत हूँ तुमहिं नवाऊँ सीस ॥

अंत—॥ दो० ॥ चरनदास हित सूँ किया ग्रंथ अनेक प्रकार। भक्तिदास की चार को काढ़ लियो ततसार ॥ चौ० । संवत् सत्रह सै इक्यासी चैत्र सुदी तिथि पूरन मासी। सुकुल पक्ष दिन सोमहिं वारा सू मैंमयों कियो विचारा ॥ तबहीं सूँ आरंभन करिया कछु इक बानी बाहिन करिया ॥ ऐसेही पाँच हजार बनाई। नांव गुरु के गंग बहाई। फिर भई बानी पाँच हजारा। हरि के नांव अगिन में जारा ॥ तीजे गुरु आज्ञा सो कीनी सो अपने संतन कौ दीनी ॥ अद्भुत मत महा सुखदाई ताकी सोभा कही न जाई। तामें ज्ञान जोग वैरागा। प्रेम भक्त जामें अनुरागा निर्गुन सरगुन सबही कहिया। फिर गुरु चरन कमल में रहिया ॥ जो कोइ पढ़ि पढ़ि अर्थ विचारै। आप तिरै औरन कूँ तारै ॥ जामें किया न कछ्वैहारा गुरु हिरदे में आप विचारा ॥ चरनदास सुख सौ सुख देवा। ज्ञान कहे चारों ही भेवा ॥ इति श्री महाराजा साहेब श्री चरनदास जी कृत ग्रंथ भक्ति सागर संपूर्ण ॥ दोहा ॥ जल घृत सौं रिक्षा करी मूरख हाथ न देव। दीजो जन गहि सोंपिये ग्रंथ कहत यह भेव ॥ कुडलिया ॥ तुक अक्षर को चार कर सब्द बना बन हार मीतो कहिये आपकी महतारी की चार ॥ भइ तारी के जार और की साथ चुरावै सब्द किसी का होय। आपना भोग लगावै होय विसन पद और का धरैं और का नांव। चरनदास कहैं चोर मैं बसैं जमपुरी गांव ॥

श्री चरनदास जी का दास गुरमगलानंद (मुहर)

विषय—भक्तों का वर्णन।

संख्या ७८ सी भक्ति सागर या ब्रज वर्णन, रचयिता—चरनदास (डेहरा, अलवर), कागज—मूसी, पत्र—१२०, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुष्टुप्) १८४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८१ = १७२४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कामताप्रसाद दूबे, ग्राम—अदवापुर, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर (अवध)।

संख्या ७८ डी ब्रह्मज्ञान सागर, रचयिता—चरनदास (डेहरा अलवर) कागज—देसी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप्) २२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८८ = १८३१ ई० प्राप्तिस्थान—ठाकुर रामसिंह, ग्राम—रामपुर, डाकघर—मगरायर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ब्रह्म ज्ञान सागर लिष्यते ॥ दो० ॥ जैसे हैं सुखदेव जी जानत सब संसार। भागवत मत परगट कियो जीव किये बहु पार ॥ तिन मोपै किरपा करी दियो ज्ञान विज्ञान। सो सिष तुमसूँ कहत हूँ छूटे सब अज्ञान ॥ सिष्य सुनौ अब कहत ही परम पुरातन ज्ञान ॥ निगुरु कौ नहिं दीजियो जाके तप की हानि ॥

अंत—दो० ॥ जनक गुरु सुखदेव जी चरनदास सिष होय। आप राम ही राम है

गई दुई सब पोय ॥ ब्रह्म ज्ञान पोथी कही चरनदास निरधार ॥ समुझे जीवन मुक्त हो लहै भेद ततसार ॥ इति श्री महाराज साहब श्री सुपदेव जी के दास चरनदास जी कृत ब्रह्म ज्ञान सागर सपूर्ण ॥ कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे छठम्याम बुध वासरे सवत १८८८ वि० शुभम् ॥ श्री राम जी सदा सहायकरै ।

विषय—ब्रह्म ज्ञान वर्णन ॥

संख्या ७८ ई०. ब्रज ज्ञान सागर, रचयिता—चरनदास (देहरा, अलवर), कागज-देशी, पत्र-१६, आकार—८ X ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप्) २२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८८ = १८३१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० देवतादीन मिश्र, ग्राम—सुलतानपुर, डाकघर—थाना, जिला—उन्नाव (अवध) ।

संख्या ७८ एफ. ब्रह्म ज्ञान सागर, रचयिता—चरनदास (देहरा, अलवर), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार-६ X ४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप) २२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामदीन काछी, ग्राम—रुस्तमपुर कलाँ, डाकघर—गुलजारपुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

संख्या ७८ जी. ब्रह्मज्ञान सागर, रचयिता—चरनदास, कागज—साधारण, पत्र—२३, आकार—$५\frac{३}{४}$ X $२\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ७, परिमाण (अनुष्टुप्) ३००, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० देवकीनंदन शुक्ल, ग्राम—रामपुर गधौली, डाकघर—सग्रामगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

संख्या ७८ एच ज्ञान सरोदे, रचयिता—चरनदास (देहरा, अलवर,), कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—७ X ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप्) ३२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८६ = १८२९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० उमाशकर दुबे, डाकघर—सडीला, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दो० ॥ नमो नमो गुरुदेव जी परिश्रम करो अनन्त । तुम प्रसाद सुर भेद को चरनदास वरनंत । पुरुषोत्तम परमात्मा पूरन विस्वा वीस । आदि पुरुष अविचल तुही ताहि नवाऊ सीस । कुंडलिया । छर ॐ सौ कहत है अक्षर सोहं जान । निह अक्षर स्वासा रहित ताही कौ मनु आन । ताही को मन आनि राति दिन सुरति लगावै आपा आप विचारि और ना सीस नवावौ । चरणदास मत कहत है अगम निगम सीप ॥ एही वचन ब्रह्म ज्ञान का मानौ विस्वा वीस । ॐ सौ काया भई सोह सौ मन होय ।

अंत—छप्पै—डहरे मौ मेरो जनम नाम रवजील चपानौ मुरली को सुत जानु जाति धूसर पहिचानौ वाल अवस्था माहि वऊरि दिल्ली में आयो । रमत मिले सुपदेव नाम चरन-दास धरायो जोग जुगुति हरि भक्त करि ब्रह्म ज्ञान हठ करि गहो । आत्म तत्व विचारि अजपा में मन सनि रहो । इति श्री ज्ञान सरोदे श्री चरनदास जी कृत भाषा सपूर्णम् लिपित मिदं पुस्तक मिही लाले त्रिपाठिन = स वत् १८८६ शाक = १७५१

विषय—स्वरोदय ।

संख्या ७८ साई. जोग संदेह सागर, रचयिता—चरनदास (देहरा, अलवर), कागज—स्याली, पत्र—७, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप्) १०२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५८=१८०१ ई०, प्राप्ति स्थान—पं० देवतादीन मिश्र, ग्राम—सुलतानपुर, डाकघर—माण्डा, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चरनदास जी कृत जोग संदेह सागर लिष्यते ॥ दो० । अर्थ बतावो पंडिता ज्ञानी गुनी महंत, जो तुम पूरे साध हौ भक्ता हरि के संत ॥ चरनदास पूछे यों अर्थ मेरी होय कही ॥ समझी तौ चरचा करौ नाहीं मौन गही ॥

अंत—कवित । ऐसी है समासो देह समझ कै विचार लेहू मूरष नर होय जो या बात मैं हसैगो । चीते को मारि मृग वध सिष सूँ पाय गयी बाघनी को मारि वो एक सिंघ को ग्रसैगो ॥ बिल्ली को मारि चूहे प्रेम को बगारो दियो दादुर हू पांच सर्प मारि कै बसैगो । कहै चरनदास ऐसे भेद से लगाई आस चिरिया के सीस ठौरी बाज कौ सर्सैगो ॥ दो० पग लागू सुपदेव के और बारने जाव । गुप्त भेद मोसी कही सर्व नांव भट ठांव ॥ सो तुमसो पूछत करौं हूँ परपन के दांव । या सागर संदेह को दीजै अर्थ बताय ॥ इति श्री महराज साहिब चरनदास कृत संदेह सागर संपूर्णम् माघ शुक्ल पंचमी संवत् १८५८ वि० ॥ श्री राम कृष्णायनमः ॥

विषय—पिण्ड ब्रह्माण्डैक्य आदि जो कुछ है उसका वर्णन ।।

संख्या ७८ बी. जोग संदेह सागर, रचयिता—चरनदास (देहरा, अलवर), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप्) १०५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५८ = १८०१ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रामसिंह, ग्राम—रामपुर, डाकघर—मगरायर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि-अंत—पूर्ववत् । पुष्पिका इस प्रकार है :—

इति श्री महराज साहिब चरनदास कृत संदेह सागर संपूर्नम् श्री रामकृष्णायनमः माघ शुक्ल पंचमी संवत् १८५८ वि० ॥

संख्या ७८ सी. जोग संदेह सागर, रचयिता—चरनदास (देहरा, अलवर), कागज—देशी पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप्) ११०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८६२=१८०५ ई०, प्राप्तिस्थान—भगत रामदीन, ग्राम—रुस्तमपुर कलाँ, डाकघर—गुलजार पुर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि-अंत—पूर्ववत् । पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री महाराज साहिब चरनदास कृत संदेह सागर सपूर्नम् । श्रीराम कृष्णाय नमः ॥ पौष वदी तेरस संवत् १८६२ वि० राम राम राम सीता राम०

संख्या ७८ एस पंच उपनिषद् ब्रह्मवद वेद की भाषा रचयिता—चरनदास (देहरा, अलवर), कागज—स्याली, पत्र—२८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)

२८, परिमाण (अनुष्टुप्) ३६०, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८८ = १८३१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवबंश शुक्ल, ग्राम—नैतीपुर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पच उपनिषद अथर्वण वेद की भाषा लिष्यते ॥ प्रथम हंस नाद लिष्यते ॥ वदन श्री सुपदेव कू उनको हिये में लाय। छिप्यो भेद प्रगट कियो परमारथ के दाय ॥ सहंस कृत भाषा करी तासों यह दिष्टांत। बोल पोल सबही कही समझें छूटे भ्रांत ॥ जू कुए में नीर ले बाहर दियो भराय। विना जतन कोई पियो तिरषावंत अधाय ॥ यों दीनी सुपदेव ने मैं जल काढ़नहार। प्यासा कोई न जाइ यो देऊँ वारवार ॥

अंत—जाति वरन कुल मन गया गया देह अभिमान। अपने मुष सू क्हा कहूँ जगही करैं बषान ॥ रहे गुरु सुपदेव जी मैं मैं गई नसाय। मैं तें तें मैं वही है नप सिष रहो समाय ॥ इति श्री चरनदास जी कृत पच उपनिषद अथर्वण वेद की भाषा संपूर्ण ॥ कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे पचम्या भौम वासरे संवत् १८८८ विक्रमी शुभ्मस् ॥ श्री राम जी

विषय—पच उपनिषद अथर्वण वेद की भाषा। इसमें ज्ञान वर्णन किया है।

संख्या ७८ एम. षट रूप मुक्ति, रचयिता—चरनदासजी (डेहरा, अलवर), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप्) २१०, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४८ = १७९१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० बलदेव प्रसाद तिवारी, ग्राम—अटा, डाकघर—ककवन, जिला—कानपुर।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ षट रूप मुक्ति श्री चरन दास जी कृत गुरु चेले की गोष्ट लिष्यते ॥ छप्पै ॥ बोध रूप सो पुरुष महा विज्ञान उजागर। अज्ञान तिमिर को दूरि करन ज्यों कोटि दिवाकर ॥ सेवि जनक विदेह देह जिन न्यारी कीनी। रहे राज के माहि सुरति कबहूं नहीं दीनी ॥ जिनके सिष सुकदेव हैं भगवत मत प्रगटत कियो। चरन दास परनाम करि तन मन धन वारन दियो ॥ १ ॥

अंत—॥ दो० । छहू मुक्त का भेद जो भिन्न भिन्न कहि दीन। जाकू ले हिरदे धरो छौंना सिष परवीन ॥ चरन दास वरनन करी षट मुक्ती ततसार। जैसी जाकी समझ हो तैसी ले वो धार ॥ इति श्री चरन दास जी कृत षट रूप मुक्त गुरु चेले की गोष्टी सम्पूर्ण समाप्त : लिषत देवगिरि गोसाई नैमिषार मध्ये संवत् १८४८ चैत्र शुक्ला ९ रामनवमी ॥ राम राम राम राम राम ॥

विषय—सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य मुक्तियों का वर्णन।

संख्या ७८ एन. स्वरभेद, रचयिता—चरनदास (डेहरा, अलवर), कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुष्टुप्) ३२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—नागरी सं० १८८६ = १८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी शिवधारी लाल, ग्राम—ससरेजापुर, डाकघर—बेनीगंज, जिला—हरदोई।

आदि—नमो नमो सुखदेव जी परिणाम करों अनंत तुम प्रसाद सुर भेद कौ चरन

दास बरनंत। पुरुषोत्तम परमात्मा पूरन बिस्वा बीस आदि पुरुष अविचल तुही। ताहि नवाऊं सीस।

अंत—धरती बच लगाइ करि दसी बाइ को पेग। मस्तक प्राम चढ़ाइ करि करी अमरपुर मोग—पाची मुद्रा साधि करि पांवें बढ को भेद। नारो मह चढ़ाइये पर चक्कर को छद—

विषय—स्वरोदय योग।

संख्या ७८ ओ. सरोदय, रचयिता—चरनदास (डेहरा, अलवर) कागज—देसी, पत्र—२६, आकार—८×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप) २७३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८६ = १८३२ ई० प्राप्तिस्थान—पं० कालिका प्रसाद दूबे, ग्राम—गोरिया रसूलपुर, डाकघर—मिश्रिख जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि-अंत—७८ एन के समान। पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री चरनदास कृत सरोदय संपूरन समाप्तः मिती चैत बदी १३ संवत् १८८९ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री कृष्णायनमः॥

संख्या ७८ पी सरोधा, रचयिता—चरनदास, कागज—देसी, पत्र—१०, आकार—६३/४ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२ परिमाण (अनुष्टुप्) १६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर बद्रीनाथ सिंह ग्राम—लरोही डाकघर—मोथाता, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—अथ चरनदास सरोधा लिष्यते॥ दोहा॥ नमो नमो सुपदेव पनमम करौं अनंत। गुरु प्रसाद सुर भेद कों, चरनदा बरनंत॥ परस्रोत्तम परमातमा, पूरन बिस्वा बीस। आदि पुरुष अविचल तुही, तोहि नवाऊं सीस॥

अंत—धरनि टरै गिरवर टरै। दुवर टरै सुमि मीत। अचल सरोधा ना टरै। मुरली सुत रन जीत॥ इति॥ चरनदास कृत सरोधा समाप्त॥ शुभम्॥

विषय—पृ० १ से पृ० २० तक—गुरु वंदना, स्वरोदय का महत्व नाड़ी विचार तथा स्वर भेद, नाड़ियों का निवास, स्वर से चालन क्रम, स्वर के हिसाब से पृच्छक के प्रश्नों के उत्तर, महीनादि के हिसाब से स्वासोंके फला फल, स्वरोंके संबंध से कार्य्य करने का विधान॥

(२) पृ० २१ से पृ० ४० तक—आसनादि संबंधी कुछ साधनाएँ, स्वरों के हिसाब से बालक बालिका होने का विचार, स्वासा संबंधी संयम, मुक्ति वर्णन, ज्ञानी तथा अज्ञानी का भेद। तत्वों का वर्णन। ब्रह्म का लक्षण, शरीरादि ज्ञान आत्म ज्ञान, अजपा जाप॥

संख्या ७८ क्यू. स्वरोदय, रचयिता—चरनदास (डहरा अलवर), कागज—देसी पत्र—१४, आकार—६×५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप्) २१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामविलास, ग्राम—मदारनगर, डाकघर—बांगर जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ स्वरोदय चरन दास कृत लिप्यते ॥ भापा गद्य ॥

तत्व जानने का पत्र

इस पत्र के देखने से बुद्धिमान मनुष्य एक एक तत्व की सहज ही पहचान सकें। उदाहरण

इस पत्र के तीसरे चौथे कोठे में देखो

प्रथ्वी	जल	अग्नि	वाय	आकाश	तत्व का नाम	१
पीला	स्वेत	लाल	हरा	काला	तत्व का रग	२
सामने नासिकासे १२ अगुष्ठ वाहर आता है	नीचे होके नासिका से १६ अंगुष्ठ वाहर आता है।	ऊँचा होके नासिका से ४ अगुष्ठ वाहर आता है ॥	टेढ़ा होकर अंगुष्ठ आठ नासिका के वाहर आता है	नासिका के भीत्तर रहता है	तत्व की चाल का प्रमाण	३
मीठी वस्तु की चाह	सलोनी वस्तु पर	तीखी वस्तु को	खट्टे वस्तु को	वुरे स्वाद को चाहै	तत्व की चहना	४
कठिन	सीतला	तृप्त	चर	थिर	तत्व की प्रकृती	५
नाभ के ऊपर	मगज	पिता	नाभ	सिर में रहता है	तत्व का स्थान	६
मुख	लिंग	दोनो नेत्रों से	दोनो नासिका से	दोनो कान में	तत्व का दर-वाजा	७
भोजन	मैथुन	देखना	सूंघना	शब्द	तत्व का भोजन	८
रोम	पित्त	नीद	वात करना	दु ख	आकाश	एक एक तत्व में ५ तत्व हैं और उनकी प्रकृति न्यारी न्यारी है ९
सास	विद अर्थात जल	अंगड़ाई	हिलना	सुख	वायु	
नस	लोहू	भूख	दौड़ना	लाज	तेज	
चाम	पसीना	प्यास	वढ़ना	लोभ	जल	
हाड़	थूक	आलस	सिमटना	भय	प्रथ्वी	

अत—कालज्ञान की रीति ॥ प्रथम दाहिने हाथ की मूठी वांध के मस्तक पै लगाय के पहुंचावे दृष्टि कर लिया करै छ' महिने पहिले मुट्ठी और हाथ न्यारे न्यारे दीखेंगे ॥ फेर दूसरे हाथ की मध्यमा को मोड़के अगुष्ट की । जड़ में लगाय के शेप रही अंगुलियों को धरती पर जमाय के एक एक को उठाय के फिर जहा की तहा स्थित करै २ पहर पहिले मृत्यु काल से अनामिका उठेगी तीसरे दाहिना स्वर मृत्यु काल से २ वर्ष के पहिले २ रात २ दिन

१ वर्ष पहिले ५ दिन ६ मास पहिले १५ दिन ३ मास पहिले २० दिन २ दिन १० दिन रात्रि बराबर चलता है और एक वर्ष पहिले आकाश तत्व ३ दिन रात्रि चलता है ॥ दोहा ॥ स्वासन स्वासन कृष्ण रट वृथा स्वास मति खोय । ना जानू या स्वांस को नहीं अंत कहू होय ॥ इति चरनदास कृत स्वरोधा समाप्तम् ॥

विषय—स्वर साधन विधि काल ज्ञान भक्ति के साधन, आदि स्वरोदा द्वारा वर्णन।

संख्या ७६. एकादश भागवत की भाषा, रचयिता—चतुरदास कागज—साधारण पत्र—२१४, आकार—७¾ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००८, खंडित । रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६९२ = १६३५, लिपिकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० दुर्गाप्रसाद दुबे, ग्राम—रामनगर डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ एकादश भागवत की भाषा लिख्यते ॥ चौपाई ॥ संत दास सत गुरु के चरणां । तिन कों नहीं सुमिर करि सरना ॥ जाते उपजै ग्यान बिचारा । छूटै सर्म कर्म व्यवहारा ॥ १ ॥ बहुरि जगत जनमि नहिं आई । तिनकौ निजा नंद पद पाई ॥ तिनकी आज्ञा सिरद धरौं । लोक हितारथ भाषा करौं ॥ २ ॥

अंत—कबहूँ करे कामना कोई । पावे सकल सदे सो सोइ । ताते ज वे होय सकाम । अरु केवल मानो निहकाम ॥ ५८ ॥ तिन सबहिन कूं भाषा एह । भक्ति मुक्ति मुक्ति को गेह ॥ तातें नीकैं कीजै प्रीति । यह सकल संतन की रीति ॥ ५९ ॥

× × × ×

इति श्री भागवते महापुराणे एकादश स्कन्धे श्री शुक परीक्षत संवादे श्रीकृष्णदेव वैकुंठ गमनं नाम एकत्रिंशोध्याय । एकादस स्कंधे समाप्तोयम् । भाषा अंक दोहा चौपाइ २४१६ बतिसा श्लोक संख्या हजार ४२०० ॥ श्री दादू दयाल प्रेम गुप्ता सिष स्वामी गरीबदास की ताके चाले बाबा सुरत राम की ता सिष्य रामानुदास पाँगवाद गुलाम फते-राम भूल चूक माफ करैं ॥ मेरे दास ॥ श्री संवत् १९२३ शाके १७८८ यह पुस्तक लिखी रामदास पाँडे शहर जौनपुर साकिन ग्राम अस्थान हर दिपर शहरतें पश्चिम तरफ को कुटी है कोस भर के परिमाण में है ॥

संख्या ८० ए. ज्ञानदीप, रचयिता—चेतन चंद कागज—देशी, पत्र—११ आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६२८, लिपिकाल—सं० १८९० प्राप्तिस्थान—प० सिवरतन जी, ग्राम—सरजू का पुरवा, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गनेशायनम ॥ अथ शालहोत्र आरम्भते ॥ मंगलाचरण ॥ दोहा ॥ नमो निरंजन देव गुरु भारतइ प्रहलाद । रोग हरण आनंद करण सुपदायक जग पिंड ॥ श्री महाराज धिराज गुरु सेंगर बंस भरम । गुन ग्राहक गुन ज्ञान के जगत विदित कुसलेस ॥ जाको नाम प्रताप को चाहत जगत उदोत । नर नारी सुन सुन है कुसल कुसल गाता गोत ॥

चित चातुर चप चातुरी सुप चातुर सुप देन । कवि कोविद वरनत रहत सुप सुप पावन चैन॥ वाजी सों राजी रहै ताजी सुभट समरत्थ । रन सूरे पूरे पुरुप लहहिं कामना अर्थ ॥ वाला पन ते शरन रहि मैं सुप पायो वृन्द । शालहोत्र मति देपि के वरनत चेतनचंद ॥ श्री कुश-लेश नरेश हित नित चित चाह लह्यो । अश्व विनोदी ग्रथ यह सार विचार कह्यो ॥

अत—(घोड़ों के चित्र मय उनके अवगुणो के) (१) साल दार घोड़े का सरूप जिस घोडे पर स्याह खत पडे हों उसको बुरा जानते हैं (२) सुतर दत घोड़ा (३) पीपल घोडे वे दात के (४) गज दांत घोडे का रूप (५) स्याह तारू घोडे का स्वरूप यह अच्छा नहीं (६) फूलदार घोड़ा (७) सिकाल घोड़ा यह बुरा होता है (८) गामची के पेच में कचरी का निशान (९) कलि का स्वरूप (१०) कुत्ते की जीभ वाले का निशान (११) जो एक पैर की सफेदी दूसरे पैर की सफेदी का जवाव न रखती हो उसका एतवार नहीं है ॥ (१२) अर्जुन घोडा बुरा है (१३) रकाव की सांपिन का मुंह सवार की तरफ है (१४) अश्व के मुह पर सब्जे का निशान (१५) देवमीन (१६) पैर की गोम (१७) छत्रभग (१८) जिस घोडे के हाथ में फूल है कमवख्त है (१९) चपदस्त घोड़े को उस्ताद बुरा कहते हैं ॥ (२०) चंद सूर्य की भौंरी का निशान । आसू दार । अवलख भौंरी । गर्दन पर सिंग । सूकरी मुख । अगला पैर घोड़े का सफेद है इसको अर्जुन कहते हैं ॥ (२१) शाखदार घोड़े की पहिचान (२२) एक हड्डी का निशान (२३) काना घोड़े का निशान (२४) तीन कान वाले घोड़े का निशान (२५) जरदे का सरूप (२६) यह मुतलय कुम है (२७) पदम घोड़े की सवा का स्वरूप उसकी ईरानी मुराल बुरा कहते है (२८) तीन कान वाले घोड़े का निशान (२९) यह असल रंग है (३०) इस तसवीर में सिवाय एक देवमनि के सव नुकस हैं (३१) गावदुम घोड़े का निशान (३२) जिसके वायें पैर सफेद हो उसको मुतन्ना कुलय सार कहते है ॥

विषय—इस ग्रंथ में घोड़ों की जाति, रग, भेद तथा ब्राह्मण क्षत्रिय वर्णादि निर्णय तथा भौंरी आदि सर्व चिन्ह शुभाशुभ और रोगादि लक्षण और चिकित्सा उत्तमता के साथ वर्णित हैं ।

संख्या ८० वी. शाल होत्र, रचयिता—चेतनचंद, कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—११ X ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६५५, पूर्ण, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर वद्री सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—वक्सी तालाव, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ शाल होत्र लिख्यते ॥ दोहा ॥ नमो निरंजन देव गुरू मारतड ब्रह्मण्ड ॥ रोग हरन आनद करन सुप दायक जपिंड ॥ १ ॥

अत—अथ गोली सौ गुदफ की ॥ सिंगरफ १ । पैर २ । सुमिलखार १ । हिंग २५ मिरच २। लौंग १२॥ सुहागा के फूल २। पान सौं १९६ अदरप के रस में गोली वावे मौताद जरी के वेरकी ॥ अथ औफुतर की ॥ लोट सज तोल २५। सोहागा फुले के २५। मनई के पोपरी जारिकै इह इलाज पै वै देइ पैसा दुइ भर तौ घुमर जाई ॥ इति ॥

विषय—विविध अश्वों की जाति लक्षण और चिकित्सा का वर्णन ॥

संख्या ८१ भक्ति विलास, रचयिता—हरीकदास, कागज—देशी पत्र—१७, आकार—१४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० सालिग्राम दीक्षित, ग्राम—जामू, डाकघर—संडीला, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ मूलं धम तरोर्विवेक जलधेः पूर्णेन्दु मानन्ददं । वैराग्यां बुज भास्करं ह्यघघनं ध्वान्तां पहं तापहं । मोहांभोधर पूग पाटन विधौ स्वसंभवं शंकरं । वंदे ब्रह्म कुलं कलंक समनं श्री रामभूपप्रियं । सान्द्रानन्द पयोद सौभग तनुं पीतांबरं सुन्दरं पाणौ बाण सरासनं कटि लसत्तूणीर भारं वरं । राजीवायतलोचनं धृत जटा जूटेन संशोभितं सीता लक्ष्मण संयुतं पथि गतं रामाभिरामं भजे । दो० प्रनम्य परम गुरुपद पदुम नारायन नर रूप । करहु कृपा मति देहु मोहि बरनौं चरित अनूप ॥ १ ॥ दोहा राम प्रनत पूरन सकल काम, धाम सुप सर्व । परम अगाध कर उदर बसहु तुमहु मम गर्व ॥ २ ॥ देहु कृपा करि सुमगमति जहि उपजै वर भाव । भक्तन के बरनौं चरित भाषा करौं बनाव । दो० । स्वर सदा हरि भक्ति रति गावत वेद पुरान । करउ कृपा विधि वस्तमा तब पद बचन प्रमान ॥ ४ ॥ सन्त सभा निज नाइ सिर रचौं भक्ति विलास पुन्य पुरातन की कथा हितु चितु सहित हुलास । ५ ॥

अंत—छ—जब विधि हरि भक्ति सत्य प्रजा करणे त्रिविधि ताप आपदा अशेष हारणी भव वारिधि पोत होत ह्व अनामयं । राज रोग भोग भाव वेद नृप भय राग उरग पक्षिराय सिंह गज भाई तृष्ण पंकज पार भानु तम वह । काम क्रोध लुंब लोभितुंब बल महा आदि सक्ति नाम हेतु भक्ति हरित हा । संक सोक संभ्रम गर्वादि गंजनी दंभदर्प दुष्ट भाव वेद भंजनी । समता सुचि सील सांति पाक पारिसी । ममता मद मोह मान कोभ पवन सी हिंसा अपकवि नाग शंभु सरसी । सीतल ससि सरद क्षेम भक्त उर लसी ज्ञानवर विवेक वर्ष धीरज करनी । कोप भय प्रमाद कलह आलस हरनी सदा सन्तोष वर विराग बर्बेनी योग वृद्धि—यहाँ से पृष्ठ खंडित हो गया—

विषय—प्रथम अध्याय—रामस्तुति, गुरुवन्दना भक्ति महिमा ॥ व्यासाश्रम पर नारद जी का आगमन और व्यास कोपपन्नीक देखकर उनके मन में मोह का उत्पन्न होना । व्यास का अपनी पूर्व कथा वर्णन करना । द्वितीय अध्याय— नारद को वैराग्य होना— भगवान के दर्शन के लिये व्याकुलता—आकाश वाणी द्वारा यह शब्द होना कि इस शरीर से दर्शन नहीं मिल सकता । ब्रह्मा से नारद की उत्पत्ति-सृष्टि सम्बन्धी प्रश्न करना और ब्रह्मा द्वारा यथोचित उत्तर पाना । तृतीय अध्याय ब्रह्मा का चारों मुखों से वेदोचारण । ॐकार से सृष्टि रचना का क्रम फैलना । नाना प्रकार के जीवों की उत्पत्ति के सम्बंध में नारद के साथ ब्रह्मा का सम्भाषण—चतुर्थ—ब्रह्मा द्वारा सम्पूर्ण स्थावर जंगम आदि जीवों की रचना—पंचम अध्याय—शिव पार्वती संवाद—भक्ति वैराग्य और ज्ञान के संबंध में शिव का पार्वती को उपदेश करना—ब्रह्म की सर्वत्र व्यापकता । जीव का शरीर के साथ

जन्म मरण परन्तु उसकी अनित्यता और अलेप रहने का उपदेश। षष्ठम अध्याय—शिव जी का पार्वती से नवधा भक्ति कहना इससे प्रेम की उत्पत्ति—प्रेम ही ज्ञान का कारण—और ज्ञान होने से समाधि तथा मोक्ष प्राप्त होना। भगवान का अनेकों रूपों में ध्यान। पार्वती और सत् पुरुषों के लक्षण, सप्तम अध्याय—शिव का पार्वती से राम नाम की महिमा वर्णन करना—सब नामों से इसकी उत्कृष्टता—अष्टम अध्याय—व्यास जी की स्त्रीके गर्भ में शुकदेव की स्थिति—उसका ईश्वर भजन में प्रेम, बालक की उत्पत्ति की अवधि बीत जाना परन्तु जन्म न होना—व्यास का ध्यान द्वारा विचार करना अत्यन्त सिद्ध तथा योगेश्वर पुत्र का अनुमान होना—स्त्री से सब वार्ता कह देना। पुत्रोत्पत्ति में विलम्ब। देवताओं का विष्णु के पास जाना और स्तुति करना—विष्णु का व्यासाश्रम में जाना और गर्भ स्थित बालक के बाहर न आने का कारण पूछना—उदरस्थित बालक का उत्तर—एकान्त में भजन करने की इच्छा-भगवान का उन्हें बाहर बुलाना—शुक की उत्पत्ति और वन के लिये पयान। ९—शुक का विद्याध्ययन-पाण्डवों की कथा, कृष्ण से वार्तालाप।

संख्या ८२. राजनीति (हितोपदेश), रचयिता—छविनाथ, कागज—देशी, पत्र—१४२, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुष्टुप्) २४१३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चन्द्रीसिंह जमीन्दार, ग्राम—खातीपुर, डाकघर—बक्सी का तालाब, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ जो कारज को इच्छा मनु होई ॥ यहि विधि वचनु कहै गो सोई ॥ अरज न करत आपु अलसाई। ताकी सपति रहि न जाई ॥ एक चाक रथ गति नहि होई ॥ पुरिषारथ धन लहै न कोई ॥ पूरब जन्म कियो जो धर्मू। सोई भाग कहावै कर्मू ॥ ताते भाग चही अनुकूला। जतन करी पुरुषारथ मूला ॥ ज्यों माटी करता कर लेई। कीन्हों चहै सोई करि देई ॥ यह उपपान लोग सब गावै। जैसा करै सो तैसा पावै ॥दोहा॥ भाग भरोसो मन्द करि पुरुषारथ तजि शेष। जतन किये जो जानि लै तौ हृदै है निरदोष ॥१॥ पुरुषसिंह जो उद्यमी, लक्ष्मी ताकी चेरि। भाग्य भरोसे रहत जे कु पुरुष भाषौ टेरि ॥२॥

अंत—द्रविण वारण ताह वसुधरा सुख युत सतत कुरु नरं। दुर धराति तराति तवैरिणा—सुन यना नयनां चललाल त्रसम ॥

विषय—विष्णुशर्मा के हितोपदेश का भाषानुवाद।

संख्या ८३ ए. विजय मुक्तावली आदि पर्व, रचयिता—चत्रसिंह कायस्थ (अटेर, भदावर), कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—१६ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप्) ८२८, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चंद्रिका बक्स सिंह जमींदार, ग्राम - खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ वृज रक्षन भक्षन अनल रक्षन गोधन ग्वाल। भुजवर कर वर करज पर गिरिवर धरन गोपाल ॥ १ ॥ हरि दीपक मन सदन धरु कपट

कपाट उघारि। गसै सकल अघ कालिमा तब सो नृप विचारि ॥ २ ॥ घनाक्षरी छंद ॥ धूमि भूमि आये कोपि वासव पठाये घन धाये दिसि दिसि निसिवासर तरज पर। मेघ की मरोर पवमता की झकझोर ओर मीरद निपट धार बोलमो गरज पर। रापे सुरपालके कराल कोपते गोपाल सब हूँ दयाल गोपी ग्वाल की अरज पर। हर बर धाइ गिरि मूरूते उखाइ कर छाइ वृज रापो रापि करकी करज पर ॥ ३ ॥

अंत—दोहा ॥ रहत किते दिन तब भये ता कानन के धाम। पुत्र हिडंबी के भयो धरयो घटोत्कच नाम ॥ ४८ ॥ बीति किते दिन तब गये तब्यो विपिन बहु ठाठ। छाडि घटोत्कच ता बसी पहुचे एक चक गांठ ॥ ४९ ॥ रूपक धरि याके सबे रहे एक द्विज धाम। उद्दिम करि भोजन करै सब पंचव गुन ग्राम ॥ ५० ॥ इति श्री महा भारते पुराणे विजय मुक्ता वली कवि छत्र विरचिते घटोत्कच जन्म नाम दशमोध्यायः १० ॥ समाप्त ॥

विषय—इस पर्व में १० अध्याय हैं—(१) राजा शांतनु का गंगा से विवाह प्रण करना, आठ पुत्रों का गंगा में प्रवाह ९ वें भीष्म का रखना, गंगा का स्वर्गारोहण, पुनः मत्स्य गंधा से विवाह (२) मत्स्योदरी से चित्र विचित्र नामक पुत्र का जन्म व्यास का आगमन अंत में धृतराष्ट्र और पांडु का जन्म। (३) राजा पांडु का वनवास (४) दुर्योधन अवतार वर्णन (५) दुर्योधन आदि और युधिष्ठिर भीम अर्जुन नकुल सहदेव आदि की जन्म कथा (६) भीमसेन कौरव संवाद (७) अर्जुन विजय वर्णन (८) भीम सेन विवाह वर्णन (९) ऐरावत आगमन (१०) सकुनी दुर्योधन संवाद, नकुल दुर्यो धन संवाद, भीम द्वारा हिडंब राक्षस का मरण एवं घटोत्कच की जन्म कथा।

संख्या ८१ डी. विजै मुक्तावली (गद्य, विराट पर्व महाभारत), रचयिता—छत्रसिंह (अटेर भदावर), कागज—देसी पीला पत्र—३१, आकार—११ × ७½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप्) ७९६, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर चंद्रिका बक्स सिंह जमींदार, ग्राम—जानीपुर, डाकघर—ताल्लुक बक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—अथ अब पर्व लिख्यत गीतिका छंद ॥ राज विन सबे युधिष्ठिर भूप तप बन को चले। अनुजन्हि संग लीन्हे हुते सूर सहे भले। मातु रापी विदुरके गृह हेतु बहु विधि जानिकै। रापी सुभद्रा पुत्र युत पुर द्वारिका गह आनिकै। द्रौपदी के पंच सुत नृप द्रुपद हिंग ले रापियो। पंच बंधव नृपत तनया सहित बन अभिलाषियो।

अंत—श्री कृष्ण उवाच ॥ युद्ध नहि तुमको नहि देत। उद्दिम कीन्ही भारत हेत ॥ पिता सुत मै कछु न दै हैं। जो रन जीते सो मुद्द कै हैं ॥ ४१ ॥ इति श्री महाभारत पुराणे विजै मुक्तावली कवि छत्र विर चितायां श्रीः कृष्ण दुर्योधन संवाद वर्णनो नाम षट् विंसतिमो अध्यायः २६ श्री सीताराम ॥ विराट पर्व समाप्तं ॥

संख्या ८१ सी. विजै मुक्तावली (भीष्म पर्व) कागज—देसी पत्र—८, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप्) १४० रूप—नवीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चंद्रिका बक्स सिंह जमींदार, ग्राम—जानीपुर डाकघर—ताल्लुक बक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ भीषम पर्व लिष्यते ॥ दोहा ॥ पाडु पुत्र कुर राज रन कोपि चढे रन दोइ, चर्म वर्म तन त्रान कसि वल कत भट सव कोइ ॥ १ ॥

अंत—दोहा ॥ लयो साहना को मार सिर द्रोणाचारज सीस । तिनहि के संग सवल दल चढे सकल अवनीस ॥२६॥ इति महा भारत पुराणे विजै मुक्तावली कवि छत्र विरचितायां भीषम समोहनो नाम त्रीन्समो अध्याय ॥ ३० ॥ भीषम पर्व समप्त शुभ मस्तु श्री सीताराम राधाकृष्ण ॥

संख्या ८३ डी. विजै मुक्तावली द्रोण पर्व, रचयिता—छत्रसिंह कायस्थ (अटेर, भदावर), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—१६ × ७¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०२, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चद्रिका वक्ससिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ द्रोन पर्व लिष्यते ॥ सोरठा ॥ दल पति द्रोण वजाइ चढ्यौ कोपि रन रुद्रमो कटक समुद्रहि पाइ सोपत देखत क्रोध करी ॥ १ ॥ दोहा ॥

अत—दोहा ॥ धर्म पुत्र जै रन भई गहिरे वजे निसान । करोच भूपति करन तव दुर्जोधन जान ॥ ३२ ॥ इति श्री महा भारत पुराने विजै मुक्तावली कवि छत्र विरचिताया घरका द्रोण वध वरननो नाम सैंतीसमो अध्याय ॥ ३७ ॥ द्रोन पर्व समाप्त ॥ सीता राम राधाकृष्ण सीता राम राधाकृष्ण सीता राम राधा कृष्ण ॥

संख्या ८३ ई विजै मुक्तावली, गदापर्व, रचयिता—छत्र कवि (अंटेर, भदावर, ग्वालियर राज्य), कागज—विदेशी, पत्र—१९, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७८, खडित, रूप—प्राचीन जीर्ण शीर्ण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७५७ = १७००, लिपिकाल—स० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० वद्रीसिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ गदा पर्व लिष्यते ॥ चौपाई ॥ राजा निपटि अकेला भयो ॥ मन्त्र जपन जल भीतर गयो ॥ जपन चारि वड़िका जो पावै । तौ अपनौ सव सैन जिआवै ॥ १ ॥ यह सुधि पाय पाडव धाये । जलमो भूपत हासोंप आये ॥ कहि न कहा डरि कुर पति गयो । सो नहि हमै सामुहे भयो । २ ।

अत—जीतो भारत कृष्ण मत तिनहि इक पाइ । एक क्षत्री महि भोगई छत्र जुधिष्ठिर राइ ॥ २८ ॥ भारथ सुनि भाषा करौ छत्र सुवुद्धिहि पाय । कहत सुनत पातक नसै । अंग दीरघ दुख जाइ ॥ २९ ॥ चारि वरन मन जो सुनै । तरुनी पुरुष जो कोय । प्रगटै हरि की भक्ति उर । मोचन दुख को होय ॥ ३० ॥ छ छ छ छ छ हर हर हर हर छ छ छ छ । इति श्री महा भारत पुराणे विजै मुक्तावली कवि छत्र विरचिते गदा पर्व वर्णन समाप्तो भवेत सुभम भूयात् कार्तिक मासे कृष्ण पछे चतुरथिया सम्वत् १९३१ साके १७९६ दोहा या पोथी मे जानिये । डोरी सुखमा अच्छ । दो सौ तेइस जानिये जग में अहै प्रतच्छ । जो याको पढ़िहैं कहै सिद्धि लोक को जाई । जगमों सम्पति लहइगो अत राम पुर आय ॥

सारम ॥ कातिक मास पुनीत । चन्द्र वासरो नीक है । तिथी चतुर्थी आई । तबहि समाप्त यो भई ॥ सिव सिव सिव लिखा मुक्त बली बली ॥

संख्या ८१ एफ. बिर्दैमुक्तावली (गदापव), रचयिता—कवि छत्रसिंह कायस्थ, कागज—देशी, पत्र—१२ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चंद्रिकाबक्स सिंह, ग्राम—सानीपुर, डाकघर—ताकाव बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि-अंत—८१ ई के समान । पुष्पिका इस प्रकार है।—

इति श्री महाभारत पुराण बिर्दै मुक्तावली कवि छत्र विरचितायां राज जुधिष्ठिर राज्य बिर्दै बरनना नाम तेतालिसमो अध्याय ॥ ४३ ॥ लिखा मुक्तावली दवी फागुन मासे सुक्ल पछे भर्तीयायां गुर बासर समाप्त भई ॥ समत् १६११ ॥

संख्या ८१ जी बिजय मुक्तावली (कर्ण पर्व), रचयिता—छत्र कवि कागज—देसी, पत्र—६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०७, पूर्ण, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १०५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चंद्रिका बक्स सिंह , ग्राम—सानीपुर, डाकघर—ताकाव बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—कर्ण पर्व लिष्यते ॥ सोरठा ॥ सेनपति कीन्हो कर्ण, दुर्योधन अपन समर । जग जस सब दुष ह्वर्ण पट दूसरसभे कथ्य तह ॥ दोहा ॥ चतर्यो कर्ण रणधीर तब कर कीन्हे धनुबान । सूरज गगनमें तासुकी पटतर नाही आन ॥ २ ॥

अंत—इति श्री महाभारत पुराण बिजय मुक्तावली कवि छत्र बिरचायां कर्ण बीर समोहनो नाम बतालीसमो अध्याय ॥ ३१ ॥ कर्ण पर्व समाप्त ॥

संख्या ८२ पद्य बिर्दै मुक्तावली (समापव), रचयिता—छत्र कवि (अटेर, मद्दावर) कागज—देसी पीला पत्र—१५, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप्) २८२ पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५७ = १७ ० ई० प्राप्तिस्थान-ठा० चंद्रिका सिंह जमींदार, ग्राम—सानीपुर डाकघर—ताकाव बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि-श्री गणेशायनमः ॥ अथ समापर्व लिष्यते ॥ दोहा ॥ धम धुरंधर तिहि छिनक धर्म सुवन सुव भूप । करी मयासुर असुर सों कीने धाम अनूप ॥

अंत—इति श्री महा भारते पुरान बिर्दै मुक्तावली कवि छत्र बिर चितायां । दुर्योधन जुधिष्ठिर जूप बरननो नाम सत दसमो अध्यायः ॥ १० ॥ समा पर्व समाप्त ॥

संख्या ८३ आई बिर्दै मुक्तावली (सल्य पर्व), रचयिता—छत्र कवि कायस्थ (अटेर, मद्दावर) कागज—देसी बादामी पत्र—३, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुष्टुप्) ३० पूर्ण रूप—नवीन पद्य रचनाकाल—सं० १७५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चंद्रिका बक्स सिंह जमींदार ग्राम—सानीपुर डाकघर—ताकाव बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—अथ सल्य पर्व लिष्यते ॥ दोहा ॥ सल्य सूर रथ अति रथी कर लीन्हो धनु बान । जीतो चाहत पाण्डु सुत माडत समर विधान ॥ १ ॥

अत—इति श्री महाभारत पुराणे विजै मुक्तावली कवि छत्र विरचितायां सुसर्मा सल्य वध वरननो नाम चालिसमो अध्याय. ॥४०॥ सल्य पर्व समाप्त ॥

संख्या ८३ जे विजैमुक्तावली (उद्योग पर्व), रचयिता—कवि छत्रसिंह कायस्थ (अटेर, भदावर), कागज—देशी ब्राउन, पत्र—८, आकार—१६ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप्) १४७, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस्थान—डा० चंद्रिका बक्स सिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ उद्विग पर्व लिख्यते ॥ सुन्दरी छंद ॥ बैठ सभा सुत धर्म महीपति बोलि लये तह कृष्ण महा गति, बधव चारि विराजत ता थल कौनु बषानि कहै तिनके बल।

अंत—इति श्री महाभारत पुराणे विजै मुक्तावली कवि छत्र विरचितायां श्री कृष्ण भगवता ग्यान उपदेश वर ननो नाम अष्टा विंसतिमो अध्याय ॥ २८ ॥ उद्योग पर्व समाप्त ॥ सीताराम राधा कृष्ण।

संख्या ८३ के. विजयमुक्तावली, रचयिता—छत्र कवि (अटेर भदावर), कागज—देशी, पत्र—२४०, आकार—१० × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप्) ३६००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७५७ = १७०० ई०, लिपिकाल—स० १८९५ = १८३८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री स्वामी नारायणाश्रम, ग्राम—बछना, डाकघर—बिल्हौर, जिला—कानपुर।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ विजय मुक्तावली लिख्यते ॥ दो० ॥ विघन हरन तुम हौ सदा गनपति होउ सहाइ ॥ विनती कर जोरे करौं दीजै ग्रंथ बनाइ ॥ जिन कीनो परपंच सब अपनी ईच्छा पाइ। ताको हौं बंदन करौं हाथ जोरि सिर नाइ। करना कर पोषत सदा सकल सृष्टि के प्रान, ऐसे ईश्वर को हिये रहै रैन दिन ध्यान ॥ मेरे मन में तुम बसो ऐसे क्यों कहिं जाइ। ताते यह मन आप सो लीजै क्यों न लगाइ ॥ जो गुरु गिरि गुरदेव की सुदर दया दरेर। गुग सक्ल पिंगल पढे पगु चढ़े गिरि मेर।

अत—छत्र विजय मुक्तावलि गाये ॥ दोहा ॥ फौज सुदर वीरा लसै भूपति सिंह कल्यान। पूरण कीनो छत्र कवि ग्रंथ सुतिहि अस्थान ॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्तावल्याम कवि छत्र विरचिताया राजा युधिष्ठिर राज वरणनो नाम त्रिचत्वारिंशोऽध्याय ॥ इति श्री विजय मुक्तावली सपूर्ण समाप्ता लिपत देवनारायण शर्मा सवत १८९५ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा।

विषय—महाभारत की कथा।

संख्या ८४. प्रेमपियूष, रचयिता—देवीलाल, कागज—आधुनिक, पत्र—१०, आकार—८ × ५ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुष्टुप्) ५०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं०१९४४, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दुबे गाजीपुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ।

कवित्त—पावस प्रबल आय धन्यो चहुँ ओरन तें निरखि बिमोगिन जन सजत सहारे हैं । मैरि मदि मदक में पावन चहूँधा धाम्यो झिल्ली गणमानो चोबदार सों पुकारे हैं । दादुर रत बूदें अरु बिज्जु चमकन लागीं केकी और कोयल पुकारत करारे हैं । धीरज धंधावे आक छबी कहे कौन जिन्हें पीतम पियारे मिले पावक पिचारे हैं ॥१॥

अंत—योवन चढ़े है युग अंकुर लढ़े हैं पुंगी फल सों बढ़े हैं नहीं भी कम्ब समान के। साम पै चढ़े हैं कारीगरन गढ़े हैं मीत मानस मढ़े हैं ऐसे मजब अमान के द्वार पै बढ़ हैं रामचेन्द्र तें बढ़े हैं नित मेरु पै पढ़े हैं अरे गजब गुमान के ऊपरी जड़े हैं मानी केरि के कर्ड हैं अलि आजन गढ़े हैं मद रस्यो ना जहान के ॥ चामु चिरानि सुधामम आगत प्यारे कर्यों हमैं कैन तुम्हारे नैनन नींद न आवें कुलेश के तार गर्नी जग नाय बिचारे आनन्द पूरण होत नहीं बिन बायक पीउ गवेलीके मारे कैन कर्ड तन ताप हरें मिटि वे कभी रामकली के निहारे ।

विषय—(१) इस ग्रंथ में नायक नायिका के प्रेम सम्बधी शृंगार रस के कवित्तों का वर्णन है । बालपति के पाने पर नायिकाओं की वर्षा आदि ऋतुओं में अधीरता ।

(२) बसन्त ऋतु की शोभा वर्णन ।

(३) विरहिणी स्त्रियों के चित्त की दशा का वर्णन ।

(४) नायक के प्रति नायिका का मान वर्णन ।

(५) नायिका के अंगों का वर्णन ।

(६) नायक का नायिका के प्रति प्रेम ।

संख्या ८८. दादू की बानी, रचयिता—दादू दयाल कागज—देशी, पत्र—८४ आकार—३ × १२½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ –१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, खंडित, रूप—प्राचीन पद्य, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३४, प्राप्तिस्थान—श्री स्वामी ब्रह्मचारी C/o बाबू कालका प्रसाद बाजपेयी तहसील सिर्धौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—सपनी आर्यां आर गति और न आर्वे कोइ । सुमिरि सुमिरि रस पीजिये दादू आनद होइ ॥ दादू सबही बेद पुरान पढि मेटि नाव निरधार । सब कुछ इनहीं माहि है क्या करिये विचार ॥

अंत—दादू जे साहिब लेखा लिया तौ सीस काटि सूली दिया । मिहर मया करि फिल किया तौ जीवे जीवे करि जीया ॥ इति बिनती कौ अंग संपूर्ण समाप्तम लिपतं रामजी लाल बाजपेयी स्थान मांठ संवत १८३४ वि० कार्तिक शुक्ल ६ । शुभमस्तु ॥

संख्या ८६ ए. अलंकार रत्नाकर, रचयिता—दलपतिराय (अहमदाबाद) कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१४ खंडित रूप—प्राचीन पद्य और गद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९१ , प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रभाष सिंह जी मु०—मस्कापुर जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अलंकार रत्नाकर लिख्यते ॥ दोहा ॥ नवत सुरासुर मुकुट मद्धि प्रतिबिंबित अहिमाल । जिमे रत्न मय लीक मनि सो मो पद रक्षपाल ॥ अथ

देश दीप वर्णन ॥ उदयापुर सुर पुर मनो सुरपति श्री जगतेस ॥ जिनकी छाया छत्रि वसि कीन्हो ग्रथ अमेस ॥ कवित सकल महीपन के राजे सिरताज राज पर उपकार हरी भारी दुप द्वंद के। देव जगतेस धीर गुरुता गर्भार धरे भजन विपक्ष पक्ष दक्ष फौज फंद के ॥ प्रभुता प्रकाश अति रूप को नेवाग मोहे प्रगट प्रकाश मेटे जग द्वद वृंद के ॥ मेव से समुंदर से पारथ पुरंदर से रति पति सुदर समान सूर चद के ॥ दोहा जदपि नारि सुदरि सुघरि दिपति न भूपन हीन। त्यों न अलकृत विनु लसै कविता सरस प्रवीन ॥

अंत—उदित भयो शशि मानिनी मान मिटावन मानि। मेरी रिद्धि मृद्धि यह तेरी कृपा वपानि ॥ जहा कारन कारज के लिये कह्यो होइ तहां हेतु अलंकार जैसे चंद्रमा कारन मान मेटन कारज के लिये कह्यो। यथा कवित्त ॥ फैलि रहे चहुँ चोर चिकुर समूह घन वरपत सुमन सलिल विंदु भारी है ॥ टूटे मुकुताहल ते राजत वलाक वल भूपन सवद मोर घोर अनुकारी है।

अत—॥ छप्पै ॥ रसवत वहुरयो प्रेम वहुरि उर्ज्जास्वि ताहि लहि। समाहितहि पुनि जोरि वहु भावोदयही कहि। भाव संधि पुनि लेपि वहुरि कहि भाव सवलता। पुनि प्रतच्छ अनुमान और उपमान प्रवलता ॥ पुनि शब्दरु अर्था पत्ति कहि अनुपलब्धि संभव सहित। ऐते हू पच दश जानिये अलकार सव सुकवि चित। अपूर्ण।

विपय—कुवलयानद के आधार पर अलंकार वर्णन।

संख्या ८६ वी. भापा भूपण (अलकार रत्नाकर), रचयिता—दलपतराय-वंशीधर (अहमदावाद), कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—६×१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी व्रजवहादुर लाल, प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ दोहा ॥ नवत सुरासुर मुकुट महि प्रति विम्वित अलि-माल ॥ किए रत्तन सवनील मणि सो गणेश रछिपाल ॥ १ ॥ भापा भूपण अलंकृत कहुँ यक लक्षण हीन ॥ श्रमकरि ताहि सुधारियो दलपति राइ प्रवीन ॥ २ ॥ कहूँ कहूं पहिले धरे उदाहारन सरसाइ। कहूँ न एकरि कै धरे लक्षण लक्ष्य जताइ ॥ ३ ॥ अर्थ कुवलया नन्द को वांध्यौ दलपति राइ। वन्सी घर कवि पे कहूँ कवित्त वनाइ ॥ ४ ॥ भेद पाठ श्रीमाल कुल विप्र महाजन काइ ॥ वासी अमदावाद के वन्सी दलपति राइ ॥ ५ ॥ जैसे रीझि जवाहिरी लेत जवाहिर पेखि। त्यौं कवि जन सव रीझिहै अभुत श्रमहि देखि ॥ ६ ॥ दरवि लोभ कस को न किय नाहि विवखि उरमार। अपने चित्त विनोद को कीन्हो यहै प्रकार ॥ ७ ॥

अंत—॥ तिलक ॥ जहा कारज कारज रूप ठहरावै तहां ऊ हेतु ॥ जैसे कारज सिद्धि को कारन। तहां शाक्षात रिद्धि ठहराई ॥ कोऊ कोटिक सग्नेहे कौउ लाप हजार ॥ इति श्री मरा दल पति राय विरचिते अलकार रत्नाकरे ॥ अर्था लंकारे समाप्त ॥ एक अलकार के ॥ दूसरे अलकार की अवस्था न रहे ॥ अरु कोऊ को वाधन हो ॥ अपने अपने

और तुह उर पर सी ॥ जैसे तिल तन्दुल ॥ तहां मे भूमि १ मद क्षीर नीर सो मिश्री होइ ॥ ३ ॥ तहां मंडर ॥ ४ ॥ अंग अंगी भाव ॥ सम्बत् १९१० ॥ कार्तिक मासि शुक्ल पक्षे तिथौ द्वादस्याम् ॥ १२ ॥ श्री राम चंद्रा यनमः ॥

संख्या ८७ ज्ञान प्रश्नावली, रचयिता—दामोदर दास, कागज—देसी, पत्र—१०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११, परिमाण (अनुष्टुप्) ७८०, रूप—प्राचीन, लिपिकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० कृपाशंकर वैद्य, ग्राम—मुक्तापुर, डाकघर—मिर्पौली, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ज्ञान प्रश्नावली लिख्यते ॥ दो० विघन हरन मंगल करन पूरन पुन्य प्रकाश । नाम लेत गणेश का सिद्धि काम हो जासु ॥ इसके जानने की यह रीति है जो पुरुष पंडित के निकट आवे उस पुरुष से निम्नांकित यंत्र पर किसी अंक पर उँगली रखावे और पंडित जी शिव जी का नाम लेकर प्रश्न का दर्प और उत्तर कहे ॥

अब हरएक अंक का फल प्रथक प्रथक लिखते हैं ॥ प्रथम अंक १ का ॥ हे प्रश्न करन वाले जो कार्य तूने अपने मन में विचारा है वह शीघ्र परमेश्वर सिद्धि करेगा और कुछ रुपया भी हाथ लगेगा रोजगार भी किसी के द्वारा लगेगा और मनोर्थ सब सिद्धि होगा अगर विश्वास न हो तो देख तुम्हारा मुख पर तिल है अगर सब सके तो भैरों जी की पूजा करो और शनिश्चर के दिन काले कुकुर को पड़ा खिलावो ॥

५	४	३	२	१
६	७	८	९	१०
१५	१४	१३	१२	११
१६	१७	१८	१९	१२

अंत—इति श्री प्रश्नावली दामोदर दास कृत संपूर्ण शुभ मस्तु लिखा शिव नारायण बाजपेई स्वपठनार्थ संवत् १९१६ चैत्र पूर्णमा ॥ शिव शिव शिव शिव शिव ।

विषय—स्वप्न, ज्योतिष, खोई गई वस्तु सामुद्रिक आदि के प्रश्न ॥

संख्या ८८ अखिरनामा, रचयिता—दरियासाहब, कागज—नवीन, पत्र—४, आकार—९३ = ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १० परिमाण (अनुष्टुप्) ११५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १८६० = १८११ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मुन्नूलाल पुस्तकालय मुरारपुर जिला—गया।

आदि—अथ अखिर नामा भाषल दरिया साहब । हंस उबारन कृपा को नाम ॥

अखिर अल्लाहमम को सरिताज । औलाद आमिर बाही काज ॥ औलाद मिसरी सागर है जार । यार बातें गुनहगार ॥ दस्त हैं साहब महबूब । औलाद मिसरी बना है खूब ॥ पाईद चंगी दायेह यार । बड़ी मांग खोही सों बेकीमती मिस्न कह माता । व वे खाक बहर का नाहीं ॥

अन—पृष्ठ—७

गैब गाफिलो पीर का नाम । औलम हुआ मिस्न नहिं जाम ॥ कफ् कलाम बहर है

जैसा । क़ाफ़ साफ़ है ये लाम ऐसा ॥ लाम सों काम ठौर है भाई । मीम महर वर बैठा पाई ॥ निरखु नाम निज जलकै सोय । वाह वाह परगट सब होय ॥ है हाजिर कहिए वे न्यून । लामे निअरे नहिं नमून ॥ अलफ इलाही मीर है भाई । हमजा जाहिर बैठा पाई ॥

× × × ×

अलिफ नामा सपूरन संमत ६० साल सन् १२५१ सारौ पर पूरन भई दस्तखत परताप सहाय ॥

विषय—पृ० १ से पृ० ७ तक—उर्दू के प्रत्येक अक्षर पर क्रमपूर्वक ईश्वर की सत्ता तथा कर्त्तादि विषयों पर कुछ तुकबन्दी ।

संख्या ८६ ए. गो० तुलसीदास का चरित्र, रचयिता—दासानुदास, कागज—देशी, पत्र—१३५, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३६, परिमाण (अनुष्टुप्) २४३०, पूर्ण, रूप—अति जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१९, प्राप्तिस्थान—पं० मूलचंद तिवारी, मु०—झाअर, डाकघर—बिसवां, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम. अथ गोसाई जी को चरित्र लिख्यते ॥ चौ० वरनौं जग वंदन गन नायक । गिरजा शंकर सुवन विनायक ॥ सिद्धि दायक दुष दोष नसायक । अच्युत गुन गायक सब लायक । बुद्धि भवन सुष सदन कृपानिधि । जानत रामनाम महिमा विधि ॥ अग जग जीव वदि सुष पावत । सुनि दासानिदास सुष पावत ॥ शंकर सहिज कृपाल भक्ति प्रद । औढर दानि पुराण वेद वद ॥ सुर नर असुर चराचर वंदित । सियाराम पद सरस अनदित ॥ स्वारथ सपदादि परमारथ । भक्त भाव हित जौन जथारथ ॥ मागत भाय कुभाय निहोरे । देन दयाल द्रवत पुनि थोरे ॥ रामहिं प्रिय सेवक सुपदाई । इनके भजे ते मति गति पाई ॥ हरि गीतिका पाऊं न गति किन पतित जन भोरेहु भजे त्रैलोचन ॥ नारी च टारी सो उधारी नृपति हन्या मोचन ॥ स्वानहि दियो धनराज जो सुय तस्करी कृत लोचन । पक्षी कपोत न प्रान किय विधि गीत आमिष शोचन ॥

अंत—दोहा ॥ लोहेन की न लोहार की गति नहि जाति विचारि । जो सिर धारै सीप कै ताही की यहि डार ॥ कवित्त ॥ जेई प्रपंची तेई पच करि मानियत जेई नर पोट तिन की वोट लीजियतु है ॥ जेई महा पापी तेई प्रतापी कीजियतु है ॥ चोरन वोलाइ शिरोपा देत राजा राउ साहन पकरि वंदी षाणे दीजियतु है ॥ असे हाल देषि कलिकलि के कराल ज्वाल रामजी तिहारो नाम लै लै जीजियतु ॥ सत सुर सरद वसंत सुर सापनि को कंतर निरंतर अनत ज्ञान गज को । भानुकुल मुकुट सुमाल मुनि मानिक को पाय वल काल प्रति पालक सुपथ को ॥ जातुधान न तम भान देवधान धन कान सुकवि रतन थान मान मथ को । मीन मन फद जग लोचन चकोर चद पुन्य तरु कद रामनद दशरथ्य को ॥ इति श्री गोसाई चरित्र दासानि दास विरचितया तुलशी चरित्र सपूर्णम ॥ श्री कुबेरेश्वर नाथ स्वामी सहाइ । लिषा माधौ गिरि विद्यार्थी स्थान मेवडी पाठनार्थ विशभर गिरि विद्यार्थी संवत १९१९ जेष्ठ मासे सोम वासरे ॥

विषय—गोसाईं तुलसीदास जी का जीवन चरित्र ।

संख्या ८८. वी श्री तुलसीदास चरित्र, रचयिता—दासानन्ददास, कागज—देसी, पत्र—८४, आकार—८×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८५, रूप—खण्डित, पद्य। लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी, महापुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ तुलसी चरित्र लिख्यते ॥ चौ० ॥ बरनौं जग वंदन गणनायक। गिराशंकर भुवन विनायक ॥ सिधि दायक दुख दोष नसायक। अच्युत गुन गायक सब लायक ॥ बुधि भवन सुख सदन कृपा निधि। जानत राम नाम महिमा विधि ॥ जग जग सीस बंदि सुख पावत। मुनि दासानन्द दास जस गावत ॥ श्री सिताय नमः

अंत—छप्पै ॥ समाचार लहि जाग कृष्ण को कारण कीन्हो। विदा कियो सो विप्र मोक ही सुहृद प्रबीनो। कह्यो गोसाईं सुमिरि हिय रघुवर को प्यारो, गिरो सो तरु ते तुरत नाथ रघुनाथ उबारो। तब करुना कर विप्र ही पावन करि लियो लाइ हिय। अपनाई दास करी दीप मरि राम रूप दृ दरस दिय ॥ सोरठा ॥ प्रेम पंथ अति दूरि ऊंचो सातो स्वर्ग ते। चली एक मंसूर सूरी सीढ़ी लाइके ॥ दै हरि रस परि पूरि दरस गोसाईं यो कह्यो धन्य धन्य मनसूर नाम सत्य अपनो कियो। करि आदर सनमानि कीन्ह प्रसंसा विविध विधि। बहु प्रकार को ग्यान दै सिष्य तिन करि लिया ॥ इति ॥ ११०१५ ॥

विषय—तुलसीदास जी का जीवन चरित्र और कुछ राम भक्तों के उदाहरण।

संख्या ६० ए. गोपी विरह महात्म, रचयिता—दाताराम या दीना दास (चतुरनगर, इलाहाबाद), कागज—देसी, पत्र—११ आकार—९×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ —२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रामपाल सिंह, ग्राम—दातागंज डाकघर—बरताल, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गोपी विरह महात्म लिख्यते ॥ दो० ॥ अकल अनीह अनीह अज निराकार निरधार। मम गुरु बसत हृदय मम माया गुन गोपार ॥ रघु नंदन पद बंदि के बंदौं पवन कुमार। बंदौं देव गनेस हर अगम निगम श्रुति चार ॥ अगम सिंधु संसार यह महा घोर है धार। बोहित तुलसी नाम चढ़ि होत जात मैं पार ॥ मैं मतिमंद अंध मत कहं लगि कहौं बखान। धारे मई सब जानि हैं। सज्जन संत महान ॥

छंद हरिपद ॥ सब मैं सबते विनय करत हौं सुनौ सकल मन लाई। कछुक हाल मैं आपन बरनन सबहिं चरन सिरनाई ॥ रघुकुल वंश भये जन्म हमारो चतुर नगर है ग्रामा। आइक परगन सिकंदर प्रान के पिता बनाया धामा ॥ पिता हमारे सब विधि साधु बहुत सुकुल जेहि नामा। मैं मतिमंद महा अपराधी लोभ क्रोध बस कामा ॥ फिरौं सदा कपटी कूरन संग जानौं धर्म न दाया। कहं लगि अवगुन कहौं आपनो प्रगट मोहि जग माया ॥ अबने सतगुरु मयउ राम के छाड़ि छाड़ि सब कामा। तबते सब सुख निसिदिन आइके सदा रहत मम धामा ॥ तुलसी कृत यह मानिय रघुराम वेद शास्त्र मत गाये। ताका कछु मत संगति करिके राम नाम मन लावे ॥

अत—कवित्त ॥ जमदूत सुनि पाई जमराज से सुनाई एक अद्भुत कविताई बैजनाथ जू बनाई है । चुप रहे जमराई सोच उर मे बढ़ाई शीश नीचे को नवाई चित्र गुप्त को बुलाई है ॥ नर्क सूनो सब भाई अबौ एकहू न आई सब गोपी विरह गाई बैकुंठ को सिधाई है ॥ चित्र गुप्त मुसकाई भलो लेखनी छुड़ाई बैजनाथ की दोहाई लोक चौदहों में छाई है ॥ दो० । गोपी विरह महातम भाषेउ मति अनुसार । दाताराम विप्रवर रघुपति पद उर धार ॥

विषय—गोपी विरह जिसमें श्री कृष्ण जी का गोपियों को त्याग कुब्जा से प्रीति करने और गोपियों का श्री कृष्ण जी से प्रेम होने आदि का वर्णन है ।

संख्या ६० बी. कवित्त, रचयिता – दात्ताराम उर्फ दीना दास (चतुर नगर), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४८, प्राप्तिस्थान—प० श्रीकृष्ण, ग्राम—महिगल गंज, जिला - सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ दो० ॥ अकल अनीह अपद अज निराकार निरधार अस गुरु बसत हृदय मम माया गुण गोपार ॥ १ ॥ रघुनंदन पद बंदि के बंदौं पवन कुमार । बंदौं शेष गणेश हर अगम निगम श्रुति चार । २ ॥ अगम सिंधु संसार यह महा घोर है धार । बोहित तुलसी चरन चढ़ि होत जात मैं पार ॥ ४ ॥ मैं मति मंद अंध सठ कहँ लगि करौं बखान । थोरे महं सब जानि हैं सज्जन संत महान ॥

अंत—नैनन ते अब जोति गई अरु दांत बिना मुख बोलि न आवै ॥ जोबन के सब ठाठ गयो तन छीन मलीन भो शीष कपावै ॥ केस सफेद भये सिगरे अरु शब्द कही नहिं कान को भावै ॥ श्री राम कहैं अब अंत अई भय मौत नहीं हिय माहिं लिआवै ॥ इति श्री दाताराम शुक्ल कृत कविता समाप्त. ॥ संवत् १९४८ वि०

विषय—उपदेश

संख्या ६० सी मद चरित्र, रचयिता – दात्ताराम उपनाम दीनादास (चतुरनगर, इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४०, प्राप्तिस्थान—ठा० रामपाल सिंह, ग्राम—दात्तगाव, डाकघर—बड़ताल, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मद चरित्र लिख्यते ॥ दो० ॥ सिय रघुवीर चरण रज सुमिरौं आठौं जाम ॥ जाकी कृपा कटाक्ष ते नाश होत रिपुकाम ॥ सोइ रघुवीर कृपा निधि दीनन सदा सहाइ । काम क्रोध मद लोभ सब सुमिरत सकल नसाइ ॥ अब रघुवर पद सुमिरि के सुमिरौं पवन कुमार । शेष गणेश महेश विधि अगम निगम श्रुति पार ॥ श्री रघुवीर प्रताप ते कहब कछुक कलि धर्म । समुझें सज्जन संत जन कटुक वचन कहु नर्म ॥ सोरठा ॥ कलि के भये सुत चारि चहू आमिष मद जुआ ॥ धर्म कर्म सब मारि

करत अकंटक राज जग ॥ दोहा ॥ प्रथम पिनक्कड़ की कथा कहुँ सबहिं समुझाइ । सुरापान त्यागन करो नाहित धर्म नसाइ ॥

अंत—दीना जिनके मुख से निकसत सीताराम । तिनकर सदा गुलाम मैं सेवक आठो याम ॥ होरी ॥ कलियुग केसव फाग राग गावत हैं नारी ॥ टेक ॥ अतर गुलाब सुरा को कीन्हे बोतल की पिचकारी ॥ प्याउन के देखो चले हैं कटोरे तकि तकि सब मुख भारी भसम बेते भर नारी ॥ १ बसन अनुप रंगे रगन में है मरदुम के बारी । कीचक केर माजूम बनायो परसत भरि भरि थारी ॥ चाव है बदन पसारी ॥ २ ॥ आमिष काम बनाव पान मे अमित मसालन डारी । बस्ति समूह कौंग काची भरि बीरा रच्यो सम्हारी । दिये मिदचर अभिचारी ॥ ३ ॥ फाग होत हर गलियन गलियन देखहु नैन उघारी । कीच मच्यो अब आगो भीजित दीनादास भिखारी ॥ मैन से आंसुन डारी ॥ ४ ॥ इति श्री दीनादास कृत मद चरित्र संपूर्ण संवत १९१० वि० लिखा रामनरायन तिवारी चतुरनगर निवासी कातिक सुदि पंचमी ॥ राम राम राम ॥

विषय—आमिष, सुरा, शराब, चंडू आदि के सेवन से हानियों का वर्णन ।

संख्या ६० बी संग्रहीत कविता, रचयिता—रामराम या दीनादास (चतुरनगर, इलाहाबाद), कागज—देसी, पत्र—२९, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप्) ६६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६४८ प्राप्तिस्थान—मुन्शी कालाराम, ग्राम—छकामाली, डाकघर—औरंगाबाद जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ संग्रहीत कविता लिख्यते ॥ भजन नर तन पाय कमाया क्यारे । कस्स दूस छाया तर आया तबहू कछु न पाया क्यारे ॥ गेह देह लखिकै तू भूला माया मैं भरमाया क्यारे । जो आया सो गया अकेला तू कैसे माया क्यारे । ना हरि भजा न साधुन सेवा जीवन व्यर्थ गंवाया क्यारे । गिरधर दास जो मोहन भूला मनुज नाम कहवाया क्यारे ॥ १ ॥ भजन ॥ हरि बिन कोई काम न आवो । रतन जटित कंचन कर खंभा चुनि चुनि महल उठायो । तासे काढ़ि बाहर करि दीन्हों छिनयक रहन न पायो । तिरिया कहे हमहूँ संग चलिहैं मूस मूस बहि जावो । चकत बैर बैठी मुख फेर कै पछी पगन पसायो । ई घर में सूखी नाहिं कायम ऐसी जिंदगी को तुलसी यह संसार को मोर्तिपादिंद भयो ॥ २ ॥

अंत—कजरी ॥ मुख मयंक अमंद चंद पै झलकैं घूंघरवारी रामा ॥ हरि हरि छोटे छूट मानो कारी नगिनियां रे हरी ॥ सोहे नाक नथुनियां लटकैं मोती की लटकनियां रामा । हरि हरि जियरा मारे कमर पतरी लचकनियां रे हरी ॥ मंद मंद मुसकनियां बांकी तिरछी है चितवनियां रामा । हरि हरि चलत चाल जैसे मतंग मतवालिनियां रे हरी ॥ गति गयंद गामिनियां छम छम बाजै पग पैजनियां रामा । हरि कुच नितंब के भार लंक लचकनियां रे हरी ॥ भौंहैं चढ़ी कमनियां डार जादू जग मोहनियां रामा । हरि श्री बद्री नारायन पर सूने पनिया रे हरी ॥ १ ॥ तरुणाई भोर नग्नो महि सारी रतियां । कहरी लरिका छैलवा सबी आंगना । सुहवा में झूमी झूमी कि के उनके अरवा कहरी जलियो ना कोई गरवा आंगना ॥ चितवनी मिरपावो समुझावो फिर जावो कहरी बीती विधि सुहाग रस पांगना ॥ ९ ॥

इति श्री संग्रहीत कविता संपूर्णम् मिति वैसाख सुदी पंचमी संवत १६४८ वि० ।

विषय—कजली, भजन, ठुमरी, रेखता, दोहा, छंद आदि कई कवियों के संग्रह हैं।

संख्या ६१ ए. कमलनेत्र, रचयिता—दत्तदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप्) २७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० मन्नीलाल तिवारी गंगापुत्र, ग्राम—मिश्रिख, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—ॐ नमोनारायण ॥ अथ कमल नेत्र लिख्यते ॥ ॐ कमल नेतर कटे पीतांवर अधर मुरली गिरि धरं। मुकुट कुंडल कर लकुटिया। सांवरो राधावर ॥ फूल जमुना धेनु आगे सकल गोपीयन मन हरं। पीत वसतर गरुड़ वाहन चरन सुपनित सागरं ॥ करत केल कलोल निस दिन कुंज भवन उजागरं ॥ श्री अचर अमर अडोल निश्चल पुरषोत्तम अपरापरं ॥ दीनानाथ दयाल गिरिधर कंस हिरनाकुस हर।

अंत—श्री कृष्ण कलिमल हरन सबको जो भजै हरिचरन को। भगति अपने देह माधो भव सागर के तरन को ॥ जगनाथ जगदीस स्वामी श्री बद्रीनाथ विशंभर। द्वारिका के नाथ श्रीपति केशव प्रणमम्यहं ॥ श्री कृष्ण अष्ट पदी धरत रटै विश्नु लोक सगच्छति। श्रीगुरु रामानंद औतार स्वामी कवि दत्तदास समासम् ॥ इति श्री भगवान कमल नेत्र संपूर्णम्। शुभम् ॥

विषय—इसमें श्री कृष्ण भगवान के कमलनेत्र की अष्टपदी वर्णित है।

संख्या ६१ बी कमलनेत्र भगवान, रचयिता—दत्तदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप्) ३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—वैद्य रामभूषण, ग्राम—कामतापुर, डाकघर—इटौंजा, जिला—लखनऊ (अवध)।

आदि अंत—६१ ए के समान।

संख्या ६१ सी. रामाष्टक, रचयिता—दत्तदास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप्) ३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—वैद्य रामभूषण, ग्राम—कामतापुर, डाकघर—इटौंजा, जिला—लखनऊ (अवध)।

आदि—ॐ श्री रामायनम ॥ ॐ श्री राम राम रघुनंदन राम राम ॥

श्री राम राम भरताग्रज राम राम ॥ श्री राम राम रण कर्कश राम राम ॥ श्री राम राम शरणंभव राम राम ॥ १ श्री राम राम सकलेश्वर राम राम ॥ श्री राम राम मनुजीश्वर राम राम ॥ श्रीराम राम धनुजीश्वर राम राम ॥ श्री राम राम शरणंभव राम राम ॥ २

अंत—श्री राम राम शरणं भव राम राम ॥ ७ ॥ श्री राम राम सुकवि प्रिय राम राम ॥ श्री राम राम सुमुनि प्रय राम राम ॥ श्री राम राम सुज प्रय राम राम ॥ श्री राम राम शरणंभव राम राम ॥ ८ ॥

रामाष्टकमिदं पुण्यप्रातः कालेयय. पठेत मुच्यते सर्व पापेभ्यो विश्नु लोक सगच्छति ॥ ९ ॥ इति श्री रामष्टकं संपूर्ण समासम ॥

संख्या ६९ ए. अजीर्ण मंजरी, रचयिता—दयाराम माथुर (मथुरा) कागज—देसी, पत्र—१८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—प्राचीन कागज, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२१ = १८६४ ई०, लिपिकाल—सं० १९४५ = १८८८, प्राप्तिस्थान—हाकिम रामदयाल, ग्राम—मुबारकपुर, डाकघर—रुद्रपुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री कृष्णायनमः ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ अजीर्ण मंजरी प्रारंभः श्री धन्वंतरि भगवान को ग्रंथ की आदि में नमस्कार करते हैं जिन्होंने अमृत का पूर्ण कलश धरा है जो पीतांबर के धारण करने वाले सब सिद्धि और सुरेन्द्र के चरण कमल से मैत्र मणि की माला को धारण करने वाले हैं, आयुर्वेद विद्या के प्रगट करने वाले तथा स्मर्ण मात्र से ही रोगों को नाश करै है ॥ श्री वृन्दावन बिहारी राधिका रमण को नमस्कार करके दयाराम श्रेष्ठ है प्रयोजन जिसका ऐसी इस अजीर्ण मंजरी की रचना करै है ॥ सर्व रोगों का कारण अजीर्ण रोग कहा गया है क्योंकि जब अन्न का परिपाक यथार्थ नहीं होता तब तक अनेक ज्वरादि दुष्ट रोग इस मनुष्य को संतापित करते हैं इसी हेतु अजीर्ण रोग का पूर्वाचार्यों के संमत निदान को कहते हैं ॥

अंत—शुद्ध सींगिया विष १ भाग पारा १ भाग जायफल २ भाग सोहागा २ भाग पीपल ३ भाग सोंठ ६ भाग कौड़ी की भस्म ६ भाग लौंग ५ भाग इन सब को चूर्ण करै इसे महोदधि वटी कहते हैं यह अग्नि को बढ़ाती है ॥ इति अजीर्ण मंजरी संपूर्ण समाप्त ॥ लिख्यतं गंगाराम त्रिपाठी हरदोई मध्ये संवत १९४५ चैत्र बदी दसमी ॥

विषय—अजीर्ण रोग की उत्पत्ति, भेद लक्षण पाचन होने के दिवस, कुछ चुने हुए उपयोगी चूर्णों के बनाने की तरकीबों आदि का वर्णन ॥

संख्या ६९ बी. नाड़ी प्रकाश, रचयिता—दयाराम माथुर (मथुरा), कागज—देसी पत्र—१६ आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८ परिमाण (अनुष्टुप्)—२११, रूप—प्राचीन कागज, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—हाकिम रामदयाल, ग्राम—मुबारकपुर, डाकघर—रुद्रपुर जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कुंज विहारिणे नमः ग्रंथ के आदि में और अंत में मंगलाचरण क्या करते हैं इसी से नमस्कारात्मक मंगल ग्रंथ कर्ता करता है धन्वंतरि मिश्र धन्वंतरि वैद्यों के राजा और ज्ञान के देने वाले गुरु को नमस्कार करता हूं ॥ और जो नाड़ी प्रकाश आदि ग्रंथ हैं तिनका मत इकट्ठा करके वैद्यों के बोध के हेतु य नाड़ी प्रकाश ग्रंथ दयाराम करके कहा जाता है ॥ नाड़ी के जाने बिगर जो वैद्य दवा करता है सो वैद्य धन और धर्म और जस को नहीं प्राप्त होता बहुत और थोड़े दोष बिगड़ने से पहिले नाड़ी की परीक्षा करै उस नाड़ी की अंत आदि और बखार के मध्य में अर्थात् आदि मध्य अंत में जिस रोग पर चले उसी रोग को जाने ॥

अंत—हे बहुगुणेसने तीस वर्ष से लेकर ५० वर्ष तक नाड़ी ७५ बार चलती है और

५० वर्ष के पीछे अस्सी वर्ष तक ६० वार १ मिंट में कपायमान होती है ये जो पछाडी कहि आये नाड़ी चलने की सख्या इससे कमती चलै तौ सरदी और ज्यादा चलै तौ पित्त की नाडी जाननी ॥ (श्लोक) ऋपि धनंजय नन्द शशांक भूतपरमिते विमु विक्रमवत्सरे इपशितेदशमी वुध वासरे धमनिका समगा तरल पूर्णताम ॥ ऋपि कहिये ७ धनंजय ३ नंद कहिये ९ शशाक भूत कहिये १ अर्थात १९३७ विक्रम सवत में और आश्विन शुक्ला दशमी वुधवार को धमनि प्रकाश ग्रथ पूर्ण हुआ। इति श्री नाड़ी प्रकाश सपूर्णम् शुभम् लिखतं राम नारायण सवत् १९४० वि०

विपय—नाड़ी का ज्ञान विधि पूर्वक विस्तार सहित वर्णन।

संख्या ६२ सी. नाड़ी प्रकाश, रचयिता—दत्तराम माथुर (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—१९, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुप्टुप्)—५५०, रूप—प्राचीन फटी, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४६ = १८८९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवरत्नजी, ग्राम—भज्जू का पुरवा, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नाड़ी प्रकास लिप्यते ॥ मगला चरण मूल ॥ धन्वतरि वैद्य राजनत्वा ज्ञान प्रदं गुरुं नाडी प्रकाश ग्रंथस्य प्रकाश. क्रियते धुना ॥ टीका ॥ ग्रंथ के आदि में और ग्रथ के अत में मंगलाचरण किया करते हैं इसी मे नमस्कारात्मक मगल ग्रंथ कर्ता कर्त्ता है धनंवतरि मिति धन्वतरि वैद्यों के राजा और ज्ञान के देनेवाले गुरू को नमस्कार करिके मैं नाडी प्रकाश ग्रंथ को प्रकाश करता हूं ॥ और जो भाव प्रकाशादि ग्रंथ हैं तिनका मत देखिके वैद्यों के वोध के हेतु नाडी प्रकाश ग्रथ दत्तराम कहते हैं ॥ नाड़ी के जाने विना जो वैद्य दवा करता है सो वैद्य धन और धर्म और यश को नहीं प्राप्त होता ॥ वहुत और थोड़े दोप विगड़ने से पहिले नाड़ी की परीक्षा करें उस नाड़ी की अंत आदि और चकोर से मध्य में अर्थात आदि में मध्य अंत में जिस स्थान पर चले उसी रोग को जाने ॥

अंत—अथ संपिया जारण विधि लिप्यते ॥ अमर वेल लावे उमे हाड़ी में भर सोरा डाल चूल्हे पर चढ़ा नीचे आच जरावै जव अमर वेल गल जाय तव दो ईंट पजांवे की वड़ी वडी ले दोनों में रुपै से जादा गढ़ा खोदे फिर घिस लेय कि जिसमें दोनों ईंटें आपस में मिल जावें फिर विस हडिया को कि जिसमें अमर वेल है एक करछी से अमर वेल ले और दूसरे हाथ में चमिटी से शुद्ध सपिया की डली ले तोले १ की पकड़े रहे फिर जल्दी से उस अमर वेल को ईंट में डालकर सपिया की डली गाड देवे और दूसरी करछी भर कर उसके ऊपर डाल कर जल्दी से ईंट से ईंट को जोड़ कर पकड मिट्टी से कर घाम में सुपावैं फिर गज पुट की आच में फूक देवे तो निर्घूम सपिया मरै और तामें को गलाय उसमें एक रत्ती संपिया की भस्म डालै तो तामा सफेद होय और अनूपान से खाय तौ सेर ५ की भूप लगै और दस स्त्री भोगने की शक्ति होय और ज्वर से आदि ले सव रोग दूर होंय इति सपिया मारण विधि इति नाडी प्रकाश ग्रथ दत्तराम विरचितायां सम्पूर्ण समाप्तम् लिखतं हरिप्रसाद संवत १९४६ वि०

विषय—इस ग्रंथ में नाड़ी की चाल जीवन मरण रोगी परीक्षा आदि का वर्णन है।

संख्या ६७ डी रसराज नवरस दर्पण भाषाटीका, रचयिता—कृपाराम माथुर (कासी), कागज—देशी, पत्र—१४०, आकार ९¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०६, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१२ = १८५५ लिपिकाल—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० श्यामाचरण ज्योतिषी द्वारा आदित्यप्रसाद पांडे, ग्राम—अँजिहा डाकघर—हलिया, जिला—मिर्जापुर।

आदि—श्री गणपते नमः ॥ श्री निकुंज विहारिणे नमः ॥ अथ श्री नवरस दर्पण लिख्यते ॥

श्री राधिका पति पदाम्बुज रेणुरम्यं ॥ नत्वा गुरु स्वजनकं जननी तथैव ॥ श्री रस राज नवकस्य करोमि टीकां ॥ भाषार्थबोधकमिदं रस प्रमाणमस्या ॥

लम्बोदरं विघ्न विनाशनं च नत्वा सदा शैलसुतं गजास्यम् । यस्य प्रसादेन सुरा सम। स्वाधिकारेषु स्थिता भवन्ति सदैव ॥

अर्थ—जिसकी प्रसन्नता से सकल देवताओं के गण निज निज अधिकार पर सदैव स्थित रहते हैं ऐसे लम्बोदर विघ्न नाशक पार्वती पुत्र गजानन को नमस्कार कर (अब इस ग्रंथ को प्रारंभ करते हैं) ॥ १ ॥

अंत—इति श्री रसराज नवरस दर्पण भाषा टीका समाप्तं शुभं ॥ मिती श्रावण शुक्ल १२ सं० १९४८ विक्रमीय

विशेष—नग[९]रस[६] वसु[८] चन्द्र[१] वत्सरे विक्रमार्के नृपपति विसवत्सरे फाल्गुणे शुक्ल पक्षे कृत सिद्ध परिपूर्णे, पूर्णमा सुरार्चनु वासरे हितवर्गाय श्री रसराज होवां टिप्पणी लिखाद्य १२५॥ सीतारामस्य पुत्रेण कृपा देव्या सुतेन च परमसुखेन शिष्याय प्रथितं नवरस कम् ॥ १२६ ॥

ससि[१] युग[९] नग[१] चन्द्र[१] वैक्रमे ज्येष्ठ शुक्ले मद तिथि कवि वारे रसराज रहस्य टीका। सकल जन हितार्थं देश भाषा निबद्धा मधु रिपु शुभ पूर्ण्याद्रामसेवनूनम् ॥

संख्या ६८ दयाबाई की बानी, रचयिता—दयाबाई (दहरा अलवर), कागज—आधुनिक, पत्र—१९, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप्) २१०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा मणीराम दास, ग्राम—भरगांव, डाकघर—इटौंजा जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दयाबाई की बानी लिख्यते ॥ दोहा बंदो श्री सुकदेव जी सब विधि करो सहाय। हरो सकल जग आपदा प्रेम सुधा रस प्याय ॥ जै जै परमानंद प्रभु परम रूप अभिराम। अंतरजामी कृपानिधि दया करत परनाम ॥ बहा रूप सागर सुधा गहिरो अति गंभीर। लाभत लहर सदा उठै कहीं धरत मन धीर ॥

अंत—पीया गिरो समुद्र में डूबन लगो शरीर। किरपा करि दरसन दियो मेटी सब ही पीर ॥ सुगपन चौंकी मनमगी सब सुर ध्योत सुभाय हाते उठे कबीर केशवदासोदई उराय ॥ भेटी ब्रज रैदास कूं कीनो मुजा पसार ॥ हरि टीका दीनी नहीं अजरज बड़ा अपार ॥ नामी

मेहता हेतप्रभु माढ़ी आय दुकान । स्यामल सेठ कहाद्दया दीन चतु भगवान ॥ इति दयाबाई के पद सपूर्ण समाप्ताः लिखा शिव लाल वाजपेई बरेली मध्दे पौप वदी सप्तमी संवत १९२७ वि० ॥ जै राम राम राम राम राम

संख्या ६४. दयाविलास, रचयिता—दयाराम (इलाहाबाद), कागज—साधारण, पत्र—९१, आकार—$६\frac{3}{4} \times ५\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७२०, खडित, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७९ = १७२२ ई०, प्राप्ति-स्थान-प० रामदुलारे वैद्य, ग्राम—सरावाँ, डाकवर—हमीदपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ दया विलास लिख्यते ॥

दोहा ॥ राधापति पद सोम्य धरि, सीता पति पद दीठि । जिमि काली ऋपि धरणिको छलि वावन वलि पीठि ॥१॥ श्री पति पद उरमें वसो भृगुपति इमि त्रिपुरारि । मधु मर्दन ध्रुव अटल पद मगल मुदित मुरारि ॥ २ ॥ अष्ट सिद्धि पद गुण सहित, रमा मुदित विधि नाथ । शेप वेद शिव विदित जस, प्रणत कज पद माथ ॥ ३ ॥ गण नायक वाणी सदा, दियो देव मति सार । रचौ सुभापा सिन्धु मम, रतन जतन उपचार ॥ ४ ॥ सिद्ध करण वल चरण युग, रह्यौ सुपद लपटाय । रामदूत अनुकूल ते, जल निधि भुजा तराय ॥ ५ ॥ वैद्य के अज भनि दक्ष लखि, भानु तात फुनि इन्द्र । श्रोत्रादिक ऋपि अग्नि (वेस) को पृथक तत्र वहु वृंद ॥ ६ ॥

अत—पष्ठ—१८१

अथ गंधकस्य सोभन

हरि गीतिका छंद

छीर हाँदी माहिं धरि मुख वाँधि पट छिति गाडिये । घृत पलाली मान गधक विछाइ मुख पर छाँडिये ॥ झरत गधक आँच कि हँत वासि समर आखि हो । गुण हीत चचल राज शम गम त्रिपुट गदहर भाखि हो ॥

सुगमा-गंधक पाल ४ घृत पल २ किंवा रेंड़ी का तेल पल १ कूटि कै गधक मो सानै दूध के वासन के मुह मे मेही कपड़ी वाँधे तिस कपडे के ऊपर गधक विछाइ देइ गधक सो ऊचै द्वै अगुरी भै तीन तवाराखै तावा के ऊपर आँच के तेज सों गधक टेघरिकै गिरै ॥

विपय—वैद्यक ।

विशेप—ग्रथकार परिचय.—

नदिय व्याधि परसोत जस लक्षराम कुल दीप । दया विलास प्रकास तव इन्दु-वन्दनी सीप ॥

कविवास वर्णन.—हरिशकर छद

व वं व व वहत वारिधन अरुन सकल निजु भवन रटत निज भवनीगम समेत झं झं झ झंरसोत गतियोत अछे वट पल धुअसेत ॥ तं तं त तीर्थ राजत नारि घट कूल इन्द्र फणि गणि भणि जेत । फं फ फं फल चढ़त कुसुम दल धूप दीप छिम विधि पद लेत । तं तं तं

तीर्थराज तजि प्राग प्राग सत गुण पद चारी । ई द ई दया वाम कहैँ संभु गुण मावी अनुधारी ॥

संख्या ६५ ए. अष्टयाम, रचयिता—देवदत्त, कागज—साधारण, पत्र—१४, आकार—११३/४ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८०, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामाधीन मिश्र, ग्राम—नवाबाद, डाकघर—बाबूपुर, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ देव कृत अष्ट ग्राम लिप्यते ॥

कवित्त ॥ सराहे सुरासुर सिद्धि समाज लिये छवि लाज मरैं रतिमार । महासुख मंगल संग लसी बिलसी भव भार निवारन हार ॥ विराजे त्रिलोक को नाईं के लोचन सुदेव मनोहर रूप अपार । सदा सुखही वृषभानु सुता दिन दूलह श्री व्रज राज कुमार ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ दम्पति जीकी देव कवि, बरनत विविध विलास । आठ जाम चौंसठि घरी पूरण प्रेम प्रकास ॥ २ ॥

अंत—दो०—अव नपदेत न सुख तरुन, होत अधम रसलीन । कहु क्रोध कहु ईरषा, कहू अधिक आधीन ॥ १५ ॥ यथा वा चकई को भयी चित चैत चितौति चहूँ दिसि चाय सो नाची । ह्वै गई छीन कपाकर की छवि, जामिनि जोन्ह जनी जम जाची ॥ बोलत बैरी विहंगम देव सु संजोगिन के घर सम्पति साँची । लोहू पियो सु वियोगिन को सुलियो मुख लाल पिसाचिन प्राची ॥ १६ ॥ दोहा ॥ आठ पहर चौंसठि घरी, बरनि करे कवि देव । जागत वै अन भोग वै, करे भाग के सेव ॥ १७ ॥

इति श्री देवदत्त कवि विरचिते अष्ट जाम सकल दिन राति दम्पति चेष्टा वर्णन ॥ अष्टजाम समाप्त शुभमस्तु ॥ कुआर कृष्ण १० बुध सन् १२६१० ॥

प्यारी पिया पलँगी पर सूतें मनोज की बात कहा पै हुई हैं । प्यारे के हाथ लगी छतिया तहँ प्यारी कही कर जोरे दई हैं ॥ जाम सुजान सु काढ़ कहीं अब जागत ही मतिराम हु हैं हैं । पाय परे सुख बोलत नाहिन ताते कौ महराज हु हैं हैं ॥१॥ श्री रामाय नमोनमः ॥ शिवायनमः ॥

संख्या ६५ बी. देवमाया प्रपञ्च नाटक, रचयिता—देवकवि (इटावा), कागज—सफेद, पत्र—१३३, आकार—७३/४ × ७३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८००, रूप—नवीन, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९८२ = १९२५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० माताडीन द्विवेदी ग्राम—कुसुमरा, जिला—मैनपुरी ।

आदि—सिद्धि श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ कंचन रचित ओर कटिक कपाट मुक्त सीतल सघन देव सुम बगमी विकासु । अंतर मुका जाल विमल चमकभर गहीर छवि हीरनि खचित तट व्यास पासु ॥ ताके मधि वेदिका विराजै मणि मंडलीकी ताहूमें रतन गृह राजत महा प्रकासु । सीतर कुसुम सेज पौढ़े परिमल मिलि सीम्यों लोक संपतिमैं दंपति करै विलासु ॥ १ तासंदिरके द्वारकी मढ़ी माहवी माल । चतुर राइ आइकदि मिलि गावति बानी जाल ॥ चित हारि मोहनी चतुर सुबानि । हँसि जगे बैठे

ततकारी ॥ पूजत सुर मुनि जनेस। उलहत सुख सिद्धि कहत जय जय जै गणेश ॥ ५ एक रदन दुरद वदन। लवोदर दुरित कदन॥ सुदर वर गवरि नदन। सो भा सुभ सुद्ध सदन ॥

अत—इति श्री देव माया प्रपच वचके शुद्ध ज्ञानानंद मये नाइके षष्ठो अंकः समाप्तः लिखित दुवे छत्र पति सवत् १८२६ फाल्गुण कृष्ण २ सोम वासरे ॥ तदनंतरं लिपितं दुवे मातादीन देव कवि वशात्मज स्थान कुसमरा जिला मैन पुरी भाद्रपद शुक्ल पक्षे प्रति पदायां बृहस्पति सवत् १९८२ इति ॥ छप्पय—दुवे विहारी लाल भये निज कुल महं दीपक। तिनके भे कवि देव कविन में अनुपम रोचक ॥ पुरुषोत्तमके छत्र पती वावा कृत लेखक। भये खुशाली चंद पुत्र वुधि सेनहु जीतक ॥ तिनके राजा राम सुत पितु हमरे मति हमरे मति मान। तासुत माता दीन यह दास रावरो जान ॥ तिहिकर ये केशव राम सुत विप्र वंशका दास। दया दृष्टि की होइ अव पूरन होवै आस ॥ श्री ॥ श्री ॥

संख्या ९५ सी. जाति विलास, रचयिता—देवकवि, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाशसिंह जी मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ जाति विलास लिप्यते ॥ सवैया ॥ पायन नूपुर मंजु वजै कटि किंकिनि की धुनि की मधुराई। सांवरे अंग लसै पट पीत हिये हुलसी वनमाल सुहाई ॥ माये किरीट वड़े दृग चंचल मद हंसी मुप चंद जुन्हाई। जै जग मदिर दीपक सुंदर श्री व्रज दूलह देव सहाई ॥ दोहा युक्ति सराही मुक्ति हित मुक्ति को धाम। युक्ति मुक्ति अरु भुक्ति को मूल सो कहियत काम ॥ विना काम ॥ विना काम पूरन भये लगै परम पद छुद्र। साने सिव्धा ससि मुपी पूरे काम समुद्र ॥ ताते त्रिभुवन सुर असुर नर वसु कीट पतंग। राक्षस यक्ष पिशाच अहि सुपी सवै तिय संग ॥ अथ कामिनी लक्षन दोहा ॥ कोटि कोटि विधि कामनी तिनके कोटिक भेव। तिनमें माया मानुपी वरनत है कवि देव ॥ सो नारी वहु नागरी पुर वासित ग्रामीन वन्य सन्य अरु पथिक तिय पट विधि कहत प्रवीन ॥ अथ नारी भेद लक्षन। देवल राउर राजपुर नागरि तीनि निवास। ताके लक्षभ भेद सव वरनत जाति विलास ॥

अत—केरव वधू यथा ॥ चपा के वरन तन चंदन वसायो वन चंद से वसन वसे चंदन के वारिहौ पग मृग मीन जल थल के अधीन होत गुजरत भौर पुज कुंजन विसारि है ॥ कौन करै सेव कहि देव ताहि देपत ही मोहि मन देवता करति मनुहारि है ॥ जोवन की जोतिन सो मोतिन के रली हार को किली कुरंग नैनी नारि सुकुमारि है। इति ॥

विषय—विभिन्न जाति की स्त्रियों का वर्णन।

संख्या ९५ डी काव्य रसायन, रचयिता—कवि देवदत्त, कागज—सिरामपुरी, पत्र—९८, आकार—१०½ × ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री भज वहादुर लाल, प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ पोथी पिंगल लिख्यते । छंद कवित्त सुंदर बदन मनमथ मथन विनोदर । गजानन गिरिजा सुवन विहरत गोपति गोद १ ॥ देव चरित गुरु देव की महिमा कहि जग मों । अथ अजपर सीखेंहतजु विगत । सिकासी कौन । २ ॥ श्री गुरु देव कृपाल की कृपा सुबुद्धि समीप । तिमिर मिटे प्रगटे हृदयमंदिर अनुभव दीप ॥ ३ ॥ अंध जीव तनु कर्मवस पस्यो जाल संसार । रहतु मध्य भगवंत जसु नव्य काव्य सुख सार ॥ ४ ॥ रहत न घरघर धाम धन तरवर सरवर कूप । जस सरीर जगमे अमल नव्य काव्य रस रूप ॥ ५ ॥ धन्य जीव तिहि धर्म मधुरस मै सुखसधारी ॥ बसत जहूं जग वंद गति अलंकार गंभी ॥ ६ ॥ हरि जस रस की रसिकता सकल रसायनि सार । जहाँ न कर सुकवर्मता यह अनर्थ संसार ॥ ७ ॥

अंत—मधुभार यथा ॥ जब चंद स्वार सुरासिर विधि वेद बंध स्रुति छंद छंप मै सर्व सार इति भूमि भार बरनिक अथ गोप भेप ॥ ४२ ॥ वृत विषम सम अर्द्ध सम भांति भांति बहुगान प्राकृत संस्कृत भाषा सुंद रच ॥ ४३ ॥ तति भाषो विमयत सुण्यत छंद के बर्णो संक्षेप करि जगत प्रसिद्धि अनंद ॥ ४४ ॥ मेद मरकटी पताका मध्य औरी वृत्त कौतुक हित प्रस्तारहु विस्तारन है ग्रन्थ ॥ ४५ ॥ मानुष भाषा मुख्य रस भाव भावना छंद । अलंकार पैंचा गये कहत सुमत सानंद ॥ ४६ ॥ सत्य रसायन कवित को श्री राधा हरिसेव । जहां रसालंकार शुभ सच्यो रच्यो कवि देव ॥ ४७ ॥ भाषा प्राकृत संस्कृत देखि महाकवि पंथ । इन इच कवि रस रच्यो काव्य रसायन ग्रंथ ॥ ४८ ॥ श्री राधे वृज इव अब सुंदर नवकिशोर । दुरित हरौं चित के चिंति मैल सदै रसबोर । ४९ । इति श्री काव्य रसायने देवदत्त कवि विरचिते गद्य पद्य वृत्त जाति निरूपण एकादशो प्रकाशः ॥ संवत १९११ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे नौम्या तिथौ मंगर वासरे लिख्यते श्री मुंसी अवध विहारी लाल मास्टर महमूदाबाद स्कूल जिले सीतापुर सूबे अवध निवासी श्री अवधपुरी भारतखंडे । ग्राम दिलौली जिले सुल्तानपुर ब्रह्मचारी सर्व मतचारी श्री नारायन दास द्विज दासः मूलाला ॥ शुभमस्तु ॥

विषय—काव्य निरूपण ।

संख्या ६५ ई मतिराम, रचयिता—दवकवि कागज—साधारण पत्र—४, आकार—११½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सुदर्शनसिंह रईस तालुकेदार ग्राम—दुवारहार, डाकघर—लक्ष्मीकांतगंज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रत्यंग वर्णन ॥ कवित्त—बोरे मानो सिंगार सिंधु से कछु छवि देत अपार है । है सरदार कुहू के कुमार के, मार के अंग महा सुकुमार है ॥ कैधौं मनमथ सिर फूल बनाते कि कस गुहे मखतूल के तार है । सुंदरता के सरोवर मैं शुभ सोहत प्यारी सेवार से बार है ॥ १ ॥ लकार—अंक सी जामे विराजि रही येह अंक परयो मृगधामि को विन्दु है ॥ बैनी के व्याज सुधा रस काज को आइ रही लिग जाके फनिन्दु है ॥ प्यारे के नयन चकोरन को हित सांति त्रिगंगुल ही को अरिन्दु है । नीकी लगी दूप भाल अली को लिलार नहीं यह आदि की इन्दु है ॥ २ ॥

अंत—॥ मैंहदी वर्णन ॥ नेरे ह्वै नीके कै नेकु निहारि भयो अँपियान को पूरन काम है। देपत ही वनि आवत है वरन्यो नहिं जात कछू छवि धाम है ॥ पैवे को रंग मनो मेहँदी कियो प्यारे के हाथ नहिं विसराम है। राते सरोजनि ऊपर आनि किधौं मोर के सूरज घाम है ॥ इति श्री नपशिप समाप्तम् शुभ मस्तु ॥

विपय—(१) पृ० १ से पृ० ४ तक—प्रत्यङ्ग वर्णन, ललाट वर्णन, भ्रू वर्णन, नासा वर्णन, श्रवण वर्णन, सिन्दूर विन्दु, नेत्र, अधर दल, चिवुक विन्दु, कपोल, कपोल-गाड, वैन, दन्त, एवम् समग्र मुख वर्णन।

(२) पृ० ४ से पृ० ८ तक—ग्रीवा, वाहु, हस्तौ, कर अङ्गुली, कुच, रोमावली, त्रिवली, नाभि, कटि, नितम्भ, ऊरू, पिडुरी, गुल्फ, चरण, चरण अङ्गुली, चरण, दीप्ति, सर्वस्व, एवं मैंहदी वर्णन।

संख्या ६५ एफ. प्रेम चद्रिका, रचयिता—देव कवि, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—१२ × ६ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रेम चंद्रिका लिप्यते ॥ सवैया ॥ आपिन आपि लगाये रहैं सुनिये धुनि कानन की सुपकारी। देव रही हिय में घर कै न रुकै निसुरै ॥ विसरै न विसारी ॥ फूल में वास ज्यों मूल सुवासु को है फल फूलि रही फुलवारी ॥ प्यारी उजियारी हिये भरि पूरि सु दूरिन जीवन मूरि हमारी ॥ १ ॥

अंत—कवित्त—देव दीन वधु दया सिंधु सिंधुरादि के सहाइ है अबंधु की मदंधता गुझाई है ॥ जो हिरण्यकस्यप विदारयो नरसिंह ह्वै ऊवरयो प्रहलाद सेना सत्रु की जुझाई है। रावन को राम है पठायो दिव्य धाम ह्वै के वावन पताल गति वलि को दिपाई है देव वसुदेव सुत ह्वै कै जिन कस मारयो सोई ब्रज दूलह निस्म वासर सहाई है। इति श्री महाराज कुमार श्री कुवर उदोत सिंह आनद हेतु देव दर्शिते प्रेम चद्रिकायां सौहार्द वात्सल्य भक्ति-भाव प्रेम कार्पन्य वरनन चतुर्थ प्रकाश समाप्त. ॥

विपय—साधारण प्रेम, पूर्वानुराग प्रेम, स्वकीया, परकीया, प्रेम विधि, सानुराग रस वर्णन, वात्सल्य भक्ति भाव प्रेम, आदि वर्णन।

संख्या ६६. राग संग्रह, रचयिता—देवकीनदन, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—वावा छब्बूदास, ग्राम—वादशाह नगर, डाकघर—लख-नऊ, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राग संग्रह लिप्यते ॥ प्रारंभ. भजन ॥ नमस्कार तोहि जगदा धारा। तू निष्पक्ष न्याय कर्तारा ॥ अतरा ॥ विन सहाय ब्रह्मांड अनूपम। रचो आप निज शक्ति द्वारा ॥ विभु व्यापक ह्वै सवहिं निहारत, रापत सवहिं नियम अनु-

धारं ॥ १ ॥ जिन कर मग धारे प्रभलोक । जिनहिं प्रभु निरपत जग सारा प्रणत पिय सब की सुनै विनती । सर्व शक्ति मन तू निराधारा ॥ २ ॥ मगट प्रताप प्रकट सबही में, जाको जोति जिन नयन निहारा ॥ जल थल भूमि अकास चहूँ दिशि तू है प्रकाशक रवि ससि तारा ॥ ३ ॥ प्रकट नियम तेरो सब सिर धरि घूमत लोक नियम अनुसारा । तू है नित्य शुद्ध शुभ बुद्ध । पावन अघ हरन सुख सारा ॥ ४ ॥ निर्विकार निर्लेप निरुपम व्याप धारी सांचो रखवारा । भनि भनि प्रभु बेनी के स्वामी नमस्कार तुम्हें बारबारा ॥ ५ ॥

अंत—दादरा ॥ प्यारे जिन मोरी बांह गहौ ॥ मारग में सब लोग देखत हैं दूरी क्यों न रहौ । मन में तुमरे कौन बात है सोई क्यों न कहौ ॥ कहि हौं जाय आज अनुमति सों हमरी नाव रोकत हौ ॥ इतने पै नहिं मानत आनंद घन छरिका हो तुम हो ॥ इति श्री राग संग्रह बेनी कवि कृत सपूर्ण संवत् १९३७ वि०

विषय—नाना प्रकार के रागों का वर्णन ॥

संख्या ९७ जानकी बिंदु, रचयिता—देवस्वामी (अयोध्या), कागज—साधारण, पत्र २१, आकार—८¾ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप)—१०००, खंडित । रूप—नवीन लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर हरिबक्स सिंह, ग्राम—कुम्हरिया, डाकघर—लालगंज अजहारीगंज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्रुति को मथित सार सो मिथिला प्रगट भई तेहि बसुधन में । सोई मैथिली झलकि रही है योगि जनन के ध्यानन में ॥ २ ॥ जीवनमुक्त विदेह दशा से जे विहरत प्यार वन में । तिनकी परम तत्व बेदेही जिन भूल्यु पद पादन में ॥ ३ ॥ जो जानुकी सोई वैदेही सोई मैथली जानन में । एक अनेक भाँति से गाई देव मुनी बसि कोकन में ॥ ४ ॥ १ ॥

अंत—विद्या मंत्र प्रकाशक, जानुकी बिन्दु मनोहर है । विद्या मंत्र सोई भो मिथिला नामें सोहर है ॥ सिद्धि पीठि यह याको सेवत नहिं कि पुनोहर है ॥ १ ॥ श्री जानुकी सोई तो अमकप वस्तु परोवर है । सखि मानी रामचन्द्र जू इनको सोहर है ॥ २ ॥ पद प्रतिमा तो रही सनातन तहँ भ्रम जोहर है । सीता राम मिलन हीं इनको पुख गयो जोहर है ॥ ३ ॥ मिथिला जा साधारन जानी तो मर छोहर है । देव कई मिथिला मुनिमन की पैमी मोहर है ॥ ४ ॥ श्री जानुकी बिन्दु सम्पूर्ण शुभ मस्तु ॥ भाष्कनि कृष्ण रवी शर्मा ॥

विषय—श्री सीताजी की जन्म विवाह आदि कथा, कवि का दैन्य, सीताराम की एकता ।

संख्या ९८. प्रेमरत्नाकर, रचयिता—रवीदास, कागज—साधारण, पत्र—१४, आकार—११½ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप्) १००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७६ = १६८६, लिपिकाल—सं० १८१५ = १७५८ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला गयाधर प्रसाद, ग्राम—बूढ़ाडीह, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—वर्णन ॥ दोहा ॥ सोम बंस विख्यात मति । कियो जनमु गोपाल । ताही को अवतार फिरि, श्री कलि में गोपाल ॥ ४ ॥ ताके पुत्र प्रसिद्धि मति, नृपति हरिक्ष

दास । अरि अँधेरु जननेटि कैं । रवि लौं कियो प्रकास ॥ ५ ॥ सभुनि कौं सिर सारनौं । मित्रनि कौं सुप कंद । तिनके घर अवतार लिय । × विनै मुकुंद ॥ ६ ॥ तिनके घर सुत अवतारे । छत्रु धर्म को रूप । जुया जगत मैं जग परयो । जग्यो जगमनि भूप ॥ ७ ॥ लियो जंगमनि देवके । छत्रपाल अवतार । मोहतु जाहि सुमेर सौं । सोमवंस को मारु ॥ ८ ॥ × × × । तिनके घर में रीझि के लियो धर्म अवतारु ॥ ९ ॥

अंत—मिलैं तव मीत प्यारे कैसे तव होत न्यारे । कापै जांइ टारे वहा आनि वीच जौ परैं । वेतौ हैं अनीह टहाँ इहाँ और कौन । दोऊ एक है रहैं तिनको न मो करैं ॥ जैसे जद रूपनि कौं पहिले मिलावै । नाहिं दई जौ मिलावै वहे टई न्यारे सो करैं मिलै जो हां सुधि है सुधि है तो मिलि चोई नाहिं जौ हाँ सुधि नाहिं तौ हा न्यारे न्यारे को करैं ॥ × × × जुग जुग कीरति वढाइवे को राजन की सभा में पढावे को आछौ गुग गायो है । प्रेमिन को प्यारौ है कुप्यारौ है न काहू ही कौं जगत मजन सुनौं मवकौं सुहायो है ॥ सूरज के वंम राजा सगर सिगरे निमत्य जुग माहू सोमवम के सके सपूत भैया । रतन जूनें प्रेम रतना कर वनायो है ॥ ५६ ॥ ये ही प्रेम मानी तेरी नानी अति आदर सौं प्रभुजू के ऐ गुना नवाद कहिवो करौ । पाइ तौ चल्त रहौ प्रभुजू के मदिर कौं सुदर करनि जाइ पाइ गहिवो करौ ॥ सीस परनाम करौ वरही जगदो सुरकौं नैन रूप देपि कैं सनेह कहियौं करौ । येही प्रेम धर्म पाल जू के रतन पालजू को मदन गुपाल जू कृपाल रहिवो करौ । इति श्री भैया रतन पालजू विरचिते प्रेमरतना करे पंचमस्त रंग ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ यह वानी अद्‌भुत लपौ प्रेम प्रीति सुप मोन । जावट प्रेम न सचरैं तिनकौ जीवन कौन ॥ १ ॥ संवत् १८५५ मासोत्तमेमासे शुक्ल पक्षे चतुर्थी ४ भृगु वासरे ॥

विपय—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—पृथम तरंग । नृप (आश्रय दाता) वंश वर्णन—नमूने के आदि भाग से आगे;

राजा धर्म पाल का वर्णन—गोत को गुवालु तुहीं दूसरो गुपाल तुही वैरि को कालु है । धर्म धनि रापाल तुही तो है वरापाल तुही आदि नरपाल तुही अरि उर साल है ॥ पल घर वात तुही साहिन की ढाल तुही छत्र पालावाल तुही न औं दिग पाल है । कृष्ण कुल लाल तुही विनै जगपाल तुहीं देवीदास । अैसो महाराजधर्म पाल है ॥ भैया

रतन पालजू वर्णन—विवि करि कारीगर नें सँवारयो सव गुननि को भारो मोल तोलकरि भारो है । हिये धरि राखि वेकौं लोचैं मृग लोचनी, नृपति राखें सीस ही पर सब कौं प्यारो है ॥ जाचक जौहरीन की परम तुजी है यह रनधन परप्यो है सवको सहारौ है । धर्म पाल सागर तें उपज्यो रतनु सपूत ताको जग माँझ भयो जस को उजास्यो है ॥= रतन पाल जू से दान इत्यादि का कथन । कवि के विप्र होने का कथन ॥ "देवी कौं तौ इन कीनी द्विज जानि आपनो सुभ गति मुकति दीनी दोऊ रतने सने" ।

राजधानी वर्णन—रजधानी जदुवंश की नगर करौरी राजु । जहां पंडित अरु कवि न कौ राजतु वडौ समाजु ॥ सितलाई जदुवंस की जा नगरी के माहिं । तुरकानी को तेजु तहाँ नेकहु व्यापत नाहिं ॥ यहो न कलिजुग व्यापि है । वापै जिय धरि हेतु । कीनौं मदन

गुपाल जू अपनी तहां निकेतु ॥ सब करौली देखिये इन्द्र पुरी के रूप । तहँ भैया रतनेस को सेवत बड़े बड़े भूप ॥

ग्रंथ निर्माण कारण—तहँ आयो 'देवी सुकवि' देत असीस उदार । रतन पाल भैया कह्यो हासों प्यार अपार ॥ एक दिना मेरें कह्यो साहिब सहित सनेहु । इनको प्रान प्रेम को 'रतनाकर' करि देहु ॥

ग्रंथ निर्माण काल—सत्रहसै ग्यारह चालीस निरधारि + असनि सुदि द्वादस कियो ग्रंथ विचारि विचारि ॥

(२) पृ० १० से पृ० १२ तक—द्वितीय तरंग ॥ प्रेम निरूपण । प्रेम का स्वरूप । प्रेम का रत्नाकर वर्णन । प्रेमसमुद्र के सरविता । प्रेम के पात्र । साधुओं का ईश्वर प्रति प्रेम वर्णन । प्रेमका मूल्य । सती का प्रेम पति से । सूर का प्रेम वीररस से । चातक का प्रेम स्वाति से ।

(३) पृ० २१ से पृ० १७ तक—तृतीय तरंग । चकोर का प्रेम चन्द्रमासे । मीन का प्रेम जल से । भौंरे का प्रेम वासना से । हंस का प्रम मानसरोवर से । मर्कट का प्रेम मुट्ठी से । मकड़ी का प्रेम अपने बच्चों पर । हिरन का प्रेम नाद से ।

(४) पृ० १७ से पृ० २९ तक—चतुर्थ तरंग । सुआ का प्रेम नलनी रहौंचा से । दादुर का प्रेम घन से । समुद्र का प्रेम बड़वाग्नि से । पपीहा का प्रेम स्वाति बूंद से । पय पानी का प्रेम । पय पानी का प्रेम । परेवा का प्रेम परेई से । जल तथा कमल का प्रेम ।

(५) पृ० ३२ से पृ०—तक—पंचम तरंग । गंध तथा पवन का प्रेम । गाय तथा वत्स का प्रेम । पतंग तथा दीपक का प्रेम । गोपी तथा कृष्ण इत्यादि प्रेमियों का प्रमाण देकर प्रेम का महत्व दिखाना । आशीर्वाद । ग्रंथ समाप्ति ।

संख्या ११. पुकार पचीसी, रचयिता—देवीदास, कागज—देसी, पत्र—७, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१, रूप—नवीन, लिपि—नागरी ।

आदि—अथ पुकार पचीसीलिख्यते ॥ छंद तैईसा ॥ श्री ब्रिजराज गरीब निवाज सुधारन काज सदा सुखदाई ॥ दीन दयाल बड़े प्रतिपाल दया गुण लाल सदा सरनाई ॥ दुरगति टारन पाप निवारन ही मधि तारन की अधिकाई ॥ बेरहि बेर पुकारत हौ जनकी बिनती सुनिये ब्रिजराई ॥ १ ॥ जन्म जरा मरनौ तिरदोष करो इन को प्रभु काक जताई ॥ दास विचारन की तबनाप सुन्यो इन वेद महासुधराई ॥ सो तिरदोष निवारन की तुम्हरे पगु सेवनु हौं चितलाई ॥ बेरहि बेर पुकारत ही जनकी बिनती सुनिये ब्रिजराई ॥ २ ॥ सो इक दो मन की दुख होइबो हारि रही मनमें समझाई ॥ यो चिरकाल कुहाल भयो अब सौं कहुं अंत परयो न दिखाई ॥ मो पर या जगमांहि कलेस परे दुख घोर सह्यो नहिं जाई ॥ बेरहि बेर ॥ ३ ॥

अंत—गुइन की रस रंगति में हम को कछु जानि परी न बिकाई ॥ सेवक साहिब की दुविधाव रहै प्रभु जू करिये सुमताई ॥ फेरि भनै सकरौं अरि की बसु जाहिर जानि परै जगताई ॥ बेरहि बेर० ॥ २६ ॥ या बिनती प्रभु के सरना गत को नर चित्त लगाइ करैगे ॥

जे जग में उपराज करें अघ। एक सभै भरमैं सुहरैंगे ॥ जे गति नीच निवारि सदा अवतार सुधी सुरलोक धरैंगे ॥ देवीय दास कहैं कृप मों पुनि जे भवसागर पार तरैंगे ॥२७॥ दोहा ॥ प्रभु तुम दीनानाथ हो मैं अनाथ दुःख कंद। सुनि सेवक की वीनती हरौ जगत दुःख फद ॥ इति श्री पुकार पचीसी सपूर्ण ॥ शुभम् शुभम्

विषय—जिनदेव की प्रार्थना के २५ छंद।

संख्या १००. लीला, रचयिता—देवीदास सत्नामी (देवीदास का पुरवा, बाराबंकी), कागज—सफेद मोटा, पत्र—४०, आकार—१३ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९८३ = १९२६ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी गुरुदीन कायस्थ, ग्राम—पूरेरानी, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली (अवध)।

आदि—साधो निर्गुन उपजा ज्ञान कहाँ गुन पाइए। निर्गुन शब्द अधार शुन्य दृढ आसन मारा। जहो नदिशा दुवार नाम दीपक तहँ वारा ॥ निर्वानी सो ज्ञान भा मनयहु मध्य भुलान। दै उपदेश कियो वश अपने तेहि का और बयान ॥ गैवी सुन्य समान पुरुष वह इच्छा चारी। को जानै को आहिं कहाँ ते श्रृष्टि सँवारी ॥ तीन लोक विस्तार भा अंश दीन छिटकाय। मरै न जींवै गैव पुरुष वह, नहि आवै नहि जाय ॥

अंत—मैं पापी अज्ञान जानि कै मन विसरावा। इत उत कर्म कमात दुःख मैं बहुतै पावा ॥ निरजन हार विसारि कै, कुशल कहाँ कब होय। चारिहु युगप परिसिद्ध देखिए नरक सो रह्यो समोय ॥ नरक निवारन सदा, सदा वे जनहित कारी। जब वे दाया करैं, तबै मैं कहौं विचारी ॥ और न मोहिं अधार कछु रहौं नाम की आस। देविदास के प्रभु जग जीवन, रहौं चरन के पास ॥ समाप्त

विषय—भक्ति, ज्ञान और वैराग्य आदि का वर्णन।

संख्या १०१. कौशल्याजी की वारहमासी, रचयिता—देवीसिंह, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४, प्राप्तिस्थान—प गयादीन तिवारी, ग्राम—विलरिहा, डाकघर—थानगांव, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ कौशल्या जी की वारहमासी लिख्यते ॥ कार्तिक कूच प्रयाग से कीनो कौशल्या सोच करैं मन मेरे। राम लषन सिया वन कूं सिधारे दशरथ प्राण तजे घर मेरे ॥ दरशन देवो मेरे प्राण पियारे तुम विन कोई नहिं और हमारे ॥ १ ॥

अंत—रावण मारि राम घर आये आनद वधाई मो गृह मेरे ॥ दरशन देवो मेरे प्राण पियारे तुम विन कोई नहिं और हमारे ॥ १२ ॥ देवीसिंह सिया रघुवर को ध्यान धरैं घर वाहर मेरे। तुम विन स्वामी कोइ नहिं मेरा पांय धरौं अव मो सिर पैरे ॥ दरशन देवो मेरे प्राण पियारे तुम विन कोई न और हमारे ॥ इति कौशिल्या जी की वारामासी संपूर्णम ॥ लिषतं गयादीन तिवारी संवत १९१४ वि० वैसाख सुदी १ स्वपठनार्थ ॥ श्री रामजी सदा सहाय ॥ भरत जी महाराज की जै वोलो ॥ राम राम राम ॥

विषय—रामचन्द्र जी का वन गमन और कौशिल्या जी का उनकी जुदाई के कारण शोक करना।

संख्या १०७ सांगीत बदरे मुनीर, रचयिता—धनपत उर्फ धन्नूमल, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८० ई० प्राप्तिस्थान—लाला सीताराम, संगीतशाला, ग्राम—दीनापुर, डाकघर—गोला गोकर्णनाथ, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सांगीत बदरे मुनीर शाहजाद परी का लिख्यते ॥ दो० । सुमिरन कर करतार का हर दम बारं बार । जोही जो चाहै करै । जो जग सुरजन हार ॥ चौ० ॥ जिसके आधीन सकल जग कहाय । जिसकी सरनागत से सुभगत पावै ॥ जिसकी बिन भक्ति किसू चैन ना पाया । ताकी सरनागत अब धन पत आया ॥ रंगाचार का दोहा ॥ बे नजीर के इश्क का हुआ असर कछु तार । परी हुई उस पर फिदा आय फसा जा भौंर ॥ कड़ा ॥ कुछ दिन बीत नहीं सुधी उनकी सो प्यारी । इश्क हुई में पड़ा हुए तासे अब ख्वारी । हुआ कुए में बंद सजा उन ऐसी पाई । न जबन निसा कर जोग जाय फिर उसको लाई । बे नजीर का पैदा होना और हलकारे का बादशाह को खबर देना ॥ दो० । हाथ जोड़ आदाब सू कहूं मुबारक बाद । शाहजादा पैदा हुआ कीजै दिल को शाद ॥ चौबोला ॥ कीजै खैरात मता या जो आवै । दीजे तुम दान जो काहू लेने आवै । जानी तुम शाह खुसी दिल है आला । कीजो तुम हुक्म बजै दर पर बाजा ॥

अंत—नजबन निसा का दोहा ॥ चैन आंख दू खोल कर व नजीर दू आय । टक टक तेरे पास है अपना हाल सुनाय ॥ कड़ा ॥ करो खुशी और चैन भूल गम दिल से सारा । चाहे थी सो हुआ देख घर आया प्यारा ॥ लाई एक गुलफाम साथ हमको मैं प्यारी । सो शहजादा जान परिस्ता जिसकी सारी ॥ बदर मुनीर का दोहा ॥ बे नजीर तुम ये कहां के गये दिल को छीन । तुम बिन मैं व्याकुल रही ऐसे जल बिन मीन ॥ चौ० ॥ तड़फूं दिन रैन मुझे नींद ना आवै । रोने के और सिवा कुछ ना भावै ॥ आंखों से खून मरे अश्क पस जारी । मरती हूं यार तरे गम की मारी ॥ बे नजीर का दोहा ॥ क्या कहूं बदर मुनीर मैं अपना तुम से हाल । जान हमारी बच गई ये कुदरत का ख्याल ॥ कड़ा ॥ ये कुदरत का ख्याल बची जो जान हमारी । रहा चाह में कैद रही पर चाह तुम्हारी ॥ ना खाना की सिवाय नहीं पानी दरसाया । सिवा तुम्हारे इश्क नहीं कुछ हमने पाया ॥ बदरे मुनीर का दोहा ॥ जानी जब से तुम गये रहती थी बे चैन ॥ रोय रोय मैंने यहां काटे दिन औ रैन ॥ चौ० ॥ काटे दिन रैन मैंने रो रो जानी । खाया ना अन्न तलक अन और पानी ॥ बिपता का हाल कहो हमसे प्यारे । जब से दिलदार हुए हम से न्यारे ॥ बे नजीर का दोहा । मैं बिपता क्या क्या कहूं मैंने ना कीनी बात । रहा कैद जिम रोज मे रोई था दिन रात । चौ० ॥ पहुंचा जब माह रूख परी ख्वाँ वाली । कीना है इश्क कहीं दूनी सुल्की ॥ जितना इकार किया जल ना मानी । तारीफ़न कैद जहां अन ना पानी ॥ दो० । रंगाचार का ॥ कहां लौं वर्णन कीजिये कहूं मैं छाड़ बेनजीर । शाहजादे के साथ में ब्याही बदर मुनीर ॥ कड़ा । बे नजीर के साथ गई ब्याही शाहजादी । फीरोजशाह हमराह हुई जोगन की शादी ॥ गया शहर गुलस्तान संग ले करके नारी । गम्जे भर भर सिर्फ बाप देखे महतारी ॥ इति

वुदरे मुनी सागीत सपूर्ण सवत् १९२८ धन्नूलाल कृत समाप्त लिखा गौरीशकर भट्ट संवत् १९३७ वि०

विषय—वुदरे मुनीर वे नजीर फीरोजशाह जोगन का सांगीत स्वाग में वर्णन।

संख्या १०३ ए. राम गुणोदय, रचयिता – धनीराम, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—१२ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१०, खंडित। रूप—नवीन, पद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६६ = १८०९ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम कवित्त ॥ जेहि सुमिरत सह जेही सिद्धि गाइयत आगम निगम मति सार है। शंकर परम प्रिय परम विशालवर वदन गयंद गति आगम अपार। कहै धनीराम जन प्रन प्रति पाल करैं सकल अमंगल विनाशक विहार हैं ॥ इथुरी गजानन चरन धितु रापि हो कहत वर भापि राम चरित प्रचार है ॥

अंत—प्रमानिका ॥ अनेक वेद वद ही पढ़े विरंचि छद ही। सुनारदादि गावहीं चतुर्भुजे रिझावहीं ॥ मधु मार छंद ॥ भूपति प्रनाम वहु भाति कीन्ह प्रभु कै कृपा ते वरदानि दीन ॥ एहि विधि स्वप्न महीप लपि जग्यो मुदित परभात। द्विज तापस परवीन सों विहसि कह्यो सव वात ॥ ब्राह्मणदोधक ॥ सोअत में दरसन जिन कीन्हो तो पर नाथ दया अति कीन्हो। रूप चतुर्भज तो कह दे है भूप तुम्है निज धाम पठै है ॥ अपूर्ण

विषय—नृप वंश वर्णन, रावण जन्म, राम जन्म, धर्म शिक्षा, शत्रुघ्न शिक्षा, वाजि मोचन शत्रुघ्न समुद्र मिलन वन कथा, चावन स्थान वर्णन, नीलगिरि वर्णन, रत्नग्रीव गमन, शालिग्राम माहात्म, रत्नग्रीव भिक्षु दर्शन आदि कथाएं।

संख्या १०३ वी तत्त्वार्थ प्रदीप, रचयिता—धनीराम, कागज—देशी, पत्र—८४, आकार—१० × ८इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्) २५२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९६३, प्राप्तिस्थान—महाराज श्री प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ जे राम चन्द्र गणपति को रूप ह्वै कै गणपति सेवि जे गणेश हैं। तिन्है फल कहे अभीष्ठ फल देत है। और दिन को नाथ कहे सूर्य ह्वै के दिनेस व्रतधर जे शौर है तिनको फल देत है औ सक्ति देवी को रूप ह्वै कै शक्ति व्रतधारी जे शाक्त हैं तिनको फल देत हैं और हर अनुसारी जे शेव हैं तिन्है हर महादेव को रूप धरि के फल देत हैं या प्रकार जहा कहे पच देवन में ताहू देव पर अथवा इन्द्रादि जा देव पर जाकी प्रीति है तहां ताही रीति सों तहा ताही देव को रूपधरी के फल देत है अथवा औ जहा जामें शास्त्रानुसार ईश्वर रूप करि प्रीति है स्त्री की पति पर शिष्य की गुरु पर पुत्र की पिता पर इत्यादि तहा ताही रीति कहे ताही को रूप धरिके अर्थ पति आदि को रूप धरि के फल देत हैं। श्री गणेशायनम ॥ गनपति रूप ह्वै कै गनपति सेविन को नाथ ह्वै कै दिन को दिनेस व्रत धर को। रूप ह्वै के सकति सकति व्रत धारिन को हर अनुसारिन संवारि रूप हर को। जाकी जहां प्रीति फल देत तहां ताही रीति जानकी प्रसाद नहिं लावत गहर को

नाम जाको पूरन करत मन काम वंदित परधाम नित राम रघुवर को ॥ न्यूनाधिक संका निवारन के लिये कहत हैं जानकी प्रसाद नहिं लावत गहर को अर्थ सब को फल देन में गहर विलंब नहीं करत अर्थ या प्रकार के भजन को फल देत हैं ताही प्रकार शैव आदिन को भी फल देत है ॥

अंत—दोहा । जिस मृग पावन जीव बहु करे मुक्त रघुराइ । कौतुक देखन रवि मनो गये गगन मधि आय । १०८ । मध्य दिवस इमि देषि प्रभु मृगया पेल बिहाइ । करि सरजू जल न्हान गृह आये श्री रघुराइ ॥ भुति छंद ॥ कबहूं मृगया कबहूं जल केलि करें । कबहूं गृह बागहिं चाय । कबहूं श्रुतिशास्त्र पुरान सुनै करि धर्म सभा कहुं न्याव बिचार । जिगरे अवनी मन मध्य सिंहासन बैठत हैं कबहूं धरि प्यार । तिहुं बंधु समेत सदा नित श्री रघुनायक की पुर भाँति बिहार । इति श्री जानकी प्रसाद विरचिते युक्ति रामायन प्रति द्वारा सर्ग ७ तिलक । जिसैति रवि गगन मध्य आयो अर्थ दुपहर भयो १०८, १०९ ॥ अब संक्षेप सो राम चंद्र को नित्यकृत्य कहि ग्रंथ समाप्त करत हैं कबहुं इति गृह बाग को वाद सुंदर करत हैं अर्थ गृह बाग में जाइ कै गृहबाग की सोभा करत है ॥ दोहा ॥ तत्वारथ प्रदीप दिय युक्ति रमायन जाइ जाइ ताको परयो अनेक विधि यहि पदार्थ दर्साये । सोरठा । तासो ठीक्र याहि युक्ति रामायनि पैठिये आदि अंत निवाहि सकल पदारथ पयिये ॥ इति श्री धनीराम विरचितस्य तत्वार्थ प्रदीपस्य समाप्तः संवत १९११ मध्यमि मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यां ग्रंथ समाप्तः ।

विषय—रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र ।

संख्या १०४ पार्श्वनाथ पुराण, रचयिता—धर्मदेव (आगरा), कागज—साधारण, पत्र—३०६, आकार—१२½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११ परिमाण (अनुष्टुप्)—२०५१, खंडित रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १७८९ = १७३२ ई०, लिपिकाल—सं० १८७५ = १०१८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जैनमंदिर, ग्राम—करारा, डाकघर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)

आदि—श्री जिनाय नमः ॥ गुरु चरणाभ्यो नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ॥ अथ पार्श्व नाम पुराण भाषा लिख्यते ॥ दोहरा ॥ मोह महातम दलनदिन, तप लक्ष्मी भरतार । वै पारस परमेस मुझ होउ सुमति दातार ॥ १ ॥ नामा मंडन कलप तरु, जपो जगत हित कार । मुनि जन जाकी भाम करि जावै सिव फल सार ॥ २ ॥

अंत—नमो देव अरहंत सकल तत्वारथ नामी । नमो सिद्धि भगवान ज्ञान मूरति अविनामी ॥ नमो साध सिर गंड दुविध परिग्रह परित्यागी । जपा जाम लिंग धार बन बसे विरागी ॥ यहीं जिनेस भारत परमेष्ठ सर्व सुख संपदा । पारस चरित्र तिहुं लोक में करी क्षेम मंगल सदा ॥ इतिश्री पार्श्वपुराण की महिमा अगम अपार । जग में चिंता मन सरस मन वांछित दातार ॥

× × × ×

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १७ तक—संगाया चरण मरुभूति के भव का वर्णन । (२) पृ० १८ से पृ० २८ तक—गजस्वर्ग गमन विद्याधरभव विद्युत × × देव भव

देव भव वर्णन। (३) पृ० २८ से पृ० ५४ तक—चौदह रत्नो का वर्णन, सामान्य नरक दुख वर्णन, सागर प्रमान वर्णन, अक सख्या वर्णन, (वजू नाभि अहमिन्द्रं सुत मिल्ल नारक दुख वर्णन) (४) पृ० ५५ से पृ० ८८ तक – वारह भावना सूचन, वाईस परीसा के नाम, क्षुदा तृषादि परीसाओं के वर्णन। परीसह उदय विवरण, सामान्य स्वर्ग विवरण, स्वर्ग स्त्री वर्णन, (आनन्दराय इन्द्रपद प्राप्ति वर्णन) (५) पृ० ८९ से पृ० ११० तक—प्रभात वर्णन, देवांगना प्रश्न तथा माता का उत्तर वर्णन, गर्भ वर्णन। (६) पृ० १११ से पृ० १२८ तक—ऐरावत गज वर्णन, जिनेन्द्र जन्मोत्सव वर्णन। (७) पृ० १२८ से पृ० १४४ तक—भगद्वैराग्यो दत्त दीक्षा कल्याण का वर्णन। (८) पृ० १४४ से पृ० १६६ तक—समोसरण वर्णन, आठ प्रात-हार्य वर्णन, (भगवान ज्ञान कल्याण वर्णन)।

(९) पृ० १६६ से पृ० २१२ तक—गसाधर प्रश्न, सामान्य द्रव्य जात विशेप सप्त भंग निरूपण, जीव विपै सातो भग निरूपण, जीव निरूपण, प्रथम भेद, उपयोग वर्णन, कर्त्ता वर्णन, भोक्ता वर्णन, देह मात्र वर्णन, सात समुद घात वर्णन, वेदना समुद्धात, कपाट समुद्धात तथा अन्य समुद्धात वर्णन, संसारी वर्णन, एकेन्द्री से असेनी सेनी पंचेद्री पर जंत उत्कृष्ट विपै क्षेत्र वर्णन। जीव समास वर्णन, उत्पाद व्यय ध्रौव्य स्थापना, अमूर्ति वर्णन, ऊर्ध्व गमन वर्णन, धर्मद्रव्य वर्णन। अधर्म द्रव्य वर्णन। आकास द्रव्य वर्णन, काल द्रव्य, शिष्य गुरु प्रश्नोत्तर, आकाश प्रदेश, स्वरूप तथा शक्ति, श्रव तत्त्व वर्णन, संवर तत्त्व, निर्जरातत्त्व, मोपतत्त्व, दर्शन प्रतिमा वर्णन, वृत प्रतिमा वर्णन, अन्य प्रतिमाओं का वर्णन सात नर्क, द्वादशांग के पद, कवि लघुता वर्णन, ग्रथ रचना स्थान—

पूरन रचित विलोकि के भूधर वुद्धि समान।
भाषा वध प्रवध यह, कियो आगरे थान ॥

ग्रंथकार परिचय—वदौं जिनेस भापत धरम देय सर्व सुप सपदा ॥

निर्माण काल—सवत् सत्रहसे समै, और नवासी लीय।
सुदि आसाढ तिथि पचमी, ग्रथ समापत कीय ॥

लेखन काल—सरवान वसु शशि विक्रमार्क गत जान साके सालिवाहन मनेत्र मुनिचंदहै। ऋतु जो निदाघ शुचि मास अलिपछ शुभ तिथि भुज भान वार सुर गुरु अमद है। मेदनीय सिंह नाम कटरा प्रतापगढ़ जै सवाल श्रावक जो वसत सुछद है। चैन सुख अनुज जौहरी लाल हेत हम पारस पुरान लिख्यो धारि के अनंद है ॥

संख्या १०५ प. वृंदावन सतक, रचयिता—ध्रुव, कागज—साधारण, पत्र—२९, आकार—५ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६८६ = १६२९ ई०, लिपिकाल—स० १८५१ = १७९४ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला गजाधर प्रसाद, ग्राम—कूराडीह, डाकघर—परियावॉ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः। अथ श्री वृंदावन सत लिप्यते ॥ दोहा ॥ प्रथम नाम हरिवंश हित, रटि रसना दिन रैन। प्रीति रीति तव पाइयै। अरु वृंदावन ऐन ॥ १ ॥

चरन सरन हरि वंश की। जब लगि आपा नाहिं। नवल कुंज निज माधुरी। क्यों परसै मन माहिं ॥२॥ वृंदावन मत कथन कौं। कीनों मन उतसाह। नवल राधिका कृपा बिनु। कैसे होत निबाह ॥ ३ ॥

अंत—वृन्दावन मत जो कहै। सुनिहै नीकी भाँति। निम दिन तिहि उर जगमगै। वृन्दावन की कांति ॥ ५ ॥ वृंदावन कौं चिन्तवन यहै दीप उर बार। कोटि जन्म के तम अघहि काटि कर उजियार ॥ ६ ॥ बसि कै वृंदाविपिन में। इतनौं बडो सयान। जुगल चरन के भजन बिनु। निमिष न दीजै जान ॥ ७ ॥ महिमा वृंदाविपिन की। कहि न सकत मन माहि। जाके रसना हू सहस। तिनहूँ कहि थाकहि ॥ ८ ॥ पती मति मो पै कहां। सीमा निधि बन राज। दीजै द कछु कहत हौं। आव नहीं जिय लाज। ९ ॥ मति प्रमान चाहत कहौं। माऊ कहत सयान। सिंधु अगम जिहि पार न हैं। कैसे सीप समात ॥१०॥ आगम के अवरंध दिन। कीजी नाहि उपाय। वृंदावन रस कहत मैं। मति कबहु भरमाय ॥ ११ ॥

× × × ×

इति श्री वृंदावन मत संपूर्ण शुभमस्तु ॥ मिति मार्ग सुद ॥ २ ॥ रविदिन ॥ संवत् १८५१ ॥ शाक ॥ १९ ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० २१ तक—मंगलाचरण। कवि दैन्य वर्णन। किशोरी जी का स्मरण। वृंदाविपिन की धूलि का वर्णन। वनादि की शोभा का कथन। सखी वृंदा की महिमा का वर्णन। सखी इत्यादि सहित वन शोभा का वर्णन। श्यामाजी के श्रेष्ठ के संबंध से वन की शोभा वृद्धि का वर्णन। (२) पृ० २१ से पृ० ३२ तक—वृंदावन रस की अनुपमता का वर्णन। चतुराननादि का भी वृंदावन को देखकर चकित स्तम्भित हो जाना। भजन भाव के लिये वृंदाविपिन की भूमि के सर्व श्रेष्ठ उपयुक्त होने का वर्णन। सब स्थान छोड़ कर वृंदाविपिन सेवन का आदेश। (३) पृ० ३३ से पृ० ५८ तक—गुरु-स्मरण। यहाँ तक प्राण तक से भी वृंदावन में अधिक प्रीति करने का कथन, वृंदावन प्रेम की दृढ़ता, वृंदावन नाम रटन का महत्व। सब तीर्थों से वृंदावन का माहात्म्य अधिक बताने का कथन। वृंदावन के संबंध से ही सब पुराणादि में प्रेम तथा उसके बिना उन सब में अश्रद्धा का भाव। वृंदावन से माया का दूर (विलग) रहने का कथन वृन्दावन माहात्म्य वर्णन में कवि की असमर्थता का कथन तथा प्रस्तुत वर्णन में श्री युगल मूर्त्ति की कृपा का यही प्रमाण होने का वर्णन। वृंदावन शतक पढ़ने का फल वर्णन। ग्रंथ निर्माण काल—सोरह सै "ध्रुव" एकादि, पूर्ण्यो अगहन मास। यह प्रबन्ध पूरन भया, सुनत होत अघनास ॥

संख्या १०४ वी। वृंदावन शतक, रचयिता—ध्रुवदास (वृंदावन) कागज—साधारण, पत्र—२४, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप्) २५० खंडित रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १६८६ = १६२९ ई० प्राप्तिस्थान—महंत मंगलराम ग्राम—मंगलपुर डाकघर—पतियावाँ जिला—प्रतापगढ़।

संख्या १०६ अनुराग विलास, रचयिता—बा० दिग्विजय सिंह (गुप्तगंज) कागज—साधारण, पत्र—२५ आकार—० × २½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८ परिमाण

अंत—सोरठा—आपन अर्थ न जाय, अन मिल पद मनु सावरी । केवल सभु प्रसाद, नाम भव अवत करी ॥ सो यह कथा मह्मोत्तर संवा । स्कंद पुराण विदित जग लगा ॥ सिव इच्छा कीन्हेउ करि माया । दोहा छंद सोरठा रापा ॥ चौपाई छौमय अध्याया । विसद कथा बरन्यौ सिव भाया ॥ कीर्तन भजन जो श्रेठ नर करि है । सुखद भोग करि भव निधि तरि है ॥ सो भव तरं कछु संसय नाहीं । संभु प्रताप प्रगट यही माहीं ॥ भूपति विदुर मंजुला नारी । तिनहि दीन निज पद त्रिपुरारी ॥ भाषा प्राकृत कछु न विचारै । ईस सुजस लपि प्रेम ते धार ॥ काव्य अपडु लपि कै अपराधू । छमा करहिं जिनके मति साधू ॥ छंद—साधु सज्जन निरपि हरिहर सुजस निर्मल धारही । श्रवण कीर्तन प्रेम ते करि कोटि पल गन तारही ॥ भाषा रच्यो गुरु काम्यकुब्ज सो नाम दीनानाथ है । मनु राघु गौरी सभु पद मेह है नाथ अनाथ हूं ॥ इति श्री स्कंद पुराणे महोत्तर खंडे धर्मसोमा द्वाविंशोध्यायः ॥ २ ॥ संवत् १८८४ शाके १७४९ मिति कार्तिक सुदी दशम्याम् । चंद्रवासरान्वितायाम् ॥

संख्या १०८. ज्ञान विलास, रचयिता—कृपाधारी, कागज—देशी, पत्र—७५, आकार—८ × ६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्) १८००, खंडित । रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७४, प्राप्तिस्थान—पं० सुनासर दीन दीक्षित, ग्राम—सीकरी, डाकघर—तंबुरा, जिला सीतापुर ।

आदि:—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ज्ञान विलास लिख्यते ॥ वंदना ॥ (इसके आगे पृष्ठ से पृष्ठ चिपका है फटा है पढ़ना कठिन है)

अंत—तहां भयो बहु काल कृपा धारी को बसत । गौरी गणेसदयाल कृपा करी हरि कर सत ॥ परसराम तहं तप करें कामी कठिन कराल । उत्तम कुल जन दुगिन सुत ॥ गुरु विज्ञान विसाल ॥ काम धेनु तहं अमित प्रजा लोग सुत धार । करहिं मन मत सिवहु मों सत्य वचन व्योहार ॥ कुटी निकट सर वर सुभग सीतल जल सब काल । मान सरोवर सम मनहुं जेहि सर बसत मराल ॥ बरन बरन सरसिज सुभग विकसे,सुमन विसाल । पूजा संकर कर करहिं नर्द फूल लिंग माल ॥ सुता राइ जयपाल की कीन्ह हृदय में बास कथा कहौं मङ्गल की कृपा धारी दास । सोरठा ॥ ज्ञान विलास की थाह कीन्ह भवानी सिंह जू कवि बल बुद्धि है थाह । मजत राधिका रमन जू ॥ राज धरम रत धुर भया भवानी सिंह जी कथा प्रेम भरि पूर राचे रमन गोपाल की ॥ इति श्री कृपाधारी कृत ज्ञान विलास समाप्तः दो० ॥ अगहन तिथि त्रियोदसी भौमवार (इसके आगे दोहा पूरा नहीं प्रथम सवत १८०४ लिखा है) ।

विषय—सूर्य की स्तुति, देवी स्तुति, श्री कृष्ण राधिका की महिमा और भजन ।

संख्या १०६. शब्दावली, रचयिता—कृष्णदास धरमई (रायबरेली) कागज - मोटा सफेद, पत्र—११५, आकार—१० × ७½, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०० पूर्ण । रूप—सुंदर, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२५ १८६७ ई० लिपिकाल—सं० १६१८=१८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० त्रिभुवन त्रिपाठी, ग्राम—पूरे पराग पाँडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली ।

मस्तु सवत् १९४३ ॥ दोहा ॥ माघ मास को जानि जै, असित पक्ष शनिवार। पाइ त्रयोदशि लिपि कियो गयार्णव को पार ॥ १ ॥ दशपत दुर्गाप्रसाद कात्यय शाकीन ग्राम जूही ॥ श्री रामानुजाय नम. ॥ श्री हनुमताय नमः श्री राधा वल्लभो जयति श्री गोविन्दा-यनमो नम. श्री सरस्वतै नम. ।

विषय—पृ० २८५ तक २८ तरंगों में पुरुरवा से पाण्डव वशीय राजा चद्रकेतु तक का वर्णन फिर चौहान वश की उत्पत्ति ।

(विशेष—निवास स्थान.—तीरथ राज उदीचि पहँ, अवध पुरी हरिधाम, तासु मध्य में लसतु हैं, अरउर देस ललाम ॥ अरउर देश माँहि परगन प्रतापगढ़, तासु के पश्चिम एक उत्तिम सुठामु है । मजुल विलास लपि भूपानुज वास किय, नगर सुजापरि में मन्दिर ललामु है ॥ वावू दुनियाँ सिंह के सुन्दर कुमार चारि, वीर विक्रमी उदार ज्ञाननि को धामु है। लालजू कहत देश देशनि को गुनी आए, पाए सनमान दान भए सु अकामु है ॥ दो० ॥ श्री वावू दल जीत सिंह धर्म धुरीन महान । साधु द्विजन को दान दे अवरेन को सनमान ॥ दुर्गा वकस प्रवीन मति सुंदर शील निधान। क्षेत्र माहिं जय जस लह्यौ, करिकै युद्ध विधान ॥ कहत अयोध्या वकस जिहि, सवसौ लहरो तात । रूपवंत अति चतुरवर वहु गुण में विष्यात ॥ तृतिय भवानी वक्स जू वुद्धयार्णव सुपदाम । प्रगटेव शशि के वश में गुनमय रूप ललाम ग्रथ रचना का कारण व ग्रथकार परिचयः—ऐसो शुभ्र देश जहँ राजत महेश आपु नाम धुसमेश अरि देश हू को काल है । जुरत हमेश देश देश के नरेश आइ काटत कलेश निज देश प्रतिपालु है ॥ लाल हू वसत तेहि शकर के आस पास पावत सुवास मैं विलास सव थालु है । पाइ शुभ सासन हुलसि कह्यौ भूपानुज रवो कछु काव्य गुन पोहि जिमि मालु है ॥ सो—एक समै गुण प्रानि लाल भवानी वक्स जू। निज मन में अनु मानि मोसन कह अति हर्षि हिय ॥ दो० ॥ मम कुल वशावरी दीजै रुचिर वनाइ। ब्रह्मादिक ते आजु लौं क्रमते सकल मिलाइ ॥ ग्रथ निर्माण काल.—सवत नव९ शशि१ नव९ शशी१, भाव नाम अभिराम । पौष शुक्ल की त्रयोदशी, अरु भृगुवार ललाम ॥ नाम करणः—नाम धर्यो यहि ग्रथ को, सुनि जै अव क्षिति पाल। वशावरी विधान यह, विरचित दुर्गालाल ।)

पृ० २८६ से पृ० २९६ तक—एकोन त्रिंशति तरग । भूरिवाह वश वर्णन, विविध राजाओं का विविध स्थान वसाना । लछिमन सिंह भूप का वश वर्णन ।

पृ० २९६ से पृ० ३०२ तक—त्रिंशति तरङ्ग । मलूक सिंह का वन्दी गृह प्रवेश, वादशाह की पुत्री का उनपर मोहित होकर अपना विवाह करा लेना । मलूक सिंह व जैतसिंह का वैर, मलूक सिंह का मारा जाना । जैतसिंह का गद्दी पाना, गौहर देव का राजासे (अपने कथनानुसार) वावू वनकर रहना । उनका छितरौन के वावू कहाना ।

पृ० ३०२ से पृ० ३१४ तक—एको त्रिंशति तरग । जैतसिंह के वश का विस्तार, गौहर देव वश परिचय । वशानुसार नगरों का कथन, प्रतापगढ का वसाया जाना । प्रतापसिंह व सुजान कुँवरि का व्याह । एक अनूपम सागर का वनाया जाना, उसके घाटादि का वर्णन, जयसिंह की उत्पत्ति ।

पृ० ११३ से पृ० १२२ तक—द्वा त्रिंशति तरङ्ग। जयसिंह का शाहजहाँ को सहायता देना और उससे सम्मानित होना। जयसिंह का वंस विस्तार।

पृ० १२२ से पृ० १३० तक—त्रि त्रिंशति तरंग। भूपकुल वर्णन, पृथ्वी पतिराज व औरंगजेब युद्ध। मंसूर का युद्ध और राजा का वीर गति प्राप्त होना।

पृ० १३० से पृ० १३८ तक—चतुर्त्रिंशति तरङ्ग। अवनढ़ के नवाब की चढ़ाई, प्रेम भाव सिंह आदि से युद्ध वर्णन। बहादुर सिंह नृपति का वर्णन। उनका वंश विस्तार। भूप कुल सम्पूर्ण।

पृ० १३८ से पृ० १४६ तक—पंच त्रिंशति तरङ्ग। बाबुओं के वंस का वर्णन।

पृ० १४६ से पृ० १५६ तक—षट त्रिंशति तरङ्ग। भूपानुज वंस वर्णन।

पृ० १५६ से पृ० १५८ तक—सप्त त्रिंशति तरङ्ग काल विक्रमादित्य वंश वर्णन। ग्रंथ समाप्ति।

पृ० १५८ से पृ० १७८ तक—अनुक्रमणिका।

संख्या १११ सा. नाम माला, रचयिता—दुर्गाकाल कायस्थ (जूही, प्रतापगढ़), कागज—साधारण, पत्र—१९, आकार ११ × ५½ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६, खंडित। रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राधे बिहारी लाल, ग्राम—जूही, डाकघर—सांगीपुर, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेसाय नमः॥ अथ नाम-माला लिख्यते॥ दोहा॥ प्रथमहिं सुमिरौं शिव सुवन बहुरि सुमिरि सब देव। मोर मनोरथ सिद्धि कर, हनुमत रघुबर सेव॥ १॥ करि प्रनाम नारायणहि, कमलापति वृषिन महेश। व्यासादिक मुनि की क्रिया करहि कै करौ प्रवेस॥ २॥ सेष गिरा उर राखि कै निज गुरु पद को ध्याइ। नाम भेद भाषौं सकल बहु ग्रंथन ते ल्याइ॥ ३॥ श्री नारायण कौं सुमिरि बरणत हौं पहिचानि। एक ठौर करि देत हौं सकल नाम को आनि॥ ४॥ समुझि परै नहिं अर्थ कछु नाम भेद नहिं जानि। तिनके हित मैं रचत हौं नाम दाम की खानि॥ ५॥

विष्णुनाम

हृषीकेश बैकुण्ठ हरि कृष्ण विष्णु भगवन्त। वासुदेव वामन विमल परमातमा अनन्त॥ ६॥ केशव माधव दैत्य रिपु, दामोदर कंसारि। नारायण गरुड़ ध्वजो गिरिधर बहुरि मुरारि॥ ७॥ अच्युत जलसायी कहत मधुसूदन गोविन्द॥ चक्र पानि नर कान्त श्री कमला कन्त मुकुन्द॥ ८॥

× × × ×

अंत—॥ चतुदस रत्न॥ धेनु धन्वन्तरि विष सुरा, मदमी संख गयन्द। पारिजात रम्भा धनुष, अमी वाजि मनि चन्द॥ ११६॥ सुन्दर नाम॥ सुभग मनोहर सुमन अरु कंत रदन कम।

× × × ×

विपय—(१) पृ० १ से पृ० १० तकः—मगलाचरण, ग्रथ चतुष्टय, विष्णुनाम, गणेश नाम, स्वामि कार्तिक नाम, ब्रह्मा नाम, इन्द्र नाम, देवता नाम, सरस्वती नाम, सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु-केतु, अमृत, विप, रमा, पवन, कुबेर, यम, वरुण, अग्नि, घर, सोना, रूपा, जलदी, बुद्धि, मुक्ति, उज्जल, कृष्ण, रक्त, शोभा, किरण, मेघ, बिजुली, जल, लहरि, समुद्र, गङ्गा, जमुना, नदी, सर, कूप, कचबन्ध, कमल, आकाश एवं भू नाम वर्णन। (२) पृ० ११ से पृ० २० तक—पर्वत, पाषाण, वन, वृक्ष, पत्र, हस्ती, सिंह, मृगा, ऊंट, खर, भैंसा, वानर, श्रृगाल, शूकर, स्वान, बिलार, निटरा, कछुहा, मेघा, मूप, गरुड़, मोर, पपीहा, कोकिला, पक्षी, शुक, सारिक, काक-बक, वसन, काम, शरीर, शिर, कर्न, भृकुटी, आँख, ओष्ठ, बाहु, कुच, बार, चरण, पनही, प्रेम, बैर, अहङ्कार, धर्म, क्रोध, राजा, सेवक, जन्म, मानुप, मन, द्रव्य, मीन, शेश, सर्प, अनी, युद्ध, आयुध, वपतर, बान, तरकस, धनुप, तरवारि, चतुर, झूठ, पुनि, बहु, कठिन, कोमल, दाया, ओटर, भयानक, तथा अनादर के नाम। (३) पृ० २१ से पृ० ३० तक—अभिलाप, दिन, सध्या, निशा, तम, प्रात, सुप, लज्जा, स्त्री, पति, पत्नी, पुत्र, पुत्री, सखी, शत्रु, पाला, उतङ्ग, नीच, वीर, नवीन, पुराना, दैत्य, राक्षस, दिशा, द्वादश सूर्य, एकादश रुद्र, आठ वसु, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, चौदह लोक, अष्टादश पुराण, नव-रस, पोडश श्रृंगार। द्वादश भूपण, चौरासी लक्षि योनि, सुत, आज्ञा, हृय, षटरस, षट रितु, वसन्त, षट शास्त्र, षट काव्य, नव व्याकरण, भ्रमर, उपवन, फूल, सीढ़ी, उसीसी, सेज्या, समय, नमस्कार, दर्पण, छुद्र घटिका, घूँघुर, टेढ़ा-बस (मछली पकड़ने की), वेद, जोगेश्वर, बलिभद्र, वेणु, नौनिधि, अष्ट सिद्धि, वसु दिग्गज, सात द्वीप, सात खड, द्वादश दोप, द्वादश व्रत, तथा चतुर्दश जरायुज नाम। (४) पृ० ३१ से पृ० ३८ तक—पच जाति स्थावर, मदिरा, अपराध, समूह, अति, सूक्ष्म, शब्द, धूरि, छल, नाव, रुधिर, मुगुध, हरदी, प्रेम, विवाह, लघु भ्राता, निकट, वज्र, पतिव्रता, वेश्या, वीथी, राह, अतर्ध्यान, दीरघ, विद्रुम, चन्दन, वृक्षराज, वरगद, आम्र, महुआ, वेल, अनार, केला, पाडर, किंशुक, तमाल, चपा, कदम्ब, नारियल, सुपारी, पीपरि, हरैं, दाप, सोठि, केशरि, वहेरा, केवाक्ष, जूही, राजवेलि, लवङ्ग, इलायची, ववरि (अमर-वेलि) मालती, चचल, चतुर्दश रत्न, एव सुन्दर नाम।

संख्या ११२ प. लिंग पुराण भाषा पूर्वार्द्ध, रचयिता—दुर्गा प्रसाद (अलवर), कागज—देशी, पत्र—४८०, आकार—१२ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २७, परिमाण (अनुष्टुप्) ८१६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य और गद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० गव्वू लाल जी, ग्राम—झाऊलाला का पुल, जिला—लखनऊ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ लिंग पुराण भाषा पूर्वार्द्ध लिष्यते प्रारंभ। दो०। विबुध मुकुट मणि दीपिका नी राजत दिन रैन। विघन हरैं हेरंब के चरण कमल सुपदैन ॥ १॥ भजौं नित्य गौरी गिरिश सकल सिद्धि के हेतु। भक्त मनोरथ कल्प तरु भव सागर के सेतु॥ २॥ ब्रह्म विष्णु शिव रूप से सृष्टि स्थिति संहार। करत ताहि जगदीश

को विनवौं वारंवार ॥ १ ॥ पंचानन अनुरागमहिं व्यासहि विष्णु समान। वार वार सिर नाय के बरनौं लिंग पुराण ॥ संवत् १८११ उनइस सौ इकतीसा कहीं कथा हरि पद धरि सीसा ॥ भाषा सुगम कहौं मैं गाई। कमियो कवि जन जानि दिठाई ॥ एक समय श्री नारद मुनि सैलेस संगमेश्वर हिरण्य गर्भा स्वर्लेन आदि मुक्त महा कल रुंद्र गोप्रतक पाशुपत विजेश्वर केदार गोमा मुकेश्वर चंद्रसेखर इसान त्रिविष्टप और शुक्रेश्वर आदि उत्तम उत्तम शिव क्षेत्रों में श्री महादेव जी का पूजन करते भये। और संसार का चमत्कार देखते नैमिषारण्य में पहुंचे। वहां सब शौनक आदि मुनि नारद जी को देख अति मुदित भये। और बड़ी प्रीति से आगत स्वागत कर उत्तम आसन पर बैठाय उनका सत्कार से पूजन करते भये ॥ नारद जी ने परम भक्ति से मुनियों से शिव जी का माहात्म सुनाने लगे ॥

अंत—हे मुनीश्वरो जो आपने पूछा सो हमने कथन किया अब एक मुक्ति उपाय और भी कहता हूं। जो पुरुष सुवर्ण की मेघका अर्थात बछड़ी एक सुवर्ण का लिंग कम पंपा लक्ष्मी क्षुर मयी भाजन कँची और जलपात्र ये सब उपकरण सोने चांदी तांबे के ही बनवाय अपने वित्त के अनुसार पाशुपत जोगी को देवे वह सब पापों से मुक्त हो अपने कुल सहित शिवलोक में निवास करता है इस दान से गृहस्थी संसार बन्धन से मुक्त होता है ॥ जोगियों को देने से शिवजी बहुत प्रसन्न होते हैं। इस कारण राज्य पुत्र धन घोड़े हाथी आदि वाहन अथवा सर्वस्व ही दान करै जो मोक्ष की इच्छा रखता होय तो इस अनित्य शरीर करके नित्य और संसार सागर से पार करने द्वारा दिव्य पाशुपत ज्ञान साधन करना उचित है ॥ हे मुनीश्वरो यह सब कथा शिवजी की हमने संक्षेप वर्णन करी इसको जो पढ़ै अथवा सुनै वह विष्णु लोक में निवास करै। अंत का शेष समाप्त ॥ इति श्री लिंग पुराण दुर्गा प्रसाद अकबर निवासी कृत संपूर्ण समाप्तः ॥ संवत् १९३० वि०

विषय—अनेक प्रकार की कथा मूर्ति प्रतिष्ठा और पूजा का फल पापों के प्रायश्चित्त, विष्णु के सब अवतारों की कथा और योग साधनादि अनेक विषयों का विस्तार से वर्णन ॥

संख्या ११२ बी. लिंग पुराण भाषा पूर्वार्द्ध, रचयिता—पं० दुर्गाप्रसाद (अकबर), कागज—आधुनिक पत्र—४३०, आकार—१० × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुष्टुप्) ८९८०, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९४६= १८८९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामदुलारे लाल ग्राम—मदपुरवा, डाकघर—संवर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ लिंग पुराण भाषा पूर्वार्द्ध लिख्यते ॥ पहिला अध्याय ॥ दो० ॥ विबुध मुकुट मणिदीपिका नीराजित दिन रैन। विघन हरैं देरम्ब के चारन कमल सुख दैन ॥ भवी नित्त गौरी गिरिश सकल सिद्धि के हेतु। भक्त मनोरथ कल्प तरु भव सागर के सेतु ॥ ब्रह्म विष्णु शिवरूप मैं सृष्टि स्थिति संघार करत तादि जगदीश को विनवौं वार बार ॥

पुष्पिका—इति श्री पूर्वार्द्ध लिंग पुराण भापा प० दुर्गाप्रसाद अलवर निवासी कृत सपूर्ण समाप्तः लिखा रामनिवास सवत् १९४६ वि० ॥ श्री रामजी सदा सहाय करें ॥

विपय—लिंग पुराण भापा वर्णन ॥

संख्या ११२ सी लिंग पुराण भाषा उत्तरार्द्ध, रचयिता—दुर्गाप्रसाद (अलवर), कागज—देशी सफेद, पत्र—२१०, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ = १८७४, लिपिकाल—स० १९४६ = १८८९, प्राप्तिस्थान—श्री गव्वूलाल जी, मुहल्ला झाऊलाल का पुल, जिला—लखनऊ (अवध) ॥

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ लिंग पुराण भापा का उत्तरार्द्ध लिप्यते ॥ प्रारभ ॥ शौनक आदि रिप—पूछते हैं कि हे सूत जी श्री कृष्ण भगवान किस कर्म करके प्रसन्न होते हैं यह आप हमको कथा सुनावैं आप सब बातों में चतुर हो यह मुनियों का प्रश्न सुन सूत जी बोले कि हे मुनीश्वरो यही प्रश्न राजा अवरीप ने मार्कंडेय मुनि से किया था तब मार्कंडेय ने अवरीप को जो उत्तर दिया हम आपको सुनाते है राजा अवरीप पूछते हैं कि हे मार्कंडेय जी आप सव धर्मों के पारागामी हैं और पुराणों के रहस्य के जानने हारे हो इसलिये कृपाकर यह कहो कि नारायण के रचे दिव्य धर्मों में परमेश्वर के भक्तों के लिये कौन धर्म उत्तम है।

अत—यह सूत जी का वचन सुन प्रीति से पुलकायमान हो सव नैमिपारण्य के वासी मुनि शिव जी को प्रणाम कर कहते भये कि हे सूत जी इस पुराण के श्रवण से जो आनद हमको और तीर्थ यात्रा में प्रवृत्त नारद मुनि को भया है वही आनद शिव जी की कृपा से सपूर्ण जगत में होय। इस भांति सव मुनियों के वचन सुन नारद जी ने प्रेम से अपने हाथों करके सूत जी को स्पर्श किया और आशीर्वाद दिया कि हे सूत सदा सर्वदा शिव में तुहारी दृढ श्रद्धा वनी रहै ॥ और तुम्हारा कल्याण होय इतना कह नारद जी ने कहा कि हे शिव आपको हम वारवार पणाम कर आपके चरणों कौ हम दृढ भक्ति मागते हैं और यह भी चाहते हैं कि आपके प्रसाद से सव जगत में सदा मगल होते रहैं ॥ दो० ॥ रची रुचिर यह शिव कथा तजि मन को परमाद। भापा माहि विचारि कै वुध दुर्गा प्रसाद ॥ सवत् १९४६ वि० लिपतं रामस्वरूप वैश्य राजा खेड़ा निवासी ॥

विपय—अनेक प्रकार की कथा मूर्ति प्रतिष्ठा वा पूजा का फल पापों के प्रायश्चित्त श्री विष्णु के सव अवतार और जोग साधनादि अनेक विपयों का वर्णन ॥

संख्या ११२ डी. लिंग पुराण भापा उत्तरार्द्ध, रचयिता—पं० दुर्गाप्रसाद (अलवर), कागज—विदेशी, पत्र—१९६, आकार—१० × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५२८, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामदुलारे लाल, ग्राम—भटपुरवा, डाकघर—चयर, जिला—उन्नाव।

संख्या ११३ वैद्य विनोद, रचयिता—दुर्गाप्रसाद त्रिपाठी (सकरौजा, मालवा) कागज—देशी पत्र—१५८ आकार—८३ × ४३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) १००४, खंडित। रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० जगन्नाथ प्रसाद, ग्राम—ममरेजापुर जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ वैद्य विनोद भाषायां लिख्यते। एक रदन करिवर बदन कुमति हरन बुधिधाम। गौरिनंद मगरु करन कीजै प्रथम प्रनाम। १॥ जिन प्राणन को देवता सब कह रहो समाइ। गुप्त प्रगट ता की कला पृथ्वी रूप लखाइ। ताके रूप प्रताप की उपत सीमा हीन। सहस सेस सारद कहैं पार न पावैं तीन। चरम कमल नप अग्र छवि कोटिन चंद्र लजाइ। तिमिर एक के ध्यान ते विघन समूह पराइ। विशद अर्थ सब छबि परे रहै न कछु संदेह। सो विचारि भाषा करौं यथा दीपते गेह। बानी देव मयी कठिन। वैद्यक शास्त्र अपार शब्द बोध को सीधि कै भाषा कहैं विचार। कश्यप वंश उजागर अति राघी कुल अभिराम प्रथम वास मपरोज में बहुरि मकाये धाम। दुर्गापद उपर करौ फिरि प्रसाद लिपि देउ। पांच अंक को नाम मम कृपा सहित लिप लेउ। न्याय तर्क व्याकरण में मम कुछ सबै प्रमान। ग्रंथकार उद्धृत भये विद्या बुधि निधान।

अंत—अथ स्नेहनी वर्तिः—भौरा हर बहेर के बीच मगायो तीन॥ एक मुगल त्रिप जानिये मासम ताहु तीन। मीर बंस तद देइ कै वर्ती घरी बनाइ। नेत्रभाव और मातरप्द लक अंजन कर मिटि जाय। इति नेत्रभाव हरी वर्तिः अथ रस क्रिया। सीसा सीसा स्वर्ण माछिर्मे समुद्र फेन तई लावौं। सैंधव और खपरा गेरू मनसिल लाल मिलावौं। मरिच लौंग संयुक्त कै पूरन विशद करौं। मधु धृत ते अंजन करौ दृग के रोग हरौं। सर्व रोग औं कमलम शुक्र दीप को नासी। मीस मुर्गी परसाद कहि दृग की ज्योति प्रकासी। लेपनी रस क्रिया। वट की क्षार मगाय कै और कपूर मिलावौं। पीपरि को संयुक्त कै दृग में अंजन लावौ। फूलो परी छ मास तै तुरतै तीन पराय। कुसुम रोग की उमता मीत बासु मिटि जाय पुष्प हरी रस क्रिया। सीसा सार मगाइकै मरिच एक यमि लेउ सहत पुष्ट अंजन करौ निद्रा अति हरि दृढ। अति निद्रायां।

विषय—प्रथम अध्याय (१) ग्रंथकार की भूमिका, (२) पुण्यपुण्य विचार, (३) रस, गुण, वीर्य, प्रभाव कथन। द्वितीय अध्याय—मूत्र नप, नेत्र, जिह्वा, परीक्षा आदि। दूत लक्षण। तृतीय अध्याय—रोगी लक्षण—वैद्य लक्षण। चतुर्थ—दीपन पाचन आदि विधियों का वर्णन। पंचम—कल्प आदि तत्व ज्ञान का वर्णन। षष्टम—आहार पाक कुमार पोषण आदि। सप्तम—रोगों की गणना। अष्टम—रसादिकों की कल्पना। नवम—हिम कल्पना। दसम—घोर कल्पना।

संख्या ११४ ए. राधा विलास, रचयिता—द्वारकाप्रसाद (हरदोई), कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुष्टुप्) ४९२, पूर्ण, रूप—साधारण पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—रामदीन काछी, ग्राम—रूस्तमपुर कस्बे, डाकघर—गुरुजापुर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ राधा विलास लिख्यते ॥ ख्याल गनेश जी का ॥ श्री गनेश महाराज मनाऊ तुमकू । चदन औ चावल फूल चढ़ाऊ तुमकू ॥ हाँ तो शकर के पूत भक्ति वरदायक । आगे तेरे अरजी करे खडा होय पायक ॥ दुखिया को सुखिया करो श्री गणनायक ॥ मेरी भी विपता हरो तुमही सब लायक ॥ मै प्रीति रीति की पूजा दिखाऊँ तुमकूं । चदन औ चावल फूल चढ़ाऊं तुमकू ॥ १ ॥ तुम एक दत्त औ चारि भुजाधारी हो ॥ गणपति गौरा के लाल सुख कारी हो ॥ जो धरे तुम्हारो ध्यान दुख टारी हो । तुम देवन के सिर ताज वडे भारी हो ॥ मै प्रथम सभा के बीच में गाऊं तुमकू चंदन और चावल फूल चढ़ाऊं तुमकूं ॥ २ ॥ देउ भक्ति ज्ञान अरदास दास करता है ॥ जो तेरी मिहर तो किसी से नहीं डरता है ॥ होय भक्ति तेरे चरनों में सीस धरता है । वो अमरलोक में सुख नित्य करता है ॥ मै धूप दीप नैवेद्य लगाऊं तुमकू । चंदन और चावल फूल चढ़ाऊ तुमकू । है भक्त द्वारका तेरा भक्त कहलावे । सारस्वत ब्राह्मन छन्द निराला गावे । जो पढ़े पढ़ावे अमरलोक फल पावे ॥ वह भवसागर की धार पार हो जावे ॥ हाँ वड़े भाग्य जो कहीं मैं पाऊं तुमकू । चदन औ चावल फूल चढ़ाऊ तुमकू ॥

अत—चौमासा रंगत वशीकरन । क्या उमड़ घुमड़ घन घोर जोर से वरसे । पीतम छाये परदेस जिया मोरा तरसे ॥ जव लगा मास आसाढ़ उमर वारी है ॥ जुगुनू चमकै चहुं ओर घटा कारी है ॥ हरदम नैनो से मेरे नीर जारी है । कव वादल वरसन की इतिजारी है ॥ मुझे वाली उमर में छोड़ गये पिया घर से पीतम छाये परदेश जिया मेरा तरसे ॥ १ ॥ क्यों कर महीना लगा आन के सावन । सौतिन को हसाया हमें लगा तरसावन ॥ कुविजा दासी का था वा विन दामन । हो गये खफ़ा वे वफ़ा हमसे मन भावन ॥ ना जानू कौन सी चूक पडी सुदर से । वालम छाये परदेस जिया मेरा तरसे ॥ २ ॥ मै गेरुआ वस्त्र रगाऊ मास भादों में । चहु ओर अंधेरी झुकी कीच कादों मे ॥ जव अंग भभूत रमाय जोग साधों मे । जगल और शहर सब ढूंढे वेनीमाधों में ॥ हो गई मिहर भगवान मिली गिरधर । वालम छाये परदेस जिया मेरा तरसे ॥ गुरु मनीराम महराज परम सुख पाते । महाराज द्वारका दास ख्याल कथ गाते ॥ है कुंवा पाकरी पास खास कर रहते । हरदोई की वाजार सदर में रहते ॥ हरदम हमको दरसन दो स्याम सुंदर से । पीतम छाये परदेस जिया मेरा तरसे ॥ इति श्री राधा विलास द्वारका दास कृत संपूर्ण समाप्तः वैसवारे के निवासी श्री राम पडित ने स्वपठनार्थ चैत्र सुदी दशमी सवत् १९२८ विक्रम वर्ष में लिखा ॥ जै भगवान । ॐ शंकरायनमः ॐ गरुड़ ध्वजायनमः ॥

विषय—गणेश जी, गगा जी, वैद्य लीला, गेंद लीला, नाग लीला, मालिन लीला, वशीकरन चंद्रखिलौना, विसातिन लीला, दधि लीला, मनहारिनि लीला, दान लीला, पनघट लीला, नाग लीला, पडित लीला, ख्याल आशकाना, चौमासा, वारहमासा, रावन मदोदरी, शंकर के ख्याल आदि ।

संख्या ११४ बी राधा विलास, रचयिता—द्वारकाप्रसाद (हरदोई), कागज—

देसी, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—४५०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर ब्रजभूपाल सिंह, ग्राम—सिकराबाद, डाकघर—मुरादाबाद, ज़िला—उन्नाव (अवध)।

संख्या ११४ सी राधा विलास, रचयिता—द्वारकाप्रसाद (हरदोई), कागज—देसी, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५०, पूर्ण। रूप—साधारण, पद्य। लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—पं० शिवदुलारे, ग्राम—लखनपुर, डाकघर—मगरैर, ज़िला—उन्नाव (अवध)।

संख्या ११५ ए तत्त्वज्ञान की बारा मासी रचयिता—द्वारका प्रसाद (मुहम्मदपुर), कागज—देसी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा मनोहरदास, ग्राम—ककरार, डाकघर—मवई, ज़िला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ तत्व ज्ञान की बारा मासी लिख्यते ॥ चैत चिंता सोच बाढ़यो मोह माया बस रह्यो। सखि आस त्रिसुना में परयो त्रिय रात सुखमा में गयो॥ ईं काम बस कंदु कुंजन के फिरि अगिन के सेवक भयो। त्रिय गर्भ में रक्षा करी तेहि नाम पौढ़े ना कह्यो॥ मास बैसाख॥ बैसाख विषय बयारि में सखि भोग जग लगो भयो। *गुर ईस दीनदयाल अस को नाम अमृत रस दियो॥ अभिमान करते विष हरयो सुधि* चाह तन निर्मल भयो। गुरु शब्द टेक सुजान सिष को नाम अब हित सों लियो॥

अंत—मास फागुन॥ फागुन फाके रही सब न फाग गयो आप में सब आप ते संताप दूरि बसी अपने देस में॥ न रीति भांति न बैर न कुल न जाति पांति न जगत में। पथ रहे सब से अलग ह्वै मिलि रह अपने पीव में॥ निर्गुण सर्गुन सब कहत कोई बिरला करत विवेक हैं॥ मैं गुरुन के मत बूझि के यह कही बारह मास हैं॥ सो धन्य जो यह सुनि गहैं तेहि धन्य जननी तात हैं। अस द्वारका पांप पतित पावन फिर न आवत जात हैं॥

विषय—जीव को शिक्षा दी गई कि जब मनुष्य जन्म के लिये माता के उदर में आता है तो उदर में हर एक प्रकार का दुःख भोग कर भगवान से प्रार्थना करता है फिर जन्म लेकर उन बातों को भूल जाता है और भगवान के भजन का नहीं करता आदि वर्णन॥

संख्या ११५ बी तत्त्वज्ञान की बारामासी, रचयिता—द्वारकाप्रसाद उपनाम सुकदेव (मुहम्मदपुर) कागज—देसी, पत्र—१४, आकार—४×३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण। रूप—नवीन पद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ = १८७४, लिपिकाल—सं० १९५५ = १८९८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामदुलारे पाठक, ग्राम—सरोसा, ज़िला—उन्नाव (अवध)।

संख्या ११६ चौताल निवारयदि, रचयिता—द्विज गुरदत्त कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार—१० × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य। लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भगीरथप्रसाद, ग्राम—डरका डाकघर—कुंडौर, ज़िला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चौताल चिंतामणि ॥ दोहा ॥ श्री सीता वो राम के गुरु पद धरि निज भाल । अव फाल्गुन की गवनई वरनत हौं चौताल ॥ जानि धरहिं जो कठ महँ चिंतामणि चौताल । होहिं प्रसन्नित जक्त मैं सोभा विपुल विसाल ॥ चौताल ॥ गज वदन सकल सुख सदन महेश पियारे । मोद निधान जहान जान जस जासु इन्दु उजियारे ॥ करि निज नयन चकोर निहारत सुरस कलनि भेप विसारे ॥ महेश० ॥ ब्रह्मादिक पूजत सिद्धि सराहत हृदय अपारे ॥ दधि अक्षत फल फूल दूब दल मोदक धर वारे ।' महे० ॥ आठ सिद्धि नव निधि के देत मंगल मय जक्त मझारे ॥ सुमिरि नाम नर सुरपुर पावत जस भनत अमंगल हारे ॥ महे० ३ ॥ ते सब भये जक्त मैं जाहिर जेहि करि कृपा निहारे । द्विज छुट्कुन कर जोरि मनावत गावत पद करहु सम्हारे ॥ महेश० ॥ ४ ॥

अंत—॥ उलारा ॥ वन भीतर मोहन दधि लूटे ॥ ग्वाल वाल सव संग रहत है निज ग्वालिन को संग छूटे ॥ वरवस पकड़ि लेत मग माहीं झक झोरन से लर टूटे ॥ × × × ॥ ठुमरी ॥ सँवलिया को कौने वन ढूंढन जाऊं ॥ गोकुल ढूंढ़ि वृंदावन ढूंढ़ा ढूंढ़ फिरी नँद गाऊ ॥ सांवलिया को सूरस्याम मोहि आनि मिलावो चरनन की वलि जाऊं ॥ ठुमरी ॥ मोरा चातुर श्याम सेहि मन अटका ॥ वतावो सखी कोई जादू लटका ॥ सुलतान पिया विन चैन न आवे मोरा मन रहतु है भटका भटका ॥

—॥ इति चौताल चिन्तामणि समाप्तम् ॥—

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १२ तक—मंगला चरण, शिव तथा राम की महिमा, जगदम्बा की विनय, विनय के कुछ पद (२) पृ० १३ से पृ० ३० तक—रामचन्द्र जी की विनय, राधाकृष्ण का फाग । राधा, कृष्ण, और गोपियों सम्बन्धी कुछ गीत राम तथा जनकपुर की स्त्रियों के सम्बन्ध के कुछ गीत । (३) पृ० ३१ से पृ० ६० तक—उपालम्भ, रति, परिहास, सौंदर्य, उपदेश, वियोग तथा संयोगादि संबधी गीत । अन्य सुरति दुःखिता नायिका के वचन । जनक को कौशिक द्वारा राम का परिचय कराया जाना । विभीषण द्वारा राम को समझाया जाना । नायिका का पतंग उड़ाना रंग खेलना कुछ प्रेम संबंधी गीत ।

संख्या ११७. मंगल आरती, रचयिता—द्यानतराय, कागज—साधारण, पत्र—५, आकार—६ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, कटरा मेदनी गंज, डाक-घर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—अथ मंगल आरती राग भैरव में लिख्यते । श्री मंगल आरती कीजे भोर । विघन हरन सुख करन किरोर ॥ अरि हंत सिद्ध सूर उव झाइ । साधु नाम जपिये सुप-दाइ ॥ १ ॥ नेमि नाथ स्वामी गिर नार । वास पूज्य चंपा पुरधार ॥ पावा पुर महावीर मुनीश । गिरि कैलास नमो आदीश ॥

अंत—मंगल दान सील तप भाव । मंगल मुक्ति-वधू को चाव ॥ द्यानत मंगल आठौ जाम । मंगल महा भक्ति जिन स्वामी । मंगल आरति कीजे भोर । विघन हरन सुप करन करोर ॥ ८ ॥ इति मंगल आरती संपूर्ण शुभमस्तु ।

विषय—जिन देव की आरती ।

संख्या ११८. आल्हा खंड, रचयिता—संग्रहकर्ता सी. ई. इलियट (फर्रुखाबाद) कागज—देशी पत्र—३१०, आकार—१२×८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५६७० खंडित । रूप—दीमक लगी हुई, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९१० प्राप्तिस्थान—लाला नारायन दास हलवाई, ग्राम—महेवा, डाकघर—खीरी लखीमपुर, जिला—खीरी (अवध)

आदि—पृथ्वी राज का विवाह ‖ संवत् ११४८ वि० मालिक परिहार जरई वाले की बहिन अगमा का विवाह महाराजा पृथ्वीराज से हुआ था और संवत् ११६४ में महाराजा पृथ्वीराज की राजा जै चंद राठौर वंसी कनौज के महाराज की कन्या जो रानी से उत्पन्न हुई थी उस संजोगिनी नाम सुंदरी को अति युद्ध करते हुए दिल्ली को लाय के विवाहा उस समय में रतीभान के पुत्र लाखनिराजा तीनि वर्ष के थे राजा जयचंद की स्वयंबर अपनी बेटी संजोगिनि का किया था । उसमें सब राजाओं को बुलाया था और पृथ्वीराज को नहीं बुलाया था

अंत—ताहर बोले तब क्षत्रिय से तोपन बत्ती देउ लगाय । धुआं उड़ानी दोनो दल में सूरज रहे धुंधि में छाय । गोला ओला के सम बरसे गोली मघा बूंद झर लाय । एक कोस की गोला पहुंचे गोली २० खेत की जाय चारि घरी भरि गोला बरसो तोप लाल बरन हुइ जाय ‖ तोपें छांडि दई ज्वानन ने कर में कई सिरोही काढि । ढेड़ कदम को अरसा रहिगो सरसट चलन लगी तलवारि । चले सिरोही माला साही जो बूंदी की असल कटार । ऊमा गमके था एक भीतर करि करि गिरैं सुघर था ज्वान । बेला रानी के डपटनि में कोई कुंवर न आई पांच सत्र सिपाही ताहर वारे अपने डारि डारि हथियार भाग्या बहायो तब ताहर ने भी बेला से कही पुकारि सम्हारो भला रण खेतन में तुम्हारो काल रहो नगिचाय ‖

विषय—महोबे की पहली लड़ाई, संयोगिन का स्वयंबर, महोबे की दूसरी लड़ाई, मांडौ की लड़ाई, सिरसा की पहिली लड़ाई, नैनागढ़ की लड़ाई, पथरीगढ़ की लड़ाई, बौरीगढ़ की लड़ाई, नरवर गढ़ की लड़ाई, दिल्ली की लड़ाई, मल्ला का ब्याह, कमायूं की लड़ाई, मुलिगान का ब्याह, बुखारे की लड़ाई, पोपू का ब्याह बलख बुखारे की लड़ाई, इसक हरण, आल्हा निकासी पूड़ी कामरू देस बंगाला की लड़ाई गाजर की लड़ाई, सिरसा की दूसरी लड़ाई कीरत सागर भुजरियों की लड़ाई, आल्हा मनौआ, मढ़िया बिहारि की लड़ाई, बेला के गौने की लड़ाई, बेला के गौन की दूसरी लड़ाई बेला व ताहर की लड़ाई, चंदन बाग कटाने व चंदन खंड उगाइबे की लड़ाई, बेला के सती होन की लड़ाई, आदि लड़ाइयों का वर्णन ।

संख्या ११६ ए. आनंद बदनी, रचयिता—बाबा फकीरदास (नरायनपुर) बहराइच । कागज—देशी, पत्र—१२८, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६६, पूर्ण रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—

१२३५ फ० = १८२७ ई०, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा किशोरी दास, ग्राम—नरोत्तमपुर, डाकघर—चेहड़ा, जिला—बहराइच (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ प्रथम गुरू की बंदना तिमिर दृष्टि मिटि जाइ। साहेब सब घट भीतर नैनन में दरसाइ ॥ १ ॥ उकार मुल श्री भाल मुकुट मनि रवि ससि गुज विहार ॥ दास फकीर के हिरदै वसौ धुनि उपजै नाम तुम्हार ॥ २ ॥

अंत—नैन झलके जोगी अवल चढाव ॥ तन धन देखि जनि बौरावो करौ भजन अस पैहै न दाव ॥ आसन अधर पवन परभाव। आवत जात सोहे गम गाव ॥ उनि मुनि आगे अग्र अगोचर त्रिकुटी मा बैठि के ध्यान लगाव ॥ तन तकिया मन नाल बजावो पाच पचीस का घेरि लै आव। सुख मन सोधि समुझि घर आवो सूनी महल लै सेज बिछाव ॥ उनि मुनि अगर भई मोह छाही दास फकीर तह बैठि जुड़ाव ॥ इति श्री आनन्द वर्द्धनी ग्रंथ सब्द दास फकीर कृत सम्पूर्ण समाप्त लिखत रामदास सवत १९२७ वि० .

विषय—ईश्वर निराकार साकार जीव आत्मा राम नाम आदि पर शब्द वर्णन।

संख्या ११६ बी. बाबा फकीरदास की बानी, रचयिता—फकीरदास (नरोत्तमपुर), कागज—साधारण, पत्र—१२६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप्) २०००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१२३५ फ० = १८२७ ई०, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामगिरि महंत, ग्राम—केसौपुरा, डाकघर—तबौरा, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बाबा फकीरदास की बानी लिख्यते ॥

अंत—गगन में झरि बरषे वह नूर। बिन घन बदा छटा बिन बादर दामिन दमकै दूर ॥ १ ॥ दे दृग अजन देखु निरंजन बाजत अनहद तूर ॥ २ ॥ दास फकीर संत दीठ सोई दूनौ दस हाल हुजूर ॥ ३ ॥ अटरिया छवि झलकै करतार। ससि पर सुर सर पर सीस है सोभा अगम अपार ॥ १ ॥ चांद सुरिज दिवस न रजनी बिन दीपक उजियार ॥२॥ सेस महेस विरंच विधि वरनै तेऊ न पावत पार ॥ ३ ॥ दास फकीर सत दीठ सोई दोनौ कुल उजियार ॥ ४ ॥ इति श्री दास फकीर की बानी सपूर्ण सन् १२३५ फसली लिखा जवाहर दास सवत् १९२७ वि० जो देखा सो लिखा ॥

विषय—ईश्वर भक्ति, साधु के लक्षण आदि वर्णन ॥

विशेष—११९ ए के समान ही इसका भी पाठ है।

संख्या ११६ सी. ज्ञान की गारी, रचयिता—बाबा फकीरदास (नरोत्तमपुर), कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुष्टुप्) १६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१२४० फ० = १८३२ ई०, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा किसोरी दास, ग्राम—नरोत्तमपुर, डाकघर—चेहड़ा, जिला—बहराइच (अवध)।

आदि—श्री गुरु जी नम। श्री गणेशायनम. अथ ज्ञान की गारी लिख्यते ॥ सुनौ सुरति सोहागिल हो कि देखौं पिय केरी सेज बनी मोती झालरि झलकति हो कि बंद नेवार अनूप तनी ॥ २ ॥ बाजै सुरग बसुरिया हो कि ललित पिया केरी सेज बनी ॥ ३ ॥

बाजै आनंद नगरिया हो कि राग छतीसौं गाइ बनी ॥ ७ ॥ सई देखौ सखि साहेब हो कि भाति जोति झोलाझल बनी ॥ अई अमल तुम्हारा हो कि पायेउ समय सम्द घनी ॥ ६ ॥ दखो आगम तुव अटरिया हो कि बाजत अनहद नाद घनी मुल बेल सी पिअरिया हो कि सूनी महल सत रूप रनी ॥ ८ ॥ पहिरौं प्रेम चुनरवा हो कि बैनु काजर केरी रज बनी ॥ ६ ॥ मनीदास फकीर जन हो कि छै कै पिया कै सेज चुनी ॥ १० ॥

अंत—गारी। बिरहा अगिन तन लागि सकल मर्म भागि भागी हो॥ सुरति चली सत लोक सकल मब त्यागी हो॥ १ कठिन नैहर के लोग करै सब हाँसी हो। हम भन बिरह वियोग प्रेम रस पागी हो ॥ २ ॥ छांड़ीं कुल अकाल लोक परिवार हो। गुरु के बचन उर लाग सलकत गरे माल हो ॥ ३ ॥ कर्म उर्म की मधि किम धर्म साटा हो। अब देखौं गगन अटरिया जह पुरुष अकेला हो ॥ ४ ॥ जाके रूप न नाम हाड़ ना देही हो। पुहुप बास मन भँवर बासा मांहि हो ॥ ५ ॥ यहै रीति कुल धर्म सत जन भावइ हो। लागि बिरह सिकोर दी जानि छिपावन हो ॥ ६ ॥ छके नगर के लोग सौ जस्म मथाती हो। सत गुरू के उपदेस तो मन सपराती हो ॥ ७ ॥ छूटि गयउ व बहार एक रंग लागी हो। सब भरे है एक प्रन्नाम प्रेम रस माती हो ॥ ८ ॥ एहै रीति पिया मिलइ सत करि भावउ हो। हम भव कीन पुकार जगत सुनि आवइ हो ॥ ९ ॥ चारि कुगुन बचे हार सूठ नहिं भापा हो। सुनै कोइ हित हमार अंत नहिं पाया हो ॥ १० ॥ द्वादश बावा बचै अमै भनकार हो। गेर ही मधि पर सोहत पुरुष हमार हो ॥ ११ ॥ जो सखी होय हितमार तो पिय को मिलावउ हो। जरा मरन छुटि जाइ बहुरि नहिं आवइ हो ॥ १२ ॥ सरिता धार अनेक नीर सब एकइ हो। अम जो जानु सोहागिल पिया का भेंटइ हो ॥ १३ ॥ मर्च मई जा रूप भई सब एकइ हो। सुनु सखि होइ मयान चर्कै सत लाकइ हो ॥ १४ ॥ जैसे नीर और छीर मिलि नहीं वृझा हो। ऐसे पीतम सनेह सखी जेहि लागइ हो ॥ १५ ॥ अम जो होइ विराग प्रेम हिय जागी हो। माहत दास फकीर हरै बर मार्ग हो ॥ १६ ॥ इति ज्ञान की गारी समाप्त लिखतं रामदास संवत १९२७ वि० ॥

विषय—ज्ञान की गारी जो साधुओं व महात्माओं के गाने के योग्य वर्णन ॥

संख्या ११९ डी) गारी ज्ञान की, रचयिता—बाबा फकीरदास, कागज—देशी पत्र—८, आकार—१० × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९७० क० = १८१३ ई० लिपिकाल—१९३० = १८७३ ई० प्राप्तिस्थान—बाबा राम गिरि महंत, ग्राम—बेमोपुर, डाकघर—तर्बोसा, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि-अंत—११९ सी के समान (केवल आरम्भ में 'श्री गुरु जी सहाय' नहीं है)।

संख्या ११९ ई होरी ज्ञान की, रचयिता—बाबा फकीर दास (बागम पुर), कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५०, पूर्ण। रूप—प्राचीन पद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—

१२३८ फ० = १८३० ई०, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा किसोरीदास, ग्राम—नरोत्तमपुर, डाकघर—बेहटा, जिला—बहराइच (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ शब्द होरी ॥ जोगिया तोरे कारन अब जोगिन भइउंरे। घर नही चैन दैन नहीं आगन दिल बिच दरद भई रे। पांच पचीस सगति परि गये पिया सुधि भूल गई रे ॥ १ ॥

अंत—होरी। पिया के सग खेलू री होरी। नैहर नारि पिया पर देसा केहि विधि फाग रचोरी ॥ काह करौं कछु बसि नहि मोरे सखी कैसे सिंगार करोरी ॥ १ ॥ कनक नादन पिय फाग रचो है छवि रग सुगंध बनोरी। त्यागु सखी कुल कानि लाज सब पिया घर धाइ चलोरी ॥ २ ॥ विविध प्रकार के वाजन वाजत बहु विधि राग घनोरी ॥ सुर नर मुनि जेहि ध्यान न पावैं शेप महेश खड़े कर जोरी ॥३॥ गाजत शब्द सार सोई साहेब तहा सखी धाई चढ़ोरी ॥ दास फकीर सरनि सत गुरु की चरनन सीस धरोरी ॥४॥ इति श्री ज्ञान की होरी समाप्त लिखत राम दास सवत १९२७ वि० श्री शकर की जै श्री गुरु जी की जै ॥

विषय—साधुओं व महात्माओं के गाने योग्य ज्ञान की होरी ॥

संख्या ११६ एफ. होरी ज्ञान की, रचयिता—फकीरदास (नरोत्तमपुर), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ = ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०५, पूर्ण। रूप—प्राचीन, पद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—१२३८ फ०=१८३० ई०, लिपिकाल—१९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामगिरि महंत, ग्राम—केसौंपुर, डाकघर—तबौंरा, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शक होरी के लिख्यते डर लागै पिया से कैसे मै खेलौं होरी ॥ ए नैहरवा में आनि भुलानिउ सुधि विसरी पिया तोरी। औगुन बहुत नहीं गुन एकौ रहेउ मैं विषय रग घोरी ॥ १ ॥ पाच पचीस संग होलिहरवा तिन सग निकर न पावउरी। कैसे रग पिया पर डारौं अलप धैस बुद्धि थोरी ॥ २ ॥ पिया मोरे ऊंचे अटा पर बैठे रहेउ मै नजरिया जोरी। पल छिन कल न परे विन देखे जगत जेठनिया की चोरी ॥ ३ ॥ अब की निहोर कोर भरि चितवत छूटे ना दृढ़ डोरी। दास फकीर दरस पिया फगुवा मागत हौं कर जोरी ॥ ४ ॥

अत—लागि वसंत सीस दिहेउ चरनन नाम सरनि मै पायोरी। कपटी कुटिल कर्म को हीना सीस चरन तर नायोरी। गे सब धोय कर्म केफंदा गुरु दरियाव नहायेउरी ॥१॥ इत उत झकनि सबै विसरायो एक डोरि हिय लावोरी। कुमति की होरी ज्ञान का लूका नाम कै आगि निज लावोरी ॥ २ ॥ हिया वैराग और नहिं दूजा प्रेम मृदग बजावोरी नाम रसनि हिय लागि हमारे दुविधा दूरि बहावोरी ॥ ३ ॥ भा भर्म दूरि कर्म काया के लोक लाज विसरावोरी दास फकीर दया सत गुरु की भक्ति अभै वर पावोरी ॥ ४ ॥ इति श्री होरी ज्ञान की सपूर्ण समाप्तः सवत १२३८ फसली लिखा जवाहर दास सवत १९३० वि० जो देखा सो लिखा ॥

विषय—ज्ञान की होली

संख्या ११६ डी. ज्ञान का बारह मासा, रचयिता—बाबा कबीरदास (नरोत्तमपुर), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१२३८ फ० = १८३० ई०, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा किशोरीदास, ग्राम—नरोत्तमपुर, डाकघर—बेहड़ा, जिला—बहराइच (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ ज्ञान का बारा मासा लिख्यते ॥ प्रथम दस दल उदय प्रथम चहुं दिसि धावहिं ॥ होत हरित कुमति कपर सब सु धर नर ना भावहीं ॥ १ ॥ महा शुगुति धीर तकि सत संगहि है जाये। आषाढ़ मासा छोडि ते नाम सांद है छाइये ॥ २ ॥ सावन आसन पदुम करि के भवन पर धुनि गावहि। कोटि परम मधम सुरस ऊपर मधुर धुनि गति पावही ॥ ३ ॥ मन पांचों तात आगे ताहि पर चलि दरसना। सुरति डोरी लेनु मनुवां नाम मूलत हिंडोलना ॥ ४ ॥

अंत—चलु दम सजन के गारी। तजु मोह माया ठग करी ॥ पीवह अमी मत ठेला ॥ छकि पगि होत मतवारा। छकि पगि मारग चार्ष ये सत मय प्रीति लगावे ॥ कह दास कबीर पुकारी गुरु चरन सरन बलिहारी ॥ इति श्री ज्ञान की बारह मासी कबीर दास कृत समाप्तः लिखितं राम दास स्व पठनार्थं ॥ संवत १०३० वि० श्री राम जी सदा सहाइ ॥

विषय—ज्ञान की बारह मासी

संख्या १२० हरि भक्ति सिद्धांत समुद्र या श्री कृष्ण मुनि विरदावली, रचयिता—बन सिंह या हितराम (वृंदावन) कागज—साधारण पत्र—११, आकार—११ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ —१२ परिमाण (अनुष्टुप्)—२०५६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२२ = १६६५ ई०, लिपिकाल—सं० १८९६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री छत्रपति सिंह रईस, कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री मतेरामानुजायनमः ॥ × × ×

श्री हरि भक्ति सिद्धांत समुद्र विषय ग्रंथ लिख्यत। श्री नमामि परमात्मा कृष्णचंद्र सुख कंद। जग कारण कल्याणमयं निज्यानंद सुछन्द ॥ १ ॥ सकल विघन हरता हरी मंगल करता सोइ। जग भरता धरता सदा सदा मति मन मंगल होइ ॥ २ ॥ कवित छप्पय—वामन आयत वसुदेव देवकी गर्भ भव। जनु घर सेवक सभा पाप किय दूरि भुजा जब ॥ पिर पर के सुख हरन महा सौभा सु मनित सुगर। मन पुर युवती वृंद निरखहि रूपछाये काम सुगर ॥ सांई सदाइ हम कहें सदा, हित चित करि निज मन धरन सकल लोक पंडित चरण, जयति कृष्ण अभरन सरन ॥

अंत—ईई जानि आयो सरन गुन गायो मैंदमति। मन्दो बुरा तउ रावरो। कीजै कृपा कृपाल ॥ जब लगि प्रभु श्री कृष्ण को रहे लोक के माहिं। तबलौं इह हितराम कृत ग्रंथ रहौ सब ठांहि ॥

× × × ×

इति श्री रामहित दास विरचिते श्री राधा वल्लभ चरण कमल प्रासये सुगमो पायो मोक्षाइरीयसी सब शास्त्र सार श्री कृष्ण श्रुति विरदावली ग्रंथ पूरनतावरन अष्टा-दश लपी । ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्या रविवार शुभ भवेत् संवत् १८९६ ॥

विषय—श्री कृष्ण की सर्वोपरिता, उनकी भक्ति, वैराग्य, मोक्ष, जीवात्म-तत्त्व, परम प्रेम, नवधा भक्ति, शरणागति, प्रेमाभक्ति, दंपति प्रेमोल्लास, युगल रूप की एकता, वृन्दा-वन माहात्म्य, अष्टसखी, राधावर, गोपियों और राधा की वदना ।

विशेष—(१८) पृ० १०९ से पृ० ११० तक—ग्रंथकार के गुरु कुल का वर्णन । उदया चल श्री व्यास उजागर, तहां प्रगटे हरिवंश विभाकर ॥ श्री हरिवंश सु हरि अव-तारू । प्रगट कियो जिन तत्त्व विचार ॥ अननि भजन जुत प्रेम वतायो । मत्र हिन को निस्तार दिखायो ॥ चौरासी पद कीने ऐसे । कहे न पुनि कहि है कोऊ जैसे ॥ जुगल किशोर मंत्र ते आही । और मत्र कोऊ ऊपम नाहीं ॥ स्मरण जाप करें केऊ जन । जुगल किशोर लहै वृन्दावन जिनकै प्रगटे श्री वन चंद । लीला विग्रह निग्य स्वछंद ॥ तिनके सुत भये श्री सुन्दर वर । करुणा निधि अगनित केहुँ गति धर श्री दामोदर सुत कहि तिनके । पार नहीं अगनित गुन जिनके जिन नर नर नातिन को लीनों । अभेदान सवहिन कहुँ दीनो ॥ परम क्रपाल विलास तासु सुत । निज इष्ट साक्षात्कार जुत ॥ अरु जितने गुन है वन माहीं । सारद पारहि पावत नाहीं ॥ अगनित गति दाता सुख दाता । तत्त्व ज्ञाता जग माहिं विख्याता ॥ तिनके गुन श्री हरि के गुन सम । अवर नाहि दूजो कोइ उपम । फते सिंह तिनको भयो अनुचर, मत्र दयो दीनों सिरपर कर ॥ अननि भक्ति दई राधा वर की । त्रास मिटाई जम के घर की ॥ करिके कृपा आपनो जानी । सरना लेत अनुग्रह मानों ॥ तासु कृपा ते भयो उजास । प्रगटत अनुभव वचन प्रगास ॥ श्री गुरु जस उचार वतायो । तातें मैं प्रभु को गुन गायो ॥ कीरत न भक्ति मुखि कलि माहीं । नाम उचारि जगत तरि जाही ॥ मो सौं कहो गाइ हरि के गुन । अरु नित प्रति संतन मुख तें सुन ॥ इह करि जग तरिहै अनयास । लहि है इष्टदेव को पास ॥ सोई वचन मैं लै धारौंहि । हरि गुन कथन भयेउ शिव जिय ॥ तिहि लगि मैं इह ग्रंथ वनायो । जो मत कृष्ण वताओ । इह विधि मैं निश्चय सुवखानी । जो गुरु ग्रंथ सत पर मानी ॥

× × × ×

(२०) ग्रंथ कर्त्ता का वंश परिचयः—

अति पवित्र सूरज वंस । जिहि जग कीर्ति प्रसंस ॥ तहाँ अवतरे श्री राम । नर निरत लै जिहि नाम ॥ कछवाहि तिहि कुल जानि । धुर धर्म्म क्षत्री पमानि तिहि मध्य सेखौराव । अति सूर धर्म प्रभाव ॥

पृ० १२०—तिहि वंश श्री जगन्नाथ । पुनि रूप जिनकी गाय ॥ संतन कहे उच भक्त । जगु तें भये नहिं आसक्त ॥ तजि संसार जानि असार । व्रज मधि कीन्ह वास विचार ॥ जुगल उपास जिनकै रासि । इह लखि वसे वृंदावास ॥ सिष्ट सलावही जिहि संत । पुनि गुमना सके जुअनंत ॥ तिहि सुनि राम साहि नरेस । जस विख्यात अति देस ॥

मित दातार सूर सुजान। सब जस करत जासु बखान॥ धर्मात्म हरि गुन भक्त। पुनि श्री कृष्ण रामासक्त॥ तिनके फतेसिंह कुमार। जिस हिम एक भक्ति विचार॥ पुनि बुद्ध रच्यो ग्रंथ पवित्र। जामैं कृष्ण भक्ति चरित्र॥

पृष्ठ १२१—ग्रंथ निर्माण काल —

पुनर्वस सु नक्षत्र के, चतुरथ चरण सुठाम। फतेसिंह सु प्रसिद्ध जग, जन्म नाम हितराम॥ नयन[२] नयन[२] रिषि[७] बुद्धि[१] अब्द शुभ अति मंगल जब। पुनि पवित्र बैसाख सुकुल पक्ष तीज भये तब॥ तहाँ प्रगट भयो ग्रंथ कृपा श्री जदुवर की करि॥ पढ़ै सुनै हिय धरैं ताम कुल कोटिक उधरि॥

ग्रंथ के सदैव रहने की प्रार्थना।

संख्या १२१ अक्षरावली, रचयिता—गजाधर दास (मुहामठ, सुलतानपुर), कागज—सफेद, पत्र—४०, आकार—७½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १७, परिमाण (अनुष्टुप्) ४२१, पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८६ = १८२९ ई० लिपिकाल—सं० १९८५ = १९२८ ई० प्राप्तिस्थान—पं० त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पांडे डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली (अवध)।

आदि—सवैया—आदि अंत की बात न कोई कहै, सब बीच की बात बताबते हैं। बिच आप किये भरि आप सबै, आदि अंत को भेद न जानते हैं॥ बहु भेष अनेक भए जग में, अपने अपने मत मानते हैं। कहै सत्य गजाधर सत्य मता, विरला कोउ संत पिछानते हैं॥ आयु २ के जायु अचेत भया, महा मोह की नींद मे सोवता है। यह जन्म पदारथ पाय नरा, काहे मूरख बादि ही च्योवता है॥ अस औसर फेर मिलैगा नही, काहे अमृत में विष बोवता है। कहै सत्य गजाधर नाम बिना, आदि अंतहु में सब रोवता है॥

अंत—संवत अठारह सै छियासी मास जेठ विचारिया। ससि पक्ष तिथि नवमी सुभित शुभ बार बुध निहारिया॥ स्थान तीरथ राज विदित प्रयाग अति सुख कारिया। तहँ ग्रंथ सम्पूरण भयो अक्षरा बली विर धारिया॥ यह भेद अगम महा माया नाम विरतम धारिया। सब ग्रंथ पंथन की मता, अक्षरा बली महँ कारिया॥ त्रैलोक्य की उत्पत्ति यामें कहि दिया विस्तारिया। कहते गजाधर सत्यमत अक्षरा बली निर्धारिया॥

विषय—योग की रीति से भजन करने की विधि।

संख्या १२२ श्री राधारमण जी के नित्य कीर्तन के पद, रचयिता—गोस्वामी गल्लू जी महाराज, कागज—देसी, पत्र—१४, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामभद्र पुजारी, ग्राम—झझा बझा, डाकघर—मजगवाँ, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री राधा रमणो जयति॥ अथ गोस्वामी श्री गल्लू जी महाराज कृत श्री राधा रमण जीके नित्य कीर्तन के पद लिख्यते॥ तत्र मंगला चरण के पद॥ जय जय महा प्रभु जगत वंदन श्री शची नंदन हरे। जय अद्वैत आनंद कंद नित्यानंद मन वांछित करे

॥ १ ॥ जय गौर राधा भाव भूषित श्याम धामल उर धरे ॥ जय पतित पावन दुग्ध नगावन दीन जन अंकन भरे। २। जय सकल ग्राता प्रेमदाता पुलक तन अश्रू झरे। जय कीर्तिनानंद सिंधु निम गन सगुन व्रज ते अवतरे ॥ ३ ॥ जय रूप सनातन जीव श्री गोपाल भट्ट रघु युग वरे। जय वाम चरणन पास सागे मजरी गुण अनुचरे ॥ ४ ॥ जय प्राण धन राधा रमण श्री गोपाल भट्ट जू के लाडिले। जय श्याम सुंदर अधर मुरली वजत तानन आडिले ॥ १ ॥

अंत—फूल डोल चैत्र कृष्ण ॥ १ ॥ श्री राधा रमण झूलत हैं डोल ॥ हेलो मोर परव परवा के रस मय जुगुल किशोर ॥ रूप अमल छाके वाके दोऊ भरि भरि लेत अकोर ॥ कोऊ गुलाल उडावै सहचारि गावैं तानि रस वोर। कोऊ चमर दुलावै सजनी निरखि निरखि तृन तोर ॥ गुण मजरी गुलावी वागो पहिरे छवि नहिं थोर ॥ अखतीज ॥ श्री राधा रमण लाल अखतीज ॥ पहिरे चदन वागो अंग में प्रिया प्रेम रस भीज। १। देत असीस सखी जन जोवत वोवत सुख के वीज ॥ सारग गावैं सुख उपजावैं पावैं सीतल चीज ॥ पलक पवन की करैं परस्पर दोऊ अग पसीज ॥ गुण मजरि जल जंव भरत हैं लेत सेवा सुख रीझ ॥ ३ ॥ इति श्री गोसाईं महाराज गल्ल जी कृत राधा रमण जी के वर्पोत्सव के पद समाप्तम् शुभ मस्तु ॥ असाढ शुक्ला १५ संवत् १९३० वि० जै राधा रमण जी की ॥

संख्या—१२३. वैद्य प्रकाश, रचयिता—गनेसदास, (लवपुर, लाहौर), कागज—देशी, पत्र—१६२, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७४ = १८१७ ई०, लिपिकाल—सं० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला सीताराम वैश्य, ग्राम—सदारपुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ वैद्य प्रकाश लिष्यते। पूजौं श्री नरसिंव रवि मम हृदय कमल प्रकास। देह रोगादि रोग छुटकावौ जम फास विघन हरन जग सुप करन एक दंत गज माथ शिव गौरी सुत को नमो सकल शभु गन नाथ ॥ चौ०। प्रथम संभु सुत चरन मनावौं विघ्न दूर कर जग सुप पावौं ॥ पूजौं वहुर सारदा देवी। जिनके चरन कमल नित सेवी ॥ असुन कुमार सेवो धनवंतर। वुध क्षापन कम भवंतर ॥ वेद प्रकास रचो एक ग्रंथ। सेवौं जगत महा सुभ पथ। लवपुर ते जोजन त्रय जान। कान्हा ग्राम नाम इक मान तामें कवी गणेश इक होइ। ब्राह्मन वैद्य कहैं सब कोइ। वागभट्टादि ग्रंथ जिहि देषि। सुश्रुत चरक आदि पुनि पेषि। भाषा सुगम ग्रंथ रच देवे। लोकन हेत जगत जस लेवैं ॥ अथ दूत परीच्छा वैद वुलावन जो घर आवैं। जाके देषि भेद सब पावैं ॥ होवै सुंदर वली प्रवीना। वोलै मीठ होइ आधीना ॥ वैद हजूर भेंट जो धरै। रोगी तौ नीका प्रभु करै ॥ इति दूत परीच्छा।

अंत—इति-संवत कथन—अष्टादश सैह वरप जय वीते विक्रम राज। चौहत्तर उपरंत पै भाषा एह समाज ॥ कृष्ण पक्ष सावनि वदि पड़वा वुधवार लिषो ग्रंथ लवपुर विषै कवि गनेश रिद धार। मद्र देश में पुरी लाहौर। नृप रनजीत सिंह तिहि ठौर। वल

सो जिम जीते सब देस। रच्यो ग्रंथ तिहि राम प्रवेस। रच्यो ग्रंथ तिहि लाहौर ते बार। कोस। कान्हा नाम ग्राम निर्दोष। जो लाहौर ते कुजपुर आइ। मारग में तिहि को सुप पाइ। इति श्री राम सहाइ सुत गनेस दास वीरचिते वैद्य प्रकास ग्रंथ नाम मीमे समुद्देस संवत १९१० फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ पंचम्याम भृगुवासरे पुस्तक अवाहर लाल देव बकपुर ग्राम बासी लीपते प्रापमी अंबाला सुभ सोमसु जो पढ़ई अथवा चिकित्सा करइ सो फल पावै ॥ इति शुभम् ॥ राम राम राम सीताराम सीताराम ॥

विषय—वैद्यक

संख्या १२५ ए. परतत्व प्रकाश, रचयिता—गनेस जी (आगरा) कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७० रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा मनोहर दास, ग्राम—कक्कोरा डाकघर—सवाई, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पर तत्व प्रकास लिक्यते ॥ ब्रह्मादिक सब देवता जिनको करत प्रणाम। सो शिव सुत मेरे करौं सबही मन के काम ॥ जाके गुण गण गनतहू सेष न पावत पार। सो सिव सुत पर ब्रह्म है सब देवन को सार ॥ संस्कृत शब्द अपार अति भाषा कहूं बनाइ। देहि सुमति कै जिव समुझि कै भव सागर तरि जाई ॥ जगन्नाथ जाको गुरु ताको नाम गनैश। रामचंद्र सुत परम अब सो प्रसिद्धि सब देस ॥ ताने भग मैं यह रच्यो भाषा मत क हेत ताहि प्रसिद्धि करौं कहे आसा जीव सचेत ॥ माथुर जाति सुबुद्धि अति सावक दास प्रसिद्धि ताके श्रय बेटा भये जाके अतिही रिद्धि ॥ ताको मध्यम पुत्र शुभ भय्या सब कोई नाम। सो गनेश पति के चरण शरण गयो सुख धाम ॥ जैसे ब्योहारी सकल जिस दिन निज ब्योहार मन लगाइ के करत है तिम तुम ब्रह्म विचार ॥ परम आत्मा ब्रह्म नित्र एक अखंड अपार। ताके बिन जाने कोउ नहीं होत भव पार ॥

अंत—ग्रंथ अलौकिक यह रच्यो पर को तत्व प्रकास ॥ पूरण कृपा जापै भई सो जानै हरिदास ॥ सूहे वाली जा गली नगर आगरे बीच। तहाँ बैठि के यह रच्यो सोध्यो कहि है मीच ॥ इति श्री परतत्व प्रकाश ग्रंथ गनेस कृत समाप्त। लिखा रामदयाल अगरवाल सिवपुर कवार वदी ७ मी संवत् १९२८ वि०

विषय—भागवत के छठे स्कंध का संक्षेप

संख्या १२५ बी. परतत्वप्रकाश, रचयिता—गनेस जी (आगरा) कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—९ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, खंडित। रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० दीनानाथ मिश्र, ग्राम—फतेहपुर चौरासी, डाकघर—सफीपुर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि-अंत—१२४ ए के समान। पुष्पिका नहीं है।

संख्या १२५ ए. बुद्धि विलास, रचयिता—गनेसप्रसाद (फर्रुखाबाद), कागज—विदेशी पत्र—७२ आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—

१६०५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० गिरिजा शंकर, ग्राम—मोतीपुर, डाकघर—अलीगज, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बुद्धि विसाल लिप्यते ॥ प्रथम सुमिरि गणपति चरण कृत नवीन इतिहास। वार वार वानी मुमिरि वर्णों बुद्धि विलास ॥ १ ॥ आदि शक्ति महिमा अमित ध्यावत सुर तैंतीस शिव रानी जननी जगत करौ बुद्धि वकसीस। सोरठा। वाल्मीक रिषि व्यास सूरदास तुलसी सुजन। वदो केशवदास आदि सकल कवि सुमिरि मन। वदौ हितहरि वश गुरु पद कोमल कज सम। पुनि महिदेव प्रसंस करौ कृपा मन पर परम। कुडलिया ॥ राधा कृष्ण अनंत यश धरत सदा शिव ध्यान। ब्रह्मा सुर सनकादि मुनि भापत वेद पुरान ॥ भापत वेद पुरान युगुल वैंकुठ निवासी। तारे पतित अनेक नाम जिनको अवनासी ॥ कहैं गनेश प्रसाद मिटे सिगरी भव वाधा। कृष्ण कृष्ण दिन रैंन रटौ मन राधा राधा ॥ कवित ॥ शहर फरुर्खावाद काशी के समान शुभ वहत निकट सुरसरि सुपदाई है ॥ राज महंत संत वेद व्रत विस जप तप दान सनमान अधिकाई है ॥ मदिर महेश रिद्धि सिद्धि है हमेस गुण गाव गणेश लघुमति कविताई है ॥ भक्ति उपजावन वसत नर पावन वजार मन भावन विविध छवि छाई है ॥

अंत—॥ दो० । विटप कल्प जमुना निकट श्री वृन्दा वन धाम। निरपि निरपि दुति जुगुल मनोहर लजत कोटि रति काम चद्र जुग भामिनि सकल चकोर ॥ हिंडोला झूलत युगुल किशोर ॥ ३ सवन में सोहै वनवारी। अमित छवि श्री राधा प्यारी ॥ परस्पर सुख समाज भारी ॥ मुदित मन हैं सखिया सारी ॥दो० श्री हित प्रीतमलाल सुत पद पकज धरी ध्यान। गावैं दास गनेस देहु प्रभु जुगुल भक्ति वरदान। कृपा करि हेरो लोचन कोर ॥ हिंडोला झूलै युगुल किशोर ॥ इति श्री बुद्धि विलास गणेश प्रसाद कृत संपूर्ण संवत् १९२८ वि० श्रावण शुक्ल पंचमी।

विषय—गणेश वंदना। ख्याल गंगा जी का, आंखों का, कूंचे का, राम जन्म, कृष्ण जन्म, मंदोदरी का, चीर लीला, वारह मास्या, रावन मदोदरी, आदि राम वा कृष्ण आदि की लीला लावनी आदि में वर्णन ॥

संख्या १०५ वी. राग रत्नावली, रचयिता—गणेस प्रसाद (फर्रुखावाद), कागज—देशी, पत्र—९६, आकार—१० × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०८, पूर्ण। रूप—साधारण, पद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० गिरिजाशंकर, ग्राम—मोतीपुर, डाकघर—अलीगंज, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ राग रत्ना वली लिप्यते ॥ मंगला चरन लावनी रंगत मोहनी ॥ विदित लवोदर जग वदन। भजो गणपति गिरिजा वंदन॥ सीस राजत मणि मुकुट विसाल। तिलक केसर को सोभित भाल ॥ कुटिल भृकुटी जुग नैन रसाल। लसत उर नव रतनन की माल। दो०। गज आनन कुंडल श्रवण अरुण अधर छवि अंग। एक दंत सोभा अनंत लखि लजत अनेक अनंग ॥ अंग राजत विभूत वंदन। भजो गणपति गिरिजा नदन ॥ कपोलन पर घूंघुर वारी। जुगुल अलकै झलकैं कारी ॥ फवन पीतावर की प्यारी।

मुदित मन धारि भुजाधारी ॥ तामेंई थेई गिरत निरत करत गन राज छम छम छम छम झन न ना ना ना ना धम चौरासी रहे बाज ॥ छगी सब संग साज चप कन ॥ नमो गणपति गिरिजा नंदन ॥ गदा धाम सोहे पानि त्रिसूल ॥ हरत दीनन के मिस दिन सूल ॥ सकल सुख दायक मंगल मूल करत भक्तन की अर्ज कबूल ॥

पुष्पिका—इति श्री राग रत्नावली संपूर्ण समाप्तः लिख्यतं रामदयाल पांडे फाल्गुन बदी ३ संवत १९६६ वि० ॥ श्री राम राम राम

विषय—भागवत दशम की कृष्ण अवतार आदि रसकेली आदि में भाषा का गाया

संख्या १२६ ए. गंग पचीसी, रचयिता—गंग कवि, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण । रूप—प्राचीन, पद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२६ = १७६९ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा शिवपुरी, मुहल्ला काश्मीरी, लखनऊ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गंग पचीसी गंग कवि कृत लिख्यते ॥ भूतनाथ भव भीत विदारण भव भुज गाधि पहारं । जय जूट गंगाधर रजन धरा धर विकसत गारं ॥ कलित कलाधर ककसता इक गल कलि कस्तुभ विहारं । सांभू सांभु सदा सिव संकर मधुर चारं चारं । १ । काशी नाम चरण शरणागत अभिमत दुख विदारं । शशि सेखर सिव सिवद सिवाकर सम दम दमन सुदारं ॥ भैरव भुजग विभूषित भूषित भुजला दिय भवदारं । भवानंद भतारण शंकर मधुरे चारचारं ॥ २ ॥ गंग पचीसी मैं कहीं गौरि गणेश ध्याइ । सिव विरंचि को सुमिरि के रघुनंदन चितु लाय ॥ भूषन बरनन मैं करी सब सुमिरो चितु लाइ । धर्म विराजै अंग मों सकल पाप कटि जाय ॥ अर्ज करी महाराज सों चरण पकरि सिर नाय । भव सागर मोहि पारकर अपनी नाव चढ़ाइ ॥ छंद । पायन पीत पाग पोस कसि किंकिनी हीरा जड़े । जामा दुसाला पीत ओढ़ी रंग कुंकुम के परे । दोउ हाथ पहुँची मुद्रिका भुज भग लगो सब जग मगे । एक हाथ माभिन विराजै माल मोतिन की गरे मोती कंठीरें प्रथ्व मूले सुहाई कपोलन के तरे । कास अबिर गुलाल सोभित श्याम सिर चीरा पर । सुर सिद्धि की यह संपदा है मधुर सब देखत भर । एक कर कलित को कर गहे एक कर राखे गरे । सेस छवि नहिं जात बरनत अमल कविजन हैं परे ॥ अब गंग साहेब सरन आये सात जन्म के पातक हरे ॥

अंत—दाय हमारे तुम्हारी कृपा ते दौलति है तुम्हरे घर की । वृषभान के भौन सो कौन कमी जो है तेरे मुखे बड़ी कोमली की । चाकर हौं बिन दाम लिये कहा चोरि हौं सगरी नगरी की ॥ तुम चारक नाटक कोटि करौ मुरली तौ परी गहने दुकरी की ॥ तुम बंसी हमारी हमैं दिखरावो तुम्हारे मैं भूषन हाथ मिलावौं ॥ अपने कर सो तुम थामे रही अपने मुख सों मैं नेक बजावौं जैसी बजी यहि बाग के बीच मो तड़ाग के तीर की तान सुनावौं । जैसी बजी ही कदंब की छाह मो वैसीही राधिका आजु नचावौं ॥ जानत हौ मंजुरी बसियो और मन चाह कै मोहि नचावौं । कोऊ बावरी है सगरे ब्रज मैं मृग पालन के घर दर फिरावौं ॥ तोरहु सखा कदंब के पात अबै दधि माखन हाथ पचावौं ॥ वृषभान की सौंह करौं सिर को पै बिना दुकरी मुरली न दिखावौं ॥ दो० । तन मन सो दाया करी

वेद्र मे कृष्ण मुरारि । राधे जू के झपट के बांह दई गल डारि ॥ राधे जू के कंठ मों बांधी अपने हाथ । तिहिं पाछे दुलरी मिली चलो हमारे साथ ॥ प्रभु पीतावर मे छोरि कैं राधे दोट कर लीन्ह । एक सपी सो मागि के प्रभु को मुर्ली दीन्ह ।. उन दुलरी पाई आपनी उन मुरली पाइ आप । कहत सुनत पातक हरे कटे अंग के पाप ॥ सुभं भुयात ॥ सवत् १८२६ वि० आपाढ़ मासे शुक्ल पक्षे चोयस्यां ॥

विषय—श्रीकृष्ण का राधा की दुलरी चुराना इस पर से राधा का श्रीकृष्ण की मुरली चुराना, दोनों का झगड़ा पश्चात् दोनों का चोरी की वस्तुएं लौटा देना ।

संख्या १२६ बी. गंग पचीसी, रचयिता—गंग कवि, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६८ = १८११ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राय लाल जी, ग्राम—रसुआपुर, डाकघर—धौरहरा, जिला—सीतापुर ।

आदि—१२६ ए. के समान ही, केवल, प्रथम छंद (भूतनाथ · वारंवारं) नहीं है ।

अंत—इति श्री गंग पचीसी दुलरी मुरली का झगड़ा संपूर्ण समाप्त ॥ लिपा वेनी माधौ शुक्ल नेरी जिला सीतापुर तिथि सप्तमी श्रावण कृष्ण पक्ष सवत १८६८ वि० ॥

संख्या १२६ सी गग पचीसी, रचयिता—गंग कवि, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८७४ = १८१७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिव नोम सिंह, ग्राम—रामनगर, डाकघर—मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—१२६ बी. के समान ।

अंत—इति श्री गंग पचीसी गंग कवि कृत संपूर्ण समाप्त. सुभंभूयात संवत् १८७४ आसाढ़ मासे शुक्ल पक्षे चौथ बुधवासरे ॥

संख्या १२७ ए. लगडी रंगत (लावनी), रचयिता—गंगादास साधू, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१० × ६ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राम अधार मिश्र, ग्राम—नगर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ लंगडी रंगत की लिप्यते ॥ राग लावनी ॥ नेह करो मति नारी से नारी में नप सिप कपट भरा । राजा भर्तरी जोग लेके जंगल का राह धरा ॥ टेक । सोम नाम इक ब्राह्मण था वो ऊजन नगरी का वासी । गेह त्यागि के गया वो वन को वन के सन्यासी । प्राणायाम चढ़ाय समाधी खैंच गया वो तौं खासी । देख तपस्या हो गये उस पे अविनासी ॥ नारद जी ने अमृत फल इक लाय के उसके हाथ धरा राजा भर्तरी जोग ले कै जंगल का राह धरा ॥ १ ॥ अमृत फल कूं देषि विप्र ने अपने मन में सोच किया । मेरे लायक नही है जाय भूत कूं भेट दिया ॥ सो फल लपि भर्तरी भूप का अंतर

से हुलसा सु दिया। उसी समय में अपनी प्राण पिया ढूं सुला लिया। इसकी तुम का आदु सुंदरी ये अमृत फक रस का भरा। राजा भर्तरी जोग लैके जंगल का राह धरा॥

अंत—जिसको मैं दिन रैन चाहीं उसके चित चर्वेदार बसा। चर्वेदार का चित चपल चातुर गणिका से फंसा। उस वेश्या बेवकूफ का दिल मेरी दोस्ती परमयाम बसा। मुझको तो अब आकर वैराग्य रूप अजगर ने डसा। धिक रानी वेश्या औं नर धिक काम मोह विकार परा-राजा भर्तरी जोग लैके जंगल का राह धरा॥ ऐसा कर विचार राजा ने असार सब संसार तजा जाकर बन में मजा तन मन से सीताराम भजा॥ श्री रामानुज संप्रदाय गुरु तुलसीदास चरणों की रजा साधु गंगादास ने इस लोक ऊपर प्याल सजा। जो कामिनि से बचे जगत में उसका अंतःकरण ठरा—राजा भर्तरी जोग लै कर जंगल का राह धरा॥ इति साधु गंगादास कृत संगाी रंगत लावनी सम्पूर्ण समाप्तः लिखा सिरोमणि लाल वैश्य विर्धाली निवासी संवत् १९२४ वि०॥

विषय—राजा भतरी के जोग लने का वर्णन

संख्या १२७ बी पद लावनी, छंद चौपाया रचयिता—गंगादास साधू कागज—देशी, पत्र—२ आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य। लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राम अपार मिश्र, ग्राम—ग्रामनगर, डाकघर—कसीमपुर, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ राग लावनी छंद चौपाया लिप्यते॥ जयति जयति जय जयति जयति जय जय जय रामानुज सुकृत पाई। जयति पति जय जय जग ईश्वर जय जग कारण करुणाई॥ टेक। श्री असमदेशिक गुरु श्री रामानुज निज जन पाई॥ जगत जननी पतिराजय तन करि कृत सुबोध कृत जग जाकम्। जिहि जिहि जुग विगमत सुधर्म जग होइ अधर्म रूप विकराकम्॥ तब तब प्रगट स्वधर्म नाशिजन धर्म उथापित तब काजम्॥ निज आश्रित तिहि दैत अभयपद दुष्ट समूहन कई काजम्॥ जयति जयति जय जयति जयति जय जय रामानुज सुकृत पाई १॥

अंत—मध्य भर्ग आनंद करन अति मंजुल सम कोमल चरणम्। परम मंत्र उपदेश करत भव भीत सु जन आवत धारणम्॥ श्रुति विचार आचार निरत अमचार मार ततक्षण हरणम्॥ श्री गुरु तुलसीदास पद आनन्द विजन पोषण भरणम्॥ भूरि भाग्य गुरु देव मिले श्री रामानुज मंगल करणम्॥ इति श्री राग लावनी छंद चौपाया साधू गंगादास कृत संपूर्ण समाप्तः॥

विषय—गुरु रामानुज की स्तुति

संख्या १२८. सत्यनारायण कथा, रचयिता—गंगाधर शास्त्री (आगरा) कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६ परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, पूर्ण। रूप—प्राचीन, गद्य। लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८५७ वि०, लिपिकाल—सं० १९२१ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० सहजराम, ग्राम—सिप्पुर डाकघर—औरंगाबाद, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ सत्य नारायण स्वामी तिनकी अस्तुति करत हूं॥ कैसे

है सत्य नारायण नवा भोज नेत्र नवीन कमल मे नेत्र जाके लक्ष्मी जी महित चार भुजा धारण किये सुंदर है शरीर जगत जो सन्सार ताकी रक्षा के करन हारे दैत्यन के नाश करता ऐसे जो सत्य नारायण तिनको नमस्कार करत हू ॥ श्री राम चद्र लक्ष्मण करके महित सीता करके युक्त करुणा सहित सात्विक है सुभाव जिनको ऐसे रामचंद्र वैदेही जो सीता तिनको पद्मावत ऐसो जो मुखारविंद ताके ऊपर भवर लुभाय रहे है ॥ ऐसे सीता जी सहित पौलस्त के सहार कर्त्ता ऐसे जो रामचंद्र तिनको नमस्कार करत हू ॥ वंदे नमस्कार करत हूं ॥ कैसे रामचंद्र के चरणारविंद कमल रूपी हे स्वदेवतान में श्रेष्ट है भक्तन पै कृपा करनहारे शत्रुघ्न भरत हनुमान इनकाके सेवित हैं रामचद्र ॥ ३ ॥

अंत—जो या रीति से सत्य नारायण की पूजा करेंगे सो या लोक में सुख भोग करेंगे जव मृत्यु होयगी तव मृत्यु लोक मे विष्णु लोक में जांयगे सर्वदा सुखी रहेंगे प्रभु भक्त के वस हैं सव घट वासी हैं प्रत्यक्ष हैं सत्यनारायण की पूजा कोई करो स्त्री व पुरुष सव को श्रेष्ट है सव कामना सिद्धि होयगी औ जो कथा सुनैगे तिनकी विष्णु रक्षा करेंगे और विष्णु को वहुत प्यारे होंयगे ॥ और सर्व देवतान के देव श्री सत्य नारायण की कृपा से सव वस्तु सुगम रही आवेगी और या कृत्य के वरावर कोई अैसा यत्न नही है या प्राणी को याने श्री सत्य नारायण प्रत्यक्ष फल देंगे ॥ इति श्री सत्यनारायण कथा भाषा समुच्चय पंचमो ध्याय समाप्त. लिखत नाथूराम शर्मा सवत् १९२२ वि चैत्र शुक्ल पंचम्याम ॥ राम राम राम राम राम ।

विषय—सत्यनारायण की कथा का संस्कृत से भाषा में अनुवाद ।

संख्या १२९ कमरुद्दीन खा हुलास, रचयिता—गंजन, कागज—देशी, पत्र—५२ आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०६७, पूर्ण । रूप—नवीन, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८५–१७२८ ई०, लिपिकाल—सं० १९४६ = १८८९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कृष्ण विहारी मिश्र, मु० नयागाँव, माडेल हाउस, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । छप्पै । करहि प्रथम मगलन वहुरि यहु बुद्धि प्रकासहि । जगत सुजश कहँ देहि नाम मुख लेत हुलसहि ॥ सिद्धि सिद्धि कहँ करहि ठरहि थोरेहि गुण निजुजन । मान देहि अति सुजन का न मानहि भूपति मन ॥ सकर सपूत सुख दाय कुँवहित्त असरन कहँ अनि सरन वह भाग राग गंजन सुकवि हितहि धरयो गनपति चरन ॥ १ ॥ जमुना वर्णन कुंडलिया ॥ जमुना वहैं गंभीर अति सुखद महा दुहु कूल । कमल मुखी तह न्हाति हैं नर नारी अनुकूल ॥ नरनारी अनुकूल फूलफल चारौ पावैं । प्रातहिं सजि श्रृंगार धाम ते तठ कह धावैं ॥ धावैं सव सहवास सची सुर पुरते कमुना । रिद्धि सिद्धि सुख लहे जहां ढरवे कहं जमुना ॥२॥ अथ नगर वर्णन कवित्त ॥ दिल्ली कोसो दरखु नगर वुकवेर हू के दिल्ली कैसो सुख न सुरेसै सुख दाई है ।

अत—अथ नायक के आइवे को सगुन लेइ यथा । कवित्त । अंगन छीन फिरैं अंगना कहू नेकु न भामिनै मौन सुहावै । गँजन जू चितवै चहुँधा पिय की अति ही सगुनै

चित करै ॥ हाव उद्यम के नोकरतियों पिय आवहिगे तिय काग उड़ावै । कंगन पीची छकर उड़ै मुर्तो पच्छिउ प्रेम निछावर पावै ॥ १६ ॥ अथ कवस छरी ॥ चौंसठि कला प्रवीन चौदही विद्या जानै । सुंदर सुघर उदार रुप सब के मन मानै । स्वामि काज अनुराग जसी अति तेज बढ़ी है ॥ रस निधान गुन धीर बड़ो जग माह बढ़ी है । सुनि सुजान मरदान मनि आजम उजीर सब जग कहइ । कमरुदी पान नवाब सों अष्ट सिद्धि गंजन कहइ ॥ १२७ ॥ इति श्री सुकवि गंजन विरचितायां कमरुदी पां हुलास संपूर्णम् ॥ दोहा ॥ रस[६] सुति[४] निधि[९] ससि[१] अप्द सुभि साधि सुदि भादौं मास । स्वहित लिख्यो गिरधर सु कमरुद्दी षान हुलास ॥ १ ॥ लिपि कृत युगुल किशोर मिश्रेण ।

विषय—नाव भेद तथा रस भेद का विवरण तथा मुहम्मदशाह बादशाह के वजीर कमरुद्दीन खाँ की प्रशंसा ।

संख्या १६० ए. विरह बरनन बारामासी, रचयिता—गजराम, कागज—साधारण, पत्र—१, आकार—६ × ४½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२ पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—पं० चंद्रिका प्रसाद भट्ट, ग्राम—सर्कासी, डाकघर—माइगांव, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विरह बरनन बारामासी प्रारम्भ ॥ कहाँ हूँ हरी सियाराम लछमन हूँ । तैसे पाछाइ दियो कित बनहूँ ॥ पहला महीनारी अगा चैत्र का मासा ॥ केकई कहे सुनु राजा ॥ राम लछमन जी भेज दैवो बनवासा ॥ मांगो धारा बरस के पासा ॥ करैं राम जी भरत सत्रुघन कासा ॥ सब पूरे मन की आसा ॥

अंत—॥ दोहा । गजराम कहता गुनी, पीते तेरह मास । सीखै गावै औ सुनै, स्याने हावै बैकुंठें बास ॥ मैं वर ती जी भई तरसैं मन धन हूँ ।' १२ ॥ सै मैं ॥ इति श्री राम बनोवास विरह बर्नन बारामासी संपूर्णम् ॥

विषय—(१) पृ० १ से १२ तक—चैत्र से फाल्गुन तक—बारहो महीने की ऋतुओं के कष्ट के संबंध से कौशिल्या द्वारा राम के वियोग का वर्णन ।

संख्या १६० बी रामविरह बारामासी, रचयिता—गम्भूराम, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—६ × ५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११ परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री शिव सिंह सेंगर पुस्तकालय, *ग्राम—काँठा, जिला—उन्नाव।*

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम विरह बारामासी लिप्यते ॥ (इसके बाद १६० ए के समान ।)

अंत—इति श्री राम बनवास विरह बर्नन बारामासी संपूर्ण समाप्त ॥

संख्या १६१ रागमाला, रचयिता—गरति प्रभ, कागज—मोटा, पत्र—१, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५५ वि०, लिपिकाल—सं०

१८५५, वि०, प्राप्तिस्थान—लाला दिलसुखराय, ग्राम—महोली, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—अथ राग माला लिष्यते ।। श्री गणेशायनमः ।। दोहा ।। अथ भैरों राग का स्वरूप वर्णन ।। भैरों शिव छवि सिर जटा श्वेत वसन त्रिय नैन । मुंडन की माला गरे सिंह रूप सुख दैन ।। कवित ।। शिव मूरति भैरों को भाव धन्यो त्रिय नैन सुमुंड की माला गरे । पट स्वेत सबै तन में पहरें हिरदे भगवान को ध्यान धरें ।। तिरसूल विराजत है कर में सब भामिनी की मति लेत हरें ।। मुख छाव लगी युति दूनी भई चित चाहन में छवि जात छरें ।। दोहा ।। अथ भैरों की रागिनी भैरवी को स्वरूप ।। शिव पूजत कैलाश परि दोऊ करन में ताल । श्वेत चीर अंगिया अरुन रूप भैरवी बाल ।।

अंत—सारंग के सुर सों मिलै करो गौंड़ का ज्ञान । तामें पूरो पूरवी राग पूरिया जान ।। आमे जी ये राग हैं कहैं गरति जन गाय । भेद राग अरु रागनी ए सब दिये वताय ।। राग ६ रागनी २० राग रागनी ३६ ये मिलि के आमेजी राग रागनी ९६६ मियां तानसेन गाई सवत् १८५५ चैत्र वदि २ शुक्रवार इति ।।

विषय—राग रागनी वर्णन ।

संख्या १३२. गंगाष्टक, रचयिता—गरीबदास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ३ इंच, पूर्ण, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—१० विश्वनाथ, ग्राम—कैमहरा, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ।। अथ गंगा अस्तुति लाला गरीबदास कृत लिष्यते ।। प्रथम नाम महात्म अष्टक ।। छंद । घनाक्षरी ।। देव द्रुम चिंता मनि आस जियते वहाउ याही इष्ट देव के सहित श्रद्धा सीस नाऊ ।। याही को भजन मन अन छाड़ि आन भाउ याही को सनेह सुधा चप |के चपक नाउ ।। रैन दिन रसना सों याही की रटन लाउ जो पै मूढ़ चाहति है सुष को सबै बनाउ ।। भव सिंधु तारिवे को नाहीं दूसरो उपाव । छूटि एक गंगा जगदंबा जू को नाम नाउ ।।१।।

अंत—गंगाजू के नाम के महात्म को अष्टक जो श्रद्धा जुत प्रेम भाउ पढ़ै और पढ़ाइहै ।। दीनता दुरासा दुर्मति ताकी ह्वै है दूरि ज्ञान सूर तेज मोह तम को नसाइ है ।। सिद्धि सुप सपदा सो सहज करैंगो भेट पाप ताप दहि दाप देह सो वहाइकै ।। कठिन कराल जम जालन फसेगो क्योहूं नाम के प्रसाद ते परम गति पाई है ।। इति नाम महात्म गंगा जी की अष्टक समास ।।

विषय—गंगा जी की महिमा ।

संख्या १३३ ए. काव्यामृत प्रवाह, रचयिता—गौरीशकर भट्ट (मसवानपुर), कागज—देशी, पत्र—२३४, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३४०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५१ = १८९४ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर नरेससिंह, ग्राम—भज्जूपुरा, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ।। अथ काव्यामृत प्रवाह लिष्यते ।। प्रथमांक श्री रघु

गाय नायक ॥ मंगल चरण ॥ दोहा ॥ एक रदन करिवर बदन विघन हरन सुख कंद । सिद्धि सदन मंगल करन जै जै गिरिजा नंद ॥ १ सवैया ॥ एक ही दंत अनंत लिये छबि चंद लिलार में धारन हारे ॥ गौरी के गोद विनोद करैं बहु भेद जसी के पसारन हारे ॥ मोदक कै हित कै नितही कलिकै के सुकाज संभारन हारे । होहु सहाय गजानन जू जे घने विघने के विदारन हारे ॥२॥

अंत—प्रेम विन्दु बिन जो हियो सो यों रसिक दुरूह । बिना मुहर को समय ज्यों दफ्तर का मंजूह ॥ प्रेम पियाला पी छके तेई हैं हुसियार । जे माया मद सों भरे ते बूड़े मझधार ॥ जहां सुजस तहं प्रीति है । प्रीति तहां सुख और ॥ जहां पुष्प तह बास है जहां बास तहं भौर ॥ चारि वेद को सार यह सुनि राखौ सब कोय । ढाई अक्षर प्रेम के पढ़ै सो पंडित होइ ॥ इति श्री काव्यामृत सम्पूरण समाप्त लिखतं रामऔतार भट्ट संवत १९५१ वि० ॥ सवैया । श्री रघुनंदन गोकुल चंद के मोद विनोद के भाव को लीन्हो । काव्य षटौ रितु जोग वियोगहु वीर रसौ को कछू भरि दीन्हो । बीन नवीन प्रवीन कबीन को और कवित्त हिये मह चीन्हो । आनंद सी हित सज्जन के काव्यामृत संग्रह शंकर कीन्हो ॥ दो० हरि जस रसिक सुजान हित लिख्यो ग्रंथ चित धारि होय शब्द जो दोष कुछ लीजौ सुमति संभारि ॥

विषय—अनेक कवियों की सरस रचनाओं का संग्रह

संख्या १३३ बी. सांगीत रत्नाकर, रचयिता—गौरी शंकर भट्ट (मसवासपुर, कानपुर) कागज—देशी, पत्र—१०६, आकार—९ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५१, पूर्ण, रूप—साधारण पद्य लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई० प्राप्तिस्थान—पं० देवी प्रसाद शास्त्री, ग्राम—सकरिया, डाकघर—महोली, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सांगीत रत्नाकर लिख्यते प्रथम भाग ॥ १ ध्वनि प्रभाती ताल दुमताला ॥ (समय प्रातः काल) जय जय गनराज देव भवन सुख कारी । शंकर सुत सिद्धि सदन सुंदर गज राज बदन दीनबंधु एक रदन कोटि विघन हारी ॥ शोभित शशि भाल भाल राजत गज मुक्त माल दृढ़ दंड वक्र विशाल संतन हित कारी ॥ वंदत नित प्रति सुरेश गावत गुन गन महेश ध्यावत तव नाम शेष महा सुख कारी ॥ मोदक प्रिय मोद करन सुयश भरन विपति हरन तुव उदार चरन शरन शंकर बलिहारी ॥१॥

अंत—अब होत दीन दीनबंधु के पुकार मैं ॥ लीजै उबार नाथ परो दुख धार मैं । कीन्ही न बार बार मै भरी पुकार मैं । कीजै न देर देर कहौं बार बार मैं । दीजै ललित को दान दया दीक्षि छंद मैं ॥ कीन्हों न प्रेम क्षेम जानि रामचंद मैं ॥ कार्तिक बदी ३ संवत १९२८ वि० लिखा रामसुख अवस्थी संवत १९४० वि० ॥

राम राम राम राम राम राम राम ॥

विषय—हर दिन और हर समय के गाने योग्य राग रागिनी ।

संख्या १३४ ए. स्वप्न पचीसा, रचयिता—घनश्याम राय, कागज—देशी पत्र—१२, आकार—१० × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६ परिमाण (अनुष्टुप् —६००,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्ति-स्थान—प० सिवकंठ तिवारी, ग्राम—बरगदिया, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ स्वप्न परीक्षा घन श्याम राय कृत लिष्यते ॥ यह बृहस्पति जी ने स्वप्नाध्याय कहा उसके फल भाषा में शुभा शुभ वर्णन करता हूँ। जो सुपना रात्रि के पहिले पहर में देषै तौ उसका फल एक वर्ष में होय औ जो दूसरे पहर में देषै तौ उसका फल छ महीने में होय और तीसरें पहर में देषै तौ उसका फल तीन महीने में होय और जो चौथे पहर में देषै तो उसका फल एक मास में मिले ॥ और जो प्रातः काल सूर्योदय में देखै तौ उस दिन में फल होय इस प्रकार समय को विचार के शुभाशुभ फल को समझना चाहिये ॥

अंत—इति श्री बृहस्पत्यादि कृत स्वप्नाध्यायी की भाषा स्वप्न परीक्षा वनश्याम राय कृत सपूर्ण समाप्तः कार्तिक शुक्ल चौथ संवत १९१० लिषत अवध लाल ने ॥

विषय—(स्वप्न में देषी हुई चीजों के शुभाशुभ फल का वर्णन) ॥

संख्या १३४ बी. स्वप्नार्थ चिंतामणि, रचयिता—वनस्याम दास, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२८ = १८७१ ई०, लिपिकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राय लाल, ग्राम—रसुआपुर, डाकघर—धौरहरा, जिला—खीरी (अवध)।

आदि—१३४ ए से अभिन्न।

अंत—इति रस्तु श्री इति श्री बृहस्पत्यादि कृत स्वप्नार्थ चितामणि भाषा वनश्याम दास कृत सपूर्णम् कार्तिक शुक्ला ४ संवत् १९३० वि०।

विषय—स्वप्न के शुभा शुभ फल का समय के सहित वर्णन ॥

संख्या १३४ सी. स्वप्नार्थ चिंतामणि, रचयिता—वनस्याम राय (आगरा)। कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०, पूर्ण। रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, लिपिकाल—स० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—प० श्रीकृष्ण दूबे, ग्राम—शिवदत्तपुर, डाकघर—नरताल, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—१३४ ए के समान।

अंत—इति श्री बृहस्पत्यादिकृत स्वप्नार्थ भाषा कर्ता पंडित घनश्याम राय संवत १९२८ वि० ॥ चिंतामणि समाप्त शुभ ॥ कार्तिक शुक्ल भृगु वासरे संवत् १९३४ लिषतं आनंदी लालेन ॥ श्री श्री श्री ॥

संख्या १३५ ज्योतिष की लावणी, रचयिता—घनश्याम व्यास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, पूर्ण। रूप—साधारण, पद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—स० १९३९ × १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० सिवकंठ वाजपेयी, ग्राम—दुआरा, डाकघर—जयतिपुर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री ॥ ज्योतिष की लावनी ॥ श्री राम जी कृत लावनी ज्योतिष की रासि प्रकास लिष्यते ॥ टेर ॥ फक्कर नर पंडित हो ज्यावै सुण कर रीझै चतुर सुजाण महज्जात के जोग बताऊं बारा रासि का बरण ग्यान ॥ टेर ॥ मेष रासि ज्यों होय जन्म की अगला कूं आगे प्यारो । लाल नयन अरु क्रोध बंठ नर जुध मे बचन कोर्ड प्यारो ॥ गर्भ अरु पर रुचि साग बहु भस्य भाव पाने वारो । कामी नर जया होइ पतकी अपने कुल को उजियारो ॥ वाक पने सिर होय गूमड़ा जल्ल से ही डरपै प्यारो । स्थिर बुद्धि नहिं होय त्रिसुधी अति मिजाज रपने हारो ॥ सुन प्यारे राजी जल्दी हो जावै, सु० जुध बस कुंब होय सुहावै, सु० एक ठौर न बठन पावैगे सुन० दुनियां मे बहुत दिखावै गोल अंग अरु चंचल क्षत्रिमी अपने कुल को होय प्रधान ॥ महज्जात के जोग बताऊं बारा रासि का बरण ग्यान ॥

अंत—कुंभ रासिका लक्षण बरण सुनाकर कोइ मत करो अंदेस । कर मगरूरो और सिकार छोड़े बराह का सा कर कामेस ॥ बड़ा पेट अरु जानू लंबा चोड़ी पीठ अरु उदर विसेष । परतिरिया पर मन की इच्छा हाय पाप में जुध पर बेस ॥ कदेक धन बध ज्यावै उसके कदक धन को हाम । कलेस दृष अक्षर मकर सब टाल्यो इम पर किरपा करो हिमेस ॥ सुण प्यार चंदन मे दिल लगावै सुन० पुष्पों की भाम सुहावै सुन० बहु जन से प्रीति लगावै सुन० मग चलत हार नहीं ज्यावै अति सैवो होय सरीर जिसको कलस रासि का कहिया प्रमाण पंडित ॥ मीन रासि ज्यों होय जन्म की जै मोतियन का फेर बिहार जुध खेत को जीर न चालै मिरधे सी धन बधै अपार ॥ गुप्त द्रव्य पृथवी में पावै घर घर धन को होय अधिकार । ज्यो भाहुन कैरव दस जीत्या यूं शत्रून को पैठ बिगार करी कमेठी ममता सेती उस नासिका को आकार मध अंग होय बराबर जिसका सीस बड़ो दीर्घ गुलजार ॥ बुद्धिमान विवेक विचक्षण होय करिकी पसुधार सुन प्यार । सुखमा का फल दरसाया सुन० ज्योतिष का पार न पाया सु० कृष्ण विप्र राम रिपि गाया सु० बषमत न सीस निवाया धारा मेघ के पास मीप कर ध्यान बताया है धनस्यान पंडित और मधूमी ॥ इति लावनी रासि प्रकास संपूरणम् ॥ दोहा । संवत उनइस सी अधिक सताइस गिनि लख । माघ मास शुदि अष्टमी विक्रम को कहि दख लिखा राम विकास उजैन निवासी संवत० १९९९ वि० ॥

विषय—ज्योतिष १२ राशियों का फल वर्णन ॥

संख्या १३६ पक्षी विलास, रचयिता—घासीराम कागज—देसी, पत्र—१६, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्ण बिहारी मिश्र, गोलेल हाउस, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ कालिंगि सी मेरे कहाँ कैसे बर हाय मिज कैसे सुगर चंद और मसम मलीन मैं । अंजन अलित नैन करिये निरंजन कृपा मरिये अजाम त्रिभुवाम सुदरीन मैं ॥ घासीराम सुकवि परसिये मेही कंठ त्रिसु-कंचन जराऊ बैन जरित तरीन मैं । सुलभ मकोर्म लंक मूठी न समात हाहि कैमों की यमाप्ति दम जाठ सुदरीन मैं ॥ १ ॥ कंचन की छरी सी वियोग विप भरी हम एक बेर बहुरि गोविंद फेरि दिपने । फिरि प्रभु कहने तो मिलगु न औ तै यह नारी की सिरतामनि करती यह लिपने । घासीराम सुकवि कबा

इस मुखाइ हरि कपट हथोरी की पठामनि के तिपते। मजन हमारे ऊधो अैसन हूते निरमोही भये जैसे वाप वामिनि के सिपते ॥ २ ॥

अत—डारें डारें फिरतु दुवारे झूंठ आरन मो उरझि गिरत गिरि उठत ढिठाई मों। कवहूं विहार वर विहंग विनोद मोद विरछ विराज वहु सपत भलाई मों ॥ घासी राम सुकवि पपेरुन की फौंज मो गिनती गनाऊ का तिहारी सुघराई मों। जरे वरे गात नित मान दरसावैं का वड़ाई पैहौ तीतुर जो वान तुरकाई मों ॥७०॥ × × प्रतिकूल भये गुनन गरेरे कहा काम वनि जैहे जो जुगति उपजावे रे हे रत्त सुमेरु त्यो कलंक ठहराइ टहां केतिक विमाति जोन तरन जरावैरे ॥ घासीराम सुकवि विचारि देपु हिरदे में राज को प्रसंग नित रोय कै न पावैरे ॥ चौकुजगि चकवा मनोरथ वढाइ निशि चकई मिलावे जो विरंचि उलटावे रे ॥ ७ । सूखी उपारि भई विन पानी वई मुरझानी है जून्हरी वारी। मूग को स्वेत भयो न भयो अरु धान निधान मृगा चरि डारी ॥ देपिये ठाकुर कैसी करें अव क्यो निवहै धन आनि परा री ॥ येसों के साल सुपास नहीं कछु याही कपास लौ आस हमारी ॥ ७२ ॥ श्री राम ॥

विषय—पशु पक्षी वृक्षादि विषयक अन्योक्ति संग्रह

संख्या १३७. रामायण का वारहमासा, रचयिता—वासाराम या घासीराम, (भटीपुर, मेरठ), कागज—देशी, पत्र—१२०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, लिपिकाल—सं० १९४४ = १८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामभद्र पुजारी, ग्राम—कलावघा, डाकघर—मौरावा, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वारह मासा रामायण का लिप्यते ॥ दोहा ॥ गौरी पुत्र मनाय के गुरु को सीस निवाय ॥ वारह मासा राम का कहूं छंद में गाय ॥ सुमिरूं सीताराम कूं सव देवन के देव। जिनके जस तारण तरण गाये हर हर देव ॥

अत—दोहा। वारह मासा समासम भाषा दोहा छंद। सारी रामायण कही मन में हो आनंद ॥ छंद। सव शायरों से अर्ज है विनती सकल सुन लीजिये। कुछ चूक मेरी रही हो सो सव छमा कर दीजिये ॥ गुनियों में मैं मति मंद हूं कुछ शायरी ना जानता ॥ गुन ग्यान का घर दूर है हरि के चरण पहिचानता ॥ धनसिंह जी का पुत्र हूं मम नाम घासीराम है। और जात का मैं जाट हूं रहना भटीपुर गाम है ॥ तहसील कस्वा है मुवाना परगना की ठौर का मेरठ जिला थाना मऊ कुछ दाखलाना और का ॥ उन्नीस सौ चौवीसवां संवत श्री विक्रम भूप का। कथ छंद दोहा मास वारह राम सत्य स्वरूप का ॥ कविताई का है शौक मुझको छंद की रचना करूं। कथता भजन होली कडे नित ज्ञान ही में चित धरूं ॥ फिर ख्याल गाऊ झूलने आल्हा प्रथम मैं गा दिया। सव शायरों का दास हूं मगरूर दिल से तज दिया ॥ इसको पढो देखो सुनाओ सज्जनो को गाय के। करना दया मुझ मूढ़ पर सव चूक को विसराय के ॥ मनसा पूरन हो गई सिद्ध भये सव काम। गुनियो को परनाम है कहते घीसाराम ॥ इति श्री राम चरित्र वारह मासा समासम शुभमस्तु ॥ मिती फाल्गुन

शुक्ल पक्ष मंगलवार तीज संवत् १९४७ वि० लिखा भैयालाल असोरा वासम हकवाई ॥ जै राम राम राम राम।

विषय—राम चरित्र।

संख्या १३८. रामरस, रचयिता—बाबा बिसियावनदास (केवदमा, रायबरेली), कागज—सफेद, पत्र—८, आकार—९ × ४½ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८, पूर्ण, रूप—बहुत अच्छी, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—लगभग सं० १९२०=१८६३ ई०, लिपिकाल—सं० १९८५=१९२८ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी संत प्रसाद जी प्राइमरी स्कूल तिलोई, जिला—रायबरेली (अवध)।

आदि—कवित—वंदौं दशरथ वारे राम श्री लखन प्यारे मुनि मख रक्ष वारे अहिल्या को उधारे हैं। शंभु धनु भंग करे परशु जो के गर्व हरे, जनक सुता को वरे अवध हैं॥ तप वेष वनवासी, विप्र कूट के विलासी, मायामृग हति रन रावनहिं मारे हैं। वही बिस्यावन दास भव औतार लीन्हे, मुरली बजाय प्रेम मोहिनी को डारे हैं॥ सवैया—राम कहे गनिका गति पायहु राम कहे अजमील सुधारे। राम कहे सैवरी भइ पावनि, राम कहे गजराज उबारे॥ राम कहे महरी बचे बिभाल रामते अंगद पाँव न टारे। दास बिस्यावन् भज रामहिं, राम अनेकन ईंबत तारे॥

अंत—कवित—पढ़ें सुनै गुन गुनै मनहि मगन करि, रहे मगन प्रेम रस छक छाय कै। हार बार भार मिटि जाय भव चर। पद दस कवित कहे जो नित गाय कै॥ छू जावै मिहाक छुमि जाहिं जग जाल सब दसरथ लाल पोष भक्ति भाव भायकै। जायके बिस्यावन दास करे बैकुंठ बास, होवै हरिदास हरि पद सुख पायकै॥

विषय—राम नाम की महिमा

संख्या १३९. दानलीला, रचयिता—गिरधर चंद्र कागज—साधारण, पत्र—१० आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५ खंडित। रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महंत मोहनदास ग्राम—सौनामऊ, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—॥ चौपाई ॥ सुनि बात सबै मुसकानी। हम जाहु सुना हरि बानी॥ हरि पास सबै चलि आई। परिहास लीन्ह अतुराई॥ हम कौन कहाँ कै आई। हम को हरि चीन्हत नाहीं॥ तुम गोकुल की ब्रजनारी। तुम ही वृषभान दुलारी॥ तुम्हरे सिर गोरस भारा। हम हैं जमुना भटवारा॥ कछु दान हमारी लागी। हँसि के मन मोहन माँगी॥

अंत—॥ छंद ॥ प्रभु पूरन चंद बजाय। आरति बंदना जो सब करैं। गिरधर ईदु प्रसाद पावैं, जन्म जन्म की दुख हरै॥ जो नर गावै दान लीला, सुनै मन चित लाय कैं॥ कोटि तीरथ को फल पावैं, विष्णु लोक सिधारहीं॥ इति श्री दान लीला संपूर्ण॥

संख्या १४० बलराम कथामृतान्तर्गत बिदुर नीति, रचयिता—गिरधरदास, कागज—साधारण, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३ परिमाण (अनु-

ष्टुप्)—४१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शिवमूर्ति शर्मा, ग्राम—गवरी, डाकघर—माधौगंज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ वलराम कथामृतान्तर्गत विदुर नीति लिप्यते ॥ दोहा—कर्म लिखी सो होय हैं यह सम्मति निरधार। पै अपने भरि सक करिय कुल रच्छन व्यवहार ॥१॥ तासों चित दै सुनहु नृप राज नीति सह प्रीति। पुनि मन इच्छित कीजियौ जिमि न होय अरि भीति ॥२॥

अंत—दिन में अध उलूक है, काक अध निसि घोर। नैन अंध नरपाल तुम, हृदय अध सुत तोर ॥१७३॥ दुर जन मडन कुटिलता, सज्जन मडन प्रीति। भुप मडल कोमल वचन, नर पति मडन नीति ॥१७४॥

इति श्री गिरधर दास विरचित वलराम कथमृतातर्गत विदुर नीति समासः ॥

विषय—नीती' महाभारत उद्योग पर्व का अनुवाद।

सख्या १४१. स्याम विलास, रचयिता—गिरिधारी दास, कागज—मोटा ब्राउन, पत्र—८६, आकार—६½ × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३६५, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९५९ = १९०२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवनप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पाडे, जिला—रायवरेली

आदि—कवित्त-एकई रदन गज वदन विराजमान, मदन कदन-सुत सदन-सुकामाको, कहै गिरधारी गिरिराज नदिनी को नंद, आनद को कद जगवद वर नामा को ॥ सुण्डा दण्ड कुडलीक मडली को मोहे मनु भाल चद्र मडली विशाल गुण ग्रामाको। ऐसे गणनायक को, बुद्धि वरदायक को पाँय वन्दि कहत चरित्र श्याम श्यामा को ॥ × × × सुयश सुधाकर तिहारो है प्रकाशमान, पऱ्यो सुर सतन को साँकर जहाँ जहाँ। कहै गिरधारी जन दीन हितकारी तुम प्रगटयो है आय के तुरत ही तहाँ तहाँ ॥ विनै कान्ह करौं परिहरौ यह रूप अव, धरो सिशु रूप मेरे चित जो चहाँ चहाँ। देवकी के वैनन में करुणा समोय उठै, रोय उठे वालक स्वरूप ह्वै कहाँ कहाँ ॥

अंत—जहाँ जहाँ स्यंदन चलत नद नंदन को तहाँ २ आँनद विनोद वीज कै रह्यो। कहै गिरधारी फेरि २ मुख हेरि २ मुदित अक्रूर भूर भागन सों भ्वैरह्यो ॥ यमुना नहाय ध्यान कीन्हो। श्याम सुदर को देख्यो जो उघारि नैन श्यामै श्याम ह्वै रह्यो। आगे श्याम पाछे श्याम दाहिने औ वायें श्याम जहाँ देखो तहाँ सव श्यामै श्याम ह्वै रह्यो ॥

—:※:—

विषय—भागवत के दशम स्कंध की कथा

संख्या १४२. दोहावली, रचयिता—गिरवरदास, (कुटवा, वारावंकी), कागज—सफेद, पत्र—२६, आकार—८½ × ४½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६५, पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४८ = १७९१ ई०, लिपिकाल—सं० १९८२ = १९२५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पांडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायवरेली।

आदि—दो० जग जीवन सत गुरु सुनहु, तुम सद्गुरु औतार। गिर वर चरनन

परि कै, गहि मूर्ख संसार ॥ जग जीवन जग जीव है, जीव जन्तु सब माहिं । गिर पर जानि अंत की, परहि सुदृष्टि सुभाहि ॥

अंत—दो० नित्य पाठ यामें करै, तेहि प्रभु होयं दयाल । जग जीवन की कृपा से, करै सकल भ्रम जाल ॥ भक्त विनय दोहा कही, अहम सत कहि दीन । सकल मनोरथ होहिं हैं, जो चित नित यहि कीन ॥

विषय—कुछ भक्तों की स्तुति ।

संख्या १४३ ए. अष्ट याम प्रकाश, रचयिता—गोकुल कायस्थ, कागज—देशी, पत्र—२०८, आकार—९ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९००, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९११ वि०, लिपिकाल-१९२० वि०, प्राप्तिस्थान—बाबू ओंकारनाथ टंडन रईस तालुकेदार कामोरी मजिस्ट्रेट, सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ अष्ट याम प्रकाश लिख्यत ॥ गावत गुन गन नाथ के गौरी गौरी नाथ । रमानाथ दिन प्रति पद नमत हलनो माथ ॥ पथा सर्व कल्यान दंडक ॥ १ ॥ भूप सुग राज मंदी पाहन बिहंग राज राजै बर बाजी प्रभ आभा अभिराम सों ॥ करसा कराल करवाल तिरसूल चक्र प्रघल प्रचंड धनु विदा विधि याम सों । विभव विभासै भासै हाजी हीह गुन बान जग प्रति पाडै धामै तमताम भाम सों ॥ गौरी मंद गौरी गौरी नाथ कमला के नाथ दिवानाथ पद नाथ मार्कै यश काम सों ॥ २ ॥ दोहा० देश नगर बन बाग नृप सरिता कोट तड़ाग । कहे बानि है ग्रंथ बहु बरनौं कछू विभाग ॥ देश नगर वर्णन ॥

अंत—विष्णु वर्णं ॥ दस अवतार के बीन भये जब धरा निगम गहि असुर संहारे हिरनाच्छ हति काल धरा कच्छप गिर धार मर हरि हरि जन पीर दार बलि बामन बपु बर कै निछत्र छिति छमि करम सै परसराम कर दस पदन कंस हन स्तुति सिरी राम कृष्ण द्व बौध बल । कहि गोकुल दस अवतार हरि कलि कर्म्कि कीरति विमल ॥ संवत विक्रम भूप के प्रद ससि प्रद ससि जानि । माघ मास सित पची करि परिपूरन मानि ॥ इति श्री अमरार वंसावतंस श्री महाराज अर्जुन सिंह आत्मज श्री महाराजाधिराज दिग्विजय सिंह का आठ याम कृत अष्ट याम प्रकासनी गोकुल कायस्थ कृत संपूर्णम् लिखतं आपूराम तिवारी ॥

विषय—राजा दिग्विजय सिंह का अष्टयाम का कार्य वर्णन ।

संख्या १४३ बी. दिग्विजय भूषण (पैरा सहित), रचयिता—गोकुल कायस्थ कागज—देशी, पत्र—१५२, आकार—९ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ परिमाण (अनुष्टुप्)—२०१४ पूर्ण रूप—प्राचीन, गद्य और पद्य । लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९११ वि० लिपिकाल—सं० १९२५ वि० प्राप्तिस्थान—बाबू ओंकारनाथ टंडन रईस तालुकेदार कामोरी मजिस्ट्रेट, सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दिग्विजय भूषण लिख्यते ॥ छ० १ ॥ गणपति गौरि गिरीश गिरा विधि रमा रमापति ॥ राज राजगुरु राज सभा रिषि पावन जन्मपति ॥ राहु केतु शनि भौम बुध बुध गुरु रवि निशिपति ॥ सब्द काज बदि करउ सिंह सर बामन मनुपति ॥

सिय राम चद्र व्रज चद्र प्रिय वौध कलकी अव हरै ॥ कहि गोकुल शुभ सव दिन सदै ये छत्तीम रच्छा करैं ॥ श्री गणेशाय नम. ॥ गणपति गणेश पार्वती शिव सरस्वती ब्रह्मा लक्ष्मी विष्णु कुवेर इंद्र सप्तरिपि वरुण राहु केतु शनिश्चर मंगल शुक्र बुध ब्रहस्पति सूर्य चंद्रमा मत्स्य कच्छप वाराह नृसिंह वामन परसुराम सीताराम राधा कृष्ण वौद्ध और कल की पाप कों हरते सर्वदा शुभ प्रद हैं ये छत्तीसो देवता रच्छा करैं । राजराजो धनाधिप इत्यमरः सप्त रिपि यथा ॥ मरीच अरुधती । सहित वसिष्ट अगिरा अत्रि पुलस्त्य पुल्‍ह ऋतु इति ॥ यह क्रम जिस प्रकार सप्त रिपिमंडल है तैसो लिप्यो है इस आशीर्वादात्मक मंगल में कवि का यह तातपर्य है कि गणेश विघ्न हरैं । पार्वती मंगल शिव कल्याण सरस्वती और ब्रह्मा वुद्धि लक्ष्मी निवास विष्णु भक्ति कुवेर सपति इन्द्र राज्य सप्त रिपि आयुर्वल वरुण वल राहु आदि पाप ग्रह विघ्न परित्याग करि शुभ फल शुभ ग्रह सूर्य प्रताप चद्रमा सकल जनाल्हाद दश अवतार रच्छा पूर्वक सम्पार रच्छकता देवें ॥ इति ॥

अंत—कविन ते विनय दंडक ॥ सिंह के समान ठान कैसे करि सकै स्यान फलानिधि आगे काह जुगनू कका धरै ॥ गोकुल विलोक त्योंही मेरी है ढिठाई यह कीनी कविताई वुध आदरैं तो आदरैं ॥ कवि लोग जौहरी है जाहिर जगत जाके रतन पटारथ कवित्त मुकुता ररैं । जहां गुन पोत को न होत मनोमान दान जैसे कोऊ दीपक दिखावत दिवाकरे ॥ ५० ॥ दो० ॥ रजकनिका लघु लोग पै करिवो निजै प्रकास ॥ वड़ी नहीं कछु वात है भानु गुनी के पास ॥ ५१ ॥ कवि कोविद गुन वंत सों विनै करों कर जोरि । विगरो वरन सुधारिये अपनी ओर निहोरि । टीका—कविन सो विनय करत है कि मेरी कविताई पोत के सम आप लोग मुक्ता वरण वरने हैं ॥ रजकनि काक है । वालू में जो चमकता भानु को प्रकास करिवो कुछ वड़ी वात नाही तैसे लघुगुनी पर गुनी नृपति को आदरव कछु वात नाहीं ॥ कवि कोविद गुन वत सों विनती जो अक्षर अनवनो होय ताहि सुधार लीजै ॥ इति श्री द्विग्विजय भूपण नामक ग्रंथ कवि प्रोठोक्ति अनेक कविन के मत वर्णन गोकुल कायस्य विरचिते एकोनविशति प्रकाश ॥ १९ ॥ श्रावण शुक्ल ५ सवत् १९२५ वि० ॥ लिपत नाथूराम

विपय—अलकार

संख्या १४४. वनपर्व (महाभारत), रचयिता—गोकुलनाथ कवि वदीजन (वनारस), कागज—देशी पुराना, पत्र—३४, आकार—१५ x ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुप्टुप्)—६६९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर चद्रिका वक्स सिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकवर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ जय करी छन्द ॥ इन्द्रादि देपनको करि काम ॥ लोमस रिपि आये तप धाम । कियो प्रणाम इन्द्र के पास । वैठो देप पार्थ सविलास । जीतो लोक कोन करि कर्म । इन्द्रासन पर वैठो पर्म ॥ क्षत्री अल्प इन्द्र के पास । वैठो आसन परगन त्रास ।

अंत—छोरि मोको गयो पति है बसन आयो भारि महा बन में फिरि ढूंढति हों न पायों तोहि मरी करना राज माता तोहि विछपति चाहि कहो बसमो मिलक तोमें प्रीति मोहि उदार स्याईई मम मनुज तैसो पूंछि के भरतार न तर इत उत फिरत कतही आई करि गमने बलत इतही भ्योगो भरतार को तुम तीन राज मता के वचन सुनि कहैं मै भी धिग कहू मिलि निविष्ट पतनी बसी तब कवि पैन उचित भोजन करोंगी नहि धोइहीं नहि पाप बोलिहौं और काहू पुरुष के ढिग जाय और चाहे मोहिं भेष करु कब्ध सुलीन चाहि मो भरतार ढूंढत सुदित माह्मन जौ मैं होय अैसो नियम जो होयँ सो तुम्हारे पास न तद मेरो बास हम नहि होय मोमति रास कहो तासौं राज माते सुखी हो इमि कैन कहति ही मो करोंगी सब बसह इति छवि पैन राज जननी भी मम्रासों बातियो अभिराम कहो दुहिता पास अनेक सुनाई भाम चाहि पैरी विचारिहु तुम्य कै मति रमन सखी बौरी होयगी वह भारी रूप महान मेमी क्लेस नम्ना गई अपने धाम रही दम सुपनित तहां मोदित माम। इति श्री महाभारत दर्पने वन पर्वणि छोप ग्यानो दम मसा चेदि पुर प्राप्ति वर्णना नाम प्रतीयोध्याय ॥३॥

विषय—महाभारत के वन पर्व का छन्द बद्ध अनुवाद। इस ग्रंथ में ३ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय १ से १९ पृष्ठ तक है॥ परन्तु दूसरे अध्याय का पता नहीं है।

संख्या १४५. तत्वरत्न दीपक, रचयिता—गोमती गिरि परमहंस कागज—देसी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९९, प्राप्तिस्थान—महाराजा प्रकाश सिंह, ग्राम—महापुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ परमहंस गोमती गिरि कृत तत्व रत्न दीपक लिख्यते॥ सुमिरि गुरु परमातमा। भव भंजन सुख सार। अनायास जाके भजे लहै ब्रह्म भय हार॥ १। ब्रह्मा विष्णु महेश गुरु गनपति सक्ति दिनेस। निज माया करि जो भयो सो ईस सुरेस॥ २॥ सो है एक अपार सुख सत चित अगुन अनूप। आदि अंत अरु मध्य करि रहित सो अद्भुत रूप॥ करि प्रनाम मों मैं सर्दू ज्ञान मुक्ति दातार तत्व रतन दीपक रचूं ध्वांत निवारन हार॥ ४॥ पूछत सिष निज आपहू करि गुरु को परनाम को हूं मैं मोसन कहौं भाष दया के धाम॥ गुरु वचन दोहा॥ सुद्ध बुद्ध परमात्मा अविनासी सुख धाम मोह माह ते रहित जो सो तूं केवल राम॥ ६

अंत—ब्रह्मा गुरू गुरु विष्णु है गुरू है देव महेस। साईं मति तिन गुरन कूं जाका मत उपदेस॥ गिरि पद उत्तम गोमती किसो ग्रंथ कवि चाद मुमुक्षुमत्मर तजि इहां सेवे निज उर धारि॥ इति श्री परम हंस गोमती गिरि कृतं तत्व रत्न दीपके अष्टम प्रकरणम्। पौष मासे शुक्ल पक्षे नवम्यां गुर वासर ता दिने पौसतर्क सिष्य जीत रिवार सुभं भवेति श्री संवत १८९९ यथा दृष्टं तथा लिखितं मम दोषो न दीयते।

विषय—गुरु का तत्वज्ञान के बारे में अपने शिष्य को नाना प्रकार का उपदेश।

संख्या १४६. श्रीमद्भागवत, रचयिता—भगवान कवि (परतापपुर, गाजीपुर) कागज देसी पत्र—४० आकार—९ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण

(अनुष्टुप्)—३९७, खडित। रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—स० १७८७ = १७३० ई०, लिपिकाल—स० १८५९ = १८०२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० उमाशंकर दूबे, रिसर्च एजेंट, गाजीपुर।

आदि—श्री गणेशायनम' अथ श्री भागवत लिष्यते श्री गुरु पद हरि पद सुमिरि गौरि गणेस मनाइ। ईस गिरा पद वन्दि पुनि व्यास चरन सिरनाइ कथा भागवत ससकृत वुझि न परत अपार। विनु भगवत पर नहिं समुद रूप संसार समुद रूप ससार को कँन धार यहु जानि। नियुमति को अनुमान करि भापा चहत वपानि संवत सत्रहु सय ऊपर सतासी सुमवार। चैत्र राम नउमि किय मंगल को विस्तार। कहे गुपाल लाल यहि नामा कथा अवधपुरी मो धामा। दो० गौरपपुर सरकर तह वसे परगना एक। तह नगर परतापपुर वसत सहित विवेक॥ सुनत भागवत को तुरत उपयत धर्म अखड। छुटम मम ससर को पुटत दुख ब्रह्मड। निगम कल्प तरु ते भये गसित सुक्रम न पाइ॥ फल अमृत द्रवसयुत मन मन क्षन क्षन पीयै धाइ। आवनि रसिक यन सरग मिमिनि समस्त संसार। इस आमृत भगवत सुमिरि पिवत वारम्वार॥

अत—येह जग कर्म क्षेत्र निज जानी। आये मुनि दलीप विज्ञानी। हरिपद पदुम प्रेम सरसाइ। गेहरि धाम तुरत मनुलाइ। तुम्हैं सात दिनहिं ऋपि राऊ। सव साधन को वनि वनाऊ। संवत् १८५९ सवन मासि कृष्णपक्ष दुइज तिथि वार- सनीचर वारा। श्री गोपाल गुन गन सुमिर वरनत कथा वनाइ।

विपय—आरंभ से परीक्षित को तक्षक से भय तक की भागवत-कथा।

संख्या १४७ प चारों दिशाओं के सुख दुःख वर्णन, रचयिता—गोपाललाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—४ × ३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—१२, परिमाण (अनुप्टुप्)—२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—राय लाल जी, ग्राम—रमुआपुर, डाकघर—धौरहरा, जिला—खीरी (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम॥ अथ चारो दिशा के सुख दुख लिष्यते॥ अथ पूर्व दिशा के सुख। दो०। रूप विशेप विसेप धन भूमि सुहावन देश। जाय करौं याते आवे पूरव को परदेश॥ कवित॥ ताफतारू वाफता मुसज्जर श्री साफ़ मखमलरु मुकेसी पर नाना सुपदाइये। सरस कृपाण तरकरु कमाण वाण जरकसी चीरा हीरा जहां जाइ लाइये। सुकवि गुपाल फुलवारी धाम धाम अव श्री फल कदव पौंढ़ा पानन को खाइये। वड़े होत केश मिलैं तदुल असेप प्यारी पूरव के देश में विसेप सुप पाइये॥१॥ पूर्व दिशा के दुख श्री वाच खडन॥ सोरठा। लगै चोर ठग वाइ पेट चलै पानी लगै कीजै कवहु न जाइ पूरव के परदेश को॥ कवित॥ पानी लगि जात वहु फूलि जात गात पुनि पेट चलि जात कछु पाइ जात जवहु। जादू करि करि कै सभोग सुप काज पशु पक्षी करि रापै नारि नरन को अवहूं॥ ब्राह्मण वनिक मीन माम मधु खात तेल हरद लगाय न्हात नारी नर सवहूं। फासी देकै हाल मारि डारैं ठग जालु याते जैवे न गुपाल दिशि पूरव को कवहूं॥

अंत—उत्तर दिशा के गुण स्त्री उवाच यत्र ॥ दो० । सदा शीत भयभीत बर व्याघ्र सिंह वृष चोर । कीजै नहीं पयान पिय उत्तर दिसि की ओर ॥ कवित्त ॥ विकट पहार झार धन सिंह स्यार सिरवाइ नहीं होत रथ बहल की जामें हैं ॥ गिरिदौरू गिरवर अनेक रोग होत जहां चारिहू बरण जीव हिंसक हरामें हैं ॥ सुकवि गुपाल सदा सीत भयभीत लोग बरफ के मारे बुरे रहत गुफा में हैं ॥ राह में न गामें चल्यो जात न दिसा में याते बहु दुख पावै जात उत्तर दिसा में हैं ॥ इति श्री पुरुष स्त्री संवाद चारों दिसाओं के गुण दुख वर्णन संपूर्ण शुभमस्तु ॥ श्री राम शरणम ॥

विषय—पुरुष ने चारों दिशाओं के गुण यात्रा के लिये बतलाये और स्त्री ने उन्हीं गुणों का खण्डन करके यात्रा में जाने से अपने पति को मना किया ॥

संख्या १४७ बी पुरुष स्त्री संवाद, रचयिता—सुकवि गोपाल, कागज—देसी, पत्र—२ आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१ पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११ प्राप्तिस्थान—पं० बद्री प्रसाद शुक्ल, ग्राम—सिधौली, डाकघर—हरगाँव, जिला—सीतापुर ।

आदि अंत—१४७ ए. के समान

संख्या १४८ ए. रामायण महात्म, रचयिता—द्विज गोपाल (मोहनमगर) कागज—देसी पीला, पत्र—२०, आकार—७×४½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० ११०८=१४११ ई० लिपिकाल—सं० १९४८=१८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चंद्रिका बक्स सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—ताल्लुक बक्सी जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रामायण महात्म लिप्यते ॥ दोहा ॥ गुरु हरि हर गणपति गिरा सुमिरौं तुलसीदास । करत गोपाल महात्म श्री रामायण सुभ रास ॥ १ ॥ चौपाई ॥ रामायण सुर तरु की छाया । दुख भयो दूरि निकट जो आया ॥ सतकांड अस्थम सोहाई । दोहा लघु साखा छवि छाई ॥ सुचि सारस मीठका सोई पत्री बहु चौपाई जोई ॥ छंदन की सोभा अति स्त्री । प्रभु नवीन अंकुर छबि पूरी ॥ अच्छर सुमन रहे गहराई । अति अमृत सुगंध कविताई ॥ विविध प्रकार अर्थ साई फल । श्रोता सुमति रचा जामे भल ॥ मन्दि ग्यान वैराग्य सरमरस । बीज हाय निर्गुण सर्गुन जस ॥ मुनि मसुंदि सिव प्रथमहि गाई । मोह गाई बगहेल गोसाई ॥ २ ॥

अंत— । दो० ॥ श्रीमत तुलसी दास जी हू प्रसन्न्य वर देहु । रामायण महात्म से हरि जस कहि सनेहु ॥ ३९ ॥ संवत वसु[८] नभ नंद[९] एक[१] मार्गे शुक्लगुरुवार । एक दसी कह कीन है अपनी मति अनुसार ॥ ४० ॥ रामचोट श्री आंयपुर स्वामी रामप्रसाद । तिनकी उपमा का कहूं दिरच दिन्दिम संवाद ॥ ४१ ॥ तिनको गादी पाँचई मो स्वामी मैं दास । अवध पुरी मम जन्म छिति राम नगर के पास ॥ ४२ ॥ मोहन नगर प्रसिद्ध द्विज उत्तम पूरन दास । तस्यात्मज गोपाल कृत यह महात्म इतिहास ॥ ४३ ॥ इति श्री द्विज गोपाल कृत रामायण महात्म संपूरनम् सुभ मस्तु संवत् १९४८ माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथऊ प्रति प्रदायां भगिपायरे लिपित चन्द्रिका खानीपुर ग्रामी ॥ राम सीता ॥ ॐ रामपिया रामम् ॥

विपय—तुलसी कृत रामायण का माहात्म्य वर्णन ॥

संख्या १४८ वी रामायण महातम, रचयिता—गोपाल (लखनपुरी), कागज—साधारण, पत्र—९, आकार—९½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०८=१८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिव सेवकराम मिश्र, ग्राम—परियावां, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ दोहा ॥ नमो नमो श्री राम प्रभु, परमात्मा पर धाम । जेहि सुमिरे सिधि होत हैं, तुलसी जन मन काम ॥ राम वाम दिस जानकी, लपन दाहिने ओर । ध्यान सकल मगल करन, तुलसी सुर तरु तोर ॥ बंदौ तुलसी के चरण, जे कीन्हो जग काज । कलि समाज बूड़त सकल, प्रगट्यो रस जहाज ॥

अत—रामायण जब कही गोसाई । प्रगटनहित कासी फिरि आई ॥ आदर कीन्ह न पडित काऊ । कहौं जो हम सो करौं उपाऊ ॥ श्री आनंद कानन ब्रह्मचारी । हम सिर मौर सु महिमा भारी ॥ जो याको वे आदर करि हैं । तौ हम सब लै सीसहि धरि हैं ॥ गये आनंद कानन यह ततपर । करत प्रसस प्रसन्न परसपर ॥ पोथी की चरचा पुनि कीन्ही । देपन हेत सोलै धरि लीन्ही ॥ कछु दिन पढ़ी सहित अनुरागन । गए गोसाईं पोथी मागन ॥ पोथी दै अरु अस कहेउ । होई आदर लोक । निज प्रमाण करि लिपि दियो, एक अद्भुत अश्लोक ॥ श्लोक—आनद काननेऽस्मिन जगमः तुलसी तरुः । कविता मजरी यस्या राम भ्रमर भूपिता ॥ धनि धनि तुलसी दास, जिन जग हेत रामायण भनी ॥ महात्म अमित नहि कहि सकौं, रस विपय महं मो मति सनी ॥ निज बुद्धि के अनुसार कही गोपाल सत गुरु की दया रघुबीर जस की अधिकता श्री सत जन करिहैं मया ॥

विपय—(१) पृ० १ से २ तक—मगला चरण गुरु इत्यादि की वदना, रूपक द्वारा रामायण की कविता की प्रशसा । तुलसीदास जी के रामायण निर्माण का उद्देश्य ।

(२) पृ० २ से ५ तक—फुलवारी इत्यादि के रूपकों द्वारा रामायण का माहात्म्य वर्णन । रामायण के काँड तथा उनके विपय का सूक्ष्म-विवरण । तुलसीदास जी को धन्यवाद तथा रामायण की व्यापकता का वर्णन । रामायण के स्नेही को फल प्राप्ति ।

(३) पृ० ६ से ९ तक—दृष्टान्तों द्वारा श्रोता वक्ता के जमपुर गमन—निषेध तथा स्वर्ग की प्राप्ति का वर्णन तथा रामायण महात्म्य ।

(४) पृ० १० से १२ तक—रामायण में स्नेह न रखने वालों की निन्दा । रामायण श्रवण करने वाले की मुक्ति का वर्णन । रामायण के कथा श्रवण का विधान । विदेशादि गमन तथा अन्य मनो कामना सिद्धयार्थ कुछ चौपाइयों का उल्लेख ।

(५) पृ० १२ से १८ तक—तुलसीदास जी का एक कन्या को पुरुप रूप में कर देने का इतिहास । रामायण के प्रकाशन तथा ख्याति का कथन ।

(६) पृ० १८ से कवि का अपने रचित माहात्म्य में जनता को प्रेम करने का वर्णन, कवि परिचय तथा ग्रन्थ निर्माण काल वर्णनः—संवत् वसु नभ नद के येक मार्ग शुक्ल गुरुवार । एकादशी कह कीन है । अपनी मति अनुसार ॥ ८ ॥ राम कोट श्री अवध पुर

स्वामी रामप्रसाद । तिनकी महिमा को कहै, विश्व विदित मरजाद ॥ तिनते गादी पैचई सी स्वामी में बास । कपन पुरी मम जन्म छिति रामनगर के पास ।

संख्या १४६. शांति पर्व (महाभारत), रचयिता—गोपीनाथ (कवी), कागज—आधुनिक पतला पत्र—९४, आकार—१२×४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६०, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८०७=१७५० ई०, लिपिकाल—सं० १९११=१८०१ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर बद्री सिंह जी, जमींदार ग्राम—सालीपुर, डाकघर—डालमऊ बस्ती, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री जानकी जी नमः ॥ श्री मते रामानुजाये नमः ×××क मत्ता श्री रघुनाथ पकज सुर्गं ॥ सिद्धेश्वरी मैवम् गोरी पुत्रम ××× समर्प सर्व बसोदा सुतम् ॥ १ ॥ नारायण नरहस्य नरश्चैव ××× देवी सारस्वती व्यासं ततो जयं मुदीर येत ॥ २ ॥ सो० ॥ मोर मुकुट बन माल ××× पट परस्य पचम ॥ श्री जमुमति को लाल । कृपासिंधु श्री नन्द सुत ॥ अथा शांति पर्व आपदा धर्म लिप्यते ॥ दो० ॥ नमस्कार नारायणहि श्री नरोत्तमहि नौमि । बदि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥

अंत—तेहि निमहि मनि घोर सह करिकै बिदा सप्रम । जाय सभा विधि की विहंग आदर कह्यो सनेम ॥ कर्मंठसुवन के सदन आयो ब्राह्मण तीन । अंत काल रौरव कह्यो कहत कृतघ्नी जीन ॥ पूर्व कृतघ्नी को कह्यो आदर पद उपकाय । नृप हम सो तुम सौं कह्यो ऐसो गुह न आय ॥ सब पापिन ते भेद है । मित्रम द्रोही दुष्ट । मित्र द्रोही ते न विधि देह मित्रता पुष्ट ॥ दो० ॥ मरजादा को धाम, मित्र मिलै विधि देह तिमि । सुग्रीवहिं जिमि राम मिले पारथहि कृष्ण जिमि ॥ वैशंपायन उवाच ॥ सोरठा ॥ यहि विधि आपद धर्म भूपति ते भीषम कहे । सुमिरि व्यास पद पर्व नृपसौं हम तुमसौं कह्यो ॥ पाइ कृपा अनुकूल, सीता पति रघुनाथ की । सरस सम्पदा मूल बरनें आपद धरम इमि ॥ स्वस्ति श्री श्री काशी महाराजा धिराज श्री उदित नारायणस्याज्ञामिगामिनो श्री बंदीजन कवी बासि गोकुल धाम कवी स्वरात्मजैन गोपीनाथे न कविता विरचिते भाषायां महा भार्थे पर्वमे शांति पर्व । आपद धर्मे दशमोध्यायः ॥ १० ॥ इति सं० १९११ वि०

विषय—महाभारत शांति पर्व का आपद धर्म नामक ग्रंथ । इसमें दस अध्याय हैं:—(१) कायरों का चरित्र । (२) मूषक-बिडाल संवाद (३) ब्रह्मदत्त पुजिम संवाद (४) विश्वामित्रस्वपच संवाद (५) व्याधा कपोत पाहन चरित्र (६) गृद्ध जंबुक संवाद (७) शाल्मली संवाद (८) प्रायश्चित (९) खड्गो सत्ति वर्णन (१०) आपद धर्म व्याख्या व मित्र अमित्र का वर्णन ॥

संख्या १५० छत्र प्रकाश, रचयिता—गोरेलाल पुरोहित (मऊ), कागज—देसी पत्र—९७, आकार—८½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०१०, खंडित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७२=१७१५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबू राममनोहर त्रिपुरिया, ग्राम—पुरानी बस्ती कटनी मुरवारा जिला—जबलपुर ।

आदि—(आदि का कुछ भाग लुप्त) जो उर विमल बुद्धि ठहराई। तौ आनद सिंधु लहराई ॥ उठै अनद सिंधु की लहरें ॥ जग मुक्ता उपरसों छहरें ॥ छहर छहरि छित मडल छयौं। सुनि सुनि वीर हियो हुलसायो ॥ छन्द ॥ दान दया सनमान मैं, जाके हिये उछाह। सोई वीर वषानियें ज्यौं छत्ता भुव नाह ॥ छन्द ॥ भूमि नाह कौ वंस वषानौं। सवकी आदि भानु कौ जानौं ॥ एक भानु सब जग कौं तारयौ। जहां भानु सो देस उजारयौ ॥ सुर नर मुनि दिल अजल बाधे। करत प्रनाम भगत कौ कांधे ॥ एक चक्ररथ पै उठ धावै। सकल गधर्वन मडल फिरि आवै ॥ साठ हजार असुर नित मारैं। धरम करम प्रति नित विस्तारैं ॥ कमल क्यो न सुमवयाहि निहारें। लछि देत कर सहज पसारें ॥ १६ ॥

अत—॥ दोहा ॥ पुत्र जहालौं पाइ हैं ते लैहे सव पाइ। मीच कहा तैं आइ हैं तुमसो वहु रुप पाइ ॥ १२९८ ॥ छन्द ॥ अमर न होत समर मैं ठाढ़े। भाजत भमर हियें भय वाढ़े ॥ तपत चतुर भुप तेज तिहारे। मन सुप छत्र न होत निहारें ॥ दुसह त्रास जग मडित तेरौ। सभु लियौ सममान वसेरौ ॥ इक वैकुठ धाम कौ वासी। यह जल थल व्यापौ अभिनासी ॥ साइत चाह देह धरि आयौ। विप्र वेद तप जज्ञ कहायौ ॥ अव वक वकी त्रनावति केसी। ये सेवक सव अपने देसी ॥ जैसे जहा ब्योंत उर आवें। तैसे तहां रूप धरि धावै ॥ तप जप जज्ञ होंन नहि पावें। जहा होंहि तह विघन उठावें ॥ २३०२ ॥ जथा प्रति और लिपनें रही ॥

विषय—पन्ना नरेश महाराज छत्रसाल का वर्णन ॥

संख्या १५१. सब्दावली, रचयिता—गोसाईं दास (कमोली, वाराबंकी), कागज—मोटा हरा, पत्र—४०, आकार—४$\frac{3}{4}$ × १०$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण अनुष्टुप्)—७५०, पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—लगभग सं० १८०० = १७४३ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री कृष्ण दास, ग्राम—कमोली, डाकघर—दरियाबाद, जिला—बाराबंकी।

आदि—वौरे नाम की धुनि लाउ। और आशा छोंडि इत उत एक की धुनि लाउ ॥ खात पियत औ वोलत डोलत सुरति शब्द मिलाव। पाच और पचीस माया ताहि को विसराउ ॥ देहिं जो कुछ सदा सत गुरु ताहि भोग लगाउ। रहनि गहनि सुभक्त की है ताहि ना विसराउ ॥ मान मन त्वे वात सॉची, भक्ति भेद लखाउ। आस गुरू की सदा निशि दिन, मन न अनत वहाउ ॥ जिनके तम्बू अलख ठाढ़े, ताहि का गोहराउ। गोसाईं दास विश्वास के वस सदा दर्शन पाउ ॥

अंत—कहरा सॉचे सम्रथ सॉवरे, मोहिं तन नेकु निहारु। भव सागर यह प्रवल है, गहि पिय वॉह उवारु ॥ अमीरस प्याला पीजिए, विषकी वारि उजारि। चरण कमल की शरण लै, हिय सॉ नाहि विसारि ॥ वार वार विनती करौं, सूरति लेहु सँभारि। सव लायक तुमहो पिया, याही अरज हमारि ॥

× × × ×

गोसाईं दास प्रभु दास है, सर्व सु सेव निवारि । सदा सर्वदा पास है, देहु अमीरस गारि ॥ जिनि वामर मुनि ध्यान धर, त्यागिदे मान बड़ाइ । गुँसाई दास के चूसि अन्न, सोई देहि मिलाई ॥ इत्यादि ।

× × × ×

विषय—राम नाम महिमा, ज्ञान, भक्ति, वैराग्य और ईश्वर के भजन की महिमा का वर्णन ॥

संख्या १५२. सुंदरी तिलक, रचयिता—गोवर्धनदास (कोटपूतली), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१११० पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१७, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ शुक्ल ग्राम—नेदुवा, डाकघर—महोली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुंदरी तिलक लिष्येत ॥ सवैया ॥ पहरैं सिरपै छबि मोर पषा उनकी नथ मैं मुक्ता महरैं ॥ फहरै पियरो पटबेनी इतै उनकी चुनरी की झवा झहरैं ॥ रस रंग भिरैं अभिरैं हैं तमाल दोऊ रस ख्याल चहैं बहरैं ॥ नित ऐसे सनेह सो राधिका स्याम हमारे हिये मे सदा ठहरैं ॥ १ ॥ महा मुद मंगल संग करैं बिहरैं भव भार निवारन वार । बिराजैं त्रिलोक तिलाई के ओक सुदर्स मनो भवरूप अपार ॥ सदा हुलसी वृष भानु सुता दिन दूलह श्री ब्रजराज कुमार ॥ २ ॥

अंत—मानुष होहु वही रसपान बसौं मिलि गोकुल गाँव के ग्वारन । जौ पसु होउँ तौ कहावस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मझारन । पाहुन होहु तौ वही गिरि को जो कियो ब्रज छत्र पुरंदर धारन । जो षग होंतो बसेरो करौं वही कालिंदी कूल कदंब के डारन ॥ ४ ॥ इति श्री सुंदरी तिलक ग्रंथ संपूर्ण समाप्तः लिपतं गोवर्धन नाम शर्मणः ठिकाणो कोट पूतली निवासी मिति कातिक सुदी ११ संवत १९१७ वि०

विषय—६७ कवियों के सरस सवैयों और कवित्तों का संग्रह

संख्या १५३ ए. शिव विलास, रचयिता—गोवर्धन दास मिश्र (बिल्हौर कानपुर) पत्र—१२०, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१७, खंडित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२४ = १८६७, लिपिकाल—सं० १९२५ = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवदत्त मिश्र, डाकघर—बिल्हौर कायस्थ नगर, जिला—कानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥ दो० । श्री गनेश को सुमिरिये । मन बच क्रम चितलाय । एक रदन करि बर बदन सब बिधि होउ सहाय । सारठा । सुमिरि संभु कुमार उमा तनय सिंदुर बदन । दीजै ज्ञान अपार भासो बरणौं शिव कथा ॥

अंत—प्रानी बसत जौन पुर होई । ता महात्म मोह नहिं जोई ॥ जो महेश अपनै पुर राखै । किमि सबै आदयाम अबि करखै ॥ अदिन जन्म पुन्योदय होई । काशी बास मिलत है सोई ॥ कासी मिलि जाकी पुनि जाई । विश्वनाथ प्रभु शम्भु रिसाई ॥ दो० । तेहिते विश्वनाथ की शरणागत बेदि होउ । तिनके हित काशी अनि व पूर्ण सौम्य उदोत ॥

विषय—काशी खड के १६ अध्यायों का पद्यानुवाद ।

संख्या १५३. बी. शिव विनोद, रचयिता—गोवर्धनधर मिश्र (बिल्हौर, कानपुर), कागज—देशी, पत्र—८८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९५५, खंडित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवदत्त मिश्र, ग्राम—फाजिलनगर, डाकघर—बिल्हौर, जिला—कानपुर ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ शिव विनोद लिष्यते ॥ भजन ॥ चलौ मन अनंद कानन होठ ॥ छोदि जगत के काम ॥ जाग्रन को सुर नर मुनि लोचत रहत रहत पसु याम ॥ ता मह मुक्ति भीख भिक्षुक कह देत सदा हरवाम ॥ १ ॥ मगि करणी सुर सरि तट तारक मत्र देत अरि काम । अंत काल श्रवणन परि नाशत जन्म बीज को नाम ॥ २ ॥ बैल चढ़ाय भस्म गगासिर चद्र नाग गज चाम । शिव बनाय शिव पद शिव दैकै पहुचावत निज ग्राम ॥ ३ ॥ कीट पतग रक पशु पग द्रुम लगत न एको दाम । गोवर्धन भजु विश्वनाथ पद सकल सुखन के धाम ॥ ४ ॥

अंत—प्रभाती ॥ जागहु हृदयेश शभु त्रिभुवन घट चोर । निशकर दुति छीन भई चकई पिय मिलन गई कुम दिन जिय सोच पोच मलिन भये तारे ॥ १ ॥ मुनिमन आनद होत । भानु भानु के उदोत पकज श्रिय मुदित मन तमचुर दुख भारे ॥ २ ॥ सध्या व्रत नेम धर्म जप यज्ञादिक सर्व कर्म प्रगटे द्विज घोस सुनत पथिक मग सिधारे ॥ ३ ॥ ध्यावत सनकादि शेश नारद हरि अज दिनेश पावत नहि वेद भेद गावत गुण तिहारे ॥ ४ ॥ काशी पद विश्वनाथ निज जन कीजै सनाथ गोवर्धन दरशदेहु गिरिजा पति प्यारे ॥ ५ ॥

विषय—शिव जी के १२० भजन होली, वसत, लावनी ख्याल आदि ॥

संख्या १५३ सी. विष्णु विनोद, रचयिता—श्री गोवर्धन धर मिश्र (कानपुर), कागज—देशी, पत्र—१०७, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९५२, खंडित । रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवदत्त मिश्र, ग्राम—फाजिलनगर, डाकघर—बिल्हौर, जिला—कानपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विष्णु विनोद लिष्यते ॥ भजन ॥ ऐ मन मधुवन क्यों न गयो रे ॥ जा व्रज केलि नि कुजन के मग पग मग प्राग भयोरे । १ । इत मथुरा उत गोकुल के विच यमुना नीर बहोरे ॥ २ जा थल में तिहु लोक को नायक गोरस खात फिरोरे । गोवर्धन मोहन छवि लखि के प्रेम पियूष पियोरे ॥ ४ ॥ होरी । मोसो खेलत होरी । हल धर जू को वीर । वरजि रही वरजो नहि मानै पट जमुना जी के तीर १ चोवा चदन और अरगजा मुख पर मलत अबीर ॥ २ । गागरि फोरी बहियां मरोरी रंग में भिगोयो चोली चीर ॥ ३ ॥ गोवर्धन गहि लेहु लला को मन भायो करिवीर ॥ ४ ॥

अंत—बसंत ॥ जा दिन ते व्रज राज गये रितु राज समाज किये ॥ वेला गुलाब

गली में मचे मग जाब न देत तिये। सोन जुही गुलमार होक मन छद्रत मद सो पिये ॥ १ ॥ काम कमान गहे सर साधे भौंरो के वीर छिये। हेरि पलास अंगार से फूल्ल बिरहा बहुत दिये ॥ २ ॥ ब्रज युवती मधुपुर की बाट देखें बोकल चित दिये। गोवर्धन गोपाल श्याम की आसा लागि जिये ॥ ३ ॥

विषय—विष्णु, श्री कृष्ण, राम के विषय में १२० भजन राग रागनी होली ख्याल लावनी बारामासी आदि में ॥

संख्या १४४ बारहमासी, रचयिता—गोविंददास, कागज—देशी पत्र—१६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—९२, पूर्ण रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३५ = १८७८ ई०, प्राप्तिस्थान—पंडित गोविंद प्रसाद जी, ग्राम—मिहालपुर, डाकघर—नारायणदास का खेड़ा, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दो० । बारामासी कहत हीं श्री गनेश पद बंद। प्रीति रसिक की का कहे जो लागी मंद मंद ॥ रेखता ॥ श्री कृष्ण को जप से कहै जम की फांसी ॥ या दुनियादारी को करने दे हांसी ॥ के नाम हाय मीठा जम जा रम पासी। मित्र राम नाम सर भाय पारा मासी ॥ ततबीज रीत करके महबत में अहूपे सब से बुरा गम करिये माया बताइये ॥ कोई सुघर जीव मिलै अगर दिल मिलावे एक राम नाम सीर साथ परि सुभाइये ॥ दो० । रितु बसंत में एक मनी सा हमसे बिछुर कंथ। सब बिरहा के बस भए सुर नर मुनि अरु संत।

अंत—॥ दो० । बारामासी कही हीं जो मनुर्मा भर मारि। चारि पदारथ पाइये श्री राधा कृष्ण मुरारि ॥ इति श्री बारहमासी बिरचितं गोविंद दास कृत संपूर्ण संवत् १९३५ वि० कवित ॥ सावन का घन घोर घटा सुर्मी मेघ कहैं बरसों। हरि राधिका हेरि दूर आय कुंज में लागी १६ जही री भर सों ॥ सीरी समीर लगा तन में तिय बात कहै हंसि यों बरसों। पिय कहु का श्याम भुलाया न भूलि है चारि १६ बरसों परसों ॥ इति श्री गोविंददास कृत बारा मासी ॥

विषय—राधा कृष्ण के विरह के बारहों महीनों में वर्णन।

संख्या १४५ परिवार वंशान्तगत चित्रा चरित्र का मूल मंत्री संवाद, रचयिता—गुरु गोविंद सिंह, कागज—साधारण पत्र—५, आकार—५ × ३½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५३ = १६९६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला पुरुषोत्तम दास, बड़े बाग, कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—१ ॐ सत गुरु प्रसादि कुनि राक्षस का कथा लीसा। श्री अभिरेन जगत क ईसा ॥ पुरषन पिंड गगन ते भई। सभरिम नाम धपाई दई ॥ धन्य-धन्य सोहन दे राजा। दुष्ट दाद गरीब निवाजा ॥ असिम भवन के गिरजन हारे। दास जानि मोहि लेहु उबारे ॥

× × × ×

हमरी करो हाथ दै रक्षा। पूरण होइ चित्त की इच्छा॥ तुव चरणन मन रहै हमारा। अपना जानि करो प्रति पारा॥ हमरे दुष्ट सवहि तुम घावहु। आप हाथ दै मोहि वचावहु॥ सुष वसै मेरो पर वारा। सेवक सिष्य सबै करतारा॥ मोर छचा (मोरच्छा) निज करदै करिये। सव वैरिन को आज संवरिये॥ पूरण होइ हमारी आसा। तोर भजन की रहै पियासा॥ तुमहिं छोंड़ि कोई अवर न ध्याऊँ। जो वर चाहो सो तुमते पाऊँ॥

अंत—कृपा करी हम पर जग माता। ग्रथ करा पूरण सुभ राता॥ किल विष सकल देह को हरता। दुष्ट देवि पन को छै करता॥ श्री असि धुज जव भये दयाला। पूरण करा ग्रथ ततकाला॥ मन वाछित फल पावै सोई। दुष न तिसै विआपत कोई॥ अडिल सुनै गुग जो अहि सुरसना पावई। सुनै मूढ़ चितलाइ चतुरता आवई। दुप दरद भो निकट न तिन नरके रहै। हू जो याकी येकवार चौपाई को कहै॥

× × × ×

इति श्री चरित्रोपष्याने त्रिया चरित्रे भूप मंत्री सवादे चारि सै चारि चरित्र समापत सुभमस्तु॥ २०॥ दोहरा॥ दास जानि करि दास मै कीनी कृपा अपार। आप हाथ दै राप मोहि मन क्रम वचन विचार॥ चौपाई॥ मैं नंगनेशह प्रथम मनाऊँ। कृष्ण विष्णु कवहुँ न ध्याऊँ॥ कान न सुने पहिचान न तिनसौं। लिव लागी मोरी पगियन सों॥ दोहरा॥ सगल दुआरो छोंड़ि के गह्यो तिहारो द्वार। वांह गहे की लाज है अस गोविंद-दास तुहार॥

विषय—पृ० १ से ६ तक—देवी की स्तुति। ग्रथ निर्माण काल :—संवत सत्रह सहस भांडिजै। अरध सहस पुनि तीन कहिजै॥ भादव सुदि अष्टमि रवि वारा। वीरस तुंद्रव ग्रंथ सँभारा॥

संख्या १५६. रसीले तरंग, रचयिता—गुलजारीलाल रसीले (नरवल, कानपुर), कागज—साधारण, पत्र—२६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२८ = १८७१ ई०, लिपिकाल—स० १९३८ × १८८१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शोभाराम दूवे, ग्राम—उनियाँ कलाँ, डाकघर—मैगलगंज, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नम। अथ रसीले तरंग लिष्यते॥ दोहा। श्री लवोदर तुव चरण वन्दि कहौ सत भाव। कर गहि पार लगाइये मेरी अनाथ की नाव। अन पढ़ हौ मति मंद अति नहिं अक्षर को ज्ञान। कविन की जूटन वीनि कै कीन्ह इकट्टा आन॥

अत—वालम०॥ अव रटत पिआउ पिआउ सपी जिम प्यासा। सोई गति है उन विन जिया नहिं रहत हुलासा। पुनि लाग महीना क्वार वीत चौमासा। गुलजारी लाल की पूरन करिये आसा मधु सूदन मदन मुरारी जाऊं वलिहारी। वालम विन कैसे कटे निसा अंधियारी॥ इति श्री रसीले तरग सपूर्ण समाप्तः शुभम् लिपत गोवर्धनस्य सारस्वत शर्मण· त्रिपाठी प्रथम श्रावण वदी २० संवत १९३९ विक्र०

विषय—श्री रामचन्द्र जी के जन्म से वनवास आने तक के भजन लावनी आदि में॥

संख्या १५७ ए. गुलाल चंद्रोदय, रचयिता—गुमान मिश्र, कागज—देशी, पत्र—१००, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८८, पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२ वि०, लिपिकाल—सं० १८२१ वि०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह, ग्राम—मल्लापुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गुलाल चंद्रोदय लिख्यते ॥ दो० ॥ गुंजत सुभ सौरभ सने कवि मलिंद छबि भौंर ॥ मंगल सिव के आसरन गिरिजा चरन सरोज ॥ छप्पै ॥ गुंजत सुभ अलि पुंज मंजु संगीत गीत रव। मजत चीम मिरदंग चंग सुर संग रंग नव ॥ उपरत ताल रसाल ललित गति चलित चरन चल। मोहत सुर मुनि वृन्द पूरि आनंद मैन जल। छवि पवत तात संग रचत चित विहंसि अंब मुदित वदन गन पाल कृपाल रहौं सदा श्री गुलाल संपति सदन ॥ अथ राज वर्णन ॥ दोहा ॥ बीस नाम पुर सुहमि पै पावन अति पर मिति। रूपी देव समान जहं नारी नर सुप सिति। कवित्त। मेदनि सुमति गुन गगनि सुनति पर दोष न सुनति सुज अवली लसत है। नीत ही नी राज करैं कोरिम को काज जहां सजन समाज की सुमेधा सरसति है। धवल धवनि की ध्वजनि दुरनि मिस मानो अमरावती को हेरि कै हंसति है ॥ धरम के धाम नरनारी अभिराम ऐसी बीस नाम नगरी सु विसवो बसति है ॥ दो०। राज दृपो ता नगर को संपति सहित महेस। सठि बंस भूषन भयो धानित राइ नरेस। धानित राइ नरेस के पांच तनै बरि बंड। राजत मानो कल्प तरु साजत तेज प्रचंड तिनमें भूप गुलाल चंद उदित महा बुधिवंत। सेवत चतुर चकोर ज्यों चादत संत अनंत।

अंत—अथ सांत रस लक्षन ॥ दोहा ॥ मिलि विभाव अन भावरी चारी भावनि संग। परि पूरन निरवेद जब बढ़े सांत रस रंग ॥ अथ विभाव दोहा ॥ सत्य ग्यान समाधि श्री गुन उपदम सुसग मम रस के ये जानिये कही विभाव प्रसंग ॥ अनुभाव दोहा ॥ छुटि जाइ संसार तें मगन ध्यान मन होइ करि पूजा उजल रहै कहि अनुभाव संजोइ ॥ संचारी भाव दोहा ॥ धीरज सुमिरन बुद्धि श्री जगत असूया होइ। महा स्वच्छ है चरन तह पार मद सुर सोइ ॥ यथा ॥ दवन के बनितान के सीस जवाहर जोतिन रंजित नीके। मत्त मराल मनोहर सुन्दर नूपुर सिंजित स्याल सनी के। भावदु सिद्धि नवा निधि सेवित जैसित रघुपति श्री के कंज से कोमल मंजु महा पग वंदत वे वृषभानु लली के ॥ दोहा ॥ निरषि सकल साहित्य मत भारत सुमति विचार। सीम गुलाल चंद चंद को रचो उर्दै विस्तार ॥ जो गुलाल चंद्रोदय अवलोकै चितु लाय रस मारग मन निमल है मोह तिमिर मिटि जाइ ॥ इति श्री सकल कला निधान गमनाम दान विधान श्री लास्य नाना राम गुलालचंद कारित मिश्र गुमान विरचिते गुलाल चंद्रोदय समाप्तः मिती चैत वदी ६ संवत १८२१ गुमगढ़ नाम नगरी मुकाम के। आगे शुभ ॥

विषय—नायक, नायिका, भेद रस हाव भाव वर्णन।

संख्या १५७ बी गुलाल चंद्रोदय, रचयिता—गुमान मिश्र, कागज—देशी, पत्र—१२९, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ परिमाण (अनुष्टुप्)—११२०,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२० वि०, प्राप्तिस्थान—आनंद भवन पुस्तकालय, बिसवाँ, जिला—सीतापुर।

आदि—१५७ ए, के समान। पुष्पिका नहीं है।

संख्या १५८. चाणक्य नीति भाषा (राजनीति शास्त्र), रचयिता—गुमानी, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२० = १८६३, प्राप्तिस्थान—पं० शिववश शुक्ल, ग्राम—जैतीपुर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ वृद्ध चाणक्य राजनीति भाषा लिप्यते दो०॥ सुदर सुड गणेश गुरु गिरि तनयारु गिरीश, गुण गभीर भवनीर निधि पार करन नम सीस॥ नीतिशास्त्र चाणक्य मुनि रच्यो जु सस्कृत बानि। भाषा रथ विन व्याकरन दोहा सुप ते जानि॥ शंकर देव प्रणाम करि जग गुरु, ब्रह्म वंदि। कहूं जु संग्रह शास्त्र को नमि सिर विष्णु विरचि॥ आप कहो चाणक्य मुनि सग्रह राज सुनीत। सोहू नीके कहत हौं नर बुद्धि बधै प्रतीति॥

अंत—पटित और भूपाल॥ जो होनो तैसे हुवै न हुवै औरं साचि॥ या जावैं वह आपही ले जावै कै पाचि॥ नर पावै प्रापति अरथ लवे न दैवहिं जोर। तहा सो विसमय है कहां जो अपनो नहि और॥ वन रण वैरी अगिन जल पर वत सिर अरु सिंधु। सुत प्रमत्तरु विपम थल रक्षा पूरव पुन्य॥ राजनीति कवि विष्णु गिरि यह अष्टम अध्याय। रच्यो गुमानी पठन हित दोहा। वध वनाय॥ इति श्री वृद्ध चाणक्य राजनीति अष्टमो अध्याय समाप्तं शुभ लिपत सुपानद ब्राह्मण सवत् १९२० वि०॥

विषय—चाणक्य कृत राजनीति शास्त्र का भाषा में वर्णन

संख्या १५९. शब्दावली और दोहावली, रचयिता—गुरुदत्त दास (पुरवा देवीदास, बाराबंकी), कागज—सफेद मोटा, पत्र—८२, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्) ४६७, पूर्ण, रूप—अच्छी, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पांडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि—जै शम्भु तनय अनादि देव सुरादि मुनि सब ध्यावहीं। जै एक रदन गयद वदन, अनद करन कहावहीं॥ नैसिद्धि-सदन दरिद्र-कदन, विशाल लोचन राजहीं। जैयती रुप अनूप हौ तन कोटि रवि छवि भ्राजहीं॥ जै नाग भूषण लम्ब-उदर अनेक विघ्न विनाशक। जै उमा सुवन प्रत्यक्ष हौ सत सिद्धि ज्ञान प्रकाशकं॥ अब धाल मोहि निहाल करहु, गरीब जानि के भेटहू। गुरुदत्त चरनन परि कहै, गन्नेश सब दुख मेटहू॥

अंत—दो० नाम देवहित कारने, मुर्दा गाय जियाय। अस प्रताप सति नाम का कसन भजहु चित लाय॥ जग जीवन महराज की, कीरति जग में छाय। अस प्रताप सत नाम का, कसन भजहु चितलाय॥

× × × ×

दो० झूठे माया रामका कोंचि रहे जो फोम । गुरुदत्त दास कह भेप के, आदर अगमा होय ॥ चारि मासि पैसा चढ़े, आठ मास गुरुदेव । गुरुदत्त दास की बात कह, विरला समुझै भेव ॥ संत दरस हरि भजन कह, बाढ़ा बहुत अनूप । जे प्रानी बाढ़ा करैं, तिनका हिरदय सून ॥ दूध दही घृत गेंहु घी, बरद्ध मिष्ठ कोंचि गुरुदत्त दास दुर वेश के, होय न अगमा मांहि ॥

× × × ×

विषय—रामनाम की महिमा, ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का वर्णन ।

संख्या १६० स्वरोदय, रचयिता—गुरु प्रसाद, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—७×५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९१७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विष्णुदत्त उपनाम पुजी महराज, ग्राम—मौकी, डाकघर—ताकाव बकसी, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ स्वरोद लिख्यते ॥ सुखुम भेदका भेद बखानी ॥ जाते रवि ससि कह पहिचानी ॥ दोहा ॥ दहिने पाछे भान हर बाया आगे चंद । सो प्रकृति भान कै पाद ॥ बाई नारि आवे दहिने सो प्राकृति चंद कै होई ॥ जो पै उसम देह सुप होई ॥ दहिनी नारि चंद कर माई । पहर चारि रवि राखो बहु तुरत उसमते होइ आनंद ॥ चंद्रम ते होई सितलाई बाई नासिक चंद कर भाई ॥ दोहा ॥ राखी सुई भाल मैं नारी पहरी चारि, चंद छूटे चंद्रम ते ऐसे कहँ बिचारि ॥ चौपाई ॥ तबही सारी तुरंत न जाई । रोग दोष बंधनते बाई ॥ आपु आपु घर करै स्वरोदय गुरु प्रसाद सुनि अमृत बोल ॥ ताते दुई पवन पुनि चहई ऐसे ठांव सवारि रहई ॥ दोहा ॥ मई मिथुन ऊचे चढ़ी भीजन पावन माह । चंद रवि दूनो बढ़े पुनि उमरी माह ॥

अंत—अथ बक्का मुखी मंत्र, ॐ ह्रीं बक्का मुखी सर्व दुष्टनाम् वाचम् मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ॐ ह्रीं स्वाहा जप २१००० सद्य वश्य होई नाव सीरको मन—आकर कुली अकर कछु सी वश्य मैली राम्र भेषी कछी हरी मरि हरि हरिमी जाग तिक बसन कुयोवो आने प्रगट महतो हाउस सहेज मारोकी पावा अगस्त मुनि मारे की हत्या आपीमी तया २१०८ जपे विधि बसी के कचौरा मैं पानी भरके पानीमीं मोह घेर देपे जे आप करै बबेसी प्याप मूल होय बसु आप, ॐ धरती हिवी मह कृपासी कृष्मा विष्णु अखिल मंह बारी धासा दुरबहु हुत पूरण करहु महेस मूल पूर्ण अन्नपूर्ण कहु सिद्धि देहु गणेशः ॐ श्री कमलाक्षी अमुकी मा कर्षय मा कर्षय ॐ फट कुकुम रक्त चंदन काश्मीर अगर कस्तूरी गोरोचन मोज पत्र ॥ (समाप्त)

विषय—इडा पिंगला आदि नाड़ी व स्वर भेद तंत्र मंत्रादि ।

संख्या १६१ ए. गोपी पचीसी रचयिता—ग्वालकवि, कागज—साधारण पत्र—३, आकार—११¾×८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर हरी बक्स सिंह, रईस, ग्राम—कुटरिया, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री जगदम्बायै नमः ॥ अथ श्री गोपी पचीसी लिख्यते ॥ कवित्त—ऐसे

कान्ह जान जैसे ऊधव सुजान आये हैं तो मेहमान पर प्राननि निकारे लेत। लाख वार अजन अँजाये इन हाथन तें तिनको निरंजन कहत शठ धारे लेत ॥ ग्वाल कवि हाल ही तमालव में वालन में ख्यालन में खेले हैं कलोल किलकारे लेत। ह्याँन परचेरी संग जोग परचेरी ह्याँ भेज परचे हमारे लेत ॥ १ ॥

अंत—उद्धव वाक्य कृष्णसों रावरे कहे तें हौं गयो व्रज वालन पै देखत ही मोहि कियौ आदर अपारा है। कहते तिहारी वात गालते भभूके उठें परत वरूद की जमाति ज्यों अँगारा है ॥ ग्वाल कवि कहैं लागी लपट दवामिनि सी दौरयो मै तहां ते तऊ छुरस्यौ दुवारा है। गोपी विरहागिनि में जोगउड़ि गयो ऐसे जैसे उड़ि जात पड़ें पावक में पारा है ॥ २५ ॥ इति श्री गोपी पचीसी सामस्त सुभमस्तु चित टूटे तेमित्तगों, नहीं दूध के भाव। तुम्हें सोच है पुत्र को, हमें पीठ पर घाव ॥

विषय—(१) पृ० १ से ५ तक—उद्धव गोपी सवाद । गोपियों द्वारा उद्धव के योग प्रस्ताव का विरोव, विरोध के समर्थन में कुछ प्रमाण। और हास्य तथा उपालंभ मूलक कुछ उक्तियाँ कृष्ण को गोपियो की पत्री। उद्धव प्रति गोपियों का वाक अत में उद्धव का वाक्या कृष्ण से (गोपियों का वियोग वर्णन)।

संख्या १६१ बी. रसिकानद, रचयिता—ग्वाल, कागज—देशी, पत्र—१५०, आकार—१२ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन कटी, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७९ वि०, लिपिकाल—स० १९४२ वि०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिह, ग्राम—मल्लापुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसिकानद ग्रंथ ग्वाल कवि कृत लिख्यते ॥ प्रथम मंगला चरण ॥ कवित्त ॥ कारण हैं ज्ञान के अज्ञान पजारन हैं तारन निदानी भव सिंधु के सदा अनिंद ॥ टारन कलेस के सुदारन सुजल पुंज कीने ही अगारन मैं धारन महा मुनिंद ॥ ग्वाल कवि पूरित मनोरथ दे जैत पत्र छत्र छवि छावैं सीस देव औ अदेव विंद ॥ टारे निंद निंद इदरासन वलिंद वर इंद तें अधिक त्रिगुरु के चरणारविंद ॥ १ ॥ तीनौ तीनौ सातौ नव चौदह दशौ हू दश तीन और तेतिस की पंगति रहै जुरी। द्वादस अठारह औ चारि पट गावैं सदा सात आठ नौहू ध्यान लावैं करि चातुरी ॥ ग्वाल कवि व्यापक सभी मै जोति जागी एक दूसरोन कोऊ की सरन गहैं पुरी ॥ फैलेगी कवी सुरी धरा पै विसै वीसु रीजु नैकौ कहू दीसुरी जु पैसी जगदीसुरी ॥

अंत—अथ अथ पूरनार्थ पूरन संजोग सिंगार उदाहरन वृंदावन कुज कालिंदी के कूलन पै कोकिल कुहूकै सनी वानी सुधाधार में ॥ राधिका रसीली से गुविंद विपरीत मागी प्यारी नटि जात चप चचल अपार में। ग्वाल कवि मद मुसुक्याय इतराय धाय अंक लगि जाय अगराय हर वार मै ॥ छकि रहे छाकन मै थकि रहे अग अग जाके रहे दोऊ रूप जार में ॥ अथ भूपति को आशीर्वाद ॥ सोभा के सरस सुपदायक समूह साजै सुजस वितानते तनाओ छित जाल पर ॥ दान के दरेरन सौ दारिद दरेऱ्यो करौ पूरन प्रतापहि वढ़ाओ हर साल पर ग्वाल कवि गुनीनन को मान नित कियौ करो आप चिरजीवौ रहौ सज रवि चाल

पर ॥ वृन्दावन चंद आइ वृन्दा बन रानी रचै राजा जसवंत सिंह राव रैया भाऊ पर ॥ दो० श्री हमीर सिंह नंद वर श्री जसवंत मुनेस । आयु सुजस धन राज सुत वृद्धि करै पर मेस ॥ श्री राधा गोविंद को वृन्दा बिपिन विहार तामें चित कवि ग्वाल को बसी सदा गिर वार ॥ इति श्री मन्महाराजाधिराज सुप समाज वर वंत छिति मंत श्री जसवंत सिंघ जी हेत ग्वाल कवि विरचिते रसिकानंद ग्रंथे तीन रस रसन के मिश्र सतु बरनन नाम द्वादसो प्रकाश श्री संवत १९४२ क्वार मासे शुक्ल पक्षे तिथौ पंचम्यां भौम वासरे लिपतं रघुवर दयाल मिश्र औरंगाबाद निवासी ॥ सिव सिव सिव ॥

विषय—नायिका नायक भेद, हाव भाव, रस, वर्णन और प्रथम काव्य में निरूपण ॥

संख्या १६१ सी. कृष्ण चंद्र जू को नखशिख, रचयिता—ग्वालकवि, कागज—साधारण, पत्र—७, आकार—११३ × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८४ = १८२७ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० हरीबक्स सिंह रईस, ग्राम—कुठरिया, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री जगदंबायै नमः ॥ अथ श्री कृष्ण चन्द्र जू को नख सिष लिक्यते ॥ कवित्त मंगलाचरण···बीन कर वर हंस चलित चपामित कीरति मुर गावत मुनीसुरी ॥ सुमि रूप मुलचंद प्र···प्रमाणित बरु जनमाऊ मृदु मता सिद्धि···ग्वाल कवि निगम पुरान की अधार करै कीरस है को कलीसुरी ॥ बरनि सकै··· नहीं है याह संपति भरैया महा राजा जगदीसुरी ॥ १ ॥ वार्ता—यह कवित्त मित्र पदछेप है । श्री सरस्वती जी पक्ष श्री श्री राधा जी पक्ष ॥

अंत—सैवत नर न आस भरत निमिष पर सेवै कयों न जाहि जो रची सभा सुरेस की । तिमिर अज्ञान की विनास्यौ चंद दीपन तैं व्यापै क्यों न जाहि जातैं दुति है दिनेस की ॥ ग्वाल कवि जाके गुन गन को कहै सो कौन भौम मत धारी व्यास हारी मति सेस की । त्यागी जग विपपन सिद्ध छिति सिद्धि मेरी सिध द्विस सुप सिध छपि रिप केस की ॥

इति श्री मन्महाराजा धिराज महाराज श्री कृष्ण चंद जू को नष सिष संपूर्ण शुभमस्तु ॥

विषय—श्री कृष्ण जी की नख-शिख शोभा ।

कवि परिचय—श्री जगदम्बा की कृपा । ताकरि भयो प्रकास । वासी वृंदा बिपिन के । श्री मथुरा सुप वास ॥ विदित विप्र वंदी विराद । वरने व्यास पुराण । ता कुल सेवा राव की । सुत कवि ग्वाल सुजान ॥ वेद सिद्धि अहि रैन कर । संवत् आदवनिमाण । भयो दसहरा को प्रगट । नख सिख सरस प्रमान ॥

संख्या १६२ ए. कालिंद नामा, रचयिता—हैदर (हैदरी) कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९, पूर्ण,

रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१२=१८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामनारायण, ग्राम—नसीरपुर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ जो हो कासिद तेरा दिल्ली को जाना। खबर उस केसरी प्यारे की लाना ॥ कई दिन से उसे देखा नहीं है। कि हम मथुरा चले और वह कहीं है ॥ नहीं है ताप खत लिखने की मुझ को। जवानी हाल कह देता हू तुझको ॥ यह कहना उस मेरे प्यारे से नागाह। तेरा आशक मिला था वर सरे राह ॥ चला जाता था वह सहरा भटकता। कि हर जा हर कदम पर सिर पटकता ॥ कभी वो ना तवा खाता था ठोकर। कभू सहरा में यों कहता था रोकर। कियारब वो मेरा प्यारा मिलादे। गमें हिजरा से जल्दी अब छुड़ादे ॥ कहू मजनू से गर मैं इस सितम को। वो भी भूल जा लैली के गम को ॥ कहू फरहाद से अपनी कहानी। मेरी यह सुन हो शीरी जवानी ॥ दुबारा फिर वो अपने तेश मारे। मुझे सद आफरीं कह कर पुकारे ॥ कही मूंकसद बराए आग के पाक। हमेशे गम जदह रहता है गम नाक ॥ यह कह कर हो चला कासिद रवाना। उसी से पूंछकर उसका ठिकाना ॥ गया वो नागहा दिल्ली शहर में। दिया हर एक का खत हर एक घर में ॥ मेरा पैगाम जब वो याद करके। गया नजदीक उस महरू के घर के ॥

अंत—लगा कहने वो एक से वो सखुन वर। मिया यहा केसरी रहता कहां पर ॥ कह उसने कि उसका है यही घर ॥ बले घर में नहीं है वो सितमगर ॥ यहां दम लेके कुछ आराम करले। तू आया जिस लिये वह काम करले ॥ यह कासिद की और उसकी गुफ्तगू की ॥ वो आया आप जिसकी आरजू थी ॥ लगा कहने वो मुह से देके दुश नाम ॥ बता तू कौन है किसका है पैगाम। कहा कासिद ने मैं तो बेगुनाह हूं। जवानी तेरे आशक की सुनादूं ॥ मुझे पैगाम यह उसने दिया है। कि जिसका तूने दिल टुकड़े किया है ॥ उसे सब यार समझाते हैं हरदम। मिया तू किस लिये खाता है हर दम ॥ मगर देवेगा फुरसत दूर मुझ को। मिलेगा कोई परी रू और तुझको ॥ यह सुनकर वो लगा कहने पियारा। हुआ था किस लिये आशक हमारा ॥ अकेला जो अगर उसको मै पाऊ ॥ मजा इस चाह का उसको चखाऊं ॥ भला रुसवा किया दिल्ली शहर में। गली कूचे में औ बाजार घर में ॥ बस हैदर फिकर दिल से उठादे। नया मजमून और पढ़कर सुना दे ॥ संवत् १९१२ वि० आश्विन कृष्णा १४ लिखा बल्देव दास मेरठ शहर ॥ राम राम राम राम राम राम राम ॥

विषय—आशिक का अपने माशूका के पास समाचार भेजना ॥

संख्या १६२ बी. कासिद नामा, रचयिता—हैदर (देहली), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६=१८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर अजयपाल सिंह, ग्राम—गांगीमऊ, डाकघर—सिधौली, जिला—सीतापुर।

आदि-अंत—१६२ ए. के समान। पुष्पिका इस प्रकार है—

संवत् १९१६ आश्विन कृष्ण १४ ॥ इति श्री कासिद नामा समाप्त।

संख्या १६३. सुदामा चरित्र, रचयिता—हलधर, कागज—साधारण, पत्र—१७, आकार—९½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४५०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०० = १७४३ ई०, लिपिकाल—सं० १८८२ = १८२५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कन्हैयालाल पुजारी की धर्मपत्नी, ग्राम—सिरसागंज का देवीमंदिर, जिला—मैनपुरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री हलधरदास कृत सुदामा चरित्र लिष्यते ॥ अब बरनऊं प्रभु स्याम मैं, टेरि सुनायो वेनु । जागु जागु रे हलधरा, चरन धूर पद रेनु ॥ १ ॥ चंद्र धूर पद चरन कौं, जग रचना को देव । अंतर बहुत ही श्रम परु, सुधा सरिस सो देव ॥ २ ॥ कलऊ के कवि गन बहुत बरनें चरित्र अनंत । कहैं कौं सुरस बखानी (?) सबै सखी मे संत ॥ ३ ॥ सु चरित्र मो मित्र को, कह प्रसिद्धि संसार । जासु चातुरी प्रेम तें, हम कीन्ही आहार ॥ ४ ॥ उरे उरदाय सम्प मुनि करो करन गुन गान । प्रथम दूरे उचार गुरु, पूरण ब्रह्म समान ॥ ५ ॥

अंत—महाराज रवि कृष्ण यश यदपि न काहू ते सरै । तदपि अल्पमी हू के कहें ज्ञान भवन दीपक बरे ॥ ४ ॥ अस विचारि के हलधरा, कछुक सुयश वर्णन कियो । मानो महा समुद्र ते सुघी अम जल भरि लियो ॥ ५ ॥ × × × इति श्री पोथी सुदामा चरित्र दीन उद्धारणोनाम प्रेमरस हलधर दास विरचितायां संपूर्ण समाप्ता ॥ शुभम् ॥ संवत् १८८२ का ॥ कार्तिक शुक्ला ७ गुरु दिने ॥ लिपितं गोपाल ब्राह्मण गौड़ान्वय ॥ शुभ मस्तु मंगलं दधात् ॥

विषय—सुदामा की कथा।

ग्रंथ निर्माण काल—ग्रह[०] सहस रस[८] वेदि[१] सत्[१] कुसुमाकर सुदि पंचमी। संपूरण पोथी भई दीन उधारण प्रेमरस ॥

संख्या १६४ दफ्तरुल रचयिता—काजी हमीदुद्दीन, कागज—साधारण, पत्र—२१०, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६९००, खंडित। रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—अब्दुल शकूर, ग्राम—पाईकनगर डाकघर—पाईकनगर, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—(पृ० १६) पैदा इस मोहम्मद के नूर करि। नाम मोहम्मद कर अति नीक। अब्दुल समद कहा सुनऊ चहूंथ ॥ पहिले नूर मोहम्मद भयेऊ। आखिर नबी तीन विधि रहेऊ ॥ सुनि हाकिम पूछेउ मन लाई। सो मन आखिर आनि न जाई ॥ तब पूछेउ ए कथा सुनायहु। मंसे हमो दिल केर मिटायहु ॥ कैसे आदि नूर र रचि लीन्हा। आखिर ना है नबुवत दीन्हा ॥ कहसि कि सुनु मूरख अज्ञानी। आदि अंत कर सुनहु कहानी ॥ हजरत हमीदुल जो काजी, सैर किहिन रब मोहं माजी ॥ विधि ने पा जगत मह, ऐसाम पूं तब करि दीन। नूर की कालें भई, खिताब सिर्जि दीन्ह ॥ एक नमी रब पुन भयेऊ। पूंद एक नूर प्रगटि तहं भयेऊ ॥ तब विधि का देखि रूपजी दाया। पुर जयार सिर्जिन करि माया तब एक यख विधि मै पेमा। सुन्न एक रचि नूर मो मेला ॥ तब विधिना के

मन अस आई । प्रगटौ नूर रचौ दुनि आई ॥ अस गुन कर चाँदह पँढ साजा । ऐही नूर सों सब उपराजा ॥

अंत—पृष्ठ—६२० से नबीजी कहेउ मुहम्मद सुनि लीजै । रब का शुक्र कहि सिजदा कीजै मोरे दरस जिन्ह सपन निहारा । रब तिनका किहि बोलि पियारा औ जेन्ह कथा मोर सुनु मन लाई । तिन बहु जग मा दान दिआई ॥ बिहफै जुमा दुम्म बिवहारा । पढ़हु सुनहु कथा उजियारा ॥ नर नारी जे सुनि मन लाई । बहुत सवाब लिहेऊ तिन्ह आई ॥ नेकी लायहि फरइ ते, कहहि सुनहिं जे लोग । हसर माहिं बिधि बकसि हैं । भए तम पावो भोग ॥ जिन ऐह कथा सुनैचित करिहैं । तिहि पर रवि नित रहमति करिहैं ॥ लिपइ फरिए ते बहुत सवाबा । नरक न देपु ना परहि अजाब ॥ नबी जी तिनकर करै सिफ़ाता । बिधि के दरसन पै रह मुपराता ॥

× × ×

बिषय—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक—लुप्त ।

(२) पृ० १९ से पृ० १०८ तक—मुहम्मद के नूर एवम् सृष्टिनिर्माण आदम, हौआ की पैदाइश । शैतान का वंदगी न करना और दुःख पाना गेहूँ खाने पर शैतान द्वारा आदम का निकाला जाना, पारवती महादेव संवाद । महादेव जी का कैलाश जाने का कारण । कुरान का चतुर्थ वेद बनाया जाना । अवतारादि वर्णन । भविष्य वर्णन, आदम और हौआ का वंश वर्णन । कबील-चरित्र, बकील का अलकापुरी गमन । नारद मिलाप विवाह और वंस विस्तार । (नूह आदि जन्म) बुत परस्ती का बाहुल्य, अब्दुल्लाह और अमीना का संजोग । अमीना का स्वप्न और गर्भ स्थिति ।

(३) पृ० १०९ से पृ० १९८ तक—मोहम्मद का गर्भ में आना । दशों मास की व्यवस्था । गर्भ के बालक के संबध में पंडितों की भविष्य वाणी (बुत परस्ती को बंद करने की बात) पिता की चिन्ता, गर्भ स्राव का प्रयत्न । असफलता । जन्म । जन्म काल की मुसीबत । हलीमा दाई द्वारा नबी का पालन । अब्दुल्लाह का मदीना गमन और मृत्यु । नबी का अमीना माता सहित मदीना गमन, माता एवम् दाई का दुःख और दोनों की मृत्यु । बारह वर्ष की उमर में नबी का बसरा गमन, सिद्धि से मिलना, बीबी खुदैजा की तारीफ । मुहम्मद का खुदैजा बीबी के यहा रोटी पर ऊंट की सेवा में रहना । और अन्त में मोहम्मद के साथ विवाह संबंध एवम् सुख भोग वर्णन ।

(४) पृ० १९९ से पृ० २९८ तक—मुहम्मद और खुदैजा के विवाह का मंगल व गर्भादि वर्णन, अबूबकर की तारीफ । अबूबकर का बालचरित्रादि वर्णन । तवल्लुद मुर्तजा आशिकारा । मुर्तजा अली के जन्म का मगल । अली का लालन पालन । हूरों की स्तुति । रूप सौंदर्य का वर्णन । इलहाम अली की संतति का वर्णन । कलमा पढ़ाने की ईश्वरीय आज्ञा । अमीर हमजा का वर्णन । अमीर हमज़ा का कलमा पढ़ना । फातिमा की मृत्यु । हजरत उमर का कलमा पढ़ना अजीज बादशाह का कलमा पढ़ना । मुहम्मद के मदीने जाने की आज्ञा, काबे के चार स्तम्भो का दर्शन । मदीने में रसूल के पहुँचने पर वहां

के लोगों का मंगलाचार। रमजान मास का महत्त्व रोजादि रखने का विधान, जंग-बदर जहाँ अमीर हम्ज़ा शहीद हुवे। जुल्फिकार की तारीफ।

(५) पृ० ३६९ से पृ० ५०२ तक—फ़ातिमा को नबी की मृत्यु का झूठा समाचार दिया जाना, उसका दो दासियों के साथ मुद्दस्यल में आना। एक दासी का नबी की खबर लेने जाना। बिसमिल्लाह की तारीफ। शाम देश के युद्ध का वर्णन। गढ़ लोपरा के बादशाह यूसुफ के नबी के कलमा पढ़ने की आज्ञा न मानने पर युद्ध। काफ़िरों को मारकर नबी का मक्के में दाखिल होना। मलीकर का इसलाम को बरकत देना और माता पिता को इसलाम में लाना। जंग हुनएन की गढ़खाबुला की लड़ाई। उस्मान द्वारा रसूल का सम्मान। बीबी फ़ातिमा द्वारा उनका स्वागत। बीबी फ़ातिमा की अल्लाह द्वारा बड़ाई। बीबी फ़ातिमा के निकाह का वर्णन। अबूबकर के एक सेब लाने की कथा। इब्राहीम की तारीफ।

(६) पृ० ५०३ से पृ० ६२० तक—मदीने का गमन। सूरेफ़ातेह पढ़ते ही रसूल का दर्द कम होना। नबी की वसीयत का वर्णन। रसूल की दस बीबियों का वर्णन। तारीफ नबी की वफ़ात का वर्णन, तारीफ मसीद दिन मोमीद की। तारीफ हजरत बिलाल साहब की, तारीफ हजरत सिद्दीक की।

(७) पृ० ६२१ से मध्र।

संख्या १६४ ए. चुरिहारिन भेष, रचयिता—हंसराज, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६¾×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूबे, साहित्यान्वेषक, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ चुरिहारिन भेष लिष्यते राधा। दो० प्रथमहिं सुमिरि गनेस को बरनन चित बिहारि। तब कछु आगम गाइये राधा कृष्ण बिहार ॥ १ ॥ कान्ह कुँअर धरि भेष चुरिहारिन पहिर अनामो गहयो। सिर कैरिया हायन चुरिया एकन चलो बरसानमें। कुसुमिकमल का लहँगा पहिरे हर कमर की लाई। चुनरी चाद चपेरक बारी स्यामल तन पर साई। अरु पहिरे अतलस की चुलिया तामें गोंट दुराई कसि बाँधे बंधन दोउ भुज पर तब जोबन अधिकाई। बिछिया झुमका पायन दुनकन चाल चलै मतवारी। बेद न हलकन कटि की लचकनि मोहत सुर नर नारी। कर साहत कचन को कड़ना मोतिन लागि न्यारी।

अंत—कचन चुरिया जरित चुनिन सा कर्पे मंद बरोरी। मैं पहिरैं वृषभानु कारिमी सुनि है बहियाँ गोरी। ममकन कर पहिरावत चुरिया कमकि कमकि तन तोरी। सिनै र ललिता को बोरन हँसिके मुख मोरै। सुंदर रूप सलोने नैना प्रसपक सों कर आनी। आनन है एम्बिका नू. हमका दृगको करे मरदाना। करि विनती वृषभान राहनों अरु कीरति सों कहिये। इते राँ तुम सुनि चुरिहारिन तुमहिं पावन दिं देये। या सुनि है वृषभान राह जू चकि है कीरति मैना। उमही चर कमनी मरदानो अबरा हुष गावन ऐना

× × × ×

विपय—कृष्ण का स्त्री रूप धारण करके राधिका को छलने के लिये वरसाने की ओर जाना। (२) गोकुल से मथुरा और मथुरा से वरसाने आना, राधिका का गृह पूछना—ललिता से वार्तालाप। (३) राधिका से चुरिहारिन की भेंट—राधिका द्वारा उनका आदर (४) चूड़ी का पहिराया जाना।

संख्या १६५ बी. सनेह सागर, रचयिता—वक्सी हंसराज (राठ, हमीरपुर), कागज—देशी, पत्र—७७, आकार—९३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७३३, खंडित। रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६१ = १८०४ ई०, प्राप्तिस्थान—वावू राममनोहर विचपुरिया, ग्राम—पुरानी वस्ती, कटनी मुरवारा (म० प्रां०)।

आदि—श्री वृषभान कर्म कुल ऊंच तिहि छिन ताह पग धारे। वावा नंद वरोठे हो करि आदर करि वैठारे ॥ आपने अपने गोपिन वालक तुरतहि वोल पठाये। करि सिंगार करत कौतूहल घर घरते वढ़ि धाये ॥ २४ ॥ कोऊ वांधि लाल सिर चीरा कोऊ वांधे फेंटे। आपुस मैं सवही सौ हिल मिल करी अंक भरि भैंटे ॥ कोऊ मोर सिपा सिर पोसैं कोऊ वैन वजावै। कोऊ लाल काछनी काछैं कूदत नट से आवैं ॥ २५ ॥ कोऊ कसि कसि वाघत गाती कोऊ वाधत फैटी। कोऊ अपनी गाइ वुलावति वनते दै दै सैटी ॥ आतुर ह्वै आतुर वठि दौरे नद राइ की पोरी। कहत वनै कुतूहल पुर कौ लरकन लगी ठौरी ॥ २६ ॥

अंत—जौ लगि तजत न नैम निगौड़ौ प्रेम पच नहिं पावै। तौ लग परम धाम रस लीला कैसहु नजर न आवै ॥ प्रीति पवन लगि उठती निसु दिन प्रेम समद की लहरें। प्रेमी परेति परम प्रीति सौं नैमी नेकु न ठहरे ॥ ७२ ॥ या सनेह सागर की लीला केसरि कैसौ कंदु। ताते सुनै श्रवन पावत है पूरन परमा नंदु ॥ जो सनेह सागर की लीला सो जन जानौ वाते। मन रंजन हैहि सकलगन की कान्ह मिलन की घाटे ॥७३॥ श्री राधा वर विमल गुनन कौ निसुदिन सुनौ सुनावौ ॥ आनँद उदित होत उर अतर मन वांछित फल पावौ ॥ ७४ ॥ इति श्री सनेह सागर लीलायां श्री वगसी हंस राज विरंचिताया श्री राधा जू सपा भेप वर्ननो नाम न म तरगा ६ ॥ दोहा ॥ कविता कौ परनाम है लिपिता कौ मनुहार। भूलौ विसरौ होइ जहँ लीजौ मिंत्र सम्हार ॥ १ ॥ या सनेह सागर की लीला वाचैं अरु सुनै ताकौ राम राम लिपितं चैन सुप अगर वारे कुवार वदि १० ॥ सुक्रेको ॥ सवतु ॥ ००१८६१ ॥ मुकाम नागौध ॥ रत्नपान ॥ राम राम राम

विपय—कृष्ण लीला का वर्णन।

संख्या १६५ सी. विरह विलास, रचयिता—वख्सी हंसराज (राठ, हमीरपुर), कागज—देशी, पत्र—१७०, आकार—९१/४ × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८११ = १७५४ ई०, लिपिकाल—सं० १८४५ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—वावू राम-मनोहर विछपुरिया, मु०—पुरानी वस्ती, कटनी मुरवारा, जवलपुर सी० पी।

आदि—श्री गनेस जू श्री सीताराम जू श्री भवानी जू श्री सिव जू श्री हनुमाजू

अथ बिरह बिलास लिख्यत चौपाई श्री सत गुरु सनमुखी गन नाइक। सिव सारदा सर्व सुख दाइक ॥ कर जुग जोर तुमहि सौं ध्याऊं। बिरह प्रेम बुध्धि वर पाऊं ॥ १ ॥ जिन तुमरे पद पंकज चीन्हे। तिन्ह कहं तुम सिगर सुख दीन्हे ॥ कछु कविता पै करत बिचारी। कर्यो सिरिष यह भरम हमारी ॥ २ ॥ कविता बहुत भये कवि माही। तिन समान मेरे मत नाही ॥ करि पशु कछु बड़ बचन प्रकासू। ससि समीप जिमि जुगनू प्रकासू ॥ ३ ॥ जा होंवै दिल प्रेम प्रकासू। कहीं ग्रंथ सो बिरह बिलासू ॥ आसिक अरु मासूक सुहाये। दिल मिलि हिय मैं छबि छाये ॥ ४ ॥ दोहा ॥ नहिं सेवा नहि बुध्धि बल, नहिं कछु ग्यान बिचार। प्रेम कथा आरम्भिय नाथ निबाहन हार ॥ ५ ॥ हंस राज मन राज के, परम प्रकास उर आनि। प्रेम प्रीति की रीति सौं, बिरह बिलास बखानि ॥ ६ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ प्रेम प्रीति सौं बरनियौ, प्रेम प्रीति की रीति। प्रेम प्रतीति सौं समुझियो, दिल करि प्रेम प्रतीति ॥ १२ ॥ छन्द गीत का ॥ हरि के चरित्र विचित्र अद्भुत अति पवित्र सुगावहीं ॥ सनकादि कुम सुख गिरा पत पतिपार कहिं न पावहीं ॥ गंभीर गुन सागर बिसद पै सुहृद दिल मंह ल्यावहीं ॥ सर्बहि सदा लगि प्रेम गुरु बारबार सिधुमि ध्यावहीं ॥ १३ ॥ दोहा बिरह बिलास बिलास यह आनहु प्रेम निकेतु। हंस राज पाम्बी रुचिर, राज रसिक प्रभु हेतु ॥ १४ ॥ हरि गुरु सत गुरु की कृपा, भयो प्रेम परगास। प्रेम प्रीति की रीति सौं, बरन्यौ बिरह बिलास ॥ १५ ॥ इति श्री बिरह बिलासे श्री पगनी हंस राज बिरचिते आगमी बीसव पर्बमे नाम पंचा दसमोध्याय ॥ १६ ॥ इति श्री बिरह बिलास संपूर्ण सुभ मस्तु ॥ आदौ श्लोकसंख्या एवं २८ सचित्र संपर्ण। सूरण हस्ते न दातव्यं मेवं रक्षन्ति पुस्तकं ॥ १ ॥ अक्षर पदभ्रष्टस्यातादि न लिपते मयाग्र सुर्व क्षमुध्वं पा मम दोषो न दीयते ॥ इति सुभ संवतु १८७१ बैसाख बदि ४ बुध बासरे कौं समाप्त सु पराशौ सीताराम जू महाराज पार्य ठाकुर सीताराम लिखितं ग्रा भजन सिंघ कादी ग्राम वासिना—

विषय—मंगलाचरण, प्रस्तावना और आश्रय दाता का वंश परिचय—पद्मावती पुरी सुखदाई। महिमा तासु सुरान न जाई ॥ प्राननाथ जगनाथ सुहाये। आइ तहाँ जनि हिय सौं छाये ॥

× × × ×

तहँ तहँ हुइ देस विदेसा। मिले आइ छत्र माल नरेसा ॥ धन्य धन्य जग छत्र नरेसू। तार तम्य लीन्हें उपदेसू ॥

× × × ×

कामी सुत पंचम प्रगट। गहिर धार रवि बंस। देवी के परताप तै। बुंदेला अवतंस ॥

× × × ×

तिन सुत सुर हिरद सु हुव। भयो कस्यप कुल भान ॥

× × × ×

तिन के सुत अति प्रगट हुव। सभा सिंघ सुर भान ॥

× × × ×

सभासिंघ सुव प्रबल हुव। श्री नृपसिंघ अमान ॥ (२) कवि वंश वर्णन—कस्यप कुल कायस्थ मनि। श्री निवास श्री वास। हुव हमीरपुर वंस वर। चंद सु माधव दास ॥ द्वै सुत माधव दास के, जिमि लछिमन रघुराइ ॥ जेठे मुरली धर उदित। लहुरे केसव राइ ॥ मुरली धर सुत तीन हुव। उदित परम उदार ॥ कासी सुर बुंदेल नृप। गहिर बार दरबार ॥ सुप निकेत पुनि परम सुप। के निधि परम प्रवीन। हंसराज लहुरे सबनि। गुरु सेवन जिन कीन ॥ बिजै सपा गुरु भाई हमारे। तिनके चरन कमल उरधारे ॥ (३) ग्रंथ रचना काल.—इंदु इदु वसु इंदु धरि। सवत हिय निरधार। माघ सुक्ल की पंचमी। कीन्हों ग्रंथ विचार ॥ (४) कृष्ण के गोकुल से मथुरा चले जाने पर व्रज वनिताओं की विरह दशा का विस्तृत वर्णन।

संख्या १६६ ए. गिरधर जी की मुरली, रचयिता—हरदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—४ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० गंगासिंह, ग्राम—मक्षगाव, डाकघर—ओयल, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गिरधर जी की मुरली लिष्यते ॥ श्री कृष्ण कन्हैया और वनवारी वसता गोकुल नगरी में। गूजर दान दहीले निकसी नहीं उजेला नैनन में ॥ पहिला महीना असाढ़ लागा जगल हो रही हरियाली। अय जंगल हो रही हरियाली ॥ दम पर दम पर याद तु करती झुरती अपने महलों में ॥ गिरधर मुरली वजी कृष्ण तेरी आवाज सुन कर मैं दौड़ी ॥ रिम झिम रिम झिम मेहा वरसे नंद गांव पर लगी झड़ी ॥ १ ॥

अंत—जेठ महीना तपे देवता सारद मन किरपा कीजै श्याम सपी हरदास तुम्हारी कंठ ज्ञान सुधि बुधि दीजै ॥ वंशीवजावन वशीवजावन वंशीवजावन की लकड़ी। भजमन राधे भजमन कृष्ण भजन करो तुम खड़ा खडी। गिरधर मुर्ली वजी कृष्ण तेरी आवाज सुनकर मैं दौड़ी रिम झिम रिम झिम मेहा वरसै पनवट पै लग रही झड़ी ॥ इति श्री गिरधर मुर्ली की वारह मासी हरदास कृत सपूर्णम् संवत् १९२७ चैत्र शुक्ल नवमी लिषतं रामवली माघ मास कृष्ण पक्षे द्वादस्याम् संवत् १९२७ वि० ॥

विषय—राधाजी की विरह की बारामासी ॥

संख्या १६६ बी. गिरधर की मुरली, रचयिता—हरदास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—४ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामनाथ पुजारी, ग्राम—बिसवां, डाकघर—बिसवां, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गिरधर जी की मुरली लिष्यते ॥ श्री कृष्ण कन्हैया और वनवारी वसता गोकुल नगरी में, गूजर दान दही लै निकसी नहीं उजेला नैनन में। पहिला महीना असाढ़ लागा जगल हो रही हरियाली। अय जंगल हो रही हरियाली ॥

दम पर दम पर याद न करती सुरती अपने महलों में। गिरधर मुरली बजी कृष्ण तेरी आवाज सुनकर मैं दौड़ी ॥ रिम झिम रिम झिम मेहा बरसे नंद गांव पर लगी झरी ॥ १ ॥ दूजा महिना सावन लगिया मेरा जियरा है रोगी। जोसी पंडित सबही पूछे और पूछा रमता जोगी। गिरधर मुरली बजी कृष्ण तेरी आवाज सुन कर मैं दौड़ी ॥ रिम झिम रिम झिम मेहा बर से पनघट ऊपर लगी झरी ॥

अंत—अठ महीना तपे देवता सारद मन फिरदा मेरे श्याम सखी हरदास तुम्हारो कंठ शान सुधि सुधि दीजै ॥ बंसी बजावन बंसी बजावन बंसी बजावन की लकरी। मन मन राधे भज मन कृष्णा भजन करो तुम पड़ा पड़ी ॥ गिरधर मुरली बजी कृष्ण तेरी आवाज सुनकर मैं दौड़ी, रिम झिम रिम झिम मेहा बरसे पनघट पर लग रही झरी ॥ ११ ॥ इति श्री गिरधर मुरली की बारह मासी संपूर्ण संवत् १९२७ वि०।

विषय—गिरधर मुरली की बारहमासी ॥

संख्या १६६ सी कृष्ण का बारहमासा, रचयिता—हरदास, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६०४, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ शुक्ल, ग्राम—सिकरा, डाकघर—सिधौली, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गनेशाय नमः ॥ अथ कृष्ण का बारह मासा लिख्यते ॥ बारामासी कहत है श्री गनेस पद वंद। प्रीत सचिव हो के है त्यों लागी नद नंद ॥ श्री राम जी को अपने कटै जम की फासी ॥ कोई दुनिया दारी को करते है हांसी। है जीन हाय सोटा जम घोर मवासी। निज राम नाम सार बारामासी। सतबीर पंडित सीव मैं जाई कै सबमे प्रनाम करकै मानी मनाइ कै ॥ गुन बिन सुध रहोइ श्री गर दिल मिलाइ कै बिन राम नाम मर सै रमु पछाइ कै। हो रितु बसंत मैं ऐ सखी हमसे बिछुरे कंत। सब बिरहा के बस भए सुरनर मुनि सब संत ॥

अंत—श्री राधे कृष्ण कृष्ण जपत नाम है। आराम रहै सावन में आठो जाम है। मन होइ उजल लगत हरनाम रटत है आसक्त सराब प्याले मर मर सै रे तन मन सो लगावै नेह बिन तुम की देते छबि छके मैन रूप कहत हरनाम है पतीत प्रेम आसिक महबूब पाक है इति श्री बारामासी संपूरन। लिखतं गंगा गनेस मिश्र बदर का निवासी संवत १६०४ चैत्र मासे शुक्ल पछे द्वितीयम् ॥

विषय—श्री कृष्ण का द्वारका जाना और कुब्जा से प्रेम करना राधा का विरह आदि वर्णन।

संख्या १६६ डी श्री कृष्ण की बारहमासी, रचयिता—हरीदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९२७=१८७० ई० प्राप्तिस्थान—पं० दैवनारायन मिश्र, ग्राम—मुस्तानपुर, डाकघर—धाना, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बारह मासी कृष्ण जी की लिख्यत ॥ हमको

दरस देव नंद लाला । अरज करैं सगरी बृजवाला ॥ क्वार मास सांझी सव सखियां पूजत होकर चंदन थाला । हमतो दरस कृष्ण विन देखे भस्म लगाये ओढ़े मृगछाला ॥ सारो वन हर वीन वजा के मानो हम पर जादू डाला ॥

अंत—सावन सखिया झूलझूला वहियां पीतम के गल डाला । हम ढूढ़त फिरती हैं वन वन ढूढ़त चरन पड़े हैं छाला ॥ पावन करन करन हर ग्रीवा पहिनो गले मुतियन की माला ॥ भादों महीना जन्म कृश्न का सुंदर की मिट गई सव ज्वाला ॥ दरसन देख सव आनंद पायो हरीदास हरि हैं प्रति पाला ॥ हमकों दरस देव नंद लाला ॥ अरज करैं सगरी व्रज वाला ॥ इति श्री कृष्ण की वारह मासी संपूर्ण इसके पश्चात एक वारह मासी और भी हरिदास की है जो विलकुल फटी कोई महीना पूर्ण नहीं इसमे नोट नहीं की लिखा जोधासिंह संवत १९२७ वि० ।

विषय—विरहिनी की वारह मासी ॥

संख्या १६७ ए. हरनाम का वारहमासा, रचयिता—हरनाम, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१७ = १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामभरोसे मिश्र, ग्राम—वरौली, डाकघर—नेरी, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ हरनाम का वारहमासा लिष्यते ॥ लगा असाढ़ सुहावना घर गरजत चहु वोर । पी पी करत पपीहरा सो वोलत दादुर मोर ॥ छंद ॥ अव तो सषी असाढ़ मेरी सुध पिया ने ना लई । वन गरज वैरन वादरी मेरी नींद नैनन की गई ॥ किस्से कहूं अपना करम सषि रितु अगम वाल्म नही । क्यों कर जिऊँ विन पी मुझे वरषा की रितु वैरन भई ॥ विधना ने मेरे कर्म में पिय की जुदाई लिख दई । चकवी की जो गत पत विना सखि सोई गत मेरी भई ॥ सूना भवन हरि नाम विन पी पी पपैया कर रहा । गई भूल सव सुख देख दुख पापी पिया ना घर रहा ॥

अंत—॥ छंद ॥ लगा जेठ उड़ती सी खबर प्यारे की आ कहि एक ने । झट पट मैं उलट किवाड़ के पट से लिपट गई देखने ॥ फरकी भुजा वाई मिले सांई चले परदेस से । चल देखो सखि आये पिया प्यारे रंगीले भेप से ॥ खुसियां भई हैं मुझको भारी नौवतें वजने लगी । जिसका पिया जिससे मिलै खैरात सव वटने लगी ॥ सुवस वसो वो नगर घर जहा वारा मासी हो रही । विछड़े पिया हरनाम मिले प्यारे के वल वल मैं गई ॥ इति हरनाम का वारामासा संपूर्णम् ॥ संवत् १९१७ जेठ सुदी दसमी लिखा गया प्रसाद कायथ नौवतगंज के वीच ॥ राम राम राम राम राम राम राम ।

विषय—एक विरहणी का वारहमासा ॥

संख्या १६७ वी. हरनाम का वारह मासा, रचयिता—हरनाम, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री अजयपाल सिंह, ग्राम—गाजीमऊ, डाकवर—सिधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ हर नाम का बारह मासा लिष्यते ॥ दो॰ ॥ लगा असाढ़ सुहावना घन गरजत चहुं ओर। पीपी करत पपीहरा सो बोलत दादुर मोर ॥ छंद ॥ अब तो सखी असाढ़ आया पिया ने सुधि मेरी ना लई। घन गरज बैरन बादरी मेरी नींद बैरन की गई। किस्से कहूं अपना मरम सखि इत अगम चाकम नहीं। क्यों कर जिऊँ बिन पी मुझे बरषा की रितु बैरन भई ॥ विधना ने मेरे कर्म में पिया की जुदाई लिख दई। कामनी की जो मन पत बिना छपि सोई गत मेरी भई ॥ सूना भवन हर नाम बिन पीपी पपीहा कर रहा। गई भूक सब सुप देख दुख पापी पिया ना घर रहा ॥

अंत—छंद ॥ लगा जेठ उकती सी खबर था कही एक ने। इत पट मैं उसके किवाड़ के पट से छिपकर गई देखने (आगे की जंजीर नहीं है) करनी मुझ बाई मिले साई चले परदेस से। चल देखो सखि आये पिया प्यारे रंगीले भेष से। खुसियां भई हैं मुझको भारी नौबतें बजने लगी। जिसका पिया जिस्से मिले शीरात सब करने लगी। सुबस बसो वो नगर भर जहां बारा मासी हो रही ॥ बिछड़े पिया हर नाम मिले प्यारे के बक बक मैं गई ॥ इति श्री हरनाम का बारामास संपूर्ण समाप्तः संवत् १९१० वि॰ जेष्ट शुक्ल पूर्णमासी ॥

विषय—एक स्त्री का अपने पति की याद से व्याकुल होना।

संख्या १६८. रंगभाव माधुरी, रचयिता—हरिदेव (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—१०८, आकार—१ × १ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०११, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं॰ १८०१, प्राप्तिस्थान—श्री रामस्वरूप शुक्ल, ग्राम—सरैया, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री राधा वल्लभो जयति ॥ अथ श्री रंग भाव माधुरी लिष्यते ॥ दोहा ॥ रस मय जिन आनंद निधि परम प्रेम के कंद ॥ बसी सदा हिय दास के गिरधर गोकुल चंद ॥ १ ॥

अंत—छप्पय ॥ ज्ञान जलधि प्रसन्न सठ मधि कुमुदिनी मुदित ॥ आदि वृन्द जस जन्म बदन सुमन मधु विदित ॥ दोहा ॥ हरसन मो संग्रह कर्यो अपनी मति अनुसार। सुद्ध होइ चित देषि कै कीज्यो रसिक विचार ॥ ज्यों सब में बस प्रान है त्यों ये रस उल्लास। रसिकन को आनंद कर पूरन सब विधि आस ॥ देपत अति सुष होत है भाव माधुरी रंग। दरस दई विनती करत सदा रहौ ही संग ॥ रंग रंग के रूप लषि सब विधि पायो रंग। रंग दरस की दीजियो सब रंगनि की संग ॥ इति श्री कर्णज्योपनाम गोकुलस्य ज्योतिर्वित हरिदेव महात्मज हरिदेव भट्टेन गुंफिता रंगभाव माधुरी वर्णने वैसेकि हरसन नाम दसम उल्लासः श्री राधारमण लिपि कृतं अज स्थल ब्राह्मण परमार्थे महाराजी श्री श्री श्री श्री लक्ष्मी जी राजा वृजेन्द्र श्री श्री श्री श्री श्री रणधीर सिंह संवत १८०१ मिती असाढ़ बदी ११ रविवार शुभे ॥

विषय—हाव भाव, रस, नायिका नायक भेद, शृंगार आदि।

संख्या १६९. शारदा स्तोत्र, रचयिता—हरिहर ब्रह्म, कागज—साधारण, पत्र—३, आकार—६¾ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०,

खंडित। रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री गंगाप्रसाद पांडे, ग्राम—अशोकपुर, डाकघर—पट्टी, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—दुर्जला मदुलतां कुसुमांबुज पेमला। दशन दाड़िम बीज विराजिना हरि ॥ ४ ॥ स्तन विडंवित हैं मन उर्नती मद सरोजित कज्जल कुंभ हा ॥ चरण कांति जिता रुण पंकजा हरि ॥ ५ ॥ विमल विद्रम पाणि रुहा सदा मल्लि सद्भव मालि लसद्भुजा कमल कुंकुम चार्चित चित करा हरि ॥ ६ ॥ प्रकट पाणि करे जय मालिका कमल पुस्तक वेणु वराधरा ॥ धवल हंस समा श्रित वाहना हरि ॥ ७ ॥ कुमुद कैटभ मान पनोदरी। सकल मंगल धूरुह मंजरी ॥ बहु धनार्पित ताम्रत वल्लरी हरि ॥ ८ ॥ कमल कांधमितां चरणावरा, मुकुट कंकन हार सुदगजा ॥ सुकवि मानस मानसिमारुना हरति गौरि विर्गौरि विर्गौरिजा ॥ ९ ॥ डरति शैव पतिर्वसु भूधरा सकल धर्म सुधा रस सागरा। मुनिन मानस जापति मौरवी हरि ॥ १० ॥ सु नर रा नर रा नर रा गदा सुबुध मा बुध मान दा। सु कविता कविता कवितारदा हरि ॥ ११ ॥

अंत—स्तुतिमिमां पटते प्रति वासरं, जगति ज्योति ग्रह सुप संपदा। भवति तस्य सदा वरदायका, न भयो लोक सुप लभते नर. ॥ १२ ॥ मुनि विलोचन वान महेस, मेन भस्याति चतुर्थों प्रति भुवौं। द्विज वराण वच स्तवन गिरि सुमनो विबुधो सुमति हरि' ॥ इति श्री हरि हर ब्रह्मा विरचित सारदास्तोत्र संपूर्ण :—

विषय—शारदा-स्तोत्र।

संख्या १७० ए. साहित्य सुधानिधि, रचयिता—हरिप्रसाद (रीवाँ), कागज—देशी, पत्र—१०५, आकार—१२ × १०इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रतिमान सिंह, ग्राम—रुस्तमपुर कलां, डाकघर—अजगैंत, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशाय नम' ॥ अथ साहित्य सुधा निधि लिष्यतेः ॥ त्रिविधि ताप त्रासक विजन स्वजन सुमगल रास, वंदौं करन गनेस को करन सुबुद्धि प्रकास ॥ कवित ॥ पुरुष अनादि आदि अंत नलहत जासु ध्यावत सृजाद सिद्धि सिगरे भुवन की। वितरत चारो फूल चारि भुज राजै मजु रापत न त्रास मत मन में दुवन की। हरिचंद विबुध मिलिंदक्ष मकरंद काज उर अभि लाप पद पंकज छुवन की। बालक विनोद वर वलित विलास भास छवि गिरिजा के गोद गिरजा सुवन की ॥

अंत—ससुझि बूझि मन रीझि हैं कविजन सुमति अगाध, सकल भेद साहित्य के जिन जानत सुभ साध ॥ सुजन सील टकन सहित विगरी लेत सुधार। कुजन क्रूर करिका सद्रस अनुपम देत बिगार ॥ यह साहित्य सुधा निधै जो देपैं चितु लाइ। ताहि सकल साहित्य की सब विधि त्रपा बुझाइ ॥ ओनइस सै त्रैतिस विसद संवत माधव मास कृश्न पक्ष दुतिया दिवस पूरन भो रसराज ॥ सोरठा ॥ लहि सासन ईसान समुझि बूझि प्राचीन मति। विरच्यो ग्रंथ प्रमान महाराज रघुराज हित ॥ मो मति अति गती हीन रचन जोग्य कछु ग्रंथ नहिं। पै जिन सासन दीन तासु कृपा पूरन प्रगट ॥ करि विनती संत कविन सो

यह मांगत हरि चंद । छमि अनुचित भाषा अमित कीजै सोधि सुछंद ॥ अति अगाध साहित्य अति सुगम किया यह हेत । बहि सुनि गुनि मन रीझि हैं सज्जन सुबुद्धि निकेत ॥ हरिप्रसाद साहित्य की अमित कठिन मग जानि । सरल हेत यह ग्रंथ में विरच्यो विमल बिधान ॥ छप्पै ॥ जब लगि सूरज चंद उदधि मरजाद पुहुमि पर । जब लगि सुर द्रुम काम धेनु बर बिमल बिबुध घर । जब लगी सिव सिर गंग बसति अरधंग जननि जग । जब लगि हरि जस बिमल प्रगट आनंद कंद मग । हरिचंद भार भूतल सकल सहस सीस सिरपर धरय । रघुराज सिंह नृप मुकुट मनि अचल राज तब लगि करय ॥ दो० ॥ जै जै हरी गुन पद पदुम परम परमानंद । जय जय श्री रघुराज नृप जग जस आनंद कंद ॥ इति श्री मान राज्य महाराजा धिराज राजा बहादुर श्री रघुराज सिंह जू देव प्रसन्नार्थ हरि प्रसाद विरचिते साहित्य सुधा निधि ग्रंथ संपूर्ण । समाप्तः श्री राम राम राम राम संवत १९२९ जेठ ॥ दो० ॥ राम सनजस निधि ससी सवत सुखद बिचार । जह शुक्ल दुतिया गुरौ कवि हरिचंद सिंगार ॥

विषय—साहित्य वर्णन ॥

संख्या १३० बी. साहित्य सुधानिधि रचयिता—हरि प्रसाद श्री उपनाम हरिचंद, कागज—साधारण, पत्र—१५५, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण (अनुष्टुप्)—५३८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९११ = १८७१ ई०, लिपिकाल—सं० १९८२ = १९२५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रघुवरदयालु विशारद अध्यापक म्युनिस्पल स्कूल, कबीरचौरा बनारस ।

आदि—अथ सूचीपत्र, साहित्य सुधानिधि—दोहा ॥ प्रथम मंगला चरन करि, पुनि नृप बंस प्रसंग । निज कवि बंस प्रसंग कछु विरचित प्रथम तरंग ॥ कवि प्रयोग कारन बहुरि, कवित प्रयोजन जान । हतु रीति लक्षन किया, दुजी तरंग बखान ॥ यह तीसरे तरंग में, सब्द अर्थ विचार । वाच्य, लक्ष व्यंजक बहुरि, तात्पर्ज निरधार ॥ कहीं चतुर्थ तरंग में, ध्वनि को बिमल बिचार । हाव भाव गुन अमित जहँ, रस के विविध प्रकार ॥ यह पचमें तरंग को, यहविधि कहौं बखान । गुनी भूत व्यंगादि कहीं मध्यम, कविता जान ॥

अंत—पृष्ठ १८१—१८२

१—शृंगार षोडश—अंगसुचि मंजन अमल बसन पहिरना जावक केस समार.न
१ १ १ १ १ १
मांगसेंदुर अगराग भालतिलक चिबुक तिल बनाना मेहदी लगाना बारगजा
१ १ १ १ १
अंग में भूषनयुत सुगंध लगाना सुमुख दंतरंगना अधर राग काजर लगाना
१ १ १ १ १
सप्तर्षि—कश्यप अत्रि बसिष्ठ विश्वामित्र, भारद्वाज जमदग्नि गौतम समीर तीन—
१ १ १ १ १ १ १
सीतल मंद सुगंध × × ×
१ १ १

विषय—अलंकार शास्त्र का पूर्णांग विवेचन—विशेष—महाराज रघुराज सिंह की वंश-परंपरा का विस्तार पूर्वक वर्णन है।

ग्रंथ निर्माण काल—चौनइस सै वत्तीस विमल। संवत् अस्वन मास। सुक्लपक्ष दसमी विजय, किय प्रारंभ प्रकास ॥ प्रथम मगला चरण कहि, पुनि नृप वंस प्रसंग। किय कवि वंस प्रसंस कछु, विरचित प्रथम तरंग ॥ × × × ग्रंथ समाप्ति काल—चौनइस सै तैंतीस विसद, संवत् माधव मास। कृस्न पक्ष दुतिया दिवस, पूरन को रस राज ॥

संख्या १७१ ए. रत्न मुहूर्त्त संग्रह, रचयिता—हरीप्रसाद (पार्वती अयोध्या), कागज—साधारण, पत्र—४४, आकार—५×३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१९ = १८६२ ई०, लिपिकाल—सं० १९५१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथ प्रसाद, ग्राम—अजगरा खुर्द, डाकघर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥

गौरी सुत पद वन्दिकै। निज गुरु पद सिरनाय। कछु ज्योतिष वरनन करत। दो मिल होहु सहाय ॥ १ ॥ रत्न महूरत नाम यह। भाषा करत विचारि। हरि प्रसाद द्विजवर कहत। वहु ग्रंथन मत डारि ॥ २ ॥

अंत—भरणी कृतिका रुद्रअहि। द्वि दैव अरु शत तार। रिक्ता षष्ठी अष्टमी। परिवा कुहू वेकार ॥ द्वादशि शनि कुजवार तजि। याम्या मन को वादि। द्विरा भाव चर लग्नविनु। स्थापन देवादि ॥

× × ×

इति श्री हरि प्रसाद मिश्र विरचिते रत्नमुहूर्त्त संग्रह प्रकरण षष्ठम् ॥ सवत् १९५१ ॥

विषय—ज्योतिष (मुहूर्त्त शास्त्र)

ग्रंथ निर्माणकालः—अंक भूमि गृह मेदिनी। सम्वत्सर मधुमास। सित दशमी बुधवार जव। तव यह कियो प्रकास ॥

ग्रंथकार परिचय—अवधपुरी के पवन दिशि। जोजन एक प्रमान। नद अरु ग्राम पुनीत अति। पारवती जग जान ॥ अलपी के सुत रामधन। ताको नाम उदार। हरि प्रसाद सुत ताहि के। कीन्ह्यो ग्रंथ विचार ॥

सख्या १७१ बी. रत्न मुहूर्त्त संग्रह, रचयिता—हरीप्रसाद मिश्र, कागज—साधारण, पत्र—१५, आकार—६×४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामशरण उपाध्याय, ग्राम—पूरा अंटा, डाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—१७१ ए के समान।

अंत—हरिप्रसाद मिश्र विरचिते रत्न महूर्त्त सग्रह प्रकरणम् षष्ठम् समाप्त ॥

सकल सुजन पद वन्दि कै। विनती करौं वहोरि। जो प्रति देखा सो लिखा। वाँचौ अक्षर जोरि ॥ हस्ताक्षर संत वकस सिंह सोमवसी ॥

विषय—ज्योतिष।

संख्या १७२. संकट व्रत कथा, रचयिता—हरिशंकर, कागज—साधारण, पत्र—३६, आकार—७¾×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१८ पंक्ति, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६५१=१५९४ ई०, लिपिकाल—सं० १८०६=१७४९ ई० प्राप्तिस्थान—श्री वासुदेव पांडे, ग्राम—कमास, डाकघर—मापोगंज, जिला—प्रतापगढ़।

अंत—जो या कथा सुनै धरि ध्यानु। बाढै आउ (आयु) लच्छि संतानु।

रिपु हानि अरु नासै सोगु। सफल करै सर्व सुष भोग॥

दोहरा—हरि संकर द्रुत उच्चरी। संका करी न कोइ॥ श्रोता वक्ता कृत मता। मन बंछित फल होइ॥

इति श्री गनेस महात्मे श्री हरिचंद्र पुराने। पंडित श्री हरिसंकर विरचिते सतजुगे संकट व्रत कथा चतुर्थोध्याय॥ ४॥

दोहरा—बहु विधि भाषा उचरी। कीन्ही कथा रसाल। पढत सुनत मन में फुरी। जौ सुमिरौ गौपाल॥

इति श्री गनेस व्रत कथा संपूरन समाप्ता सुभमस्तु मंगलं ददातु कातिक वदी ७ संवत् १८०६ सुभम मस्तु जैसी प्रति पाई तैसी उतारी मम दोष न दीयते॥

विषय—(१) पृष्ठ १ से १३ तक लुप्त। पृष्ठ १४ से २४ तक—गनेश के व्रत का महत्व। राजा तथा प्रधान का आख्यान। ब्राह्मण बालकों का उससे जीवित निकलना। गनेश स्तुति।

(२) पृ० २५ से पृ० ३५ तक—दूसरा अध्याय। संकट व्रत। व्रत के शुभ पात होने का कारण। राजा युधिष्ठिर द्वारा इस व्रत के किए जाने का कारण। व्रत का महत्व तथा विधान पाँचवों द्वारा संकष्ट व्रत का सम्पन्न किया जाना और उसमें पाँचवों की संपन्नता।

(३) पृ० ३६ से पृ० ४८ तक—तृतीयाध्याय। वनगमन के पश्चात् धर्मसुत द्वारा संकट व्रत तथा गनेस को धन्यवाद देना। सीता हरण के पश्चात् वशिष्ठ जी के आदेशानुसार संकट व्रत का किया जाना और उसके फलस्वरूप उनके विजयी होने का वर्णन। ब्रह्महत्या के दोष का निवारण। सात सौ समाधियों की स्थापना। व्रत का फल।

(४) पृ० ४९ से पृ० ७० तक—चतुर्थ अध्याय। वशिष्ठ जी द्वारा, राम के अनुरोध पर व्रत का इतिहास सुनाया जाना। राजा हरिश्चंद्र का आख्यान, नारद के उपदेश से हरिश्चंद्र का व्रत रखना। गनेश जी की उत्पत्यादि का विवरण तथा व्रत का फल वर्णन। और उसके द्वारा उक्त राजा की कुदशा के अन्त होने का वर्णन। इस कथा वर्णन का इतिहास। प्रस्तुत ग्रंथ के निर्माता तथा नृप का उल्लेख—

"कहि 'हरिसंकर' सुभ मति कई। नृपवर जोर सिंघ सों कही।" कथा श्रवणादिका फल। ग्रंथ समाप्ति के पश्चात् हवन करने की विधि।

संख्या १७३ ए. भाषा गीता ज्ञान, रचयिता—हरी वल्लभ, कागज—देशी पत्र—८७, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—८७०५, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७१ = १७१४ ई०, लिपिकाल—सं० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राम भरोसे, ग्राम—केवलपुर, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री राम कृष्णायनमः ॥ अथ हरिवल्लभ कृत भाषा गीता ज्ञान लिष्यते ॥ दो० ॥ ॐकार जु ब्रह्म यहै असि गरंथ के नाम। सोभा मन जू श्रेय है। मन मन्त्रनि माला धाम ॥ सप्त पड गुन विस्नु है। वेद व्यास रिपि जानि। अनुष्टुप छंद सु जाति है परमात्मा सो मानि ॥ सोच वस्तु अनसोचिहैं पंडित वचन न होय, भक्ति वंत सर्व धर्म तजि मो सरनहिं रहि सोइ ॥

अंत—यह गीता अदभुत रतन श्री मुष कियो वषान। वार वार निरधार के परा भक्ति को ग्यान ॥ भक्त वस्य श्री कृष्ण जु है यह कीन्हो निरधार। करि भक्ति इच्छा सचे यहै वेद को सार ॥ श्री मथुपुर मडले श्री आग्रे भू देव। यह जु कही गीता अर्थ वुधि सिधि जग हित भेव। यह गीता अर्थ मैं सवै अनुष्टुप छंद। हरिवल्लभ दोहा रचे याते भरि आनद ॥ हरि वल्लभ भाषा रच्यो गीता रुचिर वनाय। सदाचार निरनै भयो अष्टादस अध्याय ॥ सत्रह सै जु एकोतरा माघ मास तिथि ग्यारसै। गीता को भाषा करी हरि वल्लभ सुष सार सें ॥ इति श्री भगवत गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया जोग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगो नामष्टादसोध्याय ॥ भगवत्त गीता परम जो पढ़त सुनत चित लाय। वाढ़त भक्ति अषंड सो हरि श्री हरि सदा सहाय ॥ जो कोद चाहत भव तज्यो कृष्ण चरन मैं वास और सकल विधि छोडि दे करि गीता अभ्यास ॥ गीता का टीका जु यह श्री हरिवल्लभ कीन्ह मोसे अति मति मंद को सुगम ग्यान कहि दीन्ह। वेनी सी पावन सदा देनी है फल चारि। स्वर्ग नसेनी हरि कथा नर्क नेवारन हार ॥ गीता लिष्यते रिपिनाय त्रिपाठी सइदरावाद के सवत १९०४ कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे तिथौ पौर्णमास्या चन्द्रवास्रे शुभभूयात सीता पति रघुपति महाराज धिराज श्री कृष्ण जदुराय माधव वृंदावन चंद जै जै करुणा अैन ॥

विषय—भगवद्गीता का भाषानुवाद

संख्या १७३ बी. सगीतसार सुराध्याय, रचयिता—हरिवल्लभ, कागज—साधारण, पत्र—१४, आकार—१०½ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५०, खंडित। रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रामप्रसाद मुराऊ, ग्राम—पूरा विश्रामदास, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री राम चंद्रायनम॰ ॥ श्रीमते रामानुजायनमः ॥ छंद इंदा ॥ छायति है छवि ठीकहु ते लषि जोगिनि जूह तहाँ जय दंपति। भारी दिये दुतिया हरिवल्लभपानिरपेते अजो रति कंपति ॥ लाल विसाल लसै अति ही शिव भाल को नैन करौ सुष सपति। यौं प्रगट्यो अनुराग हिये जू, अलिंगन कीन्हों जवै मिलि दंपति ॥ १ ॥ दोहा ॥ गीत वाद यो नृत्य ये, कहियत है सगीत। सो सँगीत द्वै विधि कहे, मारग देसी रीत ॥ २ ॥ देपरायो जो विरचि ने, वहै भारकर प्रीति। शिव जू के आगे नच्यो, सोई मारग रीति ॥ ३ ॥ देस देस की रीति मैं, रीझत याहि सुजान। सो सँगीत देसी कहत, जानहु ताहि प्रमान ॥ ४ ॥

अंत—दोहा सातों सुर पृ होत है सुत ते मिलि का नाम। षड्ज ऋषभ गंधार अरु, पुनि मध्यम अभिराम ॥ ८१ ॥ पंचम धैवत और पुनि, कहत निषादहि सोइ। तिनकी संज्ञा दूसरी, सरि गम पधनी होइ ॥ ८२ ॥ षड्ज सुरहि केकी कहै, रिष सहि चातक मानि। छागर कहै गंधार को मध्यम क्रौंच बखानि ॥ ८३ ॥ पंचम सुर कोकिल कहै, धैवत दादुर भाइ। सातौं गज बोले सुदा, सुर निषाद पाहार ॥ ८४ ॥

×   ×   ×   ×

कदम्ब अदला है पुनि वात वपमत गाइ। तामें गदल मि ॥

विषय—संगीत शास्त्र (१) पृ० १ से पृ० ७ तक—मंगलाचरण, संगीत की परिभाषा, संगीत के भेद, दोनों भेदों की परिभाषा, गीतादि का प्रमाण ग्रंथ का अति सूक्ष्म विषय विवरण, गीत का नाद मय होना। नाद से वाद और इन वादों से नृत्योत्पत्ति का वर्णन। नाद भेद—नादोत्पत्ति। १४ प्रमुख वादियों की नामावली। प्राण अपानादि वायु के स्थान, सुरभेद। (२) पृ० ७ से पृ० ११ तक—विविध सुर की उत्पत्ति के स्थान, इन सब की रूप आविष्कृत श्रुति के बाइस भेदों का कथन प्रत्येक सुर के पृथक पृथक श्रुतियों का विभाग, सुर की परिभाषा बारह विकृत सुरों का कथन। उनके च्युतादिक भेद, एक विकृत में दूसरे के मिलने से उनके उन्नीस भेद होने का वर्णन। पुनः श्रुति के बाईस इत्यादि चार भेद। (३) पृ० ११ से पृ० १६ तक—वादी तथा विवादी इत्यादि की परिभाषा, इनकी संज्ञा, ग्राम की परिभाषा, ग्राम के तीन भेद, ग्रामों के कुल का विभाग, उनकी जाति, मूर्छना कब होती है? मूर्छना का आरंभ, सप्तस्वरों से मूर्छनाओं का उदय। षड्ज ग्राम की मूर्छनाओं की नामावली, मध्यम ग्रामादि मूर्छना। मूर्छनाओं के पश्चात् नामावली, वर्णन, तान का विभाग, तान विभाग कथन। मध्यमादि के तान। (४) पृ० १७ से पृ० २५ तक—कूटतान "पचपहस चालीस" का कथन, षाडवादि भेद उनकी संख्या, चार स्वरों के भेद में निषादादि भेद सुरादिक की तानों का प्रमाण। सुरों की प्रस्तार से गणना। नष्ट उद्दिष्ट और खंड भेद का दिग्दर्शन। (५) पृ० २६ से पृ० २८ तक—कूट-तान भेद, उनके पृथक पृथक लक्षण, वर्णों की रचना की अलंकार संज्ञा बताना प्रत्येक मूर्छना के अलंकार। अलंकार लक्षण। स्वरों की पक्षियों से तुलना। अध्याय का अंत तथा ग्रंथकार का सूक्ष्म परिचय—भाषा हरिवल्लभ रच्यो सब संगीत को सार। तामें संपूरन भयो, सब संगीत विचार ॥ सप्त स्वरों का अंश भेद। रागाध्याय आरंभ—आगे खंडित ॥

संख्या १७३ सी. श्रीमद्भगवद्गीता, रचयिता—हरिवल्लभ, कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—९×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रघुनाथ, ग्राम—मोहारी डाकघर महमूदपुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भगवद्गीता लिख्यते ॥ जिसमें श्री कृष्ण और अर्जुन का संवाद है ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ धर्म क्षेत्र कुरु क्षेत्र में मिले युद्ध के काज संजय मो सुत पांडपति कीन कैसे काज ॥ संजय उवाच ॥ पांडव सेना व्यूह लखि दुरजोधन दिग

आइ। निज आचारज द्रोण सौं बोले ऐसे भाइ॥ पांडव सेना अति वड़ी आचारज तू देपि। धृष्टद्युमन तव शिप्य ने व्यूह रच्यो जु विशेपि॥

अत— हरि वल्लभ भापा रच्यो गीता रुचिर वनाइ। सदाचार वरनन कियो अष्टादश अध्याय॥ इति श्री भगवत गीता सूपनिपत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे मोक्ष सयास जोगीनाम अष्टादशो अध्याय १८॥ इति श्री भगवत गीता संपूर्णम् श्री संवत १९३१ वि० २२ फर्वरी सन् १८७५ ईसवी लिपत रामलाल पाठक जैतीपुर कलां॥

विपय—गीताजी का संस्कृत से भापानुवाद।

संख्या १७४ ए. रसिक विनोद, रचयिता—हरिवंश, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८२३ = १७६६, लिपिकाल—स० १८४५ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री अमरनाथ, ग्राम—दातापुर, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ रसिक विनोद हरिवंश कृत लिप्यते॥ चाहत पंगु पहार चढ्यो विन पावन होति है रीति जु ताको॥ नाउं न सूधो कढ़ै मुप सो चहै वावनो वातन की वहुता कौ॥ जात हंमेहूं सवै जग मैं यह जानि कछु न भयो डरु ताको भापत हौं शिशुसों अयान पै न्यान निवाहि वे सैल्य सुता को॥ वरननि नायका नायकनि लछन लच्छ समेत देपि मतो सव कविन को भेद कछुक कहि देत॥

अंत—सज्जन लपि के ग्रंथ को करि है मन में मोद। रसिकन को हरिवंस कवि कीन्हो रसिक विनोद। राम नयन वसु इंदु के कातिक पहिले पाप। दसमी मगर को रच्यो पूरन रस को टाप॥ इति श्री रसिक विनोद समाप्तम् सुभमस्तु संवत् १८४५ वि० आश्विन मास कृष्ण पक्षे तिथौ सप्तमयाम् चद्र वासरे लिपत इद पुस्तकं श्री गणेशाय नमः॥ श्रीः॥

विपय—नायक नायिका भेद और उनके लक्षण व उदाहरण।

संख्या १७४ वी. रसिक विनोद, रचयिता—हरिवंस, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२३ = १७६६ ई०, लिपिकाल—सं० १८४५ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—से० गोविंदराम भगतराम, ग्राम—अमिलिहा, जिला—उन्नाव।

आदि-अत—१७४ ए के समान पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्री रसिक विनोद समाप्तः शुभमस्तु संवत् १८४५ आश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ सप्तम्याम् चंद्रवासरेन्वितायां लिप्यतं इदं पुस्तकं॥

संख्या १७४ सी. रसिक विनोद, रचयिता—हरिवंस, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२३ = १७६६ ई०, लिपिकाल—

सं० १८३५=१७७८ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० शिवसिंह, ग्राम—हिम्मतपुर, डाकघर—सिधौली, जिला—सीतापुर।

आदि-अंत—१७३ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है।—इति श्री रसिक विनोद समाप्तं शुभमस्तु संवत् १८४५ आश्विन मास कृष्ण पक्षे तिथौ सप्तम्यां ७ चंद्र वासरे लिषतं इदं पुस्तकं ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री ॥

संख्या १७४ ए. भगवद्गीता, रचयिता—हरिवंसराय, कागज—देसी, पत्र—८५, आकार—८×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य और गद्य। लिपि-नागरी, लिपिकाल—सं० १९३१=१८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य रामभूषण, ग्राम—कामतापुर, डाकघर—इटौंजा, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भागवद्गीता भाषा लिख्यते ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ धृतराष्ट्र ने संजय से यह प्रश्न किया कि हे संजय धर्म क्षेत्र अर्थ धर्म के उत्पत्तिस्थान कुरुक्षेत्र में हमारे और पांडव के जोधा युद्ध की इच्छा से मिले हुए क्या करते हैं।

अंत—॥ दो० टीका ॥ यदि ग्रंथ में संस्कृत की विस्तार । आदि देखि अति विमल अतिशुभ्रम सुगमहु पावत पार भाषा की टीका सु यह मूलहि के अनुसार किय मुंशी हरिवंश जिमि होय प्रगत सब सार ॥ लिषा शिव भजन लाल दुबे बैरौ गाँव के बासी संवत् १९३१ वि० तिथि सप्तमी कृष्ण फाल्गुन ॥ शिव सदा सहाय करौ ॥

विषय—गीता ज्ञान।

संख्या १७४ बी. भगवद्गीता भाषा, रचयिता—हरिवंश (बनारस), कागज—देसी, पत्र—११७, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३३९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२८=१८७१ ई०, लिपिकाल—सं० १९३१ वि०=१८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मुरली धर दूबे, ग्राम—सहरपुर जिला—सीतापुर।

आदि—श्री कृष्णायनमः ॥ ॐ अस्य श्री भगवत गीता माला मंत्रस्य श्री भगवान वेद व्यास ऋषिः ॥ श्री कृष्णः परमात्मा देवता अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञा वादांश्च भाषसे इति बीजम् ॥ इस श्री भगवद्गीता माला मंत्र के श्री भगवान वेद व्यास ऋषि हैं और श्री कृष्ण परमात्मा देवता है ॥ यह मंत्र है अर्थ इसका आगे किया जावेगा यह इस भगवत गीता माला मंत्र का बीज है यह मंत्र इस माला मंत्र का शक्ति है यह मंत्र इस माला मंत्र का कीलक है ॥

अंत—हे धृतराष्ट्र जिधर श्री कृष्ण योगेश्वर और गांडीव धनुषधारी अर्जुन हैं उधर ही राज लक्ष्मी जय वृद्धि और नीति ध्रुव है यह मेरा मत है। मोक्ष योग नामक १८ अध्याय समाप्त हुआ। भाषा टीका सु यह मूलहि के अनुसार किय मुंशी हरिवंश जु होय न बहु विस्तार। इति श्री भगवद्गीता संपूर्ण समाप्तः लिषत बैजनाथ तिवारी सहरपुर मध्ये संवत् १९३१ चैत्र कृष्ण अष्टमी ॥ शुभम् ॥

विषय—भगवद्गीता का भाषा।

संख्या १७६. कोविद भूषण, रचयिता—हरिविलास, कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—१० × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वद्रीसिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्शी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनम. अथ कोविद भूषण लिप्यते ॥ दोहा ॥ जाके सुमिरे सिद्धि सब होत सुफल सब काम। हरि विलास सिर नाई तेहि प्रथम इहि करिय प्रनाम ॥ १ ॥ पुनि वंदौ निज गुरु चरण निसिदिन सदहि कृपालु ॥ असुभ विनासन सुभ करण हरण सकल भ्रम जालु ॥ २ ॥ पद्मासन श्री सारदा त्रिभुवन देवि प्रधान। हरि विलास की रसन वस कीजे वचन प्रमान ॥ ३ ॥ वंदौं पग अज विश्नु हरि जिन प्रगट्यो सुति ग्रथ ॥ ४ ॥ अथ वर्ष ग्रह फल ॥ वर्ष पेट फल भाव सव पत्र कोस अनुसार। हरि विलास वरणत सुगम जातक विषे विचारि ॥ ५ ॥ प्रथम सूर्य्य फल। दोहा। वात पित सिर पीर द्रग नारि पीर सव देह। जन विवाद चिन्ता हृदय जोरि विभूरति गेह ॥ १ ॥ पसु भय धन दुप उदरगट कुडव कलह नृप भीत, जो कलिंग ग्रह दूसरे ॥

अत—पान लाभ पुनि वाण जामे मगल मंदिर होई, दसमेचर सुर भानु जो नर पति सम नर सोई ॥ १० ॥ उरभी सुरभी लाभ धन पट भूषन गज वाजि, जो मयक अरि ग्यारेंह नृप समान सव साज ॥ ११ ॥ जठर करण द्रग सीस गदमान भग धन हानि। इन्दु शत्रु जो वरेह भीत कलह गत प्रान ॥ १२ ॥

इति श्री हरि विलास विरचिते कोविद भूपन वर्ष ग्रह फल कथनं नाम प्रथमो तरग १ शदा सीव की जय ॥ पहिले दुसरे तीसरे पचये नवये जानु दशये गेरहे सुभ सदा मुंथा की गति मानु ॥ १ ॥ चौथे अष्टये वारहे छठये सप्तम होइ मुथा सम्पति सुप हरैं कहत गणिक सब कोय ॥ २ ॥ देवा राधन द्विज कृपा गृह दानादि विसेप करैं शदा सुभ अशुभ को रहे न ताको रेप। ३। पौष मासे सुक्ल पछे तीथौं अष्टाम्या शनिवासरे श्री सम्वत् १९३० में पुस्तक लिखा देवी ॥

विषय—ज्योतिष का यह ग्रंथ है इसमें—(१) वर्ष ग्रह फल, (२) प्रथम सूर्य फल, (३) चन्द्र फल, (४) भौम फल, (५) बुध फल, (६) गुरु फल, (७) शुक्र फल, (८) शनि फल और (९) राहु फल वर्णित हैं।

संख्या १७७ ए. गाने के पद, रचयिता—हरिविलास, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—वरगदिया वावा, मुहल्ला—हिंडोलाने का नाका, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनम हरि विलास कृत गाने के पद लिप्यते ॥ राग कालंगड़ा ॥ देखि सखी छवि नद नदन की।

निरपत झलक पलक नहीं लागे भेदि गई उर चोट मदन की ॥ १ ॥ मुकट लट कुंडल की आभा भाल विराजै खौरि चदन की ।।२॥ मुख मुसक्यान विलोकत सजनी भूलि

गई सुधि अपने सदन की ॥३॥ कटि पट पीत माल बैजंती नूपुर धुनि राजीव पदन की ॥४॥ हरिविलास हरि अंग अंग सोभा गिरा थकी कहि सहस बदन की ॥ ५ ॥

अंत—राग खम्माच ॥ मोहि कृति अचानक रोकि डगर हरि लिपट लिपट गयोरी ॥ आवत ही जमुना जल भरिके औचक आय गयो छल करिके पट पर क्यों मई खींच धरनि मम चरन रपटि गयो री ॥ १ ॥ पट उघारि सब कुच निहार्‍यो बरबस पकर्‍यो हाथ हमारो। भजी हरि हरि लाज मानि रवि तमचा हर गयोरी ॥ २ ॥ जसुमति पूत अनोखो आयो चलत पंथ मोहिं अंक लगायो। हरि विलास दिन रैनि सुमिरि उर नागर नट गयोरी ॥ ३ ॥ लीला राधा कृष्ण सुनि मनमें होत विलास। गावत निसदिन जगत में राधा कृष्ण विलास ॥ हरि विलास बरनन करी सुखी रसिक महराजवंदन निसदिन सुख चाव राखों मेरी लाज ॥

इति श्री हरिविलास कृत पद राधा कृष्ण संपूर्ण संवत् १९३४ वि० श्री श्री शंकर पारबती। श्री श्री बाबा महाराज बती ॥

विषय—गाने के पद समय समय के वर्णन ॥

संख्या १७७ बी. हरिविलास संग्रह, रचयिता—हरि विलास (लखमणपुर, लखनऊ), कागज—देसी, पत्र—२४, आकार—९ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१९ = १८६२ ई०, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०। प्राप्तिस्थान—श्री श्याममनोहर सिंह, ग्राम—मुबारकपुर, डाकघर—मगराहर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हरि विलास कृत लिख्यते ॥ बसंत पूरन राग लिखत ॥ देख देख सुत चरित मनोहर आनंद उर न समात ॥ कबहुं बान कृपान गहत हरि कबहुं धुपम निसान ॥ कबहुं हरि मुख देत अंगुरी प:सत कबहुं कृपानु ॥ अति आतुर जननी उठि धावत पर बस पकरत पान ॥ हरि विलास द्विज बोल पठावत सुत हित देत सुदान ॥ १ ॥ राधे मेरी प्यारी प्यारी मेरी ओर तू देख। मैं तो परायूं नैन मैं प्यारी कजर की सी रेख ॥ राधा जी के बदन पर बेंदी अति छवि देत। माना फूली केतकी भंवर बासना लेत ॥ २ ॥

अंत—गोपी श्रृंगार नवल किसोर तन गोरी मन नागरी ॥ भरन चली जमुना जल गागरी ॥ सीस पट सोय राजै कोटि रति काम लाजै गज की गवन मुख बिधु सो उजागरी ॥ दग रतनार और सबल श्रृंगार धारे कोमल कमल गात गुन राग नागरी ॥ झलकैं कपोल छूटी मांगों छवि राय लूटी संग मैं सहेली सब सुभग सुभागरी ॥ हरि को बिलास सोभा देख देख मन लोभा रसिक किसोर सदी अनुरागरी ॥ अंक चंद्र ग्रह चाक दग वर्ष मार्ग तम जीय ॥ तिथि तिथि पूर्यो ग्रंथ वर जग सुख हेत अतीव ॥ इति श्री हरि विलास कृत संपूर्ण समाप्तः संवत १९२७ लिखा ॥

विषय—श्री कृष्ण की कथा और राधिका आदि सखियों का प्रेम आदि वर्णन ॥

संख्या १७७ सी. प्रेमाकर्षण, रचयिता—हरिविलास (लखनऊ), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०० पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं०

१९१६=१८६२, लिपिकाल—सं० १९२६, प्राप्तिस्थान—श्री जयती प्रसाद, ग्राम—गोसाईंखेड़ा, डाकघर—चामयानी, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनम. जय जय गुरु पद पद्म रज वंदौ वार वार। भव भेषज वर रज समन दमन शोक संसार ।। पुनि वंदौं सिंदुर वदन संभु सूनु गग राज। विघन हरण सव शुभ करन राखत जन की लाज ॥ वंदौं धन्वंतर चरण औ अश्वनी कुमार ॥ विश्व रोग भय हरण को लीन्हे जिन औतार ।। सकल सुरन वंदौं वहुरि विधि महेश घनश्याम। कवि कोविद पुनि विपक गण सवको करौं प्रणाम ॥ गात ताप हिमकर हरत भव भय हारक राम। सव गद गजन ग्रंथ यह रोगाकर्पण नाम ।। शारंगधर माधव सहित लोलिंव राज समेत। इन सव को मत लै रच्यौं हरि विलास जग हेत ।। नाड़ी परीक्षा ॥ हस्त अंगूठा मूल थल धमनी धाम प्रधान। दामोदर सुत जिमि कह्यो सो मैं कहत वपान ॥ वात नाडिका गति प्रथम द्वितीय पित्त की होय कफ की नाडी तीसरी हरि विलास कहि सोइ ॥

अंत—गोली नाग वेल रस ऊपण। खातहि हरत शीत को दूपण ॥ पर्पट जलद खाय जो संगा। ज्वर प्रचड को कीजे भगा ।। गोली खाय तक्र पुनि पाना। सग्रहणी गद तनु ते हाना ।। लाज समेत वटी जौं खावै। वमन उकाई नशा नशावै ॥ अतीसार गद वेग निपातहि। वटि कुटज युत खाय प्रभातहिं ॥ रक्त पित्त गद जाके होई। वृप युत गोली खावै सोई ।। जाके रहत कठिन गुद रोगा। वटी खाय पावक सजोगा ।। कृमि समूह हैं जासु शरीरा वटी विरंग हरैं तनु पीरा ।। या भेपज से सव रुज जाई। जिमि जोगी सव राग नशाई ॥ सोरठा ॥ जो या भेपज खात। ता तनु रहत न कोइ विथा। ज्यो द्विज धर्म नसात पिये वारुनी वार इक ॥ छंद ॥ भुज सहस भजन भृगु शिरोमनि कनक कश्यप नर हरी। तनु ताप ग्रीपम विधु असुर हरि तर मर वी अव सुर सरी। रुज अखिल मत मतंग नाशन ग्रंथ भेपज केशरी ।। कृत हरि विलास निवास तट शुचि गोमती लक्ष्मण पुरी ।। दो०। अंक चंद्र गृह काक हग वर्ष मार्ग तम जीव। रिपि तिथि पूज्यो ग्रंथ वर जग सुख हेत अतीव ॥ इति श्री हरि विलास विरचितं रोगा कर्पण नाम पचमो विलासः ॥ ५ ॥ समाप्त. ॥ शुभ मस्तु ॥ पौप सवत् १९२६ त्रि० शुक्ला १० ॥

विपय—वैद्यक वर्णन ॥

संख्या १७८. भक्तामर भाषा टीका, रचयिता—हेमराज (आगरा), कागज—देशी, पत्र—८४, आकार—९½ × ६¼ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुप्टुप्)—७१४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य। लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री धर्मचंद जैन—चूढी वाली गली, चौक लखनऊ।

आदि—अथ भक्तामर भाषा टीका लिप्यते ॥ काव्य ॥ भक्तामर प्रणत मौलि मणि प्रमाणा ॥ सुद्योत कंडलित पाप तमो वितान ।। सम्यक् प्रणम्य जिन पाद युगं युगादा ॥ वालं वन भव जले पत्तनं जिनाना ।। दोहा ॥ आदि पुरुष आदीस जिन, आदि सुविधि कर-तार। धरम धुरधर परम गुरु नमोआदि अवतार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुरनर मुकुट छवि करैं। अतर पाप तिमिर सम हरैं ॥ जिन पद वंदो मन वच काय। भव जल पतत उधरन सहाय ॥ १ ॥

अंत—॥ किरीष्म ॥ इह गुन माळ विसाल नाथ तुव गुग निसवारी। विविध वर्ण के पुष्प गुष में भगति बिथारी ॥ जे नर पहिरे कंठ भावना मन में भावै। मान तुंगते निजाधीन सिव लक्ष्मी पावै ॥ भाषा भक्तामर दोहा ॥ भक्तामर टीका सदा पढ़ै सुनैं जो कोइ। हेमराज सिव नपक है तस मन वंछित होइ ॥ इति श्री भक्तामर टीका ब्रह्म कार्तिक सभी हेमराज कृतं संपूर्णम् ॥

विषय—जैन भक्तामर स्तोत्र का भाषानुवाद।

संख्या १७६ ए. चौरासी पद, रचयिता—हितहरिवंश, कागज—देशी, पत्र—५१, आकार ६×४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९९ = १८४२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवकंठ बाजपेयी, ग्राम—दुधारा, डाकघर—मैतीपुर जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री राधावल्लभो जयति। हित हरिवंश चन्द्रा जयति ॥ अथ चौरासी पद लिख्यते ॥ राग विभास ॥ जोई जोई प्यारो करै सोई मोहिं भावै भाव मोहिं जोई सोइ करै प्यारे ॥ मोको तौ भावती ठौर प्यारे के नैननि में प्यारो भयो चाहे मेरे नैननि के तार ॥ मेरे तन मन प्राण प्रानहू ते प्रीतम प्रिय अपन कोटिक प्राण प्रीतम मोसों हार ॥ जै श्री हित हरिवंश हंस हंसनी सांवल गौर कहौं कौन करै जल तरंगनि न्यारे ॥ १ ॥ प्यारो बोली भामिनी आजु नीकी जामिनी। भेटि नवीन मेघ सौं दामिनी ॥ मोहन रसिक राइ री माई तासों जु मान करै ऐसी कौन कामिनी। जै श्री हित हरिवंश श्रवण सुनत प्यारी राधिका रवन सौं मिली गज गामिनी ॥ २ ॥ प्रात समय दोऊ रस लंपट सुरत जुद्ध जै जुत अति फूल ॥ श्रम वारिज घन बिंदु बदन पर भूषन अंगहि अंग विकूल। कछु रह्यो तिलक सिथल अलकावलि बदन कमल मानौ अलि भूल ॥ जै श्री हित हरिवंश मदन रंग रंगि रहे नैन बैन कटि सिथिल दुकूल ॥ ३ ॥

अंत—आजुब देखियत है हो प्यारी रंग भरी भौंरे न दुरत चोरी वृषभान की किशोरी। सिथल कटि की डोरी नंद के लाडन सौं सुरति लरी। मोतियन लर टूटी चिकुर चंद्रिका टूटी रहसि रहसि बलही गंडन पीक परी ॥ नैननि आलस बस अधर बिंब निरग पुलक प्रेम परम। जै श्री हित हरिवंशरो राजत परी ॥ इति श्री चौरासी सपूर्न। अथ अस्तुति ॥ छप्पै ॥ मन अरु विधि को मान काम पावक को पानी। प्रेम भक्ति को मूल मोद मंगल सुख-खानी ॥ निगम सार सिद्धांत सत विश्राम मधुर वर। रसिकन को रस सार सकल अक्षर रस को घर ॥ चौरासी श्री हित हरिवंश कृत पढ़ै सुनै निसि भोर दुरे चौरासी भ्रमनिते निरखै जुगल किसोर ॥ निरखै जुगुल किशोर भोर अरु निसि न जानै। पिये रूप रस मत्त भयौ कछु भर्महि न मानै। मन छकत भक्ति होइ हिय आनंद कारी। अरु वृंदावन वास भयो सुख को अधिकारी ॥ कुंज महल की टहल सुख संपति दंपति पाइ है जै श्री रूप लाल हित प्रीति सौं जो चौरासी गाइ है ॥ कवित्त छपद विभास मास मत रिझावत मैं डोरी मैं धनु आसावरी मैं है बने मत है। धनाश्री मैं जुगुल बसंत केलि देव गंधार पंच दाइ सुर भी भनै ॥ सारंग मैं ईमावस है चार ही मल्हार एक गौड़ में सुहायो मन गौरी राग सौं सन ॥ पद कल्यान विधि कान्हरो केदारो केद बानी हित ज्

की सब चौदह राग में गने ॥ इति श्री सपूर्ण सवत् १८६६ माघ मासे कृश्न पक्षे १० शुभ मस्तु द: रामवक्स हुकवर दार ॥ राम राम सीता राम ॥ ॐ नमो ॥

विषय—हित हरिवंश के चौरासी पद राधा कृश्न पर।

सख्या १७६ वी. प्रेमलता या चौरासी पद, रचयिता—हित हरिवंश, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—५४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३०=१७७३, प्राप्तिस्थान—राजा अमर सिंह, ग्राम—महरिया, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर।

आदि—१७६ ए के समान।

अंत—छाडदे मानिनी मान मन धरिवो। प्रगत सुदर सुघर प्राग वल्लभ नवल वचन आधीन सों इतो कित शरिवो॥ जपति हरि विवसि तव नाम प्रति पद विमल मनसि तव ध्यान तें निमप नहिं टरिवो॥ वदित पलो पली सुभग सरद की जामिनी भामिनी सरस अनुराग दिन टरिवो॥ हों जु रछु कहति इक बात सुन मान सर्पी सुमुप विनु काज वन विरह दुख भरिवो॥ मिलत हरिवंश हित कुंज किसलय से न करत केलि केलि सुप सिंधु में तरिवो॥ २॥ आजु जब देखियत है हाँ प्यारी रंग मेरी। मो पें न दुरित चोरी व्रपभान की किशोरी सिथिल कटि की डोरी नंद के लाल सों सुरति रैंरी॥ मोतिन लर टूटी चिकुर चंद्रिका छूटी रहसि रहसि लूटी गंडन पीक परी। नैननि आलस वस अधर बिंब निरसि पुलक प्रेम परस जै श्री हित हरिवसरी राजत परी॥ इति॥ श्री मत परम रसिक श्री गोस्वामी श्री हरिवंश हित कृत चौरासी पद समाप्तम्॥ लिपत गौरी चरन कायस्थ स्वपठनार्थ संवत् १८३० वि० जेष्ठ शुक्ल तृतीयाम्॥ राम राम राम राम राम॥

विषय—भक्ति से परिपूर्ण ८४ पद॥

संख्या १८० हनुमान नाटक, रचयिता—हृदयराम, कागज—साधारण, पत्र—१०५, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६८० = १६२३ ई०, लिपिकाल—सं० १९४४ = १८८७, प्राप्तिस्थान—श्री रावोराम, अध्यापक प्राइमरी स्कूल, आममऊ, डाकघर—गढवारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ श्री रामचन्द्रायनम ॥ श्रीमते रामानुजाय नम. ॥ अथ श्री हनुमान नाटक भाषा प्रारंभ. ॥ प्रथमाक ॥ कवित्तः—तीनो लोक पति प्रान पति प्रीति ही में रति अगिनत गती के चरन सिर नाइ हों। सदा शील पति सतपति एक नारी व्रत शिव सनकादि पति यश सुनाइ हों ॥ सुर पति हू के पति जानुकी के पति राम नैन कोर और कवहूँ तो पर जाइ हों। फुरे वाक पति सुनो संत साधु मति तव ऐसे रघुपति के कछुक गुन गाइ हों ॥ १ ॥ सवैया—काहू को सारस्वति वर पूरन काहू को हैं सिव से वर देया। काहू को हैं चतुरानन को वर कोऊ गजानन आस वसैया ॥ कान सुने पहचान न काहु सों साच कहै कवि राम कहैया। जानत श्री रघुवीर के नामहि जो सुनि ए सब होहिं सहैया ॥ २ ॥ कवित्त.—श्याम घन देह सो मैं चातक ज्यों नेह वाँधो देह प्रेम बूँद हौं जपैया ताही नाम

कौ। चरन सरोज रस भरे ताकी भयो अलि आदि न पराग पाई ताही छिन काम को ॥ रामसुख सुन सुन भयों भृग ताही छिन रूप सिन्धु मीन करहे न काहु धाम को। पै उदार राय हौं मन्दि मीख माँगों दैहो रामचन्द्र चन्द्रमा चकोर मन राम को ॥ ३ ॥

अंत—सवैया ॥ राम के पाँइन को दल पाइ मैं वारधी सों मार के देस लयो। यद राम के पाँइन के बल ते कपि मंडल में कपि राज भयो ॥ जब राम के पाँइन में अबही चित चोप मिलाइके मैन दयो। तब हौं सब पूरन काम भये कवि राम हरी प्रिय जानि लयो ॥ १४१ ॥ सोरठा ॥ सिव बिरंचि सुर ईश वेद ब्रह्म सेवत चरन। देत बसिष्ठ असीस सभा सहित रघुवीर को ॥ १४२ ॥ छप्पय ॥ संवत् विक्रम भूपति सहस पट सत असति बर। चैत्र चाँदनी दूज छत्र जहाँगीर सुमन्द पर ॥ सुभ लच्छन लच्छन सुदेस कविराम" विचच्छन। कृष्ण दास तनकुल प्रकास जस दीपक रच्छन ॥ रघुपति चरित्र तिन यथा मति प्रगट कर्यो सुभलगन गन। देत्त मन्दि राम निरभय करहु जय रघुपति रघुबंस मनि ॥ इति श्री कविवर हृदय राम कवि विरचिते भाषा हनुमानाटके श्री रघुनाथ राज्याभिषेकोनाम चतुर्दशोङ्क ॥ शुभ संवत् १९४० विक्रमी लिपतं गनेसराम पाण्डेय ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० २१ तक—प्रथम अंक। बाल कांड की संक्षिप्त कथा। मंगलाचरण, कथा की अति संक्षिप्त अनुक्रमणिका, राम का विश्वामित्र का यज्ञ पूर्ण कराना तथा ताड़िका वध, धनुष यज्ञ, सीता का विवाह, परशुराम संवाद।

(२) पृ० २२ से पृ० २९ तक—द्वितीय अंक। अयोध्या कांड की संक्षिप्त कथा, राम के राज्याभिषेक की तैय्यारी, केकई कोप, राम वन गमन। दशरथ प्राणत्याग।

(३) पृ० ३० से पृ० ४३ तक—तृतीयाङ्क। भरत आगमन दशरथ दाह दाह, भरत का वन में राम से मिलना, राम-पाँवरी लेकर भरत का लौटना, पंचवटी वर्णन, सूपनखा की कथा रावण का सीता हरण का विचार करना, और मंदोदरी का समझाना रावण का न मानना, कपट मृग आगमन।

(४) पृ० ४४ से पृ० ४७ तक—चतुर्थाङ्क। रावण का सीता जी के पास भिक्षा माँगने आना, सीता हरण।

(५) पृ० ५० से पृ० ५८ तक—पंचमाङ्क। राम विलाप, जटायुरावण युद्ध, जटायु उद्धार राम की वियोग दशा, हनुमान मिलन सुग्रीव मैत्री, बालि वध सीता को रावण द्वारा समझाया जाना सीता-संताप।

(६) पृ० ५९ से पृ० ८६ तक—षष्ठमाङ्क। सीता की खोज के लिये हनुमान का लङ्का जाना, मुदरी की प्राप्ति से सीता का संताप, त्रिजटा-संवाद, वाटिका विनाश, हनुमान का बाँधा जाना, लङ्का दहन हनुमान का लौटना और सीता का भेजा हुआ संदेश देना।

(७) पृ० ८७ से पृ० ९१—सप्तमाङ्क। लङ्का पर चढ़ाई के लिये सेना समेत राम का प्रस्थान करना समुद्र पारन।

(८) पृ० ९२ से पृ० ११० तक—अष्टम अंक। राम जी के दल का लङ्का में प्रवेश करना विभीषण रावण संवाद, विभीषण अपमान, रावण अंगद संवाद, अंगद का लौटकर राम को संवाद देना।

(९) पृ० १११ से पृ० १२६ तक—नवमोङ्क । मन्दोदरी का रावण को समझाना और रावण का न मानना, मन्त्रियों के साथ रावण का मन्त्र-विचार ।

(१०) पृ० ६४७ से पृ० १४२ तक—दशमोङ्क । रावण प्रपच वर्णन ।

(११) पृ० १४३ से पृ० १५४ तक—एकादश अङ्क । दोनों दलों में युद्ध सम्बन्धी गर्वोक्तियाँ एवम् सामग्री का एकत्रित किया जाना, कुभकरण वध ।

(१२) पृ० १५४ से पृ० १६४ तक—द्वादशमोङ्क । रावण विषाद वर्णन, मेघनाद का धेर्य देना, मदोदरी का उपालम्भ, मेघनाद वध ।

(१३) पृ० १६४ से पृ० १८७ तक—त्रयोदश अङ्क । रावण सताप वर्णन, लक्ष्मण सहार, संजीवन वटी प्रयोग द्वारा लक्ष्मण जी का पुनर्जीवन ।

(१४) पृ० १८८ से पृ० २१० तक—चतुर्दश अङ्क । रावणवध, मंदोदरी विलाप सीता की अग्नि परीक्षा, राम का अवध को आगमन, भरत मिलाप, अयोध्या के उत्सवादि, ग्रथ निर्माग का काल ।

संख्या १८१ प्रभाती, रचयिता—हुकुमराज, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—९ × ५½ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाग (अनुष्टुप्)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राममनोहर विचपुरिया, पुरानी वस्ती, कटनी मुरवारा, जिला—जवलपुर ।

आदि—॥ प्रभाती ॥ अकथ कहानी कहत हों, सुनो सत दे कान ॥ सत गुरु चरन प्रसाद तें, प्रगटयो दिन कर ग्यान ॥ १ ॥ ब्रह्मा नंद सत गुरु हैं सोई ॥ पर परा सुप दाता जोई ॥ अछर सूत्र सिपा ईनते परे ॥ पद परसोतम सेवन निज करे ॥ २ ॥ चिदानद हे गोत्र हमारा ॥ परम किसोरीई इंष्ट अपारा ॥ साधन परम धाम चित धारो ॥ सरव धाम ते जो अति भारो ॥ ३ ॥ सुप विलास गोकुल ब्रदावन ॥ अत वधु ते कहत सनातन ॥ जुगल सरुप जाय जीय रोचक ॥ भय जल ताप सकल विधि मोचन ॥ ४ ॥ विप्र ब्रह्म निज देवी ॥ निगम चार जाको नित सेवी ॥ गोकुल साला निज आला ॥ दिव्य ब्रह्म पुर परम विसाला ॥ ५ ॥

अत—जगमति मारग देपि के ॥ प्रगट भयो अवतार । तिन थे ए पधति मै ॥ भो भ्रम टारन हार ॥ ९ ॥ प्रगटे आचारज परम ॥ श्री देव चद जी नाम ॥ तिनथे पधति संप्रदा । परम हंस निज काम ॥ १० ॥ श्री प्रान नाथ तिन थें भए ॥ महामती परम उदार । प्रगट पमारथो तिन कीयो ॥ सो निज द्वार हमार ॥ ११ ॥ हुकुम राज तिन आपनो दिओ सकुडल सीस । पवति ब्रजं भूपन लही ॥ चरन कमल वगसीस ॥ १२ ॥

विषय—धामी सम्प्रदाय का मूल तत्व और उसके संस्थापन का अति सूक्ष्म वर्णन ॥

संख्या १८२. स्वप्न परीक्षा, रचयिता—हुलास राय वैद्य (आगरा), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—१० × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०४, खडित । रूप—फटी, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२० = १८६३ ई०, लिपिकाल—स० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिव नरेश सिंह, ग्राम—रामनगर, डाकवर—मल्लापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ स्वप्न परीक्षा लिख्यते ॥ रोगी को यह स्वप्ना आवे तो अच्छा नहीं । रोगी स्वप्ने में नंगा और सिर मुंडित लाल और काला वस्त्र पहिरे आदमी देखे तथा अपने को देखे और कमजल्द भूखा काला रोगी देखे तो असाध्य जानिये ॥ और भैंसा तथा ऊंट गधा पर सवार दक्षिण दिशा को जाता हुए तो रोगी अच्छा नहीं होय और ऊंच से नीचे गिर जल में डूब तथा अग्नि से जल जाय और सिंह मेढ़ी आदि मे खाया होय तथा दीपक बुझता देखे तथा तेल अथवा दारू पीता देखे और काहू को छला देवे अथवा पक्वान्न खाय कूप में पड़ ऐसा स्वप्न रोगी को होय तो असाध्य जानिये और इन स्वप्नों को जो कोई देखे तो दूसर से कहे नहीं और प्रभात उठि सम्मार्दिक स्नान ध्यान कर तो स्वप्न दोष दूर होय ॥

अंत—इस मंत्र को इतवार के दिन गोरोचन से भोजपत्र पर लिखे और जिसके बवासीर होय उसके कमर में बांधे तो चालीस दिन में बवासीर जाय। २६

१४	११	२	७
६	३	१८	१७
४०	१५	८	१
४	५	१६	१९

अथ चार प्रकार के १५ के यंत्र की विधि ॥ जिस मनुष्य का जैसा मिजाज हो सो उसी प्रकार के यंत्र का सेवन करे और मेषादि बारह राशि चारि प्रकार के मिजाज पर बांटी गई हैं सो अपनी राशि मिला कर मिजाज पहिचाने ॥

१ खाकी

८	१	६	वृष
३	५	७	कन्या
४	९	२	मकर

२ बादी

८	३	४	मिथुन
१	५	९	तुला
६	७	२	कुंभ

३ आबी

२	०	६	कर्क
९	५	१	वृश्चिक
४	३	८	मीन

४ आतशी

४	९	२	धन
३	५	०	मेष
८	१	६	सिंह

विषय—अध्याय (१) स्वप्न के बुरे भले फल (२) चिड़ियों का यात्रा समय बोलने से शकुन या अपशकुन (३) जंत्र मंत्र तथा स्वप्न के बुरे फलों की शांति के यत्न आदि ॥

संख्या १८३ ए. शालिहोत्र, रचयिता—हुलास कवि, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—११ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्री सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्शी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ भाषा शाल होत्र हुलास कृत लिप्यते ॥ सोरठा ॥ बंदौ गणपति पांय, विघ्न विनाशन शुभ करण। याको बुधि बल पाय ग्रन्थ विभव विस्तर करन ॥ (चौ० १) कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना यतन। हरि हर विधि सतत दीन्हे मन ॥ स्वेताम्बर वीना कर राजै। कमलासन गति हंस विराजै ॥ दोहा ॥ बानी विनवौं प्रेमसे मातु मुदित मन तोहि। सालि होत्र भाषा रचौं होइ बुद्धि बल मोहि ॥ चौ० ॥ श्री अम्बा हुलास मुख बानी। त्रपुर सुन्दरी आदि भवानी ॥ प्रफुलित अरुण कमल तन जासू। अरुण किरिण सम आस्य प्रकासू ॥ अरुण बसन अभरण श्रृंगारा। अरुण सुमन सुन्दर उर हारा ॥

अंत—अथ पेशाबबंद की औषध ॥ तोता पानी करै सुजान। ताकी जतन सुनहु मन मान ॥ पूछि दइ उलटो करि लीजे। छिन यक ताते पानी भीजे ॥ भीजत जल होवै बेताब। तेहि छन टारै छुटै पेशाब ॥ अथ चुलिष्टरिस्त उपचारु ॥ बेरी को फल आनि कै मीजे फेन जो होइ। लावे फेन परिस्त में घोडा निर्मल होइ ॥ मेहुवा चूरण सेर भरि सज्जी आधी आनि। फेटि आगि परसो चुरै मीजे बल सो जानि ॥ चौ० खारी लोन औ परी मिलावै ॥ पीपर पात बड़ पात जरावै ॥ अजीर पात ताको रस लेइ। माप में वे सबे मिलाय ॥ सो बाजी कै अग लगावै ॥ चुलिप रिस्त नास को पावै ॥ मंदाग्नि उपचार ॥ दो० ॥ तीन तीन कटु दाखी हर्र हिंगु चोपार। चतुर पानि कै पिंडि दै; मदागिनि उपचार ॥ इति श्री सालि होत्र मते कवि हुलास कृत अश्व मदाग्नि उपचार व जहर वातादि औपध वरणनो नाम नवमो प्रकाश ॥ ९ ॥ शालिहोत्र ग्रंथ हुलास कृत समाप्त सुभ भूयात ॥ पौष मासे कृष्ण पक्षे तिथि उ द्वतीया यां गुरुवासरे सवत १९४८ वि० लिपत चद्रिका खानीपुर के लिखा निज हितार्थ ॥ शिव शिव कृष्ण कृष्ण ॥

विषय—इसमें ९ प्रकाश हैं जिन में अश्व चिकित्सा वा शुभा शुभ लक्षण आदि का वर्णन है ॥

संख्या १८३ बी. वैद्यविलास, रचयिता—हुलास पाठक, कागज—साधारण, पत्र—५८, आकार—८ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्) ९२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७९=१८२२, प्राप्तिस्थान—श्री रमाकांत त्रिपाठी, ग्राम—बदा, डाकघर—गदवारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ चौपाई ॥ प्रथमहि गनपति चरन मनावो। जेहि प्रसाद

सुभि पद्म सुप पावो । सुभि वानी के चरन हृदय धरि । बैहि उर सुमति देहि माया करि ॥ सुभि मैन दुल्लम सुन बानी । त्रिपुर सुन्दरी आदि भवानी ॥ २क बसन उर हार विराजै । पग नूपुर किंकिन कटि माजै ॥ नयन अरुन कुंकुम कर मलवा । कुम कुम कलित सुचर्चित बलया ॥ आनन किरनि सम अम्ब प्रकासा । भृकुटी कुटिल मनोहर नासा ॥ पड़ग त्रिसूल चक्र को ढंडा । बान धनु अरु गदा प्रचंडा । औ मुसंडि कर मध्य सँवारे । समर जीति त्रिमद त्रिसिचर मार ॥ यह स्वरूप उर जो नर धार्मे सुप सोमा ढेरी करि जानै ॥

अंत—सौभाग्य सुंठी ॥ हररै अंगी कच्चरा सिंगी सतावरि ॥ पीपरि पिपरामूल ॥ अजाइन जीरा कृष्ण जोरा ॥ मोचरस गुड पल कै जरि ॥ गादर कै जरि ॥ चंदन देवदारु ॥ हरदी बंस लोचन । सौंफ नाग कमरि ॥ केसरि चिरौंजी बदाम । गरी छोहारा सालिम मिश्री मस्त की पूंती कपूर जटामासी ॥ असगंध मींग आयफर जावित्री ॥ सोगि ॥ २५ विट चीनी सीम पाव ॥ अभरक १ रांगा १ तांबा १ बाहा १ गाइके सुम कर चोवा करब सब ओषधि डारब ॥ इति सौभाग्य सुंठी पाक ॥

विषय—चिकित्सा ।

सख्या १८४ ए. अदहम नामा, रचयिता—इमाही बरम, कागज—साधारण पत्र—१२, आकार—१३ × ४३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३० पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—फारसी रचनाकाल—११८९ हि०, प्राप्तिस्थान—मुहम्मद सुलेमान अध्यापक इस्लामिया मकतब, ग्राम—याद्कगार, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—अदहम नामा । बिसमिल्लाह उर्रहमाने रहीम । ये अल्लाह तोर नाम अलखदा । तू समरथ जग बाहा ॥ सुमिरौं नाम सदा रब तोरा । चौदह भुवन तोर अंजोरा ॥ हाइ व अदद जीव सुप्र मोरा । जरा विकृत करि सहू न तोरा । मृत्यु कोड बैहि मारग पसारा । आइ नाहैं कोइ भये तुम्हारा ॥ गुन गन मात बनु आइ सँवारा । कोइ चिराग सूर उँजियारा ॥ जल पर भूमि जो परस बिछाई । करै अराम जगत जहँ ताई ॥ अस रजाक जो भइ विधाता । सबका रिजक देइ दिन राता ॥ सम्भव भाँति उपायइँ, जानै मखलूक तमाम । नाम तुम्हार गफूर है, कहैं सौं करौं कलाम ॥

अंत—इमाहिम तब अस कहा, सीस उठाइ जो लीन । माइयो मोर दुआइ सौं, पुन तरनि बिठ दीन ॥ देखा लोग तमाशुम आए, अवध मौं धंस का देन काज ॥ इमाहिम रथ पर चढि लावा । धंस गुमसत है राह मिलावा ॥ एमा नेह करी सब कोई । कालिद जगत भलाई होई ॥ इमाहिम अम कसी पियारा । अदहम क कुछ कीन्ह उँजारा ॥

× × × ×

इस्तदी बरस गृहीत अधीना । अदहम कै कथा जुपा सिरस दीन्हा ॥ बाहा ॥ भयी आदू जमइन कहा राज समार । मा तमाम यदि ऊपर सबमें मोर जुहार ॥ तम्मत बिलगैर

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—मंगलाचरण प्रस्तावना, अदहम का बसरा शहर की शाहजादी पर आसक्त होना, उसकी नाराजी, बादशाह से बसरा-प्रार्थना । एक फकीर अदहम का शाप और शाहजादी की मृत्यु ॥ (२ पृ० ९ से पृ० १२ तक—

शाहजादी का समाधिस्थ होना, अदहम का उसे रात्रि में निकालना, एक काफिले के साथ वाले हकीम द्वारा उसको चेत होना और निकाह। (३) पृ० १२ से पृ० १६ तक—शाहजादी का गर्भाधान, पुत्रोत्पत्ति, बालक का लालन पालन और पठन पाठन। बादशाह का बालक के रूप पर प्रसन्न होकर उसे घर को ले जाना। शाहजादी आदि की भेंट। बादशाह का अदहम से क्षमा माँगना, और उसके पुत्र इब्राहीम को तख्त सौंपना। (४) पृ० १७ से पृ० २० तक—इब्राहीम का विवाह, उसका शिकार को जाना और गोरखर से उपदेश ग्रहण कर काबे को जाना, गडरिये की पोशाक ग्रहण करना, बोहित पर चढ़ना, हज्जाज के अमीर के साथ होना और भाँडों द्वारा पीटा जाना, इब्राहीम को गैब से शाप देने का कथन, उसका सबको वली करा देना। उन लोगों की क्षमा प्रार्थना। (५) पृ० २१ से पृ० २४ तक—इब्राहीम का हज करना और उसका कबूल होना। इब्राहीम के बालक का ३० वर्ष की आयु में अपने पिता को खोज कर उसके पास पहुँचना, उसको देखकर बालक पर प्रीति उत्पन्न होने के कारण खेद होना, दुई के इल्जाम से ग्लानि करके अपने अथवा पुत्र के प्राण हरण की प्रार्थना। पुत्र की मृत्यु। इब्राहीम का इबादत में लग जाना। ग्रंथ निर्माण काल—सन् बारह सौ नवासी हिजरी। अदहम की कथा कहा जो गुजरी॥ माह मुहर्रम सुन ले भाई। औ तारीख ग्यारह आई।

संख्या १८८ बी. हश्रनामा, रचयिता—इलाही बख्श, कागज—साधारण, पत्र—५१, आकार—९$\frac{3}{4}$ × ८$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०२५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—फारसी, रचनाकाल—१२५७ हि०, स० १८९५ = १८३८ ई०, प्राप्तिस्थान—मुहम्मद सुलेमान इस्लामिया मकतब (पाठशाला), ग्राम—पाइकनगर, डाकघर—पाइकनगर, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—हश्र नामा। बिस मिल्लाह उर्रहमाने रहीम। सुमिरौं आदि तोहि करतारा। बरनक तोरहि सबसे न्यारा॥ परघट गुप्त दीन दुनियाई। जो तैं चहसि करसि सब साई॥ गुन कै खेत सकल जग साजा॥ बरन बरन तहँ गुन उपराजा। कीन्हसि सहसन लाख करोड़ा। चौदह भुवन साज औ भोरा॥ यह सब कीन्ह मनुष के लाई। का बरनौं जस दीन्ह मिठाई॥ वह रब एक जगत उपराहीं। बरनन जोग और कोइ नाहीं॥ अस्तुति करत थके मन देवा। का मोर गात जो बरनौं सेवा। सकल जगत जहँ तक रहे। वहाँ भगत का मोहिं। बरन बरन जस तैं दिहा। तस का बरनौं तोहिं॥ एक से एक उत्तम तैं कीन्हा। सबसे उत्तम एक तहँ दीन्हा॥ जिहिसे भा उँजेर सब राहा। नाम मुहम्मद सल्ले अल्हा॥ इनके बारेउ बस दुलारे। तिरिया औ असहाब पियारे॥ कहौ दरूद इन सब पर भाई। परघट गुप्त जो भेद बताई। कयामत कर उन्ह कीन्ह बखाना, हशर हिसाब कहन सब जाना॥ जिहि विधि करनी तोल सब जाई। मुख्य शफाअत सब जस पाई। दोजख बहिश्त जहाँ लौं होई। अस खोलन जानस सब कोई॥ नेम धरम मग पाप की, नबी कहा समुझाय। जो जस करई जगत मों। सो तस हश्र माँ पाय॥

अंत—नबी के पथ देउ पगु। सदा रहौ भरपूर। कुफ्र शिरक रौअत। इनसे भागौ

दूर ॥ पढ़ा इस कहो अल्लाहा । कहीं मुहम्मद रसूलइलिल्हा ॥ सदा रहै रब तुमसे राजी । पाँच वक्त कर होहु नमाजी ॥ एक मास का रोजा राखो । बैठ जुकूत इत रस चाखो ॥ सत गुरु परम पुरुष के कीजै । ती पगु प्रेम-पंथ पर दीजै । बिना गुरु कोउ भेद न पाई । सत गुरु मिलै ती छूट कमाई ॥ आप गुपुत जस गुरु बताया । करै सो ध्यान अमरत सम पाया ॥ जोग सपाद का जानै जोगी । कै जानें कछु प्रेम बियोगी ॥ गुप्त भेद जो चाहो, सुमिरै सत गुरु पास । रब का नाम पियार है हैं लिये जागु हर साँस ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० २५ तक—मंगला चरण, प्रस्तावना ग्रंथकार परिचय—जोगा पुरा सबहि जग जाना । देस देस महँ भेद बखाना ॥ इलाही पन्ना कथा यह सुना । सन्त भेद पद मन मों गुना ॥ कयामत के भेद व पहिचान, दोजख तथा बहिश्त के अधिकारी कयामत संबन्धी भविष्य, कयामत के पूर्व लक्षण, उसकी मध्यम एवम् अन्तिम अवस्था ।

(२) पृ० २६ से पृ० ६० तक—सूर का शब्द और उसका प्रभाव कयामत तजल्ली, परमात्मा का आदेश, इस्लाम धर्म की परिभाषा, ईश्वरीयन्याय, ईश्वरीय आज्ञा, काफिरों को दंड, दोजख की आग, दोजख के स्थान, कुर्मो तथा नदी आदि की विकरालता, नारकीय जीवन, काफिर तथा मोमिनों की स्थिति ।

(३) पृ० ६१ से पृ० ९२ तक—ईश्वरी हिसाब का विधान । रोजा, नमाजादि धार्मिक कृतियों का वर्णन, धार्मिक दृढ़ता का लाभ, मोमिनों के लिये बहिश्त का विधान, नबी लोग और उनकी उम्मतें, बहिश्त का वर्णन, बहिश्त का ऐश्वर्य, बहिश्त भेद ।

(४) पृ० ९२ से पृ० १०१ तक—मेराज का वर्णन रथायात का वर्णन, ग्रंथ का आधार—यह कथा जो फारसी । हिन्दी भाषा कीन्ह । इलाही पन्ना नूरक इक भयो जगत कर दीन्ह ॥ पंडितों से ग्रंथकार की विनय—और ग्रंथ निर्माणकाल—सन् बारह सौ सत्तावन हिजरी । इम कथा भई पूरन गिनती । मास शबान तारीख गियारह । रवि दुरादुल जुमा के बारा ॥ कथा श्रवण फल, मन को आश्वासन और उसको इस्लाम की प्रवृत्ति का उपदेश, गुरु महिमा ॥

संख्या १८४ सी. खुरशेद बेनजीर, रचयिता इलाही पन्ना (इलाहीगंज), कागज—साधारण, पत्र ११, आकार—१३¾ × ८¾ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—फारसी, रचनाकाल—१२९४ हि० = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—मुहम्मद सुलेमान, इस्लामिया मकतब (पाठशाला), ग्राम—पाइकनगर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—बिसमिल्लाह अर्रहमाने रहीम । खुरशेद बे नजीर । पहली सिफत कहौं रब तारा । मानुष जन्म कीन्ह तुम मीरा ॥ जसे पसु नहिं पंछी कीन्हा । औ मुँहि नबी मुरशद कीन्हीं ॥ जहँ सौं जगत सब होई । मिटत घोर तिमिर नकह न कोई ॥ अस गुनवंत ठह करतारा । कुन से चौदह तबक सँवारा ॥ पहले नबी मुहम्मद साजा । उनकी प्रीत से जग उपराजा ॥ जो न होत नबी उँजियारा । उम्मत बीच कीन्ह सरदारा ॥ नबी औ आल असहाब पर, सब कोउ पढ़ी दरूद । उनके ताबे हो रहो । रब कै जानो सरूर ॥ उमर चोर

औ बुधि नहि मोही। इहि कारन विधि विनवौं तोही॥ एक इरादा सो अहै हमारा। तू पूरन करदे करतारा॥

अंत—बेहद सिफत सना रब तोरा। किहौ इरादा सो पूरन मोरा॥ एक अरज रब सुनौ हमारा। वख्श गुनाह मोर तुम सारा॥ औ औलाद आल जो मोरे। चलै हुक्म पर सब केउ तोरे॥ जब यहि जगत सें करू पयाना। सावित राख्यो मोर इमाना॥ औ जब हशर के आवै वारा। तहँ मुँह किहो मोर उँजियारा॥ सब मुकास मे दै छुटकारा। पुल सुरात से कैदं पारा॥ वहिश्त मा मोका देहु मकाना। जहाँ नबी कै अहै ठिकाना॥ जीका नबी मुस्तफा कहोऊँ। उनकी खिदमत माँ रहयूँ॥ नाम मुहम्मद मुस्तफा। होइ जग मेंह उँजियार॥ सबै नबन मे तेहिका। बहुत करौ तुम प्यार॥ मैं निर गुन कछु गुन नहिं पामा। दौनौं जगत खालिक तोर आमा॥ मात पिता कुल एकै वारा। सावित कुसल राखु करतारा॥ जौं गुन ौगुन जगत महँ करऊँ। वख्श गुनाह जिहि से मैं तरऊँ॥ जब सुन्यौ हश्र के बाता। सुन के प्रान काँपै दिन राता॥ ऐ करतार मै का अब करऊं। जिहि से दोइनऊँ जग मैं तरऊं॥ × × × इलाहि गज बाजार महँ। किस्सा भरा तमाम। पढ़ै सुनै जो कोउऊ। तिहिका मोर सलाम॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १५ तक—मंगला चरण, प्रस्तावना, ग्रंथ निर्माण का कारण·—अब्दुल रहमान जो कीन्ह सवाला। कहिन कि अब कछु कहो हवाला। यमन शहर के सुल्तान महमूद शाह एवम् रूपनगर के सम्राट् अमीनुद्दीन की अचानक भेंट, मैत्री, दोनों के पुत्र पुत्रियों के उत्पन्न होने पर सबध स्थिर होने की प्रतिज्ञा। दोनो की बेगमो को गर्भाधान होना, महमूदशाह के शाहजादा बेनजीर और अमीन उद्दीन के पुत्री का होना, दोनों का निजि संतति की सचित्र सूचना देना, अमीनुद्दीन की मृत्यु, वजीर का राज्य पाना, कुमारी का विवाह योग्य होना, हवशी राजकुमार का उसकी मंगनी मांगना, राजकुमार की शादी मन्त्री की पुत्री के साथ होना।

(२) पृ० १६ से पृ० ४३ तक— राज कुमारी को राज कुमार का चित्र दर्शन, दाई से सपूर्ण समाचार जान मोहित होना, शुतुर सवारों द्वारा राजकुमार को अपनी विरह व्यथा एवम् विवाह सबंध का समाचार देना, क्रमशः वजीर द्वारा ६० सवारों की गिरफ्तारी। दाई के लडके द्वारा राजकुमार को समाचार जाना, राजकुमार का प्रस्थान, राजकुमारी की विरह व्यवस्था, एक मेवा फरोश के यहा ठहरना, वेप बदलकर राज कुमार का राजकुमारी से मिलना, हवशी की बरात आना, दोनों स्त्री-पुरुप का भाग निकलना, वजीर का खेद और अपनी पुत्री के साथ विवाह करना। राज कुमार का बटमारों को परास्त कर बीवी के सहित एक नगर में पहुचना।

(३) पृ० ४४ से पृ० ६१ तक—तमोलिन के जादू में बेनजीर का फँसना, खुरशैद का बादशाह को प्रसन्न कर उसकी पुत्री को वरना, कोतवाल बन कर शाहजादे को छुड़ाकर चम्पावती से भेंट करना और सारा हाल बताकर बादशाह को समझाना, बारह मासी, विदा।

(४) पृ० ६१ से पृ० ७२ तक—नगर प्रवेश, उत्सव, खुरशैद व बेनजीर का

सिंगार । नख-सिख, नूरजहाँ की विनय विवाह की रात्रि, आनन्द उत्सव, राजकुमार का चम्पावती और वज़ीर-पुत्री को आश्वासन देना और भोग विलास में दिवस बिताना । ग्रंथ निर्माण काल—बारह सौ चौरानबे हिजरी सन् परमान । जो कुछ पाय सो लिखि दिया इकराही बख्स निदान ॥ ईश्वर विनय, ग्रंथ पूर्ति का मास—मास जिल कअद जान है माहीं । भी तारीख अठारह आई दिन सोमवार पूरन भया । भी पूरन मासी फागुन आया ॥

संख्या १८४ बी. रमज़ान नामा, रचयिता—इकाही बख्स, कागज़—साधारण, पत्र—८, आकार—९¾ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्) १६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य लिपि—फ़ारसी, प्राप्तिस्थान—मुहम्मद सुलेमान, अध्यापक इस्लामिया मकतब (पाठशाला), ग्राम—पाइकनगर, ज़िला—प्रतापगढ़ ।

आदि—सुमिरौं एक आदि करतारा । जिन जिय दीन्ह कीन्ह संसारा ॥ अब तौहीद कहौं रब तोरा । करै जो रैन औ दिवस अँजोरा ॥ कीन्हे धरती ऊपर मेरा । सौंक पंख जो कीन्ह बसेरा ॥ बयपन गैंगन आद परप भया । कीन्हे बिनु पूनी वे थंभा ॥ बयपन ऐसा कि दीख्त नाहीं । तबकी दीख होत कहुँ नाहीं ॥ सिफ्त तोहार कहौं कहँ ताईं । कुदरत तोर मई कहँ ताईं ॥ तिहि मह चाँद सुरज विधि साजा । सौ सब काठ जगत के काजा ॥ अब कछु सिफ्त नबी कै कीन्हो । प्यार जो खाक सीस विधि दीन्हा ॥ नबूत जिन पर ख़त्म है, नाम मुस्तफ़ा जान । जिहि को रब ही कदर कह, को करि सकइ बखान ॥ नबी के आठ असहाब पियारा । वे जग माँह इसलाम सवारा ॥ चार मीत विधि मै संग दीन्हा । तिनके सिफ्त नबी बहु कीन्हा ॥ अब मैं कहौं जो हाल हमारा । करौं बयान माह रमज़ाना ॥

अंत—मोहम्मद नबी रसूल के । जो माने फ़रमान । रब की होय पियार सो । जन्नत मिले मकान ॥ रबी करीम तुम बहुत दयाला । माँगहु तुमसे करहु [निहाला ॥ इकाही बख्स करै फ़रजौरे । छमी कह तुम कसुये मोरी ॥ तुहि निज कहै भरोसा तोरा । सब गुनाह अब बख्सो मोरा ॥ वृद्ध भयऊँ अब मौत तुलाना । साबित राख्यो मोर इमाना ॥ जब धचाव कौंपै जीऊ । तिही बचाय माहि रब पीऊ ॥ तुम राही सब के उपराहीं । तुमरे आस दीबो जग माहीं ॥ दोज़ख अगिन औ अंधेर घोरा । दोज़ख आगी है कठिन कठोरा ॥ तिहि से बचाव मोहिं अब । अरज़ सुनहुं रब मोर । भा तमाम यहि कमरा । है रब बहिश्त अँजोर ॥ तमामशुद ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ४ तक—मंगलाचरण, प्रस्तावना, रमज़ान का महत्व, जिबराईल द्वारा रमज़ान का बुलाया जाना और रोज़ादारों के लिये बहिश्त देने की आज्ञा । (२) पृ० ५ से पृ० ८ तक—रोज़ादारों का बहिश्त में जाना, नाना भाँति वस्त्राभूषण से सुसज्जित होना और बुर्राक पर चढ़कर बड़ी शान से बहिश्त को जाना । हूरों की प्राप्ति एवम् रमज़ान की वापसी । (३) पृ० ९ से पृ० १२ तक—रमज़ान के मकानों के सौन्दर्य का वर्णन, हूरों का सौन्दर्य वर्णन, भोग विलास, खुदा का दर्शन, रोज़ादारों की बेहोशी, चेत तथा विनय । (४) पृ० १२ से पृ० १६ तक—शरियत पर साबित क़दम रहने का

आदेश, ग्रंथ निर्माण काल'—सन् बारह सौ नब्बे हिजरी । करूँ बयान अब कुछ सुनरे । माह शवान जो लाग्यो आय । तब हजरत जो कहो गोहराय ।। रोजा रखने और पानी पिलाने और दावत देने का फल । ग्रंथकार की विनय और ग्रंथ समाप्ति ।

संख्या १८४ ई०. सदा फकीरी, रचयिता—इलाही बख्श (इलाहीगंज), कागज—साधारण, पत्र—२, आकार—९¾ × ८¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—फारसी, प्राप्तिस्थान—मुहम्मद सुलेमान, इस्लामिया मकतब (पाठशाला), ग्राम—पाइकनगर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—हर दम रब नाम का जपना । खुदा बिनको कोऊ नही अपना ॥ ये जिंदगी जान ले सपना । करो सिजदा तू पंचगाना ॥ हुक्म हक का बजालाओं । निही मे दूर तुम जाओ ॥ जो माया लोभ सब छूटै । तो दिल की रोशनी फूटे ॥ कि ये दिन बीत सब जैहैं । कयामत के जो दिन ऐहैं ॥ कहैं सब अंबिया नफसी । करें फरियाद ये रब से ॥ मुहम्मद मुस्तफा अफसर । शफी आसियाँ महशर ॥ जो जाहिर माल हो पास तेरे । जकूत उसमें से अदाकर भाई मेरे[४]

× × × ×

इलाही बख्श नादाना कहीं ऐ मन भूल मत जाना ॥

अंत—जो तू रब की रजा चाहे घनेरी । जहादो हज की अब कर तयारी ॥

× × × ×

गाँठ से दाम जात, अगों से काम जात । हिरदै से ज्ञान जात, तिरिया पर संग से । अपनी तो हानि होइ, बरगश्त ईमान खोइ । बैरी संसार होइ, ऐसे सरभग से ॥ साँचे से करिये प्रीति । जग में नहीं कोउ मीत । जन्म जात योंहीं बीत, बचाय चलो फद मे । कहत रमजान शेख (उर्फ इलाही बख्श), मन में विचार देख । जीना है सपन लेख चलिये सरनाय के ॥

× × × ×

विषय—कुछ उपदेश ।

संख्या १८५ स्वरगा रोहनि पर्व (महाभारत), रचयिता—ईश्वरदास, कागज—देशी, पीला । पत्र—२२, आकार—१६ × ७¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री ठा० चंद्रिका बक्श सिंह जमींदार, ग्राम—खानी पुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ स्वरगा रोहनि लिष्यते ॥ राम प्रसाद कहै कर जोरी । जनि कोउ जानै मति भ्रम मोरी । सुनहु कथा कछु कहौ बपानी, अमृत कथा मेरा बहु बानी ॥ मैं न पगा कछु गूढ पुराना । मति उपदेश राम देहिं ज्ञाना ॥ अछर सुधि कै आदि न जाना ॥ बल पौरुष का करहुं बपाना ॥ दोहा ॥ अक्षर तीनि बपानौ भारथ मन चित लाई । कहै सुनै जे सादर ताकर पातक जाई ॥ १ ॥

अंत—॥ चौ० ॥ कही कृष्ण राजहि समुझाई। रीति रास्ति सब मुजबु जाई ॥ सौरग पुरी यह भयो मेवासा। तेंतिस कोटि देवताइ वासा। सोरह रोहिनी कथा को गावै। होम जग बहुति फल पावै ॥ का नर सुनै सदा मनुलाई ताकर पाप तुरत क्षय जाई। जो नर सुनै चित धरि घ्याना जनु सो कीन्हेउ कंचन दाना ॥ जो नर सुनै सु चित मन लाई। जनु तेहि मेंदेउ बाट कन्हाइ। जो नर सुनै पढ़ै मन लाई। चलि बीमान बैकुंठहि जाई ॥ दोहा ॥ सोरग रोहिनी कथा यह व्यास लिपि राई। जनमेजय नृप पायउ ईश्वर राम कवि राई ॥ ४० ॥ इति श्री महा भारथे स्वरग रोहिनी कते भाषा बैकुंठ गमनो राजा श्री कृष्ण मिलपो सर्व माई मिलमा बैकुंठ वास पचमोध्याय ॥ ५ ॥ सोरग रोहिनी कथा समाप्त सुभ मस्तु। लिपा देवी फाल्गुन मासे शुक्ल पाछे तीथौ दसम्यौ श्री सम्वत् विक्रमादित्ये १९१४ साके साका वाहन १७७९ राम ॥

विषय—महाभारत के स्वर्गारोहण पर्व की कथा।

संख्या १८६ रामविलास रामायण, रचयिता—ईसुरी त्रिपाठी (पीरनगर, सीतापुर), कागज—देसी, पत्र—११०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९११, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रथमा सिंह, मल्लापुर जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गनेसायनमः श्री सरस्वत्ये नमः। कवित्त ॥ मंगल सकल रिद्ध सिद्ध सुप सपजु विधा बुद्धि सुमिरि गनेस गौरी नंदनं ॥ सिंदुर वदन सुठि साहत तिलक भाल चंद्रभाल भाल नैन देत है अनंदनं ॥ एक दंत मुक्ता विभूषण परसु पानि धारि भुज अभय करत दास दुन्दनं ॥ सुंदर विसाल तन इसुरी समाद मन दया घन हरन विघन दुष दंद नी?

अंत—यह कथा श्री रघुनाथ की रिषि बाल्मीक जो गायऊ। व्यासादि मुनि बहु भाँति कहि सिव सिवा सा समुझायऊ ॥ तेहि बरनि भाषा छंद मे कस्यप कुलोद्भव द्विज भरे। इसुरी त्रिपाठी बसत मारावती सरि तट सुप भरे ॥ कलिमम पुर ते पंच जोजन परि नगर निवास है हई बरनि रामायन कलपु हर नाम राम विलास है ॥ रस[६] चंद्र[१] नव[९] ससि[१] अब्द मधु सुदि राम नौमी मानिकै इति मैनाते प्रगट करि अति लाल हित मित्र जानि कै ॥ दोहा ॥ रामायन भाषा बरनि इसुरी मति अनुरूप। रीझि देव मारिहि राम सिय तिय पद भक्ति अनूप ॥ इति श्री राम विलास रामायणे उमा महेश संवादे इसुरी द्विज भाषा कृते उत्तर चरित्रांतर गत रामा स्वर्गमे बैकुंठ वास वरनन समाप्तः ॥

विषय—सातों काण्ड रामायण की कथा

संख्या १८७ ए, दोहावली, रचयिता—जगजीवन दास (कोटवा बाराबंकी), कागज—आसामी मोटा पत्र—४८, आकार—११३/४ × १०३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८५ = १७२८ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरु प्रसाद दास ग्राम—हरीगांव, डाकघर—गोसाईगंज, जिला—सुल्तानपुर (अवध)।

आदि—दोहा० विश्वेसर पुरी गुरुसदी, तहां समाधि स्थान। मते मत्र उन दीन मोहिं, लागेउ अंतर ध्यान ॥ जग जीवन मन लोदा करु, सूरति खैंचु कमान। कर चितमों लागी रहै, निरखहु नाम निसान॥

अंत—जग जीवन दास ये दोउ कठिन, कासों कहौं सुनाय॥ वाद विवादहिं तज हु तुम। मन छोड़ चलहु अधीन। जगजिवन दास जग गुरु है। रहहु नाम ते लीन॥ औरहि ज्ञान सिखावहिं समुझत मन मँह नाहि। जग जीवनदास ते ग्यानी। भटकि के भर्म भुलाहिं॥ इत्यादि॥

विषय—उपदेश, भक्ति, ज्ञान, तथा वैराग्य संबन्धी दोहे।

संख्या १८७ बी. लीला, रचयिता—जगजीवन दास (कोटवा बाराबकी), कागज—मोटा सफेद, पत्र—९, आकार—१३ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८८३ = १८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी गुरुदीन जी, ग्राम—रानी का पुरवा, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली (अवध)।

आदि—साधो राम नाम जपु जानिकानि मन आनुना। लोक लाज दे त्यागि। त्यागिदे मन मरजादा॥ हानि लाभ नहि मानु। त्यागिदे वाद विवादा॥ (१) दीन लीन अन्तर रहो, सबै आसरा त्यागु। ज्यों चींटिहि गुर हित अहै, ऐसि युक्ति गहि लागु॥ मीन जलहि मा रहे जलहिते बहु सुख पावै। जल ते होत विछोह प्रान बहु तुरत गँवावै॥ ऐसो वह मिरगा अहै, ढुँढ़त कस्तुरी वास। पारप तजि तन मुरछयो, मोहे वास कि आस॥ (२)

अंत—लोक लोभ की कानितें पुत्री वे मारहिं। थिर नाही वे रहहिं कर्म ते सब हिं बिगारहिं॥ नर नारी करि कर्म अस, कुगति ताहि के होइ। राम कहैं नारदते, वृथा न मानहि कोइ॥ जो कोऊ अस करै। परहिं ते नर्क हिं माही। नाही वा निस्तार समुझु। अपने मन माही॥ जस पुत्री तस पुत्र है। दोऊ यक सम जान। दाया धर्म मुक्ति गति। अस कछु मन महँ आनु॥ जो २ मोरे भक्त विसारो तिन्हका नाहीं। धरहि कतहु वे देहै, रहौं मैं तिनही माहीं॥ जो जन भक्त मोर है, तिनते अन्तर नाहिं। जग जिवनदास भव सागर तजिकै, चरन भजन मन मांहि। इति।

विषय—भक्ति, ज्ञान और वैराग्य वर्णन।

संख्या १८७ सी. शब्द सागर, रचयिता—जगजीवनदास (कोटवा बाराबकी), कागज—देशी, पत्र—२३४, आकार—१३ × १० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६१५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८५ = १७२८ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरु प्रसाद दास, ग्राम—हरीगांव, डाकघर—जगेसरगंज, जिला—सुलतानपुर (अवध)।

आदि—मनरहु आसन मारि मठी ते न डोलहु रे। राते माते रहहु प्रगट नहि खोल हुरे॥ निरखत परखत रहहु बहुत नहि बोलहु रे। रजनी दीन के वार सुमत कुजी ते खोल हुरे॥ तेहि उंजयारे बैठि निर्भय होय खेलहुरे। गुरु के चरण दे शीस आस सब त्यागहु

रे। जहाँ २ तुम रहो यहि वर माँगहूरे ॥ चौक बनी चौगान चक्रम की राजैरे ॥ रवि शशि छवि तेहि वारि हंस तेहि गाजै रे ॥

अंत—पियते रहु अंजाय सुमडु सखि भोरी। कहीं सौंचि समुझाय कहीं नहिं चोरी ॥ छोड़ लाज कुल कानि मांते नहिं छोरी। मैं सी देससि स्वामि सचेत हो गौरी। पाँच प्रपंचहि त्यागि वारि इन्द्र सब भर होरी ॥ करि पचीस वहु रंग लेकत हैं होरी। ये सब रसहि रसाय बाँधि के एक हि ओरी ॥ चढ़ि के गगन टकसाय भवन रहु ओरी। जगजिवन दास सत सैन सुति जुग २ तेहि केरी ॥ × × × इत्यादि।

विषय—भक्ति की महिमा, भजन की विधि, वैराग्य और ईश्वर के प्रेम आदि का वर्णन ॥

संख्या १८८. जुगुल किशोर की बारहमासी, रचयिता—जगनाथ, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४, प्राप्तिस्थान—पं० गयादीन तिवारी, ग्राम—बिकरिहा, डाकघर—पालगांव, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जुगुल किशोर की बारहमासी लिख्यते ॥ आषाढ़ आशा करो जु पूरब को कृष्ण सैरी। कारी घटा घुमीड़ चली छाई पवन चलै सीरी ॥ बिजली चमकै हियरा करकै धीरज नहिं घरती बिना नीर जैसे मीन तड़पै दुखिया दुख भरती ॥ १ ॥ सावन समुझि परी मन मो आवैगी बलमा ॥ सारी कहाँ पिया घर आवैं रितु आई बरमा ॥ जीवन जोकि घरीं उन आगे अतर नहिं रखमा। मारी कहाँ पिया घर आये वे रस की बतियाँ ॥ २ ॥ भादौं गहर गंभीर पिया नहिं आये री माई। सूनी सेज तड़फि रही कामिनि बिरह बिथा छाई ॥ जल थल नीर भरणे नदियन मैं चातक मरैं प्यासे ॥ अपने सुख को लोग बहुत हैं कुटुंब सासु ससुर ॥ ३ ॥

अंत—जेठ मास में धूप परै है अति कठिन भारी। प्रेम मैं कोई गिरू चलना छांह करै गहरी ॥ १२ ॥ जगनाथ की बारामासी गावै जुगुल किसोरी ॥ लोरी सुमै परम पद पावै और कटै जम फाँसी ॥ १३ ॥ इति श्री जुगुल किशोर की बारामासी संपूर्णम् ॥ श्री सीताराम चंद्रायन मस्तु लिखतं गयादीन तिवारी संवत १९१४ वि० ॥ वैसाख सुद्ध १ ॥ श्री राम राम राम राम राम।

विषय—जुगुल किशोर की बारहमासी।

संख्या १८९ ए. गुरु की महिमा, रचयिता—जगनाथ, कागज—देसी, पत्र—५, आकार—६ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०८ = १६५१ ई०, लिपिकाल—सं० १८८० = १८२३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० विष्णु स्वरूप शुक्ल, ग्राम—बसोरा, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री मते रामानुजाय नमः ॥ श्री मरवदे नमः ॥ दोहा ॥ अष्ट अंग सों दंडवत प्रथम कीन्ह परनाम। जगनाथ गुरु करि हैं सब विधि पूरन काम १ ॥ चौ० श्री गुरु देव चरन चित लायो। हृदय ध्यान धरि सीस नवायो। करि अस्तुति परिकमा कीजै। तन मन

धन समर्पन कीजै ॥ गुरु है ब्रह्मा सुर तैंतीसा । गुरु विन को जानै जग दीसा । गुरु है नेम धर्म सब केरा । गुरु हैं आवागवन निवेरा ॥ गुरु हैं ग्यान ध्यान मम स्वामी । गुरु हैं सब के अंतर जामी । गुरु विन सब सूझत है धंधा । गुरु विन जग भटकत जिमि अंधा ॥

अंत—ग्यारसि वा वारसि अमावस पून्यो । वटे पुन्य फल पावैं दून्यो । सात समुद्र करै मसि पानी । लेपनी भार अठारह आनी । कागद भूमि समस्त वनावैं । सकल पात वछन के लावैं । वरनै सेस सारदा माई । लिखै कोटि चतुरानन धाई गुरु महिमा को पार न पावै । जगन्नाथ जन कछु एक गावैं ॥ संवत सत्रह सै अरु आठैं ॥ माघ मास उजियारी आठैं । भरनी रवि अरु मगलवारा । गुरुचरित्र भाषा विस्तारा ॥ दोहा ॥ भूल होइ जो हरि जन मात्रा विदु विचारि । हाथ जोरि विनती करौं लीजौ सकल सुधारि ॥ स्वामी तुलसीदास के सेवक अति ही हीन । जगन्नाथ भाषा सरन गुरु चरित्र गुरु कीन ॥ जल तैं थल तैं रापि पोदी लो वधन पारि । मूरप हाथि न दीजिये कहै चरित्र पुकारि ॥ इति श्री गुरु की महिमा सपूरन शुभमस्तु । संवत १८८० भादौं मासे शुक्ल पक्षे धार मनिवार । ब्रह्मावर्त भगीरथ तटे पं० दयाराम जमाति मध्ये लिखित गगाराम वैष्णव ॥ श्री श्री श्री श्री श्री । सीताराम राम राम राम राम ।

विषय—गुरु की महिमा ।

संख्या १८९ बी. गुरु चरित्र, रचयिता—जगन्नाथ दास, कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार—$८\frac{3}{4} \times ६\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्) ७०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०७ = १६५० ई०, प्राप्तिस्थान—प० गजाधर तिवारी, ग्राम—चांदा, डाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ ओं अष्टांग दडवत करि, प्रथम करि परनाम । जगन्नाथ गुरु सर्व विधि, करिहैं पूरण काम ॥ १ ॥ चौ० ॥ गुरुदेव चरन चित ल्यावो । हीय ध्यान धरि सीस नवावो । स्तुति कर प्रक्रमा दीजै । तन मन धन सब अरपन कीजै ॥ गुरु हैं ब्रह्मा सुर तेतीसा । गुरु विन को जाने जगदीसा । गुरु है नेम धर्म सब केरा । गुरु हैं आवागमन निवेरा ॥ गुरु विन सूझत है सब धन्धा । गुरु विन जग भटकत नर अन्धा । गुरु हैं तप तिथ वृत पूजा । गुरु विन अवोर नहिं हर दूजा ॥ गुरु को त्याग और गुन गाव । सो सूधो जमपुर को जाव ॥ गुरु मत्र को करैं त्यागा । निकस कोढ़ मरि जाय अभागा ॥

अंत—सकल भूमि तीर्थ करि आवे । सो फल गुरु चरित्र पढ़ि पावे ॥ ग्यारस वारस मावस पूण्यो । पाठ पुण्य फल पावैं दूनो ॥ वरणे सेस शारदा माई । लेपे कोटि चतुरानन धाई ॥ वर्णो इन्द्र मगल वारा । गुरु चरित्र भाषा विस्तारा ॥

× × × ×

गुरु महिमा को कहि जावै । जगन्नाथ किसके गुन गावे ॥ दोहा ॥ भुल्यो होय हरजन मात्रा विद विचार स्वामी तुलसी दास जी के सेवक जगन्नाथ दास अधीन ॥ भाषे सरन गुरु चरित्र गुरु कीन्ह ॥ जलते थल ते रापियो, ढीले वन्धन पार । मूरख हाथ न दीजिये, कहै चरित्र पुकार ॥ इति श्री गुरु महिमा गुरु चरित्र ॥ संपूर्ण ॥

संख्या १९०. वारहमासी, रचयिता—जगन्नाथ (महाराजपुरा, कानपुर), कागज—

बिहारी, पत्र—२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—९४, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३७=१८८० ई०, प्राप्तिस्थान—लाला भगवतराम, ग्राम—बमहरन, डाकघर—गुलजारपुर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बारह मास लिष्यते ॥ अब न आनंद कंद रघुकुल चंद तिरहुत आइ हैं ॥ चैत्र ॥ चैत्र जनक बोलाय सुत को वचन सुचि जैसे कह्यो। है तात अनाथ सुभाय विनती राय दसरथ पद गह्यो ॥ पाय अनुसासन नृपति को सकल सुत मैं आवहू। मातु महरुल सपद भोजन बेगि आय करावहू ॥ नारि नर सुर राज कन्या राम सो सुख पाइहैं। अब न आनंद कंद रघुकुल चंद तिरहुत आइ हैं ॥ १

अंत—फागुन ॥ फागुन पुरै मन पर आस भरोस जो मेरो करै मिलत ताके पास हमरो काम तेहि पूरे सरैं ॥ करम कामिनि कीन विधि पर तोष तुम पूरी सबै। पास मोको आनिये अब मात्र मिथ पूरी करै। जगन्नाथ सुमीत प्रभु सो सब पदारथ पाइहैं। अब न आनंद कंद रघुकुल चंद तिरहुत आइ हैं ॥ १२ ॥ दो०। सब सपियन पर बीत करि बहु विधि धीरज दीन। जगन्नाथ जनवास को गौन राम तब कीन्ह ॥ इति श्री बारहमासी जगन्नाथ कृत संपूर्ण संवत् १९३७ वि० ॥ जै रामजी की ॥

विषय—श्री रामचंद्र जी का जनकपुर कलेवा करना और सरहज आदि के साथ हास्य विलास करके प्रसन्न होना। फिर मातु सुनैना के यहाँ पर चारों भाइयों का भोजन करना और प्रसन्न होना आदि वर्णन ॥

संख्या १६१ ए. श्रीकृष्ण जी का बारहमासी, रचयिता—जगन्नाथ, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८१० = १७५३ ई०, प्राप्तिस्थान—गंगादीन मुराव, ग्राम—लक्ष्मणपुर, डाकघर—मिसिरिख, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री कृष्ण जी की बारहमासी लिष्यते ॥ प्रथम महीना असाढ़ लाग्यो वर्षा रितु आई। प्रीतम हमरे स्याम सलोने पाती मिजवाई। कहाँ वे कैसे नहिं आये जैसे चतुर सुजान स्याम चेरी ने विरमाये ॥ डाल गये जादू की फाँसी ॥ श्री राधा गोपी त्याग करी पर दासी कुबिजा सी ॥ ११।

अंत—जेठ मास जब मिले कृष्ण जी राधा गोपी से। ब्रज बासिन आनंद भयो छूटे सब बाधा सों। कृष्ण की यह बारहमासी। जो सुनै बैकुंठ सिधारे छूटे जम फाँसी ॥ साँच यह मेरे मन आसी। श्री राधा गोपी त्यागि करी पर दासी कुबिजा सी ॥ इति श्री कृष्ण चंद्र की बारह मासी संपूर्ण समस्त ॥ लिषतं जानी राम बैश्य सिधपुर बरोद निवासी ॥ संवत् १८१० वि० पैसाख कृष्ण प्रयोदसी श्री रामानुजायनमः ॥ श्री राम राम राम राम राम ॥

विषय—श्री कृष्णचंद्र जी का कुबजा दासी से प्रेम करना और उनके पास चले जाना वहाँ राधिका जी का श्री कृष्ण चंद्र जी के विरह में ११ मास व्यतीत करना १२ वें

मास में श्री कृष्ण चद्र जी का आना और राधिका और गोपियों को वहुत आनन्द होना आदि वर्णन ॥

संख्या १९१ वी श्री कृष्णचद्र की वारहमासी, रचयिता—जगन्नाथ, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सेठ गोविंद राम भक्तराम मारवाड़ी, ग्राम—अमिलिहा, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः। अथ श्री कृष्ण जी की वारामासी लिष्यते ॥ प्रथम महीना असाढ़ लागा वर्षा रितु आई। पीतम हमरे स्याम सलोने पाती भिजवाई ॥ कहाँ वे कैसे नहिं आये ऐसे चतुर सुजान स्याम चेरी ने विलमाये ॥ टाल गये जादू की फांसी श्री राधा गोपी त्याग करी घरवारी कुविजासी ॥ सावन में मन भावन हमतौ दामन सों लागी। जब तौ हम सों प्रीति वढ़ी हरि अब काहे त्यागी ॥ सुनौ तुम ऊधौ मेरी सों लाज शरम कित गई प्रीति जब कीनी चेरी सों ॥ यही मोहिं आवत है हासी ॥

अंत—चैत चिता में जरौं वरौं मैं गिरती कुइया में। कहियो मदन गोपाल सग कुविजा को लै आमें ॥ कछू इन वातन को डरना। हम गोपी दरसन की प्यासी और नहीं करना ॥ खबर मेरी लीजै व्रज वासी ॥ श्री राधा गोपी ॥ लागत ही वैसाख साख सब ही के घर आई। ऊधौ जी ने जाय कृष्ण सों ऐसे समुझाई ॥ पैज तुम हक नाहक रोपी। हाड मास गलि गये वावरी ह्वै गई सब गोपी ॥ लेहिंगी कर वट हू कासी। श्री राधा गोपी ॥ जेष्ट मास में मिलै कृष्ण जव राधा गोपी सो व्रजवासिन आनद भयो सव छूटे वाधा से। कृष्ण की यह वारह मासी पढ़ै सुनै वैकुंठ सिधारै छूटै जम फासी सांच यह मेरे मन भासी ॥ श्री राधा गोपी त्यागि करी घर वारी कुविजा सी ॥ इति श्री कृष्ण चंद्र की वारह मासी संपूर्णम् ॥

विषय—राधा कृष्ण की वारह मासी में श्री कृष्ण जी का राधा को छोड़कर चला जाना फिर ऊधौ जी के हाथ संदेसा भेजना वर्णन ॥

संख्या १९२ ए. जगत विलास या रसिक प्रिया की टीका, रचयिता—जगतसिंह (राजा साहेब गोंडा), कागज—देशी, पत्र—२२४, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६००, खंडित। रूप—अति जीर्ण, पद्य और गद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाश सिंह, मह्लापुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ जगत विलास यानी रसिक प्रिया की टीका लिष्यते ॥ अरुण शिषा सित पद पदुम पद पद तलनप रूप। हरत पाप सब जगत के हरिपद प्राग अनूप ॥ १ ॥ मूल छप्पै ॥ एक रदन गज वदन सदन वुधि मदन कदन सुत। गौरि नंद आनद कंद जग वद चंद जुत। सुषदायक दायक सुकृत गण नायक नायक। पल घायक घायक दरिद सव लायक लायक ॥ गुन गन अनत भगवंत भव भक्ति वत भव भय हरन ॥ जैसे केसवदास निवास निधि लंवोदर असरन सरन ॥ टीका वार्तिक एक रदन गज वदन अथवा एकै रदन ही है और सव रद हैं। यहा पद श्लेष। अथवा दुरद नाम हाथी

को तामें एक रद माहीं भतव एक दन्त है ॥ गजबदन ॥ इह ऊपर श्लेष लक्षन दोहा ॥ प्रमाण सतसैया तिन के ॥ दोहा ॥ एक सब्द के अर्थ जहं भासत भाइ अनेक। पद श्लेष को कहत तिन हिय बुद्धि विवेक ॥ बुद्धि सदन कैसो है गंत बुद्धि को सदन है नाम घर है वा गज बदन बुद्धि को सदन वा घर है ॥ मदन कदन सुत ॥ मदन काम ताको कंदन नाम नास कर्ता सिव महादेव को सुत ॥

अंत—अथ भारती लक्षण मूल दोहा ॥ बरन जामें वीर रस अरु अद्भुत में हास कहिके सब सुभ अर्थ जहं सो भारती प्रकास ॥ टीका वीर, अद्भुत हास सों भारती जानो। अथ जथा मूल कवित्त ॥ कानन कनक पत्र चक चमकत चारु ध्वज झिल मिलि झलकत अति सुप दाइ। केसव छबी लो छत्र सीस फूल सारथी सो केसरि की आड अथ राथिम रची बनाइ। नीकेही नवीन लाल बीको नक मोती सोहै एक ही बिलोक नि गोपाल ही गये बिकाइ। लोचन बिसाल भाल जरित जराय भाल भामो चों मीन के रथ रथ मन मथ राइ। टीका ॥ कानन में से हैं कनक पत्र तेई चक कहे पहिया औ कानन में झिलमिली के है तेई ध्वजा नाम पताका है ते झलकत अत्यंत सुषदाई औ केसव कवि नाम औ सीस फूल जो है सोई छबीलो छत्र औ केसर की आड़ जो है सोई सारथी नाम बहलवान औ नक मोती जो है सोई नवीन है। तहां एक बिलोकनि में गोपाल ही बिकाय गये। औ लोचन बिसाल नाम सुंदर औ भाल में जरित जराऊ लाल सोभा मानों मीन के रथ पर मन मथ कहे काम सो चढ़ो है। बिलखबे मो हास सूचित औ चढ़ो सब्द वीर सूचित बरनन सो कवित में जानियों अद्भुत काम बरन सो प्रमान समुदर्य कीर्त्ती महावीर मार कादि भवि भामितं पुनि पच सायक कनक रुचिर कांति। वीरै सूचित ॥

विषय—रस वर्णन। केसव दास कृत रसिक प्रिया की टीका महाराज जगत सिंह ने की है।

संख्या १६२ वी साहित्य सुधा निधि, रचयिता—जगतसिंह (गोरा ग्राम), कागज—बादामी नवीन, पत्र—१०, आकार—१२ × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—०११, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल— सं० १८५८ = १८०१ ई०, लिपिकाल—सं० १९१३ = १८८६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्ण बिहारी मिश्र, माडेल हाउस, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गनेशायनमः ॥ छंद बरवै ॥ सिव सुत एक रदन अप छबि उदोत। तिरछौं मनों मेद ते सुर सरि पोत ॥ १ ॥ सीस मुकुट श्रुति कुंडल केसरि भाल ॥ पीत बसन तन मुरली कर उर माल ॥ २ ॥ जाते और न दूसर आदिहु अंत ॥ नेति नेति जेहि गावत निगम सिरंत ॥ ३ ॥ चरन कमल रज बंदौं अद्भुत भूरि ॥ जासु कृपा करि पावौं कवि मति भूरि ॥ ४ ॥ जै वृन्दावन पावन जै वृज कुंज ॥ जै जमुना जल बिकसित सरसिज पुंज ॥ ५ ॥ श्री गुरु चरन सरोरुह पुनि सिरनाय ॥ रचत भेद साहित्यक कवि मत पाय ॥ ६ ॥ श्री सरजू के उत्तर गोरा ग्राम ॥ तेहि पुर बसत कवि गनन भारी धाम ॥ ७ ॥ तिनमें एक अवर कवि अति मति मंद ॥ जगत सिंह सो बरनत बरवै छंद ॥ ८ ॥

अंत—या विधि दोष अगम है कहेउ उदार। तामें मुख्य जानिये सत रूप विचार ॥

विनु साहित्य सुधानिधि करौ कवित्त । हरौ ताहि कवि कोविद जे रस मित्त ॥ काव्य ग्रंथ अगिन नित मत करि एक ठौर । कहि साहित्य सुधानिधि कवि सिर मौर ॥ जो प्राचीनन काव्य मग किये उदार । ताते होन और कछु कियो विचार ॥ दग्धाक्षर गन दूषन छंदक रीति । मेरे छंद ग्रंथ ते जानो मीत ॥ नायकादि संचारी स्यायि भाव । रस मृगांकने जानो जानो सब कविराय ॥ भरत भोज अरु मम्मट श्री जय देव । विश्वनाथ गोविंद भट दीक्षित भेव ॥ भानु दत्त आदिक मत करि अनुमान । कियो प्रगट करि निपाट कवित्त विधान ॥ कहै छासै छंविसमयश्रुति वरवै वीनि । दस तरंग करि जानो ग्रंथ नवीन ॥ ० ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार विसेन वंसाव तंस दिग्विजै सिंहात्मज जगत सिंह कवि कृते साहित्य सुधानिधि सकल दोष निरूपनो नाम सप्तमस्तरंग ७ श्री सम्वत् १८४२ आषाढ़ शुक्ल सप्तम्यां गुरुवासरे समाप्तं सुभंभूयात् ॥

संख्या १६३. धर्म सवाद, रचयिता—जनदयाल, कागज—साधारण, पत्र—३०, आकार—८½ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३३ = १७७६ ई०, प्राप्तिस्थान—मोहनदास, स्थान स्वामी पीतांवर दास, ग्राम—सोनामऊ, डाकघर—परियावां, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गोपाल जी सहाय ॥ अथ धरम सवाद लिष्यते ॥ दोहा—श्रीराम कृश्न कृपा करैं, गुर संत होइ सहाय । कर जोरे करुना करैं, गनपति लेहि मनाय ॥ चौपाई—गुरु गोविंद की आज्ञा पाऊं । तो कथा पुरातन कहि समुझाऊँ ॥ राजा धरम हस्तनापुर गाऊं । उत्तम कथा मई तिहि ठाऊं ॥ द्वापर ये उतपति भई कथा । नग्र हस्तनापुर जानहु जथा ॥ गुरु कौं पूछै ग्यान की गली । जनमेजय सुराजा बली ॥ ब्रह्म स्वरूप तुम कन्यो गुसाईं । धरम जाति जुधिष्ठलराई ॥ एक आतमा देह वताई । कृपा वंत होइ कहि मुनिराई ॥

अंत—धर्म सवाद सुनै चितु लाय । मुचै पाप सत ही जिय थाय ॥ परलोक कीरति पावै सोई । मुकति होइ न समो कोई ॥ पिता पुत्र की सुनि कथा, मुदित होय सब कोय । जन दयाल सहजै मिलै, चारि पदारथ सोय ॥ धर्म सवाद सुनत ही, सव तीरथ फल होय ॥ धरम वढ़ै अरु पाप छय, हरि दरस दिपावत सोय ॥ इति श्री महाभारते धरम जुधिष्टर संवादे जग्य वरननो नाम चतुर्थोध्याय समापता ॥ श्री ॥ सवत् १८३३ ॥ पौष सुदी ४ सोमवारे ॥ पठनारथ श्री महाराज कुँवारि श्री वेटी विचित्र कुंवर जू देव ॥ लिषित पतित चरन दासेन गोहर नगर मध्ये । श्री रस्तु ॥ श्री ॥ कल्याणं ददातु ॥ श्री परमेसुर जी सदा सहाय रहै ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय—धर्म का चाण्डाल रूप धारण करके राजा युधिष्ठिर की परीक्षा लेना और उपदेश देना ।

संख्या १६४ ए. होली संग्रह, रचयिता—जन जगन्नाथ, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५६ ।

पूर्ण। रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७२=१७१८ ई०, लिपिकाल—सं० १८८५=१८२८ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० सूरत सिंह, ग्राम—सिधरा, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ होरी संग्रह लिख्यते ॥ दो०। प्रथम गजानन को सुमिरि सारद को सिर नाय। होरी की रचना करै जगन्नाथ जन गाय ॥ होरी १ पहिली ॥ आजु मोहन बंसी बजाई हो। बंसी सुनि सुधि सब ब्रज बाला आई प्रभु पहं धाई भई हैं बिहाल भूषन की सुधि नहीं कंगन पग में सजाई सुधि मन की बिसराई ॥ दधि के बहाने घर से निकरि कै प्रभु के निकट चलि आई। जमुना किनारे हरि बंसी बजावैं चीन मटुकिया गिराई। दही सब चीन लुटाई। हे जसोदा माई जाय्यो मोहन को ऐसो चतुर कन्हाई। मटुकी फोरि सकल दधि लूट्यो ऐसी धूम मचाई। सो कौतुक बरनि न जाई ॥ हे नंद नंदन हे मम मोहन लीला अधिक बनाई ॥ जन जगन्नाथ शरन मैं तिहारो चरनन पै ली जाई। करहु करुणा अनुराइ ॥ आजु मोहन बंसी बजाई हो ॥

अंत—बसिगी उर कुंवर कन्हाई हो ॥ जिन मथुरा में जन्म लियो है गोकुल माह सिधारी कंसासुर पुतना को पठयो दूध पियावन आई हन्यो छन में जदुराई ॥ श्रीधर विप्र बहुरि ब्रज आयो पंडित रूप बनाई। जीहा चीभ मरोरि मुरछि धर रोवत मथुरा आई। कंस से हाल सुनाई ॥ मारि अघासुर आदिक मोहन कुंज में लीला बनाई। राधा ललितादिक गोपिन से प्रीति बढ़ी रुचि पाई। चरित सब बरनि न जाई ॥ मथुरा में जाय कंस को मार्यो मातु पिता को छोड़ाई। कुंडिनपुर रुकमिनी को बियाहो सोभा बरनि नहिं जाई। पुरी द्वारिका को बसाई ॥ रहत सदा ब्रज में अनुरंजन लीला करत सदाई। जन जगन्नाथ पति नंद जसोदा जिन्है हरि चरित दिखाई। सोई चरनन बलि जाई। बसिगो उर कुंवर कन्हाई ॥ इति श्री जन जगन्नाथ कृत होरी संग्रह संपूर्ण समाप्तः लिखतं गुम्म् ब्राह्मण ज्वारे निवासी तिथि क्वार सरद पूनो संवत् १८८५ वि० श्री नारायण जी सदा सहाय। बोलो हनुमान बाबा की जै।

विषय—श्री कृष्ण और राधिका के प्रेम से पूर्ण होली वर्णन।

संख्या १६४ बी, मोहमर्द राजा की कथा, रचयिता—जन जगन्नाथ, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७९२, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७१=१७१९ ई०, लिपिकाल—सं० १७९०=१७३३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० सूरत सिंह, ग्राम—सिधरा, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ मोहमर्द राजा की कथा लिख्यते ॥ चौ० ॥ गुरु चरन बंदि बहु विधि संत। मुनी सापि त्यों गाऊं तंत ॥ जो सुनि मोह द्रोह न है व्यापै। गाइ निरबंध राम कौं जापै ॥ कहीं जु परम पुरान की साषी। जो श्री पति नारद सो भाषी।

अंत—श्री तुलसीदास जो धरयो सिर हाथ। यह मोह मरद कथा कही जन जगन्नाथ ॥ परम संत मत हम कह्यो विचारी। पुरातम कथा परम सुख कारी ॥ संवत सत्रह सै इकहत्तर। जन यह भाषी करि बहुत हरष ॥ कातिक बदी द्वादसी दिनै। सोमवार

यह गिनोतर गिनै ॥ इति श्री मोह मरद राजा की कथा संपूर्ण ॥ श्लोक ४२५ ॥ लिपतं गगा दयाल मिश्र शंकर पुर निवासी सवत १७६० कार्तिक वदी दीपमालिका को संपूर्ण हुई ॥ राम राम राम राम राम ॥

विषय—मोह त्यागी राजा का वृत्तात (राजा की रानी और राजकुमार और राजकुमार की पत्नी दासदासी और सारी प्रजा सब मोह त्यागी थे)। इसकी परीक्षा के लिये नारद जी ने अपनी माया से राजकुमार को मृतक समान कर सबकी दशा देखी परन्तु किसी को भी शोक नहीं हुआ। यह देख नारद जी बहुत प्रसन्न हुए राज कुमार को जीवित कर दिया और राजा की बहुत प्रशंसा की॥

संख्या १६५, शिव स्तोत्र, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुंशी शिवधारी लाल, ग्राम—ममरेजापुर, डाकघर—वेनीगंज, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः असतोत्र। संकर देवहि जोरिकर हियो विनै करि वृद। जनक सुता पूजत शिवैं करियै मोहिं अनद। हे आनंद धर छविचंद धर गुण वृंद धर सिर गंगधर। भस्मागधर सुभरग धर अरधाग धर त्रिय सग धर दीन दान धर वरदान धर। दो०—दाता सिवशंकर विपेसुर गिरिजारमण। रापौ मेरी लाज तुम तजि जाचौं और केहि देवन के महराज हे राजधर सुप साज धर मणि मालधर दग ज्वाल धर छवि जालंधर रस शूल धर तन अवर धर वाघंमर धर कर सूलधर सुख मूलंधर अनूकूलं धर वरदे विसेसुर अव घण दाता रापु प्रण मोरी अव की वार। राम चंद्रवर मिलै मोहि देवन के सरदार ॥२॥ हे दारंधर अवतारं धर अव क्षरंधर कर डमरूधर विभूतिधरं जट जूटधर गल सेप धर वट भेपंधर।

अंत—हे दान धर विज्ञाणंधर जगमाणंधर ससिपडधर श्री पंढधर ब्रह्मांडणधर सुपलंछंधर कमलछंधर तन अक्ष गति सुसधर जनिवंक्षधर दीजे वर रघुवर मगल कर कवि नाथ के हरन दोप दुख रोग करौ धनुप लघुता प्रभु श्री रघुवर के जो ४ हे जोगं धर मत्रभोगधर कैलाशं धर मुदवा सधर मेना संधर विपग्रीवंधर सुपसीवधर धुर धर मंधर सुप करमधर गजचरमंधर मम सरमंधर सममडालकर ससि गग भस्मांग रग अरधग गोरी कुद इंदुतन अति अनद अरविंद न्यनसर डग्रत ढंग्रत कर डमरु डिंडिं मिलिं डिम डिम वजै। तीन लोक वरदान सदादासन मुप साजै कहत जान की जोरि कर मोहि वर रघुवर दीजिये थान सुपवि वृदावली रापि जगत जस लीजिये। इति श्री जानकी मंगल अमृतधुनी शिव अस तोत्र सपूरण।

विषय—महादेव का स्तोत्र।

संख्या १६६ प. भगवती विनय, रचयिता—जानकी प्रसाद, कागज—साधारण, पत्र—२८, आकार—६ × ५½ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० कृष्णपाल सिंह 'वीर' कवि, ग्राम—तिवारीपुर, डाकघर—सागीपुर, जिला—प्रतापगढ (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री देव्यास्तुति ॥ हरि गीत छन्द ॥ महत तेज प्रकास अभ्मे पूर्ण अंक बिचारि कै। जोग बिधि इन्द्रादि ध्यावै वेद हू तन धारि कै ॥ त्रिगुन रूप अनादि माया सर्व आदि सदा अवै। पूर्ण इन्दु सुधार बिन्दु अनन्त इन्दु प्रभा भवै ॥ १ ॥ श्रीसमन्त्र कीर्ति स्वरूप सुन्दर सर्व सौभाग्यहि किये। मैं सोचते मन मोचने मय कोत्त्य अब माता भवे ॥ दीर्घंबर परचड दड उदंड पक दक नासिका। प्रभा मण्डल मौर है कुच जब शील प्रकासिका ॥ २ ॥

अंत—॥ हरिगीत छंद ॥ शुभ अचल भक्ति विवेक विद्या ज्ञान बुधि सोई दीजिए। जेहि मिलहि दर्सन देवि तेरो पवित्र पद मित्र कीजिए ॥ हार अपनी को सदाहि अधीन दीन गमीजिए। हे जननि अनुलित कृपा करिकै तुरत सुधि अब लीजिए ॥ चौपाई ॥ विमल अभिषेके पूरण चम्पा। सर गुण सरिस बर बरनि सुकम्पा ॥ असरन सरन चरण चित लायो। दास जानुकी विनय सुनायो ॥ इति श्री भगवती विनय पचार बंसोपमव भवानी प्रसादात्मज श्री रामचन्द्र पादानुरागी जानकी प्रसाद कृत समाप्ता ॥ शुभ मस्तु ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ११ तक—देवी की स्तुति—अङ्गों की शोभा, शक्ति, धाम, अधादि के संबंध से, विविध नामों, अलंकारों, दास के प्रत्येक अङ्ग की रक्षा का रिणी के संबंध से।

(२) पृ० ११ से पृ० ४० तक—मार्गरक्षा, बगला मुखी, संपूर्णादि नामों के संबंध से स्तुति, छवि का वर्णन करते हुए देवी की स्तुति। नाम प्रभाव, भक्ति का वर स्तोत्र पाठ का फल, स्तोत्र की प्रशंसा तथा प्रभाव। महालक्ष्मी का स्तोत्र दुर्गा स्तोत्र।

(३) पृ० ४१ से पृ० ५६ तक—उपास्य स्तुति, वेदपुराणादि संपूर्ण पदार्थों की सृष्टि दृष्टि से स्तुति। देवी के अनेक नामादि के संबंध से स्तुति।

संख्या १६६ सी रामनवरत्न, रचयिता—जानकीप्रसाद (अमीरापुरा, बड़मार), कागज—देशी, पत्र—७४, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०८ = १८५१ ई०, लिपिकाल—सं० १९२१ = १८६४ ई० प्राप्तिस्थान—पं० उमाशंकर दूबे साहित्यान्वेषक।

आदि—श्री राम ॐ श्री गणेशायनमः। अथ श्रीराम नवरत्न विनय लिख्यते अथ गणेश एक रदन महा भय ओघ निवारण। विघ्न हरण सुपरासि पतित कोटिन्ह भव तारण ॥ कंठम्य कर शशिहार नमो रिधि सिधि बुधि दायक। महा नाद गज शीर्ष नमो तिहुँ लोक विनायक। अथ परशु पानि सिंदूर धर लम्बोदर अवहर करन। वरबुधि विवेक विद्या सहित देहु कृपा करि सुद करन ॥ १

अंत—शिवराग* कर ससि छन्द सुहाने। विनय पूर्वी मध्य बखाने। १२०। जाम झूलना छंद—कहे अष्ट सै छन्द इत्यादि सर्वे मी हू विधै मध्यसंती प्रतीता महा सिद्धि दा जानकी सिंह कर्यो विधै राम नवरत्न बिनती बिनीता। मई पूर्ण ज्यों पूर्णिमा चंद आनंदम जैति श्री राम निर्मेद गीता। तिथी कार्त्तिकी पूर्णिमा विक्रमादित्य बत्तीस सै अष्ट सम्वत्सुनीता ॥ १९०८ ॥ १२१ ॥ नाम निहालसिंह जगजाहिर। भ्राक सिंह तासु सुत माहिर ॥

तासु भवानी सुवन सुजाना । ताके मैं मति मंद अजाना । पत्री यह करि नेम पाठ करहि जे नर सुजन । लहैं सो हरि पद प्रेम सिद्धि मनोगति प्रभु कृपा ॥१२३॥ इति श्री रामनवरत्न विनया पवार वसोद्भव भवानी प्रसादात्मज श्री रामचन्द्र पादानुरागी जानकी प्रसाद कृत पूर्वी भाषाया नवम विनयः॥९॥ इति श्री ॥ राम नवरत्न विनय. समाप्त. शुभमस्तु श्रीरस्तु लिपित मिद पुस्तक जानकी प्रसाद निज हस्तेन माघ शुक्ल पंचम्यां भौमे सम्वत् १९२१ ॥

विषय—प्रथम विनय—इसमें अवधी भाषा में २५१ छन्दों के अन्तर्गत देवी देवताओं की वन्दनायें और स्तुतियाँ हैं। जैसे शंकर, पार्वती, गणेश, सरयू नदी आदि की। द्वितीय विनय—नाम की ओर चित्ताकर्षण करनेवाले ५१ छंद हैं। तृतीय विनय—इसमें राम नाम का माहात्म्य ५१ छंदों में वर्णन किया है। चतुर्थ विनय—भगवान कृष्णचन्द्र के विलासों का वर्णन १०१ छंदों में किया है। पचम विनय—१०१ छन्द चित्रों के रूप में राम तथा कृष्ण आदि के विनयों पर लिखे गये हैं। जैसे कमल दल चित्र, शंख चित्र, हस्ति चित्र। छल चित्र आदि। षष्ठ विनय—ब्रजभाषा में स्तुतिया। सप्तम विनय—५१ छदों में श्रीरामचन्द्र की स्तुति। अष्टम विनय—पजाबी ढग पर 'वाह गुरु' की वन्दना। नवम पूर्वीय भाषा में १२३ छंदों में रामभक्ति का वर्णन।

संख्या १९६ सी. श्री राम नौरत्न विनय, रचयिता—जानकी प्रसाद पवाँर (जमींदारपुरा), कागज—देशी, पत्र—१३२, आकार—११ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुस्टुप्)—२३७६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—मुं० चतुर विहारी लाल जिलेदार, ग्राम—सधवा चंढिका, डाकघर—अटी, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—अथ श्री रामनौरत्न विनय लिप्यते ॥ (इसके बाद १९६ वी के समान)

अंत—॥ सोरठा ॥ धन्य धन्य श्री राम, धन्य धन्य रघुपति हरे। पुरएहु मो मन काम, दुहुँ लोक प्रभु धन्य तू ॥ ११५ ॥ चौपाई ॥ प्रथम विनय रस अमृत सानी। अवध पुरी भाषा मृदु वानी ॥ इन्दु वान कर छंद पुनीता (२५१)। वरनि विनय भगवत सुभ गीता ११६ ॥ नाम चेतावनि विनय द्वितीया। छंद इंदु सर विच कथनीया (५१) नाम महातम विनय तृतीया। ससि सर छन्दनि विच वरनीया (५१) ॥ ११७ ॥ कृष्ण विलास चतुर्थ वपानी। यक सत एक छंद मृदु वानी (१०१) पच विनै चित्र विच भाप्यौ। यक सत एक छन्द रचि राप्यौ (१०१) ॥ ११८ ॥ यक सठि छंद सुधारस चापा ६१ षष्ठम विनै वर्णि वृज भाषा। सप्तम विनै इंदु सुर छंदहि (५१) वरनि सुनायो रघुकुल चदहि ॥ ११९ ॥ पुनि पंजावी विनै वपानी। एक सठ छंद वरनि मृदु वानी ॥६१॥ शिव द्दग कर ससि छन्द सुहाने। विनय पूरनी मध्य वपाने ॥ १२० ॥ वरन झूलना छद कहे अष्ट सै छंद। इक्यावने सर्व नौहूँ विनै मध्यगंती प्रतीता। महा सिद्धिदा जानकी सिंह वर्न्यौ विनै राम नौरत्न विन्ती विनीता ॥ भई पूर्ण ज्यौं पूर्णिमा चद आनंद मैं जैति श्री राम निर्भेद गीता। तिथौ कार्तिकी पूर्णिमा विक्रमा दित्त वत्तीस से अष्टसम्वत्पुनीता ॥ १२१ ॥

× × × ×

पत्री यह करि नेम, पाठ करहि जे भर सुजन। लहैं सो हरि पद प्रेम, सिद्धि मनो गत प्रभु कृपा ॥ १२१ ॥ ८२१ छंद या विन मध्य सब है ॥ इति श्री राम नव रत्न विनिर्यो पवार वंसोद्भवानी प्रसादात्मज श्री राम चन्द्र पादानुरागी जानकी प्रसाद कृत पूर्वी भाषायाँ प्रथम विनयः ॥ १ ॥

ग्रंथकार का निवास स्थान—राम कृपाते पदरत माते जिमींदार पुर जो हर्षे। दक्षिण गंगा डेढ़ कोस है परगन डलमऊ सो हर्षे ॥

ग्रंथकार परिचय—नाम मिहाल सिंह जग जाहिर, झाऊ सिंह तासु सुत माहिर। तासु भवानी सुवन सुजाना, ताके मैं मति मंद अजाना ॥

संख्या १६७ युक्ति रामायण, रचयिता—जानकी प्रसाद, कागज—साधारण, पत्र—१०३, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८१५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह रईस ताल्लुकेदार, रमेश लाइब्रेरी, कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ गन पति रूप है कै गनपति से विन को नाथ हूं कै दिन को विसेष मत धर को। रूप हूं कै सकति सकति मत धारिम को हरि अनुसारिम सँवारि रूप हर कौं ॥ जाकी जहाँ प्रीति फल तत तहाँ ताही रीति जानकी प्रसाद माहि तावत गहर को। नाम जाको पूरन करत मन काम वंदियत पर नाम नित राम रघुवर को ॥ १ ॥ बर्णत तिलक छंद—महादि दस गन छोड़ि सबै विचारे। सौंप्यौ सिर्प अकल दंडक मध्य भार ॥ तामें दियो मम सुरामच रीति जोई। सांडिल्य वंस प्रति प्रीति पर सोई ॥ दोहा—सकल देव मुनि संक महँ। सपि सीय हित लीन। तऊ कहैहीं भगत के, प्रभु प्रमान करि कौन ॥ गीति का छंद—जेहि वास तें रिपि संग को तप ठान पूरन भौं दियो जिनके को भव जन्म नाप अजन्म भूपति मे लिवो ॥ जहँ धारि के जति वेष नाथ हन्यो अराति करास हैं ॥ तिहि संग पैर पुरैं मही मोहि भूप श्रीन्द कृपाल है ॥

अंत—दोहा—मिस मृग पावन जीव बहु कने मुक्त रघुराइ। कौतुक देखन रवि मनौं गये गगन मधि आइ ॥ मध्य दिवस इमि देखि प्रभु मृगया पेख बिहाइ। करि सरजू जल न्हान गृह आए श्री रघुराइ ॥ चुनि छंद। कबहुँ मृगया जल केलि करैं कबहुँ गृह बागादि जाइ ॥ कबहुँ श्रुति शास्त्र पुरान सुनैं करि धर्म सभा कह न्याव विचार ॥ सिगरे अवधी जन मध्य सिंहासन बैठत है कबहुँ धरि भाव। सिई बंधु समेत लसैं नित श्री रघुनायक को पुर श्रीमि विहार ॥ इति श्री जानकी प्रसाद विरचित युक्ति रामायने सप्तम प्रतिहारा ॥ ७ ॥ श्री गणेशायनमः ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ५१ तक—प्रथम प्रतीहार—सब देवताओं का एक राम के रूप में आरोप, अयोध्या तथा राजा दशरथ का वैभव वर्णन। राम जन्म, बाल क्रीड़ा, विश्वामित्र-दशरथ संवाद रामतारिकादि हनन। राम विवाह वर्णन। (२) पृष्ठ ५२ से ६६ तक—द्वितीय प्रतिहार—वर्षतादि वर्णन राम बन गमन राम का विविध स्थानों पर निवास करना (३) पृष्ठ ६७ से ७७ तृतीय प्रतिहार—अत्रि आश्रम

निवास, विराध-वध, सूर्पणखा का जाल, खरदूषण विनाश, सीता हरण, कबंध-वध, पपासर वास, सुग्रीव से मित्रता, (४) पृष्ठ ७५ से ८५—चतुर्थ प्रतिहार—बालि वध, शरद वर्णन, सीता का खोजा जाना। (५) पृष्ठ ८६ से १०७—पंचम प्रतिहार, हनुमान लंका गमन, लंका दहन, हनुमान कीर्ति, सीता सँदेश, रावण की सभा के सभा सदों के विजय संबधी विचार। विभीषण पर रावण का कोप (६) पृष्ठ १०८ से १६७—षष्ठम प्रतीहार युद्ध वर्णन, रामचंद्र कीर्ति वर्णन, रावणादि वध विभीषण राज तिलक (७) पृष्ठ १६८ से २०५—सप्तम प्रतीहार—राम अयोध्या गवन, अयोध्या का वर्णन, सभा का वर्णन, अन्य वर्णन, राम मृगया वर्णन। रघुनाथ जी की सभा की कीर्ति, ग्रंथ समाप्ति आदि वर्णन ॥

संख्या १९८. भजन विनोद, रचयिता—जानकी सहाय, कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—७ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१३, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८३ = १८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० उमाशंकर दूबे साहित्यान्वेषक, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ राग वसन्त। वन्दौं जदुपति आनन्द धाम जातें छूटत जगदंभ दाम। जदुवंस कुमुद सुपदानि इन्दु सेवत विधि शिव चरनार विन्द १ सोहन सरीर वर नीलकंज अगनित अनगसम दीप्ति पुंज। नयना विशाल सत अरुण कंज कोमल कृपालु सुपरासि पुंज। २। केसरि पुनीत तिल कावलीय सुरसत चित्र वर मोहनीय। सुचि मुकुट क्रीट कुंडल सुडोल। सत कोटि सूर छविलेत मोल। ३।

अंत—वीती वैसन तृष्णा वीती। लोभ गगरिया अजहूं रीती। देस विदेस फिरे वीन जारा पोटे रतन न पूंजी हारा। मन को सोचो भयो न कबहूं। नई सम्पदा सोचत अबहू। सूरपु मन को को समुझावै बूढ़ा तोता कहा पढ़ावै—

विषय—कृष्ण जी, राम, शिवजी के, रामनाम की महिमा, मुकुट, अलक नप, भाल, भृकुटी, नासिका आदि का वर्णन, ब्रह्म, जीव, ससारिक सुखों का भोग, ईश्वर का भजन, जीव की तृष्णा, माया आदि विषयक भजन व उपदेश।

संख्या १९९ ए. गनक आह्लादिका, रचयिता—जन रामहित, कागज—साधारण, पत्र—१६५, आकार—९३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४१३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८६= १८२९ ई०, प्राप्तिस्थान—रामप्रसाद मुराव, ग्राम—पुरवा विश्रामदास, डाकघर—परियावां, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—॥ भाद्रपद ॥ २७ ॥ रेवती ॥ २८ ॥ इति नक्षत्र नामानि ॥ अथ नक्षत्र चरण विभाग लिष्यते ॥ चूचे चोला ॥ अश्वनी ॥ लली लेलो ॥ भरणी ॥ आई उपे ॥ कृतिका ॥ वोवा वीवू ॥ रोहिणी ॥ वें वो ककी ॥ मृगसिरा ॥ कू घ ङ छ ॥ आर्द्रा ॥ को को हही पुनर्वसु ॥ हू हे होडा ॥ पुष्य ॥ डीडू डे डो ॥ श्लेषा ॥ मामी मूमें ॥ मघा ॥ मोटा टीटो ॥ पूर्वा फाल्गुणी ॥ टे टो प पी ॥ उत्तरा फाल्गुनी ॥ पू ख ण ठ ॥ हस्त ॥ पे पो रा री चित्रा ॥ रूरे रोला ॥ स्वाँती ॥ ती तू ते तो ॥ विशाखा ॥ ना नी नू ने ॥ अनुराधा ॥ नो या यी

पू ॥ ज्येष्ठा ॥ बे जो मा मी ॥ मूल ॥ मूषा भल ॥ पूर्वाषाढ ॥ भे भा ज भी ॥ उत्तराषाढ़ जी खू खे खो ॥ श्रवण ॥

अंत—चन्द्रकला शुभ सर्म का विचार ॥ दोहा ॥ चन्द्र नषत तै दीजिये । चन्द्र कला पर जोय । अट्ठाइस जो नषत हैं । क्रमते गनिये सोय ॥१७॥ जन्म नषत का मनुज को । धरै मध्य सिरसूह । चारों दिसि जो लिखित है । सो सूधी जनि भूल ॥ १८ ॥ दोउ बगल विसूल के, शुभग नषत गत पाव । शुभ करम जनि नाम दे । गये कागिहै पाव ॥ १९ ॥ अवर ठौर जो नषत गत, कछू संदेह न होय । पंडित चाक विचारि कै इमि गावत है कोय ॥ २० ॥ इति श्री जनराम हित विरचितायाँ गणक आह्लादिकायाँ सामान्य विसेष सीधा धारादि अपर विचार सहित वर्णनो नाम नवमो विश्राम ॥ समाप्त ॥ संवत् ॥ १८८९ ॥ चैत्र सुदी ॥ ९ ॥

संख्या १९९ बी गनक आह्लादिका रचयिता—जन रामहित, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—११ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८४, लिपिकाल—सं० १९१२, प्राप्तिस्थान—श्री चक्रधीन जी त्रिपाठी, ग्राम—मानपुर, तहसील बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ज्योतिष पोथी गणक आह्लादिका जन राम हित कृतम् लिप्यते ॥ दोहा । जोतिष पति कुल कमल पद बदि सुमिरि द्विजराज रचत गनक आह्लादिका बालक बुद्धि के काज ॥

अंत—इति श्री राम जन हित विरचितायांम गनक आह्लादिकायाम् समाप्त सिसेस्वरी चार धारादि अपर विचार सहित वर्नना नाम नवमो विश्रामः संवत १९१२ मासा नाम जेष्ठ मासे कृष्ण पक्षे रवि वासर द्वादस्याम समस्त दिन गत चाकी ईंड समाप्त शुभमस्तु कल्यानमस्तु दसखत विसेस्वर त्रिपाठी के स्थान गाजीपुर गंगा तटे जस देषा तस लिखा मम दोष न दीजिये ॥

विषय—ज्योतिष ।

विशेष—१९९ ए. से अभिन्न ।

संख्या २०० ए. वैद्य रत्न, रचयिता—गो० जनार्दन भट्ट, कागज—देशी, पत्र—४२, आकार—७ × ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—५११, पूर्ण पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८९ = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० उमाशंकर दुबे साहित्यान्वेषक, डाकघर—मँझीला, जिला – हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ वैद्यरत्न लिप्यते दो०—जारदादि सेवत जिन्हें पावत वस्तु प्रकास । सारद बिनु बरनी करौ हिये सारद बास । वैद्य करत आदरस करत बड़ो ग्रंथ अभिराम । तिनको यह छोटो करत वैदरतन यहि नाम । अथ नाड़ी परीक्षा—भूषे प्यासे सैन जुत तेल लगाये कोइ । वैवेषा पुनु ईही नाड़ी ज्ञान न होइ । हाथ अंगूठ निकट ही नाड़ी जीवन मूल । तासों पंडित वैद को जानत दुख सुख तूल ।

अंत—मास करक को देदि करि सैकि पाइ सौंठ नहित । मदिरा सु मँठ सगत्यी

अहित करु वगुली को मास चित । निवुया रस कपूर पीर पिचरी जुत त्यौंही । तेल साथ सु अफीम वंति वासी अति त्यौंही । सुचर सवस सो सिंध मासु वगुला को डारहू । घृत मधु वस जल तेल मिले सव चिव ते डारहु । घ्रत आदिक सो विप वहुरि मिलो दोय । इति श्री वैद्यरतन सम्पूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥ श्री राम ॥

विपय—प्रथम अध्याय—(१) नाडी परीक्षा, नाडी की स्थिति, भिन्न भिन्न दशाओं में उसकी भिन्न २ प्रकार की गतिया—जैसे सांप कबूतर, मेढ़क, लवा, इत्यादि के सदृश (२) जिह्वा परीक्षा—वात प्रकोप में जिह्वा का दरकी हुई पीली या खरखरी होना, पित्त के कारण लाल व काली तथा कफ से पिच्छिल होती है—(३) नेत्र परीक्षा—वात रोग में आख का रूखा, चंचल व धूमरा होना । इसी प्रकार पित्त व कफ में पीले और स्वेत रंग का होना (४) ज्वर के निदान व प्रकार तथा उनके निवारक लंघन आदि उपचारों तथा औपधियों का वर्णन । ज्वराकुश ताली शादि चूर्ण—वीर मद्र रस—तथा नारायण तैल आदि औपधियों के गुण तथा उनकी वनावट ।

द्वितीय अध्याय—संग्रहणी का निदान अतीसार से मन्दाग्नि और अग्नि के मन्द होने से अन्न का परिपक्व न होना जिससे संग्रहणी की उत्पत्ति । गंगाधर, नागरादि चूर्ण ॐ अजीर्ण रोग की उत्पति । हिंग्वाष्टक चूर्ण । विशूचिका रोग का कारण और उसकी निवारक औपधियां—कृमि रोग की उत्पति, हृदय रोग, कास रोग और अतीसार आदि दोपों से होती है । कास रोग ।

तृतीय अध्यायः—दोपों के कुमार्ग में जाने से उन्माद रोग का उत्पन्न होना—मृगी रोग का वर्णन—वच का चूर्ण प्रातःकाल खाने से अपस्मार रोग दूर हो जाता है । इसका पथ्य दूध और भात ।

चतुर्थ —वात व्याधि, हृद्रोग, गुल्मरोग, तथा प्लीहोदर आदि रोगों का वर्णन ।

पष्ट—मूत्र कृच्छ्र, अश्मरी, पथरी, आदि व्याधियां । त्रिफला का चूर्ण सहत के संग चाटने से प्रमेह रोग दूर होता है । व्रण इलीवद उपदंश मेदरोग आदि । स्त्रीरोग-- प्रदर, सूतिका, क्षीर वर्धन । रसों का वर्णन जैसे चन्द्रोदय । लक्ष्मी विलास आदि ।

संख्या २०० वी. वैद्यरत्न, रचयिता—जनार्दन भट्ट, कागज—साधारण, पत्र—५९, आकार—१०½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१५ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—प० देवकीनंदन शुक्ल, ग्राम—रामपुर गधौली, डाकघर—सग्रामगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—२०० ए के समान

अंत—अरिल्ल ॥ मासो १॥ टका ४॥ सुअक्ष ॥ १६ ॥ विलु चितु ल्याइजो । कइचा ॥४॥ प्रस्थ ॥ १६६४ ॥ अरु रास ॥ १६६४ सुगुनी ॥ ८८८४ वताइजो ॥ पारीतोल प्रमान ॥ ८८३८ ॥ सो यह विधि जानिजो । परि हाहाजी उतर उतर लेपी चतुर मन आनिजो ॥ १९४ ॥ इति श्री गोस्वामी जनार्दन भट्ट विरचितोयां भापा वैद्य रत्न नाम सप्तमो प्रकास ॥ ७ ॥ संपूर्ण सुभ मस्तु ॥ संवत् १९१५ ॥ की साल ॥ जस प्रति देपा तस लीपा ॥ मम दोपो न दीयते ॥

संख्या २०० सी. वैद्यरत्न, रचयिता—जनार्दन भट्ट, कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—१४×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१२=१८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० बद्रीप्रसाद ग्राम—नवीनगर डाकघर—सहरपुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—२०० ए के समान

अंत—हाय अजीरन मरुत फल लाइ ॥ बिजनाई रूपे की पाइ अपद नहीं परस्पर जानों मुनि जन का यह बचन प्रमानों ॥ मात बार ताली करै सा भी फेर बुझाय। यह पानी पीये तर्क नीर अजीरन जाइ। जब साने क नीर को पर अजीरन होय। जाते तव सोवा सहत मुनि जन का मन जाइ। गुरुमु अजीरन पंड कहीं मुनि सुमिर्यो सब कोइ। भली भांति जानों सो यह बह नर दुष न होय ॥ इति अजीर्ण ॥ इति श्री गोस्वामी जनार्दन भट्ट विरचित भाषा वैद्य रत्न ग्रंथ सम्पूर्ण समाप्त। शुभम् भवति ॥ जैसी प्रति दृषी तैसी लिपी उतारि भूल चूक आन की लेवी आप संसार संवत १९१२ शाके १७७७ मध्यिमास प्रथम आषाढ मासे शुभे शुक्ल पक्षे तिथौ त्रियोदश्याम गुरुवासरे लिप्यते गैरो परित मिश्र।

संख्या २०१ ए. अपरोक्ष सिद्धांत, रचयिता—जसवंत सिंह, कागज—देशी, पत्र—६७, आकार—५×३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८१, खंडित। रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १०८४, प्राप्तिस्थान—श्री शिवनाथ, ग्राम—कैमहरा, डाकघर—लखीमपुर (अवध)।

आदि—(प्रथम पृष्ठ नहीं है) ॥ मिथ्या जानि प्रपंच भयो दुष दून। विषय सुषन में दुष बहु सुष अति न्यून ॥ घर कुटुंब महिं मेरे आवत काम। मोह न उनको नहीं जानि विराम ॥ विषय सुष ममता तै भीजे होय। यह सब झूठी लागत ममता मोहि ॥ अरिल ॥ सुकृ क्रिया पर माइ पुन्य के रहत जू ॥ दुषा मेरे दुष होइ फिरी नहिं दहत जू ॥ ममता हा दुष दष मोहि यह माग ही ॥ परि हों काके सरमें जाऊं कौन मोहि राष ही। चाई ॥ इन बातन दुःष उपजें अधिरज कौन। मरत नहीं मैं जरि में जावत हौन ॥ काम क्रोध अरु काम मोह ये जान। मद मछर न सबै है दुष की षान।

अंत—गुरु उपदसद सिष्य पुनि सत रज तम विस्तार। मीच ऊंच औं सम विषम यहैं भ्रम निरधार ॥ शब्द श्रवन उपमान अरु हैं अनुमान अपार देष होत प्रतिष्ट सो यहैं भ्रम निरधार ॥ सब धर्मी धर्मी सर्व मसही कुछ बा माह न्यारे हात अज्ञान ते तक न्यार नाहि। यह निश्चय करि आन सुव कहिये पाहि विवक। एक एक यह एक है एक एक यह एक ॥ कीन्हो जसवत सिंहा यह आतम तत्व विचार अरु अपरोक्ष सिद्धान्त यह धर्यो नाम निरधार या अपरोक्ष सिंधात का अर्थ पर मन माह छूटै सो संसार में फिर फिर आवै नाहि ॥ इति श्री महाराजा श्री जसवंत सिंहा जी विरचितो अपरोक्ष सिद्धान्त ग्रंथ समाप्त।

विषय—आत्मतत्त्व का विवेक।

संख्या २०१ बी. भाषा भूषण, रचयिता—महाराजा जसवंत सिंह राठौर, कागज—

देशी, पत्र—११, आकार—१० × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७८४, प्राप्तिस्थान—श्री व्रजभूपण जी, ग्राम—दानयालपुर, डाकघर—तंबोर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ भापा भूपण लिप्यते ॥ विघ्न हरण तुम हौ सदा गणिपति होहु सहाइ। विनती कर जोरे करौं दीजै ग्रथ वनाइ ॥ जिहि कीन्हीं परपच सव अपनी इच्छा पाइ। ताको हौं वंदन करौं हाथ जोरि सिर नाइ ॥ करना कर पोपक सदा सकल सृष्टि के प्रान। ऐसे ईश्वर को हिये रहे रैनि दिन ध्यान ॥ मेरे मन में तुम वसौ अैसी क्यो कहि जाय। ताते यहु मन आप सो लीजै क्यौं न लगाय ॥ रागी मन घन स्याम सो भयो न गहिरो लाल। यह अचरज उज्जल भनी तज्यो मैंल तेहि काल ॥

अंत—सव्द अलकृत वहुत हैं अक्षर के सयोग अनुप्रास पट विधि कहे जे है भापा जोग। ताही नर के हेत यह कीन्हीं ग्रथ नवीन। जो पडित भापा निपुन कविता विपे प्रवीन ॥ लक्षन तिय अरु पुरुप के हाव भाव रस धाम अलंकार संजोग ते भापा भूपन नाम ॥ भापा भूपण ग्रथ को जो देपै चित लाइ। विविध अर्थ साहित्य रस समुझै सवै वनाय ॥ इति श्री मन्महाराजाधिराज राठौर वसावतंस जसवत सिंह कृतो विरचिताया भापा भूपण समाप्तः सवत १७८४ वि० लिपत गगादीन पडित मल्लापूर शुभमस्तु ॥

विपय—नायिका नायक भेद, शब्दालंकार, हावभाव रस आदि वर्णन।

संख्या २०१ सी. भापा भूपण, रचयिता—जसवत सिंह, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—७ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१७, प्राप्तिस्थान—श्री सिवरतन सिंह, ग्राम—गंगा पुरवा, डाकघर—औरंगावाद, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—२०१ वी के समान।

अत—भापा भूपन ग्रथ को जो देपै चितु लाइ। विविध अर्थ साहित्य रस समुझै सवै वनाइ ॥ भापा भूपन के पढ़े भापा रहे न भूप। गुन प्रकास अैसो लहै जैसे पानी रूप ॥ इति श्री भापा भूपन अलंकार विपै समाप्त सुभमस्तु ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार राठोर वंसावतंम जसवत सिंह विरचिते भापा भूपन अलंकार विपै समाप्त। अस्वन मासे शुक्ल पछे तिथौ सप्तमीयां रवि वासरे संवत् १९१७ वि० लिखत गंगादीन पांडे जैपुर निवासी श्री सीताराम जी सदा सहाइ करैं जै अंवेमाई ॥

संख्या २०१ डी. भापा भूपण, रचयिता—राजा जसवंत सिंह (जोधपुर), कागज—साधारण, पत्र—२३, आकार—९ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४१ = १८८४, प्राप्तिस्थान—श्री राधा कृष्ण शास्त्री, अध्यापक किठावर पाठशाला, ग्राम—पूरव गाव, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि-अंत २०१ वी के समान

पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री मन्महाराज श्री सिरमौर वंसावतंस श्री मन्नृपति जसवंत सिंह विरचिते भाषा भूषन शब्दालंकार संपूर्णम् नाम पष्ठमो प्रकाशः इदं पुस्तकं लिषायता बक्सराय कवेरि दम् शुभमस्तु म० १९२१ वि०

संख्या २०१ ई. भाषा भूषण, रचयिता—जसवंत सिंह (जोधपुर), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—१० × ५½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५६, खंडित। रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८९० = १८३३, प्राप्तिस्थान—बाबू जयमंगल राय बी० ए० एल० टी०, गाजीपुर सिटी।

आदि-अंत—२०१ वी के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री मन्महाराजा जसवंत सिंह राठौर विरचितं भाषा भूषन संपूर्ण संवत १८९० श्रावण मासे कृष्ण दसम्यां भृगुवासरे द्वितीया प्रहरे का स्यामच १ १ १ १ ११

संख्या २०२ शृंगार शिरोमणि, रचयिता—राजा जसवंत सिंह कागज—देशी, पत्र—१०१, आकार—११½ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६००, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९४२ = १८८६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण विहारी मिश्र, माडेल हाउस, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ मंगलम चरण छंद मन हरण ॥ पंच तरु अमर प्रगट पचवटी सामें पंच प्रेत आसन पै राजत प्रकासिनी ॥ पंच बाण भूप पंच लक्षण पुराण रूप पंच सृष्टि अंत के प्रपंच पंच नासिनी ॥ पंचामृत पंचगव्य पंच कन्या पंच माता पंच प्राण रूप पंच पातक विनासिनी ॥ पच अंग मंत्र तंत्र पच अंग पंच वर्ण पंच वरण रूप पंच पंकज विलासिनी ॥ १ ॥ दोहा ॥ श्री गुरु चरण सरोज रज रंजित करि अंखियानि। दरसि दुरो गुनुरी प्रकृत धरो ग्रंथ यहि आनि ॥ २ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ यहि विधि बरने हाव दश ग्रंथ रीति यथावंत ॥ पढत रसिक जन जानिकै पावत प्रमोद अनंत ॥ २१ ॥ इति श्री स्याम वंसावतंस श्री मन्महाराजाधिराज श्री राजा यसवंत सिंह विरचिते शृंगार शिरोमणौ विविधि भूषण भूषिते हाव वर्णन न्याम पष्टांग ॥ ६ ॥ समाप्तोयं ग्रंथः शुभमस्तु ॥ श्री संवत् १९४२ मिति ज्येष्ठ कृष्णे तिथौ प्रति पदायां बुधे ॥ लिपितमिदं पुस्तकं स्वार्थम् ॥ राम ॥ श्री शिवाय।

संख्या २०३ नासकेत पुराण भाषा, रचयिता—जयचंद (दिल्ली), कागज—साधारण, पत्र—१४, आकार—९½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०००, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३२=१५७५ ई०, लिपिकाल—सं० १८३३ = १७७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री भूपनाथ सिंह, ग्राम-उमरौरा, डाकघर—परियावां, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—सिधि श्री गणेसायनमः ॥ अथ श्री नासकेत कथा लिप्यते ॥ चौपाई ॥ पार ब्रह्म परमेसुर स्वामी। तुम घट घट हो अन्तर जामी ॥ परम आतमा परम निरंजन। परमानंद सकल दुष भंजन ॥ १ ॥ सब्द स्वाद सौ सर्प न कोई। सब मुझ तुमही सों पुनि

होई । स्याम न सेत पीत नहिं राता । कौन वर्न वरनियै विधाता ॥ २ ॥ सुजस वेद वंदीजन गावहिं । नेति नेति कै अंत न पावहिं ॥ चंद न सूरज पवन न पानी । अनहद बात जु वेद बखानी ॥ ३ ॥ उतपति करहि ताहि जस जाने । प्रलै करहि तिहि पाप न लागहि ॥ जो कीजे सुविचार तुम्हारा । तुम्हें न कोऊ वरजन हारा ॥ ४ ॥ निरजन हार चिंतमन धरी । यह सृष्टि रचना जब करी । ऐसी गति तुम ही करि आवै । वदौ ताहि जुकै ढिपरावै ॥ ५ ॥

अंत—त्रिया चरित्र बहुते रस होई । अति गुन कौ गाहक सब कोई ॥ जे धर्मिष्ट धर्म धन सचाहिं । दुष्ट पाप दूरतन बचहि ॥ यह महिमा तेई नर जाचहि । निहचै वेद पुरान जु वाँचहि ॥ जो फल गया बनारस न्हाएँ । जो फल अस्वमेध के धायें ॥ जो फल ग्रहन सकट करि मानौ । सो फलु यह पुरान सुनि जानौ ॥ इकचित सुनै देइ कछु दाना तिहि फल जनु गगा असनाना ॥ इति श्री नासकेत पुरान भाषा समापता ॥ ॥ श्रीः ॥ ॥ सवत १८३३ माघ कृष्णो चतुर्थ्यां ४ सोमवारे ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—मंगलाचरण, ईश्वर के ऐश्वर्य का कथन, धर्म की महिमा, कवि परिचय —दीपचन्द काइथ भटनागर । तासु भयो जैचंद उजागर ॥ तिन पुरान सुन्यो सुर वानी । सबनि समझ हित भाषा ठानी ॥ नगर सिकद्रा मांझ बसेरो । रहिबौ दिल्ली सुनो निज मेरो ॥ ग्रथ निर्माण काल —सवत् सोरह सौ बत्तीसा । तबही कृपा करी जगदीसा ॥ गुरु बासर रेवती नषत गुनि । माघ मास सुकला सातै सुनि ॥

(२) पृ० ७ से पृ० ४४ तक—कथा प्रसंग वर्णन, जन्मेजय की प्रार्थना पर वैशम्पायन का कथा सुनाना, उद्यालक मुनि के तप का कथन, पिप्पलादि का उनके पास आकर सतानोत्पत्ति के लिये विवाह का प्रस्ताव करना, उद्यालक का ब्रह्मा के पास जाकर अपना अभीष्ट वर्णन करना, ब्रह्मा का विवाह से प्रथम ही उनके पुत्र उत्पन्न होने की कथा वर्णन करना । मुनि की शका और विधि द्वारा उसका निराकरण, मुनि का लौटकर पुनः तप निरत होना, स्त्री सयोग सुख स्मरण द्वारा उनका वीर्य स्खलित होना और उसका कमल पुष्प में रखकर सुरसरि में छोड़ा जाना, रघु की पुत्री का सखियों सहित सुरसरि के तीर स्नानार्थ जाना, सखियों का पुष्प देखकर पकड़ने का प्रयत्न करना तथा विफल होना, चंद्रावती का उसे पकडना औ सूंघना चन्द्रावती को गर्भ रहना और शनैः शनैः उसके अकुरों का प्रस्फुटित होना, सखियों द्वारा रानी राजा को इसका पता लगना, चद्रावती का निकाला जाना, एकऋषि का उसे आश्रित रखना, समय पर प्रसव पीड़ा से चन्द्रावती का पीड़ित होना, नाक से नासकेत की उत्पत्ति और मजूसे में रखकर उसका बहाया जाना, ऋषि (उद्यालक) द्वारा उसका पाला जाना, चन्द्रावती और नासकेत का मिलाप, राजा रघुद्वारा ऋषि की प्रार्थना पर चद्रावती तथा उद्यालक का विवाह ।

(३) पृ० ४५ से पृ० १०५ तक:—पुत्र सहित दम्पति के सुख भोग का वर्णन, एक दिन उद्यालक का पुत्र को अग्निहोत्र की सामग्री शीघ्र लेकर लौटने की आज्ञा देना और पुत्र का जाना, एक सरोवर की शोभा देखकर स्नानादि से निवृत्त हो कर नासकेत का समाधिस्थ होना और षट मास व्यतीत होने पर लौटना, पिता का क्रुद्ध होकर पुत्र को

शाप देना और जमपुरी गमन का कथन करना, पुनः क्रोध शांति होने पर चिंतामग्न होना, पुत्र का पिता को समझाकर दिव्य मंत्र द्वारा जमपुरी जाना, धर्मराज के दर्शन तथा स्तुति, चित्रगुप्त के दर्शन तथा स्तुति जमपुरी का निरीक्षण करके लौटना, सब मुनियों का यह चरित्र जानने के लिये एकत्रित होना, नासकेत का पुण्यात्मा तथा परमात्मा के सुख दुखादि का कथन और जमपुरी की सम्पूर्ण स्थिति समझा कर वहाँ के प्रत्येक विभाग का विस्तृत वर्णन सुनाना नाना प्रकार के दानियों के फलादि का वर्णन स्वर्ग के विभागों का वर्णन, विष्णु इत्यादि के भक्तों के फलादि का वर्णन, उनके लक्षण इत्यादि का वर्णन।

(४) पृ० १०१ से पृ० १२८ तक—जमपुरी के पंथादि की गाथा, दुर्गम पंथों को तै करने के लिये विविध पुण्य दानादि का कथन वैतरणी आदि नदियों का वर्णन। धर्म राज की सभा का वर्णन, अनेक ऋषियों सहित नारदादि का कथन, इन्द्रादि देवताओं का कथन, धर्मकीर्ति की कथा—राजा जनक की पतिव्रता स्त्री के तेज के न सह सकने के कारण यम का अंदर भागना, अनेक पापियों का दर्शन मात्र से तरना देखकर नारद को शंका होना, यम द्वारा उस शंका का निवारण नासकेत के यमपुर से अपने लौटने की कथा का वर्णन। कथा श्रवण कर सब मुनीश्वरों का अपने-अपने धाम को जाना। कवि का दैन्य वर्णन, कथा के श्रवणादि का फल।

संख्या २०३ ए. गर्भ चितामणि, रचयिता—जयकाल, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—१×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९१४, प्राप्तिस्थान—श्री गयादीन तिवारी, ग्राम—चिकरिहा, डाकघर—थानगांव, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गर्भचितामणि लिप्यते ॥ प्रारंभ कावली ॥ क्यों जन्म गंवावो रटो राम रघुराई। मानुष देह बारंबार सहज नहिं पाई ॥ नर नारी के संजोग गर्भ में आवो ॥ मल मूत्र मास को पिंड होय हेरावो ॥ पग ऊपर तक में शीस रहो लटकायो। दुख गर्भवास को रूप बहुत घबरायो ॥ पड़तै ही पिंड में जीव तनिक सुधि आई। मानुष देह बारंबार सहज नहिं पाई ॥ १ ॥

अंत—रहै जीव नरक में दुखी कहीं नहिं जावै ॥ करणी के भोगी भोग बहुत पछतावै ॥ फिर भुगत नरक को चौरासी में आवै ॥ देह देह में भटकै जीव कोटि दुख पावै ॥ यहि भांति दुर्दसा प्राणी की होइ जाई। मानुष देह बारंबार सहज नहिं पाई ॥ ११ ॥ हरि विमुखन की यह दसा होत दोजख में ॥ ये काल रचे नित राम नाम हरदम में ॥ गुरु पुरुषोत्तम कर याद गर्भ प्रण घट में। कट जाय आगमन फंद तैरा चटपट में ॥ है तारक मंत्र यही वेद श्रुति गाई। मानुष देह बारबार सहज नहिं पाई ॥ १२ ॥ इति गर्भचितामणि सम्पूर्णम् लिखितं गयादीन तिवारी स्वपठनार्थ संवत १९१४ दि० ॥

विषय—जीव के गर्भवास के दुख और जन्म के बाद कर्मों के अनुसार सुख दुख आदि तत्वज्ञान की बातें ॥

संख्या २०४ बी. गर्भ चिंतामणि, रचयिता—जयलाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९१३ = १८५९ ई०, लिपिकाल—सं० १९४१ = १८८४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवकंठ तिवारी, ग्राम—चरगदिया, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—२०४ ए के समान।

अंत—दोहा—रस शशि ग्रह शशि जानिये सवत विक्रम राज। क्वार सुदी दशमी तिथै। पूरण कीन्हों राग ॥ लिखा शिवरतन सिंह उदवापुर निवासी सवत् १९४१ वि०। राम राम राम ॥

संख्या २०४ सी. शिव जी की विनती, रचयिता—जयलाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामभरोसे, ग्राम—खदकी खेडा, डाकघर—चमयानी, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री शकराय नमः ॥ अथ शिव जी की विनती लिप्यते ॥ महादेव कासी के वासी। हेम कन्या पति अविनासी ॥ टेर ॥ जटा विच गग सीस राजे ॥ चद्रमा मस्तक पर छाजै ॥ व्याल गल मुंड माल राजै ॥ देख भय रूपकाल भाजै ॥ भस्म अभूपण अति घना भूत नाथ विकराल वृष वाहन वाघवर साजै लिये भेरु करताल ॥ वनो छवि गिरजा कैलासी ॥ महादेव कासी के वासी ॥ १ ॥

अंत—चढ़ै म्रिर कस्तूरी चदन ॥ दिगंवर वाघंवर अंगन ॥ करै सुर तैंतीसौ वदन ॥ धतूरा आक भोज व्यजन ॥ वमोला पदवी नवे हाथ जोड़ जेलाल ॥ पलक खोल प्रभु दर्शन दीजै कीजै मोहिं निहाल ॥ काट देउ जमपुर की फासी ॥ महादेव कासी के वासी ॥ इति श्री शिव विनती सपूर्ण समाप्त ॥ चैत्र कृप्न तृतीया को लिख पाइ दः राम भजन तिवारी सवत् १९२४ वि० जै राम जी की जै शकर की ॥

विपय—शंकर जी की स्तुति ॥

संख्या २०४ डी. श्री कृष्ण चद्र की विनती, रचयिता—जयलाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला रामभरोसे, ग्राम—खदकी खेडा, डाकघर—चमयानी, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री कृष्ण जी की वीनता लिप्यते ॥ श्री कृष्ण चंद महाराज वेप नट वर धारी। वशी वारे श्याम मुरारे लाज अव हाथ तेरे मथरा वारे ॥ टेक ॥ गिर वर लियो उठाय राख ली लाज विरज की मतवारे। सव मेघ विचारे। हार चले इंद्र लोक में पुकारे ॥ आदि पुरुप अवतार सांवरो इनसे ती हम सव हारे ॥ खाली कर डारे ॥ नीर जल वरस रह गई छारे ॥ जव इन्द्र गयो ववराई ॥ कहौ कीजै कौन उपाई। मैं करी वहुत लरकाई ॥

सब बात हाथ बिगराइ । पड़ें भव पाँव साथ छे परिवारे ॥ श्याम मुरार लाज अब हाथ तेरे मधुराधार ॥ १ ॥

अंत—सीस मुकुट पीतांबर बांधे । काना कुंडल कर बंसरी । जड़े कदंब तर सखा संग ग्वाल बाल नर्म हंसरी ॥ है अपार लीला जग सारी को गावै कवि मति थोरी ॥ है गुण पुरुषोत्तम दास जै लाल कहूँ याँ कर जोरो ॥ मैं हूं मतिमंद अभागी निसि दिन कुकर्म सों लागो ॥ अब करौ कृपा वर मांगी दा दुख पाप की आगी ॥ नास कर दुख दरिद्र सारे । श्याम मुरार ॥ लाज हाथ तेरे बंसी वारे ॥ इति श्री जयलाल कृत श्री कृष्ण चंद्र जी की विनती सपूर्ण समाप्त ॥

विषय—कविका अपनी लाज रखने के वास्ते श्री कृष्ण चंद्र जी से प्रार्थना

संख्या २०४ ई. श्री राम नाम की महिमा, रचयिता—जयलाल, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामकुमार लाल, ग्राम—मधुरवा, डाकघर—बघरा, जिला—उन्नाव, (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ख्याल कृत लिख्यते ॥ श्री राम चंद्र जी को राज तिलक ॥ रंग रचनी केसर लावो रे ॥ टेर ॥ ल्यावा चंदन केसर ल्यावा कुंकुंम अरगज सुगंध मगावो ॥ ढोल नगारा बांसुरी बीन मृदंग बजावो ॥ नृत्य की युक्ति बनावो रे ॥ रंग रचनी अमर लावो रे ॥ १ ॥ राज मांहि बिमल के चौक पुरावो रे । केला कदंब के खंभ लगावो रे ॥

अंत—मैं कहा लग वर्णन करूं तेरी प्रभुताई । है नभ मंडल पाताल तेरा यश छाई ॥ हूं अधम नीच अज्ञान पूर्ण कुटिलाई ॥ सरण गत वत्सल जान बीनती गाई ॥ दोई हाथ जोर मैं नाम तेरा जप गावै ॥ कर जाव कमल चंद्र फेरी जन्म नहिं पावै ॥ १ ॥ इति राम नाम की महिमा ॥ इति श्री जयलाल कृत संपूर्ण संवत् १९२८ वि० ॥

विषय—रामचंद्र जी का राजतिलक, राम नाम की महिमा, श्री कृष्ण जी की विनती और शिव जी की विनती आदि ॥

संख्या २०५. मनिहारिन लीला, रचयिता—मुन्नी जयराम मालती, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—६ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गयादीन तिवारी, ग्राम—बिसरिहा, डाकघर—पारगांव, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ मनि हारिन लीला लिख्यते ॥ मालती ॥ श्री कृष्ण चंद जी के मंदिर पर भये मनिहारिन का। आप हरी जहं गये तहां पर बहुत हुंद मनमारिन का ॥ टेर ॥ पहर जनाना भेष हरी ने रचि रचि के श्रृंगार करा। हंसली और हमेल गरे बिच झलकन झलकन पनाहरा। रंग गुजराती सजा घांघरा औढन दखिनी चीर गरो । रवि शशि आदि बदन की सोभा ऐसा हरी ने रूप धरा ॥ कुचा

वनाय के आटी चोली और कुरता फुल क्यारन का आय हरी जह गये तहां पर वहुत झुंड ब्रजनारिन का ॥ १ ॥ श्री कृष्ण जी फिरैं पूछते कोई चुरिया पहिनोगे खरी। काली पीली जरद जंगाली सुरख सोसन्या और हरी ॥ एक सखी यू वढ़कर वोली अरी आव तू मणिहारी। चुरिया मोती चूर कटा वद ल्याई तो पहिना ज्यारी ॥

अत—अनेक छल वल किये कृष्ण ने सव सखिया छल ने खातर। कहा लग कोई सिफत करेंगे तुकन्नगिरि कहते चातुर । लछिमन ब्राह्मण धर्मा कहते देखो सायर मत होय चग पर आतर। जसू लाल के चग के ऊपर निरत करें पद पायातुर ॥ कहै गुणी जय राम भारती तुर्रा तारन का ॥ आप हरी जहा गये तहां पर वहुत झुंड ब्रजनारिन का ॥ ४ ॥ इति मणि हारिन लीला समाप्त ॥ लिपत गया दीन तिवारी स्वपठनार्थ संवत १९१४ चैत शुक्ल १ ॥

विपय—श्री कृष्ण जी का मनिहारिन का रूप रखकर ब्रज युवतियों में आनद करना।

संख्या २०६ ए. ज्ञान गीता, रचयिता—जयसुख, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—१० × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, खंडित। रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—शिवदयाल, ग्राम—भीपमपुर, डाकघर—सफीपुर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ ज्ञान गीता लिख्यते ॥ गणेशस्तुति ॥ विनय विनायक को करौं विघन विनाशन हेत। हरि दुप जन को राखि सुख गज मुप सव सुप देत ॥ १ ॥ छप्पय ॥ देहु ज्ञान धरि ध्यान रहौं चितु देह गजानन। एक दत वलवत्त हेत विघनन के कानन ॥ भाल चंद सुप कद शैल तनया के नदन। वंदन आरत जानि काटु भव भय के फदन ॥ सव पीन अवन को छीन कर सदा दीन करुना करन ॥ वर लंवोदर सुमिरत चरन कहि जै सुप सकट हरन ॥ २ ॥

अत—कहुं वैठि वट की छाह। ब्रज वधुन की धरि वाह ॥ कहि दान मेरो देहु। यह चहत मैं नहिं नेहु ॥ उन दान के कहि कौन। दुप रहौ लालन मौन ॥ यह वात सुनि हंसि देत। मन सवन के हरि लेत ॥ कहु गोपिन सौं फाग। विच गलिन खेलन लाग ॥ उत अविर कुवरि किसोर। तकि वदन मारैं झोरि ॥ (अपूर्ण)

विपय—श्री गणेश वंदना, गोपिका विरह, गोपियों का कृष्ण लीला वर्णन, कृष्ण से ऊधो का सवाद और ऊधो का ध्यान में कृष्ण चरित्र देखना आदि वर्णन ॥

संख्या २०६ वी राधा विलास, रचयिता—जयसुख, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—१० × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२०, खंडित। रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदयाल, ग्राम—भीपमपुर, डाकघर—सफीपुर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ राधा विलास लिख्यते छप्पय ॥ भक्ति शक्ति के तनय मोहिं दीजै गुन गाऊ ॥ ललित पदन को रचौं पदन तेरे सिर नाऊं ॥ जय जय जसु जग मगै विनय जै सुख की दीजै ॥ दूपन दरनि विदारन भूपण पूपन कीजे ॥ भरि उदर

मरल एक कलकरन मगर करी रम परनि हीं ॥ दुष्टि हरन दुरित पर शुभ करन सिद्धि करन सुख सरन हीं ॥ १ ॥

अंत—मुक्ति गमनत यहि विधि सप निकरैं नंद किसोर । खास महल की पौरि पर मनीदार पै—ओर ॥ झूलना ॥ गली चहु ओर हैं गोरी । कृष्ण के रंग में बोरी ॥ गावें और मन भावें । कुंकुम सरभर का माती ॥ तिरीछे फेरि कै नैनें, गुपाले गैल में रोकें ॥ खबर अंदर गई जानी । सयोरी नींद महारानी ॥ उठी ललिता सकल भर है ॥ लगी पद चांक मासर है ॥ लियो तब टेचि कै कर सों ॥ ध्यान यों मेठ मन भर मीं ॥ फिरैं एक जे काम में काम सरमे । कहैं मटि करैं सबै चाए मन में ॥ पुने आ न देखे पर बीच पर्दै हलैं पायि कोरें चढ़ै मैन मरें ॥ बन बीन कारें सुबीना बजावें ॥ मिल तार आसावरी में सुनावें ॥ तहाँ गाइने माखली चाह ताने ॥ गुन में रिझावें सुनावें सुमाने ॥ कल कंठ ते राग ऐसी धरे हैं ॥ पसीज मिल कोकिला मे गरे हैं ॥ सुविधा विमासे सब सर्वमी हैं ॥ ति कंदर्प सी चाह गंधर्विनी हैं ॥ लागी एक वाने लगे ओ लखी में फिरी हैं चहुधा सखी—॥ इति सपूर्ण ॥

विषय—श्री गणेस वंदना राधा विहार वर्णन, बाग शोभा, राधा भवन शृंगार वर्णन, सखियों का वर्णन, दूत समाचार, कृष्ण शोभा, कृष्ण राधा मिलन, राधा के स्थान की शोभा, राधा कृष्ण विहार, रति सखियों का संवाद और हास्य आदि वर्णन ॥

संख्या २ ७ म नरसी मेहता की हुंडी रचयिता—प्रेमदास (नागपुर), कागज—देसी, पत्र—५, आकार—८ × ७ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १७१० = १६५३ ई० लिपिकाल—सं० १८१४ = १७५७ ई० प्राप्तिस्थान—गंगाबक्स सिंह, ग्राम—बगाली खेर तहसील मिसर्वो डाकघर—मुहम्मूदाबाद, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ नरसी मेहता की हुंडी लिख्यते ॥ चौ० ॥ श्री गणपति को पहिले ध्याऊँ । जब नरसी की हुंडी गाऊँ परम भक्त मेहता हैं नरसी । राम भजन में बुद्धि है सरसी । निस दिन राम कृष्ण चित धरै । झूठी दैत कथा नहिं करै । आये हैं अनेकन दास । राम भजन में रहैं हुलास । जहं आवे साधू जन दीय । तामो लेकर रहिया माय । प्रात जाग पूछत हैं तहाँ । कौन लिखत है हुंडी यहाँ ॥ एक मसखरे कीन्हीं हाँसी । सुन उहा दो तीरथ का वासी । घर मेहता नरसी के जाओ । चाहे जितनी हुंडी लिखाओ । उनके धन को टेटो नाहीं । बहुतेरी लक्ष्मी घर माहीं ॥

अंत—दो० ॥ नगर नागपुर धाम नाम प्रेमदास जानिये हरि भक्तन को दास संवत सतरासौ दस ऊपर । ममये येह गुरुवार जेठ शुक्ल पख अष्टमी । हरि गुन कियो उचार जो बांचे सीखें सुनें । इति श्री नरसी मेहता की हुंडी संपूर्ण समाप्त मिथुन पौषमास शुक्ल ... संवत १८१४ वि० श्री राम जी ॥

विषय—नरसी मेहता की हुंडी साधुओं को श्री सांवलशाह (कृष्णजी) द्वारा सकारी गई ।

संख्या २०७ बी नरसी मेहता की हुंडी रचयिता—प्रेमदास (नागपुर) कागज—देसी पत्र—६ आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—

१२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१०, लिपिकाल—सं० १८४८, प्राप्तिस्थान—श्री शिवरतन सिंह जी, ग्राम—रामपुर मथुरा, डाकघर—बसौरा, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—२०७ ए. के समान।

अंत—इति श्री नरसी मेहता की हुंडी संपूर्ण समाप्तं ॥ लिषत नारायण दास बैरागी। सवत १८४८ शुक्ल जेष्ट दसहरा ॥

संख्या २०७ सी नरसी मेहता की हुंडी, रचयिता—जेठमल (नागपुर), कागज—साधारण, पत्र—११, आकार—६ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७१० = १६५३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रमाकांत शुक्ल, ग्राम—पुरवा गरीबदास, डाकघर—गढ़वारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—२०७ ए. के समान।

अंत—इति श्री नरसी की हुंडी सम्पूर्ण शुभम् ॥

संख्या २०८ ए. रामायण पिंगल, रचयिता—आसराम, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदत्त वाजपेयी, ग्राम—मोहनलालगंज, डाकघर—मोहनलालगंज, जिला—लखनऊ (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः जय जय रघुपति चंद्रकी चरित चंद्रका पूरि। हरि कलिमल आतप सदा करैं मोह तम दूरि ॥ १ ॥ बंदौं श्री रघुवीर के पद पंकज मकरंद। मुनिवर वृंद मिलिंद जहं सदा वसैं सानंद ॥ २ ॥ अहिपति रूपी राम के चरण सरोज मनाइ छंदो भेद अभेद हौं भाषा चाहत गाइ ॥ भाषा प्राकृत संस्कृत छंदो ग्रंथ अनेक। क्रमते हरि जस पूर हौं मनि हौं सोई एक ॥ ताते सज्जन संसदिहिं पठन पठावन जोग। रघुपति चरित पियूषते पूरे हरैं अयोग ॥ महाराज रघुराज के सासन सुंदर पाइ। अब पिंगल के भेद हौं न्यारे न्यारे गाइ ॥

अंत—अथ गद्यस्योदाहरण ॥ श्री मदने ब्रह्मांड मंडल मडण धुम न्या पंड प्रताप पटल दुर्वो अपंडन दसकंधर दौर्द उडने महा दक्ष स्वक्ष ब्रह्म चारिणम प्रस्यक्षे स्वरावतार संसार सारा पहारिणम महावीराधि वीर धीर धुरंधर धवल ध्वज धवली कृत जगच्चरित्रों देनां जंना नंदन जग ढढन चंदन रघुनंदन वत्सज्जनानंद कारित्र मस्तु स्यम् इति श्री मन्नासराम कृत गद्य पद्य संपूर्णम् ॥ १ ॥ लिपत शिव विहारी शुक्ल आश्विन सुदी तेरसि संवत १९०१ वि० ॥

विषय—अनेक छंदों का वर्णन और रामायण की कथा लेकर उनके उदाहरण।

संख्या २०८ बी. पिंगल, रचयिता—आसराम, कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—१४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४०, पूर्ण, रूप—साधारण,

पत्र, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवचंद्र बाजपेयी, ग्राम—बुधारा, डाकघर—जगतिपुर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—२०८ ए. के समान।

अंत—इति श्री मत् काम राम विरचिते पिंगल गद्य-पद्य सपूर्णम्।

विषय—पिंगल वर्णन॥

संख्या २०९ ए. ज्ञानमत ग्रंथ या एकादश पुराण, रचयिता—स्वामी ज्ञानदासजी (बाराबंकी), कागज—मूंथा, पत्र—५६४, आकार—८३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४३१० रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा साहेबदास, ग्राम—गनेश मंदिर ममावी देवी, डाकघर—महाराजगंज, जिला—लखनऊ।

आदि—दोहा॥ आतम भेद सुनाइये सुनहु गुरू मति धीर। तत्व ज्ञान परगट करो कौनो सकल सरीर॥ पाँच पचीस एकसार है कहा आतम भेद। तेहि कर भेद सुनाइए सो पद कहौं निवेद॥ चौपाई॥ नानी बचन कहा कर जोरी। बिश्वनाथ सुनु बिनती मोरी॥ ७१॥ कैसा जोग कहौं तुम्हारा। केहि बिधि जोग करौं निरधारा॥ ७२॥ कहि बिधि जोग समुझि हम पाईं। कहहु सकल गुरु पद समुझाई॥ काया पर के भेद बताओ। मिन्न भेद गुन कहि समझाओ॥ ७४॥

अंत—चौपाई॥ मधुरी बचन कही यक बाता। सुन मम अमर जोग मत भाता॥ १३२२॥ यहि बिधि भेद कहा समुझाई। मम मत भेद सुनौ चितलाई॥ १३२३॥ दोहा॥ एक लाख तैंतीस सहस तीन सै तैंतीस जोग। सूय ग्रहन कल जुग परै सुनो बैरागी लोग॥ ४७७॥ गरा सैं बंबास गत भये जब सै कलजुग लाग। सूर्य ग्रहन मा जानिये सुनो जोग बैराग॥ ४७८॥ एक लाख बत्तिस सहस एक सै चौरासी पर जाय। तब कलऊ जुग पुजिये तोहि कहा समुझाय॥ ४७९॥ सूर्य जोग कलऊ प्रमाण १३३३३३—१—तेहिमा बसूक खर्च ११४९—२—तेहि मा बाकी रहे १३२१८०—३—दोहा। चंद्र ग्रहन कर जोग है चारि लाख परमान। कलऊ जुग कर भेद यह बैरागी पहिचान॥ ४८०॥ तीन हजार चारि सै छैतालिस मै जोग। चंद्र ग्रहन सो जानिए सुनौ बैरागी लोग॥ ४८१॥ तीनि लाख छानब सहस तीनि सै छैतीस परै जोग तब कलऊ जुग पुजिये सुनौ बैरागी लोग॥ ४८२॥ चन्द्र जोग कलऊ प्रमाण ४००००—१—तेहिमा बसूक खर्च॥ ३४४७॥ तहिमा बाकी रहे ३९६५×५३ = ३ ~ अपूर्ण

विषय—इसमें गुरु शिष्य के ५० संवाद हैं। जिसमें आगमभेद, पंच तत्व का स्वाद

संख्या २०९ बी पंचरतन ग्रंथ, रचयिता—स्वामी ज्ञानदास, कागज—देसी, पत्र—६५, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९ परिमाण (अनुष्टुप्) —२८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, लिपि काल—सं० १९३३ = १८७६ ई० प्राप्तिस्थान—बाबा साहेबदास, ग्राम—गनेशमंदिर ममावी देवी जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ श्री गुरु अचल जगदानंद साहेब की दाया। सत गुरु

नारायन अचल अपड जोगी विदेह वाला अमर निमानं ॥ चरनार विनदारी समुक्ति पावतौ ज्ञान जोगंग ॥ दोहा ॥ पच रतन यह ग्रंथ है जोग अपंड विचार। अचल ब्रह्म सोइ आदि है वोई सवके करतार ॥ चौपाई ॥ चारिउ जुग कै कहौं वपानी। सत जुग त्रेता द्वापर जानी ॥ १ ॥ कल जुग पुरुप निरतर खेला। चारिउ जुग मां पुरुप अकेला ॥ २ ॥ चोई पुरस देह घरि आये। जुगन जुगन हंसा समुझाये ॥ ३ ॥ गुरु दयाल भयो आपे आपा। मेटेऊ सकल दोप सतापा ॥ ४ ॥ अचल अखंड मिले अविनासी। कहैं लागि निरगुन इतिहासी ॥ ५ ॥ सुनु ज्ञानी यह जोग हमारा। अमर पुरुप भेटो करतारा ॥ ६ ॥ सुन भवन में पुरुस विदेही। विना तत्तु के परखो देही ॥ ७ ॥ सावल रूप येक है ज्ञानी। दोसर शुक्र वरन पहिचानी ॥ ८ ॥ सावल वनपुर है एका। सुकल वरन के कला अनेका ॥ ९ ॥

अंत—सत गुरु कवच को विचार। वेडापेइ लगावहु पार ॥ ८७ ॥ साहेव है तुम्हरे हाय। सुमिरो चरन पर धरिमाय ॥ ८८ ॥ सोरठ। इति श्री रामचद दूत महा हनिवत कवच सुमिरैं जेनरा. अमित तेज वलहोइ हनिवत भक्ति सुधारिये विप्री सेतरा ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ जे नर पाठ करे नित सकल सपति दायकं। सर्व देव वसि होय वाके महा जोगी वसी कर ॥ ९० ॥ साहेव अचल विदेह पथ आपड चलाइ गुरु ज्योतिह मिले ज्ञान दास सुधारि भज गुरु चरनपकज उर धरे ॥ ९१ ॥ पच रतन यह ग्रथ है भये आय भरपूर। ज्ञान दास सुनि हि मिले जोति वरी भरपूर ॥ ९२ ॥ जोति वरी भरपूर परम पद के पार पद सोइ विदेह सरूप जेहि परगे सो अमर पद ॥ ९३ ॥ निरंजन के पार सार सव्द जेहि लखि परैं। वई दसौ अवतार आदि जोति अनर्भा वरैं ॥ ९४ ॥ अचल अखंड सपार चारिउ जुग पूरन रहै। रई सवके करतार ज्ञानदास धारा वहै ॥ ९५ ॥ इति श्री पचरतन हनिवत कवच पाठ सपूरने समापते सुभमस्तु मिती पूस सुदी १३ सन् १२८३ संवत् १९३२ × × ×

विपय—इस पचरत्न ग्रथ में ५ देवों के कवच हैं—सतगुरु कवच १ से ११ तक श्री गणेश कवच ११ से ३३ तक, दुर्गा कवच ३४ मे ४४ तक, भैरों वली कवच ४५ से ५३ तक और हनुमानजी का कवच ५३ से ६५ तक।

संख्या २१० शव्द पारखी, रचयिता—ज्ञानीजी, कागज—साधारण, पत्र—५, आकार—५¾ × ४¾ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—गजाधर प्रसाद, ग्राम—कूरडीह, डाक-घर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—अथ शव्द पारखी ज्ञानजू की लिख्यते ॥ अदेप देपे शव्द विचारैं। आप तरैं औरन कू तारैं ॥ पपा पपी की पपन झालै। लोक वेद सें उलटा चालै ॥ आतम तत का करै विचारा। कहै ग्यानी सो गुरू हमारा ॥ १ ॥ अजन माही निरजन धावै। अतर गत मैले मन लावै ॥ सत गुरु सव्दैं लागा रहै। काम क्रोध में देह न दहै ॥ आशा तृष्णा सूर है न्यारा। कहै ग्यानी सो गुरू हमारा ॥ ३ ॥ वहाँ चेला का सग निवारैं। सांचा साहेव हिरदे धारैं। आपा उरधव ध्यान सव पोवै। शव्द देष्य घट अंतर जोवै ॥ देपै नहीं धन्या आकारा। कहै ग्यानी सो गुरु हमारा ॥ ३ ॥ एकाएकी अरु वहु संगी। सदा उदासी

अरु बहुरंगी ॥ मर्द न रहित बन पद नामा । अहंवाद का जा मद नामा ॥ मोमा दूरी नामा मीरा । जन ग्वामी का गुरु कबीरा ॥ ४ ॥

मस्त सो जु भव तें दूरी । भरमें मागा रहे दमूरी ॥ ओलवि साह बहु महीं रहै । आत्मा मूं परमात्मा चाहै ॥ आतम संत की जानें मूरी । जन ग्वामी ता चरन की धूरी ॥ २३ ॥ दया आ जा मय सूं दीन । हरि के काम रहे आधीन ॥ इसाफल में रहे समाया । कहै ग्वामी सौ दाम कहाया ॥ २४ ॥ भक्त गत की जानें सार । ता घट ज्ञान वीहात विचार ॥ या घट हूं पोज जा कोई । कहै ग्वामी साहू आवागमन न होई ॥ २५ ॥ इति श्री शब्द पारसी स्वामी जी की संपूर्ण ।

विषय—शब्द विचार । मादादि त्याग का उपदेश । ज्ञानी की परिभाषा । इन्द्री दमन का कथन । कामिनी त्याग वर्णन । पंडित ब्राह्मण जन हिन्दू, मुसलमान, मुल्ला, जैपीर, सैयद और मस्त की परिभाषा ।

संख्या २११ तुलसीदास की बानी, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१९, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१६, खंडित। रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्ति स्थान—सेठ मगनीराम व्यापारी, कासीमपुर, जिला—खीरी (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री राम चन्द्रायनमः ॥ पंडी श्री गुरु पद कमल अमल भक्ति वर देत । जासु कृपा लहिये तुलसीदास के हेत ॥ बधाई जन्म अष्टमी की । भयो है जसुदा के बालक जन प्रति पालक अरि उर सालक र । अरे बलि गुर गुर धर्जाहं निसान परम सुख माहर रे ॥ उदित मुदित सब गोपी मन रस रोपी चाह चित चोपी भूषन सोपी है रे ॥ कर कलि गावत मंगल गीत महरि आयो ठोहर र ॥ मह मह ते बलि गोरी रूप रंग वारी तारि किन्तोली गमन कियो मोति भली । मर्मो रस मुखिया बहु छूटि सी पिंजरा तारि चभो ॥ वारि कर्म करवायो मुनीन चावाय दिये सब साज सा विप्रन वेद पढ़ें । अरे बलि बरसत सुमन सुरन सा ग्वाम विमान चर ॥ कुरत ग्वाल उछाह अति उर साहल भयो चित चाहत छिरकत दरद दही । मानो बरसत मेघ अनंद सो गोरस सरित बही । बाजत विविधि बधाई बरनि नहिं जाई उर मब गाई हरख निधु उमगावन । त्रिभुवन नाथ मदेसा मदरा भवन छिर गार मन ॥ देत नंद जी को गारी सकल ब्रजनारी जे घूंघट वारी ते परम उघारि रूपे मर्मो उदित मई चंद्र रासि कारि तिमिरि सब दूरि भये ॥ (इसके आगे का पृष्ठ नहीं है)

अंत—छप्पय कुसम कलित भोग । छूटि छूटि आगत कपाल । पिय अधर बामा अनूप । दपिर रमांनि मुख रूप भूप ॥ बार बार मन मिल मिगाहि । जासु दिये में राधु राहि । तुलसी दास बस भीर भ न कृष्ण सुमिरि हा कृष्ण रंग ॥ (यह इतना ही है) ४८ रासेस यता नीत रम्या मर्मत । सुख सुख मत्र यद् अमल ॥ कुन्द बन बन राज राज । सौमित्र मामिनि पद समाज ॥ आन पीत मित सुहत बैठि । महक रही बहु दिसि पसेहि ॥ बरस बरस पट पहिरि नारि । रतन जटित भूषन संवारि । कुन्द कुन्द मिलि करत

राग। वरणि सकै को तिनके भाग ॥ गोप चोप चित धरत चोप। मो कछु आवत कहिन मोप ॥ गावत गारी हरपि अंग मृग मद केशरि छिरीक रंग लूटत सुप छूटत गुलाल। बाजत डफ मृदंग ताल। वीन वासुरी रव रसाल। हो हो होरी कहत ग्वाल ॥ छविलि छटा सी आवै धाइ। घन मूरति तन लपटि जाइ ॥ आंपि आंजि मरजाद नापि। अधर मधुर रस रूप चापि ॥ ब्रह्मादिक कहै धन्य धन्य को गोपिन सम कहिये अन्य। ब्रह्म सनातन सहित प्रेम। जुगुल कियो वसविनहिं नेम ॥ ४९ ॥

विपय—श्री कृष्ण जी की लीला और महिमा वर्णन

संख्या २१२. तिल शतक, रचयिता—जुगुत राय, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुप्टुप्)—१४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विक्रम सिंह, ग्राम—रायपुरा सासन, डाकघर—तौरा, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ तिलक शतक जुगुत राय कृत लिप्यते ॥ दो०। गोरे मुप पर तिल लसै ताहि करौं परनाम मानौं ससि लै हाँय मै राप्यो शालिग राम ॥ छत्र तरौना लट चिवर चिवुक सिंहासन साज ॥ तिय कपोल छवि पेत लपि ते पाच अकुर टठै पियतन मैं केहि हेत ॥ नष हेत दुति रमनी चिवुक सुतिल छवि हेत ॥ मुप वोट तिल चावली नैन ववाई देत ॥ मुप तिल लिप्यो बनाइ विधि ताहि न जानै कोइ। एकै अक्षर प्रेम को पढै सो पडित होय ॥ काजर कजरौटिन मै लीजे दृगनि लगाइ ॥ यह तिल काजर चिवुक मै वाह लगै दग आइ ॥

अंत—छुटै रोग मन को भयो करि थाके सब सूरि। मोती जरयो मृगाक तिल तासो द्वै है दूरि ॥ तिय को मुप सुदर वन्यो देपत लागै सेल ॥ अव औपद को चाहिये वाही तिल को तेल ॥ ज्यो ज्यों तिल को वरनिये त्यों अक्षर परमान। मनो जोर ते प्रगट ही हीरन हू की खान ॥ ज्यों तिल को वरनन करत वढै अर्थ अपार। इहा मेह ज्यों ऊनयो वरसै अमृत धार ॥ चिवुक सिंघासन पर लसे तिल धौं सालिग राम। वानी पुरायां जालि मैं कहौ लाहि परमान ॥ इति श्री कवि जुगुत राय कृत तिल शतक सपूर्ण समाप्त लिपत राम विलास पुत्र श्याम विलास वैश्य निवासी अपूरा पुरा जिला इटावा सवत् १८९० वि० चैत्र शुक्ला नवमी ॥ इति श्री राम राम राम राम राम ॥

विपय—तिल पर १०२ दोहे वर्णित हैं ॥

संख्या २१३. प्रश्न विचार, रचयिता—ज्योतिपराज, कागज—साधारण, पत्र—५, आकार—६ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुप्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य। लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राम स्वरूप मिश्र, ग्राम—अर्जुनपुर, डाकघर—अतू, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—अथ ॥ श्री गणेशायनमः ॥ मेप मीन लग्न में स्त्री प्रसूता होय तो पास दुई स्त्री कहना और कुभ वृप में होय तो चार स्त्री कहना तथा कर्क धन में होय तो पांच स्त्री कहना तथा मकर मिथुन तुला कन्या वृश्चीक सिह लग्न में होय तो तीन स्त्री जानना ॥

अंत—तिथि वार नक्षत्र युक्त करिये । रवि की पति छै गणना करिये ॥ धारि मास मेद पुनवासी रिपु तीनि वर्ष मिलि के धरिये ॥ दुइ सूनि वर्ष बस सात वर्ष विधि बीच परै तबहूं करिये ॥ कवि ज्योतिषराज विचारि कही विधि अङ्क टरै फल ना टरिये ॥

विषय—ज्योतिष (लग्न से फल कथन) ।

संख्या २१४ ए. अक्षरावलि, रचयिता—कबीरदास, कागज—साधारण, पत्र—७७, आकार—५¾ × ३¾ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४११, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७५ = १८१८, प्राप्तिस्थान—श्री देवकीनन्दन शुक्ल, ग्राम—रामपुर गधौली डाकघर—संग्रामगढ़, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री राम जीव सहाय ॥ श्री ग्रंथ अक्षरावलि लिख्यते ॥ दोहा ॥ सत्य नाम निज सार है, सत गुरु के उपदेस । सुमिरें संत सत भावते, छूटै मुक्ति संदेस ॥ सोरठा ॥ त्याग कुमति गति परिहरो नाम सनेही होय । हंस होवे सत गुरु मिले, कुल का कर्म सब धोय ॥ चौपाई ॥ सात लोक की अकथ कहानी । सोइ निज सत गुरु सहि दानी ॥ रूप बरन नाहिं देखा । तीन के अंतर सुनहु सलेखा ॥ नाहिं तहाँ पाँच तत्व की माया । नहीं तहाँ तीन पुरुष निरमाया ॥ नहीं प्रकृति पवि सो होइ । जरा मरन जाके नहिं कोइ ॥ दस इन्द्री नाहीं पद कर्मा । वरन भेद नाहीं कुल धर्मा ॥

अंत—॥ साखी ॥ बिनु अक्षर सब झूठ हैं नहिं अक्षर माह समाये । अक्षर भेद जो पावये सो हंसा ना रंग होय ॥ सोरठा ॥ कहे कबीर गुरु नाहीं संत वचन प्रतीति कर । गहु हंस राज की बाह जिहि जग सौं जक टरै ॥ इति श्री अक्षरावलि ग्रंथ पूर्ण ॥ श्री शुभ वाणि ॥ जो देखा सो लिखा मम दोस न दीयते ॥ संवत् १८७५ साके में लिखा संत ज (मों) से बिनती मोरी टूटल अक्षर लेब सम जोरी ॥

विषय—नाम और सतगुरु की महिमा ।

(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—प्रस्तावना, नाम सनेही होने का उपदेश, सत्य लोक निरूपण, सत गुरु महिमा, सत नाम महत्व, 'अक्षरावली' निर्माण कारण, मूल अक्षर, निज अंग-चीन्हने वाले का फल, अजपा जाप वर्णन समाधि खंडन, मन एकीकरण की महिमा, 'नाम' जपने का उपदेश और उसका फल, ब्रह्म चीन्हने का विधान, अक्षर का महत्व प्राणायामादि क्रियाओं का बिना युक्ति के व्यर्थ होने का कथन, योग की परिभाषा, सतगुरु के उपदेशों पर चलने का फल, सतनाम में समाने की विधि ।

(२) पृ० १७ से पृ० ७५ तक—पारखी का अंग शब्द के सार के जाने बिना मनुष्य के भ्रम में पड़े रहने का कथन, भवसागर की अगमता और उससे पार होने की विधि, पुराणादि की केवल कल्पनामात्र होने के कारण निस्सारता और नाम का सार, काल जाल का विस्तार तथा उससे छूटने का विधान मन की चंचलता तथा मूल नाम का विवेक-ज्ञान दृष्टि तथा निजरूप के ज्ञान का परिचय, प्रवीण संत की पहिचान, मुक्ति संदेश, पंच तत्व तथा गुणादि का वर्णन, विविध रूप की भक्ति में बारम्बार रूप रखकर भ्रमने का कथन तथा नाम से मुक्ति पाने का कथन ।

(३) पृ० ७५ से पृ० ९४ तक—सत नाम की व्याख्या, कथा ट की निष्फलता तथा अकथ कथा (सत गुरु द्वारा कही) का महत्त्व, मूल मत्र ग्रहण करने वाले अधिकारी का वर्णन, सत गुरु से उपदेश ग्रहण करने वाले शिष्य के ही मूल तत्त्व जानने का विधान, आत्म राम जानने का विधान, जब तक ध्यान विदेह न आवे तब तक जीव के भटकने का विधान, दुविधा के मिटने तथा केवल एक सत नाम की महत्ता का वर्णन, अमरावति का सार, फल। अक्षर ज्ञान का महत्त्व। गुरु, सतो के वचनों में प्रतीति करने का उपदेश।

संख्या २१४ बी ज्ञान सरोदै, रचयिता—कबीरदास (बनारस), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—५२, आकार—७ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१२=१८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृपानारायण शुक्ल, ग्राम—मुशीगज कटरा, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ सत्य नाम सव गुरु की वीर की दया ॥ ते लिष्यते ग्रंथ ज्ञान स्वरोदे ॥ सापीः धर्मदास विनती करै सत गुरु दीन दयाल। ज्ञान स्वरोदै भाषिये हमको करहु निहाल ॥ सत गुरो वाच ॥ अपोचम ॥ प्रआत्तम पूरन विस्वावीम। आदि पुर्स अविचल तोहि नवावों शीस ॥ क्षरवो हग सो कहत हैं अक्षर सोहग जानु। निह अंक्षर स्वामा रहित ताही को मन आनु ॥

अत—सापी ॥ भेद स्वरोदै वहुत हैं सुक्षम कहीं वुझाइ तेहि का समुझि विचारि ले अपने मन चितुलाइ ॥ सापी ॥ धीर टरै गिरवर टरै धूह टरै सुनु मीत। ग्यान स्वरोदै ना टरै कहै कवीर जगजीत ॥ सापी ॥ रामानद गुरु की दया सवै दया सो जानि। सत गुरु सति कवीर है कह्यो सरोदै ग्यान ॥ सापी ॥ जोग जुगति ढिग थंकि करि वृह्म ग्यान ढिग होइ। अजपा तत्त विचारि कै सत्त गुरु पशु तिस मोइ ॥ इति गृथ ग्यान सरोदै समाप्त सवत १९१२ वै० शु० १ मे लिपित देवीदीन दुवे मलिहावाद महंत रामदीन के विद्यार्थी।

विषय—कवीरी ज्ञान (स्वोदय)।

संख्या २१४ सी कवीर जी की साइयो, रचयिता—कवीरदास, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—३ × १½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, खंडित। रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री स्वामी ब्रह्मचारी जी द्वारा वावू लालता प्रसाद खजाची, तहसील-सिधौली, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ कवीर जी को कृत साइयो ॥ प्रथम गुरुदेव को अंग ॥ कवीर सत गुरु सवान को सगा सोधी सवीनदाति। हरि जी सवान को हितू हरि जन सवी न जाति ॥ कवीर वलिहारी गुरु आपसौं घों हाडी कै वार। जिन मानिप तें देवता करत न लागी वार ॥ कवीर सत गुरु की महिमा अनत अनत किया उपगार। लोचन अनंत उघाड़िया अनंत दिपावण हार ॥ कवीर राम नाम कौ रटत रे देवे को कुछु नाहिं। क्या ले गुरू संतोपि ये हौस रही मन माहिं

अंत—माला पहिन्यां हरि मिलै तो अरहट के गलि देख ॥ कबीर माला पहिन्यां कुछ नहीं रुल्या मुवा इहि भारि । बाहरि ढोल्यां ही गल भीतर भरी भंगारि ॥ कबीर माला पहिन्या कुछ नहीं काती मन के साथ । जब लगि हरि प्रगटै नहीं तब क्या पतरा हाथ ॥ कबीर माला पहिन्यां कछु नहीं गोपि हिरदा की धोइ हरि चरणो चित राखिये तौ अमरा पुर होइ ॥ कबीर माला पहिन्यां कुछ नहीं भगति न आई हाथ । माथो मूंछ मुंडाय करि चला जगत के साथि ॥ कबीर साईं सें ती सब चलि औरो सों सुधि भाइ । भावे लंबे केस करि भावै घुरड़ि मुड़ाइ ।

विषय—सच्चे गुरु की महिमा, भजन की महिमा, नाम महिमा, चितावनी आदि ।

संख्या २१४ डी संतों की गारी, रचयिता—कबीरदास (बनारस) कागज—साधारण, पत्र—३, आकार—८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—श्री सत्य नारायण त्रिपाठी, ग्राम—जौरा, डाकघर—गोंडवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—गारी राम चमत्कत कर चित चाची तुम्हारी, उनहू के चम समाचार जब चित चेत करो चित चेतु करु मूर्ख गवाँर टेक ॥ टेक ॥ मिर दुमिया है कुफ् तुम्हारी, पोथिया बोझ जमिहार ॥ १ ॥ मान कुँवर मम्मडनि तुम्हारी जिन रखे चढि बैराग ॥ २ ॥ काम क्रोध दूनो ननद ननदिन्हा, सोवति पाँव पसार ॥ ३ ॥ चोरि घर के पति कैसे रहतु हैं गारि के भारि किनार ॥ ४ ॥ साहेब कबीर पूर्ति गारी गावें सन्तो चेतु विचार ॥ ५ ॥ १ ॥

अंत—जोरा जोर जनावै ए माया परपंचनियाँ ॥ १ ॥ द्वै रूप बनावै एक कंचन एक कामिनियाँ ॥ २ ॥ एक जाये विलमावै एक संत दै मारनियाँ ॥ ३ ॥ ताको करिये कैसा सन्तो करहु विचारनियाँ ॥ ४ ॥ गहु सत गुरु सरण आपुके करहु पुकारनियाँ ॥ ५ ॥ समर्थ मुनि कीजै, घर बन माया जागनियाँ ॥ ६ ॥ समर्थ चढि आपे जीव का किये है उधारनियाँ ॥ ७ ॥ गुरु ज्ञान बैंचाये काम क्रोध एक मारनियाँ ॥ ८ ॥ एन कोई न बंचे संत लोग सम्हारनियाँ ॥ ९ ॥ पद दे होम बासी, कर देहीं निस्तारनियाँ ॥ १० ॥ सत कहैं कबीर गुरु चरित्र मतवाला आगमनियाँ ॥ ११ ॥

गारी समाप्त विषय—गाली कबीर दास रचित (ज्यौंनार, सारी भंवरी होने का वर्णन, समधी को गाली आदि) ।

संख्या २१८ ई ठग गीता, रचयिता—कबीर दास (बनारस) कागज—देशी पीला पत्र—१७, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०४ खंडित, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० कृपानारायण शुक्ल, ग्राम—मुरलीगंज कटरा, डाकघर—सफीदाबाद, जिला—फैजाबाद ।

आदि—सत सुकित आद अदली अजर अचित पुरुष मुनिन्द्र करुना मै कबीर सुर्त जोग संतायन धनी धर्म दास मुक्त मनी राम सुन्दर सन्त नाम हुकुमत नाम प्रमोध गुरु बाला परि नाम कमल नाम अमोल नाम सुर्त सनेही नाम हक नाम साहब की दाया आदि

गुरु वस व्यालिम की दाया सो लिप्यते । श्री गर्य उग्र गीता सापी । करै दूरि अज्ञान को अंजन ज्ञानी जो देई, बलिहारी जो गुरु की हम उवारि जो लेई, सापी उग्र गीता निजु सार है । सुक्रित दिये लपाये करै दूरि अज्ञानता अंजल ज्ञान ,समाये मोरठा । अजन सार है ज्ञान रहै मंही अज्ञानता तेहि गुरु की वलिहारी मोर सदा प्रणाम है ।

अंत—दुदिस्टिल गये धर्म अस्थाना । धर्म पुत्र धर्म ठिकाना ॥ भीम जाई पवन समाई । पवन पुत्र जो कहिए भाई ॥ अर्जुन इद्र पुत्र जो कहिया । इन्द्र लोक मा वासा करिया ॥ नकुल सहदेव दोनों भाई । असुनि कुमार पुत्र हिय लाई ॥ ऐसे सर्ग लोक किय वासा । पुन्य छूट भौ सागर स्वासा ॥ धर्म दासौं वचन ॥ धर्म दास कहैं सुनो गुसांई । पांडो मित्र कृष्ण के आई ॥ गीता भगवत वेद पुराना । दरस प्रभु के निकट समाना ॥ ताकर आवा गमन न होई । सुर नर मुनि सब भाषै लोई ॥ साध संत सब मिलि कोई गावैं । जो कोई हरि दर मन पावे ॥ ताकी मोछ मुक्त होइ भाई । जुरा मरन का बीज नसाई ॥

× × × ×

विषय—कबीर और धर्म दास के आत्मिक विषय पर प्रश्नोत्तर ।

संख्या २१५ ए. छविरत्नम्, रचयिता—कालीदत्त 'छवि नागर' (टरई), कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५२ = १८९५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रशेखर दूबे, ग्राम—बहननेवा, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ छवि रत्नम् प्रभा नाम टीका सहित लिप्यते ॥ दोहा ॥ छकत जहां गोपीन के भ्रमर विलोचन गुंज । विलसत रहैं मुकुंद की हसन कुंद की कुंज ॥ टीका ॥ मुकुद जो कृष्ण है तिनकी कुंद की कुज के समान जो हसन है सो वह सदा शोभित रहै । जो हंसन में गोपिन के नेत्र रूपी भौंरा गुंजार करके छकते हैं (यहां प्रियतम की मुसक्यान गोपिन के मनोर्थ सिद्धि की सूचक है यातें छकवो कहौ) आशीमंगल उपमालंकार ॥ वेणी लक्षण ॥ दोहा ॥ पावस रैन अचन्दिनी मसि मलिन्दनी माल । रवि नंदिनी फनिंदनी वेनी वरन विशाल ॥ वर्षा रितु की अचन्दिनी कही चादनी रहित रात्रि, मसि कहे स्याही मलिंदनी भवरी रविनंदनी जमुना फणिन्दनी नागिन ये सुदर वेणी के वरण के उपमान है ॥ मालोपमाऽलंकार ।

अंत—सर्वांग मूर्ति लक्षण ॥ दीप शिपा चंपक लता स्वर्ण सलाका सार रति रंभा रामा रमा सौदामा उनहार ॥ सौदामा = विजुली, उदाहरण = आज छकी छवि रूप के लखहु छवीले लाल छातन पर छमकत फिरत कनक छरीली वाल ॥ आज हे लाल तुम्हारे रूप में छकी छवीली सोने की छडी सी छतो पर छमकती है ॥ उपमालकार ॥ कवि काली छवि रतन में निज मति के अनुरूप । वरण कहे वनितान के नप सिप अग सरूप ॥ कालीदत्त कवि ने यथा मति नायकों का अग वर्णन किया ॥ इति श्री सा काली दत्त कवि नागर

विरचितं छवि रत्नम् रसिकानांमुदे भूयात् संवत १९२२ वि० ॥ दः रामदयाल पाठक। सीता राम श्री सीताराम ॥

विषय—नायिका के नख से सिख तक सब अंगों के लक्षण तथा उदाहरण और उनकी गद्य में टीका ॥

संख्या २१२ बी रसिक विनोद, रचयिता—कालीदत्त नागर (उरई) कागज—नवीन सफेद, पत्र—१८, आकार—११३/४ × ८१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य और गद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९२१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रघुवरदयाल मिश्र, जिला—इटावा।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ रसिक विनोद वर्नन अथ नायका भेद, नायका—सुन्दर चतुर युवती सो नायका। नायका भेद—स्वकीया, परकीया, गनिका। (१) निज पति में प्रेम सो स्वकीया अवस्था भेद से मुग्धा मध्या प्रौढ़ा। मुग्धा—अंकुरित यौवना सो मुग्धा, मुग्धा के भेद—अज्ञात यौवना, ज्ञात यौवना, नवोढ़ा, विश्रब्ध नवोढ़ा। अज्ञात यौवना—यौवनको आगमन न जाने। ज्ञात यौवना—यौवनागम जाने। नवोढ़ा-कन्या भयसों पराधीन रति करै। विश्रब्ध नवोढ़ा-पतिमें कुछ विश्वास करै सो विश्रब्ध नवोढ़ा।

अंत—प्रश्न—मुग्धाका मान नाहीं कही सो का कारन ? उत्तर—अपराध सूचक ज्योढ़ा कजातें नाहीं कर सकत प्रियको अपराध सूचक सो मान। यह मान करै मुग्ध कथन है केसव दासने मुग्धाको मान कहा है सो इनकी बात ही निराली है। जो तो श्रृंगार रस जाका कम मर जानते है। प्रश्न—धीरा और खण्डितामें क्या भेद है ? उत्तर—धीरा कोप प्रकट करत है। खंडिता दुखित होत है। प्रश्न—प्रथम श्रृंगार समरति और विषम रति से दो प्रकार को। संयोग वियोगसे चार, फिर प्रच्छन्न प्रकाशसे आठ प्रकार है सो तुमने क्यों नाहीं कहीं ? उत्तर—विषम रति सो संयोग श्रृंगार हो ही नहीं सकता। रहा वियोग श्रृंगारमो पूर्वानुराग कहि चुके हैं और प्रच्छन्न प्रकास भी प्रत्येकमें नहीं हो सकते। इसलिये कि जहां लज्जा है या अपवाद भय है तहां प्रच्छन्न है जहां ये नहीं तहां प्रकास है ॥ इति

विषय—नायिका भेद।

संख्या २१४ सी रसिक विनोद, रचयिता—कालीदत्त नागर (उरई, जालौन) कागज—देशी नवीन पत्र—२०, आकार—१० × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)— ३३०, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य और गद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला कल्लूमल, ग्राम—गौरिया कलाँ, डाकघर—फतेहपुर, जिला—उन्नाव।

आदि-अंत—२१५ बी के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री रसिक विनोद काव्य कालीदत्त नागर उरई निवासी कृत संपूर्ण समाप्तः ॥ माघव कृष्ण पक्ष द्वितीया संवत १९३४ वि० ॥

संख्या २१४ डी रसिकविनोद, रचयिता—कालीदत्त कवि नागर (उरई) कागज—साधारण, पत्र—९, आकार—११३/४ × ८३/४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११,

परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य और गद्य। लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रघुवर दयाल मिश्र अध्यापक मिडिलस्कूल कबीरचौरा, बनारस सिटी।

आदि-अंत—२१५ वी के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री सरकाली दत्त कवि नागर निवासी उरई विरचिते रसिक विनोदे वियोग श्रृंगार वर्णनोनाम ससमानन्द । समाप्तोय रसिक विनोदे ग्रथः ॥ शुभम्

संख्या २१६. रतन विलास, रचयिता—कालिका सेठ (शाहजहाँपुर), कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—१२×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१० = १८५३, लिपिकाल—सं० १९१९ = १८६२, प्राप्तिस्थान—श्री गणपति दूबे, ग्राम—नयागाँव, डाकघर—सरदारपुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रतन विलास लिख्यते ॥ श्री सरस्वती जी सहाय ॥ यह पुस्तक को नाम है कहे रतन विलास यामे कुछ कविता करी नाम धरो गुन देष याको समझ विचारि के सब गुनियन के भेस ॥ जो जहु पायों सो धरो प्रागदत्त को लेख संवत् १९१६ दियो ज्ञान महेस ॥ सब सुनो लोग चित देइ भाषा कुछ उर्दू जिनको चित्त भगवान में उन चरनो लवलीन। जात पात बूझों नहीं उन भोजन मोको दीन ॥ प्रागदत्त मुदर्रिस वराणे तहसील घरोड जिला कर्नाल पजाब ॥ वाशिन्दा कानपूर बिल्हौर तालीमयाफ्ता देहली ॥ गनपत सुमिरि सरस्वती शंकर भोले नाथ। कर जोरे अस्तुति करौं लाज तुम्हारे हाथ ॥ राषि लेउ तुम लाज करौ कारज सारे शिव के हौ तुम पुत्र हरौ सब संकट हमारे ॥ मगल उस्ताद जिनका अपाढ़ा ब्राह्मण हैं गौड़ गुरु वंसी हमार कालिका सेठ सरन सिव की रहे ते सहजहाँपुर स्वाग बालकाड का कहेत भज सीता पत राम ॥

अत—सीताराम ॥ सिया स्वयंवर स्वांग है मुक्ति पदारथ देइ। बहुत श्रम में अब कियो लिखो ज्ञान को जान रघुनदन किरपा करी दियो मन विच ज्ञान। दीना जन ग्यान स्वाग पूरन कीना वैसाष बदी चोथ को सब लिप लीना सवत् ओनइस सै ओनइस आयो तब दाता ने यह ज्ञान बतायो प्रागदत्त ब्राह्मन कानपूर का ॥ इति श्री रतन विलास यानी स्वांग बालकाढ सिया स्वयंवर का संपूर्ण समाप्त।

विषय—सिया स्वयंवर का अनुवाद स्वांग में।

संख्या २१७ ए. कृष्ण क्रीड़ा, रचयिता—कालिकाचरन, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—६×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवरतन सिंह, ग्राम—रामपुर मथुरा, डाकघर—विसवाँ, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नम. अथ कृष्ण क्रीडा लिख्यते। वसत तिलक छंद वसत तिलक छद ॥ मातंग मौलि सन हेम किरीट भारी, श्री पंड पौरि ससि वदन बुध धारी। अंभोज अधिरज विघ्न समूह हारी। जै वक्र तुढ जन मगल मोद कारी। विद्या विवाह श्रुति-नारद विलास लीके वीना विचित्र कर पुस्तक जुक्त कीन्हे चन्द्र प्रभा वसन भूषण भूरि

गाता ॥ हरि मर हरधर धरनि धर श्रुति विहीन श्रुति छीन । सहस बदन बंदों पदन प्रभु गुन बरन प्रवीन ॥ कवि कोविद सुर असुर नर सकल बंदि कर जोरि । कहौं कृष्ण क्रीड़ा कवन बुधि विवेक रस बोरि ॥ बसंत तिलक छंद ॥ जो चक्र पानि गरुड़ ध्वज सिंधु वासी । छीरोद प्रबल सत चित आनंद रासी ॥ श्री चंद चूड़ चित पंकज को प्रकासी । सोई इष्ट देव मम है व्रज को विलासी ॥

अंत—बारम टेर सुनी जबहीं तब कीन्ही न देर न लीन्ही सवारी । भूप सुता हित चीर बने पुर बासा की साप गरे गहि डारी । फैरि कये गुढ़ बालक ज्यों अद मीत सुदामा की प्रीति सभारी । कालिकाचर्न कृपा करि के हरि वैसे हरौ हिय पीर हमारी ॥ इति श्री कालिका चर्ण कृते कृष्ण क्रीड़ा नाम ग्रंथ समाप्तम् लिपतं मोहन लाल राम संवत् १९२० चैत्र सुदी ५ पंचमी ॥

विषय—श्री कृष्ण जी की लीला और महिमा ।

संख्या २१७ बी कृष्ण क्रीड़ा, रचयिता—कालिकाचरन कागज—देसी, पत्र—२१, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवरतन, ग्राम—मज्जू का पुरवा, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर ।

आदि—२१७ ए के समान ।

अंत—इति श्री कालिकाचर्न कृते कृष्ण क्रीड़ा नाम ग्रंथ समाप्तम सं० १९२५ लिपतं गोपीनाथ पांडे निज पठनार्थ । हरीमन पुरवा मे ।

संख्या २१७ सी कृष्ण क्रीड़ा, रचयिता—कालीचरन, कागज—देसी, पत्र—२८ आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण अनुष्टुप्)—१०७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१२ = १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री देवीदयाल, ग्राम—सलेमपुर, डाकघर—गैरा स्टेट, जिला—खीरी ।

आदि-अंत—२१७ ए के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री कालिका चर्न कृते कृष्ण क्रीड़ा नाम ग्रंथ संपूर्ण समाप्त लिष्यतं बैजनाथ सिंह संवत १९१२ वि०

संख्या २१८. दस्तूर मालिका, रचयिता—कमला, कागज—साधारण पत्र—१४, आकार—१० × ५½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०१, खंडित, रूप—नवीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७७ = १८२० ई०, प्राप्तिस्थान—लाला गयाप्रसाद, ग्राम—किन्ही, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री रामचंद्रायनमः ॥ संवत विधा वेद सत ऊपर सैंतालीस । सावन कृष्ण प्रवोदसी भानुवार शुभ दीस ॥ ११ ॥ प्रथम अंक ते बरन लेयन सहित सुजान । और जमा अरु पाच को न्यारो कहौं प्रमान ॥ १२ ॥ (छ्री) प्रथम कस्न मथत आरकसार भ्रागर को जानौं । अक्षर लिपि सुदेय इक सम समन बखानौं ॥ विरली कौहि सुदेस सौर्य कछु को परिचानौं । जमा मात्रा लागि सोइ इन्दै मैं इन्हैं बखानौं ॥ कहि कमला जन

लेपन सहित समुझ वतु अरु सोध वर। सोई जमा पर्चु पद्धति सहित लिपहि जाहि जवहि काइस्थ नर ॥

× × × ×

अत—जै रुपैया तोला विकै, मासे को का देइ। सव गुनि आना करै। दाम पच गुने लेइ ।। एक रत्ती के दस गुनै, दीजै दाम वषानि। एक चांवर के सवाये दाम सो कीजै जानि ॥ एहि प्रकार लेपा करै स्याहा गुन गन लेइ। आना दाम जु साठि को भाग काटिके देइ ॥ १ रुपैया १४) को ताके सवाए १७॥ दाम पच गुनै ७० दरि ६० मासे एक के १) १)=॥१- ताको अर्थ—तोला एक रुपैया १४ को दस गुनै १४० दरि साठि की ६०)= १४ तोला तोला १) रुपेया १४) ताके सवाए दाम १७॥ चाउर एक के)।:२॥ एक रुपैया कीजे रती सोन माउ जो होइ। मासो तोलो कहि दीजै कहि जै सोइ ॥ ताको अर्थ—रुपैआ की रती ६॥ तोलो ६॥ रुपैया की रती ६ के भये रुपैया ६६) मासे के रुपैआ ८)

विषय—पृ० १ से ८ तक—हर्फों का सौंदर्य तथा लेषन विधि, कायस्थ की लेखन कला की महत्ता, बत्तीस तक अक्षरों के लगमात्रा का वर्णन, गिनती का परिमाण, जोड़ की पद्धति, सौ से अधिक गिनती का परिमाण। दफ्तर और दस्तूर। फर्द रोजनामचा, स्याहा का क्रम तथा वही बनाने का विधान, वही लिखने की विधि। कच्चा कागज तथा स्याहा की रीति। खतौनी का विधान। जमा—खर्च की पद्धति।

(२) पृ० ९ पृ०···तक—विगहा, गाठो, विसुवा की परिभाषा। बीघादि से विस्वादि बनाने का विधान। जत्र कोठरी का विगहा। लगान लगाने की रीति। बाकी, वासिल और फाज़िल की परिभाषाएँ। गोशवारह मे स्याहा लिखने का विधान। सिवाय का परिमाण। विराउ का दस्तूर। हिसाब लगाने के गुर। पाया तौल का दस्तूर। दर दस्तूर। गीनी का हिसाब। प्रमाण सहित चक्की पद्धति वर्णन। कौड़ी इत्यादि का परिमाण। गज इत्यादि का विवरण। पोशाक का हिसाब गजों के हिसाव के गुर। खरीद दस्तूर वर्णन। मासा और तोलादि के हिसाव का विवरण।

संख्या २१६ ए. ज्ञानमाला, रचयिता—कमलदास वैष्णव (शिवगज), कागज—साधारण, पत्र—५१, आकार—६$\frac{1}{2}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८० = १८२३, लिपिकाल—स० १८८० = १८२३, प्राप्तिस्थान—श्री महादेव प्रसाद तिवारी, ग्राम—परियावाँ, डा० परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री मते रामानुजायनमः ॥ अथ ज्ञान माला लिख्यते ॥ एक दिन राजा परीक्षित राज गद्दी पर बैठे थे ता समय श्री व्यास जी के—श्री सुखदेव जी आये राजा देखते ही सिंहासन से उठ खड़ा हुआ और ऋषि के चरणारविंद में गिर के साष्टांग कीनी फिर आदर और सत्कार सहित उनको सुन्दर स्थान में ले जाके रतन जटित सिंहासन पर बैठाय दोऊ चरण कमलों को धोय के चरणोदक लिया और विधि पूर्वक पूजन करके नाना

प्रकार की सामिग्री भोजन करवाई ॥ तब श्री सुकदेव जी प्रसन्नता से बैठ तब राजा ने हाथ कर जोड़ि बिनती कीनी ॥

अंत—हे अर्जुन जो मनुष्य इन तीनों बातन का अपने चित सों कभी न्यारी नहीं करै तो इस लोक में परम सुख पावै प्रथम स्वामी की सेवा में हँसमुख और निर्लोभ रहे दूजे चाकरों के मन को दुखी न राखै तीजे क्रोध न करै ॥ इति ज्ञान माला समाप्तम् सम्वत् आसौज मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदस्यायां लिष गंग मध्ये पुस्तक संपूर्न लिखित वैष्णव कमलदास ॥

विषय—नीति सदाचार के नियम ।

संख्या २१६ बी. ज्ञानमाला, रचयिता—वैष्णव कमलदास, कागज—देसी, पत्र—७५, आकार—७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९९५, खंडित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८० वि०, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय प्रतापगढ़ राज्य । डाकघर—प्रतापगढ़ ।

आदि अंत—२१६ ए के समान ।

पुष्पिका नहीं है ।

संख्या २२० ए. गोत्र प्रवर दर्पण, रचयिता—कमलाकर भट्ट, कागज—देसी, पत्र—११६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१० = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जीपसिंह, ग्राम—भिखलिया, डाकघर—ईसानगर, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ गोत्र प्रवर दर्पन लिख्यते ॥ आरंभ श्री परमात्मने नमः ॥ नारायण के पुत्र राम कृष्ण जी के कमलाकर नामक पुत्र संपूर्ण ग्रंथों का विचार कर गोत्र और प्रवरों का निर्णय करते हैं ॥ विद्वानों की प्रीति के निमित्त ॥ उसमें अब कहते हैं कि समान गोत्र के निमित्त कन्या दान न पूछ । क्योंकि असमान प्रवर वालों के साथ विवाह करना चाहिये ऐसा आपस्तम्ब और गौतमादि आचार्यों ने कहा है ॥ क्योंकि विवाह विषय में समान गोत्र और समान प्रवर वाले वर्जित हैं ॥

अंत—और स्मृत्यर्थ सार में भी कहा है कि विवाह के योग्य जो स्वगोत्र की वा संबंध की कन्या के संग गमन करै तो जितना गुरु की स्त्री से गमन का प्रायश्चित होता है उतना ही कन्या के गमन में भी होता है और फिर चांद्रायणादि व्रत करके भोग छोड़ के उसको माता के तुल्य रक्षा करै और कश्यप जी कहते हैं कि अज्ञान से जो कन्या गमन करै तो तीन बार जन्म लेकरके और तीनों जन्मों में मनादि करता आवै तो शुद्ध होय है ॥ और वेदाभ्यासी की पत्नी गमन में आचार्य की गमनवत ही प्रायश्चित जानना चाहिये ॥ इति श्री गोत्र प्रवर दर्पण भट्ट नारायणात्मज भट्ट रामकृष्णात्मज भट्ट कमलाकर कृतो संपूर्ण समाप्त ॥ लिख्यते शिवदत्त पाण्डा सरयो मीर आश्विन मासे कृष्ण पक्षे एकादश्याम् संवत् १९१० वि० ।

विषय—ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य आदि के गोत्र प्रवर और विवाहादिकों के नियम ॥

संख्या २२० बी. गोत्र प्रवर दर्पण, रचयिता—कमलाकर भट्ट, कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७५, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४२, प्राप्तिस्थान—श्री याज्ञ दत्त शास्त्री, ग्राम—भानपुर, डाकघर—महिगलगंज, जिला—सीतापुर।

आदि-अंत—२२० ए के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री भट्ट नारायणात्मज भट्ट रामकृष्णात्मज भट्ट कमलाकर कृतो गोत्र प्रवर दर्पण समाप्ता' सवत १९४२ वि० माव शुक्ला एक शनिवार।

संख्या २२१. बबुर वाहन कथा, रचयीता—कनकसिंह, कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप)—३०२, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूबे साहित्यान्वेषक, जिला—हरदोई।

आदि—राम १ श्री गणेशायनम.। लिखी वबुर वाहन कथा दो०—बबुर वाहना कथा एह पंडव कुल के भूप। कनिक सिंह कवि भापा कथा कीन्ह अनुरूप॥ चौपाई॥ सारद कठ प्रकासक कीजे। दीज्य ज्ञान दे दुरमति छीजे॥ हांगु लाज हिय करहु सहाई। कथा वबुर वाहन सुखदाई॥ सुची पुची जालपमव तोरी। मन इच्छा पुरवहु कछु मोरी॥ राय दुदीष्ठिल जग्य सुठाना। सारथी भये सीरी भगवाना। कटक जोरि अर्जुन संग दीन्हा। साव कर्न घोरा पुनी लीन्हा। दो०—अस्वही पुजी छाडो दीहु। संग पारथ अरु सैन। गुरुकै चरन वदिकै। कनक सिंघ कह बैन। नी छुटा तुरं वेगी सोधावा। इस्त्री देस का चरु आवा॥

अत—घहुतैं वेगि खगेश्वर धाऊ उड़ही पीछे पखन्ह के वाऊ। गरुड़ मसान वेगी नियराई। महाभयावन रन जेहि ठाई। वबुर वाहनै धनुष चढ़ावा। अर्जुन केरी सैन जनु आवा। पुत्र पुत्र कै कुंती रोवा। धनुप लडाइ नृपति मुख जोवा॥ गदा हाथ लै भीम प्रचारा। मोर भाइ अर्जुन केइ मारा॥ तेकरे मासक भोजन करऊ। नत साथ ही अर्जुन के मरऊ॥ दो०—कुंती भीमही वरजा छन एक सोकनिवारि। जौ नही जीयहि आर्जुन। पाछे करी हहु मारिं। वभ्रु वाहन नृप सर्से आई। मनी आनै तव रहै वड़ाई। वबुर वाहन मव अर्थ सुनाई। पुन्य रीखै से कहा वोलाई॥ वेगी पतालहि जाहु गोसाई। वासु की नृपसे कहेहु वुझाई। मनी दीजै नागन्ह के राई। वहुत भाति मे कहव वुझाई। जौं न देइ नागन्ह कर राजा। नत मैं आइव करव अकाजा।

विपय—(१) कवि की वंदना (२) राजा युधिष्ठिर का यज्ञानुष्ठान करना और अश्वका छोड़ा जाना (३) अश्व का मनीपुर आना। (४) अर्जुन से वभ्रुवाहन की उत्पत्तिका प्रसंग—वभ्रु वाहन द्वारा घोड़ा पकड़ा जाना। उसे छोड देने के लिये माता का उपदेश। मंत्री की राय से वभ्रुवाहन का अपने पिता को रत्नो हाथियों द्वारा मनाने का प्रयत्न। अर्जुन द्वारा फटकारा जाना। युद्ध की तैयारी।

संख्या २२२ कन्हैया रत्नमंजरी, रचयिता—कन्हैया बक्स पाल (कालपुर), कागज—देशी, पत्र—८५ आकार—१०½×६½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३२५, खंडित रूप—अति प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—श्री रामनाथ पांडे प्रधानाध्यापक कुरही, डाकघर—कोठारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ श्री कन्हैया रत्न मंजरी लिख्यते॥ अथ मंगला चरण॥ श्री गनपति बारन बदन सिद्धि सदन सुख मूल। जेहि सुमिरें तुरतै मिटे त्रै तापन को सूल॥

× × × ×

सीस में जटा बिसाल सोभत हैं लाल लाल भाल चंद बाल माल मुंड उर धारे हैं। अंग में कहीं व्याल आसन है व्याघ्र खाल डमरू के सब्द ताम धुनि मन हारे हैं॥ ग्रीवा में गरल सोह पत्र ही में है दयाल नाम भागलसैं बाल चंद छबि वारे हैं। कहत कन्हैयापाल मेरो हरो दुख जाल दीनन पै है कृपाल दारिद बिदारे हैं॥ १॥

× × × ×

अंत—दोहा॥ गिरद कवीसो छोर कहु, बाचन बनो बिलोक। चकित भयौ चहुँघा सबै त्रिपद करौ त्रै कोक॥ साम्य वर्णनम्। धाई गिर बेदादि तहँ साम्य सुरस सरसाय। यम तप संगति सत्त की दूतक समान बिभाय॥

× × × ×

विषय—पृ० १ से आठ तक—प्रथम तरंग। मंगला चरण तथा कवि वंश वर्णन—सूर्य वंस जग बिदित जानि बिय तेहि संछेप बखानौं। मारतंड भुवि तेज प्रकासित देखत जाय भजानौं॥

× × × ×

श्री इक्ष्वाकु नरेश चक्रवै रबिवंसी व्रतधारी। तिनमें छप्पन भूप भूपता करि अवधपुरी सुखकारी॥ तेहि कुल में नृप दसरथ प्रगटे सदा सत्य व्रत धारी। राम लषण भारत रिपुसूदन दसरथ सुत भे चारी॥ राम आदि सब भ्रातन के द्वै द्वै सुत भव भावै। पुष्कर नाम भरत सुत जाहिर जासु प्रताप प्रभावै॥ रामचन्द्र सब सुतन को दियो राज अठगाय। पुष्कर पश्चिम दिसि रच्यौ नगर कुमाऊँ जाय॥ पुष्कर राज कुमाऊँ में किन्हो राज बहु काल। गमन बेद रस पुहमि नृप प्रगटे भुजा बिसाल॥ ते कुल में तब भे प्रगट अभलदेव महिपाल। तिलक देव भ्राता सुभग, भूप मुकुट मनि माल॥ देहली साहि सुजान पै, चढ़यौ कोप कोऊ हीर। तब कछुक कहत बन्यौ भहिं तिनकौ पक्ष करि गौर॥ प्रबल चमू रिपु ओर सुनि देहली पति डर मान। लिख्यौ कुमाऊँ को तुरति अभलदेव के थान॥ तिलक देव दोऊ बने, तुम दोऊ मेरी बाँह। होय चहत साही अमक, सदा तुम्हारी छाँह॥ चलि चम्र भ्राता दोऊ, तुरती किन्यौ सलाह। चलो देहली साहि के, जहाँ गुसाईं बाँह॥ अनुज तनय की है तिलक अभलदेव महिपाल। तिलक देव भ्राता सहित मानिकमूँ बिकराल॥ आयो देहली नगर कौं रबि बंसी रन धीर। अरि गन

उडगन सो भजे, लखि रवि किरन गँभीर ॥ विजय पत्र लैकर चल्यौ, गंगा कियो नहान । विविध भाँति दीनों द्विजन, दान मान सनमान ॥ तहँते नृपन चले सुभग देवे सुभ सरवार । सब देमन की सीस मणि हरत न लायौ चार ॥ राज रयौ रजभरन कौं छोरि लियौ नृप वीर । अति विचित्र तहँ लखि रच्यौ महुलीगढ़ गंभीर ॥ छन्द चौपैया—सम्वत् वाण[5] व्योम[0]गुग[3] निशाकर[1] फागुन सित नौमी को । आयौ सहित भ्रात अवनी पति अलखदेव महुली को ॥ कियौ राज बहु काल नृपति तब महसौं नगर सुहायो । भयो जोरावर पाल प्रगट नृप ग्राम वानपुर आयो ॥ दोहा—अलख देव नृप सौं भयौ द्वादश पुस्त रसाल । उग्र प्रतापी तब प्रगठ भयौ, जोरावर पाल ॥ भूप जोरावर पाल तब, ग्राम वान पुर आय । रच्यो राजुधानी सुभग, दुज देवन सिरनाय ॥ वत्सर मुनि वसु[8] नग मही, मार्ग शुक्ल गुरुवार । पूर्णा तिथि शुभवानपुर । कियौ प्रवेश विचार ॥ छद चौपैया—अति अराम सुभ धाम सरित सरजू तट राजै । उमगि कुआनो मिलि मजु मनवर छवि छाजै ॥ करि करि जगत अन्हानं चारि फल लटत ललामै । तहां विराजत ललित वानपुर नाम सु ग्रामै ॥ नृपति जोरावर पाल सो भयौ वश विस्तार । वर्णन क्रम सौं तेहि करत वशावली विचार ॥ छंद चौपैया—श्री रणजीत पाल सुत ताके अति रणधीरा । तासु तनय सुव सन्तपाल भो समर जीत बलवीरा ॥ श्री शिवबक्स पाल सुत ताके प्रगटे अति छवि धामा । हरि गोविन्द तासु भ्राता भो प्रगट जासु जग नामा ॥ तिनके तनय उदार मति जालिम पाल भुआल । तासु तनय प्रचंड भो नाम जानकी पाल ॥ माधव पाल सुधर्म रत, तिनकी तनय प्रवीन । दूजौ जोपन पाल भो अति अतोल जस कीन ॥ श्री युत जोपन पाल को तनय कँधैयापाल । करत काव्य रचना रुचिर रसिकन हेतु रसाल ॥

(२) पृष्ट ८ से पृ० ४२ तक—द्वितीय तरंग । शिव विनय, भूमिका, अनेक भांति की नायिकाओं के लक्षण तथा उसके उदाहरण ।

(३) पृष्ट ४३ से पृ० ८५ तक—तृतीय तरंग ।

(४) पृ० ८६ से ८८ तक—चतुर्थ तरंग । उत्तमा, मध्यमा, तथा अधमा नायिका वर्णन ।

(५) पृष्ठ ८९ से पृ० १०० तक—पंचम तरंग । नायक लक्षण तथा उदाहरण ।

(६) पृष्ट १०१ से १०५ तक—षष्ठ तरग विभाव लक्षण, आलंवन, (श्रवण आलम्बन, चित्रा आलवन, स्वप्नालंबन, प्रत्यक्ष दर्शनालवन ।

(७) पृष्ट १०६ से पृ० १०८ तक—उद्दीपन विभाव (सप्तम तरंग) पीठमर्द, विट, केट, विदूपक ।

(८) पृष्ट १०८ से पृ० ११९ तक—अष्टम तरंग । सखी (मडन, शिक्षा, उपालभ, परिहास,) दूती—उत्तम मध्यम, अधम—विरह निवेदन, सवट्टन, स्वप्नदूतिका ।

(९) पृष्ट ११९ से पृष्ट १२७ तक—नवम तरंग । अनुभाव, सात्विक (स्तम्भ सात्विक, स्वेदसात्विक, रोमाँच सात्विक, कम्प, वैवर्ण्य, स्वरभंग, अश्रु, प्रलाप, जम्भा ।)

(१०) पृ० १२८ से पृ० १४१ तक—दशम तरंग हाव वर्णन, लीला, किलकिंचित,

ललित विहित हाव विलास, बिब्बोक, मोट्टाइत कुट्टमित, विच्छित, विभ्रम, कौतूहल, हेला बोधक,

(११) पृ० १४१ से पृष्ठ १७० तक—एकादस तरंग।

संख्या २२३ ए. पद रामायण, रचयिता—बाबा कान्हरदास (आगरा), कागज—देशी, पत्र—६४, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति—(प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०२, पूर्ण, रूप—भच्छी और सही पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४०=१८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा अमरदास, ग्राम—कुमेनगांव बावली, जिला—मथुरा।

आदि—श्री गनेसायनमः श्री मते रामानुजाय नमः ॥ राग भैरों तिताला सवैया गज बदन विनायक जै श्री गनपति गवरी नंद। गननायक सब संत सहायक मंगल मूरति आनंद कंद ॥ एक दंत मद मत्त मनोहर प्रफुलित बदन मदन अरविंद ॥ बुद्धि बुद्धि दायक सब लायक पूरण सुमति सरोवर चंद ॥ सुत्र सारद नारद बस गावत आगम निगम विमल श्रुति छंद ॥ शंकर सुवन चरन रज बंदत कान्हर मिटत सकल दुख द्वंद ॥

अंत—आरती

सखि सजि मंगल आरती देख। जीवन जन्म सुफल करि लेख ॥ मंगल राम सिया को रूप। मंगल कौसलपुरी अनूप ॥ मंगल रतन सिंहासन राजै। मंगल अनहद नौबत बाजै ॥ मंगल चंवर छत्र की छांह। मंगल भरत लखन की छांह ॥ मंगल मोर मुकुट सिर सोहै। मंगल धनुष बाण मन मोहै ॥ मंगल सुभग सुमित्रा माय। मंगल रघुकुल दशरथ राय ॥ मंगल महल अवधवासी दास। मंगल नृप कौसल पुर बास ॥ मंगल कलश लिये पुर नारी। मंगल सरजू जल भरि झारी ॥ मंगल आरती प्रभु की गावै ॥ सो कान्हर मंगल पद पावै ॥

इति श्री कान्हर दास बाबा कृत पद राम जी के संपूर्ण समाप्त॰ लिपत बंसीदास संवत् १९४० वि० ॥

विषय—श्री रामचंद्र जी के पद।

संख्या २२३ बी पद रामायण, रचयिता—बाबा कान्हरदास (गोकुलपुरा, आगरा), कागज—देसी पत्र—६०, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला ज्ञानचंद वैश्य ग्राम—पौरिया, डाकघर—पफी पुर, जिला—उन्नाव।

आदि अंत—२२३ ए. के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री बाबा कान्हर दास कृत पद रामायण संपूर्ण समाप्त॰ ॥ लिषत राम दास गोसाईं संवत १९५३ वि० पौष शुक्ल नवमी।

संख्या २२३ सी पद रामायण, रचयिता—बाबा कान्हरदास (गोकुलपुरा, आगरा), कागज—सफेद पत्र—६५, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२०, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर प्रसाद शर्मा, ग्राम—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि अंत—२२३ ए के समान।

पुष्पिका नहीं है।

संख्या २२४. रामचरित्र, रचयिता—कपूरचंद (देहली), कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—६३/४ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५४ = १६९७ ई०, लिपिकाल—सं० १८८५ = १८२८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चतुर्भुज जी, ग्राम—भोजापुर, डाकघर—गड़वारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चंद्रकृत रामचरित्र लिष्यते ॥

गुर गनेस अरु गौरिजा, सुमिरत होत अनंद। कछू हकीकत राम की, अरज करत है चंद ॥ १ ॥ आदि अनादि जुगादि है, ताहि जपै सब लोय। राम चरित अद्भुत कथा, सुनै पुन्य फल होय ॥ २ ॥

अंत—रावन का दाहा देस, सीका आना सदेस। कबहूं न रही बात अपने गुमान की। सजीवन कूं धाय पल में पहार लाया, करी थी बड़ाई वांरावरे के बान की ॥ जौन होता पवन सुत तेरी सौं, हमारे हाथ आवती न जानकी। जहाँ जहाँ परी भीर, तहाँ तहाँ धरी धीर। कहा लौं बड़ाई करौं, बीर हनूमान की ॥१८८॥

× × × ×

इति श्री चंद्र कृत राम चरित्र सपूर्णम् ॥ लिषितम सिश्र सेठ मह नौंह वाले पठनार्थं लाला भवानी प्रसाद मिती ज्येष्ठ शुक्ला ३ भृगु दिने सं० १८८५ वि० ॥

विषय—रामायण की कथा।

संख्या २२५. बलभद्र प्रकाश, रचयिता—करनेस (महापात्र), कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा प्रकाशसिंह, ग्राम—मल्लापुर, जिला—सीतापुर।

श्री गणेशायनम। अथ बलभद्र प्रकाश लिष्यते ॥ भाषा भूषन का टीका। मूल ॥ विघन हरन तुम हौ सदा गनपति होहु सहाइ। विनती कर जोरे करौं दीजौ ग्रंथ बनाइ ॥ टीका। विघन विनासन हौ सदा गनपति तीनौं काल आदि मध्य अरु अंत मौं पुरवौ ग्रंथ रसाल ॥ मूल। जेहि कीन्हो परपंच सब अपनी इच्छा पाइ। ताको हौं बेदन करौं हाथ जोरि सिर नाइ। टीका। जेहि सिगरे जग को रच्यो निज मन बाछा पाइ। जोति जगै जो प्रभु सदा तेहि बंदौं बहु भार।

अंत—लक्षन तिय अरु पुरुष के हाव भाव रस धाम अलंकार संजोग ते भाषा भूषन नाम। भाषा भूषन ग्रंथ को जो देषे चित लाइ विविधि अर्थ साहित्य पर समुझै सबै बनाई। इति श्री मन्महाराज धिराज राठौर वसावतंस जसवंत सिंह विरचिताय भाषा भूषन समाप्त. इति श्री भाषा भूषन टीका श्री मन्महाराज रैकवार वसावतंस बलिभद्र सिंह कृत करनेस महापात्र विरचिता यसुजस प्रकास भाषा भूषन टीका लक्षन लक्षन जुक्त समाप्तः आसाढ़ मासे शुक्ल पक्षे पूरन मासी तिथौ संवत १८९६ साके १७६१ शुक्रवार ॥

विषय—नायिका, नायक, सखा, हावभाव रस, अलंकार आदि का वर्णन।

संख्या २८६ ज्योतिष भाषा, रचयिता—कालीराम, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—११ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१० पूर्ण, रूप—नही की भाँति, पद्य और गद्य। लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १७८४=१७२७, प्राप्तिस्थान—श्री शिवकंठ दूबे, ग्राम—देवदासपुर, डाकघर—खेरी, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ ज्योतिष भाषा लिख्यते॥ दो०॥ गणपति गिरा गिरीश गुरु गंगा माइ गोपाल। इन सब देवन को प्रथम मो पर होहु दयाल॥ ज्योतिष भाषा कछु करौं अपनी मति अनुसार। छिमहु गुनी कवि ज्योतिषी भूलहिं लेउ सुधार॥ ज्योतिष समुद्र अपार है मो उर सीप समान॥ स्वाति बुंद सम सार लै मुक्ता सम सुनि ज्ञान॥ मेष वृषी अरु कर्क धन मकर लग्न ए मान। जन्म होइ इनके विषै पृष्टि उदय तिहि जान॥ कन्या सिंह वृश्चिक तुला कुंभ लग्न जो होइ। सीर्ष उदै तिहि जानिये मिथुन मीन सो जोई॥

अंत—अथ मीन। मीन लग्न सिर उघार कही धार कपरे दीपक सन्मुख कही। जो मास तिन मैं एक गर्भ सो तिहि के एक पुत्र होइ। ढाई वर्षिम जाहि बालक को पिता पाही पाँच वर्ष बीते बालक की अस्त होइ। आँचल को दूध मोरो। बालक मात कह सो रहै। इति श्री कासी राम कृत भाषा ग्रंथ समाप्तं॥ लिखत गौरी प्रसाद पंडित संवत १९८४ वि० आश्विन मासे कृष्ण पक्षे द्वादश्याम॥

विषय—ज्योतिष तथा लग्नों का वर्णन।

संख्या २८७ ए. गंगा लहरी, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—९ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४=१८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गयादीन त्रिपाठी, ग्राम—बिसरिदा, डाकघर—पारगाँव, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ गंगा लहरी लिख्यते॥ सागर की गिनी जाँय लहर गिने जाँय तारे। नहिं जाय गिने श्री गंगा जी के तारे॥ पर पक्ष गिने जाँय गिने जाँय नर नारी। दस दिसा गिनी जाँय वृष्टि गिनी जाय सारी॥ सिध साध गिने जाँय गिने जाँय व्यभिचारी॥ राजा रानी गिने जाँय लश्कर सरकारी॥ गिने जाँय साह साहानी गिने हरकारे॥ नहिं जाँय गिने श्री गंगा जी के तारे॥ गिने जाँय नदी नद सिंधु गिने जाँय नाले। गिने जाँय स्वेत रंग लाल गिने जाँय काले॥ दरगाह झाडी जाँय गिनी गिनी जाँय ताले॥ छतीस राग रागिनी सकल गिन डाले॥ गिनते गिनते कई हजार सायर हारे॥ नहिं जाँय गिने श्री गंगाजी के तारे॥

अंत—इति श्री गंगा लहरी संपूर्ण समाप्तम्॥ लिखतं पं० गयादीन तिवारी ग्राम बिसरिदा मध्ये बैठकर आनंद से इसको पूरा किया यह गंगा लहरी अति उत्तम बनाई गई है॥ जै गंगा माई की॥ जै भागीरथ जी महाराज की॥ श्री श्री श्री॥ जेठ शुक्ल २ संवत १९१४ वि०॥

विषय—गंगाजी की महिमा का वर्णन।

संख्या २२७ बी. लावनी (मरहटी ख्याल), रचयिता—काशी गिरि (बनारस) कागज—देशी, पत्र—१२०, आकार —९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण, ग्राम—महिगलगंज, डाकघर—महिगलगंज, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ लावनी (मरहटी ख्याल लिप्यते) ॥ हृदय में ह्रिंग लाज करें काज लाज रखने वाली। नयना देवी नैन में वसैं हंमैं दें दें ताली ॥ सीस में सीता सती विराजें सावित्री मकटा रानी ॥ मस्तक में रहैं आय श्री महाविद्या औ महरानी ॥ भृकुटी में करैं वास भैरवी भय मानैं सब अभिमानी। ब्रह्म में अपने विराजैं विंध्याचल और ब्रह्मानी ॥ वसैं नासिका में नव दुर्गे नगर कोट लाटों वाली। नयना देवी नयन में वसैं हंमैं दें दें ताली ॥ १ ॥

अंत—करकट ग्रीवा नयन शीश मुख नीचा करि दुख सहै सुजान। ये लक्षण हैं लेख के पंडित जन करते हैं बखान जो कोई सज्जन सुनें सुनावैं सुन समझैं मन में रख ध्यान ॥ परम दृष्टि से कामना तिनकी पुजवैं श्री भगवान ॥ पढ़ौ सकल हरि भक्त पियारे राधा कृष्ण करता परनाम। हरि के भरोसे तहां मैं अहर निशा करता विश्राम ॥ ४ ॥ इति श्री लावनी श्री काशी गिरि वनारसी कृत सपूर्ण शुभम सवत १९३६ राम श्री सीताराम लक्षण की जै वोलो ॥

विषय—देवी देवताओं की स्तुति, ब्रह्म उपासना, ब्रह्मज्ञान उपदेश ॥ हरि भक्तों के ज्ञान की दृढ़ता के कारण, श्री कृष्ण चंद्र पर.ब्रह्म की वाल क्रीड़ा आदि का वर्णन।

संख्या २२८ ए. शीघ्रबोध, रचयिता—काशी नाथ भट्टाचार्य, कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८७ = १८३०, प्राप्तिस्थान—श्री रामभज, ग्राम—बेनी माधवपुर, डाकघर—विसवाँ, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शीघ्र बोध लिप्यते ॥ वार्तिक भाषा में लिप्यते ॥ दो० ॥ विघन कदन वारद वदन सिद्धि सदन गुण अैन ॥ करहु कृपा गिरिजा सुअन दीजै वानी दैन ॥ मैं काशीनाथ शीघ्र बोध को संग्रह करत हौं। सूर्य देव को नमस्कार करिके तिनकी शोभा करिके जगत शोभायमान है।

अंत—अतीत जो सौम्य ग्रह अतिचार पाप ग्रह वक्री होइ तौ जगत में हाहा कार परैं। जुद्ध तें रुड मुड गिरैं इत्यति चार वक्र ग्रह फलं मत्र मिति जो चैत्र में दीक्षा लेइ तो वहुत दुख पावैं। वैसाप में रत्न पाप होइ। × × × सूर्य शुक्र बुध एक मास भरि रासि में रहत हैं अरु चद्रमा २। दिन रहत हैं मगल १॥ मास रहत हैं अरु वृहस्पति वर्ष पर्यंत रहत है शनिश्चर अढाई वर्ष रहत है। राहु केतु १॥ वर्ष रहत है। इति ग्रह मुक्त वाहु के ८ सुप प्रद हैं गर्भ के ५ नास प्रद भुज २ भोग चरण २ नाश ये कुहली निर्मित दिन नक्षत्र ताईं विचारिये। इति काशी नाथ कृत शीघ्र बोध सपूर्ण समाप्त। लिपतं गंगा गणेश शुक्ल स्वपठनार्थ ओयल मद्धे सवत् १८८७ वि० श्रावण शुक्ल ५।

विषय—ज्योतिष ॥

संख्या २६८ वी. शीघ्र बोध वार्तिक. रचयिता—काशीनाथ दूबे कागज—देसी, पत्र—६६, आकार—९ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११, प्राप्तिस्थान—पं० रमाकांत शुक्ल ग्राम—पूरा गरीब दास, डाकघर—गड़वारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शीघ्र बोध वार्तिक लिख्यते मूल गर्भित लिप्यते ॥ काशी नाथ जो है आचार्य ते सूर्य को नमस्कार करि कै ॥ कैसे सूर्य जिनकी आभा जो है सोभा ताहि करि जगत जो है संसार प्रकाशित है ॥ बहुरि कैसे है सूर्य अव्यय कहिये अवि नासी ॥ की ताहि है विनाश काल ॥ असे सूर्य को प्रणाम करि ज्योतिष शास्त्र के अनेक ग्रन्थांतरन की मत सो करि शीघ्र बोध श्री गणेशायनमः ॥ मास पर्व जगद्भासा मव्या भास्वत क्रियते काशिनाथेन शीघ्र बोधाय संग्रह ॥ १ ॥ रोहिणयुत्तर रेवत्ये मूलं स्वाति मृगो मघा ॥ अनुराधा हस्तश्च विवाहे, मंगल प्रदा ॥ अथ को संग्रह करत हैं ॥ १ ॥ रोहिणी उपरा तीनों रेवती मूल स्वाती मृग सिर मघा ॥ अनुराधा हस्तयौ सारह (ग्यारह ?) नक्षत्र विवाह की मंगल के दाता हैं ॥ २ ॥

अंत—इति श्री कासि नाथ भट्टाचार्य कर्ता शीघ्र बोध भाषा टीकायाँ सम्पाति चतुर्थ प्रकर्ण समाप्तम् ॥ सवत् १९११ ॥ माघ शुक्ल ४ रवि वासरे ॥ हस्ताक्षर बकस दास के ।

संख्या २६८ सी. शीघ्र बोध रचयिता—काशीराम, कागज—देसी, पत्र—८८, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—८७७, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य लिपिकाल—सं० १८७० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री अजयपालसिंह, ग्राम—गागी मऊ, डाकघर—सिधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—जो वर का ४।८।१२ सूर्य होय तौ विवाह न करै और जो करै तौ मृत्यु होय । जो वर की राशि ते सूर्य । ३।२।५।७।९ होय तौ परिहार वास्ते सूर्य की पूजा करी से विवाह शुभ है और जा ३।६।११।१० रवि होय तौ विवाह शुभ है ॥ कल्याण का दाता है इति रवि वर्ल ॥ जो कन्या को बृहस्पति ४।८।१२ होय तौ विवाह मये प्राण की घातक है जो कन्या को बृहस्पति ६।१।११।१० होय तौ विवाह में नहीं पूजा शुभ है जो कन्या को ११।२।७।५।९ होय तौ विवाह मे शुभ होय इति गुरु वर्ल ॥

अंत—जो चैत्र के मास में दीक्षा ले तो बहुत दुख होय जो वैसाष में दीक्षा ले तौ रत्न, लाभ हो । जेठ मे दीक्षा ले तौ मरण होय । असाढ़ में दीक्षा ले तौ भ्राता को नाश करै । श्रावण में दीक्षा लेय तौ भेद है । भादौं मे दीक्षा लेय तो प्रजा का नाश करै । आश्विन में सब को सुष होय । कार्तिक में दीक्षा लेय तौ धनवृद्धि होय अगहन में शुभ होय । पौष में ज्ञान न होय । माघ में ज्ञान बुद्धी होय । फागुन में सुष सौभाग्य हो ॥ इति दीक्षा प्रकर्ण ॥ सूर्य शुक बुध ये तीन ग्रह एक महीना एक राशि पै रहते हैं चंद्रमा

सवा दो दिन मगल १५ महीना वृहस्पति २ वर्ष शनिश्चर २॥ वर्ष राहु केतु दोनो ग्रह १॥ वर्ष एक राशि में रहते है इति श्री काशी नाथ भट्टा चार्य कृतो शीघ्र बोध भाषायां चतुर्थ प्रकरण शुभ भूयात श्री रस्तु शुभ अस्तु लिषतं वनवारी लाल दुवे संवत १८७० वि० चैत्र मासे राम नौमीयां ॥

विषय—ज्योतिष

संख्या २२८ डी. शीघ्र बोध, रचयिता—काशीनाथ, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८००, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४६, प्राप्तिस्थान—श्री प्राग नारायण, अध्यापक दुर्गापुर, डाकघर—भौली, जिला—उन्नाव ।

आदि—२२८ सी के समान ।

अत—प्राप्त नहीं है ।

संख्या २२६ ए. भरतरी चरित्र, रचयिता—काशीनाथ, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—६×५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८७८ = १८२१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गोविंदलाल, ग्राम—निहालपुर, डाकघर—नारायनदासे खेडा, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ भरतरी चरित्र लिष्यते ॥ दो० ॥ इदर के नाती भए गंधर्वसेन के पुत्र भाई विक्रमाजीतु के मैनावती के भैन ॥ जादिन जनमे हैं राजा भरतरी वाजे हैं तवला निसान ॥ हरे हरे गोवर मगाय के अंगना वेदी लिपाय । मोतियन चौक पुराय के कचन कलश धराय ॥ सधरू सहेली वुलाय के चदन चौकी विछाय । ब्रह्मा वाचत अपने वेद को मुल्ला हरफ किताव ॥ नाम तो निकला है भरतरी करम लिखा है वाला जोग ॥ जारौ वारौ थारे वेद को पुत्रिहि दोष लगाय कंचन देउंगी दछिना लौटि धरौ इसका नाम ॥ उलटि पलटि ब्रह्मा देखता क्या रची है करतार । लिखने वाला सोई लिख गया को है मेटन हार ॥ कागद होय रानी वांचिये करम न वाचा जाय । ब्रह्मा जिकर क्या कर दिया वालक वुद्धि सिवाय ॥ एक वरस के राजा भरतरी दूजी तीजी जुलाग । चार वरस के राजा भरतरी माता तजे हैं परान । पाच वरस के भरतरी कपड़ा पहिरे रगाय छठे वरस के भरतरी वेद पढ़न को जांय । सात वरस के भरथरी पढ़ उतरे चट साल । नवें वरस के भरतरी व्याही अनूप देसी नारि । दसवें वरस के भरतरी व्याही पिंगल नारि ॥ ग्यारह वरस के भरतरी व्याही चपादेसी नारि । वारह वरस के भरतरी व्याही श्यामदेसी नारि । तेरह वरस के भरतरी वांधे तीर कमान ॥

अंत—वोली रानी ते दिन श्यामदे सुनौ राजा महराज । ओछे गुरू के तुम वालका ओछा लाये भडार । सोलह सौ थार परोसती खप्पर भर गया नाहिं । कायल भई रानी श्यामदे राजा को देती असीस ॥ पूरे भिक्षा डालता लजा वीर मत अतीत । लेकर भिक्षा राजा रमि चलेइ आसन पड़ी है भभूत ॥ धूरि मंदिर धूरि वाग है वोलन लागे है कारे काग । धन्य घड़ी जामे जन्म लियो धन्य पुरपु थारे भाग ॥ मेरी मेरी कहि रमि गये रानी खड़ी रोवैं द्वार सांची वनी काया कोठरी झूंठा जग ससार ॥ नदी किनारे रूपड़ा जव तव

होवै विनास । मेरी मेरी कहि के ते रमि गये अर्जुन योधा से भीम ॥ पड़ी रही आरपंड में गढ़ कोटा के सर माम ॥ जुग जुग जीवे मेरी नागरी परजा रहै गुल्जार । सुबस बसी मेरी नागरी चौपर लगी बाजार । बारे से जूनी उजार में मिल गये गोरषनाथ । चेला बनाके बाबा अपना सेवा करैंगे बनाय ॥ धूनी पारी बाबा हम करें सग फिरैं बारे साथ ॥ बोले बाबा गोरख नाथ जी सुन बचा मेरी बात ॥ तुमसे चेला बना ना करे तुम हो राजकुमार ॥ पान फूल के तुम भोगिया ना सधै तुमसे जोग । पान फूल बाबा सब तजे सुन गुरु गोरखनाथ । छोटा ऊँचे का ऊँठना छोटा माइयों का साथ ॥ जोग बुरा बौहर मना औ आठ पहर संग्राम । आठ पहर के बीच में जिनको राखे भगवान ॥ कुटिया आठ चेला किया कानो में दीनी है फूक । पीठ ठोक दीनी गोरष नाथ जी जोग अमर हो जाय ॥ कलि में अमर राजा भरथरी की ॥ इति श्री काशिनाथ विरचिते भरथरी राजा का चरित्र संपूर्ण समाप्तः सं० १८०२ वि० श्री राम राम राम राम राम राम राम श्री गणेशायनमः ॥

विषय—भरथरी की जन्म ब्याह और जोग का वर्णन ॥

संख्या २२६ बी भरथरी राजा का चरित्र, रचयिता—काशीनाथ, कागज—देसी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रतनसिंह, ग्राम—भरवा, डाकघर—सिसवाँ, जिला—सीतापुर ।

आदि-अंत—२२६ ए. के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री काशीनाथ विरचिते भरथरी चरित्र संपूर्णम् संवत् १९३२ वि० लिखतं गौरी दयाल कायी ॥

संख्या २२६ सी भरथरी चरित्र, रचयिता—काशीनाथ, कागज—देसी, पत्र—२२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०५ = १७४८ ई०, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवकुमार, ग्राम—गोपालपुर, डाकघर—लखीमपुर जिला—खीरी ।

आदि-अंत—२२६ ए के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री काशीनाथ कृत भरथरी राजा का चरित्र संपूर्ण जेष्ठ सुदी ६ संवत् १८०५ वि० लिखा दयानारायन दुबे लछिमनपुर निवासी संवत् १९३२ वि० । माघ शुक्ल पंचमी ॥

संख्या २३० ए. ज्योतिषसार, रचयिता—केशवप्रसाद (आगरा), कागज—देसी, पत्र—१७८, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७८० पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, लिपिकाल—१९३९=१८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—रायसाल ग्राम—रघुनाथपुर, डाकघर—मौरहरा, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ज्योतिष सार लिप्यते ॥ अथ शक प्रकरण

प्रारंभः ॥ शालि वाहन शक में जिस सवत् सर का नाम जानना हो उसकी यह रीति है कि शाक की संख्या लिखकर उसमें १२ मिलावे और ६० का भाग देवे जो शेष बचे उसे संवत्सर का नाम जानिये ॥ सवत परिज्ञान । जो शालि वाहन शक में १३५ मिलावें तो वही विक्रम का सवत् हो जाय जो रेवा नदी के उत्तर तट में संवत नाम से प्रसिद्धि है। सवत् सरों के नाम प्रभ्रयः नृपः मन्मथः सौम्यः रुधिरोद्गारी विमवः चिपूभानु॰ दुर्मुख साधारण॰ रक्ताक्षी शुक्ल॰ सुभानु हेमलंवः विरोधकृ क्रोधन. प्रमोद. तारण विलंवी परिधावी क्षयः प्रजापति पार्थिवः विकारी प्रमादी अंगिरा व्ययः शार्वरी आनंदः श्री मुप सर्वजीत छत्रः राक्षसः भावः सर्वधारी शुभ कृत नलः युव विरोधी शोभन पिंगलः धाता विकृति क्रोधी कालयुक्तः ईश्वरा पर॰ विस्वावसु सिद्धार्थी वहुधान्य नंदन पराभवः रौद्र॰ प्रमाथी विजयः प्लवंग. दुर्गसि॰ विक्रम जय॰ कीलक॰ दुंदुभिः

अंत—अंतरंग वहिरंग नक्षत्र ॥ सूर्य नक्षत्र चार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इस प्रकार वर्तमान नक्षत्र तक वारवार गिने तो विक्रम से अत रंग वहिरंग संज्ञक होते है उनमें लाना और पठवाना आदि कर्म करें ॥ सूतिका स्नान ॥ हस्त जेष्ठा पूर्वा फाल्गुनी स्वाति धनिष्ठा रेवती अनुराधा मृग अश्विनी और तीनों उत्तरा रोहिणी इन नक्षत्रों में प्रसूता स्त्री का स्नान शुभ कहा है परन्तु रिक्ता तिथि में न करें ये मुनींद्रों का कथन है ॥ इति श्री शुकदेव विरचिते ज्योतिष सारे समाप्त संवत् १६३९ मार्ग मासे सिते दले विधि तिथौ भानुवारे शुभे ॥

विषय—ज्योतिष।

संख्या २३० बी. ज्योतिष सार, रचयिता—केशवप्रसाद (आगरा), कागज—नवीन, पत्र—१८४, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७६०, पूर्ण, रूप—जीर्ण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३०, लिपिकाल—सं० १९३०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नीलाल तिवारी गंगापुत्र, ग्राम—मिश्रिख, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि-अंत—२३० ए के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है.—इति श्री केशव विरचिते ज्योतिष सार भाषा ग्रंथ समाप्त. संवत १९३० लिषतं क्षेमकरण गौड सवत १९३६ ॥

संख्या २३० सी. मयूरचित्रम, रचयिता—केशवदेव (आगरा), कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—६ × २ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५९४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२९ = १८७२ ई०, लिपिकाल—स० १९२९ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामनाथ पुजारी, ग्राम—विसवाँ, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मयूर चित्रम लिष्यते ॥ केतुका उदय अस्त गणित से प्रकाशित होता है इस ग्रंथ में केतु का फल कहा जाता है और केतु के जो भेद मुनियों ने जो कहे हैं वे भी कहे जाते हैं ॥ उत्पात तीन प्रकार के हैं आंतरिक्ष दिव्य और भौम इन तीनो के भेद एक सौ एक हैं ॥ और दूसरे आचार्यों ने सहस्र भेद कहे हैं ॥ नारद मुनि

कहते हैं कि एक भी अनेक प्रकार का होता है उन्होंके जो फल मुनियों ने कहे हैं तिनको कहत हैं ॥ जितने दिन तक केतु दैपे उतने महीने तक केतु का फल जानना चाहिये अन्य मुनि कहते हैं महीने महीने फल जानना ॥ अर्थात् जिस महीने में उदय होता होय तो उसी में उसका फल जानिये ॥

अंत—पांच ग्रह जो एक राशि पर होंय तो पशुओं का नाश होय और छ: ग्रह जो होंय तो राजाओं का नाश होय। और सात ग्रह जो होंय तो सब देशों का नाश होय। आठ ग्रह का कूट योग होता है ॥ रितु विपर्य नहीं होय पवन कठोर नहीं होय और सब नक्षत्र शुभ होंय तो सदा शुभ होय ॥ इति श्री मयूर चित्रम भाषा सोलहवाँ अध्याय संपूर्ण समाप्तं ॥ लिषतं रामनाथ असाढ़ शुक्ल ११ संवत् १९२६ वि० शुभम् ॥

विषय—ज्योतिष, बारहों महीनों के शुभ अशुभ फल का वर्णन

संख्या २३० डी मयूर चित्रम, रचयिता—कन्हैयाप्रसाद (आगरा), कागज—विलायती, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२६ = १८६९, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई० प्राप्तिस्थान—श्री चन्द्रिकाप्रसाद तिवारी, ग्राम—अंटा, डाकघर—कछवन, जिला—मिर्ज़ापुर।

आदि-अंत—२३० सी के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति मयूर चित्रे षोडषोध्याय समाप्तोयं ग्रंथा श्रावण शुक्ला अष्टमी रवौ संवत् १९२६ वि० लिषतं सिवबख्स भाई स्वपठनार्थ संवत् १९३१ श्रावण शुक्ल ५ पंचमी नाग पंचमी श्री संकर सदा सहाय करै ॥

संख्या २३० ई० पथ्यापथ्य, रचयिता—केशव प्रसाद दूबे (आगरा), कागज—देसी, पत्र—११६, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११६०, पूर्ण रूप—साधारण पद्य और गद्य। लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई० प्राप्तिस्थान—श्री कुंदनलाल ग्राम—सफीपुर डाकघर—सफीपुर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ पथ्या पथ्य लिख्यते ॥ श्री गणपति गिरजा सुवन मोपर होउ कृपाल टीका पथ्या पथ्य की भाषा रची विशाल ॥ विदित आगरा नगर है श्री कालिंदी तीर। तामे जो शाला रची इंगलैंड पति गंभीर ॥ जामे बालक पढ़त हैं इस देस के आन। अंग्रेजी अरू फारसी अरबी संस्कृत जान ॥ तामे पंडित प्रथम हौं संस्कृत विद्या मांहि केशव दूबे प्रसाद पद नाम ख्यात जग मांहि ॥ नेत्र वन्हि नव चंद्र मित विक्रम संवत जान। चैत्र मास में ग्रंथ यह पथ्या पथ्य प्रधान ॥ भाषा में याते लिखो जाने जग उपकार। होय सबै सुख सों करैं पथ्या पथ्य विचार ॥

अंत—अथ हेमंत रितु में पथ्य ॥ गरम जल का पीना उपचाद। धूप। भारी वस्तु। आग का सेवन। इच्छा पूर्वक भोजन स्त्री संग ये सब मुनियों ने हिम रितु में पथ्य कहे हैं। अपथ्य ॥ पुरा भोजन थोड़ा न करना। दिन में सोना। पुराना अन्न। लघु पाक। अन्न। शीतलता पानी। मान। शीतल जल से नहाना। ये सब मुनियों ने

हेमन रितु में कुपथ्य कहे हैं ॥ श्लोक । त्रिदोपतः षड्ऋतुकं वयावत् पथ्यैः कृतं केशव शर्मणे दम् । गथांतरा द्वंय मुदे हि राम नन्दाऽञ्जुकेऽब्दे मधु पूर्णिमायाम् । टीका । तीनो दोषों से छहू रितुओं तक अन्य ग्रथ मे संग्रह करके केशवे शर्म्मा ने वैद्यों के आनद निमित्त श्लोको में सवत १९३२ में चैत्र की पूर्णिमा को वनाया ॥ इति श्री महिवेदी पाहू पंडित परम सुख तनय केशव प्रसाद विरचिते पथ्या पथ्य समाप्त ॥ संवत १९३२ वैसाख पूर्णिमा ॥

विषय—प्रथम ईश विनय, ग्रंथ कर्ता का निवास स्थान, सवत आदि पश्चात पथ्या पथ्य का वर्णन है ॥

संख्या २३० एफ. पथ्या पथ्य विचार, रचयिता—केशव प्रसाद दूबे (आगरा), कागज—देशी, पत्र—१४०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामदुलारे लाल, ग्राम—भटपुरवा, डाकघर—बथर, जिला—उन्नाव ।

आदि—२३० ई० के समान ।

अंत—तीनो दोषों मे छहो रितुओं तक अन्य ग्रंथो मे सग्रह करके केशव शर्मा ने वैद्यों के आनद निमित्त सवत १९३२ में चैत्र की पूर्णिमा को वनाया । इति श्री पथ्या पथ्य विचार सपूर्ण समाप्त. ॥ वैसाख संवत् १९३२ लिखत गगा विशुन त्रिपाठी आगरा निवासी बेलन गंज ॥

संख्या २३१. वैद्यक (मुक्ति विलास), रचयिता—केशव, कागज—देशी, पत्र—५२, आकार ८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७२, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री कृपा नारायण शुक्ल, ग्राम—मुशीगज कटरा, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री × × गणेशाय नम ॥ अथ सूरमा × × इ लिख्यते ॥ अथ वृद्धि आगम × × करम ॥ राज पदवी दुतीया करम ॥ प्रारम्यते सुभकरमैं यथा ॥ = ॥ छद ॥ जहं साधन साधहिं जग माहि निश्चे सिधि कहावैं ॥ काया अमर अमर पुर वासा सिद्धि विरद सो पावै ॥ जहा सिद्धि तहा वृद्धि बसेरा, ऋद्धि सिद्धि द्वै भाई । एक जोति दोनौं घर वरते चंद्र सूर्यनाई ॥ रवि की ज्योति वसै शशि अदर एक जोति दुइ माही ॥ एक प्राणदो गाउ दिखावै यथा पिंड परछाह ॥ केशव सिद्धि जानिय कैसे द्वै वाते जिह माह ॥ न्यारा करै शीश काया सो भेद बतावै नाहि ॥ ऐसे सिद्धि विना जग जानै चरन कौन विधि परसै ॥ जिन जाना तिन आप पिछाना दरस अपूरव दरसै ॥ देऊ वताई सिद्धि जगमाहीं ॥

अत—चूर्ण पुष्टि को ॥ पीपर छोटी इलायची दाल चीनी छर कुलीजन पीपर वड़ी जायफर जावित्री नागकेशरी तमाल पत्र सोंफ अकर करहा केसरि लौंग, ए सव पांच पाच मासे लेय पैतीस तोले सहितु, सहतु को गर्म करे उफान आवे सव औषध पीस छानि सहित मा डार सिताव उतारि मिलावै द्वै मासा खाइ ॥ व्योरा वच्यः तेल होला को इलाज ॥ धतूरा आक आन अजीर कनेर मीठो पैसा भरि पीपरि की छाली अढ़ाई सेर तेलु मीठो अढाई

सेर मव औषधि तैल में मिलावै पाताल जंत्र सो तेल कढ़ै मास रोज सात मर्दन करे ॥ १ ॥

विषय—पहिले प्रार्थना । गुरु महिमा, ग्रंथ रचने का हेतु, तामेश्वर मारन विधि, अभ्रक मारन विधि पारा मारन विधि, हरतार विधि बंग मारन विधि, धातु शोधन और की विधि, सोना—मारने की विधि, हेम विधि, रूपे की विधि, मुर्दा संत पारा, मैनसिल शुद्ध करने की विधि, हीरा भस्म करने की विधि, रत्न मारन विधि, कस्यान सार करने की विधि ॥

संख्या २३२, गणेश व्रत कथा, रचयिता—केशवदास कायस्थ, कागज—देसी, पत्र—२१, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्) १४४ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४० = १७८३ ई०, प्राप्ति स्थान—श्री शिवकुमारे, ग्राम—बरमापुर, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ गणेश व्रत कथा लिख्यते । दो० । सुमिरन करि गनेस को गुरु चरनन चितु लाइ । संकट चौथि कथा कहौं सुनौ सबै चितु लाइ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ नृप प्रस्न श्री कृष्ण सो श्रवन सुनत यस रीति । जे जे संकट सत्रु है तिनहिं कथन विधि कीति ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ कृष्ण कहेउ नृप राय सुनु कहौं धरम यह चित । दानुन की सम होयगी करि गणेश को व्रत ॥ सपुन से मंकट कटे रिद्धि सिद्धि धन धाम रमा पुत्र को देइके दूरि के पाप धाम ॥

अंत—पहिले कथा पुरानन सुनी । ता पाछे चौपाई गुनी ॥ मन दै श्रवण सुन जो ज्ञानी इहि विधि प्रगटी श्री विधि बानी जो यह कथा सुनै सुनावै साहब की चरणोदक पावै ॥ गणपति सेवन सब करैं और दास उपदेस । एहि विधि सेवन करत है कटे पाप गणेस ॥ सुत संपति के दानि हैं काटे सकल कलेस । केसव दास सेवत रहे नित चरनन गनेस ॥ इति श्री स्कंद पुराने गनेस चतुर्थी व्रत समाप्त ॥ चैत मास सित पक्षे पष्टमवार्म भौम वासर संवत् १८४० वि० लिख्यते नाम शुभ ॥

विषय—गणेश चतुर्थी व्रत की कथा ।

संख्या २३३ ए. बारहमासा, रचयिता—कलानराम, कागज—देशी पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राजाराम ग्राम—बरहा जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बारह मास लिख्यते ॥ अथ चैत्र वर्नन ॥ छप्य ॥ फूली ललिका ललित तरुन तन फूले तरुवर फूले सरिता सुभग सरिस सब फूले सरवर । फूली कामिनी काम रूप करि कंतनि फूलहिं । सुक सारो कुल केलि फूल कोकिल कुल फूलहिं कहि केसव ऐसी फूल महि फूलहि सूल न लाइ येहि । पिय आप चलन की को कहे चित्त न चैत चलाइये ॥ १ ॥

अंत—अथ फागुन वर्नन छप्पै ॥ लोक लाज तजि राज रंक निरसंक विराजत ॥ जोइ भावत सोइ कहत करत पुनि हंसत न लाजत । घर घर जुवती जननि आए गहि गावन जारहिं । बसन छीनि मुख मींडि आंजि काजन तब तारहिं । पर दाम सुवास अकास उडि

भुव मडल मव मडिये। कहि केसवदास विलास निधि सुफागुन फागुन छाडिये ॥ इति वारहमास केसोंदास कृत सपूर्ण समास. ।

विपय—एक स्त्री अपने पति को वारह महीनों का सुख दुख वर्णन कर परदेस जाने से रोकती है ॥

संख्या २३३ वी. कविप्रिया, रचयिता—केशवदास (ओड़छा, बुंदेलखड), कागज—देशी, पत्र—११६, आकार—१४½ × ६½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६५८ = १६०१, लिपिकाल—स० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—राजपुस्तकालय प्रतापगढ़ राज्य, डाकघर—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ कवि प्रिया । दोहा । गजमुख सन मुख होत ही विघुत विमुख है जात, ज्यों पग परत पराग मग पाय पहार विलात ॥ १ ॥ वानी जूके चरन जुग सुवरन कन परिमान सुकवि सुमुप कुरु पेत परि होत सुमेरु समान ॥ २ ॥

कवित्त ॥ सत्त सत्त गुणको की सत्य ही की सत्य सुभ सिद्धि की प्रसिद्धि की सुवुद्धि वृद्धि मानिए । ज्ञान ही की गरिमा की महिमा विवेक ही की अैसे ही दरस ही को दरस उर आनिए ॥ पुन्य को प्रकास वेद विद्या को विलास कीधों जस को नेवास केसोंदास जग जानिऐ । मदन कदन सुत वदन रदन कीधों विघुत विनासन की विधि पहिचानिऐ ॥ ३ ॥

अत—अर्थ सर्वतो भद्र । काम अरे तन लाज धरे कव मान किए गति गान गहे रुप । वाम नरे गन साज करे अव कानि किए प्रति प्राण दहे रुप । धाम धरे धन राज हरे तव वानि विए मति दान लहे सुप । राम ररे मन काम सरे सव हानि हिए अव आनि कहे सुप ॥ दोहा । यहि विधि केशव जानिये एहु चित्र कवित्त अपार । वरनन पथ वताइ मैं दीन्हे वुधि अनुसार । सुवपर जठित पदारथ भूपन भूपित मान कवि प्रिया ज्यों कवि प्रिदा कवि सजि वनि जान, पल पल प्रति अलोकिवो । गुनिवो सुनिवो पित कवि प्रिया ज्यो राक्षीयो कवि प्रिया को मित्त अनिल अनल जल मलिन ते विकल पलन ते वित्त । कवि प्रिया को रक्षियो कवि प्रिया के मित्त । केशव सोरहु भाव सुभ सुवरन मय सुकुमार कवि प्रिया को जानि एहु सोरह ए श्रंगार ॥ इति श्री विविध भूपण भूपिताया कवि प्रिया या चित्रा लका वर्णन । नाम पोडशः प्रकाश' १६ ॥ इति श्री कवि प्रिया केशवदास विरचिताया समाप्त शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु ॥ सवत १९१० सन १२६२ दशपत दुरगाप्रसाद कायस्थ हेतवे वावू गुलाव सिंह जी वा पौप मासे कृष्ण पक्षे पंचम्या शनिवासरे श्री रामायनम श्री हनुमतायनम. श्री रामानुजायनमः श्री सीताय नम श्री राधा कृष्णायनमः ॥

विपय—नायिका भेद और अलंकार वर्णन ।

संख्या २३३ सी. कविप्रिया, रचयिता—केशवदास (ओरछा), कागज—देशी, पत्र—१०४, आकार—८ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६४, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६५८ = १६०१, लिपिकाल—स० १७३७ = १६८० ई०, प्राप्तिस्थान—आनंद भवन पुस्तकालय, डाकघर—विसवाँ जिला—सीतापुर ।

आदि अंत २११ बी के समान।

संख्या २१२ डी कविप्रिया, रचयिता—केशवदास (ओरछा), कागज—साधारण, पत्र—११०, आकार—८¾ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६५८ = १६०१ ई० लिपिकाल—सं० १९०६ = १८४९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री ओंकारनाथ पांडे, अध्यापक संस्कृत पाठशाला, ग्राम—पचेहरा, डाकघर—प्रेमधौरिया, जिला—प्रतापगढ़।

आदि अंत—२११ बी के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है—अथ कवि प्रिया संपूर्न ॥ संवत् १९०६ मिती भादौं सुदी ९ पोथी लिपी त्रिभुन चंद अपने पढ़ने अर्थ ॥

संख्या २१३ ई रामचंद्रिका, रचयिता—केशवदास (ओरछा), कागज—देशी, पत्र—८८ आकार—१० × ६½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६०, खंडित, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दुर्गाप्रसाद तिवारी, ग्राम—धाउपा (करीपाक) जिला—उन्नाव।

आदि— ... भांति ताड़िका सुर्भग लागी कर्म आइ। बान तानि राम पै न नारि जानि छोड़ि जाइ ॥ दोहा—सुता विरोचन की हुती दीरघ जिह्वा नाम। सुर नायक यह संघरी परम पापिनी बाम ॥ उपजी कपि माता नराइन सी हुती पक्ष पिता मति दाता नाराइन सोहती। सब्ब द्विज भूषण संयुत स्यों अब त्रिभुवन ताड़िका तारक स्यो सुत ॥ १० द्विज दोषी न विचारिये कहा पुरिष कह नारि। राम विराम न कीजिये बाम ताड़िका मारि ॥ सोरठा—करम करत अति घोर विप्रन कौं दुसहु दिसा। भए सहस गज जोर नारी जानि न छोड़िये ॥

अंत—अखिल अर्क मंड केतु अनु सेतु गात जोग जोग कौं अजोग रोग ही कौं मसलो। पृथ्वी ही कौं पूरन पै प्रति दिन दूनी दूनी छिन छिन छीन छपि छीलरकौ जसलो ॥ चंद्रसे बरनत राम चन्द्र की दुराई सोई मति मंद कवि के सब कुसलसों। सुंदर सुवास अति कोमल अमल अति सीताजी को मुख सखि केवल कमलसो ॥ ४१ अन्योक्त—एक कहैं अमल कमल मुख सीता जूके एक कहैं चन्द्र सम आनंद को कंदरी। होइ जौती कमल तौ रैन मांझ सकुचै री चंद जौती बासर हु होती दुति मंदरी बासर ही कमल रजनि ... इति।

विषय—रामायण का वर्णन पृ० १ से ८८ तक।

संख्या २१३ एफ. रसिकप्रिया, रचयिता—केशवदास (ओरछा), कागज—देशी पत्र—७५, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप्)—१८९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४८ = १५९१ ई०, लिपिकाल—सं० १७१७, प्राप्तिस्थान—आर्यदमकल पुस्तकालय, डाकघर—बिसवाँ जिला—सीतापुर।

आदि—सिद्धि श्री गणेशाय नमः ॥ अथ मंगलाचरणम्। एक रदन गजबदन सदन बुधि मदन कदन सुत। गवरि नंद आनंद कंद जगबंद चंद जुत ॥ सुप दायक दायक सुकृति

गन नायक नाइक । वल धाइक धाइक दलिद्र सत्र लाइक लाइक ॥ गुर गुन अनत भगवत भव भगतिवत भव भय हरन । जय केसवदास निवास निधि स्वोदग असरन सरन ॥ १ ॥ कौतुक राधा रमन के सुनहु रसिक दे चित्त । नवरस वरन नवर वरनौं कवित्त ॥

अंत—यहि विधि कैसो वास रस अनरस कहे विचारि । वरनत भूल परी जहां कवि कुल लेहु विचारि ॥ जैसे रसिक प्रिया विना देपिये दिन दिन दीन । त्योहीं भापा कवि सवै रसिक प्रिया करि हीन । वाढ़ै रति मति अति पढ़े जानें सव रस रीति । स्वारथु परमारथु लहैं रसिक प्रिया की प्रीति ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार इन्द्रजीत विरचितां यां रसिक प्रियाया रस अनरस वरनन नाम पोड़सो प्रभावाः सवत १७३७ चैत्र स्वामि पक्षे द्वादसीय ॥ वुधे दिते लिपतं शिवदासेन वलि भद्रात्मज सुधी ॥

विषय—नायक नायिका हावभाव रस अनरस श्रृंगार आदि का वर्णन ।

संख्या २३३ जी. रसिकप्रिया टीका, रचयिता—केशवदास, कागज—देशी, पत्र—५०, साकार—१०×७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९३, खडित, रूप—साधारण, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४८= १५९१, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूवे, साहित्यान्वेषक ।

संख्या २३३ एच. विज्ञान गीता, रचयिता—केशवदास (ओरछा), कागज—देशी, पत्र—८८, आकार—८×४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) - ३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६७२, खडित, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६७=१६१० ई०, लिपिकाल—स० १७०५=१६४८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामप्रसाद मिश्र, ग्राम—जगजीवनपुर, डाकघर—ओयल, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ।। श्री परमात्मने नम ।। छप्पै ॥ ज्योति अनादि अनंत अमित अद्भुत अरूप गुणि परमानद पुहमि प्रसिद्धि पूरन प्रकाश पुनि ॥ निर्गुन नित्य निरीह निपट निर्वाण निरंजन ॥ राम सर्वग सर्वग्य सर्व चित चिंतत सिद्धिन ॥ वरनो न जाइ देपो सुनो नेति नेति भापत निगम । ताको प्रनाम केशौ करत अनु दिन करि सजम नियम ॥ संग सोहति है कमला विमला अमला मति हेतु तिहू पुर को । भव भूप दुरंत अनत हतैं दुप मोह मनो जम हाजुर को ॥ कहि केशव केहू वनै न निवारत जारत जोर नहीं गुर को ॥ अति प्रेम ते नित्य प्रनाम करौं प्रमेश्वर को हर को गुर को ॥ केशव तुगारन्य मैं नदी वेतवे तीर । जहांगीर पुर वहु वस्यो पडित मडित भीर ॥ सवैया ॥ ओड़छे तीर तरंगिन वेतवे ताहि तरे रिपु केशव को हैं । अर्जुन वाहु प्रवाहु प्रवोधि तरेव ज्यों राजन को रजमो है ॥ सूर सुता सुभ सगम तुंग तरंग तरंगित गंग सी सो है ॥ नाग सरूपनी । तहां प्रवास सो निवास मिश्र कृष्णदत्त को अरे मेव पडिता प्रणी सुदासु विष्णु भत्ति को । सो काशि नाथ तस्य पुत्र विज्ञ कृष्णनाथ सों ॥ सनाढ्य कुम वार वंश मूं सुदेव व्यास को ॥ तिनके सुत केशव राइ भापा कवि मतिमंद । करी ज्ञान गीता प्रगट श्री परमानंद कंद ॥ मूढ़ लहैं त्यों गूढ़ मति अमित अनंत अगाधु । भापा करियाते कही छमियो वुध अपराधु ॥

अंत—सवैया ॥ चितु सुताल के अग्र वसैं वहु कंटक कष्ट विलास विलासे । कारज कोमल पल्लव केशवदास सतोप सुवास निवासै ॥ अस सग की तीसरी भूमि मिलै अलि

अद्भुत भांति सु संमृति नासै ॥ पद्य विवेक हिए सरसी मह मित्र विचार प्रकाश प्रकासी ॥ दोहा ॥ प्रथम भूमिका अंकुरै दूजी होति प्रकास। फलै तीसरी भूमिका फल अद्भुत अविनास ॥ मापत है उद्योत जर हेतु नसै अकुलाइ। लोक बिलोकै स्वप्नवत् भूमि चतुर्थी पाइ ॥ मिथ्या जाग्रत सा लखै चौथी स्वप्न समान। जानि सुपुप्तक पाँचई भूमि विभाग प्रमान ॥ छूटि जाति है आप ते ग्रंथि सबै अनयास ॥ सुपद सप्तमी भूमिका निश्चल चित्त विकास ॥ चित्र दीप ज्यों ज्योतिवतु पूरन परम प्रकास ॥ अंतर बाहिर हीन है पूरन बाहिर अंत सुपद सप्तमी भूमिका सदा होति अति सत ॥ अंत सम्पो बहि शून्यो शून्य कुंभइ बाबरे। अतः पूर्णावहि पूर्णो पूर्ण कुंभइ बारावि ॥ दो० ॥ पाइ सप्तमी भूमिका मुक्ति होति सवि देह। देव रूप स्वछंद जग रहत विपिन अरु गेह ॥ इनको दैवी करि कृपा कही देव के नाम। जिनको करि उचार पुनि पढ पल करत प्रनामु ॥ (इसके आगे के पृष्ठ नहीं हैं)।

विषय—विज्ञान गीता का भाषा पद्य में वर्णन ॥

संख्या २५३ आई. विज्ञानगीता, रचयिता—केसवदास (ओरछा), कागज—देसी, पत्र—१८०, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६७=१६१० ई०, लिपिकाल—सं० १९०१=१८४४ ई० प्राप्तिस्थान—श्री शंकर प्रसाद अवस्थी, ग्राम—कोरता, डाकघर—कोथा जिला—सीतापुर।

आदि—२५१ एच के समान।

अंत—चिदानंद सम्यापो विज्ञान गीतायां परिहार सूक्ता ध्यात्र अहंकार राम नाम समाप्तं संवत १९०१ कुवार सुदी बृहस्पति ११ ॥

संख्या २५४ ए. बारहमासा, रचयिता—हीरा शाह, कागज—देसी, पत्र—११, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२७=१८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेशसिंह, ग्राम—तारापति का मिआरा, डाकघर—भकिया मुहर्रा, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ हीरा शाह का बारह मासा लिख्यते दो०। आसाढ़ में बिनती करै हीरा शाह आधीन। तुम बिन व्याकुल मैन हैं जस तिन जैसे मीन ॥ आसाढ़ में सोहै परी सब ग्वाब देखि कालिमी। अबर मे बिजली खिंचें दुप देत दोनों दामिनी ॥ हर बख्त मन उड बोल कोयल पी बिना मैना झुरै। कमली भया चहूं ओर छाई। पतन पुरवाई ॥ अति घटी बन मोर बोले सुस गुरु सुन के बचन हियरा डरै को सार रूमे हूक की उनकी बकावें सिर पड़ें। तेरी जुदाई स पिया अब मान मेरे गर गये ॥

अंत—जड़ कहे तुमै होयगा दरशन अगले मास। बड़ रहो मुख चैन संमत का होय उदास ॥ अब यह मुझको चैन आया भरिम को भी दूर किपो तसव दीदार की उनकी की आसा पूजियो देग कर था के परम को काज सद् स्यो जीव के। मैन बरपा हो गये

वाले जो दिव लेगी वके दुग्व दरद मेरा मिट गया मिलते ही उस दिलदार के दौलत मुझे अम्मी मिली सव मिल गई घर वार के। खैरा कहै सव साह के हम कदम की खाक हू। गुन तो मेरे मे हैं नहीं और मेरे लाख है॥ दो० ॥ जो समझै दिल पाक कर पाक जात हो जाय। आगुन तुम में जो पिया रहीं सग लपटाय॥ इति वारामास्मह खैरा साह समाप्त शुभं सवत १९२७ वि०।

विषय—विरहिनी का वारह मासों का वर्णन।

संख्या २३४ वी. वारहमासा, रचयिता—खैरा साह, कागज—साधारण, पत्र—८, आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री शिवसहाय खत्री, ग्राम—नवावगंज, डाकघर—परियावा, जिला—प्रतापगढ़।

संख्या २३५. पत्ती चेतावनी, रचयिता—खेमकरण द्विज, कागज—साधारण, पत्र—४, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री यदुनाथ सिंह, ग्राम—महेरी, डाकघर—कटरा मेदनीगज, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—वाग पचचा १६

नीलकंठ	सरहस	मामा	चिल्होरि
कपोत	मैना	पनिहरा	पेंडुक
चोचा	तीतरा	जोरा	कोइल
हंस	खंजन	हारिल	खेमकरनी

दोहा। आए मास असाढ़ सखि। स्याम गए परदेस। पिअ पिअ रटत पपीहरा। को लै आव सदेस॥ १॥ सावन आए हे सखी, स्याम घटा चहुँवोर। दादुर सव्द सुनावही, नहिं आए पिअ मोर॥ २॥ भादौं रइनि भयावनी, नहि भावै मुहि सेज। पिअरोइआ पिअ विनु भई, विहरत नाहिं करेज॥ ३॥

अत—कमल कली सू कंचुकी। चंपादल सी गात। खंजन ऐसौ नयन जुग। पिय विनु निकसा जात॥ २७॥ पिअ मोहि सेज वोलावही। विनति करौं कर जोरि। केहि विधि माखो हे सखी। जैसे झपट चिल्होर॥ २८॥ सव सखि गृह गृह सुख करहि, जाको गृह है नाह। वै क्रीड़ा वहु विधि करत, जस पनिहारन जल माँह॥ २९॥ सगुन विचारहु हे सखी, गावहु मगल चारु॥ वहु विधि जोरा पहिरि कै, तव पिय ऐहैं आजु॥ ३०॥ कहत खेमकर द्विज समुझि, पेम करनि विश्राम। नृपति सभा मह चित्त दै। चिरई चेतन नाम॥ ३१॥ इति पोथी पक्षी चेतावनी सपूर्णम्॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—पक्षियों के श्लेष तथा नाम व ऋतु आदि संबंधी इक्तीस दोहों का संग्रह।

संख्या २३६ ए. वैद्य प्रिया, रचयिता—खेतसिंह, कागज—देशी, पत्र—१७०, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८० = १८२३ ई०, लिपिकाल—सं० १८९२ = १८३५ ई० प्राप्तिस्थान—श्री रामभूषण वैद्य, ग्राम—कमलापुर, डाकघर—हुसैनगंज, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः। अथ वैद्य प्रिया लिख्यते ॥ श्री गिरजा सुत सदन गनपति बुद्धि गंभीर। सुभ दरसन भय भर हरै आनंद होत सरीर ॥ बंदहु सारद मातु पद जो कल मति दातार। तासु सुमिरन करतही। बाढ़ै बुद्धि अपार ॥ जय रुक्मिनी अस्तुति प्रगट सकल गुन ईस कमल नयन घन स्याम प्रभु। द्रुपदारज जगदीस। सुमिरहि सुरन अमल के ॥ श्री रुक्मिनी कमला रमा सिंधु सुता जिन धर्म। बंदहु सुप दायक सदा सकल सिंधु सुप कर्म ॥

अंत—गुरु की कृपा कटाक्ष ते कह्यो ग्रंथ गुन धाम। तिनि त्रिगुरु के चरन की बार बार प्रनाम ॥ महका छिमा करि आदरहिं ग्रंथ सकल अभिराम ॥ बहुना चातुरता कही बुद्धि कछु नहिं जोइ ग्रंथनि ते औषधि धरी कहा अधिकता मोरि ॥ ताते मैं बिनती सुमी चूक भूल सब पोद ॥ ममता बाबा कर्मना सेवक स्वामी मोहिं ॥ पर निंदा पर ईरषा परदुष सदा सहाहि ॥ तिनसौं बहु बिनती करौं दाप सो हर्दै समाइ ॥ देव कोटि तैतीस पुनि जिन सब रचे सो पथ। तिनको उर धरी ध्यान रचि वैद्य प्रिया यह ग्रंथ ॥ इति श्री वैद्य प्रिया ग्रंथ पंडित पेत सिंघ विरचितायां संपूर्ण समाप्त ॥ लिषतं सिव सेवक मिश्र देवपुरा वाले कार्तिक दीपावली विक्रम सवत १८९२ वि० ॥

विषय—वैद्यक।

संख्या २३६ बी. वैद्य प्रिया, रचयिता—खेतसिंह, कागज—देशी, पत्र—१७६, आकार—१० × ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८० = १८२३ ई०, लिपिकाल—सं० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामरत्न बाजपेयी, ग्राम—सैरापार, जिला—सीतापुर।

आदि—२३६ ए के समान।

अंत—इति श्री वैद्य प्रिया ग्रंथ श्री पंडित पेतसिंह कृत संपूर्ण सुभ कुआर सुदी १२ संवत १९०४ वि० पुस्तक जैसी दषी तैसी लिषी द० सुन्दू लाल जेसवार गोपावदर्शा श्री परमेसुर सदा सहाय जी ॥

विषय—वैद्यक वर्णन।

संख्या २३७ ए. हृदयसम चरित्र शतक, रचयिता—माधकवि (गढ़गौव, चरखारी राज्य), कागज—बादामी, पत्र—४०, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४० पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं०

१९५२ = १८९५ ई०, प्राप्तिस्थान—प्रधान जवाहरलाल पेशकार, चरखारी दरबार, डाकघर—चरखारी।

आदि—दो० श्री गोविंदाचार्ज अज श्री मद्राम कुमार। रमा राम रामानुजहि वंदौ पवन कुमार १ श्री वागी सुर पद पदम मनमों परसि पवित्र। मेघनाद के जुद्ध को बरनो लखन चरित्र। २। श्री रामानुज मनुज नहि धरनी धारन धीर। वदौं जन दुग्ग अक्षमन लक्ष लक्ष्मन वीर ३

अंत—जय लक्ष्मन रनधीर वीर वीराधि वीर वर। जय उदड भुजदड चद को दड दड धर। जय अमंद अनद कंद खज फद निकदन। कृत वृंदा रक वृंद चरन अरविंदन वंदन। जय जय समर्थ दसरथ्थ सुत हथ्थ मथ्थ दस मथ्थ सुत। जन वान जान कविमान सिर धरहु पान वर दान जुत॥ १२८। इति श्री कवि मानसिंह विरचित श्री लछमन चरित्र सतक संपूर्ण। सुभ मस्तु। सवत १८७८ के लिखी भई पोथी से उतारी संवत १९५२ में पठनार्थ श्री रामानुज दासाना। श्री मते रामानुजाय नमः चौकी नवीस हीरालाल की जै जै श्री। रा० लक्ष्मन जी की जो वाचै सुनै ताकौं॥

विषय—तुलसी कृत रामायण की कथा के अधार पर मेघनाद और लक्ष्मण जी के युद्ध का वर्णन।

संख्या २३७ बी. लक्ष्मण सतक, रचयिता—खुमान या मानकवि (चरखारी), कागज—साधारण, पत्र—२६, आकार—१०½ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४४ = १८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गुरुबक्ससिंह रईस, ग्राम—कुठरिया, डाकघर—लवानाभवानीगज, जिला प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ लक्ष्मण सतक लिख्यते॥

॥ दोहा॥ राम रमा रामानुजहि, प्रणवौं पवन कुमार। श्री गुरु गणपति चरण भजि, श्री मद् शम्भु उदार॥ १॥ श्री वागेश्वरी पद पदुम, प्रणवौं परम पवित्र। मेघनाद के युद्ध में, वरणौं लषन चरित्र॥ २॥ श्री रामानुज मनुज नहि, धरनी धारन धीर। वन्दौं जनदुख अच्छमन, लच्छ लच्छमन वीर॥ ३॥

कवित्त—प्यारो सीताराम को उज्यारो रघुवश हूं को अनियारो जय पैज महारुरो रनको॥ रवि कुल मंडन प्रचंड वल वड वीरचड भुज दंडन सौं खडन खलन को॥ समाधान रच्छक अपच्छ पच्छ लछीमन अच्छमन लच्छिमन कृच्छ दीन जनकों॥ सिंहन को सर्भ गर्भ वंतन को गर्भ गंज अर्भ अवधेश को सगर्भ शत्रु हनको॥ ४॥

अत—जम लछिमन रनधीर वीर वीरधि वीरवर। जय उदंड भुज दंड चंड को दंड दंड धर॥ जय अमद आनंद कद पल फद निकदन। कृत वृन्दारक वृन्द चरन अरविन्दन वन्दन॥ जय जय समत्थ दशरत्थ सुत हत्थ मत्थ दशमत्थ सुत। जन वानि जानि समधान सिर धरहु पानि वरदान युत॥

इति श्री चरपारी नगर बुँदेल पंड वासी पुमान कवि वदीजन कृत रामामंडल पर्थ शिवा शिव सँवादे लक्षिमन शतकं समाप्तं॥ सवत् १९४४॥

विषय—मेघनाद से लक्ष्मण का युद्ध शक्ति लगना, फिर सुषेण वैद्य का आना, हनुमान जी का संजीवनी लाना, लक्ष्मण का स्वस्थ होना, मेघनाद-वध।

संख्या २३७ सी नरसिंह चरित्र, रचयिता—मान कवि (चरखारी), कागज—साधारण, पत्र—४४, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४५, पूर्ण रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३८ = १७८१, लिपिकाल—सं० १९५४ = १८९७ ई०, प्राप्तिस्थान—प्रधान जवाहर लाल, पेसकार चरखारी दरबार, डाकघर—चरखारी।

आदि—दोहा—जै जै श्री प्रहलाद प्रभु जै पावन पन सिंह जै हिरना कुल दुख मचन जै जै श्री नरसिंह। छंद मधभ सुखद। जै जै वीर श्री नरसिंह। पाहत प्रनत जन प्रनसिंह॥ जै जै ज्वाल माल लुभंत। भृकुटी विकट दर मटकंत। २। जै जै हिरन कस्यप काल धर धर कपत काल कराल॥ जै जै तुरत संग्हा कार। तीक्षन नखन उदर विदार॥ ३॥ जै जै दीन जन प्रतपाल। जिन सठ जठर फारी हाल जै जै दहन दनु सुत भूप। जै भय हरन नाहर रुप॥ ४॥ छंद चौपइया॥ भय हरन नर हर रूप की विरदावली वर भाषिये। जेहि रटत संकट कटत सट वर मिलत जे अभिलाषिये॥ दुख हरत दारिद दहत उलहत भक्ति लहत सुभायकी। रिपु तपत पातक कपत जग जन जपत नर हर नाम की॥ ५॥ छंद सवैया॥ जग जपत नर हर नाम की पावी सकल मन काम की। जग जलधि लहि विश्राम की॥ पहुँचे परम पद धाम की॥

अंत—पाही प्रभुम श्री प्रहिलाद। निसदिन रहित हर्ष विषाद। जारिप ध्यसचित नहिं चाहि। कीने नाथ कुकुम निवाह॥ ११॥ यह श्री नरसिंह चरित्र संगल परम पुन्य पवित्र। भाषै दीन कवि मान। देहै मति मित्र भगवान॥ १०॥ नाहर चरित चाह अतीत। बाँचत सुनत मंगल होत। सुमिरत सकल मय भजि जात। सुख सरसात दुख हर जात॥ ११॥ प्रति दिन करै पाठ तमाम। ताके सिद्ध सब मन काम। मिलसत रोग कष्टविषाद, प्रगट हि नरसिंह प्रसाद॥ १२॥ सुदि वैसाख चौदस मास। व्रत ध्यान ध्यान नियम॥ कर उपवास बाइस पाठ नर हर देहिं सिद्धि व्याठ॥ १३॥ दोहा॥ संवत वसु गुण वसु ससुर वंग लियम पवित्र। नाहर चौदस को भयो श्री नरसिंह चरित्र (१८३१)। इति श्री मन्नारायण दास मान कविरचित नृसिंह चरित्र समाप्त संवत १९११ वैसाख सुदि १० को लिखी प्रति से उतारी गई संवत १९५४ में॥

विषय—१ हिरण कस्यपु का राज्य वर्णन, २ शिक्षा कांड, ३ ज्ञान कांड, ४ परीक्षा कांड, ५ रक्षा कांड, ६ पद कांड ७ स्तुति कांड।

संख्या २३७ डी रामरासो, रचयिता—सुमान (मान कवि जरा गाँव, चरखारी), कागज—बादामी पत्र—१३१, आकार—१३½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६१७ पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६५ = १८०८ ई०, लिपिकाल—सं० १९७६ = १९१९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री हरिपाल सिंह जैवार, ग्राम—धनुषधारी मंदिर के निकट, चरखारी राज्य।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री राजा कृष्णाम्यां नमः अथ श्री राम रासो मान कवि

कृत लिप्यते ॥ दोहा ॥ वदौ सीताराम के चरण कमल अभिराम । तिनकौ सुमिरन करत ही होत सिद्ध सब काम ॥ १ ॥ छप्पै मूक होंय वाचाल पगु गिरि गहन उलंघै । जब तुम होहु दयाल परम आनद पर संघै ॥ एक रूप अव्यक्त व्यक्त संसार विहारी । निर्गुन सर्गुन रूप भूप रंकन मँह धारी । अद्वैत अमल आतम पुरष सुसुप भये संसार सुख । ससार लीन आपुन विषे करत करत तब पुरुष रुख ॥ २ ॥

अत—दोहा ॥ ब्रह्मादिक ध्यावत सदा रघुकुल कमल दिनेस । पारीछत महराज की रच्छा करें हमेस ॥ ५७८ ॥ पारीछत महराज कें राम भक्ति वसु जाम । हुक्म पाय रघुवर चरित वरनौं सीताराम ॥ ५७९ ॥ कविता सत कवि मान की सारद सुद्ध निवास । ता विच सीताराम कृति ज्यों तार का प्रकास ॥ ५८० ॥ वर्ष अठारह सै अधिक पैंसठ भादौं मास सुकल पच्छ तेरस गुरौ रघुवर चरित प्रकास ॥ ८१ ॥ इति श्री मान वंशावतंश प्रजा जन मन रजन श्री मन महाराजाधिराज श्री महाराजा रामचन्द्र जू देव वहादुर कौ राम राय सौ श्री मान कवि कृत संपूरन समास । मासोत्तमे मासे सुमे कातिक मासे सुकल पच्छे गुरु वासरे तिथौ ७ संवत १९७६ ता० ३० अकतूवर सन १९१९ ई० : मुकाम महराजनगर चरखारी ॥ भूपति मणि जाहिर जगत गंगा सिंह नरेस : तिन कर राधा कृष्ण जू रच्छा करें हमेस ॥ श्री गगा सिंह नरेस के चरण कमल उर धार लिखो राम कौ राय सौ दरयाव सिंह ने कार ॥

विषय—तुलसी कृत रामायण के अनुसार लका काण्ड का अंगद वाद से राम जी के अयोध्या पहुँचने तक का वर्णन ।

संख्या २३७ ई. हनुमान जू को नख सिख, रचयिता—मानकवि (खड़ागाँव, चरखारी दरवार), कागज—वादामी, पत्र—१७, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, लिपि-काल—सं० १९५२ = १८९५ ई०, प्राप्तिस्थान—प्रधान जवाहर लाल पेशकार, चरखारी दरवार, डाकघर—चरखारी ।

आदि—अथ श्री हनुमान जू कौ, सिख नख लिप्यते । कवित्त दरस महेस कौ गनेस को अलम समा सुलभ सुरेस कौन पेस है धनेस कौ पूज दार पाल वर पाइ प्रजापाल दिग पाल लोकपाल पावै महल प्रवेस कौ । वेर वेर कौन दीन अरज सुनावे तहाँ यातें विनय वान हौं नरेस अवधेस कौ मान कवि सेस के कलेस कटिवे कौ होइ हुकम हटीले हनुमत पै हमेस कौ मंडन उमड तन मंड खर खंडन कौ ॥ दौर देट दाहनौ उठायो मर हान है—चोटी चट काकी वारा चुटकी चपेट महिरावनै दपेट पग दावै वलवान है भनै कविमान लसै विकट लगूर वांय चरन सौं कुट चापी मार का महान है ॥ साकनी डरत डरै डाकनी डर महंक हाँकनी हरन काकनी कौ हनुमान है ॥

अंत—वाचै डेढ़ मासा सोक संकट विनासा तपै तप कौ तमासा वासा मंगल अनत कौ । विभव विकासा मन वांछित प्रकासा दसौ आसा सुख सयत विलासा कर संत कौ । महावीर मांसा वृज वीरा औ वतासा करै वियति को त्रासा तन त्रासा अरि अंत कौ । सिख नख खासा रिद्ध सिद्ध कौ निवासा यह दास आस पूरक पचासा, हनुमंत कौ । इति

हनूमान जू कौ सिख नख सम्पूर्न शुभमस्तु संवत् १६५२ शुक्ल १० रवि वासरे लिप्यतं चौबे नवीन लाल हीरा लाल को वाँचै ताको मै मैं श्री श्री हनुमान जू की पढ़ ।——।॥

विषय—आरंभ में तीन छंदों में महावीर जी के सर्वाङ्ग का वर्णन और चौथे छंद से अन्त तक सिख नख वर्णन ॥

संख्या २३८ ए. जातक माला, रचयिता—गुलाल कवि कागज—साधारण, पत्र—८, आकार—१३ x ५१ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१०, खंडित, रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री वासुदेव सहाय, ग्राम—क्रमास, डाकघर—मार्तीगंज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—अथ जातक माला लिप्यते ॥ दोहा ॥ मेष सीस वृष मुष बसै, मिथुन बाहु भुज दंड। कर्क हृदय केहरि उदर, कटि ममता युग पंड ॥ १ ॥ तुला भरित मह जानिए, वृश्चिक गुह्य पयानु। उर में धन (का) वास है औ चित कर (त) वखानु ॥ २ ॥ बसत सदा पिंडुरी मकर, कुंभ तिली मुष पाय। सदा अंग में पूर्ह वसें भाषत पंडित राय ॥ ३ ॥ जहा सो क्रूर ग्रह परै, व्यथा करी तेहि ठौर। उत्तम सुपद शरीर कौं, भाषत कवि सिर मौर ॥ ४ ॥

अंत—अथ श्री जानिबो, तन अंक सीस के बीच मैं, जिते परैं ग्रह आइ। तितनी श्री जानिये, भाषत पंडित राइ ॥ सतए ते अंक नग्नकौं, परैं जिते ग्रह आइ। ते श्री बाहिर परहि, भाषत है मुनि राइ ॥ अथ दीपक कौ भेद जानिबो, चौथे दसये ग्यारहें, ससि होवे शनि साथ। सात दीप के जानिये, कहे जपिन के नाथ ॥ परे आइ ससि थिर लगन, दीपक जानी ताप। कर्म दिन कर होइ तौ, दीपक हावहि आप ॥ लग्न बीति जैती गई तैती धरिये चित्त। तेतनी बाती जानिये, जरी दीप के नित्त ॥ ० अथ या ...

विषय—ज्योतिष (जातक)

संख्या २३८ बी भवनसार संग्रह, रचयिता—गुलाल (देवसरिहा), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—८ x ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगाविष्णु ज्योतिषी, ग्राम—मैंयर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ भवनसार संग्रह गुलाल कवि कृत लिप्यते ॥ दो० ॥ विघन हरन तुमहो सदा गनपति दीन दयाल ॥ करौ प्रगट मम बुद्धि को करिकै चित्त विशाल ॥ देव धर्म मुनि भई बसी देवमर है सुभ धाम। तहँते द्विज सरिहा हुवे रवि की प्रभा समान ॥ कश्यप सुत अरु अत्रि हैं गंगप्रहिं तीनि बखान। आदि अनेक अनेक सब सबै एक समान ॥ तिनते जगमें पूत्र कवि भये देवक रूप ॥ जिनको दरसन भगवती दीन्हो सरस स्वरूप ॥ तिनके पुरुषोत्तम भये तिनते छत्तर सास। सरस सुकीति उदार बहु जग में सुयस विलास्य कवि गुलाल तिनके तनय रचत ग्रंथ की रीति। पढ़ौ सबै करि करि कृपा सुयश बढ़ै नित प्रीति ॥ या पग में जन मुख्य हैं पावत जन्म अनेक होत बारदी बार हैं मुख दुख करत अनन्त ॥ मुख्य संस्कृत जोतिषिन बरन कहे बहु भाँति। तिनके देखि प्रबंध मैं भाषा करत सुभांति ॥ जाहि समुझ सब देहिंगे मित्र मति के अनुसार। देखि कुंडली लग्न की भाव

कहौ संसार ॥ प्रथम लग्न ज्ञान माह ॥ रवि के उदय जवै भव आवै । आंगुर तीनि शंकु सो लावै ॥ छाया सकै देह मिलाइ । चतुष्पष्टि मै भाग हराइ ॥ लब्ध घरी में सो पल भानै कवि खुशाल यह रीति वपानै ॥ घड़ी उदय की होय जो सोई अर्ध करंत, सूर्य ऋक्षते ज्ञान करि लग्न गुनी भापत ॥

अंत—अथ केतु फलम् । तन में केतु विथा तन कारे । वाम और की चिंता धरै ॥ धन को केतु धनै को नासै । सत्य वचन मुपते नहि भापै । करै विरोध सवै जन भारी । होय सुग्रही अति सुप कारी ॥ तिसरे आइ भवन जो परै । भैइया शत्रु नाश तन करै ॥ धन ऐश्वर्य सदा सो सोई । मन में चिंता व्यापै लोई ॥ चौथे केतु मातु पितु नासै । उच्च होय तौ सुपही को भापै । पचम केतु वुद्धि को नासै । पुत्र अलाम वात को भासै ॥ सष्टम केतु विराजै सवही । मातुल भान भग कर जवहीं ॥ पशु वा रिपु को सदा न जानै । शरीर सदा नाम यं व्याधि भानै ॥ शिखी सात ये लाभदा मार्ग चिंता कलित्रादि पीड़ा कहै वारि भिन्ता ॥ अष्टम केतु विराजै जाके । गुदा पीड़ शिर रोगे ताके ॥ वाहन द्रव्य हरै सुप नासै । कवि खुशाल यह रीतहिं भापै ॥ धर्म भवन में केतु विराजै । सुत श्री भाग्य उदै तम छाजै ॥ देह रोग तप दान ते हास्य वहुत उपजाइ । कवि खुशाल यह सरस मत कह्यो ग्रंथ में आइ ॥ दसयें भवन पिता को नासै ॥ अंग कष्ट वहु रोगै भासै ॥ वाहन दुखिय सुता होइ ताके । कहैं खुशाल सुनौ हित वाके ॥ एकादश मे लाभ अधिक विद्या को पावै । होइ उदर में पीर सतति दुभर्ग ज्यावै । भवन वारहे केतु तन पीर गभीर कराय । राज्य तुल्य जस कोल है कवि खुशाल यह गाइ ॥ कवि खुसाल के पुत्र द्वै अंगद वुद्धी लाल तिनमें अगद के तनय अति सुप वुद्धि विशाल । लिख्यो ग्रंथ जातक सही निज वुधि के अनुसार पढ़ै पढ़ावें ग्रथ के ह्वै है ज्ञान अपार ॥ इति श्री भवन सार सग्रह कवि खुशाल विरचिते सपूर्ण समाप्त . सवत १९०० वि० ।

विपय—ज्योतिप-वर्णन ॥

संख्या ३३८ सी भवनसार सग्रह, रचयिता—खुशाल (देवसरिया), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ × १० इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदीन जोशी, ग्राम—पतरासा, डाकघर—कैरावाद, जिला – सीतापुर (अवध) ।

संख्या २३८ डी. भवनसार सग्रह, रचयिता—खुसाल दूवे (देवसर), कागज—विदेशी, पत्र—७६, आकार—८ × ४½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३२=१८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वद्रीसिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या २३९. सुभाषितावली ग्रंथ की भाषा, रचयिता—खुसाल, कागज—साधारण, पत्र—८०, आकार—८½ × ६½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्) —१३००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७९४ = १७३७ ई०,

लिपिकाल—सं० १८६० = १८०३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, ग्राम—कटरा मेदिनी गंज, डाकघर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—अथ श्री सुभाषितावली ग्रंथ की भाषा लिष्यते ॥

॥ चौपाई ॥ श्री सर्वग्यन सुमिरित लाय। गुरु सुमिरूं सिर ग्रंथ सुभाय ॥ जिन बानी ध्याऊं चिरकाल, सदा सहाई मति गत लाल ॥ १ ॥ ग्रंथ सुभाषित जिन बरण्यौ। ताकी अरथ कछु इक वर्णौ ॥ जिन पर हित कारण गुण षानि। भाषू भाषा सुणहुं सुजान ॥ सीष एक सद गुरु की मान। मुनि रोषा निज चित मझार ॥ मनुषि, जनमसुष कारण पाय। एती क्रिया करहु मन लाय ॥ धर्म धरो गुरु सिव करतार। पाप तजौ जो भिंद्य अपार ॥ सम्यक सुष दाता मति भ्रात। तजि मिथ्या जो कुगति प्रमात ॥

अंत—आदि जिनेंद्र सु आदि करे जिन कर्म विदारि सुग्यान उपाया ॥ मूल भवस्त काल विष प्रभु तपि सवि हमसैम लिसाया। अंतर महत सबै हमनै मन लाया ॥ अंतर सहत सबै सिव भेद सुमिंद्र महा जिनि आतम भाया ॥ ये परमाम भावत ही नित धीवम धोव गुण समुदाया ॥

चौपाई—ग्रंथ सुभाषित यह अति सार। सुणतमि करै भव है अधिकार। भव वैराग भाव उपजात याते पाई पढ़हु विष्यात ॥

× × × ×

इति श्री सुभाषितावली ग्रंथ की चौपाई सुलाल चंद काका कृत संपूर्ण लिष्यतं सुख चंद जैसवाल बेचू सुत मवासी हीनक ठौर भाइ ब्रह्मनजपुर में आदर्शपुस्तके दृष्टवानोपुरी लिखितमयादे शुभं भ शुभं भमवोपोल होवते शुभं भवतु—मिती कातिक सुदि २ सं० १८६० ॥

विषय—(१) पृ० १ से ५१ तक—मंगलाचरण। पाप त्याग कथा, सम्यक कथा। सम्यक मत, ग्यानमत। चरित्र कथन। कुस्त्रीजन की अवस्था, स्त्री त्याग कथन, नारी रूप विचार, काम त्याग गुरु सेवा अधिकार, निर ग्रंथ गुरु सेवा, तप जिह्वा बस करने का उप देश, द्वेष त्याग रागभाव त्याग क्रोध त्याग, मान त्याग माया त्याग, लोभ त्याग, संतोष का आदेश, आराधना कथा की समर्थक अहिंसा धर्म की कथा। तथा सत्यासत्य कल्पना, अदत्तादान त्याग।

(२) पृ० ५४ से पृ० १२० तक—शील व्याख्यान, परिग्रह त्याग, जयकुमार की कथा, वैराग्य कथन, गुण संगति कथा, सत्संग महिमा, जिन पूजा, दान पात्र पात्र पात्रदान महिमा, कुपात्र दान त्याग जिन पूजा अरचा तथा दान कथन, इव गुरु शास्त्र अधिकार, भावना की प्रशंसा, रात्रि भोजन निन्दा, मद त्याग, वैराग्य भाव, संसार-सागर कथन, वैराग्य महत्व, शरीरका निषेध, मान त्याग धैर्य ग्रहण, शोक त्याग, स्नान त्याग शरीर सफल होने के उपकरण।

(३) पृ० १२० से १६० तक—निर्माल्य त्याग, त्रिविध मत पालन, आशा त्याग, कुटुम्ब त्याग, कुटुम्ब स्वरूप, कर्म त्याग, बार भावनाओं का वर्णन, पंच नमस्कार महामंत्र, महामंत्र प्रशंसा, धर्मोपदेश, एकत्वानु कथन (धर्म शरण) एकत्व चिंतन, अनित्य भावना,

विवेक मुख्या, मद्य त्याग, वेश्या त्याग, सप्त व्यसन त्याग, योग्य आचार, मुक्ति सुख महिमा, वीत राग का स्वरूप, ग्रंथ के पठन पाठन का फल।

निर्माणकाल—सत्रह सौ चौरावने, श्रावण मास मझार। सुदि चौदसि पूरण भयो, इह श्रुति अति सुपकार ॥

ग्रंथ निर्माण कारण—सवल सिंध पाडा तणौ, नंदन राजाराज। तिन उपदेसे मैं रच्यो, श्रुत खुश्याल अभिराम ॥

संख्या २४० ए. नदोत्सव लीला, रचयिता—ख्यालीदास (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—रतनसिंह, ग्राम—भरथा, डाकघर—विसवां, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ श्री पति चरण मनाय के गणपति कौ धर ध्यान ॥ हृदय धार गुरु के चरण तव कीजे गुण गान ॥ झूलना ॥ भादौं तिथि आठैं वार लियो कृष्ण ने औतार वरसे नन्नी फुआर वड़ी आई है खुस्याली की ॥ ब्रह्मा की मति खोई वेद वावे था वहा वोई गये पहर दार सोई गीत लखी न प्रति पाल की। आजे वुद्धि देवी की विचारी वसुदेव करो त्यारी गोकुल पहुँचादो गिरधारी जान वच जायगी गोपाल की। वृन्दावन चढ सपी भजते गोविंद हुए नद के आनद वोलो जै कन्हैया लाल की ॥ १ ॥

अंत—झूलना ॥ करता निर्त काना ताता थेई थेई थिरके ताल सपियां करैं घात हैरे। थिरके ताल करताल अरु खंजरी ही थिरक रही सारंगी साथ हैरे। करनिन निंन करतान गाता झलक रह्या नारंग सा गात हैरे ॥ रचा रास कान्हा कहै दास ख्याली आज चंद आनद की रात हैरे ॥ इति श्री नद उच्छव लीला संपूर्ण मथुरा निवासी ख्याली दास कृत समाप्तः संवत १९३२ वि० ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का जन्मोत्सव।

संख्या २४० वी. नद उच्छव लीला, रचयिता—ख्यालीदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, लिपिकाल—सं० १९३५ = १८७८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगासिंह, ग्राम—मझगाँवा, डाकघर—ओयल, जिला—खीरी (अवध)।

संख्या २४१. गोपी बलदाऊ की बारामासी, रचयिता—किंकर प्रभू, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१४, प्राप्तिस्थान—श्री गयादीन तिवारी, ग्राम—विलरिहा, डाकघर—थानगाँव, जिला—सीतापुर (अवध) ॥

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गोपी वलदाऊ की वारामासी लिप्यते ॥ जो वलवीर गये जव ते हरि आप न आये न पाती पठाई। छल वल कीन्हो हरि वहुतक हमसों

बाद बसे हैं समुद्र तट माहीं ॥ जप तप नेम कियो हरि सों हम नाम हमाप हरी बर पाये ॥ १ ॥ फागुन फाग खेलै हरि हमसों कीन्ही प्रीति कुबिजा मन मानी ॥ मामा कंस मधुपुरी मों सिधार दुहन को प्रभु मारि गिराई ॥ २ ॥ चैत रुक्मनी पत्र लिख भेजो दैवत पत्र कुंडिन पुर जाई ॥ रुक्मिनी प्रिय अति लगी हरि कूं प्रेम प्रीति कछु कही न जाई ॥ ३ ॥ मनि के कारन मे बैसाख मों जामवत सो कीनी लड़ाई ॥ जामवंती भेंट करी हरि के तब सब संकोच दीन मिटाई ॥ ४ ॥

अंत—अगहन तिलक अनिरुद्ध को दीन्हो सौंप आप अपनी प्रभुताई। राज पाट सब ही सुख दीनो आनंद मंगल हर्ष बधाई ॥ ११ ॥ पूस हरी हम सों कहि भेंटे कुरुक्षेत्र को ग्रहण दमाई ॥ बार बार मन हर्ष भयो अति किंकर प्रभु गुन करत बड़ाई ॥ १२ ॥ इति किंकर प्रभु कृते गोपी बलदाऊ की बारामासी सपूर्ण ॥ श्री कृष्णायनमः ॥ श्री राम जी श्री सीताराम जी ॥ लिखतं सिकरिहा निवासी गयादीन त्रिपाठी संवत १९१७ वि० बैसाख सुदी ३ ॥

विषय—गोपी बलदाऊ जी की बारामासी।

संख्या २४२ राजनीति भाषा, रचयिता—कीर्तिसेन, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—८×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्ति स्थान—वैद्य रामभूषण, ग्राम—कामतापुर, डाकघर—हरैया, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राज नीति शास्त्र भाषा लिख्यते ॥ ओं नमवत हैं श्री विष्णु को जा त्रिलोकी को राई ॥ ब्रह्मा और सरस्वती गरापथ हाज सहाई ॥ दोहरा ॥ बहुत सास्त्र चाणाक की सुंदर बचन निकार ॥ राज नीति सम्मूह को बर्णन करो विचार ॥

अंत—वंदन ब्राह्मण चतु विवेक। भय पड़त क्षमे एक जात। ताते प्रान हरि जब हरिबात ॥ दोहा ॥ सास्त्र सकल विचार कै मध काढ़ी यह सार ॥ नारायण भजिये सदा करिये पर उपकार ॥ गुरु गोविंद के सभा मैं सेन कवि सुजान ॥ चाणक्य भाषा की कीर्ति सैन कवि नाम ॥ इति श्री ब्रह्म चाणिक्य राज नीति शास्त्रे भाषायां षोडशोध्याय संपूर्ण समाप्तम् शुभम् ॥ संवत १८७० चैत्र प्रति पदा कृष्ण पक्ष ॥

विषय—राजनीति चाणक्य कृत की भाषा वर्णन ॥

संख्या ४३ रमल विचार, रचयिता—कोविद, कागज—देशी, पत्र—१९१, आकार—१०×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५३६, पूर्ण, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगा विष्णु ज्योतिषी, ग्राम—अभर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रमल विचार कोविद कृत लिख्यते ॥ दो० ॥ लंबोदर गज मुख सुमिरि भाल चंद्र एक दंत ॥ ता चरणन हिरदै धरूं मंगल होय अनंत ॥

जा कीनो ब्रह्माड़ ही अपनी इच्छा पाइ। ताके सुमिरन करता ही भव संकट कटि जाइ ॥ आदि रूप जग शक्ति है सकल सृष्टि को भार। ताहि ध्यान उर धरत ही उतरत भव के पार।

अंत--॥ चौ० ॥ जामें सकल हवाल बताओ, जो ये रूप प्रकृति जतलावो। इसी क्रिया से पुनि पुनि कीजै ॥ पंद्रह दिन गिनकर कहि दीजै ॥ सुद्ध जायच्छा तामे होई। यों वी महत कवो मत लोई ॥ ८ अष्टम घर सों देखे दूसरे में चर होय। आठयें में थिर होय तो करज से छुट जायगा सम और चर दूसरे में थिर होय तो चौथे में चर होय तो नहीं छुटेगा ॥ जो यो पूछे मैं करज दू मुझको नफा होगा या नहीं तव दूसरे आठवें को जरब करे सकल निकाले जो सुभ स्थिर होय तो लाभ होयगा जो स्थिर असुभ होय तो जमा जायगी जो स्थिर होय तो थोड़ा मिलै द्वि स्वभाव होय तो द्विविधा कहिये ॥ यंत्र ॐ नमो भगवती कुष्माण्डनी सर्व निमित्त प्रकाशनी एहिस्वर वर दे हिल हिल मात गिनि ॥ तथ्यं ब्रूहि ब्रूहि स्वाहा ॥ इति श्री रमल विचार वो विद कृत सपूर्ण समाप्त लिषते जयराम दास पाड़े गौरी करन मध्ये कार्तिके दीपमालिका सवत १९३३ वि० ॥

विषय--ज्योतिष रमल ॥

संख्या २४४ लगन पचीसी, रचयिता--स्वामी कृपा निवास, कागज--साधारण, पत्र--२०, आकार--८$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--२२०, पूर्ण, रूप--नवीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८९८ = १८४१ ई०, प्राप्तिस्थान--रामप्रसाद मुराद, ग्राम--पुरवा विश्रामदास, डाकघर--परियावां, जिला--प्रतापगढ़, (अवध)।

आदि--श्री सीताराम ॥ अथ श्री लगन पचीसी लिष्यते रागधनाश्री मूल ताल ॥ लगन की चोट विन मन गिरत न ऊंचो कोट ॥ मरद गरध है दरद लगै स्त्रू परवस गर पर पोट ॥१॥ मन मयंद मानो विषम दिरा कोउ हाथ न आवे ॥ ताको लगन महा अकुश लै प्रीतम पाय नवावें ॥ बांधि वोकरी मृग--लौं ऊछरै सिंघ सवल नहिं डरि है ॥ लगनि वीन की भनक सुनै कहौ विन मारे मन मारि है ॥ फनिप रूप लौं जहर भरयो मन गहै कौन भय कीरी ॥ लगन मत्र वल प्रवल निवल है सेवत परगो पितारी ॥ ज्यौं फिरत जग ठग मन पग लौ कोउ न सकै विरमाय ॥ लगन वाज की झपट परै जव छूटन को अकुलाय ॥ नारि अमानी सील सयानी राषी भवन दुराय ॥ लगन कूटनी सौं वतरावति मन पर हाथ विताय ॥ मान वड़ाई भये कुल स्यानय तवलौं मन में मीर ॥ कृपा निवास लगन रावव की जव लगि व्यापी न पीर ॥ १ ॥

अत--राम लग्यौं जाको और न लागै ॥ नव ग्रह भूत प्रेत दिव दानव ऊत पित्र जम किंकर भागै ॥ कर्म काल कुल क्लेस कुमारग काम क्रोध कोइ आवै न आगे ॥ चोर चुगल चिंता छल जादू जत्र मत्र जग कवहुँ न जागै ॥ दगा दोष दुवदि दूत दुष दाग दरिद्र दूरतैं त्यागै ॥ ठग ठाकुर कांकरि कटु कंटक संक पंक पर अंक न पागै ॥ लाज लोभ लालच अप लक्षण पाप पीर पाषंड न दागै ॥ अनिल अनल जल थल पे के चर गोचर पर चर विघन विरागै ॥ जाग्रत सुन्य मनोरथ मनोरथ मादक माया मोह की मुरि गदवागै ॥ कृपा

निवास कहै मोहि म्यग्यौं आनकी बर पाग्यौं अनुरागि ॥ ३० ॥ इति श्री लगन पचीसी श्री महाराजाधिराज महाराज स्वामी जी श्री कृपा निवास जी कृत संपूर्णम् ॥ शुभ मस्तु ॥ संवत १९९८ मिती सावन बदी ४ लिखितं चरनदास पाँड़े गौड़ ब्राह्मण प्रयाग जी में।

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ११ तक—लगन की महिमा और उसकी महत्ता का वर्णन। लगन के निर्वाह में किसी प्रकार के बचाव आदि की पर्वाह न करना। उसका पूर्णतया निर्वाह करना। लगन युक्त सौंदर्यादि की सदैव अपेक्षा करते रहना और प्रीतम के दोषों का परिहार करना। (२) पृ० १२ से पृ० २० तक—लगन का प्रभाव, लगन की पीड़ा तथा तल्लीनता का वर्णन। विरह वर्णन। प्रीतम के सम्मेलन में संसार का त्याग। प्रेमोपदेश। पालंड विनाश, राम की लगन में अन्य भूत-प्रेतादि की लगन के विनाश का वर्णन। कवि द्वारा राम से उनकी लगन का वरदान माँगना।

संख्या २४५ ए. भाषा भागवत एकादश स्कंध, रचयिता—कृपाराम, कागज—देशी पत्र—१२१ आकार—८ × ७ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८ परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५४ रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७१ = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—आनंदभवन पुस्तकालय, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री मते रामानुजायनमः। बंदौं श्री रघुबीर कृपासिंधु मंगल सुपद प्रनतपा (आगे दीमक खा गई है) चौ० ॥ कलिमल हरन करन सब कीना विप्र लिये मुनि सकल प्रवीना विश्वामित्र असित भृगुस्वामी दुरवासा कस्यप समभामी ॥ नारद कण्वो अंगिरा साधू। वामदेव मत अत्रि अगाधू ॥ और वसिष्ठ आदि मुनि जेते। विदा भये पूजित ह्वै ते ते पिंडारक यक तीरथ राजू। तहाँ गये मुनि सहित समाजू ॥ पेखन पदुम सार तहँ आये। गनपति वनिता भेष बनाये ॥ अति विनीति सब चरनन लागीं। पूछहिं प्रश्न ये अनुरागी। यह अबला पूछै द्विज राजू ॥ गर्भवती लागि यहि काजू। निकट प्रसूति भई यहि केरे। कहा होय सो कहहु निबेरे ॥ तुम अमोघ दरसी भू देवा। कहिय कृपा करि यहि कर भेवा ॥ सुनि मुनि कपट युक्त सब बानी। क्रोध सहित बोले नृप स्वामी ॥ मूसल जनहिं मंद मति बानी ॥ जदु कुल नास सकल यहि मानी ॥ सुनत सप् कंपति भय बाढ़ा ॥ उदर पोलि देख्यो ततकाला ॥ मूसल देखि लगे पछिताना। कहा कियो हम करम अयाना ॥

अंत—एसे कृष्ण कृपालु प्रभु सब पद पूरण काम। सोइ मम श्री गुर मैं प्रगट बास कृष्ण अस नाम ॥ तिहिं पद पंकज परसि रज विरज कृपा उर आनि ॥ सोइ प्रेरक हिय महु सजन भाषा सुभग बखानि ॥ श्री शुक कही परीक्षितहिं व्यास कही शुक पास। समुझि परै नहि संसकृत मोमन अधिक हुलास ॥ कठिन अर्थ भागवत गूढ़ा। अल्प बुद्धि मैं अति मैं मूढ़ा ॥ तदपि निज बुधि के अनुसारा भाषा रची न बहु विस्तारा ॥ सज्जन सुनख बहु अजे पाती ॥ विनय करौं मैं दुग कर जोरी ॥ हरि गुन कहत प्रेम हिय पूरी। अल्प बुधी उपजै सुख भूरी। पहिलें मैं यह कीन नामाइ। आगें यहिं मैं कछु कविताई ॥ यदि महं होइ भूल कछु कोई। लेव सुधारि सजन सब सोई ॥ पुनि मम कृत भाषहु बनि जाही। बरन अन्यादि कास की आही ॥ हरि गुन सहित सुभग सोइ भाषा। सुनि पुरान कारण अस राषा। यह गुन

मैं नहि अमत अलापू ॥ कहत सुनत नाहिं रह सतापू ॥ अशुची मोहि मंद मति जानहु ॥ तौ यह वरण अशुचि जानि मानहु ॥ ज्यों मालीस्र सुमन मंगावा । अशुचि न होइ नेति अस गावा ॥ सो प्रभु चरण चढ़ै जेहि भांती । तिमि मम कृत यह सजन सोहाती ॥ पुनि पुनि कहौं नाइ पद सीसा । सत सभा सद सब मम ईसा ॥

विषय—भागवत के एकादश स्कंध की कथा अथवा मूसल की कथा ।

संख्या २४५ बी. समयबोध, रचयिता—कृपाराम, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—३२, आकार—९½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९६, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं०१७७२ = १७१५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबू जयमंगलराय बी० ए० एल० टी०, गाजीपुर सिटी ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ समय बोध लिष्यते ॥ दोहा सिद्धि शुद्धि रिधि को देत है एक देत बिधु भाल । प्रथम गनाधिप को सुकवि करिबदन किर पाल ॥ १ ॥ छं । श्री स्वाई जयसिंह नाव जौ इति पुर किलो । दान कृपान विधान साधि सब विधि जस लीनो ॥ जाकी प्रवल प्रताप मनि पुर मान रहेते । सीस नवावत आनि नृपति भुव मंडल जेते । तिन कृपाल ह्वै हेत करि राख्यो दिग दै मान । कृपाराम कवि सहनागर विप्र निदान ॥ २ ॥ दोहा । वरषा अनवरषा सबै दुर भल और सुकाल । होत वोध यातें कह्यो समै वोध किरपाल ॥३॥

अंत—उदै होन रवि चाँकनो धूम बरन जब होय जल बरषे दिन पांच लग कही ग्रथ मति सोट ॥ ९६ ॥ कायल वरन वरषे पीत वरन जल पूर ॥ चित दै देखहु गन कर ऐसे ससि स्वर ॥ अंथ विद्युत लक्षण ॥ सवैया ॥ ज्योतदिसा दिसि पूरव करै वरषा वरनी सुनि मानो । उत्तर की जल होय अपार जुघोर तजो घन वीच प्रमानो । वाय थलावत वात विषे घरू पछिम की जलदा उर ग्रनि । नैरित्त की जल हीन मही करि दछिन गाहि न प्रानि वखानी ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ मेघ विविध वरनें मुनिन काहू लह्यो न पार । कीनो ग्रंथ कृपाल कवि अपनी बुद्धि अनुसार ॥ इति श्री कवि कृपाराम कृत समयबोध समाप्तम ॥ शुभम् ॥ लिपिरिम कृतनदस्य स्वार्थ परार्थच ॥

विषय—नायिका के मुख से नायक प्रति बादल और वायु तथा विजली की चमक आदि में बारहो महीने पक्ष और तिथि तथा समय को लेकर वर्षा और उससे होने वाले समय का भला बुरा परिणाम आदि वर्णन ॥

संख्या २४६. सर्व संग्रह, रचयिता—कृष्णविहारी (बदरका, उन्नाव), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६, प्राप्तिस्थान—श्री रामअधारमिश्र, ग्राम—नगर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ पुरुषोपकारार्थं पद्यबुद्धि ॥ जयकरी छंद ॥ सिंह, बकुल, कुक्कुट अरु काग । स्वान गीदंभी की बुद्धि विभाग ॥ क्रमशः गुण इनके लै लेहु । गुण ग्राही अवगुण तजि देहु । यक गुण है उत्तम बनराज । सब विधि सारत आपन काज ॥ प्रवल शत्रु पर सान्त धावा । काज जोग पर विलंबन लावा । बकुला मे उत्तम गुण एक । सीखहु सज्जन तजि अविवेक ॥ सब इन्द्रिन कर संजम करो । देश काल बल हृदय धरो । बकुल समान

बाज को सायो । मीन सिकम ग्रित चुप्पी सोथो ॥ कुक्कुर चारि बात सिरताज कथित समय आगत रण गाज ॥ बैठुन भाग देत सुष पावै । आप आक्रमलि करि करि लावै ॥ काग से सीखहु गुग पच । छिपकर मैथुन संग्रह रच ॥ सावधान निसि बासर रहै । पर बिश्वास कुणक नहिं चहै ॥ कुक्कुर पट गुन माहिं प्रधान । स्वल्पहु मिलि संतुष्ट रहाहिं ॥ गाढ़ो निद्रा झटपट जागत । मुत्र पुरीष मलिन मुख त्यागत ॥ तीनि बात गर्दभ से लेहु अति श्रम परमी बोझ समेहु । शति उष्ण पर ध्यहि न रापत । अति संतुष्ट विचर बन राजत ॥ दो० ॥ कृष्ण बिहारी सुकुल कह ये गुन २० प्रधान । जो नर निश्चय उर धरे सो विजयी जगजान ॥इति॥

अंत—सामुद्रिक लक्षण कथनं ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ सामुद्रिक लक्षण लिख्यते ॥दोहा॥ हस्त पहुँच अंतर विषे मीन मेष जो देष ॥ सो प्रानी ग्रामी धनी पुत्रवंत शुभ वेष ॥ तुला ग्राम अरु वज्र जो कर मध्ये दरसहिं सुषी होय वाणिज्य मै पावें संसय नाहिं ॥ २ ॥ पद्म चापकर वाजकर अष्ट अष्ट कोण दरसाय नरनारी सुष पावहीं जीवन सफल कराय ॥३॥ संख चक्र ध्वज नासिका जो कर मध्ये होय । सो पंडित आयुहु अवसि धनीवंत सी होहि ॥४॥ कर मध्यी त्रिमुख जो परै भाग्यवश आय । राज्य चिन्ह यह प्रगट है निश्चय राज्य कराय ॥ ५ ॥ अंकुश कुंडल चक्र जो पानि मध्य परिजाय निश्चय भोगी राज्य सुष वचन अन्यथा जाय ॥ ६ ॥ गिरि कंकड नर मुंड सम पानि पानि मध्य परसाय ॥ राज्य मंत्रि कर चिन्ह है निश्चय सुख सर साय सूर्य चंद्र गज अश्व गुरु कला नेत्र भय कोन । पकहु लक्षण कर परै सुषी होय नर तौन ॥ ८ ॥ दोवै छंद ॥ चक्र एक बाचाल द्वितीय गुणवंत कहावै । तीन चक्र व्यापार माहिं लक्ष्मी नर पावै । चार चक्र निर्धनी पंच सर्वांग विलासा । छठ्ठा चक्र रस काम सत बहु सुष की आसा ॥ अष्ट चक्र तनु रोग नवम नृपतों कर लावै । परें चक्र दस हस्त सिद्ध पदवी सी पावै । कृष्ण बिहारी शुकुल कह्यो सिख मै जो गाया ॥ नरका पहिचान हाथ नारि बायाँ बतलाया ॥ (हार चौरस लीला) कहु राधा क्यहि हार चोरासी ब्रज युवती सबही मैं जानति घर घर कै लै नाम बतायो । श्यामा कामी, रसिका चतुरा, नवलाप्रसाद नारि । सुषमा शीला अबध अनंदा वृन्दा जमुना सारि ॥ कमला, तारा, विमला, चन्द्रा, चंद्रावलि सुकुमारि अमला, अचला, कुंजा मुग्धा, हीरा नीला, प्यारि ॥ सुमला बहुला चंपा छुहिला लाला, भामा, माम । प्रेमा रामा हंसा रसा रंगा हरपा नाम ॥ हुमिका रंभा कृष्णा श्यामा मैना गैना रस रसा कुसुदा मोहन करुणा ललिता कौमाल्य ॥ इतनेन मे कहु कौने लोभेउ ताको नाम बताव । कृष्ण बिहारी चार तुम्हारे मैं जानति सब ठांव ॥ इति ॥ लिपर्त सर्व संग्रह कृष्ण बिहारी कृत मनोहर बाजपेई सवत १९१६ वि० ॥

विषय—चौमासा, विरहिणी विलाप सामुद्रिक, हार चौरस आदि वर्णन ।

संख्या २४७ ए. दानलीला, रचयिता—कृष्णदास, कागज—साधारण, पत्र—१४, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९११ ए० = १८५१ ई० प्राप्तिस्थान—पं० श्री वासुदेव पाँडेय, ग्राम—कमास, डाकघर—मार्दीगंज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ पोथी दान लीला ॥ दोहा ॥ श्री गुरु गनपति पद

सुमिर । कहौं कथा मन लाइ । श्री कृष्ण लीला रुचिर । परमानंद गुन गाइ ॥ चौपाई ॥ प्रभु पूरन ब्रह्म अपंडा । जाके रोम कोटि ब्रह्मंडा ॥ जब सगुन ब्रह्म कहाए । मथुरा ते वृन्दावन आए ॥ जहँ देव लोक सब जेते । सब गोप गुवालिन तेते ॥ देवकी सुत नाम धराये । बसु देवहि रूप देषाए ॥ तब गोकुल इछा कीन्ही । बसु देवहि आज्ञा दीन्हीं ॥ तिन्ह नन्द भवन पहुचाए । तहं नंद के लाल कहाए ॥ छंद ॥ जन्म लीन्ह बसुदेव के ग्रह नद के लाल भये । छपन कोटि जदुबंस माया जूथ गोपी ग्वाल के ॥ श्री कृष्ण के संग बहुत बालक गौ चरावन गये । हरषि गावहिं दान लीला सुनहु सज्जन कान दे ॥

अंत—॥ छन्द ॥ जन्म हमारो सुफल कीजै हरषि हरि चरनन्ह परें । कुल की लाज गँवाइ अपने जन्म जन्म सेवा करैं ॥ रहे मोहन संग हिलि मिलि दीप मनि मानिक वरें । कृष्न राधा जूथ ग्वालिनि कुंजवन सोभा करें ॥ जहुं रास मंडल प्रभु ठाना । कर गंध धूप लै आना ॥ तहं राधा पान खिआवें । पुनि आरति मंगल गावें ॥ गान गीता नृतक मृदुवानी । रस कौतुक करें बिधानी ॥ कोउ ताल मृदंग बजावें । कोउ साथे चौंर दुलावें ॥ तेहि मध्य किसोर किसोरी । दोउ कृष्न राधिका जोरी ॥ कीन्ह घंट बजाइ आरति जोति वंद सब करें । गिरिजा इन्द्र प्रसाद पावें जन्म जन्म के दुष टरें ॥ जो नर गावहिं दान लीला सुनहि जो चितलावही । होहि तीरथ करने को फल विसु लोक सिधावहीं ॥ इति श्री पोथी दान लीला कृष्ण क्रीड़ा संपूरन शुभमस्तु लिषा मिती बैसाष सुदी १३ सन १२६२ साल फसिली ।

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १४ तक—यमुनातट के समीपस्थ वन से गमन करने वाली गोपिकाओं से कृष्ण तथा उनके साथियों द्वारा दान का मांगा जाना । गोप वधुओं का प्रेम गर्भित चर्चा द्वारा कंस नृप का भय दिखाना, तथा कृष्ण को दान वाली अनीति से रोकने का प्रयत्न करना । कृष्ण के द्वारा उनके प्रस्ताव का विरोध और अपना महत्त्व दिखाना । ब्रज वनिताओं का आत्म समर्पण तथा कृष्ण की स्तुति करना ।

संख्या २३७ बी. दानलीला, रचयिता—कृष्ण दास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवबिहारी दूबे, ग्राम—गाजामऊ, डाकघर—रानीपुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दान लीला लिष्यते । दो० । चलो सषी तहाँ जाइये जहां वसत ब्रज राज । गोरस बेंचत हरि मिलें एक पथ दो काज ॥ चौ० ॥ प्रभू पूरन ब्रह्म अषंडा । जाके रोम कोटि ब्रह्मण्डा ॥ जब स्वर गुण ब्रह्म कहाये । मथुरा से बृंदावन आये ॥ जहां देवलोक मुनि जेते । तहं गोपी ग्वाल न तेते ॥ देवकी सुत नाम धरायो । वसुदेव हीं रूप दिखायो ॥ जिन गोकुल इच्छा कीनी । वसुदेव ही आज्ञा दीनी ॥ जहं नंद भवन पहुंचाये । तहं नंद के लाल कहाए ॥ छन्द ॥ जन्म लियो वसुदेव के गृह नंद के लाल भये छप्पन कोटि जदुवंश माया यूथ गोपी ग्वाल के ॥ श्री कृष्ण के संग बहुत बालक गौ चरावन बन गये । हरषि गावहिं दान लीला सुनहु सज्जन कान दे ॥

अंत—॥ चौ० ॥ जहँ राम मंडल प्रभु ठाना। सब गोपिन के मन माना। कोई धौंध धूप लै के आवै। कोइ नैवेद्य की सुगुति बतावै ॥ कोई ताल मृदंग बजावै कोई धुनि आरति मंगल गावै। किन मीत नृत्य मनुभावी रास मंडल रूप बनावी ॥ जहँ राधे किसोर किसोरी। ढाल कृष्ण राधिका जोरी ॥ जंह राधे की पाव लखावै। कोई माथे चँवर ढुरावै ॥ छंद ॥ जहाँ राजेंद्रप्रसाद पावै जग्म जन्म क दुख करै। राम स्याम अपार जग में हेत नाम भवसागर तरे। जो नर गाव दान लीला सुनै और सुनावही। बिष्णु लोक में धाम पावै कोटि जाप फल पावही ॥ इति दान लिला सम्वत १९२० वी० शंकर की की है—॥

विषय—श्री कृष्ण जी का ग्वालिन से बाट रोक कर दान लेना

संख्या २४७ सी दानलीला, रचयिता—कृष्णदास कागज—नैपाली पीला, पत्र—४, आकार—९×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री कृपा नारायण ठाकुर, ग्राम—मुंशीगंज कस्बा, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ।

आदि-अंत—२४० बी के समान।

संख्या २४७ डी दानलीला, रचयिता—कृष्णदास कागज—साधारण पत्र—४, आकार—१०×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४ पूर्ण, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दान लीला ॥ चौपाई प्रभु पूरण ब्रह्म अनंता याके रूप कोट ब्रह्म संग सब सुर गुन ब्रह्म कहाये मथुरा अवतार आये १ जहाँ तब बाल मुनी कैसे सब गोपी गवाल तेते देवकी सुत नाम धराये बसुदेव ही रूप धराये २ प्रभु गोकुल कृष्ण कीनी बसुदेव ही अवधा कीनी जब नन्द भवन पहुँचाये बाबा नंद के बालक भये कृष्ण कोट जदुबंस माया गुन गोपी गवाल के श्री कहन संग बहुत बालक गवु चरावन बन गये हरप गावै दान लीला सुनी सकल काम दे।

अंत—छंदः हरष पंद बजाय आरती सखी सब जोत बरंत करै कृष्ण दास प्रसाद पावै जनम जन के दुःख हरै। ज्यो गावै दान लीला सुनै चित लगाय कै राम नाम अपार जग में भव के भी सागर तिरै १५ इति श्री पोखारी किसन दास विरचिता दान लीला सम्पूर्ण ॥ १ ॥

विषय—कृष्ण जन्म, उनका गोकुल आना गायचारण, गोपियों से दधि का दान मांगना। गोपियों का कंस की धमकी देना, कृष्ण की निर्भयता दिखलाते हुए अपनी शक्ति का परिचय देना और गोपियों का उनका ईश्वर रूप में पूजन करना।

संख्या २४७ ई दानलीला, रचयिता—कृष्णदास, कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार ५½×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महंत मोहनदास द्वारा बाबा पीतांबर दास, ग्राम—सीतामऊ, डाकघर—परियावां, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

संख्या २४८ ए. विहारी सतसई सटीक, रचयिता—कृष्णदत्त, कागज—देशी, पत्र—१९६, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८०२, पूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२४ = १७६७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री नारायण सिंह, ग्राम—हुसेनपुर, तहसील—विसवां, डाकघर—पैंतेपुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विहारी सतसई सटीक कृष्णदत्त कृत लिष्यते ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥ दो० ॥ मेरी भव वाधा हरौ राधा नागरि सोइ। जातन की झाई परे श्याम हरित द्युति होइ। यह मगला चरन है तहां ग्रथ कर्ता कवि श्री राधिका जी की अस्तुति करता है राधा और हू है याते जा तन की झांई परे श्याम हरित द्युति होइ। या पद ते वृपभान सुता की प्रतीति भई। सवैया ॥ जाकी प्रभा अवलोकत ही तिहू लोक की सुदरता गहि वारी। कृष्ण कहैं सरिसीरुहु नैन को नाम महामुद मगलकारी। जातन की झलकैं झलकैं हरिता द्युति श्याम की होत निहारी। श्री वृप भानु कुमारि कृपा कै सुराधा हरौ भव वाधा हमारी ॥

अंत—लीला जुगुल किशोर की रस को होय निकेतु। राजा आया मल्ल को ता कविता सौं हेतु। माथुर विप्र ककोर कुल कह्यो कृष्ण कवि नाव। सेवक हौं सव कविन को वसत मधुपुरी गांव ॥ राजा मल कवि कृष्ण परि ठन्यो कृपा के ढार। भांति भांति विपदा हरी दीनी लछि अपार। एक दिना कवि सो नृपति कही कही को जात। दोहा दोहा प्रति कहौ कवित वुद्धि अवदात ॥ पहिले हू मेरे यहै हिय मैं हुतो विचार करौं नायका भेद को ग्रंथ सुवुधि अनुसार ॥ जे नीके पूरव कविन सरस ग्रथ सुपदाय। तिनहिं छाड मेरे कवित को पढ़िहैं मन लाय। जानि यहै अपने हिये कियो न ग्रंथ प्रकास। नृप को आयसु पाइ कै हिय मैं भयो हुलास ॥ करैं सात सौं दोहरा सुकवि विहारी दास। सव कोऊ तिनको पढ़ै गुनै सुनै सविलास वड़ो भरोसो जानि मै गह्यो आसरो आय। याते इन दोहान संग दीनो कवित लगाय। उक्ति युक्ति दोहान की अक्षर जोरि नवीन करै सात सै कवित मैं पढ़ै सु कवि परवीन ॥ मै अति ही ढीठ्यो करी कवि कुल सरल सुभाय। भूल चूक कछु होय सो लीजो समुझि वनाय ॥ इति श्री सतसई टीका कृष्णदत्त विरचिते संपूर्ण समाप्त. शुभम लिपतं शिवदास व्राह्मण मथुरा निवासी संवत १८२४ फाल्गुन कृष्ण ११ दशी ॥ श्री राम राम राम राम राम।

विपय—विहारी लाल की सतसई की टीका व्याख्या सहित कवित्त, सवैया, आदि में की गई है ॥

संख्या २४८ वी. सतसई टीका, रचयिता—कृष्ण कवि, कागज—देशी, पत्र—१३५, आकार—८ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४५५, पूर्ण या खडित। रूप—गलित, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प्रकाशसिंह जी महाराजा, ग्राम—मल्लापुर, डाकघर—मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—२४८ ए के समान।

पुष्पिका नहीं है।

संख्या २४९. भगवद्गीता भाषा, रचयिता—कृष्ण भनि, कागज—देशी, पत्र—४१०, आकार—७ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)—८००, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७१ = १८१४ ई०, लिपिकाल—सं० १८७५ = १८१८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गणेशबिहारी मिश्र गोपालगंज, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ दोहा—धर्म क्षेत्र कुरु क्षेत्र में मिले युद्ध के साज, संजय मो सुत पांडवन कीन कैस काज ॥ १ ॥

अंत—अर्जुन मसती हूँ कहै सजय व्यक्तिस तीन। एक कहो दो जदि मिलि एक धृतराष्ट्र प्रवीन ॥ इति भगवद्गीता महात्म समाप्त संपूर्ण ॥ गीता की महिमा कोउ कहि न सकै जग माहि। कृष्ण कृपा सूं पाइये कृष्ण कृष्ण भनि गाइ ॥ शुभ संवत्सरे श्री नृपति विक्रमादित्य राज्ये १८७५ शाके सालि वाहनस्य १७४० ॥ मासोत्तमे मासे माघ पद पंचम्यां भृगु वासरे शुभ मस्तु ॥ लेखक पाठक चिरायु रस्तु ॥ धर्म दृढ़ाय ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥ गुरु विप्र प्रसादात ॥ श्री कृष्णायनमः ॥ श्री सीता रामाय नमो नमः ॥ इति

विषय—भगवद्गीता का भाषानुवाद।

संख्या २५० ए. रस रहस्य, रचयिता—कुलपति मिश्र (आगरा), कागज—बादामी बसी, पत्र—९५, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९२४ पूर्ण, रूप—नवीन पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२७ = १६७० ई०, लिपिकाल—सं० १९४४ = १८८७ ई, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण बिहारी मिश्र, मालेस हाउस लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसरहस्य लिख्यते ॥ कवित्त ॥ पैसेई कुंज बने छवि पुंज रहे अलि गुंजत यों सुख कीजै ॥ नैन विशाल यहै बन माल विलोकत रूप सुधा भरि पीजै ॥ आमिनि वाम की कौन गनै बग आतन जानि मैं ज्यों छिन छीजै ॥ आनंद यों उमग्योई रहै पिय मोहन को मुख देखिबो कीजै ॥ १ ॥ दोहा ॥ कुमति निसा छिन की जरनि मंडन प्रीतम धाम। सुमिरत फूलैं कवि कमल बरन पति घनस्याम ॥ २ ॥

अंत—दोष बिते भूषनतु के न्यारे कहेहि न जाहि ॥ जे दूषन परिहै कहे उनही मौहि समाहि ॥ २८ ॥ बसत आगरे नगर मैं गुन रूप सील विलास। विप्र मथुरिया मिश्र है हरि चरनन कौ दास ॥ २९ ॥ अमू मिश्र तिन बंश मैं परस राम जिमि राम। तिनके सुत कुलपति कियो रस रहस्य सुख धाम ॥ ३० जिते साज हैं कवित के मम्मट कहे बखानि। ते सब भाषा में कहे रस रहस्य मैं आनि ॥ ३१ ॥ सवत सत्रह सै बरस बीते सत्ता ईस। कातिक बदी एकादसी वार बरनि बारीस ॥ ३१२ ॥ इति श्री मिश्र कुलपति—विरचिते रस रहस्य अर्थालंकार निरूपर्ण नाम अष्टमो वृत्तांतः ८ शुभं संवत १९४४ कार्तिक शुद्ध-दसम्यां बुधे ॥

विषय—प्रथम गणेश आदि की वंदना के पश्चात् काव्य लक्षण उत्तम काव्य भेद, इत लक्षण विभावानुभाव, अनुभावानुकारि, संचारी भावों की कारिका, रौद्र रस तहाँ

विभाव अद्भुत रस तहां विभाव, सांत रस तहा विभाव, राजरवि भाव, रमा भास भावा भास लक्षण, अलकार वर्णन, भाव को अंग व्यंग करिके प्रकट, सुन्दर लक्षण प्रकट, न्यून पक्ष लक्षन, शब्दार्थ प्रभद लक्षन, धर्म लुप्ता, धर्म वाचक लमुञ्चा। द्वितीय अध्याय में शब्दार्थ निर्णय।

तृतीय अध्याय में ध्वनि, रस और रसाभास आदि का वर्णन। चतुर्थ अध्याय में व्यग। पंचम अध्याय में दोप कहे गये हैं। छठे में गुणों का वर्णन। सातवें शब्दालंकारों का आठवें में अर्थालंकारों का वर्णन है।

संख्या २५० बी रस रहस्य, रचयिता—कुलपति मिश्र (आगरा), कागज—देशी, पत्र—१५०, आकार—११३/४ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२७ = १६७० ई०, लिपिकाल—स० १९५२ = १८९५ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि-अंत—२५० ए के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री दास कवि विरचिते रस रहस्य अर्था लकार निरूपनं नाम अष्टमो वृतात समाप्त शुभ मस्तु संवत १९५२ जेठ सुदी ४ भौमवार ॥

संख्या २५० सी. रस रहस्य, रचयिता—कुलपति मिश्र (आगरा), कागज—साधारण, पत्र—७५, आकार—१२३/४ × ६३/४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४९५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२७ = १६७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री महादेव प्रसाद पाडे, हाई स्कूल अध्यापक, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि-अंत—२५० ए के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है :—

इति श्री मिश्र कुलपति विरचिते रस रहस्य अर्थालङ्कार निरूपण नाम् अष्टमांवृत्तान्त सम्पूर्णम्। समाप्तो ऽय ग्रथ शुभमस्तु।

संख्या २५१. रामायण महात्म्य, रचयिता—कुंदनप्रसाद, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—३२, आकार—११ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१३ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृपानारायण शुक्ल, ग्राम—मुंशीगंज कटरा, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ सरस्वत्यै देव्यै नम ॥ श्री गुरु चरनण कमलेभ्यो नमः अथ रामायण महात्म्य लिप्यते ॥ दोहा गणपति गुरुगोविन्द गो गिरिजा गिरिजा नाथ ॥ सुमिर आन पद कमल पुनि पुनि नावहु माथ ॥ १ ॥ दोहा ॥ रामायण महात्म्य को पूरण करता जान ॥ ताते विन वहु फारती मानस कायक वानि ॥ २ ॥ सोरठा ऐसी सुमति न लेस

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

* * * *

[illegible]

दीजो ॥ मिलत सजन के वट घुटे । कितनी करौं सुमार । ब्रह्मा विष्णु महेश कहि । भोजन करौं कुमार ॥१॥ इति पातरि छुटावन संपूर्णं समाप्तं ॥ सवत् १६१५ ॥ वैशाप वदि मावस्या, मंगलवार लिखितं मिश्र छेदीलाल ॥ पठनार्थं इमतं लाल ब्राह्मण सुभं ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० २२ तक—पत्तल छुटावन—म० सु, राम तथा लक्ष्मण के जनकपुर आगमन समय से धनुष भंग, जयमाल धारण । बरात आगमन, धारौठी । विवाह तथा भांवरि पर्यंत विषयों का साधारण वर्णन । ज्योंनार के समय स्त्रियों द्वारा बांधे गये पकवानादि को छुड़ाकर स्त्रियों के वस्त्राभूषणादि को बांधकर बरातियों को भोजन करने की आज्ञा देना ।

पृष्ठ १ में पुस्तक निर्माणकाल :—एक सहस पर आठ सै । संवत सुभ तेतीस । दुतिया सुदी वैशाप में । कृपा करी जगदीस ॥

संख्या २५२ बी. ऊषा चरित्र बारह खरी, कागज—साधारण, पत्र—१८, आकार—८३/४ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला गजाधर प्रसाद, ग्राम—कूराडीह, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ऊषा चरित्र बारह परी ॥ कुज जन की लिष्यते ॥ कके ॥ कृष्ण कुवर गोविंद मनाऊं । सकर गवर गजानन धाऊं ॥ नव दुर्गा धौलागढ़ रानी । देहु मातु मोहि निर्मल वानी ॥ सव तीरथ मुनि सहस्र अठासी । वदौं नाथ-शिद्ध चौरासी ॥ ब्राह्मादिक सनकादिक धाऊ । सेस सहस मुष कूं सिर नाऊ ॥ सिंध सुता जगदीस के । वेद चरण चितलाय । कठ वर्सो जन कुज के । सुप निधि सारद माय ॥१॥

अंत—छत्रपती रथ सों रथवारे । पायक मों पाय करन मडे ॥ श्रोणित नदी वही अतिभारी । मच्छ कच्छ गज सुडि प्रचारी ॥ भूत प्रेत गनलाय पिसाचा । भैरव संग सदा सिव नाचा ॥ भूत प्रेत जोनिन इतरावें । भरि भरि उदर ईस गुण गावें ॥ मुड मलेकर ताल वजावें । जवुक गिद्ध विद्ध गुण गावे ॥ रन वाजे वाजे चहुं ओरा । गरजें सूर चिंघारे घोरा ॥ ढिमिगि ढिमिगि धरनी कपै सेस सहस मुष हरिहर जपै ॥ भयो कुलाहल सव्द जहँ । भिरत वान सूंवान । मानों दामिन गरजिकैं । गिरति धरनि पर आन ॥

विषय—ऊषा और अनिरुद्ध के प्रेम और विवाह की कथा ।

संख्या २५३ ए. सांगीत बालचरित्र, रचयिता—कुवरसेन (दिल्ली), कागज—देशी, पत्र—१४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९६ = १८३९ ई०, लिपिकाल—सं० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला सीताराम, संगीतशाला, ग्राम—दीनापुर, डाकघर—गोला गोकरननाथ, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सांगीत बाल चरित्र कृष्ण जन्म दशम स्कंध भागवत का लिष्यते ॥ सदा भवानी दाहिनी गौरीपुत्र गणेस, पांच देव रिच्छा करैं ब्रह्मा विशुन महेश ॥ गुरु को सीस नवाय के अपनी मत अनुसार । लीलाकरूं मैं श्याम की पूरण ब्रह्म औतार ॥ पानी में औ पवन में चद्र सूर्ज में जोता जग मग सव संसार में । तेरा रूप

अनूप ॥ जो याको चित स पढ़े हरि से कावे ध्यान । वापर कृपा करेंगे श्री कृष्ण भगवान ॥ श्याम सरूप मगक करन सिर पर सोहै ताज । दाता सकल जहान के श्री कृष्ण महाराज ॥ प्रभु जी श्री कृष्ण भगवान आप संसार के दाता । तुमी गरीब निवाज निवाऊं तुमको माथा ॥ प्रभु जी हाथ । तुम्हारे लाज तुम्ही को जोड़ हाथा ॥ तुम सबके सिर ताज और सब के पितु माता ।

अंत—इसी तरह जाते वहाँ बनका श्री घनश्याम प्रात समै सब धेनु कै और आते नित श्याम ॥ गाय था कोई बालपन मिल पाये आरम्भ । रहे बंस बसका सदा दया करैं श्री श्याम ॥ करैं परीक्षित अर्ज यों सुमिये दीन दयाल । ब्रज जनता के मन बसे कृष्ण चंद गोपाल ॥ स्वामी श्री कृष्ण चंद गाराल प्रीति जो श्याम से भाई । कहकें से मेंह मेह प्रीति मारतारम भाई ॥ स्वामी जी नहीं कुंवे का मोह प्रीति संसार हटाइ । हैगी महीं मुराद मिले हमें कुंवर कन्हाई ॥ कृपा करके मुझमे कहो अपनी तरह बड हाथ । मैं सेवक हूं आपका सुमिये दीन दयाल ॥ जवाब ॥ कहां रहा करजंद फिर कहां रही फिर नारि । मन आकर बस गया जब प्यारा दिलदार ॥ इति श्री सांगीत बाल चरित्र कृष्ण चंद्र भगवान संपूर्णम् संवत उन्नीस सौं उनसठ फागुन कृष्ण दुईज अति सुंदर ग्रंथ कियो संपूरण नाम कृष्ण चंद्र ने पूरी आस ॥

विषय—कृष्ण जन्म (गीतों में)

संख्या २५३ बी. सांगीत गोवरधन लीला, रचयिता—कुंवर सेन कायस्थ (दिल्ली), कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२३, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९४ = १८३७ ई०, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला सीताराम, संगीतशाला ग्राम—सीतापुर, डाकघर—गोलागोकरननाथ, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गोवरधन लीला लिख्यते ॥ दो ॥ करैं श्री शुकदेव जी सुलिये प्रजा पाल । मीठी श्री बरषा करैं मसे । दीनदयाल ॥ प्यारे जी ऐसे दीनदयाल मास कातिक का आया । हुआ मगन संसार जहान गुलजार बनाया ॥ राजा जी श्री नंद महाराज ध्यान उनको यह आया ॥ सब ही ब्रज के लोग यही मन मांहि समाया ॥ अरज करैं हम ब्रजमें सब ही हुए तैयार । बैठे बृजवासी सब ही सभा करी गुलजार ॥ प्यारे जी सभा बनी गुलजार सब ही असबाब मँगाये । कृष्णचंद महराज लोग आदर से बिठाये ॥

अंत—प्रभु जी कृष्ण चन्द्र महाराज करी इन्द्रासन की त्यारी । ताज धर सिर पर ताज करी हस्ती पै सवारी । प्यारे जी कामधेनु के संग और साड़ी सिर धारी । भाई जमुना की लहर आई आ बाढ़ बहारी ॥ आवागमन से छूटे वही हो भव सागर पार ॥ चरण कँवल का कुवर आसरा रखे नंद कुमार ॥ इति श्री सांगीत गोवर्धन लीला कुंवर सेन कृत संपूर्ण समाप्तः संवत १८९४ वि० लिखा दुर्गाराम पंडित भवानीगंज संवत १९३१ कातिक शुक्ला १२ मंगलवार शुभम् ॥

विषय—गोवर्धन पूजा जो राजा इंद्र के लिये होती थी सो पूजा श्री कृष्ण चन्द्र जी

द्वारा बंद कर देने पर इन्द्र का कुपित होकर ब्रज पर अखंड मेह का बरसाना श्री कृष्ण जी का वृज की रक्षा करना इन्द्र का मान मर्दन होना भगवान श्री कृष्ण जी का इन्द्र आदि की स्तुति करना आदि वर्णन।

संख्या २५४ ए. गीता, रचयिता—कुसलसिंह, कागज—साधारण, पत्र—४९, आकार—९३/४ × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—९३१, पूर्ण, रूप—जीर्णशीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२२ = १८६५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गयादीन सिंह, ग्राम—नौहर हुसैनपुर, डाकघर—रम्हा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गनेस जी सहाये ॥ श्री रामजी सहाये ॥ श्री पोथी गीता लिष्यते ॥ श्री × × × ॥ चौपाई ॥ श्री गुर बिभु के चरन मनावौं। जेहि प्रसाद गोविंद गुन गावौं ॥ श्री कृष्ण अरजुन रस बानी। गुरु प्रसाद कहौं कछु जानी ॥ एक समै श्री जादौं राई। अर्जुन साथ भए इक ठाई ॥ धूप दीप लै आरत कीन्हा। चरनोदक लै माथे दीन्हा ॥ हाथ जोरि अर्जुन भौ ठाढ़ा ॥ प्रेम भगत हिरदे में बाढ़ा ॥ दोहा ॥ नंदलाल के चरन जिव, पावत पद निरवान। सकल उठै बल लाएउ, सुनौ जो चतुर सुजान ॥ अरजुन कहे दुवो कर जोरी, परब्रह्म सुन विनती मोरी ॥ संसै एक अहै प्रभु मोरे। कहत हौं दोनो कर जोरे ॥ श्री कृष्ण बोले बिहँसाई। अरजुन कहौं कहौं समुझाई ॥ दोहा ॥ राम नाम गीता कहै, अरजुन की उनसार। सकल सिष्ट सुनु चित्त दै, मुकति होइ संसार ॥

अंत—साधु चरन मनहिं मौ राषा। प्रगट होए मन बहुत न भाषा ॥ तबहीं तन मन भए उदासा। साधु चरन करौं मैं आसा ॥ एहि जो राषै सब चित लाई। तब दया सब कीन्ह गोसाई ॥ जब कछु ज्ञान हृदै मह आवा। अर्जुन गीता ते मन भावा ॥ एहि विधि गुरु दया तब कीएउ। सबै छुटि निरमल तन भएऊ ॥ दोहा ॥ गुर देआल मो कहँ, छूटि गये सब प्रान। राम नाम चित पावै, और न हिआ मैं आन ॥

इति श्री पोथी गीता संपूरनम् ॥ समाप्तं ॥ शुभ मस्तु ॥ सिद्धिरस्तु ॥ संवत् १९२२ ॥ मिती चैत्र सुदी ॥ ११ ॥ गुरुवार ॥ हस्ताक्षर लल्लूराम पंडित ॥ श्री मथुरा जी मध्ये बलदेवजी के मंदिर के पीछे बैठक दुकान ॥ श्री रामजी ॥

विषय—(१) पृ० १ से १५ तक—मंगलाचरण, मानव योनि की सर्व श्रेष्ठता, उत्तरोत्तर उसका श्रेणि विभाग, तपस्या के काठिन्य का वर्णन, राम नाम माहात्म्य, भक्त माहात्म्य मोहन नाम की व्याख्या, भक्ति भाव वर्णन। भक्त के कष्ट से प्रभु का परिताप।

(२) पृ० १५ से २६ तक—गुरु करने आदि का विचार, गुरु से प्राप्त नाम की महिमा।

(३) पृ० २६ से ४४ तक—पाप विचार (हत्या तथा ऋणादि वर्णन) पापों के फल, धर्मात्माओं का जीवन, प्राणी के चण्डाल होने का कारण, दान फल वर्णन।

(४) पृ० ४५ से ५६ तक—भजन के लिये आसन विधान, जप विधान, माला विधान, भोजन में छुआछूत का विचार, भोग लगाने का विधान, जापक भक्त का महत्त्व, नाम का प्रधानत्व, पाप पुण्य का भेद।

(५) पृ० ५१ से ६६ तक—पंचाक्ष, ज्ञान ध्यान प्राप्ति का उपाय, भगवान के मन पर अधिकार रखने वाले भक्तों का वर्णन, पवन विचार।

(६) पृ० ६६ से ९८ तक—व्यास जन्म की कथा, महाभारत-पुराण का व्यौरा, संकटों के नाश होने का उपाय, गज-ग्राह आख्यान अन्य भक्तों के संकटों के दूर होने का वर्णन, पुनः नाम की महिमा अर्जुन की विनय, ग्रंथ की उत्पत्ति का कथन व नाम वर्तमान भाषा, ग्रंथ का रचयिता—"किन्ह ए भाषा कुसल सींघ नामा। श्री गुरुदेव श्री सीता रामा॥"

संख्या २५४ बी अर्जुनगीता, रचयिता—कुसलसिंह, कागज—साधारण, पत्र—३०, आकार—१३¾ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८०, पूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामवराम, अध्यापक प्राइमरी स्कूल, ग्राम—भाममऊ, डाकघर—गड़वारा जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ श्री अर्जुनगीता प्रारम्भः॥

हे यादव गोपी रमण नीरज वरन तनु स्याम। अर्जुनगीता रचत हौं। करिके तुमहिं प्रणाम॥ १॥ विघ्न हरन सब सुख करण, गणपति प्रथम मनाय। छन्द बन्द गीता कहउँ भाषा महँ सुप दाय॥ २॥ मोक्ष हेतु है साप कहँ, गीता करौं विचार। अकथनीय है ईस जस। कहौं बुद्धि अनुमार॥ ३॥ गुरु के पद पंकज निधाइ। तिनहीं को धरि ध्यान। सर्व विश्व पावन करन। भाषौं गीता ज्ञान॥ ४॥

अंत—श्री गोविंद औ पार्थ मिलि, परम गूढ़ यह कीन्ह। तिनके चरण कमल चित कुसल सिंह चित दीन्ह॥ श्री मुख गीता अमृत बानी। गुरु प्रसाद भाषा रस सानी॥ बुद्धि ज्ञान गुरु हमको दीन्हा। उत्तम ग्रंथ देपि के कीन्हा॥ नाम भेद हम गुरु ते पावा। कृपा कीन्ह ज्ञान माहिं आवा॥ दूसरे कीन्ह साधु की सेवा। तिनकी कृपा पायउँ मेवा॥ देखउ बूझि जो हृदये माही। राम नाम ते आन न आही॥ अपर माया मिथ्या जाना। पुनि पाये संकर कर ध्याना॥ देखेउँ जग छोड़ थिर नाहीं। मिथ्या करि जानेउँ चित माहीं॥

× × × ×

गुरु दयाल भो मोहिं पर। छूटि गयौ सब भर्म। राम नाम चित लायेउँ। अवर न कीन्हेउँ कर्म॥ सब पोथे मा मिलि सकै। ना छोड़ पायें बास। पाये अर्जुन भक्त जे। छूटी और की आस॥

इति श्री कुसलसिंह विरचित अर्जुन गीता समाप्ता॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—मंगलाचरण, अर्जुन का प्रश्न सबसे बड़ा कौन है?—भगवान का उत्तर मेरा नाम जपने वाला, नाम की महत्ता का कथन।

(२) पृ० ९ से पृ० १४ तक—भक्त के गुणों का वर्णन। भक्तों की महत्ता और उनमें परमात्मा के सामीप्य का वर्णन, गुरु की महिमा, भक्तिभाव का वर्णन, गुरु बनने का विधान, गुरु की स्तुति, पापों का वर्णन और उनसे मुक्त होने का उपाय।

(३) पृ० १५ से पृ० ५१ तक—दंड विधान, पाप पुण्य उत्पत्ति, प्राणी के पंचाक्ष

होने का वर्णन, दान विधान, ध्यान करने के आसनादि का विधान, वंशनाश होने के कारण, पंचरत्न का वर्णन, पवन-गवन, आदि कुछ योग संबंधी प्रयोग, व्यास की उत्पत्ति का वर्णन।

(४) पृ० ५७ से पृ० ८० तक--व्यासकृत अष्टादश पुराणों के नामादि का कथन, संकटों से भक्तों की रक्षा का विधान और गज ग्राह की कथा का सूक्ष्म वर्णन, अन्य भक्तों के संकट मुक्त होने का वर्णन, अन्य कर्म धर्मों का विवेचन, ग्रंथ के पठन-पाठन और श्रवण-मनन का फल।

संख्या २५५ ए. गोपीचदलीला, रचयिता—लछिमन दास, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—९ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण, (अनुष्टुप्)—६००, रूप—प्राचीन, दुर्बोध, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०५ = १८४८ ई०, लिपिकाल—सं० १९१५ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामभरोसे, ग्राम—केवलपुर, जिला—खीरी।

आदि—दो० ॥ हुकुम हमारा मानिये तुम कू होत अवेर। लावो कुवर वुलाय के सो न्याव करेंगे फेर ॥ प्यारे जी न्याव करेंगे फेर अरज एक सुनो हमारी। भोजन भये तयार भरी सोरन की झारी ॥ प्यारे जी क्यों ठाढे दल गीर। करो क्या सोच विचारी वो मेरे भरतार नारि मैं उनकी प्यारी ॥ दो० ॥ हम नौकर सरकार के दई नौकरी खाय ल्याउ कैसे वुलाय के सो राजा वहुत रिसाय ॥ रानी जी राजा वहुत रिसाय वैठि जहं न्याव चुकावै ॥ लेकर चावुक हाथ मारि मेरी खाल उड़ावै ॥ रानी जी तुम हो राज कुवारि हुकुम तेरा री वजाऊं। चार घड़ी गम खाउ वोल राजा को लाऊं ॥

अंत—दो० ॥ गुरु जालंधर सुमिरि के गये मढ़ी के पास लछिमन की आधीनता पूरन हो गई आस ॥ प्रभु जी पूरन हो गई आस मिले जव सत गुण खासे ॥ सुनो सभा चितलाय रहे ना भूखे प्यासे ॥ माता धन्य सरस्वती माय सोई हिरदे परगासे। लछिमन है आधीन मिट गये संकट सासे ॥ इति श्री गोपी चद लीला संपूर्ण शुभम् सवत १९०५ वि० कृष्णएकादस्याम श्रावण मासे लिपत शंभूदयाल वाजपेई सवत् १९१५ वि० ॥

विषय—गोपीचंद की कथा ॥

संख्या २५५ बी. गोपीचंद भरतरी, रचयिता—लछिमन दास, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०५ = १८४८ ई०, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला सीताराम, संगीत शाला, ग्राम—दीनापुर, डाकघर—गोलागोकरन नाथ, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनम् ॥ अथ गोपीचन्द भरतरी लिप्यते ॥ शुभ घड़ी वर्णन करू धर देवी का ध्यान। गोपीचंद लीला कथू सुधारा नगर सुथान ॥ चौवोला ॥ प्यारे जी धारा नगर सुथान भये गोपिचन्द राजा। तपे धर्म के राज करत हैं सव के काजा ॥ प्यारे जी हस्ती हस्ती घूमे द्वार वजे तेरे नौवत वाजा। लछिमन हैं आधीन प्रभू मेरी राखा

लाबा ॥ जबाब रानी का ममयसिंह कपोती मन से ॥ रतन कुमर रानी कहै सुनो अमयसिंह बात । तुम जावा दरबार में जी राजा जिवावो साथ ॥ प्यारे जी राजा जिवावो साथ कहै कामनी रंग भीनी । राम रसोई त्यार आज है मैंने कीनी ॥ प्यारे जी आना तुरंद जकेर आज तुम सू कह दीनी । रिवै आवे परसाद रैन मोहि भई विहीनी ॥

अंत—॥ चौबोला ॥ देस देस रमते फिरैं सात द्वीप नव खंड । फिर कर पीछे देस स्मौं तो भगिन भई परचण्ड ॥ बाई जी भगिन भई प्रचण्ड महल की जरत अटारी । राजा बहुत रिसाय भई सब कंचन कारी ॥ प्रभू जी बहन दे फेरी पीट किये पैसे कल भारी । रोवत छोरी बहन मिही होऊ सुरत प्यारी ॥ दोहा ॥ गुरू जालंधर को सुमिरी के गये मढी के पास । लछिमन की माबीनता तो पूरण हो गई आस ॥ चौबोला ॥ प्रभू जी पूरण हो गई आस मिले अब सतगुरू वासे । और सबु सबी चित आम रहे ना भूखे पिप्यासे ॥ माता जी जम्प सरस्वती माथ साई हिरदे पर गाजे । लछिमन है आधीन मिटे सब संकट सांमे ॥ इति ॥ लछिमन दास कृत राजा गोपिचन्द भारती लीला संपूर्ण समाप्तम् स० १६०५ वि० लिखतं देवी राम पंडित मवानी गंज सम्वत १९११ कार्तिक शुक्ला १५ मंगलवार शुभ ॥

विषय—राजा गोपीचन्द की लीला वर्णन ॥

संख्या २५५ सी. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—लछिमन, कागज—देसी, पत्र—४८, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१२, पूर्ण या खंडित । रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०० = १८४३ ई०, लिपिकाल—सं० १९१२ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—प० गंगा गनेश, ग्राम—सुर्जापुर, डाकघर—मोयल, जिला—खीरी ।

आदि—कुम्हारी वाक्य प्रह्लाद से ॥ पैदा कर पालन करी करी जगत व्योहार अलख पुरुष कोई ना कहैं वाकी जोत अपार ॥ प्यारे जी वाकी जोत अपार रची जिन जग में माया । पानी से नर देह रची जिन कंचन काया ॥ प्यारे जी सब घट रहे विराज पार जिनका नहिं पाया कोइ राम नाम रट गया ने सेष को लाया ॥ प्रह्लाद वचन कुम्हारी से ॥ क्यों छोड़ै झक मारती कहूं वचन समझाय भगत बचाये ना बचै तुरत भस्म हो जाय ॥ कुम्हरी री तुरत भस्म हो जाय बचैंगे नाहिं बचाये तोड़ चढ़ै अपराध जीवते जगत बहावै ॥ कुम्हरी री क्या हमकी सुमिपाद नाम बचे कहलाये । ये बचन के नाहिं काठ के मिट्टहिं जाये ॥ कुम्हरी का वचन प्रह्लाद से ॥

अंत—प्रभु जी राज दिये प्रह्लाद तपस्या भारी कीनी ॥ लक्ष्मी पर दिये हाथ उनोंने अस्तुति कीनी ॥ अस्तुति करिके देवता सब गये निज निज स्थान । प्रह्लाद लीला पूरी भई हरि भये अंतर ध्यान ॥ प्रभु जी हरि भये अंतर ध्यान रूप नरसिंह लिया के सभी भवी सुन लेय कही मैं लीला गाके ॥ प्रभु जी कहै लछिमन कर जोर नवो हर सीस मवा के जम की कट जाय त्रास बसो बैकुण्ठ में जाके ॥ इति श्री प्रह्लाद लीला संपूर्णम् शुभमस्तु संवत् १९०० कृष्ण चतुर्दसी माघ मासे लिखत रामूरपाल बाजपेई संवत् १९१५ वि० ।

विपय—प्रहलाद जी की ईश्वर भक्ति ॥

संख्या २५५ डी. प्रहलाद सागीत, रचयिता—लछिमन दास, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०० = १८४३, लिपिकाल—सं० १९२९ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला सीताराम, संगीतशाला, ग्राम —दीनापुर, डाकघर—गोला गोकरन नाथ, जिला—खीरी ।

आदि-अंत—२५५ सी के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री प्रहलाद लीला संपूर्ण समप्त' लिखा भैरोंसिंह विसेन १९२९ वि० ।

संख्या २५६. शकुंतला नाटक, रचयिता—लक्ष्मण सिंह (आगरा), कागज—देशी, पत्र—१३५, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६९४, पूर्ण, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१८ वि०, लिपिकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री ज्ञानसिंह, ग्राम—चरगाँव, डाकघर—नैती, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ शकुतला नाटक लिष्यते ॥ प्रस्तावना ॥ रंगभूमि में ब्राह्मण आशीर्वाद देता हुआ आता है ॥ छप्पय ॥ १ ॥ आदि सृष्टि इकनाम नाम इक विधि हुत वाहन । बहुरि नाम जजमान जोटि द्वै काल बतावन । एक सर्व व्यापीक श्रवन गुन जात पुकारा । भूत प्रकृति फिर एक जनति अग जग संसारा ॥ गनिए जु जीव आधार पुनि अष्ट मूर्ति इनते कहत । संकर सहाय तुम्हारी करैं नित प्रति तिनहीं में रहत ॥ अर्थ ॥ जिसको करता ने सृष्टि की आदि में रचा अर्थात जल और जो विधिपूर्वक दिये हुए हव्य को लेता है अर्थात अग्नि और जो जज्ञ करता है अर्थात होत्री और दोनो जोति जिनसे समय विधान होता है अर्थात् चंद और सूर्ज और वह विश्वव्यापी जिसका गुण शब्द है अर्थात वह आकाश और वह जिसकी प्रकृति बीज की वृद्धि है अर्थात पृथ्वी और वह जो जीव का आधार है अर्थात् पवन इन आठ मूर्तियों मेसे जो ईस प्रत्यक्ष है अर्थात् महादेव जी सोई तुम्हारी रक्षा करैं ॥

अंत—शिखरनी—प्रजा काजे राजा नृत सुकृत पै उद्यत रहैं । बड़े बड़े सानी हित सहित पूजें सरसुती । उमा स्वामी शंभू जगत पति नीलोहित प्रभू । छुटावै मोह को विपति अति आवागवन सों । कश्यप तथास्तु सब बाहर जाते हैं । १९९ का अर्थ राजा लोग अपनी प्रजा के सुख निमित्त अच्छे काम करे वेद पाठी ब्राह्मण सुरसुती की सेवा करते रहैं और नील लोहित रंग महादेवजी मुझे आवागमन की पीड़ा से छुटावै ॥ इति श्री अभिज्ञान शकुतला नाटक राजा लक्ष्मणसिंह कृत सपूर्ण समाप्त । लिपतं ठा० ज्ञानसिंह वटेश्वरं निवासी निज पाठनार्थ सवत १९२३ वि० ॥

विपय—शकुन्तला और राजा दुष्यन्त का आख्यान ।

संख्या २५७. श्रीकृष्ण रत्नावली, रचयिता—लक्ष्मीपति, कागज—देशी, पत्र—१३३, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—१५९६,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—शक् १७४८ (सं० १८९१), लिपिकाल—सं० १८९०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदीन बाजपेयी ग्राम—औरंगाबाद, डाकघर—औरंगाबाद, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री कृष्ण रत्नावली लिख्यते ॥ श्री गुरु चरण सरोज रज पर धरौं सीस कर जोरि ॥ कृपा सिंधु गुरु ऐसि है लक्ष्मी पति के वारि ॥ करम जहाँ भाषा विमल हरि अर्जुन संवाद। कृष्ण रत्नावलि नाम धरि केवल गुरु परसाद ॥ चौ० ॥ बर्णौ व्यास देव कपि चरणा। विमल विवेक दुख मल हरणा ॥ जाके चरण कमल जगपावन। गीता अर्थ सुधास सुभावन ॥ नाना चरित केसर कलि सोपन। हरि गुन कथा विविध संचायन ॥ सज्जन मद् पद गुंजत पासा। दिन दिन पावत परम हुलासा ॥ ऐसे भारत कमल प्रकासा। पुन्य करन जग पाप विनासा ॥ बसुदेव सुत सौं देवी अपारा। जो चाहत मुक्ति को भारा ॥ देवकी हृदय आनंद के करता। बर्णौ कृष्ण जगत गुरु भरता दो० ॥ *मूक वेद पढ़िबो करै पंगु सिखर चढ़ि जाय। जाके कृपा ते होत है अधम ताहि सिरनाइ ॥*

अंत—दोहा ॥ जहाँ कृष्ण जोगेस्वर। जहाँ पारथ धनु धीर। तहाँ विजय श्री संपती मम मति यह सुनु बीर ॥ संजय कहा सकल कहा समुझाई। धृतराष्ट्र से कथा सुनाई ॥ ईश्वर परम पुरुष मन सेवू ॥ करता कारण कारज हेतु ॥ नेति नेति कहि श्रुति जेहि गावै। माधादिक जेहि अंत न पावै। उतपति पालन मरन अमेयी ॥ जरा मरन सबसे ज्यो न्यारा। अर्जुन कैसो बड़ो पियारा ॥ रथ हाकहि प्रभु आपहिं जाके। को जीतै कहु जग मैं ताके ॥ निज मुख से जो गीता गाई। भक्ति आदि करि जोगु सुनाई ॥ कर्म अकर्म विकर्म विचारी। ग्याम अग्याम न विग्याम विचारी ॥ दो० ॥ दीन बंधु निज बदन से *गीता गाय सुनाय ॥ जो जानै जग जोग यह ग्रंथ मुक्ति हुइ जाय ॥ इति श्री गीता कही* हरि अर्जुन से गाय। अष्टादस अध्याय विमल परमारथहिं लगाय ॥ हर भूषण हर बदन बर हर तक हर सिर रूप। ऐसे अंक मिलाय के बीते साके भूप ॥ हर रिपु तिथि हर मयन सुभ मास पख सनिवार। ललन कृष्ण रत्नावली पोथी कियो विचार ॥ नाग नाग सुर चंद्रमा ऐते अंक चौपाई। भूत भूत पर वे बिंदै दोहा मान अमाई ॥ दोहा २२५, चौ० १७८८ ज्यापैकत्र २०४१ ॥ लिपतं स्याम लाल संवत् १८९० मिती माह सुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार सन् ११४० साल माह २८ ॥ समाप्त ॥ श्री राम राम राम ॥

विषय—दोहा भाषा चौपाई में गीता वर्णन।

संख्या २४८. *वैद्यक सार, रचयिता—लक्ष्मीप्रसाद तिवारी (सरायराजा, प्रताप गढ़)* कागज—साधारण, पत्र—२४, आकार—८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९४४ पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामौतार, अध्यापक प्राइमरी स्कूल ग्राम—आममऊ, डाकघर—गौरबारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्यक सार लिख्यते ॥ सुदरसन चूरन ॥ अवरा ॥ हरा ॥ बहेरा ॥ हरदी ॥ दारु हरदी ॥ भटकटइया ॥ कचूर सोंठी बची ॥ मिरिच ॥ पीपरि ॥ पीपरामूल ॥ मुर्वा ॥ गुरुचि ॥ जवासा ॥ कुटकी ॥ पीतपापरा ॥

नागरमोथ ॥ वनपस्ता ॥ सुगन्ध वाला ॥ नीम के छाली ॥ पुहकर मूल ॥ जेठी मधु ॥ कुंभ्रा के छाल ॥ जवाइनि ॥ इनर जवा ॥ भारगी ॥ सहजन का विआ ॥ फीटकीरी (फिटकिरी ?) फुलर के ॥ वच ॥ तज ॥ कमल का विआ ॥ सग ॥ चदन सपेद ॥ अतीस ॥ वरि आरी कै जरि ॥ सगिन ॥ पिथीवन ॥ वावभिरग तगर ॥ चीत ॥ देवदारु ॥ चाव ॥ तेजपात ॥ परवर का पता ॥ विलरा कद ॥ लगोंग ॥ वसलोचन ॥ कमल का फूल ॥ असगंध ॥ जावित्री ॥ तालीस का पता ॥ चिरायता सव दवा कर आधा होइ चाही ॥ इति सुदरसन चूरन सपूरन ॥ यह सुदरसन चूरन सव जर कै नास कै है या जैसे; सुदरसन चक्र राक्षस की नास करत है ।

अंत—सांप काटे की दवा और मंत्र ॥ नौसादर तीन मासा जल में घोल कर पिला देवे यदि रोगी अचेत हो गया हो तो छुरी आदि से दांत उभाडकर पिलावे और नौसादर व चूना सुवावैं तो होश होगा मगर सिर पर पानी वरावरि डारं और सोने न देवैं ॥ मंत्र ॥ उत्तर दिशि कारी वादरी तेहि मध्य टाढ कालपुरुष एक हाथ चक्र एक हाथ गदा चक्र मारो शत खड जाई गदा मारे सातों पाताल जाइ ॐ हर हर निर्विष शिवाज्ञा ॥ नीव की टेरी से वारवार सिर से पैर तक फेरैं और काटे हुए स्थान पर फूकता जाइ तो विष दूरि होई ॥ इति ॥

विषय—वैद्यक।

संख्या २५६. हनुमान पैज, रचयिता - लाल कवि, कागज—साधारण, पत्र—१३, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कुंवर वहादुर, ग्राम—पढरिया, डाकघर—पट्टी, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—॥ दोहा ॥ प्रथम भानु कवि लाल भनु, धरि गुरु पद पंकज पक । वरनौं हनुमत पैज वल, जात वीर गढ़ लंक ॥ १ ॥ छंद ॥ चरन चढ उदित उदंड करियत प्रचंड भुज दंड चंड खल खंड खड आखंड दढ धर सुन्ड मुन्ड घटनं भुसड सुरसत कंत आनत सतवर संवर्त वोहि कवि लाल भनु अष्ट सिद्धि वरदायकं हनुमंत पैज वरना चहौं देहु वुद्धि गण नायक ॥ १ ॥

अंत—चलत वीर वरवंक हक लंका पर दीन्यो। गिन्यौ गर्भ सव केर गवन उत्तर दिशि कीन्ह्यो ॥ नभ मारग घटकात सिंधु पारहिं कपि आयो। गरजि उठे गभीर सव्द सव कपिन सुनायो ॥ कवि लाल अंजनी के सुत, कूदि पर्यौ कपि फौज में । मिल्यो भालु सा मृगन, चल्यौ राम जहँ मौज में ॥ = इति = हनुमान पैज सपूर्ण (सवत १९४० वि०) ।

विषय—हनुमानजी का लंका दहन और सीता का सदेश लाना ।

संख्या २६०. जयमाल, रचयिता—लालचद, कागज—साधारण, पत्र—५, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, ग्राम—कटरा मेदिनी-गंज, डाकवर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्रीमत् श्री जिन राज जन्म समये इन्द्राद्यचतुर्भुता । इत्या न्हन विराज माव ममया पूजा निजा दापयम् ॥ इन्द्राणी परिवार नृत्य सहिता दर्शा गम्य नृत्यता । नाना गीता विनोद मंगल विधी पूजा कमेरी कृता ॥

छन्द ॥ जन्म जिन राज को जबहि निज जानियो । इन्द्र गुरमेन्द्र सुर सकल भनु मानियो ॥ देव देवांगना चलिय जय कारती । सचिय सुर पति सहित करत जिन आरती ॥१॥

अंत—मध्य जन लोग जिन हो दौ करी । आगल करम क सकल पातक हरै ॥ भक्ति जिन देव की पार उतारती । सचिव सुरपति सहित करत जिन आरती ॥ जिनवर पद पूजा माव पूर्वे कृतामी । स्वपद निज जतो सी माव पूर्णेन्द्र बंधो । जिनवर वर आसा । माननीयः समर्थः ॥ सजपनु जिन चम्पो । लाल चंदः विनोदी ॥

विषय—श्री जिन देव जी की आरती ॥

संख्या २६१ ए. भागवत महापुराण, रचयिता—लालचराम, कागज—देशी, पत्र—५८, आकार—९ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०० रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १५८४, प्राप्तिस्थान—आनंदभवन पुस्तकालय, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ ये नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रथमहिं चरन मनावों ताके सर्व लोक बोदर बस जाके । गनपति के मैं चरन मनावों ॥ सर कथा गोपाल गुन गावों ॥ प्रथम पितामह सृष्टि उपाइ । गुन प्रसाद गुन आय गोसाइ । संकर सुर देवन लीन्हा भस्म चढ़ा सिंगार लीन्हा । जटा मुकुट सिव सदा उदासी । गुन प्रसाद पायेउ अविनासी ॥ उतपति प्रलय आदि ते होई ॥ गहइ संघारे मेरी सोई ॥

अंत—अंबरन्ह अति सिंगार बनाए । पटिन्ह अति मेंसीले लगाए ॥ कहि न जाइ नर जोति अपारा । अंगुरिन्ह जड़े भए मुदतारा । नूपुर सबाद भनु झनकारा सोवत मदन जगावन हारा ॥ कटि कि रही कटि ऊपर चंवारी । मनक मनि जनु डोलै चंवारी ॥ बिबि तीरि दीन्ह बिधि मोरी । अति गंभीर नाभि सुठि मोरी ॥ मीनै पयोधर सुगंध सुहाई । कनक कलस जनु मेत बोढ़ाई ॥ कनक धम जनु भुजा निवार । जनु बिसकुमी चित्र संवारे ॥ रचि रचि चित्र विचित्र बनायो लाइ विभूति देंम तर जाए ॥ दो० अगम पंथ चलि आइस । अंग विभूति लगाइ । जोग जुगति कै पाइल पाइ अजाद बराइ ॥ सो सुप देनि सखी सिद्ध-नारी ॥ कमल नयन को अपह कहानी ॥ गोपिन देह दसा बिसराई । अस जक हीन मीन की नाई । कृष्ण सकल घट अंतरजामी । संतत बिकट मीर तर सामी ॥ जुवती ध्यान ध्यान मन लाए । भगति करत प्रभु दरस दिखाए ॥ तब हरि सुन्दर बदन दिपावा । जनम करम प्रभु दोष नसावा । भगति करति जग जीवन पाए । भगति करति प्रभु जुवति बिम्हाए । दो० ॥ भगति भावरम चापत करि के ध्यावि नमाइ । श्री हरि कथा सजीवनि पीयहु संत मन लाइ । इति श्री हरि चरित्रे दसम स्कंधे श्री भगवते महापुराने रहस क्रीड़ा पालनो नाम एकतीसवो अध्याय । शेष अपूर्ण (आगे के पृष्ठ नहीं ।)

विपय—भागवत की भापा छदो में अभिप्राय केवल श्री कृष्णजी की लीला और क्रीड़ाओं का वर्णन।

सख्या २६१ बी. भागवत भापा दशम स्कघ. रचयिता—लालचराम (रायबरेली), कागज—देशी, पत्र—१४१, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १५२७ = १४७० ई०, लिपिकाल—सं० १८५८ = १८०१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा प्रकाशसिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री सरस्वती नम श्री गुरु चरनभ्यो नमः श्री महा गनाधिपतऐ नमः ॥ श्री हनू चरनभ्यो नम. ॥ दोहा ॥ प्रथम गनेस जलज पद नाह सीस कर जोरि। घटे वढे प्रति ते नही मंत्राक्षर दे जोरि। गन नायक गनेस प्रभु तुम सर्वज्ञ सुजान हरि चरित्र लालच कथा कृपा करहु कल्यान ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश अव गनेसादि सुर सर्व कथा समापित होइ जेहि जानि दीन कृपा कर्न। चौ० ॥ वदौ ब्रह्मा विष्णु महेशा। वहु प्रकार ते देउ उपदेसा। तीनि लोक तुम तीनिउ सव कह। होहु प्रसन्न आजु तुम हम कह ॥ दो० ॥

अंत—॥ दो० ॥ जन लालच वलि जाऊं प्रभु सोधि भागवत सार। वेद पुरान न जानी माया गुण विस्तार ॥ इति श्री हरि चरित्रे दसमस्कंधे महा पुराने श्री भागवते द्विज पुत्र प्रसादो नाम नव्वे मों अध्याय समाप्त शुभ मस्तु संवत १८५८ के साल में माघ वदि नौमी वुध कह पुस्तक लिपी महाराज दुर्गा सिंह। श्री महाराज कुमार श्री वाघू दिनकर साहितासुत श्री महाराज कुमार लाल गोपाल सिंह।

विपय—श्री भागवत दशम स्कध की भापा।

सख्या २६२ ए. अवघ विलास, रचयिता—लालदास, कागज—देशी, पत्र—१२८, आकार—१२ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०० = १६४३, लिपिकाल—स० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामदुलारे मिश्र, ग्राम—गणेशपुर, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अवध विलास कथा लिष्यते ॥ सोरठा ॥ वन्दौ हरि अवतार भक्त काज ने वपु धरेउ। दूरि किये भूं भार असुर मारि सुर सुप दये ॥ दो० ॥ पगु चरन गूगे वचन नैन अंध लहै लाल। वंध्या सुत वधिरे श्रवण जो हरि होहिं दयाल ॥ २ ॥ स्वेत वसन धर चन्द्र सम मुप प्रसन्न भुज चारि। विघन हरन मगल करन लाल विश्नु उर धारि ॥ लाल भक्ति भगवत की कृपा कछू जो होइ। सज्जन मन रंजन कथा कहौं सुनै सव कोइ ॥ ४ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ वन तरु गिरि सर वास करि सिय लछिमन सग साज। वालि मारि हति रावनहिं राम करत हैं राज ॥ वन लका की वात को जानत सव ससार। याते लाल कहे नहीं असुरन के सघार ॥ इति श्री अवध विलासे वुद्धि प्रकासे पाप विनासे सव गुन रासे भक्त हुलासे कृर्त लाल दासे राम वन चित्रकूट गमनो विंशति विश्राम संवत

१६६४ मार्ग शीर्ष पंचम्यां चंद्रवासरे अयोध्या नगरी मध्ये लिपतं बिहारी लाल हुये ॥ शुभं शुभम् ॥

विषय—श्री राम चन्द्र जी के वंश का वृत्तान्त अयोध्या नगरी का वर्णन, राम चन्द्र जी के जन्म का कारण, नारद जी का रावण को सूचना देना कि राम जन्म हुआ और तुम्हारा वध वे ही करेंगे आदि वर्णन।

संख्या २४२ सी भरत जी की बारहमासी, रचयिता—अक्षरदास, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य। लिपि नागरी, रचनाकाल—सं० १६६०=१८३३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राम अधार मिश्र, ग्राम—ब्राह्मनगर, डाकघर—अलीमपुर, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ भरत जी की बारह मासी लिष्यते ॥ चैत्र पिछले पाप राम नवमी को जन्म लियो। अवध पुरी सुप धाम सपिन मिलि मंगल धारि कियो। खबरि जब दशरथ ने पाई। दिय दान गज बाजि गाइ दिज धारे की ध्याई॥ सभा सब प्रफुलित है धाई। कर्मं लेखना मिटे नहीं कोई लाषन चतुराई॥ १॥ लागत ही वैसाप केकयी खबरि करि डारी। भूप जीवन धिक्कार भई जब तुलसी महतारी। सुष तैने नगर को दीनो लीलि छोड़ के राम राज को बनबासी कीनो। कूरमति कैसी बनि आई। कर्म लेप नहिं मिटे करो कोई लापन चतुराई॥ २॥

अंत—माह महीना मानि राम ने सुष पायो मन में। जनक जनकपुर को पहु-चायो। भरत अयोध्या में। षड़ाऊं गद्दी धरि दीनी। रामचन्द्र ने कठिन तपस्या भरतहू ने कीनी। बड़ाई चाही में पाई। कर्म लेखना मिटे नहीं कोइ लापन चतुराई॥ ११॥ फागुन फेर हरी सीता जब रावण बस कीनो रावण मारो राम राज्य जु विभीषण को दीनो। आदि अवध पुरी आये शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक दरशन को धाये। राम ने गादी ठहराई॥ कर्म लेखना टरे करा कोइ लापन चतुराई॥ १२॥ सम्मे माछ कीर की भारी आगहन गहन पञ्यो। बांम बरसी के काल राम ने राम नाम उचरयो भरत की यह बारह मासी। गावै सुने परम पद पावै कटै जम की फांसी। वेद मिलि ऐसेही गाई। कर्म लेखना मिटै कराये ई लापन चतुराई॥ १३॥ इति श्री भरत जी को बारामासी सम्पूर्ण समाप्त॥ राम राम राम राम राम

विषय—रामचन्द्र जी के जन्म से बनवास तक का वर्णन।

संख्या २४३ ए. इतिहास सार समुच्चय, रचयिता—कास्ट राम बैस्य (असतल, आगरा), कागज—देसी, पत्र—३६, आकार—६ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६४३=१५८६ ई०, लिपिकाल—सं० १७२३=१६६६ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रामदयाल, ग्राम—मंदा पुरवा, डाकघर—मेरी, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री पर्म गुरुभ्यो नमः ॥ दो० ॥ करत प्रीति हरि भगत सों करुना सिंधु कृपाल ॥ धर्म सिरोमनि दुष्ट मुनि ताहि धरे उर काल ॥ मीम्पो बाच ॥ राजपाल हाव

सुनियो वात। अवहूं तन छांडत हौं प्रान ॥ अति रहस्य भारत आगार। सांती पर्व मध्य सो सार ॥ धर्म महत मन बुधि महेड। सब इतिहास सार सुनि लेइ ॥ सावधान ह्वै समझौ वीर ॥ सो तुम कथा कही गभीर ॥

अंत—वैसंपायनोवाच ॥ व्यास वचन यों पर उपगार ॥ ज्यों पत्यो जम मथ समार ॥ कहै इतिहास जनमेजय राय। सुनत पाप सकल छय जाय ॥ जो नर सुनै कथा इतिहास। होय सकल अकर्म को नास ॥ सब भगवत की कृपा मनाऊं। वार वार गुरु को सिर नाऊं। लाला दास कहै कर जोरि। सुनि कवि गुनी होहिं जिन पोरि ॥ अस्तल नग्र आगरो गांव ऊधौ दास पिता को नाव जात वानियो लालदास। भाषा करि वरन्यो इतिहास ॥ दोहा ॥ लाल सरस इतिहास को व्यास वचन धरि सीस। धर्म वढ़े अरु ज्ञान जस सुनत कथा वत्तीस ॥ सो फल सुनै अठारा पुरान। जो फल गोदावरी गंगा स्नान। जो फल होय केदार प्रसंत। सो फल इतिहास कथा सुनत ॥ सब फल प्राप्ति होइ सुनि कथा। भगति विना नर जीवन व्रथा ॥ अश्वमेध जग्य तीर्थ सनान। सोफल सुनत इतिहास पुरान ॥ इति श्री महाभार्थे इतिहास सार समुच्चय वर्त्तीस मो अध्याय ३२ लिषतं साहव राम पठनार्थी माता स्वामी लछमन दास की लिपि सवत् १७२३ वि० ॥ राम राम राम राम राम ॥

विषय—आदि—महाभारत का सार वर्णन ॥

संख्या २६३ वी. मानसी तीर्थ महातम, रचयिता—लालदास वैश्य (अस्तलनगर, आगरा), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८४० = १७८३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन सिंह, ग्राम—साहपुर, डाकघर—नेरी, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ राम सत्ति ॥ अथ मानसी तीर्थ महातम लिप्यते ॥ जुधिष्टिर उवाच ॥ केहि विधि सर्व तीर्थ फल पाउ। क्यों श्रम रहत धर्म मनु आन तुम सू सुनि सव तीर्थ फल लहूं। मनसा तीर्थ मोसो कहौ ॥ भीष्म उवाच ॥ राजा सुनो हो पुरातम कथा। रूमाचक कही जनक सों जथा ॥ रूमाच सर्व तीर्थ जव नहायो। ऐसे कृत जव जनक के आयो ॥ पूजा करी वहुत मनुहारी। वोले मीठे वचन विचारी ॥ जव यह जनक चलाई वातें ॥ जो कछु मोहि वतावो तातें ॥ तुम स्वामी जानत सव भेवा। मनसा तीर्थ सो कहिये देवा ॥ चाहौं सुनौं अव यह धर्म। मोसो कह्यो महा मुनि मर्म ॥

अत—॥ श्लोक ॥ शूद्रा भगवन भगताविपादो सुपचस्तथा प्रछति जाति तामामि संजाति अधमांगति ॥ सतोषी वैशणव जो होई। विष्णु रूप करि पूजै सोई ॥ तीर्थ और भूमि घर जेते। धर्म सहस्र जो पूजे तेते ॥ तौ लगि तीर्थ फलै न राजा। निरफल वेद क्रिया तप साजा ॥ निर्मल मन प्रसन्न नहीं होई। तौ लगि व्रथा श्रम करै कोई ॥ सुनि यह कथा सुध मन होई ॥ बुधि निहचै प्रीति सौं सोई। मन तीर्थ कहा वषानी। तै छवीस कथा लै जानि ॥ इति श्री मनसा तीर्थ कथा सपूर्ण समाप्ति. सवत् १८४० वि० क्वांर सुदी दशमी ॥

विषय—किसी तीर्थ के जाने से कुछ नहीं है अपने शरीर और इन्द्रियों को वश में ही रखना तीर्थ यात्रा करना है ॥

संख्या—२६४ हरकरंग, रचयिता—सजनपिया (फर्रुखाबाद), कागज—देसी, पत्र—२०, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९१० = १८०१ ई०, लिपि काल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवनारायण, ग्राम—बड़ैया, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मंगल चरन लिख्यते ॥ दो० ॥ आदि देव आदिहि सुमिरि गनपति परमपुनीत । विघन अघन सूचन हरन मंगल करन सप्रीति ॥ श्री सारदा सुमिरत तुम्हें बंद चरन सिर नाय कंठ विराजहु सजन के हित चित रस उपजाय ॥ चौ० ॥ जै जै जै महेश मन ध्यावौं । गौरी कमल चरन चित लावौं ॥ जै सुरपति गणेश गनधा । पवन पुत्र हनुमंत अजेसा ॥ दो० ॥ बंदौं हरि राधा चरण कुमति हरण फल चाह । अर्थ काम धर्म मोक्ष गति जन मन सुखदाताह ॥

अंत—दादरा ओरे का रागनी खम्माच ॥ चलत मग डार गयो सखी टोना ॥ अंतरा ॥ पलक झलक दिखराय लियो मन निठुर नंद को छोना ॥ १ ॥ चित सों टरत न पल छिन सजनी सुंदर स्याम सलोना ॥ २ ॥ मृदु मुसिकाय सुनायो सजन पिया अब जिय खास रहो ना ॥ दादरा आरे का रा० ख० ॥ सजन दुख दीन्ह लगाकर नैन चैन हर स्याम अंतरा ॥ नई प्रतीत प्रीत कर पर वन मधमाहिं जियरा कीन्ह ॥ १ ॥ मैं नहिं जानत थो यह विष भरी भूल सुधा हित पीन्ह ॥ २ ॥ सजन पिया निठुराय की बतियाँ हर बिधहायो चीन्ह ॥ दादरा ओरे का रा० खम्माच ॥ कलक यह कैसे जाय जिय को रे ॥ कगत सखी मीठो न मीठो मीठो रे ॥ अंतरा ॥ पिया निरदई न मोहिं बुलावत छप जोवन उमग रहारे ॥ १ ॥ छतियन छय रग रस रूपसत मध बिन पिय जियरा जारे ॥ २ ॥ रसिक भये चंचल दृग चितवन मनहु मरंग मपोरे ॥ ३ ॥ उनमत सूखी सिखिया सखी सारी सारी रतियो जागे ॥ ४ ॥ विरहानल पल छिन कल रत न मन- मथ पैर पारे ॥ ५ ॥ व्याकुल व्याहई पैसन घर सेय न खोरी लवरति ॥ ६ । गगन परी बदनाई निगोरे ल गया मगुन समचारे ॥ ७ ॥ दई की मार परै बदना पर जिन यह स्याम सोचारे ॥ सजन पिया अब कैसे मिलब सुख पर यम मान संभारे ॥ इति सजन पिया कृत संपूर्ण समाप्त ॥ मिती माघ शुक्ल १२ चंद्रवार संवत् १९४० वि० ॥

विषय—सजनपिया के अनुसार विविध प्रकार के गीत ।

संख्या २६५ प्रश्नरामोद (रामायण), रचयिता—कल्लिता प्रसाद कागज—देसी, पत्र—३८, आकार—९×६½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५०, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९४७=१८९० ई० प्राप्तिस्थान—श्री महाबहादुर लाल, डाकघर—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः । रामायण सुंदर कांड अस्तां गाइ । श्लोक सिद्धि पाति

मनोरथाः स्मरण तो यस्या शु विघ्नालयम् योग क्षेम मवाप्य सौख्य निवहैः संप्रोषितः स्वालयम् ॥ श्री मद्राम चरित्र वोध विषये सम्प्रार्थ ये द मुदा । श्रीमन्तं प्रणतार्तिहं गणपतिं सर्वादिपूज्यं सदा ॥ १ ॥ वन्दे प्रचद्द खल ता''' तदेव यूथ ग्रामार्तिहं परमनन्तं गाध वीयम् ॥ दैत्याधिपस्य हृदयेऽर्पित तीक्ष्णवाणं रामं लक्ष्मणप्रियान्वितमिष्ट सिद्ध्यै ॥२॥

अंत—सुनि के वातें रघुनन्दन का वोले लषण जोरि दोउ हाथ ॥ करौ तयारी अव लंका की रण मा हनी वेगि दसमाथ । यहै मत्र कपि पति मन भायो अंगद जामवंत हनुमान ॥ सव मिलि वोले रघुनन्दन ते अव नहीं करो देर भगवान ॥ सुनि के वानी मनमानी यह वोले रघुवर वचन उदार । हुकुम लगावो कपि राजा अव सविया होय फौज तय्यार ॥ साय नवावौं रघुनन्दन को ग्रातै करौं कांण्ड को अन्त । राम रमा मिलि दर्शन देवो इच्छा यही मोर भगवत ॥ सवैया । युग शर अक मयेक सु सम्वत माधव मास शशी सुतवारा । हरण सुन्दर काद भयो ऋषि नायक के अनुसारा ॥ कौतुक वादु कुमार अपार कियो गढ़ लक में जौन पसारा । तौनहि गान कियो ललिते कवि घाटि हृदय औधेश कुमारा । चतुर्थस्त्न तरगः ४ ॥ समाप्त ।

विषय—सुंदर काड रामायण की कथा चार तरगों में आल्हा छन्द में वर्णन क गई है ।

संख्या २६६ ए. माधव विलास, रचयिता—लल्लू जी लाल कवि (आगरा), कागज—देशी, पत्र—७६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६१६ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री लालताप्रसाद दूबे, ग्राम—जादवपुर, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ माधव विलास लल्लू जी लाल कवि कृत लिख्यते ॥ तालध्वज नाम नगर तामें चार वरण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र और छत्तीस जात रहें । रजपूत जाट गूजर गौर अहीर तेली तमोली धोवी नाई कोरी चमार चूहरे खटिक कुंजरे लुहार ठठेरे कसेरे चुरहेरे लखेरे सुनार छीपी सूजी धीमर खाती कुनवी वढ़ई कहार धुनिये धानुक काछी कुम्हार भटिआरे वरियारे वारी माली अरु मल्लाह आप अपने धर्म कर्ममे अति सावधान वरन कोऊ कोऊ उनमें चौदह विद्या विधान हो तहां विक्रम नाम राजा सो कुलवान अति रूप निधान महाजन सवगुण खान राजनीति में निपुण प्रजा पालक यशस्वी, तेजस्वी हरिभक्त गौ ब्राह्मण को हितकारी औ सव शास्त्र को जानन हारो हो ॥ वाको दारा वलिनाम महासुंदरी अरु प्रतिव्रता ही ॥ सवैया ॥ कुदन को रंग फीकौं लगैं झलकै अति अंगन चारु गुराई । आखिन में अलसान चितौन में मजु विलासन की सरसाई । को विन मोल विकात नहीं मतिराम हसे मुसकान मिठाई । ज्यो ज्यों निहारिये नीरे ह्वै नैनन त्यों त्यों खरी निखरी सी निकाई ॥ राजा रानी में कैसी प्रीति कि जैसी शिव पार्वती में है । एक दिन वह राजा भोरि उठि दिसा जाय हाथ मटियाय दंतधावन में निश्चित होय कंचन की चौकी पर वैठि सुगध उवटन लगाय निरमल नीर सो मलमल

न्हाय अंग अंगोछि सुथरो गुजराती पीतांबर काछि उपरैना ओढ़ि रत्न जटित खड़ाऊं प्रथम गौ दरशन करि आसन पै बैठ्यो ॥

अथ—माधव अब तुलसी की माला पहिरि अंग में गंगा की पंक लगाय अंजुलि जल में हाथ कर जोड़ गंगा सों कहनि लग्यो कि हे मा जान्हवी पतित पावनी मन वांछित फल देनी बैकुंठ नसैनी ही तेरे प्रवाह में प्राण त्यागतु हौं अरु मन वच कर्म करि बार बार यही वर मांगत हौं कि या जन्म में सुलोचना को पाऊं और तेरे तट सर्वदा वास पाऊं और इतनी बात याके मुख सों कढ़ी त्यो एकबारे ने संसार पर बैठे चौकी देत है कि कोऊ सागर में डूबन न पावै ते वाको हाथो हाथ पकरि कै वीर वर के सन्मुख ले गये वाको देखि वीर वर ने पूछो कि तुम को ही कहां ते आये कहा तिहारो नाम है अरु काहू और देश हो ये तुम मोसे सत्य कहो माधव बोल्यो की महाराज की ताल ध्वज नाम नगर तहां को विक्रम नाम राजा ताको हौं पुत्र हौं अरु मेरो नाम है माधौ इतनो कहि वाने चंद्रकला की बात ते लै गंगासागर की अंत लौ की सब अवस्था ठीक ठीक ज्यों की त्यों जो वापै बीती ही त्योंरि समेत रोम रोम कह सुनाई ॥ पुनि कह्यो धर्मावतार मैं या दुख सों प्राण त्यागतु हौं कि या जनम में न पाइ तो अगले जनम वाको पाऊंगो याकी आदि अंत की सब अवस्था सुनि वीरवरि हंसि के बोल्यो कि जो तुम मरिवे चाहत हो तो आज यहां वसि रात्रि जागरण करौ अरु काल्हि जो तिहारो मन माने सो करियो ऐसे कहिके एक सेवक वाकी सेवा में राखि आप राजमंदिर में गयो अरु नारी सब न्हाय धोय अंजन मंजन करि सब वस्त्र पहिर सोलह सिंगार द्वादस आभूषण साजि ॥ दो० ॥ बनि ठनि सजी सुलोचना ज्यों लक्ष्मी को रूप औ सखी पठाई सुघर एक जायन माधव भूप ॥ माधव को बुलायवे सखी वहां ले गई। जहां सुलोचना सिंगार किये बैठी ही। देखत ही दोनो परस्पर प्रसन्न भये पायके सुख दोऊन के गये ॥ चौ० ॥ गंधर्व विवाह तहां तिन कर्यो। अपने मन को सब दुख हर्यो ॥ दोऊन ने अपनी अपनी विपत जो जो वियोग में उठाई सो सब कह सुनाई। और रात्रि सुख संजोग में भोग करि बिताई ॥ भोर भए दोऊन ने मिल राजा सुमेन से आय भेद सब जनायो उन सुनि अति सुख पायो अरु कन्या दोऊ विधि पूर्वक माधौ को दान करि दई पुनि आधो अपनो राज माधौ को दायेज में दियो अरु ताके साथ एक मंदिर महा सुंदर उनके रहिवे कोहू। माधव सुलोचना और धमन्ती को ले वहां आय रह्यो अरु राज काज धर्म नीति सों करन लाग्यो एक दिन वा सेवक को बुलवाय सब सभा के लोगनि सों इतनो कहि कि संसार में मेरो सत्रु कृतघ्नी महापापी विश्वासघाती ऐसो दूसरो नहीं है यह कहि भीत में चुनवाय दियो अरु विद्याधर को अपने निकट बुलाय अति शिष्टाचार करि बहुतेक धन दै वाके देश को बिदा कियो अरु आप धर्म विवेक सहित राज करन लग्यो। ताके देश में राजा राजप्रजा सुखी या ग्रंथ को जो श्रवण करि घी सुनैगो सो संसार में कबहूं न ठगाय है ॥ अरु गृहस्थाश्रम में अति सुख पाय है ॥ इति श्री कविराज विरचिते श्री माधव विलास संपूर्ण संवत् १९१९ वि० मिती माघ शुक्ला चौथ ४ ॥ लिपर्त वल्देव वैश्य धूसर।

विषय—माधव और सुलोचना की कथा ॥

संख्या २६६ बी. राजनीति (मित्रलाभ), रचयिता—लल्लूजी लाल कवि, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—५०, आकार—११३/४ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५०, पूर्ण, रूप-प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६९ = १८१२ ई०, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय, प्रतापगढ़ राज्य, डाकघर—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ राज सुख सुख दाता जगत दुख दाहक गणईश । पूरन अभिलाषा करी शंभु सुत जगदीश काहू समय श्री नारायण पंडित ने नीति शास्त्र निते कथा निको संग्रह करि संस्कृत मे एक ग्रंथ बनाया वाको नाम हितो उपदेश भाख्यो संवत ॥१८६९॥ मे श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मन गुजराती सहस्र अवदीच आगरे वारे ने वाको आस्रय लै ब्रज भाषा करि नाम राजनीति राख्यों ॥ दोहा ॥ पंडित है ते जानि है कथा प्रसंग प्रवीन। मूरख मन मो मानि है लाल कहा यह कौन ॥ ब्रज भाषा भाषत सकल सुरबानी सम तूल । ताहि बषानत सकल कवि जानि महा रस मूल । या राज नीतिक पढ़े सुने ते मनुष्य ब्रज भाषा में निपुन होइ । अरु जितके संसार के व्यौहार की बातें है तिन माहीं प्रवीन ॥

अंत—सों रहे उनके मनोरथ पूरे भये ॥ इतनी कथा कहि विष्णु शर्मा बोल्यो महाराज कुमार सुनो या कथा के सुने ते सज्जन ते मित्रता होइ मन में संतोष आवे घर माहि लक्ष्मी बाढ़े राजा राज नीति सो चलै । प्रजा की रक्षा करै । यह मित्र लाभ प्रथम कथा कही या में जाकी रुचि होइ सो कबहूं ठगायो न जाय सदा निर्मल बुद्धि ते संसार के सब काज साधै वक्ता स्रोता को श्री महादेव जू कल्यान करै ॥ इति श्री मित्र लाभो नाम प्रथम कथा संग्रह सपूर्ण ॥ राज नीति प्रथमहि कथा मित्र लाभ है नाम ॥ याको पढ़ि है जौन जन सो ह्वै है बुद्धि धाम । श्री राधा कृष्नाय नमः उगपन दुर्गालाल को श्री बाबू भवानी बक्स सिंह जी हेतवे मुकाम करीडागंज अंत्रवेदी श्री रामश्री हनुमान जू साहे करै ॥ ६६ ॥

विषय—हितोपदेश को मित्रलाभ का ब्रजभाषानुवाद वंदना ग्रंथ निर्माण संवत। ग्रंथ कर्त्ता नाम जाति स्थान वर्णन नाम पुस्तक ।

संख्या २६६ सी. सभा विलास, रचयिता—लल्लू जी लालकवि (आगरा), कागज—देशी, पत्र—१५७, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९८१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७० = १८१३ ई०, लिपिकाल—सं० १८७३ = १८१६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामस्वरूप शुक्ल, ग्राम—सुमानपुर, वर्तमान निवास सरैयाँ, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सभा विलास लिष्यते ॥ सोरठा विघन हरन गन राज मूषक वाहण गज वदन । गनपति चरन मनाय तबै काज कछु कीजिये । आन न भावत स्वाद भ्रमि पर्यो गह्यो सुम बिंद । कृष्ण चरन अरविंद को पियत सदा मकरंद ॥ ममता भ्रम ताके मिटै उपजै समता ज्ञान । रमैं जु रमता रामसो जमता गहे न मान ॥ साध सक्यो न तू साध सग सुलैं न सक्यो ससाध विषै विषाद उपाधि तज हरि पल आध अराध ॥ निगम रूप गीता ने कह्यो धर्म पुनीता नाम ॥ बीत्यो जन्म जुजात है भजले सीताराम ॥ मन की मिटै मलीनता होय लीनता साथ । नीकी यहै प्रवीनता भजिये दीनानाथ ॥

अंत—अथ रागिनी स्वरूप दोहा ॥ मूपामी बिरहिन परी केसर बार चीर। भयो बिरह की ज्वाल ते पीरो सबै सरीर ॥ बिरह ज्वाल तन गूजरी रोवत छुटे केस। कामदेव कानन लगे तिनहिं दियो उपदेस। रंग बार कंचन बरन मस्तक पिय के संग हिय हुलास है काम को नायो को सावन अंग ॥ बीन गहे गावत मधुर रोवति है जस बार तन दुरबल पिराइ दई पिर इनि भारि मलार। सेज बिछाइ कमल दल लगि रही मन मारि लेति उसास उसीपरी तनक बियोगनि मारि। इति हिय हुलास ॥ समझ करि कवि लाल न रख्यो काव्य रस राम। भाष्यो भाम प्रभ को वातें सभा बिलास। यदपि काव्य भूषन सहित दुर्जन देषत वाहि बिगर गुन बनाय हैं सज्जन साधु सराहि। ग, रिपि बसु, चंद्रहि, गनी सवत की पर माव माघ शुक्ल भैमी रचा क्रिया ग्रंथ निर्माण। इति श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगर वासी कृत सभा विलास संपूरण समाप्त ॥ लिप्यतं व्रजलाल ब्राह्मण संवत् १८७२ वि० पाठनार्थं महाराजो श्री लच्छी जी के ॥

विषय—सभा में बातचीत करने योग्य नाना प्रकार के दोहे प्रश्नोत्तर पहेली, कुंडलियाँ आदि का संग्रह है।

संख्या २६१ डी सभा विलास, रचयिता—लल्लूजी लाल, कागज—देशी, पत्र—३१, आकार—९३ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—श्री सं० १९१४ = १८५७, प्राप्ति स्थान—रामाधीन शुक्ल ग्राम—पुरवा गरीबदास डाकघर—गड़वारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि अंत—२६१ सी के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है —

इति सभा विलास सम्पूर्ण ॥ शुभ संवत् १९१४ शाके १७७९ ॥ जेठ मासे सुभे पक्षे द्वितीया वार वासर ॥ जो प्रति देखा सो लिखा मम दोषो न दीयते ॥ स्यामसुंदरराय नमः राम राम राम राम राम राम ॥

संख्या २६२ गंगामरण, रचयिता—सेगराजमिश्र (मिर्धाली), कागज—भापु सिद्ध, पत्र—४२ आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६ परिमाण (अनुष्टुप्)—११३४ पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९९९ वि०, प्राप्ति स्थान—महाराजा प्रताप सिंह जी, डाकघर—महापुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गनेशायनमः ॥ अथ गंगा मरण लिख्यते मंगलाचरण यथा ॥ अंग अंग माया की तरंग है सुरंग रंग पीर है उतंग संग राजन महेश के। दास कर बरनत दसन दुरा राज आदि भद मैं भ्रमत भौर ठौर ठौर एक देस के। एक एक धारे है बिहार है विपल पुन्य जग सुख दैन दैन धार महिदेव के। टेर राड केस दारि बस दाँवता ने पेसा बंदन हमेसा पद गंगा श्री गनेश के ॥ अथ जन प्रसंसा ॥ सिमत दारि त्रिपुरारि गुरा कल शब्द न मारि करो प्रभकारी है ॥ गौरी पुरारि बिहारी हरी पद पूरिहि धारि सदै गुन धारि है ॥ धारी बिचारि पुरारि बहै निराज सदा हिय धारि बिहारि है ॥ पुन्य प्रचारि के मूल उधारि है नारि किरा बन्दि के पुन हारी है। मारि बिकारी दया जन पूजन दुरा भी दोरन आदि

जमारि है ॥ डारि कहै दुर को लेप राज लपौ जल जालन फारनि हारि है ॥ पापन पारि है दासन तारि है गगा को वारि है सो सुप कारि है ॥

अत—एकाक्षर चित्र यथा दोहा ॥ गगी गी गो गोग गे गुगी गो गो गुंग । गंगा गंगे गंग गा गगा गगे गग ॥ स्मृति । दोसहु तोहि औ कोसहु तोहि औ रोसहु तोहि सो कै भन तातो ॥ गावहु तोहि औ ध्यावहु तोहि औ पावहुं तोहि सो मैं सुप साता ॥ सोई विचारि छमौ लेपराज की चूक सबै अबै जन्हु की जाता ॥ पूत कपूत लपे जन कोटिन पैन लपी सुनि कहूं कुमाता ॥ दो० ॥ गंगे शानन गग मग निधि दीन्हे शशि गग । गंगा गति गनि अंक की संवत लिपहु सुढग ॥ मास पक्ष तिथि वार गुरु कै उमगि कहिं गग । गगा गगा भरण को जन्म भयो एक सग ॥ इति श्री गंगा भरण समाप्तम् श्रावण कृष्ण दसम्यांम सोमवासर' सवत १९३९ वि० ।

विपय—गगा जी की महिमा का वर्णन ।

सख्या २६८ पदार्थतत्त्व दीपिका, रचयिता—लेखराजसिंह, कागज—देशी, पत्र—२९०, आकार—५½ × ४¾ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८८४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री चतुर्भुज, ग्राम—भोजापुर, डाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेश जी सहाय ॥ पूजि गनेस मनाऊं महेस, निर पति गोपाल गरुढ़ धाऊँ ॥ होउ सहाय सरसुती माय, मद्दा सुत अमृत वाना वनाऊँ ॥ दुख न दूरि कै सुखन पूरि पुरातन भूपण भापा वनाऊँ । वेद अकाश मही पर जेतिक तेतिक कीमत कै मत ल्याऊँ ॥ गुरु को गनेस को शीश नवै रसन पर सारधा तोय वसाइय । साध की संगति भगति मिलै परवाह न ल्याइय ॥ हरि दाऊ चर्ण वसैं हिरदै निज वासर जानुकी नाथ लडि ल्याइय । लेख राज सिंह जपै प्रभु नाम को चित्त चलै तौ कवित्त सुनाइय ॥

× × × ×

लिखा हुआ वरसों रहै । जो रख जाने कोइ । लेखन हारा वावरा । गल गल मिट्टी होइ ।

अंत—चाँवलो में वरावर घी लग जावे उसकी तरकीव अच्छे पुराने चावल धो साफ कर वटलोई में घी डाल चावलों को अकारे कर दूसरे त्यार अधान में डाल पकावे जव पक जावे यानी पसाने की हाजति न रहै इस अंदाज के पानी में पकावै वादिहू चहारम मावा अर्थात् खोया देकर घी मज़कूरेवाला देकर मिला दे घी जजूव हो जावेगा। अगर वाकी रहै तौ थोड़ा सा मावा और मिला दो इसी तरकीव् से दाल वगैरह में जज्व हो सक्ता है ॥ दूसरी रीति (१९४ स०) दो राशों के योग और अतर का वर्ग योग और जोग जानकर राशें लेने के दो रीतें ध्यान करो (ज० १९४) योग और अन्तर के वर्ग........ .. .. ॥

विपय—(१) पृ० १ से पृ० १२ तक—मगलाचरण, ग्रंथ का नाम तथा ग्रथकार का वश परिचयः—

आउ गगा तट तीर है, लेखराज निजु धाम । शिव वरदानी नगर है, नगर खुशहाली गाम ॥ करहरा को नगरा हतो, वसहिं वहुत सुख वास । रोटी कपड़ा सव सुखी, निस दिन

मोप विलास ॥ कदम कुन्ज जहँ बहुत हैं, बाल गंगा तट तीर। कन्हैया गाम अनूप है, सो मोर देव बल बीर ॥

× × × ×

देवराज सिंह को सुत भइ जानो, ठाकुर सत्रासुख को सुत पहिचानो, ठाकुर सुखराम सिंह के नाती पहिचानो, अत्रि गोत्र चन्द्र है बंसी। समरा बैठक तोतिम की जानो जादव कुल की करो न हानी ॥ पीतांवरी सुआ पहिचानो। सिरदा गौलुरी नदी विशेषी। राजवाली बूढ़ी बड़े सुर ग्राम प्रबीनी ॥ सुख वास मथुरा पुरी द्वारका, मजनाथ से जदकुल प्रति पासिका ॥

(२) पृ० १२ से पृ० १०६ तक—कार्य कारण नियम और परीक्षा संसार के कार्यों की नियमानुकूलता, तारागण नाम, तारों की गणना, तारों में न्यूनाधिक प्रकाश का प्रमाण, तारों की स्थिरता सूर्य का वर्णन, बड़े बड़े ग्रहों के नाम व्यास तथा उनकी सूर्य से दूरी, चंद्रमा का वर्णन, ज़मीन की गोलाई का प्रमाण ऋतु परिवर्तन, रात दिन होने का प्रमाण, ग्रहण, चंद्रमा के घटने बढ़ने का कारण भौतिक पदार्थ और परमाणु । पदार्थ भेद, स्थित स्थापक शक्ति। भौतिक पदार्थों के गुण, आकर्षण शक्ति, द्रव पदार्थों के गुण, हवा के गुण, पम्प, बैरोमीटर, वायु मापक यंत्र, शब्द, नाद शब्द की चाल, प्रति ध्वनि व गूंज। गर्मी व गर्मी का प्रभाव उष्णमापक यंत्र बनाने की तरकीब, प्रकाश, प्रति बिम्ब, इन्द्रधनुष, बिजली चुम्बक बनाना, तत्व, रसायनिक संयोग, अधातु रूप तत्व, धातु रूप तत्वों के आमाति।

(३) पृ० २०७ से पृ० २५८ तक—सोना चाँदी आदि धातुएँ, पानी के सूखने का वर्णन हवाके चलने का कारण हवा के भेद, आँधी तथा तूफ़ान के चिन्ह, भाफ तथा ओसादि वर्णन, बादलों का वर्णन ओलों का वर्णन, वर्षा के न्यूनाधिक का कारण, भूडोल, आग, चाँदी आदि का पानी बनाने की तरकीब भय धातुओं का पानी और नमक बनाना आदि, तेज़ाब, पौडाम बनाने और पकाने की रीति बारूद पानी साफ करने की तरकीब, लोहे के मोरचा न करने का हाल पारे का कटोरा बनाना, दियासलाई आदि की तरकीब, सोना कालिस करने की तरकीब, रांगे की कलई रंग साजी, गिलास, हाँडी, फानूस पर बेल बूटा बनाने की तरकीब मुबहरी रोगन, रेशमी कपड़े को साफ करना, मोमजामा बनाना। अन्य रोगन, रंग बनाना, स्याही बनाना, दरख्त में मालिस कल फूल आने की तरकीब, पास दुशाले की स्याही दूर करने की तरकीब कागज़ के भीतर अक्षर छिपना कागज़ के उड़ाने का कायदा, सींग मोड़ने की तरकीब, चाकू व तलवार पर इबारत लिखना पत्थर के ऊपर लिखना, मोती की स्याही दूर करना, मोती बनाना, पारा को कच्चा हड्डी का उड़ाना, (पृ० २५८ से पृ० २९० तक) अनेक बोतलबन्दी, आभूषण, श्रृंगार, दिग्पाल, अवतार द्वीप भेद तथा ऋतु दूर का निमक का कटोरा या गिलास बनाना, बांसुरी में घी डालना, पैमाइश सम्बन्धी नियम (पृ० २९१ से सुत है)

संख्या २६६ ए. आभरणालंकार माला, रचयिता—लोकमसिंह (नगरराज अजित मल), कागज़—पुराना देशी, पत्र—१६ आकार—११ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—

२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१० = १८५३ ई०, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—राजपुस्तकालय, प्रतापगढ़ राज्य, प्रतापगढ़।

आदि—अथ जातकालंकार भापा दोहा आदि चौपाइ में लिख्यते ॥ दोहा ॥ वंदो चरण सरोज युग श्री गुरू गणपति नाथ ॥ हरि हर विधि गिरिजा गिरा जोरि हाथ नय माथ ॥ १ ॥ सीत सुभग स्वभाव सुभ द्विज कुल श्री रघुलाल जिनके सेवक अधिक प्रिय लोचन सिंह विसाल ॥ २ ॥ तिनके शुभ अस्थान प्रभु नगर राज मल दीन। सुप समाज को विद कवी गुण गण गणिक प्रवीन ॥ ३ ॥ श्री गुरू अनुसासन करी कृपा दृष्टि सुख केतु। भापा जातक कीजिये सकल जगत के हेतु ॥ ४ ॥

अंत—गिनो सु पारा सर मत ते लही ॥ १ ॥ अल्पायु दिन नाथ शत्रोर्लग्नाधिपे यदि। समत्वे मध्यमायु स्यात् मित्रे पूर्णायुरादिशेत् ॥ इति श्री भापा जातका लंकार सपूर्णम् ॥ शुभ भूयात् ॥ लिखित मिदम् पण्डित शंकरदत्त चतुर्थ अध्यापक पाठशाला सरकारी मुकाम जिला प्रतावगढ़ श्रीयुक्त क्षत्री कुल भूपण सत्य वादी सदगुण गाहक बुद्धि लागा दीन दयाल प्रसन्न चित्त श्री बाबू अजीत सिंह प्रसन्नार्थ उक्त पण्डित प्रेम युत लिखा ॥ फागुन सुदी २ गुरूवार सवत १९३० तथा १८ तारीख माह फरवरी सन १८७४ ई० दोहा ॥ तीरथ राज सेयवत दिशि दश योजन हैं ग्राम राज तिलोई मे वसूं विराज मौजा नाम ॥ १ ॥ अव प्रतावगढ़ वास है रहन अनद हमेश ॥ सीता पति रक्षा करैं हरैं कलेश गणेश ॥ २ ॥

विषय—ज्योतिप।

संख्या २६६ बी. भापा जातकालंकार, रचयिता—लोचनसिंह ज्योतिपी, कागज—देशी, पत्र—४२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१० = १८५३ ई०, लिपिकाल—१९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री लालताप्रसाद दूबे, ग्राम—जदवापुर, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि-अंत—२६९ ए के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्री भापा जातकालंकार समाप्तम् शुभम् लिपतं जानकीराम ब्राह्मण चैत्र नवमी कृष्ण पक्ष संवत् १९३२ वि० ॥

संख्या २६६ सी. जातकालंकार भापा, रचयिता—लोचनसिंह, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१०=१८५३ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदयाल, ग्राम—कफारा, डाकघर—ईसानगर, जिला—खीरी।

आदि—२६९ ए के समान।

अंत—अथ विंशोतरी दशा लगाने की विधि ॥ छप्पै ॥ कृतिका सूर्य पट वर्षारोहिणी

पीत वृष जानो। मृग मगछ कहि सात राहु सिव बखानो। त्रिति गुरु षोडश वर्ष पुष्प गनि कहि उनईस। सर्व बुद्धि की दसा बर्ष सत्रह बुध ईस। मघा केत बर्ष सात की पूर्वा भृगु बिंशति कही। क्रम करि बिचार लोचन गिनो सुघराधार मत ते कही॥ इति श्री आतमकर्णधार भाषा समाप्त॥ संवत १९४० वि० लिपतं गंगादीन मिश्र॥

संख्या २७० बलवंत प्रकाश, रचयिता—लोकसिंह, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—९×५½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५८, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामप्रसाद मुराऊ, ग्राम—पूरा बिश्राम दास, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री रामचन्द्रायनमः॥ अथ श्री बलवंत प्रकास कथा लिप्यते॥ सुमिरि हृदै श्री राम पद, श्री जानकी समेत। कहत बिबिध इतिहास बलवंत सिंह के हेत॥ १॥ प्रगट भयो बलवंत नृप, राम पुराधिप राव। ज्ञान धरम शुभ नीति भव, सब बिधि पुन्य प्रभाव॥ २॥ लोकसिंह ते प्रश्न किय, तिन बिचारि मित्र बूझ। कहे तिहार ठाकुरो, सकल मनोरथ सिद्ध॥ ३॥ पिता पितामह संग तुम, सुने अनेक विधान। गुनि सिद्ध कछु हमसे कहो, नीति भक्ति युत ज्ञान॥ ४॥ संत संग महिमा अमित, कहे सकल बहु गाय। ताहू की कछु भेद गुनि, हमते कहो बुझाय॥ ५॥

अंत—॥ कवित्त॥ ऐसा राय स्याम सिंह जाकी तप तेज भार लागत ही कते अरि बिपिन सुपाने है। केते सुनि घीसा की धुकारनि पहारनि को ईस है मित्र बारनि को दिन ही पराने हैं॥ केते घोरि बाने बचे ईर्षा करि पखाने केते छाँडि के घमंड आय पाँय लपटाने हैं। भाने के नहीं हैं नहीं जिय कै पराने ताहि चढ़ि बीर पतानि में पन्मानि से भाने हैं॥ छप्पै—स्याम सिंह नर नाह बीर धारन की बहमति। मित्र मित्र पर भरि तदनि छपि भरत मसान बहमति कतहि बदृजन फेर कतहि लगत भहिं पग्गाहिं। कहि कण्ठत तिन्ह इच्छ भरत रसभा सप पग्गाहिं॥ धीमियम सोरहु जमोर जेहि तजिय गय सब अहरनि। कव सजिय मज्जिय तुरत रिप सजिय पक गिरि कंदरनि॥ ७४॥ दोहा॥ पंच पुत्र श्री स्याम के, जिमि पंडव अवतार। मित्र बालापन ते किया, नीति सधर्म बिचार॥ तिन्ह सब में जेठे भया, श्री संग्राम··· ॥

विषय—मंगलाचरण, कवि दैन्य प्रकाश राम गुण, तुलसी दास की वंदना। बलवंत के कुल का नाम तथा निवास, उनके रामपुर आने का कारण, उनके राज साज तथा गुणों का कथन। उनकी वीरता तथा दानादि का कथन, बिसेन वंश की उत्पत्ति, राय "होम" का प्रयाग आगमन और उनकी माता का उन्हें अपने घर लाने तथा राजा मानिक चंद को उन्हें अपना दाहित्र समझ मानिक पुर का राज्य देना और होम द्वारा उस राज का प्रसार। होम का वंश विस्तार। "भगी" द्वारा नैनपन और 'पेमकरण' द्वारा हिरवा राज्यों का स्थापित होना। आसकरण पुत्र "रामप्रताप" द्वारा रामपुर राज्य की स्थापना, इसी वंश में राय हरिवंश का होना और उनका वंश बिस्तार। ... सिंह का प्रभाव वर्णन, स्याम सिंह का प्रभाव वर्णन।

संख्या २७१ स्वर्गरोहिणी, रचयिता—सोमेश्वरदास, कागज—आधुनिक, पत्र—१०,

आकार—८ × ४ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री बद्री प्रसाद जमींदार, ग्राम—मानीपुर, डाकघर—तालाब बक्शी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ दोहा ॥ जाके रूप न रेष कछु अमल अनादि अनंत। सो करुणा मैं रूप धरी करि चरित्र भगवंत ॥ छप्पै ॥ पुरुष परम प्रसिद्ध सिद्ध मुनि कहै जासु गुन। धरत ध्यान योगीस ईस उर वसत गुप्त धन ॥ महिमा कहत पुराण वेद नारद फणीस भनि। पारन पावत कहै जासु गुन गन गनेश गनि ॥ अंश अति उदार पर ब्रह्म जेहि लागि जतन योगी करहि। सोई सहज रूप मम उर वसै जासु ध्यान शंकर धरहिं ॥ २ ॥ पारवत्युवाच ॥ झूलना ॥ नाथ श्री रघुनाथ को अब गौन कहौ बुझाइ ॥ जा भांति से गे औधि लै निज लोक श्री रघुराइ ॥ जानि पावन प्रश्न उत्तम प्रिया की रुचि देषि। कहन लागे कथा पावन शैल नाथ विशेषि ॥ ३ ॥

अंत—सोरठा ॥ चले वेगि रघुराइ भरत सत्रुघ्न सियसुत, भरतहि प्रभू समझाइ दीन्ह राज तप लोक को ॥ १०० ॥ रहो सत्रुहन भाइ तिन्है प्रबोधि कृपा यतन। महालोक सुष दाइ राज करौ तहँ हर्ष हिय ॥ १०१ ॥ दोहा गये आपु वैकुंठ कंह सिया सहित सुष पाइ। देषि देव सब आइ कै विनती करत बनाइ ॥ १०२ ॥ मलिनी छन्द ॥ जै रघुवर सीता शक्ति निर्लेपकारि। त्रिगुण रहित गीता वेद वरनै परारि ॥ सुर पुर सुषदाइ चिन मृयान रूपं। सुमिरति मुनि राइ सर्वदा देष भूप ॥ १०३ ॥ दोहा ॥ करि विनती सब देवता सुमन वर्षि सुष पाइ। वसे लोक निज हर्षि कै दुंदुभि मुदित वजाइ ॥ १०४ दंडक छंद ॥ रघपति चरित सुनत हुलस ताहिय। पुलक पुनि पुनि सुषद नयन जल। विनयत शिवहि हर्ष जग मातु हिय प्रभु कर स्वर्ग गयन वरनेहु फल। सुनत अमित सुष लहहि जगत नर रघुपति पदरति वढ़व नवल दल ॥ लोने निरपन प्रभु चरण सरन तव धव दवि वहत मुलेहु निज कर वल ॥ १०५ ॥ दोहा ॥ स्वरगा रोहिणी की कथा पढ़ै सुनै चित लाइ। पावै भक्ति अनपावनी अत देव पुर जाई ॥ १०६ ॥ इति श्री लोने दास विरचिते श्री रामचन्द्र स्वर्गा रोहनि गयन कथा वरनौ नाम समाप्त शुभ मस्तु ॥ राम। सीताराम ॥ सीता राम। सीता राम ॥

विषय—इस पुस्तक में शिव उमा का सवाद है—रामचन्द्र को अकंटक राज्य करते देख स्वर्ग से देवों ने काल को राम के पास भेजा। काल विप्र का रूप धारण कर राम के समीप पहुँचा रामचन्द्र ने उससे यह कह कर वापस जाने की आज्ञा दी कि तुम्हे अभी दस सहस्र वर्ष (संवत्) तक और इस लोक में रहना है। यह जानकर पुर वासी प्रसन्न हुये। एक दिन रामचन्द्र जी ने गुरु वशिष्ट जी से गुरू ज्ञान की दीक्षा की। समय बीतने के पश्चात् काल पुन: आता है तब श्री रामचन्द्र भाई के समेत स्वर्गा रोहण करते हैं इसका इसमें सब विस्तार से वर्णन ॥

संख्या २७७. विनय पत्रिका, रचयिता—मदनगोपाल सिंह, कागज—देशी, पत्र—१२५, आकार—८ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनु-

ष्टुप्)—२५८, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६=१८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० उमाशंकर दूबे सैदपुर जिला—गाजीपुर।

आदि—अथ राग मलार चउथे ताल का लिख्यते। आली पथ सुमति रहिकारी। अनुज सहित रघुनाथ गये बन संग ली जनक दुलारी। कोकिल कुंजत दादुर बोलत रात भई अंध्यारी। दामिनि दमक समक झकझोरे मेरा भरि पथ भारी। कहु तरु तर कहुं सैल कुटी बसि पावें प्रभु दुख भारी। सिंह मदन गोपाल के कर्मो अस क्यों चित बिचारी। अथ राग पर्ज ताल तति लिख्यते। प्रथम विष्णु पदप मनावें। सारद के गुन गान मन बसिये स्तुति करि चरित राम के गावें॥ गुरु पद पंकज रज दृग अंजन करि कवि असल पदारथ पावें। बिना सुमिरन जिम इनके पद त्यहीं ते अधिक विमूढ़ कहावें। विष्णु सारदा गुरु सम तीनो विघन हरन सुर जेठ कहावें। सिंह मदन गोपाल मांगते बुद्धि विपुल धन सिधि सुम पावें।

अंत—अथ चतुर मासा दूसरे ताल का लिख्यते। स्याम सलोने बिन असाढ़ में सखि कल नाहिं परती घन सुमड़ गर्जत नभ चपला चमक चमक जाती। पवन चलै पुरवाई सु सुंसननन सुननन झिंगुर करैं। मदन मदन में छाय रहो है क्यों करि धीर धरैं मोहन बोहन मन में बिहरत कैसी करौं प्यारी आनि मिला वा बृजनन्दन को रसिक सुजन भारी। सावण रिमिक झिमिक जल बरसे कोकिल कुहुक करैं। मनहुँ अली चलि मदन किसोरहिं स्याम के पैर परैं। निठुर स्याम क्यों करि हूये अब तलफत हौं आली। श्रावन मास रंगीले को घर आवें बन माली। यह मन काज करो मन धरि करि मैं तुम पर वारी आनि मिलावो बृजनन्दन को रसिक सुजन भारी। भादव रैनि भया घन अँधेरा लौकाती कारी। बरसत मेघ प्रचण्ड करौं क्या नाहिं घर गिरिधारी चातक मोर घोर करि दादुर अरु पक्षी बिचरैं। विरह बियोगिन जोगिन उनबिन नयन न नीर भरैं।

विषय—१—राग मलार में श्री रामचन्द्र का जनक नन्दिनी के साथ बन यात्रा और बन के दुखों का वर्णन। २—राग पर्ज में विष्णु गुरुपद, राम हनुमान आदि की वंदना। ३—ठुमरी पर्ज में राम, विष्णु कृष्ण आदि देवों की स्तुति। ४—राग बिहाग में निर्गुण पद, जीव का माया बंधन, भजन की महिमा शरीर की क्षण भंगुरता आदि का वर्णन। ५—राग जय जावन्ती में कृष्ण राम आदि अवतारों के शारीरिक शोभा का वर्णन। उनकी लीलाओं का कथन करते हुए भजन के लिये उपदेश। ६—राग भैरवी में श्री गंगा जी की महिमा और उनकी भव हारक शक्ति का वर्णन। ७—गणेश विनय और श्री कृष्ण का कालीदह चरित्र। ८—राग राम कली में कलियुगी व्यवहारों का वर्णन। ९—वर्षा ऋतु के महीनों का वर्णन करते हुए किसी प्रेमिका का कृष्ण के प्रति अपना वियोग प्रकट करना।

संख्या २७३ ए. मदनविनोद निघंटु, रचयिता—मदनपाल, कागज—देशी, पत्र—१८०, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—५११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१२=१८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर जोगनाथ, ग्राम—कुसहरी, डाकघर—मोहान, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मदन विनोद निघंट भाषा लिप्यते ॥ अथ निघट भाषा प्रारंभ ॥ प्रथम हड़ के नाम शिवा और हरीतकी और पथ्या चेतकी, विजया जया, प्रथ्या, प्रमथा, अमोघा, कायस्था, प्रणदा, अमृता, जीवनया, हेमवती, पूतना, वृतना, अभया, जवस्था नदनी, श्रेयसी रोहिणी यह २१ नाम हड के हैं हड़ में ५ गुण हैं। मीठा और कसेला, खट्टा कडवा तेज रूखी है गर्म है दीपनी है वुद्धी की वढ़ाने वाली है और पचने के समय मीठी हैं। रसायनी हैं वुद्धि की दाता है और आयुर्दा को वढ़ाती है। वल को वढ़ाती है हलकी है दमा खासी प्रमेह ववासीर और कुष्ठ और जठर रोग और कृमी को दूर करती हैं सग्रहणी कब्ज विषम ज्वर गोला पेट के अफोर को खोती है। फोड़े छीर्द हुचकी और पाज हौल दिल कमल वाय शूल ताप तिल्ली मीठे और खट्टे स्वाद से तो वाय को दूर करती है। और कसेले स्वाद से पित्त को हरती है और कड़वे और तेज से कफ को हरती है हड़ मे यह तासीर है इतने रोगों को हरती है।

अंत--प्राण दाता छ. वस्तुओं का वर्णन ॥ ताजा मास नया नाज छोटी स्त्री, दूध पिवना, घी खाना, गरम पानी से नहाना, शिताव ये छ॰ वस्तुओं से प्राण पालन होता है ॥ प्राण हरता छः वस्तुओ का वर्णन ॥ सड़ा मास, वूढ़ी स्त्री, वालार्क दही, प्रभात का मैथुन, भूखा सोना, ये छः वस्तु शिताव प्राण को हरती है ॥ छ॰ वस्तुओं के आठ गुने गुण अन्न से अठगुना वल पिसान में पिसान से अठगुना दुग्ध में दुग्ध से अठगुना मास मास अठगुना घी में घीसे अठगुना तेल मलने में हैं लघन कफ को चरवी को आम को ज्वर को हरे हैं ॥ हलका है पाचन है दीपन है वाय को पैदा करता है शूल को अतिसार को जीते है ॥ परन्तु वालक को गर्भिणी स्त्री को दूवले मनुष्य को शोक में काम में भय में क्रोध में राह से थके को पुराने ज्वर वाले को इतने को मने है ॥ पूर्वी वायु के गुण ॥ पूर्व की वायु भारी है मीठी है चिकनी पित्त को लोहू को वढ़ावे है रोग पैदा करती है विष को कुष्ठ को जखम को फोड़े वाली को वुरी है। विदाही है शीत को कफ को शोक वाले को गुण करती है ॥ इति श्री मदन विनोद भाषा मदन पाल कृत संपूर्ण समाप्त लिखत ज्ञानी राम पसारी क्वार वदी ७ संवत १९१२ वि० ॥

विषय—१००० से अधिक वस्तुओं के अनेक नाम और उनके गुण वर्णन ॥ तथा प्रत्येक ऋतुओं के सेवन वा न सेवन करने योग्य वस्तुओ के नाम ॥ तथा प्राण दाता, प्राण हरता वस्तुओं के नाम आदि वर्णन ॥

संख्या २७३ बी. मदनविनोद निघट, रचयिता—मदनपाल, कागज—देशी, पत्र—१८०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—२११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२२ = १८६५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवदुलारे, ग्राम—लखनपुर, डाकघर—मगरैर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि-अंत—२७३ ए के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री मदन विनोद भाषा निघट सपूर्ण समाप्त. लिखत देवनारायण मिश्र वैद्य चैत्र पूर्णिम्यां सवत १९२२ विक्रमी ॥

संख्या २७३ सी. मदनविनोद निघंट भाषा, रचयिता—मदनपाल, कागज—देसी, पत्र—१६४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—सेठ गोविंदराम भगतराम मारवाड़ी, ग्राम—असिकिरा, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि अंत—२७१ ए के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री मदन विनोद भाषा निघंट मदनपाल कृत संपूर्ण समाप्त। लिखत बैसी-माखी मासी संवत चैत्र बदी अष्टमी सं० १९२६ वि० ।

संख्या २७३ डी. निघंट भाषा, रचयिता—मदनपाल, कागज—देसी, पत्र—२१८, आकार—११ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११ = १८०४ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि-अंत—२७१ ए के समान ।

संख्या २७४. रेल वर्णन, रचयिता—माधो कवि, कागज—देसी, पत्र—१०, आकार—६ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० उमाशंकर दूबे, अन्वेषक हरदोई ।

आदि—अथ श्री गणेसायनमः ॥ राम ॥ धन मो महराति भौ सवाल हाहाकार करि पात पाठ पानी कुवा धसो असमान है । चौंड़ पाहार देश देखम सो मेर हो पैसी कह रात मानो अर्जुन को बान है । माधी कवि कहै नेक पाइके बपान करौं छापन मन धाचि लैल बानत बहान है ॥ धाम है सुबान बात दूसरी न आन मारी रेल मेरी जान तो कुबेर को विमान है । गजराजि की सवारी सौंप तुरंग सवारी रथ मैं फल सावारी हू लुग सुलल सवारी है । बाग गाड़ी की सवारी बेग बभी की सवारी तामदाम की सवारी सो अर्धौं मन मानी है । माधव कहत ब्रह्मा कौं वर्णन करौ एती सब सवारी देस देसन बपानी है । कलिकाल की सवारी मित्र माया की बनाई विना जानकी सवारी देखि रुपी रेल असवारी है ॥

अंत—प्रभु की सवारी औं सवारी पू प्यारी होत जाके पुर पारस पहारन गरद है । मन्द मन्द चलत गयन्द मतवाले भारे एक के सवारे अति चोर के मरद है । कहै कवि माधौदास भुप को भुपद पाल रथ जासो न निहाल होत मन दरद है । और की सवारी असवारी सबै न्यारी २ रेल की सवारी तै सवारी सबै रद है । इति रेल वर्णन समाप्तं शुभमस्तु ॥

विषय—रेल का वर्णन ।

संख्या २७५ ए. कल्याणपचीसी, रचयिता—माधोदासजी, कागज—देसी, पत्र—६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२, प्राप्तिस्थान—ठा० शिवसिंहजी, ग्राम—विक्रमपुर, डाकघर—ओयल, जिला—खीरी (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ करुण वत्तीसी लिप्यते ॥ कवित्त ॥ गिरि को उठाय व्रज गोप को वचाय लियो अनल ते उवान्यो पुनि वालक मजरी को। गज की अरज सुनि ग्रह ते छुड़ाय लीनो राख्यो व्रत नेम धर्म पांडव की नारी को। राख्यो गज घटा तर वालक विहगम को राख्यो प्रन भारत में भीपम ब्रह्मचारी को। त्रिविध ताप हारी निज संतन सुपकारी मोहिं तो भरोसो भारी अैसे गिरधारी को ॥ १ ॥

अत—करत अपराध भारे साझ तर कारैं निति अति ही कठोर मति वौर कौन काम हौं ॥ आतुर अधीर ताते धीरज धरत नाहि ऊच नीच वोलि गति वक्रं आठौ जाम हौं ॥ अरचान जानौ कछू चरचा न वूझत हो कछू होत प्रात से न लेत हरि नाम हौं ॥ सव तकसीर वलवीर मेरी माफ़ करौ कहै माधौदास प्रभु तोरही गुलाम हौ ॥ दो० ॥ या करुणा वत्तीसि को पढै सुनै नर नारि ताके सव दुप द्वद को मेटै कृष्ण मुरारि ॥ इति माधौदास कृत करुणा वत्तीसी संपूरणम् ॥ लिखी हजारी लाल कायस्त पटवारी वेले गांव वाले ने अपने पाठनार्थ संवत् १९३२ वि० श्रावण मासे शुक्ल पक्षे द्वितीया ॥ ३

विषय—कवि ने ३२ कवित्तों में श्रीकृष्णजी की विनय की है।

संख्या २७५ वी करुणावत्तीसी, रचयिता—माधो दास, पत्र—१३, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रमाकात शुक्ल, ग्राम—पुरवा गरीव दास, डाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि-अत—२७५ ए के समान।

संख्या २७६. सारस्वत सार मधुकर कलानिधि, रचयिता—माधवजू, कागज—देशी, पत्र—५४, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५३; पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णविहारी मिश्र (नयागाँव)—माडल हाउस, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सारस्वतसार मधुकर कला निधि. लिप्यते ॥ सवैया ॥ वानी जुहौ जगरानी सही पद पकज रावरे जो नर ध्यावे ॥ ते नर उपम यूप पियूप सनी मृदुकादि कला वरसावैं ॥ मान भरैं गुन ज्ञान भरैं पुहिमी मधु वानन कौं ते रिझावै ॥ कीरति चंद्रिका चद्र समान सभान मैं तेइ कविंद कहावैं ॥ कवित्त ॥ अरथ अमोल मनि सुवरन अलंकार ग्रथनि को राजही के गुननि गह्यो करै ॥ मानि सन मानि दान दुजनि सुदामा किय एक मनि लछि लपि सदा उलह्यो करै ॥ सरस सिंगार कलप द्रुमकनिवनि राजै छवि छाजै छत्र चौर निलह्यो करै ॥ साधु वधु कृपा सिंधु सत्य संधु माधव जू रावरे कौसरे सुति सेइ वौ चह्यो करैं ॥ २ ॥

अंत—भूमि भरतार माधवेस असदार होत विरचि विचारनि चकित चत्र चक्र सक्र भौ ॥ मनहु कविंद ते गती छन प्रताप तेज असनि समान सवि वैरिन पर वक्र भौ ॥ रुधिरि दिस निरज धुध रिस वित रथ विय के गगन पथ सिंधु सौनक्रभौ ॥ कुंडली ह्वै वैठयौ

कुंडली सर्वो सहस सीस मनि छिम गीम सों सकल भी सीं चकली ॥ २१ ॥ कुकमार मनिहार विरचैं सिगार देत मयो भूमिभारन को औरे फन सेस की ॥ सासुति विपि हरिहर सुरगावन कै सुराम के सावन के सुपर्सी हमेस की ॥ बायगो चकोर हस कसुक की मंस मिटयो फर्सी अवर्कस सी सुजस माधवेस की । मिरि गिरिजा क गेह गैये गीत मंगल के देपि दूजी बूत उछ्यो गनेस की ॥ २३ ॥ दोहा ॥ ये वर्णे है रस कवित्त अपनी बुद्धि अनुसार ॥ सोधि कीजियो छमा करि माधवेस अवतार ॥ २४ ॥ इति श्री सारस्वत सारे मधुकर कल्प मिथि संपूरणम् समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १८३६ ॥

विषय—कविता के नवों रसों का वर्णन और नायकनायिका भेद ।

संख्या २७७ ए. कैलाशमार्ग (स्कंद पुराण का प्रश्नोत्तर खंड), रचयिता—माधवानंद भारती, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—सं० १९२१ = १८६९ ई०, लिपिकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—रामगोपाल वैश्य ग्राम—चौहट्टा डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गौरी शंकरायनमः श्री गुरु चरणायनमः । श्री राम चन्द्रायनमः । श्री सरस्वती नमः ॥ अथ कैलास मार्ग अर्थात् स्कंद पुराण का प्रश्नोत्तर खंड जिसको श्री स्वामी राम कृष्ण भारती सिष्य माधवानंद भारती ने दोहा चौपाई छद रीति से काशी जी में भाषा किया संवत १९२१ में शीतलाप्रसाद सराफ् ने लिखा ॥ श्लोक । भक्त्या सतां विघ्नहरं गणेशमुमात्मजं देवपतिं दिनेशं कृपार्क देववरं रमेशं मंदे सुखरूपम् तत् महेशः ॥ सोरठा ॥ बिनवौं गिरिजानंद मगलायतन गज बदन गुन मय आनंद कंद सिद्धि सदन कल्याण पद । बिश्व रूप भगवान सत चित आनंद ज्ञान मय । वेद अमेत प्रमाण गिरा गोचर ध्याबहूं ॥

अंत—सो० ॥ यह सब चरित उदार जे गावहिं अरु जे सुनहिं । तिनको मोद अपार उभय लोक महं सब कृपा ॥ शंकर सुजस अनूप गायो माधव भारती । रहै सदा सुप रूप पढ़ै सुनै जे नारि नर ॥ इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ५ स्वामी राम कृष्ण भारती सिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाशमार्गे कथा श्रावण विधि निरूपण पंचोद्गुर विंशतितमो विश्रामः समाप्त शुभमस्तु माघ मासे शुक्ल पक्षे षष्ठो बुधि लिपितं संवत् १९२८ वि० शीतलप्रसाद वैश्य बहादुर निवासी । जैसी प्रति देषी हती तैसी लिपी विचार । भूल चूक होवै जहां कीजो सुजन सम्हारि ॥ जै राम सिव शिव सिव

विषय—अध्याय (१) शिवपंचाक्षरी मंत्र महात्म और मथुरा के राजा की कथा (२) शिवरात्रि व गोकरण क्षेत्र की महिमा तथा अयोध्या के राजा का इतिहास (३) शिवरात्री व्रत व गोकरण यात्रा से चांडाली का मोक्ष (४) प्रति मास उभय पक्ष चतुर्दशी के दिन शिवपूजन का महात्म (५) शनि प्रदोष में शिवपूजन की महिमा (६) प्रदोष काल पूजा महात्म (७) शिव पूजा प्रकार तथा द्विज पुत्र राजकुमार के मनोरथ सिद्धि की गाथा (८) सोमवार व्रत रानी सीमंतनी की कथा (९) रानी सीमंतनी व द्विज पुत्र

के प्रभाव से स्त्री हो जाने का चरित्र (१०) भद्रायकुमार का जन्म मरण व उसको ऋषभ देव से प्राणदान प्राप्त (११) भद्रायु को ऋषभ देव ने सदाचार का उपदेश किया (१२) शिव कवच (१३) भद्रायु की विजय व व्याह की गाथा (१४) भद्रायु की धर्म परीक्षा और शंकर गौरी का दर्शन व वरदान देना (१५) विभूति महिमा वामदेव जोगी तथा ब्रह्म राक्षस की कथा (१६) कालाग्निनाथ व सनकादिक संवाद (१७) सर्व कार्य सिद्धिप्रदा श्रद्धा है इस अर्थ में चंद्रनाम शवर का इतिहास (१८) अंध मुनि व शारदा का संवाद उमामहेश्वर व्रत विधि (१९) व्रत प्रभाव से शारदा को सुप तथा पुत्र लाभ होना । (२०) रुद्राक्ष महात्म काश्मीर नृपति नयवानदनी गणिका की कथा (२१) रुद्राध्याय महिमा तथा राजा पुत्र के मृत्यु से छूटने की कथा (२२) कथा श्रवण की विधि विहुला ब्राह्मणी की अति रुचिर गाथा ॥ उपरोक्त २२ अध्यायों में ग्रंथ समाप्तः ॥

संख्या २७७ वी. शंकर दिग्विजय, रचयिता—माधवानंद भारती (काशी निवासी), कागज—देशी, पत्र—१७५, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपि-काल—सं० १९२७, प्राप्तिस्थान—संकटा प्रसाद अवस्थी, ग्राम—कोटरा, तहसील बिसवाँ, डाकघर—कोटरा, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ अमाधवी शंकर दिग्विजिय लिष्यते ॥ श्री गुरु परमानंदं दक्षिणमूर्ति रुपिण ज्ञानानंदप्रद शांत कृपासिंधुमहं भजे १॥ श्री रघुपति पर्य्याय-मुदार कृष्ण नाम सहित गुण सार भारतीतिप्रथित सुप द्वार नौमि गुरु संसृतिभय हारं ॥ सत्यं ज्ञानमततमादिविधुरं नित्यं विभुं निष्कलं शांतानंद पयोधि मक्रियं जे श्रद्धं तुरीयं समं पस्या नंदल येन सर्व मनिश प्रातरि धात्रादिकं यो वाग्बुद्धि भिरप्यगम्य नितरां ध्याये मतं सर्वग ॥ चौ० ॥ मगल मूरति सिद्ध विधायक विनवहु प्रथमहिं श्री गणनायक ॥ श्री गिरिजा गज जननि भवानी चरनि वंदि विनवौं सुप खानी ॥ वन्दौं दिनकर जासु प्रकासा । सव जग कर तम करै विनासा ॥ ब्रह्मादिक सव देव मनाई । ऋषि मुनि कवि लोगन सिरनाई ॥

अंत—छंद ॥ श्रुति सेस सारद जासु जम महिमा अपार वपानहीं । अति अतुल तासु प्रभाव केहि विधि छुद्र नर पहिचानहीं । सो परम पावनि शंभु कीरति सुनहिगे जे गाइ है ते चंद्रभाल प्रसाद ते मन काम सव विधि पाइ है ॥ सो० । जो पायो है मोर यह मैं माधव भारती । तैसो लहै प्रमोद संभु कृपा से लोग सव ॥ इति श्री मत्परमहंस परि-व्राजिकाचार्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवा नंद भारती विरचिते श्री शंकर दिग्विजिय समाप्त. ॥ शुभ मस्त ॥ संवत १९२७ वि० ॥

विषय—शंकर प्रादुर्भाव, ब्रह्मादिक देवता औतार, शंकर के आठ वर्ष अवस्था से पहिले के चरित्र, शंकर का संन्यास ग्रहण, ब्रह्म विद्या संस्थापन, श्री व्यास समागम, श्री शंकर मंडन शास्त्रार्थ सरस्वती है साक्षी जिसमें ऐसे सर्वज्ञ भाव का चिंतवन, योग द्वारा शंकर का राज शरीर में प्रवेश, भैरव नाम कपाली की पराजय, हस्त मलक तोटकाचार्य, दोनो का शंकर का शिष्य होना, वार्तिक पर्यंत ब्रह्म विद्या का पहुचाना पद्म पाद की तीर्थ

यात्रा का निरूपण, श्री शंकराचार्य के दिग्विजय का कौतुक, श्री शंकर का शारदा पीठ वास वर्णन, सारांश स्वामी शंकराचार्य का जीवन चरित्र।

संख्या २७८ ए. रामाश्वमेध, रचयिता—मधुसूदन दास, कागज—देसी पुराना, पत्र—८९६, आकार—११ × ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० बद्रीसिंह जमींदार, ग्राम—भाउखी लालीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री मते रामानुजायनमः श्री रघुनाथायनमः ॥ दोहा ॥ बंदि प्रथम गुरु पद सुजसु सिय सिर धर सुख पाय। त्रिविधि ताप तम दलन बहु दिन कर सरस सुभाय ॥ निज देसिक गुरु कंज पद बंदन करहुँ सप्रीति। बिनु प्रयास जिन की कृपा महा मोह दल जीति ॥ २ ॥ प्रनवि सकल गुरु पद कमल पुनि अति राम कृपाल। जिनके पद वन्दन करत मिटत सकल भव जाल ॥ ३ ॥ बंदि परांकुस चरण जुग सुर तरु सरस सुभाय। सुमिरहु यामुनि पद कमल, सरणागत सुखदाय ॥ ४ ॥ राम मिस पद प्रन विकरि कमल नयन पद कज। नाथ मुनि सही बंदि पुनि सठ गजन भव भज ॥ ५ ॥ सकल गणनि सिर मौरु श्री विश्वक्सेन कृपाल। जिनके सुमिरन के करें मिटहि महा भव जाल ॥ ६ ॥

अंत—छन्द ॥ उर धाय परमानन्द पुनि कर जोरि बहु बिनती करी प्रभु कीन्ह कृपा अपार मोपर राम कीरति बिस्तरी ॥ अब व्यापत पाप उदार करुणा सिंधु महि जन जानिये। भयो धन्य बनाय सकल प्रकार मन अनुमानिये ॥ दोहा ॥ पुलकि गात हरि भाँति बहि, कीन्हो चरण प्रनाम ॥ हरषे व्यास उदार तब पर्म कृपा के धाम ॥ मैं जड़ मनु मध्यम तम मंतत कुमति निधान। बरन्यो राम प्रसाद यह ग्रंथ सुमति अनुमान ॥ सोरठा ॥ छिमहु सन्त समुदाय, कीन्ह दिठाई विपुल मैं। कीजो कृपा बनाय अनुग जानि निज चित्त सिरधि ॥ इति श्री पद्म पुराणे पाताल खंडे शेषा वात्स्यायन सम्बोद मधु सूदन दास कृते श्री रामाश्वमेधयो नाम अष्टमोऽध्याय ९८ संवत १९२४ माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथि एका दस्यां मीम वासरे पुस्तक लिखा देबी मकाम ताल के भौखी मौजे लालीपुर ॥ सीता राम पार्वती शिव ॥

विषय राम का अश्वमेध यज्ञ।

संख्या २७८ बी. रामाश्वमेध, रचयिता—मधुसूदनदास (इष्टिकापुरी, इटावा), कागज—देसी कागज पर, पत्र—७१०, आकार—१४ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्) ६०१४, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३९=१७८२ ई०, लिपिकाल—सं० १९३५ = १८७८ ई०, प्राप्तिस्थान—विष्णुदत्त उर्फ पुत्ती महराज, ग्राम—भउखी, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि-अंत—२७८ ए. के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री पद्म पुराणे पाताल खंडे शेस वात्सायन संवाद मधु सूदन दास कृते श्री

रामा स्वमेधयो नामष्ट षष्टितमोऽध्याय: (६८) सवत् १९३५ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे तिथौ एका दस्यां गुरु वासरे लिः आनदीदीन पडित ॥

संख्या २७८ सी. रामाश्वमेध, रचयिता—मधुसूदन, कागज—देशी कागज पर, पत्र—६४८, आकार—१० × ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५०५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३९ = १७८२ ई०, लिपिकाल—सं० १९६८ = १९११ ई०, प्राप्तिस्थान—रामचद्र छीपी द्वारा भगीरथप्रसाद दीक्षित मदें वटेश्वर, जिला—आगरा ।

संख्या २७९. सामुद्रिक, रचयिता—महादेव, कागज—देशी, पत्र—८६, आकार—८ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०३२, पूर्ण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामप्रसाद दूबे, ग्राम—भरोसेपुर, डाकघर—चमरौली, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ सामुद्रिक महादेव कृत लिष्यते जो चरण सदा नही पसीजते जिनका तलवा वहुत कोमल रग कमल के भीतरी भाग के तरह का उगलिया एक दूसरे मे जोड़ी हुई नप सुदर तथा तावे के रंग के समान एँड़ी सुंदर जो चरण सदा गर्म जिनकी नसे निकसी नहीं है गाठें दवी और जो चरण कूर्म की पीठि की भाति ऊचे हैं उनके ऐसे जिसके चरण होते है सो पुरुष राजा होता है जिनके चरणों के नप सूप की नाई रूषे और मटिया जिनके चरण टेढ़े ऊंची नसवाले और सूखे जिनकी अंगूठी एक दूसरे से अलग अलग हों वह मनुष्य दरिद्र होता है ।

अत—जिस नारी के दोनो चरण स्नेहयुक्त सुदर उन्नत तावे के रग के नषों मे युक्त हैं और मत्स्य अंकुस पद्म चक्र हर आदि चिन्हों के सहित हैं वह स्त्री शुभ कारिणी होती है ॥ जिस स्त्री के पैरा के तरवा कोमल और पसीजते हैं जिनकी जाव रोमा से हीन है × × × सम वक्ष भोग वान; और निम्न वक्ष जन निर्धन होता है महादेव रचित इस सामुद्रिक शास्त्र को पढ़ने सुनने व गृह में रखने से मनुष्यो को शोक नहीं रहता ॥ इति श्री महादेव कृत सामुद्रिक संपूर्ण समाप्त. लिखते रामचरनराम संवत विक्रमी १९४० चैत्र शुक्ला नवमी राम राम राम राम ॥

विषय—सामुद्रिक वर्णन ॥

संख्या २८० ध्रुवलीला, रचयिता—महादेव (मैनपुरी), कागज – देशी, पत्र — ४०, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, पूर्ण, रूप—बहुत निकृष्ट, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल – सं० १९५० = १८९३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामभद्र पुजारी, ग्राम – कला वगहा, डाकघर—मौरावाँ, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ ध्रुव लीला लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री गणपति को सुमिरि के वदौं पवन कुमार वल बुधि विद्या देहु मोहिं हरौ कलेश विकार ॥ ध्रुव लीला प्रवरु करू भक्तन को सुख सार । लज्जा मेरी राखि ये हे प्रभु कृश्न मुरार ॥ बुद्धि हीन

मति मंद मैं तुम करता संसार। मम ऊपर किरपा करौ संतन के रखवार ॥ तुम प्रभु दीन दयाल हो मेरी ओर निहार महादेव पावै दुरस लीला गाय तुम्हार ॥

अंत—सर्व लोगों का अस्तुति करना ॥ धन्य करता धन्य स्वामी धन्य प्रभु ध्रुव राय को। धन्य जाकी प्रेम भक्ति धन्य त्रिभुवन राय को ॥ धन्य प्रभु मोंहि दरस दीन्हों भक्त के बस आपके। धन्य ध्रुव की मात को है धन्य अस सुत पाव के ॥ धन्य हम सब नम बासी धन्य प्रभु दरशन भयो धन्य है महादेव को जिन धन्य कहि यह पद कह्यो। विष्णु भगवान का ध्रुव जी को आशीर्वाद देकर अंतर ध्यान हो जाना देवताओं का फूल बरसाना ॥ दो० ॥ पुष्पन की वर्षा करी देवन बैठ विमान। जै जै शब्द उचारि कै करें अप्सरा गान ॥ इस पुस्तक के पढ़त ही उपजत हृदे उपजत हृदे ग्यान। लीला। सहित विलोकहीं मकल की मुख खान ॥ महादेव परसाद ने बहुत कियो परिश्रम। ध्रुव लीला के कहत ही छूट जात सब भ्रम ॥ इति श्री ध्रुव लीला समाप्तम मिति श्रावण सुदी १५ संवत १९५० वि० ॥

विषय—ध्रुव जी की कथा जन्म से लेकर भगवान श्री कृष्ण चंद्र तक के दर्शन तक का वर्णन ॥

संख्या २८१ नीति संदोह, रचयिता—महादेव (सहिजादपुर इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—६७, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४० पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई० लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० बसती प्रसाद, ग्राम—गौसाईं खेड़ा, डाकघर—समथामी, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नीति सदोह लिख्यते ॥ दो० ॥ लंबोदर दामोदर हिं बंदौं सुर संदोह। बलि असुर गुरू गुरु बिदुर रचौं नीति संदोह। है फल करम अधीन बुधि करम अनुसारि। तौमि सुजन जन कछु करैं काज अकाज बिचारि ॥ जतन करै तौ धन मिलै पै देव अधीन न होय। कारज सिद्धि न जतन करि तौ तेहि दोष न कोइ जतन करैं कारज सरै क्रिये मनोरथ नाहिं। कबहुं न सावत सिंह के मुख में मृगा समाहिं ॥

अंत—परागुण तम कहुं छलत ही सुजन सराहत ताहिं। बालक बोल बिलोकि ज्यों मात पिता हरषाहिं ॥ १ ॥ बरत सबै निज बात मैं यथा नद नदी गंग। सुरजन नहीं पर बाद ज्यों ससि उसि सिंधु तरंग ॥ २ ॥ सुजन सुकवि मुसक्याइ हैं सम जन कहि हरषाइ दुर्जन हसिय ब्याइ के मम कृत सबहिं हंसाइ ॥ ३ ॥ महादेव मति मंद है रच्यो नीति संदोह ॥ नहिं अचरज जो पै कियो कृपा कृष्ण संदोह ॥ ४ ॥ उत्तम उत्तम नीति जिन मम कृत कीन्हहु मीड। छगी मिठाई खाइ के ज्यों कराइ मख बीक ॥ ५ ॥ महादेव बहु ग्रंथ की बीन बीन के भाव। दोहा छंदन में धरयो कछु निज बुध्दि प्रभाव ॥ ६ ॥ प्रीति सहित चित में रखै चितै नीति सदाइ। मति सुधरै सुख सौं भरै हरै बिपति संदोह ॥ ७ ॥ उनइस के चौबीस मे साम मास भादोइ ॥ बदी द्वादसी में भयो पूरण नीति सदोह ॥ ८ ॥ सोरह कोस प्रयाग है पश्चिम गंगा तीर। बसत ग्राम सहिजाद पुर महादेव न धीर धीर ॥ इति श्री मत कृष्ण कृपा पात्र बाजी बलोद भव मदन गोपालात्मज महादेव कृत नीति सदोह संपूर्ण समाप्तः ॥ लिखतं। राम विश्वास जाविन शुक्ल कुदुम संवत १९३७ वि० शुभं ॥

विषय—नीति के दोहे। छंद, आदि और हर एक प्रकार के मनुष्यों के लक्षण और राजा लक्षण, मन्त्री, सेनापति, सूर, महारथी, अति रथी, रथी, कायर, कामदार, भंडारी, सभासद, दानाध्यक्ष, उपरोहित, दूत, सेवक, सारथी, नास्तिक, ब्राह्मण, क्षत्री, शूद्र, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्था, सन्यासी, त्रिदंडी, कायक कर्म, वाचक कर्म, मानसकर्म, धर्म, अधर्म, ईश्वर, जीव, माल, सात्विक, राजस, तामस, मुक्त, परम, हंस, जोगी, भोगी, भाई, स्त्री, पुत्र, सुपूत, पूत, कपूत, कुसूत, सूत, मित्र, पच, साधु, सज्जन, दुर्जन, सठ, धूर्त, और पंडित इत्यादि के लक्षण।

संख्या २८२. सुदामा चरित्र, रचयिता—महाराज दास, कागज—देशी, पत्र—२६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६३, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६१६ = १८६२ ई०, लिपिकाल—सं० १९५४ = १८९७ ई०, प्राप्तिस्थान—जगती लाल मुकरीमनगर के, ग्राम—जोगीटोला, डाकघर—हसन गंज पार, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ सुदामा चरित्र ॥ दोहा ॥ विघन विदारन विरदवर वारन वदन विकास। वर देवहु वाढ़ै विशद वाणी बुद्धि विलास ॥ चौपाई ॥ सादर सारद वदन करिकै। चरण रैन निज माथे धरिकै ॥ गनपति जननी शंभु प्रिय वामा। करिये मातु मम पूरण कामा ॥ दोहा ॥ गनपति चरन मनाइ कै विनै द्वारिकाधीस ॥ जेहि सुमिरति सिधि बुधि मिलत नासत विघन कलेस ॥ कवित्त घनाक्षरी ॥ सुदर सुवर स्याम नील अरविन्द वत वदन प्रकास चरु चन्द्र साल जात है। लोचन विसाल कीधौं कज खज मीन जल कुरग विहाल लखि चाल भूलि जात है ॥ सान सनमान भरे पूरन प्रमान भुज वल के निधान सुचि सोभा सर सात है। दीन पै दयाल सोई सहज कृपाल प्रभु दास महराज प्रेम हाट न विकात है ॥ दोहा ॥ पति सुनो हमारी बात द्वारिका जाओ ॥ सुख करो स्याम सों मिलो दरिद्र मिटाओ ॥

अत—श्रिमे मान महराज की महराज की दीन बंधु श्री राम। निसुदिन हृदै बसौ कौ सदा सुभ काम ॥ सोरठा ॥ पत्री यह करि नेम, पाठ करै जे नर सुजन। लहैं सो हरि पद प्रेम, सिद्धि सने गति प्रभु कृपा ॥ दीजै दीन दयाल मोहि बड़ो दीन जान। चरन कमल को आसरो सत्त सगत को दान ॥ इति श्री सुदामा चरित्र महाराज दास कृत समाप्तम् ॥ संवत् ॥ १९५४ ॥ मीती भादो सुदी ७ ॥

विषय—सुदामा जी का चरित्र।

संख्या २८३. सोने लोहे का झगड़ा, रचयिता—महावीर, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० देवतादीन मिश्र, ग्राम—सुलतानपुर, डाकघर—थाना, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सोने लोहे का झगडा लिष्यते दोहा चरचा सोने लोहे का अति सुंदर सुखदाय। नोंका झोंका दुहुन की सो वरनत कविराय ॥ शैर ॥ सोना पुनि कहैं लोह चाकर मेरा। हमसो परिवार कुटुंव वसत घनेरा। समुझत हम दान

पुनि वेद भक्ति में। हमही सबमान करत जग में ॥ राजा अरु साहु चाह करैं हमारी। घरै कीम ठौर दीप सुंदर वारीं ॥ चाह सब जग में करैं हमारी चेरी छेरी सुन जरे कोइ ताकत चेरी ॥ जवाब लोहे का ॥ लोहा पुनि कहे सुमरे सोने। मोहि देखि तोहि फिरत गाफम कोने ॥ तोहि पहिरि मारि परै पांव सैज पै। मोहि बांधि सूर बीर चलें खेत पै ॥ तुमसे हमने सुहाप बहुतक लीन्हा अपना कर छोड़ बरका औरन को दीन्हा। सूबा उमराव पांय कीन्हे मेरी। सो तू किया चहे समतर मेरी ॥

अंत—गरुड़ चढ़ि कृष्ण आये किया निर्बारा। सोना लोह दोऊ अंग हमारा ॥ महावीर घरि तपसी दोऊ। जाके घर देव लोह सोना दोऊ ॥ कहे वेद चार बात बीच के सोना अरु लोहा दोऊ सिरेतीन के ॥ इति श्री सोना लोहे का झगड़ा महावीर कृत संपूर्ण समाप्त संवत १९३० मि० लिपा शिव कंठ बाजपेई मुकरिस पासीं सफीपुर श्री गंगा जी की जय। ॥

विषय—सोने और लोहे की अपनी अपनी बड़ाई करना ॥

संख्या २८४ ए. श्री कृष्ण गीतावली, रचयिता—संग्रहकर्त्ता महावीरप्रसाद (बाँस गाँव गोरखपुर) कागज—आधुनिक, पत्र—११२, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४० पूर्ण, रूप—पुस्तक के समान, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८० ई० प्राप्तिस्थान—राजा अमरसिंह, ग्राम—महरिपा, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री कृष्ण गीतावली लिष्यते ॥ दो० ॥ गणपति जी के चरण धरीसीस चित लाइ। विनै करौं करि जोरि कै सारद होहु सहाय ॥ भक्ति पदारथ मोहिं मिलै कृपासिंधु ब्रज राज। सदा बसौ उर बिरज मणि कृष्ण चंद महराज ॥ अथ वंदना विनय भजनावली प्रारंभ। गणपति विघन विनाशन हारे। मंगल करन अमंगल नासक सुप के सदन उमा के बारे। एक दंत गज मुप लंबोदर सेंदुर तिलक नैन रतनारे होहु मगन मनोज वहन सुत आन बीच के नाशन हारे। आकर ध्यानधरत सुर नर मुनि छोड्हु वेद विदित संसारे। मन इच्छा तुम जानत ही प्रभु तावे सेवौं चरन तिहारे। तुलसिदास आनंद जब होय राम सिया उर बसत हमारे ॥ १ ॥

अंत—॥ दो० ॥ गणपति जी की कृपा से भयऊ सुग्रंथ समाप्त। भजन भाव की रीति सों सुप सो अद्भुत प्राप्त ॥ जो मन निश्चय ठीक दै करै भजन नित नेम। ताके हरि हिरदै बसै लागै ब्रज सम प्रेम ॥ जो माया से रहित है कामों से बलवान। सो प्राणी के बस रहैं सदा कृष्ण भगवान ॥ मास मधुप तिथि दशमी कृष्ण पक्ष रविवार संवत सैंतिस विक्रमी मैं पुस्तक तैयार ॥ हे वासुदेव कुमार मोसम पतित न और कोइ। अंत काल निस्तार तुम्हरी कृपा करउते ॥ इति श्री कृष्ण गीतावली समाप्त ॥

विषय—कुछ कवियों के भजन संग्रह किये गये हैं ॥

संख्या २८४ बी श्री कृष्ण गीतावली, रचयिता—महावीरप्रसाद (बाँसगाँव गोरखपुर), कागज—नवीन पत्र—११०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८२०, पूर्ण, पद्य, लिपि-नागरी, रचनाकाल-सं० १९३७ = १८८०

ई०, लिपिकाल—सं० १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवदुलारे वाजपेयी, ग्राम—भीपमपुर, डाकघर—नोमगाँव, जिला—खीरी (अवध)।

संख्या २८४ सी. श्री विष्णुगीतावली, रचयिता—महावीरप्रसाद (बांसगाँव अवधपुरी), कागज—देशी, पत्र—१८८, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कुंदनलाल, ग्राम—सफीपुर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री निश्चय मन टीक है करै भजन चितलाय। लहै ज्ञान सुख संपदा पाप पहाड़ विलाय ॥ गुणावाद गोविंद को काटत भव जंजाल। जासी कृपा अनंत ते नहिं व्यापत कलि काल ॥ जो विप पी तजि ज्ञान वल करत भजन में भंग। सो जमपुर दुख पाइ हैं जैसे कीट पतंग ॥ सब साधन से मूल धन भजन भक्ति भगवान। अंतकाल हरिपुर लहै पावे पद निर्वांन ॥ महावीर मति हीन अति सुत हौं देविदयाल। सदा वसौ उर में मेरे रघुवर दीन दयाल ॥ वांस गांव एक नगर है। अवधपुरी परधान। गोरखपुर के निकट हीं जन्म भूमि अस्थान ॥ महाराज राज तहसील में हौं स्याह नवीस। छमौ ढिठाई मोरि अति कृपा करौ जगदीस ॥ विष्णु गीतावलि नाम धरि ग्रंथ कियो परचार। रघुवर पार लगाइयौ अपनी ओर निहार ॥ रागी वागी रतन पारषी नाड़ी और निवाय। इन पहुचन के गुर नहीं पै उपजै अंग सुभाव ॥ संवत उनइस से पैतीसा। करौ ग्रंथ परकास पुनीता ॥ माघ मास एकादसि जानो शुक्ल पक्ष मन में परिमानो ॥ पढ़िहैं सज्जन चतुर सुजाना। सुनिहैं हर्षित चित दै काना ॥

अंत—नमो नमो महा तत्व अहंकार कारनी नमो नमो वायु तेज नीर नभ विहारनी॥ नमो भूमि धारनी नमो जगत कारनी ॥ नमो नमो त्रिरकालनी नमो याम यामनी ॥ नमो नमो चांद्रमा। प्रचंड रूप चंद्रिका ॥ नमो नमो जालिपा। नमो स्वरूप कालिका ॥ नमो नमो लक्ष्मी। त्रैलोक्य याम वृद्धीन रामी ॥ नमो नमो नम हरो कष्ट रक्षणी ॥ दो० ॥ राम नाम सुमिरन करो। तब होइ है निस्तार। नाहिं तौ परि हो कूप में जाय अति अंधियार जग में जाके मुपन ते धोके निकसत राम। ताके पग की पानही मेरे तन की चाम ॥ इति विष्णु गीतावली समाप्तम् लिखत राम स्वामी वैरागी संवत १९४० पोप मकर शुकल पक्ष ५।

विषय—रामचन्द्र जी की स्तुति और अन्य शिक्षा प्रद भजन

संख्या २८५, अठारह पुराण और पचीस अवतारों के नाम, रचयिता—महेशदत्त, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामविलास, ग्राम—मदारनगर, डाकघर—बंथर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अठारह पुराण और संख्या लिष्यते ॥ घनाक्षरी ॥ ब्रह्म है अयुत पद्म पच्पन त्रिविंश विष्णु चतुर्विंश शिव पंच विंश नारदीप है ॥ अष्टादश भाग-

बत न्यारी वैवर्त ब्रह्मलिंग पुष्पकरसरू अयुत बावनीय है ॥ द्वादस ब्रह्मांड चतुर्दिस बाराह स्कंद् एक सै एकासी सहस बावनीय है ॥ १ ॥

पंच सत चौदह सहस है भविष्य भनि पंच दस सहस औ चारि सत मानिये ॥ इनके एकत्र किये पद्य स्वच्छ लक्ष चारि होत हैं विचारि निरधारि जिय आनिये ॥ सुनत सुनावत औ गावत बतावत के हरि लोक पावत कहावंतन जानिये ॥ वन समान समुहाय के महेसप्रसाद कहत सुभाय मन भाय तौ बखानिये ॥ इति अठारह पुराणों की नामावली संख्या समाप्त ।

अंत—विष्णु के २५ अवतारों के नाम औं चरित्र लिख्यते ॥ घनाक्षरी । वामन बाराह यज्ञ कपिल कुमार पृथुरूप वक्र रिषभ नरसिंघ हंस ठानिये ॥ मत्स्य कूर्म हरि हय बुध व्यास कृष्ण बुद्ध मोहनी परशुराम रामचन्द्र मानिये ॥ कलकी नारायण धन्वंतरि औं ध्रुव पूते पंच बिस गाये पै असंख्या कृति जानिये ॥ गाय बिन गुन पार आगम गनेस सेष प्रजमेस औ महेस क्यों महेश मानिये ॥ बलि आछी वामन नरसिंघ प्रहलाद पाछी हरि गज साखी राम पाखी लंक नाहु को ॥ मत्स्य वेद उधारी और कूर्म पृष्ठ गिरिधारी कृष्ण कंस हारी मोह नारी मारी राहु को ॥ बुद्ध दया कारी बराह महिधारी कपिल ज्ञान संचारी राम मारी सहस बाहु को ॥ कल्की म्लेच्छ हारी व्यास वेद विस्तारी रिषभ धर्महिं पसारी प्रभु भूमि नारी बाहु को ॥ २ ॥ दत्तात्रेय वेदोच्चारी हंस भक्ति जोग धारी प्रथम मारी बस ध्रुव उच्च लोक धारी हैं ॥ नारायण तपकारी कुमार आत्म तत्त्व धारी यज्ञ लोक मारी पृथु जोग विस्तारी हैं ॥ लोक रोग हारी वैद्य राज उपकारी सब भक्तों कीं पुकारी बलिहारी हैं ॥ तुष्ट अपकारी हितकारी निजदास के महेस अपहारी औं अमल कार्य कारी हैं ॥ विष्णु के २५ अवतारों के नाम चरित्र संपूर्ण ॥ दसखत मायाराम ब्राह्मण शिवपुर निवासी भाद्रपद कृष्ण अष्टमी संवत १९११ वि० राम राम राम राम राम ॥

संख्या २८८ मकसूद बारहमासा, रचयिता—मकसूद, कागज—देसी, पत्र—१०, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१० वि० = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० रामनरेश सिंह, ग्राम—तारापत का मेवाड़ा, डाकघर—बहलिया बुजुर्ग, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ सुना का नाम अहद बोलता हूं । कुछक अपनी कथा का बोलता हूं ॥ कई बता क्या मैं उसकी खिमरि आई । उसी की दो बातें मैं है सुनाई ॥ किए गुलमाल मै मन नूर पैदा । किया अरशो समावे नूर पैदा ॥ किए रोशन फलक ऊपर सितारे । किये चौदह तबक यक यक निआर ॥ किए रूप उसी ऊपर समंदर अठारह गढ़ि दरिया जिसके अंदर ॥ किए बाग जहां मैं मुल्क गुलजार । भहर बसतो मोचारा निम कंचार ॥

अंत—गरज हुई उसके दिल को बारहमासी । दू कर मकसूद आखिर कहानी ॥ पर अब न रो वो आई वो सुनावे । यही मिन्नत है मेरा मुस्तफा से ॥ फिर दिल वालक में उसके मौज से मिले बिछड़े इकट्ठी सब के मैसे ॥ इति श्री मकसूद का बारा मासा

समाप्तः लिखा सन् १२९० हिजरी लाला प्रभूदयाल कायस्थ ॥ जैसीताराम जैसीताराम जैसीताराम ॥

विषय—विरहिनी का बारहमासा।

संख्या २८७. हंस जवाहर, रचयिता—मखदूम शाह (दरियाबाद), कागज—देशी कागज पर, पत्र—११६, आकार—९ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८५६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—सं० ११४६ हि० = १७३६ ई०, प्राप्तिस्थान—हबीबुल्ला, ग्राम—रमहावाजार, डाकघर—खास, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—धरती मेरु टोट विधि साजा। ताके बीज मस्ल उपराजा॥ सिरजा विष अंमृत भुइ माँहीं। सिरजिट दूध जो दुइ नोट खाहीं॥ सिरजे ऊप अनेक मिठाई। सिरजे फूल सुवास वसाई॥ वनपद कीन्ह औ मेरु पहारी। कहुँ उजार कहुँ फुलवारी॥ पप पतग बहुत विधि कीन्हा। भोग विलास सबै सुख दीन्हा॥ सवजा सिंघ हस्ति औ चिउटी। सवका भोग आपु विधि बाँटी॥ एग मारि पुनि एक जिआवा। वोही कर भरम जानि को पाया॥ जो चाहै सो विधि करैं। अहै सो आपु अकास। गगन फिरैं भुइ थिर रहै। से अस अचरज धाम॥

अंत—हुलसी नारि निरषि पिउ, हिये न हरप समाइ। अग अंग भयो हुलास, सव दुप गये पराइ॥ लपि पिउ नारि गई घर माहीं। हिये हुलास भे सुप मा छाही॥ आइ वरात जो पहुची वारा। लागे होन द्वारा के चारा॥ नप तन वरन नपी परगासी। मानौ कली × × ॥ अछत कर कचन वरसावै। मगलचार लोग सव गावै॥ मोहीं देपि सपी वर लोना। रहिगई निरपि ठगी जनु टोना॥

× × × ×

विषय—

पृष्ठ १ लुप्त।

(१) पृ० २ से पृ० ८ तक—ईश्वर के सृष्टि कर्त्ता होने एवम् सर्वशक्ति मान होने का वर्णन। (२) पृ० ९ से पृ० ३० तक—हज़रत रसूली की तारीफ़, पीर अशरफ़ एवम् मुहम्मद शाह सुल्तान की बड़ाई। ग्रंथकार का परिचय—

लखनऊ अवध केर मझारा। दरियावाद नगर उजियारा॥ जहा मखदूम केर अस्थाना। मोहम्मद अवजल जगत वखाना॥ इन मखदूम नाम जिहि दीन्हा। तेहिते नगर अचल विधि कीन्हा॥

× × × ×

अमनशाह पिता कर नाऊँ। दरियावाद माँझ तिन ठाऊं॥ प्रस्तावना, पंडितों के विनय, ग्रंथ निर्माण काल—सन् ग्यारह सौ बनचास जौ आए। तव यह कथा प्रेम करि गाये। वलख बुखारे के नृप का निस्सन्तान होकर घूमना और एक साधु से आशीर्वाद पाकर आना।

(३) पृ० ३१ से पृ० ६५ तक—हंस के जन्म का वर्णन, उत्सव, बाल्यकाल, तथा सौख्य वर्णन, सुलतान का देहावसान, हस का वन्दी होना तथा वहाँ से मुक्त होकर

इतस्ततः वनादि में स्वतंत्रतापूर्वक भ्रमण करना। (४) पृ० ६६ से पृ० ७९ तक—मुलाकात खंड। वन में हस्ती से मुलाकात और उसका आत्मसमर्पण दिखाना। चीन के सुलतान से मुलाकात और उसका हंस को राजपाट देना, (५) पृ० ८० से पृ० ८४ तक—हंस का स्वप्न, एक स्त्री के दर्शन उससे प्रेम और विरह व्यथा। (६) पृ० ८५ से पृ० ९० तक—चीन में उस स्त्री के होने का वर्णन, उसके रूप गुणादि का वर्णन। (७) पृ० ९१ से पृ० १०० तक—फुलवारी खंड, सखियों सहित कुमारी का उल्लास, सौंदर्य, जलक्रीड़ा एवम् शृंगार वर्णन। (८) पृ० १०१ से पृ० १०७ तक—कुमारी का बाग निवास और वरशाप। (९) पृ० १०८ से पृ० ११६ तक—मँगनी का वर्णन। (१०) पृ० ११७ से पृ० १२१ तक—सुमुख एवम् फूलमती वर्णन, शुक-संवाद। (११) पृ० १२२ से पृ० १५८ तक—शृंगार खंड वर्णन। शुक द्वारा राज कुमारी का नख सिख वर्णन। (१२) पृ० १५९ से पृ० १७० तक—वियोग वर्णन। (१३) पृ० १७० से पृ० १७५ तक—सुबोध के बंदी होने का वर्णन। (१४) पृ० १७६ से पृ० १८५ तक—स्वप्नखंड वर्णन। (१५) पृ० १८६ से पृ० १९० तक—कामखंड वर्णन। (१६) पृ० १९१ से पृ० २०४ तक—हंस गमन एवम् वियोग वर्णन। (१७) पृ० २०५ से पृ० २१२ तक—विवाह खंड वर्णन। बरात एवम् उत्सव राजकुमारी की उत्कंठा एवम् उल्लास, (१८) पृ० २१३ से पृ०——× तक सुख ॥

संख्या ३८८ ए. भागवत दशमस्कंध, रचयिता—मक्खनलाल खत्री (बनारस) कागज—देसी, पत्र—४१९, आकार—१४ × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—१४००८ पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३ = १८४६ ई०, लिपिकाल—सं० १९११ = १८५४ ई० प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ शुक्ल, ग्राम—सिकंदर, डाकघर—सिधौली, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दशमस्कंध भाषा भागवत मक्खन लाल कृत लिख्यते ॥ श्री कृष्णावतार की लीला व कथा ॥ दो० ॥ जन्म मरण से रहित हैं नारायण करतार। हरि भक्त के हेत सो लेत भूमि अवतार ॥ जब पृथ्वी पर होत हैं अधिक पाप विस्तार। तबहीं प्रभु मैं धरत हैं एक रूप अवतार ॥ जब द्वापर के अंत में कंस कियो अप राज। साधु ऋषीश्वर दुख भया ह्वैगए बड़े समाज ॥ जग्य होम की हानि करि परजा को दुख दीन। ऐसा पाप विचार कर भूमि भई आधीन ॥ जब सब देवन जाइ कै कीन्हीं बहुत पुकार। तब धरि मनुज रूप को दूरि कियो महिभार। पहिला अध्याय ॥ राजा परीक्षित का शुकदेवजी से श्री कृष्णावतार की कथा पूछना ॥ राजा परीक्षित ने हाथ जोड़कर सुकदेव स्वामी से विनती की कि हे महाराज आपने कथा सूर्यवंसी व चंद्रवंसी पिछले राजा व ऋषीश्वरों की जो श्याग परमपद के तप व ध्यान में जन्म अपना बिताकर बैकुंठ में गए हैं वही वह कथा व श्री नारायण जी की महिमा सुनकर मेरे मन का बोध हुआ अब कथा जदुवंसियों की जिस कुल में श्री कृष्ण जी महाराज त्रिलोकीनाथ ने अवतार लेकर अनेक लीला संसार में वास्ते सुख होने मनुष्य के सुख रूप हरि भक्तों के की थी। सुना चाहता हूं ॥

अंत—दोहा ॥ अठ्ठानवम आदि व अथ नारिन के साथ। ऐसी विधि क्रीड़ा करी

माखन प्रभु जदुनाथ ॥ श्यामसुन्दर की संतान इतनी पढ़ी थी कि तीन करोड़ अट्ठतालीस हजार तीन सौ ब्राह्मण उन लडको को विद्या पढ़ाने के लिये रहते थे इसलिये यदुवंशियो की गिन्ती नहीं हो सक्ती देखो जो श्यामसुंदर अपने वंश की रक्षा वास्ते नित्य असंख्य द्रव्यव गौ ब्राह्मणों को दान दिया करते थें वही त्रिभुवन पति इतना प्रेम रखने पर भी दुर्वासा रिषिश्वर के शाप के सव जदुवंशियों का नाश कराके वैकुंठ में चले गये ॥ श्री कृष्ण जी के वंश में केवल व्रज नाम अनिरुद्ध का वेटा जीता वचा था सो मथुरा व इंद्रप्रस्थ का राजा भया उसके कुल में शतवाहु व सत्य सेन आदिक सव राजा वड़े प्रतापी व हरि भक्त व धर्मात्मा हुए थे इतनी कथा सुना कर सुकदेव जी ने कहा हे परीक्षित जो मनुष्य दशमस्कध की कथा सच्चे मन व प्रीति से कहता व सुनता है उसको वड़ा भाग्यवान समझना चाहिये वह मनुष्य ससार में मनोकामना पाकर अन्त समय मुक्त होता है ॥ इति दशमस्कंध भाषा भागवत संपूर्ण समाप्तः लिषत शिवधार मिश्र सवत् १६११ क्वार वदी ८ अष्टमी इति शुभम् ।

विषय—श्री कृष्ण जी के अवतार से लेकर सव लीलाओं का वर्णन ।

संख्या २८८ वी. भाषा भागवत दशम स्कंध, रचयिता—मक्खनलाल पजावी (वनारस), कागज—देशी, पत्र—८७६, आकार—१४ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७०००, पूर्ण, रूप—प्राचीन दीमक लगी, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३ = १८४६ ई०, लिपिकाल—स० १९११=१८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० विष्णुभरोस मिश्र, ग्राम – जयपालपुर, डाकघर—गगागज, जिला—सीतापुर (अवध) ।

पुष्पिका:—इति श्री भागवत पुराण भाषा संपूर्ण समाप्त' काशी वासी मक्खनलाल कृत श्री कृष्णायनमः लिषत गौरीशकर निज पाठनार्थ सवत १९११ वि० चैत्र वदी १० को पूर्ण ॥

विषय—संस्कृत भागवत का हिन्दी अनुवाद ।

संख्या २८८ सी. गोकर्ण महात्म, रचयिता—मक्खनलाल (वनारस), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—१४ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१०. पूर्ण, गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०३ = १८४६ ई०, लिपिकाल—स० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामनाथ शुक्ल, ग्राम—खेदवा, डाकघर—मिहोली, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गोकर्ण महात्म लिष्यते ॥ पहिला अध्याय ॥ भक्ति व ज्ञान, वैराग्य की कथा ॥ शौनकादि अट्ठासी हजार रिषीश्वरों ने वीच अस्थान नैमिशारण्य तीर्थ के सूत पौराणिक शिस्य वेद व्यास जी से कहा कि तुम कोई कथा व लीला परमेश्वर की अैसी वर्णन करो जिसमें भक्ति व ज्ञान वैराग्य अधिक हो ॥ इस घोर कलयुग मे ग्यान ससारी आदमियों का राक्षस के समान हो गया है इस लिये कोई सुष से न रहकर सव किसी को अैसा क्रोध व मोह व लोभ उत्पन्न हुआ है कि आठो पहर उसी दुख में व्याकुल रहते हैं कि कोई अैसा चरित्र भगवान का वर्णन कीजिये कि कलयुग वासियो को

हरि चरणों में भक्ति व प्रीति उत्पन्न होकर सुख मिले यह बात सुनकर सूत जी बोले तुम लोगो ने बहुत अच्छी बात कलयुग वासियों के उद्धार करने वास्ते पूछी जो काल रूपी सांप के मुंह में पड़े हैं सो वह कथा श्री मद् भागवत है जो शुकदेव जी महाराज ने राजा परीक्षित से कही थी जिस समय राजा को शृंगी रिषि के श्राप देने के उपरान्त रिषीश्वर व मुनीश्वरों की सभा में शुकदेव जी ने गंगा किनारे आनकर कथा श्री मद् भागवत सुनाना शुरू किया ॥

अंत—जिस समय सुकदेव जी श्रोता लोगों से यह बात कर रहे थे उसी समय वैकुन्ठनाथ ब्रह्मा व वरुण व कुबेर देवता महादेवादिक भक्तों को साथ लिये सप्ताह यज्ञ में आये उनको देखकर जितने लोग सभा में उस समय बैठे थे सबों ने उठ कर दंडवत व जय जयकार किया। और नारद मुनि मारे हर्ष के नाचने और गाने और प्रहलाद जी करताल व उद्धव जी भक्त मंजीरा और राजा इंद्र मृदंग बजाने लगे। उस समय नारायण श्री त्रिलोकी नाथ ने सब किसी को अपने प्रेम में लीन देखकर उनसे कहा जिसके मन में जो इच्छा हो सो वरदान मांगो। तब नारदादिक हाथ जोड़ कर बोले आप के दर्शन हमको प्राप्त हुए इससे अधिक कौन वस्तु है जो मांगे अपने चरणों की भक्ति हम लोगों को दीजिये। श्याम सुंदर यही वरदान सबको देकर वहां से अंतर ध्यान हो गये और सप्ताह यज्ञ दूसरा संपूर्ण हुआ इतनी कथा सुनकर शौनकादिक अट्ठासी हजार रिषीश्वरों ने सूत जी से पूंछा कि शुकदेव महाराज ने यह कथा राजा परीक्षित को कब सुनाई व गोकर्ण व सनत कुमार जी ने कब कही थी। इसका हाल बतलाइये। सूत पौराणिक ने कहा जब श्री कृष्ण जी महाराज द्वारका पुरी से वैकुंठ को पधारे उसके तीस सौ वर्ष उपरान्त भादों महीना नवमी के दिन शुकदेव महाराज ने यह कथा राजा परीक्षित को सुनाना आरंभ किया और सात दिन में वह पारायण संपूर्ण हुआ इसके दो सौ वर्ष पीछे गोकर्ण ने सप्ताह कथा कही थी उसके तीन सौ छः वर्ष बीते सनत कुमार जी ने नारद को सुनाया सो कथा हमने तुमसे वर्णन किया। यह अमृत रूपी कथा आदर व प्रेम करके जो सुने व पढ़े उनको सब फल मिलते हैं इति श्री गोकर्ण महात्म संपूर्ण समाप्त लिखा शिवचार मिश्र स्वपाठमार्थ संवत १९१० जेठ बदी प्रतिपदायाम।

विषय—भागवत के ६ अध्यायों का उल्था किया गया है। भक्ति ज्ञान, वैराग्य, व नारद जी को भक्ति का बोध, नारद जी का भक्ति के लिये किसी साधु का ढूंढ़ना, सनत कुमार का श्री मद् भागवत सुनाना और सुनने वालों को श्री कृष्ण जी के दर्शन, आत्म देव ब्राह्मण का इतिहास जिसकी स्त्री बड़ी कर्कशा थी व वेश्या के फांसी लगाने से धुंधकारी का मरना व उसका सप्ताह सुनकर मुक्ति होना, सनत कुमार से नारद जी का सप्ताह की पूजा विधि पूछना आदि वर्णन।

संख्या ८८ ए. भ्रमरगीत, रचयिता—मलिक मुहम्मद, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—९×७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२११, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७७० = १८२७ ई०, प्राप्तिस्थान—आनंद भवन पुस्तकालय बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध)।

हृदय ने जानी ॥ अंमर की अमार लगाये । भगत हेतु प्रभु द्वरे आये ॥ भीष्म द्रोन बहुत पछताने । पट्टी छोडि कृष्न के बाना । सो तौ तीनि लोक मँह जाना ॥

× × × ×

अंत—जाति पाँति पूछै मति कोइ । हरि का भजे से हरिका होइ ॥ जाति पाँति पूछै जन सोइ । नाहक गरब करै नर मोइ ॥ देव कुरी लीपत हाथ खिआना । तब लै कुरमा मारिसी राना ॥ देव पित्र पूजै मति कोय । मंसै भूत होत है सोय ॥ सूरदास को दरसन दीन्हा । दरस दिखाय सो बैसे कीन्हा ॥ रूप भगत की ऐसी पियासा । नगर सहित बैकुंठहिं मिला ॥ परमेसुर कहँ भगति पिआरी । जो कुल करै सोई अधिकारी ॥ जबते सरन राम के आए । दास मलूको तब सुख पाए ॥

मलूका पापी पेट का, सपनेहु जानत नाहिं । भगति लिखी कोइ अवर कौ, धोखे दीन्ही (मोहि) राम ॥ चलने चलने सब कहै, मेरे मन मैं और साहब से परचे नहीं, जइहौ कवने ठौर ॥ × × × भगत बछल सपुरन सुभ. ॥ मस्तुः ॥ श्री सवतः १८८७ माघ वदी त्रीयदसीको सोमापती ॥ दिन मंगरवारः ॥

विषय—पृ० १ से पृ० १६ तक - नारद, सनक सनंदन, व्यास, पाँडव, द्रौपदी, ध्रुव, प्रह्लाद, अवरीप, मोरध्वज, तुलसी, नाभा, मीरा, आदि भक्तों के प्रसिद्ध चरित्रों के सबंध के प्रमाण सहित भगवान की वत्सलता का वर्णन ।

संख्या २६१. नेमचद्रिका, रचयिता—मनरंग (अतर्वेद का), कागज—देशी कागज पर, पत्र—२४, आकार—१० × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मदिर (कटरा का), डाकघर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—ॐ नम. सिद्ध ॥ अथ नेम चन्द्रिका लिख्यते ॥ प्रथम नमउ जिन चंद पद, नमत होत आनंद । शिव सुखदायक सकल हित, करत हरत जग फंद ॥ तत्व लपावन तसु गिरा, प्रगटी भव हितकार । प्रनमो ताहि अनन्त सुख, देउ सुमति सुप सार । पुनि गणेश क्रम जुगत जलज, रज लीजै दग आंजि । अलप लपावत जुगति बहु, मिथ्या तिमिरहि भाजि ॥ मगल करता त्रिन कहु, होत न कारज सिद्धि । ताते इनको प्रणामि कर, कहौं कछू हित वृद्धि ॥ सोरठा—सुनहुं भव्यक जन एक, कहौं कथा जो जग विदित ।

अंत—सुनत मिटत भव टेंक, होत सकल कल्यान ध्रुव ॥ पुत्र होय धन होय होय कित्ति अवनि पर । चक्र वर्त्ति पद होय इंद्र पद होय भवातर ॥ होय शरीर अतेग्य होय निरवधि तजि । अति प्रिय वनिता होय होय पडितधिपणा सजि ॥ इन आदि अनेकन संपदा होय सत्य मन रंग तसु । जे पढै पढावें सुनहि नित नेम नाथ जिन राज जसु ॥ १८ ॥ सोरठा ॥ नेम चद जिन राज, मित्र सहित कस मम सुपित । अहो गरीब नेवाज, त्राहि त्राहि मम दीन पर ॥ १९ ॥

× × × ×

इति श्री नम चंद्रिका संपूर्णम् ।

विषय—नेमिनाथ के जन्म से लेकर विवाहादि समेत उनके कैवल्य ज्ञान का वर्णन ।

संख्या २१२ ए. रस रत्नावली, रचयिता—मंडन कवि, कागज—देशी, पत्र—१८ आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७०० = १६४३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा शिवपुरी, ग्राम—काश्मीरी मुहल्ला, डाकघर—लखनऊ, जिला—लखनऊ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रस रत्नावली लिख्यते ॥ दो० ॥ गुरु गोपाल के सीप कै गरे सुमिरनी नाइ । कवि मंडन गाई गहे रसिक राइ के पाइ ॥ १ ॥ कर कर मथ्यो रसालनी कवि मंडन द्विज राज । काढी रस रतनावली भाषा कवि के काज ॥ २ ॥ कवि जम जानी चाहिये ते रस कवित को सार । कवि मंडन यह जानि कै रच्यो ग्रंथ विस्तार ॥ ३ ॥ विषई जोगन कै सदु उपजै हरि सों प्रीति कवि मंडन यह जानि कै बरनत है रस रीति ॥ ४ ॥

अंत—अथ दोहा ॥ श्रमस्वता जानियो कमकादिकम न भाउ । सचारी सब आदि दै मैप रस यह कहि गाउ ॥ बाहिर कहूं जनि जाउ सुजानु जिवाइ कला इत आउ ॥ मोहन जानि कहूं अपने घर मसम कौ तुम हो गाउ ॥ गहि केहि सपी सखिन कहि मडन दुपै सुनी जबहीं जनि काउ माई री भानु बढ बढे मुंदिन मुंदरि मुरन भाये हाउ ॥ अथ रस रत्नावली मंडन कवि कृत संपूर्ण समाप्त लिख्या गुमानसिंह ब्राह्मण कुसोलिया स्थान सूपा मध्ये माघ कृष्ण ७ संवत १७०० वि० जैसा देखा तैसा लिखा ॥

विषय—कवियों के नवरस ।

संख्या २१२ बी. रस रत्नावली, रचयिता—मंडन कवि, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—६×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, फटी, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८०२, प्राप्तिस्थान—पं० रघुवीर चरण मिश्र, डाकघर—बिहार जिला—मनपुर ।

आदि—दक्षिण ॥ दो० ॥ दक्षिण नायक जानिये राखै सब की कानि ॥ सीख सुभायनि करि सकै काहू सों रस मानि ॥ उदाहरण ॥ ग्वालिन गोप सुदै बहुरी जमुना मैं उतारत ही रस काई । मंडन ज्यानि चढी सिगरी सु भई मन मोहन कै मन भाई ॥ अपने अपने घर कौतकि चार सर्प चित चाहि कै देत दुहाई ॥ लै मंदलाल दिठोरनि के मिस औपर साथ सलाम कमाई ॥ सत्र दशा ॥ मडन जानी प्रगट ही सठ नाइक की रीति । बहु नाइक है जार है कहूं कपट कहूं प्रीति ॥ उदाहरण ॥ हित सौं हमसों मिल सौहंकै मितरयै मिलवो इतरावन ही ॥ सुकिते दिन बीति गये कवि मंडन बातन ही बहरावत ही ॥ अब क्यों अपराध बिना हमके तिनके अंसुवा दहरावत ही ॥ रंगि लाल भये कर लासन के पग भामिनि के महपत ही ॥ अथ दूतिन के भेद ॥ दूती तीन प्रकार की उत्तिम मध्यम जोर । मंडन तिन के बचन सों कहै तिन के ठौर ॥ उत्तम दूती ॥ उत्तम दूती

आदि ही सबन लेति अपनाइ । अन सिपई बातें कहे अपनी जुगति बनाइ ॥ उदाहर्न ॥ आपै देपिबे को रस रिस ही अनावें तोहि आपुही मनावै यह मोहन की वानि है ॥ वार वार अहै झूठी बातनि झुकै है आनि तव तव वावरी तू गेर्ता हठ ठानि है ॥ मडन ललाको कछु हासी पेल जानति न मेरो कह्यो मानति न अंतहू तौ मानिहै ॥ आपु को झुकावै ताहि आपहू झुकैवै यै तौ सयानय की वातन में हानि है ॥

अत—निरवेद ते सांत रस को ॥ आइ सम थैते देम देमनि जवाहरन हैं। भय को उदाहरन ॥ पी गये दवारि भारी गोकुल दुपारी देपि ब्रांभन भिपारी देपि भीतर ते आये हैं ॥ मंडन रसिक राइ पारथ महाइ भये सेवक वमीठ सपा सारथी कहाए हैं राज के समाज माझ महाराज राखी लाज द्रोपदी पुकार काज द्वारिका ते आये हैं ॥ मेरे जान आपुने के आगे ही रहत हरि आंगुरी सी गहि प्रहलाद जू बताये हैं ॥ सुप्रीति को ॥ वारौ ये वेर गवारिनि के मुप तेई पै पात जिन्है कछु होनो ॥ मंडन लाल कहा इनको ललचावत हौ अपनो तन लोनो ॥ मेवा जु चाहौ तो लेहु वलाइ ल्यौं दान्यो जु दाप विकात है कौलौ ॥ सो अपने कौ दै दै हौ करौ जिहि पोचनि हरा औ जड़ावती सोनो ॥ इति श्री मन्मडन महा कवि विरचिता यां रस रत्नावल्यां भाव विभाव सयोग वियोग वरननं नाम चतुर प्रवध इति रस रत्नावली संपूरनम् समाप्त । शुभ सुभ ॥ लिपतं गौरी शंकर सवत १८०२ वि० ॥ दोहरा ॥ आदिहै अतरदहे मद्धि रहे यह वात । तुव दासन विनु रहतु है तुव दरसन ते जात ॥

विपय—नायक, नायक दूती भेद हाव माव विभाव संजोग वियोग आदि का वर्णन।

संख्या २९२ सी. रस रत्नावली, रचयिता—मडन कवि (जैतपुर), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७४०, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८०७ = १७५० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामभरोसे सिंह, ग्राम—सुलतानपुर, डाकघर—राजेपुर, जिला—उन्नाव।

पुष्पिका—इति श्री रस रत्नावली काव्य मडन कवि कृत संपूर्ण समाप्त लिप्यते वेनी माधौ मिश्र पटकापुर निवासी चैत्र वदी ६ मी संवत १८०७ वि०

संख्या २९२ डी. रस रत्नावली, रचयिता—मंडन कवि, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४६ = १७८९, लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७, प्राप्तिस्थान—श्री विश्राम सिंह, ग्राम—धरानगरी, डाकघर—चौरहरा, जिला—सीतापुर।

संख्या २९३ ए. औषिक पर्व (महाभारत), रचयिता—मणिदेव भट्ट (वनारस), पत्र—२८, आकार—१६ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन कमजोर, पद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वद्री सिंह, जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ ॐ ॥ हरि तत्सतसिवो जयेति ॥ अथ औपिक पर्व

लिख्यते ॥ दोहा ॥ नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नामि ॥ कहि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सोमि भूरुह भूधर भू भरण भूस्वामी भगवान । तेहि भारतहि भज भजत पद भाषा मर्त महान । जेहि रघुवर प्रभु के चरित बहु सत कहि अनंद । तासु सुमिरि भारत रचत भाषा विरचि सुछंद ॥ पारथ के स्वारथ भये सारथि परम अनूप । तैसे रचि रचि देहि यह भारत भाषा रूप ॥ सोरठा ॥ बंदौं कपि वर वीर राम रमा प्रिय पार कहि । मंगल मूरति धीर भारत रचत ध्वज इयवर ॥ सुमिरिह छनिम × × उदधि जलपति सभी की । भारत समुद्र प्रवाह भाषा करि चाहत रच्यो ॥ वैशम्पायनो वाच ॥

अंत—राम कृपा अनुपम मति होवति । राम कृपा कुमतिहि भय रोपति ॥ राम कृपा तन राग न आवत । राम कृपा बहु मोह बढ़ावत ॥ राम कृपा मद सुबधि सुस्वामी । राम कृपा पातकनि प्रग भारी । राम मक्ति हूँ बरपन हारी ॥ × × × ॥ दोहा ॥ राम कृपा सत सग्य को प्रेम निबाहत आम ॥ राम कृपाते सुजन के न्यून होत नहि नाम ॥ राम कृपाते मयन द्रुत कर्म योग व्यवहार राम कृपा ते मिस्टत उच उत्तम सुपद उदार ॥ स्वस्ति श्री काशिराज महाराज धिराज श्री उदित नारायण स्वाज्ञार्य गम्भिना श्री वैदिक काशी वासी रघुनाथ कवि स्वरात्मज गोकुल नाथ स्वात्मज गोपीनाथ स्य सिप्येन मनि देवेन कविता विरचिते भाषायां महाभारते दर्पणे ऐषिक पर्व अथमो अध्याय समाप्त शुभ भूयात ॥ कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे सप्तम्यां इदं पुस्तक लिप्यते यद्यी संवत १९१२ सके १७९७ सन १२८१ फ०

विषय—महाभारत ऐषिक पर्व (विशोक पर्व) वर्णन ॥

संख्या २६३ वी एप विशोक पर्व, रचयिता—मणिदेव भट्ट बंदीजन (बनारस), कागज—आधुनिक, पत्र—१५, आकार—१२ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—१९५, पूर्ण, रूप—प्राचीन कमजोर पत्र, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री बहीसिंह जमींदार, ग्राम—रानीपुर, डाकघर—डाकाव बरसी जिला—सारनाथ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तम हि नामि । कहि गिरा व्यासहि रचत भारत भाष सोमि ॥ भूरुह भूधर भूभरण भूस्वामी भगवान तेहि भारतहि भजि जप यह भाषा मार्त महान जेहि रघु वर प्रभु के चरित बहुसत कहि अनंद । तासु सुमिरि भारत रचत भाषा विरचि सुछंद ॥ पारथ के स्वारथ भये सारथि परम अनूप ते भारत रच देहि यह भारत भाषा रूप ॥ सोरठा । बन्दौं कपि वर वीर राम परम प्रिय पारपद मंगल मूरति धीर भारत रचत ध्वज स्यवर ॥ सुमिरि उच्छल नि अप्प उदधि उल्लंघन गमय की । भारत मधुर प्रमच्छ भाषा करि चाहत तरन्चः ॥ जनमेजय उवाच ॥ जय करी छंद ॥ मुनि दुर्योधन का वध भेद ॥ किये कहा नृप राज मनेह ।

अंत—व्यास के एड बचन मुनि नृप कहे करी अनुमान । जापका मत मयुक्ति भय सदय क ताक अमाम ॥ धरि धरी कै समुझि विधि गति करत पारज मान पूर्व कृत कृत कर्म को फल भयो और न आम ॥ दोहा ॥ भूपति के ये बचन सुनि व्यास मुनीस महान । कहि नृप सों मिन आगमन गे हृ अन्तर्ध्यान ॥ स्वस्ति श्री काशी राज महाराज धिराज

श्री उदित नारायण स्याऽज्ञा कि गामि ना श्री वन्दी जन काशी वासि रघुनाथ कवी श्वरात्मज गोकुल नाथ स्यात्मज गोपीनाथ स्य शिष्येग मणिदेवेन कविना विरचि ते भाषाख्या महा भरत हर्ष विसोक पर्वर्णे प्रथमो अध्यायः समाप्त. सुम्मा ॥ १ ॥ अश्लोक ॥ राम चं लक्ष्मणां चेः मरथों सभूलोपिव' ॥ जनक जाम्यों तथैवत नमस्कर तथैव तंम् ॥ १ ॥ रामा वा रावणें हतो लजयाशोच मेधवे मरथा या मरयो याम भक्तो यां नहि हतोन करको ॥

विषय—महाभारत विशोक पर्व ॥

संख्या २९४. भगवद्गीता की टीका, रचयिता—मजू मिश्र, कागज—देशी कागज पर, पत्र—५४, आकार—९ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०७ प्राप्तिस्थान—पं० गजाधर तिवारी, ग्राम—वदा, डाकघर—गड़वारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भगवत गीता भाषा टीका लिप्यते ॥ धृतराष्ट उवाच ॥ इश्लोक ॥ धर्म क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता जुजुत्सवः ॥ मामका पाडवाश्चैव किमकुर्वंति संजय. ॥ अरथ ॥ तव राजा धृतराष्ट पूछत है संजय सों ॥ अहो सजय कुरुक्षेत्र में हमारे पुत्र अरु पाडवा जुद्ध करिवे को जाई करि येकत्र भये हैं सो दोऊ कहा करत भये सो हम सौं कहौ ॥ सजय उवाच ॥ तव सजय राजा धृतराष्ट सौं कहत है अहो राजा धृतराष्ट तुम्हारे पुत्र जो है जिरजोधन ॥ सो पाडवन की सैन्या देपि कै द्रोनाचार्ज सौं यह कहत है ॥ अहो आचार्ज पाडवन की यह वडी सेन्या है सो तुम देपौ ॥ अरु तुम्हारे सिष्य द्रुपद को पुत्र धृष्टदमन सो सैन्यापति कियो है ॥ अरु या सैन्यामह इतने महारथी हैं तिनके नाम कहिजतु है ॥

× × ×

अंत—इश्लोकु ॥ जत्र जोगेस्वरे कृष्ण जत्र पारथी धनुर्धरः ॥ तत्र श्री विजयोभूत्वा ध्रुवनीति मतिर्मम' ॥ संजय कहत है कि अहो राजा धृतराष्ट ॥ जहाँ जोगेश्वर तहा श्री कृष्ण जू हैं ॥ अरु अर्जुन सौ धनुर्धारी है ॥ अरु तहाँ श्री लछिमी जू है ॥ तहई की जव है ॥ निह चै तुम जानिजौ ॥ मेरे मधि तौ यैसी है ॥ अरु जो तुम म × पूछ्यौ ॥ सो मैं तुमसौं कुरुक्षेत्र कौ कौरवन की अरु पांडवन की वातैं सव कही ॥ इति श्री महाभारथे सत सहस सहितायो वै आसक्य × पर्वनि भगवत गीतायाँ जोग सास्त्रे सूय निपत्सु श्री कृष्णार्जुन सवादे सन्यास जोगोनाम अष्टादसो अध्य × ॥ १८ ॥ समाप्त शुभ मस्तु ॥ सवत् १८०७ के श्रावन सु × पंचमी शुक्रे कह ॥ लिप्यते श्री पाटप सीताराम सुत जूड़ारामेन ॥ लिखा श्री मिश्र मजू अर्थं ॥

॥ श्री कृष्णायनमः ॥

विषय—भाषा गीता का अनुवाद।

संख्या २९५. वेदांतत्रयी, रचयिता—मन्नालाल (आग्र), कागज—देशी, पत्र—५२, आकार—१४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य। लिपि–नागरी, लिपिकाल—सं० १९२५ = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान–श्री रमाकात मिश्र, ग्राम—मुद्रासन, डाकघर—लहरपुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—प्रश्न । समाधान क्या है । उत्तर । चित्त की एकाग्रता ॥ यही षट संपत्ति है ॥ प्रश्न । मोक्ष होने की इच्छा क्या है । उत्तर ॥ मेरी मोक्ष हो जावै ऐसी दृढ़ इच्छा ॥ यही चारो प्रकार के साधन चतुष्टय कहाते हैं ॥ ये जिन पुरुषों में है वे तत्व विवेक के अधिकारी होते हैं ॥ प्रश्न ॥ तत्व विवेक किसे कहते है ॥ उत्तर ॥ आत्मा सत्य है इससे भिन्न सब मृषा है ऐसे ज्ञान को तत्व विवेक कहते हैं ॥ आत्मा क्या चीज है ॥ उत्तर ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण शरीर से भिन्न तीनो अवस्था का साक्षी सत चित आनंद स्वरूप जो वस्तु है वही आत्मा है ॥

अंत—जो सब क्रियाओं से रहित परम हंस दिशा देस काल इनकी अपेक्षा न करके दुःखादिक का नाश करने वाला सब जगह में व्यापक नित्य सुख स्वरूप अथवा आत्मा रूप तीर्थ को सेवता है वह सबको जाननेवाला सब जगह व्यापक और मुक्त हो जाता है । इति श्री वेदान्तप्रदी भाषा महाकाष्ठ पंडित [illegible] देसीय रचित संपूर्ण समाप्त लिखते गिरि राज किशोर संवत १९२५ वि० चैत्र शुक्ल पंचमी ॥ श्री राम राम राम ॥

विषय—आत्म बोध, तत्व बोध, मोक्ष आदि वर्णन ।

संख्या २६६ फूल चरित्र, रचयिता—मनोहर दास, कागज—देशी कागज पर, पत्र—५, आकार—५¾ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री वासुदेव जी, ग्राम—कमास, डाकघर—मार्तीगंज, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ १ पुरुषहि प्रीतम मानिकै । तन मन जोबन दीन्ह । जीवन धन बालक भला सर्व भिखारी कीन्ह ॥ २ बीरह दग धन दव है सखि मर्हि सकै सरीर । सहि न सकै रहि रहि लहै कमल परी जस नीर ॥ ३ बान बिरह के ए सखी, बेधि लगी सो बान । केतकि भीतर मैं परो छन छन निकसत प्रान ॥ ४ आप भवन ती जग भला चित मन करी उदास । हर सिंगार के कारि मुख राखु पिया पर आस ॥

अंत—१०—बालापन बीतत भए, रहेउ युवापन छाइ । रूप मंजरी होइ जब, पिय बिनु रहो न जाइ ॥ ११ फूल चरित्र के भेद सब, कहे मनोहर दास । सब मिलि होइ दुम कंदरा, पिय बिन बारह मास ॥

एका	हाथकंवर	रूपमंजरी	गुलाब
चमन	हँसकरैला	ईंगपव	भोई
,,	सू० मु० बड़हल	कुसुम	जयपारी
मालती	,,	नागफर गुलदाउदी	गुलचाब

(२)

केवड़ा	केतकी	बेईसी	सेवती
कमहंस	चंपा	चमेली	द्रुम कंदर
हँसकरैला	जयपारी	सेमर	छुई
गुलदाउदी	भोई	रूपमंजरी	गुलशाम

(१)

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—पुष्पों के नाम के संबंध से विरह और संयोग शृंगार संबंधी ११ दोहे ।

(२) पृ० ७ से १० तक—४ कोष्ट जिनमें फूलों के नाम अंकित हैं।

संख्या २६७ ए. ज्ञान दोहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजगरा), कागज—साधारण, पत्र—७, आकार—१०३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३=१८४६ ई०, लिपिकाल—सं० १९३१=१८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कुबेरदत्त शुक्ल, ग्राम—शुक्ल का पुरवा, डाकघर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ ज्ञान दोहावली लिप्यते ॥ ईश्वर गति। रन वन व्याधि विपत्ति मों। वृथा डरें जनि कोय। जो रक्षक जननी जठर। सो हरि गयो न सोय॥ मनुज विविध भेषज करत। व्याधि न छाँड़त साथ। खग मृग वसत अरोग्य वन। हरि अनाथ के नाथ॥ जो जाके वस मों परे। तासो कहा वसाय। ताको सुख दुख देत सो। ईश्वर एक सहाय॥ वात वहत रवि तपत वन। वरसत तरु फल देत। इच्छा ते जेहि ईस की। करहु ताहिते हेत॥ जाकी रक्षा जाहि विधि। हरि तैसी मति देत। दै चपेट बड़ बालकहि। लघुहि गोद सव लेत॥

अंत—कहा करै बहु रूप गुन। जासों मन नहिं लीन। राखै मधु घृत दूध मों। जल विन मीन मलीन॥ देश मोह रज आलस भै। तिय सेवा सतोष। सह जहि लहै महत्त्व जो। एह न होंय पट दोष॥ गुन औगुन तम लखि परे। जस जासों मन लगी। कमल मुदित रवि तापहू। निरखि सुधा करि दीन। पुत्र चीन्हिये वृद्धहै। कुदिन परे कलत्र। काज परे सवको लखिय। विपति चीन्हिये मित्र॥

× × × ×

इति दोहावली समाप्त अपाढ़ वदी पचमी

× × × ×

संवत् १९३१ लिखितेय नागर ब्रह्मण मुरलीधर॥

विषय—ईश्वर, काल, कर्म, स्वभाव, और नीति की गति के ७२ दोहे।

ग्रंथ निर्माण काल—सवत् एक सहस सहित, नोसौ तीन समेत। रची ज्ञान दोहा वली चैत पचमी सेत॥

संख्या २६७ बी. ज्ञान दोहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजरागांव), कागज—सफेद, पत्र—२६, आकार—८ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०३, लिपिकाल—सं० १९३१, प्राप्तिस्थान—श्री नानकराम, ग्राम—भोजपुर, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ ज्ञान दोहावली लिप्यते॥ दो० माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का टेर। सव प्रभुता को पद गन्ये। दरयो अरज पग नेर॥ अथ ईश्वर गति॥ रन वन व्याधि विपत्ति मों वृथा डरै जनि कोय। जो रक्षक जननी जठर सो हरि गयो न सोय॥

अंत—ब्राह्द करै बहु रूप गुन जासों मन नहिं छीन। रावै मनु मृत मूप सों जल बिनु मीन मलीन ॥ इत मोह एक अवलम्ब मम तिय सेवा संतोष सहजहिं कहै महक जो पुन होहिं पर दोष ॥ गुन अवगुन वस लखि परै जस जासों मन छीन। कमल मुदित रवि तापहूं मिरति सुधा कर दीन ॥ पुत्र चिन्ह ये बूझई दुरतिम परे कलत्त काज परे सब की लखिय विपति चिन्हपे मित्र ॥ एक एक अक्षर परे एक एक तजि देय। आदिहि दोहा नाम कुछ देन ग्राम लखि लेय। संवत एक सहस सहित नव सै तीनि समेत रची ग्राम दोहा बली चैत्र पंचमी स्वेत ॥ इति दोहावली समाप्ता विरहा मन व्याकुलै बाल विहाल सुमो तेहि काज जो हाल करी। लिपि सेवा महेसभुतासन हवेम बिसावर पूजन ध्यान धरी ॥ मुनि कै बहु और धनी गरडै मसमापुर नारिद ध्यान हरी। कहि दीन प्रबीन सो अर्थ करै जिनकी जग मौं अति बुधि खरी। इति संवत १९११ लिखतं रामधन सिंह ॥

विषय—ज्ञान उपदेश आदि वर्णन।

संख्या २९७ सी. रामगीता अष्टक, रचयिता—मातादीन ठाकुर (अजगरा), कागज—साधारण, पत्र—९, आकार—१०¾ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११ = १८०४, प्राप्तिस्थान—श्री पं० कुबेरदत्त ठाकुर, ग्राम—ठाकुर का पुरवा, डाकघर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथराम गीता अष्टकं लिष्यते सोरठी रागे ॥ रघुवर आस कैसे बनि आवै। अवनि जतन सुचि रत जन तन परिसो सपनेहु नहिं आवै ॥ १ ॥ सहनशील सन्तोष दया हरि भजन मस्यो श्रुति गावै ॥ क्रोध क्रूरता द्रोह मोह तम पोह नहिं ध्यावै ॥ २ ॥ इधर भवर दिसि गमन अवर दिसि गमन अवह दिसि कवन भवन पहुँचावै। मित्र अचरम विपरीति बैरि यह रीति नीति संतावै ॥ ३ ॥ नैवन छीन मन और निरपि मुनि कै बिहोर अपगावै। औगुन तोर मोर न पार हित जब प्रभु मोर न आवै ॥४॥ अस मंजस सी मांति पाप करि ताप ताप तिहुँ आवै श्री रघुनाथ अनाथ नाथ बिनु को हिय तपन बुझावै ॥ ५ ॥ बिपै हीन मति हीन दीन को बिनती दीन सुनावै ॥ ६ ॥ अगुन गीघ गुह गज गनिका गति सुनि मरोम दर आवै। रघुवर यह अवता प्रभुताई बिपय कमि निज हानि जानि जिपतदपि ताहि निताई।

अंत—काज कछुक न मरत सठ दर करत पुनि चित चाय। निलज लजात न नेकु फिरि गाय गीतहि गाय ॥ पाप करत न डरत हरि। दर पत्थर बरसाय। कहूँ मनि कहूँ ओस कन। कर पावन जो यदि आय ॥ करव कछुक न तरवआवत सरवसुरत्र अधिकाय। हाल पसुआ लेइ मदि। कहै नीति तोर विश्राय ॥ अबहि के अनुसरत गी। जप जासती निपराय। दैरपी इक बिनु भेद रायें। पात पहुँची आय ॥ उचित समदम दान जप। तप निगम आगम गाय। आपु सम सब लोक जानहुँ। सहज लोक नसाय ॥ कबहुँ भक्त है मजहु चित है। तबहु जग की यास ॥ दीन जानि सुसील करि हैं। कबहुँ कौसल राम। इति संवत् १९११ लिगितं आगर मुरली पार।

विषय—राम माहात्म्य, चित्त की एकाग्रता तथा संयमादि विषयक भजन।

संख्या २६७ डी. रामगीताष्टक, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजगरा गांव), कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९९ वि०, लिपिकाल—सं० १६३१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री नानकराम, ग्राम—भोजपुर, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

पुष्पिका—इति संवत १९३१ लिखा मुरलीधर नागर ब्राह्मण।

संख्या २९७ ई. रामायण माला, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजगरा), कागज—देशी कागज पर, पत्र—१३, आकार—१०½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कुबेरदत्त, ग्राम—शुक्ल का पुरवा, डाकघर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—दोहा। श्री गोपाल चरन सरन विघ्न हरन हिय आनि। हरि गुन गन वरनन करौं होय सकल अघहानि॥ चौपाई। मधु शुचि ग्रह तिथि अदित वलीना। दशरथ ग्रह नर तन हरि लीना। घर घर वाजे आनंद बधाये। अमित दान महि देवन पाये॥ दोहा। कौशल्या के राम सुत। भरत कैकयी जात। लछिमन अरु शत्रुहन दोऊ स्नही सुमित्रा मात॥ रामचंद्र अरु लषन से। वाढ़ी प्रीति अपार। भरत अरु शत्रुहन ते। पिंड भाग अनुसार॥ करि विवाह आये अवध। चतुर बंधु मम वाम॥

अंत—मूल—हरि वलीन सुग्रीव मुख। कुंभ करन घन शोर। अंगत सहित विभीषना। नील वीर दोउ ओर॥ टीका—याही दोहा मों दूनऊ सैना का वर्णन है। राम पक्षे हरि जो वानर है सो वलीन का। नाम वली रहे के रहे सुग्रीव मुख. नाम सुग्रीवादिक कैसे रहे. कुंभ करन. कुंभ नामघट ताको सय करन. जिनको फिर. घन-मोर. घन मेघ. तैसो है सोर. नाम-गर्जन जिनको. औ अंगद सहित वो विभीषन रहे. वो. नील. वो. वीर अर्थात्. नल औ. कै ओर रह. दिविद १ मैंदर इति राम पक्षे।

रावण पक्षे—हरिनाम सिंह ताके तुल्य वलीरहे राक्षस औ न सुग्रीव मुख. न सुग्रीव औ न सुमुख—राक्षस कुरूप होते हैं. के रहे. कुंभकरन रहे. वो घनसोर मेघनाद रहे. कस रहे. अगद सहित अंग दश जो रावन ताके हित. नाम. हितकारी. अंगन में प्रधान। शिर हैं सोहैं दश जाके यातें अंग दश रावण है वो विभीषन नाम भयानक रहे सब वो नील नाम दानव रहे वो वीर अर्थात् नरान्तक रहे वो. दोऊ ओर रहे. के। कुंभ औ निकुंभ एई वीर दोऊ ओर रहे या प्रकार ते सक्षेप ते दोनों सेना का वर्णन है। विस्तर भयते सब नहि कह्यो. इति॥ सवत् १९३१ जेष्ठ १३.१५ लि० नागर ब्रह्मण मुरलीधर॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० २२ तक—रामायण तुलसी कृत का संक्षिप्त वर्णन।

(२) पृ० ११ से पृ० २६ तक—अतिशयार्थ वर्णन । ग्रंथकार परिचय—"""प्रयाग तें उत्तर अगार मास । तासु दूर है अवध ते दक्षिन कहें मतपास ॥

संख्या २६७ एफ. रसामरमाला, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजगरा गाँव, प्रतापगढ़), कागज—आधुनिक, पत्र—२७, आकार ९ × ७ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९९, लिपिकाल—सं० १९११ प्राप्तिस्थान—श्री रामकुमार दूबे ग्राम—रामनगर, डाकघर—भँरंगाबाद, जिला—सीतापुर ।

संख्या २६७ जी रससारिणी, रचयिता—मातादीन शुक्ल दीन (अजगरा), कागज—दूनी कागज पर, पत्र—९, आकार—१०½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३ = १८४६ ई०, लिपिकाल—सं० १९३२=१८७४ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कुबेरदत्त जी शुक्ल, ग्राम—शुक्ल का पुरवा, डाकघर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ मदन कदन सुत गज बदन । विघन हरन जन पाल । एक रदन गुनगन सदन । चाहि चाल चाहि भाल ॥ उदाहरन संछेप अति, जाने कहें न ग्रंथ । पाल देतरस सारिणी, भाषा रची सुपंथ ॥ अब नव रस—रस शृंगार हास्य कहि, करुण, रौद्र पुनि वीर । भयानके बीभत्स कहि, अद्भुत शान्ति धीर ॥ उदाहरना स्वमी दृष्टि ता मी जोई । हंसत मिराम को देखि । सीक करत सन पशुन का, अधिक प्रिय देखि ॥ पुलकित रस करि रावकहि । दृष्टि जरत अति सीति । स्नेह रुधिर उत छिति बगन, सा सुराय पर पीत ॥ रस प्रधान सगार है । कहीं भद कछु तासु । आलंबन उद्दीपनो । है विभाव दुइ जासु ॥ कुपित भारि रानी करी । सोक मई है सोच ।

अंत—काम तप क करन यों । या वंदित चित लोप ॥ तिय नायक संपात द्रव । धरक आतकु आदि । जो संसारि विभार रचि । इसे विभूषक आदि ॥ ई प्रकार शृंगार रस । सुजस मिल नवीन । बिन सम है विरह मी । दस दसा को जोग ॥ विरह की दस अवस्था अभिलाषचिन्ता स्मरन गुन कीर्तन उद्वेग । अरु प्रलाप उन्माद रुक । जड़ता मिरन जनम ॥ विरह दुर्लभ जाति हैं तदपि कहा नहिं गोप । पतु नर सुधर धरन मन दूपी सजन नहिं कोप ॥ इति रस सारणी पूर्ति मागन् । कथा कही ११ लिखितैव रस सारिणी सहज दुर्गाविप्र निपुण पर वरम सेवक मगार ब्राह्मण मुरलीधर १९११ ।

विषय—नायक नायिका भेद । ग्रंथ रचना काल । एक मदन कर सौ त्रिगुन मिति (माग) सुदि ज्येष्ठ । नेम लिखि रवि दिन रची । रस सारिणी सुश्रेष्ठ ॥ ग्रंथकार का परिचयः—माया ता। दीन नर, सुमी पुगस का देर । राव प्रभुता का पर गम्या । दम्या ग्राम पगानर ॥ एक एक अजरा पर । एक एक तजि देर । एक दोहा सों नाम कुल । हैन प्रथम हर्षित सेर ॥

संख्या २६७ एच. रस सारिणी, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजगरा गाँव, प्रतापगढ़), कागज—सफेद, पत्र—२६, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०३, लिपिकाल—सं० १९३१, प्राप्तिस्थान—श्री रामदुलारे दूबे, ग्राम— रामनगर, डाकघर—औरंगाबाद, जिला—सीतापुर ।

पुष्पिका—इति रस सारणी पूर्तिमनान सवत १९३१ असाढ़ वदी १३ ॥

संख्या २६७ आई. संग्रहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजगरा, प्रतापगढ़), कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१५, पूर्ण । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२५=१८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय, प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ संग्रहावली । कवित्त । शान्त रस. बालवटी करै वादि सदा पितु मातु तऊ भरै गोदनि माँही । कूर कपूर करै पशु भूरि तजै तऊ पालक पालिवो नाँही । हे रघुनाथ तिहारही हाथ अनाथ हौं दीन कहो केहि पाँही । मै जड़ता वशि तोहि तज्यौं जिमि मोहि वरावरि होहु वृथा ही ॥ १ ॥ पाहन ते तौ कठोर नहीं शवरी गुह ते कहु कौन कुजाती । वानर गीध निशाचर ते जग मों नहीं आन कोऊ । जड़ जावती देपि अहेतु दया छ्नपै तजि साधन वैठ अहो दिन राती ॥ दीन अनाथ तजो रघुनाथ तौ तो सम को विसवास को घाती ॥ २ ॥

अंत—करी रैन मन भवि जो ॥ ९९ । केसरी । माधो तारो दीण नर सुनी कुशल का देर । सव प्रभुता को पद गन्यो ठरयौं अरज पग नेर ॥ १०० ॥ एक एक अच्छर पढ़ै एक एक न तजि देह । यहि दोहा मों ताय कुल देश ग्राम लपि लेह ॥ १०१ ॥ सेवर साज वरा वक चावरी मूग वरी रिक वोंछ विमारै । कोंद परोर छुंडै तो रहै कहूँ शाग भैरा कठहार कों टारै । पोवा औ पांड पराय करै दधि दूध मही लहि कौन विचारै ॥ दीन सुधारि अरार की दारि द्वैचारि जौ आम टिकोरहि डारै ॥ इति नानार्थ नव सग्रहावली सम्पूर्णम । संवत १९२५ वि० माघ शुक्ला तृतीया भृगुवास्रे समाप्ति मरामत ।

विषय——फुटकर कवियों का सग्रह ।

संख्या २६७ जे नानार्थ नव संग्रहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजगरा-गाँव, प्रतापगढ़), कागज—देशी, पत्र—२२२, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४७ । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९९ वि०, लिपिकाल—सं० १९३० वि०, प्राप्तिस्थान—बाबू ओंकार नाथ टंडन तालुकेदार, जिला—सीतापुर ।

आदि—कीन्हे न जो उपकार कछू तौ कहा घरवार के कार मरेते । दीनन दीन न दान कछू तौ कहा धन भार अगार भरेते । सेयो न संत सभा न तज्यो तौ कहा विषयी जन संग धरेते । जौन विके रघुनाथ के हाथ तो काह अनाथ होय धाय मरेते ॥ ४ ॥ तन सुंदर औ मनि मंदिर मोतिय चंद्र मुपी वुध पुत्र सही । कर जोरि निहोरि खड़े चहुं ओरिनि थोर महीप जिन्हे मढही ॥ मद मत्त मतग जतीस्त्र तुरंग वंधे वहु रंगन जात कही ॥ जन जानकी

याह के नेह बिना मधु व्यंजन भोजन कोधु नहीं ॥ ५ ॥ परि बारहिं ध्यान्त पाम्य है तुम्हरे कोऊ काम न आवेंगे । अपराध करो जेहि हेतु तुमै जमलोक सो दीन बसावेंगे । नहिं देह न गेह न नेह कछू सब कर्म सबै संग जावहिंगे । तजि पंच भजौ मति मंद अजौ जगपेषा अहैला नसावहिंगे ॥

अंत—ग्रह ९ ग्रहे ९ गद गृ १ पुष्के वर्षे पौष सिते तरे पक्षे कुहु तिथौ सूर्ये निर्मिता वृत्त दीपिका ११६९ ममाही मंगल श्लोके एकैकाक्षरकान्तरात् पावनीर्य प्रमान्ताम जातिर्हेलोपिमापया इति संक्षेपतो वृत्त प्रस्तार सव्यामयोरिहमेव यतः

२				१	१
३				२	१
४			१	३	१
५			३	४	१
६		१	५	४	१
७		४	१०	६	१
८	१	१०	११	७	१

इति

१३५ ३१२ २८	१२३४८ । । । । ।

विषय—सब ऋतुओं का वर्णन । रामायणमाला, राम गोपालक ज्ञानदोहावली रस-सारिणी में रस वर्णन तिथिबोध, पिंगल आदि वर्णन ।

संख्या २६७ के भावार्थ नव संग्रहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल दीन (अजगरा), कागज—देसी कागज पर, पत्र—१९, आकार—१०¾ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कुबेर दत्त शुक्ल, ग्राम—शुक्ल का पुरवा, डाकघर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़ ।

पुष्पिका—इति भावार्थ नव संग्रहावली संपूर्ण—संवत् १९३१ मिती बैसाख शुक्ल ५ लिखित नागर लाला मुरलीधर शर्म ।

संख्या २६७ एल संग्रहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल (प्रतापगढ़), कागज—देसी, पत्र—७१, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—७००, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३ वि०, लिपिकाल—सं० १९३१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामदुलारे दूबे, ग्राम—रामनगर डाकघर—औरंगाबाद, जिला—सीतापुर ।

पुष्पिका—इति संग्रहावली सपूर्णं संवत १९३१ मिती वैसाख शुक्ल ५ लिपत शिव गिरि ब्राह्मण शुभम् ॥

संख्या २६८. रामायण (लकाकाड), रचयिता—मथुरादास, कागज—देशी, पत्र—५१०, आकार—१२×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४१=१८८४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राजदुलारे मिश्र, ग्राम—मानपुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः रामायण कृतिवास कृत ॥ लंकाकांड ॥ श्लोक ॥ सर्वं स्थूल तनु गजेंद्र वदनं लंबोदरं सुंदरं। प्रस्यन्दन्मदगंध लुब्ध मधुप व्यालोल गण्ड स्थल ॥ दन्ता घाति विदारि तारि रुधिरैः सिन्दूर शोभा करं। वन्दे शैल सुता सुतं गणपतिं सिद्धि प्रदं कामदम् ॥ १ ॥ शारदेन्दु वदना वरदाद्या शारदा शुनिज सेविजनानाम् बुद्धिमान्द्य-मपमा ज्येददातु निर्मला स्मति मती व प्रसन्ना ॥ २ ॥

अंत—हरि गीतिका छद ॥ रघुवर विजय आनद मय फल चारि दायक पावनी। शुभ कर मनस तिमिरांध हर अरु त्रिविध ताप नशावनी ॥ सुर सिद्धि शंभु मुनीन्द्र नारद जाहि निशि दिन गावहीं। पर राम चरित अपार पारावार पार न पावहीं ॥ रामायणहिं सो सकल वसुधा वासि हरि जन कहं सदा ॥ आनंदा मनकामदा सुत वित्तदा अरु मोक्षदा ॥ श्री मान भोला नाथ सुत काली प्रसन्न यह धरि हिये कृति वास कृत रामायणहिं अनुवाद भापा मह किये ॥ दो० ॥ सो सिय पति पद आस करि द्विज मथुरा अज्ञान। छन्द वद्ध करि मुदित चित करत राम गुण गान ॥ ममाप्ताचेय जुद्ध कांड लीला कथेति ॥ लिपत मुन्नालाल दुवे गोला निवासी सवत् १९४१ जेष्ट शुक्ल दशमी ॥

विषय—रामायण लंका कांड यह वाल्मीकी रामायण का वंग भापा अनुवाद कृतवास कृत का मथुरा ब्राह्मण ने भापा अनुवाद छद वद्ध किया है ॥

संख्या २६६. वैद्यक सार (सर्व) सग्रह, रचयिता—मथुरादास कायस्थ, कागज—देशी, पत्र—५७२, आकार—१०×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७२०, पूर्ण, रूप—जीर्ण, गद्य, लिपि—नागरी कैथी मिश्रित, रचनाकाल—१७२७ = १६७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्रीमती श्रिद्धा कुँवरि देवी अध्यापिका कन्यापाठशाला, डाकघर—इटौंजा, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री राम श्री राम ॥ १ ॥ सरसुती मरस बुधी वागपते हंस वाहनै। निमस्कार अहं कररं बुधि दें वाक वाहीनै ॥ लिपतं पोथी वैद्यक सव संग्रह। लछन सिर पिया के जो वादी से पीर होई। तो रातदिन सिर दुपा करी तिसके ओपद ॥ कूट रंक ५ काई फल ५ देवदार ५ अरंडी का तेल ५ सव ओपध एकत्र कर काजी सुपीस माथे पर लेप करो दिना सात नीक होई ॥ जो कफ सो पीर होई तो दिन को पीर होई रात को नीक रही तीम्न की ओपद ॥ अरंड के जड़का छिलका रंक २॥ लखन २॥ कूट २॥ छर छरीला २ ॥ वच खुरासानी २॥ यवी के फूल २॥ मोचरस २॥ ई सव ओपद पानी सो पीस तात कर लगावें दिन सात नीक होई ॥ जो पित्त से पीर होई तो ... ...

अंत—सततामक वाइ के लक्षन ॥ मूरछा रहै एक ही ओर को ध्यान सा परि रहै पैर से कम्पिनाई बाहु नहीं पसीं भी कबहीं कबहीं आवै गुरुआ अंसु सा जारी में पाया जाइ कुछ अप समार सा मालुम होइ बात पित इसमें भेद होता है उपचार इसका कस्यान मूल का कस्यान भरत कुमित है पद्मामधिरतस नाम दिया चाहिये इंसा पतामक वाइके लच्छन ॥ अंगिराई बहुत आवै नींद सो जागे की मारे ऊपर कुछ भार बहुत सा रहा है घूमना उठै वर बहुत लगा रहै सोइ बस कै फिकिर मंदसार है कफदूक करेजा कांपै कफदूक बरजे ऐसा लागै इसमा बढ़ोप भेद होता है। पारसी मों इसका नाउ कायूम कहते है। छह[१] महीने तोइ आसरमि है ॥ इति समाप्त ॥

विषय—यह ग्रंथ वैद्यक का है—पहिले १ से ७७ तक भूमिका है उसमें भी कुछ नुसखे हैं जिसमें (१) ज्वर चिकित्सा (२) सन्निपात लक्षण (३) शरीर का गर्म निर्णय (४) गर्भनाल पलट (५) पर रितु पथ्या पथ्य अजीर्ण आदि २ सिर पीड़ा के उपचार, जुकाम के (लक्षण) लेपमास, केश बढ़ाने का तैल, सिर के फोड़े का उपचार, आधा सीसी के उपाय। इसी प्रकार प्रायः प्रत्येक रोग की निदान व औषधियाँ हैं।

संख्या ३०० ए. ललितललाम, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—७४, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—८९६, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३४ = १७७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्णबिहारी मिश्र, माडल हाउस, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः दोहा ॥ सुमत साधु जन की सदा गज मुख दानि उदार ॥ वर्णनीय सब जगत की जग माया सुकुमार ॥ १ ॥ कवि मतिराम गनेश की सुमिरत सुखद अंग पीत रंग विघन तूल तूल दुरि जात ॥ २ ॥ मद रस मलिंद गन नाम मुदित गन माप ॥ सुमिरत कवि मतिराम तो रिद्धि सिद्धि निधि हाय ॥ ३ ॥

अंत—दोहा ॥ कंठ करौ सी समति मैं सौंहै सुमति अभिराम। सकल नियम संसार हित कविता कलित ललाम ३९९ ॥ इति श्री कवि मतिराम त्रिपाठी कृत ललित ललाम ग्रंथ अलंकार समाप्त सुर्भ भूयात् माह कृष्ण प्रति प्रदायों भृगौ सं० १९३४ लिपित मिर्दै पुस्तकं बलदेव मिश्रन श्री कृष्णाय नमः॥

संख्या ३०० बी ललित ललाम, रचयिता—मतिराम (तिकवाँ, कानपुर), कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—८×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६००, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामभरोसे दूबे, ग्राम—मालीपुर, डाकघर—इटौंजा, जिला—लखनऊ।

आदि-अंत—३०० ए के समान। पुष्पिका नहीं है।

संख्या ३०० सी ललित ललाम, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—१२१, आकार—१×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन कच्ची, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण बिहारी मिश्र, नया गाँव वाले, माडल हाउस जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अलंकार ग्रंथ ललित ललाम लिख्यते ॥ दोहा।

तामें प्रति विंवत मनो समति जुत सुर लोक। घर घर नर नारी लसैं दिव्य रूप के ओक॥ १ ॥ चंद्र मुपिनि के भौंह जुग कुटिल कठोर उरोज। वाननि हूँसों मनकों जहां मारत एक मनोज॥ २ ॥ जहा चित्र चोरी करै मधुर वदन मुसिक्यानि। रूप ठगत है दृगनि कों औरन हू जो जानि॥ ३ ॥ ता नगरी को प्रभु वड़ो हाड़ा सुरजन राउ। रच्यौ एक सव गुननि कौ विरंचि समुदायु॥ ४ ॥

अंत—रुचिर अरथ भूपन जिते रचि जाने मतिराम। ताकी वानी जगत मैं विलसै अति अभिराम॥ ३६२ ॥ जव लगि कछप कोल सदस मुप धरनि मार धर। जव लगि दिपनि दिचि सोहत दिग्गज वर॥ जव लगि कवि मतिराम सगिर सागर महि-मंडल। अनिल अनल जव लगि जोतिमंडल आपंडल॥ नृप सत्रु साल नदन नवल भाव सिंह भूपाल मति जग चिरंजीव तव लगि सुपित कहत संसार धनि॥ ३६३ ॥ कंठ करै सो सवनि मैं सोभै अति अभिराम। सकल भयो ससार हित कविता ललित ललाम॥ ३६४ ॥ इति मतिराम कृति ललित ललाम अलकार ग्रंथ समाप्त॰॥ शुभम् भूयात॥

विपय—कविता के नियम।

संख्या ३०० डी. रसराज, रचयिता—मतिराम, (तिकवाँकुर, कानपुर), कागज—देशी, पत्र—१०६, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०९१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०७ = १६५० ई०, लिपिकाल—स० १८०९ = १७५२ ई०, प्राप्तिस्थान-श्री नारायण जी, ग्राम—तरमुरारपुर, डाकघर—मौरावाँ, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ मतिराम कृत रस राज लिप्यते सवैया ध्यावे सुरासुर सिद्धि समाज महेसहि आदि महामुनि ज्ञानी॥ जोग में यत्र में तंत्र में गावैं सदा कृत शेप भवानी। सकट भाजन आनन की द्युति सुदर देऊ उदेउ सो जानी॥ ध्याय सदा पद पकज को मति राम तवै रस राज वपानी॥ १ ॥ दो० श्री गुरु चरण मनाइ के गणपति को उरध्याई। रसिक हेतु रस राज किय सुकविन को सुप दाइ॥ २ ॥

अंत—अथ जड़ता लक्षण। दोहा उत्कंठा ते जो हूवै अचल चित्त अरु अंग तासो जड़ता कहत हैं जे प्रवीण रस रंग॥ अथ उदाहरण कवित्त॥ सूघौ न सुवास रहै रंग राग ते उदास भूलिगई सुरति सकल खान पान की। इक ठक अन विपे नैन वूझे न कहत वात अरु समझे न आन की॥ योरी सी हसनि ओर गेसि ऐसी डारी ठग वौरी करी गोरी तैं किशोरी वृपभान की। नवते विहारी वह भई है वपान कैसी जव ते निहारी रुचि मोर के पखान की॥ दो०॥ अन मिल सोचन वाल के याते नंद कुमार। मीच गई जरि वीच ही विरहा नल की झार॥ समुझि समुझि सव रीझि है सज्जन सुकवि समाज। रसिकन के रस को कियो नयो ग्रंथ रस राज॥ इति श्री रसराज मतिराम कृत संपूर्ण समाप्तः। लिपते गोपी वल्लभ गूजर गौड़ ब्राह्मण करोरनी निवासी संवत १८०६ वि० भाद्र पद कृष्ण अष्टमी॥

विपय—नायक नायिका भेद वर्णन॥

संख्या ३०० ई. रसराज, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—४३,

आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवसिंह जी, ग्राम—रायमरवी डाकघर—संवीर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ नायक नायक भेद रसराज लिख्यते ॥ दो० ॥ होत नायका, नायक आलंबित सिंगार। ताते बरनों नायका नायक मति अनुसार।

अंत—अवसिष लोचन बाल वह भाते नंद कुमार। नीसु गई जरि बीचही विरह अनल की झार। समुझि समुझि सब रीझि है सज्जन सुकवि समाज। रसिकन के रस को किमो भयो ग्रंथ रस राज। इति श्री चरन कमल चंचरीक चित सुकवि मतिराम विरचिते रस राज समाप्तः वुमलत रतन चन्द सेठ के संवत १८३४ ॥ शुभ मस्तु ॥

विषय—नायिका नायक भेद वर्णन।

संख्या ३०० एफ. रसराज, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—७२, आकार—११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८९७=१८४० ई०, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय, प्रतापगढ़ राज, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—३०० ई के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री कवि मति राम विरचितायां रस राज ग्रंथ सपूर्ण मस्तु ॥ लिपितं अषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे सप्तम्यां रविवासरे।

संख्या ३०० जी. रसराज, रचयिता—मतिराम (तिकवांपुर, कानपुर), कागज—देशी, पत्र—१२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३४ पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२०=१८६३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जसकरन सिंह, ग्राम—बिजनौर, डाकघर—बिजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रस राज मति राम कृत लिप्यते ॥ दो० ॥ श्री गुरु चरण मनाइ के गणपति को उर ध्याइ। रसिक हेत रस राज किय सुकविन को सुषदाइ ॥ कवितार्थ जानी नहीं कछुक भयो संदेह ॥ भूल्यो भ्रम ते जो कछुक सुकवि पढ़ेंगे सोधि ॥ बरनि नायक नायकनि रच्यो ग्रंथ मति राम। कीजो राधा रमन की सुंदर जस अभिराम ॥ होत नायकहिं आलंबित श्रृंगार। ताते बरनों नायका नायक मति अनुसार ॥

अंत—इति श्री मतिराम कृत रस राज ग्रंथ समाप्तः लिप्यतं गौरी चरन लाला कायस्त बैठे गांव वाले संवत १९२० वि० माघ शुक्ल सप्तमी ॥ ॐ राम जी की संकर कैलास पती की जय ॥

संख्या ३०० एच. रसराज, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३७, रूप—नवीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री हरिहर बक्स सिंह, ग्राम—ममरेजपुर, डाकघर—बेनीगंज, जिला—हरदोई।

आदि—केलि भवन की देहरी परी वाल छवि नौल। काम कलित हिय को लहै लाज कलित दृग कौल ॥ अथ प्रौढ़ा लक्षण। निज पति सौं रति के लियें सकल कलानि प्रवीन। तासौं प्रौढ़ा कहत हैं जे कवित्त रसलीन। यथा ॥ प्राण प्रिय मन भावन संग अनग तरंग निरग पसारे। सारी निशा मति राम मनोहर केलि के पुज हजार उघारे। होत प्रभात चल्यो चहै प्रीतम सुदरि के हियरे दुखभारे। चद सो आनन दीपमो दीपति श्याम सरोज से नैन निहारे ॥

अत—अनमिप लोचन वालके याके नन्द कुमार। समुझि समुझि सव रीझि है सुकवि समाज। रसिकन के रस को कियो भयो ग्रंथ रसराज। इति श्री सुकवि मतिराम विरचित रसराज ग्रथ समाप्तिः सवत् १९४० ॥ आश्विन मासे कृष्णपक्षे तिथौ दशम्या बुधवासरे लिपितो रसराज ग्रथो मेघ वर्ग मिश्रेग श्रीमतः खुशहाल सिंह नर्मणे जनवार ठाकुर के पठन्यर्थम् ॥

विपय—नायक नायिका भेद।

संख्या ३०० आई. रसराज, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८९०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री परमात्मा शरण, ग्राम—टयोंगा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—हास। प्रौढा धीरा जानियों सो निज सुमति विसाल ॥ ४० । उदाहरण। वैसहीं चितै कै मेरे चित को चुरावति है। वोलति है व्रोसे हीं मधुर म्रदवानि सों। कवि मतिराम अक भरत मयंक मुपी वेसें ही रहति गहि भुज लतिकानि सो। चूमति कपोलें पानक अधर मधु वैसिये निहारि रीति सकल कलानि सो। कहा चतुराई छानियति प्रान प्यारी तेरौ मानु जानियतु रूपे मुरि मुसुक्यानि सौं ॥ ४१ ॥ दोहा। ढीली वाहनि सों मिली वोली कछु न वोल। सुंदरि मानु जनाइयों लियौ प्रानपति मोल ॥ ४२

अंत—प्रिय भूखन वचनादिकी लीला करै जी वाल। तासो लीला हाव कहि वरनत सुमति रसाल ॥ ३५५ उदाहरण ॥ प्यारी पगी पगरी पिय की घर भीतर आपने सीस सवारी। एते मैं आगन तें ठठि कै तहीं आइ गयौ मतिराम विहारी। देखि उतारन लागी पिया पिय सौं हनि सो वहु रचौ न उतारी। नैन नवाइ लज्जाइ रही मुसुक्यलई उर लाई पियारी ॥ ३५६ गमन नमन वचनादि मैं होत कछु जु विसेख। वरनत ताहि विलास कहि रस मय ·· ·· ।

विपय—नायक नायिका भेद।

संख्या ३०० जे. रसराज, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—१६८, आकार—९ × ५ इंच, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण विहारी मिश्र, माडल हाउस, लखनऊ।

आदि—३०० ई के समान।

अत—मोरी वालि वनाइ तै रूप ॥ ४१५ ॥ काम पीर तै पीर इति ताप दूवरी होइ। तासो व्याधि वपान नहीं कवि कोविद सव कोई ॥ ४१६ ॥ उदाहरन ॥ वरषा सी

कागौ मिमि बासर बिलासनि कार्ट परवाह मयो ना उन उसरिबौ। सहबौ बातु कौन पै मुकवि मति राम ननि बिरह अनिल ज्वाल कालनि कौ कारिबौ ॥ मैयनु समीप की उचैयनु उसासनि सौं इमकौं हो हेरति उत हेरति हहरिबौ ॥ क्रियौ कहा चाहति सो कह्यौ न कुवर कान्ह रही अब कान्हैं उप बराले कौ करिबौ ॥ ४१७ ॥ दोहा ॥ कैसि परै नहिं बूझरी सुनिये स्याम सुजान । आनि पैर परजंक मै—

संख्या २०० के. मतिराम सतसई, रचयिता—मतिराम (तिक्रमपुर, तिकवाँ, कानपुर), कागज—देसी, पत्र—१४४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) - २४, परिमाण (अनुष्टुप् —८०४, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल— सं० १८३१ = १७७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जसकरनसिंह, ग्राम— बिजनौर, जिला— लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ मतिराम सतसई लिख्यते ॥ बंदना । मो मन तम तो महि हरी राधा को मुख चंद्र । बढ़ै जाहि लखि सिंधु लौं नंद नदन आनंद ॥ मुंज गुंज के हार उर मुकुट मोर पर पुंज ॥ कुंज बिहारी बिहरिये मेरेई मनु कुंज ॥ रति नायक नायक सुमन सब जग जीतन हार । कुबिलय दल सुकुमार तन मन कुमार उप मार ॥ राधा मोहन लाल को जाहि न भावत नेह । परियो मुठी हजार दस ताकी आँखिन खेह ॥ नागरि नैन कमान सर करत न असी पीर । जैसी करिति गंवारि के दृग धनुहीं के तीर ॥ तन रोचित रोचन कहै रंचन कंचन गोनु पिया पिया बासो त्रिया छिया छिपा जग होनु ॥

अंत—भोगनाथ नर नाथ की रीझगी जीन्ह अनूप । होत भिखारी भूप हैं भूप भिखारी रूप ॥ मुरलीधर गिरिधरन प्रभु पीतांबर घनस्याम । बकी बिदारन कंस अरि बीर हरन अभिराम ॥ पीत संगुलिया पहिरि कै लाल लकुटिया हाथ । धूरि भरे खेलत रहे ब्रज बासिन ब्रजनाथ ॥ तिरछो चितवनि स्याम की कमति राधिका ओर । भागनाथ को दीजिये यह मन सुख बर जौर ॥ मेरी मति में राम हैं । कवि मेरे मति राम चित मेरो आराम में चित मेरे आराम ॥ इति श्री मति राम सत सई संपूर्न समाप्तः लिषतं बनीराम बाजपेई संवत १८८६ बि० माघ शुक्ल सप्तमी ॥

विषय—राधा कृष्ण के ७०४ दोहे ॥

संख्या १०० एस. सतसई रचयिता—मतिराम, कागज—देसी, पत्र—११३, आकार—६ × ३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण बिहारी मिश्र, माडल हाउस, लखनऊ ।

संख्या २०१ कवित्त - सवैया, रचयिता—मेरेलाल (बिल्हौर, कानपुर) कागज—देसी, पत्र—८, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—११६ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९१० = १८५३ ई० लिपिकाल—सं० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवनरायन सिंह, ग्राम—रामनगर, डाकघर—महापुर जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । श्री गौरी शंकरायनमः । श्री सदा शिवायनमः ॥ श्री रामायननम ॥ अथ कवित्त वा पद मेढ़ेलाल कृत लिप्यते ॥ गज तुंड गणेश गुणागर सागर सिद्धि उजागर आँनि नमों । वपु लाल कला निधि भाल चतुर्भुज माल हिये दुप जाल दमों ॥ सुत गौरि सो लायक सपति दायक सत सहायक निरंपिमो ॥ पितु रावर को जन मेढे गहे पद दीजिये श्री सिद्धि बुद्धि समों ॥ १ ॥

अंत—कवित्त ॥ जब से सिय व्याहि राम कामधाम आइ मेढे धामनि प्रति व्योम औधि आनद वधायो है ॥ दसरथ्य राज राज काज सव सीस धारि प्रेम पालि पुर जनहिय हरप वढ़ायो है ॥ मुनि मंत्र सुनत अविसेप नृप सबै कीन्ह दीन्ह वर दमे निसि के कै मन भायो हैं ॥ वन जात प्रान प्रिये सपे सुरधाम राट कौसिला किंचित चिंता भरथ बुझायो है ॥ इति श्री मेढ़े लाल कृत कवित्त सवैया आदि देवी देवताओं कृत संवत् १६१० चैत्र शुक्ल ९ इति श्री शुभम् ॥

विपय—गंगा जी, हनूमान जी, देवी जी, श्री रामचन्द्र जी, श्री कृष्ण जी, भरत जी आदि की महिमा और शंकर जी और रामचन्द्र जी का व्याह वर्णन ॥

संख्या ३०२. मेघमाला, रचयिता—मेघराज (फगुआरा, जालधर, पजाब), कागज—देशी, पत्र—४१, आकार—७½ × ४½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुप्टुप्)—८२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१७=१७६० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामनाथ पाडे, प्रधानाध्यापक हिंदी स्कूल, ग्राम—कुरही, डाकघर—जिठवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मेघमाला लिप्यते ॥ दोहा ॥ परम पुरुप घट घट रम्यौ, जोत रूप भगवान । सकल रिद्धि सुप दैन प्रभु, नमत मेघ धरि ध्यान ॥ १ ॥ वा इत जाको इस सित और सिंधु शिव तीय । सिवा भवानी सारदा सकल एक नहिं वीय ॥ २ ॥ चरनन सो युग तास के आगम वानी दाइ । तिस प्रसाद इस ग्रथ कौं रचौं सकल सुप थाइ ॥ ३ ॥

अंत—अढिल्ल ताते मेघ माल इहु कीनी । जो गुरु के मुप ते सुनि लीनी ॥ इसकी पढ़ै सु सोभा पावै । सो जग में पंडित कहलावै ॥ ६४ ॥ सवि कविता सौं विनती कहत मेघ कर जोर । करौ सुद्ध इस ग्रथ कौ अधिक कह्यौ जिहि ठौर ॥ ६८ ॥ वाल कहत जो वात कौ पडित करत विचार । कर्यौ असुद्धहि होइ कछु, लीजो कविन सुधारि ॥ ६९ ॥ इति श्री मेघ माला मुनि मेघमाला मुनि मेघराज ऋपि विरचिते सगुण नाम चतुर्थोधिकार ॥ ४ ॥

विपय—पृ० १ से पृ० २० तक—मंगला चरण, गुरु वन्दना—ग्रय निर्माण प्रतिज्ञा, कवि दैन्य वर्णन, ग्रंथ निर्माण हेत, कार्तिक से लेकर फाल्गुन तक प्रत्येक मास की विशेप विशेप तिथियों में मेघ होने, वायु चलने आदि के विचार से समय कुसमय होने का विचार । होली विचार (होली जलते समय पवन की गति के अनुसार) चैत्रफल—चैत्र वदी पढ़िवा का फल, चैत्र सुदी मेप संक्रान्ति में जल वरसने का फल वैसाख मास फल । ज्येष्ट तथा जेष्ट सुदी पढिवा का फल, असाढ़ मास फल, अपाढ़ में काली रोहिणी का फल,

रोहिणी नक्षत्र होने के दिन लग्न में सूर्य आवे उसका फल, असाढ़ सुदी पूर्णिमा को ध्वजा की पवन का विचार सावन मास फल, भादों मास फल, आश्विन फल (प्रथम अधिकार समाप्त)

(२) पृ० २० से पृ० ४२ तक—द्वितीय अधिकार। ग्रह नक्षत्र वर्षा लक्षण, चारों खंभों के समय का विचार, रोहणी फल ग्रह राशि फल, मूसल योग, अंगारा योग, मृत्युयोग ग्रह उदय फल, शुक्र उदय फल, शुक्र-फल संक्रांति विचार पौष संक्रांति फल, कर्क संक्रांति फल, चैत्र संक्रांति फल, संक्रांति मुहूर्त फल, संक्रांति छोटी बड़ी व मध्यी का फल, तिथि क्षय फल, तिथि अधिक फल, अधिक मास फल, एक मास में पाँचवार होने का फल, रवि राशि कुशल परिवार फल, दुष्काल-लक्षण सुकाल लक्षण, चंद्रमा उदय फल, चंद्र चढ़े के रंग का फल, मंडल फल, वायव्य मंडल फल, वारुणी मंडल, महेन्द्र मंडल फल, चारों मंडलों का फल, संक्रांति मध्य मंडल में स्थित राशि का फल, समय के राजा का फल, मंत्री फल, ग्रहण विचार, भूमि कंपन क्षण फल।

(३) पृ० ४१ से पृ० ६६ तक—तृतीय अधिकार। ग्रह वक्री अतिचार फल, राशि ग्रह विचार, शोकयोग, कर्तरीयोग, वर्षा कुयोग, वर्ष कोष, बृहस्पति कोष, नक्षत्र राशि कूर्म फल, फारसी के मतानुसार मुहर्रम के गुरें का विचार, सोमवार गुरें का फल, मंगल वारे गुरें का फल, बुध, गुरु, शुक्र, शनिवार तथा रवि गुरें स्वामी फल, गृहस्थिति।

(४) पृ० ६७ से पृ० ८१ तक—चतुर्थ अधिकार। (सगुनाध्याय)—उत्पात फल, वर्षा कंपन, इंद्र धनुष फल छींक का सगुन, गर्भ सगुन, अंग सगुन, प्रमाण, रासभ शब्द फल, काक भाषा पूर्व पहिले प्रहर का फल, अग्नि कोण फल, दक्षिण फल, नैऋत्य फल, पश्चिम फल, वायव्य फल, उत्तर फल, ईशान फल, जंबूलक फल सब दिशाओं के विचार से, शांति काक दिन याम फल द्वितीय तृतीय याम फल, तीजी याम का फल, चौथे याम का फल, रात्रि के चारों याम के फल, किरकी सगुन, सात वार फल, नक्षत्र फल, अंग फल, ग्रंथ पठन पाठन फल, कवि के गुरु का परिचय—(दोहे और चौपाई में) कविनाम वर्णन—(दोहा और चौपाई में) नृप वर्णन—(दोहा और चौपाई में) पंडितों से विनय ॥ ग्रंथ समाप्त ॥

संख्या १०३, मीराबाई के पद, रचयिता—मीराबाई, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप्)—३१४, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा भगिराम शर्मा, ग्राम—अरगाँव, डाकघर—महोबा, जिला—हमीरपुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मीराबाई के पद लिख्यते। श्री गुरू जी नमः ऐसे पिया जान न दीजै हो। चलो री सखी मिलि राखिये नैननि रस पीजै हो ॥ स्याम सलोने साँवरो मुख देखत जीजै हो ॥ कोइ जाइ भेष सों हरि मिलै सोइ सोइ कीजै हो ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर बड़ भागन रीझै हो ॥ १ ॥ ऐसी लगन लगाय कहाँ तू जासी ॥ तुम देखे बिन कल न परत है तलफि तलफि जिव जासी ॥ तेरे खातिर जोगिन हूँगी करवत लूँगी कासी ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण कँवल की दासी ॥ २ ॥

अंत—जावा देरी जावा दे जोगी किसका मीत ॥ सदा उदासी मोरी सजनी निपट अटपटी रीत । बोलत वचन मधुर अति प्यारे जोरत नाहीं प्रीत ॥ हूं जाणूं या पार निभैगी छोड़ चला अधबीच ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर प्रेम पिआरा मीत ॥ ४ ॥

विषय—श्री कृष्ण भगवान के प्रेम रस से भरे हुए मीराबाई के भजन पद आदि ।

संख्या ३०४. व्यंजन प्रकार, रचयिता—मीर पनाहअली (देहली), कागज—देशी, पत्र—६५, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, रूप—फटी, गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४५ = १८८८ ई०, प्राप्ति-स्थान—बेनी मुराऊ, ग्राम—ककरामऊ, जिला—सीतापुर ।

आदि—खाने की किस्मे ॥ रसोई ३ तरह की होती है एक निपरी दूसरी सखरी तीसरी फलारी ॥ आगे तरकीव ममेत लिखता हूं जिससे सहज में जाना जाय ॥ निपरी पकावान घी या तेल में तले वनाये जांय जैसे पूरी कचौरी बड़े लड्डू खुरमा जलेबी आदि जानो ॥ सखरी ॥ कच्चे भोजन को कहते हैं जैसे दाल चांवल कढ़ी खिचड़ी आदि जो घी या तेल में न तली जाय और वाजे हल्दी डालने को कच्चा मनते है ॥ फलारी ॥ फलहारी भोजन उसे कहते हैं जो दूध और कंद या शकर से वनता है जैसे पेटा वरफी मलाई रवड़ी दूध के लड्डू और जो पदार्थ सिंघाडे या कूटु के चून से वना है वह भी फलहारी भोजनों में गिना जाता है ॥ चाशनी वनाने की तरकीव । एक मन खाड को पहिले कढ़ाई में डाले फिर उसमें २ सेर पानी डाले तव आच दे आच से उफान आवेगा । तो उस समय २ या ३ सेर पानी खड़े होकर घड़े से ऊंचा हाथ करके डाले तव उस खाड़ का मैल फूलेगा उसको टीप कहते हैं । उस मैल को पानी से उतार दूसरे पात्र में डाल दे दूध और मिला हुआ मिलाकर ऊंचे हाथ से खाड की कढ़ाई में डाले ॥ दोवार करने से रहा सहा मैल फूल कर आ जाता उसे निकाल डाले अगर खांड़ साफ न हो तो सज्जी पीसकर डाले मैल साफ हो जावेगा ॥ फिर दूसरे किसी पात्र पर टिकटी धर उस पर डलिया रखे उसमें सफेद कपड़ा लगा कर भिगोदेवे उस कपडे को छन्ना कहते हैं फिर डोरी से निकाल कर उस कपड़े की लगी हुई डलिया में डालकर छान लेते हैं उस छने हुए शर्वत को वक्खन कहते हैं वही वक्खन हर एक मिठाई की चासनी करने में दिया जाता है ॥ चासनी कई तरह की होती है हर एक चासनी की पहिचान जुदी जुदी है ॥

अत—आम की चटनी वनाने की तरकीव । आम पांच सेर ले उसको छीलकर गुठली फेंक दे और आमों को पीस ले और मसाला यह डाले ५ छटांक नमक साभर और अदरक १ छटांक लौंग तोला भर मिर्च लाल दक्खिनी चटांक भर धनिया पिसा हुआ सूखा दो पैसे भर दालचीनी छदाम भर पोदीना सूखा दो पैसे भर सेधा नोन छटाक भर मिर्च काली पैसे भर जायफल जावत्री छदाम छदाम भर नीवू का रस सूख जाय तव डाले और दस नीवू का रस पहिले चटनी में डाले ॥ और धूप में आठ १० रोज रखे । जव सूख जाय तव अर्क नाना डाले ॥ चाशनी में ॥ आम वे जाली के सेर भर ले और उनको छीलकर गुठली निकाले और पीस डाले और नमक छटाक भर धनिया दो पेसे भर लौंग छदाम भर पोदीना ३ पैसे भर अदरख आधी छटाक वादाम की मीगी छिली हुई २ पेसे भर पिस्ता पैसे

भर किशमिश आध पाव छोहारा आध पाव भाँग सौंधा २ पैसे भर इन सबों को चटनी की भाँति पीस डाले आध सेर खांड लेकर चासनी कर ले और किशमिश को धोय घी में भून के चाशनी में मिलाले और खुरपी से चलावे फिर उतार दे मरत बान में उठाकर रखै इसी चटनीको भी रतम कहते हैं खिचड़ी दाल भात के साथ बड़ा स्वाद लगी है ॥ इति ॥

विषय—व्यंजनों के बनाने की तरकीबें।

संख्या २०२ प. आदि शक्ति के कवित्त, रचयिता—मोहन कवि, कागज—देशी पत्र—१४, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—श्री रतिपाल सिंह, ग्राम—रसूलपुर कलाँ, डाकघर—असगाम, जिला—उन्नाव।

आदि—महल मनी के बने नीके अति नीके तामें कनक कली के पौर कोरन में साजे हैं ॥ ताके बीच सरसहिंयासन सचीपच मची मन न नवीकच ताके बीच छवि छाजे हैं ॥ मोहन भनत आर्भ नृप पाक सासन के आसन अनूप हीं विरूप अति छाजे हैं ॥ ताके मध्य भाज हैं अनूप मातु स्वच्छ मात आके आस पास भव कोट सक्त राजे हैं ॥ १ ॥

अंत—प्राची दिसि रच्छा कर भामरी सुरूप सर्व सक्ति की अनूप जो अनूप पर छाक का। दक्षिन मे रोज ही रमावे वस सर्वो देवि चंडिका समूह सब सगुन की साक का ॥ मोहन प्रतीची में प्रभावती भपाल का है उत्तर में ईसुरी सुरी सुरी कृपाल का। छन छन धारि धारि पहर पहर निसि अहर हमारे हैं स्वामी रच्छ पालका ॥ २ ॥

विषय—आदि शक्ति श्री देवी जी की महिमा ॥

संख्या २०२ ई. हनुमंत विनय, रचयिता—मोहन कवि, कागज—देशी, पत्र—११ आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१ परिमाण (अनुष्टुप्)—१५१, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—ठाकुर कल्लूमल, ग्राम—गौरिया कलाँ, डाकघर—फतेहपुर, जिला—उन्नाव।

आदि—अकल अनूप कर गुन गन भूप, कर सुंदर सरूप रूप छवि को छ्या देत। अन कर धन साथ दीन चित चपे भये कर प्रत प्रेम प्रेम प्रतिमै पद्य देतु ॥ मोहन भनत कप पात के छिमाट पित सुर के बिषाद आ मूर से मिटाइदेतु ॥ धनकर पुस्ट मन कर के संतुष्ठ धीर पुस्ट ग्रह जोग दुष्ट रोग की हटाय देतु ॥

अंत—लिपि दोष बार दोष नपठ दोष बस्त दोष आग दोष भ्रम दोष लगन दोष रास दोष दुष्ट ग्रह दृष्टि दुष्ट ग्रह की बाट दुष्ट बार मास कष्ट महा दुष्टन की दुष्ट रोष। मोहन भनत तीन तारा को त्रिदोष तीन चंद्रमा को दोष तीन रापन की रोष कोप ॥ हरै सब दोष करौ अठरी भरोप हनुमंत बलवंत हरै दुष और त्रिदोष दाप ॥

विषय—सर्व प्रकार के रोग दुख दर्द अरु मंत्र यंत्र अरिष्ट ग्रह आदि श्री हनुमान जी विनय करने से दूर होने का वर्णन ॥

संख्या २०२ एफ. कवीत विनय, रचयिता—मोहन कवि, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ४ इंच. पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२११,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा छब्बूदास, ग्राम—बादशाहनगर, डाकघर—लखनऊ, जिला—लखनऊ ।

आदि—अकल अनूप कर गुन गन भूप कर सुदर सरूप रूप छवि की छटा देतु । कर कर छेम साध दीजै नित्त नेम नेम कर प्रत प्रेम प्रेम प्रीत में पढा देतु । मोहन भनत कफ वात के फिसाद पित्त जूर को विपाट जर मूर सो मिटाय देतु ॥ तन कर पुस्ट मन करके सतुष्ट वीर दुष्ट ग्रह जोग दूष्ट रोग को हटाय देतु ॥

अत—तन मन ताती पूतनायुत घाती जुर जोगनी जमाती दुस्ट कृत्या मदमाती जे ॥ डाकनी और साकिनी पिसाचिनी पिसाच व्रिंद जिंद औ मसान प्रेत प्रेतन की पाती जे ॥ मोहन भनत वीर वेलि या विताल जान कोटरा चुरैलै षेचरी जे भौत भाती जे ॥ लप भज जाती छिप जाती और सकाती भूर भूतन की पाती कप जनको डराती जे ॥ अपूर्ण ।

विषय—हनूमानजी की विजय की महिमा का वर्णन ॥

संख्या ३०५ बी. नृसिंह जू को अष्टक, रचयिता—कवि मोहनलाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—देवनागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रतीभान सिंह, ग्राम—रुस्तमपुर कलाँ, डाकघर—अजगैन, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री नृसिंहायनम. अथ नृसिंह जू को अष्टक लिख्यते । दोहा—जै जै जस जालन करत जै पालन प्रन रिंह । रच्छक जन मच्छक कुजन जय जय श्री नरसिंह । १ ॥ कवित्त ॥ वजू तन वजू महा वजू नख वजू वजू अयुध दरज्ज छज्ज पाल प्रन चेलाकौ ॥ वब्बर वज्ज महा रौद्र रस रज्ज सज्ज अति वल गज्ज देख असुर हुढेला कौ । मोहन भनत चाय चरन चपेट मार लपट लपेट हिरना कुस ववेला कौ । गुन गन गाउं मन मगन मनाऊं उर घर घर ध्याऊँ श्री नृसिंह अलवेला कौ ॥ २ ॥

अंत—। छप्पय । जय जन प्रन प्रत पक्ष वक्षहिरना कुस भक्षक जय प्रहलाद प्रसाद साद सरना गत रक्षक ॥ जय अद्भुत अवतार धार धारन भुज चारन । जय अनग अर जग जीत भव भीत निवारन ॥ जय अतुल तेज रवि रेज कर जय जन मोहन उद्दरन । भय भक्ष भक्ष पर तच्छ प्रभु जय नृसिंह निर्भय करन ॥ ११ ॥ इति श्री मोहन लाल सुकवि विरचिते श्री नृसिंह जूकी अष्टक सम्पूर्ण सावन सुदि ११ वुध वासरे सवत १९५३ मुकाम महाराज नमी जो कोई वाचै सुनै ताकौ चौकी नवीस हीरालाल की जै श्री नृसिंह जू की पहुचै =

विषय—नृसिंह जी की स्तुति ।

संख्या ३०५ सी. श्री राम अष्टक, रचयिता—मोहन, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप)—३२, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७६ = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रतिभान सिंह, ग्राम—रुस्तमपुर, डाकघर—अजगैन, जिला—उन्नाव ।

आदि—जप तौं सुजप तप तप तौ सुतीरथ मैं सपर भागीरथ मैं स्याम गुम गान कै। बिरद सुभावतो रिझावतो बहुत तुम्है उर ध्यावतो मनावतो सुमन कै॥ मोहन भनत पाप करतो न नेक पुन्य करम मैक चित्त चातुरी सो सुनकै ॥ माधौ मैन पावके ॥ मताप कैौ सुताप राम अधम उधारन तुम्हारो नाम सुनि कै॥ १ ॥ सैस धौं सुरेस दनुजैस औ दिनेस मन मग मनेस कपैं संभु सैपमाल रे। मग मग सुंड औ भगत मसुंड कपैं सुंड पर सूर कपैं मगम महान रे॥ मोहन मुनिंद औ सुरान बिंद कपैं चंद औ चंदते दुचंद बर चारो॥ जाको जप नाम मैं कहीं ह मन मान और नाम रामनाम की समान नहीं जान रे॥ २॥

अंत—हेगुम मंदिर सुंदर स्याम मनोहर मूरति माधुरी मोहन। दीन दयाल प्रेम मत पाल दले सुरसाल निहाल किये जन ऽ कैंज से पाम परैं पसुपाल सु भाव दिपो सुद मान मुनीसन ॥ श्री सुत सानुज माधुज रूप सुई मन मैं बसी जानकी जीवन॥ इति श्री राम अष्टक संपूर्ण ॥ दो० ॥ पढै राम अष्टक सु यह तन मन नेह लगाइ। ताके उर अंदर बसी राम लपन दोउ भाये ॥ १ ॥ कोट दरों मन मैं कर उक्ति सुमुक्ति अनेकनपाप के आंको। कीने गुढायो। बनायो सुयो सजवायो सुपीक बचायो तिनाकी॥ मोहन मैं मम मौह रही गुन गोद रही कहिये ह कहाँ को॥ लाख तुम्हारे हिये मैं हरा पहिरायको वांकैं उतारिको वांको॥ संवत १९२९ वि० मिती बैसाप सुदी २ श्री श्री श्री श्री श्री॥

विषय—श्री राम जी की वंदना।

सख्या १०५ डी वासुदेव अष्टक, रचयिता—मोहन, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप्)—२८ रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७६ = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रतिभान सिंह, ग्राम—रुस्तमपुर कर्रा, डाकघर—अजगैन, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणे जू सदा सहाय ॥ अथ छीपते वासदेव अष्टक॥ कवित॥ परम प्रकासी जाकी जोतिपासी पर पुर को निवासी अविनासी अज ये है॥ थिर चर जीवन को सजग सजीवन को सब जग जीवन को जानी सर्व भेव है॥ मोहन भनत जस जग जस नाम को जय जय नाम जाको सब जग सेव है॥ दैत्य कुल नासी रमा जाकी दिव्य दासी सोई सब सुप रासी बिस्वबासी वासुदेव है ॥ १॥

अंत—कवित ॥ कामठा सरस प्रागराज को परप विष्णु वासनी दरस भसी वास कर आये ते। गया गदाधर पद पावन पै परसि रघुनाथ जाप कर हर बर वर पाये ते॥ मोहन भनत सापी साप है गुपाल भारी उतर अमरा पुरी परवन पधारे ते॥ पावे मुक्ति ईसे निग-सागम असीसैं दग दीसे जगदीस कौं नदीस के नहाये ते॥ संवत १८७६ वि० चैत्र शुक्ल पंचमी को लिपा सिव पालक राम॥ राम राम राम॥

विषय—वासुदेव जी की महिमा वर्णन॥

सख्या १०६ पवनविजय स्वरोदय, रचयिता—मोहनदास कायस्थ (कुरसत, कन्नौज), कागज—देसी पत्र—२९, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—सं०

१६८७ = १६३०, लिपिकाल—स० १८६९ = १८१२ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेशसिंह रईस तालुकेदार, ग्राम—कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गनेस जी सहाए श्री सरस्वती जी सहाए ॥ अथ पवन विजय स्वरोदय भाषा निबध लिप्यते ॥ दो०—प्रथम चरन गुरु वदि कै सुमिरौं पावन नाम । अलप दास सुप देन जन मोहन करत प्रनाम ॥ १ ॥ गंगा सागर गभीर अति मोहन रंग उतंग । कुल मर्य्यादा कूल विवि सकत न लंघन पंग ॥ २ ॥ ग्यान हीन नर पंगु सब बिनु सत गुरु भुज दोइ । तरो जु चाहे तरनी नीधि अधिक अचभो होइ ॥ ३ ॥

अत—धरि पदमासन मूल पवन को ऊरध खेंचि पवन को फेरे । नासिका पवन पूरक करि ततछिन । इडा पिंगला उघहि उतरे उतरे ॥ अरध उरध पवन ग्रंथि तहाँ बैठि करि नाडी सुख मना मध्य वसेरे । सत गुरु क्रिया समाधि लाइ तव मोहनदास काल को फेरे ॥ ३९२ ॥ दिवस समस्त चन्द्रस्वर वाहे । कर निशा दिवाकर को प्रवाहे । करि अभ्यास क्रिया दिढ़ काजै जुक्ति सदा यह संत निवाहे ॥ जव लागि गगन चद्र अरु तारागन इहि प्रकास रवि तमको दाहै । तव लगि आयु वढ़े साधक की लीला रूप काल को ग्राहे ॥ ३९३ ॥

× × × ×

इति श्री स्वरोदय पवन विजय ग्रथ भाषा लिप्यते लेपक पाठक यो शुभ संवत् १८६९ पाउष सुदी १५ सानि वासरे ॥

विषय—स्वरोदय और योग ।

ग्रथ निर्माण काल.—

संवत सोरह से रचौ, ऊपर अस्सी सात । विष्णु भते वीती वरण, मारग सुदि तिथि सातमी ॥ इति ॥

संख्या ३०७ ए सनेह लीला, रचयिता—जनमोहन, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री राम अधार मिश्र, ग्राम—ग्रामपुर डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सनेह लीला लिप्यते ॥ एक समै ब्रज वास की सुरति करी हरि राय । निज जन अपनो जानि कै उद्धव लिये बुलाय ॥ १ ॥ कृष्ण वचन ऊंसे कह्यौ ऊधौ तुम सुनि लेहु । नंद जसोदा आदि है जा ब्रज को सुप देहु ॥ २ ॥

अंत—गोपी अरु ऊधव कथा भूपर परम पुनीत । तीनि लोक चौदह भुवन वंदनी क शुभ गीत । नासत सकल कलेस औ सुप उपजत मन मोद श्री जुगुल चरण मकरद मन पावत परम विनोद ॥ श्री मुकुंद मन मधुप जहं सकल सत अनुराग । जसुदा प्रेम प्रवाह में पडे रहत वड़ भाग ॥ इति श्री सनेह लीला जन मोहन कृत सम्पूर्ण समाप्तः लिपत गोपी नाथ वाजपेई निज पठनार्थ संवत १९४० वैसाख मासे कृष्ण पक्षे दिन वुध वासरे श्री कृष्ण जी की जै वोलो ॥

विषय—गोपी कृष्ण का प्रेम वर्णन ।

संख्या ३०७ बी सनेहलीला, रचयिता—व्रजमोहन दास, कागज—साधारण, पत्र—५, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री लक्ष्मी नारायण मिश्र, ग्राम—पूरा कौलाहक, डाकघर—माधोगंज, जिला—प्रतापगढ़।

संख्या ३०७ सी हनुमान जी के कवित्त, रचयिता—व्रजमोहन, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—२० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२६=१८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवविलास, ग्राम—बरियारा, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री महावीराद्दि बीराय नमः ॥ कृपा कोर कर हेर हर अवन देर जर जान। व्रज मोहन जन जानि कै सुन बिनती हनुमान ॥ छप्पै जै जन मन वरदाय आप सुष करन विलंदा। जै रतन कपि बीर बीर गजन दुष दंदा ॥ जै अनंत बित सेन सीन निहचर निपात किय। जै सुग्रीव सुष दृग अंग सिय राम प्रान प्रिय ॥ व्रज जन मोहन पालने सु प्रभु जस कारन आसन करन। जय जयति अंजनी नंद हर महावीर भंजन बरन ॥

अंत—जै जै जस आरत जै जै जन प्रन पाल जै जै बदन बराल जै जै अंजनी के लाल हो। जै जै राम दास जै जै पारन सुदास जै व्र जन दास जै जै दास प्रन पाल हो ॥ जै जै ब्रज अंग जै जै जीते और अंग जै व सुरन सुरंग जै जै रंगन रसाल हो। कीजिये न देर हर कीजिये सबेर वर दीजिये सुहेर कृपा। कीजिये कृपाल हो ॥ ९ ॥ मोहन हमारे हैं न धीर को भरासो नाप ब्यार कैम ठो सो हमैं पोसो पीन पूत जू ॥ संवत १९२६ विक्रम वर्षे जेठ शुक्ल रविवार ॥

विषय—हनुमान जी की विनय ॥

संख्या ३०८, राधाजी और ललितासखी का बारहमासा, रचयिता—मोहन सूरत कवि कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री गयादीन तिवारी ग्राम—बिकरिहा, डाकघर—बावर्गांव, जिला—सीतापुर।

श्री गणेशायनमः ॥ अथ राधा जी का बारहमासा लिष्यते ॥ सावन बिना गिरधारी सूनी है सेज अटारी ॥ दो० ॥ सावन मैं सब सावरी झूलत पिय के संग। हमरो तो बंदलाल बिन बरो जात सब अंग ॥ १ ॥ भादौं भवन ना भावै नित रैनि बिरहा सतावै ॥ भादौं मैं मोहि कंथ बिन मर अंगवा ना सुहात। जैसे माछी सहद की कर मल मल पछितात ॥ २ ॥

अंत—ललिता सखी का बारहमासा मोहन सूरत कृत ॥ श्री गणेशायनमः ॥ कौन उपाय करौं मोरी आली श्याम मधु हुवरी बस आई ॥ चैत मास मोहिं मदन सतावै। बैसाख मास बहुरि दुख पावै ॥ जेठ मास तनु तपै घाम ज्यौं कंथ बीर मोहि पूछौ ना सुहाई ॥ असाढ़ मास घन घोरि आये बदरा सावन मास बहै पुरवाई ॥ भादौं अगम पंथ नहिं सूझै उछ न भरिगई ताल तलाई। क्वार मास श्याम नहिं आये कातिक

दिअना अकाश वराई ॥ अगहन अग्न सनेह श्याम वश को पतियां हमारी ले जाई ॥ पूस मास मौंहिं शीत सतावत । माघ विना पिय जाड़ न जाई ॥ फागुन फगुवा खेलव केकरे संग विना श्याम अरु विन वलराई । इति ललिता सखी का वारहमासा संपूर्ण ॥ इति श्री श्री राधाजी व ललता सखी का वारहमासा संपूर्ण शुभ मस्तु लिखतं गयादीन त्रिपाठी स्वपठनार्थ संवत १९१४ वि० जेठ शुक्ल ७ विलरिया मध्ये ॥ श्री श्री श्री श्री श्री राम राम राम राम राम शंकर सदा सहाय करें यह वारामारी उत्तम है राम राम राम ॥

विषय—राधा और ललिता सखी का वारामासा।

संख्या ३०६. गणेश पुराण, रचयिता—मोतीलाल, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामकरनसिंह, ग्राम—ढकवा, डाकघर—ओयल, जिला—खीरी।

आदि—श्री ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ गणेश पुराण लिष्यते ॥ दो० ॥ एक रदन गज वदन के पग वंदौ कर जोरि ॥ कृपा करहु शिव नदन वुद्धि वढ़ै जेहि मोरि ॥ १ ॥ व्यास आदि नर पुंगव । नारद आदि मुनीश । दिनकर ब्रह्मा रोप गुरु सव कह नावौ शीश ॥ २ ॥ चौं० ॥ (राजा युधिष्टिर उवाच) सुनौ स्वामि तुम मदन गोपाला । सदा करौ संतन प्रति पाला ॥ विपति हमारि विलोकहु स्वामी । कृपासिंधु उर अतर जामी ॥ छल कीन्हो दुर्योधन राजा जीति लीन्ह मम राज्य समाजा ॥ वनहिं निकारि दीन्ह दुख दाई । कानन फिरौं दुसह दुख पाई । तेहिते प्रभु विनवौं करजोरी । केहि विधि पावौं राज्य वहोरी । कृष्ण कहा सुनु वचन नरेशा । तुम हित लागि कहौ उपदेशा । पूजौ गणपति मन चितलाई । तेहि पूजे सव दुष मिटि जाई ॥ विघ्न हरन है जाकर नामा । तेहि पूजे पैइहौ विश्रामा ॥

अत—दोहा ॥ श्री गणपति की कथा यह । सस्कृत मध्य विसाल । यथा वुद्धि भाषा रची जड़मति मोतीलाल ॥ इति श्री गणेश पुराणे सपूरनि श्री गजाननापणि मस्तु ॥ श्री जो प्रति देषा से लिषा गंगाराम पैंतेपुर वाले भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे ऋषि पचंम्याम संवत १८७५ वि ॥ श्री श्री श्री श्री

विषय—श्री गणेशजी का जन्म और उनके व्रत की कथा। वारह मासों के व्रतों का विधान जो श्री कृष्णजी ने युधिष्टिर से वर्णन किये थे।

संख्या ३०९ वी. गणेशपुराण, रचयिता—मोतीलाल, कागज—आधुनिक, पत्र—५६, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वद्रीसिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव ववसी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ शमुष श्चैक दंत ॥ कपि लोगज करणकः लवोदरश्च विकटो विघन नाशो विनायकः धूम्र केतु गणा ध्वक्षो भाल चन्द्रो गजानन द्वादशै तानि नामानि यः पठे छ्रणोड या दपि विद्या रभे विवाहे च पर वेशे निर्गमे तथा सग्रामें शकटे चैव विघ्नं तस्य न जायते ॥ १ ॥ गज वदन भ चिंत त्रक्ष दंत्त त्रिनेत्रम् चदु दुर विशेख मूतं

राजं पुरातनम् ॥ अमर वास्य पूर्व एक वारांसिरेवौ पद्म पति सुत भीसाल विघ्न राज नमामि ॥ २ ॥ वक्र तुंड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभम् अविघ्न कुरुते देव सर्व कार्ये सु सर्वदा ॥ ३ ॥

अंत—दोहा ॥ गज नायक की कथा यह सकल विघन विनाश। भक्ता बुधि भाषा रचित कहमति मोतीलाल ॥ नाम नगर को परगना लव बस्सा शुभ ग्राम। सुर सरि तरि कै बसत है यह है कवि को धाम ॥ इति श्री गणेश व्रत कथा समाप्तं शुभ मस्तु संवत १९१२ फागुन मासे कृष्ण पक्षे शुभ तिथौ द्वादस्यां चन्द्रवासरे ॥ लिखिता दुर्गा मिश्र यद्री प्रसाद पाठनार्थे ॥

संख्या १०६ सी गणेश पुराण, रचयिता—मोतीलाल, कागज—आधुनिक, पत्र—११२, आकार—५½ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—१८० पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४१ = १८८४ ई०, प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय प्रतापगढ़ राज, प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री गणेश पुराण लिख्यते। दोहा। एक रदन गजबदन को पगु वंदौं कर जोरि। कृपा करहु शिव नंदन बुद्धी बढ़ै मोरि ॥

अंत—शुभ मि० माघ बदि ९ संवत् १९४१ समाप्त। हस्ताक्षर कुंज बिहारी मिश्र।

संख्या १०६ डी गणेश पुराण, रचयिता—मोतीलाल, कागज—देशी पीला, पत्र—२१, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४६ = १८८९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृपा नारायण शुक्ल ग्राम—मुंशी गंज कसरा डाकघर—अमीहाबाद, जिला—लखनऊ।

पुष्पिका—सम्पूर्ण वफ्तम तासा वारी ॥ १० जनवरी सन् १८८९ ईस्वी ॥

संख्या १०६ ई गणेशपुराण, रचयिता—मोतीलाल, कागज—देशी कागज पर, पत्र—२४, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रमाकांत शुक्ल, ग्राम—पुरवा गरीबदास, डाकघर—गड़वारा, जिला—प्रतापगढ़।

संख्या ११० युगुल विहार, रचयिता—मूलचंद, कागज—देशी पत्र—१, आकार—६ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ प्राप्तिस्थान—श्री तपादीन तिवारी ग्राम—बिलरिहा डाकघर—मानगोव, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ श्री युगुल विहार लावनी प्रारंभ ॥ आधी रात के लिये कृष्ण राधे के भवन आते मद अम सरोज से हार क पट कपाट खटकाते भये ॥ टेर ॥ चौंक उठी वृषभान नंदनी कौन मेरे द्वारे आया। भ्रम बताओ आपकर मुझको नींद से जगाया ॥ परस्पर में यमै भ्रम तुम मेरा न मन भावत आया ॥ फिरो दिवाना दिवाना हो किसी का भरमाया मधुर बचन सुन के राधे के श्री कृष्ण समझाते भए। कर सरोज से हार के पट कपाट खटकाते भए ॥ १ ॥

अंत—कृष्ण कृष्ण श्री कृष्ण चंद्र ने तीन वेर उच्चार किया। उठि राधिका दिये पट पोलि गले का हार किया ॥ मूलचंद परका करोरी जिमने ये वीहार किया ॥ भक्त जनों का हरी ने छिन में पार किया ॥ तुर्रा के सुन जवाव कलगी के होस उड़ जाते भये ॥ कर सरोज से द्वार के पट कपाट खटकाते भये ॥ ४ ॥ इति श्री जुगुल विहार लावनी संपूर्ण समाप्तम् ॥ लिपतं गयादीन तिवारी स्वपठनार्थ संवत १९१४ वि० चैत्र शुक्ला श्री श्री श्री ॥

विषय—कृष्ण जी का राधिका जी के पास रात्रि समय जाना और राधिका जी का न पहिचानना आदि लावनी में वर्णन ॥

संख्या ३११. संतान कल्प लतिका, रचयिता—मुन्ना, कागज—देशी कागज पर, पत्र—१७, आकार—८½ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०४, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रघुराज सिंह, ग्राम—मँडरा भसौन, डाकघर—गिथवारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पोथी सन्तान कल्प लतिका प्रारंभ. ॥ श्लोक ॥ वंदे गुरुं तं वसरा पात्ता विष्नु. शिव. वृल मयः सएव ॥ पर्दं धिरे एनक धारा च धीरां कुर्वन्ति गो वत्स पदं भवाधिम् ॥१॥ दोहा ॥ गगपति दिन पति, रमापति, गिरिजा पति पद ध्याय। देषि वद के भेद कछु। जग हित कहत उपाय ॥ कवित्त ॥ देखि तंत्र साररुद जामल वो दत्तात्रय। काम रत्नहु की जल को रतिका है। सुश्रुतादि ग्रंथ वागभट्ट औ निघंटु देषि। धन्वन्तरी की कही औषधी जो नारि पतिका है ॥ औषधी विधान आनवे की पान पान हूकी। शास्त्र विहित सोइ नहि कीनो निज मत्ति काहे वाल तत्र मत्र ज्योतिष सत्र मे मत्त करि मुन्ना ने कीनो सन्तान कल्प लतिका है ॥

अंत—पीपरि औ वच्च भगराइला तीनि ॥ अमलक प्रमान गोली कूटि छानिकी नारितु काल वाल गोलियाँ उजुह मैं धरै ॥ एक एक रोज तीन कभी वीच न परै ॥ अवर जोगराज गुगुल वनवाइ पाइ वाल । कहते हैं लोक मान फिरि आगे सुनो हाला ॥ सूकर को तेल में लस्त लेप करै ॥ रतिराज करै पीतम नाटे टरै उर धरै ॥ एहि भांति जक्त जुक्ति नारी पुरप जो करै ॥ होइहै सुपुत्र निश्चै सुरवाक्य न टरै। इति श्री सतान कल्प लतिका मुन्ना कृते चतुर्थो गुच्छः ॥ दोहा ॥ आगे हम अव कहत हैं। अनिला चौथी नारि। ताके अवगुल दोप सव। सुनिये शेल कुमारि ॥ १ ॥ सजम जो लिय देह को। करत यह भांति। दिवस वाम तन तप्त है। सीत सहै है राति ॥ २ ॥ घाम सीत दिन राति सहि। रति भिनु सारा राति। करत लाय लो गोला उदर। होस तासु एहि भाति ॥ ३ ॥

विषय—सतान होने के उपाय, वन्ध्या-चिकित्सा।

संख्या ३१२. गुरु महिमा, रचयिता—मुरली, कागज—साधारण, पत्र—३, आकार—८ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२९ = १७७२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री नागरी प्रचारिणी सभा, जिला—काशी।

आदि—श्री मते रामानुजाय नमः ॥ औंकारा जै जैकारा सव संतन मिलि कीया विचारा ॥ गुरु की महिमा अपरंपारा गुरु वीसभर गुरु परम निधान ॥ गुरु विन कहूँ न

होए कल्यान ॥ गुरु महाराज गुरु दुबन के देव ॥ गुरु कामधेनु गुरु कल्प ब्रछ ॥ गुरु चिंतामनि गुरु अछय तुरन ॥ गुरु पर से परमेश्वर भीडै ॥ गुरु कंचन सुरत करनीमदे ॥

अंत—गुरु परताप भव सागर तरै। संकर कहैं सुनो पारबती। गुरु को द्रोही सो हरि को द्रोही, ताको मुख देखो मत कोइ ॥ मुख वेश्या मुरछी कहै। जाही पर्दे कलंक कर मति कर बलारिके ॥ कीजिये हरि गुरुन को सग, गुरु की महिमा पढ़ै अरु गावै तीनी संकट बहोर न आवै ॥ गुरु की महिमा अपरंपारा, सिव सनकादिक गावैं सारा ॥ गुरु की महिमा बरनी न जाई, श्री सुपदेव मुनी अपने मुख गाई ॥ इति श्री गुरु महिमा सपूर्ण संवत् १८२९।

विषय—गुरु महिमा वर्णन।

संख्या ३१३ रास पंचाध्यायी, रचयिता—नागरीदास, कागज—देसी, पत्र—५, आकार—९ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४४, प्राप्तिस्थान—पं० श्रीकृष्ण, ग्राम—महिंगलगज, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रास पंचाध्यायी लिख्यते ॥ दोहा—वृन्दावन बंसी बजी मोहे तीनो लोक। वे तीनो मोहे नहीं रहे कौन से कोक ॥ जहो बांस की बांसुरी तै तप कीन्हो कौन। अधर सुधा पिय को पियो हम तलफत बिन मीन ॥ अरी क्षमा कह मुरलिया परत तिहारो पाय ॥ और सखी सुख होत सब महा दुखी हम हाय ॥ कह्यौ न करिये क्यों नहीं पिय सुहाग को राग। अरी बावरी बांसुरिया मुह लगी मति गाज ॥

अंत—नागरिया कहैं कवि कहै कवि मति मंद प्रकास तिनमें और बिलास मैं कोरि कोरि है रास ॥ चौबोला ॥ जासु मति अमित विरहा रैन जाति ॥ तांडव नृत्य रास मंडल में उर धरि प्यारी आनि। मन अक पोंछत कर पंकज सों बीन अंचल पानि ॥ बीरी देत बनाय बदन बिधु प्रेम चतुर अभिमान ॥ पीउत किसलय तलफ्लाहि स्याम मिस उर अपर आन। हरि बढ़न सीअत पद स्वेत ब्याकी सहित स्याम। दीन्हे गले बाहीं गति फैल होके महल में बोलत तत थेई सुख रूप अलकी हूं गये विवस मन भ्रमत भये रीत नकि सी फूक सीस सिथिल भई अलक। इत किंकनी सु घुटी उत बनमाल टूटी ओला हार कुंडल कपोल झाई झलकैं। नागरी दास राधा मोहन नाचत देखि भूली सखी गगन सोम जगत न पलकैं ॥ इति श्री रास पंचाध्यायी समपूर्न समाप्तः संवत १८४४ पौष शुक्ल ७ सप्तमी श्री राधा कृष्ण की जै। बिसाषा सखी की जै ॥

विषय—श्री कृष्ण जी की रास लीला।

संख्या ३१४ शालिहोत्र, रचयिता—नकुल, कागज—देसी, पत्र—५६ आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६० पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८०७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बड़ी सिंह जी जमींदार, ग्राम—चांदीपुर, डाकघर—ताल्लाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ जयति पांडव नायो धर्मनिधानो युधिष्टिरो नृपति भीमार्ज्जुनमहदेवास्यदनुचये वाजिशास्त्रतत्त्वज्ञाः ॥ १ ॥ दृष्ट्वा मस्यदन्नकुल कृत कृत्स्न शालिहोत्रीयं ॥ मृते शास्त्र कृत्वा समासेन ॥ २ ॥ सपक्षा वाजिनः पूर्वं सजाता व्योमचारिन गधर्वेण यथा कर्म छिन्न चिच समन्विताः ॥ ३ ॥ त दृष्ट्वा जव सपन्ना नित्याध्यो वाह चितान ॥ शक्र प्रोवाच पार्श्वस्थं शालिहोत्रं मुनीश्वर ॥ ४ ॥ दोहा ॥ प्रथम सपक्ष तु जो अंवर कीन्हो वास ॥ ब्रह्म धाम सुर धाम जो डोलत फिरैं अकाश ॥ ३ ॥ गंधर व अगते भयो अश्व आकार ॥ देपि सचीपति तव गये शालि होत्र आगार ॥ ४ ॥ श्लोक नास्त्यसाध्य मुनेः किंचित् तवात्र भुवनत्रये ॥ तस्मात्कुरु यथार्हन्ये योग्यामेते महोत्तमा. ॥५ दोहा ॥ शालि होत्र मुनिसौं कह्यो हो तुम कृपा निधान ॥ अश्व पक्ष छेदन करो कीजे म हित जान ॥ ५ ॥

अंत—चौपाई ॥ उत्तम भूमि जहां अवरेषी । पूरव उत्तर जल पुनि पेषी ॥ शु दिन तहां साल वनवाई । दृढ़ कीजै दस हाथ उचाई ॥ दोहा ॥ कोठा करि तहं घासुव उच्च हाथ द्वै देपि । सात दिना गाई वृषभ वाधै तहां विसेपि ॥ ४ ॥ चौपाई जथा जोग त होम करावै । देइ दक्षिणा विप्र पवावै ॥ ५ ॥ अलंकार सौं भूपित करै । गध धूप तहं व विस्तरै ॥ तह प्रवीन रपै धनवार । उत्तम दिन तंह वाधै घोर ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ निक शालिहोत्र गृह कीजै । बहु विधि सौं तेहि कौं धन दीजै ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ अश्वस्यागे प्रलीयत हरिद्रया विश्वगं गजा दोपान् । मंगल्यार्थं च कुर्यात्त्वग्दोपैर्कि भूपयेदलकारैः ॥ १० ॥ इति श्री नकुल कृते अश्व चिकित्सिते शालि होत्रे अश्व शाला विधानो नाम चतुर्दशः ध्यायः १४ संवत १९३१ साके १७८६ पौष मासे कृस्न पक्षे तिथौ द्वादस्यां १२ चंद्र वासरे लिपत देवी समाप्त भई ॥ श्री श्री सीता राम श्री राधाकृश्नाय नः क्रे शिवाये ॥

विषय—इस शालि होत्र में विविध अश्वों की जाति, लक्षण और चिकित्सा का वर्णन है । इसमें निम्न लिखित १४ अध्याय हैं :—(१) अश्व चिकित्सा प्रारम, उत्पत्ति, (२) जाति लक्षण, (३) जाति लक्षण अधूरा है (४) आवर्त (५) भेद (६) भेद के लक्षण (७) अश्व वाहन (८) धातु परीक्षा, (९) सिरो मोक्षणं, (१०) ऋतु चर्या (११), (१२) चिकित्सा पिंड प्रकरण, (१३) क्वाथ विप प्रयोग, (१४) अश्व शाला विधान ।

संख्या ३१५. सुखमनी, रचयिता—गुरु नानक, कागज—साधारण, पत्र—६७, आकार—५ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२५, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पुरुषोत्तमदास जी रईस व्यापारी, ग्राम—कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—प्रभु कै सिमरनि तीरथ इसनानी । प्रभु के सिमिरन दरगह मानी ॥ प्रभु कै सिमरनि होइ सु भला । प्रभु के सिमिरन सुफल फला ॥ से सिमरहि जिन आप सिमराये । नानक ताकी लाग उपाये ॥ प्रभु कै सिमरनु सभते ऊंचा । प्रभु के सिमरनि उधरे मूचा ॥ प्रभु कै सिमरनि त्रिस्ना बुझै । प्रभु कै सिमरनि सभ किछु सुझै ॥ प्रभु कै सिमरनि नाहीं जग त्रास । प्रभु कै सिमरनि पूरन आस ॥

अंत—सलोक (श्लोक) पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जाका नाउ। नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥ असट पदी (अष्टपदी) पूर गुरु का सुन उपदेस। पार ब्रह्म निकट करि पेष ॥ सासि सासि सिमिरहु गोबिंद। मन अंतरि की उतरै चिंद ॥ आस अनित्त तिआगहु तरंग। संत जनाकी धूरि मन मंग ॥ आपु छोडि बिनती करहु। साध संगि अगनि सागर तरहु ॥ हरि धन के भरि लेहु भंडार। नानक गुरपूरे नमसकार ॥ १ ॥ × × × जिस मनि बसै सुनै लाइ प्रीति। तिसु जन आवै हरि प्रभु चीत ॥ जनम मरन ताका दूख निवारै। दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ निरमल सोभा अंम्रित ताकी बानी। एकु नाम मन माहि समानी ॥ दूख रोग बिनसे भै भरम। साध नाम निरमल ताके करम ॥ सभ ते ऊँच ताकी सोभा बनी। नानक इह गुणि नाम सुखमनी ॥

विषय—(१) पृ० १ से ४०—प्रभु सुमिरन का महत्व, भगवद्भक्ति की महत्ता, इन्द्रियादि का महत्व। भक्ति करने का आदेश। प्रभु का प्रभुत्व, साधु संग महिमा।

(२) पृ० ४१ से ८०—ब्रह्मज्ञानी के लक्षण, भक्त तथा पतित के लक्षण जीवनमुक्त के लक्षण, प्रभु की नाना प्रकार की रचना का कुछ विवरण, भगवान के एक होने तथा व्यापक होने का कथन, उसके सर्व संचालक तथा कर्ता धर्ता होने का कथन, प्रभु की शक्ति तथा भक्त के लिये सर्वस्वदान का विधान, संत के निंदक आदि का दंड विधान, एक प्रभु की आस रखने तथा उसके स्मरण का आदेश। हरि के गुण गायकों का अहोभाग्य। भगवान और भक्त की एकता का कथन।

(३) पृ० ८१ से १११—साधु संग में हरि कीर्तनादि करने का विधान, मन में गुरु की प्रतीत होने का फल। प्रभु के निर्गुण तथा निरंकार होने का वर्णन। सत्य नाम की महत्ता, सेव्य सेवक व्यवहार कथन, प्रभु के आज्ञानुसार चलने वालों की बड़ाई। हरि सेवा संबंधी कुछ उपदेश तथा हरिनाम रटने की आज्ञा और उसके लाभ, सद्गुरु से निर्मल उपदेश लेने का आदेश।

(४) पृ० ११२ से १३३—प्रपंचादि रचयिता स्वयं परम ब्रह्म के ही होने के कारण अपना खेल आप ही देखने इत्यादि के कई वर्णन। ईश्वर से भिन्न कुछ भी न होने का कथन। प्रभु के अन्तर्यामी होने का कथन, देह दुर्लभ होने तथा ईश्वर भजन का उपदेश, प्रभु नाम जपने के लाभों का वर्णन। प्रभु की अनेक कलाओं का कथन और उसके आकार तथा इन्द्रियादि रहित होने पर भी सब कार्यों के करने का विधान। सन्तों की स्तुति, गुरु को नमस्कार, नाम सुमिरण का उपदेश, ब्रह्म की स्तुति, गुण गोबिंद नाम धुनि बानी के स्मरण का कथन, एक नाम ही के मन में निवास करने पर संपूर्ण रोग, दुःखादि के विनाश होने का कथन।

संख्या ३१६ ए. अनेकार्थ, रचयिता—नंददास, कागज—देसी, पत्र—१४, आकार—९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२७, प्राप्तिस्थान—विश्वनाथ जी, ग्राम—मैमहरा, जिला—खीरी (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अनेका अर्थ लिप्यते ॥ दो० जाँ प्रभु जोती मय जगत कारन करन अभेव । विघन हरन सब सुप करन नमो नमो हरिदेव ॥ एकै वस्तु अनेक ह्वै जगमगात जग धाम । जिमि कचन ते किंकनी कंकन कुंडल नाम ॥ उचरि सकत न संस्कृत औ सबहिन असमर्थ । तिन हित नंद सुमति जथा भापि अनेका अर्थ ॥

अंत—रसनाम ॥ रस नव रस रस घृत रस रसर्या औ रस नीर रस रस को रस प्रेम रस जाके वस वलवीर ॥ सनेह नाम ॥ तेल सनेह सनेह घृत वहुरो प्रेम सनेह सो निज चरनन गिरिधरे नंददास कवि येह । जौन अनेका अर्थ को सुनै गुनै नर कोइ । ताहि अनेका अर्थ को पुनि परमारथ होइ ॥ इति श्री अनेका अर्थ समाप्त मिती आसुन वदी १५ वुधवार सवत १८२७ ॥

विषय—गौनाम, सुरभी, मउ, कलि, आत्मा, धनुर्जय, पत्र, पत्री, वरहि, काम, वाम, भव, कंनाम, पनाम, कल्प, कर, दर, वर, वृप, पतंग, दल, वल, पल, अल, वय, जीव, मान, सार, कलस, नभ, वसु, पटु, तुरंग, अत्मज, कवंध, हस, पयोधर, वान, वरन, गोत्र, तन, वाल, जाल, काल, ताल, जलज, तम, गुन, अवि, घन, वर्न, पोत, वुध, अनंत, छप, राजिव, लोक, सुक्र, पग, कलाप, मल्ल, उडुप, मंद, वारन, स्यंदन, मथी, कौपिक, पुष्कर, अवर, शंवर, कमल, नाग, करन, अज, शिव, विरोचन, वलि, वृक, राजा, कुस, कंवुसुवन, कूट, पर, कुजजम, हरिनी, धात्री, सिवा, रसना, रंभा, माया, इला, जोति, सुमना, इद्रा. निमअजा, विधि, जिह्वा, हस्त, कृतांत, मित्र, सारग, हरि, ध्रुव, विटप, दान, रस, सनेह, आदि शब्दों के अनेक पर्याय अर्थ हैं ॥

संख्या ३१६ बी अनेकार्थ, रचयिता—नंददास, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९९, प्राप्तिस्थान—श्री शीतला प्रसाद दीक्षित, ग्राम—सीकरी, डाकघर—तंबोर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि-अंत—३१६ ए के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है:—

कातिक मासे सुक्ल पक्षे तिथौ सप्तम्योयां वुध वासरे पुस्तक लिखते धनीराम तिवारी गोधवी अस्थान समाप्त सुभ संवत १८९९ वि० ॥

संख्या ३१६ सी. अनेकार्थ, रचयिता—नंददास, कागज—नवीन, पत्र—७, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री वद्रीसिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ३१६ डी अनेकार्थ, रचयिता—नंददास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—७ × ३½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर दूबे साहित्यान्वेषक, जिला—हरदोई ।

संख्या ३११ ई. अनेकार्थ मंजरी, रचयिता—नंददास, कागज—देसी, पत्र—१०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८१२ = १७५६ ई०, प्राप्तिस्थान—स्वामी ब्रह्मचारी जी द्वारा बाबू लालताप्रसाद खजांची, तहसील—सिधौली, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—अगिन शब्द ॥ अगिन धनंजय कहत कवि पवन धनंजय आहि। कहत धनंजय अर्जुनहि जिनके कृष्ण सहाइ ॥ अर्जुन शब्द ॥ अर्जुन तुम अर्जुन धवल अर्जुन कांचन हाइ। सहस बाहु अर्जुन भयो अर्जुन पांडव सोइ ॥

अंत—अनेकार्थ मंजरी पढ़ै गुनै नर कोइ। अर्थ भेद जानै सकल पुनि परमारथ होइ। इति श्री अनेकार्थ संपूर्ण संवत १८११ माघ शुक्ल तिथौ एकादस्याम गुरौ ॥ यादृसं पौस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया यदि शुद्धम शुद्धं वा मम दोषो नदीयते ॥ कटि ग्रीवा औ बाहु कर पग दुख सहत सुजान। तुलसी लिखियो कठिन है सठ जानत आसान ॥ श्री गंगा दुर्गा नमः ॥ श्री रामायनम ॥

संख्या ३११ एफ. अनेकार्थ मंजरी, रचयिता—नंददास, कागज—देसी, पत्र—७ आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८११ वि०, प्राप्तिस्थान—बाबू लालिता प्रसाद खजांची, तहसील सिधौली, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि-अंत—३११ ए—के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री अनेक अर्थ संपूर्ण समाप्तं शुभमस्तु ॥ पोथी ठाकुर रूपक अवस्थी के पठनार्थ संवत् १८११ लिखतं सिवसंकर लाल दुबे बेलहरिया वासी ॥

संख्या ३११ जी. अनेकार्थ नाम माला, रचयिता—नंददास, कागज—देसी पीला, पत्र—१८, आकार—८ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७७९ = १७२२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह जमींदार, ग्राम—लालीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ तं नमामि पद परम गुरु क्रिस्न कमल दल नैन। जग कारन करुनार्णव गोकुल जाको ऐन ॥ उचरि सकत नहि संसकृत जानो चाहत नाम। तिन लगि नंद सुमति जथा रच्यो नामहि दाम ॥ २ ॥ गुंथित नाना नाँति को अमर कोष के भाये। मान मती के मान मिस जप तप बाई ॥ ३ ॥

अंत—मधु नाम हरिको कहे मिसु दिन औरन ध्याव। जाको पद मगवानसो मिलिहि सु कावधि माय ॥ ११९ ॥ इति नंद कृत अनेकार्थ ॥ समाप्तः सवतु १७७९ ॥ पत्र पति नाम [illegible] प्रति पढ़ा तिथौ × × सठ कामि गिरि विद्यानि दूजा सर्वो तस्तात पुस्तकं ॥

संख्या ३११ एच. नाममाला, रचयिता—नंददास, कागज—आधुनिक, पत्र—

६२, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६=१८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्रीसिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बकसी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नाम माला लिप्यते ॥ दोहा ॥ तत्र मामि पद परम गुरू कृश्न कमल दल ऐन । जग कारण करुणा रवन गोकुल जाको अैन ॥ १ ॥ उचरि सकत नहि शंसकृत जानो चाहत नाम । तिन लगि नन्द सुमति जथा रच्यो नाम की दाम ॥ २ ॥ गुथित नाना भाति को अपर कोश के भाय ॥ मान धनी के मान मिले अर्थ सब आय ॥ ३ ॥

अंत—जुगुल नाम ॥ जमल जुगुल जग द्वंद दोऊ मै मिन्थुन द्वय वीय । जुगुल किशोर वसो सदा नंद दास के होय ॥ २५४ ॥ इति श्री नन्द दास कृत नाम माला सम्पूर्णं सुभ भूयात् ॥ मार्ग शीर्ष मासे कृष्ण पक्षे तिथौ त्रयो दस्या गुरौ दिने पोथी लिखा बद्री सुध पाठनार्थे बरैली के मौजे खानीपुर में ॥ इति श्री नद दास कृत नाम माला सम्पूर्णम् ॥ मार्ग सिर्प हरि त्रयोदश गुरू रस[६] राम[३] गृह[८] इन्दु[१] । तामें पोथी शुभ भई नददास कविन्द ॥ इति

विषय—नामों के अनेक अर्थ ।

संख्या २१६ आई. राजनीति, रचयिता—नंददास, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—२७४, आकार—८½ × ६½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा । सिद्धि साधु के काज में सो हरु करैं कृपाल । गग फेनकी लीक सम शिव ससिकला विशाल । सुत हित हित उपदेश यह देत वचन रचनानि । देवन की बानी लहै राजनीति पहिचानि । अजर अमर की भाति है विद्या धनहि बढ़ाउ । मीचु मनो चोटी गहे देत विलंब न लाउ ॥ विद्या भन सब धननि मथ सत कहत सर दारू । मोल बड़ी नहिं घटत घर पैऐ किए न मारू । विद्या देति विनीति कै विनै बड़ाई देत । बड़े भए धनु पाइए दान भोग सुप हेत । सस्त्र शास्त्र विद्या दुविध धनु अरू भर्म न जाइ । विरधाई पहिली हसी दूजो सदा सोहाइ ॥

अंत—मंत्री मंत्र सदा मन धरै । महाराज सुप अनुभव करै । दोहा । जौलौ गौरि गिरीस की बढ़त धार अति नेह । जौलो लछि मुरारि उर लगी तडित जौलेह । जौलौं सुर घर कनक गिरि फिरि सूर्य औ चद । तौलौ नारायन कथा सुनो सुजान अनद । इति श्री हितोपदेशे श्री नंद दास कृत चतुर्थ कथा समाप्त । सुभ मस्तु ॥ संवत १९३३ साके १७९८ मिती पूस कृश्न पक्षे ॥ ११ ॥ सम्वार लिपित जो प्रति देपा सो लिपा मम दोप न देअते । श्री राम राम राम श्री राम दूस हनिवताय नम । श्री रामचद्रा राम राम राम ।

विषय—राज नीति अर्थात् हितोपदेश की कथाएं पद्य में ।

संख्या ३१६ जे. राजनीति, रचयिता—नंददास, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१८६, आकार—१४×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००४, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महाराजा काशमेरी प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—३१६ आई के समान।

अंत—तब हंसन सुनि भापी ऐसी। कैसो परी आगीकी कैसी। कैसी। कूरम सुनि भाप्यो भय भीत। मित्र कहत वह वचन भ भीत। दोहा। सुनी अग्र सांची सदा अरू तथन मति जीन। भाषी भाषी यों गहें ज्यों पामी कोकोम। चौपाई॥ इतिसिनि कही कथा यह कैसी। कूरमक

विषय—राजनीति"

संख्या ३१७. सत्यनारायण कथा, रचयिता—नंदकिशोर (लक्ष्मणपुरी), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१९×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०५ = १८४८ ई० लिपिकाल—सं० १९०७ = १८५० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवदुलारे, ग्राम—नरगापुर, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री रामा कृष्णां नमः अथ श्री सत्यनारायण व्रत कथा लिष्यते॥ श्री सत्यनारायण पूजा॥ विधि॥ व्रती संक्रांतों पौर्णमास्यां पैकादश्यां पसिन्ध लिमन्दिनेषा सायं काले स्नानं कृत्वा पूजा स्थान आगत्य आसने उपविश्यात्मनः पवित्र धारणं कृत्वा गणेशगौरी वरुणदेवता मंडलं स्थापित गणपत्यादि पंच लोक पाल देवता सूर्यादि नवग्रह देवतानां प्रतिष्ठा वाहन कृत्वा संकल्पंकुर्यात्।

अंत—सो॥ प्रेम वारि नैननि भर्यो विमल हर्ष अति हीय॥ पुलकित तन रोमावली साधु ईश्वर कीन॥ चौ॥ भोजन द्विजन सभक्ति करावे। भैमी बंधु स्वजाति जिमावे॥ पुनि अपने सब गगनि समेत्। पायो हरि प्रसाद अति हेत्॥ धन पुत्रादिक है सतुष्टी॥ करि या लोक सबै सुष सुष्टी॥ अंत गयो नारायण धामा। साधु सुगति पाई अभिरामा॥ या विधि ते जो भक्ति सहित भव। करै सत्य नारायण अराध॥ लहै काम सो सबै सदाहीं। करैं चिंतवन जो मन माहीं। अथवा यह इतिहास पुनीता। सुनै जो कोउ भक्ति सहीता॥ सोउ होइ विशुन को प्रियतर। काम सिद्धि पावे वांछित वर इति श्री इतिहास समुच्चय श्री सत्यनारायणोपाख्याने साधु चरित्र वर्णनो नाम चतुर्थोध्याय॥ ४॥ दो०। सत्यनारायण की कृपा नदकिशोर सुनाम भाषा करि वरणें कथा पुरी लछमण बास॥ विद्या बुद्धि न बल कछु कविता गुण सों हीन। बुध जन दोष न लाइये जे॥ हरि चरित प्रवीन॥ वर्ष पंच उन्नीस शत दिन बावन अवतार। सत्यनारायण व्रत कथा पूर्ण भई सुखसार इति श्री सत्यनारायण व्रत कथा संपूर्णम्॥ संवत् १९०७ श्रावण कृष्ण ६ मंगल॥ राम राम राम राम राम॥

विषय—सत्यनारायण व्रत कथा।

संख्या ३१८. पनघट की रगत लगडी, रचयिता—नंदलाल, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—४ x ३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामभरोसे, ग्राम—सटकी खेडा, डाकघर—चमयानी, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ पनवट की रंगत लगडी लिख्यते ॥ चल झट पटरी वशी वटरी कृष्ण खड़े पन घट री ॥ नागर नटरी वजावै वंशी आय जमुना तटरी ॥ टेर ॥ शिर धर वटरी ॥ त्याग कपट री संग हो झटरी तज हटरी ॥ प्रगटे घटरी ॥ विराजे जो जीवन के घट घटरी ॥ चलो निकट री। त्वरित सटकरी मीस मुकुट पीले पटरी ॥ लिये हाथ लकुटरी दरस से सर्व कटेंगे संकट री ॥ तज खट पटरी चल झट पटरी मान कही मेरी सटरी ॥ नगर नटरी ॥ १ ॥

अंत—मेरे घटरी ॥ विविध मुकुट री रामचंद्र पटुरी कथै ख्याल गत अट पटरी ॥ भागे झटरी सखी सट देखिर अपने पै पट री ॥ नद लाल कहै सुन सठ चर्न ना रहैं निकट फड़ मैं ढटरी ॥ नागर० ॥ इति श्री पनवट की लगडी रंगत संपूर्ण समाप्तः लिखतं शिव वकस ठाकुर जै गंज के आश्विन द्वीतीया शुक्ल पक्ष संवत १९३६ वि० ॥

विषय—श्री कृष्ण जी की पनवट लीला।

संख्या ३१९. राग प्रबोध, रचयिता—नंदलाल (मलीहाबाद), कागज—देशी, पत्र—५२, आकार—९ x ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४४ = १७८७ ई०, लिपिकाल—स० १८६५ = १८०८ ई०, प्राप्तिस्थान—महत जनार्दन दास रामशाला मलीहा बाद, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राग प्रबोध लिप्यते ॥ सुमिरत जाको नाम होत सुलभ मगल सकल। गणनायक गुणधाम वरदायक कीजे कृपा ॥ १ ॥ वंदौ पद जल जात, कवि मन अलि गन वसत जह। करहु अनुग्रह मात, सारद गुण दायक विसद ॥ २ ॥ गुरु पद कमल अनूप रापि सीस वदन करौं। विमल ज्ञान सुप रूप, प्रगटत्त उर जाकी कृपा ॥ ३ ॥ गुरु प्रसाद ते ग्यान होति भक्ति हरिहर सुपद। नासत मद अभिमान मोहसूल सत्ताप प्रद ॥ ४ ॥

अंत—अथ परंपरा वर्णन ॥ रागार्णव की रीति सों भाव विनोदहिं पोपि ॥ राग दर्पन संगीत औ मान कौतूहल देपि ॥ ६५ ॥ इन ग्रथन को लै मत्तो वरन्यो राग प्रवोध ॥ जहां चूक सो छमा करि वुध जन लेहै सोधि ॥ ६६ ॥ राधावर अनुचर सदा मलिहाबाद निवास ॥ उपाध्याय नद लाल यह कीन्ह यो ग्रथ प्रकास ॥ ६७ ॥ सत अष्टादश जानिये पुनि चालिस औ चारि ॥ विक्रम मान नरेस के सवत लेहु विचारि ॥ ६८ ॥ अगहन मास पुनीति अति शुक्ल पक्ष भृगुवार ॥ सीताराम वेवाह तिथि भयो ग्रंथ औतार ॥ ६९ ॥ इति श्री नन्द लाल कृते सगीत विद्याया राग प्रबोध समाप्तम् शुभ मस्तु ॥ दोहा ॥ एक सहस औ अष्ट सत पैसठि सवतु जानि। फाल्गुन शुक्ल एकादशी रविवासर सम भानु ॥ ७० ॥ भाषा यह कृत नदलाल कृत मलिहावाद निवास राग प्रबोध हितमो लिप्यो दीक्षित टाकुर

दास ॥ ७१ ॥ संवत १८९५ ॥ साके १७२० फाल्गुन सुदी ११ रविवासरे ॥ छन्द संख्या ॥ दोहा ॥ २७१ ॥ कवित्त ॥ १२ ॥ छप्पै ॥ ११ ॥ कुण्डलियां ॥ ६ ॥ सर्वे ॥ ॥ ४२२ ॥ इति ॥

विषय—यह पुस्तक राग रागनी के संबन्ध में लिखी गई है इसमें ६ राग व ३६ रागनी का वर्णन है।

संख्या ३२० नारायण कृत पद संग्रह, रचयिता—नारायणदास, कागज—देसी, पत्र—२७, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१० खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—बरगदिया बाबा, मुहल्ला—हिंडोलावे का नाका, डाकघर—लखनऊ, जिला—लखनऊ, (अवध)।

आदि—राग खेमटा ॥ दृ है मुख चंद चकोरी मोरे नयना ॥ पलहू न लागे पलक विन दृगे भूमि अँगन गये पलहू लगीना ॥ अर्धरात मिलिवे को निसि दिन अँस मिलै नाही कबहुँ मिलैना ॥ नारायण रस की यह बातैं। रसिक बिना कोऊ समुझि सकै ना ॥ सखी राधावर कैसा रसीला, देखोरी गुइयां नजर नहि लागे कैसा सुन्दर सिर चीरा छबीला। वारि करि जल पियो मोरी सजनी मत देखो मरि नयन रगीला ॥ नारायण मरि लेहु बलैयां अँगुरिन करि कर कार चुटीला ॥

अंत—(राग भाषा कालिंगड़ा) छोड़ो मोरी गैल नाही गारी मैं सुनाऊँ गी ॥ और न के धोखे कहूँ मोसे न अरझो अबहीं जसुमति पै पकरि लै जाऊंगी ॥ पहिले ही सों अपनी बड़ाई कहा करौ मैं देखिहौं तौ कैसे तुम्हे नाच नचाऊंगी ॥ जो तुमै सूधो न बनाऊं नारायण ॥ तौ मै मित्र बाप की न आज से कहाऊंगी ॥ इति श्री नारायण कृत समय संपूर्ण मिती जेठ बदी अमावस्या संवत १८९६ लिषी राज कुमार बैसवार वाले ने ॥

विषय—राधा कृष्ण के पद।

संख्या ३२१ ए. राजनीति भाषा (चाणक्य नीति), रचयिता—नारायण कागज—देसी, पत्र—४४, आकार—६×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नीलाल तिवारी, ग्राम—मिसरिख, डाकघर—मिसरिख, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ राज नीति शास्त्र भाषा लिष्यते ॥ त्रै भुवन हीं श्री विष्णु को जो त्रिकाल को राई। ब्रह्म और सरस्वती होइ सहाई ॥ दोहा ॥ बहुत शास्त्र अवलोकि के सुंदर बचन विचार। राज नीति समय को बरणन करो विचार ॥ छप्पै छंद ॥ जो इह शास्त्र पढ़ै सो नर चातुरता पावै। जो यह शास्त्र पढ़ै पढ़ै धर्म उपदेश दृढ़ावै। जा यह शास्त्र पढ़ै सो बिना करणा अनुकरणा ॥ जाने शुभ अशुभ करणा रहना अरु जरना ॥ कहि नारि नृप की हेत है बहु शास्त्र भाषा करो। सर्वज्ञ होइ नर जो पढ़ै रतन बचन यामें धरो ॥ राज कुपुत्र कुमार्या तजो कुमित्र कुदेस। तजी कुराज कुमंत्र तज इह सांची उपदेस। पुत्र कुपुत्र कुमार तिय मित्र कुमित्र कुदेस। भूप कुभूप कुमंत्रता पै पद महा कलेसा।

अत—॥ छट ॥ वाणी वर्णा मन्मथ एक चदन ब्राह्मण चंद विवेक । अश्व स्वर्ग क्षेत्रे एक जात ज्ञाने ज्ञान हरि जन हरि वान ॥ दोहरा ॥ शास्त्र सकल विचारि कै मथ काढी यह सार नारायण भजिये सदा करिये पर उपकार गुरु गोविंद के सभा में लेपकार्य सुजान चानक की भाषा की इक निर्मे नपति भाम । इति श्री वृद्ध चाणक्य नीति शास्त्रे भाषायां षडमो ध्याय । सपूर्णम् समाप्तम् शुभम् ॥ १६ ॥

विषय—चाणक्य की नीति ।

संख्या ३२१ बी. राजनीति शास्त्र, रचयिता—नारायण, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुस्टुप्)—२७०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सीतारामसिंह, ग्राम—महाराजनगर, डाकघर—मैंगलगज, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि-अत—३२१ ए. के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है :—

श्री वृद्ध चानक राज नीति शास्त्रे भाषायां षोडमोध्याय. संपूर्णम् समाप्तम् शुभम् लिषन रामवली कार्तिक सुदी ११ दशी सवत् १९२३ वि० ।

संख्या ३२२ ए. हितोपदेश, रचयिता—नारायणभट्ट, कागज—देशी, पत्र—२३०, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुस्टुप्)—२०७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८१८ वि०, प्राप्तिस्थान—आनद भवन पुस्तकालय, डाकघर—बिसवा, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ हितउपदेश लिख्यते ॥ दो० ॥ सिद्धि साधु के काज को सो हर करैं कृपाल ॥ गग फेन की लीक सी सिर ससि कला विसाल । सुनु हित हित उपदेश यह देत वचन रचनानि । देवन की बानी लहे राजनीति पहिचानि ॥ अजर अमर की भाति त्यों विद्या धनहिं वढाव । मीचु मनो झोटी गहे देत विलंब न लाव । विद्या धन सब धनन ते संत कहत सरदार । मोल वडो नाहीं घटत दिन दिन होत उदार ॥

अत—राजपुत्र बोले जियजानी । विस्न सर्म को आदर मानी । द्विज बरजो राजन को चही । सोई कथा आपु यह कही । जो भा जन्म और अवतारा । सुनिये राज अंग व्योहारा । एक वहुरि फिरि अब भल भयऊ । सुष समूह पायो दुष गयऊ । विस्न सर्म तव देत असीसी । संधिकरौ सुमधरौ असीसी । विपति दूरि साधन की जाई । दातन कीरति सदा सुहाई । नीति नई नारी लौं जगै । सुवन करैं मित्र सुष लगै ॥ मंत्री मंत्र सदामन धरैं । महाराज सुष आपुहिं करैं ॥ दो० ॥ जो लगि गौरि गिरीस को वढत जात नित नेह । जौं लगि रिच्छ गंधर्व है जब लगि धरती मेंह ॥ जौं लौं सुर गुर गगन है मुनि सूरज और चद । तौ लौं नारायन कथा सुनै स्वजन आनद इति श्री भट्टनारायन विरचिते हित उपदेस समाप्त सवत १८१८ दसखत पान अली पठान के ।

विषय—राजनीति ।

संख्या ३२२ बी. हितोपदेश, रचयिता—नारायण, कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुस्टुप्)—२८००, पूर्ण,

रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—संकठा प्रसाद अवस्थी, ग्राम—कोटरा, डाकघर—कोटरा, तहसील बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि-अंत—३२२ ए के समान।

पुष्पिका—इति श्री नारायण विरचित हितोपदेश सं संधि नाम चतुर्थमो अध्याय श्री संवत १९३२ आषाढ़ मास कृष्ण पक्षे सोम वासरे तीजस्या प्रथम पहरे सम्पूर्ण।

संख्या ३२२ सी हितोपदेश, रचयिता—नारायण, कागज—देशी, पत्र—११६, आकार—७ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११ परिमाण (अनुष्टुप्)—२०५७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८३ = १८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मनमोहन लाल साहिब, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—३२२ ए के समान।

अंत—श्री पार्थी संधी कथा संपू ग्रामे मस्तु म मंत चैत्र सुदी १४ संवत १८८३ बद समीचर लीख प्रति संमत लीख मम दोष न दी जै। दोहा। जैसी प्रती आगे हती तैसी कई उतारी॥

संख्या ३२३ पिंगल छंद, रचयिता—नारायणदास, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१ परिमाण (अनुष्टुप्)—२६१, खंडित, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७५, प्राप्तिस्थान—सियाराम पाँडे, ग्राम—रामनगर डाकघर—मिसिरिख, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ श्री ग्रंथ पिंगल पींगल नारायण दास कृत छंद लिख्यते॥ दोहा॥ अगनर चारो भद्र रमत जीभरो विचारि। कवित आदि है कीजिये पेम दीजिये चारि॥ छप्पै के लछन गन जाने का उदाहरन॥ मग तीनो गुरु होहि तीन लघु से गन नन पै। भगन आदी गुरु होदी आदी लघु मगन बनैये॥ जगन मध्य गुरु होही अंत लघु सगन बखानी॥ कही देव श्री मैं चारी सुभ। मगन इ गन मगनु भगन। गन तीनो परम चारिउ पर सुभ जगन नगन सगन तगन॥ २

अंत—सुमग छंद का लछन॥ दोहा॥ सुमग अंत चालिस दुम तापर विरति रवि विशेष। सुमग छंद तेहि कहत हैं पिंगल मति अवरेषि उदाहरन। बर चलत दुसराय सुग रामाय्य बल ऋषि मिलि इष्ट्रि मठंग रजेन पर सुर कुअर सौंपाहि सुख सुनि पगुर टंकोर मार्तंड रथ चक्र चाहरान पर वाजि पद रेनु उठी सूर ढपत॥ भट पट झलके सघर पच्छ दिग। जल सपरतः चली सेन चली कमठ कपंत॥ बसंत तिलक। अमृत गति कौ लछन॥ दो०॥ तगन जगन जग गुरु मो बसंत तिलकाहि भगन पंत गुर चरन प्रति कहत अमृत गति ताहि॥ उदाहरन॥ गोविंद नाम मधु सूदन नं मुकुंद आनंद कंद बज चंदन निप मंद॥ सर्वस्व ईस सरनागत मोद कंता प्रशांति कीट परजंन सुमित्र मतौ॥ अम्र गति के लछन॥ उदाहरन॥ रावन गोविंद जी ए कमल का सग ताजिये नित नित मंगति करि०। मन मन सिंधुहि तरिये (आगे पृष्ठ नहीं हैं)।

विषय—छंद बनाने के नियम।

संख्या ३२४ ए. सुदामा चरित्र, रचयिता—नरोत्तम कवि, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०८, पूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गोविंदलाल दूबे, ग्राम—निहालपुर, डाकघर—नारायणदास खेड़ा, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुदामा चरित्र लिष्यते ॥ दो० । श्री गणेस सुमिरन करौं उपजे बुद्धि प्रकास । सो चरित्र वरनन करूं जाते दारिद्र नास ॥ श्री कृष्ण मित्र के जन्म को ताको वर्णन कीन्ह ॥ सुप सपति माया मिले उपदेस जु दीन ॥ ज्यों गंगा जल पान ते पावत बुद्धि निर्वान । त्यों सुदर सुप वात ते मूढ़ होत बुद्धिवान ॥ विप्र सुदामा वसत है सदा आपने धाम । भिच्छा करि भोजन करें रटै जपै हरि नाम ॥ ताकी घरनी पतिव्रता वाहे वेद की रीति सुजल सुशील सुबुद्धि अति पति सेवा सो प्रीति ॥

अंत—दो० । उठे पहिर अव रचित सिंवासन पर आय । वैठे प्रभुता दिये कै भर पूर रह्यो लजाय ॥ कै तौ वो झोपड़ी सी छानहु ताके तौं कचन के मव धाम सुहावत ॥ कै पग को पनही न जुरे कै लिये गजहु ठाड़े महावत ॥ कै जुरतो नाह कौं वो समा के अमेना असीसम अन्न लुटावत । या विधि रक विरक भयो द्विज राज प्रताप सदा सुप गावत ॥ दो० ॥ धन्य धन्य जदु वंस मणि दीनन पै अनुकुल । धन्य धन्य सुदामा सहित तिय कहि वरपहिं सो फूल ॥ इति श्री सुदामा चरित्र नरोत्तम कवि कृत सपूर्णम् सवत १८७० पोप कृष्ण १२ द्वादसो ।

विपय—सुदामा की कृष्ण से भेंट ॥

संख्या ३२४ बी. सुदामा चरित्र, रचयिता—नरोत्तम दास, कागज—साधारण, पत्र—११, आकार—८½ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९२ = १८३५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री भगीरथ प्रसाद (उस्का), डाकघर—कौधौरा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—३२४ ए के समान ।

अत—विप्र सुदामा की कथा कहे सुनै चित लाई । ताते श्री यदुनाथ जू, सव दिन होत सहाइ ॥ इति श्री राम चरित्र मान से सकल कलि कलुप विनास ने विमल वैराग्य इति श्री सुदामा चरित्र सुभ मस्तु संवत १८९२ ॥

संख्या ३२४ सी. सुदामा चरित्र, रचयिता—नरोत्तमदास, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—६ × ३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८८, खडित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—उमाशकर दूबे साहित्यान्वेपक, हरदोई ।

आदि—दोहा ॥ यह सुनि के उठि साध्वी गई येक त्रिय पाश ॥ सेर पाउ कुचावर लै आई सहित उलाश । सिद्धि करी गनपति सुमिरि वांधि दुपटिया पूट मांगति पाति चले गये सो मारग वाली वूंट ।

अंत—दो० ॥ फेरत सकुचत गांठि को हेरत प्रभु तेहि ओर छोरति पर जीरन करेउ बिधुर परे तेहि ओर । एक मूठी हरि भरि लई दई सो मुखमें डारि । चवत चबाउ करन लगे सो अनुरागन त्रिपुरारि ॥

संख्या ३२५. रंगभूमि, रचयिता—माधवकवि, कागज—साधारण, पत्र—५६, आकार—१२ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१११०, पूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६७ = १८१० ई०, लिपि काल—सं० १८६८ = १८११ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामनिवास तिवारी, ग्राम—परियावाँ, डाकघर—परियावाँ, ज़िला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ एक रदन करिवर बदन भाल लाल सिंदूर, विघन हरन संकट दलन सिधि बुधि देत जरूर ॥ १ ॥ ऐसे गणपति को सुमिरि पुनि सारदा पाँय, रंग भूमि बरनन करौं सुमिरि सिया रघुराय ॥ २ ॥ शिव को ध्याइ प्रनाम करि शिवा चरन सिर नाय, सेस सुरेस दिनेस विधि सब मिलि होहु सहाय ॥ ३ ॥

अंत—सोरठा—जो करि नित्य विहार रंग अवनि की कथा कौं । तेन्ह सम सिया भार, रखिहैं सज्जन हरषि हिय ॥ ८ ॥ दोहा—जनक मंडली जनकपुर, अवते प्रगटी आय । जाकि सिधि सुख सम्पदा, रही जनक गृह छाय ॥ ९ ॥ ग्रंथ नाम रंग भूमि यह, राम जानुकी ब्याह । जो गावहिं मन मुदित अति, तिन्ह कहँ सदा उछाह ॥ १० ॥ तुलसी कृत की कथा यह, ताको उलथा कीन । मन, बुधि चित हंकार कौं, रघुपति अरपन कीन॥११॥

× × × ×

इति श्री मैं कथ कही, नहिं कहिबे के जोग । कविता छंद प्रबंध बिनु, हँसी करैंगे लोग ॥ १३ ॥ तासे भाष विचारि कै, अपनी रुचि की कीन्ह । रीझत राम सनेह सों, यह लिखबे करि लीन्ह ॥ १४ ॥

इति श्री रंग भूमि सीताराम विवाह उछाह परि पूर्ण मस्तु, श्री रामचन्द्राय नमः ॥ संवत् १८६८ ॥

विषय—राम चरितमानस के अनुसार रंगभूमि की कथा ।

संख्या ३२६. रामाश्वमेध, रचयिता—नाथ गुलाम (रामपुर), कागज—साधारण पत्र—२११, आकार—११½ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६४ = १८०७ ई०, लिपिकाल—सं० १९१५ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह, रमेश कलूमेरी, कालाकांकर, ज़िला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री मते रामानुजाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामचन्द्रायनमः ॥ श्री हनुमते नमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः अथ श्री रामाश्वमेध लिख्यते ॥ श्लोक ॥ वामोरुस्थ हेमग्रीवोत्सक रुचिर रुचिं मार्गणो न्यास पाणि कण्ठो सुश्रीर वक्षःस्थलमधि शिरोभानु भास्वत् किरीटम् । सीता सामित्र पार्श्वसरसि रुहदृशं देवदेवं नमामि ॥ १ ॥ × × व्याख्या मूर्ध्नि मुक्ताहार विरामार्ध विसाल श्रिया । स्वच्छन्दं सुरस्वसे गन तले सरका

कूट द्युतिम् ॥ चंचच्चंद्र मरीचिवीचि विलसद्भाल जगत्पालिकं । भाषाभिर्वितनोमि रामचरितं रामाश्वमेधा दहम् ॥ ५ ॥ दोहा.—बंदौं गणपति परम छवि, दायक बुधि अभिराम । विघ्न विनासन द्युति करण, सरण सुमंगल धाम ॥ सुंदर वदन मदन मद गंजन । तासु प्रताप ताप त्रय भंजन ॥ भाल चद्र सिंदूर विराजै । तीनि नयन पकज छवि छाजै ॥ वक्र तुंड कुडलि तसु शुंडा । पाडु रदन नग वलित उदडा ॥ अलि घमंड मडित कल गाना । भ्राजत मद सुगंध विध नाना ॥ वाहु दंड ऊदंड विराजै । विघ्न खंड कर खंड सुराजै ॥ दुष्ट वि क्षुंद्र अमुंडन करही । मारतड शत ओजन धरही ॥ गिरिजा नंद अनंद कंद वर । भजे द्वंद पद पदुम फंद हर ॥ प्रथम मगला चरन जासु करि । ध्याये संतत होत मोद भरि ॥ दोहा—बदौं गुरु पद वनज वर, तासु पाँसु धरि शीश हेतु ज्ञान सो अजि चप, दिव्य दृष्टि कर नीश ॥

अंत—सोरठाः—जो यह कथा सनेम, कहै सदा सादर सुनै । सिया राम पद प्रेम, होहि जगत मगल सदन ॥ दोहाः—जम प्रताप भव सिंधु में, विरच्यो सेन नवीन । सोई कृपा करि यह कथा, भाषा पूरन कीन ॥ इति श्री मद्राम चंद्र पादार विंद द्वंद मकरंद मधुव्रत श्री त्रिपाठी नाथ गुलाम भाषा प्रबंध रामश्वमेध विरचितायां अश्वमेधि समाप्त नाम अष्ट षष्टितमो अध्याय. ॥ ६८ ॥ शुभंभूयात् । मासाना मासोत्तमे मासे वैसाष मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यां बुधवासरे लिपा रामदयाल हनुमान गढ़ी मध्ये संवत् १९२५ ॥ पोथी श्री राज्य हनुमत सिंह बहादुर जीव की ।

विषय—रामाश्वमेध—कथा ग्रंथकार का निवास स्थान तथा वंश परिचयः—सूबे तीरथराज प्रधाना । तामह मानिक पुर जग जाना ॥ वैरीसाल महीप विराजै । राज्य विशेन नीति नय भ्राजे ॥ परम धर्म में जासु प्रकासू । विप्र चरण रत निश्चै जासू ॥ सोरठाः—बांधव पति अभिराम नृपति राम जग में विदित ॥ मगरौरा वरगाम दियौ त्रिपाठिन पूजिके । तहाँ त्रिपाठी वसत वसु विद्या धर्म उदार । मम पुरवा संबध वस वसे आनि सरवार ॥ तहँ ते आइ भवानी शंकर । कीन्हों सोई राम पुर में घर ॥ तिनके जुगल कुमार सत्य व्रत । वालकृष्ण जेठे रघुपति रत ॥ तासु कनिष्ट कुमति को धाम् । नाथ गुलाम असनाम् ॥ ग्रंथारंभ काल.—अष्टादश सत वासठी, संवत् आश्वनि मास । विजै दशै तिथि लग्न वर कीन्हों कथा प्रकास ॥ प्रवन्ध प्रकाश स्थान·—शृंगवेरपुर रुचिर विराजै ॥ रामघाट सुर सरि तट भ्राजै ॥ तहँ प्रवंध यह कीन्ह प्रकासा । सुमिरि राम पद मजुल भासा ॥

संख्या ३२७ प. ज्ञान सरोवर, रचयिता—नवलदास (उमानपुर), कागज—मोटा, पत्र—१२७, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०५, पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८१७ = १७६० ई०, लिपिकाल—स० १९६० = १९०३ ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पाडे, डाकघर—तिलोई, जिला—राय बरेली (अवध) ।

आदि—सो० सुमिरौं सत गुरु पाँय जो परसन करि वर वदन । दुरमति दूरि

पराव करहु कृपा शिव शक्ति सुर ॥ रहे भवन भरि पूरि, सत गुरु साहेब जग विदित। नाम सजीवनि मूरि, दास सेवक सुमिरहु कस न ॥

अंत—छंद—सुर सिद्धि मुनि गंधर्व किंनर यक्ष के मन भावई। इन्द्रादि औ सन आदि नारद शेष सहित बखानई॥ ब्रह्मादि हनुमत आदि शंकर सकल सुर मुनि गावई। नर धन्य हरि पर सरवता पर ज्ञान सर जो पावई॥ हरिनाम पाप पराय पैठत ज्ञान सर सत जल सही। बैकुंठ पावै चरित गावै। सोग दुख संसय नहीं॥ जो सुनहि नाम प्रमाण श्रोता राम तेहि प्रिय मानि है। मरजाद अरु सुखस्वाद बक्ता, प्रेम सहित बखानिहैं॥ दो० यह सब चरित पुराण के, ज्ञान जानि भ्रम हानि। दास सेवक श्रोता तेरे सुने जो निश्चय मानि॥

× × × × इति।

विषय—भागवत आदि पुराणों की कुछ कथायें।

संख्या १२७ घो ज्ञान सागर, रचयिता—सेवक दास (जमालपुर), कागज—मोटा, पत्र—१९१, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७०, पूर्ण रूप—अति प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी कैथी, रचनाकाल—सं० १८१७=१७६० ई०, लिपिकाल—सं० १८८६=१८२९ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत चंद्र भूषण दास, ग्राम—जमाल पुर, डाकघर—मीरगंज, जिला—बाराबंकी।

आदि—दो० गुरु गण पति शिव शक्ति सुर बंदौं रमा रमेश। दास सेवक हरि चरित रत, करहु कृपा उपदेश॥ ज्ञान सागर सत जल विमल कलि मल दहन प्रमान। दास सेवक स्नान करु होय सदा कल्यान॥ शंकर गुरु पद प्राण रज, नैन ऐन जिन दीन्ह। सुखी कँवारी मोह कै भीतर दर्शन कीन्ह॥ सीख जड़ित गुरु चरण नख, जग मनि मानिक जाति। दास सेवक सुमिरन किये, दिव्य दृष्टि अति होति॥ दास सेवक आधीन मे, राम नाम की आस। मोह हरन माया करन गुरु जग जीवन दास॥

अंत—छंद—जो भक्ति कारन गान करि बर सुनहिं चरित सुहावना। अघ हरन करन चरित्र पावन ब्रह्म होय समावनी॥ अति अमल ज्ञान प्रसन्नता पर चढ़ि बखान सिधावहीं। बैकुंठ धाम अराम अति, गति परम सुंदरि पावहीं॥ जहँ निरहि भोग विलास अमृत अमर पुर जाता गयो। हरि दरस पावहिं विधि मनावहिं सुखी अति बक्ता भयो॥ यह भक्ति मूल विराग सुंदर, सुनहिं जे सुख सागरा। सुभर सब दुदु घोर ताकी, होहिं हावन आगरा॥ दो० पाप हरनि पावनि करनि, श्रोतहु लेहु नहाय। सुख सागर भाषा कहै, भइ इकइस अध्याय॥

× × × × इति।

विषय—पुराणों के आधार पर ज्ञानोपदेश व कथा।

संख्या १२८. नवरंग विलास रचयिता—नवरंग कायस्थ, कागज—साधारण, पत्र—२१, आकार—६×४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१९, खंडित रूप—जीर्णशीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नूलाल पुस्तकालय मुरार पुर जिला—गया।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ सोभित वैजंती गरे, सीस चद्रिका चद । सुमिरत नन्द किसोर छवि, हुलसत हिय आनद ॥ १ ॥ (कवित्त) कचन लकुट कर मुकुट सुधारे सिर होत तहां इत उत चमकनि लाल की । नव रंग कुंडल की ललित झलक पर वारि वारि जैए चारु लटकीली चालकी ॥ पीत पट चटकनि भौंहनि की मटकनि राजि रही लटकनि तैसी वनमाल की । मर सिज स्याम मनसिज से मधुर सदा वसै उर मेरे एसी छवि नद लाल की ॥ २ ॥

अंत—काम ही के ग्यान ध्यान रति के कथा वपान मेरे जान पाए प्रान वातन जहा जुरें । हाइ भाइ दैन चाइ जानो ज्यों लियो जिवाइ मिलाप कै हाहा पाइ छात में जनै फुरें ॥ सुंदर विराम नहे साकरी गली में कहूँ आपुस में दोऊ मुसुकाइ के चले मुरें । परगट माह वैसे रस कहा पाइ यतु जैसे रस चोप चाहत होत है दुरा दुरे ॥

वैसिकच.—

जो नायक गनिकानि सो, करैं सदा संभोग । वेसिक तासों कहत हैं, वीर गुनी सव लोग ॥

यथा :—

कुदन से तन चद से आनन कानन........ ......।

विपय—नायक-नायिका-भेद ।

संख्या ३२६. श्री मद्भगवद्गीता के प्रश्न, रचयिता—स्वामी नवरंग, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—९ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य । लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबू राम मनोहर विचपुरिया, पुरानी वस्ती, ग्राम—कटनी मुरवारा, जिला—जवलपुर ।

आदि—श्री सच्चिदानंदों विजयते ॥ अथ श्री भागवत गीता के प्रश्न=श्री स्वामी नवरंग कृत लिप्यते ॥ श्री उक्तच भगवतं गीताया ॥ जामिमा पुष्पिता वाचा प्रवदत्य वि पश्चिः त वेद वाद रता. पार्थनान्य दस्तीति वादिन. ॥ ४२ ॥ कामात्मनः स्वर्ग पराजन्म कर्म फल प्रदाँ ॥ क्रिया विशेप वहुलां भोगै इचर्य गति प्रति ॥ ४३ ॥

× × × ×

अवजा प्रश्न कौं अर्थ जो कोई अरॅम विवेकी साध होई सो विचारी के देपै ॥ जो वेद नैंस-कॉम कर्म है ॥ तुला आदि दै करिकै सवै दान ॥ अश्व मेघ आदि दै कै सर्व यज्ञ ॥ वणारसी आदि दे कें सर्व तीर्थ ॥ चद्रायन आदि दे कें सवे व्रत ॥ वैद आदि दे कें सर्वे पाठ और तपस्या और सर्व देवता की पूजा करै ॥ ए सर्व कर्म करै सो स्वर्ग में भोग्य करैं ॥ जव पुन्य छीन होए ॥ तव तों जीव फेर चौरासी में पड़े ॥

अत—अव या प्रश्न की अर्थ जो विवेकी साध होय सो विचारि कें कहे ॥ जो प्रति पुरुप आदि देकै सव पिंड ब्रह्मांड तौ क्षर पुरुप कह्यौ ॥ अरु दूजे अक्षर पर ब्रह्म पुरुप कह्यौ अव कह्यौ जी अवतार पुण आपकूं कस्यौ ॥ सो क्यू करकै ॥ और ईश्वर पुण आपुसौं कह्यौ सो कौन सरुप ॥ अरुइन कौ स्थान क कौन ॥ और अक्षर यु आपकौं कह्यौ सो कौन सरुप है ॥ अरु इनकौ स्थाँन कोग और अक्षर से न्यारो उत्तम पुरुप कह्योरे सो कौन सरुप ॥ अरु

इन को स्वात्मक कौन और सबके पीछे कह्यो है ए सब सरुप को भाव धरी कैं सोर्ष्यौ ही पर सीतम करि मजी सो कौन समनंप करिकैं ॥ और अब महा प्रलै होय गी ॥ तब ए सरुप कौन कौन स्थानिक विर्षे रहैंगे ॥ जो याकौं जथार्थ पाई य वी परसों तम सरुप की प्राप्ति होवे ॥ अरु अपंडा नंद सरुप की मुरुकी साक्षात कार होय ॥ १० ॥ संपुर्न ॥

विषय—श्री भगवद्गीता के कुछ प्रश्नोत्तर ॥

संख्या ३३० ए. शृंगार शतक, रचयिता—नवीन कवि, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं १८३५ = १७७८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवरतन सिंह, ग्राम—श्रीनगर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री कृष्णायनमः ॥ अथ शृंगार शतक लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री राधा राधा कहैं बाधा रहै न कोइ । यही मंत्र नित जिय जपै कृष्णचंद वश होइ ॥ १ ॥ रस शृंगार के मूल हैं ललित लाडिली लाल । तिन चरनन वंदन किये मनसा होत रसाल ॥ २ ॥ सोही चरन बसत सदा श्री गुर हिय सुख धाम । श्री गुरु चरन कमल बसे मेरे हिय अभिराम ॥ ३ ॥ जिहि सरसाई लहि भई रसना रस मय मोर । लसे भाव तिह भ्रम के विलसी युगल किशोर ॥ ४ ॥ है शृंगार बद हास मे मुरत बंत नवीन । इनको रस निसि दिन लगन इन पानिप के मीन ॥ ५ ॥

अंत—चतुर्थ साक्षात दर्शन नायका की उक्ति सखी सों कवित्त ॥ बंसीवट तट भट देख्यो मैं नवीन पीत पाटल प्रवीन के ज्यों पंकज पखुरिया । गरे गुंजमाल और केसर की भाल छवि जाल कही छुटि जात जोगिन की डुरिया ॥ मुकुट कुण्डलीकी कांत लकुट लगाये रह्यो मंद मंद रसनि पै चपल अंगुरियां ॥ आये अंग रंगते अनंग निठुरयोही परैं ललित त्रिभंग है बजावत बंसुरिया ॥ इति कुंडल कपोल पै कलि पर पीत सी है । बरनी न जात मोपै रूप की निकाई है ॥ यह सुन्दर कवित्त की कविता लिखकर लेखक ने छोड़ दी है ॥ इति शृंगार शतक संपूर्ण ॥ लिखतं घासीराम बजाज स्वपठनार्थ मिती असार सुदी ७ सप्तमी संवत् १८३५ वि०

विषय—शृंगार रस और नायक नायिका भेद ।

संख्या ३३० बी शृंगार शतक, रचयिता—नवीन, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६० = १८०३, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रशेखर दूबे, ग्राम—बम्हनेवा, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर ।

आदि—३३० ए के समान ।

अंत—इति श्री नवीन कृत शृंगार शतक संपूर्ण समाप्तः लिखतं गिरधर लाल कुरमी जेठ शुक्ल पक्ष संवत् १८६० वि० ॥

विषय—नायिका भेद ॥

संख्या ३३१ संगीत ध्रुव चरित, रचयिता—नवलसुख, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८०, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२० = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला सीताराम, संगीत शाला, ग्रामी—दीनापुर, डाकघर—गोला गोकरानाथ, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनम॰ ॥ जय ध्रू लीला लिष्यते ॥ अथ सांगीत रंगा चार अस्तुति लिष्येत ॥ दोहा। हेसरस्वती हे भगवती हे अंबे हे मात ॥ हे दुर्गा हे ज्वालपा तेरा मही अनाथ ॥ कहा तेरा मही अनाथ लाज मेरी तेरी हाथा। कीजों मुझे सनाथ लाज राख लीजों माता ॥ तुम हो अंतर जामी आप घट घट की जानो। मैं सरनागत लई झूठ इसमें मत मानो ॥ जब पाऊंगा दरस नेन सुख होंगे मेरे। जै ज्वाला जै लये चालि जै जै मातरे ॥ अवध पुरी के राव उनी की अकथ कहानी। जो गावें जो सुनें होयगी निर्मल वानी ॥ रगाचार ॥

अंत—रगाचार दो॰ घर बैठे श्री रामने दरसन दीने आय। दरसन पाये नैन सुख दूर हुए सब पाप ॥ दूर हुए सब पाप सभी के छिन में उनसे। ध्रुरू कोमिल गये राम एक पलक में जैसे ॥ करी ध्रूने भक्ति आप तिर सब को तारा। जो सुमिरे भगवान क्यों ना हो भव पारा ॥ पांच बरस की उमर ध्रुरु ने सेवा कीनी ॥ हरि होके परसन्न अटल की पदवी दीनी मन इच्छा फल मिलें राम के जो गुण गावे, ऐसी भक्ती करें अटल रजधानी पावे ॥ इति सागीत भाषा ध्रुरु चरित्र समाप्तम् लिखा हरीलाल संवत् १९२९ कार्तिक शुदी ७ बृहस्पति वार ॥

विषय—भक्त ध्रुव का चरित्र।

संख्या ३३२ प. वैद्यक के नुसखे या (वैद्य मनोत्सव), रचयिता—नयनसुख, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६४९ = १५९२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० भालचंद्र मिश्र, ग्राम—सीतलन टोला, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ।

आदि—अज मूत्र सिउ पीसि करि कर अजनु नैनाहि ॥ अपस्मार उन्माद भ्रम सन्निपात न रहाहिं ॥ २ ॥ तिमिर रोग निशि अंध फुनि भूत दोष सिर वर्ति। वैद्य कह्यो विचारि कै एते करैं निवर्ति ॥ ३ ॥ अथ सन्निपात कहु क्वाथ ॥ वाग्भटात् ॥ मोथा सोंठ चिराइता कंटू गिलोइ मिलाइ। क्वाथु करि के पीजिये सन्निपात न रहाइ ॥ ४ ॥ अथ सन्निपात कहु औषधि ॥ आत्रे मतात् ॥ कुकुम लवंग जुपी परे अकरकरा जु मिलाई ॥ ५ ॥ आद्रक रस सिउ पीसिकै टकु एकु जब पाई ॥ सन्निपात उन्माद कफ तंद्र मारुत कास। शीत शूल भ्रम मोह ज्वर इह को करै विनास ॥ ६ ॥ इति ज्वर चिकित्सा ॥

अंत—वैद्य मनोत्सव ग्रथ महि कहिऔं सकल निज आनि। दुप पडन पुनि सुप करन आनद परम निधान ॥८॥ परमित ग्रंथ समुद्रसम मम मति पोजत पार। औषद रत्न जुते गहै कीए प्रगट ससार ॥ ९ ॥ केश राज सुत नैन सुप कियो ग्रथ अमीकंद शुभ नगरी सीहरद महि अकवर राज नरेंद्र ॥ १० ॥ अक वेद रस मेदनी शुक्ल पक्ष सुचि मास। तिथि द्वितीया भृगु वार पुनि पुष्य चन्द्र सुप्रकास ॥ ११ ॥

विषय—वैद्यक।

संख्या ३३२ घी. वैद्य मनोत्सव, रचयिता—नयनसुख, कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७३५ = १६७८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० श्रीकृष्णजी, ग्राम—बलगाँव, डाकघर—बालगाँव जिला—सीतापुर।

आदि—अथ नाड़ी परीक्षा ॥ दोहरा ॥ कर अंगुष्ट कू मूल ही दई नसा अकार सुष जानी जेहि जीव को पंडित करी विचार ॥ आदि पित्त पुनि मध्य कफ अंत पवन सु प्रधान। त्रिविधि नसा अनुमान करि जानत वैद्य सुजान ॥ ८ ॥ मैदुक काक कुलिंग गति पित्त नसा एहि भाय। हंस मयूर कपोत कफ नाग जर्कांप्र बाय ॥९॥ चढ़ी मंद कबहीं कबहुं वेग करेई। कुसम चाप जो का पसनि अतर करीं मरोई ॥ १० ॥

अंत—महा ज्वरांकुश वायु की औषध ॥ कुठ १२ गंधक १२ पारा १२ त्रिफला १७ विष १२ एकत्र करि धमरा के रस में पारा करें पहर चारि मूग के प्रमाण गाली बाँधे लौंग व पान में याइ तौ ज्वरांकुश नासै ॥ अथ अंजन सार गंधराज फटकरी को लावा १ लौंगकी १ मोती अन सुधे १ कांच की चूरी १ सिरनी के बीज १ रसवतु १ सिरसा के बीज १ दरून बर्म छीला बाघा १ चमेली की कली १ पतरिया १ सींग मसक १ ये सब कोरी कोरी भरि लेइ सब वस्तु पीस मैदा करै चमेली लकरी सिवै धरै फूल के बासन में चारे पहर तीनि बरी बंधी धरै आखा आय बकरा बाडे मूत सौं मों घसि लगावै तो फूली जाय अची के दूध सौं लावें पुनर्नवाके रसोवर्मी होइ जाय चीमधी आइ बमरा के रस सी बाहनी आइ पुन मै बासार बंधी आइ केरा के रस सौं धुधि आइ ज्ते रोगनासै ॥

विषय—वैद्यक।

संख्या ३३२ सी. वैद्य मनोत्सव, रचयिता—नयनसुख, कागज—देशी मोटा, पत्र—१९८, आकार—७×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य और गद्य लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८६३ = १८०६ ई० प्राप्तिस्थान—श्री भाऊचंद्र मिश्र ग्राम—सीतलनगरोठा, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ।

संख्या ३३३ ए. हंसनामा, रचयिता—नजीर कागज—देशी पत्र—२, आकार—७×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१८=१८६१, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवकंठ दूबे, ग्राम—रड़दासपुर, जिला—खीरी लखीमपुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हंस नामा लिख्यते ॥ आया था किसी शहर से एक हंस बिचारा। एक पेड़ पै शहरा के किया इसने गुजारा ॥ रहते थे बहुत जानवर उस पेड़ के ऊपर। उसने भी किसी शाख पै घर अपना संवारा ॥ देखा जो उस तायुरों में हुस्न में सुता रंग। वह हंस कागा सबकी निगाहों में प्यारा ॥ साजो छग रीबा सों साहे हुए आवाज। शहरों मे भी शहर से किया उसका सदारा ॥ जागो जगता लुनि वो ताळम अबूतर। सब करने लगे उससे मोहब्बत का इशारा ॥ कुछ साल विरहे योदने सिरी न थी

पाय अचल भा मन सतोषी काम क्रोध मद करि संग्रामा ॥ मम गुरु भीपम कर्म विदेही सदा अपन्थ सौ गुणान अकामा ॥ ध्याहाग मूरति मन के सूरति सदा मगन निज अपने नामा ॥ निधि दासी कलिकाल घोर मह सालिक राम गेत चदि रामा ॥ दो० । निधि दासी सव गुणन ते हीन भई संसार । मोहिं अग अधम अनाथ को मालिक राम अधार ॥ इति श्री राम मिलन ग्रथ संपूर्ण समाप्त. लिपतं भोलानाथ आज्ञा रानी श्री महाराज गिरिजा वखश् सिंह जी तहसील रंजीत पुरवा जिला उन्नाव निवासी स्वर्गवासी की भार्य्या शुभ मस्तु संवत १६४० श्रावण शुक्ला सप्तमी राम राम राम ।

विपय—मुक्ति के लिये गुरु और राम जी के भजन ।

संख्या ३३६ ए. श्री राधा कृष्ण हिंडो ॥, रचयिता—निहालदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं १९२५ = १८६८ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री घनश्यामदास, ग्राम—चौराही, डाकघर—गोलागोकरननाथ, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरजयति ॥ आतक छप्पै ॥ श्री राधा कृष्ण के रूप ध्यान की ॥ नंद नदन घन स्याम सुभग वृपभान किशोरी । विलसत विविधि विलास परसपर प्रीति न थोरी ॥ सकल जक्त अभिराम धाम वृन्दावन पावन । वोलत चातक मोर कोकिला परम सुहावन । हरित सकल द्रुम चहु दिसन विविधि कमल फूले सरन । ऋतु वसंत राजत सदा परम सुभ्र मुनि मन हरन ॥ १ ॥ कवहु हंसत घन स्याम राधिका मुख छवि जो है । कवहुं वजावत वीन मधुर सुनि मन मुनि मोहै ॥ कवहुं कछु करते गान मधुर वसी विच गावै । कवहुं लेत उर लाई परसपर अति सुख पावैं ॥ राजत राधा सग प्रभु कृष्ण चंद्र करुणा करन । मरकत मनि कुदन मनहु स्याम गौर सुंदर वरन ॥ २ ॥

अंत—निस दिन दास निहाल सुयस गावहू प्रभु केरो । गुरु पद पंकज ध्यान जनि करहु अवेरो । हृदय कमल तव खुल होय परकास घनेरो । यथा तिमिरि की हानि उदय रवि भयउ सवेरो । तव श्री राधा कृष्ण जाहि मुनि सकत न पाई । लहो परम विश्राम होइ उर विच दरसाई ॥४॥ इति श्री निहाल चद विरचितयाम् श्रीराधा कृष्ण हिडोरा लीला वर्नो नाम संवाद समाप्तम् शुभ फागुन मासे कृष्ण तिथौ पक्षे पंचमयाम गुरु वासरे संवत १९२५ वि० श्री श्री श्री श्री श्री

विपय—श्री राधा कृष्ण का हिंडोला पर झूलना ।

संख्या ३३६ बी. श्री राधा कृष्ण रासलीला, रचयिता—निहाल दास, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०४, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२५ = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री घनस्थाम दास, ग्राम—चौराही, डाकघर—गोला गोकरन नाथ, जिला—खीरी ।

आदि—जै जै जै जै वनवारी, जै सतन हित तन धारी । जे देव सुपद असुरारी । जे वृन्दा विपिन विहारी ॥ दो० जै जै श्री राधा रमन । जै जै नन्द कुमार । जै गोपी जन मन सुपद जै छवि रूप अपार ॥ चौ० ॥ जे गोपी पति वृज राई । जै मोहन कुवर

कन्हाई। श्री दासन के सुपदाई। ज द्वारा शोक समुदाई ॥ दो०। श्री सर्वोपरि जगत पति करुणासिंधु कृपाल। जै सुर मुनि सज्जन सुपद जै दुष्टन उर साल ॥ चौ०। पुनि गुरु पद पंकज ध्याऊं। रस रास चरित कछु गाऊं। हरि राधा पद सिर नाऊं ॥ सब संसै शोक नशाऊ ॥ दो०। राधा माधव पद कमल बंदौं सत सुप अैन। ब्रह्मा सनकादिक सकल के मंगल दिन रैन ॥ चौ०। ब्रज गोपिन अति तप कीन्हों। हरि पावहिं पति मन लीन्हों ॥ हरि अंतर जामी चीन्हों तब ह्वै प्रसन्न बर दीन्हों ॥

अंत—॥ दो० ॥ जागत सोवत स्वप्न में निस दिन सीनहु काल। नर बर बपु मम उर बसहु श्री राधा नंद लाल ॥ इति श्री रस रास लीला श्री राधा कृष्ण प्रीति अर्थे दास गिहाल बिरचितायाम् समाप्तम् शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु बैसाख शुक्ल १ शनिवासरे संवत् १९२५ वि० लिपर्त शिवलाल पांडे ॥ श्री संकर दातु नाम ओऽम् राम राम राम जानकी जीवन राजारमन की जै।

विषय—ब्रजवासी दास के ब्रज विलास की रास लीला का राग रागनी में वर्णन ॥

संख्या ११६ सी संग्रह, रचयिता—निहालदास कागज—देशी, पत्र—१ आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५४ पूर्ण रूप—साधारण, पद्य लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८९८=१८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामभरतसिंह, ग्राम—शारायस का निवाड़ा, डाकघर—भतिया मुहुर्ना, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ पद ॥ मजुमन राधिका पति चरन। सुरमिनि मुनि सनकादि नारद रहत जिनकी सरन ॥ टेक। दुख दाह दारिद दाप सब गुन पाप संचित हरन। गुन ज्ञान भक्ति विराग आनंद सकल मंगल करन ॥ १ ॥ जिन पगन सुरसरि प्रगट भई तिहुं लोक पावन करनि। जिहि धरि संतत संभु सिर भयो नाम गंगा धरन २ ॥ जे फिरत वृन्दा बिपिन चारत धनु ब्रज पर धरन। जाके तीर जमुना नीर निरमल बहत तारन तरन ॥ ३ ॥

अंत—सकल सिंगार संवारि बनाया बेष मनोहर नारी। बधू बधू कहि कहि सब गावत। राधा बिन बैठारी मुदित सब ब्रज की नारी ॥ ६ ॥ करि पिया बेष प्रान प्रीतम का श्री वृषभान दुलारी। निज कर कमल पान लै दीन्हो हंसि आयो गिरधारी। मुदित सब कलि ब्रज नारी ॥७॥ दास निहाल स्याम अरु स्यामा जन मन आनंदकारी। सुप सागर सब गुनन उजागर। नागर नवल बिहारी मदन रति बलि बलि हारी ॥८॥ इति श्री निहाल दास कृत संग्रह संपूर्ण समाप्ता लिपर्त बलीमार्ची शुद्ध संवत् १८९८ कार्तिक वदी दीपावली ॥

विषय—श्री कृष्ण जी के पद होरी, बारहमासी आदि ॥

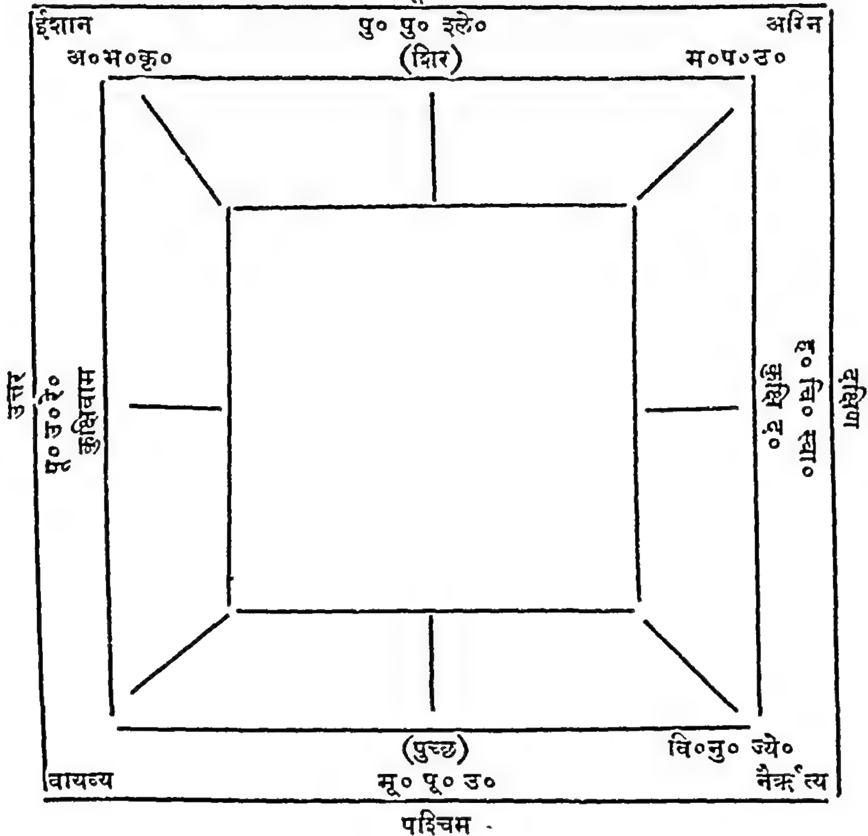
संख्या ११७ कूर्म चक्रम्, रचयिता—नित्यानंद, कागज—देशी पत्र—८, आकार—५ × ३½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८८१=१८२४ ई०, लिपिकाल—सं० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूबे, साहित्यान्वेषक, जिला—हरदोई।

आदि—अथ सब मनुष्यों के गृह वृत्तान्त ग्यानार्थ कूर्म्म चक्रम्। (दोहा) अति प्रदि भनमहि भूप सकल मुख्यात अयन चक्रपर चाह पुनि कछु कूर्म्म मैं सात। भूमि कूर्म्म इति आदि ले देस नगर गृह ज्ञात। ताके नाम प्रमाण से गनहुं कूर्म्म फलरेत सोरठा—दीनि

तीनि नक्षत्र मध्य पूर्व अग्न्यादि है । धरहु सर्व दिसि तत्र लखहु सनेइचर वास तंह । गृह के मध्य सूर्य सुत जानेउ । शोक और सन्ताप वखानेउ । द्वार माहिं यदि सनि कर वासा । मेघ आदि सों तहा कछु नासा । दिसि अग्नेय अग्नि भय सरसी । दक्षिण माहि मृत्यु दुख करसी । पुनि नैऋत्य राक्षस भय राख्यो । सुभद मंद वारुण दिसि भाख्यो । स्थिति वायिवि फलसून्य असेषू अर्थ लाभ प्रद उत्तर देसू । सर्व सिद्धि प्रद ईशान राख्यो । कूर्म्म चक्र सन फल इमि भाख्यो । दो० ॥ होत वलाधिक दुष्टसनि स्वल्प वीर्य सुभकार । जहं निवास तंह विघ्न वहु पीड़ा दृष्टि अगार । जौन देस जह लपत है भौम सनैश्चराहु । तहँ होत पर चक्रभयं अग्नि अकाल अगाह ।

अंत—कुंडलिका—गृह में कूर्म्म वनाय कै मुख में करि गृह द्वार । गृहाध्यक्ष नामर्क्ष सों मध्य पूर्व क्रमधार । मध्यपूर्व क्रमधार अग्नि आदिक में करि करि । तीनि तीनि नक्षत्र यथा क्रम सव दिसि धरि । कहैं सबै फल हेत वास जह सनि को देपेउ । कहाँ नष्ट स्थान वेधतह अधिक निसेपेउ ॥ नगर नगर नक्षत्र सों करि प्रथमै सव लेखि कहौ सुभासुभ मद फल कूर्म चक्र मधि देखि । चन्द्रहोय जो पुष्ट यत्न करहु शान्ति मन मानि । जामल तन्त्र विलोकि कै सर्व विघ्न हर ज्ञानि ।

कूर्म चक्रम्



विषय—(१)—कूर्म चक्र द्वारा वृष्टि, अनावृष्टि, सूप समय आदि सात बातों का ज्ञान। (२) नक्षत्र, भूमि, खेत और नगर के अनुसार कूर्म चक्र की रचना। (३) चक्र के भिन्न स्थानों पर शनि, रवि आदि ग्रहों की स्थिति से शुभाशुभ फल का निर्णय करना। (४) दुष्ट स्थानों पर स्थित ग्रहों की शान्ति का विधान।

संख्या ३३८ ए. गंगालहरी, रचयिता—पद्माकर, कागज—साधारण, पत्र—१० आकार—४½ × ५½ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामाधीन मिश्र, ग्राम—नवाबाद, डाकघर—पासपुर, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पोथी गङ्गालहरी कवि पद्माकर कृत लिख्यते ॥ दोहा ॥ हरि हर विधि को सुमिरि कै। कलहिं कलुष कलेस। कवि पद्माकर रचत हैं। गंगालहरी वेस ॥ १ ॥ कवित्त ॥ बसती विरंचि भई बामन पगन पर, फैली फैली फिरी ईस सीस पै सुगम की। आइ के कहीं जन्हु जंघा लपटाय फिरी दीनन के छीन्हे पीर कीन्ही तीम पय की ॥ कहे पद्माकर सु महिमा कहाँ लौं कहौं। गंगा धाम पायो सही सबके भरथ की। कारयों फल फली फूली गढ़ गाहो बह बढ़ो, कड़ कड़ी कीरति लता है भगीरथ की ॥ १ ॥

अंत—जोगहू में भोग में वियोग में संजोगहू में, रोग हू में रस में न नेकौ बिसराइये। कहै पद्माकर पुरी में पुन्य सैलन में, फैलन में फैल फैल गैलन में गाइये ॥ मैरिन में बन्धु में क्रिया में बंस बालन में, बन में बिपै में रन हू में जहाँ जाइये। सोवहु में सुष में सूरी में साहिबी में कहूँ, गंगा गंगा गंगा कहि जनम बिताइये ॥ ५३ ॥ गिरिसगजानन गिरि सुता, ध्याय समुझि श्रुति पंथ। कवि पद्माकर ही कियो, गंगा लहरी ग्रंथ ॥ ५४ ॥ श्री गंगा लहरी जो जन करै सुनै श्रुति सार। ताको गंगा देति है सदा सुभग फल चारि ॥ ५५ ॥ इति श्री पद्माकर कृत गंगालहरी समाप्त शुभ मस्तु ॥ माघ शुक्ल त्रयोदश्यां गुरुवासरे ॥ सन् १२९९ ॥

विषय—(१) पृ० १ से ११ तक—मंगलाचरण, ग्रंथ प्रतिज्ञा, गंगा की महिमा गंगा की स्थिति, गंगा जल पान की महत्ता, पापी का निस्तार और चित्रगुप्त का आश्चर्य, यमराज का चित्रगुप्त को आदेश। गंगा की तरंगों से पापियों का विष्णु समीप पहुँचना पाप को फटकार, रज के उड़ने के स्थान तक पापों का उड़ जाना, बहुत से पापियों के तरने का कथन, गंगा की महत्ता, कवि का गंगा से धूल भेद देने की प्रार्थना, गंगा के सर्वत्र से ही शिव की महत्ता का कथन, गंगा की रेणुका का प्रभाव, गंगा के प्रभाव से तरे पापी को ले जाने के लिये विष्णु की उत्कण्ठा।

(२) पृ० ११ से—गंगा की प्रशंसा, यमराज की गंगा जी से चुगली और पापियों को न तारने की प्रार्थना यमराज की राजधानी पर विपत्ति, पापियों का अनायास तरना कोढ़ी का तरना, लहरों की तरंगों की प्रशंसा, गंगा का गुणगान, गंगा चरित्र श्रवण से पापियों का तरना। गंगा नाम, गंगा की धार, जल, लहर, आदि की प्रशंसा, गंगा २ कह जन्म व्यतीत करने की आकांक्षा। पुस्तक पाठ फल।

संख्या ३३८ बी. हिम्मत वहादुर विरुदावली, रचयिता—पद्माकर, कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गुमान सिंह अध्यापक, ग्राम—सूपा, बुंदेलखंड, डाकघर—कुलपहाड़, जिला—हमीरपुर,

आदि—अथ हिम्मत वहादुर विरुदावली, लिष्यते ॥ श्री गणेशायनम जय जय जय व्रज जलधि चंद आनंद वढ़ावन । जय जय जय नंद नद जगन दुख दंद घटावन ॥ जय जय केसी कंस वच्छ वक रच्छस दंडन । जय जय गिरिवर धरन मान मघवा मन पंडन ॥ जय पद्माकर भारथ समर पारथ सप परु मिच्छि धनि । नित नृप अनूप गिरि भूप कहं विजय देहु यदु वंश मनि ॥ १ ॥ नित देहु जय जदु वंश मनि अवतंस नौऊ पंड को ॥ गिरि राज इन्द्र नरिंद नंदन मवन तेज अषंड को ॥ प्रथुरित्ति मित्त सुवित्त दै जग जित्ति कित्ति अनूप की । वर वरनिये विरदावली हिम्मत वहादुर भूपकी ।

अंत—॥ छप्पै ॥ जय जय जय धुनि धन्य धन्य गज्जिय छिति छज्जिय ॥ फहरत सुजस निसान सान जय दुंदभि वज्जिय ॥ सोभहिं सुभट सपूत खाइ तनु धाइ अतुल्लै । विमल वंसवहिं पाइ मनहु कल किंसुक फुल्लै ॥ तहं पदमाकर कवि वरनि इमि रन उमग सफ जग किय ॥ नृप मनि अनूप गिरि भूप जह सुप समूह सुफतूह लिय ॥ सुभ सुप समूह फतूह लिपहिय मंजु मोदन सो भरै काली कपाली निस दिन नित नृपति की रक्षा करै ॥ प्रथुरित्त नित्त सुवित्त दै जग जित्ति कित्ति अनूप की वर वरनिये विरदावली हिम्मत वहादुर भूप की ॥ इति श्री हिम्मत वहादुर विरुदावली सपूर्ण समाप्तः लिषत श्री पालसिंह स्वपठनार्थ सवत १९०९ वि० माघ शुक्ला पचमी ॥

विषय—हिम्मत वहादुर गुसाईं के वहादुरी की प्रशंसा ।

संख्या ३३८ सी. जगद्विनोद, रचयिता—पद्माकर, आकार—९$\frac{3}{4}$ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—११९५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४५ = १८८८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री हरिहर बक्श सिंह, ग्राम—ममरेजापुर, डाकघर—बेनीगंज, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ जगद्विनोद पुस्तक लिख्यते । दो०—सिद्धि सदन सुंदर वदन नंद नंदन मुद मूल । रसिक सिरोमणि सावरे सदा रहहु अनुकूल । १ जय जय शक्ति शिला मयी जय जय गढ़ अमर जय जय पुर सुर पुर सदृश जो जाहिर चहु फेर २ ॥ जय २ जाहिर जगपति जगत सिंह नरनाह । श्री प्रताप नदन वली रवि वशी कछवाह ॥ ३ ॥

अंत—दो०—वन वितान रवि शशि दिया फल मै (मख) सलिल प्रवाह । अवनि सेज पखा पवन अव न कछू परवाह ॥ २१ ॥ सव हित से विरक्त रहत कछू न शका आस । विहित करत सुवहित समुझि शिशुवत जे हरिदास ॥ २२ ॥ इति नव रस निरूपणम् ॥ दो० ॥ जगतसिंह नृप हुकुम तें पदमाकर लहि मोद । रसिकन के वश करन को कीन्हो जगत विनोद । इति श्री कूर्म वशावतस श्री महाराज राजेन्द्र श्री सवाई महाराज

जगत सिंह आज्ञया कवि पद्माकर विरचित जगत विनोद काव्ये अष्टमो अध्यायः समाप्त सं० १९४५ चैत्र मासे कृष्णपक्षे तिथौ प्रमोदश्यां शुक्रवार लिखितं जगद्विनोद पुस्तकं मेघ वर्ण मिश्रेण बा० सुधाकरसिंहस्य पठनार्थम्।

विषय—नायक नायिका रस इत्यादि।

संख्या २११ हितोपदेश, रचयिता—पदुमनदास, कागज—साधारण, पत्र—१११, आकार—९×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५०० पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १०६६ = १७०९ ई०, लिपिकाल—१८७४ = १८१७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नूलाल पुस्तकालय, सुराजपुर, गया।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ गुरु गिरीस गिरजा गिरा प्रह नायक गन ईस। पदुमनि विष्णु प्रनाम करि याच्यो इहै असीस ॥ १ ॥ होय सुफल प्रारंभ मम कोउ करै जनि हास। ज्ञाता मज्जिता को सदा सुंदर मंगल परगास ॥ २ ॥ विप्र विष्णु शर्मा भनित हित उपदेश विचित्र। सुनत चाव प्रस्ताव मय भूपति मित्र पवित्र ॥ ३ ॥ सुर भाषा पदु हीन तें कह्यो चहै प्रस्ताव। सिंह दुलेल महीपतहि हेतु किया हित चाव ॥ ४ ॥

अंत—गीध करायो भेंट तिन नृप संभाषन कीन्ह। अंकम दै पूछयो कुसल कथा कहे को चीन्ह ॥ ५४३ ॥ मेर भयो तहि वर नृप चक्र वाक पहिराय। मान माग पंजा दयो मंत्री के मत पाय ॥ ५४४ ॥ चक्र वाक को करि विदा विनय गीध तब कीन्ह। सुभ मंत्री मन वैस को, सुजस विचारे दीन्ह ॥ ५४५ ॥ बंध दे आयो कूंच को, तविलम चले बहेरि। राम राम नृप इस सौं, कहि भेजो तेहि बेरि ॥ ५४६ ॥

× × × ×

इति श्री पदुमन दास विरचिते महाराजा दुलेल सिंह कारिते हितोपदेश संधिनाम चतुर्थो कथा समाप्ता ॥

विषय—(१) पृ० १ से ५ तक—मंगलाचरण ग्रंथ निर्माण कारण—सिंह दुलेल महीपतहि हेतु कियो यह चाव। भाषय पदुमन दास का, प्रेम सहित सतुभाव। रचन कहाँ सब दोहरा, पचन सुधा मय जान ॥ नृप वंश वर्णना—सदा पूर्व निवासते धेर बार भइ ख्याति। वेमु वंस विख्यात जग, जानै सभी जाति ॥ वामदेव भूपाल भूमि सुत, वल जिन्ह लीन्हो। कीर्तिसिंह तसु तनय सिंह विक्रम जिन्ह कीन्हो ॥ रामसिंह तप निधि कुल उपिन्त गए दिव। माधव सिंह महीप भयो तसु नंद महाभुज। तसु नंदन जगत बहादुर नृप हेमत सिंघ तसु धर्मंधुर। श्री रामसिंह सुत तासु पुनि नीति निपुन जसु चतुर ॥ कुँअर करे सोयपुनि कृष्ण सिंह मतिमान। प्रेमी सिंह दुलेल की जिन्ह के सरि सर आन ॥ सरस पितामह तै पिता रामसिंह रणधीर तिन्ह के पुत्र पवित्र भुवि, सिंह दुलेल गँभीर ॥ करन सिंह दुलेल की बरनी जाति न काहु। धरनी तलमैं धन्य तम गुन गन सिंधु अगाधु ॥ तिन्ह श्री पदुमन दास को दीन्हो बहु विधि दानु। साधन और निदान है निरखि जासु मनमानु ॥ कवि वंश परिचय—दामोदर काश्यप वरन जिन्ह के धर्मप्रकाश। चारि पुत्र तिन्हते भए, जैसे संकरदास ॥ मध्यम पदुमन गुन गरुअ तथा ज्ञासमनि जान ॥ अनुज कृष्णमनि गुननि तें अभवद् अभिमान ॥

ग्रंथ निर्माण कालः—सत्रह सै अड़तिस सजन संवत विक्रम राइ। मित पाँचैं मधु बुध दिवस रच्यो गनेश मनाइ॥

(२) पृ० ५ से २६१ तक—मित्रलाभ-काक, कूर्म, मृग तथा मूसे की कथा। हित भेद, विग्रह तथा संधि आदि संस्कृत कहानियों का पंचतत्रादि द्वारा भापानुवाद।

(३) पृ० २६२—ग्रंथ पूर्ण होने की सूचना तथा अन्य ज्ञातव्य विषयः—इति श्री पदुमन दास वरनि परिपूरन कीन्हो। रुद्रसिंह जुवराज जिओ जिन्ह हित करि लीन्हो॥

× × × ×

भूपति सिंह दलेल के, रुद्र सिंह जुवराज। जिऔ जुगुल जल गग, अउ समु सीस ससि छाज॥ सत्रह सै छासठ[१७६६] जवै पूप पंचमी सेत। पदुमनि लिखि पूरन कियौ, रुद्र सिह के हेत॥

ग्रथ लेखन काल.—

संवतु श्रुति[४] सागर[७] सहित, वसु[८] वसुधा[१] सुभ जानि। शुक्ल दसमि मधु मास के, ससि वासर अनुमानि॥ तेहि दिन लिखि पूरन कियो, उकील देवचंद हेत। चारि कथा उपदेश हित, पढहु समुझि चित चेत॥

संख्या ३४० ए. अरिल्ल, रचयिता—पहलवानदास (भीखीपुर, रायबरेली), कागज—सफेद, पत्र—१४, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, पूर्ण, रूप—अच्छी, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १९२३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवनप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पाड़े, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि—सो० सत गुरु तुम समरस्त, श्रुति भापत चारिहु युगन। देहु नाम सत कस्त पहल्वान दास विनती करै॥ अरिल—कर्ता ते नहि छपै, सर्व घट पैठ है। रोम २ वह्माण्ड, कहाँ नहि वैठ है॥ जल पावक में रमि रह्यो, आपुहि छिति असमान है। अरेहाँ, पहल्वानदास ले वूझि यही ब्रह्म ज्ञान है॥ १॥ केते भेप वनाय जगत को लूटते। चातक नाटक देखि जियारत जूटते॥ वृक्ष हलावत झरि परैं लौंग सुपारी देत हैं। अरेहाँ पहल्वान दास यह दुनिया तेहिते दिक्षा लेत है॥

अंत—ये दुइ वाना वाँधि के लरै मरै जो खेव में। सत—सूर है सोइ जो। ठहरै समय सकेत में॥ तरवारिहु ते कठी कठिन, वडे मरद का काम है॥ अरेहाँ पहल्वानदास सव कुछ वनै। जेहि घट साँचा नाम है॥ राम नाम विन और सव। यंत्र मंत्र आराधना। इन्द्रजाल उड्डीस पदि। की वीसा को साधना॥ नरसिंह भैरव पूँजि, गयो मरि अंतका॥ अरेहाँ पहल्वानदास सव भठिक के। पथ निवहिगा सत का वहुत गुरु ससार। देन कहँ दीक्षा पूरे। हृदय नाम विन सून, कहौ क्या है अव भूरे॥ अमिप अहारी शिप्य सव। गुरु यह कहि के मूडते अरेहाँ पहल्वानदास गुरु, चेला, दोऊ नर्क महँ वूड़ते॥ इति

विपय—ईश्वर की भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और संसार की आसारता आदि का वर्णन।

संख्या १४० बी. मुक्तायन, रचयिता—पहलवानदास (मीजीपुर रायबरेली), कागज—बादामी, पत्र—८४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१२, खंडित, रूप—प्राचीन सही, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३५ = १७१८ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत चंद्रभूषण जी, ग्राम—रमानपुर, डाकघर—मीरमऊ, जिला—बाराबंकी।

आदि—दोहा—तुव दायाते काज सब। सिधि होत तेहि हेत। मैं अपराधी रहित मति तुमहि न देरी हेत ॥ सो० नाम लेत तुव नाम, काम सिधि सब तासि के। सिधि दायक सिधि धाम। दुख राशि भारत हरन ॥ पहलवानदास मति हीन। तुम दयाल करुणा यतन। कठिन करव्य कीन। कृपा करहु बारन बदन ॥

अंत—दो० धर्म बात सिर पर धरा। अमल सरोवर पाँच। सहमा अहि तनु छुटि गा। कम हरि भजन प्रमाण ॥ हरि के जन हरि एक यदु, बर्णत वेद पुराण। बहुप बोसहि गति मिली। उतरेउ गगन विमाण ॥ × × × × दक्षिण दिशा कहि दसहरि। योजन पाँच प्रमाण। पुरब दिशा छिति योजन भरि सत गुरु स्थान ॥ अवध सात योजन गिरा। पुरब उतर के कोन। मीपी पुर पहिचानिए, पहलवान दास को भौन ॥ × × × समाप्त।

विषय—ईश्वर के भजन की सरल विधि इन्द्रियों के साधन का प्रकार तथा गुरु की आवश्यकता का वर्णन।

संख्या १४० सी. उपज्ञान विवेक (मनज्ञानग्रामा), रचयिता—पहलवानदास (मीजीपुर रसतामऊ) कागज—मोटा, पत्र—२०, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—१८६५ = १८०८ ई०, लिपिकाल—सं० १९०० = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे पराग पाँडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि—दो० महादेव गण पति गिरा, गिरजा सुवन समेत। बंदौं सुरपति प्रभु पति हि राम भक्ति के हेत ॥ सुरसरि, भूसुर सर्व मुनि जगत पिता रविचन्द्र। पवन तनय तुमते विनय, पहलवान दास मति मन्द ॥ करहु कृपा जन जानिकै। देहु सुमति सत ज्ञान। नाम रटनि लागी रहै, अजपा सुमिरन ध्यान ॥

अंत—दो० नाम भजन गुण चारिहू, धर्म अनराग ध्यान। जहँ सुमिरन संतोष तहँ, पहलवान दास मत मान ॥ चौ० कृपा जगत सुख नाम विसारी, पैठ न मारिय सोम अचारी। सौ येतु दुख मारिस मरु। का फरिआ करिआ के गए ॥ सुमिरु सबेरे हिय-धर सुधि, का पाछे मरि व दुख सुधि। सुमिरु सुखी हो हरि का ताईं। ऐसे राज न पावा काईं ॥ हरि जन पास तरे बहुतेरे, पंगुल होत मनै गिरि नरे। जो अनंत औरन का चले, अंधर मे उठे सुद जन धर्म ॥ को न मान जग हरि के नामहि। दूत उन संका दूर भगावहि ॥ धर्म राज गन तहि डेराहीं। और बीर केहि ऐसे माही ॥ दो० धर्म राज गन डरत हैं। हरि को नाम देखि ॥ पहलवान दास हरि भजन कर बारहु बार विशेषि ॥ इत्यादि ॥

× × × ×

विषय—लोकोक्तियों के प्रयोग के साथ भक्ति आदि का वर्णन।

संख्या ३४० डी. विरह सागर, रचयिता—पहलवानदास (भीकी पुर, रस्तामऊ), कागज—सफेद, पत्र—७०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—७००, पूर्ण, रूप—अच्छी, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५१ = १७९४ ई०, लिपिकाल—स० १९८० = १९२३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पांडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि—दो० गुरु कर्ता बन्दौ प्रथम जोरि पाणि सिर नाय। लोहा ते कंचन करै, प्रीति प्रतीत दृढ़ाय ॥ सो० चारि वेद मंह लीक, पद सेवत कल्याण मय। कबहु परै नहि फीक। दृढ़मान हि परतीति जे ॥ सत गुरु तुम समरस्त, श्रुति भाषत चारिहु युगन। देहु नाम सत करत, पहल्वान दास विनती करै ॥ चौ० जै जग जीवन समरथ सांई। को जग दूसर तुम्हरी नाई। निज जन जानि दया प्रभु कीजै, विरह सार सुमिरन मोहिं दीजै ॥ बदौ दूलन दीन दयाला। सत मणि तिलक जासु के भाला ॥ जेहि की कृपा भजन कछु होई। उपजै विरह नाम कै सोई ॥ सत गुरु सिदा विनय सुनाऊँ, देहु ज्ञान कछु कीरति गाँऊ। गुण अवगाह अहैं प्रभु तोरे, नाहिन ज्ञान बुद्धि कछु मोरे ॥

अंत—दो० कथा संपूरण कृष्ण रव, मोर ध्वज को ज्ञान ॥ सुन अर्जुन ध्रमराज सों, हृदय कीन परमान ॥ सो० निज पुर गे ध्रम राय। कृष्ण चरण उर राखि कै। दूतन कथा सुनाय, विविधि भाँति समझाय कै ॥ चौ० सुनि मन दूतन कीन विचारा, नृपहिं सराहत वारहिं वारा। शुभ कीरति अघ मंदर नाशनि। गिरजा सुनहु सुज्ञान प्रकाशनी ॥ कुमति विधंसनि सुमति सुधरनी, जन मन भावन भव सरी तरनी। मगल करन अमंगल हरनी, मोह नशावनि पातक हरनी ॥ उपजै ज्ञान सुनत सत वानी। श्रोता वक्ता हृदय भवानी। हरि कीरति हर उमा ते वरनी। राव मोरध्वज कै जस करनी ॥ सुनत कथा गिरि राज कुमारी। हृदय हर्ष चख भरे सुवारी। धन्य २ तुम धन्य मैन अरि। कहत प्रेम रव उमा चरन परि ॥ हरि कीरति हर उमहिं सुनावा। पहल्वान दास सुनि निज मति गावा।

× × × ×

दो० दीपक दिनकर, चन्द्र छवि, जेहि घट एकौ रूप। पहल्वान दास ते ब्रह्म सम, हरि भक्तन महं भूप ॥ इत्यादि ॥

× × × ×

विषय—नाम की महिमा तथा भक्तों की कथा का वर्णन।

संख्या ३४१ ए दधिलीला, रचयिता—परमानंद, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १८७५ = १८१८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रमाकांत त्रिपाठी 'प्रकाश', ग्राम—बड़ा, डाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गनेस जी सहाई ॥ दधि बेचन चली ब्रज नारी। जहँ जुड़व कदँव की छाहीं ॥ बैठे प्रभु तेहि मग मांहीं ॥ सखीरी गेड़री पेलति आइ ॥ तव कृष्ण जी मुरली

बजाई ॥ दधि बेचन चली ब्रज बाला । तहाँ बीच मिले नँद लाला ॥ ईंदेरी गुजरिया दधि दाना ॥ नाहि अंदल रोकहिं मगा ॥ तूँ कौनि गुमान गँवारी ॥ चारों अंग कंचकी सारी ॥ सब भूषण लेहुँ दुराई । भटकी दधि लहुँ सुभाई ॥ तुम बहुत किये लंगराई । कोउहुँ नहिं नँद दुहाई ॥

अंत—जो चाहो सो कर लीजै । प्रभु क्रिपा अपनी कीजै ॥ हरि देषी गुजरी रति मानी । हँसि बोले सारँग पानी ॥ छंद ॥ हँसि बोले सारँग पानी सुंदरि मान रति बस में रही । कैरी केसी कुंज कलोलनि कीन्हा सहज रंग रस भरि रही ॥ करत क्रीड़ा मदन मोहन कमल लोचन राज ही । दास परमानन्द सोभा सुभत कलिमल भाज ही ॥ इति श्री दधि लीला संपूर्ण समाप्तम् ॥ मास पउप बदी ७ समउ बासर संवत् १८७५

विषय—कृष्ण की दधि लीला अर्थात् गूजरियों का दधि बेचने जाना, कृष्ण का मार्ग में मिलना और दान माँगना बाद विवाद होना, अन्त में गूजरियों की विनय ।

संख्या ३४१ बी दधिलीला, रचयिता—परमानंददास, कागज—देसी बादामी, पत्र—४ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री कृपानारायण शुक्ल, ग्राम—मुंशीगंज कटरा, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ ।

संख्या ३४१ सी दानलीला, रचयिता—परमानंद दास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८ × ४ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सीतला प्रसाद दीक्षित, ग्राम—मीठी डाकघर—सँदीर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ दान लीला लिष्यते ॥ एक बार राधे जी बैठी सषियन साथ । बढ़्यो प्रेम उमग्यो हियो सुमिरयो मन रघुनाथ ॥ दो० ॥ चलौ सखी तहँ जाइये जहाँ बसत ब्रजराज घोरस बेचन प्रेम रस एक पंथ दुइ काज ॥ भूप भानु सुता सुकुमारी दधि बेचन चली बिचारी । हिरदे धरि अवर प्यासा चलि सुमिरत सो नगपाला ॥ जहँ ठाढ़ी कदम की छाहीं । तह बैठे प्रभु मग माहीं संग ग्वाल बाल बहु स्याई । तहँ चलहिं कुँवर कन्हाई । मिठदी मति करहिं कलोला । प्रभु देषि हुलहिं मन लोला ॥ सखियाँ दस बारह संगा । वृषभानु सुता सुभअंगा ॥

अंत—तब राधा विनय चलि आई । सुनि लीजै विनै गुसाई । हम दासी अहैं तुम्हारी । तुम परम धरनि धनिधारी । धनि जीवन जन्म हमारा । जो पावा दरस तुम्हारा ॥ एक बैठि बयारि डोलावै । एक बीरा खोलि चबावै । जो चाहिय सो अब लीजै प्रभु कृपा आपनी कीजै ॥ हरि देषि गुजरि रति मानी । हरि बाल सारंग पानी ॥ छंद ॥ हरि बोले सारंग बानि सुंदरि मानि रति रस है रहे करि कलि कुंजनि कोल कीन्हीं सहज रंग रस भरि रह । करहिं क्रीड़ा मदन मोहन कमल लोचन राज ही । दास परमानंद सोभा सुभत कलिमल भाजही ॥ इति श्री दान लीला समाप्तः संवत १८८१ साके १७४६ ।

विषय—राधा का कृष्ण के प्रेम में दही बेचने के बहाने जाना और रास्ते में कृष्ण जी का ग्वालों के साथ मिलकर दधि दान लेना आदि ।

संख्या ३४१ डी. दानलीला, रचयिता—परमानंददास, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१८, आकार—६ × ३$\frac{1}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूबे, साहित्यान्वेषक, जिला—हरदोई।

आदि-अंत—३४१ सी के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है:—श्री कृष्ण श्री कृष्ण मिती वैसाख वदी १ संवत् १९३१ साके १७९६ लिखी सीताराम सुकुल। राम राम राम॥

संख्या ३४२ ए परमानंद विलास, रचयिता—परमानद (संभल, मुरादाबाद), कागज—देशी, पत्र—१५६, आकार—८ × ६ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—बावा मनोहरदास, ग्राम—डकरोर, डाकघर—मवई, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ परमानद विलास लिष्यते॥ सतो कृष्ण धरम अवतारा लीला वेद प्रकारा। चोर भक्त को चित्त चुरावै काम हरन सुख धारा। अग्निरूप अवतार कृष्ण तन छुधा त्रपा धर्त सारा॥ १ आलस हरन नीद के हरता मिथुन प्रचुत घट दारा। प्रक्तपती कृस्न हैं जगपति कामिनि के भरतारा॥ २॥ जेती कामिनि कृष्ण पुरुष वर इच्छा रास विहारा। अग्निकुठ में सवही उज्जल जोति पतंगा कारा ३

अंत—खेलत वारह मास छऊ ऋतु लागी है मेरी औ तेरी॥ खेल फाग कुरंग रूप वत कामिनि करत वरजोरी। इनसे भाग वचो कोऊ गुरू जन ब्रह्म रग डिगरोरी। परमानद वसु गगन गुफा में शब्द ने शोर करोरी मचाई जग में नित नई नई होरी॥ इति श्री परमानद विलास संपूर्ण समाप्त. सवत् १९३० वि०॥ जै भगवान की राम राम राम।

विषय—कृष्ण आदि के भजन वा ज्ञान की वारहमासी॥

संख्या ३४२ बी बहुरंगी सार या परमानंद विलास, रचयिता—परमानंद, कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९० = १८३३ ई०, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री दीनानाथ मिश्र, ग्राम—फतेपुर चौरासी, डाकघर—सफीपुर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनम.॥ अथ वहुरगी सार अर्थात परमानद विलास लिष्यते॥ संतो कृष्ण धरम अवतारा॥ लीला वेद प्रकारा। चोर भक्त को चित्त चुरावे काम हरन सुष धारा॥ अग्नि रूप अवतार कृष्ण तन छुधा त्रपा धर्त सारा॥१॥ आलप हरन नींद के हरता मिथुन प्रचुत घर दारा॥ प्रक पती कृष्ण है जगपति कामिन के भरतारा॥२॥ जेती कामिनि कृष्ण पुरुप वर इच्छा रास विहारा। अग्नि कुठ में सवही उज्जल जोति पतगा कारा॥ ३॥

अंत—॥ होरी। मचाई जगमें नित नई नई होरी। सुनके कोऊ देउ न पोरी॥ काम क्रोध के कुड वने हैं ममता को रग भरोरी। मचाई॥ लोभ मोह सवही को गहि गहि वोरत हैं वरजोरी। आसा तष्णा जग फगुहारी पीछे फिरत दौरी दौरी॥ इनसे भाग वचो

नहिं कोई खेत है भाग बिचारी खेलत बारह मास छक मधु लागी है मेरी श्री टेरी ॥ खेलत फाग कुरंग रूप नव कामिनि करत बर जोरी । इनसे मान बचो अरु गुरु बन इस्म रंग बिगरोरी ॥ परमानंद वसु गगन गुफा में शब्द मे शोर करोरी । मचाई बगमें नित नई नई होरी ॥ दो० संवत शशि निधि वसु गगन शुक्ल बदी मधुमास चतु रंगी भजनावली, परमानंद प्रकास ॥ इति श्री परमानद विलास । चतुरंगी सार संपूर्ण समाप्त राम राम राम राम श्री संकटायनमः ॥

विषय—श्री रामकृष्ण आदि के भजन और होरी ।

संख्या १४३. सोनारी विद्या, रचयिता—परसनदास पाँडे (मगरसी, फैजाबाद), कागज—साधारण, पत्र—९, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०० = १८४३ ई० लिपिकाल—सं० १९३६ = १८८९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामाधीन सिंह, ग्राम—मोहर हसनपुर, डाकघर—रानहा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ गनपति कृपा निधान के, पद बन्दौं कर जोरि । कृपा करौ गिरिजा सुवन, बुधि बढ़ै यह मोरि ॥ १ ॥ गुरुर सदा श्री मर्ण पद, बन्दौं सहित हुलास । स्वर्णकार विद्या कहौं, पाँडे परसन दास ॥ २ ॥

× × × ×

रचौं रच्यौ यह ग्रंथ मैं, सबकी अपि उपकार ॥ जो पढ़ि गुनि चित धारिहैं, बन्दौं तिन्हहिं सुधार ॥ ६ ॥ उत्तम मध्यम नीच को सोना चाँदी होय । चारि पर्न समुझि गुनै, नाम कहुं सब जोय ॥ ७ ॥ उत्तम सोना सुदन है, ताको कुंदनि जानि । मध्यम सोना बरद है, सोइ रामा परमान ॥ ८ ॥ तीसम सोना हलुक है, बरद राशि कहि नाम । सबते नीचे श्वेत रंग, जाहि रैसमी नाम ॥ ९ ॥

अंत—बारह पाई का आना करै । यही हिसाब रत्ती पर धरै ॥ बरै पतहरी अपपाई परै । अनेक जेपा करि करि मरै ॥ १०८ जो एक बीस को पढ़ि कै सोनार से कुछ पाइ मिलवै तो हिन्दू को गंगा की कसम है मुसलमान का कुरान की कसम है ॥ हिन्दू गौ खाइ मुसलमान सुअर खाइ ॥

दोहा ॥ पढ़ि गुनि समुझि विचारि कै, कीन्हौं पर उपकार । नेक मसियता के लिये, मिलै नरक को द्वार ॥ १०९ ॥ सोनारी बोली आना पाई की कहत है भेग)– राय)॥ फोंक ।) सुप ।)– कुलंक ।)= पैत ।)॥ सुक्षि ॥) जोन ॥)– सहाय ॥)= एक सहाय ॥)॥, दुखाय ॥।) रपसाय ॥।)– फोकस्मान ॥।)= दुपलाय ॥।)॥ धाम १) मान ,– सोहन ,= एक चाई)॥ बजबा १) इति सोनारी विद्या समाप्तम् शुभ मस्तु सम्वत् १९३६ ॥ सन् १२९७ ॥ पैसाख बदी ११ लिख्यते बरिवन्त प्रसाद विद्यार्थी श्री कृष्ण कै कै ॥

विषय—(१) पृ० १ से ६ तक—मंगलाचरण ग्रंथकार परिचय :—

गुरुर सदा श्री मर्णपद, बन्दौं सहित हुलास । स्वर्ण कार विद्या कहौं, पाँडे परसन दास ॥ उत्तर दिशि एक ग्राम महँ, पंडितपुर तेहि नाम । बैसवारा की पश्चिम दिशा, पंच

कोश परमान ॥ टीक परगना मगरसी, जानत हैं सब कोय। तहां हमारो वास है, निकट अवध पुर जोय ॥

ग्रथ निर्माण काल :—

संवत् नभ सो नट विधु माघ कृष्ण तिथि काम। दिन बुधवार विचारि कै, चौथ जाम अभिराम ॥ तवहिं रच्यौ यह ग्रथ मैं, सबको लगि उपकार। जे पढ़ि गुनि चित धारिहैं, बन्दै तिनहिं सोनार ॥ स्वर्ण भेद, चांदी भेद, मिलावट की पहिचान, माल को ताने व सुलाखने का विधान सोनारों की मिलावट सबंधी चालाकियां।

(२) पृ० ६ से पृ० १८ तक—स्वर्ण में मिलावट अर्थात टाके का विचार, स्वर्ग गलाने का विधान, चांदी के गलाने का विधान, सोने में रग देने की विधि, चांदी शोधन विधि। सोनारी बोली, सोना चादी की अन्य विधिया। चादी का प्रमाग वथन, आना पाई की सोनारी बोली।

संख्या ३४४. ऊषा चरित्र, रचयिता—परशुराम, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७२ = १८१५ ई०, प्राप्तिस्थान—मनियनमिश्र वैद्य, सुभानपुर जि० कानपुर, वर्तमान ग्राम—गगापुर, डाकघर—लहरपुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ ऊषा चरित्र लिप्यते ॥ चौ० ॥ चैत्र मास गौरी व्रत होई। सकर त्रिया पूज सब कोई। वाना सुर की राज दुलारी। ऊषा नाम सो प्रान पियारी। विधि संजोग ताके मन आई। सो चलकै रानी पै जाई। मोको विदा देहु जो माता। हौं पूजौं संकर सुपदाता ॥ रानी विदा कुमरि की कीनी। पुष्प कमक सामिग्री दीनी ॥ दो०। धूप दीप नैवेध लै सग सपा दल साथ। फूल दल पती फल जती केशर चदन हाथ ॥

अत—दो०। परसुराम की वीनती जौन श्रवन सुनि लेइ। परम दयाल कृपा करै प्रभु इतना फल देइ। पुन ले अपनो हकहो अलपे मतले मोह। गुन जन सभै सुधारियो हीन जहा कछु होय ॥ इति श्री अनुरुद्ध ऊषा स्वपन प्रसंग समाप्त. संवत १८७२ जेष्ट कृष्ण ९ गुरु लिपिते नंद राम ॥

विषय—ऊषा और अनिरुद्ध का स्वप्न और विवाह वर्णन।

संख्या ३४४ ए. रामकलेवा रहस्य, रचयिता—पर्वतदास (ओरछा), कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—१२ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७२७ = १६७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदत्त वाजपेयी, ग्राम—महरानिया, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ राम कलेवा रहस्य लिप्यते ॥ रागिनी काफी सुनिये रहस्य या श्री रावौ सुपदानि। प्रात समै रवि उदित भये सति नौवा जनक पठाव्रो। चारिउ कुंवर राय दसरथ के तुरत वोलि लै आवौ ॥ गवनित नौवा गा जनवासे नृप दसरथ

के ठाई। चारिउ कुंवर महा कौसल्या घर चले कलेवा पाई ॥ मुनि नृप सखा अनुज सुत रामहिं आतुर सिय उर लाई। आठ सकल मिठि पाम कलेवा पठये जनक बोलाई ॥ पितु अनुसासन पाय कृपानिधि चढ़िभे चारिउ भाई। सम वै राज कुमार छबीले तै सब चले लिवाई ॥ कोउ स्यंदन कोउ तुरंगन आपु रुचिर सुख पाला। अनुजन सहित चलत रघुनंदन कोटि मदन मद घाला ॥ स्यंदनादि मह भ्राजत अनुसुत परम विचित्रित कीन्हे। जग मगात सब जटित जवाहिर दिनकर परत न चीन्हे। गोमुख आदि दुंदुभी बाजत पणव सरस सहनाई ग्रावत जानि राम कहं सखियाँ गली सुगंध सिंचाई ॥ पैंडे चली अतारिन ढेरी देखै सुभग झरोखे। पेखत सुमति कुमारेन झांकै दरसन आस अपारा ॥

अंत—नृप जनवास आदि रघुवर लघु बिधि दीन्हे पठाई। गुरु वशिष्ठ कौसिक समेत नृप भाग लाय सब भारी ॥ बढ़ो विचित्र लख्यो हमी नृप रुप कैसे कै जान्यो। इस कछु जानउ कछु तिछ तिछ उनसो सकल बखान्यो ॥ श्रेठ बहु स्तुति सर्वेश करे कोऊ सतानंद तब पायो। क्यों कहै परम कौतुकी नारद तिन सब भेद बतायो ॥ भाषित राति मुनि नृप कौतुकी आतुर तिन्हे बोलाऊ। चित्र विचित्र ततक्षण मिटे भहिं जपपि चोप छोड़ायो ॥ रचना रुपि इमै सभा मुनि अरु सब सकल बराता भयो हांस आनंद कुतूहल समुझि परै नहिं बाता ॥ यहि प्रकार आनंद बहु बिधि परम विलास सोहावा सज्जन समुझि लेव अपने मन यथा स्वमति मैं गावा ॥ जस मन हर्ष प्रेरना करि अरु जस मम मतिहिं लख्यो परवत राम संत पद रज सिर राखि चरित यह गायो। दोहा ॥ जे मुनि हैं करि प्रीति यह पं कहि हैं कहि भाव। तिनका राम विलास यह करिहै तुरत प्रभाव ॥ सीताराम रहस्य यह भक्त रसिक सुख मूल ध्यान मनन करिहैं जेइ तिन्है संपति अनुकूल ॥ सखि हास्य शृंगार रस यय रस मिश्रित स्वाद जे पइहै अभिहि देहैं सिय रघुवीर प्रसाद ॥ करै सुन जे ध्वाद या सावधान करि भाव संत दोष सबों सुम दिन दिन मंगल चाय ॥ इति श्री राम कलेवा रहस्य सपूर्ण समाप्त संवत सप्तदसी सयाइस वर्षे शुक्र गुरुवार लिपा राम रस जानियो साधु मंडल आगार ॥ राम राम राम राम राम ॥

विषय—श्री रामचन्द्र जी का अपने ससुर के यहाँ कलेवा करना।

संख्या २४५ पी. रामकलेवा रहस्य या जनक राम संवाद, रचयिता—पवनदास, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—११ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगादीन मुराऊ, ग्राम—कम्मनपुर, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम कलेवा रहस्य जनक राम संवाद लिप्यते ॥ जनक आदिकन प्रनाम कीनि प्रभु मुनि द्विज गन बंदे। तेहि प्रकार भरतादि सपथ सब किन्हो धन्य अमिनंदे ॥ त्यहि अवसर मुनि सबहि यथा चित बैठाये महिपाला। आदर भाव कीन बहु भाषित यथा विहित जस आला ॥ फिर रघुवर ससि बदन विलोकत भरि आये दृग नीरा। कहन लगे कछु नहिं कहि आयो भायो पुलकि सरीरा ॥ औरौ सब समाज अनुरागी सबहिं दर भइ भोरी। एक जनक जनु अमित जनक भये रघुबर रूप चकोरी ॥ तदुपरि सतानंद मन ही करि कह्यो सुमद्दु रघुराया। जिन जप तप मख धाम सुकम

भए राम सबै निज दाया ॥ अहो भाग्य हम अहो भाग्य सब सब जे तव दरसन पाये ॥ ना तरु तुम्हें सिवादिक जोगी बहु विधि हृदय दुरायो ॥

अंत—पुनि रघुवर कर जोरि वचन कहे आयसु होइ तौ जाईं बडी विलंब भई इहां आये गुर मुनि पितु न रिसाईं ॥ सुनत वचन नृप मन मुसकाने समुझि राम यह लीला । ते वड़ ते वड होय सकल विधि तेहि अनुहरत सुसीला ॥ जो जम काल मृत्यु भय दायक ब्रह्मादिक भयकारी । सो डेरात गुरु पितु सिषि सुत इव यह अचरज अति भारी ॥ पुनि समुझे रघुवीर विरद की परपरा श्रुति गावैं । भक्त विवस ह्वै सव कुछ करते भजन प्रभाव दिषावैं ॥ तव नृप विहंसि कह्यो रघुवर सौं तुम्हें कहैं किमि जाऊ । कव तन चाहे जीव विछेपन पलकांति रोकिय काऊ ॥ अथ श्री राम कलेवा रहस्य जनक राम संवाद संपूर्ण समाप्तः लिषतं भूरे मुसद्दी पठनार्थ सीतल प्रसाद दीवन । संवत १९११ श्रावण शुक्ल बुधवार तिथि द्वितिया ॥ श्री राम राम राम

विषय—राम कलेवा के समय जनक और श्री रामचन्द्र जीका वार्तालाप ।

संख्या ३४५ सी. पटरहस्य या रामचरित्र, रचयिता—पर्वतदास, कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—१४×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११=१८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विष्णु भगेसे, ग्राम—कफारा, डाकघर—धौरहरा, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ पट रहस्य लिष्यते ॥ प्रथम ज्योनि रहस्य ॥ लाल इन देविन के लागौ पाय । कर जोरौ पद जोरि लाडिले विनै करौ सिर नाय । ये हमारी कुल पूज्य भवानी तुम्हें उचित हा आये । परमानद होय दोनौ दिसि इनके पूजि पुजाये ॥ ना यह रीझैं जप तप संजम ना कछु गाये वजाये । केवल विनै मात्र कर जोरे ते द्रवती सरल सुभाये ॥ सर्वो विघ्न प्रमत्त मोद प्रद कहनिहि वनि सति साये । वेगि पाय परि दीन भाव धरि करिहै क्रोध विल्माये ॥ प्रभु हंसि कहा कैसी है देवी वैठी वदन दुराये । क्रोध प्रसन्न जानि कस परि है विना स्वरूप लषाये ॥ यह हमारि ग्रह गोचर माया द्रवहिन अंग देषाये । दूरि रहो जनि छुयो धोखेहु तुम हौ विना नहाये ॥ वरवस राम गह्यो घूंघट पट हमरी पदुप चोराये । इन देविन के भाग्य सराहौ द्वौ पद लेत चढ़ाये ॥

अंत—अव मैं पाइ कुंअरीं ठकुरैइन्यो जो हमका इन चीन्हा । सुंदर वदन सुकोमल नैनन मोंहि चितै हंसि दीन्हा ॥ अव चइहौं तव मागि लेहौं मैं मोर कहू नहिं जाई ॥ जस जस इनकी वृद्धि होइगी तस वर वढ़ौं सवाई ॥ सदा अचल अहिवात रहै अरु होय पूर धुरधारी । प्राण ते अधिक पतिन का प्यारी होय असीस हमारी ॥ जन पर्वत जे परम उपासक रस माधुर्जहि जाना । रहस्य ध्यान ते जनित पाव सुप होइहि मगल ताना ॥ सीताराम विवाह सुभग यह सवका परम हुलासा ॥ राम कृपा सो रहस्य कह यह सो जन पर्वतदासा ॥ इति श्री चतुर भगिनी रहस्य समाप्त स० १९११ वि० श्रावण शुक्ल बुधवार तिथि द्वितीया लिष्यते घूटेराम मुसद्दी ॥

विषय—श्री रामचन्द्रजी का व्याह ॥

सख्या ३४५ डी पट रहस्य, रचयिता—पर्वतदास, कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—१२×४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२५, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सिवरतन सिंह जी, ग्राम—रामपुर मथुरा, डाकघर—बसोरा, जिला—सीतापुर।

आदि—श्रीगणेशायनमः॥ अथ पद रहस्य लिख्यते॥ लाल इन दैविन के लागौं पाय। कर जोरौं पद्जोरि कालिके विनै कर्ता गिरमाय १ ये हमारी कुल पूज्य भवानी तुम्हैं उचित हो आये। परमानन्द होय दोर्मैं विधि हमके पूजि पुजाये ॥२॥ मा पे रोहिं जप तप संजम ना कछु गाये बजाये केवल विनै मात्र कर जोरत द्रवत्ति सरल सुभाये॥ ३॥ सखीविप्र मस्तक मौद मद कद विह हसि सतिभाये वेगि पाय परि दीन भाव धरि करहि अनेक विस्माये॥ ४॥

अंत—सदा अचल अहिवात रहै अद होय पूर तुरवारी प्राण ते अधिक पतिन का प्यारी होय असीस हमारी॥ अब पचत ये परम उपासक रस माधुर्यहि पागा। रहस्य ध्यान ते जनित पाव सुप होई मंगल धामा॥ सीता राम विवाह सुभग पद सखक परम सुग्गमा रहस्य रहस्य कह साजन पर्वत धामा॥ इति पद रहस्य संपूर्ण॥ दोहा॥ संवत सोमद्रम सिद्धग्यारह श्रावण शुक्ल बुधवार। तिथि द्वितिया सोइ जानिये लिखा गुंजकलि अगार लिख्यने पूरे मुसही पदनाथ पं० श्यामरूप के॥

विषय—रामचन्द्र के ससुराल में विवाह के समय के रहस्य।

संख्या २४५ ई. पद रहस्य, रचयिता—पर्वत दास कागज—पुरी, पत्र—२५, आकार—१४ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६९०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा सिवपुरी, काश्मीरी मुहल्ला, लखनऊ।

आदि अंत—२४५ डी के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री चतुर्मतिली रहस्य समाप्त पद रहस्य सपूर्ण समाप्त संवत् १९११ श्रावण शुक्ल बुधवार तिथि द्वितिया सो जानिये लिखा तुलसी अमगार लिखते पूरे मुसही॥ पठनार्थे दीवान सीतलप्रसाद॥ राम राम राम॥

संख्या २४६ ए. प्रश्न ग्रंथ गरुण गुण, रचयिता—पतितदास (गिरिधरपुर मिसवाँ सीतापुर) कागज—देसी, पत्र—११ आकार—१२ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३५ = १८७८ ई०, लिपिकाल—सं १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रताप सिंह, ग्राम—मस्सपुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ पोथी पतितदास कृत संदा अंस गरुण गुण लिख्यते॥ दोहा। जन्म राहु न अंस पारम्भे वेचारको शत सारदास पतित प्रभु नाम बल जीवन केर उधार॥ चौ०। अब कहौं ग्रंथ तरग की बानी। सो सुने गरे होवे ज्ञानी औ ध्यानी। एक मर्म मई अकथ की सीकर। रूप बराही पै बैठे धर्म सीसा॥ पोसे मुसाफिर सो मग माहीं। कही प्रश्न यह अर्थ कहाहीं॥ इस बीज रूपे दुविधा मई मारी। अंसे अर्म तर्के उर में धारी। बाढे बखेरी जानि के ईसा। निमक दृष्टि हरी जगदीसा॥ यह सब मम पाराबी बाधा। बार बार पार्थी सो पद माधा॥

अंत—अंसा सात बखानई मार्गी है बद ईस। राम पतित मत केसियो बापु कहेउ

जगदीस ॥ सोरठा । जग को प्रद है लाज चाल कुचाल जो वनि परै । ज्ञानी धर्मं सुभ साज नाही जन्म अकार्य कियो ॥ दो० । सियाराम के होइ रहै तौ सव कछु छिपि जाय । स्वादु हेत नपरा करै सो पर सूकर स्वानो आय ॥ इति श्री पतितदास कृत अंशा अंश गुण दोष गुरु चेला पतिपतनी पिता पुत्र छल त्याग संग्रह वर्णन शुभ मस्तु सवत् १९२८

विषय—अंशा अश, गुरु चेला, पितापुत्र, पतिपवी, छल त्याग ।

संख्या ३४६ बी. देवी जी की स्तुति, रचयिता—पतितदास (गिरधरपुर), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप) —१५०, पूर्ण, रूप—गलित, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४९ = १८९२ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी, ग्राम—मल्लापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम. । श्री देवीभ्यो नमः । अथ पोथी देवी अस्तुति ली लिप्यते ॥ दो० ॐ श्री अस्तुति देवी जी सो दास पतित गुण गाय । अगम अगोचर आदि तू निर्पे सव सुप पाय ॥ सोरठा । जननी सव सुप पान वरणि सकै को रूप गुण । सुक्षिम करौं वपान सुजन विवेकी हेत निज ॥चौ०॥ वुधि वल मातु मोहिं कछु नाही। मोपर करौं निज कर की छाहीं ॥ वालक जानि चूक सव मेटौ । सव दुष्टन का वहुरि लपेटौ ॥ मर्दि दुष्ट मोहिं रक्षा कीजै । या वकसीस मातु मोहि दीजै । सुक्षिम ७ स्तुति भाषौ तोरी । मेटव चूक मातु सव मोरी ।

अंत—अथ मंत्र पूजन का । ॐक्लीं मां ॐ ऐं फ्रीं सोह स्वाहा ॥ चौं० ॥ यह सव

साधन कहीं गुरु दया भाखितो फकीरी लर्क को दया विन साघन अंजन सूरता काई है मक्क दिनों केरि कराई ॥ ताता साधन सब सोधि कराई गुरु दृढ़ बल परम पद पाई ॥ सो मंत्र ऊँ कनक वीर्ज मैथुन प्रिये ह्रीं स्वाहा । बरण हमू बाय सब केरी महा कर्म मतंत मजम देरी। छल पाखंड सब तजि जाला । किये पावे सुख दाम निहाला पुनः सो मंत्र ॥ ऊँ सर्व जन मना हारिण्य नमः स्वाहा ऊँ आगछि कामदरारि स्वाहा ॥ पुना मंत्र ऊँ ह्रीं पद्मिनी स्वाहा । अनेक मंत्र की है यह बाता । मक्कल सिद्धि फल इति विख्याता । इति श्री पतित दास कृत दगी अस्तुति सम्पूर्णम् शुभ मस्तु संवत १८९१ मिती जेठ सुदी ५ ॥ श्री श्री श्री ३ शंकर कैलास पती ॥

विषय—देवी जी की स्तुति ।

संख्या ३४५ सी दोहावली, रचयिता—पतितदास, कागज—देशी, पत्र—१७ आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी, ग्राम—महापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दोहावली पोथी पतित दास कृत लिख्यते दो० । मन आनंद राखिये धीरज धर्म विचार । दास पतित सब लायक पार करें करतार ॥ गर्भवास के रक्षक भा भवहूँ काम तैयार । दास पतित बोसा नाव के बेगि करें प्रभु पार ॥ धर्म किये सब व्याधि हरै मह रोग अद दाघ जाय । सब सुख संपति सिद्धि अजर अमर वर पाय ॥ धर्म तप सत्य भजे गुरु मम ना और उपाय ॥

अंत—महो कमकर्वरनो धीरहर के रजपूत । सूकर स्वान काग भस्मे ह्वैहे बड़ो अवधूत ॥ इति दोहावली पतित दास कृत सम्पूरन शुभ मस्तु संवत १९४८ मिती पूस वदी ६ जा मति दगी सा लिखी लेपक का दाष न दीजिये ॥

विषय—नीति उपदेश और ईश्वर भक्ति ।

संख्या ३४६ डी गंगा जी की स्तुति, रचयिता—पतितदास कागज—देशी, पत्र—५, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप् —१२०, पूर्ण, रूप—दीमक लगी हुई, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८९० = १८४० ई०, लिपिकाल—सं० १९४८ = १८९१ ई० प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी, ग्राम—महापुर जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ पापी गंगा स्तुति पतित दास कृत लिख्यते ॥ दो० । यह मंत्र जो दिद दाप तत्काल कट पाप । श्री गंगा राजे सरस्वती में भव मर्म नहिं ताप ॥ सोरठा । दाही मे शिव पाये शीस जटा करै आरती हैं । माई मुनी बक्सीस कष्ट पतित सो भगम वे । सो मंत्र ॥ ऊँ ह्रीं श्रीं गं गंगायै नमः हुं फट् स्वाहा दोहा । वर पति स्वर मति अहि पति बहि चराचर के पद । दास पतित प्रभु कृपा गंगा अस्तुति गाय ॥ सोरठा । कै संजम सहित विचार ध्यान ध्यान जो पाठ गहै । छल बल तजै विकार बार बार प्रभु पद चहै ॥

अंत—सुमति सुशील सुभाव गुण सदय हुई निज मातु । भक्ति बीज मदिरे माधो

[illegible] ॥ [illegible] । [illegible] । [illegible] संवत् १८४८ ।

विषय—[illegible] ।

संख्या २८६ बी, [illegible], रचयिता—[illegible], कागज—[illegible], पत्र—[illegible], आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], रूप—[illegible], लिपिकाल—सं० १८४८ = १७९१ ई०, प्राप्तिस्थान—[illegible], जिला—[illegible] ।

आदि—[illegible] ॥ [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥

अंत—[illegible] ॥ [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] । इति श्री [illegible] संपूरन । सं० १८४८ [illegible] सुदी १८ [illegible] दोष न दीजिये ॥

विषय—ज्योतिष [illegible], [illegible] आदि का [illegible] ।

संख्या २८६ एफ. [illegible] ज्योतिष, रचयिता—[illegible], कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—

६३६, पूर्ण रूप—प्राचीन गलित, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९३७=१८८०, लिपिकाल—सं० १९४८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रभ्रमतसिंहजी, मल्लपुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ पोथी नक्षत्र राशि बरन कुण्डली फलाफल जोतिस श्री स्वामी पतितदास कृत लिष्यते॥ दोहा॥ गण गंधव सारदा सरस्वती सब देव मनाय। ब्रह्मा माय सिद्धि चौरासी रिषि मुनि से मिक्षा पाय॥ श्री गुरु व्यास श्री सुपरन पद वाल्मीक सिरनाय। भृगु आदि कालिदास तपगुन मो पर होहु सहाय॥ सारठा॥ हीं गुणबुधि ग्यान से हीन करौं कृपा पावौं बर यह। अक्षर अर्थ बर्न प्रवीन ग्रंथ लिष्यों जीवन सुष हित॥

अंत—दो०॥ काव्य नहीं धारा अर्थ अक्षर के हेत। यहां जैसो मेर मिष्य यहां हिन्दी मों लिपिदेत॥ मतलब मम लिपा यहीं ग्रंथ होय बहु थोर। याही से अक्षर यदि बोना पतिता की कछु पोर॥ चौ०॥ संदेह एक भारे मई अति भारी। कृपा करिके सो अब देव बिचारी। याही नक्षत्र राशि में भये बहु तरे कृष्णादिक भीम भीष्म धनरे जमधी उमरि जोर प्रताप छावा। कहत गुनत श्रुति बेद बताओ॥ सोई रासि नक्षत्र के अब माई। प्रताप आर उमरि सबें बर्य न पाई। इति श्री स्वामी पतित दास कृत कुण्डली ज्वर यात्रा शुभ संपूरन। संवत १९३८ मिती अगहन सुदि १४ जो मत देष मो लिपी लेषक को दोष न दीजिये॥

विषय—जोतिष ज्वर-यात्रा का फलाफल आदि।

संख्या ३४३ जी जोतिष राशि दिन रमरता विचार, रचयिता—पतितदास (गिरधपुर) कागज—देसी, पत्र—४ आकार—१२ × ९ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—दीमक लगी हुई, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१=१८७४ ई०, लिपिकाल—सं० १९४८ × १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रमथा सिंह जी मल्लापुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ श्री पोथी पतित दास कृत लिष्यते अथ जोतिम राशि दिन रजम्य का विचार लिष्यते॥ दोहा। सुष दुष जग ब्योहारे निज हेत मेद किया मत *के किये सम्हार राम पतिता प्रभु दियो॥ आये जुग अधम अधोरहेर विचार विवेक गये।* तेहि सुर सुभ ग्यान लिर्षि न गहे जन्म अकारथ भये॥ चौ०॥ राशि लगन के जनम विचारी। ताहि सम्बंध से होये सुष भारी॥ प्रथमहिं करिहौं लगन विचारा। जन्म कर्म के करौं सम्हारा॥ मेष लगन के दंप्पाभारी। वृषेहु सुन कामिनी सिधारी॥ मिथुने तु मन सु मोटी बानी। कर्क है पिस्वा धनवन्ता दानी। दोहा॥ सिंहे धनु सुपवंती कन्या सुंदरि सुमीलो रूप। तुर्मे सर्व व्यापनी मो वृषि के धने धनधान्य अनूप॥

अंत—अब जाके पूत होता ही नहीं अरु होइ के मर होइ गया हो ताकी दवाई॥ सोंफा के बीज की गूदी अजवाइन दपूनि भी जर पीपरि वेल बोज की गूदी पुराने गुर मो गोली कै पाप ता बदा सुष पावै भी छः छः मासै सर्व दवाई देना भी तीनों के बीज मो

भग लीपनी करे तो ओर बड़ो गुन है औ यह जंत्र लिपि पूजि बांधे और बहुत ततबीर

४	७	९	७	०
६	७	७	७	०
९	७	७	७	७

वैदिक मत सार में है देपि लेउ ॥ अथ सिद्ध सार दूल के मत्र ॥ इसेम जपै गुर मंत्र नम है सो मत्र ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ इति श्री पतितदास कृत सर्व ग्रंथोक्ति भोग औ रासि लग्न जन्म विचार औ पहिल रजस्वला विचार संपूर्ण सुभ मस्तु संवत १६४८ मिती पूस सुदी ६ मी ॥

विषय—भोग रासि, लग्न, जन्म विचार, प्रथम रजस्वला होने के गुण दोष विचार, कुछ रजस्वला की औषधियाँ तत्र मत्र सहित ।

संख्या ३४६ एच. रजस्वला रोग दोष, रचयिता—पतित दास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८८, पूर्ण, रूप—दीमक लगी हुई, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी महुापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रजस्वला रोग दोष लिख्यते ॥ दोहा ॥ गुर स्मरण धर्म व्रत सजम कै मिटे जीव के दोष । दास पतित जिन छल तजे कौन करें सतोष ॥ षट तरह से वाझ के दोषा गहि के करी छोडि सव रोषा ॥ भली बात यह कहौं बुझाई । जीवन का सुष अपनि बढ़ाई ॥ अथ नारी के उलटा कमल होई । तेहि से बीज गहत नहि कोई ॥ सो पारिप रदन औ सीस पिराई । रजस्वला समै में सो लषु भाई ॥ सो स्नान के रोज व्रत करै प्यारी । वेदोक्त व्रत और पूजा धारी ॥

अत—गुन दोष औ सुष दुष भल कै कहब विचारि । दास पतित धर्म वर्त गहो रक्षक श्री मुरारि ॥ अथ कैसो नसूर घाव गलत होइ ताकी दवाई ॥ कटीलो बन चौराई औ नोन पीस गरम कै कै धरै रोज जब लौं न अच्छा होय तौ सही नीक होइगा ॥ इति श्री सर्व रोग औ वाझ के गुन दोष रोग सुक्षिम और पूजा पर निदान दवाई व्रत विधि सपूरन शुभ मस्तु सवत १९४८ मित्ती पूस सुदी ११ ॥

विषय—वाझ गुन रोग और उनकी औषधियाँ, पुरुष रोग और उनकी सूक्ष्म औषधियाँ, रोग पर पूजा और मत्र आदि ।

संख्या ३४६ आई. रजस्वला रोग दोष, रचयिता—पतित दास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४८ = १८९१, प्राप्तिस्थान—श्री विष्णु स्वरूप शुक्ल, ग्राम—वसोरा, जिला—सीतापुर ।

आदि-अंत—३४६ एच के समान ।

पुष्पिका में 'पूस सुदी ११' के स्थान पर "माघ सुदी ११" है ।

संख्या १४६ जे. रजसला विधान रचयिता—पतितदास कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, पूर्ण, रूप—दीमक लगी हुई, पद्य और गद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृपाशंकर वैद्य, ग्राम—मुकुतासपुर, डाकघर—सिधौली, जिला—सीतापुर।

आदि अंत—१४६ एच के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री सर्वोरोग श्री वौश के गुन दोष रोग सुखिम और पूजा पुन्य दान दवाई मत विधि रजस्वला विधान ग्रंथ संपूर्ण समाप्तः संवत् १९४८ मिती पूस सुदी एकादसी लिषतं राम मंगल दास गुरुकिपा ॥ श्री गणेशजी सदा सहाय ॥

संख्या १४६ के. रमल, रचयिता—पतितदास, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—१२ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००, पूर्ण, रूप—प्राचीन गलित, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाशसिंह जी, मल्लापुर जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पोथी श्री पतितदास कृत दृष्ट दृह बल विचार फलाफल सगुनौती सत कामधेनु लिष्यते ॥ अथ मंत्र ॥ ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं बद बद वाग बानी भगवती सर्वस्व नमः स्वाहा ॥ दोहा ॥ पंची पचार पूजि कै मंत्र जप ये कै हजार ॥ नैवेद्य द्रव्य दै पूछिये कहीं पतित सत सार ॥ अक्षर अस औचार सब अक्षर से लिकसी न्याय गण गंधर्व गौयम पसिधि कृपा मार साप ॥ क उनके सोन है जा उसके है मित्र पास। सेस गणेस अंजनि सुत संकर करे हुलास ॥ जहां चर्म सौ सब बनै तेई विचार स्याम। इहिविध मनमे ध्यायिये पूर हाय सब काम ॥

अंत—नहीं दूसरो और है जा कहे तू बिसराउ। दास पतित आपः आप में सकल पाम सुष राउ ॥ नाम परे कछु आय नहीं समाप्य पर नहीं ध्यान। राम पतित प्रभु महिमा को करि सकै बपान ॥ रमल जसून लिम दिम लहवो करू मुर्ति विचास। दास पतित अजर अमर होय चरनन मैं वास ॥ इति श्री पतित दास कृत दोहा छंद कवित्त विचार रमल की राह मैं लिष्या शुभ मस्तु सं० १९४८ मिती अगहन सुदि ४ जा प्रति देषी सा लिषी लषक को दोष न दीजिये ॥

विषय—वैद्य, दृष्ट बल विचार, फलाफल सगुनौती सत काम धेनु, अर्थात् रमल वर्णन।

संख्या १४६ एल शिव स्तुति, रचयिता—पतितदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११० पूर्ण रूप—गलित, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी मल्लापुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः। अथ शिव अस्तुति लिष्यते। दो०। श्री शंकर कैलास पति अरु पति हारी मारि। दास पतित की बीनती या सुनियो बड़ो ध्यार ॥ सारद। हीं

गुन बुधि मे थोर मरण आये की लाज करौ। मानव विनय निहोर अपनी ओर लपि रहे। चौ० ॥ जै जै वदौं सर्व सुर गुर ईसा जावत सृष्टि लो पद धै मीसा। शिवशंकर अस्तुति करौ कर जोरी। विघ्न उपाधि हरौ सब मोरी। जै जै शंकर संकट के हरना। पाप ताप दुख मारि निकरना ॥ जै कैलासपती त्रिभुवन स्वामी। सुरासुर सब करय नमामी ॥ जै महादेव देवन के देवा। हौं मति हीन करौ कस सेवा ॥

अत—प्रथमैं शिव पूजा अरंभ की सब कहौं विचार। राभा लाभ सत्र फल दायक सो सुनु निरधार ॥ चौ०। जो तिथि होय सो दूनी कीजै। पच भी जो जित और कै दीजै। सो सब जोरि सात कै भाग देई। जो बचै ताकर फल सो कहई। एक बचै कैलास मैं जानी। दुइ मैं गौरी संग ही मैं बषानी। तीजे मग मैं वृषभे सवारी। चारि बचे सभा सत्य सभारो। पंच मैं भोजन सुप सोभा मानी। षष्टे व्याधि अच्युत पीड़ा आनी। अस्मसाने सप्तमैं कूरो गाई। सुनि अस्थाने सुने सब पाई ॥ कैलास मैं जबही शिव होई। सो पूजा सुर समह करोई। गोरिट समीप सुषी बताई। वृषभा रूढे सबहि मिलाई। सभा बैठे सतान ही लीजे। भोजन भोजन फल सो दीजै। व्याधि समै शिव पूजा जो धारी। होवै दुषी सुष अफल कहारी। दो०। सर्व विचारि शिव पूजा करौ मानौं कही मुरारि। कहै पतित अथ मत सब रक्षा होइ तुम्हारि ॥ इति श्री पतितदास कृत शिव अस्तुति पूजा विधि सपूर्ण सुभ मस्तु संवत १९४८ मिती पूस सुदी ६ ॥

विषय—शिव स्तुति और पूजा विधि।

संख्या ३४८ एम. तत्र मत्र जंत्रावली, रचयिता—पतितदास, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन गलित, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४९ = १८९२ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराज श्री प्रकाश सिंह जी मल्लापुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ पोथी पतित दास परमानद—कृत पट प्रयोग सर्व तरह के जत्रावली मत्र तत्र की लिष्यते ॥ श्री पोथी जन रक्षक सार ॥ चौ०। जैसे पूजि तिआ बनि आई। प्रेम प्रीति परतीत दिढ़ाई ॥ सो फल मिलि हइ बहु भाती। सिद्ध सिवा वाक्य झूठ नहिं जाती ॥ गहौ है याही बहु फल दायक। विविधि प्रकार पूजै सो लायक। दो० गुरु इष्ट सत ध्यान करि अरु दुविधा छोंडि पापड ॥ निस दिन रक्षक सदा पै विघ्न उपाध्य पेदैले दंड ॥

अत—दोहा ॥ जथा शक्ति जहं लैबुधि रही सो लिपि कीन पचार। श्री सिद्ध मातु कृपाते सेवक को करहं उबार ॥ गुनी वही औगुन मैं गुन सन्ये गुन मैं अंगुन कैते इहं कूर। भले वूझि जल गहि करैं ते हैं सायर समरथ सूर ॥ दास पतित प्रभु सब से कहिता आठौ अग कर जोरि भले सम्हारि के कीजिये चूक छिमा कै सब मोरि ॥ सोरठा। कारन कारज कर्त्ता के हाथ। जो किस्मान से बोवत बनै सुफल करैं सब रघुनाथ दास पतित वेदन मत भनै। इति श्री अथरवन वेद औ रुद्र जा मैं लै सर्व ग्रंथोक्ति सर्व मुनिन मत श्री शंकर पार्वती संवादे पतितदास परमानंद कृत संपूरन सुभ मस्तु संवत १९४९ मिती चैत्र सुदी ११। श्री राम श्री राम श्री राम ॥

विषय—यंत्र, मंत्र, तंत्र वर्णन ।

संख्या ३४६ एल. वैद्यक कल्प, रचयिता—पतितदास, कागज—साधारण, पत्र—५८, आकार—१०½ × ६½ इन्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६५७, रूप—बहुत प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री लक्ष्मी नारायण मिश्र, ग्राम—पूरा कोलाहल, डाकघर—माधोगंज, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पतित दास कृत वैद्यक कल्प लिप्यते ॥ चौपाई ॥ तीनो जुग रीति मुनि ने देषा । सत्य धर्म व्रत गुणग्राम के सेवा ॥ काम धाम बोलहि नित धारे । धाही से सुजस भये अपारे ॥ आयु तेज और बल भारी । भे बड़भागी न कोई सकै मारी ॥ सत्य गायत्री गुरु तप करता । सर्व धर्म रूप वेदा करता ॥ दोहा ॥ ईसन कल्प धारै एकांत हूँ, बहु विधि करै विचार ॥ संजम कै आतम परमातम रूपी, भाइ करै संसार ॥ १ ॥

अंत—कार्तिक ॥ छठी गाछीर बकुची कटुलिलो, कृष्णा स्वर्गया वाका पच्छी याग कहा त्रिशारि मूसली कृष्ण और कंस कुसी राम रिचां ॥ पे सब समकी लेइ ॥ ताहि चूनी भीज सीं दे देई ॥ कासा तिल सम है पाई ॥ त्रिजमा मक सोधि मिलाई ॥ सबकी बरोबरि सक्कर गोरि गुडया कै पाइ मानि है मेरी ॥ दिन दिन गुन सुप देषाई ॥ त्रिजका अमृत रूप है माई ॥ रक्त विकार सर्वांगे रोगू ॥ बवासीर आदि भागे दुप के भोगू ॥ मरनुमी बड़ वीर्य बल मे भारी ॥ मूत्र कर्क प्रमेह सर्व निकारो ॥ हर ईसेस जे पद पाई ॥ दास पतित गुन कहत सजाई ॥ नागार्जुन प्रम कैसो कायो ॥ मने अजीत रूप दरसायो ॥ दोहा ॥ पत्तापुत्र ई गुरू मिले, गहण गद्दी श्री महराज । दास पतित नागार्जुन के सुधरि गए सब काज ॥ ११७ ॥

× × × ×

इति दास पतित भाषा कृत वर्णते संप गुनी संपन्न संजमी होइ है सो सँभारि सुधारि है मम दोषो नहि विहिते ॥ शुभ मस्तु ॥ मिती कार्तिक कृष्ण ॥ ८ ॥ शुक्र वासरे ॥ संवत् १९३९ ॥

विषय—(१) पृ० १ से ६१ तक—औषधि के काम औषधि खाने की विधि, मंत्र और स्वाधादि का निर्णय, ज्योतिष्मती मत, पुनर्नवा कल्प, रक्त पलास कल्प, सेत पलास कल्प, कृष्ण हरिद्रा कल्प, रोहिणी की विधि लक्ष्मण विधि, मंत्र, ब्राह्मणी कल्प रक्त सेंमल गुण, काक जंघा विधि, क्षीरक्षिम कल्प, करंज दुर्लभ पदार्थ, सिर्जुनी कल्प, आर्द्र वारुणी कल्प, मगरे कल्प, मूसली कल्प, मुंडी कल्प, चित्रक मंत्र, अमलकी कल्प ।

(२) पृ० ६४ से ९३ तक—रक्त गुंजा कल्प, श्वेत गुंजा कल्प, मुंड कल्प, रोहणी विधि, अशोक कल्प, कटु दूर्वा कल्प, रंड कल्प ।

(३) पृ० ९४ स ११६ तक—श्याम मयूर शिखाके महादेवी कल्प, मालिका विधि ।

संख्या ३४६ ओ. निरंजन विमल, रचयिता—पतितदास, कागज—देसी, पत्र—२० आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—

७२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन गलित, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी मल्लापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ।। अथ पतित दास कृत पोथी विश्व रूप विनय लिप्यते ॥ गणपति इष्ट मनावौ फल दाता गिरदार । दास पतित तौ सरन है कर गहि करौ गहार ॥ गुरु आदि सब श्रिष्ट को विने करौं परनाम । भूला बिसरा अक्षर पूर करौ मम काम । मम मति स्वल्प अगाध पद अस कछु दीजे रग । भाप्यो विने जु ग्रथ की पट न होइ कहु भग ॥ चौपाई ॥ निरकार के चरण मनाई । जाकी शक्ति रही जग छाई ॥ है साहेब वह अजब पेलारी । कारण करता फिर हैं न्यारी ॥ आप सुधरमो फिरि अपकारी आपुई चेते फेरि बिसारी ॥ उसके पेल हैं अैसे अजूबा । लपि के पावै अति बहु पूवा ।

अंत—जो कछु है नाथ कर अरपन सहित सरीर । दास पतित कछु वस नहीं जानै श्री रघुवीर ॥ अस्तुति अरजी अगम है हारे सेस महेस । मति बुधि हीनी मोरि है भई गो गुरु उपदेस ॥ भूला बिसरा अक्षर अदल बदल जो होइ । चूक हमारी छिमा करि जोरि मिलावैं सोइ । जितनी सृष्टि चराचर विनै करौ सिरनाय । दास पतित पर दया करि सब या चूक मिटाय । जथा परति पोस्तक लिपे सो अक्षर अस जोरि पढ़न हार को अरज है मोहि न दीजै पोरि ॥ जो पढ़ि यहि मत चलै अजर अमर सो होय । रूप सरूप मैं सदा अंत अनंत मैं जोय ॥ गिरधर पुर इटीया बस ले होइ गयो बीज विकार साधूल्वा गई मल सम इनसे न कवहू उपकार । इति श्री स्वामी पतित दास कृत विश्वरूप विनै सपूर्णम सुभ मस्तु संवत १९४८ मिती पूस वदी १४ जो प्रति देपा सो लिपा हमैं न दोप दीजै ।।

विषय—भगवान की महिमा और विश्व स्वरूप जगन्नाथ जी से पतित दास की प्रार्थना ।

संख्या ३४६ पी. जात्रा गुण, रचयिता—पतित दास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९०, पूर्ण, रूप—गलित, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४९ = १८९२ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ जात्रा गुण लिप्यते ॥ दोहा । अव जात्रा जोग गुण सब भाषौ गाय । चलै पनै झूठो नहीं दास पतित समुझाय चौ० ॥ दिन तिथि दिशा लगन निहारी । चद्रमादि सत सर्व सम्हारी । आनद जोग आनद देई । पक्ष एक मैं लक्ष्मी मिलई । अस्वादि शगुन जो मग पाई । सर्वो कार्य सिद्धि कराई । काल दड कछु हानि करावै अष्टदश दिन ग्रय यह गावै । कछु द्रव्यउ जात हेराई अब तीसरे कै यह गाई । धूम्रे बीस वरी मैं दुप जानी । कितौ दिन सत्ताइस मैं मानी । धानी सुप फल बहुत देई । दिन सत्ताइस थाह धरेई । देवता सुजन के दरशन पावै कार्य सर्वो सिद्धि करावै ।। सौ मैं सुप सांति प्राप्ति होई । दिन इकइस मैं सिद्धि मिलोई । ध्याक्षे रिद्धि विनास ही जानो सिद्धि काज सोउ होवै हानी ॥ दिन इकान १ बीस गाई । प्राप्ति सुप सोउ हेराई ॥ धुजा राजा आदर कराई । दिनान्प्रशम बी से गनाई ॥ लक्ष्मी वस्तु दोऊ कछु पाई श्री वसे श्री सुप दोऊ लेई ।

अंत—अथ आनंद आदि दिन नक्षत्र योग गुण ॥

योग	रवि	सोम	मं०	बुध	बृह०	शुक्र	शनि
आनंद	अ०	मृ०	श्ले	ह०	अनु	उ०	श०
कालदंड	भ०	आ०	मा	चि०	ज्ये	अ	पू०
धूम्र	कृ०	पु०	पू०	स्वा	मू०	श	उ०
धाता	रो०	पू०	उ०	वि	पू०	ध	रे
सौम्य	मृ	श्ले	ह०	अनु	उ	श	अ
ध्वांक्ष	आ०	मा	चि	ज्ये	अ	पू०	भ०
केतु	पु०	पू०	स्वा	मू०	श्रव	उ	कृ
श्रीवत्स	पू०	उ	वि०	पू०	ध	रे	रो०
वज्र	श्ले	ह०	अनु	उ०	श	अ०	मृ०
मुद्गर	म०	चि०	ज्ये	अ	पू	भ०	आ
छत्र	पू०	स्वा०	मू०	श्र	उ	कृ	मृ
मित्र	उ०	चि०	पू०	ध	रे	रो	पु
मानस	ह०	अनु	उ०	श०	अ	मृ	श्ले

योग	रवि	सो०	मं०	बु०	बृह०	शु०	शनि
पद्म	चि०	ज्ये	अ	पू	भ	आ०	म०
लुम्बक	स्वा	मू	श्र	उ०	कृ	पु	पू
उत्पात	वि०	पू	ध	रे	रो	पु	उ
मृत्यु	अनु०	उ	श	अ	मृ	श्ले	ह
काण	ज्ये०	अ	पू	भ	आ०	म	चि०
सिद्धि	मू०	श्र	उ	कृ	पु०	पू०	स्वा
शुभ	पू०	ध	रे	रो	पु	उ	वि०
अमृत	उ०	श	अ	मृ	श्ले	ह	अनु
मुसल	अभि	पू०	भ	आ	म	चि	ज्ये
गद	श्रव	उ	कृ	पु०	पू	स्वा	मू
मातंग	ध०	रे	रो	पु०	उ	वि०	पू०

इति श्री पंडित व्यास कृत यात्रा फल सम्पूर्णम शुभ मस्तु संवत १९४९ वि० ।

विषय—यात्रा के शुभ अशुभ फलों का विचार ।

संख्या ३४७ ए भवरगीत, रचयिता—प्रागनी, कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—५ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६५ = १८०८ ई०, प्राप्तिस्थान—आनंद भवन पुस्तकालय, बिसवाँ, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनम राग धनासिरी ॥ आयसु दीन्हो सषा सुजानहिं स्यंदन चढ़े सिधारे ब्रज की सुधि रावरे आनहिं। कैसे है जसुदा जननि जिन पालि कियो परवीन। मोहि अछत वह होत होहिगी पर पूतन आधीन ॥ गहियो पांय नंद बाबा के कहियो एहे संदेसो जो तुम कियो महाकृत हमको गनि न सकल गुन सैसो। समाधान कीजो गोपिन को दीजो निर्मल ज्ञान। कहियो जोग जुगति सो प्रागन त्रिकुटी सजम ध्यान ॥

अंत—राग केदारा ॥ ऊधौ तोसो कहौ निरतर निज भगत मोहत है ॥ वेदातीत कोई नहि जानत यहे हमारो मत है। हौ निर्लेप निरंजन निर्गुन कारन मै वपु धारो॥ कर्म रहित अपनी इच्छा ते प्रगटत हौ जुग चारो ॥ देह अदेह तरुन है मेरी ज्ञान दृष्टि कै कोऊ त्यागे देह बहुरि नहिं पावै जनम जगत मे सोऊ ॥ यह मत है देवन को दुर्लभ गुप्त हिये मो राषि प्रागनि तोसो बहुरि कहूगो दये एकादसि साषि ॥ इति श्री भौर गीता समापितं सवत १८६५ आसाढ़ मासे सुकुल पछे एकादस्यां सोमवासरे।

विषय—श्री कृष्ण का ऊधव द्वारा ब्रज में सदेसा भेजना, गोपियों को जोग जुगति और निर्गुन ध्यान की शिक्षा आदि। ऊधव का सदेसा कह कर लौटना और श्री कृष्ण से वृज की दशा बतलाकर उनको ब्रज जाने का आग्रह करना। श्री कृष्ण जी का अपना और गोपियों का भेद बताना और ऊधव को ज्ञान उपदेश।

संख्या ३४७ बी. भ्रमर गीत, रचयिता—प्रागन, कागज—साधारण, पत्र—३३, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ३$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६३, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र, ग्राम—पूरा कोलाहल, डाकघर—मान्धोगंज, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ प्रागन कृत भौर गीता करना विरहा लिख्यते ॥ श्री सरस्वती देव्यो नम॰। विष्नुपद ॥ राग आसावरी ॥ सिष निज गाढ़े कै गहियो ॥ पालागन दोउ भैया को मैया सौं कहियो ॥ हमतो तिहारे पय के पोषे सुरति करति रहियो ॥ जोग संदेस सुनाइ त्रियन को प्रीति रीति लहियो ॥ कहियो न कटुक टुक उनसो तुम कोई स्व सबु सहियो ॥ सीतल वचन सींचियो रसही दही न फिरि दहियो ॥ देषि दसा उनकी हमको तुम दोस दियो चाहियो ॥ प्रागन ब्रज बासिन के हिये को प्रेम सिंधु थहियो ॥ १ ॥ पुन ॥ आसावरी ॥ आयसु दीन्हो सषा सुजानहिं, स्यंदन चढ़ौ सिधावौ ब्रज कौ सुद्धि रावरे आनहि कैसे हैं जसुदा जननी जिन पालि किये परवीन ॥ मोहि अक्षत वै होहिगी पर पूतन आधीन ॥ गहियो पाँइ नंद बाबा के कहियो यहै सँदेसो। जो तुम किये महा कृत हमको। गनिन सकल गुन से सो समाधान की जो गोपिन को ॥ दीजो निर्मल ज्ञान कहियो जोग जुगति सौं प्रागन त्रिकुटी सजम ध्यान ॥ २ ॥

अंत—राग कदरारा ॥ ऊधो तोसों कहा निःतर बिभ भक्त मोहतु है। बेदहीन कोउ नहिं जानत यहै हमारो मतु है ॥ हौं निर्मेम निरंजन निर्गुन कारन ते बपु धारौं। कर्म रहित अपनी इच्छा तहाँ जुग चाही ॥ देह जतेइ ठकत है मेरी ज्ञान हरि कै कोई। त्यागे यह बपु नहिं पावै कोउ जक में सोई ॥ यहु मत है दम्भ को दुर्लभ गुप्त हिये मो राखि। प्रागम तोसों बहुरि कहीं गो शावक हम साखि ॥ ५१ ॥ राम राम राम राम ॥ इति श्री पागम कृत और गीता श्रीराम मिश्र अमली गंज के ॥

विषय—(१) पृ० १ से २० तक—कृष्ण का उद्धव को संदेशा लेकर बृज को भेजना, उद्धव गमन, गोगन का देव दर्शन, मथुरा मिलन, मथुरा का उपालम्भ, नंद मिलन—कुशल पूछना, और बजन उद्धव का वृषभानु गृह गमन, उद्धव द्वारा कृष्ण का सन्देसा कहना और दुरा न मानन की प्रार्थना।

(२) पृ० २१ से ४६ तक—गोपियों का बुरा न मानने का कारण बताना गोपियों का उपालम्भ उद्धव को फटकार गोपियों का सन्देश, गोपियों द्वारा विप्र दशा का वर्णन, वेदान्त ज्ञान कथन, मथुरा का पुन संदेश देकर आगमन की प्रार्थना।

(३) पृ० ४७ से ६६ तक—गोपियों द्वारा योग का निषेध तीन दिन की आज्ञा हाते हुए पट मास व्यतीत हा जाने का उद्धव को सोच आज्ञा मांगना और प्रेम गद्गद होकर गोपियों से बिदा माँग उद्धव का मथुरा को गमन, उद्धव का निज घर पहुँचना और कृष्ण द्वारा उनका बुलाया जाना, कुशल क्षेम प्रश्न, उद्धव द्वारा व्रज दशा वर्णन उद्धव को बिह्वल देख कृष्ण का अंक लगाना, और निज प्रमुख वर्णन कर गोपियों का अपने में अद्वैत भाव प्रकट कर इस रहस्य के गुप्त रखने का उपदेश।

संख्या १६४८ ए. मोहनी चरित्र, रचयिता—मान सिंह (देहली) कागज—देशी, पत्र—१८०, आकार—११ × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१८० पूर्ण, रूप—प्राचीन गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१०२१=१८९४, लिपिकाल—सं० १९२०=१८०० ई० प्राप्तिस्थान—श्री शिवदुलारे, ग्राम—रामनपुर, डाकघर—मगरैर जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मोहनी चरित्र लिख्यते ॥ कमाइत आबाद नाम का एक शहर था और अच्छे अच्छे प्यार प्यार लोग उसमें रहते थे वहाँ की हवा दिल की मकराहट दूर करती थी और जमीन आसमान पर पांव धरती थी वहां के बादशाह का नाम फीरोज बख्त था उसकी दौलत क्या कहना मुल्क में चोर का नाम नहीं बट मार राहगीरों को बचाते थे सब तरह का आराम था मगर बादशाह को बेटे का बड़ा दाग था रात दिन इसी फिक्र में घुलता था देवी देवता पीर पैगम्बर पाने आखिर को मनो कामना पूरी हुई साठ वरस की उमर में एक बेटा पैदा हुआ। बादशाह ने उसका नाम जान आलम रक्खा ॥

अंत—जान आलम ने तमाम रजकत को शहर के दरवाजे पर बुलाया और सब के सामने वो बकरी का बच्चा मिलाकर तमाम हाल कहा और हुक्म दिया कि इसके टुकड़े कर कर चील कौओं का डाल दो सब वहाँ गये और उस बदमाश पर थू थू करने

लगे। अव रोज जान आलम दर्वार करता और जान आलम कोने में बैठ कुरान पढ़ता। मानो कामना पूरी हुई और जान आलम, मलका, अंजुमन आरा, और माह तलत खूब धम्मा चौकड़ी मचाते। दुश्मनों को जलाते जव तक दुनिया है उनका नाम चला जावेगा किसकी रही और किसकी रहेगी जिस तरह उनकी मुराद पूरी हुई उसी तरह हमारी और तुम्हारी मुश्किल से सुगम हो और वेड़ा पार है। ट प्रानकिशन जेठ शुक्र दुइज संवत १९२१ वि० लिखा प्यारे किशन कोल सवत् १९२७ वि० ॥

विपय—जान आलम का किस्सा २७ कहानियों में ॥

संख्या ३४८ वी मोहनी चरित्र, रचयिता—प्रानकृष्ण (दिल्ली), कागज—देशी, पत्र—१४६, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुस्टुप्)—३३६७, खंडित, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२१ = १८६४, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कुंदनलाल, ग्राम—सफीपुर, जिला—उन्नाव।

आदि—३४८ ए, के समान।

अत—वजीर पहचानते ही पाव पर गिर पड़ा जान आलम को गले लगा लिया फिर वजीर घर झपटा और वादशाह को मुवारक वाद दिया। और कहा कि इस शहर के नसीव जागे हमारी दुआ कुवूल हुई (वादशाह ने कहा मरे को मारे शानदार) क्यों मेरे जखमों पर नमक छड़कता है ॥ ये वाते हो ही रही थी कि जान आलम महल में आया वड़ा रोना पीटना मचा औरतों ने गुल मचाया या वाप ने वेटे को गले लगाया दोनो की आखें खुली वादशाह उसी वक्त सवार हो कर वहुवों से मिलने आये शहर वाले साथ आये सवारी उलटी फिरी दोनों लश्कर अर्दली में थे मलका और अंजुमान आरा के डोले पर जवाहर और अशर्फियां लुटाईं हजारां कंगाल सेठ साहुकार वन गये जान आलम की मांने जो मलका और अंजुमन आरा को देखा तो वलायें लेनी लगी।

विपय—जान आलम की कथा यह ग्रंथ उर्दू से हिन्दी में किया गया ॥

संख्या ३४९ ए. धनी जी के चेले की चौपाई, रचयिता—प्राणनाथ (पन्नाराज्य), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—९ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुस्टुप्)—१२६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राम मनोहर विचपुरिया, ग्राम—पुरानी वस्ती, डाकघर—कटनी मुरवारा, जिला—जवलपुर।

आदि—श्री धनी जी के चेले की चौपाई ॥ अव सुनों तुम मो मिनो। देपो अपने कदम। साथ चला जिन भाँति सों देखो नसीयत आतम ॥ १ ॥ कूच कीया वाई जी ने आगे जी साहेव। नीत चली सव साथ में सव धन धन कहे अव ॥ २ ॥ संवत सत्रे पचास में वैसाप सुदो अष्टमी। वार वुध पौहेर दिन चढ़ते ठोर अपने जाय जभी ॥ ३ ॥ संवत सत्रे क्यावन असाढ़ के महीनें। दिन चौथ पिछली रात कों धनी पोहोंचे धाम अपने ॥४॥ वार सुकर जुमें कां पिछली रात घडी दोए ॥ पोहचे अरस अजीम को दारूल वका कह्या सोए ॥ ५ ॥

अंत—सवत संतरे वरस एकावन, कुआर वदि चतुरदसी के दिन। परनम कर सव साथ कों। पोहोचे हक मोमिन ॥ १८ ॥ मैं कहू नाम जिनके। जिन्हें सुनते होइए

पाक। उड़ाया मझूर अपना ये इक क़दमों पाक ॥ १९ ॥ कलमदास एक इन में हुआ के सब दास। तीसरा था मथुरा ए तीनों मोमिन खास ॥ २० ॥ और था जो साहिमन पंच मानसिंघ दास। संत दास जो इन संग ये इन्हू पासक पास ॥ २१ ॥ राम कुअर के सब संग पर साखी इनके संग। हमीरा इरवी इनमें थे भाम धनी के अंग ॥ २२ ॥ पूरबाइ ओर पराणो ओर के सर बाइ नाम। काली चला तीसरे दिन चला पीछें अल उड्डन इसम ॥ २३ ॥ मेहे मत कहें ए मों मिनी धरो कदम पर कदम। तुम आये धाम में अब खोयो अपनी आलम ॥ २४ ॥ संपूरन ॥

विषय—श्री देव चंदजी के अर्स अज़ीम पर पहुँचने का इतिहास ॥

संख्या ३४६ घी फ़ुरमान, रचयिता—महामति प्राणनाथ (पन्ना) कागज—देसी, पत्र—५, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३ परिमाण (अनुष्टुप्)—१८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राम मनोहर बिचपुरिया, ग्राम—पुरानी बस्ती, डाकघर—कटनी मुरवारा, ज़िला—जबलपुर।

आदि—फुर मांन मेरे महबूब का ॥ जै आया अरस सें रसूल ॥ मम्मा अपनी अरवाहों पर ॥ साहिब हुवे सबकूल ॥ १ ॥ मोई पोछे अपनी हंमार तें ॥ जो अरस की अर वाहि ॥ पेहेही परीच्या जाहिर ॥ ओर काहू न पोच्या जाये ॥ २ ॥ बरकत इन इहन की ॥ मिस्ल दसी सर्वन ॥ के दरि साब फजर कू ॥ छे मास सी रहे वर्तन ॥ ३ ॥ तुम मेज्या बासब कर ॥ में त्याया फुर मान ॥ पेहेही आवों तुम तह कीक ॥ दिल तुम्हा की न मांन ॥ ४ ॥ मी देत हूं पुस मवरी ॥ ज्यो रंवानी अर वाये ॥ मै पतरे अरस अजीम से ॥ सोहे हमेस गाई अहाई ॥ ५ ॥

अंत—जिन जैसा किचका सेवया ॥ मांगू ब्याका तैसा तिन ॥ हुमी करन पौवें दिखई ॥ तो मापर बड़ी कहन ॥ १३ ॥ इन बिध फुर मान फुरमा वही ॥ जाहिर देन बतावें ॥ अंदर भेग ज्यो कुसमत ॥ सो देत मांई मे पस हारे ॥ १४ ॥ आरफ कहावें आप हूं। हारे कुजरक मोहें दीन ॥ कहा हाहीअरंद करे। यूं पोवत हैं आकीन ॥ १५ ॥

विषय—खुदा का फ़र्मान और उसके न मानने वालों की बुराई।

संख्या ३४६ सी अंदूर कलस हिंदुस्तानी, रचयिता—प्राणनाथ और इन्द्रावती (पन्नाराज्य), कागज—देसी, पत्र—८१, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—११७६, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राममनोहर बिचपुरिया, ग्राम—पुरानी बस्ती, डाकघर—कटनी मुरवारा, ज़िला—जबलपुर।

आदि—किताब कलस लिखने ॥ निज नाम श्री कृस्न जी ॥ अनादि अछिरा अतीत ॥ सो तो अब जाहिर भए सब बिध बर्तन सहित ॥ श्री धनी जी के गुन कीये हैं ॥ गुन केते कहूं मेरे पीउ की हंम सूं किए हैं अनेक की ॥ ये गुप इन आमार की ॥ ए पू केहे सुता विवेक जी ॥ १ ॥ माया मोही सो देया पूर्छे ॥ धनी ए आली सो मीन की प्रांत जी ॥ सब सुप दीए जगाये कें ॥ कै बीच के प्रस्ताव जी ॥ २ ॥ मन के सुप ईत आप कें ॥ हमदू बकैरे ही ॥ राम के सुप ईत देवके ॥ आप—कीए जी ॥३ ॥ कहे बीच बीच के सुप वाम के ॥

जो हम कुदीए इंत जी ॥ तार तमकर के रोमंन ॥ कै वीध करी प्रापत जी ॥ ४ ॥ सेहे जल मुपमें मीलते ॥ माह दुपन सुन्यो नाम जी ॥ सो माया में इत आये के ॥ सुप अपंढदि-पाया धाम जी ॥ ५ ॥ केहे इन्द्रावती आर्ता उछरंगे अती उछरंगे ॥ हम फुला डल डा गेजी ॥ निरमल नेत्र कीए जो आतंम ॥ वरदे दीए उढाएजी ॥ ६ ॥ आप पेहेचान कराइ अपनी ॥ लै, प्रपने पास जग गेजी ॥ वडी वडाई दै आपथे ॥ लै इंद्रावती कठ लगाएजी ॥ ७ ॥

अत—कीए विलास अकुर थें वरके अनेक प्रकार पीया सुदर वाई अग में आए कीयो विस्तार एवी जव चंन दो एक पीया के वोए कीयो प्रकास अंकुर एसा उठीया सव कीये हांस विलास—ससि सुर कै कोट कह नूर तेज प्रकास ए सवद सारे मोह लो ओर मोह को तो नास अव इन जुवां में क्यों कहनि जव तन विस्तार सवद कोई पोहो चनही मोह मिने हू आ आ कार मोह सो जो ना ऋछु इंत थे अनंग वेहद सत को असत नो पोहोचही या विधि ना लगे सवद वेहद को सवहवां तो क्यों पोंहचे दरवार एक लुगानां पोहोचे राम लो तिने पार के भी पार ॥ ४० ॥

× × × ×

एना भी में तो कह्या जो साथ को भर लें का घेहेन वचन क्यों विधोग तें टालु सो दूती या चे हेन साथ के सुप कारने इंन्द्रावती को मैं कह्या ताथे सुप इंन्द्रावती के कल्स सवन का भया श्री श्री श्री किताव जंवुर[४६] कलस[२४] हिंदुस्थानी[७६१] समाप्त पुर न भया ॥

विपय—आतम ज्ञान तथा भक्ति का वर्णन ।

संख्या ३४६ डी. लीला नौतन पुरी, रचयिता—प्राणनाथ (पन्ना), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६, खडित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राममनोहर विचपुरिया, ग्राम—पुरानी वस्ती, डाकघर—कटनी मुरवारा, जिला—जवलपुर ।

आदि—(आदि का भाग लुप्त), साथ तत्व संवधी सार लीला नौतन पूरी विस्तार लीला व्रेज जीवन की जेती हूइ नौतन पुरी मे तेती ॥ २ ॥ लीला रास केरी सुपकारी ॥ नौतन पुरी भै ते सारी ॥ ३ ॥ लीला मूल सरुप की जेही ॥ नौतंन पुरी नै जोतेही ॥ ४ ॥ पच सरुप परगट पर कासी । लीला नौतन पुरी विलास ॥ ५ ॥ लीला वाल पुगड किसोर । होइ नौतंन पुरी में जोर ॥ ६ ॥ व्रज जीवन नट वर नाथ । विलसै नौतंन पुरी नो साथ ॥ ७ ॥ दूध दधी मापण कोठ भाग, कहा लो लेइ आवे साक्षात ॥ ८ ॥ महि मंठि अनेक विरोले । घंम घम मांहा सूर वोले ॥ ९ ॥ धरे ऊपर चढ़ते लोक जो पेपे । सव दसूने पर द्रष्ट ना देपे ॥ १० ॥

अंत—अंग देप जो अगी उलसें । एसे भोगे भोगता विलसें ॥ ९३ ॥ तव मूल समध पहचाने ॥ अगे प्रेम सेवा त त्व मा ने ॥ विना समंध भाव ऐ नांही ॥ ९४ ॥ जीवे क्यौ ऐना उपजे कांही ॥ ९५ ॥ ए तत्व संमधी एदरसें । जीव कोउ विधि नाहीं परसें ॥ ९६ ॥ ए पक्ष पर सोतम जी तें । धनी देवचद जी नी रीतें ॥ ९७ ॥ एकही

पनी की में कही । पाम सेंटो रूपे मसही ॥ ९८ ॥ श्री सुंदर इन्द्रावती संग । नित नवले रंग भर रंग ॥ ९९ ॥

विषय—मीतम पुरी की शोभा का वर्णन ॥

संख्या ३४६ ई. प्रकरण सागर का, रचयिता—प्राणनाथ और इंद्रावती (पन्ना), कागज—देसी, पत्र—४, आकार—६¾ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामसनोहर बिजपुरिया, ग्राम—पुरानी बस्ती, डाकघर—कटनी मुरवारा, जिला—जबलपुर ।

आदि—सँदेशी सुख सागर की सें सीतल भरम । वाके सरूप याजों इस पसी चाहें भरम परस ॥ १ ॥ ऐ ओ सरूप स्वपन के असल नजर बीच हम । हम देवें हिन पसाव में वे असल हमारे तन ॥ २ ॥ जब अंतर आवें जब पुलें जब हम देवें यह नजर । जब ही याद आवजें तबहि तहीं बैठे धाम घर ॥ ३ ॥ सुरत जनों की इसमें ऐसो गुरे तुर हुए हम । सो बातें करें हम पेक में सो करावत हक हुकुम ॥ ४ ॥ इस विधि हक का हुकुम हमकों जगावत ॥ इस्क मिस्की हमको दई जिन मिलाका द्वार पोलत ॥ ५ ॥

अंत—जो सुख आतम को नहीं, जा विधि जगत में हैरान । मातों के मैंहिर आतम । पर कारन है रहे नाम ॥ १३ ॥ श्री महामत कहें मेरे रहबर की । रूह आवें ऐक नजर । ता तबहीं रात को मैंर कों । जाहिर करीं फजर ॥ १४ ॥ सें दरपन सुख देखिए, कबहूं न होय चित भंग ॥ सत गुरू परतार इस्क को । पाया चढ़ै सवाया रंग ॥ १५ ॥

विषय—ज्ञानोपदेश ।

संख्या ३४६ एफ. रामत रहस की, रचयिता—प्राणनाथ और इंद्रावती (पन्ना), कागज—देसी, पत्र—४, आकार—६¾ × ४¾ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१ पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामसनोहर बिजपुरिया, ग्राम—पुरानी बस्ती, डाकघर—कटनी मुरवारा, जिला—जबलपुर ।

आदि—रामत रहस की मार वालेयें करी उमंग, सखीयों सवें लेयी संग । रामाइन बजावें रंग ॥ अद्भुत शोभा आवती मणिमां मिष्टी संघात । सोभित चांदनी रात, तैज मूरत आपी आत ॥ मंदिर सुन्दर बावती, ओतो जात बिहारवंत । रंग रस उस पंथ निम निम, मारमती मगी कीर्तन ॥ रूप जावें अनी कीर्तन । नवलें सवें मावती ॥ अंगे मंडुपे अनमोल । करें रंगीन रैस । विसामी विनोद हांसी पेम लापी रैसे लाजती । बावें बावे बाव बैन रंग रस निम निम ॥ रसजावें अति शोभन सुरता पूरन कामती ॥ बाली ना वामें मधुर बासों मदी अपूर । पीवें बालों भरपूर राखें है सौंसती ॥ ए मत इंद्रावती माशों पसी स्यापनी । वाले को मन भावती ॥ मूलें सों मरजाद दी ॥

अंत—सोभा इन सुख क्यों कहों । जा सिवा बीच में बाजें करत इन स्याम कम बोल की ॥ पर्दू करी अनुर दौड सास रंग सोभित सुख सोरन । पूरी चाहिए इन मिमास स्याम अजिम दौड रंग छिरे । दौड़ी गई सुख अंगुरी मरम सोमा इन सुख क्यों कहीं ॥

अति सुंदर मुप सरंम नेकं मूद अधर सुप वोलत । कर प्यारी वातें कर प्यार जो सुप देत हैं आसिकों तिंन कों नाहीं सुमार ॥

विषय—रहस्य वर्णन ।

संख्या ३४६ जी. तारतम्य, रचयिता—प्राणनाथ (पन्ना), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—९ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राममनोहर विचपुरिया, ग्राम—पुरानी वस्ती, डाकघर—कटनी मुरवारा, जिला—जवलपुर ।

आदि—तार तम्य लिपोह श्री राज जी ॥ जब पांच तत्व तीन गुंन ॥ चौदा लोक पिंड वह्मांड ॥ ए ससार में जव कछू न था ॥ तव क्या था धाम और परम धाम ए दोउ ठिकाने अखड है ॥ और अपनी वोली मे के हेते हैं ॥ के असोर ओर अपोरा तीत ॥ ओर कुरान की भाषा में केहते हैं ॥ के अरस ओर अरम अजीम ॥ ओर नूर जमाल ॥ ओर नूर जलाल ॥ तोई धाम रप कैसो है ॥ अप्येर भगवान जी कोमरुप ॥ के जे से वरस सात को हे ॥ ओर लपमी जी को सरुप केसो हं ॥ के जैसें वरस पाच को हे ॥ और ओर चार चार वरस की खूव पुसाली आ हे ॥ सो अप्येर भगवान जी वाल लीला करत हैं ॥

अत—कुलपेत्र में व्रज के ॥ लोग वुलाए भेजे ॥ तहाँ लपिमी जी कूं दरसन कराए ॥ दूर वासा को परसाद भेजा ॥ फेर सन दीपन के लरिका लेन गए ॥ तहाँ ब्रह्मा जीसों कोल कर आये ॥ फेर आये लरक्न कों उपजाई ॥ लोहडा वंधाए ॥ दूर वासा के पास सराप दीवाई ॥ फेर परवा भास पांढन पधारे ॥ एक सो वारे वरस ॥ मथुरां हार का ॥ राज करों ॥ राजकर जादों अस्ट एी कर ॥ वे कुंठ को आए ओर प्रथी की भार उतारन आए थे ॥ सो प्रथी को भार उतार कें ॥ वेकुंठ को श्री कृस्न जी पधारे ॥ १२० ॥ तार तम सं पुंरन ॥

विषय—धामी संप्रदाय का सार ॥

संख्या ३४६ एच. तीनों स्वरूपों की सूचक, रचयिता-प्राणनाथ, (पन्ना), कागज—देशी, पत्र—१६२, आकार-९ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)-२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८०४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५२ = १७९५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राममनोहर विचपुरिया, ग्राम—पुरानी वस्ती, डाकघर—कटनी मुरवारा, जिला—जवलपुर ।

आदि—निज नाम श्री जी साहेव जी ॥ अनाद अछरातीत ॥ सोतो अव जाहिर भऐ सव विध व्रतन सही ॥ १ ॥ तीन्यो सरूपों की वीतक लिप्यते ॥ सो सुरु भई भविष्य पुरान में ॥ राजा कहे जुग चार ॥ वचन हैं जो व्यास के ताको करो विचार ॥ १ ॥ सत्रहे राजा सत जुग में ॥ एक कह्यो राजा क्रत ॥ तिन आपनी भुगती ॥ तापर भयो क्रतढिक ॥ २ ॥ ता ऊपर अंत भयो ॥ फेर मचकुंद भा होए ॥ ता ऊपर भेखानंद ॥ राजा कह्यो सोए ॥ ३ ॥ ता ऊपर आदी भयो ॥ फेर हरनाकुश कह्यो नाम ॥ ता ऊपर ताके ठोर ॥ प्रहलाद भयो ऐस ठाम ॥ ४ ॥ ता ऊपर वल लोचंन ॥ तापर वलि भोगत ॥ एनों आपनी भुगती ॥ लोचंन वल एते ॥ ५ ॥ ता ऊपर वानासुर ॥ ता पर कपिलाछ नाम ॥ कपिल भइ तापर भयो ॥ जरा

सरी प्रेम धाम ॥ ६ ॥ तापर भूमरिधी कहो ॥ ये समंद सत युग के ॥ अब कहूं त्रेता के ॥ बत्तीस धाम मगहू ॥ ७ ॥ प्रथम तो प्रह्ना मयी ॥ तापर मारिच धाम ॥ ता ऊपर कसिप भयो ॥ फेर सुरज प्रेम टॉम ॥ ८ ॥ तापर तब छत्र भया ॥ तापर अजेमायाम ॥ ता ऊपर आम्ब भयी ॥ बेहवा मित्र एक धाम ॥ ९ ॥ फर महाँ मित्र भयो तापर भयो चिर्मल ॥ ता ऊपर राजा भयो ॥ नाम बन ॥ १० ॥

अंत—मिहीं वच पहलन के ॥ प्रेमराम रूपावे ॥ आखिर मीं पन पै अंदराम पासे आवे ॥ ११ ॥ आइ कर बकम पास ॥ पावे सब सेवा कोश ॥ जो होत मेहमत पुन करी ॥ सब सेवा की चोज ॥ १२ ॥ महाबजी माई मसकत के ॥ आवे पुरबंदर से ॥ सेवा अमार रावरे की ॥ और पत्री लिपिने की सेवा में ॥ १३ ॥ आसबाह सेवा सर्मे ॥ कागत है चारण॥ राज हेत कर बुकावत ॥ प्रस होय के मन ॥ १४ ॥ श्री महामत केहें पुर्सीधर्मों ॥ ए सेवा के करे साथ ॥ पहुँ तेही पत्ते रहे ॥ जाके भगीए पकडे हाथ ॥ १५ ॥ ॥ परकन ॥ १२ ॥ चौपाई जुमले ॥ ७९० ॥ बीतक के प्रकर्न ॥ ५८ ॥ चौपाई जमा ॥ ३५२० ॥ सब जमा पर कन ॥ ७० ॥ चौपाई सब जमा ॥ ४२१७ ॥ एतनि श्री तीम्यों सरुपों की बीतक ॥ संपूरन समाप्ति ॥ साके श्री विजयपी ॥ मंदजी के अप ॥ ११४ ॥ सनि ॥ १२०४ ॥ मुकाम आगरे ॥ श्री श्री श्री बीतक तमाम में ॥ असाढ बदी ॥ २ ॥ वार मे सह ॥ संवत् ॥ १८२२ ॥ श्री श्री श्री बाबा बेनी दास जू के सेवक श्री श्री बाबा बालदास जू ॥ तिनके चरन रज सेवक ॥ आई स्याम सेप लिपित श्री श्री स्वामी ॥ प्राइ की चरन रज हमेसा चाहत ॥ जो कोई भाई बांच या सुने तिनकीं कोटान कोट दंडमत प्रनांम प्रनांम प्रनाम ॥ अविचाइ मो भूल चूक होइ तो माफ करके ॥ सुचार कीजो श्री श्री प्र० सि समस्त ॥

विषय—श्री श्री महाराज के तीनो रूपों की विविध कथायें, धामी सम्प्रदाय के सिद्धान्त और अन्य मत मतान्तरोंपर विचार और श्री बनी भाम जू की बड़ महरी सेवा का वर्णन।

संख्या १५० मोह माग निकास, रचयिता—प्रताप, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—९×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२८ = १७७१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राधावल्लभ, ग्राम—गैराबाद, डाकघर—रानीपुर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गनेशायनमः श्रीरामायनमः ॥ मूल सास देरें मूल साक न रहत उर मन्न पेम देपै भाम आवे महामानी को ॥ बेनी के बिलोके आप बेदी परबेदी होत निरबेद पद पावें याते है कहानी कों। कोट के निकर गये कोटक कलस मिटे परताप परताप जिन बानी कों ॥ बानी देव बानी सुन होहिं रिष राज मुनि बाजे पावें राज जिन राज राजधानी कों ॥ १ मानै बाम देव बाम देव कोऊ दव रिति जानें फल सिद्धि साम कूप में गिरत है। याते परताप से न जानें परताप आप करै महाताप जाके भैक ना विरत है ॥ मोह की अपर सौं न पमरे पयोग जाको उसटी सी बात कहैं काहे की विरत हैं। मरकी सी रीति छिये मरकी सी बुधि हिये मरकी भवर बिना मरक्या फिरत है।

अंत—छप्पै छंद ॥ धन्य धन्न ते साध साध साधन साधज है आध व्याध न उपाध मोछ आराधन मन है ॥ अपने ही रस लीन लीन पर वसु विधि जेती जाते पर वस वास गई परवसु वुधि लेती । थिर भई सुद्ध अनुभूत की ग्यान भोग भोगी भयो । अनुभाग वधु निज भाग तैं भाग राग दारद गयो । इति मोक्ष मारग निरूपन समाप्तः संवत् १८२८ वि० अषाढ़ पूर्णमा ॥ श्री ॥

विषय—जैन मतानुसार मोक्ष प्राप्त होने का वर्णन ॥

संख्या ३५१ ए. काव्यकला विलास, रचयिता—प्रताप साही (बुंदेलखंड), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—११२, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८६ = १८२९ ई०, लिपिकाल—सं० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जनार्दन जी, मुहल्ला खेले की बाजार, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ काव्य कला विलास लिष्यते ॥ दो० । लंबोदर वरनहु प्रथम पुनि सरसुति जग माय बहुरि इष्ट निज हृदय धरि सुमिरि गुरूनि के पाय ॥ मत लहि काव्य प्रकाश कौ काव्य प्रदीप सजोइ । साहित दर्पन चित समुझि रस गगाधर सोइ ॥ समुझि परैं साहित्य को जाते परम प्रकास । सुकवि प्रताप विचारि चित कीनो काव्य विलास ॥ प्रथमहि लक्षन काव्य को वहुरि प्रयोजन राषि तापाछे कारन कहौं प्रगट सुभाषा भाषि ॥ दो० गुन जुत सब दूषन रहित सब्द अर्थ रमनीय । स्वल्प अलकृत काव्य कौ लक्षन कहि कमनीय ॥ दोष रहित पूरव कह्यौ मम्मट लक्षन माहिं तिनके लक्षन लखि सब प्रथमन कहि किमि नाह ॥

अंत—दोहा । गहिर वार कुल जग विदित जाहिर जंवू दीप । प्रगट भए औतार इक छत्र साल अवनीप ॥ पुनि प्रगटे ता वंश मैं नृपति विक्रमा जीत तिनको सहज सुभाव यह काव्य कला पर प्रीति ॥ निकट रहैं तिनके सदा कवि पडित पर वीन । कोस व्याकरन सास्त्र पुनि काव्य कलानि प्रवीन ॥ नृप अरु सुकवि निदेस लहि पाइ सुमति अवकास ॥ लघु मति सुकवि प्रताप ने कीन्हौं काव्य विलास ॥ काव्य प्रकास प्रदीप लखि साहित दर्पन देषि । सुकवि प्रताप विचारि चित करो सुमति अव सेषि ॥ रतन साहि सुत जग विदित अरु सिरोदिया भाट । नृपति विक्रमा जीत के हुकुम सुपाइ निराट ॥ संवत ससि वसु वसु वहुरि ऊपर पट पहिचानि ॥ १८८६ वि० सावन मास त्रयोदसी सोमवार उर आनि ॥ इति श्री कवींद्र कुल भूषन रतन साहि आत्मज सुकवि प्रताप साहि विरचितायां काव्य विलासे काव्य दोष वर्णनों नाम सप्तमो विलास । मिती चैत्र सुदी १० संवत १९०१ वि० लिषत श्याम मनोहर पंडित । जै सिय राम ॥

विषय—भाषा काव्य वर्णन ॥

संख्या ३५१ बी काव्य विलास, रचयिता—प्रताप साही (चरखारी, बुंदेलखंड), कागज—देशी, पत्र—१३६, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—

सं० १४४६=१८२९ ई०, लिपिकाल—सं० १९०२=१८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कन्नूमल ग्राम—गौरिया कलाँ, डाकघर—फतेहपुर, जिला—उन्नाव।

आदि-अंत—३५१ ग के समान।

पुष्पिका— मिती जेठ सुदी ९ संवत १९०२ वि० लिखितं सिव कुमार महाराज नगर निवासी ॥

संख्या ३५१ सी काव्य विलास, रचयिता—प्रतापसाही (चरखारी, बुंदेलखंड), कागज—साधारण, पत्र—१०६, आकार—११½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८६=१८२९, लिपिकाल—सं० १९११=१८९८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रघुवर दयाल मिश्र बुधवा।

आदि-अंत—३५१ ए के समान।

पुष्पिका—मिती असुनि सुदी ८ भौमे संवत् १८८६ ॥ मुकाम महाराजनगर लिखितं श्रीमत् प्रताप सिंहेन पुस्तक श्री कुँवर गुलाब सिंहेन अवलोकनार्थे ॥ इति

संख्या ३५१ डी काव्य विलास, रचयिता—प्रताप साही, कागज—देसी, पत्र—५६, आकार—११ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—११९, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि-नागरी, रचनाकाल-सं० १८८६=१८२९ ई० लिपिकाल—सं० १९४८=१८९१ ई०, प्राप्तिस्थान-श्री कृष्णबिहारी मिश्र, नवाबगंज बाड़े, माडल हाउस, जिला—लखनऊ।

आदि-अंत—३५१ ए के समान।

पुष्पिका—इति श्री सुकवि प्रतापसिंह विरचितायो काव्य विलासे दोष निदोषता वर्णन नाम पहमो प्रभावः ॥ ९ समाप्त शुभ मस्तु श्रावण नवम्याम् गुरी श्री संवत् १९४८ समाप्त श्री रामोनपति श्री कृष्णायनमः ॥ १८८६ वि सं०

संख्या ३५१ ई काव्य विलास, रचयिता—प्रताप साही, कागज—साधारण पत्र—३५, आकार—११½ × ८½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८८६=१८२९, लिपिकाल—सं० १९८३=१९२६ ई०, प्राप्तिस्थान श्री रघुबरदयाल, अध्यापक मिडिल स्कूल, कबीर चौरा, बनारस।

आदि-अंत—३५१ ए के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है :—

इति श्री कवीन्द्र कुल भूषण रतनसाहि तनसात्मज सुकवि प्रताप साहि विरचितायां काव्यविलासे काव्यदोष वर्णनो नाम सप्तम प्रभास ॥ मिती आसुनि सुदि ८ भौमे सं० १८८६ मु=महाराज नगर। लिखते श्री मत्प्रताप सिंह ने पुस्तक श्री कुँवर गुलाब सिंहेन अवलोकनार्थे ॥

संख्या ३५२ ए अमृतसागर, रचयिता—महाराजा प्रतापसिंह बहादुर सवाई (जयपुर), कागज—देसी, पत्र—११००, आकार—१२ × ८ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—

१८७६०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३६ = १७७९ ई०, लिपिकाल—सं० १८४५ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—मे० गोविंदराम भगनराम मारवाड़ी, ग्राम—अमिलिहा, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अमृत सागर लिष्यते ॥ श्री मन्महाराजा धिराज महाराज राजेन्द्र श्री १०८ श्री सवाई महाराज प्रताप सिंह कृत ॥ सवत १८३६ पौष मास में विचारि करि मनुष्या का रोगा दूर करवा वास्ते परम करुणा सुश्रुत वाग भट्ट भाव प्रकाश अनेक ग्र थ वेचक आदि लेके वैद्यक का सर्व ग्रंथां तें वाको सार काढ़ अति संक्षेप से सर्व रोगी की निदान पूर्वक अमृत सागर नाम ग्रथ की वच निका करिकै औषधां के अनेक प्रकार का अजमाया जतन विचार पूर्वक है ॥ अथ प्रथम रोग विचार रोग कहे जे कहा कई तरह की पीड़ा ने रोग कहिये ॥ सो दोम प्रकार के छैः एक तो कायक दूसरो मानसक।

अत—बालक की औषद देवे की मात्रा लिष्यते। महीना एक को बालक होय तौ रत्ती १ औषद दीजै दूध सहित मिश्री घी पानी के साथ। ज्यों ज्यों बाल बढ़ै महिना मे रत्ती रत्ती बढ़ावे ॥ ओषद को एक वर्ष ताईं पाछे मासा एक दीजे वरस १६ ताईं पीछे औषद की मात्रा इतनी राषिये वर्ष ७० ताईं पाछे बालक की सी नाईं औषद दीजे मात्रा घटाय के यह तौल कल्क चूर्ण को है और काढे को तौल या सों चौगुणों जान लीजै और बालक को ताही के जल में उबटनो स्नान करानों जान लीजो चाहिये ॥ इति श्री मन्महाराजा धिराज राजेंद्र सवाई प्रताप सिंह कृत अमृत सागर नाम ग्रथो सपूर्ण समाप्तः लिष्यते गुरु मया राम पंडित झूंझनूवाले सवत् १८४५ वि० ॥

विषय—वैद्यक ॥

संख्या ३५२ बी. अमृतसागर, रचयिता—महाराजा प्रतापसिंह (जयपुर), कागज—देशी, पत्र—२००, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१८०, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३६ = १७७९, लिपिकाल—सं० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामभूषण वैद्य, ग्राम—धनकौली, डाकघर—मवई, जिला—उन्नाव।

आदि-अत—३५२ ए के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्री मन्महाराजा धिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी विरचिते अमृत सागर नाम ग्रथे रितु वर्णन नाम रितु चर्या रात्रि चर्या, शरीर सर्व अंग सयुक्त वर्णन नाम पंच विंश तम स्वरंग सवत १८७० वि०, कार्तिक वदी तृतिया। लिखा छोटेलाल ब्राह्मण जाम नगर जमशेद पुर ॥ श्री राम राम राम राम राम ॥

संख्या ३५२ सी. अमृतसागर, रचयिता—महाराज श्री प्रतापसिंह (जयपुर), कागज—देशी, पत्र—४२६, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—९५७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री देवीप्रसाद शास्त्री, ग्राम—सकटिया, डाकघर—महोली, जिला—सीतापुर।

आदि अंत ३५२ ए के समान।

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रतापसिंह जी विरचिते अमृत सागर नाम ग्रंथे रितु वर्णनम् नाम रितुचर्या चर्यारात्रि चर्या शरीर सर्व अंग संयुक्त वर्णन नाम पंच विंशतमस्तरंगा २५ संवत् १८८७ कार्तिक वदि तृतीया लिपतं रामजी कल्मार स्वपठनार्थ मध्ये गोकुलपुरा अकबराबाद ॥ श्री रामजी सदा सहाय करैं ॥

संख्या ३५२ डी. अमृतसागर, रचयिता—महाराज प्रतापसिंह (जयपुर) कागज—देशी, पत्र—३२८, आकार—८×९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गणपति दूबे, ग्राम—मयागोव, डाकघर—सादरपुर, जिला—सीतापुर ।

आदि अंत ३५१ ए के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है :—

इति श्री मन्महाराज धिराज महाराज राजेन्द्र सवाई प्रतापसिंह जी विरचिते अमृत सागर नाम ग्रंथे रितु वर्णनम् रितुचर्या रात्रिचर्या, चर्या, शरीर सर्व अंग संयुक्त वर्णने नाम् पंचविंशतस्तरंगः ॥ २५ । संवत १९२३ कार्तिक वदि तृतीया शुक्रवार ॥ लिपतं राम मिश्र पाठक ॥

संख्या ३५३. प्रयाग विज्ञानविजय, रचयिता—स्वामी प्रयागदास (बेलाप्रतापगढ़) कागज—साधारण, पत्र—१६, आकार—९ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सुंदरप्रसाद नायब रजिस्ट्रार, तहसील सदर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रयाग विज्ञान विजय लिख्यते ॥ दावर चरिगा मीन प्राग सखि आप में । सार शब्द की मढि सुख सदा आप में ॥ १ ॥ राम रमा संसार में राम रमै सो राम । राम कर्म नहिं मूल है सर्व भूत में राम ॥ २ ॥

अंत—सदा मेष वसियार जगत के कामी छावै । झूँठी बातु दिखाय आत्मा ना दरसावै ॥ दास प्राग जब सुप सदा संत चरन दै सीस । शिवप्रसाद राम गुरु कृपा से मोहि मिल्यो जगदीस ॥ इति श्री प्रयाग विज्ञान विजय समाप्त शुभं भूयात् ॥

विषय—आत्म ज्ञान, और सदसद्विवेक ।

संख्या ३५४. कवीराज वंशावली, रचयिता—प्रयागदत्त पाठक (विल्हौर), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—१२×९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५००, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३० = १८७३ ई० लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री नर्मदा प्रसाद पाठक, ग्राम—मेंदुरा, डाकघर—बिल्हौर, जिला—कानपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दो० । चारि भुजा गज बदन मुख सर्व देव यद आदि । वंशावलि वर्णन करूं करौं प्रणाम सिरादि ॥ बदो इष्ट चरन पद मन तन बचन समेत कविराज वंशावली पुरबहु काम निकेत ॥ सवैया । विकसी विहारी नर हरि रूपधारी प्रभु माथ पै मुकुट प्रय ईश्वर कमनु है । एक पद चारि के असुर को जो आनु

गुल्फ फारि डारो पेट आंते हाथों में दिसतु है टोऊ ओर खंभ फारा सोहति असीन पाट ठर्द्ध सोहै हाट सो प्रहलादुहू हैं। मातु हू सभू मिमा मुकुट परो सभा मांझ हनत दुंदुभी देव सुमन वरपतु हैं ॥ यहि कल्युग नगरा धिप भाई। पूंछत मे निज गुरुहिं बुलाई। गुरी खेर युद्ध केहि कीन्हा राजहि मारि राज्य वयहि लीन्हा। ठाकुर कौन कहां के रहई। जिन मम पुर समीप पुर अहही गहिलवार वशावलि कहहू। सव हम तुम पर पूछन चहहूं।

अत—यहि कर पाठ जपै नित जाई शिव कर आसन जहां सोहाई। दो०। नेम धर्म आचार युत करहि भाव सुत तात। तुम चद्रिका विचार दृढ सुनहु जो तुव वहु भ्रात॥ चौ० अव मे कहौं शेप जो रहई। गाहल सुत पस सुप सव लहई। द्वादस गाव भदैघा माहीं। पास भिपारी पुर समुदाई। वसै गाव वनवीच उजारी। रहहिं कुरुप नीच नर नारी॥ कृपी निरावहि वोवहि धाना। रारहिं सव ठकुरन कर माना। मंदिर कृपा राम समीपा। भये सो पहिले ते कुल दीपा। वाग वाटिका तेहि लगवाई। इनके जिये न एकौ भाई॥ गगूसिंह केर सुत नामी। खखरापूर को हैं यहि स्वामी। नाम हजारीसिह विराजा। सीलवत वहु कीन्हेउ काजा॥ वहु पुत्रन को पिता कहायो वहुतक कन्या राम जिआयउ। करैं सदा विप्रन पर प्रीती। गहिलवार कुल की यह रीती॥ विद्या विप्र पढावहिं वाला। वसहिं ग्राम मह वहु रंयाला॥ रचि रचि धाम वनायो जी को। वाप से भयो पुत्र अति नीको॥ इति श्री काशिराज वंस्यावल्याम नदात्मज साखा कथनं नाम पष्टम स्तरगः॥

विपय—काशी के राजा ने अकाल के समय काशी मे चलकर महाराजा जैचंद के यहाँ कन्नौज में आकर कुछ रोज वास किया इसके पश्चात् राजा जैचद ने अवध में उनको रहने के लिये कहा और कहा कि आप हमारे विरोधी राजाओं को जीत कर उनके राज्यों पर राज करैं। इसपर महाराजा काशिराज ने कन्नौज के राजा के विरोधी राजों को परास्त कर के अपना राज्य वनाया॥

संख्या ३ ५ प विसातिन लीला, रचयिता—प्रेमदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुप्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९७=१८४० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री श्याममनोहर सिंह, ग्राम—मुवारकपुर, डाकघर—मगराहर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री कृष्णाय नमः॥ श्री रामानुजायनमः॥ श्री गणेशायन॥ अथ विसातिन लीला लिप्यते॥ दो०। वेप विसातिन कौ कियो जेहि प्रकार जदुनद। श्री राधा के संग रमैं कहौं तौन रचि छद॥ एक समय व्रज चंद नद सुत मन में याहि विचारी। धरि कै भेप विसातिन जी को छलियो राधा प्यारी॥ कीन खाप को लहगा पहिरे अरुण जरकसी सारी। अंगिया लाल स्याह वूदन की अति छवि देत किनारी॥ मोतिन की पहिने नग वेसर झालरदार वनाई॥ मानहु रति पति रची आप कर कहि न जात सुवराई॥

अंत—अरस परस राधे सौं करिके नयन सो नयन मिलाये॥ नंद कंद आनंद मानि के नद गाउ चलि आये॥ जसुदा कही सुनौ मन मोहन सव दिन कहां गंवायो॥ वल के संग कलेवा करिके तव अव फिरि आयो॥ खेलत रहेउं संग ग्वालिन के वंसी वट की

छोड़ीं ॥ कहाँ कहीं मेरी मातु जसोदा लेसम आज कि नाहीं ॥ मली-कही मेरे प्राण पियारे अब चल कर्ता बिघारी ॥ बेटी महरि तुम्हें परप हैं परसु भरी है धारी ॥ नंद संग हरि मोजन कीनो बीरा मुख में नाई ॥ सोइ गये पलिका के ऊपर निरखि मातु बलि जाई ॥ प्रमदास बलि बलि चरनन की लीला गाइ सुनाई ॥ जो कोइ सुनै मन चित दईतरि बैकुंठे जाई ॥ इति श्री बिसातिन लीला प्रेमदास कृत संपूर्णम् ॥ दसखत कालू लाल तवारी बचोर सुदी सप्तमी संवत् १८९७ वि० ॥ श्री राम जी सदा सहाइ पुस्तक की लिखाई एक आना । शिव शिव शिव ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का बिसातिन के वेष में राधा के घर आना और उससे मिलना, राधा जी का भगवान को पहिचान कर प्रार्थना करना और मिलने के वास्ते स्थान बताना । पुनः श्रीकृष्ण जी का घर आना और नंद के साथ भोजन करना ।

संख्या ३२५ सी बिसातिन लीला, रचयिता—प्रेमदास, कागज—देसी, पत्र—६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप्)—११२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा भक्त राम, ग्राम—धर्मसा गाँव डाकघर—मुजफ्फरपुर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बिसातिन लीला लिष्यते ॥ दो० । भेष बिसातिन का किया जेहि प्रकार जदुनंद । श्री राधा के संग रसें कहीं हाँत रची छंद ॥

अंत—इति श्री बिसातिन लीला संपूर्ण लिखा आलक चंद बैश्य नवाबगंज निवासी संवत् १९२४ बैसाख कृष्ण द्वितीया ॥ राम राम राम राम राम जी की जै होय ॥

विषय—३५५ ए के समान ।

संख्या ३२६ जैमिनी पुराण, रचयिता—प्रेमदास (मदगाँव, गोरखपुर), कागज—देसी, पत्र—२९२, आकार—८ × ५२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७२०, खंडित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथ लाल, ग्राम—टेढ़वा जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय । पोथी जब सुंब पुराण लि कीन ॥ बदनों सुंदर कुंजर ईन ॥ ससि सीखर शोभ सामित नैव ॥ कटि किंकिनी नेपुर चरन ॥ पीतपुर्न बीन संब पीतंगघ ईनाम ॥ अयोदरा बंक संपना हरी ही जाने कमीं कहीं दहु बीचरी ॥ बंध करति कहि छंद बीचार ॥ जद मंडो दह करू बीस्तर ॥ सुरत ईसम बीनु सम माहे ॥ संभी मुंड देपगन आहे । सुर्पा संमुग्व चतमी मन दयेक ॥ गीरी तने सुम संदबीन येक ॥

अंत—आर्सीगन दै जाइ जब भेट ॥ चंद्रहंस… …न आनु मन ॥ संमी मैं इसरो मम मन ॥ तैही मज पी करो कन्द ॥ मई ॥ घोर की राज्य पद ॥ आर्जुन कही ममी इस सुमई ।… …तुम्हें इम ऐसी कहो सुर भयव ॥ दोहा ॥ गुरु मीस फेर्न ॥……

विषय—महाभारत के अंत में पांडवों के अश्वमेध यज्ञ करना और यज्ञ का घोड़ा देश देशांतर में विजय के लिये भेजना तथा इसी प्रसंग को जनमजय न जैमिनी ऋषि से पूछना और उनका सविस्तार से वर्णन करना ॥

संख्या ३५७ करुणा पचीसी, रचयिता—प्रेमनिधि, कागज—साधारण, पत्र—८, आकार—७३/४ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९१ = १८३४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री लक्ष्मीकांत कोटीपाल, ग्राम—पसुपापुर, डाकघर—लक्ष्मीकांतगंज, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गनेश नमः ॥ अथ करुना पचीसी लिष्यते ॥ दोहा ॥ विश्व रूप परमातमा । ये ही रूप अनन्त । ही करुनानिधि प्रेम निधि । जै जै श्री भगवन्त ॥ १ ॥ जब जब पल भूपन धरा । तब तब करत सहाइ । सुन सो भार उतार प्रभु । आपुन प्रगटत आइ ॥ २ ॥ कवित्त ॥ विश्व रूप आतमा अगम गति ध्यावै संभु, नेति नेति भेद विधि वेदन बतायौ है । पोषन भरन विश्व नाथ सब दासन के । परम पुरुष पति पूरन गनायौ है ॥ प्रेम निधि प्रेम भगवत के भजन बिनु, पूरो नर देह स्वान सूकर भ्रमायो है । पावौ भव सागर को पार जिनि सहज में, करुना के पन्थ को जिनन प्रभु गायो है ॥ ३ ॥

अंत—रसना यही है राम नाम के रसी है रस । संगति यही है संत सेवन दरन सौं । नैन अैन येही छबि छाके घन स्याम तन । दीयो हरि देन धनि औ जो परस सौं ॥ प्रेम निधि प्रेम हियो सोई जिहि बसै भक्ति । कीजिये विचार नहीं बस अपन सौं ॥ जीवन मरन नर देह को सुफल जोई । रहिहौ सनेह सीताराम के चरन सौं ॥ २७ ॥ धुव ईसी धारन है तारन त्रिधिनी जिनि । दीन की उधारन ज्यौं चरन की दीसी है । गंग की तरंग अंग पापन विनासिबे की । नरहरदास की प्रतिज्ञा परनी सी है ॥ प्रेम निधि प्रेम सीताराम की कृपा की मूल, दुष्टन की मूल पोट जनम तजीसी है । आगम बरन सरना गत को सुखी संत, करुनानिधान जू की करुना पचीसी है ॥ २८ ॥

इति श्री करुना पचीसी सम्पूर्ण समापता ॥ अगहन बदी अमावस रौ लिष्यते संवत ॥ १८९१ ॥ मुकाम इन्द्र गढ़ ॥ श्री गणेशायनमः ॥

विषय—कवि की निज दीन दशा का वर्णन और ईश्वर की वत्सलता के उदाहरण व परिचय देते हुए उद्धार की प्रार्थना ।

संख्या ३५८ कुबरी सग विहार वर्णन बारहमासी, रचयिता—प्रेमसागर, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री गयादीन तिवारी, ग्राम—खिलरिहा, डाकघर - भानगाँव, जिला—सीतापुर ।

आदि—अथ कुबरी सग विहार वर्णन बारामासी लिष्यते ॥ श्री गणेशायनमः टेर ॥ कृष्ण अकेले गये द्वारका छाँडि गये सब ब्रज बाला ॥ कुबजा दासी कंसराय की मोहन पर जादू डाला ॥ आषाढ़ आशा करूं जो तुम्हारी नारि अकेली कुंजन में ॥ हमकू छाँडि बसे जाय कुबजा सग माधो वन में ॥ दासी सेती प्रीति लगाई मोहलिया धीरण छिन में ॥ सौत हमारी जनम की वैरिन बिलमाया हरि नैनन में ॥ पतियां लिखती मतलब गरजी कैसे लिखूं दे गरे टाला ॥ कुबजा दासी कंस राय की मोहन पर जादू डाला ॥ १ ॥ श्रावण आवन कहि गये सज्जन हमसे मोहन वचन किया ॥ मैं खड़ी देखती राह सखीरी अजहुं न आये कृष्ण

लिया ॥ छोड़न को त्योहार नगर में सब सखियां श्रृंगार किया ॥ कसक टीको दिये सीस पर बस्तर भारे बपा बया ॥ स्याम बिना मेरी सूनी सेज अकूनी बागन में हुल्म डाका कुबरी दासी कंसराय की मोहन पर जादू डाका ॥ २ ॥

अंत—अधिक महीने कृष्ण पधारे राधे कूं दीना दरसन ॥ कस अंगिया की कसे टूट कर खुशी हुई मन में परसने ॥ स्याम पधारे आज सखीरी सब मग्न हो रही है मन मन ॥ बड़े बधाई हो रही सुन सखी सबही के मन ॥ प्रेम सागर में अमृत बरसे तनुको तृषा मिटी ब्याकुल कुबजा दासी कंसराय की मोहन पर जादू डाका ॥ १२ ॥ इति श्री कुबरी संग विहार वर्णन बारामासी प्रेमसागर कृतो संपूर्ण समाप्तः संवत १९१४ वि० बैसाख सुदी ७ ॥

विषय—कुबरी के संग श्री कृष्ण का विहार वर्णन ।

संख्या ३५६ पद पंचासिका ज्योतिष, रचयिता—पृथ्वीब्रह्म कागज—देसी, पत्र—७२ आकार—१६ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बिश्राम सिंह, ग्राम—धारानगरी, डाकघर—पौराहरा, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पद पचासिका लिख्यते ॥ अथ दिन दशा फलं ॥ रवि दिन बीस सुर्य नहिं पावै । चंद्र पचासे भरे जिआवै । भौम अट्ठाइस कर धन हरै ॥ ५६ बुध महा निधि करै ॥ शनि ३६ कुछ कष्ट दिखावै गुरु अट्ठावन राज करावै ॥ राहु केतु ब्यालीस मति हरै ॥ बावरी शुक्र महानिधि करै ॥

अंत—श्लोक ॥ अंतकाले आयते प्रेम्पं दृयार्थे स्तरस्मा स्मृता राशिम्या काल दिगदेसीव योग ज्ञातिस्वरूगमयात् ॥ भत जो होय नवांस को ताते भृम्य जानिये दश काठ है चोर जानिये ॥ राशि से दिशा जानिये वही लग्न पद जाति लग्न के स्वामी से जानिये ॥ इति श्री वराह मिहिरात्मज पृथ्वी ब्रह्म विरचितायां पद पंचासिकायां मिश्रिका पर पाठी का व्याप' मस्तं शुभमस्तु संवत् १९१८ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे चतुर्थ्यां रवि वासरे संध्या के समय धुर्मभूपाल् लिखतं भवानी प्रसाद दुबे भारम देखबे ॥ श्री महादेवायनमः ॥

विषय—ज्योतिष ॥

संख्या ३६० पञ्चरथरि स्तुति, रचयिता—पृथ्वी दास, कागज—साधारण, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१९ = १८६२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चिंताराम पांडे, ग्राम—भिटारी, डाकघर—परीयावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि— म निगम बानहि गुन गूढ़ा । कृपा सिंधु देहि बुधि अगूढ़ा ॥ १ ॥ हरि बिरंचि हर अद्भुत पवानी । सुर सारद मुनि कहि बरबानी ॥ रवि ससि पवन पहार गम्हीरा । सेवहि चरन असुर बरबीरा ॥ २ ॥ परम पुरुष अनादि अनंता । अज हर अद्भुत तुमहि गुनवंता ॥ महिमा अपार वेद बर बानी । सुर सारद बानी तुम कानी ॥ ३ ॥ भव दु(ख) दारुन कठिन कलेसा । भंजन अघ मनिमग्न मद वैसा । रोग विहित प्रभु मिथ्य देसात्म । भंजन तुरत महा दसरथाना ॥ ४ ॥

अंत—आदि पुरस हैं जगत में, बैदि सुरनि सुख दाइ । असुनी कुमार सुढार प्रभु, वरनि कहे रिखि राइ ॥ २४ ॥ प्रात समय मध्यान में, सूर्य अस्त गुन गाइ । यह अस्तुति चित धरिकै, ध्यान करैं मन लाइ ॥ २५ ॥ धन्वंतरि को ध्यान धरि, करैं रोग को नास । नर पावैं सुख सर्वदा सुख को होइ प्रकास ॥ २६ ॥ ··· ··

इति श्री धन्वतरि अस्तुति रोग हरन समापत् शुभं नमस्त् पठनारथ भगत वरि आर खवास निवंत लिखी ।

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १४ तक—श्री धन्वतर की स्तुति, स्तुति पढ़ने तथा श्रवण करने के फलाफल का वर्णन । ग्रंथकार परिचय, ग्रथ निर्माणकाल :—

प्रथम देव वानी यह गाई । भृगु ब्रह्मा कहँ जाय सुनाई ॥ सो यह कथा श्रवण सुनि पाई । 'प्रथी अ' भाषा करि सु सुनाई ॥ दोहा ॥ सिरी वास्त काइस्त कुल, झाकन लालहि अंस । प्रथीलाल सु नाम है, अमर दास के बस ॥ वसत भदावर देस में, भिंडनगर सुख धाम ॥ अस्तुति यह भाषा करी, हरन रोग गन ग्राम ॥ सावन वदि एकादसी, गुरु वासर सुखदाई । सवत् उनइस से वरस, ऊन इस ऊपर आई ॥

संख्या २६१ ए. भक्तमाल भक्त रस बोधनी, रचयिता—प्रियादास, कागज—साधारण, पत्र—१७०, आकार—६¾ × ६¾ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६९ = १७१२ ई०, लिपिकाल—सं० १८६५ = १८०८ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी चतुरविहारीलाल जिलेदार, सधवा चंद्रिका, डाकघर—अंतू, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भक्त माल टीका सहित लिप्यते ॥ मगलाचरण ॥ महा प्रभु कृष्ण चैतन्य मनहरन जू के चरन कौ ध्यान मेरैं नाम मुष गाइयें ताही समै नाभा जू नैं आज्ञा दई लई धरि टीका विस्तार भक्त माल कौ सुनाइयै ॥ कीजियैं कवित्त वध छंद अति प्यारौ लगै जगै जगमाहिं कवि पानी विरमाइयें । जानैं निजु मति अैसै सुन्यौं भागवत सुक द्रुमनि प्रवेसु कीयौ अैसेही कहाइयै ॥ टीका कौ नाम सरूप ॥ रचि कविताई सुखदाई लागै निपट सुहाई औ सचाई पुन रुक्ति लै मिटाइयैं । अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमकाई अति छवि छाई मोद झरीसी लगाइये ॥ काव्य की वढ़ाई निज मुषन भलाई होति नाभाजू कहति तातैं प्रौढ़ कैं सुनाई है । हदै सरसाई जो पै सपी यै सदाई यह भक्ति रस बोधनी सुनाम टीका गाइयै ॥ २ ॥

अत—नाभाजू कौ अभिलाप पूरन लै कियो मैं तोता की साखि प्रथम सुनाइनी के गाइकै । भक्ति विसवास जाके ताही सौं प्रकास कीजै भीजै रंग हियो लीजै संतनि लडाइ कै । सवत प्रसिद्ध दस सात उनहत्तर फागुन मास वदि सप्तमी विताइ कै । नारायनदास सुपरास भक्तमाल लैके प्रिया दास दास उर वस्यौ रहै छाइ कै ॥ अग्नि में जरावो लैके जल मैं वुड़ावौ भावै सूरी पै चढ़ावो छोरि गरल पियाइवी । वीछू कटायो कोटि साँप लपटायो हाथी आगे डरवावो एती भीति उपजाइवी ॥ सिंह पै जवावौ चाहे धहि भूमि गड़वावौ तीखी आति विधवावो मोहि दुख नाहिं पाखी ।

ब्रज जन प्रान कह बात हूही काम कौं भक्ति सौं विमुख भाखी मुख न दिखावी ॥ ६३२ ॥
× × × इति श्री भक्त माल भक्त रस बोधनी टीका सपूर्ण ॥ ग्रंथश्लोक ॥ ३२५ ॥ शुभ सरस्क श्री १ंस्या संवत् १८६१ शाके १७१० मार्ग शिर मासे—शुक्ल तिथौ ८ भृगुवासरे लिपतं कृष्णराम ब्राह्मण वासी भदका पठनार्थ अगराम पटक वासी बराठनमका ॥ × ×

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ५० तक—कर्ता का मंगला चरण तथा आज्ञा निरूपण, टीका की नाम स्वरूप भक्ति स्वरूप, श्रृंगार, भक्ति पंचरस, सतसंग, नाभाजीका वर्णन, भक्ति मान्य स्वरूप, टीका का विशेष लक्षण, अवतार वर्णन, संत चिह्न, हरि के अंतरग, द्वादश प्रधान भक्त शिव, अजामिल, हरि के वल्लभ हनुमान, विभीषण, शिवरी, अंबरीष, विदुर, सुदामा, चंद्रहास, कुन्ती, वाल्मीक, सत्यव्रत, बलि की दारा, मोरध्वज, रतदेव, गुह, परीक्षित, शुकदेव, प्रह्लाद, अक्रूर, बालि, ध्रुव आदि भक्तों की कथा।

(२) पृ० ५१ से पृ० १५२ तक—श्वेत दीप वासी, बहत्तर सिद्ध, आचार्य के जामात, रगन, पैहारी, नाम देव, जै देव, विल्वमंगल, ज्ञान देव, त्रिलोचन वल्लभाचार्य, रतिवंत बाई पुरुषोत्तम वासी राजा, बाई करमाद, मामा-भानजे, हंस प्रसंग, महाजन सदावती, भुवन चौहान, रूर चतुर्भुज कामध्वज, जैमाल, ग्वाल भक्त, भीमर ब्र, साखी गोपाल, रामदास, चंद्रहास देवन, कमल, बारमुखी, हरिभक्ति भूप मागवत, अंतरनिष्ठनृपाल, रैदास, कबीर, पीपा, घना, सेवजी भक्त आदि वर्णन ॥

(३) पृ० १५३ से पृ० २५४ तक—नाम माहात्म्य, तरवाजी, माधो दास द्विज, रघुनाथ गुसांई, नित्यानंद, कृष्णचैतन्यमहाप्रभु सूर, केसोभट्ट, हरिव्यास, लोकाराम, विट्ठलनाथ, त्रिपुर दास कायस्थ, गोकुलनाथ, कृष्णदास, बलिमान मगध, हरिराम हठीले, कमलाकर भट्ट, नारायणभट्ट, श्री सनातन व्र, हरिवंस गुसांई, गोसांई गोपाल भट्ट, अभिराम नाथ, लोकनाथ गुसांई, मधुगंधी कृष्णदास ब्रह्मचारी, भूगर्भसंद्री बिहारीदास, रसिक मुरारि, सदना कसाई, लोभो व्र, राजपथ कुँवार ब्र, अकूभक्त तिलोक सुनार, चिन्तामणि, चतुर दास, प्रतापरुद्र, विद्यापति, गोविंद स्वामी, सीता सुमति आदि स्त्रियाँ, मरवाहन, सुखपूजा संत, गोपाल भक्त, कापा नाम भक्त, नरसी चंद्रदास, माधो, अगद, हीरा, चतुर्भुज नृपति, मीरा, पृथ्वीराज, वीपाल, मधुकर साह, जैपाल रतन राठौर, निरभय अनन्य, मदन मोहन सूरदास, और कात्यायनी आदि का वर्णन ॥

(४) पृ० २५५ से पृ० ३१४ तक—मुरारिदास, तुलसीदास, रघुनाथ, गोकुल नाथ रसिक रैगीलो, नारायण मिश्र, अस्पराय राघव लोगानंद श्यामराय रंगी, कल्याण सिंह गदाधर भट्ट, देवीदास, करमानंद नारायण दास, लोकापति, रत्नावली, मानसिंह के अनुज माधो सिंह की श्री, गुरदत्त—नारायणदास, राजाविदुर स्वामी चतुरी, प्रयाग, विनादी आदि, परमानंद, विष्णुदास, जयवंत का गुरु भाई, चतुर दास, सेवाकृत नृप के पुरोहित की बेटी, ग्वाली, प्रेमनिधि कान्हरदास, नरहर, आदि आदि भक्तों के वर्णन ॥

(५) पृ० ३१५ से आगे—भक्तों का महत्त्व वर्णन, प्रबोधानंद, लालदास, गदाधर लाल बिहारी भगवानदास, कल्याण आदि की कथा, साधु भक्ति वर्णन रामदास की कथा, हरि सुयश वर्णन, भक्ति दैन्य वर्णन, हरिजन गुणगान का फल, टीका कार का

इष्ट गुरु वर्णन, ग्रंथ के टीका का काल —संवत प्रसिद्ध दस सस मत उनहस्तर फागुन मांस वदि सप्तमी विसाइ के। नारायन दास सुप रासि भक्तमाल लैकें प्रिया दास दास उर वस्यौं ठेहे छाइकै ॥ अभक्त से विमुख रहने की प्रार्थना, श्लोक सरयाः—मूलरु टीका मिल श्लोक जुमत पैंतीस। ऊपर पच्चावन प्रगट भक्तमाल अववीस ॥

संख्या ३६१ बी. भक्तमाल की भक्तरस बोधनी, रचयिता—प्रियादास, (अयोध्या), कागज—आधुनिक, पत्र—५६८, आकार—१३ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०७६२, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६९ = १७१२ ई०, लिपिकाल—सं० १९१३ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री प्रभु दयाल अवस्थी, ग्राम—मुंशी गंज, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ।

३६१ ए. के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री भक्त माल रस बोधनी टीका सपूर्णन सुभ चैत्र पाये असिन पक्षे तिथि नौम्या रविवासरे लिखित रघुनाथ दास राम सनेही। कंपू अनवर गंज रामजी की दुकान पै राम रचन भगत के इहां श्री स्वामी देवी दास ग्रे। स्वहित ॥ १९१३ सम्वत ॥ श्रीराम ॥ श्री राम ॥

संख्या ३६१ सी. प्रियादास संग्रह, रचयिता—प्रियादास, कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१३ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जयती प्रसाद, ग्राम—जोशी खेड़ा, डाकघर—चामयानी, जिला—उन्नाव।

आदि—रेखता—रास लीला ॥ रस रहस मे रसीलो नाचत नवल विहारी ॥ अद्भुत श्रृंगार कीने संग सोहैं की रति कुमारी ॥ वाजत मृदंग वीना मुरचग वजै न्यारी ॥ वाजत करताल झांझै मुरली को शोर भारी ॥ गाती हैं गीत गोपी शुभ राग को उचारी ॥ लेती हैं ताल सपै देती है सवै तारी ह्वै कै त्रिभग कवहूं वंसी मधुर वजावै धुर पद मलार ठुमरी सुदर सुराग गावै ॥ कर कोप करकै कवहूं नाचन प्यारी सिखावैं ॥ यहि भांति से मगन हो रस रहस में वढ़ावैं ॥ प्रिया दास आस पास सोहै गोप की कुमारी ॥ तिन मध्य सुभग राजत वृषभान की दुलारी ॥

अंत—फूल विनन लीला ॥ राग पट ॥ फूलन के हित सखिन सग चली श्री वृष भान कुमारी है ॥ अति सुकुमार रूप निधि श्यामा वा छवि पै वलिहारी है॥ लहगा लाल रेसमी सोहै अति छविदेत किनारी है ॥ तापैं सोहै रंग वैजनी केरि सुंदरी सारी है ॥ कठ सिरी दुलरी औ तिलरी कौस्तुभ मणि उर न्यारी है ॥ दमकत जुगनू उभय कुचनू विच सोभा कहि वुधि हारी है ॥ जात वतात मध्य गोपिन के कीरति राज कुमारी है ॥ गज गामिनि सुकुमारि छवीली हसत वजावत तारी है ॥ प्रियदास आनंद रस लूटत ललितादिक

मजनारी है ॥ इति श्री प्रियदास कृत ग्रंथ संपूर्ण समाप्तः लिखा राम रावन बसंत रितु संवत १९११ वि० चैत्र शुक्ल नवमी ॥

विषय—रास लीला, छन्द, दान लीला उराहना, रैसता चंपक लता, गृह गमन, पंडित लीला, वैद्यक गोपी, गजक, नरवर, हिंडोला, फूल विनन, सांझी आदि लीलाओं का वर्णन ॥

संख्या २६२ ए. बाणी भूषण, रचयिता—दूलह, कागज—आधुनिक, पत्र—७२, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४००, रूप—नवीन, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—श्री शिवकंठ बाजपेयी, ग्राम—कुमार, डाकघर—जैतीपुर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बाणी भूषण लिख्यते ॥ काव्यालंकार की व्याख्या। कवित्त ॥ छन्द जाके चरन बरन स्वच्छ दुतियत पानिप लरम चमकत स्याम चीर है । उक्ति जुक्ति बसन नवीन बहु रंग के राजत गिरामी खरी लिपट मसीर है ॥ गुनन बलित शुभ अधुनि सरस भाव भूषण अखिल जाको सकल शरीर है ॥ कवि चित्र कारन को मानत जनम जाने कविता कवीत की बयाकी तसवीर है ॥ भावकार अक्षण अलंकार शब्द अर्थ = समर्थ, भूषण और कृ = करना से बना है अर्थ उसके आभूषण के हैं। काव्यालंकार के दो भेद हैं शब्दा लंकार, अर्था लंकार ॥ शब्दा लकार के दो भेद हैं अनुप्रास, यमक ॥ अनुप्रास के पांच भेद हैं ॥

अंत—दृष्टांतालंकार ॥ जब किसी वर्णित विषय को स्पष्ट करने के लिये । दृष्टांत व उदाहरण दें । इस प्रकार से कि दृष्टांत विषय यथा वर्णित विषय का प्रति बिंब स्वरूप हो और दोनों विषयों में धर्म की भिन्नता हो तब दृष्टांतालंकार होता है उदाहरण ॥ विद्वानों की मण्डली में मूर्ख शोभा नहीं पाता जैसे हंसों के बीच में बगुला ॥ यथा उभय बीच सिय सोहति कैसी । ब्रह्म जीव बिच माया जैसी । यहां केवल भाव प्रति बिंबित किया है । उपमा या धर्मैक्यता से अभिप्राय नहीं है ॥ अपूर्ण ॥

विषय—काव्यालंकार की व्याख्या, साहित्य वर्णन ॥

संख्या २६२ बी बाणी भूषण, रचयिता—दूलह कागज—साधारण, पत्र—१६, आकार—११ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—५००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रघुवर दयाल मिश्र द्वारा श्री भगीरथ प्रसाद दीक्षित, डाकघर—हुसवा ।

संख्या २६३ जैमिनी पुराण, रचयिता—पुरुषोत्तम दास (दादर), कागज—देसी, पत्र—२९७, आकार—१५ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८००, पूर्ण रूप—अत्यंत जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८२ = १७२५ ई०, लिपिकाल—सं० १८५८ = १८०१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्रीकृष्ण बिहारी मिश्र, माडलहाउस, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ जैमिनि लिख्यते ॥ दोहा ॥ गज नायक गिरि पति गवरि सुमरि करौं कर जोरि । हरि गुरु गन बानी कहु विमल करहु बुधि

मारि ॥ १ ॥ चौ० प्रथमहिं प्रनवौं पुरुप पुराना । आदि मध्य दुर्गम अवसाना ॥ निर्गुण सगुन जानि नहिं जाई । भूप नरेप जासु कछु भाई ॥ ब्रह्मादिक ज्यहि पोजत रहहीं । सुमति पुरांण जासु गुण कहहीं ॥ महा प्रलय मह रहे निदाना । जाकर अंतण कहु न जाना ॥

अंत—चौ० जयमिनि कथा जाहि मन भावा । सो जनु धरा प्रद छिण लावा ॥ तव राजा जयमिनि ते वोला । नाथ कृपा तव भयों अडोला ॥ सुनि मुनि जन्म सफल भा मोरा । जवहिं दरस मुनि पायों तोरा ॥ जयमिनि जन्मे जैसे कहे । गजपुर राम युधिष्ठिर रहे ॥ पाचौ पांडव कुंति समेता । सेय चरण हरि के अति हेता ॥ विद्या पर पुर सो तम दासा । राम भक्ति कै उपजी आसा ॥ जो कोई सुनै राम गुण ग्रामा । तिन कह करौ दंड परनामा ॥ सुकृती जो संस्कृत वपानै । भापा करै जो काऊ जानै ॥ जय मुनि कथा संस्कृत रही । सो भापा पुर सोतम कही ॥ मै अव निज गुरु के परसादा । राम नाम कर पायो स्वादा ॥ चरण कमल प्रसाद मैं पाऊ । हरि गुण छांडि औरि नहिं गाऊं ॥ दो० ॥ पुर सोतम जण भिक्षुक टाला श्री भगवान । जन्म जन्म हरि सेवक यह वरदान न आन ॥ १ ॥ इति श्री महाभारते अस्वमेध के पर्वनि राजा जग्य संपूर्ण वरणंन नाम पट पाचसमोऽध्यायः ४६ इति श्री जय मुनि कथा समाप्तम् सवत् १८५२ चैत्र मासे कृश्न चतुर्थी चद्र वासरे लेप-नींथीं पितवर भाट अस्थान विरनाउ ॥

संख्या ३६४ सुंदरी तिलक, रचयिता—पुरुपोत्तम शुक्ल (काशी), कागज—देशी, पत्र—५८, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)— २२, परिमाण (अनुष्टुप्)—९१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२६ वि०, लिपि-काल—स० १९३० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री ओंकारनाथ टडन, तालुकेदार, डाकघर—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री आनद कद नद नद नायनम सवैया ॥ छहरै सिर पै छवि मोर पपा उनकी नथ के मुकता लहरैं ॥ फहरै पियरो पट वेनी इतै उनकी चुनरी के झवा झहरैं ॥ रस रंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रस प्याल चहैं लहरैं ॥ नित ऐसे सनेह सों राधिका स्याम हमारे हिये में सदा ठहरैं ॥ १ ॥ सराहैं सुरा सुर सिद्धि समाज जिन्है लखि लाजत है रति मारमहा । मुद मगल सग लसै विलसै भव भार निवारन वार विराजै ॥ त्रिलोक निकाई के ओक सुदेव मनो भवरूप अपार । सदा दुलही वृपभान सुता दिन दूलह श्री ब्रजराज कुमार ॥

अत—मानुप होहुं तौ वहीं रसखान वसौं मिलि गोकुल गोप गुवारन । जो पसु होहुं तौ कहा वस मेरो चरौं नित नद की धेनु मझारन । पाहन होंहुं तौ वही गिरि को जो कियो ब्रज छत्र पुरदर धारन । जो खग हों तौ वसेरो करौ वही कालिंदी कूल कदंव के डारन ॥ इति श्री राधा कृष्णायनमः संग्रहीत पुरुपोत्तम शुक्ल सवत १९२६ वि० ॥

विपय—वहुत से कवियों की कविताओं का सग्रह ।

संख्या ३६५. सतसैया टीका, रचयिता—राधाकृष्ण, कागज—देशी, पत्र—२०८, आकार—१० × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७४९,

मंडित, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७७ वि०, प्राप्ति स्थान—श्री शंकर प्रसाद जी अवस्थी, ग्राम—ओदरा, जिला—सीतापुर ।

[आरंभ के ८ पृष्ठ नहीं हैं]

आदि—दोहा ॥ सोवति लखि मन मानु धरि ढिग सोयो प्यो आइ । रही सुपन की मिलनि मिलि पिय हिय सो लिपटाइ । टीका । यह नायका प्रौढ़ा मानवती है सोई है । नाइक ढिग आइ सोयो सो सपने की मिलनी को मिसु करि लपटाइ गई । नायकहू राख्यो सो सखी सखी कहति है ॥ कवित्त ॥ मानु किये तिय माने न क्योंहूं आली रही बहु भांति मनाइकै ॥ सोइ गई रिस ही चित में धरि सोइ गयो ढिग मोहन आइकै । प्रेमहू में सरसायो रसे कहवे न बने जो रही छवि छाइकै आलसयु सपने के सुभाय रही पिय के हिय सों लपटाइकै ।

अंत—दोहा ॥ सबै हंसत करतार दै नागर ताके नाउँ ॥ गयो गरब गुन रूप को बसे गंवैके गाउं ॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति परस्ताविक कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ जो समुझे रस रीति के भेदहि अंजु सुने रस रीति उचारे ॥ ग्राम की अंजु करे चरचा जह मूर तके हित सों पसु पारे । नागर ताई को नाउ सुने सब दै करतार हँसी किलकारी ॥ भूरि गुमान गहे गुन रूप को बासु भयो सब गांव गंवारे ॥ ७०० ॥ दोहा ॥ कुसल कुराज प्रजानि को क्यों न करै दुख द्वंद । अधिक अंधेरो जग करति मिलि मावस रवि चंद ॥ (इसका कवित्त नहीं है) ॥ संपूर्ण है इति श्री सतसैया बिहारी कृत दोहा का राधा कृष्ण कवि कृत टीका समाप्तः मिती कार्तिक कृष्ण चतुर्दसी संवत १८७७ लिखत राम बकस तिवारी ॥

विषय—बिहारी सतसई के दोहों पर टीका कवित्तों में है ॥

संख्या ३६६ राघवचेतावनी प्रश्न, रचयिता—राघव, कागज—देशी, पत्र—१२ आकार—५×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१० पूर्ण रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७४ = १८१७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामपाल सिंह, ग्राम—मधुआ खेड़, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राघव चेतावनी प्रश्न लिख्यते ॥ श्री गुरु इष्ट देव सुमिरि के इस दैया भूमि मो कहै तीन परीक्षा मो ले दैया चित परै तौन आचार्य पंगति परीक्षा सत्य मिलैगी शुभ श्री शिवायनमः ॥

चित चिंता की परीक्षा	उधार दवे की परीक्षा
(१) बड राज को पूछे	(१) अत्रि रिषि को पूंछे
(२) नर नाहन का पूछे	(२) अगस्त रिषि को पूंछे
(३) भगीरथ का पूछे	(३) प्रहलाद को पूछे
(४) स्वाम कार्तिक को पूछे	(४) बलिराज को पूछे
(५) राजा सगर को पूछे	(५) श्री भगवान को पूछे
(६) नर मोचन को पूछा	(६) मरीच का पूछे
(७) चित्रांगद का पूछे	(७) चमिन्द्र को पूछे

कह कहीं ठैया । जेहनि गेहनि गोरस चोरी को राति करैं उतपात कन्हैया ॥ ७२ ॥ जो कोट लौंदगी सीख्यौ चहै ओ तिपै नंद नंदन सो मन भायो मानत है बरज्यौ नहिं काहू को आप करैं सब काम अटायो ॥ पाति है मानी कहा जसुदा रघुनाथ की सौं हमैं साच सुनायो । कल्ल परों की तो बात कहा चली आजु ही गोरस लूटि कै ल्यायो ॥ ७३ ।

अत—मेरे लिये इन गेह को गाँव को मान्यो नहीं सह्यौ बैर घनेरो । मेरे मनोरथ के सिध को रघुनाथ उपाइ कियौं बहुतेरो ॥ औरट आगें कहालौं कहौं पर पृतिक अक्ष प्रतक्ष हो हेरो । गोदि भर्यौ अपने अँग को अँग में तिनके अंग को रँग फेरयौ ॥दोहा॥ भक्ति भाव गोपीन को, ऊधो को समुझाइ । बसो धाम मथुरा कियो, नंद नंदन सुष पाइ ॥ इति श्री कासी वासी रघुनाथ दास कृत बाल गोपाल चरित्र संपूर्ण सुभ मस्तु ॥ संवत् १८४१ ॥ ज्ये० शु० १५ गुरौ लेपनी ये कास्यों मध्ये चौबे बाल कृष्ण जो काहू पटै सुनै ताको नमस्कार असीस ॥

विषय—श्री कृष्ण की बाल्यावस्थाकी लीलाएँ ।

संख्या ३६६ बी. काव्यकलाधर, रचयिता—रघुनाथ बंदीजन (बनारस), कागज—देशी, पत्र—९२, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०२ = १७४५ ई०, लिपिकाल—१९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगाचरण भट्ट, ग्राम—परसहटा, डाकघर—मैंगलगंज, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ काव्य कलाधर रघुनाथ बंदीजन कृत लिख्यते ॥ दो० ॥ विघन हरन दुरमति दरन करन सकल कल्यान । शिव सुत श्री गणनाथ को सब सुषदायक ध्यान ॥ सुफल होत मन कामना मिटत विघन के दुद गुन सरसत बरषत हरष सुमिरत लाल मुकुद ॥ २ ॥ कवित्त ॥ अर्थ धर्म काम मोक्ष कहैं कवि रघुनाथ चारिहू पदारथ सहज ही में लहिये । रिद्धि सिद्धि बुद्धि की बिरिद्ध होत दिन दिन विद्या और बल वेद साजे तो चहिये । संपति बढ़त जग कीरति पढ़त भुप पानिप चढ़त चारु मोद महा गहिये । नरिन के सुत की बिसाती है न कछू जहा गुरु के चरन की सरन जाय रहिये ॥

अंत—सोदाहत लछन ॥ सकुच हिये गुर लोग की । दरसन चाहे चित्त ॥ प्रीति भाँति संग बरनिये भाव सो मोटा इत्त ॥ चेरी ह्वै तेरी रहौंगी सदा अरु तो संग खोज के ऊपर लेषौं ॥ तेरी कही मैं करूगी सदा अरु तापर का रहिये अवरेषौं ॥ जातु रह्यो न सुन्यो जबसों रघुनाथ हो पच के ग्रामन मेषौं ॥ ताते उपाय कछू करिये हरि मेरी गली हरि आवैं मै देषौं ॥ इति श्री कवि रघुनाथ बंदीजन काशी वाशी विरचिते काव्य कलाधरे विभाव अनुभाव संचारी अस्थाई नवोरस बरनन नाम पच दशमो मयूष लिपतं रामवली पाठक दीनदार नगर संवत् १९१० चैत्र शुक्ल नौमी ॥ श्री राम जी सदा सहाय ॥

विषय—नायक नायिका भेद ।

संख्या ३६६ सी. काव्य कलाधर, रचयिता—रघुनाथ बंदीजन (काशी), कागज—देशी, पत्र—९०, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं०

१८०२ वि० लिपिकाल—सं० १९१६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन नाथ जी अवस्थी, ग्राम—मौरेरा, ज़िला—सीतापुर।

आदि अंत २६६ वी के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्री कवि रघुनाथ बंदीजन काशी वासी विरचिते काव्य कलाधर विभाव अनुभाव संचारी स्थाई भेदा रस वर्णन समाप्तं लिपतं रामनाथ तिवारी संवत् १९१६कार सुदी १० बुधवासरे।

संख्या २६६ डी काव्य कलाधर, रचयिता—रघुनाथ बंदीजन (काशी), कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—१२ × ८, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) —४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८०६, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०२ वि०, लिपिकाल—सं० १९११ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री मोहरसिंह, ग्राम—मजडू पुर डाकघर—महमूदाबाद, ज़िला—सीतापुर।

आदि-अंत—२६९ बी के समान।

पुष्पिका—इति श्री कवि रघुनाथ बंदीजन काशीवासी विरचिते काव्य कलाधरे विभाव अनुभाव संचारी अस्थाई भवो रस बरननम् नाम पंचदशमो मयूपः॥ संवत १९११ लिपतं देवी दीन कायस्त मरौरा निवासी॥

संख्या २७० ए मानस दीपिका, रचयिता—रघुनाथ दास (अयोध्या), कागज—देशी, पत्र—५२, आकार—१२ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३००, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि-नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३, प्राप्तिस्थान—श्री जयराम सिंह, ग्राम—महमूदाबाद, तहसील बिसवाँ, ज़िला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ मानस दीपिका लिष्यते॥ मानस दीपिका॥ श्री गणेशायनमः॥ दो०॥ गजपति सिव पति गौरि पति गौरि प्रभा पति पाय॥ वंदौ वंदन जगत के चंदन लौं सुखदाय॥ दुरित दोष दूषन दलन जासु नाम भव सेतु। ताहि सुमिरि टीका रचित काशिराज गुरु हेतु॥ १॥ या सभा में विचार भयो पंडित अरु कविन सों श्री गोसाईं जी राम कृत रामायण ग्रंथ बहुत विख्यात है अरु याको तिलक बहुत महात्मों ने किया है॥ बाबा राम चरन दास अयोध्या निवासी। संत सिंह जी कार्डार ॥ राजा गोपाल सरन सिंह बकार अरु स्वामी जी महाराज वर्तमान काशी के निज गुरु श्री विद्यारण्य तीर्थ स्वामी जी के नाम से रामायण परिचर्या बनाया सो अति संक्षेप मे सब को ज्ञान नहीं होत ताकी भाषा विस्तार किमो जाय अरु प्रथम उपोद्घात मैं रामायण का ह्रै प्रकार को संदेह वर्णन कियो चाहिये एक सत्यता में दूसरो प्रसंग के भेद मों एक सत्यता पूर्वक बुध मों जाय अरु स्मृति श्रुति ग्रंथांतर का प्रमान न लिख्यो जाय हेतु लिखा ग्रंथ को सब कोऊ देखिगा यातें श्री गोसाईं जी के ग्रंथन को प्रमान दियो जाय।

अंत—याको बंध—ब्रह्म पास मंत्रन अरु पाता हरै पाप कहे बेद पुराना।
त्रिष्टुम ५४—भव भव विभव पराभव कारिणि।

अत—वार्ता छठे प्रकाश में कोष अंग करके विषम पदन को मुख्य अर्थ उद्धार कियो सप्तम प्रकाश में विश्राम अंग करके नाटक रीति भाव प्रधान से रामायण जू कथा भाग ते सगुण प्रति पादक औ अंतर आसय तें परमारथ पक्ष मत्यत्व प्रति पादक यह निरूपण कियौ औ प्रसग के भेद में देवतन को अभेद जनाय के अनत शक्ति प्रभु में सब अविरुद्ध जानो चाहिये और कलयुग व्यवस्था इत्यादि सम दरसायो और प्रथम लिख आये तो मुख्य अर्थ है सो यही अक्षरन सों ज्ञात है और जो शका करत है यह जो सप्तम अंग लिख आये याते प्रगट बोध होइगो। येतहु में जो शका करै तहा प्रमाण ॥ चौ० ॥ एतहु पर जो करै शकामोहिते अधिक ते जड़ मति रंका ॥ इति ॥ दो०॥ करि प्रसंग के अंग ते हरि यश हेतु जनाय। यथा ॥ भानु समता लिपैं खद्योतो गति जाय ॥ रामायण सरसिज सरिस चहियतु भानु प्रकाश। यह प्रसंग खद्योत इव किमि करि सकत विकाश ॥ रामायण के अर्थ को को समर्थ मतिवत यथा सिंधु पग चोच भरि ताही लहत नहिं अत ॥ को तुलसी भाषा कवन कौन वेद को सार। कौन कोष तिहि तिलक को चाही करत गवार ॥ मत्सर मद माया मदन मारे मान मरोर। रामायण जाने कहा परधन पर तिय चोर ॥ कवि कोविद रघुवर भगत मागन मान सुजान। की सन सिंधु गंभीरता मदिर गिरि पहिचान। मानस पारावार को पार तार को जान। मदिर गिर बूड़त जहा मम मति की परमान अष्टादश पठ सहिता या मल तंत्र विचार धर्म नीति श्रुति सागरहिं तुलसी कृत विस्तार ॥ इति श्री रघुनाथ दास कृत मानस दीपका टीकाया विश्राम अंग सप्तम ७ प्रकासः सवत १६३० कार्तिक शुक्ला एकादशी शनिवासर ॥

विषय—शरीर को रामायण और शरीर से सबध रखने वाले काम क्रोध मोह लाभ अहकार ज्ञान वैराग्य मन आदि राम रावण कुभकर्ण मेघनाद आदि मानकर रामायण का नाटक वर्णन किया है ॥

संख्या ३७० डी. भक्तमाल महात्म, रचयिता—रघुनाथदास जी रामस्नेह (तुलसीवाडा अयोध्या), कागज—आधुनिक, पत्र—८, आकार—१२ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल-लिपिकाल—सं० १९१४=१८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री प्रभुदयाल अवस्थी, ग्राम—मुंशीगज, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ श्री भक्ति माल को महात्म लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री श्री पति निज मुष कहे भक्तन के गुन गाई। दुर्वासा प्रति जगक्त में रह्यो सुजसु सोइ छाइ ॥ १ ॥ मै जन के आधीन हौं सुनु दुर वासा वात। साधुन उर माहि। मोविन अपरन जानते हमहू तिन विन नाहिं ॥ ३ ॥ येक सत महिमा अधिक को कहि पावै पार। ऊव नाभ भला रची ताहि सुनहु उरधारि ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ माला भक्तन की सुखदाई। रचीनारायन दास सो हाई ॥ लागी स्यामहि बहुत पियारी। गोविन्ददास कंठ निजुधारी ॥ भक्ति माल जो सुनै सुनावै। सो रघुनदन का अति भावै ॥ अच्युत कुल जाकी मति रागी। भक्त सुकृत सो होत विभागी ॥ भक्ति माल जो पोथी पावै। ताकी सकल अविद्या जावै तेहिपर एक सुनहू इतिहासा, द्वीज यक रहै नर्वदा पासा ॥

अंत—दो० वकता जो मुष ते कहै श्रोता माने सोई। तव पावै रस कथा को नाहित

सुप नहि होइ ॥ १ ॥ हरि हर जन गुनगा सुने जो जन नर तनु पाइ । ते नर पसु समान हैं वृथा धरी नर काइ ॥ १ ॥ हरि हर जन गुन कहत में विघन के जो कोइ । कहे संत रघुनाथ तेहि हुइै न्याकंधर होइ ॥ १ ॥ बाल बिरध नर नारि जो सुनै कथा मनु लाइ । इहां रहै आनन्द मैं सोहम जमपुर जाइ ॥ १ ॥ श्री गुरु वंशी दास के चरण कमल धरि माथ । भक्त महात्म की करी चौपाई रघुनाथ ॥ दोहा ॥ भक्ति भाव का ॥ हरि प्रापति की आस तौं हरि जन के गुन गाइ । मातह सुहृद सूखे बीज ज्यों जन्म जन्म पछिताइ ॥ १ ॥ भक्ति दास संग्रह करै कथन भजन मनमोद । प्रभु को प्यारो पुत्र ज्यों बैठे प्रभु की गोद ॥ १ ॥ इति श्री भक्त माल महात्म संपूर्ण ॥ संवत ॥ १९१३ ॥ लिख्यते रघुनाथ दास रामसनेही जो बांचै सुनै ता को सीता राम ॥ श्री सीता राम ॥ राम राम ॥ राम ॥

विषय—नाभादास कृत भक्तमाल महात्म वर्णन प्रथम पुस्तक का महात्म पृष्ठ १ एक द्विज सुमर प्रभ का इतिहास जो नर्मदा जी के तट पर रहता था उसका वर्णन है । यह विप्र द्वारिका से वापस आकर मथुरा में रहा । वहां अग्रदास नाभा जी रहते थे । उसस्थान पर गोविन्द दास माला करते थे वहां पर उस ब्राह्मण ने उनसे भक्त माल पढ़ा बड़ोपर अपने स्थान को चला मार्ग में एक भील ने उससे मार कर पोथी छीन ली । पोथी के प्रताप से उसे ज्ञान हुआ तब छोड़ि व भाभी वह भील दुःखी होकर भक्तमाल वाणी के उपदेशानुसार उस मृत ब्राह्मण की खोज को आकर और उससे भक्त माल सुना कर जीवित करता है इस प्रकार इसमें भक्त माल की महिमा (महात्म्य) आदि का वर्णन है ।

संख्या २७१ ए. आनंदाम्बुनिधि, रचयिता—राजा रघुराज सिंह (रीवाँ) कागज—साधारण, पत्र—१९९, आकार—११ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४११८४, पूर्ण रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—सं० १९११ = १८५४ ई०, लिपिकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह रईस तालुकेदार (रमेश पुस्तकालय), डाकघर—कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा बहादुर श्री कृष्ण चंद्र कृपा पात्राधिकारी रघुराजसिंह जू देव कृत आनंदाम्बु निधि लिख्यते ॥ सोरठा ॥ जय हरि पद भर विंद मकरन्द आनन्द कर । भ्रमत सुजस मकरंद, कुमति कृतता ताप हर ॥ १० ॥ छंद—श्री नव मंगल कमल पद मन कमल जगत के । सीयो स्वाद विधि संभु पंच मुनि लोप भुवन के ॥ भ्रमत पाल भव सिंधु पोत सेवहि सुर मुनि गावैं । जाकी सेवा छांडि मनुज मुक्ति न पावैं ॥ कुकि कुमति अमरान सरन भक्ति मान सुर मद रत । अनाम छरन आनद हरन पंडी श्री यदुबर चरन ॥ दोहा—तजि सुर दुर्लभ संपदा पितु मातन धरि सीस । जिन कीन्हों बन को गमन जयति राम जगदीस ॥

मध्य—भागवत दशम स्कंध, पूर्वार्द्ध, पृष्ठ १०४ व १०५ नीचे का बनाय सीस रोक भरि स्वांग किया सुनिये अधर बिंब कंरम भरो दै गात । बैन जलधार बहि उर लगि आय हात कुंकुम को पंक करि तन ताप ने सुभात ॥ जली विरह ज्वाल उठी नील मन भस्म पसरी अवनि पग नख दुख अधिकात । भाभो कही नहीं माई मग ह ममाय आपे प्यारे

को विहाय नाहिं अनत चलत जात ॥ १ ॥ सुधारस साने सदा वचन बखाने जिन तिनके बदन सुनि निकसी कटुक बानि । करतीं विचार प्रान प्यारो नंद को कुमार जाही के लिये ही हाय छोड़ि दीनी कुल कानि । रघुराज सो तो मन सखिन समाज मध्य धन की न लाज कीन्हीं उर निठुराई आनि । तिनके तकत ताते तरनि तनूजा नीर त्यागिहैं तुरहि तन तीखन तपहिं तानि ॥ २ ॥ दोहा—भीजि दृगन गदगद गरो पुनि कछु उर धरि धीर । गोप सुता अनुराग भरि बोली गिरा गभीर ॥ गोप्य उक्ति. कवित्त सवैया कोमल अबुज आननसों अस बैन कठोर पुलै यहि कालन । छोड़ि सबै कुल कानि गहे हम रावरे के पद कंज रसा-लन ॥ स्वामि हूँ सेवक की रूख राखत तू कस त्यागत नंद के लालन । बेनु बजाय बोलाय छली अब देत दगा सिगरी ब्रज बालन ॥ ३ ॥

अंत—द्वादश स्कंध, पृष्ठ ८६ पितु बिसुनाथ चरन सुख गाथा । बरनहु हाथ जोरि धरि माथा ॥ जिनके चरनन रही सदाहीं । मही महीप मुकुट मनि छाहीं ॥ कवि कोविद कल्प-पद्रुम जोई । सज्जन सरसिज सविता सोई ॥ धरनी में ध्रुव धर्म अधारा । नीति निपुन धर्मज्ञ उदारा ॥ ज्ञान विज्ञान वार निधि सांचो । रघुवर चरन कमल रति राँचो ॥ दानन दारि दवन को पावक । विरचक उक्ति जुक्ति सर नावक ॥ हंस सरिस पालक परिवारा । अधरम उरग हेत धुनि धारा ॥ सुहृद कुमुद-गन ससि सुख दायन । सरित द्वैत मन सैल सुहावन ॥ रघुपति रस रतनन को आकर । जन अज्ञान तम हरन दिवाकर ॥ सुभगत जल चर जल विधि भारी । दातन तरु कानन सुख कारी ॥ सूर पुरुष गिरि मध्य सुमेरा । सील विहँग को थान बसेरा ॥ कीर्ति चन्द्रिका चारु चद्रमा । दुर्त विघातक करन भद्रमा ॥ एक मुख मैं किमि कहि सकौं । पितु बिसनाथ प्रभाउ । जासु कृपा ते सोहु सम, रच्यो ग्रंथ भरि चाउ ॥ सुद्ध असुद्ध भयो जो होई । सुमति सुधारि लेहु सब कोई ॥

× × × ×

जय रघुपति जदुपति जयति, रघुनंद जदुराज । सो मन आपने बस करहु, विनै करत रघुराज ॥ इति सिद्धि श्री मन्महाराजाधिराज श्री बाँधवेश विस्वनाथ सिंहात्मज सिद्धि श्री मन्महाराजाधिराज राजा बहादुर श्री कृष्ण चन्द्र कृपा पात्राधिकारी रघुराज सिंह कृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादस अस्कंधे त्रयोदसस्तरंग. ॥ १३ ॥ समाप्त । सुभमस्तु ॥

विषय—भागवत के बारहों स्कंधों की कथा जिसमें बीच बीच में हरिवंश, महा-भारत आदि के भी आख्यान जोड़े गए हैं । यह १९९८ पृष्ठों का विशाल ग्रंथ है ।

मंगलाचरण, कृष्णरामादि स्तुति, संत वंदना, कुछ संतों की कथा राम प्रपन्न का रीवाँ नगर आगमन, रामानुज का रीवाँ नगर आगमन तथा रघुराज को दीक्षा देना । "रीवाँ नगर नरेस प्रभु, नाम जासु बिसनाथ । सो चाहत दरसन करन, चलि तहँ करिय सनाथ ॥ सुनि रघुवर प्रपन्न के बैना, आयसु दियो नाथ मुद बैना ॥ नृपति नगर गमनहुँ मैं नाहीं, पै नृप प्रेम सोच मन माहीं ॥ रीवाँ नगर विसेषि सिधैहों, भक्त भूप को दरसन देहों ॥ अस कहि कर दाया मम नाथा, आय सबन दीन्हों मुद गाथा घर हरि मदर लछिमन बागा बसे तहा श्रुत हरि अनुरागा ॥ पित गम जाइ दरस तहँ लीन्हे, मम हित विनय वचन कहि

दीन्हे प्रभु प्रसन्न है यह सुभबानी । तुव सुत कहँ यहि मत मत ग्रामी ॥ विधि पूर्वक पक्ष ज्ञित करिहौं । है हरिमेव मोद उर भरिहौं ॥ संवत् अष्टादश सते अष्टानवहि को साल । कातिक सित एकादशी दिय मोहिं मंत्र रसाल ॥

ग्रंथकार के गुरु प्रयाण का समय —रुद्र पद ससि संवतै माधव मास अमुंठ । अक्षय तृतीया को गये, श्रीहरि गुरु वैकुंठ ॥

ग्रंथकार वंश परिचय :—ग्यारह सै तुरित मे ब्रह्म ते मम बंस । सो विस्तृत बंसा वली मैं कवि कियो प्रसंस ॥ मैं संक्षेप कहि कहत हो प्रत मंगल हेत । जिनके पुण्य प्रताप से पायो मोद निकेत ॥ बीरध्वज व्याघ्र करन सोहाग देव संगराम सिंह भा विश्वास दव जानिये सोमक बनीक देव बलदेव दल कैंद्र मलकन्न कुमार बरियार मानिये ॥ सिंह देव अँगोदेव नरहरि भैद दव त्यौ साकि बाहन थिर सिंह देव गानिये । बीरभान रामसिंह वीर छन्द्र विक्रम जू अमर अनूप भावसिंह को बखानिये ॥ दोहा—भावसिंह महाराजके अनुरुधसिंह सुजान । श्री अनुरुध महाराज के श्री अवधूत महान ॥ महाराज अवधूत के श्री अजीत बल धाम । श्री अजीत महाराज के श्री जयसिंह सुजान ॥ भइराजो जेहिधर्म को भयसीं पुजा महान । जेहि गनमत गोविंद पुर गंग लियो भगवान ॥ महाराज जयसिंह के धर्म ज्ञान जग धाम । महाराज नृप मुकुट मनि विश्वनाथ अद्धमान ॥

× × × ×

ग्रंथ कर्ता के पिता के ग्रंथों की सूची :—राम सुजस पावन मन भाये । पै ते सुन्दर ग्रंथ बनाये ॥ विनै माल आनंद रामायन । गीतावली नाटकी पावन ॥ कृष्णावली सुभारग टीका । सांत सतक कृष्णाष्टिक नीका ॥ श्री रघुनंदन गीत सुभासा । ताथ प्रकासहु ब्यंग प्रकासा ॥ ग्रंथ विश्व भोजनहु प्रकासा । वैदिक विश्वनाथ परकासा ॥ धर्म शास्त्र अरु बीजक तिलकै, राजनीति हूँ विरच्या भलकै ॥ हनुमत पैंतीसी रच्यो और विचार सुधार । धनु विद्या आराम विधि सालग्रोत्र सुपन्सार ॥ नारद परम प्रबोध विधि ये ते भाषा ग्रंथ । विरचि बनाये पहुमि पर के सिगर सत पंथ ॥ ये ते ग्रंथ संसकृत जानो । प्रथम सर्व सिद्धांत बखानो ॥ राधावल्लभ भाष्य सुहाई, रामाष्टिक विरच्यो सुपदाई ॥ अति सुंदर संगीत रघुनंदन नाटकहु आनँद रघुनंदन ॥ रामायन अरुपात्म हितलेकै, तिलक वाल्मीकी किय भल कै ॥ तिलक भागवत को अति भारी, विरच्यो बरनत जिन्ह बिहारी ॥

× × × ×

"सोलहस ठै पेंतालीस संवत् कातिक मास ।" महाभागवत जनक मम जो मम जनक सुजान । जिनक चरन प्रताप बल ग्रंथहि कह्यो बखानि ॥

ग्रंथ के निर्माण में सहायता देनेव लो की कृतज्ञता प्रगट करना और उनके नामादि का निर्देश :—दक्षिन आदवादि के बासी । अति सुसील सुंदर मति रासी ॥ जिनका नाम अनंता चारी । तिनके पुत्र नृसिंह चारी ॥ रंगाचारज पुत्र हैं तिनके । सील सुभाव अनूपम जिनके न्याय वेदान्त व्याकरण आदिक । मक्स साख व्याता मरजादिक ॥ अति पंडावतार

परकाला। तिनके पुत्र सुबुद्धि विशाला॥ करि दाया रीवा पगु धारे। भये सहायक आय हमारे॥ मोहनार्ज के शिष्य महाना। रामचन्द्र पादार्ज सुजाना॥ तासु शिष्य श्री अवध निवासा। नाम तासु रामानुज दासा॥ दो० :—रतन सिंहासन के विमल, सोई महंत परवीन। रामायन अरु भागवत, मोहि पढ़ाय जो दीन॥ वेदान्त शास्त्र के ज्ञाता। शील सुभाउ प्रभाउ विख्याता॥ तेऊ कृपा करि भये सहायक। मोको अति आनंद के दायक॥ जिंदा राम नाम जिन केरो। सकल प्रधान प्रधान निवेरो॥ ठाकुर सम पुत्र भो तिनको। रामनाथ नंदन भो जिनको॥ राम भक्ति सुभ बुद्धि उदारा। करत सकल रस काव्य अपारा॥ मेरे पितु को तीजो मंत्री। विद्यमान है धर्म निजत्री॥

लेखक परिचय :—है ताको नंदन हनुमाना। सोई लिख्यो यह ग्रंथ महाना॥

ग्रंथ निर्माण काल :—संवत औनइस से ग्यारह को साला। पूस मास गुरुवार विसाला॥ कृष्ण पक्ष दसमी सुखदाई। धन की जय सक्रांतिहु आई॥ आनंदाम्बु निधिहि सुभ ग्रंथा। जो सतत संतन मत पथा॥ तब यह ग्रंथ समापति भयऊ। मन वाँछित पूरन है गयऊ॥

ग्रंथ निर्माण का स्थान :—भयो समाप्त ग्रंथ बड़ भागा। बैठे सुभथल लछिमन बागा॥

ग्रंथ वर्द्धन कथन :—हरि वंसहु अरु भारत आदी। औरहु बहु पुरान मरजादी॥ गर्भ संहिता अग्दिक केरी। कथा रची जो जो मति मेरी॥ कहुँ कहुँ तेहि संबंध विचारी। सुनहु सुमति यह विनय हमारी॥ मैं अति करिके मनहि ढिठाई। जो कछु बन्यो सो दीयो बनाई॥ बस अस मन में अहै भरोसू। हरि जस गन कोउ करी न रोसू॥ ग्रंथ पढ़ने वालों को अनुवादक का प्रणाम कथन।

—इति—

संख्या ३७१ बी. रामस्वयंवर, रचयिता—रघुराज सिंह, कागज—आधुनिक, पत्र—४८०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४००, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, लिपिकाल—सं० १९५० = १८९३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदयाल, ग्राम—रफारा, डाकघर—ईसानगर, जिला—खीरी।

आदि—श्री॥ अथ राम स्वयंवर लिख्यते॥ श्री गणेशायनम॥ दोहा॥ परते पर कारणहुँ कर कारण पुरुष प्रधान। पर विभूति पर विभव प्रभु जय यदु पति भगवान॥ जग सिरजत पालन हरत जाकी भृकुटि विलास। वसत अचंचल जेहि रमा जय जय रमा निवास॥ सुर गण नर गण मुनिनगण हरत विघन गण जोय। एक रदन शुभ सदन जय मदन कदन सुत सोय॥ कवित्त॥ तेरई भरोस भरो भव में न भीति भाऊं भाषि भाषि भूरि भाव रसना न हारती॥ भेद त्यों अभेद हाव भावहू कुभाव केते भावक सुबुद्धि यथा मति निरधारती॥ तेरिये भलाई ते कविताई भाई माई मति पाई कौन जापै ना निहारती॥ हारती न हिम्मत पसारती सु किम्मति संभारती सुसम्मति जे वदे तोहि भारती॥ सोरठा॥

इह दत शुकदेव व्यास सुवन वैराग्य बपु। जे जन कृत तुव सेवतिनहि परागत भव न भव ॥ प्राचेतस बाल्मीक जगत सुकवि रवि आदि कवि, जगत काव्य जेहि लोक चतुरानन ते आदु लौं ॥ जय जय तुलसीदास रामायण जिन निर्मयो। जासु प्रभाव प्रकाश रसिक होत वांछित जपत ॥ कृष्ण चरित रस पूर मनो सुर कलि सूर कवि। जासु भनित रस मूर होत दूरि मुनि क्रूरता।

अंत—भयो राम मद् गर्भ अति चंचल बुधि कुसंग ॥ जो कछु होत भलो कबहुं सो प्रभाव सत संग ॥ चौ० ॥ मोहिं सम आनि परत जग माहीं। राम सरिस कृपाल कोउ नाहीं। मोहि सम अघी अपावन भुपते। राम स्वयंवर विरच्यो नृप ते सज्जन सुमति सुसील सुजाना छमहु मोर अपराध महाना ॥ कहीं सत्य करि राम दोहाई। रच्यो ग्रंथ केवल रघुराई। आनंद से बुधि ग्रंथ सोहावन। मी नृप रच्यो पतित के पावन। रसिका बली सु भक्ति विलासा औरहु ग्रंथ सुधर्म विलासा। संभु सतक जगदीश सतक वर सुभग सतक रघुपति धुनयाकर ॥ सुंदर सतक सतक धुनि गंगा। भीक्षा चलपति सतक प्रसंगा ॥ चित्रकूट महिमा अति भारी। त्यों रुकमिनि परिणय मन हारी ॥ पद्मावली रघुराज विलासा विनय पत्रिका विनय प्रकासा ॥ रुचिर राज रंजन सुर वानी। लघु बड़ अष्टक जौन बखानी ॥ जानहु नहिं मम रचित सुग्रामा निर्मोल्यो यदुवंस प्रधाना ॥ दो० ॥ पतित दीन मोहि जानि। अति पावन पतित कृपाल। मो रसना ते नाथ ही निरमे ग्रंथ रसाल ॥ सोरठा ॥ जय जय जय यदुनाथ सांचे नाथ अनाथ के। मोहि करि दियो सनाथ राखि माथ मई हाथ निज ॥ दो० ॥ राम स्वयंवर ग्रंथ को जो बांचै मति धाम। परसि चरण तिनको करत अब रघुराज प्रनाम ॥ इति श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा बहादुर रघुराज सिंह जू देव कृत राम स्वयंवर समाप्त संवत १९५० वि० श्रावण कृष्ण पञ्चम्याम् ॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

विषय—"रामस्वयंवर", अंत में कवि ने उन उन ग्रंथों के नाम लिखे हैं जिनकी सहायता से ग्रंथ रचा है।

संख्या ३७२ ए. विश्राममानस, रचयिता—रघुनाथदास (अयोध्या), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—६ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९६, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य और पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९३० वि., प्राप्तिस्थान—पं० राम चरण जी, ग्राम—मुहरापुर, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ मानस विश्राम लिख्यते ॥ विश्राम नाम धरयो ताको हेतु। दोहा। विषय ताप आकरा महं मन मरका जिमि चंग। यहि भू उपर विचार मग प्रेरक कर थिर अंग ॥ अथ रामायण के परमार्थ पक्ष की विचार ॥ दोहा ॥ रामायण द्रुम मोक्षफल गायत्री गड बीज राम सुरक्षा अंकुरित अंदमूल द्रुमबीज वेद अंग पर पुरुष श्री दशरथ तन बढ़ धारा। वाल्मीकजे वेद मा रामायण अवतार। कुंभज मुनि निज संहिता माहीं कह्यो अनूप। रामायण अरु वेद की भिन्न न जाना रूप। षट्मासा बरग्रंथ मैं कीन्हों बड़ विस्तार। वाल्मीक तुलसी भये कुलिस बीज निस्तार। वेद मूल द्रुम से चली कथा भूमि के द्वार। भवन ज्ञान तरंगिणी बाब अमल सुषमार ॥ वार्ता ॥ यानें गूढ़

अंत—प्रथम काल एकै रह्यो वहु विधि किमि ह्वै जाइ। जुग सूछम स्थूल सुत मुत एकै दरसाइ॥ आयगत अकन देखो एकै नवीन गिन जाइ दशा फिरि शून्य परेपो, डोल यन्त्र इति वेद जुग कालहि अतर खोल पितामह एक में कवहु जुगंतर। श्री स्वामी जी कपट ब्रह्मी प्रभु चार जुगुन के सतजुग ब्रह्मा चहु मुप चारो वेद रहे। त्रेता द्वापर विश्नु जीव आनंद लहे॥ रुद्र आइ कलि ह्वै कै चौदह भुवन दहे। जीव लहा विश्राम जहा अस भाव अहे॥ मुपते विनु साधन जे निर्मल ज्ञान चहै सो कलि के दोषन को नित मन लार गहै। गुण में कलि को रूप लोक विपरीति कहै। देव दया विन कैसे वेऊ गुणहि गहै। अव कलजुग आवा घट घट पातक छावा। कलि को प्रथम चरण जिन जानों द्वापर अघ कोहै चरण वपानों॥ प्रथमहि को तिसरो करि मानों चौथो दड पजावा झूठ पपड अकर्म अदाया। पाप चरण को चौवल खाया। चरण धर्म को एक वचाया। साई वीज वनावा। ज्ञान जोग जिव लेह पराने धरम करम के रूप हेराने॥ कलिके उर साधन कह राने। नामै पार लगावा॥ नाम प्रताप क्षेत जाग। जाके उर कलि को तम भागा॥ वादत देव चर्ण अनुराग॥ जासो यश श्रुति गावा। वहुत जन्म इत्यादि लिख आये जीव के जन्म नाही होत और चारि अवस्था में जन्म रूप भेद पाया जात है। लक्ष योनि जन्म परमित कियो सो संस्कार को काल को धर्मन को मुष्य जानवो साम आयो। दो०। मान युक्त मानस सुपद शका रहित उदार। वोध रहत निज मोह वस शका करत उदार। मानस मान अनेक युत मानी मनगम औहि मन साहस संकावली छमव साधु महि माहि। इति सप्त कांड शब्दावली सक्षेप सवत १९१० लिखत जै नायण मिश्र राजवाट वनारस जेष्ट दशहरा। शुभम्

विषय—रामायण के वहुत से पदों में जो शंका उत्पन्न हो जाती है उसका समाधान किया है।

संख्या ३७३ वलभद्र प्रकाश, रचयिता—रामकवि (जगदीशपुर), कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—९००, पूर्ण, रूप—गलित, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९३ = १८३६ ई०, लिपिकाल—सं० १८९९ वि०, प्राप्तिस्थान—महाराजा प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनम॥ अथ सर्व सग्रह लिष्यते॥ दोहा॥ कारन सव सुप दास के वारन वदन तुम्हार। विनती मन वहु ग्रंथ रचि करियो सुमति विहार॥ आयसु श्री वलिभद्र करि मल्लापुर आधीश। रैकवार कुलकलस सो नित राजत विस्वावीस॥ सर्व सग्रह सस्कृत भाषा भाषत राम छमि अपराध हमार यह कवि कोविद अभिराम॥ इतै वरनि प्रभु वश पुनि वहुरि राम कवि वंश। सर्वे संग्रह ग्रथ पुनि करहि मनीष प्रसंस॥ सकल वश वरनन कियो रैक वार को राम। श्री दल जीत प्रकास में जानत मति अभिराम॥ छमि अपराध हमार यह कवि कोविद अभिराम। रैकवार कुल कलस ह्वै राउ जो वर्त्तो सिंह भैरव हैं पानि छानि वहु धरा धरम की रीह तासु सुवन दल जीत भौ जग में अरि दल जीति। पृथ्वी को प्रति पाल करि जानत सव मै रीति॥ तासु सुवन वलिभद्र भौ वलिभद्रै अवतार गुण गण आलंकृत सकल जगत विदित सरदार॥ कवित्तु॥

सतोकमय पद ॥ तबहि कमठ मुनि जात कीस कुमि जात न जर पुर। तबहि राम गह भारि कमन बस होत न भर भर तबहिं रहे पग कोरि कोरि नहि बसत सुवन वन। तबहीं भरि सब कोरि कोरि भरि अनु मु कम कम ॥ तबहि समुन्न बल उठवत कमठ सूर तर कई भस्यो महा राव बलिभद्र न तब जब रिन करि दुप बर कस्यो ॥

अंत—तेहि के चार्य पास का अमृ कोक परकासु चल नाम पर्वत जान भागवत मत परवान। जो होत सूर्य प्रकास सो कोक कहि कवि बास। अलोक कहत सुजान रवि तेज रहि ससमान ॥ तेहि के मध्य बती पे इतसाह उच गनीस तिलमोह चाकत जान। भागवत मत परवान ॥ तिहि भाषि के नीह जाति सूर्यादि के की कांति पर अंत ध्रुव लौं जान लई जान किरनि न मान। सुसुमेर के चहुं ओर। सातेइ बारह कोटि जोजन सु कहि कवि कोटि तिलमोह चाकल जान। तेहि वेह ऊपर मान। चहुं दिसन मांह बखान। दिगु दिगाज कह जान यक रिप मसामस इंद पुष्कर द्वितीय अनंत पुनि चंद तीजे जान। बालिम चौथ बखान। अपराजिता कहि और। भागवत मत सिर मौर ॥ लोका चलै परवतहि के ऊपर हिम इस नाहि। तिहिके चार्य पास। भगवान विष्णु विलास ॥ है वया सहित सुजान सब लोक रहा मान ॥ दो० ॥ लोका लोक सु चलहिं पर बसहुं सब बुधिवान। जाताम्बरनि विशुद्ध गति है यहि सकल पुरान ॥ अंड मध्य गति सूर्य बखान सूप बखान देवा भूम्य धरंतर मान ॥ सूर्यो अंड मोल इमि जान मध्ये कोमसतु बुधमान ॥ पंच बिंसति अधिक सुजान ॥ श्री भागवते मत पर मान ॥ समइ सर्वमाम यह भन्यो। संस्कृत तै भाषा कन्यो श्लोक अंड मध्यगतः सूर्यो देवा भूम्यो सहन्तर सूर्योहि गोकयो मध्य कोम्य स्यु बिंसति। सूर्यमहि विर्मम्यते दिसन दोर्महीमिश वा स्वर्गीन वर्गो निरयार सौ बीसच सर्वसः इति श्री विविधि विधि भूपतावां रैकवार बंसावतंस मल्लापुराधीस सकल गुण गणालंकृत श्री महा राव बलिभद्र प्रकास सर्व संग्रह ग्रंथ राम कवि विरचितायां समाप्त शुभ मस्तु संवत १८९९ कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे नवम्यां तिथौ शुक्रवारे महाराज-कुमार भैया भगवंतसिंह पठन अर्थ लिप्यते ॥

विषय—ब्रह्म, पृथ्वीखंड, वेद, पुराण आदि परिमाण पृथक पृथक वर्णन।

संख्या १७ट वैद्यक सार संग्रह, रचयिता—राम आमरे, कागज—देशी, पत्र—११७, आकार—१३½ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२२७, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९१०=१८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सिद्धिनाथ वैद्य, ग्राम—कुमैत गंज बाबकी, ज़िला—सुलतानपुर।

आदि—श्री गणेसाय नमः ॥ अथ वैद्यक सार संग्रह लिप्यते ॥ अथ तौल प्रमाण ॥ जो छिद्र में सूर्य की आभा स रजन कण देख पड़ते हैं उसके तीसर भाग को परिमाणु कहते हैं ॥ छ० अंसी की एक मरीच छः मरीच का एक राई ३ राई की एक सरसों आठ सरसों का एक जौ चार जौ की एक रत्ती छ रत्ती का एक मासा ४ मासे का एक शाण इसको धारण और टंक भी कहते हैं २ टंक का एक कोल इसी को क्षुद्र, बदर, दंसत कहते हैं २ कोल का कर्ष होता है इसको पानि, मध्विका, भी अक्ष, पिचु पानि तल किंचि स्थान विंदुक विडाल

पद्क गोइर्प कर मध्य हम पद् सुवर्ण क्वल ग्रह और उदर कहते हैं ये सब कर्ष के पर्याय है दो कर्ष का अर्ध पल सुक्ति अष्टम का भी कहते है दो सुक्ति का एक पल और कुष्ट अम्र चतुर्थिका प्रकुच पोटली विल्व कहते है ये पल की सब पर्याय है और दो पल की एक पृस्तति दो पृस्तति की एक अंजली कुडव अर्ध शराव कहते हैं और अष्टमान भी कहते है दो कुडव की मनि का शराव अष्टै पल कहते है दो शराव का एक पृस्थ संज्ञा दो प्रस्थ वा आढ सरवा वा ६४ पल की आढवीं सज्ञा है इसे भोजन और कांस पात्र भी कहते हैं ४ आढक का एक द्रोण इसके सात नाम है कलश, नलवल, प्रश, उन्मान, घट, राशि, और द्रोण का एक सूर्प कुम चौंसठी शराव कहते है दो सूर्प की एक द्रोहणी और वाहू और गोणी भी कहते हैं ॥

अत—स्वेत कुष्टपर। पीरी चमेली कसीस वाय विडंग मैन सिल गौरोचन मेधा नोन ये सम भाग गौमूत्र मे पीस लेप करैं तो स्वेत कुष्ट जाय या गौरोचन वच कूट पीपरि पंवार के वीज इनको वछिया के मूत्र में पीस गोली वाधै और पखाव ही में लगावै स्वेत कुष्ट जाय ॥ वा वकुची अमल वेद लाम्र कठ गूलर पीपरि रसौत लोह चूर्ण कारे तिल ये गौके पित्ता में लेप करै तो स्वेत कुष्ट दूर होय ॥ अथ पेट पीर पर नाभि लेप। मैन फल कुटकी काजी मैं पीस कुछ गर्म करि नाभि पर लेप करै तो पेट पीरा हरै ॥ इति श्री वैद्यक सार संग्रह राम आस्परे कृत सपूर्ण समाप्त लिपत शिवराम तन वैद्य स्वपनार्थे संवत १९१० वि० ॥

विषय—वैद्यक।

सख्या ३७५ ए. कादंबरी, रचयिता—रामचंद्र वसु, कागज—देशी, पत्र—६४, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान - श्री हनुमंतसिंह, ग्राम—टुनिया कलाँ, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री परमात्मने नम ॥ श्री गणेशायनम. अथ कादंवरी लिप्यते ॥ असाधारण धी मान और अतुल श्रीमान सूद्रक नाम एक प्रवल प्रतापी राजा थे और विदिशा नामी नगरी (जहा वेत्रवती नदी वलवती मे वेग वती है) उसकी राजधानी थी राजा ने अपनी वुद्धि और वाहु वल मे ससागरा धरा को वस में लाकर समग्र राज्यों पर सन्नाज्य लाभ किए थे। एक दिन महाराजा जो अपने प्रचलित नियम से मंत्री कुमार पालित और देश देश के नरेश और वडे वडे प्रजा प्रसत्ति लोगों को लेकर सभा में वैठे थे कि उसी समय में द्वारपाल ने आकर कहा महाराज दक्षिणा पथ से एक चांडाल कन्या कि जिसके साथ एक शुक पक्षी सुवर्ण पिंजरे में वंद है द्वार देश पर आई और कहती है महाराज को यदि महारत्नों की खान कहौं तौ भी वखान नहीं होती इस कारण यह विहग रत्न को उनको प्रदान करुगी राजा ने आज्ञा दी अच्छा उसके तहँ लेते आओ। तव प्रतीहारी तुरंत ले आये ॥

अंत—चंद्रापीड़ दीर्घ काल गन्धर्व नगर में अवस्थान करके किसी समय में उज्जैनी गमन का प्रार्थना किया ॥ गन्धर्वाधि पति महाराजा चित्ररथ से अपने तपस्या काल को समाप्त जानकर जामात चंद्रापीड़ को राज्यदान करके आप महिषी के साथ वैवाहिक के पास जाकर तृतीय आश्रम अंगीकार किए ॥ महाराजा हंस ने भी राजा चित्ररथ का कार्य देख कर राज्य पाठ जामात वैशंपायन को देकर सस्त्रीक आप भी तपस्या परायण हुए। तीनो राजा ने अगाघ बुद्धि और अतुल ज्ञानी एक मंत्री शुक नास के सहवास स्वर्ग वास प्राप्त कर परमार्थिक तत्वालोचना में परम सुख से समय यापन करते रहे ॥ युवराज चंद्रापीड़ कभी उज्जैनी कभी हेमकूट कभी गुरु जनों का आश्रम भ्रमण करते हुए सुख और सुख्याति के साथ दोनो राज्य का शासन करने लगे ॥ कादंबरी की सद्गुण और सदुपदेश से अधिकतर सुखी हुए ॥ एकदा कादंबरी विषण्ण वदन से चन्द्रापीड़ को पूछा नाथ अति संपात के अवसान में आप सब दुबारा प्राण पाये परंतु हमारी सखी पत्र लेखा कहां गई ॥ चंद्रापीड़ बोले प्रियसी अभिशाप से जब हम नवीन प्राप्त हुए तो रोहणी हमारे परिचय के लिये पत्र लेखा होकर आई थी ॥ वारम को चंद्रलोक में संदर्शन होगा। कादंबरी सुनकर आनंदित हुई ॥ युवराज चंद्रापीड़ राजा चित्ररथ मवकर राज्य कार्य संपादन करते हुए कादंबरी महाश्वेता और वैशंपायन के सहवास में हास्यभाव और कौतुक प्रसंग में परम सुख से समयादि पाति करने लगे ॥ इति श्री कादंबरी रामचंद्र वसु कृत संपूर्ण समाप्तः लिखितं गिर्धारी लाल पंडित वेसपुर वाले संवत १९२७ जेठ दसहरा को संपूर्ण किया ॥ श्री श्री श्री श्री श्री राम जी सदा सहाय करें ॥

विषय—कादम्बरी की कथा ॥

संख्या ३७५ बी. कादंबरी, रचयिता—रामचंद्र वसु, कागज—देशी, पत्र १३२, आकार—१२ × ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२ परिमाण (अनुष्टुप्)—३१०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामनारायण शास्त्री, ग्राम—नानपुर डाकघर—हमीमपुर, जिला—खीरी।

आदि-अंत—३७५ ए के समान।

पुष्पिका—इति श्री कादंबरी संपूर्ण समाप्तः लिखतं गन्दे लाल नाम दूर्याजा संवत १९२८ माघ पद तिथि ७ सप्तमी कृष्ण पक्ष।

संख्या ३७५ सी. कादंबरी, रचयिता—रामचंद्र वसु, कागज—देशी पत्र—१३२, आकार—१० × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५४१, रूप—जीर्ण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्दू सिंह रईस, ग्राम—असिम पुर, डाकघर—मछरहटा जिला—सीतापुर।

आदि-अंत—३७५ ए के समान।

पुष्पिका—इति श्री कादंबरी रामचंद्र वसु कृत संपूर्ण समाप्तः संवत १९२४ चैत्र कृष्ण प्रतिपदाम्। लिखा राम सिंह स्वपठनार्थ संवत १९३२ वि० माघ शुक्ल पंचमी ॥

संख्या ३७५ डी. कादंबरी, रचयिता—रामचंद्र वसु, कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विष्णु भरोसे, ग्राम—वाटमपुर, जिला—उन्नाव ।

आदि-अंत—३७५ ए के समान ।

पुष्पिका—इति श्री राम चंद्र वसु विरचिते कादंबरी नाम ग्रंथ संपूर्ण समाप्त' लिपत शिवदीन पाडे संवत १९३६ वि० ॥

संख्या ३७६. उपदंश चिकित्सा, रचयिता—रामचंद्र (आगरा), कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, पूर्ण, रूप—दीमक लगी गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—हकीम रामदयाल, ग्राम—मुबारकपुर, डाकघर—लहरपुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ उपदंश चिकित्सा अर्थात् आतशक का रिसाला लिख्यते ॥ अथ आतशक रोग के उत्पति के लक्षण ॥ संसार में गर्मी को इन नामो से बोलते हैं । कोई आतशक कोई उपदश को पिरंग कोई चीतांरी कहते हैं ॥ यह आतशक रोग उपदस वायु का भेद हैं सो बहुत गर्मी वाली स्त्रियों के संग से अथवा उसका संग किसी और ने किया हो वह पुरुष जहा मूते वहा यह भी मूते अथवा उसका किसी तरह भोजन या पाणादिक में संग करें तो वायु अपने कारण से क्रोध को प्राप्ति होकर इस रोग को प्रगट करती है ।

अंत—आतशक पर मरहम ॥ छोटी इलाइची कत्था पापड़ी शीतल चीना सुपारी जली हुई ये सब बराबर ले परंतु शीतल चीनी ड्योढ़ी हो इन सबको खूब बारीक पीस कपड़ छन करके फिर गाय के मक्खन को कांसे की थाली में २१ दफा धोवे फिर उस पिसी हुई दवा को इसमें मिला के चोटों पर लगावै तो बिलकुल आराम होगा कैसा ही घाव हो सब तीन रोज में सूखकर साफ हो जावेंगे ॥ पुन दवाई ॥ अजवाइन दोनो मिलावे टोपी दूर किये हुए अरी पुरानी पारा गुड पुराना वायविडंग ये सब एक एक तोला ले पहिले इन सबको पीस छान गुड़ में डाले पीछे पारे को मिला दो पैसा डबल भर की गोलियां बांधे । १ गोली सुवह दही के साथ खाय आतशक जाय यथा उर्द की धुई दाल आम का अचार गेहूं की रोटी मूग की दाल दूध नहीं खाय ॥ (तौलों के नाम उनका हाल) बहलोली दाम यानी १४ माशे टंक = ३ मासे या ४ मासे वांक दवांज १ दाग यानी ३॥। रत्ती और ॥। चावल दिरहम = ४८ जौंभर मिस्कान्न = ३ माशे ६ रत्ती वा ३ माशे २ रत्ती वाकला आधा दिरम १॥ माशे दाम = १ तोला ८ माशे व १ तोला ९ माशे दिरम = ३ माशा व ३॥ माशा व २ माशा २ रत्ती माशा = ८ रत्ती व ६४ जौं का व ६४ चांवल का इति उपदंश चिकित्सा संपूर्ण संवत १९४० लिपतं रामलाल गुजराती ॥

विषय—उपदंश रोगकी चिकित्सा ।

संख्या १७७ ए. रामविनोद, रचयिता—रामचंद्र, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४००, रूप—प्राचीन गद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७१ = १८११ ई० प्राप्तिस्थान—श्री मनिया मिश्र, ग्राम मुन्नापुर, विलय अजपुर, वर्तमान ग्राम—गंगापुरा, डाकघर—कदरपुर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम विनोद लिष्यते ॥ श्री राधाकृष्णायनमः ॥ श्री शिवायनमः ॥ श्री धन्वंतरायनम ॥ ग्रंथ कर्तायनमः ॥ प्रथम हीं गणेस जी की अस्तुति लिषते हैं ॥ कैसे गणेस जी है रिधि सिधि के देन हारे हैं ॥ गौरी के पुत्र है विघ्न के दूर करने वाले हैं ॥ इसे धरि के गणेश जी कुं नमस्कार करूं हूं ॥ अथ धन्वंतर जी कू नमस्कार करू हू। धन्वंतर के चरण युगल कू नमस्कार है कैसे हैं धन्वंतर जी वैद्य जिनके नाम सेती रोग दूर होय फिर कैसे हैं सकल लोकों को सर्व सुख के देने वाले हैं। अथ ग्रंथ करने वाले पंडितों से विनती करै हैं नाना प्रकार के वैद्यक के शास्त्रों में देखकर राम विनोद यह ग्रंथ अधिक सुगम करूं हूं सकल जीवों के सुख को देने वाला है राम विनोद नाम ग्रंथ ॥ अथ रोगी के वास्ते जिस वैद्य के घर बुलावन आय तिस पुरुष का जैसा लक्षण होय। विचक्षण हाय पंडित होय सुंदर होय सज्जन होय विनयवंत होय ऐसा पुरुष होय सो रोगी के वास्ते वैद्य कू बुलाने जाय वैद्य के आगे आय हाथ जोड़ नमस्कार मीठे वचन कहता भया करै वैद्य के आगे श्री फल रुपया वस्तु प्रसन्न है के धरै और यह कहै कि आप कृपा करिये। वैद्य कू बुलाने वाला पुरुष खाली हाथ न जाय खुशी होय वैद्य अपने घर सूं एक पुरुष के साथ जाय रोगी के घर दो के साथ न जाय ऐसा भया सगुन होय सो वैद्य रोगी के घर जाय ॥

अंत—धाजि शुक्र का उपाय ॥ छोटा बैंगन लेय गऊ के मूत के बीच तीन फाड़ करै तिस बीच आंवला सार गंधक पीस फाड़ में बुरकाय देवै फेर भग पै बांधिये ३ दिन योनि शुद्ध होय। पुनः उपाय वैद्य सर्वस्वाद ॥ भांग के बीज अजमोद मोती ७ मोर सिपा ऊंट कटेली जायफल जीरा सफेद २ टंक लोजै ये औषधि पीस छान कर पुड़िया ७ बराबर की बांधै ऋतु स्नान के पीछे ७ दिन तांई लीजै गऊ के दूध सेती अलोना खाय पीर बूरा भोजन कीजै पुत्र निपजै होय ॥ इति राम विनोद ग्रंथ संपूर्ण समाप्त शुभ मस्तु लिषतं गंगा गिरि गोसाई ब्रह्मावर्त मध्ये संवत १८७१ मिती ११ वैसाष सुदी ॥

विषय—वैद्यक॥

संख्या १७७ बी. रामविनोद, रचयिता—रामचंद्र, कागज—देशी, पत्र—१४५, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८९३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१०२० = १६६३ ई० लिपिकाल—सं०, १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री स्वामी नारायण सर्मा, ग्राम—बगरा, डाकघर—बिल्हौर, जिला—कानपुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दो० ॥ सिधि बुधि दायक हिये गवरीपुत्र गनेस। विघ्न विदारन सुष करन हरषि धरौ प्रननेस ॥ श्री धन्वंतर चरन युग प्रनमि धरि

आनद । रोग नशाय जसु नाम थी सब जन को सुप कद ॥ विविध शास्त्र देषी करी सुगम करों अधिकार । रामविनोदय ग्रंथ यह सकल जीव सुपकार ॥ अथ पुरुष लक्षण चतुर विचक्षण दिव्य नर सुदर रूप सुजान ॥ वैद्य बुलावन आवही मिष्ट वचन कहै वाणी ॥ फल वस्त्रादिक लै करी धरै जो वैद्य हजूर । रिक्त पाणि नवि जाईये दल गिरी तजि दूरि ॥ दोऊ पुरुष संग वैद्य के नवि लै जाइ बुलाइ । एक पुरुष सग होइ चलै तौ वैद्य बुलायो जाइ ॥

अंत—दोहा गुन अनेक इनके अछे तिनकाले लवलेस प्रगट भाषा ए रची बहु प्रकार सु विशेष ॥ अद्भुत ग्रंथ जु एह रच्यो राम विनोद एह नाम । व्याध निकंदन सुष करन कुसल सदा अभिराम ॥ परोपकार किहा किन हुवै किहां किन धर्म निमंत । किहा किन पुन धन मित्र ही किहा किन सोभा चित्त ॥ कर्माभ्यास किन मही किहा किन काम सनेह । करो चिकित्सा चतुर नर निरफल न हुये गेह ॥ उत्तर दिसि पुरसन भइ बनु देस प्रधान । सजल भूमि है सर्वदा सक्ति सहर शुभथान ॥ परदुष भजन के लिये कियो ग्रंथ सुष कंद । चिरं लिग ऐ रह जो सदा जालिगी में रहि नद ॥ इति श्री रामविनोद ॥ मदनमोदन कामेसुर गुटका । कामकुतूहलं गुटी । पुरुष स्त्री स्तभमस्त्र गुटा वेल वंधेज कौंवल बीज नाम गुटी ॥ सिंह वाहनी गुटका धातु छीन कौ उपाय । पुन नामर्द कौ लेप । गत वीर्ज को गुटका । हस्त कर्म का उपाय । पुन वीर्ज वंधेज को लेप । स्तम्भन को लेप, लिग को दृढ करन कौ लेप । विंद कुसावन कौ उपाय । लिग स्थूली करन उपाय । भग सकोचन कौ उपाय । योन पानी करै तिस का उपाय । योन दुरगध ताको उपाय । योन सूल उपाय कुच कठिन प्रफुल्लत उपाय । कछ विलाई थनैला ॥ स्त्री पुष्य आवन का उपाय । रितु गमन उपाय । स्त्री गर्भ धरै छवों विधि उपाय ॥ मृत वछा उपाय । नाल परावर्त उपाय । सन्तान उपाय । पुन शास्त्र धिकार ससम समुद्देस ॥ श्लोक संख्या ३८६३ इति श्री केशवदास सुत रामचंद्र राम विरचिते सिष पञ्चरग राम विनोद समाप्त सवत १६०२ वि० लिपि

विषय—वैद्यक वर्णन ।

संख्या ३७८ ए. अष्टयाम सेवा विधि, रचयिता—रामचरन, कागज—साधारण, पत्र—३२, आकार—१४ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४४, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री विष्णुदत्त उपनाम पुत्ती महाराज, ग्राम—भौली, डाकघर—तालाबबक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री सीताराम ॥ सुतीक्षण उवाच ॥ हृदय मानसी पूजा की दशी वावद प्रभो ॥ उपचारैः कति विधैं पूज्यते रघुनंदन ॥ १ ॥ अगस्त उवाच ॥ रामं पद्म पलासाक्षं नीलाबुद समप्रभ ॥ स्मित वक्त्र सुपासीनं चिंतये चिंतित पुरं. ॥ २ ॥ रागादि कलुख चित्तं वैरागेण सुनिर्मलं । कृत्वा ध्यायेत सदा रामं भव बंध विमुक्तये ॥ ३ ॥ प्रात श्रद्धं तनुर्भूत्वा सौचादि भिरतंद्रितः ॥ विविक्त देस माश्रित्य ध्यानं पूजा समारभेत ॥ ४ ॥ एवं यः कुरुते

पूजौ चहियों हृदयेपि वा ॥ सकृत पूजन मात्रेण राम भव भवेश्वरः ॥ ५ ॥ चंचरीक छंद ॥ बरनौ बारांतर सिय रघुबर सवकाई ॥ सीय राम पद पद्म कृत कोटिन सुप बरमठ मित कहि न सकहि सारद विधि सिव श्रुति अहिराई ॥ मैं निज मति हित बिस्वास पिपत हरी सिय पियास चातक ज्यों आनंद घन स्वाति बुंद पाई ॥ जाम एक राति रहत शुरु करी मूलद्वार चीठिकै मकोत राम मंत्र पढ़ै माइ ॥ मावनाति निद्रा सिंगार करै अवध मध्य सार सीय राम सेवा तन बचन मन लगाइ ॥ लखि दृस सुरंग कज मनि मै लसत रंग ताप रची मंडक ॥

अंत—सैन कियो पिय प्यारी सेज सुप विविध रंग मनि मैं मन्दिर ते जग मगाति उजियारी ॥ मदन मंजरीकी आयसु सपि प्रथमहिं सेज संवारी । दिव्य सुगंध सुमन बहु बिंग रचि विविध रंग फुलवारी । सीता राम प्रनाम कीन्ह सपि ग्यारी नीर भर झारी । चतुर सखी पद पदुम पलोटहि राइसभाव उचारी ॥ बीरा पीक दान सपि कीन्ह सैन मोग भर थारी बाजन पंच बजावत चंच मनि सस म्यारम्ह रसभरी । गाई नीद सुख साइ रहे रघुनंदन जनक दुलारी । रामचरण सखि बहु चौकी रहि बहु निज महल पधारी ॥ ॥ १२५ ॥ दोहा ॥ यह सेवा श्री जानकी राम प्रसादहि दीन । महाराज प्रिय पंथ लपि माहि कृपा कछु कीन ॥ मम छम बचन लगाय सिय लसि सखा कछ चाई ॥ १२६ ॥ सीता राम प्रसन्न तेहि लहै परम सुख सोई ॥ १२७ ॥ सूरति प्रेम लगाइ करि लोक रीति सब खोई । राम चरण सोई रस लहै सतगुरु बिना न होइ ॥ १२८ ॥ सखी सपा अरु दास को भाव बिना नहि सेइ । तीनो को अधिकार यह भाव भाव भव सोइ ॥ १२९ ॥ हनूमान सिव सम हैं तीनो धर्म कराहिं । यही हेतु अस्थान जम तह हैसे ध्यं जाहिं ॥ १३० ॥ मंच भाव रागा परम राम चरण मति दीन । राम उपासक पे रसिक मनुसि होहि से लीन ॥ १३१ ॥ इति श्री अष्ट याम सेवा विधि संपूर्ण शुभ ॥ संवत १९१२ माघ सुदि ९ सौम वासरे ॥

विषय—यह अष्ट याम सेवा विधि श्री राम जानकी के आठों प्रहर का वर्णन है ।

संख्या ३७८ पी मानसी पूजा (अष्टयाम सेवा विधि), रचयिता—रामचरण कागज—साधारण पत्र—५८, आकार—९ × ५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०१, खंडित रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा काशी ।

संख्या ३७८ सी राम जानकी चरण चिह्न, रचयिता—रामचरण कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार—१४ × ७½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—० परिमाण (अनुष्टुप्)—२२१ पूर्ण रूप—साधारण पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०१ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा काशी ।

आदि—श्री सीता रामाभ्यां नमः चंचरीक छंद—सब तजि प्रति स्वांस राम नाम क्यों न कहै ॥ राम नाम जोग पार राम नाम तंत्र सार राम नाम मन्त्र सार वेद सार पढ़ै । राम नाम परम ज्ञान राम नाम परम ध्यान राम नाम जपन जीव निज स्वरूप लहै ॥ चारि मुक्ति राम नाम राम नाम परम धाम राम नाम कहत वेगि सर्व पाप दहै । राम नाम सकल आगम ओंकार सब श्रुति पुरान नाम नाम गहु जीव जो आपन मन चहै ॥ राम नाम छोरि मूढ़ अपर धर्म मैं अरत रामनाम पारसको तजि गुंजाको गहै । जप तप व्रत जोग दान करियो अरु नेम ध्यान जानत नहि राम नाम क्यों कहन सहै । मुख्य मत

वेदांत सत्त शिव विधि श्रुति शुक अनंत कहत सर्व नास एक राम नाम रहै। राम चरण मंत्र तंत्र साधै वहु स्वास जत्र जाने विनु राम नाम सश्रित मरि वहै ॥

अंत—चचरीक छंद ॥ सीय राम चरण चिन्ह संतन मन भाई ॥ जेते सव चिन्ह लसत जानकी के नयन वसत जासु की कटाक्ष विनु न मिलत प्रभु गुसाई। निगमागम विधि महेश नारद शुन सनक शेश राम चरण चिन्ह सदा नेति नेति गाई ॥ छोड़ि सीय राम चरण जाच जो अवरि शरण गुंजाको गहत मूढ़ पारस मनि डाई। दंपति पद पद्म रूप होर रहु चित अवि अनूप छोडु वक पर्पद रहु विवेक हंस नाई। श्रुति टदार कहतु तोहि आपन सपि जानि मोहि जानकी निहारु नेकु चरण सरण लाई। राम चरण मन वरोर मानत नहिं कहा मोर मारत मोहिं विनु गुनाह जानकी दोहाई ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ रामचरन सव अंक गुन यंक साधे फल होई। चित्रकूट चितमें वसे जागि रहै की मोई ॥५९॥ चित्र कूट चित अंत प्रभु लपत प्रेमकी वाढ़ि ॥ राम चरण तेहि सतको भक्ति गोद लिहे ठाढ़ि ॥ ६० ॥ परभाषा को काटि कै अपने जसहि वढ़ाइ ॥ राम चरण ते स्वान कवि क्वहुं न पेट अघाइ ॥ ६१ ॥ श्रुति गिरि कदर में रहत कहत अनूठी वात ॥ राम चरण ते सिंह कवि नव गयंद ते पात ॥ ६२ ॥ इति श्री 'राम जानकी चरण चिन्ह' कवित्त समाप्तं संवत् १९४१ चैत्र कृश्न ३ तृतीयायां भृगुवासरे लिखि आनंदी दीन पंढित निज पठनार्थ ॥

विषय—इस पुस्तकमें श्री राम जानकी के चरण में नाना प्रकार के (चंचरीक छंद, सवैया दोहा आदि में) छंदों में भक्ति भाव पूर्वक रचयिता ने अपने मनः संकल्पों को साधु भाषामें प्रकट किया है।

संख्या ३७८ डी. पटपचासिका, रचयिता—रामचरन (चित्रकूट), कागज—साधारण, पत्र—८०, आकार—९ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४२ = १७८५ ई०, लिपिकाल—सं० १८६६ = १८०९ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह जी, तालुकेदार, कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री राम चंद्राय नम. ॥ दो०—नाम भक्ति कैवल्य सुर तुलसी गंग हरि संत। हरि टछिष्ट नव सम सरन राम चरन नव अंत ॥ १ ॥ श्री भरत महराज भय सदा चार सोइ न यति। तासु दास को दास हौं जैति जै जयति ॥ २ ॥ अवध पीर निधि ससि उदित प्रेम सुधा परि पूर। उदित सदा जस एक रस साति तोप मृग रूर ॥ ३ ॥ कोक सुखद कुल सोक नहिं सत हंस अति प्रीति। सत समाज पयोधि हरि, रमा राम पिय नाम। राम चरन भा प्रचुर दै सुनि दीपक की रीति ॥ ४ ॥ ग्यान विसद आनंत प्रज राम चरन विश्राम ॥ ५ ॥ तीरथ पति पद पाइ पद, पाय जासु भव अंत। दुरित दुरावत जगत तेहि, दुरित दुरत लखि सत ॥ ६ ॥ सुर सरि भृंग कुसुम अनल मलै सुगंधरु संत। नीचौ मिलि निज सम करत सत देत भगवंत ॥ ७ ॥ जोग ज्ञान अध्यात्म करि, मिलहि जाहि भगवंत। राम चरन रस नहिं रह्यो, विना समागम सत ॥ ८ ॥

अंत—घर घरनी घर छोड़ि वन, मन मनसिज के हेतु। तुव पति घर वन क्यों फिरै विभचारिणि मन चेतु ॥ ७१ ॥ पर पति छम पुनि सोक वन निज पति धनद दिमाक।

राम चरन पति मत अरनि पिय बिधुरत मैं पाक ॥ ७१ ॥ दोहा पति मत सीस पर जनसूया सुत कीन । राम चरन पति राम है पति तन को पति कीन ॥ ७२ ॥ हरि बस सुर सरि नीर ज्यो कोड बहु कोड अनु पाइ । मति माणिक सब विवत कहि सुर पुर हरि पुर जाइ ॥ ७३ ॥ इति श्री सत पंचासिका विवेक ग्यान वर्ननो नाम पंचमो अवकास संवत् । १८९९। लिपी राम सेवक पठि ॥

विषय—(१) पृष्ठ १ से पृ० १७ तक—प्रथम अवकाश संत संगति महत्त्व, तत्व गुण तथा इन्द्री भेद निर्णय ।

(२) पृ० १८ से पृ० ३४ तक—दूसरा अवकास । पंच तत्वों के गुण तथा अहंकारादि वर्णन, जीव का तत्वों से संबंध, शरीर वर्णन, जीवों के विविध शरीरों में रहने का वर्णन, चारों अवस्थाओं का वर्णन । इन्द्रीपति—तत्व वाणी प्रमाण वर्णन ।

(३) पृ० ३५ से पृ० ५१ तक—तृतीय अवकास । सब अवस्थाओं की व्याख्या, प्रकाश, अनुर्मुख पहर सांख्य न्याय भेद वर्णन ।

(४) पृ० ५२ से पृ० ६८ तक—चतुर्थ अवकास । अंड ब्रह्मांड चौरासी, त्रिगुण तीन शरीर प्रकार विस्तर, आत्मा असत्‌रात्मा, परमात्मा विवेक भेद वर्णन ।

(५) पृ० ६९ से पृ० ८० तक—पंचमी अवकास । विवेक ज्ञान भक्ति, योग काव्य रस, विरहो, भक्ति मीमांसा वेदांत न्याय धर्म शास्त्र अक्षर पति व्रत भेद वर्णन ।

ग्रंथ परिचय—'चित्रकूट' में रंचे यह छपे, इरत अग पाप । दोहा सत पंचासिका पवहि साधुमा आप ॥ संवत सत अष्टा दसौ चालिस दुइ रितुराज । कृष्ण पक्ष मधुमास, बुध चौथी संत समाज ॥

ग्रंथ समाप्ति—इति श्री सत पंचासिका पंचमो अवकास । संवत् १८९९ ॥ लिपी राम सेवक पठि ।

संख्या ३७८ ई दृष्टांत बोधिका (विरह प्रसंग), रचयिता—रामचरण दास (अयोध्या), कागज—साधारण, पत्र—१६, आकार—१२३⁄४ × ५३⁄४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९९ = १८४२ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह रईस, तालुकेदार, कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ दोहा ॥ रामचरण पकए सतक राम सरस रस देह । स्नेह चाम्ह है रज मिलि ज्यों चुंबक गहि लेह ॥ १ ॥ राम चरण दृष्टांत यह जो समुझी मन लाइ । बस है राम हिय मगन सोइ मूक स्वाद जिमि पाइ ॥ २ ॥ राम चरण बिनु विरह प्रभु मिलन कस्त चकि जाइ । गरूव सोहागा प्रथम जिमि तब कंचन मिलि धाइ ॥ ३ ॥ विरह अगिनि निम दिन जरै सहै ज्ञान असि धार । राम चरण रघुवीर तब सती सूर इक वार ॥ ४ ॥ राम विरह हिमि मन जरै मूल बीज जरि जाइ । राम चरण ज्यों दाम वद दावाग्निनि हरि जाइ ॥ ५ ॥ बिन विरह की अगिनि दुइ, राम चरन सो विचार ॥ चिता जरावै मृतक को, विरह जियत नित जार ॥ ६ ॥

अत—राम चरण जग वासना। तब लग सुद्ध न होइ। ज्यों मद के घट भरै। कछु पावन केहि विधि होइ ॥ ९८ ॥ लोक लाज अभिमान सुप, तब लगि हृदय न राम। राम चरण नृप क्यों वसै, जहं मलीन लघु धाम ॥ ९९ ॥ लोक मान की आगिन में धम कर्म जरि जाइ। राम चरण रघु नद की, करुणा वारि वुझाइ ॥ १०० ॥ अस करुणा करि हौं कवहुं, राम चरण पर राम ॥ तब सरूप जल मीन मे, मरो विछोहत नाम ॥१०१॥ यह दृष्टांत प्रवोधिका, सतक विरह को अंग। राम चरण तेहि समुझि रहु, राम न छोड़हि संग ॥ १०२ ॥ इति श्री दृष्टात वोधिका विरह अंग वरनन नाम पचम सतक समाप्त ॥ संवत १८९१ ॥ लिपा विश्रामदास। पोथी लाल हनुमत सिह जीउकी ॥ लिपा काले कांकर हनुमान गढ़ी भीतर में ॥

विषय—रामचन्द्र जी के विरह सबंधी दोहे (दृष्टान्तों और उदाहरणों के साथ)।

संख्या ३७८ एफ. दृष्टात बोधिका (विशेप लक्षण), रचयिता—रामचरनदास (अयोध्या), कागज—साधारण, पत्र—१६, आकार—१२$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०१ = १८४४, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह, तालुकेदार, ग्राम—कालाकाकर, जिला—प्रतापगढ़।

संख्या ३७८ जी काव्य शृंगार, रचयिता—रामचरनदास (अयोध्या), कागज—बादामी मोटा, पत्र—१६९, आकार—१२ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८२ = १८२५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जगदंबा सिंह, जमींदार ग्राम—धनुहा, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि०—वदि चरन सिखि प्रश्न करि, करहु गुरू निर्वाह। सुमिरि राम सुचि सत के, सुनु रहस्य अवगाह ॥ अधिकारी कहि ग्रंथ जे, विपय राम सम्बन्ध। दास प्रयोजन भजन दृढ़, राम चरन, चौं संध ॥ छप्पय—अवध क्षीर निधि उदय चद श्री राम प्रसादस। पूरण प्रेम प्रकाश, नेम यम युग कुरंग वस ॥ सुयस प्रकाश मयूप, वचन कुमदनि चकोर जन। संत गुरू भगवत, भाव यक सम शीतल मन ॥ आपु सरस सब विधि उभय, श्री रघुनाथ प्रसाद गुर। प्रभु युगल पदम पद वदि रज, रामचरण, जो कहौं पुर ॥

अंत—घनाक्षरी—लक्षन गुन संत के अनेक वेद गावत है, आठ गुन महा मुख्य तामे वह जानिए। एक गुन श्रद्धा वेद सत गुरु वाक्य फुर लय राम चरित में अनुभौ वखानिए ॥ दूजो सु विवेक माया ब्रह्म सत्य सत्य जानौ, वद्ध मोक्ष कर्म जीव ईश्वर पहिचानिए। तीजो संतोष वृति क्षमा, ज्ञान दया शान्ति, सत्य निर्वैरदम संयम अमानिए ॥ चौथो ब्रह्म ज्ञान जीव चराचर रमेराम, देखै सर्व भूत सत्य नित्य निर्विकार है। क्रीड़ित लखि माया मध्य पाचो गुण दया दीन कोमल सुहृद शील करुणा उदार है ॥ मेरो प्रभु निर्मल अपड आपु लीला करै, ताको सनमान परमार्थ छठो प्यार है ॥ जामे जो प्रसन्न सोई करै देश काल पाय। वाक्य मन कर्म धर्म तन जन तुम्हार है ॥ सातो भाव चराचर राम सस्कार नेकु। देखै सुनै ताको तदाकार हरि भावहीं। आठो भक्ति आठो लाम सुधापान राम नाम

प्रेम मय प्रमानन्द सीइ राम पावहीं राम रूप नीर मीन राममन पपीहा ठीन, राम मुख चंद्रमा चकोर चित लावहीं । ऐसे गुन कीन्हे राम चरण राममक्त होय, ताको गुन गिन सागम नहि २ गावहीं । इति ।

विषय—श्री रामचन्द्र जी के जन्म से विवाह तक की सम्पूर्ण कथायें ।

संख्या १७८ एक रामायण बालकांड की टीका (पूर्वार्द्ध), रचयिता—रामचरणदास (अयोध्या), कागज—साधारण, पत्र—६८, आकार—११३ × ५३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२१५, पूर्ण, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०५ = १८४८ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह रईस, ताल्लुकेदार, कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—दोहा । पट अरु बीस तरंग में, नृप रानी तप धाम । राम चरन पर प्रभु प्रगट सोभा सिंधु निधाम ॥ २६ । हे भारद्वाज हे गरुड़ श्री महादेव बोलत भए हे सैल कुमारि आपकी बुद्धि थिर करौ श्री राम चन्द्र के तीन हेतु तो मैं कहि आए हैं जाही प्रकार से अपर हेतु सुनहु जो चित्र विचित्र कथा विस्तार समेत कहौं जो सो चित लगाइ के सुनहु १ हे पार्वती अब जनो कारन सुनहु जेहि कारन अज अगुन अनूप पर ब्रह्म अवतीर्ण भए कोशलपुर भूप भए सो कारण सुनहु अब कहि प्रसंगा । अपर हेतु सुनु सैल कुमारी ॥ कहौं विचित्र कथा विस्तारी जेहि कारन आज अगुन अनूपा, ब्रह्म भयउ कोसलपुर भूप ॥ जो गर्भ में नहीं आवै अरु वाको अवतार इनके तात पर्ज नहीं है आपने प्रभावका विभूति करिके पृथ्वी को भार उतारते हैं ताते अज कहौ पुनि अगुन कहौ तीनो गुन रहित रस रूप सच्चिदानंद विग्रह परम दिव्य ब्रह्म मय गुन ज्ञान विज्ञान मोक्ष करुणा वात्सल्य सौशील्य इत्यादिक स्वाभाविक जिनमें है ताते अगुन कहौ पुनि अनूप कहौ जिनके सदृश कोई नहीं है जिनकी उपमा को न तो ब्रह्म है न तो कोई भगवत अवतार है न तो विष्णु नारायण है न तो ब्रह्म व्यापक है अपर की कहा कहौं ना स्वरूप भाग कहत ही है अरु चौपाई के अंत में अनूप ही पाठ है पर कोई हठ करिके भूप पाठ करते हैं तहां अरथ कहो ना का प्राकृत रूप नहीं है तीन गुन पांच तत्व अविद्या माया रूप रहित है पर ब्रह्म मय रूप है जिनको ताते अरूप कहत हैं ऐसे जो पर ब्रह्म सो कोशलपुर भूप भए ।

अंत—इति प्रसंगे श्री महा रामायणे दोहार्थे समाप्तम् ॥ दोहा ॥ अति पुनीत को अर्थ लघु कार्तिक कर्यो प्राप्त । राम चरन गुरु कृपा से इत पूर्वार्द्ध समाप्त ॥ १४ ॥ इति श्री सीताराम चन्द्र त महाराज दंपत्यौ वरदान दर्शन नाम सप्त विंशति तरंग ॥ २७ ॥ दोहा वसु अष्टविंश तरंग में भानु प्रताप प्रसंग । राम चरन ताप निमन पुनि । सरीर वर भंग ॥ १ संवत १९०५ मिति श्रावन बदी ११

विषय पृ० १ से-३४ तक—ब्रह्म के कौशलपुर भूप होने की शंका का निवारण । पार्वती का शिव का रामावतार के विषय में समझाना सृष्टि निरूपण मनु और रानी सतरूपा की तपस्या त्याग वैराग्य, ज्ञान । भक्ति और परम पुरुष प्राप्ति तथा दर्शन ।

२६ वां तरंग (२) पृ० ३५ से ६८ तक—राम के स्वरूप की प्रशंसा, राम रूप

देखकर दंपति का मोहित होना, भूमि पर गिर जाना, भगवान का उन्हें उठ कर हृदय से लगाना और वर माँगने को कहना, उनका भगवान जैसा ही पुत्र मांगना भगवान का तथास्तु कह कर उन्हें सुर पुर भेजना और अयोध्या में अपने अंशों सहित अवतार लेकर उनका पुत्र होने का वचन माया का सीता रूप धारण करके आगमन । इस प्रकार उमा के संदेह का शिव द्वारा दूर किया जाना ग्रंथ समाप्ति

२७ वा तरङ्ग-ग्रंथ कारका परिचय—(पृ० ६६)—"मे रो नाम श्री रामचरन है और महाराज श्री रामप्रसाद जी तिनको श्री रघुनाथ प्रसाद जी तिनके मैं हों जिनको श्री अयोध्या जी मे परम अस्थान है। तहां श्री मद्राम चद्र की सत्य संकल्प वेद वसते है ताते एसे स्वामी के परमानन्य शरन है ते सर्व सत्य जयार्थ वादी है।

संख्या ३७९. कालज्ञान, रचयिता—रामचरन दास साधू (राजपुताना), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७६१ = १७०४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सूरतसिंह, ग्राम—शिविरा, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ काल ज्ञान लिप्यते ॥ दत्तात्रेय उवाच ॥ सावधान हरि दास रहाई। जो रैनि दिना करैं हरि सों मित्राई ॥ मृत्यु काल को सदा विचारै। देपि उपद्रव वेगि सभारै ॥ जानि मृत्यु पहिले ही हरई। जोगेश्वर न्यारा होइ रहई ॥ देह गेह ममतादिक त्यागे। निरालंव होइ कहीं न लागै ॥ लागै तहां जयां ते आयो। हो अलटक वेद भागवत गायो ॥ पार ब्रह्म सरिणै चलि जाई। जो अरिष्ट देपि सावधान रहाई ॥ सो अरिष्ट तेहि कहि समुझावत। जितने मृत्यु को समै लपावत ॥ जो शुक्र अरुधती ध्रुव नहिं देपै। तथा देव मारग नहिं पेपै ॥ अथवा ससि छाया ससि माहीं। सो वरस ते ऊपर जावै नाहीं ॥ जाहि किरण हीन सूरज दरसावै। अग्नि सर्व समान लपावै ॥ सो तौ जीवै एकादस मासा। विचार पहिले ही होइ उदासा ॥ जो छादै मूते विष्टा कराई। सोवर्ण रूपै पै मन जाई ॥ प्रतछ अथवा सपने माहीं। सो मास दस जीवै आगे नाहीं ॥ भूत प्रेत पिशाच को देपै राई। अथवा गंधर्व के पुर भाई। कै देपै कनक के वृक्ष उदारा। सो तौ मरै नव मास मझारा ॥ जो मोटा से दुरवल हुइ आवै। दुरवल से मोटा दरसावै ॥ प्रकृति स्वभाव पलटि पुनि जाई। साधु असाधु असाधु साधु भाई। अकसमात अलरक ततकारा। सो सो आठ मासे अधिक न जीवै लगारा।

अंत—जव देव ब्राह्मण निंदै राई। अथवा गुरु की निंदा कराई ॥ कै माता पिता की निंदा धारै ॥ कै महात्मन की निंदा विस्तारै। जे जे पूज्य होहिं विश्व माही। तिन तिन को जव मानै नाहीं ॥ ताके मृत्यु काल के लक्षण आये। मृत्यु काल समै दरसाने ॥ ते पुनि नरका सूधे जाहीं। जिनके पर निंदा उपजै घट मांहीं ॥ इतों उपद्रव सदा विचारै। रात दिवस छिन छिनहिं संभारै ॥ ये घोर उपद्रव टरत जु नाही मत कोइ एक पुन्य करि टरि जाहीं ॥ किसई एक पुन्य के वलराई। कोई एक अरिष्ट टरि जाई। परि हरि रति झूठों सतकरि धावै। काल की गति लपी न आवै ॥ जिस उपद्रव को जितनो परिमाना। मास दिवस पप तिनौ निदाना। जव लग रहे एक शुभ अस्थाना। निरालंव होइ साधै

प्याग ॥ जब मृत्युकाल को अवसर आवै। तब साव भाव होइ वपु छिटकावै ॥ चौ० ॥ वपु छिटकावै सावधान होइ सब सी उसराय। प्रेम प्रीति सरधावंत जोगी हरि सन हेत लगाय ॥ इति काल ज्ञान भाषा ग्रंथ सपूर्ण समाप्तः। संवत १७११ कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे द्वादस्यां लिखतं बैपुर ग्रामस्थान लिपि कर्तावो शिवराम गोसाईं स्वपठनार्थं इस पुस्तक की जैसी प्रति देषी तैसी लिषी अशुद्ध का मम दोष नाहीं ॥ श्री गनेसायनमः ॥ श्री गुरजी महाराज की जै ॥ राम राम राम ॥

विषय—अपने को मृत्यु ज्ञान किस प्रकार से होवे और उसमें किस प्रकार के स्वप्न और प्रत्यक्ष में क्या २ चीजें दिखाई देवें आदि का वर्णन।

संख्या ३८०, तीर्थ महात्म्य, रचयिता—रामदास, कागज—देसी, पत्र—७, आकार—६×४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९१ वि० प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूबे, सैदपुर, जिला—गाजीपुर।

आदि—श्री गणेसायनमः असनान का होई पुरी को जैये। प्रथमी प्रयाग राज को जैये मुंडन आप करैये। गंगा जमुना और सारस्वति संगम जाइ अन्हैये। कासी पुरी मुक्ति की दाता तेहिमा कुछ दिन रहिये पांच कोस परिकरमा करिके वीसुनाथ सिरनैये। असनान होइ पुरी को जैये ॥ गया जाइके रामसिला पर पंडि पैताकिस करैये। हाथ जंवाइ गया वट के एक पाठ वार भरैये। हराहर तें जल भर लैये बाबा बैजनाथ को चढ़ैये। अछत चन्दन बेल पत्र लै प्रेम सहित चढ़ैये। असनान होइ पुरी को जैये। तुलसि चीर दरसन पाये मुक्ति चन्द्र सिर मैये। नार अठार है पार उतरि के सब के पाप बहैये। असनान०

अंत—अंबर दास बाघ चौरासी तेहमि तेहमि गुन गैये। रामदास कहै कर जौरे भक्ति लीन होइ रहिये। अर्बद संवत कार्ते प्यारे पैम पराचर। तत्पर्दे दर्शित पैम तसमै श्री गुरुवे नमः ॥ गर्भ परीछित रछा कीन्ही हती नहिं बन याको मेही पीर परम परसो तम कुछ वही है का को सभा माझ द्रोपदि पति राखी है पति पावन कुल ताको। असन चीर करि कौर विसंभर परम दीन्हो ताको।

विषय—१—प्रयागराज की महिमा संगम स्नान। २—मुक्ति दायिनी काशी की महिमा पंच कोश का वर्णन। ३—गया के पिंड दान हराहर से जल लाकर बैजनाथ को चढ़ाना। ४—रामेश्वर-बद्रीनाथ अयोध्या और मथुरा आदि तीर्थों का माहात्म्य। ५—भगवान की भक्त रक्षा।

संख्या ३८१ गंगा ब्याह या विवाहलो, रचयिता—रामदास, कागज—देसी, पत्र—११, आकार—६¾×५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री चतुर्भुज, ग्राम—भोजापुर, डाकघर—गड़वारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गनेसायनमः ॥ अथ गंगा विवाह लिष्यते कृष्ण वचन ॥ छंद सारसति सुमिरि प्रेम आनंद समाई।

मातु पिता डडौत सीस साधुन को नाऊ ॥ आन बुद्धि घट भये गुरु गनेश मनाय ॥ गगा विवाहला जो सुने सुनत पाप कटि जाय ॥ कृष्ण वचन ॥ १ ॥ वनते जम्बू चलौ तीर गगा के आयो ॥ पानी पियौ अघाय कूदि गगा में न्हायो ॥ मूंछ मरोरे सर धुने कर मीडे पछिताय ॥ देख रूप गगा महरानी के जंबुक गयो लुभाय ॥ कृष्ण ॥ २ ॥ जब गगा ने कही सियार तू वन वन डोले ॥ तेरे मन में कहा आय नित हमसे बोले ॥ भिरत लोक पाताल में निकट वही वैकुठ ॥ जो तेरे घट भीतरेह यह हमसे कहौ निसक ॥ कृष्ण ॥ ३ ॥

अत—दै दै हर कहै माँग गंगा महरानी । सो माँगो सो देत है धर्म की वड़ी विचारी ॥ सो माँगौ सो और सिरजन, घडी तोंहार । नदियन में गगा वडी तीरथ वड़ौ प्रयाग ॥ ७५ ॥ कृष्ण ॥ गुरु मार वन खंड में डारे । भैया मारि दर्वार प्रकारे ॥ पर वर तौरा भोय के पर घर चोरी जाय । इनको पाप काट देउ स्वामी जी ऐसे नर मो में न्हाय ॥ ७६ ॥ दौलत धन और मन वहुत गगा तोय दयौ । सुवनत राजा वड़ौ आज हमनें कर दीयौ ॥ कर गगा विदा जो हरनें मान हमारी सीख । गगा सुवनत राजा संग मजोग कुमर घोडा दीयौ ॥ सुवनत तौ हाथी चढ़े डुरे चोर घराय । हथना पुर के खेत में दई वव धुराय ॥ कृ० ॥ ७८ ॥ दीये हीरालाल चढ़वे कूं घोड़ा सुवनत के सग करौ । गगा को डोला दीन वन्धु ऐसी करी धरनी भई सहाय । रामचन्द्र के चरण कमल में दास रामा वलिजाय ॥ कृष्ण ॥ ७९ ॥ इति श्री गगाजी व्याहला संपूर्णम् ॥ शभम् ॥

विषय—पृ० १ से पृ० १२ तक—मंगलाचरण, जवू का गंगा के प्रति विवाह प्रस्ताव, गंगा जवू सवाद, जवू का शरीर त्याग, भगवान का जंबुक को वर देकर मृत्यु लोक को भेजना, सप्त ऋषियों द्वारा जंबुक का राजकुमार होना, उसका नाम सूवातन होगा, गगा का मोहित होना । (२) पृ० १२ से पृ० २४ तक—जम्बुक के पूर्व रूप स्मरण होने पर गगा की कुरुचि, पुनः भगवान के पास जाकर उसका उलहना देना । भगवान का गंगा के साथ उसका विवाह कराना । देवादि द्वारा विवाहोत्सव मनाया जाना । गगा का वर पाना ।

संख्या ३८२. दानलीला, रचयिता—रामकृष्ण, कागज—साधारण, पत्र—५, आकार—६¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप —नवीन, पद्य, लिपि—फारसी, प्राप्तिस्थान—श्री वावू राम विथरिया, सिरसागज, जिला—मैनपुरी ।

आदि—अजव महवूव गोकुल में हुआ घर नद के रोशन । धरे सर मुकुट सुवरन का जडाऊ रत्न से कुंदन ॥ रवाँ शुर ओढ़ पीतम्बर सुवह दम सूये विन्द्रावन । अजायव नौजवाँ सुन्दर खुलाए जुल्फ वर कानन ॥ सखे ले गोप के पालक, लीहैं धेनु आगे धर । अनूठी वाँस की मुरली, वजावत माधुरी तानन ॥ फिरत हैं कुज-कुजन में, पहर गर माल फूलन की ॥ धरे सर मोर के पखवा, चरावत वछरू कानन ॥ गयो जव साँकरी खोरन, चरावत धेनु घर में की ॥ मिली वह ग्वालिनी आवत, करत भूपन छनाछन ॥ सहेली साथ की चहूँ मुक लखीं जव जादह का हदनो । डगर को घेर हँस वोले चुकाओ दान मन भावन ॥ गई हो वेच दध सव दिन दगा दे दे पियारी तुम । मगर इमरोज पाई हो न छोडू वे लिये दानन ॥ उठी हँस वोल यक ग्वालिन माँदक असी हुए लालन । कहा इत

राग पैंड़ै में सुमा नाहिं ग्राम दुम ग्रपन ॥ न हम पर हैर मोहिम की न लगे काठ सौं हीरा । न केसर मुरक की गारी न लगे बात है लालन ॥

अत—अनोखो भाग हूँ मनहुमो सुमने मंद को देख्यो । लगावत दाम है दृष्टि को भरत है कर तू काकन ॥ चराबो गायें धौंरो तुम नहीं यह बात हो तेरी । करेंगी कम सौं तब हम फिरैगो मागतो मागन ॥ सुनोरी ग्वालिनी भोरी करगो कंस क्या मेरो । कहा मुँदि कर दिखावति हो फिरि सुम अपनी आपन ॥

× × × ×

सखी जब हार के आमो, बरें न बिन दिये हासिल । छलें है खोल कर घूंघट की गैल दिल हास के ठाकन ॥ मर गैन अबहीं किये पहिले परस कर दरस हैं । करी हैं ग्वालिनी एकासद चले है संग पहुँचावन ॥ मनत हैं हाल दृष्टि लीला मगन होइ राम किसन आशिक । कुँवर जो श्याम सुन्दर पर करत हूं प्राण तन वारन ॥ समाप्त शुभ

विषय—गोपी कृष्ण के प्रेमालाप का वर्णन ।

संख्या ३८३ रामरक्षा, रचयिता—रामानंद, कागज—साधारण, पत्र—८, आकार—६ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१, पूर्ण, रूप—प्राचीन गद्य, लिपि—नागरी और गुरुमुखी मिश्रित, लिपिकाल—सं० १८८४ = १८२७ ई०, प्राप्ति स्थान—श्री शालिग्राम दीक्षित, ग्राम—बामू, डाकघर—सैदौला, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॐ संध्या गायत्री सर्व दोष निवारणी संध्या करंति धर्म न हरी पिंड प्राण की रक्षा नाथ निरंजन करे ज्ञान पुरुषम पुरुष ईश्वरी पंच पुराणम कथा नाथ समाधि पूजनमो देव निरंजना १ ॥ ॐ अखंड मंडलनिराकार × × × × × ×

तासौं संतोष भई श्री रामरक्षा दीप ॐ आरा आत्मा पंच तत्व पचीस प्रकृति को मूल आत्मा पाई श्याम दृष्टि श्याम परीति आई पाप अघाम समाप उपाय असमाप मिलि अनहद नाद की पवरिपाई ७ उकति पा सतगुरु टेक प्रेरन किया । पेरि पा पंथ लिहो कथा सारी भीम प्रगट सैं आरा प्याला हरि डंकनी संकरणी बेरि मारी ८ पवनि आकास बीच पंच बहुता किया मूल मेल देह सारी व संघारे मन की कामी पत्र का देह के पहरमह सुमक मारा गरुड पंखी । उमा नागणीसप्ता विपक्षिण हरि में निद्रा न हुई ८— सिद्ध निरमल मया विमारे पेड़ सुखा रोग पिंडा मथया न व्यापै ॥ रोमरोम रंकार उचरंत बाणी १०।

अंत—नाद नाद सुप मासा आके साज साथ १०— खेचरी भूचरी चाचरी अगोचरी उनमनि बारैं—यह बाठ चाप चामिनी अमृत रोपे चरा मचरा पंच पाला आप कियौं आई किरीतार है निराधार निरंजन के चक्र को भार भागा दृष्टि अस्फुट एक त्रिकुटीर बैताला सुर गुरुमोपै उपाका पंथ मैं भौर मैं चार मैं छोर मैं घर मैं बाहेर मैं देसपरदेस राज के ठेम मैं बैठ ही उठसौं सोबतौं जागतौं पेखतौं मागतौं पावितौं पीवतौं न्हातौं धोवतौं सोवतैं पेड़ पै रहौं धामि आकाश मैं श्रीराम रक्षा करें संत के सीस पर हाथ दिया रहै चरण अरपीस तौं अपराधा करैं गुरु का आप है गुरु से बड़ सूर्य कोड कपार रहिबो करे जीति पा लक्ष्मण की सुमते जानकी की सुमते हनुमान जी सुमने पापन किरंत दुष्ट

ताम्सु हरेते संध्याकाले प्रातकालेनरा पठते सुनंते माछ मुक्ति परम पावते। इति श्री राम रछा गुरु रामनद जी कृति सपूर्णम् सं० १८८४ कार्तिक मासे कृस्णे पक्षे दिने गुरुवारे।

विषय—आत्मरक्षा हेतु रामचंद्र की स्तुति कविता तंत्र रूप में लिखी गई है।

संख्या ३८४ ए. दानलीला का बारामासा, रचयिता—रामनाथ, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जयतीप्रसाद, ग्राम—गोसाई खेड़ा, डाकघर—चमयानी, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ दानलीला का बारा मासा लिप्यते॥ टेर॥ श्री कृष्ण को॥ तू देरी दधि को दान गुजर मतवारी। टेर गोपी की॥ अजहुं न लाग्यो ह्यान दान गिरधारी। तू सुनहुं ग्वालनी खड़ो हमारी बात। दधि बेचन को नित आवत नित जात॥ लागेदान हमारो सो तूं चोरे जात। बहुत दिवस हो गयो हैं तो कू खैर हमारी खात॥ तुम दान देती नहि हमको हमे दान लियो चात॥ जो नहि देती दान हमारो तौ होई उतपात॥ हे गु०॥ १॥

अंत—आज कहु आदर नहिं तुमरो सुनो जगत के राय॥ उस दिन याद हमारो मोहन भूलो मत चित लाय॥ माखन चोर लियो घर भीतर। लरे यशोधा धाय। हाथ जोड़ तुस हमसे बोले ग्वालिन वेग छिपाय। जरा ढील हमको लगी मोहन घुसे विवर में जाय। ज्यो अगहन मे नाग देवता घुसे जिमीं के माय॥ जी मानूगी॥ १४॥ मैं हूं कुवर लाडलो उनको वह है भरी माय। मारै कूटै माता जानौ तिनकी क्या दरसाय॥ वही ताड़ना समझत नाहीं यामें सूफल पाय॥ मात पिता के बिना लाड़ना बालक भय नहिं खाय॥ मात पिता से प्रीति पुत्र से माता रखै सिवाय। रामनाथ कर जोड़ कहत है करो सदाह सहाय॥ १५॥ आप कही बिन ताड़ना बालक भय नहिं खाय। जिनसे जाय पुरी हों सोई देई सबै सुनाय॥ ज्यों तुम रीति करी सब हमसे कहि हौं सबै बनाइ। देहै तुमको पूर ताड़ना तेरी जसुमति माय॥ मै भी जानू ग्वालिन ऊपर राखै प्रीति सवाय। राममाथ कर जोड कहत है करी है मेरी सहाय॥ इति श्री दान लीला को बारा मास रंगत खेल की संपूर्ण समाप्त.॥ सवत १९२७ वि० चैत्र शुक्ला सप्तमी॥

विषय—श्री कृष्ण जी का गोपियों से दान लेना॥

संख्या ३८४बी. यशोदा श्री कृष्ण का झगड़ा, रचयिता—रामनाथ, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री श्याम मनोहर सिंह, ग्राम—मुबारकपुर, डाकघर—मगराहर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ रगत खेल में॥ टेर॥ जसोदा की॥ आछो उजागर जनम्यों लाडला तू मेरे कन्हैया॥ टेर॥ कृष्ण की॥ कैसो उजागर गायो लाडलो जसोदा मैया॥ कुलहि उजागर पुत्र जनमि कै आछो नाम कढ़ायो। दूध दही की कमी न तेरे क्यो

छुट छुट दधि खाया ॥ बड़े घरन को आयो याते जग में चोर कहायो ॥ मखी उराहनो दै गई मोको ऐसा बचन सुनायो ॥ बन में तेज कन्हैया तेरो बिछ सुरज ज्यों गायो ॥ दू माम० ॥ १ ॥ सखियन सब सुरज ज्यों गयी या तेरी सुन्दाई ॥ तुमको उराहना दे गई। सखियां सबी मोच बरसाई ॥ अब हम तुमको क्या करैं माता जो यमकी दिखराई। एक अरज सुन मेरी मेरी माई याको खरा मर गाई ॥ मेरा गऊ चरावत मोको सब मिलि भसे आई ॥ ऐसे नहीं बचाय बसाई दूर दैस की माई ॥ दे सुन ॥ २ ॥

अंत—सोच कहूं फिरि बांध सुनायो मोहि जमुना के तीर ॥ सब सखियां मिलि बहु सुर कपा नैना बरसों नीर ॥ तब मैं हीर हीर कर हारा सब सखियन के चीर ॥ सखियां डर बतरायो तेरो मन मे मेर धीर। मेरे पाप तुमारो माता फेर मरी पीर॥ज्यो बैसाख धूप में पोषण लघु कुसुम को नीर ॥ दे सुन माता० ॥ १२ ॥ तरे पाप हमरो लालन सुपी सो बन म आयो। सखा संग सब खेय तुमारी आछी धेनु चरायो ॥ जैसे बर के छारा बाओ वैसी सोभा बना ॥ प्यारे लगो सभी बिरज को उबहत तुम मत सखो ॥ सखियां दरस कारने आवें इसी सुधी बतलायो रामनाथ कर जोर कहत हैं आछी महर रखावो ॥ देतुमा० ॥ १३ ॥ तेर हुकुम से बन मे जाऊं एक अरज सुन लीजै ॥ सोच दूर की खबर पछे बिन जाने चित न दीजै ॥ सखियां फेरि बात बनावें सो सबही सुन लीजै ॥ बिना खबर चित दिये जसोदा अब बत दिल में छीजै ॥ ऐसी महर भाव तुम राखी ऐसी फर रखीजै ॥ रामनाथ कर जोड़ कहता है साम सदाई कीजै ॥ दे सुन० ॥ १४ इति झगड़ा जसोदा का श्री कृष्ण का बारा मासा संपूर्ण समाप्त चैत्र शुक्ल सप्तमी संवत १९२७ वि० ॥

विषय—श्री कृष्ण और यशोदा का झगड़ा श्री कृष्ण का गोपियों का दही छककर खाना गोपियों का यशोदा से उलाहना देना यशोदा का श्री कृष्ण को समझाना और श्री कृष्ण जी का जसोदा से गोपियों की शिकायत करना आदि वर्णन ॥

संख्या २८५. कालीदमन, रचयिता—पं० रामनाथ (पाटसाहपुर, जौनपुर), कागज—साधारण पत्र—२, आकार—६½ × ४½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—श्री रमाकांत शुक्ल, ग्राम—पूरा गरीबदास, डाकघर—नरवारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ श्रीमान् पं० रामनाथ कृत कालीदमन लिप्यते ॥ छप्य ॥ तिलक रमाल भालन तमाल बिलम्बित। लटकहि तट पर पीत करक अरु मुकुट कलंगित ॥ जटित मौल मनि खचित झमक दुति दशन सुहावन। पीत बसन महराम मधुर मुरली सुर गावन ॥ सुर बरसावत मृदु बचन मन हर न्यायन मदि मन्द मम। मन राम नाम यह रूप धरि कालिय दमन चरित्र मन ॥ १ ॥

अंत—हरी भया आदि कै कलिन्दी ते कलिन्दी कीनि, करिकै कलिन्दी नीर सुधामी मिठाई है। धरि कै अधर वेनु कामना की कामधेनु, रामनाथ स्याम सुधा धाम सुर गाई है ॥ सुमत जीवे मे सखा धाम मिले हैं पावन, गायन ममादि कै बरायन बनाई है। मन्द तन रजन कलिन्द मद गंजन, हमार दुख भंजन निरंजन कन्हाई है ॥ इति श्री रामनाथ कृत कालो दमन चरित्र ॥ समाप्तम् ॥

विषय—कालिय नाग दमन लीला।

संख्या ३८८ ए. रामकलेवा, रचयिता—रामनाथ प्रधान, कागज—साधारण, पत्र—२०, आकार १२३/४ × ९३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२०. पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राधाकृष्ण शास्त्री अध्यापक, किथावर पाठशाला, डाकघर—पूरब गाँव, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ राम कलेवा॥ रहस्य ग्रथ प्रारंभः॥ छद-चौपाई॥ जै गणपति गिरिजा गिरिजा पति जयति सरस्वति माता। जै गुरुदेव केशरी नदन चरण कमल सुख दाता॥ १॥

× × × ×

अहै प्राति की रीति अटपटी मैं केहिं भाति वताऊं। ताते सानुज राम कुँवर कौ रहस कलेवा गाऊँ॥ जेहि विधि जनक सदन रघुनन्दन कीन्हे रुचिर कलेऊ। सुप दीन्हे सारी सरहज को सो सव कहि हौं भेऊ॥ ३॥

अंत—इयि आनद जनकपुर वासी नित प्रति पावत लोगू। कोटिन्ह इन्द्र नजर नहिं आवत निरखत वहु सुख भोगू॥ राम कलेवा रहस चरित ये हम लघुमति किमि गावैं। शेप महेश गणेश शारदा तेऊ पार न पावै॥ जो कोऊ प्रीति रीति उर चाहै सो ग्रथहि इहि वाचै। पूरण पावैं प्रेम राम कौ पुनि जग नाच-नचावै॥ राम कलेवा रहस्य ग्रंथ यह रसिक जनन अधिकारा। जाके श्रवण परत सव वातै हिये न उठत विकारा॥

× × × ×

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचिते राम कलेवा रहस्य ग्रथ अष्टमोध्याय॥ ८॥ इति श्री राम कलेवा सम्पूर्ण॥

विषय—(१) जनक की आज्ञा से लक्ष्मी निधि का रामादि राजकुमारों को कलेऊ के लिये बुलाना, (२) मार्ग में घोड़ों आदि का वर्णन, (३) दर्शनेच्छु स्त्रियों के हाव-भाव, (४–७) सारी-सरहजों का हास्य-परिहास, (८) विदा लेना।

ग्रंथ के आरंभ तथा अंत की तिथि.—जेष्ट दशहरा ते आरम करि क्वार दशहरा काही। राम कलेवा रहस ग्रंथ यह पूरण भरे सुद माहीं॥ ग्रंथ समाप्ति के समय कवि की आयुः—निज पैंतालिस वरप की, उमर जाति परमान। कियौ कलेवा ग्रंथ यह, रामनाथ परधान॥

संख्या ३८८ बी रामकलेवा रहस्य, रचयिता—रामनाथ प्रधान, कागज—साधारण, पत्र—२८, आकार—८ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२५, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १०९२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राघवराम, अध्यापक प्राइमरी स्कूल, ग्राम—आममठ, डाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि ३८८. ए के समान। अत खंडित है।

संख्या ३८७. कोकसार, रचयिता—बाबा रामनाथ सहाय जी, कागज—आधुनिक,

पत्र—२६, आकार—८ × ६½ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२० पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुंशी शिवशंकर लाल, ग्राम—रैठआ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—ॐ सो हो सोरठा । श्री रस रसिक गोपाल वृज नायक वृज चंद पद्द बदन परम अनुराग । जासु कृपा बहु गुन कहउं ॥ दोहा ॥ काम रूप गुन सुमिरि हिय । बंदौ सोमन काम । जासु कृपा बहु सुरवक है रति विच बढ़ बिसराम । चौपाई । प्रथम कोक को रूप बताऊं । काम रूप पुनि बहुरि जनाऊं । ताके प्रीसत मंत्री हुवे कोक प्रधान प्रधान मितरते ॥ प्राची बासदस दिस राजा । जहाँ सपन बसी सुये साजा ॥ एक बार यह राज कहायो । जनाहक काज हेत सो गयऊ । तहाँ आय बहुप्रश्न गँवाई । संगतरुनि बहुं काक रमाई ॥ बिना काज बहुरि सो आयऊ । राजा कारागार पठयऊ ॥ ताही समय जोगिनी एक आई । रति को रूप मनो लिख पाई ॥ नगिन रूप गुरवा बहु बांधे । केस बधारि बांधे सो साधे ॥ कहे प्रचारि मोहि नहीं श्री हाँ । ता गुरवा बाधे पगरी है ॥ पुनि अनुसाय राजा सन कहेऊ । क्यों काहू सो जीतन गयऊ ॥ मदन नाम मंत्री तब कोका । सुन राजा मम बचन असोका ॥ सोरठा ॥ यह है रति भँडार । सुना वृज कोगन कह्यो । कोक काम करतार दूदसी ते और न नहीं

अंत—नाम सरस गुन बढ़ हित कारो । रीझ रहे पार्थ बनवारी ॥ या कछु पूर्व दिये छपु पावै । काम लमिक मिक्र प्रमत्ते पावै ॥ थाक भरी मोठी स बैसे । साम मरो गुन हिय में बैसे ॥ नाम स्वरूप कलाधर द्वारा, नाम हेत भगवन ही जैसे ॥ मा घट पूरन रस संसारा सोहि मरे त्रिमि पद करतारा ॥ श्री रासोलो गुन हिय रासो । ईस मात हरि न मियासाकी ॥ दोहा ॥ भाषा भर इत गुण्य सेवते काम महराज ॥ बरन पंति एक तर किये । नाम प्रसिध्दते काज ॥ इति श्री शुभ कोक शास्त्र भाषायां शुक टीका इत शुभ समाप्त० ॥ इति—

विषय—कोक शास्त्र वर्णन ॥ वंदना, कोक का रूप वर्णन, कोक शास्त्र का नाम, प्रकरण, विषय की उत्पत्ति का कारण, योगिनी का आना कोक के पास । राजा द्वारा भेजा जाना, वरन, कोक का बंदी से छुटकारा पाना, योगिनी का मान मर्दन । योगिनी का लज्जाशील हो राजा के पास आना । योगिनी और कोक का व्याह वर्णन, राजा का कोक से मान मर्दन भेद पूछना, कोक का कोक शास्त्र वर्णन करना, पृ० १—४ कामरूप वर्णन । रतिरूप बखान त्रिया रूप वर्णन एक रति विवर्जित नारी भूषण वर्णन । पृ० ४—११ पदुमिनि चित्रनी लक्षण । संखिनी ल० ल० हस्तिनी ल० ल० । नारी संग भेद वर्णन समया लक्षण और समुन वर्णन, विरहिया वर्णन त्रिया धर्म बखान, पति धर्म सती लक्षण, स्वमि भाविनी ल० कामातुर लक्षण, अनुराग धारी ल० कुमारग गत ल० पृ० ६—१४, अवस्था वर्णन अवस्था का राग वर्णन, पुरुष, प्रसंग व०, पुरुष रहत बमन पिय मिलन योग कामी अवस्था व०, दूती का वर्णन पूर्व प्रस्न प० मृगाभेद वर्णन । पुरुष सिंध भेद वर्णन पृ० १४—२२, केक रति कूजन वर्णन रति केल शुभ लक्षण राजा प्रश्न को रहन बखान पुरुष रहन प्राइन विपरी रीत वर्णन रामानुराग वर्णन, सामुद्रिक धर्म समाप्त । पृ० २१—२७ ।

भोग पर्व वर्णन रति योग वर्णन, नारी सवलन अवस्था वर्णन, गर्भ स्थित लक्षण, योनि विचार मदनार्कुम विचार, खलित करावन विधि लिंग धाम प्रवेश विधि, रति का रमण विविध व० २७—३१, प्रकाश तराने मद्धे रति ज्ञान वर्णन रति समय नारी हर्षित लाभ नारी विरोध हानि, नारी अवस्या रति वर्जित, पुरुप चरित्र नारी चरित्र व० भोग स्वभाविक वर्जित नारी अनुराग उत्पत्ति विधि व, नारी वैराग्य विधि वर्णन, उत्तम दपति रहन व, रस पर रहन व, पुरुप कामातुर काल ज्ञान, प्रतिकूल रति दोप वर्णन परसु योग वर्णन, व, योग को उपाय, कामिनी कामातुर ज्ञान वर्णन, पृ० ३१-३६, पुरुप काम निवास, कामिनी काम निवास वर्णन। पृ० ३६-५०, आसन विधि वर्णन, पद्मिनि प्रिया आसन वर्णन, चित्रिनी प्रि० । संखिनीं प्रि० । हस्तिनी प्रिया सन वर्णन, पृ० ५०—५६ ।

संख्या ३८८ ए. करुणाष्टक, रचयिता—रमणेश, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामअधार मिश्र, ग्राम—ग्रामपुर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ करुणाष्टक लिष्यते ॥ छंद मत्त गजेन्द्र ॥ नाथ विनय सुनिये जु दया निधि जानि स्वदास कृपा करिये जू। ज्यो जु विभीपण पै जु ढरे रमणेशहु पै अवत्यो ढरिये जू॥ कीजिय नाथ अजामिल की सुधि मो अघ करे न हिये धरिये जू॥ मैं अघ मोचन जानि गह्यो पद सो करिये अघ को हरिये जू॥ १ ॥ छंद द्रमिला ॥ शवरी पर नाथ करी करुणा वह कौन कुलीन कहाँ किन जू। तुम वानर भालु निहाल किये कित वैदिक याग किए तिन जू॥ गति गीधहि दीन सु कीन किया नितही नित मास भख्यो जिन जू॥ रमणेश पुकारत आरत ह्वै सुनिये वहु वीति गये दिन जू॥ २ ॥ जिहि पाप हस्यो हरि वालि वही अघनाथ सुकंठ करें नित जू। पुनि मोह विभीपण कीन्ह कुचाल कृपालु न नेकु धरी चित जू॥ नहि दासन को अपराध गिन्यो तुम दीन दयाल कियो हित जू। अति आरत दीन पुकारत है रमणेश की वेर गये कित जू॥ ३ ॥

अंत—राग धनाश्री ॥ रघुवर राषहु विरद तुम्हारी ॥ मै अति अधम अधम अधमनते आयो शरण तुम्हारी। वालमीकि अदिक भाषत हरि शरणागत अघहारी ॥ जो मैं पाप कीन्ह अघ मोचन शारद सकै न उचारी ॥ ताते अव शरणें आयो श्री वर रमण विहारी ॥ ४ ॥ इति श्री करुणाष्टक रघुनाथ विनय सहित सम्पूर्ण शुभ मस्तु लिपत छोटे लाल व्योहरिया स्वपाठनार्थ। इति शुभ । श्री राम जी ।

विपय—रमणेश जी का अपने मोक्ष के लिये प्रार्थना ।

संख्या ३८८ बी श्री राम मल्ल लीला, रचयिता—रमणविहारी, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१४ = १८५७ ई०,

प्राप्तिस्थान—श्री गयादीन तिवारी, ग्राम—बिरसिंहा, डाकघर—धामगाँव, जिला—सीतापुर।

आदि—अथ राम मल्ल लीला लिख्यते ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गणपतये ॥ छंद त्रिभंगी ॥ भुव भूप दशरथ के अति समरथ बीर सुरथ क धुर धारी ॥ रघुनंदन बाके छवि बल छाके अनुजहु आके मत धारी ॥ लक्ष्मण पद वंदन भरत अनंदन शत्रु निकंदन मधु हनै ॥ कछनी सुभ काछे बीर सु बाछे रुचि रुचि आछे बने ठने ॥ १ ॥ जब ईदै कार्य आनंद बाढ़ें मध्य अपाढ़ें मन हरषीं ॥ बैठकी कराहिं जब चित हरैं तब रंग परहिं जब कर पार्से ॥ बंदी गुण गावैं उमगि बढ़ावैं गाम सुनावैं वीर रसे छलि रमण बिहारी छबि सुप भारी प्रेम सुधारी नित बरसे ॥ २ ॥

अंत—इहि भाँति अगारे सुखद अपारे बिरजन हारे सुख पावै ॥ मैं बरणी कई लौ जिमि मति आई कौं प्रभु गुण राई कीं ते गावैं ॥ यह मल्ल सु लीला अति प्रिय शीला रंग रंगीला लेख यहाँ ॥ येखत असुरारी प्रकच बिहारी रमण बिहारी बलत तहाँ ॥ इति श्री कवि रमण बिहारी कृत राम मल्ल लीला समाप्ता ॥ लिख्यतं गया दीन तिवारी स्व पठनार्थ संवत १९१४ जेठ शुक्ल १ ॥ श्री राम राम राम राम राम श्री सीता राम सहाय करै ॥

विषय—श्री रामचन्द्र जी का मल्लयुद्ध।

संख्या १८८ सी. श्री राममल्ल लीला, रचयिता—रमणबिहारी, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सेठ गोविंदराम भगतराम, ग्राम—असिसिहा, जिला—उन्नाव।

संख्या १८९. आनंदरस कल्पतरु, रचयिता—रामप्रसाद (बेतिया), कागज—साधारण, पत्र—८९, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८५० पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७७=१८२० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नूलाल पुस्तकालय, मुरादपुर, जिला—गया।

आदि श्री गणेशायनमः ॥ अथ ग्रंथ आनन्द रस कल्पतरु लिख्यते ॥

दो०—जय जय जयति गणेश तव, पुन्य पयोधि उदार। अावक अभिमत दान मद, सद आनंद अगार ॥१॥ छप्पै—जुगल चरन जन जात पीत पट कटि छबि छाजति। तम्यातर उर दंभ उपर मनि माल बिराजति ॥ चारु चतुर्भुज दंड कमलकर कम्प उर्जगति। श्याम पौंडु कुंडलित शुंड मद गलित गंड अति ॥ बर भाल मध्य भृकुटी कुटिल पुरट मुकुट सिर सुभग भरत। मधु गीत भ्रौन तिहि तार हर झमकि झमकि झप झप करत ॥ दोहा ॥ आश्रित रामप्रसाद की यह बिनती सुनि लहु। मूलन ग्रंथ अनंद मय, रचत बुद्धि वर देहु ॥

अंत—

ल	रा	को	म	ही	प	पु	र	तो	सा	प	द	वी	क	प	थि
धा	क	स	व	प	र	सौं	न	धा	मु	त	हाँ	हाँ	उँ	व	र
सो	भा		हूं	उ	आ	ज	श	जा	ल	वं	दी	ज	न	कू	के
पा	सु	स	त	वा	मु	की	र	वा	ली	नी	क	हा	र	ग	र
ज	ना	जा	ति	सौं	ए	को	नी	को	रा	ज	म	ह	को	नृ	प
दि	ना	रा	ति	वि	नौ	मो	ल	प	रा	भू	म	ये	क	क	र
श्री	प	ति	र	ति	ग	छो	ना	हि	अ	न्य	गु	न	री	भ्यो	ता
धो	पा	ध	न	ध	ग	ध	र	का	म	जु	वा	सी	सु	प	र

राम भक्ति रस मय सुपद या कवित्त को अर्थ । अतर वरन सुचित्र है जानत सकल समर्थ ॥

विषय—रस, नायक-नायिका भेद ।

ग्रंथ कर्त्ता का नाम, राज्य स्थान वर्णन—तिलक सकल सूवानि को सूवा वृहद विहार । प्रगट मझौना परगनौ चपारन सरकार ॥ तहाँ वैंतिया नगर वर विदित राज अस्थान । सुखी वसहि चारों वरन यथा योग्य धनवान ॥ राज्य वंश वर्णन.—श्री श्री श्री नृप मणि महाराज उद्धित प्रताप जिनैं जानत जहान है, ज्ञान मान साहसी सुजान उग्रसैनसिंह ताके गजसहि भये जीत्यो जिन दानु है ॥ फैलि रही कीरति चहूंधा चन्द्र चाँदनी सी जाके गुन

भाज हूँ छी गार्वे गुन माजु है । साकेमन्त मये ताके भूपति दलीपसाहि सुजस समूह जामे वसहु विसाजु है ॥ १० ॥

छप्पैः—मगट मये भुवसाहि नृपति तिनके सुतभारी । देग तेग में पूर प्रबल जिन सत्रु संघारी ॥ जुगल किसोर महीप मये तिनके गुन आगर । तिनके धीर किसोर सील सागर नयनागर ॥ जगविदित जासु जस कल्पतरु दायक वाँछित अति अमल । सुत जुगल प्रगट तिनके मये नृपति सिरोमनि कुल कमल ॥ × × × × श्री श्री श्री नृप मुकुट मनि महाराज सिर मौर । श्री आनंदकिसोर श्री बाबू नवलकिसोर ॥

ग्रंथ निर्माण काल—सम्वत् सिन मुनि नागसहि १८७७ चैत शुक्ल शुभ पाप । पौंसा तिथि कवि दिवस तिन कियो ग्रंथ अभिलाप ।

ग्रंथ निर्माण कारण—सूर केसौं मंडन बिहारी कालिदास ब्रह्म चिंतामनि मतिराम भूषन सुजानिये । लीलाधर सेनापति निपट निवाज निधि नीलकंठ मिश्र सुखदेव देव मानिये आलम रहीम रसखान सुन्दरादिक अनेक सुकवि भये कहाँली बखानिये । इन भाषा हेतु जितनी नायिका करी हैं तैसे नायक हू होत इहाँ आदि होते जानिये ।

ग्रंथ निर्माण काल—सिद्धि ससि १८७७ मास सिद्धापवदार । राज रजायसु पाइकै कियो ग्रंथ अवतार ॥ संवत् सिन मुनि नागि महि १८७७ कातिक मास सुपंथ । शुक्ल अष्टमी वार रवि भो संपूरन ग्रंथ ॥

संख्या ३६० ए. बभ्रुवाहन की कथा, रचयिता—रामप्रसाद, कागज—देसी, पत्र—१२, आकार—८×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) –२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८२, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१५=१८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन सिंह ग्राम—साहपुर, डाकघर—मैरी जिला—सीतापुर ।

आदि—सुर कन्या गावत सुख आवहीं । सुरन्ह सौं सि मिलि परिरावहीं ॥ चलहिं चंदन चढ़े बिमाना । आपुहि आपु जगत वर उमा ॥ एक परै एक सौं जाहि छोड़ाई । एक कै जाइ बिवाह चढ़ाई ॥ उग्र पौंड वर कौतुक होई । हर समान नहिं चीन्है कोई । सब मोहे दैत्य सुर भारी । बभ्रुवाहन कै अद्भुत नारी ॥ हर मसान ऊपर गंधर्वा । छाँड़ि सर्ग मोहे नर सर्वा ॥ देपि कौतुक सुर मुखाने । पवन देपे चढ़े बिमाने ॥ मराय वस्तु सही भूत वैताला । सुरन्ह कसत हो मैन बिसाला ॥ पथ बग जो सुरंग कै आवा । सुरनर मुनी सब देपे भावा ॥ प्रद्युमन सहित रहे सुत बीर । सब के बेधे बान सरीर ॥ अस अद्भुत सुधा आगे पाछे । अर्जुन पुत्र समान जोधा को होई ॥

अंत—प्रद्युमन सहित निपगह सब बीरा । बर्पे पंड प्रति अमृत नीरा ॥ जेऊर धाइ अपर रन मरना । सब जीव गहहिं टेकहिं हरि चरना ॥ देषहिं पथ लिये मनी तैसा । बागे बहुरि पुरंदर मेमा ॥ पुहुप वृष्टि संप मुनि हाई । आनंदित सब कोई होई ॥ कमल नयन पंडु आपौ मिले गहि चरना । मिले मीम सब के दुप हरना ॥ सबै बीर जदि आय गहबों । कृष्ण भीम देवमी अरथों ॥ इति श्री बभ्रु वाहन कथा रामप्रसाद कृत संपूर्णम् लिपतं माघोराम तिवारी सुकुल पछ दसमी माघ पद संवत् १९२५ ॥

विषय—अर्जुन के पुत्र बभ्रुवाहन की कथा जिसमें अश्वमेध यज्ञ में अर्जुन से युद्ध कर उनका सिर काटा था अंत में शेष नाग के यहां से मणि लाकर जिलाया था ॥

संख्या ३६० बी. बारहमासा, रचयिता—रामप्रसाद, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६९ = १८१२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवविलास, ग्राम—चरियारा, जिला—उन्नाव ।

आदि—भांदों में भ्रम दूरि करि अब गुरु सरन भये जाइ के । गुरु शब्द सुनी सुद्ध रूप जान । ओइ दिन पदवी पाइके ॥ जोग जगी जप दान करे नहिं अब गुरु दाया कीनी आनि कै । अनेक जन्म के कर्म छुटे अब अनंद भये प्रभु जानिकै ॥ राम तकि राम सब विच देपा अब प्रीति की न मनु लइकै । ग्यान दीपक जरत हिय विच सो अग्यान भागि पराइ कै ॥ राम प्रसाद देषी राम सोभा सो रहे कोटि भान प्रकास कै । क्वांर कर्म जो करहि ग्यानी सो सुभासु कर्म मानै नहीं । निंदा अस्तुति आइ करै कोउ सो एक सम करि जानहिं ॥ रहित मत सतोष जिनको तेइ इंद्री स्वाद जानत नहीं । लगाइ सुरति जै रापै ब्रह्म परसो आपन आय भूले नहीं ॥ तेइ अलमस्त हैं नमों राम में उने जग्ती गती व्यापै नहीं । मन वासना ना रापै कबहूं तेइ उद्र जोनि आवै नहीं ॥ अब जेहि लागै सो जानहि सो कहन को कछु गम नहीं रामप्रसाद प्रभू निरवान है सो कहन में आवत नहीं ॥

अत—जेठ जत्र तत्र माहि प्रभु है सो अब देपु जड़ चैतन में । सुंन असुन में ब्रह्म जानहु वो रहै व्यापी सब घटन में । अब मोह ममता त्यागि जरि सो भजन करै आठों जाम में ॥ गुरु प्रताप ते पोज पावे अब कौन फिरै तीरथ धाम में । देपि रूप निहचत भए अब सो पहुंचि गये निज धाम में जो पदु पदु लपि जान बैठा ब्रह्म जानि लेउ सोइ आप में । तिल धरने को ठौर नाहीं सो प्रभु व्यापि रहे ब्रह्माड में । रामप्रसाद करि सत संगति सोइ लीन भये नमो राम में । दोहा ॥ रामप्रसाद गाउ बारामास तेतु सो समुझि भये भव पार । अब लीन भए ब्रह्म सरूप में सोइ पहुचि गये दरबार ॥ इति बारामास पूरन सवत् १८६९ वि० क्वार शुदी दसमी लिपा चेतराम पसारी ॥

विषय—ज्ञान की बारह मासी और सत संगीत गुरू के वचन का मानने से आनंद वा मोक्ष पद वर्णन ॥

संख्या ३६० सी. ज्ञान बारहमासा, रचयिता—रामप्रसाद, कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०३ = १८४६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला प्रभु दयाल, ग्राम—आलमनगर, डाकघर—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ राम प्रसाद कृत ज्ञान बारह मासा लिप्यते ॥ आये असाढ़ जग पेत माया सोई कर्म बीज जमते भये ॥ जस करी करनी सचि रापी सोई फल लागत भये ॥ तेइ कर्मन ते सुरझै नहीं सोई माया जाल में नस्वती भये । सुभ असुभ कर्म जे मानि रापे अब सोई फल प्रापति भये । तिन के न लागा राम रंग वे त्रिलोक में

प्रमती भये । अब जिनके गुरु पूरे मिले तेइ ब्रह्म पद पावत भये ॥ बिस्राम करि सब आस छाड़ी सोइ धाम बस गावत भये ॥ रामप्रसाद जिन ब्रह्म जान्यों तेई कर्म रेप मेटत भये ॥ १ ॥ सावन सुरति लीन प्रभु में सोई रूप मनि लगि रहे । जो ध्यान ज्ञानी बिचार पैरे सोई भाति से ब्रह्म पद पै रहै रूप ते सोई फिरि न कबहुं भव अपन आपु जाने रहै । प्रगट है जिनके राग रंग तेई सूक्ष्म सनेह होइ रहे ॥ पाइ सुर दुर्लभ पदारथ भव और पद नीच रहे । गोपमत जिन ज्ञान राखो तेइ प्रभु गुन गावत रहे भव देप छाड़ा दयाल प्रभु के तेइ जानि मन सोइ हुइ रहै ॥ राम प्रसाद ब्रह्म तत जानो तेइ गुन ते न्यारे रहे ॥

भंत—बैसाप ब्रह्म ज्ञाता नहीं पावे सो निज धाम प्रभु के जाति रे ॥ जब नाम का बिस्वास जिनके ते जम पुर नहि जातरे ॥ ब्रह्म मूरति देपि हिय बिच सो प्रभु कछु न ध्यावो जातिरे ॥ करि बिचार दिक्माहि देपी भव भग भटको पातुरे ॥ तुम क्रोध बैर इरपा न त्यागी । सो रहत जग मधि भोगिरे । छमा दया संतोप रहे सदा सो भजन कछू नहि मानि रे ॥ तरह नाम जमका सोइ सुरति लगि दिन राति रे । रामप्रसाद देखि भवसागर सो दिख हरिभव न हती रे ॥ जेठ जत्र तत्र माहिं प्रभु है सो भव देपु अब चेतन में सुन अगुन में ब्रह्म जानहु जो रहे व्यापि सब घटन में ॥ भव मोह ममता त्यागि करि सो भजन करी आठो जाम में । गुरु प्रताप ते मोछ पावै अब जीव फिरै तीरथ धाम में ॥ देपि रूप निहचित भए अब सो पहुँचि गये निज धाम में । जो पद पावु कवि ज्ञान देत ब्रह्म जानि भेद सोई आपु में ॥ तिल धरने को ठौर नाहीं सो प्रभु व्यापि रहे ब्रह्माण्ड में ॥ रामप्रसाद करि सत भगति सोई लीन भए भयो राम में ॥ बारा मासी पूरन ॥ दोहा ॥ राम प्रसाद गायों बारह मास यंतु सो समुझि भये भवपार ॥ भवलीन भये ब्रह्म सरूप मे सोइ पहुँचि गये घर बार ॥ इति श्री राम प्रसाद कृत ज्ञान बारह मासा समाप्ता ॥ संवत १९०१ वि० ॥

विषय—१२ मासा द्वारा मनुष्य को ज्ञान उपदेश वर्णन ॥

संख्या ३६० डी. ज्ञान की बारहमासा, रचयिता—रामप्रसाद, कागज—देसी, पत्र—४, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर बस्तुसिंह, ग्राम—गौरिया कलाँ, डाकघर—फतेपुर, जिला—उन्नाव ।

संख्या ३६१ ए. काव्य प्रभाकर, रचयिता—रामदास, कागज—देसी मोटा, पत्र—११८, आकार—११ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३७, पूर्ण रूप—बहुत प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८० = १८२३ ई०, लिपि काल—सं० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णबिहारी मिश्र, माडल हाउस, लखनऊ ।

आदि—श्री गनेशायनमः दोहा ॥ सिद्धि सदन गज बदन विघन विनासन ध्याइ । तिलक रूप उक्ति करों काव्य प्रकास बनाइ ॥ १ ॥ भये ससहत्व अति निपुण रामदास मतिपाल । भाषा के कवि चलन पर सो मति भयो दयाल ॥ २ ॥ काव्य लक्ष अरु व्यंग्य गुनि वृत्ति सब्द ध्वनि भेद । भाषा कवि जानों सकल समझी सकल अभेद ॥ ३ ॥ सकल सूत्र उत्पा करवों जाय उपमा रस आदि । उत्प्रेक्षा की वे वृत्ति को भाषुमु दीनहों

मोहि ॥ ४ ॥ व्योम॰ सिद्धि॰ सिधि॰ चंद॰ गुरू तिथि पंचमी वत। कस्यौ ग्रथ प्रारंभ हो सुमिरि हिये भगवंत ॥ ५ ॥ ग्रंथारंभ मो विघ्न निवारन कों प्रथम इष्ट देवता सरस्वती को कवि नमस्कार–करत है ॥ रहित नियति कृत नियम गुरु आनद मई स्वतत्र। करैं सृष्टि नवरस रुचि २ जय भारत कवि यंत्र ॥ १ ॥ नियति कृत नियम रहितां ह्लादैकमयी मनन्यपरतंत्राम्। नवरस रुचिरानिर्मित मादधती भारती कवेर्जयति ॥ १ ॥ विधाता की सृष्टि नियति जो भाग्य है ताके वल सों नियमित है चौरासी लक्ष योनि युक्ति प्रथम जा प्रकार कस्यौ है भाग्या धीनता सों ता प्रकार से अन्य प्रकार नहीं ह्वै सकतो भाग्य जो है सो जीवन को आपने अनुसार लेति नहीं योनिन में उत्पन्न करत है औ कवि भारती की काव्य रूप सृष्टि भाग्य कृत नियम सौं रहित है—

अंत—कहू वक्ता औ प्रवंध की अपेक्षा विन वाच्यार्थ की योग्यता सों रचनादि को ह्वै वो यथा ॥ रामवान भिन्न कुभ करन वली को वुडु व्योम तें गिरत उत मांग अति भोरा है। घोर उपघात उदभट उच्छलन वेग पतन गभीर भीत लोचन निहस्यौ है ॥ राहु को पतन मन मानिकै तुरंग मोरि रवि रथ अरुण तिरोछो करि टारो है ॥ ग्रीव कुहरन मैं प्रविष्ट यव मानि व्याज रघुवर वलहि कहुत अति भारी है ॥ यामै वक्ता वैतालिक है औ प्रवंध अभिनय जोग्य नाटक है तासों उद्भूत रचनादि दुहुन को प्रतिकूल है वाच्य जो कुभ करण है सो रचनादिको ह्वै व्योयथा ॥ कादवरी आदि आख्यायिका में जहा श्रृंगार रस व्यंग्य है औ वक्ता कहवी आदि अनुद्धत हैं तहां ऊ प्रवध की योग्यता सों उद्धत ही रचना है औ नाटकादि मों रौद्ररस हू मों दीर्घ समास नहीं है दीर्घ समास मों विलंव सों अर्थ प्रतीत होति है तासों अभिनय को ज्ञान नहीं हो तो भाई। विधि अन्यचहू जानियो ॥ इति श्री सकल विद्याविनोद मानसराजु हंस सांडिल्य वंसावतंस भूमिपाल वृद विख्यात तरणि वंश तरणि जल जात श्री राम राज विरचिते काव्य प्रभाकरे अष्टम प्रकासः ८। श्री संवत् १९०४ मीति कातिक वदी ३ वार मग के काव्य' समाप्त हुआ ॥

संख्या ३६१ वी. काव्य प्रभाकर, रचयिता—रामराज, कागज—देशी, पत्र—२२०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८० = १८२४ ई०, लिपिकाल—स० १९६३ = १९०६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाशसिंह, मल्लापुर, सीतापुर।

शेप ३६१ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है —

श्री रामराज विरचिते काव्य प्रभाकरे अष्टम प्रकाशः आपाढ़ शुक्ल नौमी संवत १९६३ लेप समाप्त श्री कृष्ण शर्मा कवि भ्रम भट्ट मिश्र मझौली असनी जिला फतहपुर निवासी ने श्री मान को मेंट किया।

संख्या ३६२ ए. राम वारहखड़ी, रचयिता—रामरतन, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—४ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९३ = १८३६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जयंती प्रसाद, ग्राम—गोसाईं खेड़ा, डाकघर—चमयानी, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम बारह खड़ी लिख्यते ॥ चौपाई ॥ कका ॥ करुणामय रघुबीर कृपाला ॥ अज अविनासी दीन दयाला ॥ भंजन असुर भूमि के भारा। प्रगट भये रघुबंश कुमारा ॥ खखा ॥ खेलत दसरथ आगन माहीं। काम रूप छवि बरनि न जाही ॥ लछिमन भरत सत्रुघन भैइया। निरखत जननी लेत बलैया ॥ गगा ॥ गौर स्याम सुंदर दोउ जोरी। जो कछु कहउं सो उपमा थोरी ॥ कर धनुही कंकर कसे निर्षंगा। चढ़िके नचवै चपल तुरंगा ॥

अंत—षाषा ॥ सोभित कनक सिंघासन रामा। सिर पर छत्र सिया तय बामा ॥ भरत कपन दोऊ चमर दुरावें ॥ जय सुर करत सुमन बर्सावें ॥ पपा ॥ चित्रमत करें प्रीति उर लावै संत चरन में चित लगावैं ॥ लछिमन आदि भरत रिपु सूदन। करहिं सेवा रघु पति पद पूजन ॥ ससा ॥ साधु वृक्ष जिम पर रघुराई। श्री रघुबर कीरत अधिकाई ॥ इति श्री राम बारह खड़ी समाप्तः श्री रामचन्द्रार्पण मस्तु ॥ लिखा गौरी गनेस कीरतपुर निवासी जेठ शुक्ला दसमी संवत १८९१ वि० ॥

विषय—बारहखड़ी में राम जन्म से लेकर वन से घर लौटने तक का वर्णन ॥

संख्या ११२ थी राम चरितावली, रचयिता—रामरतन, कागज—साधारण, पत्र—७ आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री ब्रजभूषण सिंह, ग्राम—कुकबारा, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ राम रतन भव तरन हैं, जतन राम गुन गाइ। भव सागर के तरन हैं आहिन आन उपाइ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ क का करुणामय रघुबीर कृपाला। अज अविनासी दीन दयाला ॥ सुर हित हरन भूमि कौ भारा। प्रगट भये रघुबंस कुमारा ॥ १ ॥ खा खा खेलत दसरथ अंगन माहीं। कालरूप छबि बरनि न जाई ॥ निरखत[१] जननी लेत बलाई। लछमन[१] भरत शत्रुघन भाई ॥ २ ॥ ग गा गौर स्याम सुदर दोउ जोरी। जो कछु उपमा कहूं सो थोरी। कर धनुपहि कटिक सै निर्षंगा। चढ़े नचावत चपल तुरंग ॥

अंत—हा हा हिरदे जो धरिये हिर ध्याना। तिन्ह निज जन्म सुफल करि जाना। तीनि लोक में भयो अनंदा। जय जय करत सकल सुर वृंदा ॥ ११ ॥ रामरतन तिन्ह की रति पाई। हृदये सिय पति सदा सुहाई ॥ संत जनन सिधि कीरति गाई। तुलसी हिय बसि सिय रघुराई ॥ १४ यह रघुबर चरित्र सुख दाई। सारद सेस बरनि श्रुति गाई ॥ जो यह पढ़ै सुनै अरु गावै। राम कृपा मन बांछित पावै ॥ १५ ॥ दो०।—रामरतन परि करि कृपा, यह दीजै श्री राम। सदा रहत सत संग में, चित चरनन सुख धाम ॥ १६ ॥ इति श्री उत्तर कांड श्री राम चरितावली ॥

विषय—रामचन्द्र जी का चरित।

संख्या ११३ प लेखा मजमू, रचयिता—रामराय, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार ६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९० = १८३३, ई०, प्राप्तिस्थान—श्री देवतादीन मिश्र, ग्राम—सुलतानपुर, डाकघर—थाना, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ लै लै मजनू लिप्यते ॥ जवाव मजनू का ॥ दोहा ॥ जा दिन मजनू जन्मियो जिस दिन किया करार साहव तूही सच हैं झूठा सब संसार ॥ ऐरे सुल्तानी दिलवर जानी तन मन आग लगाय गई। ऐसी खूवी चंदर वदनी नाजुक वदन दिपाय गई ॥ शाल दुशाले मोहन माले लटक लटक लटकाय गई ॥ आशक मजनू हुए दिवाने हाय हाय लै लै किधर गई ॥ १ ॥ दो० ॥ जादिन से विछुरन भयो फिर नहिं देखे नैन। जैसे घायल नीर विन तल फत हैं दिन रैन ॥ ढूढ़ा मुल्तान देस काबुल सारी। पूरव गुज रात देस दछिन नगरी ॥ ढूढ़ी लाहौर शहर सवे निहारी। पाई महवूव नहीं लै लै प्यारी ॥

अंत—॥ कवित्त ॥ सूखी सी सूरत पै जान कुरवान करूं साहेव सरूप मुझ देखनें को दिया है। जहां जहा जाती हूं कहाती हूं उसी की और कहा चाहते हो धन्य मेरा दिया है ॥ कहत राम राय कोई लाख वुरा मान रहो जैसा यार चहाती मैं वैसा ढह लिया है ॥ हुए हैं दिवाने लोग दिल की न जाने कोई मजनू ने काम मेरे चश्मों पर किया है ॥ दोहा ॥ इश्क उसी की झलक है ज्यों सूरज की धूप ॥ विना इश्क पावे नहीं कादर नारद रूप ॥ इश्क करैं सो वावरे करि छाडैं सो कूर इश्क चमन के वीच में पहुचे मजनू नूर ॥ इति श्री मजनू लै लै सम्पूर्ण समाप्तः संवत १८९० वि० लेखक राम भजन मिश्र मुकाम पाली ॥ राम राम राम ॥

विषय—लैला-मजनू की प्रेम कथा।

संख्या ३९३ वी लैला मजनू, रचयिता—रामराय, कागज—देशी, पत्र—१२ आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१७ = १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामभरोसे मिश्र, ग्राम—बटौली, डाकघर—नेती, जिला—सीतापुर।

शेष ३९३ ए के समान।

संख्या ३९३ सी. लैला मजनू, रचयिता—रामराय, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१७ = १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री अजयपाल सिंह, ग्राम—गागीमऊ, डाकघर—सिधौली, जिला—सीतापुर।

शेष ३९३ ए के समान।

संख्या ३९४ ए. वृत्ततरंगिनी (वृत्त-तरंगिणी), रचयिता—राम सहाय कायस्थ, कागज—देशी, पत्र—७६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७३ = १८१६ ई०, लिपिकाल—स० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राधावल्लभ, ग्राम—खैराबाद, डाकघर राजेपुर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वृत्त तरंगिनी लिख्यते ॥ मन हरन । सिंदुर बंदन एक रदन बदन सुचि सुंदर सुसुंड मध्य सिंदुर प्रभा लसी । सुभा दंड उन्नत कै कुंडली के परसत प्रनव स्वरूप छवि वितन महा बसी ॥ आनंद के ध्यान कीन्हे छूटे जम यातन ते भाक वाक चंद देपि पाप ताप ह्वै नसी । सिव जगदंब बारो मेरे हिय धाम राम ससिधि सदा बसी ॥ १ ॥ अपरंच ॥ कनक कनक मध्य दनक दमक लसी दीपि चप चंचला सी सुषमा सु प्रकासिनी ॥ संप चक्र पद भद्र अमय करन नीच चंद्र बदन ललित ललित छवि रासिनी ॥ राम भुज आभरन अंगद उर सिंहार कुंडल श्रवन पग पायल विलासिनी ॥ अस्तुति सुरेन्द्र आदि करहिं मयंक मुषी सुमुषी मृगेन्द्र मुषी ध्यावों सिंधु वासनी ॥ २५ दो० ॥ सिद्धि करहिं सो देव वर मिति नित जन मन काम । असन मंग सिर गंग भाल चंद्रकला छवि धाम ॥ सो० ॥ श्री गुरू ब्रह्म स्वरूप चिंता मोच चिंता हरन । तिनके चरन अनूप मनो जोरि निज कल सुगुल ॥ कविता की रचनानि को नैकु न जानों भेद । श्री गुर पद अरविंद को केवल मोहि उमेद ॥ दायक नित्यानंद के श्री चिंतामनि चित । सो मो पै अनुकूल अति । याते रची कवित्त ॥ सोरठा श्री चिंता मनि पाय चिंता मनि पायहिं चोस्यों । चिंतत चिंता जाम सिद्धि सा नित मोचित बसी ॥ चंप्पा सुचि सिद्धि सिंधु बरष गो ? लिपि सुदि उजी सुरा चार्ज वासर सुपद अरु पद में गत सूर्य ॥ सो० । गनपत गौरी सिव ध्याय अरु गुर के पद पदुम परि । ता दिन राम सहाय वृत्त तरंगिनि की रची ॥

अंत—सवैया ॥ राम सहाय करें उनको नति जो गुन को तजि दोष निहारि हैं । श्री सपनेहुं जिन्हें नहि ज्ञान बखान बने बरभानि बिगारि है ॥ पावहिं जे गुण सोई बिसेष सत निधि जो हरि बूझि बिचारि हैं ॥ है इतनी परतीत बनी अबकी कविता कवि साधु सुधारि हैं ॥ सो० ॥ दोष रहित कविराज की सविता की है कृपा यातें कवि विद्वान सों उपहास न कीजिये ॥ इति श्री भवानी दासात्मज राम सहाय दास कायस्थ अष्ठाना कृत वृत्त तरंगिनी समाप्तम श्री संवत १९०० श्रावण कृष्ण पक्षे द्वितीया वो गुरु वासरे लिख्यते हीरा लाल पाठक अगस्ति कुंड पर ॥

विषय—विविध वृत्तों के लक्षणोदाहरणादि ।

संख्या ३६४ बी वृत्त तरंगिणी, रचयिता—रामसहायदास कायस्थ, कागज—पुराना देसी, पत्र—१५०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०२, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७३ = १८१६ ई०, लिपिकाल— सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण बिहारी मिश्र, गोलक हाउस, लखनऊ ।

आदि—३६४ ए के समान ।

पुष्पिका—इति श्री भवानी दासात्मज राम सहाय दास कायस्थ [अष्ठाना कृता वृत्त तरंगिणी समाप्तम् श्री संवत् १९०० श्रावण कृष्ण पक्षे द्वितीयायां गुरु वासरे लिखितं हीरा लाल पाठक अगस्ति कुंड पर ।

संख्या ३६५. मंगलाष्टक, रचयिता—स्वामी रामसखे, कागज—साधारण, पत्र—२, आकार—९३/४ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण,

रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९८=१८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामप्रसाद मुराव, ग्राम—पुरवा विश्रामदास, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री रामानुजाय नमः॥ अथ मगल अष्टक लिख्यते॥ कवित्त॥ घटिका द्वै निशा अवशेष जानि जूथ गृथ साजि कै सिंगार आई नागरी नवीनी हैं। प्रिया मन भाव न जगावन कौ आतुर ह्वै द्वादश सहस्र राज कन्या रस भीनी हैं॥ क्रीडा रति कुंज के सु अगन में रंग भरी चुटकी बजावैं मद अति ही प्रवीनी हैं गान कला चातुरी गंधर्व कन्या चंद्र मुखी सत्य स्वर शील की अलापै मृदु कीनी है।

अत—अद्भुत अखड महा मगल स्वरूप राम मगल सिया जू सब मगल पटरानी है। राम सखे मगल सुहृद प्रिय नर्म सखा मगल चारु शीलो आदि सखी सुख दानी है॥ मगल प्रमोद वन सरजू तट रत्नाद्रि चिंतामनि भूमि अवधमगल की खानी है। मगल मधु पर्क भोग धरे पिया प्यारी को करैं मगल आरती सहेली हरषाती है (१०) प्रात ध्यान सिय लाल को, मगल अष्टक नाम। पढ़ै सुनै तिन पै सदा, द्रवै जानकी राम॥ (११) इति श्री महाराजा धिराज महाराज स्वामी रामसखे कृत मगल अष्टक समाप्तम्॥ शुभ मस्तु। संवत् १८९८ लि० चरन दास पांडे॥

विषय—(१) पृ० १ से ४ तक—द्वैघटी निशि अवशेष रहने पर सखियों द्वारा सीताराम के जगाने का आयोजन। स्त्रियों के नृत्य वाद्यादि की ध्वनि श्रवण कर राम द्वारा सीता को विबोध किया जाना, शैथिल्य तथा आलस्यवश्य जमुहाई लेते दम्पति का जागृत होना। दम्पति के सुखकर, मनोरंजन कारी तथा आनंद वर्द्धक वस्तुओं का सखियों द्वारा उनके नित्य-कृत्य के पश्चात् लाना और गानादि द्वारा उनका चित्त प्रसन्न करना। (२) पृ० ४ से—राम, सीता, सखा, सखी और प्रमोद वनादि के मंगल कारी होने का वर्णन। अष्टक के पठन पाठन और श्रवण का फल।

संख्या ३६६ ए मनमोहन भक्ति विलास, रचयिता—रामसिंह (नरवर, ग्वालियर), कागज—प्राचीन देशी, पत्र—१६, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३०=१७७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री भालचद्र मिश्र, ग्राम—सीतलनटोला, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री राधा कृष्णाभ्यां नम.॥ श्री मन्मोहनो जयति॥ अथ मन्मोहन भक्ति विलाप लिख्यते। दोहा। विघन हरन हरि रावरौ सरन गह्यौ मन लाय। ह्वै दयाल असरन सरन निसि दिन रह्यो सहाय दामोदर सुन्दर वदन गुन मदिर गोविन्द॥ वदन तुव अरविंदपद वदिन कलिंद॥ २॥ वदन बनै न सीस सौ रसना सौ गुन गान॥ अरचन बनै न करन सों मन सौ बनै न ध्यान॥ ३॥

अंत—कथा रावरी कौ श्रवन सदा करौ मन लाय॥ वृज नायक विनती यहे वृथा कथा न सुहाई॥ १००॥ दो इस हस रस नानिसौं वरनि सकै नहि सेस तुव गुन रसना एक सौ कै सैं कहों रमेश॥ १०१ श्री मन्महाराजाधिराज महा राजा राम सिंह जी कृत मनमोहन भक्ति विलास सपूर्ण मिति॥ सुभ मस्तु। श्री कल्यान रस्तु॥

विषय—युग आराधना ॥

३६६ सी जुगलविलास, रचयिता—महाराज रामसिंह, (नरवर, ग्वालियर), कागज—देसी पत्र—५७, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२६ = १७७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मार्कण्डेय मिश्र, ग्राम—सीतलमटोला, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री मन्मोहनो जयति। श्री राधा कृष्ण भ्यां नमः अथ जुगुल बिलास लिष्यते कवित्व ॥ राग गौरी। सोहत मुकुट सीस कुंडल श्रवण सोहैं मुरली अधर धुनि मोहै त्रभुवन कौं। कोमल रसाल बंक भृकुटी बिसाल सो हैं नन माल धरी हरैं छेवि मन कौं। रूप मन मोहन न चित तै बिसारौं वारौं सुंदर बदन पर कोटि मदन कौं। जगत निवास कीजै सुमति प्रकास मेरे उर मैं हुलास है चित्त बिलास बरनन कौं ॥ राग कन्हरी ॥ नागरी नवेली अलबेली अकेली भांति संग सषियानि किये सोहैं ही कलानि मैं निकसे तहाँ ह्वै आनि तहाँ मन मोहन परम प्रवीन रस की बेंकी कलानि मैं ॥ मुरली बजै कै चले गये नेह बीज बै कै चिते कै चिते मोहि मुसिक्यानि मैं ॥

अंत—राग गौरी ॥ कीरत कुमारि अरु नन्द की कुमार सदा करत रहत ही विहार वृन्दावन मैं। राधा मन मोहन के रूप की निकाई सम कहिबो की सुन्दर ताई नाहीं त्रिभुवन मैं गोपिनि के गन मैं बिराजै दोऊ ऐसैं सोहत हैं रोहिनी रमन तारागन मैं। जमुना के तट बंसी बटके रमन वारे नील पीत पटवारे बसौं मेरे मन मैं। राग सोरठ ॥ नर वर नाथ राम सिंह सुतरामसिंह रुचिर बनायौ प्रथ रस की निवास है ॥ गावै जो गावावै सुनै प्रेम मैं मगन ह्वै ताके उर राधा मन मोहन को बास है। सम्वत अठारह सौ बरस छतीस सुचि सुदि तिथि पाचैं गुरुवार माघ मास है। रसिक हुलास कर सुमति प्रकाश करन यह प्रगट भयो जुगुल बिलास है ॥१०१॥ श्री मन्महाराज धिराज महाराजा राम सिंह जी कवित सतकजुगुल विलास संपूर्ण मिति शुभ मस्तु। श्री ः मस्तु ॥

विषय—राधा कृष्ण के शृंगार विषयक वर्णन।

संख्या ३६६ डी रस सिरोमनि, रचयिता—महाराजा रामसिंह (नरवर ग्वालियर), कागज—देसी, पत्र—१२२ आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१५, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३० = १७७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मार्कण्डेय मिश्र, ग्राम—सीतलमटोला, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः। श्री मन्मो हनो जयति। अथ रस सिरोमनि ग्रंथ लिष्यते ॥ दोहा ॥ विघन हरन आनंद करन राधा नन्द कुमार ॥ जिन्हे परसपर होत है कोटिक विधि शृंगार ॥ १ ॥ नायका कथन ॥ जित जित रसकौ भाव अति उपजत देतैं जाहि। कविजन रसिक प्रवीन कै कहत नायका ताहि ॥ २ ॥ उदाहरन ॥ अंग सलौने भरे छवि सीं मै से कोमल गात किये बदनाई। नैन बड़े सितसी कोटि सो जितसै मुसिक्यानि सुवानी

मिटाई । दैन सुने सरसै सुप श्रोननि है मन मोहन चाए निकाई होत निहारत मै न अवानि लसै छवि औरही और सुहाई दोहा ॥ त्रिविध नाइका होति हैं प्रथम स्वकीय वाम । द्वितिय पर क्रिया त्रितिया कौं कहियै गनिका नाम ॥

अत--दोहा ॥ दृग दरसन रसना सदा कहत रहौं गुन गांव । म मन मोहन रावरौ धरत रहौं नित ध्यान ॥ ३३० ॥ कूरम कुल नर वर नृपति क्षत्र सिंह परवीन ॥ रामसिंह तिहि तनय यह वरन्यौ ग्रंथ नवीन ॥ ३३१ ॥ चौपाही । वरन वरन विचारि नीकै समझियौं गुन धाम, सरल ग्रथ नवीन प्रगट्यौ रस सिरोमनि नाम । माघ सुदि तिथि पूरना पग युप अरु गुरु वार । गिनी अठारह सै वरस पुनि तीस संवत मार ॥ ३३२ ॥ श्री मन्महाराजा धिराज महाराज राजा रामसिंह जी कृत रस सिरोमनि ग्रथ संम्पूर्ण मिति । शुभ मस्तु । श्रीकल्यान रस्तु ।

विषय— नायक नायिका भेद तथा शृगार रस आदि का वर्णन ॥

संख्या ३९७. धर्मादर्श, रचयिता—महाराजा रणजीत सिंह, कागज—देशी, पत्र—१८२, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८२२, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदयाल, ग्राम—कफारा, डाकघर—ईसानगर, जिला—खीरी ।

आदि—शुक्ला तृतीया श्रावणी मधुश्रवा है नाम पर विद्धा सो काट की स्नान दान जय जाय ॥ श्रावण शुक्लाचतुर्थी पूर्व जुता जब होइ । सो उत्सव गणनाथ को जजन दान को सोइ ॥ श्रावण शुक्ला पचमी नाग पचमी नाउ । पष्ठी विद्धा सो करी नाग जजन सुभ ठाऊ । श्रावण शुक्ला द्वादशी दधि घृत मज्या ताहि । तह्रा पवित्रा रोपिणं विष्णु हेत करि जाहि ॥ चतुर्दशी शिव का करै शुक्ल पक्षिमा जानि उपा कर्म सुदर करै काल विहित सो मानि ॥

अत—मुर्छित हुइ कै गिरि गई कीन्हे दृढ प्रहार । उटत भई फिरि कै चलौ कछुक दूरि तेहि वार ॥ ग्रामै यद्यति खाति है पिअति जदपि भै वार । आदि कर्म चडाल ते प्राश्चित सो न प्रकार ॥ निधन कियो गो पिंढका एक चरण वृतकार । गर्भ हते द्वै पद करै पूर्ण प्रजा प्रति कार ॥ × × × दृढ हनै पापान वा गाढ़ै करै प्रहार । श्र ग भग वृत चरण है द्वये नेत्र माकार ॥ चरण कृपालागूल में अस्थि भग करि ढोइ । तीनि चरण है करण में पतत पूर्ण है सोइ । श्रंग भृ ग अरु अस्थिका होति भई कटि भग । जीव जो पट मास भरि प्राश्चित सोन प्रसग ॥ जाइ मरी दावानलै अथवा वधन पास । कंठ परी जो कठनता मरण जाइ का जासु ॥ गेह मरै वा वन मरै वाधत वा मरिजाइ मारै नाका जानि कै विनु जाने मरि जाइ । हलमा अथवा सकट मा गोपति पीडित पीठ तौन मरण है जानि कर जोपि परत है दीठ ॥

विषय—व्रत, उपवास, प्रायश्चित्त आदि वर्णन ।

संख्या ३९८. आनद मजरी, रचयिता—रायरान करन, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८२८ = १७७१ ई०, प्राप्तिस्थान—राधा वल्लभ, ग्राम—खैराबाद, डाकघर—राजेपुर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ आनंद मंजरी राइ राम चरन हत लिप्यते ॥ श्री आनंदी आनंद मई के चरन कमल चित लाऊं। कहीं विमल आनंद मंजरी अति आनंद उपजाऊं ॥ १ ॥ तामैं कहीं समाय सबै सुप दुष नाशन हित जिनके ध्यान विकास और शुभ अयाइक। गुड़ रहस्य सुमन के ॥ दो॰ ॥ देव चरित को भेद कछु मोरे समुझि परै न। ज्यों न कहत कवि मंथरा मैं हूं कही सुचेन ॥ जप तप संजम सौं बसत कहूं पान कहूं पान ब्रह्म ग्यान मुनि मुक्ति फल यहाँ एक हरि ध्यान ॥ २ ॥

अंत—रीटी एक अब कछु छोटी सी न मोटी गनै छोटी एक कारन चाहीं। चौहान कृ पाल के ॥ मत्स्य चारि पंड सूकर उप्य सुत जथा शक्ति एक होइ शक्ति आदि शक्ति मुंड माल क। शिवा एक ध्यान हरन मगन रहो आठो निसि मैं तौ निज प्रति पर्यौ चाहत कृपाल के ॥ तर द्वार आये बिना चाह तौ न जात छोड़ होइ कै प्रसिद्ध आदि देहि देपि काल के ॥ ४१ ॥ छप्पै—उंद ॥ पढ़ै सुनै आनंद मंजरी कमला आनं। पढ़े सुनै आनंद मंजरी शिव पद पावै ॥ पढ़ै सुन आनंद मंजरी काल न परसै। पढ़ै सुनै आनंद मंजरी स्यामा दरसै ॥ अस हंस कह्यो साईं सुजस सुकवि करनि पुनि इमि कहै सुनि पद सु आनंद मंजरी भक्ति मुक्ति निरचै लहै ॥ इति श्री आनंद मंजरी सम्पूर्ण शुभ भूयात् संवत १८१८ वि॰ माह बदी ओकम वार बुध वार ॥

विषय—प्रथम देवी भगवती की वंदना पुनः अपना जीवन आनंद से व्यतीत होने का वर्णन ॥

संख्या ३९६. तोता मैना की कहानी, रचयिता—रंगीलाल (आगरा) कागज—साधारण, पत्र—४८ आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७ परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४०, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं॰ १९०७=१८५० ई॰, प्राप्तिस्थान—श्री रामा मुराव, ग्राम—बघमीरपुर, डाकघर—मौरावां, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ तोता मैना की कहानियां लिप्यते वंदना ॥ प्रथमैं मैं उस पर ब्रह्म परमेश्वर की वंदना करता हूं कि जिसने इस अद्भुत सृष्टी को अपनी शक्ति मात्र से ही रचा है और मनुष्य से लेकर चींटी तकको बनाया और उनका पालन पोषण किया इसलिये उस सर्व व्यापी सच्चिदानंद का स्मरण कर रसिक जनों के चित्त को बहलाने के लिये नवीन मन हरन कहानी तोता व मैना की अपनी मति के अनुसार पाठक गणों की सेवा में अर्पण करता हूं। रमणीक द्वीप के निकट एक अति उत्तम और शोभायमान उपवन फल फूलों से लदा हुआ और अनेक प्रकार के मन हरण रंग बिरंगे पंछी कोयल मोर चकोर हंस सारस आदि से सुशोभित अनेक तालाब और सरोवरों से परिपूर्ण इन्द्र के नंदन वन के समान ग्रीष्मधाम था उसी उपवन के अनेक सघन वृक्षों पर प्रत्येक पक्षियों ने अपना निवास स्थान बना रक्खा था ॥ दैव योग से एक दिवस एक तोता भाग्य कैद का मारा अति व्याकुल एक वृक्ष पर अपनी विपत्ति की बेरा काटने के लिये आ बैठा ॥ और उसी वृक्ष पर एक मैना का वास था ॥ जब मैना ने अपने वृक्ष पर तोते को बैठा देखा तो आंखें लाल करके बड़े क्रोध के साथ बोली कि ऐ तोते तू मेरे दरख्त पर क्यों आन बैठा है। यहां से उठ किसी और दरख्त पर चला जा। मैना की ये बातें सुनकर तोता बोला कि हे मैना हम तेरा

क्या विगारते हैं एक डाली पर आज की रात विता कर सुबह उठकर अपने स्थान को चले जावेंगे ॥

अंत—जव ठग आया तव मदन पाल पेड पर चढ़ गया और ठग उसके पकड़ने के लिये पेड़ पर चढ़ा सव ठग की वेटी ने वहाँ साड़िनी पर सवार हो गुद्दे के नीचे ले गई मदन पाल उस पर कूद पड़ा और दोनों वहां से चल दिया और ठग देखते ही रह गया। दोनो चलते चलते कई दिन में एक वड़े शहर में पहुच और वहा दोनों आराम से रहने लगे ॥ ठग की वेटी मदन पाल को प्यार करके साथ रखती थी। जव देश निकाले के दिन पूरे हुये तव मदन पाल ने मन में विचारा कि अव तो अपने वतन को जाना चाहिये परन्तु एक वात कठिन है कि इस ठग की वेटी को लेकर कैसे चलूं जो पिता इसे देखेंगे तो क्रोध करके फेर देश निकाला कर देंगे यह वात मन में विचार कर जव रात को ठग की वेटी सो गई तो मदन पाल ने तलवार निकाल कर उसको मार डाला और कोठे में वंद कर सव माल असवाव लेकर घर का रास्ता लिया मैना वोली कि हे तोता ठग की वेटी ने मदन पाल के संग कैसा सलूक किया कि उसके प्राण वचाये और इसने उसे जान से मार डाला॥ सो हे तोता मैं इसी सवव से मरद की जात से नफरत खाती हूं तव तोता वोला कि ऐ मैना सव मरद और औरत एक से नहीं होते अगर तू सुने तो एक दास्तान और सुनाऊं मुझको याद आगई है ॥ इति तोता मैना की कहानी संपूर्ण समाप्त ॥ लिखा गोपी नाथ तिवारी अपने पढने के लिये संवत १९०७ भाद्र पद जन्माष्टमी के दिन ॥

विषय—तोता और मैना की प्रसिद्ध कहानी

संख्या ४०० वैद्यक जर्राही, रचयिता—पं० रंगीलाल (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—१२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६२०, पूर्ण, रूप—गलित, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवनारायण, ग्राम—वढैला, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्यक जर्राही लिख्यते ॥ द्वितीय खंड मंगला चरण ॥दो०॥ श्री धनवंतर के चरण रज निज मस्तक धार। जर्राही परकार ये रच्यो ग्रंथ सुपकार। पुनि गुरु चरण सरोज रज मस्तक तिलक चढ़ाय रोगिन के उपकार हित पूरण कियो वनाय ॥ नाना ग्रंथनको रतनु अरु निज मति अनुसार लिपी चिकित्सा देह की सुप पावें संसार ॥ अथ मस्तक के फोड़े का यत्न ॥ जानना चाहिये कि एक फोड़ा सिर के तालू पर होता है सूरत उसको यह है कि पोस्त के दाने के वरावर होता है ॥ और उसके आस पास हथेली के वरावर स्याही होती है और वह स्याही हवा के सदृश दौड़ती है ॥ और जहरवाद से संवंध रखती है। यहा तक ये स्याही फैलती है कि सव शरीर स्याह हो जाती है और वह रोगी चार या आठ पहर पीछे मृत्यु को पहुच जाता है परतु परमेश्वर की अनुग्रह से कोई अच्छा जर्राह चिकित्सा करने वाला मिल जाता है तो निस्सन्देह आराम हो जाता है और चिकित्सा करनेवाले को चाहिये कि जो वह स्याही कंठ से नीचे न उतरी होय तो चिकित्सा करने से आराम हो जाता है और

जो स्याही कठ से नीचे उतर आई होय तो इलाज करना न चाहिये इस फोड़े का निशान नीचे खिची तस्वीर में देख लेना (तस्वीर बनी है)।

अंत—जाके मनुष्यों को फस्त का अभ्यास पड़ जाता है फिर वह फस्त न खुलवावें तो एक न एक रोग सताता रहता है ॥ और वर्षाकाल में रुधिर मातदिल हो जाता है ॥ उस रितु में फस्त खुलवाना योग्य नहीं और जो हकीम की सम्मति हो तो खुलवा लेवे और जिन दिनों में रुधिर कम होता है तब खुस्की के कारण कई रोग हो जाते है और पीड़ा भी हर एक प्रकार की होती है जब फस्त खुलवाने की बहुत ही आवश्यकता होती है उस समय दिन तारीख रितु आदि का कुछ भी विचार नहीं किया जाता है।

इति जर्राही वैद्यक रंगीलाल कृत संग्रहीत ग्रंथ द्वितीय खंड संपूर्णम् शुभम संवत् १९१९ विक्रमी ॥

विषय—फोड़े फुन्सियों से बचना और उनकी औषधियों के बनाने की तरकीबें। फस्त खुलवाने व जुलाब लेने का समय आदि।

संख्या ४०१ बारहमासा निपट नादान, रचयिता—रंगीलाल, कागज—साधारण, पत्र—४, आकार—८ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला पुरुषोत्तमदास, कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—अथ निपट नादान की बारहमासी ॥ सावनी ॥ कहूँ मैं जिसने दिल का ध्यान। मिला सखी पीतम निपट नादान ॥ लगा प्रथम असाढ़ आली। घटा छाई काली काली ॥ चमकती चपला मतवाली। हुई मन मैंगल हरियाली ॥ दोहा ॥ घन घमंड की गरज से अति हरखे मन मोर। मिला निपट नादान पिया तन बारत मयूर मोर ॥

अंत—हुआ पूरा मुजूर का साल। कहा नादान पती का हाल ॥ बुरी ये पड़ी जगत में चाल। इसमे अति दुख पाती हैं बाल ॥ दो० ॥ कन्चि काल कलि काल में, देखो नैन पसार। घर देखे घर कोई देखते, ऐसे निपट गमार ॥ बदल जिनकी दरकी भगवान। मिला सखी पीतम निपट नादान ॥ १२ ॥ छन्द ये कहा आज हम गाय। समझ लो सब जन चित्त लगाय ॥ करो सब मिलके कछु उपाय। जिससे ये बुरी चाल मिटि जाय ॥ दो० ॥ कहा हमने दिल का भरा। बारह मासा गाय। सोच समझ मन गुनो सभी जब कुछ कर्छक मिटि जाय ॥ कयाल द्विज रंगी करत बखान। मिला सखी पीतम निपट नदान ॥

विषय—पृ० १ से पृ० ८ तक—नादान प्रीतम की मादानी के कारण दुखित नायिका द्वारा अपनी सखी से बारह महीनों की अपनी दशा वर्णन करना तथा बेजोड़ विवाह करने वालों का उपहास।

संख्या ४०२. रत्नहजारा, रचयिता—रसनिधि, कागज—देसी, पत्र—१६०, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गुमानसिंह ग्राम—सूपा डाकघर—कुलपहाड़, जिला—हमीरपुर (बुंदेलखंड)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रतन हजारा लिप्यते ॥ दोहा ॥ लसत सग्ग सिंधुर वदन भाल थली नव तेस । विघन हरन मगल करन गौरी तनय गनेस ॥ नमो प्रेम परमारथी इहि जाचत हौं तोहि । नंदलाल के चरन कों दे मिलाइ किन मोहि ॥ नमो प्रेम जिहि ने कियो हिय लग आइ प्रकास । रग रत वासी नाऊ कौ कान्ह गोपन्न पास ॥ निस दिन गुजत रहत जे विरद गरीव निवाज । हैं निज मधुकर सुतुन की कमल नैन तुहि लाज ॥

अंत—प्रभु करनी कर आपनी सव विधि लेहु सुधार ॥ कहे अल्प मति कौन विधि तेरे गुन विस्तार दीन बधु प्रभु दीन बधु प्रभु दीन को लै हर विधि निस्तार ॥ इति श्री रसनिधि कृत रतन हजार सपूर्णम शुभ मस्तु ॥ माव वदी १० दशमी सवत् १९०८ वि० ॥

विषय—कविका श्री कृष्ण भगवान का निहोर आदि वर्णन ॥

सख्या ४०३ उपालम शतक, रचयिता—सुकवि रसरूप, कागज—साधारण, पत्र—२२, आकार—१८½ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८९ = १८३२ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह रईस, तालुकेदार, कालाकाकर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ दोहा—गण पति गिरा विधि हर हरा हरि में सब को धाम हरि गुर में गुर पद प्रथम ताते करौं प्रणाम ॥ १ ॥ तजा विपाद विदेह जा वाकदत्त वल पाय । वजा जगत में जो लसै कीरति धुज वनाय ॥ २ ॥ कवित्त मनहरण—वाणी हो भवानी हो इंदिरा हो इंद्रानी हो ॥ उमैही ब्रह्म वाणी इहै वाणी वेद साम की ॥ स्वाहा स्वधा वेणी वरदान की हो देनी । राम धाम की नसैनी श्रेणी सुनै जोक नाम की ॥ रूप—रासि राधिका हो सिद्धिन की राधिका हो । वैरिन की वाधिका हो जवे जाहि वाम की ॥ रस रूप रैहों तेरी जीभि ते न जैहों तू नि—हारू मोहि मैं हो महारानी रानी राम की ॥ ३ ॥

अंत—सन्मुष भगु ते होत सन्मुष सकल सिद्धि, मद हास मद करि डारत कुमति है—दृगन की कोर देपि फौजन की कोर देत, भ्रुव भंग किए भंग दारुण विपति है ॥ रस रूप हेरी हिये कौन कीनि वेरी तैन, महारानी मेरीं वेरा कहा तेरी गति है, एकनि को फल मैं पिनाक पति की दोहाई ॥ नेकु नाऊ मोरि तू करति नाक पति है दोहा हरि को जस रस रूप यह । कहा कहै मति हीन । सज्जन जन करि हैं क्षमा । जानि आपनो दीन ॥ इति श्री उपालंभा शतक सुकवि रस रूप कृते राज श्री वर्णन नाम सपूर्ण शुभ मस्तु श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥ श्री हनुमते नम ॥ सवत १८८९ आश्वनि मासे कृष्ण पक्षे एकादश्या लि॰ विश्रामदास पठनार्थ श्री लाल हनुमत सिंह जू श्री रामचन्द्राय नमो नम॰ ॥

विषय—(१) विनती उपदेश गुरु स्तुति कवित्त सामग्री गोपियों तथा उद्धव का साक्षात्कार प्रत्युत्तर, पत्र निदर्शन, योग वर्णन आसन, यम, नियम, प्राणायाम प्रत्याहार, योग ध्यान समाधि पृ० १—९, (२) उद्धव और गोपियों का संवाद ऊद्धव की योग सबधी उक्तियों का गोपियों द्वारा खडन पृ० १०—२१ (३) गोपियों की पत्री का भेजना गोपियों द्वारा योग पत्रिका का उत्तर राधिका सदेश रुक्मिणी, सत्यभामा जामवती नागजिती,

कालिंदी, मित्र विंदा सत्यभामा, लक्षिता विप्र गंध सखा सब गोपिकाओं का संदेशा पृ० १२—१० (४) बारहमी विरह वर्णन, विरह व्याज से बसंत, वर्णन नायिका का उपालम्भ नायक प्रति सखी को उपालम्भ नायिका प्रति नायिका का उपालंभ सखी प्रति पृ० ११–१३ (५) ग्रंथा ते मंगला चरण महावीरता मंगला चरण गुण वर्णन गुण ज्ञाता वर्णन यश्या जाति कीर्ति वा न प्रताप वर्णन दान वचन गज वर्णन मित्र भक्ति वर्णन अनन्यता वर्णन देव्या स्तुत । आदि वर्णन ॥ पृ० १४—

संख्या ४०४ ए. सनेहलीला, रचयिता—रसिकराय, कागज—देसी, पत्र—१४, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४० पूर्ण, रूप-जीर्णशीर्ण पद्य लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८२६×१७६९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगाबक्ससिंह ग्राम—बगला काट, डाकघर—महमूदाबाद जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गनेशायनमः ॥ अथ सेनह लीला लिख्यते ॥ एक समय ब्रज बास की सुरति करी हरिराय । विप्र जन अपनो जानिकै उद्धव लिये बुलाय । श्री कृष्ण बचन ऊधो कह्यो उद्धव तुम सुनि लेहु । नंद जसोदा आदि दे आ ब्रज को सुध देहु ॥ ब्रजवासी बहुत सदा मम जीवन प्राण । ताते निमिष न बीसरौं मोहि नंदराय की आन ॥ इतु उनसों ऐसी कह्यो आवेंगे रिपु जीति । अबता रे कैस बसे पिता मात सों प्रीति ॥ उद्धव मैं ब्रज गोपिका उनके मेरो ध्यान । तिन्हे जाय उपदेश देउ पूरण ब्रह्म सुजान ॥ बागा अपने अंग को औरै मुकुट पहिराय । श्रुति कुंडल माला दई अपनी रूप बनाय । अरु अपना रथ साजि के सूत सारथी दीन ।

अंत—गोपी अरु उद्धव कथा भू पर परम पुनीत । तीन लोक चौदह भुवन बर लीक शुभ गीत । भाषत सकल कलुष को सुध उपजत मन मोद । श्री युगल चरण मकरंद मन पावत परम विनोद । श्री मुकुन्द मन मधुप जहँ सकल संत अनुराग । पद्मदा प्रेम प्रवाह में परे रहत बड़ भाग । इति श्री सनेह लीला सपूर्णम् शुभम् लिपतं सिव गुलाम दुबे इटौंजा मध्ये संवत १८२६ विक्रम राज्ये ११ दसी जेठ शुक्ला ॥ श्री नारायण जी रामजी की इति ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का ऊधोजी के हाथ गोपियों को सन्देशा भेजना और गोपियों का श्री कृष्ण जी के प्रति प्रेम वर्णन ।

संख्या ४०४ बी. सनेहलीला, रचयिता—रसिकराय, कागज—देशी, पत्र—१४ आकार—६×५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८७१ = १८१४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जोधासिंह ग्राम—मिश्रखिपा, डाकघर—ईसानगर जिला—खीरी ।

आदि—४०४ ए के समान ।

संख्या ४०५. मांझ पचीसी, रचयिता—रसिकरूप, कागज—साधारण पत्र—४, आकार = ६×४½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१० परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—महंत नंददास, ब्रह्मचारी का आश्रम, ग्राम—सम्मामपुर, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री हरि श्याम दयामयम ॥ अथ मांझपचीसी लिख्यते ॥ हे हरि करुणा

सिन्‍धु कृपाल तुम विन कौन करै प्रति पाल ॥ टीका ॥ श्री निवबारक आचारज कर विधि श्री शिव संकर्त्ता। श्री निवारक आचारज वरभौ भौ भक्ति विभत्ती रूप रसिक से दीन दुपन के हौ तुम ही दुप हर्त्ता ॥ १ ॥ निपल मही मडल मडन मणि श्री हरि व्याप उदारा। जिनकी चरन शरन हम लागे जागे भाग हमारा ॥ रसिक अनन्य नृपति चूडामणि अंस कला अवतारा। रूप रसिक प्रभु परैं प्रेम को वरन्यो नित्य विहारा ॥ २ ॥

जव जव लाल निहारौं तुमकौं तव तव धारं ही मैं। यह मैं हो यह तुम हौं यह कछु सुधि न रहै मो जी मैं ॥ तन मन धनादिक प्रमुदावत सवलै पावत पी मैं। रूप रसिक कछु कहि नहिं आवत जो उपजावत ई मैं ॥ १६ ॥ जल मैं तरंग तरंगनि मैं जल पल नहीं परत विछो है। घन मैं दामिनि दामिनि मैं घन सहज सदा सरसो हैं ॥ सौरभ सुमन ... ...॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—श्री कृष्णानुराग-सबधी पद।

संख्या ४०६. फतह प्रकास, रचयिता—रतनकवि, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७००, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०६ = १८४९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री हनुमानसिंह, ग्राम—गोधनी, डाकघर—जैतीपुर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ फतह प्रकास रतन कवि कृत लिप्यते ॥ थोदि थिर कीली मरकीली विधु कला भाल उर कीली मौहनि समाधि सरसति है ॥ प्रानायाम सांसन कलित कमलासनमें विपति विनासनकी वासना वसति है ॥ सैंदुर भन्यो भुसुड मढल समीप गज वदन के रदन की दुतियां लसति है ॥ सध्या श्रौन सरद के नीरद निकट मानौ द्वैज के कलाधर की कला विगसति है ॥ १ ॥ गंग उतमंग आधे तरल तरंग भरी आधे भरी माग मुकताहल सुढग की ॥ आधे कठ काल कूट कालिमा कलित आधे नील मीन की ललित लपग उमगकी ॥ आधे उर केहरि की करति करति छवि आधे की मृगमद केसरिके रंग की। आधे निर वेद आधे हाव भेद ऐते भेद राज अभेद लीला शिव शिव संग की ॥ २ ॥ अथ काव्य को प्रयोजन ॥ कवित्त ॥ माला सी वसति कंठ वाला सी विभूपित अदूपित गुनन प्यारी छाजति छविन की। सुधासी मधुर वसुधा सी वसुदा है सद सुपठ समाधिसी है आधि खेद विन की ॥ स्वति जैसी श्रवन सुहाई शशि सविता सी सव लोक गाई सत कविता कविन की ॥ कीरति करति दान ताते फते पति की ज्यों पावन सुराय गा त्यो सोहन सविन की ॥ ३ ॥

अंत—रूढ प्रयोजन विन जिते करी लक्षना होइ। वे आरथ दूपन वहै भापत पंडित लोइ ॥ यथा दोहा ॥ तन दुतिसौं चंपक चपै दृग वारिज जित लेत। वदन रोहिनी रमन को चपरि चपेटा देत ॥ अप्रजुक्त सो दोप कहि जो आवै कवि कोइ ॥ इति श्री फतह प्रकास पुस्तक जितनी देखी उतनी लिखी रामवकस मुराऊ संवत १९०६ वि० श्रावण कृष्ण अष्टमी श्री रामजी सदा सहाय करैं ॥

विषय—काव्य लक्षण, वृत्तियाँ, ध्वनि, रस आदि काव्य प्रयोजन, कारण, लक्षण, तीनों शब्द तीनों अर्थ तिनते व्यंग अविध्या, लक्षण उत्तम काव्य ध्वनि भेद रसध्वनि भाव रसध्वनि भाव सवितार्इ आदि वर्णन।

संख्या ४०७ सुषेण वैद्यक, रचयिता—रविदत्त (वैरी), कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—१०×८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई० प्राप्तिस्थान—श्री रामचरन वैद्य, ग्राम—सुन्दरपुर, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सुषेण वैद्यक लिख्यते ॥ श्री गणेश पद इन्दु नत्वा सिद्धि प्रदं परम् रविदत्तेन वैद्येन भाषा टीका विरच्यते ॥ स्वर्ग वासियों के समूह के स्वामी श्री धनवंतरी जी को प्रणाम कर संपूर्ण मुनियों से सम्मत किया अन्न पान विधि को कहते हैं ॥ दिन के तीसरे पहर में वर्षा अर्धरात्रि में शरद् सूर्योदय से पहिले शिशिर और सूर्योदय के पीछे हेमंत मध्याह्न में ग्रीष्म और पहर दिन चढ़े पहिले बसंत ऐसे कुशल वैद्य ऋतुओं को कहते हैं ॥ अमृत को पीते हुए गरुड़ जी के मुख से बूंद गिरे उन्होंने सूर्य की किरणों की पत्तियों की तरह दोष रहने वाली बलभद्र को आनंद देने वाली यमुना जी की तरह और महादेव को प्रिय रूप गंगा जी की तरह अग्नि का दीपन करने वाली घी की आहुति की तरह और अनेक प्रकार के रसों वाली पृथ्वी की तरह हुई उपजी वह शालपर्णी सब सर्वौषधि पदार्थ में श्रेष्ठ है। कफ वात का हरती है दीपन है पाचन है शूल उदावर्त गुल्म ज्वर गुद रोग कुष्ठ पांडु प्रमेह स्वास अतीसार गोमी पथरी उदर रोग इनको यह हे राजन शीघ्र नाशती है ॥

अंत—मैंने लोक का हित के लिये दोष नाशक विस्तृत रूपी अन्नपान का विधि किया सब प्रकार रस के उत्तम गुण और दोष धनवंतरि जी का मुख से सुने सहस्र कौतुक सहित और रस पाक में विशेषण रूप यह मुनियों के समूह के मुख्य रूप वैद्यों को सुख देनेवाला निमि राजा शरीर बाधा को यह औषधि है यहां श्री सुषेण देव ने रचित किया है आयुर्वेद महोदधि में अन्नपान विधि समाप्त हुआ। काला नमक १ भाग मिर्च २ भाग भाग सोंठि ३, जीरा ४ भाग सांभर नमक २½ भाग सेंधा नमक २½ भाग इनको चूर्ण कर यह चूर्ण निमि राजा ने कहा है तक के संग संजोवित किया गुल्म अफरा विसूचिका इन रोगों को हरता है भोजन के अंत में सदा लेना ॥ यहां श्री सुषेण वैद्य का किया ग्रंथ समाप्त हुआ ॥ इति श्री गौड़ कुल महेशाम्बर गत वैरी ग्राम निवासी गौड़ पंचायतन विविधि शास्त्र परम पंडित श्री शिव सहाय पुत्र हरियाना कुरुक्षेत्र धर्ममंडल महोपदेशक रविदत्त शास्त्रिणा वैद्यानिवासिना सुषेण इत्यायुर्वेद महोदधि भाषा टीका समाप्तः ॥

विषय—वैद्यक।

संख्या ४०८. रसकमरनावली, रचयिता—अमरदेव, कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार—१०×४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८ परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१२ = १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामप्रसाद मुराऊ, ग्राम—पुरवा विश्रामराम, डाकघर—परियावां जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री राम चंद्राय नमः ॥ दोहा ॥ श्री गुरु गणपति गजाधर गौरी गिरा गोपाल। बंदौ सबके पद कमल, रचौं प्रसन हरि हाल ॥ १ ॥ मित अर्क का मूल है, पामार पै विदित। चारि पहर चारी दिसा, क्रम ते अंक पवित्र ॥ २ ॥

अत—(४४३) चारि चारि पर तीनि परि, थोरे दिन के बीच । मसा फलै कलत्र सुत, दवि लाभ सुभ हींच ॥ गई वस्तु मिलि है सही, ताको लेहु निहारि । तेरे अग में तिल सही, ताते लेहु विचारि ॥ (४४४) चारि चारि फिरि चारि परि, मंगल मूल बनाइ । सुत कलत्र सुख पाइ है पै कुल देव पुजाइ ॥ होइ अगिनि मैं सौति जौ, ब्राह्मन न्यौति स्वाइ । तेरे घर के पूर्व ही, जल सचार वताइ ॥ इति श्री रिषभदेव विरचितायां रमल प्रश्नावली संपूरण संवत् १९१२ लिपा विश्रामदास धारूपुर विषे ।

विषय—रमल (ज्योतिष) ।

संख्या ४०६. वारहमासा, रचयिता—रुद्रनाथ (विल्हौर), कागज—देशी, पत्र—७४, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७६ = १८१९ ई०, लिपिकाल—स० १८९९ = १८४२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामभजन पाठक, ग्राम—महमूदपुर नवाव, डाकघर—हरगांव, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वारह मास कवि रुद्र नाथ कृत लिष्यते ॥ दो० ॥ श्री गन नाथ कृपाल के चरन कमल चितु लाइ । वरनौं वारह मास वर अति सुंदर सुखदाइ ॥ सोरठा ॥ लाग्यो प्रथम असाढ़ पिय विन तिय व्याकुल परी । परी मदन के गाढ़ कौन उपाइ करौं सषी ॥ चौ० ॥ उनए नरा घोर घन धुमड़ैं । गरजै घटा चहूं दिसि दुमड़ैं ॥ विजुरी चमक चमक अति तड़पै । पिय विन प्रान सषी मो टरपै ॥ अति उर पीर विरह की वाढ़ी । मदन तरग रंग की गाढ़ी ॥ पवन चहूं दिसि अमित झकोरैं । मैंन विरहसागर महं वोरैं ॥ मोर शोर चहूं वोर सुहायो । मदन वान सो हृदै लगायो ॥ चातक घातक कूकत भारी । जरै विरह जुर मोसो प्यारी ॥ चहुं वोरन अति भूमि हरेरी । इंद्र वधू छवि देत घनेरी ॥ सेज चादनी मनहु विछाई । तापर मषमल फरस सुहाई ॥ देषि सषी यह सोभा प्यारी । पिय विन देत मोहि दुष भारी ॥ इंद्र धनुष की देषत सोभा, पिय के मिलन हेत चित लोभा ॥ भांति भांति के षग वन वोलैं तरवर लता पवन लगि डोलैं ॥ हुलसै हियो सषी लषि मेरो । काम ज्वाल जारत चित घेरो ॥ वरस वुंद वहु दुंद मचावत । राग मलार सुनत सुख आवत ॥ रगन लगावै मदन जरावै । पिय दरसन हित चित हिय गावै ॥ करौं उपाय कौन मैं आली पिय विन विरह विपति उर घाली ॥

अंत—जेष्ट शुक्ल पक्ष ॥ सोरठा ॥ वीति गयो मल मास लगो जेठ को पाप सित करि करि सकल हुलास करे दान व्रत सकल विधि ॥ छंद तोटक ॥ दस पाय हरा सषि आन लगो अति मोद सुचित महान जगो । सजि साज समाज सभी सु चले । रहे दपति सोहत रूप भले ॥ वर गग अन्हात उमंग भरे वर दान विधान अनेक करैं ॥ कर जोरि करैं विनती सुष की । सुन गंग हरौ अवटी दुप की ॥ अथ प्रसंसा गगा जू की ॥ चंद भुजग प्रियात ॥ दुयेते कटै पाप माया भवानी । गिरी ईस के सीस त्रैलोक जानी ॥ तरंगे धुरंगे उमगे सुरंगे । नमो देव गंगे नमो देव गंगे ॥ धरैं देवता ध्यान तेरो सदाई । धरे सीस पै ईस ज्ञानी महाई ॥ तुही पलुष भंगे तुही शक्ति अंगे । नमो देव गंगे नमो देव गंगे करैं दीन ह्वै टेर वेला तिहारी । उजारे महा सोक लागैं न वारी । पगै मोद रंगे वसैं ईस अंगे नमो देव

गंगे नमो देव गंगे ॥ सुधा पानि को हेत कीनों विचारो तिहारी सुधा पारि कौतुक न्यारो। मिलै मुक्ति अंगे मरे मुक्ति संगे नमो देव गंगे नमो देवगंगे ॥ सदा आनंद चित्त धरै ध्यान प्रवी० ॥

अंत—इहि विधि गंगा को सुमिरि दंपति गांठि बंधाइ। दान दिये बहु भांति के सब द्विज पद सिर नाइ ॥ मंगल करि वर सकल विधि पाय सिद्धि शुभ साज। निज मंदिर फिर आइ के करत सकल विधि राज ॥ छंद तोटक ॥ फिरि दंपति आय सु मंदिर में सुख भांतिन के बहु पूरि रमें। हरि के गुन की विधि चारु करी श्रुति आपत मोद महान भरी ॥ फिरि पुनसामरि आन लगी मधि मठ समापति जोति जगी ॥ मिलि हास विलास अनग करे अति दंपति साहस मोद भरे ॥ हिय हीय पिया सुख पुंज छयो नित नित हुलासन मोह मयो ॥ दो० ॥ जो षट रितु को सुखद त्यौं बीते मई सुख छेव। बारह मास रहे सुई पिय के दरसन देव ॥ यहि विधि बारह मास छक नाथ दरसन करे। भैरो सिंह प्रकास चिरंजीव सुख सर्वदा ॥ दोहा ॥ रस मुनि वसु चंदा सहित है संवत् सुख धाम। सावन वदि तिथि शुक्र को बारहमास तमाम ॥ इति श्री गुसाई कवि रघुनाथ कृत बारह मास संपूर्ण शुभमस्तु। श्रावण सुदि तीज गुरु वासरे संवत् १८९९ शुभ भूयात ॥ ॐ महादेव श्री शंकर श्री शंभु ॥

विषय—विरह का बारह मासा ॥

संख्या ४१० पंच कल्याणक, रचयिता—रूपचंद, कागज—साधारण, पत्र—११, आकार—९×६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, ग्राम—कटरा मेदनी गंज, डाकघर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—पन विधि पंच परम गुरु गुरू जन शासनो। सकल सिद्धि दातार सुविघन विनासनो ॥ सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकासनो। मंगल कारु चौ संघ सु पाप पनासनो ॥ पाप नाशन गुनहि गुरु का दोष अष्टा दस रह्यो। धरि ध्यान कर्म विनाश केवल ज्ञान अविचल जिन लह्यो ॥ प्रभु पंच कल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पाइयो। भव रूपचंद सुदेव जिनवर जगत मंगल गाइयो ॥

अंत—मैं मति हीन भगति वस भावन भाइयो। मंगल गीत प्रबंध सुजस जिन गाइया ॥ जे नर नारी सुनै अरु सुस्वर गावहीं। मन वंछित फल सो नर निहचै पावहीं ॥ पावहीं मंगल अष्ट नव निधि मन प्रतीत सुलाइया। भ्रम भाव छूटे सकल मन के जिन स्वरूप लखाइया ॥ पुनि हरे पातिक टरे विघन सुहोइ मंगल नित नए। भनि रूप चंद सुदेव जिन वर जगत मंगल गाइए ॥ इति पंच मंगल रूप चंद कृत संपूर्ण ॥ १ ॥

संख्या ४११ ए. गीत गोविंदादर्श, रचयिता—रामचन्द्र नागर (गुजरात), कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—८×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०००, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८११ = १७५४ ई०, लिपिकाल—सं० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथ सिंह, ग्राम—रायपुर मथानी खेरी, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गीत गोविन्दादर्श टिप्पने ॥ मंगला चरण ॥ सोरठा ॥ हरमुख सरस्वति गाय पांच बुद्धि के वंदि पुनि मोत देव सुत ध्याय श्री जय देवहि

प्रणत करि ॥ १ ॥ जिन यह गीत गोविंद भूषण गुण रस धुनि महित । श्री राधा व्रज चंद रहसि विलास कियो प्रगट ॥ ताको अति मति मंद हौं भाषों भावारथं । चाहत कियो सुछंद स्वामी सासन पाइ वल । नागर ज्ञाति अधीन हीन छीन मति अज्ञ अति । राय चंद द्विज दीन नाउं गांऊ गुजराज जिहि ॥ जानत कछू न भेद कविता के गुण दोष को कीजे कृपा अभेद दीजे सुमति दयाल प्रभु ॥ सुजन सजनता सार जे जन तिनसौं कहत अब । ग्रंथ लियो अवतार तासु प्रयोजन हेतु हित ॥ नगर मुरसिदाबाद आदि सुरसरी तीर शुभ सुवरन वर्में अविषाद जहा आशरम वरण सब तिहि पुर अतर सोहि महिमापुर महिमा महत । मही माहिं सरि नाहि जाकी पुर एको कहू सज्जन गन जन राज लाज समाज जहाज नृप जैसो और न आज शोधी वसुधा वसत तह । गुण गाहक गुण वान गुण थापक सो निगुण के सुंदर सुवर सुजान सुपद सुबुधि सुवचन सुहृद ॥ आनंद कद अमद सजन कुमुद कुल चंद नृप । डाल चंद कुल चद राय चंद प्रति पाल प्रभु ॥ इक दिन सुनि यह गीत । गोविंद गुण गण मणि जटित ॥ वाढ़ी प्रीति प्रतीति सरस रहस रस रीति प्रति ॥ यद्यपि समुझि सुजान परम अरथ समुदित भये । तदपि अल्प मति जान सोंगे मूरष नरन की ॥ जिन्है सस्कृत ज्ञान सपनेहु सभव नहीं । तिन हित जान सुजान चहो ग्रंथ भाषा करन । मोसे परम अजान तासौं यह आज्ञा दई । सरस छद मन आन सुगम करौ भाषा रचन ॥ यद्यपि अज्ञ अजान आयसु वल मैं हूं तबै । यथा बुद्धि अनुमान भावारथ भाषा करी ॥

अंत—अष्टादश पदी भाषा ॥ राधिका माधव दक्षिणता व्रज नारिन सौं लषि रास विलास मैं ॥ मानि की हानि मनै अनुमानि कै मान कियो गई आन निवास मैं ॥ ओठ भये विरहागि जगी हिय लाय लगी लगि काम के बाण की । छाड़ि विहार दियो मत हारि निहारि हरीन जबै प्रिय प्राण की ॥ मीन ज्यों नीर विहीन दुहूं की भई गति दीन दुहू दिशि चाह सौं ॥ देषि अली तब व्याकुल ह्वै चली ल्याय मिलाप करावन नाह सौं । आश वधी तिय सेजहिं साजि श्रृंगार सवारि सकेत निकेत मैं आहटै आगम जानि चकै दग कज विछाये मनो मग स्वेत में सामुहे आवत देषि सहेली अकेली थकी सी निराशता वाढ़ी राम रमाह रसे विरमाह कै काहू कहू यह चिंतति ठाढ़ी । सोचत भोर भयौ तब मोहन सौंहे परे अरसोहैं से आये ॥ आनि तियां अनुमानि करी रति मौन गयो नहिं माने मनाये ॥ हारि करी मनुहारि हरी न निहान्यो तऊ पिय सामुहैं प्यारी ॥ नेक हूं रोप को जोश धन्यो न गये उठि के तब हारि विहारी ॥ आंखिन ओझल श्याम भये तब काम की वामता वाम सताई सोच सषी पछिताय सषी सग लै तब श्याम के सौंहैं सिधाई ॥ कारी खरी भय कारी निशीथ उरीत घनी वन वीक्षिन जानि सौं लाग लगी चित की चित चोर सौं छूटि परी कुल कानि सौं । वेन निकुंज सकेत निकेत के द्वार पै पथ निहारती लाल को । वाल निहाल विहाल भई लषि माधुरी मूरति रूप रसाल को ॥ लोचन लाज लजाइ रही मन छाय गयो रति राज समाज तैं ठेलि अकेलि ये केलि के भौन सिधारी सहेली सबै मिसु काज तैं ॥ पाइ इकन्त निचिंत ह्वै कत लई उर लाइ परे अभिलाप सौं ॥ होय धनी निधनी जिमि और कौं पाइ धन्यो धन कोटिक लाख को ॥ रैन सबै सुष सैनि मै दपति सैन के चैन सुपेन बिताई ॥ भोर भये अरसात जभात भरे रंग रात के शोभ सुहाई ॥ प्रीति प्रतीति

बढ़ाइ के प्रीतम प्राण पिया संग यों रति रीति सों । नित्य करी रसरास विलास प्रकाश संगीत की रीत की नीति सों ॥ बाजत साज पखावज बाजत बाहत्थ तुतुहत्थ तक् पिक काग सों ॥ ततथेइ ततत्थेइ ततथिर्रत गावत सरिगम भेद छांय सों ॥ माधव यो हित आयिकता जिय की अति राधिका संग बढ़ाई ॥ सो कवि नारद शारद शेष महेश सुरेश गणेशन गाई । गीत गोविंद को या मतिविंब सो जो पढ़ि हैं सुनि गाइ हैं घ्याइ हैं । सो हरि नित्य विहार विलास निवास के बास को आनंद पाइ हैं जैसे सदा नट नागर नागरी नागर धीन के मध मद माध में । बास करौं व्रजदेव दयालु सरास विलास है ध्यान व ध्यान मैं ॥ चौ० ॥ कृष्ण कृपा निधि कृपा करी । तब यह सुमति उर आनि धरी । बाकचंद नृप आज्ञा दई राम चंद्र भाषा निर्मई ॥ अट्ठारह सै अरु इकतीस । संवत विक्रम नृप अवनीस सित नवमी शशिदिन मधुमास गीत गोविंदादर्श प्रकास ॥ श्री महाराजा बाकचन्द्राज्ञा परिपालक राम चंद्र नाग रीम विरचिते गोविंदादर्शे ग्रंथे परिपूर्ण द्वादशाध्यायोऽयम् समाप्तम ॥ श्री राम राम राम राम राम ॥

विषय—गीतगोविन्द संस्कृत का भाषानुवाद

संख्या ४११ थी गीतगोविंदादर्श, रचयिता—रामचंद्र (गुजरात), कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३१ = १७७४, लिपिकाल—सं० १९२० = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री नारायण जी, ग्राम—गुरसुरारपुर, डाकघर—मौरावाँ, जिला—उन्नाव ।

शेष—४११ ए के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है:—श्री महाराजा बाक चंद स्याज्ञा परि पालक राम चंद्र नागरेण विरचिते श्री गोविंद दर्श ग्रंथे परिपूर्ण समाप्तम् लिख्यत शिव गौरी शंकर रामनगर संवत १९२० विक्रमी ॥

संख्या ४११ सी गीतगोविंदादर्श, रचयिता—रामचंद्र नागर (गुजरात), कागज—देशी, पत्र—९०, आकार—१२ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३१ वि०, लिपिकाल—सं० १९१० वि० प्राप्तिस्थान—श्री रामकरन सिंह, ग्राम—कढ़ावा, डाकघर—भोयल, जिला—खीरी ।

संख्या ४१२ ए. भारतेन्दु भाषा (महाभारत) रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—आधुनिक, पत्र—२१८, आकार—८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०४, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९१४ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बलीसिंह जी जमींदार, ग्राम—रामीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ आदि पर्व भाषा इते लिख्यते ॥ चौपाई ॥ प्रथमहि आदि ईश्वर ध्यावौं । जा प्रसाद उपदेश बतावौं ॥ बर्म पुरुष अविदित है रूपा । है सब बात में रूप अनूपा ॥ अक्षर ब्रह्म अहारादि संसारा । जामें ईश मय संसारा ॥ अक्षर ब्रह्म भये

आमंदा। परम पुरुष कर रूप अनंदा ॥ जो सब्दब्रह्म रूप निर लेपा। ताकी महिमा को संक्षेपा ॥ जाके नाम फलत सपारा। जा अक्षर में दुःख संघारा ॥ एक वृक्षते जानि तरंगा। वरन वरन सबको है अंगा ॥ ताकी सपा देवत भयऊ। अगुन सगुन एकै विरभयऊ ॥ संतोप मूल अति में पुनि सारा। मूल रूप बरनों निरंकारा ॥ हरि हर ब्रह्मा को औतारों। जन्म बुद्धि संघारन करों ॥ दोहा ॥ एक रूप ब्रह्म कहैं जानि जान नहि भेद।

अंत—सब विचार कीन्ह तेहि बारा। राज सुई सप करौं सुवारा ॥ लाक्षा गृह प्रभु जरत उबारो। तिन पुनि पार्थ सहित बन जारो। राहु बेधि द्रोपदी बिवाहू। दिग्वि अरु बिदिसि भूमि अवगाहू ॥ कृष्न कृपा पायो निजु धामा। कियो अदन परि पूरन कामा ॥ दोहा ॥ राज सुई सप कीजिये कलि विप विनसि अमानु। विघ्न हरन मंवन सुपद हरन विमल कर भानु ॥ पुनः ॥ राज सुई सप कीजिये सत्र काटुन टहराय। सबलसिंह यह कहत है व्यासरषि को आय ॥ इति श्री महाभारते आदि पर्व भाषा सबल सिंह कृते वैसम्पायन राजा जन्मेजे सवादो नाम चतुर्दशो अध्यायः ॥ १४ ॥ जो प्रति देखा सो लिपा निज दोप नहीं। जो कछु होय सो जा प्रति लिपा तिसका। आदि पर्व समाप्त सुभ भूयात् ॥ संवत १९३४ तिथि ११ शुक्ल पक्षे शनिश्चर दिवसे लिषितं पोथी वद्री। सुपाठनार्थं भाद्रमासे ॥शिव

विषय—महाभारत आदि पर्व में १४ अध्याय हैं।

संख्या ४१२ वी. आश्रम वासिक पर्व (महाभारत), रचयिता—सबलसिंह, कागज—नवीन, पत्र—३८, आकार—१२ X ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुस्टुप्)—२४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी; रचनाकाल—सं० १७५१ = १६९४ ई०, लिपिकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वद्रीसिंह जी जमींदार ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बख्शी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ आश्रम वासिक लिष्यते ॥ जैति जैति रघुवर श्री रामा। भक्त जननके पूरन कामा ॥ वन्दों गुरु गोविन्द सुपदाता। वन्दों पुनि श्री पितु अरु माता। वन्दो अज इन्द्रादिक देवा। वार वार शिवकी करि सेवा ॥ श्री शक्ति सुत सारद देवी। सविधि काव्य जनकी जो सेवी ॥ वन्दो व्यासादिक पुनि नारद। हनूमान जै ग्यान विशारद ॥ सबल सिंह यह भारथ भाषा। श्री प्रभु जब अग्या दे राषा ॥ औरंग शाह दिल्ली पति राजत। मित्रसेन भूपति तहं गाजत ॥ ये नृपके पुरषनमहं गाये। सबल सिंह चौंन बनाये॥ सवत सत्रहसै इक्कावन। शुक्ल पक्ष दशमी बुध सावन ॥ तव मैं कथा अरंभन कीन्हा। व्यास देव को सुमिरन कीन्हा ॥ दो० ॥ लक्ष्मी के बस जौन है है लक्ष्मी बस जाहि। ये लच्छन जामें मिले वन्दत हों मैं ताहि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ताहि समै कलिजुग सुधि आई। देह दसा धर्मज दुःख पाई ॥ कह परथ हरिपुर अब जैये। उत्तर चल्हु कृष्न कह लैये ॥ मातु पिताके हित इत रहऊ। ते सब गये सविधि तक हेऊ ॥ अब रहिबो नहि उचित सुभाई। ताते लावहु श्री हरि जाई ॥ अर्जुन सुनत सुभग रथ साजा। भीमहि मिले सबहि पुनि राजा ॥ दोहा ॥ वेगि वंत अर्जुन चले जहां वसत भगवान। आश्रम वासिक पर्व कहि सबल सिंह चौहान ॥ २१ ॥ इति श्री महा भार्ये भाषा कृते आश्रम वासिक पर्व द्वतीयोऽध्याय. ॥ २ ॥ माव मास पष हरि तिथि द्वैज वार रवि तौन। संवत सर वसैस मै चौंतिस सुभदा

ढील ॥ १ ॥ १८३४ ॥ पोथी लिखा बाहो मौजी मौजे पानीपुर सुपाठनार्थे ॥ दोहा ॥ मोर मुकुट बन माल छवि पीत बसन कटि रम्य । कर बक्रिम ता अत गहे जोती कामे हस्य ॥ मंद मंद ऐसे चले करनहि बिधि बतरात । पार्थ सहित संगा सकल अतिहि प्रसन्नित गात ध्यान चारिनंद रामको ता प्रसाद लिपि मेह । सदा भवानी संमुखो चित प्रति बाड़ै नेह ॥१३०

शिव पारबती राजा

विषय—महाभारत आश्रम वासिक पर्व ।

संख्या ४१२ सी अश्वमेधी पर्व (हय पर्व), रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—आधुनिक, पत्र—१५४, आकार—११३ × ५३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९०६, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री बली सिंह जी जमींदार, ग्राम—खानीपुर डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ हय पर्व लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री गणपति सिव राम हर श्री गुरु कै कबिराज । तुमको सुमिरत हेत जेहि पूरण करियो काज ॥ १ ॥ माथे मैं सिंदूर शुभ धारि सुखे फल चारि । रिद्धि सिद्धि इत उत बसो अनुकृपा हूँ धारि ॥ सोरठा ॥ श्री प्रभु दीन दयाल, जग उतपति पालक प्रबल । सुमिरौ ताहि कृपाल, पवरि प्रभो हीयै बसत ॥ २ ॥ दोहा ॥ बाणी ब्रह्माणी सुमिरि शिवरानी हनुमान समुझ पार जिहि बिधि भयो कर्तिम पार बखान ॥ अश्वमेध नृपति कहे निज सिर धरि मुनि धर्म । केहि बिधि पर पितु जग्य किय कहिय नाथ तुप हर्म ॥ ५ ॥ सुमिरि व्यास निज गुरु चरण हरण सकल भौ भाव । भरत पर्व हय मेधि कहि सबल सिंह चौहान ॥

अंत—दोहा पृथ्वी ग्रप बेती किर्यो प्रभु दिलीप हरिचंद । सगर दृहमन बल भूपति दसरथ द्या रघ नन्द ॥ १३० ॥ पारथ तिमि भोगत सही युधिष्ठिर राज । राजन को महाराज के चक्र बती सिर ताज ॥ १३१ ॥ अबते द्वापर काल युग तुम बिन और न भूप । सागुराव्द पद छांडि मही दाब धर भोग अनूप ॥ १३२ ॥ सागरकी सीमा सबै हूँ सै बारिक पांच । भोग करौगे भू सब हरि कह्र भाषत सांच ॥ १३३ ॥ सुनि केशवके बैन अर्जुन है गद् गद् गयो । कहा नाथ किय दीन दासहि देत बड़ा भयो ॥ १३४ ॥ मैं तुव चर्ण अधार । केहि चारण सुख सुख भये । तहां कि स्वप्नेहि तोष सात दीप मंलंड कह ॥ १३५ ॥ हरि पारथ दृमि तेहि रजनि करकै बाक विलास । दीन बरस तब होत भौ गई सब भांति सुपास ॥ १३६ ॥ केसौ कहि रुक्मिनि रमण दमन करन दुरुष सर्व । तासु कृपा भाषा रचत बाजि मेधि यह पर्व ॥ १३७ ॥ इति श्री महा भार्थे अश्व मेधि पर्वे भाषा कृते तृतीयोध्यायः समाप्तम् ।

विषय—महा भारत—अश्व मेध पर्व ।

संख्या ४१२ डी बनपर्व (महाभारत) रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—साधारण पत्र—७०, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३०, पूर्ण रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीरसिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—ताडावबक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ वन पर्व लिख्यते ॥ दोहा ॥ अव वन पर्व कथा यह आगे सुनहु नरेस । छाँडो देश धर्म मत कीन्हो वन परवेस ॥ चंपक विपिन रहे तब जाई। धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई ॥ तहँ विपिनि है बहु विस्तारा। सिंह साल वाराह अपारा ॥ कमीक नाम दैत्य एक रहई । महाप्रो वीर पराक्रम अहई ॥ ताके डग बहुतक्री पराई। तेहि वन निसि वासर सो रहई ॥ सा तब चाव पायके धायो। धर्म राज सन पूछन आयो ॥ किंवर नाम अहे वन मोग । को तुम वीर अहो वर जोग ॥ धर्म राज बोले यह बानी। पाडु पुत्र है सब जग जानी ॥ भीम धनंजय नकुल कुमारा। सह देव है लघु बंधु हमारा ॥

अंत—लाज वत हर सेवा दाना। गंगाधर को कीन्हो ध्याना ॥ बहुत प्रकार तपस्या करेऊ। पांडो जीतो मन महँ धरेऊ ॥ है प्रसन्न तब संकर आयो। मांग मांग वर वन सनायो ॥ करि प्रणाम जै द्रथ कहई। जीतौ पाच पांडवन जाई ॥ गंगाधर बोले यह बानी। पारथ तन मन सारंगपानी ॥ चारों बधौ जीतौ राउ। पारथ कहु जीने नहि पाउ ॥ यह वरतौ गंगाधर दीन्हो। जै द्रथ हर्ष हर्ष बहु कीन्हो ॥ दो० ॥ कहि वन पर्व कथा यह सुनु जन्मेजय राई। पुन्य कथा श्री भारतेहि सुवनहि पाप नसाई ॥ ७८ ॥ इति श्री महाभारते भाषाकृते अनिरुद्ध पर्व गन्धर्व दुर्जोधन जय प्रमानो सिंधुराज अपि मानो धर्म राजा तह संन्ना X X X यँ अष्टमो ध्याय समाप्त शुभ मस्तु सवत् १९२४ साके १७८९ चैत्रादो प्र०

संख्या ४१२ ई०. भीष्म पर्व, रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—१५ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१८ वि०, लिपिकाल—सं० १८०४ वि०, प्राप्तिस्थान—ब्रह्मचारी जी द्वारा ललिताप्रसाद खजाची, तहसील सिधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री कृष्ण ॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ पुस्तक श्री भीष्म पर्व ॥ श्लोक ॥ ध्यान मूलं गुरु मूर्ति पूजा मूल गुरु पदं ॥ मत्र मूल गुरं वाक्यं मोक्ष मूलं गुरु कृपा ॥ १ ॥ आकाशात्पतितं तोयं जथा गच्छति सागर । सर्व देव नमस्कार केशवां प्रतिपालति ॥ २ ॥ चौ० ॥ गुरु गोविंद के चरन मनमै । जा प्रसाद उत्तम गति पैइये। करि प्रनाम रघुपति के पाइन । चारि वेद जाके गुन गाइन ॥ अवधनाथ सीतापति सुंदर । तीन बंधु रघुबंस पुरंदर ॥ सिव सनकादिक अंत नहिं पावहि । नर सरूप केहि विधि गुन गावहि महिमा अमित कहत नहिं आवहिं ॥ सहसनैन सहसौ मुख गावहि ॥ सुक सारद नारद से पाठक हनुमान गाये गुननाटक ॥ वालमीक रामायन करता । राम चरित पापन को हरता ॥ आठों दस पुरान श्री भारथ । भाष्यो विस्वज्ञान पुरपारथ ॥ दो० ॥ पारासुर ते जन्म है व्यास देव रिषि राज । जा मुख भारथ प्रगट भो सो कवि कुल सिरताज ॥ चौ० ॥ गुरु गनेस सारद के पाइन। करहुं प्रनाम होहु सुखदाइन । सवत सत्रह सै अठारहि। पूर्नो तिथि मंगल के वारहिं माघ मास मैं कथा विचारी। औरंग साहि दिलीपति भारी ॥ सब पुरान करे नायक भारथ। जामे कुरु पांडव पुरु सारथ ॥ व्यासदेव सुषसार निकरन भारथ रच्यो जगत के तारन ॥ दो० ॥ जोग जुद्धि रस मंत्र जो श्री भारथ मैं सर्व । सबल सिंह चौहान कहि। भाषा भीषम पर्व ।

अंत—दो० ॥ पांच दस अर्जुन मन कीति चढ संग्राम ॥ अर्जुन के रथ सारथी सुंदर श्री घन स्याम ॥ चौ० ॥ गोधन सहस दिये जो ब्राम्हई। जो फल सब तीरथ अस्नानहि ॥ जो फल हाटि साधु के दरसे। सो फल संमुनाव के परसे ॥ जो फल मन पुन्यदानि कान्हे। जे फल होइ भूमि सब दीन्हे। जो फल रन में भूमि गवावे। सो फल श्री भारथ सुनि पावे ॥ ब्यास देव भारथ के करता। जाई सुनि पाप को हरता ॥ दो० ॥ राम कृस्न गोविंद हरि कीज सदा बखान। भाषा भीषम पर्व यह सुनै सदा अपहान ॥ जासो सुनै ताहि परसावे ॥ कृपन दया राखे संतोषे ॥ करि सेवा भोजन कर तावे ॥ ऐ नवीन वस्तर पहिरावे ॥ रूप हेम ऐ पूजन कीजै। धर्म सौ भूमि दान कछु दीजै ॥ यह फलदायक उत्तिम कथा। मेंटति कई जन्म की बिथा। याहि अनुसौ नारी सुनै। प्रीति सहित मन में या गुनै ॥ पावे पुत्र नाहिं संदेहा। जानै निश्चय करि मन येहा ॥ रिसीं होइ रिन ते उधरै ॥ जो कोई यहि अवनम करै ॥ दो० ॥ निहचौ मन में राखिये सफल होत सब काज। कृस्न ध्यान मन में धरै अमन राषि है लाज ॥ कवित ॥ जाही पाप राजा सगर के न सवति रही ताही पाप तक्षक परीछत को पायो है ॥ जाही पाप राजा दसरथ को मरन भयो साई पाप चंदन में बिगम मति गायो है ॥ जाही पाप सहस्त्रबाहु भुजमंडल मये सोई पाप इंद्र कमला सो पायो है। जाही पाप गंगा के न गंगा रह्यो भवन माहि साई पाप भोगन ते दिखैया करिपायो है ॥ इति भीषम पर्व संपूरन समाप्तम ॥ लिपतं संवत १८०७ मिती अगहन सुदी २ राम

विषय—अर्जुन और भीष्मपितामह का युद्ध वर्णन।

संख्या ४१२ एफ. भीष्म पर्व (महाभारत), रचयिता—सबल सिंह चौहान, कागज—प्राचीन देशी पत्र—९१ आकार—१०३ × ७ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८० पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१८ = १६६१, लिपिकाल—सं० १२०७ = १७५० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बजी सिंह, ग्राम—स्वामीपुर, डाकघर—लालाबक्सी जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गनेशाय नमः ॥ भीष्म पर्व लिष्यते ॥ गुरु गोविन्द को चरण मनैये। जहि प्रमाद उत्तम गति पैये ॥ कै प्रनाम रघुपति के पायन। चारि बेद जाके गुन गायन ॥ अवध नाथ सीतापति सुन्दर। दीन बंधु रघुवंस पुरंदर ॥ सिव सनकादिक अंत न पावें। नर मुनि केहि विधि गुन गावें ॥ महिमा निगम कहत नहि आवै। सेस सहस मुख ते गुन गावैं ॥ सुक सारद नारद से पाठक। हनूमान गावै गुन नाटक ॥ बाल मीक रामायन कर्ता। राम चरित्र पाप को हरता ॥ अष्टादस पुरान सौ भारत। भाष्यो व्यास ज्ञान पुरुषारथ ॥ दो० ॥ पाराशरत जन्म है व्यास देव रिषि राज। जा मुष भारत प्रकटो मैं करि पुस सिर ताज। गुरु गनैस सारद के पायन। करौ प्रनाम होइ सुम दायन ॥ संवत सत्रह सै अठारह। पुनिर्व तिथि मंगल के बारह ॥ माघ मास में कथा बिचारी।

अंत—चौ० ॥ द्रोन परम सैना अधिकारी। अर्जुन के समान धनुधारी ॥ पारथ नहि जीते अपने बल। जो नहि करहिं कृस्न छमा छल ॥ जइ भीषम मार मेख्या लीन्हो। तंदू एक नागे करि दीन्हा ॥ गंगा सुत कीन्हो जब सौनहि। धर्म राज आये नित

भौनहि ॥ दोहा ॥ पांडव दल आनंद मन जीति चले मैदान । अर्जुन के रथ सारथ सुन्दर श्री भगवान ॥ गोधन सहस देइ जो दानहि । जो फल होइ तीर्थ अस्नानहि ॥ जो फल होइ साधु के दरसे । जो फल होइ शम्भु के परसे ॥ जो फल व्रत एकादशि कीन्हे । जो फल होइ भूमि दुज दीन्हे ॥ जो फल होइ ब्रह्म के ध्याये । सो फल रनमो प्रान गवाये ॥ जो फल कोटिन्ह विप्र जिवांए । सोइ फल होइ भारतहि सुनाये ॥ दो० व्यास देव भारत की भाषा भीषम पर्व । सवल सिंह चौहान कृत कथा सुगम अति जर्व ॥ इति श्री महा भारत भीषम पर्व भाषाया उन विंससोऽध्याय. समाप्त शुभ भूयात् ॥ संवत १९०७ अगहन मासे कृष्ण पक्षे अमावस मंगल वासरे । लिखा देवी सिंह चौहान ॥

विषय—महाभारत का भीष्म पर्व ।

संख्या ४१२ जी. भीष्मपर्व, रचयिता—सवल सिंह चौहान, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२९४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१८ वि०, लिपिकाल—सं० १६४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री गयादीन शुक्ल, ग्राम—मानपुर, डाकघर—तंबौर, जिला—सीतापुर ।

शेष ४१२ एफ के समान ।

संख्या ४१२ एच. द्रोणपर्व (महाभारत), रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—आधुनिक देशी, पत्र—८६, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२७=१६७० ई०, लिपिकाल—सं० १९०७=१८५० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्रीसिंह जी, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरु चरण दंडवत करिए । जा प्रसाद भौ सागर तरिए ॥ वंदो राम चंद रघुनंदन । महावीर दस कंध निकंदन ॥ दीरघ बाहु कमल दल लोचन । गनिका विद अहिल्या मोचन ॥ व्यास देव कलि पातक हर्ता । चारि वेद श्री भारथ करता ॥ श्रोता जनमेजय गुण सागर । महावीर कुरु वंस उजागर ॥ उत्तम नग्र चंद्र गढ़ छाजा । भूपति मित्र साह तहँ राजा ॥ दोहा ॥ रघुपति चरण मनाइकै व्यास देव धरि ध्यान । द्रोण पर्व भाषा रचत सबल सिंह चौहान ॥ जब भीषम सर सेज्या लीन्हो । दुर्जोधन बहुतै दुख कीन्हो ॥ अब काको सेनापति करिये । जाके बल पाये ते लरिये ॥ कही करण राजा सुन लीजै । जो मोको सेनापति कीजै ॥ अर्जुन खेत्त मह मारौं । सेना सहित न एक उबारौं ॥

अंत—दोहा ॥ पांडौ दल जै जै करत जीति परे मैदान । कौरो दल मलीन भौ ज्यो सध्याकर भान ॥ तौ रथ हाकि कर्ण चलि आयो । आगे होइ सेना अटकायो ॥ सध्या जानि कियो रथ गौनहिं । कुरु पंडौ आये निज भौनहि ॥ आगे कहन मन लाये । असुस्थामा कछु चेतन पाये ॥ द्वौ कर जोरि संमुके आगे । एहि विधि विनय करनको लागे । फेके रथ गहि भीम भयकर । प्राणदान तुम दीन्हो संकर । एहि विधि वर दीजै मोहि स्वामी । होहु तेज गति अंतर जामी ॥ आजु रारि पहुंचौं कुरु पेतहि । कुरु पंडौ जहं सेन समेतहि ॥

संकर कही बिलंब न कैहो पहर एकमें जाइ तुमहो ॥ यह सुन प्रोणी कीन्हो गौनहि । उपमा हेत बनत नहि पैनहि ॥ पहर एक न भो आयो ताहां । सैन सहित दुर्योधन जाहां ॥ दोहा ॥ दुर्योधन भाषत भयो सुनौ बंधु यह बात । भाइ सुत यहि गुर पूत बसन बसि भात ॥ इति श्री महा भारत द्रोण पर्व समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ सं० १९०७ ॥ अगहन मासे शुक्ल पक्षे पूरणमासी गुरु बासर ॥ लि० दवी मौली के ॥

विषय—महा भारत-द्रोण पर्व ।

संख्या ४१२ आई गदापर्व (महाभारत), रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—भाधुनिक, पत्र—१७, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०६ पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्ति स्थान—श्री बद्री सिंह जमींदार, ग्राम—बालीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गदा पर्व लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री गुरु चरण सरोज रज बरणौ हरि जस सार । गदा पर्व भाषा रचौं निज मति के अनुसार ॥ चौ० ॥ गदा पर्व अब करत बखाना । दुर्योधन मन मैं अनुमाना ॥ अंधकार भो गयो न चीन्हीं । मुकुट ज्योति सुरपर्द कै कीन्हीं ॥ लक्षन कुंवर चीन्ह जब पायो । करुना करन नृप मन आयो ॥ कहो पुत्र हमारे काजा । कहिहौं काह भीम अति लाजा ॥ ऐसो सुत सपूत संसारा । मारिह गयो मोहि पार उतारा ॥ रोई कह्यो दुर्योधन राजा । बिधि बिरुद्ध कीन्हो यह काजा ॥ यहि बिधि लाप बारि जो देई । जंबुक काग गिद्ध भरि लेई ॥ अग्नि देन को औसर नाही । कहीं मित्र तोहि दै का जाही ॥

अंत—जो फल सब तीरथ असनाना । सो फल कोटिक कन्या दाना ॥ जो फल होइ भारत के राते । सो फल होइ सत्य के भाखे ॥ सो फल है परमारथ कीन्हे । सो फल पिण्ड गया के दीन्हे ॥ जो फल रण मह प्राण गँवाये । सो फल सकल भूमि फिरि आये ॥ जो फल देवन पूजा कीन्हे । सो फल मित्र संग को दीन्हे ॥ सबन किये को कछु फल कहिये । सो फल भारत सुनि अद कहिये ॥ सो फल बेद पाठके कीन्हे । सो फल नाम युधिष्ठिर लीन्हे ॥ जा फल बिप्र भक्ति के कीन्हे । सो प्रतिपाल दासके दीन्हे ॥ सकल धर्म कीन्हे फल जोई । सबहि सत कीन्हे फल सोई ॥ दोहा ॥ भारत सुने अनेक फल मोसों कह्यो न जाय । अनायास बैकुंठ कहि हरष देई बहुराय ॥ २८ ॥ इति श्री महा भारते गदा पर्व भाषा कृते सबल सिंह बिरचितायां तृतीयो अध्याय ३ ॥ दोहा ॥ संवत ससि[१] औ[९] अग्नि[३] राम[३] बेद[४] सुखधाम । चैत्र मास प्रथ दसी शुक्ल पक्ष रबिनाम ॥ ताहि समी सुभदा भई गदा पर्व है नाम । श्री गौरी पति कृपासे लिखत भये है ग्राम ॥ गदा पर्व समाप्त भई ॥ लिखा बद्री पोथी सुपाठनार्थे । समाप्तम् ॥

विषय—महाभारत का गदा पर्व ।

संख्या ४१२ जे हरि चरित्र (भीष्म पर्व), रचयिता—सबल सिंह चौहान, कागज—साधारण, पत्र—१०० आकार—८३/४ × ७१/४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२००, रूप—अति जीर्ण, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—

सं० १७९२ = १७३५ ई० प्राप्तिस्थान—श्री वंशगोपाल ओझा, ग्राम—मिश्रपुर, डाकघर—परियावा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—सकुनी अरु सहदेव रन, भरे दोउ प्रचारि । नपत दुधी छते तव कियो भयानक मारि ॥ भूरिस्रवाह सात्वकी संगहि, सत धर्मा विराट रन रगहि ॥ भूपि भगदंत नाहीं जव क्रोधित नावा । द्रुपद नरेस आपु रन ठानेउ । सोम दत उत्तरा रन मंडे । वानत ते रिपु सैन विहन्डे ॥ कृपाचार्ज सन्मुप होय धाये । तिन सौं कासि राज रन लाये । घटोत्कच कीन्हों ते मैदाना । जुरे अलम्पु तिन्हते मैदाना ॥ नृप सगि विदु संप मैदाना । क्रोधित लगे चलावन वाना । जव द्रोनी दिग कियो पयाना । जुरे सिपंडी ते मैदाना ॥

× × × ×

अंत—पडौं दल आनंदियुत जीति चले मैदान । अर्जुन के रथ सारथी, सुन्दर श्री भगवान ॥ गोधन सहस देइ जो दाना । जो फल सव तीरथ अन्हाना । जो फल होए साधु के दरसे । जो फल होय शिशु के परसे ॥ जो फल होए व्रत एकादसी कीन्हे । जो फल होए भूमि सव दीने ॥

× × × ×

जो फल कोटिन विप्र जिमाए । जो फल तो भारथ सुनि पाए ॥ व्यास देव भारत के कर्ता । वादे पुन्य पाप के हरता ॥ राम कृष्ण गोविंद हरि, कीजै सस वपान । भाषा भीषम पर्व की कहव सवल सिंह चौहान ॥ इति श्री हरि चरित्रे महा भारथे भाषा कृते भीषम पर्व अठारहमोध्यायः, सपूरन समापत जो देपा सो लिपा मम दोष न दीआ सवत् १७०२ मिती आश्वनि वदि वसही७ रोज मगलवार को सात घरी फोती आरंभ आगुह पोथी लिपतोपराय तिवारी का कोइ दावा करै तो झूठा लितग घीराम घी साहेव राय रजपूत एए सही ॥ दस्त श्री साहेव राय का ॥

विषय—अर्जुन का युद्ध क्षेत्र में अरुचि दिखाते हुए शंका करना तथा कृष्ण द्वारा उसका समाधान और विविध योद्धाओं का परस्पर युद्ध के लिये प्रस्थान ।

संख्या ४१२ के. कर्णपर्व (महाभारत), रचयिता—सवलसिंह चौहान, कागज—साधारण, पत्र—४३, आकार—११ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३४ = १६७७ ई०, लिपिकाल—सं० १९१७ = १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ कर्ण पर्व लिप्यते ॥ प्रथमहि गुरुके चरण प्रणामहि । जाते हो सिद्धि सव कामहि । वदौं रामचन्द्र गुण सागर । सीतापति रघुवस उजागर ॥ महिमा अगम न कोई जानहि । परम भक्त वदो हनुमानहि ॥ साना भूमि चद्र गढ़ छाजत । मित्र × × तंह भूपति राजत ॥ पै वृपके पुरुषन्ह मह आही । सवल सिंह चौहान सिपाही ॥ तिन यह भारथ भाषा कीन्हो । जव आग्या श्री रघुपति दीन्हो ॥ सुक्क पछ अस्विनि के मासहि । तिथि पाचै कियो कथा प्रकासहि ॥ सवत सत्रह से

चौतीसा। औरंग साह दिली पति ईसा॥ दोहा॥ रघुपति चरण मनाइकै व्यास देव मरि ध्यान कर्ण पर्व भाषा रचत सबल सिंह चौहान॥

अंत—गंगा सुत मुनि क्रोधहि आयऊ। बांधि शस्त्र रन चरचिहि आयऊ॥ गुरु सिष्यते मारयो मारथ। चौबिस दिवस किया पुरुषारथ॥ देवन आई बिरचि करि दीन्हेउ। तब कन्या कछु कहिबे कीन्हेउ॥ गंगा तीर मैं चिता बनाये। देवो सर्व बात मम मावे। छत्री है देही अवतारा। तब भीषमको कर्यो अहारा॥ यह कहिकै निज देहहि आन्यो। जन्म सिखंडी भीषम मान्यो॥ तबसो परस राम प्रन कीन्हेउ छत्री को बिधा नहि दीन्हेऊ। मुनिके धर्मराज सुखमाना। सत्य बचन माण्यो भगवाना॥ दोहा॥ जहाँ धर्म तह कृष्ण है धर्म जगत परमान। कर्म पर्व भाषा रची सबल सिंह चौहान॥ इति श्री महाभारते कर्ण पर्वे भाषा कृते पंचमोध्याय ५ संवत् १८१० पौष मासे शुक्ल पछ द्वैयो दमयन्ती लीपा देवी॥ श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण॥

संख्या ४१२ एम. कर्ण पर्व (महाभारत), रचयिता—सबलसिंह चौहान कागज—देसी, पत्र—४२ आकार—८३/४ × ५ इंच परिमाण (अनुष्टुप्)—४२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवचारी काछ ग्राम—समरेजापुर, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गनेसाय नम: श्री गनेसाय नम: अथ करण पर्व लिषते। पिरथमहिं गुरु पद कं पर मामाई आते सिधि होइ सब कमहिं, श्री रामचन्द्र गुण सागर। सीता पति रघुबर उजागर महिमा अगम न कोउ बखानै। परम भक्ति बंदै हनुमानै। सुकृष्ण पछ अस्वनी के मासहिं। तिथि सतमी का कथा प्रकासहिं सम्वत सत्रह सौ चौतीसा। अवरंग साहि दिली पति ईसा। रघुपति चरन मनाई कै व्यासदेव करि ध्यान। करन पर्व भाषारचा सबल सिंह चौहान॥ चौ० गुरु द्रोण जू के मैदानहिं। दुर्जोधन तब आपु बखानहिं। द्रोणी करण हाथ से आपी। अपर अनेक बैठ सब आपी। अब का के सिर मुकुट बंधैये। जात चैत पत्र नृप दैये। द्रोणी कही नृपति सुनि लीजे। आपु सोच केहि कारण कीजै ते दीजे भर सिर ताहिं मानौ कछु कर्ण सिरदारहिं। रविसुत कर्ण महाबल भारी। अर्जुन के समान धनुधारी

अंत—दो० परसराम तब क्रोध कै कहो धर्म इस भाव भीषम को सै सौंपिहैं गहे हाथ सा हाथ। चौ—सुरपति आइ किवो तब दरसन। भीषम दौरि कियो पद परसन। यतनो कहा हमारी कीजै। ऊ मैताल कन्या सो लीजै। कीन्हीं कमल तिलसो कपने। संगम नारि करै नहिं सपने। श्री मानौ नहिं कहो हमारो। तौ भीत अब युद्ध विचारो। गंगा सुत मुनि क्रोधहि पायो बांधि अंग मंत्रा नहिं आयो। गुरु सिष्य सौं मचौ है भारथ। मस दिवस कीन्हो पुरुषारथ देवन आइ बीचु करि दीन्हो तब कन्या कछु कहबे लान्हो गंगा तीर बा चिता बनाई। दृष्टी सबै बात मैं भाई। छत्री ह्री देहौं अवतारा। तब भीषम को करौं संहारा। यह कहि कै निज देह आई। जन्म श्री पंडी की भया आई तब से धर्म राम मग कीन्हो। छत्री कहं विधा नहिं दीन्हों मुनि कै धर्म राज सुख माना। सत्य बचन भाख्या भगवाना जहां धर्म तहं कृष्ण धर्म जगत परमान। कर्म पर्व भाषा

रच्यो सवलसिंह चौहान । इति श्री महाभारते कर्ण भाषा कृते पचमोध्याय । सं०—१९३४ १७८८ साके अश्वनीमासे तिथि १५ गुरुवार ॥

विषय—प्रथम अध्याय-कर्ण को कौरवदल का सेनापति बनाया जाना कुंती द्वारा कर्ण को समझाया जाना और परशुराम से पाये वाणों को कर्ण से प्राप्त करना । द्वितीय अ०—कर्ण और भीम से युद्ध । तृतीय—भीम से कौरवों का घोर युद्ध । चतुर्थ—कर्ण का ब्रह्मास्त्र छोड़ना और कृष्ण द्वारा उससे अर्जुन का बचाव । पंचम्—अर्जुन का रुद्र वाण और कर्ण का नारायण वाण छूटना । अर्जुन कर्ण का घोर युद्ध । कर्ण का युद्ध में जूझना । कर्ण का परशुराम से ५ वाण प्राप्त करने का प्रसंग ।

संख्या ४१२ यम. कर्णपर्व, रचयिता—सवलसिंह चौहान, कागज—आधुनिक, पत्र—४८, आकार—१२½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३४ = १६७७ ई०, लिपिकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्रीसिंह जी, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ४१२ यन. कर्णपर्व (महाभारत), रचयिता—सवलसिंह चौहान, कागज—साधारण, पत्र—४१, आकार—११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३३, खंडित, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३४ = १६७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ४१२ ओ. महाप्रस्थान पर्व, रचयिता—सवलसिंह चौहान, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१३, आकार—१२½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८९, पूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्रीसिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री जानकी वल्लभो विजयते नम ॥ दोहा ॥ गणाधीसको सुमिरिकै गिरिजा हर भगवान । सवल सिंह भाषा रचत सुपद, महा प्रस्थान ॥१॥ मूसल पर्व भयो औसेषा । जो अर्जुनसो कह्यो विसेषा ॥ दारुकि की सुनि यह दुःष वानी । वहन लगो नैनन सो पानी । पुनि धीरज धरि पारथ वीरा । देष्यो तंह वसुदेव अधीरा ॥ वसु देवको धीरज दै वीरा । चल्यो जहां रनिवास गभीरा ॥ गयो सकल रानिन के पासा । जिनहि कृष्न विन और न आसा ॥ रोवन होय जाहि ते नाहीं । धरि धीरज अस भाष्यो ताही ॥ कृश्न गयो जहं जदु कुल सर्वे । करव फेरि हम दूसरि अर्वे ॥ यह सुनि करन लगीं सव साजा । कह्यो वुलाबहु वाजहिं वाजा ॥

अंत—सोरठा ॥ कह मुनीस ये वैन, विस्तरसों हम सव कहव ॥ रोहिनि पर्व सुनैन तास मध्य कहिये नृपति ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ सुनौ नृपति आगे जो राषा । नृपति जुधिष्टिर सवसों भाषा ॥ करौ तिलक नृप प्राछित केरा । सो रोहणी मासमैं हेरा ॥ तिलक सुनत तव भीम सु कहेऊ । कहौ मंत्रि कव साइत अहेऊ ॥ कह सहदेव कालिसो अहई । चलन

हेतु भाई सो रहइ ॥ सुनत मदक तब मत उद्राता। करि प्रस्थान सो सुभ तिथि पाता ॥ सुभग करन सुभ तिथि दिन आता। पूर्व मंगाय कीन्ह प्रस्थाना ॥ दोहा ॥ करि प्रस्थान अनूप अति निअकर मुनिवर व्यास। सबल सिंह भाषा रच्यो बिनु हरि और न आस ॥ २१ ॥ इति श्री महा भारते भाषा सबल सिंह विरचिते महाप्रस्थान पर्वे प्रथमोऽध्याय: माघ मास कृस्न पक्षे तिथौ १ शनिवासरे समाप्तं भवेत् लिपतं बद्री सुपाठ्नार्थे संवत १९३४ ॥

विषय—महा भारत—महाप्रस्थान पर्व।

संख्या ४१२ पी मूसल पर्व (महाभारत), रचयिता—सबल सिंह चौहान, कागज—देसी बादामी, पत्र—१५, आकार—१०×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२११, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२०=१६७१ ई०, लिपिकाल—सं० १९३४=१८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्री सिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—ताल्लुक बक्सी, जिला—बाराबंकी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री जानकी वल्लभो विजयते नमः ॥ दोहा ॥ श्री गिरिजा गणपति सुमिरि बरणि भक्त हनुमान। मूसल को भाषा करत सबल सिंह चौहान ॥ १ ॥ जन्म जै सुत सो जवन भाष्यो मुनि सुभ गात। ताहि सुमइ भाषा रचत सिर धरि निज प्रभु पाय ॥ २ ॥ चौ० ॥ बन्दौ गुरु गोविन्द के पावन। जा प्रसाद हुवै सुख दायन ॥ सुमिरौं राम नाम सीतापति। नारद सारद सुमिरि महा मति ॥ सुमिरौं आदि काव्य बद व्यासहि। जाकी सविधि भाँति मोहि आसहि ॥ ईश्वर रूप जानि जगती को। सुमिरौं रामा आदि सिव तीर्थ ॥ संवत सत्र सै सुभ तीसा। भाद्र मास सप्तम रजनीसा ॥ औरंग शाह दिल्ली पति नायक। सबल सिंह तब हरि गुन गायक ॥ वैसंपायन कहत सुभाई। सुनु सुभावे कुलवर नृप राई ॥ जब भूत राज्यादिक सहामी। ते हरि पुर सह कुन्ती रानी ॥

अंत—बहु कविता करि बरि सुभ बानी। पति सह अरत भई सब रानी ॥ गई सकल मिलि निज निज अंतस। जनि रत्र सुत बिन रह्यो न वंसन ॥ इत बहु न पुनि धीरज धारा। बजू भाप सह गे नृप द्वारा ॥ पद सुनै जो कथा सोहावन। वंस वृद्धि होय अति पावन ॥ दोहा ॥ पाप नसै कीरति बढ़ै व्यास गिरा परमान। भषत पर्व मूसल कही सबल सिंह चौहान ॥ इति श्री महाभारते भाषा कृते मूसल पर्वे तृतीयोऽध्याय: ॥ १ ॥ माघ मास पप स्याम तिथि प्रथम मंद शनिवार। संवत ससि[1] मर्म ग्रह[३] सुपद राम[३] वेद[४] अौतार ॥ १९३४ ॥ पोथी लिखा बद्री समाप्त ॥

विषय—महाभारत मौसल पर्व।

संख्या ४१२ क्यू सभा पर्व भाषा, रचयिता—सबल सिंह चौहान, कागज—साधारण पत्र—१०१, आकार—११×७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५१२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२७=१६७० ई०, लिपिकाल—सं० १९४१=१८८४ ई०, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ दोहा ॥ सुमरि व्यास गणपति चरण गिरिजा हरि भगवान। सभापर्व भाषा भनत सबल सिंह चौहान ॥ १ ॥ (१७२७) सत्रहसैं सताइस संवत् शुभ मधु मास। नौमी गुरु अरु पक्ष सित मैं यह कथा प्रकास ॥ २ ॥ चौपाई = अब नृप सुनौ कथा मैं जोई, तव हित हेत कहत हम सोई ॥ कुरु पाण्डव सोरहि ह्वै आछे, जस समाज धरम्यो मैं पाछे ॥ इन्द्र प्रस्थ ह्वै वसहि सुरारी, मति दग नद राज अधिकारी ॥ धन महि सपन सौंपि सब दीन्हा, बुद्धि चक्षु निज सुत नृप कीन्हा ॥ कानि राज पद की अति भारी, भीषम द्रोण भे आज्ञा कारी ॥ सोहत दुर्योधन नृप गादीं, भूमि पाडु नदन कै सादी ॥

अंत—चौपाई—अस गहि विदुर चरन गहि रही, विल्पत भाषत आरत बानी ॥ पुनि पुनि मिलत धर्म वर नाहू, चलो विदुर चप वारि प्रवाहू ॥ तेहि अवसर कुरु आयसु मानी, चहु दिसि वीर धीर अरु रानी ॥ गहे अनेक नगिनि कर याला, रूप भयकर धनुष विशाला ॥ दोहा—धर्म सुनहि पारथ कह्यो नाथ रजायसु होइ। चलत वार कौरव सुभट कछुक दीजिये पोई ॥ २१ ॥ नहि भाये पारथ वचन नाय विदुर पद भाल। चलहु घटोत्कच ने कह्यो सपदि धर्म महिपाल ॥ २२ ॥ लखि कुंभोत्कच भूप रुठ आतुर वारि न लागि। गर्जि तर्जि उचाट करि गयो नाग पुर त्यागि ॥ २३ ॥ सबल सिंह सुनि विदुर मुख कौरव नाथ हेवाल। ह्वै उदास सकुनी करन वोलि लिये तत्काल ॥ २४ ॥ इति श्री महाभारते सभापर्व भाषा कृते विदुर प्रव संवादो नाम सप्तमो ध्याय. ७ समाप्त पौष मासे शुक्ल पक्षे तिथौ तृतीयाया शनि वासरे संवत १९४१

संख्या ४१२ आर सभापर्व, रचयिता—सबलसिंह, कागज—देशी आधुनिक, पत्र—१५०, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२७ = १६७० ई०, लिपिकाल—सं० १९२२ = १८६५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वद्रीसिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाबबक्सी, जिला—लखनऊ।

संख्या ४१२ एस शल्यपर्व, रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—देशी बादामी, पत्र—२३, आकार—११ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्) २४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं १७२४ = १६६७ ई०, लिपिकाल—सं० १९२२=१८६५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वद्रीसिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शल्य पर्व लिष्यते जै जै जय गुरु चरण मन दीजै। रघुपति चरण वन्दना कीजै ॥ शारद शरण करौं परनामहि। वन्दो वालमीकि हनुमानहि ॥ कार्तिक मास पक्ष उजियारी। दसमी तिथिको कथा विचारी ॥ औरंग शाह दिल्ली अस्थाना। प्रवल प्रताप जगत सव जाना ॥ दोहा ॥ व्यास देव सव वदिकै जो मुष वेद पुरान शल्य पर्व भाषा रचो सबल सिंह चौहान ॥ चौ० ॥ जूझे करण जगत जस पायो। दुर्योधन यह वचन सुनायो ॥ हा हा मित्र परम सुख दायक। महा युद्ध करिवे सव

नायक ॥ तुमहि पाद् निज धर्मी धर्महि । यह सब दोष हमार कर्महि ॥ यहसो अर्जुन सकै मारन । इनके बचे जगत के कारन ॥

अंत—पार बार नहि आव न आईं । रुधिर नदी अति भई अथाही ॥ पैरति नृपति संक नहि मनमें । मा संग लोथ की अमिरत तन में ॥ बहुतन के बाजन अरु झावें । पैरत थको पार नहि पावै ॥ जहां द्रोण गारो सै धर्मार्द्र । अमिरे तहां गहो मित्र धर्महि ॥ गहिके धर्म कियो विश्रामहि । जिय सोचत पहुंचो कित धामहि ॥ पकरो लोथ बहुत सब भारहि । बुधि जात सब सहे न मारहि ॥ विधि बस ऐक लोथ तब गही । बूड़ा नहीं भारतनि सहो । चढ़े लोथ गहि रुधिरहि पेलत । अमिरत लोथ गवासो टेलत ॥ बहुत कष्ट से उतरहि पारहि । तब अपने मन कियो विचारहि ॥ दोहा ॥ भवन वीरको लोथ पद कियो निवाह निदान । शल्य पर्व भाषा रचो सबल सिंह चौहान ॥ इति श्री महा भारते शल्य पर्व भाषा कृते द्वितीयो ध्यायेः ॥ २ ॥ पौष मासे शुक्ल पक्षे दसम्यां बुध वासरे समाप्त शल्य पर्व लिखा देवी सिंह सवत १९१९ ।

विषय—महाभारत—शल्य पर्व ।

संख्या ४१२ टी शल्यपर्व, रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—साधारण, पत्र—२१, आकार—११ × ७¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह जमींदार, ग्राम—खाजीपुर, डाकघर—ताराव बरसी, जिला—लखनऊ।

संख्या ४१२ यू शांतिपर्व (महाभारत), रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—साधारण, पत्र—४०, आकार—११ × ७¾ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५०, पूर्ण रूप—साधारण पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंहजी, ग्राम—खाजीपुर, डाकघर—ताराव बरसी, जिला—लखनऊ।

आदि—॥ १ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सांति पर्व लिख्यते ॥ दोहा ॥ सकल मुनिवर वंदि कै व्यास देव धरि ध्यान । सबल सिंह चौहान कहि सांति पर्व सो ज्ञान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुनु राजा यह कथा अपारा । करत राज नहि धर्म कुमारा ॥ व्यास सौंकते धर्म कुमारा । भावै नहीं राज सुप सारा ॥ दिन दिन बहुत सोच मन आमा । चाहत नृप बन कीन्ह पयाना ॥ सहित बधु द्रिर्जोधन मार । गुरु द्रोण को रन सघारे ॥ कर्ण सो बंधुनि सो तब कीन्हा । भीषम तो मर सज्जा कीन्हा ॥ महा सोच अत दिन अति भारा । रोदन करत श्रवत जल धारा ॥ यह सुनि सबै मुनिः स्वर आये । नारद और बसिष्ट सुहाये ॥

अंत—धन्य धन्य तब मति बर नायक । प्रथम तुम्हारि जात सुप दायक भारत कथा पाप छै करई । जो मन बचन श्रवन को धरई ॥ सकल तीर्थ बहु करि असनाना । मानहु कीन्ह बहुत विधि दाना ॥ भारत सुनत प्रेम अधिकाई । कहत सुनत हरषित को पाई ॥ दोहा ॥ अंग देस भाषा रचे यह विधि बनाइ । प्रति भाष प्राकृत सुनत रचित पाप नसि जाइ ॥ इति श्री महा भारथे पुराने सांति पत्र भाषा सबल सिंह कृते धर्म वर्जन को ०६

भीष्म स्वर्ग गवननो नाम पचमो अध्याय ॥ ५ ॥ इति शांति पर्व भाषा कृते धर्म वर्णनो नाम पचमो अध्याय ॥ जगि प्रति देषि विचारि मन आपनी जानि सुधारि, लिपि दीन्ही मथुरा यह अपनी जानि सुधारि हो हु दयाल मुरारि । श्रावण मासे कृष्न पक्षे तिथौ १५ संवत १९३४ ॥ राम राम राम राम राम राम राम राम ।

संख्या ४१२ वी. स्त्रीपर्व (महाभारत), रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज — आधुनिक, पत्र—२७, आकार—११ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२८, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री बद्रीसिंह जी जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बख्शी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ स्त्रीपर्व लिष्यते दो० ॥ सकल देवको सुमरि कै इस्त्री मह गवर्व । सबल सिंह भाषा रचन सुपदा स्त्री पर्व ॥ १ ॥ सो० ॥ व्यास देवको ध्याय जड़ चेतन सब जक्तको । सबहि सदा सिर नाय बर्नो स्त्री पर्वको ॥ २ ॥ दो० ॥ वन्दन करि रिषि देवको दस औतार पुनीत । तिनके नाम सुभाषिकै भाषत जो मन चीत ॥ ३ ॥ चौ० ॥ कछ स्वरूप मक्षको ध्यावों । सूकर सिंहि हृदै लगावों ॥ वावन परस राम सुपदाई । राम चंद्र अरु कृस्नहि ध्याई ॥ बौध कलंकिहि सो पुनि गावों । जाकी कृपा अधिक सुष पावों ॥ इनहि सर्व सुमिरो सुद पूरी । सुनो परीक्षित सुत दुष दूरी ॥ जबसे सुभट मारि रिपु शयना । नाहि मर्म दुर्जोधन हैना ।

अंत—तुमहि प्रथम मोहि दूत उबारे । तुम ही मोहि गह देस निकारे तुमही सत्य सुवनमें रहे । तुम्हरी सत्यहिते दुख सहे ॥ तुम्हरी सत्यहि कीन्ह पराया । कीचक हाथ गई मोरि आवा ॥ तहा बकोदर मोहि बचायो । तुम्हरी सत्यहि सत्रहि ग्रत्रु दुरायो । जो तौ बंधु भले अति होते । पकरि तुम्है कागग्र शोते । तुम्हरी सत्यहि कीन्ह परावा । अबहू कहत नृपति बन जावा ॥ दोहा ॥ कुन्ती देष्यो विकल अति धर्मज बोले बेन । माता रहिए धीर धरि होइ जाइने चैन ॥ ४३ ॥ सो० ॥ सुनु जन्मेजय राव सुनै पढ़ै जो कथा को । दुःख न नेरे जाव रहै चैन अति ही सुभो ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ मातै बहुत प्रबोध कै कहि पृथ्वी आकार । सबल सिंह चौहान कहि मिथ्या है संसार ॥ ४५ ॥ इति श्री महा भार्थ पुराणे सबल सिंह भाषा कृते प्रथमो अध्याय ॥ १ ॥ समाप्तं सुभ भूयात् ॥ पोथी लिपा बद्री भोली मौजे षानीपुर के । लिपिकै तैयार भई शिव कृपासे ॥

विषय—महाभारत-पर्व ।

संख्या ४१२ डब्ल्यू. स्वर्गारोहनी पर्व, रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज— देशी बादामी, पत्र—५५, आकार—१२½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८१ = १७२४ ई० लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्रीसिंह जी जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बख्शी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ स्वर्गा रोहनी पर्व लिष्यते ॥ दोहा ॥ प्रथमहि गुरुके चरण सुभ सुमिरौं शीस नवाई । जाकी कृपा कटाक्षते सकल विघ्न मिटि जाइ ॥ १ ॥ दोहा ॥ महा देव पद पंकज सुमिरौं दोऊ कर जोरि । जो अभिलाष बद्री मन सो पुरवै प्रभु

मोरि ॥ २ चौ० ॥ श्री शक्ति मैं विनवौं तोही । माता पार लगावहु मोही ॥ हरि लीला बरनौं मनु लाई । सो तुम अच्छर देहु सिखाई ॥ महावीर सुमिरौं सब लायक भय भंजन मम वांछित दायक ॥ महा वीर सुमिरौं हनुमाना । सो भरोस मै मन अनुमाना ॥ दीन मोहि मम प्रभु उपदए । मो कहिहौं हिय सुमरि गनेसू ॥ अवहु हिदै गुरु श्री धरि ध्याना । तै ह ते पावो निर्मल ज्ञाना ॥

अंत—कासी प्राग गयेऊ अस्नाना । तस फल यह सुनि ब्यास बखाना ॥ दान अनेकन द्विज जो कोई । तस फल होइ सुनै जो कोई ॥ सो० ॥ शंकर शारद शेष चारि वेद सहस पट । सबकर अस उपदेस भज हरि चरन विहाइ छल ॥ सबल सिंह मति हीन ब्यास कहत भय कह्यो हम, प्रभु तारन जन दीन साईं मन कर्म भरोस कर ॥ इति श्री महा भारथे स्वर्गा रोहनि पर्व । सबल सिंह कृत श्री पांडव स्वर्ग वास वर्णनो नाम पंचमो अध्याय । इति स्वर्गा रोहनि पर्व, आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे सप्तम्यां भौम वासरे । संवत १९१४ ॥ पोथी लिखा स्त्री भौंडी के पश्चिम लालीपुर के ।

विषय—महाभारत-स्वर्गारोहण पर्व ।

संख्या ४१२ एफ्स स्वर्गारोहण पर्व, रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—देसी पत्र—२८, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७११ वि०, लिपिकाल—सं० १९१४ वि० प्राप्तिस्थान—श्री रामावतार सिंह, ग्राम-सुरकिया, डाकघर—महापुर, जिला—सीतापुर ।

संख्या ४१२ थाई उद्योग पर्व, रचयिता—सबलसिंह चौहान कागज—साधारण पत्र—१०४ आकार—१२ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९ परिमाण (अनुष्टुप्)—२४११, रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह जी जमींदार, ग्राम—लालीपुर, डाकघर—थाना बनसी, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गनेसाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ उद्योग पर्व लिख्यते ॥ दोहा ॥ विधि हरिहर गनपति गिरा गुरु सुप पावन जोग । सबल सिंह चौहान कहि भनित पर्व उद्योग चौपाइ ॥ अब भनि राज सुनहु कुरु केतू । कथा सकल सुप मंगल हेतू ॥ जबहि कृष्न राजा पँह आये । मिलत हर्ष अति आनंद छाये ॥ गहे चरण भीमादिक भाई । पँठ अति प्रमत्र अतुराई ॥ तब सुधि पाइ विराट भुवारा । आये सभा सहित परिवारा ॥ उभा संघ कुंवर होउ धाया । आइ चरण पर प्रेम अनुभाया ॥ उठे नृप मिलि भये सुपार । गहि भुज निज समीप बैठारे ॥ सुतन समेत सुपच महाराजा । श्रीह केतु तेहि सभा विराजा ॥ सो० ॥ कासिराज बैठे सभा सूर सेनि वर भाइ । जुरा सिंधु सुत सानुधे नृप सब सहित उछाह ॥

अंत—दोहा ॥ छत्री समर जो मरहीं जगत हंसाई होइ । कै निसंक अरि ते लरइ सुर कहावइ भाई ॥ ११४ ॥ इति श्री महाभारथे भाषा अध्ये उद्योग पर्व भाषायां एक त्रिंशो अध्याय ॥ ३१ ॥ इति श्री उद्योग पर्व रितः समाप्तं संपूर्णं ॥ शुभं भूयात्

चैत्र मासे कृश्न पक्षे तिथौ भैरव दस्यां ॥ श्री सम्वत ॥ १९३३ ॥ लिषित शिव प्रसाद भौली मौजे पानी पुर के ॥ दोहा ॥ जैसी प्रति देषा सुभग तसि प्रति हम लिपि दीन्ह। पंडित कवि यह देषियौं अपनी उक्ति न कीन्ह ॥ चौपाई ॥ पढिन जन सौं विनती मोरी। टूटे अक्षर वाचन जोरी ॥ मम अपराध न थे जो जोरी। मैं मति मंद बुद्धि है थोरी ॥ दो० ॥ है मधु मास सुहावनो कृश्न पक्ष गुरु वार। तिथौ भ्योदश्म अति सुभग पुस्तक भई तयार ॥ राम कृश्न ॥ राम राम राम राम राम राम।

संख्या ४१२ डेड. उद्योग पर्व, रचयिता—सवलसिंह चौहान, कागज—देशी, पत्र—३२२, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुस्टुप्)—२८६९, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३५ = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्रीसिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

संख्या ४१२ ए. विराटपर्व (महाभारत), रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—११ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुस्टुप्)—१२६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्रीसिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री व्यास देवाय नम ॥ अथ विराट पर्व लिष्यते ॥ कहे सकल वन पर्व के रिपि नरेस सो ठाट। सबल सिंह चौहान कहि भाषा पर्व विराट ॥१॥ धर्म राज तब विकल ह्वै सुमिरे व्यास मुनीस। नासन दारुन कलेस हित आयो जिमि जग दीस ॥ २ ॥ चौपाई ॥ दंड प्रणाम नृपति उठि कीन्हा। मुनिवर विहसि लाइ उर लीन्हा ॥ चारिउ बंधु द्रौपदी रानी। परसे चरन व्यासके आनी। आई दीन नृप धर्म विछाई। चरन धोइ बैठारे आई ॥ पातनसो वीजन करि लीन्हेउ। पवन कुमार पवन तब कीन्हेउ ॥ भोजन तब लै आई रानी। नकुल दीन्ह जल भाजन आनी। करि भोजन रिपि व्यास अनंदे। सहदेउ आनि चरन तब वंदे ॥ कहेउ राउ नैनन भरि वारी। भलेहि नाथ मम सुरति विसारी ॥

अंत—होईहि सोई जो रची करतारा। कह भीषम यह वारहि वारा ॥ कह सुनि सुनहु मुकुट वर धारी। सोच हरन संतन हितकारी ॥ चले कृश्न नृप को समुझाई। पहुचे धर्म पुत्र पह आई। पच बंधु सह सीस नवाये। वैठि कृश्न यह वचन सुनाये ॥ रचक महि तुमको नहि देता। उदिम कीन्हेउ भारत हेता ॥ विना जुद्ध महि कबहु न देहै। जो जीतै सोई सब लै लैहै ॥ वार वार कह वाल कन्हाई। विना जुद्ध कौने महि पाई ॥ दोहा ॥ वीर भोग है जीनिरन कूर तजै कदराइ। अस्त्र गहौ भारथ रचौ लीजै सबै छिनाइ ॥ कृश्न कही सबके मते मन मानी यह वात। धर्मराज बंधुन सहित भय प्रसन्न नित गात ॥ इति श्री महाभारते पुराने विराट पर्व भाषा कृते त्रयोदशो अध्याय ॥ १३ ॥ इति श्री विराट पर्व समते संपूर्ण सुभमस्तु। मार्ग शीर्ष मासे शुक्ल पक्षे चतुर्दस्यां भौम वासरे लिषितं देवी सवत १९२४ ॥ रामजी ॥

विषय—महाभारत विराट पर्व।

संख्या ४१२ डी[1] विराटपर्व (महाभारत), रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—साधारण, पत्र—११४, आकार—११ × ५¾ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८७१, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२९ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीरसिंह जमींदार ग्राम—भानीपुर, डाकघर—ताकाम यस्ती, जिला—लखनऊ।

संख्या ४१३ ए भागवत दसमस्कंध, रचयिता—सबल स्याम, कागज—देशी, पत्र—२०६, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७७५, प्राप्तिस्थान—आनंद भवन पुस्तकालय, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री सारदाय नमः ॥ श्री राधाकृष्ण ॥ बार्के मीस तन सरोजमयनं लावण्यो कोटि स्मरदीप चारुकुर्न विकास कुंडलं वेश्यादिक देहं गोपालं राजत भूषर जन हितं विश्वभरं माधव गोपी आनंद पद चकोर शासित बंदि जसोदासुतं। सारल्प मर्द कमल भ्रम केसव विलपति वस्त्रं घन स्याम करपहरस वक्षि हृपमान चाह गुंजाधरं नर्म सुरेसं रमेसं बंदि ॥ अति उदार मंगल सदन दसम प्रबल दुप दंद ॥ सबल स्याम सेवक सदा प्रभु मंदा नन चंद ॥ सो० ॥ गुरु पद पंकज धूरि प्रथम ससि निज धारि करि, बरनौं प्रभु ससपूरि सुपदायक सब दुप हरण ॥ चौ० ॥

अंत—॥ दो० ॥ सबल स्याम भवभय हरन पावन जन्म उदार। कृपासिंधु शरणद सुपद व्यापक जगदाधार ॥ इति पोथी भागवत दसम स्कंध समाप्त शुभ मस्तु संवत १७७५ समै नाम पौष शुक्ल नौमी बार शनिवार नक्षत्र पुष्य मये अर्कः मध्याह्न दिना लेखक हरीदास मवेदी वार्मीवर भक्त सुत लिखि कछु बाचे पढ़त है।

संख्या ४१३ बी हरि चरित्र रचयिता—सबल स्याम कागज—साधारण, पत्र—२५००, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१२५, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह रईस तालुकेदार, कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—दो० :—धावहि बहुतक गगन मग, अवनि धरनि पग धीर। जासु नाग बहु भांति द्रुपा विचित्र रस जोर ॥ १ ॥ बरन बरन गज राज उदार। मनहु मेघ दमिय धुर धारे ॥ धरणहि मद विराजहि कैसे। सरित धस कज्जल गिरि जैसे ॥ पहन पक्ति भ्रमर कैंपरिनि। मदि सिंधार त्रिन्ह के मद नीरनि ॥ अगनित पयेदल गनै को पारा। अगनित रथ अगनित असवारा ॥ कनक जटित मनि रथ भग चालनि। बरन रचन बर तुंग पताकनि ॥ वाहन विविधि न जाइ बखानी। केहि पटतर दीजिये रजधानी ॥ आश्रम चारि बरन बहु चारी। जहँ सब साधु सती नर नारी ॥ बार वधू बहु रूप उज्यारी। जासु रूप रंभा बलिहारी ॥ दो० :—राम विराजहि पुर निकट, बहु विधि बरन न जाइ। बहाँ मदन अनु राज जुत भव कनु रह छुमाइ ॥ ७ ॥ कदरी बदरी मैव रसाला, बकुल कदंब कचनार ताला। पुंगी ताल तमाल खापूरी नरियर अंबर नारंगी भूरी ॥

× × × ×

अंत—पृष्ट ५०० मे—तव कीरति होइहि विमल, गाइहि सब ससार। बहु विधि तो सेड विजये, कहि दया सिउ करतार॥ चढ़ि निज रथ पारथ भगवाना, पश्चिम दिसि कह दीन्ह पयाना। सप्त दीप गिरि सिउ विसाला, देखत लोक लोक फिर चाला॥ कृप। सिंधु नव नीरद वेसा। देखि वृहद तव कीन्ह प्रवेसा॥ तहाँ हय मेघ पुष्प सुग्रीवा, सैव्य वलाहक अति वल सीवा॥ निदरि सकि हय कीरति जिन्ह की, तम तहाँ थकित भई गति तिन्हकी जोगेश्वर हरि तुरग निहारी। जाकर चक्र धरेउ नृप भारी। सहस्र सहस्र कर दीपति जासू। किये उदू रित हतम कर आसू॥ तम तहं पार जोति अति भारी। तहं प्रवेश भये हरन मुरारी॥ दो० :—जोति प्रताप प्रकाश अति, भक्तेन विजये निहारि। मंद मद तिहि पन भई, देखे प्रगट मुरारि॥ चौ० दिव्य दृष्टि पारथ × × ×

विषय—पृ० १ से पृ० ५ तक लुप्त। अध्याय १—राज समाज वर्णन। अध्याय २—षट वालक वध वर्णन। अध्याय ३—गर्भ शक्ति वर्णन। अध्याय ४—कृष्णावतार—५—असुपाल्या निरूप मोहन ६—व्रज महोत्सव। ७—उड विमोचन। ८—पूतना वध। ९—सकट। १०—तृणावर्त मोक्ष। ११—विश्वरूप वर्णन। १२—कमला ग्वालिन की माखन चोरी। १३—गोप प्रमाद। १४—द्रुम निपात। १५—वत्सासुर, वकासुर वध। १६—असुर वध। मोक्ष। १७—विरंचि मोहन। १८—व्रह्म स्तुति। १९—गो चारण। २०—काली वधन॥ २१—गरुड़ श्राप। २२—प्रलंव वध। २३—दावाग्नि मोक्ष। २४—गोवर्द्धन धारण। २५—कुमारिका भिलाषय। २६—,,—२७—विप्र प्रत्पहर। २८—इन्द्र क्रोध निवारण। २९—गर्ग ज्ञान। ३०—भाम वने गोविंदाभिषेक ३०—३१ व ३२—नदानयन। ३३—वाल चरित्र। ३४—कृष्ण का अन्तर्ध्यान होना। ३५—गोप सुताविरह। ३६—गोपियों का कृष्ण को वन २ में ढूंढना और आखीर में कृष्ण का प्रकट होना। ३७—रासक्रीड़ा। ३८—सर्प रूप विद्याधरोद्धार। ३९—वृन्दावन की क्रीड़ा। ४०—अक्रूर आगमन। ४१—व्योम वध। ४२—अक्रूर नद का वार्तालाप। अक्रूर का कृष्ण प्रेम में निमग्न होना। अक्रूर मथुरा पयान। कृष्णागमन पर मथुरा वासियों की प्रसन्नता। ४६—मल्ल रग वर्णन। ४७—कुवलया पीड वध। ४८—कंस वध वर्णन। ४९—गुरु सदीपन दुःख मोचन। ५०—उद्धव व्रज गमन। ५१—उद्धव गोपिका सवाद उद्धव लौटना। ५२—सैरन्ध्री मिलाप। ५३—पांडवों का दुःख वर्णन। ५४—दुर्गा निवेक्षण। ५५—मुचकुंद स्तुति। ५६—वैदर्भी का सदेश। ५७—रुक्मिणी हरन। ५८—रुक्मिणी विवाह। ५९—प्रद्युम्न जन्म कथा। ६०—सत्राजित तथा मणि की कथा। ६१—सत धन्वा वध, अक्रूर का मणि देना। ६२—कृष्ण इन्द्रप्रस्थ गमन, ६३—कौशल राज। सुता विवाह। ६४—नरकासुर वध। ६५—रुक्मिणी सवाद। ६६—अनिरुद्ध विवाह। ६७—ऊषा की कथा तथा अनरुद्ध वियोग। ६८—शकर समर—कृष्ण विजय। ६९—नृगोपाख्यान, ७०—वलदेव विजय, जमुनाकर्षण। ७१—काशिराज पडु वध। ७२—द्विविद निपात। ७३—वलभद्र विजय, कृष्णात्मज का सुयोधन की पुत्री के साथ विवाह। ७४—नारद गमन, कृष्ण का प्रभुत्व। ७५—नारद का हरि चरित्र देखना। ७६—

भगवान का इन्द्रप्रस्थ गमन। ७७—जरासिंधु वध। ७८—राज सूय यज्ञ विजय। ७९—द्रौपदी का हास्य दुर्योधन प्रति। ८०—संमर युद्ध वर्णन। ८१—शाल्व वध। ८२—बलदेव तीर्थ यात्रा। ८३—बलदेव द्वारावति आगमन। ८४—भगवान और सुदामा संवाद। ८५—भगवान ब्राह्मण संवाद। ८६—कृष्ण रवि पर्व के लिये गमन। ८७—द्वारावति वासी तथा ब्रज वासी जन परस्पर मिलाप तथा वार्तालाप। ८८—तीर्थ यात्रा से अपने २ गृह गमन। ८९—देवकी के मरे पुत्रों का कृष्ण द्वारा लाया जाना। ९०—कृष्ण का द्विज बालक यम से मिलाप। ९१—कृष्ण तथा नारद संवाद। ९२—भस्मासुर कथा। अपूर्ण।

संख्या ४१४ नंद गांव बरसाने की होली, रचयिता—सहजराम (रामगज), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—९ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२ पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राम विलास, ग्राम—महारनगर, डाकघर—बांगर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ नंद गांव बरसाने की होरी लीला लिख्यते॥ ख्याल॥ मचि धूम फागुन के मास प्रभु बरसाने खेलैं होरी॥ खेल रहे घनश्याम रंग से गुलाल से राधे गोरी॥ नंद गांव से कृष्ण पधारे बरसाने राधे प्यारी॥ ले गुलाल राधे जी हाथ मोहन के हाथ में पिचकारी॥ परत रंग फागुन्न हैं अंग मन मोहन करते हैं ख्वारी॥ अंजन से डार गुलाल मार तुम इतनी माफ करौ प्यारी॥ रंग केसर का घोल भरा है कस्तूरी मृग मद घोरी॥ १॥ मचि धूम भीजै चीर बदन के लिपटे अगत रंग की पिचकारी॥ हाथ जोड़ राधे जी कहैं प्रभु करौ मदन स गिरधारी॥ तुम तो ईश्वर हौ प्रभु मोरे तुम से पार नहीं प्यारी॥ परत रंग गिरजत है अंग चौफेर हंसत कसत सखियाँ सारी॥ खेल रहे घनश्याम राधिका सुंदर रूप सुगुन जोरी॥ मचि धू०॥ २॥

अंत—अति पुनीत ब्रज रज ब्रज की भूमी जहं मोहन अवतार लिया॥ ब्रज लीला के खातिर प्रभु जी गऊ लोक छोड़ दिया॥ असुर मार करे हैं भारतव भक्तन का उद्धार किया॥ ब्रज रज सेवन नहीं करी का जन्म पाय कर वृथा किया॥ ब्रज की महिमा अनंत महत्व कही थोरी थारी॥ मचि धूम॥ ७॥ ख्यास रामगज नाम सेठ की गुरु प्रसाद मन धीं घनश्याम की राम हासी कही बनाय मन॥ इति श्री नंद गाम बरसाने की हाली संपूर्ण समाप्तः॥

विषय—श्री कृष्ण का ग्वाल बालों सहित और श्री राधिका जी का सखियों सहित परस्पर होरी खेलना॥

संख्या ४१५ ए. हनुमान बाल लीला, रचयिता—सहजराम, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५४ = १७९७ ई०, प्राप्तिस्थान—रूपसिंह, ग्राम—छत्यागाँव, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ हनुमान बाल लीला लिख्यते॥ दोहा॥ विधि हरि हर गणपति गिरा श्री गुरु पद सिर नाइ॥ बाल केलि हनुमान की कहौं जथा मतिगाइ॥

चौं० । पूरब कल्प सुभ मन धागा । भयो केस केसरी कुमारा । सुर नर असुर बंदि वृष केतू । जाहिं सदा हरि दरसन हेतू ॥ जब प्रभु निरट उमापति आवहि ॥ प्रथम पूजि चरन शिर नावहिं ॥ भयो मदन रिपु मन संदेहा पूजा हेत धरी कपि देहा ॥ अब यह कल्प कथा अति पावनि कहीं सकल दुष दोष नसावनि ॥ अति पुनीत कि प्रपंच जहा वसै केसरी कपि पति तहा ताके नारी सुंदर स्यामा । नाम अंजनी अति अभिरामा ॥ एक बार पट भूषन साजे कज विलोचन अंजन आजे । करि श्रगारबैठा गिरि श्रगा । देषि पवन मन जनित अनगा ॥ भयो अंजनी मन सदेहा परगत जन परपति ममदेहा । अहो देव मोहि परसन कीजे । पाप बुधि तजि दरसन दीजे ॥ दोहा ॥ करहुं जो भग अनंग वनु पतिव्रत धर्म हमार । देहौं पाय श्राप सुर होइहि नास तुम्हार ॥

अंत—सहज राम कीनी कथा वाल्मीकि मत देपि सकल सुमंगल दाइनी ॥ मगल कार विसेप ॥ इति श्री सहजराम विरचते हनुमान बाल लीला समाप्त संवत १८५४ कुवार सुदी २ सुकवार । दसखत खुसालचद के बिसवा मगर ग्राम बसत है सब संतन को पर नाम ॥ पातिर जानकी नाथ के लिषी ॥

विषय—हनुमान जी की जन्म कथा और देवताओं का वरदान । हनुमान जी को अपनी माता से अपने ईष्ट रामजी की सेवा के लिये आज्ञा प्राप्त करना और अहोभाग्य समझना ।

संख्या ४१५ बी. प्रहलाद चरित्र, रचयिता—सहजराम, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०६ = १८४९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवराम, ग्राम—माधवपुर, डाकघर—खैराबाद, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ प्रहलाद चरित्र लिष्यते ॥ दो० ॥ उमा वचन सुनि शूल धर कहन लाग इतिहास । जो सुनि संसै सोक भ्रम होइ मोह कर नास ॥ चौं० ॥ कनक कशिप निश्चर वलवाना । सुत प्रह्लाद जासु जग जाना । सडानकी कुल गुर जाये कनक कशिप सो तुरत बोलाये । सुत प्रहलाद प्रान प्रिय मोरे । सौंपो कहौ कर जोरे ॥ कीजै इन्है पढाइ सचेता । स्वल्प ताड़ना लाड समेता ॥ सुनि नृप वचन विप्र अनुरागा । उँ नम सिद्धि पढ़वन लागा । लिखि पाटी दीन्ही कर वामा । सो लिपि लेपि लिख्यो हरिनामा ॥ विहंसे वालक वृन्द विलोकी । राजकुमार सकै किमि टेकी । हंसत देषि पूछेउ द्विज दोऊ सैनहिं वाल बतावत सोऊ ॥ राम नाम अंकित निरषि । महि सुर मन मुसकाहि । लिष्यो बहुरि सो लेप्यो बहुरि वालक हंसै ठिठाइ ॥ राम नाम को कौन फल विद्या को फल कौन । घाटा नफा विचारि कै पढ़ै विप्र हम तौन ॥

अंत—दो० ॥ सहजराम ऐसे प्रभुहिं तजहिं नहीं प्रभु आन । सोइ पांवर सोइ मंद मति सोइ नर परम अपान ॥ बार बार सनमानि सुर हरि भये अतरध्यान । देव दिनेस मुनीस गन प्रमुदित कीन्ह प्रनाम ॥ इति प्रहलाद चरित्र समाप्तम् लिषतं घूरेलाल मुसद्दी वनरहा वाले तिथि पंचमी श्रावण शुक्ल सवत् १९०६ वि० ॥ शुभमस्तु ॥ श्री शिवायनम ॥

विषय—प्रहलाद चरित्र ॥

संख्या ४१५ सी. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—सहजराम, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१७, प्राप्तिस्थान—श्री शिवरतन सिंह, ग्राम—पीतमपुरवा, डाकघर—औरंगाबाद, ज़िला—सीतापुर (अवध)।

संख्या ४१६. सहजोबाई की बानी, रचयिता—सहजोबाई, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा मनीराम दास, ग्राम—भरगाँव, डाकघर—हर्रैया, ज़िला—लखनऊ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सहजो बाई की बानी लिख्यते दोहा ॥ निर्मल आनंद देत हो ब्रह्म रूप करि देत । जीव रूप की आपदा ब्यापा सब हरि लेत ॥ नमो नमो सुकदेव गुसाईं । प्रगट करो मध्यो जग माईं ॥ श्रीमत भागवत भानु प्रकासा । घट मुनि करी तिमिर को नासा ॥ ज्ञान जोगकी भीम बीनी ॥ चरण दास केवट की दीनी बहुतक पापी जीव चढ़ाये भव सागर सूं पार लगाये किरपा करकी हाथ मैं राखें । काहू ते दुरवचन न भाखे ॥ अमृत बचन बोलि निरवाहैं ॥ नर नारी सब पतित तिराबै ॥ कल जुग में सत जुग बिस्तारा । दियो भक्ति का खोल दुवारा । सुनि सुनि कै लिप्यासू आवै । रमहं के मंदिर मिटावैं ॥

अंत—दो० प्रेम दिवाने जो भये पलटि गयो सब रूप । सहजो दृष्टि ना आवई कहाँ रंक कहा भूप ॥ प्रेम दिवाने जो भये नेम धरम गयो खोय । सहजो नर नारी हंसै वा मन आनंद होय ॥ प्रेम दिवाने जो भये सहजो डिग मिग देह । पांव परैं कितकै किती हरि संभार जब लेह ॥ प्रेम लटक दुर्लभ महा पावै गुरु के ध्यान ॥ अजपा सुमिरन कहत हौं उपजै केवल ज्ञान ॥ इति श्री सहजो बाई की बानी समाप्ता ॥

विषय—गुरु की स्तुति, सुकदेव की स्तुति गोविंद व गुरु का अंतर, गुरु निंदक, गुरु की महिमा शुद्ध साधु वैराग कर्म वासना बालकपन, बुढ़ापा, मृत्यु काल नाम की महिमा आदि का वर्णन ॥

संख्या ४१७. सद्गुरु विनय, रचयिता—परमहंस बाबा सालिग्राम, कागज—आधुनिक, पत्र—१४, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२०, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई० प्राप्तिस्थान—श्री रूपपालसिंह, ग्राम—महुआ डांड, डाकघर—महमूदाबाद, ज़िला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सद्गुरु विनय प्रारम्भ ॥ परमहंस बाबा सालिक राम कृत ॥ राग चंचरीक ॥ भजन ॥ जै गनेस बुधि नरेश प्रथम तोहि ध्यावनं । सुमिरत जेहि मुनि महेश ब्रह्म बिष्णु आद शेष राम यश प्रकाशि प्रेम मग्न नारद गावनं । गौरी सुत अद्भुत सरूप आप ब्रह्म अनादि अकल निराकार निरविकार ज्ञानरूप पावनं ॥ भक्ति भाव हेत सगुण हौ अनादि रूप अनुग दास जाक दास प्रेम मोद हि सेवकनं ॥ सालिक राम

सुनि अस जस गणपति पद तन मन फंस सकल गुणन हीन नाथ चरण शरण आवन ॥ १ ॥ गणपति के चरण शरण मैं दुआर दीननं ॥ नहि विराग भक्ति प्रेम ज्ञान हीन सकल नेम चतुर चपल बुद्धि नाहिं जाति वरण हीनन ॥ मति तो उपल जड कठोर मागत हैं सुजस गोर राम नाम ते विहीन चहत मग्न लीनन ॥ कर्म धर्म ते विहीन पाप उदधि मन है मीन केहि विधि निरवाह नाथ छिन छिन तन छीनन ॥ कोटि पतित भरण तरं जै गणेश हरे हरे सालिक राम ब्राह्मण जन पावौं नाम भीनन ॥ २ ॥

अंत—धारो तेरे धरम का मैं देखत हौं देखत हौं प्रेम। केसि प्रीति हमते करो भाव भक्ति का नेम ॥ भजन प्रारम्भ ॥ का पति देपों धरम हमारे। विष्णु लाल मन तुम मोरे पति निश दिन प्राण अधारा। तुम मन हम तन चहे ना देखौं कुमति के करत महारे ॥ तेहि के धरम कवौं ना देख्यो हस मन वसि नित दीन कगारे ॥ कुमति फिरे तुमका तजि निश दिन लोभ मोह रत तुम्हें विसारे ॥ सुमति कुमति तुम्हरे पटरानी दुहुन के धरम निहारो जो निश दिन जग तुम्हें धुकारे ॥ सालिकराम सुमति आगरि के विष्णु लाल सुनि ऐना गये सकुचाय साच यह कहती तव कुमती तन विकट निहारे ॥ २०० ॥ सुमति आगरी वचन सुने अस विष्णु लाल जै कुमति निकारी। कुमति सवति जवते घर निकरी सुमति आगरी राजू सुमति के महलन मन विश्रामा। प्रगट सुजस सुत जग उजियारी ॥ सुमति के वाजे अनहद वाजा कुमति भई दुखारी। निश दिन फिरै जगत मा मारी काम क्रोध मद रत मतवारी । कुमती जरं सुमति आगर पर करं उपाय अनेका कौनि यतन यहिका धरि पटकौं जसइं हमरो भवन उजारी ॥ कुमति सुमति आगरि दोऊ वहिनी सवति स्वभाव विरोधू । सालिक राम जाहि वश मन नृप तेहिका तस जग राज विचारी ॥

विषय—रजीतपुरवा तहसील, जिला उन्नाव, निवासी गिरजावख्स सिंह राजा की निधिरानी जो विधवा हो गई थी उसकी भगवान में भक्ति उत्पन्न करने के लिए परमहंस गुरु शालिकराम ने भजन वनाए।

संख्या ४१८ प. भाषा भागवतदशम स्कध उत्तरार्द्ध, रचयिता—शालिग्राम वैश्य (मुरादाबाद), कागज—आधुनिक, पत्र—२५०, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०१०, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५० = १८९३ ई०, प्राप्तिस्थान- रामचरण कुर्मी, ग्राम—इनायतपुर, डाकघर—विस्वां, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ श्री मत्भागवत भाषा दशम स्कंध उत्तरार्द्ध लिख्यते ॥ दो० ॥ उत्तरार्द्ध प्रारंभ में व्रजपति चरित ललाम। कह्यो पचाशाऽध्याय जरासंध संग्राम ॥ श्री शुकदेव जी बोले कि हे नृप श्रेष्ट परीक्षित अव पूर्वार्द्ध के उपरान्त ४१ अध्याय में जो कथा है सो हम वर्णन करते हैं कि जरासिंध के भय से ही मानो समुद्र में किला वनाकर श्री कृष्णचन्द्र अपने जादवों को उसमें लेगये। व्यास पुत्र श्री शुकदेव जी बोले कि हे भरत वसावतंस परीक्षित अस्ति और प्राप्ति यह दोनो कंस की रानी अपने पति कंस के मरने से अत्यंत दुखी होकर अपने पिता के घर चली गई ॥ अपने स्वामी के मरने

से गौचकुक अस्ति प्राप्ति दोनो बहिनों ने अपने पिता मगधदेस के राजा जरासंध से जाकर सब वृतान्त कहा ॥ हे राजा परीक्षित यह बात सुनते ही जरासिंधु अति क्रोध कर अपने अमात्य का शोक न सह पृथ्वी को यादव रहित करने का उपाय करने लगा और तेईस अक्षौहिणि सैना को साथ लेकर जरासंध ने यादवो की राजधानी मथुरा को चारो ओर से घेर लिया ॥

अंत—सब जीवों में अंतर यामी रूप होकर बास करने वाले भगवान श्री कृष्णचंद्र सर्वदा उत्कर्षता पूर्वक विराजमान हैं ॥ देवकी में जन्म हुआ यह तो कथन ही मात्र है श्रेष्ठ यदुवंशियों से सेवित कृष्णनाम से अधर्म के नाश करने में समर्थ हैं परंतु तो भी क्रीड़ा के लिये अपनी भुजाओं से अधर्म को दूर कर स्थावर जंगम सब जीवों का दुख दूर कर सुंदर मुसकान युक्त अपने श्री मुख से ब्रज की की गोपिका और पुरी मथुरा द्वारका की स्त्रियों को कामदेव बढ़ाने वाले सर्वदा विराजमान रहते हैं ऐसे सर्वोत्तम भगवान श्री कृष्णचंद्र की जय हो ॥ अपने धर्म की रक्षा करने के लिये मत्स्य, कूर्मादिक अवतार धारण करने वाले यादवों में उत्तम भगवान श्री कृष्ण चंद्र ने जो जो रूप धरकर जाग्य कर्म किये थे उनको सुनकर पुरुष पाप कर्मों से छूट जाता है तीनों काल में बड़ी मुक्ति के देने वाले भगवान श्री कृष्ण चंद्र की सौभाग्यमान कथा का श्रवण कीर्तिन और विचार करके पुरुष काल की गति रहित भगवान के धाम को प्राप्त होता है ॥ यह श्रवण करके चक्रवर्ती राजा भी अपना राज्य त्याग श्री कृष्ण चंद्र की प्राप्ति के लिये ग्राम के बाहर बन को चले गये ॥ इति श्री भाषा भागवते महापुराणे श्री राम गंगा तटस्थ मुरादाबाद नगर निवासी कविवर माथुर वंशीय लाला सालिग्राम वैश्य कृत दशमस्कंध उत्तरार्द्ध अष्टादश पाहस्त्रयां संहितायां श्री कृष्ण चन्द्र जन्म चरित्र वर्णनं समाप्त लिपर्त रामधाय शुक्ल शाहजहांपुर प्रान्त जलालाबाद निवासी सवत १९५० श्रावण शुक्ल सप्तमी ॥ श्री राम राम राम राम राम ॥

विषय—यदुवंशियों का कुरुक्षेत्र जाना ॥

संख्या ४१८ पी श्री मद्भागवत भाषा दशमस्कंध, रचयिता—सालिग्राम वैश्य (मुरादाबाद), कागज—देसी, पत्र—४००, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०,०००, पूर्ण रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपि काल—सं० १९५१=१८९४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामचरण कुर्मी ग्राम—कृपालपुर, डाकघर—बिसवाँ जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री मद्भागवत भाष्य दशमस्कंध पूर्वार्द्ध लिख्यते ॥ सवैया ॥ जाकी कृपा शुक ज्ञानी भये अति ध्यानी भी ध्यानी भये त्रिपुरारी। जाकी कृपा विधि वेद रचे भये व्यास पुरानन के अधिकारी ॥ जाकी कृपा ते त्रिलोक धनी सु कहावत श्री ब्रजचंद्र बिहारी। मेरहू काज करौ सो माई श्री कृष्ण प्रिया वृषभानु दुलारी ॥ १ ॥ कवित्त ॥ काहू को भरोसा है गनेस शेष सारदा को काहू को भरोसो है कालिका जु भवानी का। काहू को भरोसा उमा रमा सिया ब्रह्मी का काहू को भरोसो महादेव महा

ज्ञानी को। काहू को भरोसो गंग जमुन हनुमान जी को काहू को भरोसो सिंह वाहिनी भवानी को॥ तन मन से यों कहे बार बार सालिग्राम मोको तो भरोसो एक राधा महरानी को॥ दो०॥ हे मुकुंद गोविंद हरि नंद नंदन घनश्याम चरण शरण मोहिं राषिये कृपासिंधु सुष धाम॥ श्री शुकदेव जी राजा परीक्षित से बोले कि हे दीन दयालु आपने नवम स्कंध में चंद्रवंश और सूर्यवंश में जो जो नामी राजा हुए उन दोनो वंशों के सब राजाओं का अति विचित्र चरित्र विस्तार सहित वर्णन किया॥ हे मुनिवर धर्म शील महाराज जदु का वंश भी विस्तार पूर्वक आपने अच्छी रीति से कहा परंतु अब दया करके वह कथा कहो जो महाराज जदु के वंश में बलराम जी के साथ परिपूर्ण रूप से अवतार धारण करके संसार के सुष देने को जो जो अद्भुत लीला भगवान वासुदेव ने की उनको विस्तार सहित हमारे सामने वर्णन कीजिये॥ सब प्राणियों के प्रति पालक भगवान भूत भावन ने जदुकुल में जन्म लेकर जो जो आश्चर्ययुक्त चरित्र किये वह भी सब यथावत हमारे आगे कथन करो॥

अंत—भगवान की इच्छा को कौन पुरुष पटन कर सकता है अर्थात् उसकी इच्छा के प्रतिकूल कुछ नहीं होता। सब उसकी इच्छानुसार ही होता है। जिस ईश्वर ने पृथ्वी का भार उतारने के कारण जदुकुल में आनकर अवतार लिया है जो ईश्वर विचारने में न आवै ऐसी अपनी माया से इस विश्व को उत्पन्न कर और उसमें प्रवेश कर कर्म तथा कर्मों के फल को अलग अलग कर जीवों को देते हैं॥ जानने में न आवै ऐसी लीलों से रचे हुए संसार चक्र के घुमाने वाले उस परमेश्वर को मैं बारंबार नमस्कार करता हूं॥ श्री शुकदेव जी बोले कि हे भरत वंशावतंस परीक्षित इस प्रकार जदुवंश उत्पन्न अक्रूर जी धृतराष्ट्र का अभिप्राय जान सुहृदों से आज्ञा ले मथुरा पुरी में आये। हे परीक्षित बल्देव श्री कृष्ण ने आप जिस कारण अक्रूर जी को पांडव के पास भेजा था सो अक्रूर जी ने सब धृतराष्ट्र जी की कही वार्ता का अभिप्राय जानकर भगवान श्री कृष्णचन्द्र और बल्देव जी से कह दिया॥ इति श्री भाषा भागवते महापुराणे माथुर वंसीय श्रीयुत सालिग्राम वैश्य मुरादाबाद निवासि कृत दशम स्कंधे पूर्वार्धे एकोनपचाशत्तमोऽध्याय. संपूर्ण समाप्त लिषत रामबाबा शुक्ल शाहजहांपुर प्रान्त जलालाबाद निवासी संवत् १९५१ वि० चैत्र शुक्ल राम नवमी। श्री रामजी सदा सहाय करे॥

विषय—यदुवंशियों और श्री कृष्ण जी की लीलाएँ, वर्णन॥

संख्या ४८६ ए. बालकांड रामायण, रचयिता—समरदास, कागज—साधारण, पत्र—६२, आकार—१३ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८२, पूर्ण, रूप—साधारण प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल सं० १९१९ = १८५२ ई०, लिपिकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ बाल काण्ड समरदास कृत लिष्यते॥ भजन राग बिलावल॥ गनपति सुमिरौं सिधि निधि दायक। लंबोदर गज बदन सदन सुख कृपा सिंधु सब विधि सो लायक॥ १॥ विघ्न हरण सुष करण उमासुत आदि देव समरथ गण

दायक ॥ २ ॥ मंगल करन हरन दुष दारुन संकर सुवन जक मम भायक ॥ ३ ॥ सुन्यहु सर्ब यह गर्ब समर की कहीं राम मम होउ सहायक ॥ ४ ॥ राग भैरवी ॥ ध्यावौं आदि शक्ति महारानी ॥ ब्रह्मा बिस्नु रुद्र जेहि ध्यावैं तुमरी गति अद्भुत जग रानी ॥ अगम तेज चौदहौं भुवन में भेद देस नहि सकत बखानी ॥ एक बीज सम कोटिन दानव निमिष में तुट बच्यो है भवानी ॥ सम्मर चाहत रामजस बरनन करौ सहाइ देबि बर दानी ॥ २ ॥ सोरठा ॥ तुम गुरु ग्यान निधान मैं अग्यानी अधम हौं । जानहु मोहिं अजान, करहु समर निस्तार प्रभु ॥ १ ॥ हे प्रभु बंदी तोर, ओर तकहु मम करि कृपा । तुहीं मोर भी तोर, ओर कराहिं से समर मन ॥ २ ॥ तव पद अम्बुज भेद, देह जन्म मरि मिटै है । तोहि समर चन गेह रहै यही मन भावना ॥ ३ ॥

अंत—गुरु संतन द्विज दवन सरना । कीरति श्री रघुपति की बरना । है पेक बार पेही तन मरना । प्रभुक गुनहि गाई भव टरना ॥ सहज उपाय भजन हरी करना । समर काल फाँसी नहि परना ॥ दोहा ॥ बाल चरित लीला कह्यौं रामकु बार बखानि । समर भ्रम रघुराइ की कह्यो सुजस सुख दानि ॥ ७८ ॥ सोरठा ॥ राम बिवाह उछाह जे गैहै चित प्रेम जुत । उनको मल मिटहि समर लहै आनंद घन ॥ ७९ ॥ चौपाई ॥ संवत् सहस बर्नीस बतीसा ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दिन ईसा ॥ पाँचै भवन बार रजनी चर । समर बाल कहि सरम चराचर ॥ ८० ॥ इति श्री सिद्धि सदन सकल अघ विघ्न नासक भक्ति सुख दायक समरदास कृत बाल काण्ड समाप्त शुभ मस्तु । श्री सम्वत् १९१४ श्रावण मासे कृष्ण पक्षे तिथी दसम्यां शनि वासरे । लिक्षतं शिव प्रसाद चौहान ठाकुर मौजे मौजे पानी पुर के ॥ सोरठा ॥ नभ मासे सनिवार तिथी दसम्यां अति सुभग । लिखिके माहि तयार कृस्न पक्ष में बाल यह ॥ राम राम राम सीता

संख्या ४१६ पी. भजनावली, रचयिता—समरदास, कागज—देशी पीला, पत्र—१८, आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रिका बक्स सिंह, ग्राम—रामीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भजनावली लिख्यते ॥ भजन ॥ सुमिरहु राम नाम मन भाई ॥ शिव सनकादि नारदो ब्रह्मादिक नारद सारद सेसहु गाई ॥ पुंडरीक पारासर व्यासहु बाल्मीक सुपरस सुहाई ॥ दुरबासा मरभंग कपिल मुनि कुंभज भरद्वाज चित लाई ॥ अत्रि बसिष्ट सुतीछन सुदामा गौतम सुत्तहु के मन भाई । बिस्वामित्र दधीच सुधन्वा भीष्म आदि पांडौ अधिकाई ॥ ध्रुव प्रहलाद जनक भागीरथ पवन तने शिवि मीरा बाई ॥ २ ॥ तुलसी गोबिंद भरत बिभीषन दक्ष मोरध्वज जमदग्नि सचाई ॥ काग भुसुंडि गरुड़ कपिराजा अंगदादि बिसेस बड़ाई । नाम देव पीपा नाभा जी माधव धना भक्ति सुधि बड़ाई । भक्ति गनिका रैदास सेवरी भक्ति निषाद सदा पाप नसाई ॥ ३ ॥

अंत—पीत हैं सखि नैन बड़ाके । भृग बिसाल रतनारे मनोहर सील समूह अमोल बड़ाके ॥ श्रुति कुंडल सोहत हैं सिर गुंज गड़ाके ॥ पीत चौतनी कटि पर बाँधे कटि म

जाय अंग झलाके ॥ मोर मुकुट सिर उर वैजती भक्तन जोग्य न एक पलाके ॥ भूषन व्रिज जुवतिन वस कीन्हों छैल सिरोमनि रूप छलाके ॥ ईश चराचर सव गुण आगर अनुकूले सव भाति भला के समर स्याम छवि अति गति जाकी अवतारे पोडशौ कलाते ॥ २ ॥

इती श्री समर दास कृत भजनावली समाप्त सुभ मस्तु श्री पौष मासे शुक्ल पछे तिथउ चतुदश्या वुध वासरे संवत १९४८ हस्ताक्षर चन्द्रिका खानीपुर के भटली के निकट पछुम ओर । लिपा सुपाठनार्थे ॥ सीता राम ॥ सीता राम ॥ सीता राम

विषय—भक्तों के भजन ।

संख्या ४१६ सी. किष्किंधा कांड रामायण, रचयिता—समरदास, कागज—साधारण, पत्र—४६, आकार—१३ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीरसिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब-वक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ किष्किंधा कांड समर दास कृत लिख्यते ॥ सोरठा ॥ वंदौ गणपति गौरि, रमा सारदा सुर सरी । नाय माथ शिव पौरि, करौं वंदना सुर सकल ॥ १ ॥ दोहा । महावीर को वंदना, सगरे सत महंत । समर तीर्थ वंदे सवै, जग जे जीव अनंत ॥ २ ॥ भरत शत्रुहन लषन तव विनै करौं कर जोरि । रामायण भाषत वनै सुनिये विनती मोरि ॥ ३ ॥ सिया राममे अर्ज मम, तव प्रभु सुजसु अपार । सव जगते लघु मोरि मति, राढर हाथ उवार ॥ ४ ॥ राम लषन दोऊ वीर शयाने । रीक मूक गिरि जाय नेराने ॥ वाल वंधु मंत्रिन जुत तहवां । शैल विलंद विकट वन तहवा ॥ तव शुग्रीव दीप दोउ भाई । भयो भीत मन अति दुचिताई ॥ ये कोई महावीर चलि आये । रूपवान सव भांति सोहाये ॥

अंत—राम प्रभाव अपार है को करि शकै वषानि । मैं कस भाषौं हीन मति हिये वड़ाई मान ॥ ४० ॥ रघुवर सुजसु वषानि हैं पढ़े शुनै जो कोइ । मन वाछा वर पाइहै गगा धरसों सोइ ॥ ४१ ॥ समर मूर्ष की वुद्धिसों जो कछु वनो न होइ । विनती वुध जन संतसों सोधो रह्यौ न गोइ ॥ ४२ ॥ सोरठा ॥ सवत सर ससि अंक, जानु दुतीया जुग्म लौ । पावस माहि निशक कृश्न पक्ष श्रावण रहै ॥ ४३ ॥ तिथि आठैं रविवार, है नक्षत्र ध्रुव जोग को । भयो कांड अव वार किस्किन्धा सुभ समर कृत ॥ ४४ ॥ इति श्री सिद्धि सदन सकल अघ विघ्न नाशक भक्ति सुप दायक प्रेम हिदे उपजायक सुप सुजसु वढायके किस्किन्वा कांड समर दास कृत समाप्तं संपूर्णम् अस्वनि मासे कृश्न पक्षे तिथौ एका दस्यां ॥ गुरु वासरे संवत् १९३३ ॥ लिपित शिव प्रसाद भौली मौंजे खानीपुर के ॥ सोरठा ॥ अस्वनि मास सो जानु कृश्न पक्ष एकादशी । गुरु वासर सुभ मान, पुस्तक भई तयार तव । दोहा ॥ सीताराम मनाइकै जे जगमें सुर व्यास । तिन्है सकल वंदन करौं, पोथी भई समाप्त॥ राम राम राम राम राम

विषय—किष्किन्धा कांड रामायण, तुलसी रामायण के आधार पर ।

संख्या ४१६ डी. किष्किंधा कांड रामायण, रचयिता—समरदास, कागज—आधुनिक, पत्र—३०, आकार—११×५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१९ = १८६२ ई०, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रिका बक्स सिंह जी जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

संख्या ४१६ ई० लंकाकांड रामायण, कागज—देशी, पत्र—११८, आकार—११×५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०८, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१९ = १८६२ ई०, लिपिकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रिका बक्स सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाये नमः ॥ सोरठा ॥ श्री गणपति पद ध्याय गज मुख पद सुख पद्म मुष वेदसु सुजाहि मनाय देहु विध्यन सुमातु सह ॥ १ ॥ अथ समर दास कृत लंका कांड लिष्यते ॥ दोहा ॥ पद बन्दौं गणनायके सकल गुणनके खानि। विघ्न हरन सुष कारन हैं सिधि सिधिके दानि ॥ २ ॥ सैल सुता श्री चंडिका जगत मातु मम ध्याउ। दूरि करहि बाधा सकल मम सौंकर पद पाउ ॥ ३ ॥ ब्रह्मादी सनकादि भजो महिमा अतुलित जाहि। जग माहि निर्मल सुजस बर्णत है कवि ताहि ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ सुर सरि सुजस अपार समर बंदना करत है। मातु कृपा करहु पार महा पतित मैं सरन हौं ॥ ४ ॥ दोहा ॥ कल्पवी कुमारिका बन्दौं बननी तोहि। समर कांड सिआहि करौं पद वा दीजै मोहि ॥ ५ ॥ सोरठा ॥

अंत—विहाग पद ॥ दीर्घ प्रबल रिपि दैत भवन को राम कृपाते सुभट हरे। महा अधम निशचर कठोर जड़ प्रभु सम्मुख करि सबै तरे ॥ कहि जै जै सुदुभी बजावै आनंदित सुर सुमन झरे। हनुमदादि कपि रिस हृत अति करि रघुबीर कृपा उबरे। सिंगासन बैठाय बिभीषण श्री जै कार मन्त्र उचरे ॥ कीन्ह बिद लछुमन धाय गहि कपि भालू मह सुधि बिसरे। विशनाथ सुग्रीव लंकापति प्रेमी सुप्पय उठि करे। सुप्पय रूपन बिभीषण सिय प्रभु चारि प्यवान आगे डगर ॥ हनुमान रघुनाथ पठाये समर सीय मग पदै करे ॥ १ ॥ छंद ॥ त्रिगुण हरि चरिते रमी। भूले समर जो सबै भ्रमी ॥ प्रिय लंक सुभग पराक्रमी। अघहर हरै सौ है सर्मी ॥ सोरठा ॥ अहिमि सिसि रविवार रिस रेवती योगसिव शुभ कांड औतार पौष मास सित समर कृत ॥ १०८ ॥ इति श्री सिधि सदन सकल विघ्न भय नाश भक्ति सुख दायक शुभ कांड संपूर्णम् ॥ सं० १९३४

विषय—समर दास कृत लंका कांड रामायण। निर्माण काल—त्रिग[1] अंक[2] सुभग पराक्रमी अघहर हरै सो है सर्मी।

संख्या ४१६ एफ. लंकाकांड रामायण, रचयिता—समरदास, कागज—साधारण, पत्र—१२०, आकार—११×५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४००, पूर्ण, रूप—साधारण पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

संख्या ४१६ जी. सुंदरकांड रामायण, रचयिता—समरदास, कागज—साधारण, पत्र—८२, आकार—१३ X ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२२=१८६५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह जी जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब वक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ सुन्दर कांड लिप्यते समर दास कृते ॥ दोहा ॥ गनपति हूं वन्दो शिवा सरस्वती दिन ईश ॥ गिरिजा पति अंजनि तनै देव कोटि तेतीस ॥ १ ॥ सकल तीर्थ को वदना साधुन रिषिन समेत। हैं नत्वा सब जगत के सुन्दर वनवे हेत ॥ २ ॥ सिया राम भ्राता सहित वन्दौं वारहु वार। गावहुं सुजसु अपार तव रघुवर लावहु पार ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ मंत्र रिक्ष पतिको मन भायो। काज समुझि मन हर्ष बढ़ायो ॥ मोरे हेत सिंधु तट मांही। वेलम्यो जब लगि आवौं नाही ॥ सियहि विलोके विन बड़ सोचू। सुधि पाये दुप मिटै सकोचू ॥ जल निधि तट यक शैल विशाला। सहज मवापर जे ततकाला ॥

अंत—दोहा ॥ पढ़हिं सुनहिं जे प्रभु चरित करिकै दृढ़ अनुराग। समर तरहि सोइ सत्य मत विना जोग जप जाग ॥ ८७ ॥ रामायन है कल्प तरु काम धेनु यह जान। शिव श्रुति सम्मत समर भल को करि सकै वपानि ॥ ८८ ॥ वालमीक व्यासादि कवि सेसादिक हनुमंत। रामायण तुलसी कहे प्रभु प्रभाव आनंत ॥ ८९ ॥ समर तुक्ष मति कवन गति कहिवे लायक नांहि। अविवेकी औगुन भरो रहत सदा मद मांहि ॥ ९० ॥ हरि दासन को दास है सकल जीव को दास। सुन्दर काण्ड समर कृत राम नाम की आस ॥ ९१ ॥ छंद सरसी ॥ दस नौ वाईसके सम्वत् यों फाल्गुण वदी द्वितीय। दिन गुरु सोभन जोग मघा यह सुंदर पूर्णौ कीय ॥ ९२ ॥ इति श्री सिद्धि सदन सकल अघ विघ्न नाशक भक्ति सुप दायक सुपार्णव सुन्दर कांड समर दास कृत सपूर्णं समाप्त शुभं भूयात् ॥ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे तिथौ सप्तम्या गुरु वासरे लिपतं शिव प्रसाद भौली मौजे पानीपुर के ॥

संख्या ४१६ एच. सुजस पताका, रचयिता—समरदास, कागज—देशी प्राचीन पीला, पत्र—१४, आकार—७ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९१, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२५=१८६८ ई०, लिपिकाल—सं० १९४८=१८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चन्द्रिका वक्स सिंह जमींदार (भवली), ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुजस पताका सातौं काँड का लिप्यते ॥ अथ वन्दना ॥ भजन ॥ गुरु गनपति वन्दौं गोरीसह ब्रह्मानी सुर सरि महरानी ॥ तीर्थ सकल रवि देव पवन सुत सुमिरौं सियाराम उर आनी ॥ वालमीकि व्यासादि सवै मुनि ध्यावौं सुरन कहि हित मानी ॥ ग्यानी सिद्धि सत जगजीवन विनवै समर जोरि जुग पानी ॥ १ ॥ इति ॥ अथ वालकांड भजन ॥ नगर अजोध्या भूप श्रवन मा दसरथ सुतमे राम। सब कहँ आनद देइगे मुनि सग जज्ञ रापि तारे मुनि वाम ॥ मज्जन कीन्ह दरस सुरसरि के

रिङ्क बनक पुरमा सुपधाम । मुप मद् गंजि भंजि सिव चाप दि करि विदद को पूरण काम ॥ भृगु पति गम निवारि सिया वरि आये अवध समर प्रभुराम ॥ १ ॥

अंत—राम राम कहु राम कहु राम राम कहु राम । समर सत्य मन कहत है और न पूछे काम ॥ ७ ॥ अवध पुरी प्राची दिसा सो अम मानु प्रमानु । दिसा प्रतीची कपण पुर कोस अठारह जानु ॥ ८ ॥ चन्द्र अंक श्री जुग्म सर समौ कृष्न मधु मास । सोम तुलिया सूक सौं समर राम की आस ॥ ९ ॥ समर लिप्या अन समर कृत हरि सुमिरन के हेतु । मजन भक्ति सी ग्यान जुत भव सागर को सेतु ॥ ७० ॥ इति श्री सिद्धि सदन सकल कथ विघ्न नासक भक्ति सुप दायक राम चरित्रे सुजस पताका मत्र मार्त्तो समरदास कृत संपूर्ण सुभ मस्तु ॥ पौष मासे कृष्ण पक्षे तिथऊ पैका इत्या मनि वासरे सम्वत १९४८ लिष्यते चन्द्रिका कामीपुर मधुली क निकट पठान को । लिषा सुपाठनार्थे ॥ दुर्गा शिव, कृष्ण ॥ सुजस पठम पताका पूर्ने मौ राम कृष्ण मों ताल जो कुछ देष्यो ग्रंथ में लिष्यो सही मिल कौन ॥ राम ॥ राम ॥

विषय—रामायण के सातों कांडों का सार ।

संख्या ४२० प्रेममंजरी, रचयिता—सामरथी द्विज, कागज—साधारण, पत्र—१६, आकार—१० × ६½ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८५ पृष्ठ, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रामानन्द, ग्राम—पिलखिला रंजीतपुर, डाकघर—मार्यागंज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥अथ प्रेम मंजरी प्रारंभः॥ सिद्धि सदन करिवर बदन मुद मंगल दातार । कमल चरन गज करन के, विनवों बारहि बार ॥ १ ॥ मैं मधु सूदन सुप सदन, मोहन मदन गोपाल । कृपा सिन्धु कोमल चरण, कृष्ण चन्द्र नँदलाल ॥ २ ॥ सवैया ॥ देव गजानन को पद कंज मनावत ही कर जोरि कै कोऊ । आकर नाम उदार महा मुख मूरख हू पढ़ि पंडित होऊ ॥ भाषी गुनो करि सिद्ध समाज आरम्भ में ध्यान धरै सब कोऊ मौंगल हैं वर सामरथी सो विघ्नपक ओर सहायक होऊ ॥ ३ ॥

अंत—दो०—शिव कहु सम्भू नाथ कहु संकर कहु सुरपाल । हर कहु भव भज पात कहु भोलानाथ दयाल ॥ १०४ ॥ श्रीरति कलित गोपाल की, निज मति के अनुसार । बरण्यो समरथ बाल कवि, सकल दया अपार ॥ १०५ ॥ इति श्री द्विज सामरथी कृत, प्रेम मंजरी श्री कृष्ण लीला समाप्तम् ॥ शुभ मस्तु ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—मंगलाचरण कृष्ण जन्म, बाल स्वरूप की शोभा, बाल क्रीडा गोपियों का प्रेम तथा मोह चीर हरण, दान लीला, (२) पृ० १६ से पृ० २५ तक—मुरलिका ध्वनि, बन श्री वर्णन, रासलीला, गोपियों का निज सौन्दर्य पर गर्व, कृष्ण द्वारा उनका मर्दन और सिक्षाप्रदान । पुनः रास ही में राधाकृष्ण का विवाह । उपालम्भ वर्णन । (३) पृष्ठ २६ से पृ० ३२ तक—माघ वर्णन, पुष्कर-हिंडोरा, फाग तथा मज महिमा और शिव शङ्कर की वन्दना ।

संख्या ४२१ प. वैताल पचीसी रचयिता—शंभूनाथ त्रिपाठी, कागज—देशी पीला, पत्र—११९, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०१९, रूप—

अति प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०९ = १७५२ ई०, लिपिकाल—सं० १८२६ = १७६९ ई०, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा काशी।

आदि—श्री गणेशायनम श्री गुरुभ्यो नम ॥ दोहा ॥ छवि कदंब लखि अवके उमहत मोद अखड। कलरव करि करि वर वदन फेरत शुण्डा दंड ॥ १ ॥ कवित्त ॥ एक समै गिरि राज की नदनी आइ अन्हाइ कछु सरसीते। भासुर भाल दिये दल तोल को आनन सो शशि की छवि जीते ॥ सोहठि लेवे को सूडि पसारी तहां गण नायक आइ अभीते। चाहिकै चोप सो दौरि मनो हरे लेत सुधा अहिराज ससीते ॥ २ ॥ अथराज वंश वर्णण ॥ हरि गीतिका छद ॥ धुव धरण खल दल मलन जिन आचरन कृत युग के किये। सनमान दान कृपान यंज्ञ विधान कै जग जस लिये ॥ द्विजराज कुलवन कुमुद कोमुद दानि पूरण इदु भो। निज वश वारिज को दिनेश तिलोकचंद नरिन्द भो ॥ ३ ॥ पुनि भयो आनंद कद पृथ्वीचद नृप ताके तनै। भुज जोर सो जुरि जंग में यमराज हूं नहि जो गनै ॥ पुनि भयो ताके अजवचद अरिन्द कुलदल जिन हने। जग मगत जाके जस अजो सुर असुर मुनिगन जन भने ॥ ४ ॥

अत—सेवक वचन मातु सुनि लीजे। अक्षय होइ तौन मोहि दीजे ॥ तव यह हुकुम चडिक करयो। तपत कराह तेल से भरयो ॥ तामे डारि पुत्रो सत दीन्हहु। हर वर कछु विलव जन कीन्हेहु ॥ ह्वे है हेम पुरुष ये दोऊ। यह प्रसग जानै भल कोऊ ॥ दुऔ आवने घर में धरयो। तिनको काटि परिचु नितु करयो ॥ लेहो काटि अंग तुम जौन। पूरण ह्वे अै हे नृप तौन ॥ कहि देवी ए वचन प्रयान। तुरत गई ह्वै अंतर ध्यान ॥ वचन प्रमान देवि के करे। दुवौ पुरुप नृप भीतर धरे ॥ आयो वहुरि मित्र के पास। कथा कही सव सहित हुलास ॥ ता दिन ते नृप औ वैताल। एकहि संग वितावत काल ॥ इति श्री श्री भद्राय रघुनाथ सिहाज्ञया त्रिपाठी सभूनाथ कृतो वेताल पंच विंशति कथा सुपच विंशति तमीप्यम् ॥

विषय—सस्कृत वैताल पचीसी का हिन्दी अनुवाद। ग्रंथ निर्माण का कारण और समय—सभामध्य वैठे हुते एक समय रघुनाथ। वीर धीर उद्भट सुभट सुजन वंधु जन साथ ॥ कहयो कृपाकरि शभु सों जी में मानि सनेहु। यह वैताल कथा हमें भाषा में करि देहु ॥ नंद व्योम धृति जानिकै सवत्सर कवि शभु। माव अंध्यारी द्वैज को कीन्हयों ग्रथारंभु ॥ रस युग वृति सवत् × × × ससि साक पौप कृष्ण सुभ कामतिथि वासरं अधिक × × ×

संख्या ४२१वी जातक चद्रिका, रचयिता—शभूनाथ, कागज—प्राचीन देशी, पत्र—१२८, आकार—११×५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वद्रीसिंह जमींदार, ग्राम – खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दुर्गारा कवित्त। मेप मिथुन कर्क सींह कन्या तुला वृश्चिक धन मकर कुम्भ मीन जानिये। क्रम ही ते जानिये चर स्थिरदि सुभाव येक है पुरुप येक नारी पहिचानिये। अरु लसित हरित पादल पिडौर स्यामल असितपि संग

सग अवसप उर आनिये। नछत्र वाम और मलीन राशि मेषादिक क्रमते विचार करि प्रकट बखानिये ॥ १ ॥ दोहा ॥ क्रूर मेक अक्रूर क्रम जानि बारहौं छेत्र विषम मेक सम मेक पुनि यहाँ रीति कहि देत ॥ २ ॥ अब राशि पति कुज भृगु बुध भृगु भूसुत गुरु मंद। मंद जीव मेषादि ईस कहत कवि वृंद ॥ ३ ॥ मंगल वृश्चिक मेष को वृषभ तुला का शुक्र है बुध कन्या मिथुन का। कर्क चंद्र अचूक ॥ ४ ॥

अंत—भोगी मानी धनी विनीत। आनन्द सहित अलापै गीत। पूजै नित्य विप्र गुरु देव। करै जनक जननी की सेवा। रूप वन्त अति परम उदार। रुचै सुगंध कुसुम को हार। अरु भय होय पांचएं वर्ष। सहाई वर्ष रहै उर हर्ष। वर्ष बाइसीमे दुख पावै। पुनि चौबीस वर्ष जब आवै ॥ पूरब दिसा गमन तब होई। मनि के कहत गनत सब कोइ कातिकी शुक्ल ईज गुरु बार। नपत कृतिका कहत उदार। सायं काल मरै नर सोय। जो वासि मीन रासिका होय। १२। इति श्री सम्भू नाथ कृते जातक चन्द्रिकायां मुक्तावलि प्रकाशस्समाप्ति प्रगीत ॥ सम्वत् १९२१ वैसाष मासे शुक्ल पक्षे तिथौ पटरपा १ भृगुवासरे समसि लिपा देवी पुस्तक ॥

विषय—ज्योतिष (जातक)।

संख्या ४२१ सी मुहूर्त चिंतामणि, रचयिता—शंभूनाथ त्रिपाठी, कागज—प्राचीन, पत्र—१३२, आकार—८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८०३ = १७४६ ई०, लिपिकाल—सं० १८७१ = १८१४ ई० प्राप्तिस्थान—महाराज। लाइब्रेरी प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मुहूर्त चिन्ता मणि लिष्यते ॥ सघन मगन के दरश को तुव समाज को होइ। हारत विनायक को हरै विघन विनायक सोइ ॥ १ ॥ छवि कदंब लपि अंब के उमड़त मोद अपंड। कलरव करि करि बर बदन फरत सुंडा दंड ॥ २ ॥ अति सुदेस सब आचरन दमन को निरदाउ। सब सुष करि बाग सार जहाँ वैस भूष को राउ ॥ ३ ॥ जमक चरित तेहि दस को ज्यों सुर मरि की सोतु। जहाँ परमु आचरन सुष दिन दिन दूनो होतु ॥ प्रगट भयो तेहि देस में जाको बेस प्रमाउ। करि कुल मरदन सुष सदन मरदन रैया राउ ॥ ५ ॥ तेहि मरदनि राय के प्रगट भये जबरेस। जाके गुन गन को कथा बरनि सकै नहिं सैस ॥ ६ ॥

अंत—सवक्रम ॥ घनाक्षरी ॥ सूरज नपत तें कलस सुष धीम्रे एक ताते मह अगिनि की ज्वाल सों जरतु हैं। चारि चारि नपत विचारि चहुँ दिसन में धीम्रे फलु ताको जीव दार न दरतु हैं। उद बस लाभ वृद्धि कलह बहुरि मध्य देस बेद में परी सी भगु आवनि हरतु हैं ॥ तीनि परे बेदी में अनेक धन पावै तीनि कंठ में परे तो गेह थिरता करतु है ॥ १४५ ॥ अथ गृह प्रवेश विधि ॥ घनाक्षरी ॥ तीनि २० वितान मुकुतानि सो समेत गुन मनोरम के काम न सुधामी पीजियतु है। बेद धुनि सुमत नगर २ सुर पूजि गुरु जन पर जन भी आसीम लीजियतु हैं। गन की चितेरे और कोग बा घरो जाहि तब पुरो

हिन दान दीजियतु हैं ॥ विहसत वदन सुमनतु रदन चढ़ि नूतन सदन को गमन कीजि अतु है ॥ १५ ॥ इति श्री मत महाराज कुमार अचल सिंहातया त्रिपाठी शंभू नाथ विरचितायां मुहुर्त मजर्य्यां गृह प्रवेश प्रकर्णं समाप्तमं, शुभ मस्तु ॥ श्री महादेव कवित सख्या ८९७ सवत १८७५ ॥ मार्गे मासे कृष्ण पक्षे सप्तम्या ७ भृगु वासरे लिखितं शिव प्रसादस्य वेहथर ग्राम वासिन समाप्तम शुभ मस्तु शुभ भुयात श्री राधा कृष्णाभ्या नम. ॥

विषय—संस्कृत मुहूर्त चिंतामणि का पद्यानुवाद ।

संख्या ४२१ डी. मुहूर्तचिंतामणि, रचयिता—शंभूनाथ त्रिपाठी, कागज—देशी, पत्र—१०६, आकार—११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—९५४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०३=१७४६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्रीसिंह जमींदार, ग्राम—चानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ४२१ ई०. मुहूर्त कल्पद्रुम, रचयिता—शंभूनाथ, कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०३ = १७४६ ई०, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री छामसिंह जमींदार ग्राम—संडीला, डाकघर—मछरहट्टा, जिला—सीतापुर (अवध) ।

४२१ सी से अभिन्न ।

संख्या ४२२. बारहमासा, रचयिता—शंकर कवि, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, स० १८२७ = १७७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विश्वनाथ जी, ग्राम—कैमहरा, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेसाय नम ॥ अथ बारह मासा लिष्यते ॥ राजुलि वचन ॥ चौ० ॥ बारह मास कस सहब दुहेली । मह्यद-क्रम करि रहब अकेली । आग असाढ़ मदन दल घेरी । विरह सूर सों मैं भट भेरी ॥ बरसै लाग गगन जल धारा । गात जवास भयो जरि छारा ॥ अब दहु काह करहि करतारा । ब्याकुल भइउं विरह की छारा ॥ जननी मोहि कहौं तुम जाना । निकसि प्राननतो करत पयाना ॥ निकस प्रान न तो जाइ है जो घर नाहीं पीउ । स्याम धूम दौरे जलद लपि घटा रही न जीउ ॥ चौ० ॥ सावन लाग घटा चहु फेरी विरह विपति मोहिं परी घनेरी । चात्रिक दादुर सुठि जिउ लेई । कोयल कुहुकि कुहुकि दुप देई ॥

अंत—चौ० ॥ चढ़ा जेठ अति तपै पहारा मोरे तनहि वन्हि कै ज्वाला । भयो जेठ सपि मो कह काला ॥ जर वर गया गात जस होरी । अजहुं न सुधि पिउ लीन्ही मोरी ॥ भले कंत न कीन्हा फेरा । धौं किहि देसहिं लीन्ह बसेरा ॥ को यह पवरि सुनावै मोरी । मैं पिय लागि भई ज्यो बौरी ॥ दो० ॥ बारह मासा भाषियों कविशंकर चित लाय । राजुल विरहे जरि गई पीउ न बहुरा आइ ॥ इति श्री बारहमासा समाप्त कुवार वदी अष्टमी बुधवार सवत १८२७ शुभ मस्तु ॥

विषय—विरहिणी का बारहमासा।

संख्या ६२३ काव्यार्णव (काव्यार्नी, काव्यार्णौ), रचयिता—संग्राम सिंह, कागज—देशी, पत्र—६९, आकार—९३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२९ परिमाण (अनुष्टुप्)—२२५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६६ = १८०९ ई० प्राप्तिस्थान—श्री महावीर प्रसाद पाँडे, ग्राम—संग्रामपुर, डाकघर—मार्याबंज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ कवित ॥ मदन कदन सुत बुद्धि के सदन जो हैं करुना उदधि वर बारन बदन हैं। निज निज कारज अरंभ करैं ध्याइ ध्याइ ब्रह्मा विष्णु ईश जैसे विघन हरन है ॥ निगमा गमादिक के आदि ही लिपे ते नाम सिद्धि कौं कहत नृप मंगल करन हैं। तीनों काल कर्म करतानि को कलप तरु कामद असेष श्री गणाधिप चरन हैं ॥ १ ॥ ॥ छपै ॥ भाल बिसाल मसाल भूरि वंदन तें मंडित। उदित प्रात के भानु मनो ससि बिम्ब अखंडित ॥ सुंडा दंड प्रचंड अंग का मद नग ना है। विलसित फल फल देत मना मधु मुष मोहे ॥ वर गंड दाम मंडित मधुप एक दंत सुषमा सदन। नृप ध्याइ मदा वरदानि जै जयति जयति बारन बदन ॥ २ ॥

अंत—रत्नार्णौ ते है बड़ो काव्यार्नौ सविवेक। यामें रस चतुर्दसै यामें रत्न अनेक ॥ श्री मणि रंभा वारुणी अमी शंख गजराजि ॥ कल्पद्रुम ससि धेनु धनु धन्वंतरि विष वाजि ॥ औरस नव नारी त्रिगुन भावादिक मो जानि। छन्द नायका आदि बहु यंत रहै मानि ॥ भक्ति मुक्ति कामीरमाहरी वर्नन उरधारि। काव्यार्नौ में देखिये कवि रस विचारि ॥ ॥ श्लोक ॥ भूयांसः संति भू र्मा निजपरमधिपाधात्रिका श्रास गुंफे मंत्रया वतस्तथापि प्रचुरपरगुर्मस्तोयवतो मर्वति ॥ पद्मापीयूप्रमाधुरतरजनककवमृत मंप्राप्तोर्य सार रत्नाकरोपि प्रकृतिहि नितरांकिन्न बुध्धि सरस्वान् ॥ २६ ॥ ६१ ॥ ६१ ॥

इति श्री मन्महाराज श्री शिरमौर वंसावतंस श्री मन्नृपति संग्राम सिंह विरचिते—काव्यार्णवे चित्र काव्यादिवर्णनंनाम पंच दशमस्तरंगः ॥ श्री कृष्णायनमः ॥

विषय—(१) पृष्ठ १ से पृ० १६ तक—मंगला चरण ग्रंथ निर्माण काल :—संवत् रस[६] रस[६] वसु[८] ससी[१] अंक रीति लघु वार। कातिक सित दसमी गुरु, भयौ ग्रंथ अवतार ॥ (२) पृ० ७ से पृ० ११ तक द्वितीय तरंग—पिंगल हेतु, गुरु, लघु, विचार, गुरु को लघु, लघु नाम, गुरु नाम, द्विकल नाम, आदिलघु त्रिकल नाम, आदि गुरु त्रिकल नाम चतुष्कल नाम, अंत गुरु चतुष्कल नाम, मध्य गुरु चतुष्कल नाम आदि गुरु चतुष्कल नाम, चारों लघु चतुष्कल नाम पंचकल नाम पंचकल के क्रम से नाम, वर्णगण, द्विगण, त्रिचार, गण मित्र शत्रु दग्धाक्षर विचार, अक्षर फलाफल अशुभ वर्ण फल शुभ वर्ण फल, पृ० ११ से १५ पृ० तक—मात्रा प्रस्तारादि मात्रा प्रस्तार, पूछ तुलस अंक नष्ट प्रश्न, उद्दिष्ट मात्रा मेद मेरु चक्र, मात्रा पताका, पताका अनुक्रमणी पताका सतक्रम पताका प्रस्तार विधि, मास क्रम से है गुण तुल्य पताका, तुल्य पताका प्रस्तार, मर्कटी लक्षण, मात्रा क्रमा मर्कटी, सूची लक्षण वर्ण प्रस्तार हतु पंच वर्ण प्रस्तार पंच वर्ण संख्या, वर्ण नष्ट

लक्षण, वर्ण उदिष्ट लक्षण, मेरु चक्र, वर्ण पताका लक्षण, पंच वर्ण पताका चक्र, पंढ मेरु, पताका प्रस्तार, पंचवर्ण पताका, प्रस्तार द्वै गुरु जुक्त, वर्ण मर्कटी लक्षण, वर्णमर्कटीचक्र, वर्णसूची पचवर्ण सूची, मात्रावृत्ति छद, श्रीछंद लक्षण, मधु छद, अन्यछंद, मही, सारु, क्रमला, चारमात्रिक, काम । रमनी, नरिंद, मदारि हरि । पंच मात्रिक—ससि, प्रिया, तरनिजा, पचाल, वरि, बुद्धि, निशि, जमक । (२) पृ० १६ से पृ० २६ तक—कवित्त सामिग्री, कवित्त भेद, जीव सरस व्यग, मध्यम काव्य लक्षण, शक चित्र, अर्थ चित्र, शब्दार्थ निर्णय, शब्द अर्थ भेद वाचक, लक्षक, रूढ़ि । प्रयोजन लक्षण, प्रयोजनवती लक्षण, लक्षित लक्षण, गौणी सरोपा, गौणी सरोपा साध्य वसाना, शुद्धा सागेपा, व्यजन लक्षण, व्यजन के दो भेद, अगूढ़, गूढ़, लक्षण मूल गूढ़ । लक्षण मूल अगूढ़ । अभिधा मूल व्यजक, अनेक भाति अभिधा और व्यग्य, सयोग, वियोग, सग-विरोध, अर्थ प्रसंग, और संग यथा चिन्ह कर, समय कर, देश करि । अर्थ के तीन प्रकार, वाच्य व्यजकता, लक्षक व्यंजकता, व्यंग्य व्यजक, केवल अर्थ व्यंजक, वक्रोक्ति प्रभाव से, वरण विशिष्ट, काकु से, वाक्य विशिष्ट, वाच्य विशिष्ट, प्रस्ताव विशेष, और के ढिग, देश से समय से, ध्वनि भेद, अविविक्षित वाच्य ध्वनि लक्षण, अर्थान्तर अत्यत तिरस्कृत ध्वनि । (३) पृ० २६ से पृ० ३३ तक—रसको स्वरूप निरूपण, क्रमही से विभावादि, विभाव के दो भेद, अनुभाव, सात्विक भाव, संचारी भाव, नवरस स्थाई, शृंगार रस द्विधा, करुणारस, हास्यरस, रौद्र शान्त रस । (४) पृ० ३४ से पृ० ३६ तक—धारी छद लक्षण, सारंगी छद लक्षण, कुंडलिया, अमार, भुजग, मुक्तहरा, लक्षीधर छंद, दुमिला, किरीट, मदिरा, मनहरन, तोटक, सजुता, मोदक, विनय । (५) पृ० ३६ से पृ० ५२ तक—मन हरण, मत्तगयद, मदिरा, चकोर मनहरण-दडक । अशोक पुष्पमंजरी, मालती, अनुष्टुप, सोरठा, दोहा, दोहा का नाम, दोहा के नाम क्रम से, दोहा दोप, दोहा का उदाहरण, दोही दोहरा, गुण निरूपण, गुण लक्षण, माधुर्य, ओज, प्रसाद, नायका भेद जाति वर्णनम्, स्त्रीयादि लक्षण, दिग्पाल, स्वीया, परकीया, सामान्या, अज्ञात मुग्धा, वसत तिलक, ज्ञात मुग्धा, नवोढ़ा, विश्रब्ध नवोढ़ा, मध्या, प्रौढ़ा, धीरादि, अधीरा, धीरा धीरा, जेष्ठा कनिष्ठा, परकीया भेद, गुप्तादि, क्रिया विदग्धा, भ्रमर विलासिता, वचन विदग्धा, माली छंद, लक्षिता पथाहीरक छद, कुलटा यथा चंचला छद, मुदिता जथा, प्रथम अनुशया, कंद छंद, द्वितीय अनुशयना, वधु छंद, तीसरी अनुसयना, मोतिपदाभ, अन्य सभोग दु खिता, किरीट छद, प्रेम गर्विता, रूप गर्विता, लक्षीधर छद, स्वाधीन-पतिका, गीता छद, प्रोषित पतिका, मत्तगयंद, मात्रा सवैया, स्वकीया-वसती छंद, परकीया प्रोषित पतिका, गणिका प्रोषित पतिका, प्रवस्य पतिका, वासकसज्जा, उत्कठिता, विप्रलब्धा, कलहंतरिता,, पढिता आगत पतिका, अभिसारिका, शुक्लाभिसारिका, भ्रमरावली, कृष्णाभि-सारिका, सुंदरी छद, पति अनुरागिनी, समानिका छद, नायक लक्षण, मान लक्षण, लघुमान, प्रमाणिका, मध्यम मान, भुजग प्रयात छद, गुरु मान, छप धनाक्षरी छंद, दीप्ति वर्णन' [illegible]च छद, फुल्लदाम, मानिनी, क्रीड़ा वर्णन, कुसुमस्तवक दंडक, प्रचित दंडक, अनंग अनग शेखर दडक, हिंडोला वर्णन, हाव लक्षण, लीला, विलास, विक्षित, विभ्रम, किल-किंचित, मोट्टाइत, कुट्टमित, विब्बोक, ललित हाव, विहित हाव । (६) पृ० ५२ से पृ०

६२ तक—कवित दोष, काव्य दूषण शब्द दोष, अर्थ दोष, रस दोष, श्रुति कटु लक्षण, संस्कार रहित लक्षण, अप्रयुक्त लक्षण, असमर्थ लक्षण निहितार्थ लक्षण अनुचितार्थ निरर्थक, अश्लील लक्षण, लज्जा, अमंगल अश्लील व्यनिअश्लील। अप्रतीत लक्षण, अवाचक लक्षण, संदिग्ध लक्षण, नेयार्थ लक्षण, सन्धि कवित जथा क्लिष्टलक्षण ग्राम्य लक्षण, अविमृष्ट विधेयांश लक्षण, विरुद्ध मति काव्य दोष। (७) पृ० ६३ से पृ० ७१ तक - न्यूनपद लक्षण, वृत्त दोष लक्षण, मात्रा विरुद्ध, रस विरुद्ध वृत्त, कथित पद लक्षण, प्रति कूल वर्णन, पतत्प्रकर्ष लक्षण, समाप्तपुनरात्त अमत्त परार्थ लक्षण, समास पुनरुक्ति लक्षण अस्थानस्थपद लक्षण, अर्थ दोष लक्षण। अपुष्टार्थ, व्याहत पुनरुक्ति, दुष्क्रम, ग्राम्य निर्हेतु, संदिग्ध, पद युक्ति प्रसिद्धि विद्याविरुद्ध अनवीकृत, साकांक्ष, काव्यक्रिया-उत्तम मध्यम अधम। मुक्तक छंद लक्षण, वर्ण मुक्तक दंडक त्रिभंगी लक्षण, मत्त मातंग लीला कर दंडक, श्री मूल दंडक, भुजंगी छंद, रूप घनाक्षरी छंद, मन हरण दंडक, रति लेखा, माया, अप्सरा सुधा, मालिनी, चाप्रितमया, चंचरी, मालिनी रूप चौपाई, दोधक, तरंगिनी पद्धटिका, रूपक, तामरस उपमा, कमला, हरि लीला कल हंस काम दंडक, नागस्वरूपी। (८) पृ० ७१ से ७८ तक—विराट वर्णन, भद्रिस्या छंद, विराटोत्पत्ति पद्यभेद प्रमाण, प्रमाण श्री भागवत। नीर दंडक, विराट सूक्ष्मरूप वर्णन ५६ छंद। (९) पृ० ७८ से पृ० ८९ तक—चंद्र वर्तमा छंद दीपक छन्द चंद्रकला छंद, तोमर छंद, मालव छंद, कवित्त छंद, सखा छंद, मनहरण पद्यप्रमाण, श्री भागवत प्रमाण, मनहरण दंडक, मत्त गयंद कुंडलिया, मार्कंड प्रमाण, पुराणेयथा तामसी सृष्टि स्वरूप वर्णन नागस्वरूपिणी छंद, रति पद छंद, चित्र पद छंद, भुजंग प्रयात, नागस्वरूपणी, तोमर, कलमा, सुवर्णा भुजंग भुजंगी, पद्य प्रमाण श्री भागवत। (१०) पृ० ८९ से पृ० ९१ तक—रम्य नाम, महेसावास, चित्रंबरा छंद दीपकी छंद, चंचरी छंद, श्लोक भागवते रूपघनाक्षरी, दंडकमनहरण हरिनी, दोहा कासी पुराणोयथा कवित्त यथान्तरे। (११) पृ० ९९ से पृ० १०९ तक—भूगोल वर्णन। (१२) पृ० १०९ से पृ० १११ तक—जम्बुद्वीप नाम, भागवते यथा, सेतुमिता, तत्र दीपाधिपति, इंद्र चापहरति (१३) पृ० १११ से पृ० १२६ तक—चित्रालंकार, निरोष्ठ, मात्रा रहित, बहिर लापिका, अन्तर लापिका गुप्तोत्तर लक्षण, एकार्थ गतागत, भिन्नार्थ गतागत मतागत यथोत्तरे गामूत्रिका यथा, अश्वगति चक्र, मंत्र गति कपाट बंध सर्वतोमुख, कर्णगुप्त कर्णक्रिया गुप्त, पद्मबंध दोष, कमल बंध ईश्वरदीप, द्वितीय कमल बंध वर अनुप्रास, छेकानुप्रास, लाटानुप्रास, यमकानुप्रास, उपनागरिका, परुषा, कोमला वृत्ति लक्षण। स्तुति—भुवन-लक्षण विष्णुपद, श्री नारायण पद, गुरु ध्यान।

संख्या ४२८ ए. दस औतार माला, रचयिता—शंकराचार्य कागज—देशी पत्र—१७, आकार—८ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०४ = १७४७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री अमरनाथ ग्राम—हरनापुर डाकघर—मिसिरिख जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दस औतार माला लिख्यते ॥ दै छंद मनी के लिये महा श्री ईश कर्मलग ऊपर अमलान को गये थे तहाँ मस पुरी मथा पुर दानव उत्पत्त भए।

ताते ब्रह्माजी शिव पुरी तज स्वर्ग लोक को गये विनती करी तब स्वामी बोली कहो ब्रह्मा जी तुम कौन कारज शिव पुरी तज स्वर्ग लोक को आये। तब ब्रह्मा जी बोले ॥ हे शम्भू जी हम तो जोगी नगन भूपे भिपारी भिप्या मांग पाये वेद शास्त्र की जुगत न जानें ताते ब्रह्मा जी अरु सिव पुरी तज स्वर्गलोक को आये असतुति करी तुमारी हर्ता तुमही कर्त्ता तुमही वेद तुमही जानो वेद शास्त्र का भेद ॥ चौबीस मत्र चार वेद पट शास्त्र अठारा पुराण सतवार सताइ नक्षत्र पद्रा तिथि बारामासे गगाजी गीताजी गायत्री सावित्री सरस्वती अकरी। जकरी पट कर्मता शिव ली बोले सुनु ब्रह्मा जी हित चित लाई बचे धर्म पाप छै जाई। जुग जुग नारायण जी होई उतरे प्रथम नारायण जी मच्छ रूप हुइ उतरे मछ की माता सत्यावती पिता अमर तेज गुरु मान धाता क्षेत्र द्वारापुर पटने दलंत सपासुर दानव लियो उदरंत ॥ १ ॥

अत—ॐ नौव में नारायण जी बौध रूप हुइ उतरे बौध की माता कृर्मावती पिता जमदग्नि ऋषि गुरु अगस्त्य मुनि क्षेत्र द्वारापुर पटणे दलत जगनाथ पुरी मद्दि लियो उदरंत ॥ ९ ॥ ॐ दशमं नारायण जी निष्कलंक रूप हुइ उतरे माव मासे शुक्ल पक्षे एकादशी सोमवारे सूर्य उत्तरायणे सवत १९५७ राजा विक्रमाजीत विष्णुदास ब्राह्मण के घर स्वेत घोड़ा स्वेत पलान मुप दिली पूंछ पुरामान पजी हाथ मरद अठारा हाथ पग नव हाथ अंवर द्वाराछूरा उस समै मोह वरतेगा अजू समान गऊ होवेगी पांच वरश की स्त्री प्रसूत होवेगी निह कलंक की माता महतागी पितापन रिषि गुरु सहजानद क्षेत्र सवलपूर पठणे दलत किंकर दानव लियो उधरत। दश औतार शंकराचार्य उचरंते धर्म दान बधे गुरु चरणारविदवो नमोनम. राजा राज करे प्रजा सुप करे जैसे दस औतार पढ़े का धर्म अरु जैसे करोड गऊ दान का एक धर्म जैसे करोड गंगाजी के अस्नान की एकाधर्म तैसे दस औतार सुने का धर्म ऐसे दस औतार सदे लेकर घरे अरु पढ़े एकोत्तर सौपितर स्वर्ग लोक को चढ़े धर्म नाल सुनते पढ़ते मोक्ष मुक्ति लभते इति श्री दश औतार सपूर्णम् शुभम् ॥ लिपत काशीराम सारस्वत ब्राह्मण कशमीरी संवत १८०४ वि० चैत्र सुक्ल नौमीयाम् ॥

विषय — दश अवतारों की कथा।

संख्या ४२४ वी दश औतार भाषा, रचयिता—शंकराचार्य, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नीलाल गगापुत्र, ग्राम—मिश्रिख, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि ४२४ ए के समान।

पुष्पिका में किसी का नाम या तिथि नहीं है।

संख्या ४२४ सी. नारायणस्तोत्र, रचयिता—शकराचार्य, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—५ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९७ = १८४० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामदयाल, ग्राम—पिहानी, डाकघर—थानगाँव, जिला—सीतापुर, (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नारायण स्तोत्र प्रारंभ । नारायण नारायण जय माधव हरे । नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥ करुणा पारावारा वरुणालय गंभीरा नारायण नारायण जय गोविंद हरे ॥ १ ॥ घन नीरद संकाशा कृतकलि कल्मषनाशा नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥२॥ पीतांबर परिधाना सुर कल्याण निधाना । नारायण नारायण जय गोविंद हरे ॥ ३ ॥ यमुना तीर विहारा धृत कौस्तुभ मणि हारा । नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥ ४ ॥

अंत—संभ्रम सीता हारा साकेत पुर विहारा । नारायण नारायण जय गोविंद हरे ॥ २७ ॥ अचलोद्धृति चंचत्कर भक्तानुग्रह तत्पर ॥ नारायण नारायण जय गोविंद हरे ॥ २८ ॥ नैगम गान विनोदा रक्ष सुत प्रह्लादा ॥ नारायण नारायण जय गोविंद हरे ॥ २९ ॥ भारति रति वर शंकर नामामृत अभिलाषर ॥ नारायण नारायण जय गोविंद हरी नारायण नारायण जय गोपाल हरे । इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितायां नारायण स्तोत्र संपूर्ण ॥

विषय—नारायण स्तोत्र ।

संख्या ४२५. भूगोल, रचयिता—शंकरदत्त (चित्तौड़ नीराकग्राम), कागज—देशी, पत्र—२२१, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९२९ = १८७२ ई०, लिपिकाल—सं० १९२९ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय, प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—अथ भूगोल वर्णन लिख्यते । श्री युत सब पंडित विद्वज्जन श्री भागवत पुराण आदि के मत से कहत हैं कि व्यास ने लिखा है कि पृथ्वी अचल और शेस कच्छ आदि के आधार से स्थित है और इसीका प्रमाण करके पृथ्वी को अचल औ आधार निश्चय करते हैं औ ज्योतिष सूर्य्य सिद्धान्त औ सिद्धांत शिरोमणि आदि ग्रंथों मे लिखा है कि पृथ्वी चल औ निराधार आकाश में परमेश्वर राखा है और ज्योतिष किसी तरे असत्य नहीं हो सकता क्योंकि सकल विचार लग्न मुहूर्त ग्रहण धाया प्रश्न आदिका प्रमाण औ तिथि पत्र गणित करके बनता है सब लोग ज्योतिस को सत्य मान के निश्चय करते हैं इसमें ज्योतिष किसी तरे असत्य नहीं है ॥

अंत—सब पीठ से जा जा भलाई की है साथ में उनको साथ इज्जत के सरकार इलाका और गाँव दिया और गैर माही का मेड मतीआ दिया इसलवे का हाल संक्षेप से पंडित शंकर दत्त चतुर्थ अध्यापक मदर्सा सरकारी प्रतापगढ़ का ऊपर से लिखा है भूगोल में इंग्लंड नहीं था ॥ इति ॥ संवत १८२९ बैसाख कृष्ण ११ दिन शुक्र इसई सन १८७१ इसवी शुभ यह भूगोल वृत्तान्त श्री युत सकल गुणगणालंकृत सत्यवादी बुद्धि सागर श्रीयुत् अजीत सिंह बहादुर की आज्ञानुसार पण्डित शंकर दत्त ने लिखा मुकाम मदर्सा सरकारी जिले प्रतापगढ़ दादा—उत्तम पुरी से दुर्ग दिशि बीस कोस मम धाम राज चित्तौड़ में बसूं विराज नाम है ग्राम भाव कृ० ११ सं० १९२९

विषय—विषय साहेब के भूगोल के आधार पर लिखा हुआ भूगोल जिसके अंत में भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास भी है ।

संख्या ४२६. माधुरी विलास, रचयिता—शंकर दीक्षित (लखना), कागज—उत्तम, पत्र—५२, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्) –७१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, लिपिकाल—सं० १९४४ = १८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवनरेश सिंह, ग्राम—रामनगर, डाकघर—मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ श्री गुरु चरण सरोज रज शंकर कवि धर सीस। रचहि पद्य अनुभव सनै भक्ति देहु बख्सीस। परम हंस सत गुरु मिले पूर्व पुन्य से आय। भेद भर्म दुविधा हटी दीना अलख जगाय॥ सर्व विस्व ज्ञानीन को ब्रह्म रूप दरसात। रहत ब्रह्म मय विस्व मय अचरज कहो न जात॥ जे कर्ता करता सोई मैं न करु वस्तु काज। जो है सो है मोहि क्या रखिहै अपनी लाज॥ श्री स्वामी महराज को रहत ध्यान दिन रैन। घरी पलक विसरै नहीं जहा रहूं तहं चैन॥ शंकर नाम सुदेह का लखना मध्य निवास। दीक्षित हैं अटेर का गुरु स्वामी का दास॥ अथ कवित्त प्रथम तरंग॥ बूड़त बचाया भव सागर से बांह थाम अक में उठाय भेद भरम नसाया है॥ शब्द सुनाया हर घट में लखाया विपि द्विविधा मिटाय स्वाद अमृत चषाया है॥ लाया परतीति विसराया है मनुष्य भाव पाया है अमोल धन दारिद गंवाया है। झूठी जग माया मन मेरे ना रचत अब प्यारा गुरु स्वामी जो हमारे मन भाया है॥

अंत—दो० ॥ कृष्ण रूप सतगुरु मिले भेद भर्म गयो छूट। साचे को जग साच है झूठे को है झूठ॥ सोरठा॥ श्री स्वामी उमराव पुरी गोसाई सत्य गुरु। परमहस का भाव शीतल शुद्धि हृदय सदा। दोहा॥ सत गुरु का आधार लहि वरनो आतम ज्ञान। भूल चूक जो होइ तौ छमियों सत सुजान॥ दो०॥ श्री दीक्षित अटेर के प्रगट भये हरवस। तिनके बाबू राय जी मंशाराम अवतंस। दो सुत बाबू राय के रसिक लाल मतिधीर। कुटुम लाल छोटे सुवन पढित गुण गभीर॥ रसिक लाल के पुत्र जुग प्रथम कालका जान दूजे शंकर कवि करै नित सतगुर का ध्यान॥ जेष्ट भ्रात जे मम रहे कीन्ह स्वर्ग को वास॥ मैं सत गुर के प्रेम से ईश्वर का हूं दास॥ सतिदयाल शंभू वटुक बाला प्राग प्रवीन। बधु चचेरे पाच में विद्यमान हैं तीन॥ शंभू बालादत्त औ प्रागदत्त बुधिवान। भयो डाक्टर विदित है कृपा करत भगवान॥ मैंने नहिं रचना करी रचनहार कोई और। मेरे सिर ऊपर धरी जस कीरति को मौर॥ इति श्री माधुरी विलास श्री दीक्षित रसिकलालात्मज कवि शंकर दीक्षित चैतन्य कृत्ति सपूर्णम् शुभं॥ लिपतं चच्चू राम सवत् १९४४ मिती चैत्र शुक्ल सन् १८८७ ई० ॥

विषय—आत्मज्ञान।

संख्या ४२७ ए. काव्य विलास, रचयिता—सतदास (उरेरमऊ, सुलतानपुर), कागज—बादामी, पत्र—१५, आकार—८½×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९६६ = १९०९ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत चंद्रभूषण दास, ग्राम—उमनपुर, जिला—बाराबंकी।

आदि—दो० जब शरीर महि प्रगट भा, कहाँ रह्यो तब स्वाँस। तन छूटे फिरि जात कहँ, गुरु कृपा करहु प्रकास ॥ जब शरीर यह नहि रहा, स्वाँसा सुन्य निवास। तन छूटे फिरि सुन्य में, रहत स्वाँस को बास ॥ यह स्वाँसा केहि विधि भयो, तब मैं आय प्रवेस। सो सत गुरु करुना भवन, कहिए वर उपदेस ॥ स्वाँस सक्ति करि मार बाँसि मिश्रित रज सो आय। बीर्य संगही स्वाँस फिरि, तामें आनि समाय ॥

अंत—ब्रह्म चिदानंद घन सत्यको समूह मन। तेहते प्रगट गनि इच्छा सुनि लीजिए। तेह ते पुरुष कहि प्रकृति सुताते कहि महातत्व तेज रूपहि अहंकार कीजिए ॥ ताते भए तीनि गुन, रज, तम, सत गुन, सत ते चतुर्दस देवता सुनीजिए। तामसे पंच मूल पंच तन मात्र कहि राज सते इन्द्री दस पंच प्रान हीजिये ॥ इत्यलम्

विषय—शरीर रचना, प्राण अपान आदि वायु तथा इन्द्रि यादि का वर्णन।

संख्या ४२७ वी. स्वास विलास, रचयिता—संतदास (डेरापुर सुल्तानपुर), कागज—सफेद मोटा, पत्र—८९, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७७६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९८२ = १९११ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवनप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे पराग पाँडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि—दो० नमो नमो श्री राम गुरु, संत दया के खानि। हे दयाल उर आय मम, बसहु दास निज जानि ॥ कवित्त-नमो २ राम गुरु संतन सुखद उर माया के निवास पुर सतगुण खानिए ॥ विघन हरन मुद मंगल करन, जन तारन तरन असरन सरन निज, विधिहु महेस सेष सारद नारद गनेस बंदत सुरेस श्री मुनेस बखानिए ॥ विनवत संत दास जानि हिय लीजे दास, कीजे पर कास मम हाम निज जान जू ॥ दो० ॥ भाषों स्वास विलास यह, ग्रंथ सकल सिरमौर। सुनि विचार करिहैं सुजन, बोध करन सब ठौर ॥

अंत—सूक्ष्मा-असत सत जो स्वात आदि की सत्यता। प्रगट प्रत्यक्ष यह वायु स्वाँसं। जानि सोभा सकल मानिके अनुभवक सक्ति धारंत यह स्वाँस भासं ॥ इन्द्रि अंतःकरन सकल की निस्तर सब को अ भरन सम्प्रकासं ॥ अकल आनीह अद्वैत अनुभी अगम एक है वायु गत सर्व पासं ॥ यह भुन निजा सन्द चिद्रूप अज व्याप व्यापक यथा पुष्प वासं। सदा निर्विकार निर्वाण नवान सत्त। नित्य निर्बोध निष्कल्मषासं ॥ सर्व करता करत पुनः अभु ना करत रहित सब सहित सब जो विकासं। स्वास सबम सत पथ कथि पथ कथि तत्र गत यही निष्पात मत संतदासं ॥ दो० कवि को विद बुध संत जन सब सों विनय हमारि। कहौं बाल बुधि जो कछू। तुम सब लेव सँभारि ॥ इति ॥

विषय—शरीर के अन्तर्गत पट चक्रों और कंक नाल आदिका वर्णन ॥

संख्या ४२८ ए. बारहखड़ी रचयिता—संतदास, कागज—साधारण, पत्र—६, आकार—९ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—महंत मोहनदास (ग्रंथ पीतांबर दास के पास है), ग्राम—गौनामऊ डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गोविंदायनमः ॥ अथ बाराखड़ी लिष्यते ॥ कका ॥ कमल नैन जबते गये, तब ते चित नहिं चैन । व्याकुल जल बिन मीन ज्यो, पल नहिं लागत नैन ॥ १ ॥ पपा ॥ पबरि न पाई स्याम की, रहे मधुपुरी छाइ । प्रीतम बिछुरे हैं सपी, कीजे कौन उपाइ ॥ २ ॥

अंत—भभा ॥ भनक परी मेरे कान में, का न कही कछु जात । लगी चटपटी चित्त में, सुनी अटपटी बात ॥ २४ ॥ ममा ॥ मन मोहन मन में बसे, मगल मूरति आय । मगन भई छवि निरषि कै, हमें न आन सुहाय ॥ २५ ॥

× × × ×

गगा ॥ ग्यान घ्यान करि कृष्ण के, बाल रही धरि मौन । संतस ऊधौं सहित हरि, कियो द्वारिका गौन ॥ ३४ ॥ इति श्री गोपी कृष्ण सनेह चौंतीसी सपूरण ॥ लिषतं परधान राजाराम ॥

विषय—कृष्ण के वियोग में व्रज वनिताओं का प्रेमाकुल होकर मिलने की उत्कंठा तथा उपालम्भादि वर्णन ।

संख्या ४२८ बी. (गोपी कृष्ण की) बारहखड़ी, रचयिता—संतदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामस्वरूप शुक्ल, ग्राम—सुभानपुर (वर्तमान निवास सरैया), डाकघर—बिसवां, जिला—सीतापुर ।

आदि—४२८ ए के समान ।

अंत—रा रोकत टोकत राह में मागत हम पर दान लो माग्यो जो सब दियो कियो न कछू गुमान ।। लला लोचन लोने लाल के ललिता के सुप देन । अनियारे प्यारे परे मनो सांवरे सैन ।। बवा बनि लीला अद्भुत करी सेस न पावत पार विपन वाटिका वाग में कुंजनि किये विहार । ससा सरद रैनि कृ सुदरी लीनी सबै बुलाय नैन सैन दे सांवरे बसी मधुर बजाय ।। षषा ष्याल लाल के भले राति रची षट मास बसीवट जमुना निकट कीने रास विलास शशा स्नान को जमुना गई अवर धरि के तीर नंद नदन तरु पै चढ़े चोरि हमारे चीर हहा हाहा पाए ठोऊ कर विनती करि हे वीर । न्यारी कीनी नीर ते तब हंसि दीनो चीर । क्षक्षा छाय रहे अब मधुपुरी छिन छिन प्रीति बढ़ाय ।। ऊधौ मोहन की कथा कहा लगि कहि हो गाय ।। त्रत्रा त्रभुवन की सोभा सबै रही स्याम पर छाइ । अैसो को जननी जन्यो जो न देषि ललचाय । ज्ञज्ञा ज्ञान ध्यान करि कृष्ण को वाल रही धरि मौन संत दास ऊधौ गये करि प्रनाम निज भौन ।। दोहा ।। जो गावै सीपै सुनै गोपी कृष्ण सनेह प्रीति परस्पर अति वढै उपजै हरि पद नेह । इति श्री गोपी कृष्ण की वारह षढी सपूरणम् लिषतं व्रज लाल ब्राह्मण संवत १८७३ ।।

संख्या ४२८ सी विपर्यय को अंग, रचयिता—संतदास (उरेरमऊ, सुलतानपुर), कागज—सफेद, आकार—७$\frac{1}{2}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं०

१९८२ = १९२६ ई० प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे पराग पांडे, डाकघर—तिलोई जिला—रायबरेली।

आदि—प्रथमहु दक्षि सुमें पुनि गैनहु किन्हों सुपें मासिका बोधी। गुरुज्ञान इन्द्री जब पीधि, जिनही हाय सुमेरहि सोकै ॥ (सुन्दरदास कृत) कबे पांच सूत्र भीचे को विचरत तीनहूं लोक में डोडे। सुन्दरदास कहै सुम संतो, सही भांति यदि अर्थ बोर्ड ॥ कवित्त—श्रवण स्वरूप जानि नैन नाम पहिचानि नाम सुनि रसन स्वरूप रहि आयो है ॥ टीका ॥ जीम हू जिकि रिकहि सूँघत सरस लहि। नासिका बिसक रहि बोध सत गायो है ॥ गुदा ज्ञान, ताव ध्यान इन्द्री अतिचार मान। जब प्रेम पीवत बहुत सुख पायो है। मन है सुमेद तोस निर्विर बस्त जानि मनि कहत हजारी कर्म पुसही सुहायो है, ऊँच नाम थेह को सुभास पांच कहियत सूत्र अभिमान मध्यीचे कही त्याग है तीन लोक काया तामे विचरै निसंक सदा असत अर्बुद वाके कहीं नहीं लाग है ऊँच पद पावै जब त्यागि अभिमान तब आतमा विचार महँ रहै चित लग है ॥ कहत हजारी दास वाक्य को बिलास सत, आर्विहि विचार मात जाके ज्ञान जाग है ॥ इत्यादि—

× × × ×

अंत—मूढ़-चाकर बेद पुराण पढ़ै किन, भी व्याकरण पढ़ै जो कोय। संध्या गहै करै पट कर्महि, गुन अरु काल विचारै सोय ॥ तासिकमत सबही बनि आवै, सब तजि मन में राखै होय। सुन्दर दास कहै सुमु पंडित, राम नाम बिन मुक्ति न होय ॥ साख पट बेद चारि पढ़ै मन लागि २ पढ़िके पुरान अष्ट दस विधि कोई है। टीका—अब व्याकरण पढ़ै संध्या तीनि भांति करै गहि पट कर्म धर्म नीकी विधि मोई है ॥ तीन गुन तीन काल जानत विचार हाल। तामि पट[१३] सूत्र वाद सबी विधि मोई है ॥ और विद्या दस[१४] चारि पढ़िकै सुधारि कारि, बिन राम नाम गति मुक्ति नहि होई है ॥

विषय—सुन्दर दास जी कृत विपर्जय का अंग नाम पुस्तक का टीका।

संख्या ४ ई प. अयोध्याकांड की टीका, रचयिता—संतसिंह, कागज—देशी, पत्र—१०९, आकार—१२ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) —३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००८०, पूर्ण रूप—अपूर्ण स्वच्छ गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५२ वि० प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रतापसिंह जी महापुर जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः बालकांड मों मंगले उपर चारों संवादों के हेतु समास भाष करत ह्योपर श्री चंद्रादि को के प्रगट रस के कारण पुनः अवतार धारणा दुष्टों को मारना धनुष भगकर परशुरामादि को को जागर बनि बारणा सीता सहित परम मंगल मय कोशलपुरी मों मग धारमादिक प्रसंग कहा अब अयोध्या कांड की निर्विघ्न समाप्ति अरु प्रर्वे गमन हेतु शंकर जी का स्व विषयक आशीर्वादात्मक मंगल करते हैं ॥ वाम के चहमि सो भगवान शंकर सबदा मैरी रक्षा करो जिन वामांक विषे गिरजा विराजै है चकारमस्य अरु विभाति पद के सर्वत्र अनुकर्ष निमित्त है किंवा चकार पुनः अर्थ औ जिसके वाम अग म विद्युम माहे सो पीय कहि जाते हैं पुनः अद्रि सुतामी मोमती है पार्वती को

वाम ओर धारण को भाव यह जो मर्याद मों तत्पर है किंवा वैदक मों हृदावाम ओर ही कहा है ताते उमा को प्रेम सो हृदय मो लगाए रापते हैं अरु भूधर सुता नाम को कथन का भाव यह शिव जी गिरीस है अपने दास की सुता जानकर कृपा करते हैं किंवा गिरों को प्रति उपकारी जानकर गिरिजा मो भी सनेह करते है देव नदी श्री गंगा जिसके मस्तक कहाँ सिर विषे विराज है। प्रामाण अमरे उत्तमान सिर शीर्ष मूर्द्धाना मस्तको स्त्रियां भाल विषे जाके वाल चंद्रमा विराजे है।

अंत—छंद। सिय राम पियूष पूरण होत जनमन भरत को। मुनि मन अगम यमनेम समदम विषम व्रत आचरत को। दुख दाह दारिद दंभ दूषण सुजस मिस अपिहरत को। कलिकाल तुलसी से सठन हठ राम सनमुष करत को भरत चरित करि नेम तुलसी जो सादर सुनहि समि राम पद प्रेम अवस होइ भव रस विरत॥ टीका॥ सियेति प्रेम रुपी अमृत कर पूरण जो भरत का तनु रुपी पात्र है जो यह न उपजता तो मुनीश्वरों के मन में भी आवने जो कठिन व्रत नैमादिक हैं तिससो किसने प्रवर्तनाथा। दुखेति दुषहु कर जो हर्दे को दाह है अर दरिद्र दंभादिक जो दोष है जिनको जस के मिस किसने हरना था तत्व यह और नृपों के यश कथन का लोगोंको मिथ्या वादादिक दोषहु को दोष उपजने है और भगवत की भक्ति मिश्रित जो भरत की महिमा कहेंगे तिनके दोष सब नाश होवेंगे जाते संतों का प्रभाव प्रभो सम विषत है यह प्रभू पर उपकार हुआ अब अपने ऊपर उपकार कहिते है कल इति। इस घोर समयमें मुझसे मूढ़हु का श्री रामचन्द्र के सम्मुष किसने करना था तत्व यह भारत के वचनहुं मो सर्व पातकियों का उद्धार प्रभो की शरण कर कहा है तिस भरोसे कर मैं भी शरण आया हौं॥ अब अयोध्या कांड की समाप्ति करते हुए इसका फल कहिते हैं भरतेति यहि भरत चरित्रों का मिश्रित जो अयोध्या काड है इसको जो नियम कर पढ़ैगे तिनकी सीता श्री रामचंद्र चरणारविंदों का प्रेम अवश्य होयगा अर विषय रस में वैराग्य भी अवश्य होगा इसका भाव यह भरत के वचनहुं को सुनकर तौ प्रेम उपजैगा अर राजादि को सुषों से भरत की उपरतता सुनकर वैराग्य होइवेगा॥ इति श्री रामायण अयोध्याकांडे टीका सतसिंह वृत समासो संवत १९५२ वि०।

विषय—तुलसीदास जी कृत अयोध्या काण्ड रामायण का तिलक।

संख्या ४२६ वी. रामायण बाल कांड की टीका, रचयिता—संतसिंह, कागज—देशी, पत्र—४३०, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७६०, पूर्ण, रूप—नितांत स्वच्छ, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९५१, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर।

आदि—अथ श्री बाल कांड सटीक लिष्यते॥ प्रथम विनायक विघ्न हर वर दायक पद वंद। पुनि शुभ दानि सरस्वती प्रणवो आनद कंद॥ १॥ श्री गुरु नानक नमों नित नारायण वपु जान। दसों रूप दस दिसामय दीपति दीजे दान॥ २॥ गौरी शंकर ज्ञान घन वदौं सात सरूप। आदि कविह जिन राम जस बरन्यो जाहि अनूप॥ ३॥ महावीर मतिधीर मम मम को कोटो पीर। नम तुहि तनय समीर मुहि दरसावो रघुवीर॥ सीता सीतल रूप प्रभु राम वल्लभा जान। वदौं मो पर कृपा कर वरनौ भाव महान॥ रमत

राम सुधधाम मम कुमति हाम को काट। राम चरित रस प्रगट कर कह्यो दिखायो बाट ॥ गुणनिधाम तुलसी नगम रामहिं प्रिय गंभीर। तिहि जव हुलसी दीन तब मो मन धोयी धीर ॥ वार्तिक ॥ वार्तिक श्री राम चरित मानस को श्री शंकर जी ने परम पवित्र जान कर जीवों के कल्याण निमित्त प्रथम तिसको गिरिजा को अस्नान कराया है ॥ अरु सोइ चरित्र सागों के मघो से हार मिलसने हेतु अति विचित्र रीति सों ब्रह्मा जी ने सत कोट वर्णन अरु बारं बार मनन करके अपनी बुद्धि अरु बानी क सफल करिबे हेतु प्रभू के भरोसे पर इसको पूजा मो प्रवर्तने की कृष्ण करी सो श्री राम चंद्र स्वामी संत सिंह को अपना दासानुदास जान कै इस ग्रंथ की निर्विघ्न समाप्ती अरु प्रचपगमनादि करावेंगे ॥

अंत—मूल। बहुर लोग रजायसु भयऊ। सुतन समेत नृपति गृह गयऊ। जहं तहं राम ब्याह सब गावा। सुजस पुनीत लोक तहं छापा ॥ आये व्याहि राम घर जबते। बसी अनंद अवध सब तबते। प्रभु विवाह जस भयो उछाहू सकै न बरनि गिरा अहि नाहू। कवि कुल जीवन पावन जानी। राम सिया जस मंगल खानी। तेहि ते मैं कुछ कहा बखानी। करन पुनीत हेतु निज बानी (बहु रत्ति) बहुरे कहे फिरे। घर आने की लोगों को राजा आज्ञा भई। तब सभी लोग अपने घर में प्राप्त भये। और राजा भी अपने मंदिरों मैं पुत्रों समेत विश्राम करते भये (जह इति स्पष्ट) जो कोइ कहै औरो ग्रंथों से तुमने विवाह का उत्सव बड़ा कहा है तिस पर कहित हैं (प्रभु इति स्पष्ट) श्री कोऊ की शेष नाग अरु सरस्वती नहीं कहि सकति तौ तुमने किस भांति वर्णन किया तिस पर कहिते हैं (कवि इति) कवीश्वरों क जा कुछ है सो भी श्री राम चन्द्र सुजस कर ही पवित्र हात हैं अरु मेरी जिव्हा के ऊपर भी सरस्वती है तिस कर से मेरे से रहा नहीं गया अथवा कविशिरोमणि अपने समग्रजगा अपने कुल परंपरा को जीवन अरु पुनीत करने द्वारा श्री रामचंद्र का ही जस है ॥ सो अपना कुल से शरीर का कुल अथवा गुरों का संप्रदाय, श्री श्री रघुनाथ जी का ही उपास कथा सो विचार कर अपनी वाणी पवित्र करने निमित्त श्री राम चंद्र चरित्र सुयश मैंने भी बरणन किया है अरु अब इस कांड को समाप्त करते हुए अपनी मति का पवित्रता कथन पूर्वक प्रभी के बस का महातम दैक छंद अरु पैक दोहे में कहिते हैं। निज गिरा पावन करन कारन राम जस तुलसी कह्यो। रघुबीर चरित अपार बारिध पार कवि कौने लह्यो। उपबीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं। बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं। सोरठा। श्री रघुबीर विवाह जे सप्रेम गावहिं सुनहिं। तिन कह सदा उछाह मंगलायतन रामजस ॥ टीका ॥ अपनी बानी पवित्र करन निमित्त रचक मात्र रघुनाथ जी का जस मैं कहा है अरु रामचन्द्र के चरित्र रूपी समुद्र पार तौ बाल्मीकादि का भी नहीं होया। उपबीत कह्यो जनोपवीतादिक जा प्रसंगो क मंगल हैं तिनको जा सादर से सुनगे गावैंगे तिनका सदा मंगल होवैगा प्रयाजन यह। श्री रामचन्द्र के जन्म से विवाह आदिक जा उत्साह है जा हृदय के स्नेह पूर्वक इनमे गावैं सुना तिनमें सदा मंगल हावैगी प्रयाजन यह व्यवहार परमार्थ का अविनाशी आनंद हावेगा जान रामचंद्र का जस सिंधु। इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने अविरल भक्ति

सपादने प्रथम सोपान सपूर्ण ॥ श्री सवत १९५२ लिपि रामदीन मिश्र पठनार्थ श्री महा राजा धिराज राजा मुनीश्वर वक्स सिंह जू के ॥ श्री राम श्री राम ॥

विपय—श्री गोसाईं तुलसीदास कृत वालकाण्ड का टीका।

संख्या ४३०. कवितावली, सरजूदास, कागज—वादामी, पत्र—३०, आकार—८½ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६५, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५० = १७९३ ई०, लिपिकाल—स० १९८० = १९२३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जानकी सिंह, ग्राम—उमरवाला, जिला—सुलतानपुर।

आदि—कवित्त-अतुलित वल गेह स्वर्न शैल के समान देह दानव कुलई धन को वन्हि ज्ञान धाम भो। वाँदर अधीश यक शीश महावीर धीश दास पीर हारी वुद्धि निद्धि निह काम भो॥ वालक ब्रह्मचारी खास दास है खरारी जू को। लखन भरतरिनि मानौ दूजे राम भो। मारुत सुवन यश जाहिर भुवन विपे लिखे जो कुअक माल मेटे गुन ग्राम भो॥ सवैया-हनुमान महावल पिग चख्यो दशक धर गर्व विनाशन हौ। अंजनि पुत्र समीर तनै रामिष्ट भिया दुख नाशन हौ॥ लक्ष्मण प्राण को दान दिहौ अमफाल्गुन मित्र प्रकाशन हौ। अति विस्तृत सिधु को पार गयो, हनुमान महा सुख वासन हौ॥

अत—कवित्त-सुरन सतावैं विष्णु भक्तन को दु:खदेयं शिव ध्यान्य लेय पियैं सुरा भूमि सुरजो। चोर का वसावै अस्ति वैल का कुचावैं, और केर पाप गावैं आगिलावैं विप्र पुरजो॥ गर्भ गिरावे उपकारी का नशावै। कुँआताल को पुरावैं नही वोलैं न्याय फुर जो। केतिक हजार पाप वेदन वखान कियो, इनकी समान सव और पाप धुर जो॥

विपय—धर्म नीति और कुकर्मो से वचने का उपदेश।

संख्या ४३१. जैमुनि पुरान (जैमिनि पुराण महाभारत), रचयिता—सरयू राम पडित, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—४८, आकार—१६ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३४१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०५ = १७४८ ई०, लिपिकाल—स० १९१५ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रिका वक्स सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालावक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाया नमः॥ अथ जैमुनि पुरान लिख्यते। सोरठा॥ सुन गुन ग्यान निधान। मंगल मय सुपमा सदन॥ कलि विप तूल क्रसान। एक रदन करि वर वदन॥ जाहि अमगल मूल। सुमिरति गनपति गौरि सुत॥ जरहि व्याल जिमि तूल। विघन व्याधि सकट सकल॥ छद॥ १॥ नमो गौरिजं ग्यान रूपं गनेशं। नमो मोहमग्यान नाशं दिनेश॥ नमो धूम्रकेते गनेसैक दत। नमो विघन छेद धर परसु हस्तं॥ नमो वुद्धि कांत नमो गोरि पुत्र। नमो निर्विकार नमो चारु वक्र॥ नमो वुधि वोधा नमो शत रूपं। नमो ग्यान गोपार सिधि सरुप॥ भजेह गनेस गुनं ग्यान गेहं। नवीनार्क वारं नमो सुभ्र देह। करि द्रान नासोभिन इन्दु भालं। चतुर वाहु कठं चलं चारु मालं॥ वरं कक्र पर फंल अंवोज नेत्रं। दधतं महा दिव्यावस्त्र विचित्र॥ सिर सुदर चदनं कुंकु मांग। डरोदेर

सोमादय पुर्ण्य मुरंगे ॥ प्रसन्ना में संग संताप नासं । सुमं सर्व कर्म सम्पान प्रकासं । विघ्नं दायक शोक पूक प्रहारी । भद्रं सर्व छिप्पार्थ फल पावकारी ॥

अंत—(चौ०) ॥ भाषा भनित कूर कवि जोई । आदर—जोग—तदपि नहिं सोई ॥ करत विचारन कछु कविताई । हरि जस जानि सुनिय मन लाई ॥ परम हंस सुचि साधु सुजानी । गुन ग्राहक जग विदित पय पानी ॥ गहि गुन कर औगुनहिं दुरै है । कहत सुनत सादर सुख पैहै ॥ छंद ॥ सुख पाइहै सुनि सुजन श्रोता विमहि प्रिय हरि जस महा । पर सिव जैमुनि की कथा अति कूर कविता को कही ॥ कछ बुधि विद्या हीन इतिमति कथ अवगुन मय महा । श्री गुरु कृपा यह चरित कछु निर्मित सो निज मति करि कहा ॥ दोहा ॥ विसिख व्योम वसु कुम्भ वर सुकुल अष्टमी फाग । पूरण मैं श्री गुरु कृपा कथा युधिष्ठिर राज ॥ ६११ ॥ इति श्री महा भारते पुराणे अश्वमेध मधि पर्वे सूत सौनिक संवाद जैमुनि पुराणे जज कृतो राजा युधिष्ठिर समाप्त पट त्रिंसमोऽध्याय ॥ समाप्तं शुभ मस्तु । कासीपुर एक ग्राम रूचि धर्म राजकी राज । राजत तँह संपति सहित बख्तावर महाराज ॥ ता नृपके रसवन्त गुण तासु तनय वल धाम । नृप सुख सब संपते तेहि मग प्रविसित अंग ॥ मासोत्तमे मासे आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तिथी प्रति पदायां रवि वासरे लिखं पुस्तकं लिप्यते दुर्गा मिसिर श्री महाराज धर्मावतार धर्म मूरति चौहान बंस ठाकुर देवी सिंह तस्य पठनार्थ श्री राम श्री संवत् १९१२ कृष्णाय वासु देव ‥

विषय—इस पुस्तक में ३६ अध्याय हैं:—प्रथम ४ अध्यायों में यज्ञ की तैयारी घोड़ा लाया जाना और सेना एकत्रित होना कहे गये हैं, पंचम अध्याय में घोड़ा छूटना और उसकी रक्षा में युद्ध वर्णित है। इसमें क्रमसे अनुसाल्व नील रत्न हंसध्वज की पुत्र सुवेग राक्षस (कालासुर) बभ्रुवाहन अर्जुन युद्ध (संक्षिप्त रामायण) सीता त्याग लवकुश जन्म रामाश्वमेधमें लवकुशका राम आदि से युद्ध तथा राम के मोहित होने पर वाल्मीकि द्वारा दल सैन्य चैतन्य और सीता राम मिलाप कहा गया है। मयूर ध्वज परि धर्मो चन्द्र हास और सत्यव्रत मुनि की कथायें अच्छी रीति से वर्णित हैं। अंतिम अध्याय को छोड़कर सबमें घोर दुर्धर युद्ध कहे गये हैं। अंत में युद्धों का संक्षिप्त इतिहास कह कर कवि ने अर्जुन की स्वपुर यात्रा का वर्णन किया है। अंत के (३६ वें) अध्याय में ब्राह्मणों का झगड़ा कृष्ण द्वारिका गमन सब राजाओं का अपने अपने घर जाना और कथा महात्म्य वर्णित है।

निर्माण काल:—विसिख[५] व्योम[०] वसु[८] कुम्भवर[१] सुकुल अष्टमी फाग पूरण मैं श्री गुरु कृपा कथा युधिष्ठिर राज ॥ फागुन सुदी ८ संवत् १८०५।

संख्या ४९२. कृष्ण विलास, रचयिता—प्रतिपालय (सांडी, हरदोई), कागज—देशी, पत्र—४७, आकार—१० × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११८०, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२५ = १८६८ ई० प्राप्तिस्थान—कमला रामदयाल ग्राम—नदपुरवा, डाकघर—मेरी, जिला—सीतापुर।

आदि—सिद्धि श्री गणेशाय नमः ॥ श्री मंगल मूर्तिर्जयति ॥ शिव सरण सदा ॥ श्री गुरु वै नमः ॥ अथ कृष्ण विलास लिप्यते ॥ चहत बदन पर भारती बहत भारती जासु।

८०

दिन प्रति चरण गणेश के वंदनीय मन आनु ॥ सरन लहत जित सांकरे झारखड के भूप। वसत मही मंडल तिलकु चादा नगर अनूप ॥ सदा रहत है दाहिनी भैरो गणन समेत। प्रगट महा काली जहा समर सिद्धि को देत ॥ भए भूमि पति उग्र अति जहां एक ते एक। सुमति सुमील भुवनपती दाता सूर अनेक ॥ सदा सुखी जाकी रही मही भुजा की छाह। देव अंस तिहि वंस में आक साहि नर नाह ॥ छद मन हरन कवित्त ॥ एक रस कीन्हो पतिव्रत सो सो निवाहि परि वासु करि सविता फतूह वाके पाट में। पृथु की सी कीरति प्रयति भूम लोक जाकी देवन के ओक महा नागन के ठाउ में। लोह वाको नट धरनी तल को चट आजु जाहिर जहान करामात जाके नाट में। मेदनी मरद मद गलित गयंदन को अंकुस सों आक वानी रंद जू नगाद ने ॥ द्वै कुमार सुकुमार अति हरपि दिये विधि ताहि। विदित नाम इक वाव जी अनुल केशवा साहि ॥ कवित्त ॥ गिरद ने वाही गोंटवानो गोलकुंडा दावि वीजापुर पूरि रह्यो पूरन प्रभाव जी। मद के गयंदन सो पकिन पुहुमि रही सकित्त निजाम माहि जाके तेग तावीजी ॥ सेयर करे सविता को उन्नत सेनी की ओर मंडतु आनी को अब नीको आफ ताव जी। धरि वहै भारु मसनद पर आंक वाकी वढयो वाहु वली वरिवंड वीर वीर वाव जी ॥

अंत—अथ कवि नगर वर्णन ॥ जप तप पूरन वसत जामें विप्र जे द्वै शासन लहत नाहीं कोन अवनीश ते ॥ वेद के निधान औ पढ़त व्याकरन ऐसो जैसो नर लोक माह प्रगट्यो फनीस ते ॥ चारि कोस दक्षिन वहत जामें वेई जल तपु कै भगीरथ जे काढ़े शिव सीस ते ॥ माडी नाम नगरी शिपा कनौज मंडन की सविता रहतु तामें सापि दस वीस ते ॥ अथ कवि गोत्र वर्णन ॥ छंद छप्पै ॥ चतुर्वेद कुल को तिलकु गोत्र गौतम मुनि जाको ॥ विश्वनाथ वर विप्र पुत्र के सव पुनि ताको तासु पुत्र समरथ नाम गोवर्धन गायो ॥ जाको सुत कवि मंजु भक्त रवि को जो कहायो ॥ ताके सुत सवितादत्त कवि कृष्ण साहि जस कर रहे। पूरन प्रवंध सरवरु कियउ विशद उक्ति अमृत वरषि ॥ अथ आशीर्वाद ॥ गंगा में जव लगि रहै सकल पाय हर पाधु सुप समेत तव लग जियो कृष्ण साहि नर नाथ ॥ कृष्ण साहि आयसु भयो आदिहि कारन जासु। नाउ धरयो या ग्रथ को याते कृष्ण विलास ॥ संवत ॥ जादिन वैस कुमार की भई वरप वाईस। साके विक्रम भूप के संत्रह सै पैंचीस ॥ भादौं मास पुनीत अति जाते हरपति लोगु कृष्ण जन्म तिथि अष्टमी सोमवार सिद्धि जोगु। कृष्णदेव जगदीस की कृपा साहि की होइ। सविता कृष्ण विलास की भई जन्म तिथि सोइ ॥ कियो सुदिन आरंभ तिहि श्रुति मुख छद वनाइ सविता सविता देव के चरण सरोज मनाइ ॥ छंद छप्पै ॥ वलि जव लगि पाताल इंद्र जव लगि इंद्रासन। नभ जव लगि सविता मयक सव विश्व प्रकाशन ॥ जव लगि कृष्ण विलास लोगु महि मडल भाषै। कमठ सेस वाराह भूमि जव लगि सिर राषै। वह्मा साहि नंदन नवल जग ऊपर जस जिन लियउ। संतति संपति सव सुप सहित कृष्ण साहि तव लगि जियउ ॥ दो० ॥ गगा में जव लगु रहै सकल पाप हर पाधु सुप समेत तव लग जियो कृष्ण साहि नर नाथ ॥ अथ ग्रंथ समाप्त गणेश सूर्य को कविच ॥ देव की दार कर गगन के गंगा जल जाको पद पंकज जुगुल सेयत है ॥ सविता प्रमाण सर्मै सुप प्रगटनि सुर तरु कुसुम पराग दरसतु है ॥

नाम के प्रभाव मंद मति मुद्र भाव महा कविताई सिंधु मैं विसंक पैठ्यतु है। भरि परे भव तम विघन विनाशन को देवगनपति मिन पति सैह्यतु है ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री कृष्ण साहि कारिते श्री सवितादत्त कृते कृष्ण विलासे सांगो पांग सब रस निर्णयो चतुर्थ ॥ समाप्तो प० कृष्ण विलासः कवित्त संख्या १६६। दोहा संख्या २१९। शुभ भूयात् संपूर्ण शुभ मस्तु ॥

विषय—नायक नायिका भेद, नवरस आदि।

संख्या ४२३ ए. कवित्त रत्नाकर, रचयिता—सेनापति, कागज—देसी, पत्र—१६, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रामदुलारे मिश्र, ग्राम—रतनपुर, डाकघर—मझीगंज, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ छप्पै ॥ कवित्त रत्नाकर लिष्यते। परमजोति जाकी अनंत रमि रही निरंतर। आदि अंत अरु मध्य गगन दस दिसि बहि इतर ॥ गुन पुरान इतिहास वेद बंदी जन गावत। धरत ध्यान अनवरत पार ब्रह्मादि न पावत ॥ सेनापति आनंद घन रिधि सिधि मंगल करन। नायक अनेक ब्रह्मांड के एक राम सेवत सरन ॥ कवित्त ॥ पाई जो कविन कल चल तप जन कार विद्या उर धरि धरि हरि रस रो सो है ॥ ताही कविताई को सुगसु जसु चाहत है सेनापति आनत न अवर को भोसो है ॥ पाई के परस जाको सिकाल सचेत भइ पायो बोध सार सरदाल को भरोसो है ॥ और भ्व भरोसो जिन परत करोसो ताहि राम पद पंकज को पूरण भरोसो है ॥ मूप समा मूषन छिपाये पर दूषन को बोल एकहुं पन कहे न बेद पाइ के ॥ राज महाजान पूरे सकल कलानि सेनापति गुनपाल और हू को गुनराई के ॥ तुमही बताई कछू कीनी कविताई तामे होइ कोमलाई सुघराई कै सुभाई के ॥ बुधि के निवाह कै गुसाई कवि नाइ के सुखीजिये बनाइ कै दीक्षित परसुराम वाही है विदित नाम जिन कीन्हें जग्य जाकी जग मैं बड़ाई है ॥ गंगाधर पिता गंगाधर की समान जाकी गंगातीर बसति अनूप जिन पाइ है ॥ महाजानि मनि विद्या दानहि के चिंता मनि हीरामन दीक्षित ते पाई पंडिताई है ॥ सेना पति सोई सिता पति के प्रसाद जाकी सब कवि कान दै सुनत कविताई है ॥

अंतः—अथ रामायन वर्नन। सुर तरु सार की समारी है विरंचि पचि कंचन सुप चिंतामनि के जराय की। रानी कमला की पिय आगम कहत हार सुर तरु देवी सुप देवी प्रभु नाइ की ॥ वेद में बखानी तीनों लोकन में ठकुरानी ॥ सब जग जानी सेनापति के सहाय की देव सुप मंडन भरत सिर मंडन मैंडी अब पंकज पराक रघुराई की ॥ १ ॥ कंज के समान सिधि मानस मधुप निधि परमनिधान सुरसरि मकरंद के सब सुप साज सुर राजन को सिरताज भाजन है मंगल मुकुन्दिरूप कंद के ॥ सरजू बिहारी रिपि नारी साप हारी शाम दाता हित कारी सेनापति मति मंद के ॥ विस्व के भरन समकादिक के सरन प्रौढ राजत चरन महाराजा रामचन्द्र के ॥ २ ॥ छप्पै ॥ भूषित रघुवर बंस भक्त वत्सल भव भंजन मुनि जन मानस हंस विदित सीता सुप मंजन ॥ त्रिभुवन पालन धीर वीर रावन मद गंजन ॥ उदित विभीषण नाम थेप निज परिजन रंजन ॥ सुरपति नरपति भुजगपति सेनापति

बंदत चरण ॥ राजाधिराज जय जय सदा राम विस्व मंगल करन ॥ ३ ॥ मद मुसकानि कोटि चंद ते अनंद राज दीपति दिनेस कोटिहू ते अधिकानिये। कोटि पवन मानहू ते महा-बल वान कोटि काम धेनु हूते अति दानि जग जानिये ॥ और ठौर मूढो वखत अैसो सेना-पति सीतापति याहू ते अधिक गुन पानिये, अैसी अति उकति जुगति सो वतायो तासो राजाराम तीनि लोक नायक वपानिये ॥ (अपूर्ण)

विषय—शृंगार के कवित्त ।

संख्या ४३३ बी. कवित्त रत्नाकर, रचयिता—सेनापति, कागज—देशी, पत्र—८२, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३८४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४१=१८८४ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री कृष्णविहारी मिश्र, माडेल हाउस, जिला—लखनऊ ।

आदि—४३३ ए के समान ।

अंत—सेनापति वरन्यौ तुरग उर गदम के पाइ। तीनि पाइ की भाति ज्यौं चलत चारिह पाइ ॥ ७९ ॥ पाइ एक सौ साठि है तिन एरु चले न। ताके सम वाजी चलै सेना पति हारै न ॥ ८० ॥ आदि अत जाके हैं आदि। अंत न जाके सो चौ वादि ॥ ८१ ॥ देह विनाहीं हू तरु जात निसि दिन सोचि कहौ सो वात ॥ ८२ ॥ जित पाठी सिर वो रहै कीनी परी अनूप। सेनापति वारह परी तिय पलका सम रूप ॥ ८३ ॥ सम्वत् सत्रह सै छर्मे सेइ सियापति पाइ ॥ सेनापति कविता सजी सज्जन सजौं सहाइ। ८४। इति श्री कवि रत्नाकरे चित्रकाव्य वर्णन नाम पच मस्त रंग ॥ ५ ॥ श्री सम्वत् १९४१ अस्विन मासे शुक्र पक्षे तिथौ द्वितीया या लिखित मिदं पुस्तकं वलदेव मिश्रेण मिश्र जुगुल किशोरस्य पाठार्थं श्री शुभ स्थान गंधौली ग्राम स्थल वरदार श्री जानकी वल्लभोजयति—श्री कृष्नाय नमो नम. ।

संख्या ४३४ सृष्टि पुराण, रचयिता—सेवादास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७७२ = १७१५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रायलाल, ग्राम—रमुआपुर, डाकघर—धौरहर, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ सृष्टि पुराण सेवा दास कृत लिष्यते ॥ ॐ एक उपराति लेषा नाहीं। दोय पाये सृष्टि नाहीं। गुरु पाये ज्ञान नाहीं। सिद्धि उपराति ब्रह्म नाहीं। आपा पाये परचा नाहीं। काया उपराति क्षेत्र नाहीं। आत्मा उपरांति देवता नाहीं। शील उपरांति मत नाहीं ॥ चक्षु उपराति दृष्टि नाहीं ॥ निर्भय उपराति अभय नाहीं ॥ संजम उपराति सुचि नाहीं। सतोष उपराति सुष नाहीं ॥ अमर उपराति सिद्धि नाहीं ॥ अभय उपरांति करामात नाहीं ॥ माता उपरात जन्म नाहीं ॥ गर्भ उपराति नरक नाहीं ॥ पन्थ उपरांति हानि नाहीं। चित चचल उपराति रोग नाहीं ॥

अंत—दोष उपराति कुबुधि नाहीं ॥ निर्दोष उपरांति सुबुद्धि नाहीं ॥ सृष्टि उप-रांति पोष नाहीं ॥ अजपा उपरांति जाप नाहीं ॥ अघोर उपराति मत्र नाहीं ॥ नारायण उपराति इष्ट नाहीं ॥ निरंजन उपराति ध्यान नाहीं ॥ इति श्री सृष्टि पुराण सेवादास कृत

संपूर्ण समाप्त। लिष्यतं गंगाराम निरंजनी ॥ संवत् १८७२ वि० सिव सिव सिव सिव सिव सिव श्री नारायण पारब्रह्म परमात्मा ॥

विषय—कुछ सिद्धान्त ॥

संख्या ४३५. संग्रह ग्रंथमाला, रचयिता—सेवकराम, कागज—देसी, पत्र—१६, आकार—९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामप्रसाद, ग्राम—मनीगा, जिला—सीतापुर।

श्री गणेशायनमः ॥ अथ गंगाष्टक पुष्प विलास लिख्यते ॥ बहु रंग विरंग कलोल करैं। सब जंतु विलास के हाव धरैं ॥ सुर चारण सिद्धि मुनीस जिते। नित सेवक रेणुका बीच तुरै ॥ द्विज भाँति अनेकन जाप करैं। श्रुति सार सौं बेद के पाठ करैं। धरि ध्यान हिय मनु राघु तहाँ जहँ पुष्पन पुञ्ज तरंग उठै ॥ १ ॥ उछरै बहु रंग उतंग हिलोरनु पीन प्रसंगनि लागि तरे ॥ मग बास सुकुंकुम बासित बारि भरो मन मोहत चित्त हरे ॥ कहि सेवक गंग मरीचिन की उपमा कवि बर्नत क्यों न हरे ॥ छवि देखि अघात न चक्षु तहाँ जहँ पुष्पन पुञ्ज तरंग तुरे ॥ २ ॥ भ्रमरै घुमरै मिलि पान करैं चहुं ओर सुगंधन की लपटैं। लहकैं झुकके झिलकैं छलकैं सुर जात धपू तट के निकटैं ॥ झटकै पटकै भभकी भटकै मन पाप पहार परी। गरिलोचन सबक देषु तहाँ जहँ पुष्पन पुञ्ज तरंग तुरे ॥ उछरैं थहरैं लहरैं लहरैं हहरैं द्विप रोप समूह भरैं। झलकैं पलकैं छवि की हलकैं ललकैं जनु व्यास पियूष भरे ॥ अति चारु मनोहर कांति विलोकित जाति कलानिधि की निकटैं ॥ बहर मन सेवक देषु तहाँ जहँ पुष्पन पुञ्ज तुरंग तुरे ॥

अंत—सीतला भवानी की ॥ जहाँ आदि कारण संभारन अधिक सुधि भारी भरि धारनि तू सेवक से जान की। जैसे रोग कष्ट विस्फोटक महामारिह छिन में बिनासै करै रक्षा बालकन की ॥ जाके नेकु भजन पढ़ोपक प्रसाद हूते अंग कुष्ट दाद होत व्याधि जात तन की ॥ सीतले भवानी तू त्रिलोक ठकुरानी धरि सीस मैं धरतहूँ तेरे चरन की ॥ ४ ॥ अथ अस्सा देवी गंगा महाराज भूमि सुभग निसान रूपे जुआ ध्वजराज विरचर फुक फहरैं ॥ जाके बल विपुल सुरेस सम लोक पाल अभिमत पर पाइ सुरपुर सुर गावहीं ॥ ककुनी मनोहर कलित चारु सुराश्यामि सेवक सहायक सब वासन निवास हीं। नैमिष विपिन मध्य पंच प्राण जूके तीर कलित ब्रह्म मातु अम्बिका विराजहीं।

विषय—गंगाष्टक, दुर्गाष्टक और शिव, शीतला अम्बिका देवी जमराज विष्णु, सूर्य अंबिका भवानी की स्तुति के कवित्त।

संख्या ४३६. नैषध ग्रंथ, रचयिता—सेवासिंह (फतहपुर) कागज—देसी, पत्र—१४८, आकार—६ × ७ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७००, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री अर्जुनसिंह, ग्राम—संडीला डाकघर—मछरहटा, जिला—सीतापुर।

आदि—एक समैं व्यदृरय रिषि धर्म सुवन के तीर। आइ गये अधीत बय सुमति समुद्र गंभीर ॥ आसन दै बहु भाँति सो पूजा करी बनाइ। कुसल भूप पूछन लगा हिय मैं

अति सुप पाइ ॥ सवैया ॥ दुपित दास को देपि दयानिधि आइ गये छिन में सुप माने। को यह प्रेम को पुज कहै सकि मेसहु पै नहिं जात वपानै ॥ होइहै कछू सुभ मानि परयो तव या दस राज विलोचन आने ॥ पोत सो पाइ गये तुमको हम वूडत ते दुख में अकुलाने ॥ दो० ॥ आसिप दे अति विपद मन मुनि वोले मुसक्याइ। राज साज सव पाइ है धीरज गहौ वनाइ। कृपा रावरी सरस है रहि है धीरज प्रान। वर अैसो दुखित भयो सुनेउ भूप कोउ आन ॥

अंत—दो० ॥ रहो सत सतगुनि तपनि राज कियो महिपाल पुन्य पुरुप गणना विपे प्रथमहि गनियेताहिं ।। अनुज चारि वलवंत पुनि द्रुपद सुता पुनि तोर धर्म सुवन साहस धरो परी कौन सी भीर ॥ इहि प्रकार समुझाइ पुनि दै असीस रिपिराज। गये तपोवन को इती सावधान महराज ॥ अथ ग्रंथ कार वंश वर्णन ।। छप्पै ॥ करन देव भै करन जासु जस पुहमी यहिय तेहि के हरि सिंह देव समर अरि शैन विधहिय ॥ सारंग धरतेहि सुवन भुवन उदित उद्दारहुव। दीपसिह मै दीप विदित मंडित प्रताप भुव ॥ तेहि वंस अस अवतंस मतिहू अदयाल करुना कलित। थान सिंह तेहि तनय सवय किय समर मडि अरि दल मलित ।। लुहुग राइ तेहि सुवन राज फत्तेपुर थप्पिय। दान वीर रणधीर दान दुज गनह समर्पिय। जीतसिंह अज्जीत सुजस ताको कुल मडल। झारि झारि किरवान समर वर भवैरि विहंडन ॥ तेहि सुवन भुवन अवतार हुव सेवा सिंह अरल्ल धुव। गहि पर्ग उरगा समग रिपु पडपंड करि पट्टि भुव। दोहा ॥ नल की कथा पवित्र यह कही व्यास अभिराम। भापा सेवा सिंह कृत नल चरित्र यहि नाम ।। मंगल करन अनूप है राज सत्य एहि नाम। जे यहि कथा प्रीति करि सुनि लहि है विश्राम ।। इति श्री सेवा सिंह विरचिते नल चरित्र सपूर्णम् ॥ सवत् १९५२ विमारग सार्थ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ चौथ वासर वुध लेखक छव्वालाला ग्राम गौरिया ॥

विपय—नल दमयन्ती की कथा।

संख्या ४३७ प. कवित्त, रचयिता—सिद्धादास (हरगाँव, सुलतानपुर), कागज—सफेद मोटा, पत्र—८, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुप्टुप्) – २२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१० = १७५३ ई०, लिपिकाल—सं० १९८५=१९२८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवनप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पांडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायवरेली।

आदि—कवित्त—सिर मुकुट वाल भाल चंदन रसाल लाल, ललि छवि नैनन की पकज लजावते। नासिका अमोल चारु चिवुक अमोल पुनि, अधर विलोल विहँसत मन भावते ॥ कानन के कुंडल सुडौल लोल डोलत हैं ॥ मानो निज जनन के मनको वुलावते। कहै द्विज चेरा प्रभु हाथ है निवरो, गुरू चरन की धूरि भूरि, शीश पै चढ़ावते ॥ सवैया—दृढ ज्ञान नहीं मन में सुनि कोटिन वात न एक दृढ़ावत हैं। श्रुति संत पुकारत मारग जो, नहि आवत एक न भावत हैं ॥ हरिनाम निरंतर लेत नहीं, मन में करि सोचन ध्यावत है। द्विज सिद्धा कहै हरि आपुहि मा, पहिंचानि न आवत धावत है ॥

अत—कुंडलिया—चेरा दूलन दास को वास करै हरि गाँव। चरन कमल आधार

है रटत निरंतर नाव ॥ रटत निरंतर नाव वार्चै अस चतुरी न आई। बड़े भाग्य ते आय जनम द्विज के गृह पाई ॥ कछु न लागि संग। अंग मह आपन तैरा। केवु परलि पहिचानि। कीन्ह पर सबुद्ध बैरा ॥ १ ॥ बैरा बिरही नाम को चढत न देही मास ॥ नैन पलक लागी नहीं, मंद २ चल स्वाँस ॥ मंद २ चल स्वाँस, पास प्रमु निरखि हराई। सुरति सरण रहराय, सुरति चरनन लपटाई ॥ अहनाम शुचि नाम, परम सुख सागर डेरा। लोक मान अपमान त्यागी। भयो सत गुरु चेरा ॥ इति

विषय—भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, ईश्वर के भजन की विधि तथा विरह आदि का वर्णन।

संख्या ४३७ बी ग्रन्थामली, रचयिता—सिवदास (हरगाँव, सुल्तानपुर), कागज—सफेद पत्र—७०, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१०= १७५१ ई० लिपिकाल—सं० १९८४=१९२८ ई० प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवनप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे पराग पांडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि—हनुमान पियार हो मैं तुम्हरी बलिहारी। पवन तनय बल धाम राम प्रिय, दीनन के हितकारी ॥ बाल यती सत स्वामि धर्म रत अम्बर नाम अधारी। युग २ ध्यान धरत सति मनि को। छारे टरत न टारी ॥ भक्त उजागर सब गुन सागर, आगर यश विस्तारी। दास हेत तुम प्रगट तर्यो भव संकट दरत निवारी ॥ सब सुख दायक भायक जन के, करि कुरु मणि उपकारी। "सिवा दास भक्ति वर पावैं, निसि दिन विनय पुकारी ॥ १ ॥ × × × × इत्यादि।

अंत—कहाँ का आनत सब तुमही। जल थल पर १ व्यापि रह्यो है, मोरेहु तन मन ही ॥ मन मांज बन तनम तुम आनत, समुझि के सकुचि रही। जो तुम चहत होत है सोइ, दूसर अवर नही ॥ निसि दिन ध्यास नाम रटना की सुरति फिरत बही। रामहु सरण कृपाल दया करि हित उपदेस कही ॥ छवि रस चाखि सुमैं सुनि अम्बर, सुख संतोष लही। सिवा दास पास करि अपने, सत गुरु चरन गही ॥ इत्यादि।

विषय—भक्ति, ज्ञान, वैराग्य तथा नाम की महिमा का वर्णन।

संख्या ४३७ सी साखी, रचयिता—सिवदास (हरगाँव सुल्तानपुर) कागज—सफेद मोटा पत्र—२२, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप)-१११ पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८१०=१७५१ ई०, लिपिकाल—सं० १९८५=१९२८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवनप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे पराग पांडे; डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गुरु जीवन जाल गुरु, दूजन वारि उदार। सगुन सर्वहित जानि शुभ सिवा, नाम अपार ॥ नैन के भीतर नून है। नैन कोटि छवि जासु। तासु चरन तर मन बस्यो, सिवा निरखि हुलास ॥ नाम नैन है राम को दीजै संत करि ज्ञान। ताहि नैन विचारैन दिन, करि सिवा मन ध्यान ॥ बसै नैन दिन बाँसुरी, धरे कदम तर ध्यान। सिवा ताको का करी। कर्म कोर परमान ॥

अंत—महादेव को पूजहू, अवरन को स्नान। वढी भाग्य तें पाइए, सिद्धा सत गुरु ध्यान॥ देखि रीति ससार की, कहत वनत नहिं वात। 'सिद्धा' गूँगा ह्वै रहा, समुझि २ पछिताता॥ नाम ककहरा के पढ़े, समुझि परै सत पंथ। सिद्धा अपने मोह वश त्यागि दियो सव ग्रंथ॥ ग्रंथ पढ़ै तो अति भल, हित कै सुमिरै नाम॥ यहाँ वहाँ आराम है, सिद्धा पूरन काम॥ स शब्द पदारथ[२], उर भरि राखे कोय। सिद्धा समुझैं सुनेते, सुमिरन को फल होय॥ इत्यलम्।

विषय—ज्ञान और वैराग्य तथा ईश्वर के साक्षात्कार का वर्णन।

संख्या ४३७ डी. विरह सत्य, रचयिता—सिद्धदास (हरगाँव, सुलतानपुर), कागज—सफेद मोटा, पत्र—७, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१० = १७५३ ई०, लिपिकाल—सं० १८८५ = १८२८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परानपाड़े, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि—श्री गणेश शम्भू सहित, गिरजा गण समेत। द्विज सिद्धा विनती करैं, देहु दया करि चेत॥ सत गुरु दीन दयाल प्रभु, तुम लायक सव योग। द्विज सिद्धा चरनन परो मति मलीन वस भोग॥ सत गुरु दाता नाम सम कलुष विभजन हार। द्विज सिद्धा चरनन परो, नाम सत्य आधार॥ सत गुरु दाता राम सम, जन सिद्धा अति दीन। चरनन परि वर मागहूँ, चरन कमल मन लीन॥ सत गुरु दाता सामरथ, सव ईशन के ईश। विनय करौं कर जोरिकै, देहु दरस वकसीस।

अंत—सिद्धा यहि ससार में, कत निरखि पहिंचानि। अहै निरंतर पास ही, अपने मन दृढ़ जानि॥ सिद्धा, नाम कि जिकिर तें, चौंसठि घरी विताउ। कंत दरस की लालसा, छिन छिन चाउ वढ़ाउ॥ विरह सत्य यह पोथी, शहर जौनपुर कीन। सिद्धा पिय पहिचानि निज, चरनन तर सिर दीन॥ अष्टा दस सै समय दस, मारग मास पुनीत। सिद्धा, हेरत आपु में, परखेउ आपन मीत॥

विषय—ईश्वर का प्रेम भक्ति तथा भजन का वर्णन॥

संख्या ४३८. ए दिल लगन चिकित्सा, रचयिता—सीताराम (हसनपुर), कागज—देशी, पत्र—८४, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५३ = १७९६ ई०, लिपिकाल—सं० १९०६ = १८४९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सीतारामसिंह, ग्राम—महराज नगर, डाकघर—मैंगलगंज, जिला—सीतापुर।

आदि—अथ दिल लगन लिष्यते॥ श्री गणेशायनमः शंभु वुध दायक गज आननं तिनकू सीस नवाऊं। पुनि देवी की चरण कमल की रज हृदे लगाऊं॥ श्री धनवंतर और अश्वनी सुत तिनहू चरण धर सीसा। कहू दिल्लगन चिकित्सा कृपा करै जगदीसा॥ चार लाप वैधक दर्साई जे मुनि जहां वपानी। कछुक ग्रंथ देपे निज गुरु सों तिनकी भाषा ठानी॥ सकल सृष्टि व्याधा जो नासी जव वैद्यक दर्साई। देहज व्यथा सुने ते जेहैं भगवत इच्छा गाई॥

अंत—अमर करा यासी फल केसर सींग अफीम छबीलो । गाढी मासे भर की पावल अक में ऐंठ रसीली । पाय सांझ को पुरुष मनेच्छी कामी कमी न हार । तेरी सौं वस कीस मामिनी मोग राति में वाके । यह गुटका सुन सीतारामी रसिकन के मन भाई । मेरो चित वस कीन्हे ऐसे ताते तोहि सुनाई ॥ याके खाते पुरुष पयोधर मधु वातु की हावे भरी काम मद गरब गहीली तिनकी हू मद पोषै ॥ ऐसी ते कहि चतुर सिरोमनि मोको नीद पसेरी । बाल लई वैधकमें मैंने अधिक निठुरता तेरी ॥ यह रिक लगन चिकित्सा अब गिन याद कर । इन तेम तेर प्रश्न किये तै प्यारी वरनन कीन मैन ॥ अमित पंथ वैधक के जग में तिनकी भाषा कीनी । चरकादिक जो वैद सिरोमणि तिनकी आज्ञा लीनी ॥ हरी सिंह सुत पुस्तक लीनी अगनित मंथन । मथि के अवगाहन में भजन भनो सो सीस फूल सी कमि के ॥ जो यह ग्रंथ पढ़े अरु समझे सुन रिक लगन पियारी । सीताराम कियो यह जिहवै तिनहूं व्यथा बहारी ॥ याके तो इलाज अलबेली ऐसे सब अजमायो यथा पुष्प सुन पंकज लोचन पीने ताहि सुनायो ॥ संवत ठारा सै सत्तर महीना ? (तिरपन्ना) सावन अधिक सुहायो कृष्ण प्रयोदसी ऐंठ प्रवीली चंद्रवार सुबतायो ॥ त्रिपुर सुंदरी की कृपा संपूरन ग्रंथ बनायो । कठिन चिकित्सा सागर प्यारी भाषा कर दरसायो ॥ पूरण वैद समा के भूषण गोत विप्र गुण दाता । पाठक हरी सिंह सुत नाम है सीताराम विख्याता ॥ शक्ति उपासक संकर सेवक पढ़ो लिखो अति नाहीं । जिन यह ग्रंथ रचो है ताको ग्राम हसनपुर मांही । और मरम मुझे मत कोई सुन रिक लगन पियारी है रिक लगन उबसी मम की सुंदर कुदरत प्यारी ॥ भावै इनकी और न कोई मिसा सभी या वाला क्रिया सिंगार बतीसो अमरत छोड़ो सुरत गुमाक्षा ॥ इति श्री रिक लगन चिकित्सा या षोडसो शृंगार संपूर्ण समाप्त: शुभ मस्तु लिखतं गौरी चरन सुसरी मेरठ की छावनी संवत १९०१ वि० बसंत पंचमी ॥

विषय—वैधक ॥

संख्या ४३८ यी रिकलगन चिकित्सा, रचयिता—सीताराम, कागज—देसी, पत्र—८४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२३, पूर्ण, रूप—गलित पद्य लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८५३ = १७९६ ई०, लिपिकाल—सं० १९११ = १८५२ ई०, *प्राप्तिस्थान—श्री गणपतिजी दूबे, ग्राम—नयागाँव, डाकघर—* सादरपुर, जिला—सीतापुर ।

४३८ ए के समान ।

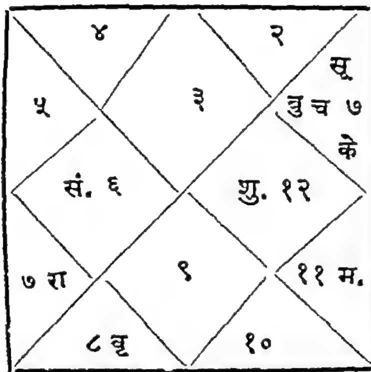
पुष्पिका—इति श्री रिक लगन चिकित्सा संपूर्न समाप्त लिखतं गंगा सहाय संवत् १९१९ चैत्र शुक्ल ६ ॥

संख्या ४३८ सी रिक्ष लगन चिकित्सा, रचयिता—सीताराम (हसनपुर), कागज—देसी पत्र—१५६ आकार—९ × ६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११९०, पूर्ण रूप—साधारण पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५३ = १७९६ ई०, लिपिकाल—सं० १९२१ = १८६४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गोपालसिंह, ग्राम—भदसी, डाकघर—ठाकुर बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—४३८ ए के समान ।

अंत—॥ इति ॥ श्री हठी राम सुत सीताराम विरचिते दिल गन चिकित्सायां वैद्य जीवने वाजी करनाधिकारा नाम सोड्शो श्रृगारः ॥ १६ ॥ श्री संवत् १९२१ साके १७८५ ॥ चैत्र शुक्ल पक्षे तिथौ दुतियाय शुक्र वासरे घट्य. २६,३८ ॥ भरणी नक्षत्रे घ. × × ×

अथ जनम कुंडली च्क्रम्



चैत्र शुक्ल अरु दुइज सुहावन शुक्रवार शुभ कारी। भई समाप्ती दिलग्न चिकित्सा शुद्ध अशुद्ध विचारी॥ वल्ल देव दीक्षित वास माझियामा तिनके मन अति भाई। तिहि ते लिखि वहुतक करि महिका अति सुप ठाई ॥

संख्या ४३९ कवित्त सग्रह, रचयिता—सीताराम शुक्ल (गोंडवा), कागज—आधुनिक, पत्र—२०, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चद्रभाल शुक्ल, ग्राम—गोनी, डाकघर—अतरौली, जिला—हरदोई ।

आदि—प्यारी जशोमति की द्विज नारि चली वृषभानु पिया पंह आई। देपि सुता वर व्याहन योग करो विनती अरु वात चलाई॥ घरहे नो भलो वरसा वसे नन्द को वनै तो करोरी सलोनी सगाई। नाहिरी नाहिरी नाहिं करौ मोरी फोलसी राधिका कारो कन्हाई ॥१॥ वैन सुनी द्विज नारि हसी हसि कै वृषभानु पियै समुझावै। फोल को गाहक भौंर भलो आली औंर को फूल में हात लगावै॥ वृषभनै अव सोई करो अरु जो सगरे वृज के मन आवै। सांवरे स्याम औ गोरी सो राधिका ज्यों दामिनि घनमें छवि जावै॥ इहा मिलि मोहन सों मतिराम कि केलि करी अति आनन्द वारी। लेइ लता द्रुम देपत ही सुचलै असुवां अरि वयान सौ भारी। जाती अहौ जमुना जल को नहिं जानत हौ पिछुरे गिरधारी। जानति हौं सखि आवन चाहत कुंजन से कढ़ि कुंज विहारी।

अंत—प्राति किह्यों विनहीं समुझे सव छाडि हिये की ठीक रुई कवहू भरि अंक लगायो नहीं सव लोगन में वदनाम भई। मारिये यहि सोच विसूरन में इतमोहन के उर नेह नई। येहि लो कहु से परलोकहु से सजनी हम दूनौ और गई। प्यासे रहे दृग दोऊ सदा न पियो सुप पाइकै पानि पपी को। भूपन साजि सिंगार सवै लपि पिय विन ताहि लगे सव फीको। नाहक हूं वदनाम भई न भयो कवि गग मनोरथ जी को। जौ छिनहू छतिया लगती तौ कलंक को लागिवो लागत नीको। तुमही कुलीन प्रवीन रहौ हमही कुल छाड़ि गई तो गई। हमका कोइ चहै ते तो कहै नन्दवारे के संग ठई तो ठई। खगपति

यह प्रीति कि रीति बही बक संक की भावैं लइ तो कई। प्रान को वासी हवी तो हवी हम स्याम की दासी भई तो भई।

विषय—(१) कृष्ण का राधिका के सग सगाई। (२) प्रेमालाप—कृष्ण राधिका का सम्मिलन। (३) कृष्ण का राधिका के घर चूड़ी पहनाने के लिये जाना। (४) कृष्ण की बंसी पर गोपियों का आकर्षण। (५) वसंत ऋतु की महिमा। (६) वर्षा ऋतु वर्णन। (७) वियोगी जनों का विरह वर्णन।

संख्या ४४०, काम्यकल्पतरु (वंशावली तिरोई राज), रचयिता—सीताराम (रायबरेली) कागज—देसी, पत्र—५१५, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०७००, खंडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९३५ = १८७८ ई०, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—राज्य पुस्तकालय तिलोई, (रायबरेली)।

आदि—सवैया-पग की तलपा पति की मगजी पतिता सु पिता नमता × रस को मुरु को मुक्ता सुत को, अरि तासु चमू पति कुक्षि कर × मच को पितु ता पितुता पितु के पतिकी पितु चैन रहो तु सरा सुखम का सुतता वदनी सुवता, धरनी अकी न टरी। चौ० जिही नगर बात यह छाई। नृप बलि भद्र जाइ बिचलाई। दो० एक समै की सुन कथा, पै अवनीश सुजान। सिरजापुर के गोमती तीर तिन्हें सुत को मान॥ सोनक बेग आजम चढ़े, काशी करउ बनाइ। विश्वनाथ गृह तोरि कै, महजिद करी हीं आइ॥ सौ० रंजसिंह बलवान काशी पति तहि काल मैं॥ सुनि मलेस को नाम, पत्र लिख्यौ सब नृपन को।

अंत—छप्पय—सूर संग परि हरी, कुमन की संगति छीजै × मातु पिता गृ देव प्रजन को पालन कीजै × प्रिय मरीम का करब पूर्व को काम न सौप्या × रीति आप सम करब प्रजा तजि न्यीजिय को × हठ कै अहि छावन देऊ भूप यजरापि धर्म कछु कीजै × सम दम दंड विभेद य अवनीश उर धरि लीजिये ×

विषय—रियासत तिलोई के कान्हसिंह से लेकर राजा सूर्य × तक का वर्णन।

संख्या ४४१ ए. कवितरंग भाषा, रचयिता—सीताराम वैद्य (रीपड़ पंजाब), कागज—देसी, पत्र—११६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६० = १७०३ ई०, लिपिकाल—सं० १८५५ = १७९८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री फतेचंद दूबे, ग्राम—सरैया, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गनेशाय नमः॥ अथ कवि तरंग भाषा लिख्यते॥ श्री कवि सीताराम कृत प्रारंभ्यते॥ प्रथम नमो परमातमा पढ़ो सारद माय। सिव सुत। पद परताप ते भाषा कहौं बनाय॥ भारग मित सुदिमा अमित सांम दिवस सुभवार। एकादश संवत् समय और सात निरधार॥ रेगी लिख्य सहायको उपज्यो मन आनंद। अर्थ कासमी कठिन ते सुगम बनाये छंद॥ प्राकृत तिरपे गंग मैं बसत सुत कविराम रीपड़ मैं भाषा करी कवि तरंग धर नाम॥ कवि मीयति भाषा करी तर्क न कीजै कोय। ज्यों दीपक के दीप तैं धर उपज्यो

तन होय ॥ चरक आदि के ग्रथ लै देखे उदधि समान। उनमे सार निकालि के रत्न गहे जिय जान॥ रोग हरण औ सुप करण रत्न औषधी सोय। सेवै प्रति दिन मनुज जो रोग व्याधि को सोय। व्याधि हरण नर होय जो करै भक्ति करतार। युवती आदिक सुप करैं भोग सार संसार॥ याते पहिले देह की करौ सदा प्रति पाल। जो कवहूं गिर जाय तो वहुरि न पावै काल॥ जोतिहु ते एको वढ़ि जाय। तौ जानौ मृतु निकटी आय॥

अत—अथ शस्त्र मज्जन प्रतीकार। दोहा॥ इडोली का तेल कर मलै शस्त्र पर कोय। जंगाल मोरचा ना लगै वरस काल जो होय॥ रापै गेहू रास में वरस काल के मांहि। मलै मोरचा ना लगै कह्यो कपट कछु नांहि॥ अथ सवत कथिते॥ चौ०॥ गये जो विक्रम वीर विताय सत्रह सै अरु साठि गिनाय। मकर कृष्ण तृतीया परधान शुभ नक्षण भृगु वासर जान कह्यो सुगम कवि सीताराम सव काहू के आवै काम॥ कष्ट हरण है सुप का धाम। कवि तरंग राप्यो यहि नाम॥ दो०॥ अर्थ फारसी कठिन ते भापा कही वपान ताते छमियो सकल कवि चूक परै कहुं आन॥ पंड दीप मुनि दोहा जान कवि तरंग में कहे वपान। यान पढ राम चौपाई। संख्या ग्रंथ यहै सु वताई। रोग निधान औपधी कही। कवि तरंग में जानी सही। समझ चिकित्सा करै जो कोई। ताको अपयश कवहु न होई। किंचित लोभ न कीजिये धर्म अर्थ पहिचान। दीजै औपदि दया करि श्री पति कह्यो वपान॥ इति श्री कवि तरग कवि सीताराम विरचितायां रोपण अस्थाने शत रुद्रो अवतरण सम्पूर्णम लिपत वाजीलाल व्राह्मण अस्थान खेरी सवत् १८५५ वि० चैत्र राम नौमी॥ राम राम राम राम राम॥

विपय—वैद्यक॥

संख्या ४४१ वी. कवि तरंग, रचयिता—सीताराम, कागज—देशी, पत्र—११६, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुप्टुप्)—२२००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६० = १७०३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विष्णु भरोसे, ग्राम—कफारा, डाकघर—धौरहरा, जिला—खीरी।

संख्या ४४२ पवन परीक्षा, रचयिता—शिववक्स कवि (हत्याहरण), कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—६×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुप्टुप्)—६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७५ = १८१८ ई०, लिपिकाल—स० १८७९ = १८२२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूवे, सैदपुर, गाजीपुर, जिला—गाजीपुर।

आदि—श्री गणेशायनमः। अथ पवन परीक्षा ग्रन्थ लिप्यते दो०—सकल सिधि सुमरन करत स्यावे सिद्धि प्रसिधि। सो सुमिरि सिव वकस कवि करौ वुद्धि की वृद्धि। कवित्त चन्द्रमा विसाल भाल व्यालन विमद माल करमें त्रिसूल सोहे राजत रदन है। देवन में देव सबै सेवत प्रसिद्धि सिद्ध मकर सुवन सदा सिद्धि को सदन है। कवि सिव वकस के ते काज करत मेरे पावत न पाप हेरे रिपु को कदन है। सुमति वढ़ाइवे को विपति वहाइवे को दारिद्र दुराइवे को वरन वदन है।

अंत—दो०—एक रूप अवनी विषे एकै भाम पताक। एक राम सब में रमे प्रथी पाल सब काल। सवैया—एक सरूप सदासिव के उर एकै मवन मुसुंडि के जोई। एक विरंचि विरंचि के बासक सारद सेष सराहत सोई। एक सर्व मुनि के मन मंदिर बेद विचारत होई। एकै राम रमे सबके सोइ और दयाल न कोई।

विषय—(१) शिव विनय, गणेश स्तुति, रामस्तुति। (२) रामचन्द्र की बाला वस्था का वर्णन। (३) कृष्ण भक्ति। (४) भरी में भर भरी भी भरी भरा—इस कहावत की पूर्ति। (५) नई जाजम् जाम की महली—इस कहावत की पूर्ति। (६) बजा बजाया सहनाई बजाना—इस पर कवित्त। (७) जोगी है जोठे न गदहा के कान उमेठे। (८) ओसन के चाटे पियास नाहीं जाति है।

संख्या ४४३ ए. उत्पलारण्य महात्म्य, रचयिता—शिवदत्त, कागज—देशी, पत्र—१२०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१९२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२१ = १८६९ ई०, लिपिकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वेणीप्रसाद शास्त्री, ग्राम—सकतिया, डाकघर—महोली, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ उत्पलारण्य महात्म लिप्यते॥ दो०॥ आदि ब्रह्म की अकथ है महिमा अगम अपार। अज कोश तेहि ते भयो विधि हरि हर अवतार॥चौ०॥ आपुहि सब मगल सुप दाता। सिद्धि विनायक जग विख्याता॥ ताहि सुमिरि सारदहि मनावहुं। जासु कृपा निर्मल मति पावहुं॥ कृष्ण चन्द्र बन्देव गोसाईं। राधा कलिता दोउ एकठाइं॥ अम्ब जसोदा पुनि सब गोपी। जे सब भाँति कृष्ण चित चोपी॥ व्यास वंदि शुकदेव सुजाना सूत सौनिक्रादिक मुनि नाना॥ गिरिजा गिरिजा कंत गोसाइ। कृपा करहु प्रभु होहु सहाई॥ तुम बिन नाथ सकल जग माहीं। भो कह सुप दाता कोउ नाहीं॥ ताते कृपा करहु जन जानी। विमल बसहि अनु हरषि सुबानी॥ दो॥ जेहि ते चाढहि प्रेम रुचि श्रवण सुनहि मन लाइ। करुणा सागर दीजिये सुगम उपाव बनाइ॥

अंत—चौ०॥ कहु संक्षेप कछुक विस्तारा। तुमहि सुनायेहु बहु कुमारा॥ जो यह कथा सुनत तत्काला। पावहि मुक्ति स्वपच चंडाला॥ अब महातम अब रूप० केरा। कैहहुँ शंकर समुझि घनेरा। गिरिजा सुनहहि तन मन लाई॥ सो हम तुमहिं कहब समुझाई॥ निज इच्छा जेहि विश्व प्रकासा। सो प्रभु मोरे हृदया निवासा॥ कृपा अनुग्रह अहि विधि कीन्ही सब जग पूज्य बुद्धि मोहि दीन्ही॥ सोई कृष्ण करुणा गुण पानी। सदा प्रनाम करहुं मन बानी॥ ब्रह्म क्षेत्र की कथा सोहाई। अति रमनीक कहहिं जे गाई॥ दो०॥ सब देवन को देव जो तिन्ह पर होत प्रसन्न सुनत सराहत आदरत। ते प्रानी जग धन्न॥ जाकी अमित महातम बरनि सकत नहिं सेष। तेहि पद की बंदन करत छूटत सकल कलेस॥ पंच मूर्ति महिमा कही सुंदर विविध प्रकार। गिरजा आपहि करति हैं बरहिन मती विहार इकइस अध्याय भये अब शिव गिरिजा संवाद। भई संहिता पूरन शिव कृत रामप्रसाद॥ संवत् रस दग विक्रम तापर तिथि अद चंद्रा ग्रंथ कियो संपूरन रचि करि सुंदर छंद॥ इति श्री ब्रह्म संहितायां उत्पलारण्य महात्म्ये शिव पारवती संवादे अध्याय पंच मूर्ति कथनम्

संपूर्ण समाप्त. लिपत गोवर्धन तिवारी कानपूर का वासी सारस्वत ब्राह्मण संवत् १६२८ वि० ॥

विषय.— उत्पलारण्य (ब्रह्मावर्त्त) माहात्म्य जिसमें सीता जी का वन में छोड़ना आदि कथाएं हैं ॥

संख्या ४४३ बी. ब्रह्मावर्त्त महात्म (उत्पलारण्य महात्म), रचयिता—शिवदत्त रामप्रसाद, कागज—देशी, पत्र—२४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६२६ = १८६६ ई०, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवरतनसिंह, ग्राम—श्रीनगर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ ब्रह्मावर्त महात्म लिख्यते ॥ (इसके बाद ४४३ ए के समान ।)

अंत—दो० ॥ प्रथमहि गंग मिलि जब सादर तेहि क्षण न आइ । मन अति भयउ उजागर ब्रह्मावर्त अन्हाइ । दर्शन मज्जन जह तह कीन्हे । विधिवत दान दक्षिणा दीन्हें । पुरी मध्य थापन करि पूजा । मोरे इष्ट देव नहि दूजा । सकल कार्य भा सिद्धि हमारा । नाम सागरेश्वरी तुम्हारा । अस कहि सागर निज थल गयऊ पंचम नाम प्रगट यह भयऊ ॥ विविध सकल उपचार सगाई । जे इनका पूजहि मनलाई ॥ छूटहि तिनके पाप विकारा । भवसागर ते होइ हैं पारा ॥ पाच ना मूर्ति जे पाचहु । तिनकी कथा सुनहिं जे सांचहु ॥ तिनके सुकृत मनोरथ जी के । सुफल करहिं गिरजा इति श्री ब्रह्म संहिताया उत्पलारण्य महात्मे शिव पार्वती संवादे भावान्या पचमूर्ति कथन नामक विशोध्याय सभभवतु ॥ आश्विन कृष्ण एकादश्याम संवत १९३० वि० लिपतं गिरिजाशंकर रामराय ॥

विषय—पचमूर्ति महात्म कथा वर्णन ॥

संख्या सी. ब्रह्मावर्त महात्म्य, रचयिता—शिवदत्त रामप्रसाद, कागज—देशी, पत्र—५६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५१५, खंडित, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२६ वि०, लिपिकाल—सं० १९४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नीलाल तिवारी गंगापुत्र, ग्राम—मिश्रिख, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर ।

आदि—४४३ बी के समान ।

पुष्पिका नहीं है ।

संख्या ४४३ डी. ज्ञान प्राप्ति बारहमासी, रचयिता—शिवदत्त, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, लिपिकाल—सं० १६३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा मनोहर दास, ग्राम—डकोर, डाकघर—मवई, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ ज्ञान की बारहमासी लिख्यते ॥ चैत रह्यो अचेत शिशुपद बालपन खेलत गयो । पाप जोवन रूप गर्वित त्रियन के रस बस भये ॥ वृद्ध आस

दुरामपिता श्याम माह मनावहीं ॥ गुरु ज्ञान बिन तम टारनि नहीं जाति अँधेरा में बही ॥ १ ॥

अंत—मास फागुन बिरह पूर्ण पाप सुख संपति गई । परत रवि सुधि मरन पचि पचि पद न काहू की गई ॥ शिशिर बर्द्दि बिरह बढ़ै करत नाना करम हैं मास नहिं कोऊ करम दह मन आत्मा का मरम है ॥ करी प्रेम नेम समेत जोई पन बारह मासी गावहीं शिवदत्त राम प्रताप तै साई आतमा रूपहि पावहीं । तप जोग जग्य समाधि तीरथ मध करि करि पचि करैं कलि काल कठिन कराल है ॥ हरि नाम बिन कैसे तरै ॥ इति श्री ज्ञान ग्रास शिवदत्त कृत बारह मासी सपूर्ण लिखी गंगा राम त्रिपाठी संवत् १६३१ वि० ॥

विषय—बारहमासी के ब्याज से ज्ञान का वर्णन ।

संख्या ८४३ इ. ज्ञान की बारहमासी, रचयिता—शिवदत्त, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ३ ½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्) –४०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामदुलारे पाठक, ग्राम—डाला डाकघर—उन्नाव, जिला—उन्नाव ।

४४३ ए के समान ।

संख्या ८४४ राधा जी की बारहमासी, रचयिता—शिवदयाल (जलालाबाद), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११ परिमाण (अनुष्टुप्)—९९, रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१५ = १८५८ ई०, लिपिकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला हीम दयाल, ग्राम—दबिला, डाकघर—पार्वतीगंज जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राधा जी की बारह मासी लिख्यते ॥ अथ अस्तुति लिख्यते ॥ बंदौं श्री गुरु गौरी सुत शिव बिष्णु पंकज पाद (। श्री नदी सु सुनीत सुंदर रचित जलालाबाद है रामदीन दुबेन्द्र नंदन कृष्ण के सेवक भए शिवदयाल जदु कुल श्याम राधे स्वामि प्रभु मधुबन गये ॥ आषाढ़ ॥ आषाढ़ बादर घरि आये मेघ बहु बिधि गाजहीं । अति जाड़ पिया परदेस गई विधि मारि पीतम बरज ही तब छाँडि जोगी काज भोगी छाय भिन्न भिन्न घर गए शिवदयाल जदु कुल श्याम राधे स्वामि प्रभु मधुबन गये ॥ १ ॥ तिमि मिमिक सावन मेघ बरसै बड़ी मागर धावहीं । मिगार सखी सजनी सबै मिलि तीज मंगल गावहीं ॥ हमैं प्रीतम संग प्यारी बहिरी मूरख मिल बन । शिवदयाल जदुकुल श्याम राधे स्वामि प्रभु मधुबन का गये ॥ २ ॥

अन—बिरह पावक अंग जारत परि सब दुख घरी हरे बदन राधा दुखी हमको बिबिध बनि तरनी भए शिवदयाल जदुकुल श्याम राधे स्वामि प्रभु मधुबन को गये ॥ १२ ॥ जबहुम तै हम बांध नंदन छह मन लागि पंचमी । जहिं सुमिरि आवा गमन छूटन समय पद आशा रमो । कुरुक्षेत्र सूरज ग्रहन कमला बन नारिन मिलि गये । शिवदयाल जदुकुल श्याम राधे स्वामि प्रभु मधुबन को गये । इति बारह मासी । कवित्त ॥ सिपाहे या सुख कब मिले अब मित्र वर्ष बरसैं बन घनी । गुरु प्रताप बड़ी धन है सुख संपति भाग पवित्र कमाई ॥ ऐसा बिदेस मैं बंधु नहीं पिता सुख करहि आप बढ़ाई ॥ शिवदयाल सु

पूजन भूपतिलों विद्याविन ब्राह्मण ज्यों पशु धारे ॥ दो० ॥ श्याम गात तन पीत पट उर वैजती माल । हृदय वसौ शिवदयाल के राधा रमण कृपाल ॥ इति श्री शिवपाल कृत बारह मासी संपूर्ण समाप्त लिखा रामदयाल पाठक जगलालपुर निवासी संवत १९१८ वि श्री राम राम राम राम राम ॥

विषय—गणपति जी की स्तुति, कवि का निवास स्थान और जाति, राधा जी के विरह की बारह मासी।

संख्या ४२५. श्री राधा कृष्ण विहार कुंज कल्प लतिका, रचयिता—शिवदीन दास (काधरपुर, प्रतापगढ़), कागज—साधारण, पत्र—११५, आकार—८३/४ × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९२=१८३५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वद्री नारायण सिंह, ग्राम—कोधरपुर, डाकघर—कोंधर, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शिव दीन दास कृत शब्द लिख्यते ॥ राग काफी ॥ कहै छवि कौन वृन्दा विपिन धाम की। सघन वन द्रुम गुंज अति पुंज अलि गुंज करि कोकिला कीर धुनि आठहू याम की ॥ १ ॥ जूथ के जूथ नाचत मोर सोर करि चोरि चित लेत सुधि रहत नहिं काम की ॥ देव अरु असुर नर नाग गंधर्व पशु जाति सिकि हाय तेहि मनहु विनु दाम की ॥ २ ॥ सघन फल फूल अनुकूल जमुना पुलिन रहत तहँ यात सब पात सह स्थान की ॥ वहत अति मंद सीतल सुरभि पवन नहँ जेहि न भावत तिन्है मनहुँ विधि वाम की ॥ ३ ॥ मनिन्ह ते खचित अति रचित घृत भूमि वह भूरि जीवन कि तहँ लहत विश्राम की। दास शिव दीन अति दीन तुम्हारो चहत जियत अरु पाइ जनम सु व्रज ग्राम की ॥ ४ ॥ १०

अंत—अचरज की अहे श्याम तेरी वनिया। गई मारन विष लाय पूतना ताहि दियो सुन्दर गतिया ॥ १ ॥ केवट श्वपच अभी ? जवन पह रवन उपाम जतिया। कोल किरात अधम पशु पामर ताहि मिलाय लियो पतिया ॥ २ ॥ सेवरी के फल जूठ पाय के अरु कुविजा के वसेहु रतिया। व्रज में जाय पर नारिन के सग रीझि रीझि लायहु छतिया ॥ ३ ॥ वेद पुरान संत सब गावत भावत तुम्हें इहै भैतिया। जन शिव दीन दास सो अब हौं कछु वटि मलिन मतिया ॥ ७८ ॥

इति श्री राधा कृष्ण विहार कुंज कल्प लतिका समाप्त शुभ मस्तु सम्वत् १८९२ ॥ वैशाष मासे कृष्ण पक्षे पचम्यां भृगुवासरे ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ४१ तक—वृन्दावन धाम की शोभा तथा कृष्ण स्तुति, राधा, कृष्ण का एक दूसरे का वेष धारण करना, सखी से कृष्ण को मिला देने की प्रार्थना, कृष्ण को गोपी की फटकार, राधा की स्तुति, तुलसी की महिमा, संत समाज की महिमा, चित्रकूट की शोभा (राम निवास सम्बन्ध से), कृष्ण की मोहिनी मूर्ति का वर्णन। कृष्ण का वाल्यकाल वर्णन, वेदान्त के सम्बन्ध से कामादि चोरों का रूपक। भजन का आदेश। राम का सेवरी निवास स्थान पर आना, प्रेम की गागर का रूपक, संत तिरस्कार का दुष्परिणाम, कृष्ण वियोग, मुरली वर्णन, रामायण महात्म, राम लक्ष्मण रंग भूमि

प्रवेश, रावण मंदोदरी-संवाद, यशोदा से गोपियों का उपालम्भ, रामजन्म, शिव जी का रामदर्शन को आगमन, यशोदा द्वारा गोपी का सत्कार, भक्ति व प्रेम, अवध वर्णन, गंगा माहात्म्य, वृन्दावन धाम फल, सतसङ्ग, कृष्ण भोजन, जग में दीन होकर रहने का उपदेश राधा का सौन्दर्य वर्णन, (२) पृ० ४२ से पृ० ७४ तक—मुरली ध्वनि, कृष्ण रूप, श्याम मदन उपदेश मोह वर्णन, दधिलीला, गोप-सुता और कान्हा का झगड़ा, दान-लीला, कृष्ण बाल वर्णन, उद्धव संवाद, वियोग, मुरली, वात्सल्यलीला, वियोग, विरह वर्णन, स्तुति संयोग, उपालम्भ हास्य, वंशीहरण, वंशी से सौतिया डाह, रास-रचना, कृष्ण शोभा, मान मोचन, संयोग-सुख वर्णन, वचन विदग्धा, (३) पृ० ७५ से पृ० १०६ तक—कृष्ण के भोजन का वर्णन कुवरी रूप वर्णन, यमुदा प्रति उपालंभ, कृष्ण की मथाई वात्सल्य विदग्धा, मोह राग भजन, उपदेश, विरह, पनघट-लीला फाग, वंशी लीला, मान लीला, होली। (४) पृ० १०७ से पृ० १९५ तक—अद्भुत होली खेलन, कृष्ण का वेष परिवर्तन और ललिता द्वारा मंत्र फूकना वेणी माधव ध्यान, ग्राम वर्णन, भक्ति हरि के पावन चरित्र का वर्णन, होली, अमावा प्रति उलाहना, युगल मूर्ति।

संख्या ४४६ अभिप्राय दीपक, रचयिता—शिव लाल, कागज—आधुनिक, पत्र—१०, आकार—११½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण—(अनुष्टुप्)—१४५, पूर्ण रूप—साधारण, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह जमींदार, ग्राम—रामीपुर, डाकघर—तालाब दरपी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गनेसाएं नमः। अथ अभिप्राय दीपक लिष्यते॥ दोहा॥ श्री सीता रस रसिक अरु असिष भगत रस राज। रचित नीप विचारि कै तुलसी रविकुल राज॥ १॥ पानि विष राजत आजु लगि श्री सरजू के पार। पाठक श्री सिवलाल उर लसत उपासन हार॥ २॥ छर अछर अछर रहित जानि सिर छर पार। पार सिर छर सिग बहुरि जन फल की वर पार॥ ३॥ सबद प्रसक उर पढ़ुरि बहुरि जानकी कूल। श्री महारप पर स्वेत तिलक उपासन मूल॥ ४॥ अभि प्राय दीपक लिखत दिवस अगमता पेषि। मानस उमाँग मात्र करी थिर विहास विसेषि॥ ५॥ रामकृष्ण पद पाइके साप सकारे पाय। मानस मंजहि संत पद दीपक देत देखाय॥ ६॥ समा उभय बसु मास रवि वासर उर बस संत। पाद अष्टके उरस सुमि सम धंसे अनंत॥ ७॥

अंत—पहर सारें प्रभ हास्य रस वस है गारी गाय रजनी गत सुनि सुत धंसेन्ह मौरी दीप लगाय॥ ११०॥ आवत मिथिलेस्वर कही अभिमत दसरथ लाल। मिल रहे सुष मिल लषि में मेड्य मेलाल॥ १११॥ हाड़ दाम दक सात गनि अध्यय दौस प्रकास। धाट कांड करि बाल पीव समाजम धाम॥ ११२॥ इति श्री बाल कांड अभि प्राय दीपक समाप्त सुभमस्तु सिद्धि रस्तु सुभ संवत् १९०२ मिती अगहन सुदि नवमी सोमार श्री सीतारामजी, श्री सीता राम जी छ छ छ छ॥ टीका रामायन लिषा अमि प्रायका कोव, दीन श्री सिवलाल सिव अतिमै अगम बसाव। १। दोहा मैं बहु जतन मे दुर किये बहि

बूझ । पढ़ि पढ़ि बहु हारहीं पडे गैल नहीं सूझ ॥ २ ॥ श्री मद् गुरुने न्पा करी दश लिपने नाम दरभगा रज पान पर लेपक सीतल राम उ छ छ छ ॥

विषय—रामायण की टीका ।

संख्या ४४७ त्रिमूर्ति आरती, रचयिता—शिवानंद स्वामी, कागज—साधारण, पत्र—३, आकार—६ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९९ = १८४२ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री रामस्वरूपशर्मा—पंडित का पुरवा, मौजा भट्टी, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ ॐ जै शिव ओंकारा हर शिव ओंकारा । ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अरधगां धारा ॥ जै शिव० ॥ १ ॥ एकानन चतुरानन पचानन राजै । हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै ॥ जै देव ३ ॥ २ ॥ दुय भुज चार चतुर भुज दश भुजते सो है । तीनों रूप निरषिता त्रिभुवन जन मोहे ॥ जै देव ३ ॥ ३ ॥ श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे । सनकादि व्यबुधादिक भूतादिक संगे ॥ जै देव ३ ॥ ४ ॥

अंत—जो शिव तीनो पेक स्वरूप अंतर धरता । हरि हर ब्रह्मा गुन गावे भवसागर तरता ॥ जै देव ३ ॥ ८ ॥ ब्रह्मा विष्णु सदा शिव त्रिगुणात्मक आरति जो कोइ गावें । भनत शिवानंद स्वामी वांछित फल पावे ॥ जे देव ३ ॥९॥ इति त्रिमूर्ति आरती समाप्तम् ॥ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे अष्टम्या सनिवासरे संवत् १८९९ ॥ शिव शिव शिव शिव शिव शिव

विषय—त्रिमूर्ति आरती तथा उसका फल ।

संख्या ४४८ सत उपदेश, रचयिता—शिवनारायण, कागज—प्राचीन देशी, पत्र—५४, आकार—८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री भागवतलाल, प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—संतसरन ॥ सत गुरुस्याए ग्रथ सत उपदेश तीनी वानी परथ में अमर होत मे सही ॥ दोहा ॥ नीती नीती करत आनंद ॥ शोभा अपनो पाइके छुटत सकल सभ फंद ॥ गौ चले नभ ही मील के ॥ सभे मिलावे मीली चले, भेद भाव गुन वंत ॥ समुझी वूझी सभ अमल करे समदरसी सो संत ॥ छाड़ी चलो घर आपना ॥ आवा गवन की राह ॥ सीव नारायण है सोई सभ संतन्ह के नाह ॥ पढ़े गुने समुझे बुझे । ऐही सत उपदेस । सीवनारायन कही दीवो चलो आपना देस ॥ सज ॥ करत आनंद संत नी सुवासर नीज मन बंसी करी डारी हो ॥ दका डेढ़ वसे सभु ऊपर काल आपना मारी हो ॥ जेह जेई चाहत करत तौन तव संसार सोमनाह गारी हो ॥ त्रीगुन सरगुन देसी मससरी भ्रम फंद तोरी डारी हो ॥ भौ जल देखा भरम के पानी उत्तरी पार करी जारी हो ॥

अंत—गगन ध्यारे प्रजात ही अमिक्षा पदारथ खाइ । अद्भुद देखे अमर होऐ, अवागमन मेटी जाइ । मन मंजन हरी दम करे, बैठे सभा सत संग । जो जो हीछा सो करे, जव सत गुरु होवे प्रसंग । चौरासी से वाची परे, नीज रूप निरधार । तखत मकान वीचा रहे, त्री गुन गुनस ते पार ॥ सोरठा । तेज दोसरी आस, नीदा त्रीथा न सहइ ।

नही माह भरमधाम, भजहु ताइ मर जो भई ॥ जागु पाउ पछताय । कंठ हीया हो ऐसो करे ॥ संत सुमंत सुभाव, नेह सब हीया बीमार ही ॥ सुनि सुनी संत संदेस, सबी सुनी सभ विचारी है ॥ इस भेस उपदेसा, पारू देखी पर मारी है ॥ दोहा ॥ पढे सुने मनुषी सुभ नेही संत उपदेस, सीतारामपद संत हाथ अमल कर नित देस । सब संत उपदेस दीनी बानी सतगुरु मई सम माह गतहीः । संत वचन परमान मा सही । पार पार पार पार

विषय—इसमें तीन बानियाँ हैं । पहली बानी ११ संख्या की है, संतों की महिमा और ज्ञान वर्णन है (पृ० १—१९); बानी २—जगही को सब का कारण मानकर उसका नाम वर्णन किया गया है संड ११ इसमें भी किये गये हैं (पृ० १९—३०); बानी ३—मनुष्य तन ही सब में श्रेष्ठ है । कर्म अकर्म गुण द्वारा ध्यान धारण प्राणायाम आदि इसीके द्वारा होते हैं । संत वर्णन सब कुछ यही है (पृ० ३०—४१); सतगुरु महिमा वर्णन सबद वर्णन (पृ० ४१—५४) ।

संख्या ४४१ ए, रस रंजन, रचयिता—शिवनाथ (मकरंदनगर, फर्रुखाबाद) कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५११, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४६=१७८९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विक्रमासिंह ग्राम—अउवा डाकघर—इटावा, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रस रंजन काव्य लिख्यते ॥ कवित्त ॥ चंदन चनाइ चारु पूजन के आसन पै भारति संवारी गुन गावती चमेरे हैं ॥ कहै शिवनाथ साथ साधिका सिंगारी आरी राखि हिय ध्यान निरंतर नयन हैं ॥ पीरिहा तिहारे हम चारिहा सिंगार राज हम सब वारी ज्यों निहारी प्रीति घर हैं ॥ दोहा ॥ रति की थाई भाव सो भाव है संगार । ताहि कहत कवि इ ठाइ जाग वियोग विचार ॥ आलंबन शृंगार को कही नायका आदि भये सब कवि कहि गये प्रथम नाहि अविवाद ॥ त्रिविधि महा माया मई जीति भेद परमान । स्वैया परकीया कहीं पुनि जोविता विधान ॥ तीन्यो के भेदनि रहे तीन भाव परिपूर ॥ यदि स उपजत जगत यही सजीवनि मूरि ॥ याके भेदनि को कहें आगे ये सो नाम । जानि परत सो कहत हौं सज्जन सगुनि सुजान ॥

अंत—आय रस सब कहूं मानिनि अबाड उरी अति मामा लगी अंग अंग रघु भाये हैं ॥ एक हाय हाय लीन पूजन की माल अंग ए हाय प्यारी मान देखिनत जा ये हैं ॥ कहै शिवनाथ नाथ पग द मगर मम भूमि कीनी रोम रस आनंद गनाये हैं ॥ सारगुन पाव माना मानिनी के मन ऐसी कानन सों कोपिसा वो येक हैं आये हैं ॥ सवैया उपा ॥ दो० ॥ प्यारी तू क आर मे मन का उर्मि भाव । अंग कहा रूप लगि सोई सरवस राय ॥ उपा कवित्त ॥ पार्वै न मधुर दैन पार्वै सदन चंद चंदु कहा भयो सोमनि उमास निसाति ८ अंगुरी गरज क पर पल्लव सों पावनि कहा भयो हाथीन सों अपार सुमति है ॥ कहै शिवनाथ आर भाजि क सिंगार ऐसी अंतर के मन ना निरंतर धमनि ८ ॥ भये काय बासन मैं रस पर मति कवि अंगुली धमनि रघुनाइनि रमनि है । इति रस रंजन श्री कृष्ण विलासे शिवनाथ विरचिते नायका भेद समाप्त ॥ शुभंभूयात् ॥ लिपि ज्ञान संवत राग वेद

श्री भुजग चंद्र कुमहीते धरीजै अंक वाम मारग सुभाइ सों ससि ससि मुनि भूमि अंक साके को नीकी भाति लीजियो विचारि पुनि वाहिये गुनाई सों माधौसित पक्ष आइ दसमी को चंद्रवार ताही दिन पूरन कैलिपियों भुलाइ सों । कहि जग रूप छमा कीजियो कछुक चूक परै लीजियो विचारि पै संम्हारी चितु लाइगों ॥ श्री शंकर की जैय होय ॥

विपय—नायक नायिका भेद ॥

संख्या ४४६ वी. रस रजन काव्य, रचयिता—शिवनाथ, कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४६ = १७८९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामनारायण सिंह, ग्राम—चाँदपुर, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर ।

आदि-अंत—४४६ ए के समान ।

संख्या ४४६ सी रस रजन, रचयिता—शिवनाथ, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ट) – ३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४६ = १७८६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री देवीप्रसाद शास्त्री, ग्राम—सकटिया, डाकघर—महोली, जिला—सीतापुर ।

४४६ ए के समान,

संख्या ४४६ डी. रस रजन, रचयिता—शिवनाथ, कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नीलाल, तिवारी गगापुत्र, ग्राम—मिश्रिख; जिला—सीतापुर ।

४४९ ए के समान ।

संख्या ४४६ ई रस रजन काव्य, रचयिता—शिवनाथ, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४६ = १७८९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राम भरोसे सिंह, ग्राम—सुलतानपुर, डाकघर—राजेपुर, जिला—उन्नाव ।

विपय—नायिका नायक भेद ।

संख्या ४५०. छन्द सार पिंगल, रचयिता – शिवप्रसाद कायस्थ, कागज—साधारण, पत्र—३७, आकार—१० × ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—९७५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२९ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राम प्रसाद मुराऊ, ग्राम—पुरवा विश्राम दास, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ श्री मते रामानुजाय नमः ॥ श्री रामचन्द्रायनम॰ ॥ सवैया ॥ मोद मनोरथ को फल देत विना श्रम धोखेहु नाम लिये । गणनाथ अनाथ के

थाप सदा शुचि पावत है न विचार किये ॥ कल कीरति ज्यासु पुरानन में बरनी धरनी पर मुख दिये। शुभ मंगल स्यौपरसाद मिलै सुचि पिंगल को रस पाक पिये ॥ मत्त यंकला छंद :—सेव सेव मेक दंत रिद्धि सिद्धि सो बसंत वंदि वंदि देव दैत्य कामना को पावई। मुंड दंड सो प्रचंड पंडि—पंडि पाप पुंज आदि ही सो आदि अंत वेद ना बतावई ॥ भाल लाल के विसाल कोटि भानु किमि साल दास पै दयाल स्यौंप्रसाद गावई। रसि रसि स्वाद भाव जाहिते बने बनाव दीजिए सो वेगि रीति छंद की चलावई ॥ गिरा गौरि गौरीस के, चरन कमल सिर नाइ। पवन तनै अरु राम पद, प्रनवौं कल बुधि पाइ ॥

अंत—

							कै							
							स							
							रि							
						पु	ता	क						
					भू	मि	ल	ही	म					
				र	मा	ग	पु	रा	क	भ				
			ते	त	रि	कै	रे	म	न	ख्या	रु			
		म	ही	र	थ	के	प	प	की	ग	म	नी		
	को	हि	ये	ध	रि	कै	र	हो	मि	ह	स	क	म	
ओ	ह	रि	को	क	हु	सी	ता	रा	म	न	भा	व	न	कै
							सु							

कै सरिता लपु भूमि कही नर नाग पुलाक भये हरि कै। रेमन प्यारु भगीरथ के पथ की गमनी को हिये धरि कै ॥ रहो मिह संक भजो हरि को कहु सीताराम न भाव नकै ॥ कै सरिता लपुरे परतासु सुधार परे पग तारि सकै ॥ इति श्री कायस्थ वंशावतंश शिवप्रसाद कवि कृते छन्दसार नामक पिंगल सप्तमोल्लासः ॥ ७ ॥ संपूर्णं शुभं भूयात् संवत् १९१९ ॥ आश्विनि मासे शुक्ल पक्षे द्वितीयायां शुक्र वासरे लि०। राम दयाल पोथी राजापाल सिंह जीव को।

विषय—प्रथम उल्लास ॥ पृ० १ से पृ० २ तक—मंगलाचरण, गणेश, गिरा, गौरि

आदि की वन्दना। पृ० ३ से पृ० ४ तक—नृप कुल वर्णन, कवि का नामोल्लेख तथा पिंगलोत्पत्ति। कासीनाथ दानी हैं उमासी साह साहन को जोम को बखाने राडलोम को जग्यो है भाल ॥ राइ सुरताल के सपूत पूत भरथराइ लछन चेतसिंह जू के भूपति भए रिसाल ॥ स्यामसिंह ताके देग तेग पताके ताके गुसी ममता के जाके जाहिर है जस जाल ॥ दीनन पे दया दृष्टि राधावर जाके इष्ट पूरन प्रतापी ताके भये लाल महिपाल ॥

—६—

चित्र गोपित्र पवित्र रच्यो कुल कायथ के सुत द्वादश भेये ॥ ताते बसे वसुधा भुव मंडल एक ते एक कहालौं गनेये ॥ सेवक स्योंपरसाद भयो महिपाल कयौ कछु छन्द बनेये। सूछम रीति कही सिगरी मत सेसहि को जस उज्जल गेये ॥ पिंगल का अर्थ, पद्य तथा गद्य निरूपण, प्रस्तार लक्षण।

द्वितीय उल्लास—पृ० ५ से पृ० १७ तक—प्रस्तार भेद, गणागण वर्णन। गणों के देवता व फल, लघु गुरु नाम, कलासंज्ञा। गणों के शत्रु मित्र भेद। छंद के दूषण भेद। सूची उद्दिष्ट नष्ट, मेरु, पताका, मर्कटी (पाताल)। वर्ण वृत्ति उद्दिष्ट, नष्ट भेद, वर्ण मर्कटी पताका वर्ण, वर्ण मेरु।

तृतीय उल्लास—पृ० १८ से पृ० २६ तक—मात्रिक छंद वर्णन—छंद भेद। छंदों के लक्षण—दोहा, सोरठा बरवै रोला रोला के लक्षण में नृप महिपाल का निवास स्थान—"महाराज महिपाल सिंह जू हैं डिगवस को वासी। दान मान सन्मान जान सब जाकी कीरति पासी ॥ चूना, चाँन चमेली चोटी है उज्जल जस हीरा। नारद नाददई हँसि तासो दई सारदा चीरा" ॥ रसिक छंद, चौपैया छंद, सुलक्षण, पद्धरी, पदाकुल, अरिल्ल, चौपाई, रूप चौपाई, उल्लाला, छप्पै, पद्मावती, प्रज्वलित, लीलावती, हरिगीतिका, त्रिभंगी, हीराछंद, विद्याधारी, छविछंद, कुन्डलिया के छंद लक्षण।

चतुर्थ उल्लास। पृ० २६ से पृ० ५० तक—वर्ण-वृत संबंधी छन्दों के लक्षण। श्री छंद, महिछंद, कामपद साहू छंद, शशि,पंचाला, प्रिया, रमन, मंदरा, कमल, त्रिग, गजधारी, सम्मोहा, हरी, हंस, सेखा, जमक, निगालिका, तिलका, विजोहा, चौरंस, संखनारी, मालती मदनक, सावस, सामानिका, सीरपा, विंदुमाल, मल्लिका, परमानिका त्रिग, कमला, मानव क्रीडा, अनुष्टुप्, महा लक्ष्मी सारंगिका, रति-पति, विवा छंद, तोमर, रूपमाली, अमृत गति सजुक्तिका, चंपक माला, सारवती, सुषमा, दोधक, सुमुखी, शालिनी, केतिका, इन्द्र वज्, उपजाति, मौक्तिक दाम, रथ वद्धता, भुजंग प्रयात, स्वागता, लक्ष्मी, तोटक, सारंग, मोदक, तरल नयन, तारक, कंद, द्रुतविलंबित, मालिनी, नाराच, वसंत तिलका, चामर, भरमावती, निशिपालिका, सरभ, शिखरनी, शार्दूल, गीतिका, रूपमाला, सुन्दर के लक्षण व उदाहरण।

पंचम उल्लास। पृ० ५० से पृ० ५७ तक—चक्र छंद, पाकावलि, प्रमिताक्षरा, मत्तवृती, महर्व-रुवाई, भुजंगी, छंदो के लक्षण व उदाहरण।

षष्ठम उल्लास। पृ० ५७ से पृ० ६६ तक—किरीट सवैया, मदिरा, चकोर, मत्तगयंद, मानिनी, भुजंग, लक्षी, द्रुमिला, आभार, अमुक्त हरा, वसुधा धारी, अमृत ध्वनि, के लक्षण।

सप्तमोल्लास । पृ० ६६ से पृ० ७२ तक—समाक्षरी कलानिधि समाक्षरी के लक्षण व उदाहरण । मल सिख वर्णन । सिंहावलोकन, महायमाक्षरी, के उदाहरण । पृ० ७० में कपाट व डमरू बंध ।

अष्टमोल्लास—पृ० ७१ से पृ० ७४ तक—अर्द्ध गातुक का और त्रिपदी नामक चित्र काव्य ।

सख्या ४५१ संग्रह, रचयिता—शिवप्रसाद सिंह (गाजीपुर) कागज—आधुनिक, पत्र—१११, आकार—९ × ५३/४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८११ पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह जमींदार ग्राम—खानीपुर डाकघर—शाहाब बस्सी, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—॥ १ ॥ कवित्त ॥ १ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ १ ॥ सवैया ॥ सिद्धि के सदन अपार करन के दैन दुरासा म्हानि को गासिबे ॥ सुण्ड उदण्ड सों दंत तुरत दौरि दबाव तमी गुन साधिबे ॥ दे गन माई शकाई की बाई है आपने आमित और को भासिबे ॥ सुत बिदेशा न हेश करैश्म तुम्हारी दया से महेश के साहिबे ॥ १ ॥ कवन्य गंजीफा का बजीफा सुआ पारी तजु औसर को अछि अनि ओसर बिचारे तू ॥ कौसता में छीन है न कौसता सरीर करु हारि सतरज को न १७ को उठावे तू ॥ सारही की सेज पर सो रही है मति तेरी उसको जगाय कर्म फांसी से बचावै तू ॥ काय तैन तैन सांधु सिया पुरुषोत्तम की सब सुष धाम सीता राम गुन गावै तू ॥ २ ॥ छप्पै ॥ महा विकट गढ़ एक पौरि तहाँ चारि निरंतर । तिनकी बनी अनूप बीस नरु गमी दिगंतर तीनि राव जहू बसत इस्त चरि करत पयाना । पद दस कामिनि संग सुख बहु भांति न छाना ॥

अंत—कंचन के कलसा से कलित उरोज सांई १म ही के सम कारों जंघ पर अभासी । माहीं की कलनि सुप संच की पढ़नि मानों विमल जोन्हाई रति गनिब की माला सी । कहे कवि तोष तुम्हे हद है पुन्य आला ताते कीन पाछि पाछा बरे मैन बिधा ज्वाला सी । छीजिये बिरह बलि कीजिये सुरति जग्य मान तजि काज बतो बाला सम साला सी ॥ २२१ ॥ कंजपर कमा तहं ताक हैं बिराजै ताप ताके पर केहरी की कटि छबि छाई है । ताके करकी औ कल दल के पताका तामें पीठ आगे माग बनिता सोहाई है । ताथे शिव ताक ढिग कमल सनाल सोहै तापर निपंती ताये चन्द सुघराई है । ताये बिंब बिम्ब सुक अग धनु देखो गैस ऐसो उपमा की बोल मेरे मंन आई है ॥ २२२ ॥ गावती बनावैं सखीकी गोप बारें मनी देवन की दारें के सिगारें सरसाती है । अतर फुहारें पिचकारैं भरि मारें हारें सोरिन कढ़ारें कुम कुमन चलाती हैं । देती करतारें एक एकन पजारें सीस सारें न सँभारें मनमारें मैन माती हैं । छाजको बकार हँसं हरषि हंकारैं और नंद द्वारें पै बहारें बनि आती हैं ॥ २२३ ॥

सख्या ४५२ ए. गोकथ महात्म, रचयिता—शिवसिंह सेंगर (कांथा उन्नाव), कागज—स्याली, पत्र—१६, आकार—१० × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण अनुष्टुप्)—१८४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३३ =

१८७६ ई०, लिपिकाल—स० १९३३=१८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवसिंह का पुस्तकालय, कांथा, जिला— उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री चन्द्र भाल शिव की जय अथ भाषा गोकर्ण महात्म लिष्यते: ॥ दो० । गनपति गिरिजा गंग गुह गुरु गभस्ति गोपाल गिरा गिरा पति गिरिश पद पकज रज धरि भाल ॥ महिमा श्री गोकरन वर चंद्रभाल मुद कंद ॥ भाषा भाषत मति सरस मेगर शिव मति मद ॥ एक सहस्र नव शत अधिक तेतिस सावन मास । शुक्ल पक्ष दिन शुक्र शुभ कीन्हो कथा प्रकाश ॥ चौ० ॥ जय गोकरन क्षेत्र अति पावन । जय जय चद्र भाल जन भावन ॥ कह मैं मद कुटिल खल कामी । कह चरित्र पावन पद शिव स्वामी ॥ कहं पदाति कहं पील पतगा ॥ कहं दीपक कह सर कहं गंगा ॥ कुसुमि पुष्प कहं पकज पारद । कहं पषान पारस कहं कारद ॥ मेरु शिषर कह निकर रेनु के । सुरभि कह मधुप धेनु के । पय पयोधि कहं पायल पानी ॥ कहं पशु परानी ॥ शशि मरीचि कहं ग्रीषम तापा ॥ नृप दधीचि कहं परन कलापा ॥

अंत—कश्चित ग्राम कोटरा नामा । तह द्विज एक निधन त्रिन सामा ॥ नारि विशालाक्षी अभिधाना ॥ धर्म सुधर्म उभय सुत जाना ॥ पिता भक्त अति भयहु सुधर्मा । जननि भक्त भो वालक धर्मा ॥ द्विज पत्नी बोली यह वानी ॥ नाथ देहु मोहि आमिष पानी ॥ द्विज बोलेहु हम विप्र विशाला । दया धर्म रत दीन दयाला ॥ गांहि न मास वेद विद चातुर ॥ विप्रहिं वरजित हिंसा आतुर ॥ वकना मत्स्य दयालु कहाई केहि विधि प्रिये मासु हम खाई ॥ काहू कुल उपजै कहुं काह कर सुत सोई ॥ पिंड दान गोकरन ते नर्क निवारै सोई ॥ चौ० ॥ द्विज क्षत्री विठ अंत्यज शंकर । सर्व धर्म वहेर भेषज नर ॥ श्राद्ध अन कर भोजन कारी मधु पीवक सुवर्न कर हारी ॥ ब्रह्म वधिक गुरु तल्पग चोरा । शठ विश्वास घात की थोरा ॥ उपात की कृतघ्नी जीवा । अपर जीव पापी अव सोवा ॥ करि गोकर्ण अस्मर्ण सर्वा ॥ लेहि मोद मगल मुद सर्वा ॥ जन्मातर किय पाप हजारन ॥ जरत तूला जनु पाप अंगारन ॥ तहं न पाप ठहरत लघु भारी ॥ सेवहु अस निज हृदय विचारी ॥ दरशन करि सव पाप विलाहीं सत्य सत्य ससय कछु नाहीं जो फल वसि कासी सत वरषू ॥ चैत्र दरश गोकरण अमरषू ॥ तेहि सानिध्य कुड अति पावन ॥ थीरथ अमित सहित मन भावन ॥ पाप ताप हारन जग तारन । अद्वितीय विया पद कारन ॥ दोहा० ॥ चहुं दिशि जो गोकरन के लिंग विराजत धात ॥ तिनके नाम पुनीत वर सुनहु चित दे तात ॥ चौ० ॥ पश्चिम जोजन तीनि प्रमाना स्वर्वेश्वर राजत भगवाना ॥ दक्षिण जोजन तीनि वषाना ॥ देवेश्वर शकर दातारा ॥ उत्तर जोजन तीनि उजागर । राजत शभु गदेश्वर नागर पंच तीर्थ जो मनुज नहावै ॥ तौ सव पाप विगत गति पावैं ॥ दो० मांड कुंड को नाकं वर भद्र गोकर्ण तात ॥ मज्जिपुन भूं तीर्थ नर पुनि नहिं आवत जात ॥ सोरठा० ॥ आदि करै अस्नान क्षौर कर्म पाछें करैं अर्चि शभु भगवान पुनि तर्पन श्राद्धा दिवर ॥ चौ० ॥ यह तीरथ विधान हम गावा । जेहि कर नर पावे फल भावा ॥ जे पढ़िहैं सुनि हैं यह गाथा ॥ भुक्ति मुक्ति तिनके सव हाथा ॥ जो गोकरन नाम उच्चारहीं ते विन श्रम भवसागर तरहीं ॥ इति श्री पद्म

पुराणे उत्तर खंडे गोकर्ण महात्मे श्री सेंगर रनजीत सिंग आत्मज सिवसिंह भाषा कृते षष्ठो ऽध्याय ॥ इति श्री लिखा रामभरोसेसिंह सेगर संबत १९३१ वि० ॥

विषय—गोकर्ण नाथ महादेव की महिमा और माहात्म्य वर्णन ॥

संख्या ४५२ वी गोकर्ण महात्म्य, रचयिता—सिवसिंह (कांथा, उन्नाव), कागज—आधुनिक, पत्र—१२, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कुंदनलाल, ग्राम—सण्डीपुर, जिला—उन्नाव।

संख्या ४५३ ए. जानकी विजय, रचयिता—सियाराम, कागज—देसी, पत्र—११, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२११ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८१२ वि०, लिपिकाल—सं० १८८४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री मधुसूदन जी वैद्य, खैराबाद—सीतापुर जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जानकी विजय लिष्यते ॥ दो०। नाइ सीस बर मांगौं राम कृपा करि देहु। जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहुँ परै जनि नेहु। अस कहि मुनि बसिष्ठ गृह आये। कृपासिंधु के मन अति भाये ॥ पुनि रघुबीर सभा महँ गये। बहि बिधि चरित करत नित भये। द्विजवर एक कोसल पुर माहीं। सब बिधि कुसल हिये बल माहीं ॥ बरनि न जाय तासु गुण नाना। तेहि के सुत यक परम सुजाना। बेद पुराण स्मृति सब पंथा। काव्य कोस आगम श्रुति सेषा। अलंकार प्रबंध सब जाने। जिह्वा आग्र व्याकरण बषाने ॥ सयम नेम तपस्या कर ही। द्विविधि सौच अनुदिन अनुसरही ॥ कोमल चित्त संतोष सदा ही। सत्य वचन बोलै सब पाही। ज्ञान बिज्ञान सरस मन माही। कपट चतुराई। मन कछु माहीं ॥ जे पावन गुन सबै बषानै। अस बाल मन ते सब जाने ॥ भई अकाल मृत्यु तेहि केरी। पिता हृदय अति सूपा घनेरी ॥ रोवहि मारि मारि करि छाती। तासु चरित कहि नाना भांती ॥ दो० ॥ तब द्विज बर बिज्ञान कहि समुझाई सब नारि। है जग को ब्योहार यह देषौ हृदय बिचारि ॥

अंत—सिय रघुवरहि प्रनाम करि अति सुंदर बर पाइ। चले सराहत मनहिं मन हर्ष न हृदय समाइ। चौ० ॥ हरि राम अभिराम अपावन। चले तहां पुर दूत सुहावन ॥ पत्र पवित्र बिचित्र साजि करि। यह बिधि चले हृप मंदिर अरि। अवधपुरी आयो तब मातुल। कैदे जह सिय सहित कृपाकुल ॥ देषि राम छबि बाम पुरंदर। अभिमत कीन्ह हृदय करुणाकर ॥ तब सत क्रत जुग पानि जोरि कर। अस्तुति करत निरषि करुना कर। जै कृपाल जय जय आधारक। असुरन मारि सुरन निस्तारक। कामक्रोध मद लोभ मोह हुत। गज सम मन तम नसत पांच हुत ॥ जर तब ध्यान पंच मुष रघुबर। कराहु कृपा हूजहिं तब दुम्बर ॥ प्रभु तब अखिल ज्ञान गुण सागर। तैं हें नर बसहु सो अबीन उजागर ॥ दो० ॥ करि बिनती सिर नाइ पुनि प्रभु अनुसासन पाइ। अमरावति बासव गये हर्ष न हृदय समाइ ॥ सिय रघुवीर प्रताप ते मिल नव मंगल चार। को बरनै रघुबीर की लीला अगम अपार ॥ छंद ॥ लीला ललित सिय राम कह अति गुप्त मैंपल राज ही। पावन करहि मित्र

गिरा सो पर सिद्धि भाषा करि कही। पद कज जानुकी प्रीति जुत जे सुनहिं सादर गावहीं। सोभाग्य श्री संपति सकल सो कल्प कल्पन पावहीं ॥ दो० ॥ एक सहस्र अरु आठ सै संवत दस अरु तीनि शुक्ल द्वितीया मास मधु भाषा कथा नवीन ॥ इति श्री जानकी विजय रामायन सहस सीसादिव्य रावण वध समाप्त शुभ मस्तु संवत १८८४ आसाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ अष्टाम्या ८ रविवासरे ॥ दो० ॥ राम लछमन जान की भरत शत्रुघन प्रीति। कथा जानुकी विजय की लिपी सिता वसु जानि ॥ श्री हनुमान जी सहाइ ॥

विषय—जानकी जीका अहिरावण का वध करना।

संख्या ४५३ बी. जानकी विजय, रचयिता—सियाराम, कागज—साधारण, पत्र—१८, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१३ = १७५६ ई०, लिपिकाल—सं० १९२९ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

संख्या ४५३ सी जानकी विजय, रचयिता—सियाराम, कागज—प्राचीन देशी, पत्र—१३, आकार—१४ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ —१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१३ = १७५६ ई०, लिपिकाल—सं० १८३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रिका बक्स सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

विशेष—निर्माण काल—एक शहश अरु आठ सै संवत दस अरु तीन। शुक्ल द्वितीया मास मधु भाषी कथा नवीन ॥ = १८१३

संख्या ४५४ ए. हनुमान विजय, रचयिता—श्रीधर गौड़ (मनेमाबाद), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२१ = १८६४ ई०, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवकंठ तिवारी, ग्राम—बरगदिया, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हनुमान विजय लिष्यते ॥ स्वस्ति श्री पति पशुपती गणपति मृग पति माय। श्रीधर जग पति खग पती वंदौ नग पति राय ॥ विजय हनू वरणन करू हृदय धरू आनंद। श्रीधर मारत नद को दर्शन परमानंद ॥ छंद ॥ कड़खा ॥ ॐ नम शारदा सुमति मनमें वसो कुमति के अघ को फद तोड़ै ॥ ह्रीं नमः हांक हनुमान महावीर की भीर का दुख का मुख मोडै ॥ श्री नम सर्वदा संपदा आप श्री लक्ष्मी नाथ के हाथ पावैं। क्लीं नमः क्लेश संताप दुख दूरको विजय हनुमान नर नाम गावै ॥ प्रथम जा नाम सूं काम जग में करै दुख के हरण सुख करण गन्ना। बुद्धि के सिंधु श्री गिरि सुता पुत्र के चरण पद शरण को धरण मन्ना ॥ गुरु पद कज करिंज मकरंद मन भ्रमर ज्यूं सुमर कर सीस नाऊं ॥

अंत—दो० ॥ श्रीधर विजय कपीश की पढ़े सुनै मन लाय। महावीर खेड़ापती पूरे मन की चाय ॥ अथ २१ कवित्त की अनुक्रमणिका ॥ कवित्त ॥ ॐ नमः प्रथमजा

जगत में विजय हनुमानादि की विपत्ति ते छिकिरि छोटी। पईं है गयो गढ़ कोट पै दशानन मार गढ़ राम का हाल पायी ॥ मस्यो मिरि मलिकादि बीर की राम को हौत हुं पुष्प के पात सारी ॥ राम के नाम ते राम का चरित है साठ इक बीस कवि काम्य छोटी ॥ पठन करने का फल ॥ श्रीधर कही जो हनुमान विजय ताको पाठ करैया मंत्र का मपूर के पत्त सों झाड़ा दवे ता दृष्टि मुष्टि भूत प्रेतादिक दूर होय अन्न धन प्राप्ति होय सब पीड़ा दूरि होय राम्य मान्य होय ॥ इति फलम् इति श्री हनुमान विजय श्रीधर कृत संपूर्णम् लिपतं संवत् १९२७ गोकरननाथ पढि कानपुर निवासी। राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम ॥

विषय—हनुमान जी की वीरता और महिमा का वर्णन ॥

संख्या ४४४ पी हनुमान विजय, रचयिता—श्रीधर गौड़ (सलेमाबाद पुष्कर), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप-प्राचीन गलित, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९११ वि०, लिपिकाल—सं० १९१२ वि० प्राप्तिस्थान—श्री राम अधार मिश्र, ग्राम—रामनगर डाकघर—फकीमपुर, जिला—खीरी।

आदि-अंत—४५४ ए के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है।—इति श्री हनुमान विजय श्रीधर कृत संपूर्णम ॥ लिखतं संवत् १९१२ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे तिथौ पंचमी (नाग पंचमी) मिश्र पठनार्थ बद्रीदत्त जोशी ॥

संख्या ४४४ सी सामुद्रिक, रचयिता—श्रीधर गौड़ (सलेमाबाद राजपुताना), कागज—देसी, पत्र—७८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५९, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, लिपिकाल—सं० १९४१ = १८८४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सालता प्रसाद दूबे, ग्राम—जदवापुर, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कृष्ण जनुमाथो जयति ॥ अथ सामुद्रिकं लिख्यते ॥ यह ग्रंथ के देखने सूं संपूर्ण जन्म के हवाल मालुम होयगा ॥ आयुर्दाय होगा कितना वर्ष जीवना होगा सो ज्ञान होगा। जो सौ सुप किंवा दुप होगे जाका जो सौ वर्ष सौं होने वाला है सो ज्ञान हायेगा कितना इसको पुत्र होगा किंवा कन्या होगी किंवा नपुंसक होगा किंवा वन्ध्य होगा सा सब हाल लिया ज्ञान होगा ॥ कितने की सौं भोग है सो हाल मालूम होगा ॥ राजा होने का चिन्ह प्रजा होने का चिन्ह धनी होने का चिन्ह पंडित होने का चिन्ह साधु होने का चिन्ह चोर होने का कृपण सुषी दुषी पापी पुन्यवान होने का सब हाल मालुम होने के वास्ते नाना प्रकार के संपूर्ण चिह्न का हाल लिखा जो है सो जानने वास्ते बड़ो परिश्रम करके यह ग्रंथ संग्रह हो गयो है। यह ग्रंथ बड़ा दुर्लभ है सो संपूर्ण प्राणियों के ज्ञान होने के वास्ते प्रगट हुआ है इस मन मै बड़ा उपकार ज्ञान होगा ॥ कोई मतांत को श्री ब्रह्मा जी हरि भगवान सो प्रश्न करै हैं कि हे प्रभू पुरुष का लक्षण स्त्री का लक्षण यथावत आप करके हमसों कहो जिससे शुभ अशुभ का परिज्ञान संपूर्ण प्रजामात्र को होवै ॥

अंत—श्री महादेव जी श्री भगवती पारवती जी सों कहे हैं कि हे गिरिराज नदनी प्रिये यह सामुद्रिक शास्त्र को श्री कृष्ण भगवान जू श्री ब्रह्मा जू सो कहा है। यह सामुद्रिक शास्त्र को यदि कोई प्रणी श्रवण करे याको पढ़े पढ़ावै तो यह सामुद्रिक शास्त्र के जानने सो वा प्राणी वुद्धि मान पंडित होके सपूर्ण ससार के मध्ये नाना प्रकार के चिंता को त्याग करके सुपी होगा सपूर्ण कामना को पावेगा ॥ इति श्री तत्र सामुद्रे हर गौरी संवादे सामुद्रिक लक्षणं सपूर्णम् स्त्री पुरुष रा लक्षण शुभा शुभ कथन समाप्तम् लिपतं दयाराम पंडित संवत् १९१४ वि० जन्माष्टमी ॥

विषय—सामुद्रिक।

संख्या ४५४ डी. शिक्षा कका वत्तीसी, रचयिता—श्रीधर गौड़ (सलेमनाबाद) कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामअधार मिश्र, ग्राम—नगर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शिक्षा कका वत्तीसी लिप्यते ॥ ककारे कर्म धर्म कुल रीति सभारो। खखारे खाड़े खूंचे पग मति धारो। गगारे गर्व छाडि वे गर्वहि रहिज्यो। ववारे वर आया को आदर करिज्यो ॥ ङ ङा रे नमस्कार नित्य सूरज देवन ॥ चचारे चतुर पुरुष की संगति सेवन। छछारे छलीवली के संग न फिरज्ये।

अत—आ आ आरे आदर भाव सवन सों कीजे ॥ इ इइरे ईश्वर को सुमिरण चित दीजे। ई. ईईरे ईर्षा द्वेष त्याग जो मन की ॥ उ उऊरे उधर इधर तो देपो तन की। ऊ ऊऊरे ऊच पदी परमेश्वर देसी ॥ ए एएरे एक वार सुपदुप की कहसी ॥ ऐ० ऐऐरे ऐसी करणी तो कवहु न रहिये ॥ ओ ओओरे ओलंभो प्रभु को क्यों सहिये ॥ औ औऔरे और काम तो सवही दूराग ॥ अ अं अ रे अंग हीण हरि भक्त विहूणा ॥ अः अ अ रे अः अ करतो जल नहिं पीजे ॥ ऋ ऋ ऋरे ऋण माथे कवहूं नहिं कीजे ॥ ऌ ऌ ऌरे ऌ ऌ करतो घर घर नहि फिरजे ॥ ॠ ॠ ॠरे ऋद्धि सिद्धि दाता हिय धरिजे ॥ दोहा ॥ यह शिक्षा वत्तीस को जो कोइ वाचै सार। श्री धर साचा हेत सू परजा करै जुहार ॥ इति श्री शिक्षा कका वत्तीसी संपूर्ण समाप्तः ॥

विषय—शिक्षा के ३२ छंद।

संख्या ४५४ ई. शिक्षा कका वत्तीसी, रचयिता—श्रीधर गौड़, कागज—आधुनिक, पत्र—८, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रमाकांत शुक्ल, ग्राम—पुरवा गरीवदास, डाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़।

संख्या ४५५ ए. शालहोत्र प्रकाशिका, रचयिता—श्रीधर कवि, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१४०, आकार—११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वद्रीसिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सालहोत्र लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री गणपति गौरी गिरा पति हरि हर के पद ध्याय । श्रीधर विरचित ग्रंथ को है कुलके सुखदाय ॥१॥ अथ छप्पै ॥ सिर पर लसत किरीट भाल में तिलक विराजत । कुंडल कानन मांहि गरे बन माला छाजत । पीताम्बर कटि कसे हाथ दक्षिण तर बनवर । स्यंदन में आरूढ़ कहुं रसी धांए कर । टिग पारथ सों मुसुक्यात किमी पग को छेमा करै । यदि वैप गोविंद अनंद में मंगल श्रीधर को करै ॥ २ ॥ अन्यच ॥ ब्रह्मा के सुत अत्रि अत्रि के चन्द्र बखानो । जक स्वरूप भयो तासु वंशै शुभ ज्ञान निधानो । तासु वंश में भये मुनिंद्र महिपति जानो । भगर साल मक दीप तासु राज उर आनो ॥ तिन पर राम जो युद्ध करि यदि क्षोणि सुर पुर गये । सूत भूप भये यदि देस में सकल उपद्रव बहु हुये ॥

अंत—फिरि दीजै ब्याम्ही त्यसो आहुति एक हजार ॥ गाई को घृत छानि कै करै सुधि बढ़ार ॥ देई दक्षिना भांति बहु विप्रन को यदि जानि । मधु मांगी को बरस किय सांति तासु की मानि ॥ इति श्री सालहोत्र प्रकाशिकायां श्रीधर सुकवि विरचितायां सिक्षा कांडे शाला उपद्रव सांति बरनन नाम सप्त विंसति अध्याय ॥ २७ ॥ इति श्री सालहोत्र ग्रंथ श्रीधर सुकवि विरचित प्रथम सिक्षा कांड समाप्त शुभ मस्तु श्रावण मासे शुक्ल पक्षे तिथि एकादशम्यां रविवार लिखा दसी ॥ संवत १९२० वि० सन १२७० फसिली ॥ सालहोत्र समाप्त लिपि कै कहुं तपर ॥ सीता राम राधा कृष्ण पारबती शिव—

विषय—इस सालहोत्र में २७ अध्याय है सो वर्णन । (१) ग्रंथ निर्माण वर्णन अश्व उत्पत्ति (२) बाजी वर्णन (क्षत्री वैश्य शुद्र संकर) (३) बाजी उत्पत्ति देश वर्णन उत्तम मध्यम अधम देश बाजो (४) सिक्षा कांड बाजी रंग वर्णन शुभा शुभ रंग परिलक्षण रंग मंगल अष्टक श्याम चरण रंग श्याम कर्ण पंचकल्याण रंग (५) अशुभ लक्षण (६) भौंरो वर्णन (७) अशुभ भौंरी वर्णन (८) नासिका वर्णन, (९) दीप अंग वैकार वर्णन (१०) शुभ लक्षण (शुभ भौंरी लक्षण) (११) अवस्था वर्णन (१२) घोड़ी हमी की चेष्टा—बाजी वर्णन शुभ चेष्टा, (अशुभ-चेष्टा) (१३) मन विचार (१४) अश्व सत का विचार (१५) बाजी जन्म विचार (१६) बाजी जन्म वर्णन (आयु प्रमाण) (१७) घोड़ के प्रसव (तभी से बछेरा की विधि) बखान (१८) दूध पिलाना और उपचार (१९) हय को स्वरूप (२०) अश्व वेग वर्णन (२१) अश्व आरोहक गुण (असवार गुण) (२२) अश्व ताड़न विधि (२३) अश्व फेरन विधि (२४) अश्व को सकुन वर्णन (२५) शाला बनावन विधि (२६ बाजी प्रवेस विधि (२७) हय शाला के उपद्रव कथन ।

संख्या ४५५ घो शालहोत्र प्रकाशिका रचयिता—राजा श्रीधर (ओयल), कागज—देशी, पत्र—२८२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९९१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९९ वि लिपिकाल—सं० १९१९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री उमरावसिंह ग्राम—मदौवा, डाकघर—मछरहटा, जिला—सीतापुर ।

आदि—४५५ क के समान ।

अंत—इति श्री सालहोत्र प्रकासिकायां श्रीधर सुकवि विरचितांयां चिकित्सा कांडे दाना विधि वरननं नाम चतुर चत्वारिंशो अध्यायांम ४८ सालहोत्र समाप्त सुभ मस्तु संवत १९३९ साके १८०४।

संख्या ४५६. छींक और शकुनविचार, रचयिता—श्रीधर (संगृहीत), कागज—आधुनिक, पत्र—१५, आकार—६ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामनाथ पाढे प्रधानाध्यापक प्राइमरी पाठशाला, ग्राम—कुरही, डाकघर—जिठवारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ प० श्रीधर कृत संगृहीत शकुनवंती प्रारंभः ॥ प्रथम छींक विचार लिष्यते ॥ प्रथमहिं भाषों छींक विचारा। सकल सुभासुभ मति अनुसारा॥ छींक पीठि की शकुन उचारें। वाइ कारज सबी सँवारें ॥ सन्मुख छींक लराई भासैं। छीक दाहिनी द्रव्य विनासै॥ ऊँची छींक कहै जय कारी। नीची छींक होय भयभारी॥ अपनी छींक महा दुष दाई। ऐसे छींक विचारो भाई॥ छीक सूँघनी छल कर लीनों। छरदी घाँस कही फल हीनो॥ वाइ ऊँची पीठि की। छींक कही सुखकार। नीची सन्मुख दाहिनी, अपनी छींक असार॥

दो नयन षट कर्ण भुजा रवि सजाणो। पोषा तत्त्व प्रमाण स्याम अरु स्वेत वखानो॥ सात शीस दश पंच दश दो पंक्ति सो है। नख शिख पंचक ईश करण शिव सख्या दो है॥ पष पष प्रति पंच दस अवर षट अगला चरण। श्रीधर सांचे देषिये ब्रह्म रूप अशरण शरण॥ १॥ पोल पोल कर देषि आंपि अन्तर की सोंची। विन समुझे सब कूठ कूट की पोथी बाँची॥ च्यार वेद षट शास्त्र आठ व्याकरण पुनीता। साँख्य योग वेदान्त भाष्य उपनिषद गीता॥ दोहा—अक अक प्रति अग सब, अखिल सृष्टि पूरण करण। श्रीधर साँचो देषिये, ब्रह्मरूप अशरण शरण॥ २॥ इति भड्डली विचार सपूर्ण।

विषय—पृ० १ से पृ० ८ तक—छींक विचार, शकुन कुत्ते आदि की बोली और भूमि खोदने के विचार से, शूद्रादि के मार्ग में मिलने का फल, नकुल तथा चक्वा मिलने का फल, यात्रा के समय के शकुन, यात्रा के समय के कुछ योग्य कार्य। पृ० ९ से पृ० २४ तक—द्वादस मास गर्भ प्रमाण, गर्भनाम, वर्षा संबधी विचार, बारहों महीनों में वायु तथा मेघ के सबंध से विचार। पृ० २५ से पृ० ३० तक—संक्राति विचार, ग्रहण विचार, छिपकली व गिरगिट को गिरने का विचार भिन्न २ अंगों के संबध से तथा श्रीधर कृत कुन्डलियाँ॥

संख्या ४५७. प्रश्न तंत्रमाला, रचयिता—श्रीकृष्ण मिश्र, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—६ × ३१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)— २८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आनद भवन पुस्तकालय, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गुरु गणधिप शारदाभ्योनमः॥ श्री राधा कृष्णायनमः॥ ॐ॥ अथ प्रश्न तंत्रे लिष्यते॥ श्री राधा राधा रमन सुमिरि चरन चित चारु। कियो मिश्र श्री कृष्ण तव

भाष्य प्रश्न विचार ॥ श्री गुरु गनपति सारदा सकल देव करी मद्गु । प्रश्न तंत्र वर्णन करहुँ करुना करी वर देहु ॥ तुरिय भवन लपि वृद्धि कहु निज प्रभु सुभ सुत हेरि ॥ के सुभ प्रभु की दृष्टि ते सुप गृह भू की देरि । कम तमिहे अधिकार बहु छुटे सु राख्यो रोकि । सपन लाहि बरनत बिजुध सो कहु लगन बिलोकि ॥ जो प्रश्न समै चरन लगन होइ । निज नाथ बिसुभ सुत लपि तस होइ ॥ सो छुटे बंधे ते सुनि प्रवीन । पुनि मसुभ होइ अधिकार हीन ।

अंत—बूझी तिय तन गौर अति गौरापे पित सोइ । सर्प सहित ताको मनुज यह जानत मत कोप ॥ प्रश्न तंत्र श्री कृष्ण यह बरन्यो प्रमानि दृषि । औरों पे पाते वहै तिनम लपो बिसेपि ॥ मितु मति सर्म इमी कह्यो मधु बस सामत भानि । मूक निरपि दैवज्ञ सब छमियो अपनी जानि ॥ किमो मिहर याराह जो ताजक प्रश्न बिचार । तिनके सुत सूछम किमो ताही को यह सार ॥ कृष्णादिक को मति निरपि टीका उत्तक कीन्ह निजमति सम पंडित सुप सोल पै पर्क कीन ॥ तेही के अनुसारसो बरन्यो प्रश्न बिचार ताजक के मत के बर बाढ़े ग्रंथ अपार ॥ समर सिंह कृत ग्रंथ में ताजक लप्यो विचित्र । दास नरायन को किमो निरख्यो परम पवित्र नील कंठ को आदि दै ताजक तंत्र अनंत । अमित लोग तिनमें पर द्विज वर तिन्हे अनंत ॥ लपि हाते भयभीत नर कलि के अति बिस्तार ताते मैं सूछम रच्यो यह सुनि प्रश्न बिचार । पितु हरितुके पारि लपि कहिना सुमति विचार ॥ रच्यो मिश्र श्री कृष्ण यह परहित निज पितु धारि ॥ इति श्री मंमिश्र हरिवृष परमार सिंह मकरंदा स्वात्मक श्री मंमिश्र लोकमण तनुज श्री कृष्ण चर्वरी कवि रचिते तिमिर प्रदोप प्रश्न तंत्र समाप्त ॥

विषय—प्रश्न विचार और शुभ अशुभ फल ।

संख्या ४५८. चाणक्यनीतिदर्पण, रचयिता—श्री चरक, कागज—आधुनिक, पत्र—२८, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—११६, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६१०=१८०१ ई०, लिपिकाल—सं० १६४२=१८८५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगादत्त ग्राम—ममौरा पोस्ट, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चाणक्य नीति दर्पण लिख्यते ॥ अथ प्रथमोऽध्याय ॥ तीन लोक के पालन करने वाले सर्व शक्ति मान विष्णु को सिर से प्रणाम करके अनेक शास्त्रों में से निकाल कर राज नीति समुच्चय नामक ग्रंथ को रचता हूं ॥ जो इसको विधि वत पढ़कर धर्म शास्त्र में प्रसिद्ध शुभ और अशुभ कार्य को जानता है वह अति उत्तम गिना जाता है ॥ मैं लोगों की हित की इच्छा से इसको कहूंगा जिसके ज्ञान मात्र से सर्वज्ञता प्राप्त हो जाती है ॥ निर्बुद्धि शिष्य को पढ़ाने से दुष्ट स्त्री के पोषण से दुखियों के साथ व्योहार करने से पंडित जन भी दुख पाता है ॥

अंत—राजा वेश्या यम अग्नि और पाठक याचक और बालको ग्राम कंटक अर्थात ग्राम वासियों को दुख देकर अपना निर्वाह करने वाला ये दूसरों के दुख को नहीं जानते ॥ हे बाले नीचे को क्या देखती हो तुम्हारा पृथ्वी पर क्या गिर गया तब उसने कहा रे रे

अंत—इति श्री सालहोत्र प्रकासिकायां श्रीधर सुकवि विरचितायां चिकित्सा काटे दाना विधि वरनन नाम चतुर चत्वारिंसो अध्यायाम ४४ सालहोत्र समाप्त सुभ मस्तु संवत १९३९ साके १८०४ ।

संख्या ४५६. छींक और शकुनविचार, रचयिता—श्रीधर (संगृहीत), कागज—आधुनिक, पत्र—१५, आकार—६ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामनाथ पांडे प्रधानाध्यापक प्राइमरी पाठशाला, ग्राम—कुरही, डाकघर—जिठवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम: ॥ अथ प० श्रीधर कृत संगृहीत शकुनवती प्रारंभ: ॥ प्रथम छींक विचार लिप्यते ॥ प्रथमहि भाषौं छींक विचारा । सकल सुभासुभ मति अनुसारा ॥ छींक पीठि की शकुन उचारैं । वाई कारज सबी सँवारै ॥ सन्मुख छींक लराई भासै । छीक दाहिनी द्रव्य विनासै ॥ ऊंची छींक कहे जय कारी । नीची छींक होय भयभारी ॥ अपनी छींक महा दुष दाई । ऐसे छींक विचारौ भाई ॥ छींक सूँघनी छल कर लीनी । छरदी धाँम कही फल हीनी ॥ वाईं ऊँची पीठि की । छींक कही सुखकार । नीची सन्मुख दाहिनी, अपनी छींक असार ॥

दो नयन षट कर्ण भुजा रवि सजाणो । षोरा तत्त्व प्रमाण स्याम अरु स्वेत बखानौ ॥ सात शीस दश पंच दश दो पक्ति सो है । नख शिख पंचक ईश करण शिव संख्या दो हैं ॥ पग पग प्रति पंच दस अवर षट अनला चरण । श्रीधर साँचे देषिये ब्रह्म रूप अशरण शरण ॥ १ ॥ पोल पोल कर देषि आँषि अन्तर की साँची । बिन समुझे सब मूठ कूट की पोथी बाँची ॥ च्यार बेद षट शास्त्र आठ व्याकरण पुनीता । साँख्य योग वेदान्त भाष्य उपनिषद गीता ॥ दोहा—अंक अंक प्रति अग सब, अषिल सृष्टि पूरण करण । श्रीधर साँचो देषिये, ब्रह्मरूप अशरण शरण ॥ २ ॥ इति भड्डली विचार सपूर्ण ।

विषय—पृ० १ से पृ० ८ तक—छींक विचार, शकुन कुचे आदि की बोली और भूमि खोदने के विचार से, शूद्रादि के मार्ग में मिलने का फल, नकुल तथा चकवा मिलने का फल, यात्रा के समय के शकुन, यात्रा के समय के कुछ योग्य कार्य । पृ० ९ से पृ० २४ तक—द्वादस मास गर्भ प्रमाण, गर्भनाम, वर्षा संबधी विचार, बारहों महीनों में वायु तथा मेघ के सबध से विचार । पृ० २५ से पृ० ३० तक—संक्राति विचार, ग्रहण विचार, छिपकली व गिरगिट को गिरने का विचार भिन्न २ अगों के संबध से तथा श्रीधर कृत कुन्डलियाँ ॥

संख्या ४५७. प्रश्न तंत्रमाला, रचयिता—श्रीकृष्ण मिश्र, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—६ × ३३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आनद भवन पुस्तकालय, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गुरु गणधिप शारदाम्योनम: ॥ श्री राधा कृष्णायनम ॥ ॐ ॥ अथ प्रश्न तंत्रे लिप्यते ॥ श्री राधा राधा रमन सुमिरि चरन चित चारु । कियो मिश्र श्री कृष्ण तव

भाषा प्रश्न विचार ॥ श्री गुरु गणपति शारदा सकल देव करि नवु। प्रश्न तंत्र वर्णन करहुं करुना करि वर देहु ॥ तुरिय भवन छवि सृवि कछु तिन्ह प्रभु सुभ सुत हेरि ॥ के सुभ प्रभु की दृष्टि ते सुप गृह मू की हेरि। कन तनिहे अधिकार बहु सुयो ज्ञ राख्यो रौकि। भयन ताहि बरवत विहुम सो कछु लगन विकोकि ॥ जो प्रश्न समै चरन लग्न होइ। तिन भाय क्रिसुम सुत कवि तस होइ ॥ सो पूछे बंधे ते सुमि प्रवीन। पुनि मनुज होइ अधिकार हीन।

अंत—पूछी तिय तम और अति भीलाये चित सोइ। सर्प सहित ताकी मनुज यह आगम सब कोय ॥ प्रश्न तंत्र श्री कृष्ण यह बरन्यो ग्रयनि देपि। औरों के माते बडे तिनमे छपी विसैपि ॥ मितु मति समै इमी कह्यो प्रभु यस सामत जानि। मूल निरपि देवज्ञ सब कमियो अपनी जानि ॥ कियो मिहर बाराह जो जातक प्रश्न विचार। तिनके सुत सूक्षम कियो ताही को यह सार ॥ कृष्णादिक को मति निरपि टीका रतनक कीन्ह निजमति सम पंडित ज्रुप सोऊ पै पति हीन ॥ तेही के अनुसारसो बरन्यो प्रश्न विचार ताजक के मत के घर बाढ़े ग्रंथ अपार ॥ समर सिंह कृत ग्रंथ मैं ताजक छप्यो विचित्र। हास नरायण को कियो निरप्यो परम पवित्र नीलकंठ की जानि है ताजक तंत्र अनंत। भनित जोग तिनमें धरे द्विज वर तिन्हे मनंत ॥ छपि होते भयभीत नर लखि क अति विस्तार ताते मैं सूक्षम रच्यो यह सुमि प्रश्न विचार। पितु देहितुके याहि छपि कहियो सुमति विचार ॥ रच्यो मिश्र श्री कृष्ण यह परहित मित्र पितु जारि ॥ इति श्री नैमिश्र हरिवृत्त चरनार विंद मकरंदा स्वादक श्री नैमिश्र कोकमन तनुज श्री कृष्ण चर्वेदी कवि रचिते तिमिर प्रदीप प्रश्न तंत्र समाप्त ॥

विषय—प्रश्न विचार और शुभ अशुभ फल।

संख्या ४३८. चाणक्यनीतिदर्पण, रचयिता—श्री लाल, कागज—आधुनिक, पत्र—२८, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३०=१८७३ ई०, लिपिकाल—सं० १९४२=१८८५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगाधर, ग्राम—समोरा लेवा, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चाणक्य नीति दर्पण लिख्यते ॥ अथ प्रथमोऽध्याय ॥ तीन लोक के पालन करने वाले सर्व शक्ति मान विष्णु को सिर से प्रणाम करके अनेक शास्त्रों में से निकाल कर राज नीति समुच्चय नामक ग्रंथ को रचता हूं ॥ जो इसको विधि वत पढ़कर धर्म शास्त्र में प्रसिद्धि शुभ और अशुभ कार्य को जानता है वह अति उत्तम गिना जाता है ॥ मैं लोगों की हित की इच्छा से इसको कहूंगा जिसके ज्ञान मात्र से सर्वज्ञता प्राप्त हो जाती है ॥ निर्बुद्धि शिष्य को पढ़ाने से दुष्ट स्त्री के पोषण से दुखियों के साथ व्यौहार करने से पंडित जन भी दुख पाता है ॥

अंत—राजा वेश्या यम अग्नि और पाठक याचक और बालक ग्राम कंटक अर्थात ग्राम वासियों को दुख देकर अपना निर्वाह करने वाला ये दूसरों के दुख को नहीं जानते ॥ हे बाले नीचे को क्या देखती हो तुम्हारा पृथ्वी पर क्या गिर गया तब स्त्री कहा रे रे

मूर्ख नहीं जानता कि मेरी तरुणता रूप मोती गिर गई उसको खोज रही हूं ॥ हे केतकी यद्यपि तू सापो का घर है तो भी निष्फल है तुझ में कांटे भी हैं टेढ़ी भी है कीचड़ मे तेरी उत्पत्ति है तू दुख से मिलती है तथापि एक गंध गुण से सब जीवों को प्यारी हो रही है। निश्चय है कि एक भी गुण सपूर्ण दोषों को नाश कर देता है ॥ इति श्री चाणक्य नीति दर्पण भाषा टीका सपूर्ण समाप्त. लिखत ज्ञानीराम वैद्य स्वपठनार्थ सवत १९४२ वि० श्रावण शुक्ला सप्तमी ॥

विषय—भवानीदास कृत दोहा छंद आदि का भाषा में टीका।

संख्या ४५९ काव्य सरोज, रचयिता—श्रीपति (कालपीनगर), कागज—देशी, पत्र—६७, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०७, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७७७=१७२० ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री कृष्णविहारी मिश्र, माडल हाउस, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ काव्य सरोज लिख्यते ॥ सोरठा ॥ लसतबाल बिधु भाल अरुन बसन मनि माल उर। शंकर सुवन दयाल वदत पद सुर असुर नित ॥१॥ सेवक जन प्रतिपाल एक रदन वारन वदन। बिघन हरन ततकाल बिपति कदन मंगल सदन ॥२॥ दोहा॥ अनि समस्वाद महान को जाणो सुख सरसाइ। राचत काव्य सरोज सो सीपति पंडित राइ ॥३॥ सवत मुनि[७] मुनि[७] मुनि[७] शशी[१] सावन सुभ बुधवार। अतिम पचमी को लियो ललित ग्रंथ अवतार ॥ ४ ॥ सुकवि कालपी नगर को द्विज मनिशी पतिराइ। जस सम स्वाद जहान को वरनत सुष समुदाय ॥ ५ ॥ अथ काव्य लक्षण ॥ शब्द अर्थ बिन दोष गुन अलंकार रसवान। तासों काव्य बखानिये शीपति परम सुजान ॥ ६ ॥ शक्ति निपुनता लोक मत बिन पति अरु अभ्यास। अरु प्रतिभाते होति है ताको ललित प्रकास ॥ ७ ॥

अंत—अथ वीर रस विभाव ॥ युद्ध दान अरु लघु दया वर्ड़ जबै उत्साह। हैं विभाव रस वीर को प्रगट करैं कविनाह ॥ २० ॥ वीरयुद्ध रसालवन ॥ युद्ध कौराव न आवत है। जो सहा मुनि देवन को दुषदायक ॥ जभ अराति को दभ दलो सुरवानर नाहि सको सहि सावक। जो हनुमान सकोह करैं विफरैं नल नील जुहैरन लायक ॥ मूछि मरोरि विलोकि भुजा निज माधुरी हास हसे रघुनायक ॥२१॥ मघवा रिपु रन आवत ही परवब-प्रलय वहरान लगी ॥ जित ही चित्त भागि चले कपि कायर गातन में थहरान लगी ॥ कवि श्री पति जू उत्साह नहीं हिय लच्छन के छहरान लगी ॥ डगरे डग के हरि के अनुहारि सुसुक्ष महा फहरान लगी ॥ २२ ॥

संख्या ४६०. अनवर चंद्रिका, रचयिता—सुभकरन (मुलतान शहर), कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—१० × ४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—९२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७१ वि०, लिपिकाल—सं० १८९२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री मधुसूदन जी वैद्य, डाकघर—सीतापुर, जिला—सीतापुर।

आदि—अथ अनवर चंद्रिका लिख्यते ॥ छप्पै ॥ सुसुप सुपद ससि धरनि धर हेरब अब सुत ॥ एक रदन गज करन सरन दायक से दुर जुत। कपिल विनायक विकट विघन

भासक गनाधि पति धूम्र केत वर भरन मरन दुख हरन अगति गति ॥ प्रभु लंबोदर बारन बदन विद्यामय बुधि देव मय सुम करन दास दुखत करन जै जै जै संकर तनय ॥ अथ राज कुल वर्णन ॥ मनि सैफुल्लह साहि साहि सफुद्दी जानी। साहिले साह सुजान साहि असगर पहिचानौं ॥ जमन्वर साहि समर्थ मुनौवर साहि पय्यसम। हासिम साहि प्रचंड साहि कासिम सु अनुपम कहि केसवर साहिब बलंद बल कैसर साहि सुजान चित पुनि माणिक मनदर साहि कुल कुल मंडन जसु किय अमित ॥

अंत—जन्म जलधि पानिप बिमल भो जग अर्घ अपार। रहै गुनी व्हाँगर परै मत्थे न मुक्ता हार ॥ मुंह पखारेहु रहे परयो पीकि कच मार। जो सिरता वारे महिमा महि साहिपनु राजा राइ। प्रगटत बड़ता आपनी मुकुर पहिरियत पाइ। चली आइ सांचे करै हाथिन को है पाइ नहिं गुपता पहि पुर बसै धोबी और कुम्हार ॥ विषम बृषादित की तृषा जिये मतीरन सोधि। अमित अपार अगाध जल मारे मूढ़ पयोधि ॥ परे देही मोती सुगम तजय गरज मिसोक केहि पहिरै अंग दग पुलति सम्मति हँसति सी नाक। इति श्री अमवर चंद्रिकायां सतसई बिहारी लाल कृत १७ सपर हो प्रकाश। इति श्री बिहारी लाल कृत सतसई समाप्त शुभ मस्तु पैत माघे शुक्ल पक्षे तिथौ ११ रविवासरे संवत् १८६१ राम राम।

विषय—पृष्ठ १ से ४ तक साधारण नायिका और राजवंश, ५ से ८ तक नख सिख, ९ स १७ तक प्रेम गर्विता, १८ में रूप गर्विता १९ से १९ तक मानिनी नायिका, २० से सुरतांत, २१ से २७ तक साधारण परकीया, २८ से २९ तक दस दसा, ३० में सात्विक भाव, ३१ में मद पान, दस हाव भाव, ३२ से ३६ तक नव रस, ३७—४४ तक नायक नायिका सखी उक्ति षट्ऋतु आदि वर्णन।

संख्या ४६१ ए. ककहरा, रचयिता—सुदामा जी, कागज—साधारण, पत्र—७, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य। लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री शंकर राम तिवारी, ग्राम—मुरा डीह, डाकघर—कालाकांकर जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री राम जी सहाई। कक्का कलजुग नाम अधारा। जेहि सुमिरे भव उतरै पारा ॥ साधु संग मिलि हरि रस पीजै। जीवन जन्म सुफल करि लीजै ॥ खक्खा खोजहु सकल जहान। जाको गावत वेद पुरान ॥

अंत—सस्सा संत की करौ बड़ाइ। महिमा अमित सके को गाइ ॥ शिव सारी सत गुरु के चरना। रसना एक कहाँ लौं गौंड ॥ षष्षा खैंचि लीन गुरु अपनी ओरा। माया जाल फंद जिम तोरा ॥ निरभै भये सकल भय त्यागी। जिनके मन गुरु चरनन लागी ॥ सस्सा सोच विचार मिटि जाइ। दीपक दीन गुरु ज्ञान लगाइ ॥ मिट सोच भय बिमल प्रकास। मन सूरज जस कीन प्रकास ॥ हा हा करि गुरु सरन आएव। श्री गुरु चरनन मन लाएव ॥ जैसे चन्द्र गई निसि मेरा। प्रगट भानु जब भए सवेरा ॥

विषय—पृ० १ से पृ० ११ तक—"क" वर्ण से "ह" वर्ण तक के प्रत्येक अक्षर को पद के आदि में रख कर उपदेश वर्णन।

संख्या ४६१ बी. नाइन भेष, रचयिता—सुदामा, कागज—साधारण, पत्र—७, आकार—८ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री व्रजभूषण सिंह, ग्राम—सुकवारा, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री राधा कृष्ण जी ॥ अथ नाइन भेष ॥ चौपही ॥ एक समै वृजचन्द नन्द सुत मन में यही विचारी। करि सरूप नाटनि को, जैये देखन प्राण प्यारी ॥ लहँगा पहिर केसव की लीन्हों और कुसुम की सारी। अँगिया पहिर स्याम माटन की अति छवि देत किनारी ॥ पहिर लिये नक सिक से गहने चले कृष्ण बरसाने। ऐसो भेष धरो मनमोहन कोऊ भेद न जाने ॥

अंत—जाके हिये प्रेम है पूरण, सोई हरि के दासा। विना प्रेम हरि निकट न आवें, कर करि कोटि प्रयासा ॥ सो तुम प्रेम प्रेम करि हरि सों टोरी मन की बाधा। ह्वै प्रसन्न तुमको वर दैहैं श्री गुविन्दा अरु राधा ॥ इति श्री नाइन भेष समाप्त लिख्यते लाले उमराव सिंह मुदर्रिस परगनह तिंदवारी, शुभ मिती चैत्र सुदी ६ शनौ सम्वत् १९१६ मुकाम चाँदा।

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—श्याम का नाइन वेष धारण करना, उनके वस्त्रालंकार का वर्णन, कृष्ण का ललिता के धाम में पहुँचना, वहाँ राधादि सखियों के समारोह का वर्णन, पारस्परिक परिचय, नाइन द्वारा राधा के उबटना तथा शृंगार करने का वर्णन। (२) पृ० ६ से पृ० १० तक—राधा के पैरों पर जावक लगाते हुए कृष्ण को हँसी आ जाना और चित्रा का पहिचानना, चित्रा तथा ललिता की काना फूसी। चित्रा का जावक देखने के बहाने से नाइन (कृष्ण) का पग उठा देना राधा का पद्मांकुश देखकर कृष्ण को पहिचानना और विविध विनय करना। ग्रंथकार का परिचय—हँसि के चले कृष्ण जी मंदिर मन में अति सुख मानो। कहिये कहा 'सुदामा' हरि को, केहू भेद न जानो ॥ लीला के पढने का फल वर्णन, हरि प्रेम प्रशंसा।

संख्या ४६१ सी. सुदामा जी की बाराखड़ी, रचयिता—सुदामादास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्रीप्रसाद शुक्ल, ग्राम—शिवगंज, डाकघर—हरगाँव, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुदामा जी की बराखड़ी लिख्यते ॥ कका—कमल नयन नारायण स्वामी। बसैं द्वारका अंतर जामी ॥ वासुदेव लकर पड छाजै पद्युमन अनिरुद्ध विराजै ॥ कका कलजुग नाम अधारा प्रभु सुमिरौ उतरौ भव पारा ॥ साधु संगति करि हरि रस पीजै ॥ जीवन जन्म सफल करि लीजै ॥

अंत—यया—यह अवसर नहि वारंवारा। ताते पुनि पुनि करत पुकारा। मानव मित्र तुम चतुर सुजाना। विष रस छाड़ि भजौ भगवाना ॥ ररा रटन हरी सो लावो हीरा जन्म जनि वादि गंवावो। ऐसो हीरा जो गम जाई। अवसर चूके फिर पछताई। लला—लाल अमोलक मन मल हरना। तनुमंडार जतन करि धरना ॥ प्रभू लाल गुरु देव लपाया

तृष्णा लोभ सबपूरि गँवाया ॥ बबा—बारबार नामी पद माथा ॥ उन पद कमल चरण चित राखा ॥ ससासत गुरु की का करौं बड़ाई । महिमा अप है बरनि न जाई । चित लागे सत गुरु के चरणा । रसना एक कहाँ लगि बरना । षषा—षोच कियो गुरु अपनी ओरा । माया फंद पलक में तारा । निर्भय भय पाप सब त्यागे । जब गुरु चरनों में चितु लागे ॥ ससा—सोच विचार मिटे भ्रम सबते । दीपक ज्ञान दिये गुरु जबते ॥ नास्यो तिमिर भयो परगासा । मानो रवि पुरण करि भासा ॥ हहा—हरि गये पाप पराचत आपू । श्री गुरु चरण कमल परताप ॥ जैसे धूप चहुं दिसि धरा । प्रगट भानु जब भयो उजेरा ॥ लक्षा—लेखे को हरि जी को नामा । देखे को अवराह समाना । पलमें का प्रभु जी को ध्याना । सेवन को गुरु चरण समाना । क्षक्षा—छांडन विषय बदन सो कहिये । संत गुरु चरणन हो रहिये । नाम मधुर रस पियो सुजाना, गर्भ बास नहिं होइ पयाना । बारापढ़ी अनंद गुण गावों सब संतन का सोस नमावों ॥ दीन पतित है दास सुदामा । नमस्कार गुरुदेव सुनामा ॥ इति श्री सुदामा जी की बारापढ़ी समाप्तः लिखतं पं० बेनी माधौ शुक्ल छद्रपुर निवासी चैत मासे शुक्ल पक्षे शनि वासर संवत १९२४ वि० ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री ॥

विषय—संसार के जालों से बचना, ईश्वर की शरण पकड़ उसकी उपासना, गुरु और संतों की सेवा करना आदि उपदेश ।

संख्या ४६१ डी. सुदामा जी की बारहखड़ी, रचयिता—सुदामा जी, कागज—देसी, पत्र—३, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४५ = १८८८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बाबा सिंह, ग्राम—मिठकिया, डाकघर—ईसानगर, जिला—खीरी ।

संख्या ४६१ ई बारहखड़ी, रचयिता—सुदामा जी, कागज—साधारण, पत्र—५, आकार—६ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महंत मोहनदास, ठिकाना स्वामी पीतांबर दास, ग्राम—सोमामऊ, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

संख्या ४६१ एफ. सुदामा की बारहखड़ी, रचयिता—सुदामा कागज—साधारण, पत्र—५०, आकार—६½ × ६½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—गोस्वामी द्वारा श्री व्रजीनाथ भट्ट, दुसेनगंज, लखनऊ ।

संख्या ४६२ वैद्यक मित्र प्रिया, रचयिता—सुदर्शन (हमीरपुर) कागज—आधुनिक, पत्र—६६ आकार—९½ × ७½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८५, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १७२२ = १६०२ ई०, लिपिकाल—सं० १८०२ = १७४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री ताराचंद मुनीम द्वारा मुरलीधर महादेव प्रसाद, ग्राम—मिरजागंज जिला—मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ अथ वैद्यक मित्र प्रिया लिख्यते ॥ दो०—गज मुख मादक सुभग अति एक रदन जगवंद । बाल भाल विधु अनुज से सुमिरी गिरिजानंद ॥ १ ॥ पूग नयन सुभ मनि करन हरन दरिद्र समाज । कमल नयन धनु

बुधिवर महा दान गज वाज ॥ २ ॥ रिपु मर्दन सकट हरन करन सदा आनंद । मूपक वाहन दरसते मिटत सकल दुप द्वंद ॥ ३ ॥ चौ० ॥ एक रदन फरसा कर लीने । गज आनन सुन्दर सिर चीने ॥ कुमति हरन सुभ मति उपजावत । तुरत प्रवीन सुबुधि वर पावत ॥ धूप दीप मोदक कर पूजा । विद्या वर अस देव न दूजा ॥ प्रथम गणेस पठत द्विज गावैं । सुभ कारज मंगल जग पावैं ॥ मदन कदन सुत गुहगण नायक । अति वल विक्रम को तुव लायक ॥ महा दान दरिद्र नसावत । अति जसवंत निधन धन पावत ॥ भय सकर संग्राम सहायक । अष्ट सिद्धि दाता सुप दायक ॥ १ ॥ कविता मगला मुदित वपाने । सदा ध्यान गनपति उर आने ॥ दो०:—वाणी जू के वदन विधु, सुधा अमृत विप कंद । सिव चकोर जिमि चित वसैं, नहिं कलक सुप चद ॥

अंत—टीका ॥ सोंठि पीपर मिरच इन्द्र जव कुटकी हर्र मोथा वहेरे आमरे इनकी सम मात्रा ले क्वाथ कर हरद दारु हरद इनको चूरन करि डारे पियावे कटक ज्वर जाइ ॥ इति त्रिकुटादि क्वाथ ॥ अथ श्रृगाक ॥ ककरासिगी कुरे की छाल हर्र मेथी कचूर चिरायतो भारंगी, हरद कुटकी, पुहकर मूल सितावरि, चाव, सोंठि पीपर, कायफर, आँवरे देव दारु, वहेरे मिरच कटैया की जर, अरुसे की जर ॥ इनकी सम मात्रा ले काढ़ो कर प्यावे कटकु ज्वर जाइ × इति श्री सुदर्शन भट्ट विरचितायाँ भाषा स्फुट मंजरी काल ज्ञान मतांत सर्व वैधक सारे सर्व रोग चिकित्सा वैद्य के लक्षन तथा रोगी के लक्षन तथा नारी परीक्षा अरु जिह्वा परीक्षादि संग्रह हरीत मुनि धन्वत्तर अश्वनी कुमार अत्र सुसुति इति मतांत लिप्यते वधक विद्यासार ग्रंथ उत्तम शुभ मस्तु ॥ मिः सावन शु० १४ को पूरन भयो सवत १८८२ की साल में मन्दिर वलदेव जी के में लिपी छोटेलाल ब्राह्मण ने प्रति गिरधर लाल की पुस्तक पैंते उतारी प्रमान ग्रथ क्रयासार लक्षन अधिक गुण विधा ॥

विपय—वैधक कवि तथा आश्रयदाता का परिचय.—गिरधर सुत भिपजा प्रिया । भाषा कियो विलास । सार सार संग्रह कियो । संकल ग्रंथ मति आस ॥ × × × पंडित प्रगट प्रसिद्धि मय, हमीरपुर स्थान । पंच भ्रात तिहि वंश में । नाम सुदर्शन जान ॥ जन्म भूमि है तासु की । पुर पवित्र सुचि धीर । अति प्रवीन नर तासु के । वसत वेतवे तीर ॥ गहर वार कुल जगत जस । कालीस्वर महिपाल । कीन्हो राज कुठार गढ़ । सर्गन सहि नर पाल ॥ कवि जन ताके वंश को । कहँ लगि करैं वपान । प्रताप द्रुम सुत जासु को । उपजौ धर्म निधान ॥ सुप समूह संपति महत । निस दिन रहत अनद । सुभग नगर निज ओड़छो । मधुकर साहि नरिंद ॥ ताको सुत प्रसिद्ध महा नृप नृसिंघ सो देव । जेते देस विस नर करत भूपकी सेव ॥ दान करनपारथ समर, पति पूरनपरिवार । महाराज नृसिंघ को दियो सहाय भुजचार ॥ बुंदेल खंड वृत खंढ मे, मध्य देस में देस । पहार सिंघ महिपाल को संकत सकल नरेस ॥ तिहि कुल सुजान नृसिंघ नृप करी धर्म तुत रीति । द्वापर जैसे कृष्ण सों, करी स्वयवर प्रीति ॥ ताकी परजा सव सुखी अन्न वसन धन धाम । निरभय राज सदा रहे, अहि निसि आठों जाम ॥ ग्रंथ निर्माण काल.—सवत सत्रह सै वरप । लागी साल उन्नीस । रित वसत फागुन सुभग । कृष्ण पक्ष वृत ईस ॥ सन दिन सुभग चतुर्दशी, सिद्ध जोग तिथि वार ॥ प्रथम प्रहर आरंभ यह । ता दिन भयौ विचार ॥

संख्या ४६३. एकादशी महात्म, रचयिता—सुदर्शन, कागज—देसी, पत्र—१०१, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८२७, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०७ वि०, प्राप्तिस्थान—आनंद भवन पुस्तकालय, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दो० ॥ कृपा करी रघुबीर जब तब कवि किन्हा विचार किया महातम एकादसि रचि भाषा संसार ॥ १ ॥ सम्रह सै सतहत्तरि संवत मे संसार। भादौं स्वरू रवमार को कथा कीन्ह औतार ॥ मारग यह सुरलोक को कथा सुनै नर कोय गंगा की जो महतित है वरनत कवि चित सोइ ॥ प्रथमहिं भजौं मातु मैं गंगा। जेहि सुमरे उपजै मति अंगा। जे नर बसहिं गंग के तीरा। ते बैकुंठ जाहिं बलबीरा ॥ एक चित हुइ गंग नहावैं। तै नर सबै पदारथ पावैं।

अंत—जब सुनु कथा विचित्र यह भयो भद्र भव पास तबै कहै सब परसपर नारिन बहुत हुलास ॥ मातु कान्हि विधि दैहै पुत्र पदारथ जाय। घर घर मंगल साजहिं नर नारी करि आस ॥ जेहि दिन पुत्र भगट कर बासर। हरि सेमिकरि सब का आदर। अस्सम्य मास पछ उजियारा। रवि बासर कह भगट कुमारा ॥ मुनि के बालक आये आतुर विप्पा घर आये शुभ चातुर। यहां से आगे पृष्ठ नहीं अपूर्ण पुस्तक है ॥

विषय—वर्ष भर की चौबीस एकादशियों का माहात्म्य ॥

संख्या ४६४. रामाष्टक, रचयिता—सुकवि, कागज—देसी, पत्र—१ आकार—७ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नीलाल गंगापुत्र तिवारी, ग्राम—मिश्रिख, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि—ओं श्री रामायनमः ॥ ओं श्री राम राम रघुनंदन राम राम ॥ श्री राम राम भरता ग्रज राम राम ॥ श्री राम राम रण कर्कस राम राम ॥ श्री राम राम सरर्ण भव राम राम ॥ १ ॥ श्री राम राम सकलेश्वर राम राम ॥ श्री राम राम मधुकीश्वर राम राम ॥ श्री राम राम मधुकीश्वर राम राम ॥ श्री राम राम शरर्ण भव राम राम ॥ २ ॥ श्री राम राम करणे क्षण राम राम ॥ श्री राम राम करुणाकर राम राम ॥ श्री राम राम करुणा प्रिय राम राम ॥ श्री राम राम सरर्ण भव राम राम ॥ ३ ॥ श्री राम राम कमलेक्षण राम राम ॥ श्री राम राम कला प्रिय राम राम ॥ श्री राम राम कमला प्रिय राम राम ॥ श्री राम राम सरर्ण भव राम राम ॥ ४ ॥ श्री राम राम कमलाधव राम राम ॥ श्री राम राम जगदाश्रय राम राम ॥ श्री राम राम जगदाश्रय राम राम ॥ श्री राम राम सरर्ण भव राम राम ॥ ५ ॥

विषय—राम नाम माहात्म्य वर्णन।

संख्या ४६५ ए. अध्यात्म प्रकाश, रचयिता—सुखदेव, कागज—देसी, पत्र—२१, आकार—५½ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४५ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामस्वरूप मिश्र ग्राम—पंडित का पुरवा, डाकघर—संग्रामगढ़, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—अथ अध्यात्म प्रकाश भाषा लिख्यते ॥ अज्ञान तिमिरा धानां ज्ञानां जन शला कया । चक्षु रुन्मीलित येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥ सवैया ॥ थावर जंगम जीव जिते जग भांति अनेकन भेष धरे हैं । तामहिं सच्चिदानंद सुरूप सु आतम एक प्रकास करे है ॥ ताबिन जानत सिंधु सो लागत जाने ते गोपद तुल्य तरे हैं । वदित ताहि कहे सुषदेव सु ब्रह्म सदा सबही ते परे हैं ॥ व्यास मथन करि वेद सब, रच्यो ग्रंथ अतिसार । श्री गुरु शंकर देव जू, कीन्हो बहु बिस्तार ॥ तिन ग्रंथनि को समुझि मत, हिय धरि पर उपकार । भाषा करि सुषदेव कवि, रच्यो ग्रंथ अतिसार ॥ जैसे रवि के तेज सों अंधकार मिटि जात । अध्यात्म प्रकाश ते त्यों अज्ञान नशात ॥

अंत— जीव ईस न्यारो कहे पातंजलि मत काल । देह क्लेसन योग करि कहे मुक्ति सुखलाल ॥ प्रकृति पुरुष अरु तत्त्व को जाके होइ विवेक । यह मुक्ति सांषिक कहे ज्ञान भयो सब एक ॥ वैशेषक अरु न्याय पुनि होहु ताकी जानि । भेद बादरन के विषै, मुक्त पदारथ जानि ॥ अवर शास्त्रन के मते परे जाल में जाइ । कल्पन लों छूटै नहीं, जन्म मृत्यु है भाइ ॥ अपनों मत यह वेद सिर सबतें उत्तिम जानि । ताही को विश्वास करि भूल न अवरों मानि ॥ दुर्मति औरों नास्तिकी वेद विरोधी और । भूलि न तिन्हैं सुनाइये यह मत सब सिर मौर ॥ जिनके उर हरि भक्ति है, अरु गुरु भक्ति समान ॥ तिनके आगे खोलिये, यह उपदेश निदान ॥

× × × ×

इति श्री सुखदेव कृत भाषा अध्यात्म प्रकाश संपूर्ण शुभ मस्तु ॥ मिती आश्विनि सुदी परिवा नवरात्र का परथम दिन सं० १८४५ रविवासरे ॥ जो देषा सो लिषा मम दोषो न दीयते ॥ मुकाम लक्षनपुरी ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १५ तक—मंगलाचरण, प्रस्तावना, गुरु शिष्य की व्याख्या, ज्ञान की परिभाषा, ज्ञान के चार साधन, वैराग्य विवेक, आत्म निरूपण, एक ब्रह्म के तीन भेद मानने के कारण, ईश्वर वर्णन, चतुर्युग की अवधि, कल्प वर्णन, त्वपद वर्णन, त्रिगुण लक्षण, अज्ञान लक्षण, लिंग निरूपण, तत्वों के पंची करण का वर्णन, स्थूल देह का वर्णन तथा पूरे क्षरीर का विस्तृत वर्णन । (२) पृ० १६ से पृ० ३२ तक—पंच कोश वर्णन, कर्मों के लक्षण, आत्मा की सत्यता तथा शरीर के मिथ्यात्व का वर्णन, ब्रह्मनिरूपण, वर्णाश्रम अभिमान, आश्रम वर्ण अभिमान, तत्त्वमसि का भेद, जगदीश की देह का वर्णन, तत्त्वंअसि की व्याख्या, एक ब्रह्म के द्वादश नाम वर्णन, आनंद वर्णन, पर ब्रह्म वर्णन में असमर्थता का कथन । ब्रह्म की सत्यता तथा प्रपंच की असत्यता वर्णन । (३) पृ० ३३ से पृ० ४४ तक—उपादान तथा निमित्त कारण का वर्णन, भिन्न २ उदाहरणों से निज रूप का ज्ञान कराना ।

संख्या ४६५ वी. अध्यात्म प्रकाश, रचयिता—सुखदेव, कागज— साधारण, पत्र—३०, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री गजाधर चौबे, ग्राम—चौंदा, डाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

संख्या ४६१ सी. छंद विचार, रचयिता—सुखदेवमिश्र (कंपिला), कागज—देसी पीला, पत्र—११, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३१, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४२ = १८८६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण बिहारी मिश्र मालम हाउस, लखनऊ।

आदि—× × मे बाघेल गोत मनि भयो सुदि महिपाल ॥ बड़ा प्रताप सों तिन कियो अगमग कैंमो भाल ॥ १२ ॥ सूरज तें प्रमुदित भयो निर्मम बांघेल गोत ॥ ताम ताही सम किया सुदि महीप उदोत ॥ १३ ॥ परम पवित्र विचित्र नृप सर्व भये या वंश ॥ पहिले ही प्रगटत भये सुदि नृपति अवतंस ॥ १४ ॥ सुदि महीपति के भयो बहुरि महीप मनार ॥ सुमन कुंर सो अगममत जाके मन बहुवार ॥ १५ ॥ परमी पाल मनोर के भयो महीप सुजान ॥ मालुपरा नृपम मनो दूजो भूपर भाम ॥ १६ ॥ महिप सुजान सुजाम ते बहुरि भयो नृपराय ॥ जिनके यशकी जगत में महिमा कही न जाय ॥ १७ ॥ बहुरि नाहि बाहन भए राजन के शिरताज ॥ भान पाछे छीनि कै जिन जीते रिपु थाज ॥ १८ ॥ प्रगट भये तिनके बहुरि महाराज अयचंद ॥ निज प्रताप सों जिन कियो दुसासन को मद मद ॥ १९ ॥

अंत—सारद सोरह परनपर विरचि अंत लघु भाखि। याते रूप घनाक्षरी कहत सुकवि अब आखि ॥ २११ ॥ यथा ॥ सरूप है सुधामय सुजनन हेरि हेरि मिपट निहाल कियो सुकविन को समाज ॥ मेर सम रूपहि दपटि समसेर गहि बर करी छीनि पटेर जसि मन की पाज ॥ मंतु मृग मैमिम का मधुर समाज निज ओज पुंज सर सब सूरम को सिरताज ॥ महा बाहु हरनि पदर को न बहु है पहाड बदि मति को हिम्मति सिंह महाराज ॥ २१२ ॥ रूप घनाक्षरी अप गणाख्या शाहरयं ॥ जय भ्र बेर करि सेर समसेर बहादुर दीपार बाम विशाहरम सिंह समरथ दस्य सकरप बरपरम समान महा वीराधिवीर समर धीर परम धुरधर पराक्रम प्रबलधाम धवल सुजस सु चित्र गुर सुर्याधार प्रबलत श्री महाराज धिराज हिम्मत सिंह चिरंजीव ॥ २१३ ॥ गप अप कामरालपद ॥ बहुरि बहति अनुष्टुप जाति पुरली ९ पंक्ति १० इति श्री हिम्मत सिंह निमित्ते सुखदेव कृत छंदो विचार वर्ण वृत्ति माषा वृत्ति पिंगल सा भेति मात्र समाप्तम् ॥ शुभम् श्री संवत् १९३१ श्रावण शुक्ल चतुर्दश्यां भ गौ पुन ॥

संख्या ४६२ डी. फाजिल प्रकाश, रचयिता—सुखदेव मिश्र, कागज—देसी, पत्र—४४, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५० पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री हरिहर बख्श सिंह, ग्राम—समरेजापुर डाकघर—बेनीगंज, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ फाजिल प्रकाश लिख्यते। प्रथम वृत्ति अनुप्रास सार। प्रसन्न—दो०—पुरुष तुरु मैर्ड बरन वार वार जहं आइ। कहु वृत्ति अनुप्रास को पंडित कवि गमुराइ मंगलोरि ॥ आदि व वर्ण संपूर्ण वृत्ति अनुप्रासरूपा ॥ दो० ॥ कमल प्रथम

करुना करन कमला पति करतार । करतु कृपा कविराज को कामद कान्ह कुमार २ ॥ छंद त्रिभंगी । छेका नुप्राश इन दुहून को लक्षण । पहिले दश दश पर मुनि वसु वसु पर वहुरि सुरस पर विरति जहां । फनि भाषित मानो वुधिजन जानो गुरयक आनो अंत तहां । कहुं जगनज आवै कवि मन भावै श्रवन सुहावै गुनहि गहे । तिरभंगी नामा छद सुधामां अति अभिरामा कीर्तिलहै । ३ ॥ छेका नुप्राश ताको लक्षण ॥ दो० । तुक सौं तुक जोरैं जहां । चरन चरन शुभ वृत्ति अक्षर के स्वर होई सम छेका कहत सुवृत्ति ।

अंत—अथ लखत वंध सवैया—जव लगि वेद पुराण पुरुष पूरण नारायण । जव लगि भूधर भूमि भानु शशि घर तारायान । जव लगि गौरि गणेश सुर सुर पति सुर मुनिये । जव लगि गंग समुद रुद्र व्यासादिक गुनिये । कविराज फाजिल अली महावली कीरति लहै संपति समाज । संतति सहित सुचिरं जीव तव लगि रहै । ३२६ ॥ आशीर्वाद छप्पै ॥

स	त	रा	प	स	अ	क	धि	रि
चि	रं	जी	व	फा	जि	ल	प	ली
व	ग	व	न	ल्	न	स	र	प

इति श्री कवि कुलालंकार चूड़ामनि मिश्र शुकदेव कविराज विरचिते फाजिल अली प्रकाश संपूर्ण. ॥ सं० १९४० कार्तिक मासे कृष्णपक्षे तिथौ ७ चंद वासरे मेघ वर्ण मिश्रेण लिखित : फाजिल अली प्रकासम् ।

विषय—नायक नायिका भेद ।

संख्या ४६५ ई. फाजिल अली प्रकाश, रचयिता—सुखदेव मिश्र (कपिला), कागज—साधारण, पत्र—१५३, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—११७०, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३३ = १६७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि-अंत—४६५ डी के समान ।

पुष्पिका—इति श्री फाजिल अली प्रकाश काव्ये समाप्त शुभम् भूयात् ॥ वैशाष मासे शुक्ल पक्षे तिथौ एकादस्यां भौम वासरे लिषतं पुस्तकं मिदं शिव प्रसाद भौली मौजा पानीपुर ।

संख्या ४६५ एफ. पिंगल, रचयिता—सुखदेव, कागज—साधारण, पत्र—२२, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७७ = १८२० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राधाकृष्ण शास्त्री, ग्राम—भदौसी, डाकघर—गढवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ दो० ॥ पाँय सुमिरि गोपाल के, पाय गुरुन ते ग्यान । भाषा भाषत पिंगलहि, सुमिरयो सुकवि सुजान ॥ १ ॥ लघुगुरु विचार—संजोगी की आदि को अनुस्वार गुरु होय । दीरघ है सब आखु में, गुरु कहियत है सोय ॥ २ ॥ चरन अंत के वरन में, गुरु लघु दुओ विचार । एक कला की लघु कही, पिंगल के अनुसार ॥ ३ ॥

अंत—सैनिका छंद ॥ पाइ पाइ गोल गोल भावनें ए । अंत दीह मध मानु सर्व ये । साज बाज काम मध्य मानिये । सेनिका सुछंद येहु मानिये ॥ यथा ॥ कृष्ण कृष्ण कालीकंस कंदना । वासुदेव देव बंदना ॥ गोकुलेश गोकुलेश पदना । जय गोविंद विष्णु कंस गंजना मालती ॥ पाई पाई ग्यार गुरु जहाँ सोहाई जो राई ॥ दोहा ॥ भाषित फनि पति ग्रंथ को । संगम लिख्यों बनाय । भाषा कवि सुप देव करि । छंद पंथ सुप पाय ॥ गाथ छंद दै आदि सब लिखे जो पिंगल नाम । प्रति सम सम अक्षर भरौं । लखियो बुध अप काम ॥ सुख अनुसार गति नहीं । नहीं बुद्धि गति छीन । सुकवि सुजन करि राग मम सोध्यौ ग्रंथ प्रवीन ॥ करो चहै जू काव्य कछु छंद समेह लगाय । सुगम सदा परमान है, जगमहि दयो भगाय ॥ इति श्री पिंगल समाप्त शुभ मस्तु प्रति मावै सी लिख्यते मम दोषो न दीयते ॥ श्री संवत् १८७७ फाल्गुन मासे च कृष्ण पक्षे द्वितीयायां गुरु वासरे शुभं ॥ इति श्री पुस्तक महल्यात सिंह जू राज कुमार के मसनद पोथर पढ़ा तासु भारमज लिख्यते । राम सेवक सिंह मिश्र कर सोभाम पास दयराम ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—मंगला चरण लघुविचार, गुरु विचार, गण विचार, देवता और उनके फल, दग्धाक्षर विचार, दग्धाक्षर का फल, मात्रा छन्दों की अनुक्रमणिका (२) पृ० ६ से पृ० २७ तक—मात्रिक छंदों का लक्षण और उदाहरण गाथा, दोहा, रोला, रसिक, चौपैया, घत्ता, घत्तानंद, पादा कुलक, काव्य कुंडलिया, उल्लाला, छप्पै छप्पै के इकहत्तर भेद छप्पै के दोष, कवित्त छप्पै के वरन । चौबोला छंद । मोहना, राडसेना, पद्मावती, सोमावती, झूलना, माला, चुरियाला, सोरठा, कालिका, मधुभार, कुकुभ, सरसी, दंडक, कला, दीपक त्रिलोकित, निमका, सिंह विलोकित, दस पद, लीलावती हरिगीतिका, त्रिभंगी, दुर्मिला (अर्थात् ४० मात्रिक छंदों के लक्षण) (३) पृ० २७ से पृ० ४२ तक—वर्णवृत्त, वर्णवृत्तों के लक्षण व उदाहरणः—उक्ता, अति उक्ता, मधु, मही सार, मधौ मृगी । रमना कमल सुगेन्दु, मंदिरा, प्रतिष्ठा, भेद चतुराक्षर प्रस्तार मालती, सुप्रतिष्ठा पंचाक्षर भेद हरिन, हंसी जमक, षडाक्षर भेपराज छंद, तनुमध्या, ससी वदना, वसुमती, विज्जुहा, मधाना, संमोहारी, मदनक, सप्ताक्षर प्रस्तार, सुवास पराईच, शिखारूपक, मदन लेप, भेद अनुष्टुप्, प्रमाणिका, मल्लिका, कमल, विमपद, नवाक्षरप्रस्तार महालक्ष्मी छंद, सारंगी, पाइत्ता, तोमर, रूपमाला, दसाक्षर प्रस्तार, सुषमा, रुक्म माला मत्तवती, सुषमा, अमीगति, एकादस अक्षर प्रस्तार, सुमुख, दोधक, मदनक, सेनिका, मालती । (४) पृ० ४२ से पृ० ४५ तक—ग्रंथ का उपसंहार क्षमा याचना, ग्रंथ का आधार कथन—भाषित फनि पति ग्रंथ को । संगम लिख्यौ बनाय । भाषा कवि सुप देव करि । छंद पंथ सुग पाय ॥

संख्या ४६५ जी. व्रत विचार पिंगल, रचयिता—सुखदेव मिश्र, कागज—देशी, पत्र—९०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण विहारी मिश्र, माडल हाउस, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नम छंद गोपाल मगला चरन ॥ जै जै मोहन मदन मुरारि ॥ कमल नयन केशव कंसारि ॥ करणा करके सी रिपुकृस्नु ॥ जै वसुधा धर वामन विश्नु ॥ १ ॥ दंडक छद ॥ विघन विनासन है आछे आसु आसन है मे ये पाक सासन है सुमति कर को ॥ आपदा को हरन है संपदा के धरन है सदा के करन है सदा के धरन है। सरन असरन को ॥ कुंज कुल को है नव पल्लवान जो है सरि सुप देव सो है धरे अरुन वरन को ॥ बुद्धि के विधायक सकल सुखदायक सु सेवो कविनायक विनायक चरन को ॥ २ ॥ दोहा ॥ मदन गुपाल कृपाल के चरन कमल चितु लाय ॥ कियो सुकवि सुषदेव जहु वृत विचारन वनाय ॥ ३ ॥ पिंगल भान अगस्ति कृत छंदो यात पढ़ियत प्रात नित ॥ भाषत कवि कुल चद नाम अगस्ति-फनिंद मुनि ॥ ५ ॥ दोहा जैसे वेद-विहीन द्विज अत्य जेत अति निंद ॥ ऐसे छदो ज्ञान विन कवि हे कहत फनिंद ॥ ६ ॥

अंत—अन्यच ॥ यच्छनित मृक्षग धुनि धरद्धकच्छक मुनि उक्कत नय ससुद्धसन पर सुद्ध सुनि सुनि चंड डमरू उदंड टिमि डिमि डढ सुमरत लक्ष तमकि लक्ष तमकि वल सवत्त अथ प्रज्वलिया ॥ करु येक पाइ सोरु सुरेटु जह जगन जाहि गज अत देहु इति चार चरण प्रज्वलिय आवि कविराज सु पिंगल कहत जानि ॥ यथा ॥ गोपाल गरला धरि गोकुलेस केशवकृपाल काटहु कलेस माधव मसुद मोहन मुरारि कविराज कहत संकट नेवारि ॥ अथ मागधी छद ॥ वति सकल सक चरन की विरति पीनि जग होइ। छदो विदिता सो कहै छद मागधो सोइ ॥ यथा ॥ अति कमनीय कमल ते-कोमल कमलाकर कलि कलुषन काटे आत पत्र सित सपत्र सुलक्ष सुरंग रग पिरत पुरष वाटे अगम अगोचर विराम निता अवनेति वेलि कहि कीरत्ति वाटे कितक काज कविराजत वन कह जो व्रजराज के चित्त चाढे० ॥ इति श्री सुखदेव मिश्र कविराज विरचिते वृत्त विचार-समास सुभ मस्तु चैत्र शुक्ल पचम्या भृगवु सवत् १९३६ पुस्तक वलदेव मिश्रेण टेप्य श्री स्वदत्र वृंदावन विहारेण नम शभ भूयात् ॥

संख्या ४६६. गुलाव केवड़ा, रचयिता—सुखनदन (आगरा), कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, पूर्ण, रूप—गलित, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवराम, ग्राम—माधौपुर, डाकघर—खैराबाद, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नम' अथ गुलाव केवड़ा लिप्यते ॥ वैराग चपा चमेली का। एक दिन गुलाव और केवडा दोनो यार आपस में बातें करने लगे ॥ जवाव गुलाव का। अरे केवड़े यार तेने वहुत बुरा किया जो हजार रुपये खरचे और बुढ़ापे में व्याह किया। कहाँ वो चमेली वारी वैस नवीन जोवन वाली की बुरी वाट मारी। क्योंकि। जैपुर की वेटी और गोकुल की गाय करम फूटे जब यार वाहर को जाय ॥ फिर राजस्थान जैपुर को छुड़ा उस

चमेली आगरे में ब्या डाला। बड़ो अमध किया ॥ केवड़ा ॥ अरे भाई संतान के हेतु दुनिया मरजती है धन दर्व होने से क्या है। बुढ़ापे में कोई कुपूत सपूत हो जाय तो जीवन सेवा करी मरे किया करै सराध पिंड दान करै तो हम गत है पित्रों की यह दान है तब तो चमेली को सुख होगा ॥

अंत—जवाब चमेली का अरी बहन यह सब सच है मैंन अपनी आखों से देख लिया पर हमेशा से मैंन मंदिरों की झाकी और कथा सुनी है पर का लभ हुवा सो हरि के भजन और स्मरण और धर्म से ज्यादा न कोई तीसरी बात संसार में है सा हे बहन तुम हम रामा रम चले। और किसी तीर्थ स्थान में चल बसे क्योंकि तुमने भी जीजा जी की कमाई में बताओ सो लाया सो अब दामों पापनी चलें। और राह में जो कुछ मिला करेगा उसको खा पी पेट भर लिया करेंगी तब तो यह बात चंपा के दिल में भी समाई। दोनो बाई का भेप धर तीर्थ को रम चलीं। यानी मसल मशहूर है कि नौ सै चूहे खाके बिल्ली हज को चली सो अब रामेश्वर सेत बंध जगनाथ अजोध्या काशी प्रयाग इन धामों को प्रस्थान किया। और अपन मा बाप को रो रो के लो सौ गाली रोज दिया करें। और मा बाप का दाह चमेली और चंपा के दिल से जुदा न हो। और शहर शहर गांव गांव में भीख मांगते नारायण मंत्र भगवान का नाम रटती फिरें और नारायण की आवाज देती फिरें ॥ पश्चाताप करती फिरें कि न हमारे मा बाप हजार रुपये लेते न हमारी ऐसी गति होती ॥ अब सब तीर्थोंको कर ब्रज भूमि यानी मथुराजी का इरादा है सा आमेगी और उधर से गुलाब और केवड़े भी बैरागी पैरागी रूप में मथुरा जी आते हैं सो विश्रांत घाट के स्थान पर चारो मिल फिर धामों को रवाना होंगे ॥ इति श्री गुलाब केवड़ा चंपा चमेली का किस्सा संपूर्ण समाप्त॥ इस किस्से को सुधा राम आगरा निवासी ने संवत् १९१७ में रचा माघ शुक्ल सप्तमी को लिपतं गुलजारी लाल अवस्थ सं० १९२७ वि० ॥

विषय—केवड़ा बूढ़ा था और चमेली जवान थी दोनों का ब्याह हुआ गुलाब ने मना किया। गुलाब मरोंबाज था चंपा, चमेली की बहिन उस ब्याही थी इसके माता पिता १०००) हजार रुपया लेकर ब्याह किया। आखीर चमेली एक ब्राह्मण के लड़के से फंस गई उसके पती ने यह हाल देख उसे घर से निकाल दिया यही हाल गुलाब ने भी किया। गुलाब केवड़ा मब घर बार दान कर जंगल को तप करने चले गये। इधर चंपा चमेली भी मांगते खाते मा बाप को कोसते हुए तीर्थों की यात्रा करने लगीं फिर चारों धाम करके मथुरा जी पहुंची वहां गुलाब केवड़ा भी बैरागी भेष मे आन पहुंचे, वहां से वे चारों मिलकर तीर्थयात्रा के लिये रवाना हुए।

संख्या ४६७ वैद्यजीवन, रचयिता—सुखानंद, कागज—देसी, पत्र—२१२, आकार—८×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १९२० = १८६३ ई०, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नीलाल अवस्थी, ग्राम—नारायनपुर, डाकघर—गोला गोकरननाथ जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्य जीवन ग्रंथ सुखानंद कृत लिष्यते ॥ लिखितं

सारदां दुर्गां गुरुं गणपतिं हरिम् सुपानंद. प्रकुरु ने नत्वा लोलिमा दीपिकाम् ॥ १ ॥ अथ लोलिमाराज कवि शिष्टाचार मङ्गी कृत्य प्रारब्ध ग्रथ स्याविघ्नेन परि समाप्त ग्रथ श्री कृष्ण मर्थ यन्नाशीर्वादात्म क मगल यात नोति प्रकृति सुभग गात्र मिति ॥ वो पुष्म स्य पाठ केम्य किमपि अनिर्वचनीयं धाम स्वरूपं मगलमभिप्रेतार्थं सिद्धि दिशातु ददातु दिश अति सर्जने, सम्प्रदाने चतुर्थी किं भूत धाम श्यामलम अतसी पुष्प सदृशम्। श्याम कृष्ण वर्ण वैशिष्ट्यमस्यास्ति सिध्यादित्वल्लच् पुन कि प्रकारम् प्रकृति सुभग गात्रम्, प्रकृत्यास्वभावेन सुभगं सुन्दरं कोटिकंदर्प लावण्य गात्रम् शरीरं यस्यतत्॥

अत—तांबे की भस्म, सुहागा शुद्ध गधक सोधा हुआ माहुरा विष शोधित टीला थोता शोधा पारा सोधा खपरिया थोथा और शोधित हरताल इन सबके सम भागले के करेले के रस में एक घटी पर्यंत खरल में गेर के अच्छी भाति से मर्दन कर राखें कोई सा ज्वर होय उसमें जीरा और शर्करा के साथ एक रत्ती इसकी मात्रा खाय तो सब ज्वर दूर होय ॥ अथ कनक सुंदर रस माह मरीच वलि हिंगुलै रिति ॥ मरिच गंधक हिंगुल और विष, पीपल सुहागा और धतूरे के वीज इनके समान भाग लेके भांग के रस में दो पहर लग खरल में गेरू के इनको मर्दन करें तब कनक सुंदर रस बनै इसके खाने से ग्रहणी ज्वर अतीसार और मदाग्नि ये सब रोग नष्ट हो जाय ॥ अथ लोहे की भस्म अभरक की भस्म तावे की भस्म सोधा पारा इन चारों की समान मात्रा और दूनी गधक इनको लोहे के पात्र में रख कर वेर की समिधि की मीठी मीठी आग से पकावे पकाय के गाय के गोवर से धरती को लीप के उस पर केले का पत्ता विछाय के उस पर ढाल दे और दूसरे कदली पत्र से ढक दे तव पचामृत पर्पटी नाम से प्रसिद्ध रस होय उसे वैद्य की आज्ञा से शुभ दिन मे भक्षण करा करें तो संग्रहणी राजयक्ष्मा अतीसार ज्वर और प्रदर आदि स्त्रियों के रोग और पाडु रोग विष का रोग अम्लपित्त अर्श रोग और मदाग्नि ये सब रोग विध्वस्त हो जांय ॥ इति श्री वैद्य जीवन सुपानंद कृत सपूर्ण समाप्त लिपतं वृन्दावन निवासी पुरुषोतम दास संवत १९३० वि०। श्री राम जी सदा सहाय करें राम राम राम ॥

विषय—वैद्यक।

संख्या ४६८. पाराशरी भाषा, रचयिता—सुखाराम, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल —स० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चन्द्रशेखर चतुर्वेदी, ग्राम—वहनेनवा, डाकघर—विसवां, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ पाराशरी भाषा लिख्यते ॥ श्री सरस्वती के रूप की उपासना जैसी मेरी बुद्धि है तिसके समान सुपराम जोतिष के वोध के कारण ग्रंथ करत हैं जासों जोतिषन के हर्ष प्राप्त होय ॥ और नक्षत्र दशाप्रकार करिके फल कहने को प्रकार कहते हैं और भावन को आदि लैके जो सब विचार हैं सो सामान्य शास्त्र ते बृहज्जात का आदि ग्रंथन ते जाननो अब या शास्त्र के अनुसार ते सज्ञा विशेष करिके कहते हैं ॥ अब दृष्टि को विचार कहते हैं सूर्य आदिक नव ग्रह जा जा राशि के ऊपर बैठे होय ता ता राशि ते

सात सात राशि को पूर्ण दृष्टि दृपते है वैसेही जहां बैठे ग्रह तिनको भी देपते है और शनिश्चर बृहस्पति मंगल ये तीनों ग्रह और भी राशि को पूर्ण दृष्टि दृपते हैं ॥

अंत—अब अंतर दसा की रीति लिपते हैं अपनी अपनी दसा की वर्षों का तिगुना करिये तब एक वर्ष का दिन होय जैसे सूर्य की दसा ६ वर्ष की है यहि तिगुना करा तब १८ दिन सूर्य की दसा में एक वर्ष के भए इसी तरह सब की दसा के वर्ष जानौ ॥ सो सब का चक्र लिपेगे ॥ अब अंतर दसा का प्रकार लिपते हैं ॥ जा जा ग्रह दसा मे अंतर दसा जानौ होय ता ता के वर्षन के छठें भाग होय सो शुक्र की अंतर दसा समझो और ता में दसा नाथ के एक वर्ष के दिन घटावे हैं सो शनैश्चर की अंतरदसा होय और शनैश्चर की अंतर दसा में दसा नाथ के एक वर्ष के दिन घटावैं तौ राहु की अंतर दसा जानौ और राहु की अंतर दसा में नाथ के एक वर्ष के दिन घटावै तौ बुध की अंतर दसा होय और बुध की अंतर दसा में दसा नाथ के एक वर्ष दिन घटावैं तौ बृहस्पति की अंतर दसा जानौ और बृहस्पति की अंतर दसा को आधी करने से चंद्रमा की अंतर दसा होय है । और राहू की अंतर दसा तीसरा भाग सो सूर्य की अंतर दसा जानौ और दसा नाथ के एक वर्ष के दिन सूर्य की अंतर दसा होय है या रीति से अंतर दसा करिये ॥ यहां एक सूर्य की अंतर दसा का उदाहरण लिपते हैं ॥

पहिली दसा									दूसरी दसा								
सू ६	चं १०	मं ७	रा १८	बृ १६	श १९	बु १७	के ७	शु २०	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु.
कृ.	रो	मृ	आ	पु	पू.	श्ले	म	पू फा	०	०	०	०	०	०	०	०	०
उ फा.	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू षा	११	६	४	१०	९	११	१०	७	००
उ षा.	श्र	ध	श	पू.भा	उ भा	रे	अ	भ	१८	०७	६	२७	१८	१८	६	६	००

इति श्री पाराशरी भाषा शुभराम (शुभबोध) कृत संपूर्ण लिपतं राम प्रसाद सं० १९१७ ।

विषय—ज्योतिष

संख्या ४६६ ए. शुभसीशा, रचयिता—सुंदरकवि, कागज—आधुनिक पत्र—३०, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२६=१८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला राममारायण, ग्राम—समीरपुर, डाकघर—लगीमपुर, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शुभसीसा लिष्यते ॥ दोहा ॥ श्री सारद की सुमिरि के सुमिरौं श्री भगवान ॥ सकल सिद्धि दायक सदा विघ्न विनाशन जान ॥ कवित्त ॥ सुघर सुजा की देखी टेर वेती दूर सुमी मरी बेर कम्हर सी काम ना करी है ॥

मारत में भारी भीर मारई पर परी नहां तोड़ डारो गज वट पीर सो हरी है ॥ वेई तुम कान्ह मेरी कान क्यों ना सुनौ कान जान मान काहे कूं सो चुपकी सरी है ॥ सुदर सो वैद्य प्रभु और को जहान वीच जोपै आप ईस तौ हमारी सुध खरी है ॥ सोरठा ॥ यह संसय मन माहिं, इन द्वै में झूठी कवन ॥ कि मै ही विश्व में नाहिं विश्वंभर नामहिं नहीं ॥

अंत—माय सपथ मोहि राम की मोय मिले राम सुजान । जो तू मानै झूठ ही तौ पुनि वनहि पयान ॥ दोहा ॥ भगवान वचन ॥ दो० ॥ अतरगत की जानि के चतुर्भुजी कियो रूप । सकल नम्र दर्शन कियो ध्रुव प्रताप जग भूप ॥ सोरठा ॥ कर गहि बोले श्याम, अरे पुत्र पुनि कहं चल्यो । भक्त वत्सल भो नाम । भक्तन ते न्यारो नहीं ॥ चौ० ॥ नृप उत-पात सुपदाई । पर्‍यो विश्नु के चरणन धाई । रानिन सहित दई तन फेरी । कहत धन्य प्रभु महिमा तेरी ॥ मोसम धन्य जगत नहिं कोई । सुर नर मुनि किन्नर किन होई ॥ अस कहि भूप चरण दोऊ धोये । जन्म जन्म के पातक खोये ॥

विषय—ध्रुव चरित्र ॥

संख्या ४६६ बी. सुदर शृगार, रचयिता—सुंदर कवि, कागज—देशी, पत्र—७१, आकार—६ × ३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—९९४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६३१ = १६८८ ई०, लिपिकाल—स० १७३० = १६७३ ई०, प्राप्तिस्थान—आनद भवन पुस्तकालय, डाकघर—विसवाँ, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ दो० ॥ देवी पूजि सरस्वती, पूजौं हरि के पाय । नम-स्कार कर जोरि कै कहै महा कविराइ ॥ नगर आगरो वसत है जमुना तट सुभ थान तहां पात साही करै वैठे साहि जहान ॥ साहि वडो कवि मुप तनक क्यों गुन वरनै जाहिं । ज्यों तारे सब गगन के मूठी में न समाहिं ॥ जिन पुरिषन के वस में उपज्यों साहि जहान । तिन साहिन के नाम को अव हौं करौ वपान ॥ प्रथम मूर तैमूर लियो साहेव किरान पद । ताके मीर साहि वहुरि सुल्तान मुहम्मद अवू सैद पुनि उमर सेप वावर जे हुमायूँ । साहि अकव्वर साहि । जहा गीरहि जु गनाऊ ॥ तेहि वस अस कविराज भनि साहि जहा वद्विभ वपत । धरि छत्र वइठो अचल भुवपति साहि दिल्ली तपत ॥ त्रिभगी छंद ॥ जव लगि भवानी सिव सेनानी रवि असमानी पथनि में । जव लगि सुरगन गगन उडगन वरन अठगन ग्रथनि में ॥ जव लगि पुरदर हिमि गिरि मंदर वानी सुदर मनि सुपदा । तव लगि रहौ थिर भुव ध्रुव ज्यो थिर साहि जहां सिर छत्र सदा ॥ ऐक छिनचे गुन साहि के वरनै सव संसार । जीभ थकै वीतै वरप तऊ न पावे पार ॥

अत—आजु लपी ललना पठि के में कहा कहौ हो तो महा अनुरागी वारक तौ पहिले सुनि लेत हैं सुंदर वोल गुरुप सभागी । अछर यो अपने मुप ते उचरे फिरि वानी सुधारस पागी । मोहि लियो सो पठावन लागी ॥ फूली कमोदनी मोद में चंद विनोदनी सुदर तारे है त्योहीं । मोती के हार घने घनसार सनी सुप सेज सुगधन सोही ॥ राधिका माधव जू जमुना तट ये जुग जोन्ह में जाह में जोही ॥ जानतु हो अनुमान रमासग होहिंगे

छीर समुद्र में पोही ॥ कवा ॥ रूपे की भूमि में पारो पन्यो मिगरे जग चंदन सों छपटायों। सपि ओम्ह महा कविराइ कहीं उपमा यह याहू ते जावीं। चंद के जसनि को करि सूत बिनो बिधना सुत अंबर भनो। कश्यप के पुनि ज्योति पनाय दसौं दिसि मौं मनि राषे है मानौं ॥ दोहा ॥ सुरवानी षेती करी नर बानी जो मिलाइ। जैसे मग रस रीति को सब ने समुझो जाय। यह सुंदर सिंगार की रची पोमी रची संवारि। चूक होइ जहं कहूं कहु कीजो सुकवि सुधारि ॥ इति श्री मन्महाराज राइ विरचितायां सुंदर सिंगार समाप्तं सुभमस्तु। बैसाष मासे सिते पक्षे इकादस्यां माम वासरे लिपत सुमास चंद्रेष संवत १७३०

विषय—नायक नायिका भेद लक्षण हावभाव आदि।

संख्या ४३६ सी सुंदर शृंगार, रचयिता—सुंदर कवि (सीतापुर), कागज—देसी, पत्र—७६, आकार—६ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११४, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६८८ = १६३१ ई०, लिपिकाल—सं० १८१२ = १७५५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूबे, सैदपुर, जिला—गाजीपुर।

संख्या ४७० ए. सयोगयोग (कवित्त), रचयिता—सुंदरदास, कागज—देसी पुराना, पत्र—१०४, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—०९१ रूप—प्राचीन कमजोर, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९९ ×, प्राप्तिस्थान—श्री बद्री सिंह जमींदार, ग्राम—ग्रामीपुर, डाकघर—लालावबस्ती, जिला—आजमगढ़।

आदि—यही आपको भूलि गयो सुख चाहेते ॥ जैसे मीन मास के निगलि जात लोभ लागि छोड़ की कष्टक नहीं जानत उमा हेत ॥ जसे कपि गागरिमें मूठि बांध राषे सब छांडि देहि दत सुर्ता स्वाद ढीके ना हते ॥ जस व नारियल पुंष नहि कटकत सुहर सहत सुष वेनिया ही सत ॥ देह का मनावतार इन्द्रिन के बस पन्यो आपही को आप भूलि गयो सुष चहित ॥ इंदव छंद ॥ बहु चेतन मानत कैसो ॥ ज्यों कोड मद पिये अति छाकत नाहि कछू सुधि भ्रम भैसो। ज्यों कोउ पाइ रहे रग सूरहि जानौं नहीं कछु कारन कैसो ॥ ज्यों कोउ बालक संकट पावत कपि उठे अरु मानत मैसो ॥ तैसहि सुंदर आपको भूलि सुदेपहु चेतन मानत कैसों ॥ ५ ॥

अंत—देवन के कहि संग मके कहि प्रेम मके निसि वासर गावैं ॥ शेष मके सिव इन्द्र मके पुनि लाज किया बहु भांति विचारै ॥ पीर मके अरु मीर मके पुनि पीर मके बहु भासि गिरावै ॥ सुन्दर मौन गही सिध साधिक कौन कहैउ उसकी मुख वातै ॥ १४ ॥ जोगी मके कहिजन मके जतिनापम किंदु है कम बात ॥ न्यासी मके बन वासी मके तु उदासी मके बहु कर फिरावै ॥ सेष मसायक और उलोदक वाकिर है सब मैं मुसलमाने ॥ सुन्दर मौन गही सिध साधिक कौन करै उसकी मुष बानै ॥ १५ ॥ इति सारे अंत ॥ १४ ॥ बाद ॥ ५५१ ॥ सुन्दर दास कृत कवित्त मवत १९९ × × × × × × × × कृष्ण पक्ष एकादस्यां पार्थो राम सीता रामायन × × × × × × श्री राम श्री राम श्री राम ॥

विषय—इस पुस्तक के प्रथम के १८ पृष्ठ नहीं हैं। १९-४० पृष्ठ पर समस्या पूर्ति है। ४१-५० तक इसी छन्द में ही समस्या पूर्ति की है, ५० पृष्ठ से सांख्य ज्ञान का अंश

वर्णन है, १७ पृष्ठ से प्रश्नोत्तर देह सम्बन्धी वर्णन, पृ० ४०–४२ तक ब्रह्म निष्कल अग, पृ० ४२–११५ तक अनुभव अग, पृ० ११५–११७ तक निरसशय को अंग, पृ० ११७–११६ तक प्रेम परा ज्ञानी को अंग, पृ० ११६–१३१ तक अद्वैत ज्ञान को अंग, पृ० १३१–१३४ तक जगत मिथ्या को अंग, पृ० १३४–१४२ तक आश्चर्य को अंग वर्णन।

सख्या ४७० बी. सवैया, रचयिता—सुदरदास, कागज—साधारण, पत्र—५३, आकार—९३⁄४ × ४३⁄४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०६५, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८५ = १८२८ ई०, प्राप्तिस्थान—कुवर वहादुर, ग्राम—पढरिया, डाकघर—पट्टी, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनम॰ ॥ दादू नमो निरंजन नमस्कार गुरु देवत॰। वदन सर्व साधव प्रणाम पारं गत॰ ॥ १ ॥ मौज करी गुरु देव दया करि सवद सुनाय कह्यो हरि नेरौ। ज्यौं रवि के प्रगटे निसि जात सु दूरि कियौ भ्रम भांनि अंधेरौ ॥ काइक वाइक मानसहूं करिहैं गुरु देवहि वदन मेरौ। सुन्दर दास कहै कर जोरि जु दादूदयाल कौंहू नित चेरौ ॥ १ ॥ पूरन ब्रह्म विचार निरतर काम न क्रोध न लोभ न मोहे। श्रोत्र त्वचा रसना अरु घ्रान सु देपि कछू कहुं नैनन जोहे ॥ ज्ञान स्वरूप अनूप निरूपण जासु गिरा सुनि मो मन मोहे। सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादुदयालहि मोर न मोहे ॥ २ ॥

अत—जोगी थके कहि जैन थके रिपि तापक थाकि रहे फर पाते। सन्यासी थके वनवासी थके जु उदासी थके वहु फेरि फिराते ॥ सेप समायप और ऊलायक थाकि रहे मन में मुसकाते। सुंदर मौन गही सिधि साधक कौन कहै उसकी मुप वाते ॥ १५ ॥ इति श्री सुंदरदास कृत सवैया सपूर्ण मिति वैशाख वदी अमावश्याँ चन्द्रवासरे सूर्यपर्वे संवत् १८८५ काश्या मध्ये ॥ श्री श्री श्री श्री श्री रामार्पणमू ॥

विषय—१. गुरुदेव का अंग, २ उपदेश चिन्तामणि को अंग, ३ काल चितामणि का उपदेश, ४. देह और आत्मा के विछोह का अग, ५. तृष्णा को अंग, ६. पेप को अंग, ७. विश्वास को अंग, ८. देह मलीनता को अंग, ९ नारी निंदा को अग, १०. पर निंदा कौ अंग, ११. मन चचल को अंग, १२. वाणी को अंग, १३ विपरीत ज्ञान का अंग, १४. वचन विवेक का अग, १५. निर्गुण उपासना का अग, १६ पतिव्रता का अंग, १७. विरह उराहने को अग, १८. शब्द-सार को अग, १९. सूरातन को अंग, २०. साधु को अग, २१. भक्तिज्ञान-मिश्रित को अग, २२. विपर्यय को अंग, २३ अपने भाव को अग, २४. रूप विस्मरण को अंग, २५. सांख्य ज्ञान को अग, २६. विचार को अग; २७. ब्रह्म का निश्कलंक, २८. आत्मानुभव को अंग, २९ ज्ञानी को अंग, ३०. विदेह को अंग, ३१ जीवन्मुक्त को अंग, ३२ अद्वैत ज्ञान, ३३. भ्रांति को अंग, ३४ विस्मै को अंग।

संख्या ४७० सी सवैया, रचयिता—सुंदरदास (जयपुर), कागज—देशी, पत्र—३२४, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथ वाजपेयी, ग्राम—माखी, डाकघर—नेवतनी, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री राम जी सहाय श्री कृष्णायनम॰ ॥ अथ ग्रथ सुंदरदास जी का

सवईया लिप्यते ॥ प्रथम श्री गुर देव को अंग इन्दव छंद ॥ मौज करी गुरु देव दया करि सब्द सुनाय कह्या हरि नेरो। ज्यौं रवि के प्रगटे निसि जात सु दूरि कियो भरम भ्रम अंधेरो। कायक वायक मानसहू करि है गुरु देव हि वंदन मेरो। सुंदरदास कहै कर जोरि सु दादू दयाल को हौं नित चेरो ॥ १ ॥

अंत—एक ही ब्रह्म रह्यो भरपूर तो दूसर कौन बतावन हारो। जो कोउ जीव कहै सु भ्रम सौं जीव कहा कछु ब्रह्म ते न्यारो। ज्यौं कहै जीव भयो जगदीस तै तौ रवि मांहि कहाँ को अंधारो। सुंदर मौन गही यह जानि कै कौनहुं भांति न होति निवारो ॥ १ ॥ जो हम-पोथि करैं अभि अंतर तौ वह पोत उरै ही बिलावै। जौं बाहर को उठि दौरत तौ कछु बाहर हाथ न आवै ॥ जो हम कछु कमे पूछत हैं पुनि सोऊ अगाध-अगाध बतावै ॥ ताहिते कोऊ न जानि सकै तेहि सुंदर कौन सी ठौर रहावै ॥ २ ॥ कौन कहै उसकी गुप बातैं ॥ नैनन बैनन सैनन आसन बासन स्वासन प्यासन बातैं सीत न घाम न ठौर न बास न पुंस न बाम न बाप न मातैं ॥ रूप न रेप न सेप असेप न सेत न पीत न स्याम न रातैं ॥ सुंदर मौन गही सिध साधिक कौन कहै उसकी गुप बातैं ॥ ३ ॥ बेद थके कहि तंत्र थके कहि ग्रंथ थके निधु आसुर गावैं ॥ सेस थके सिव इन्द्र थके पुनि पोज कियो बहु भांति बिचारैं ॥ पीर थके अरु मीर थके पुनि धीर थके बहु बोल गिरावैं ॥ सुंदर मौन गही सिध साधक कौन कहै उस की गुप बातैं ॥ जोगी थके कहि जंग रिषि तापस मानि रहे फल पावैं। न्यासी थके बनवासी थके सु उदासी थके बहु फेरि फिरावैं। सेष मसाइक पीर अलाइक मानि रहे मन मैं मुसकावैं ॥ सुंदर मौन गही सिधि साधिक कौन कहै उसकी गुप बातैं ॥ अंग सर्व २२ इति सुंदरदास की कृत सवैया संपूर्ण मिती सावन सुदी ९ वार एतवार संवत १९२३ वि॰ पठ बठ मध्ये लिपा रघुनाथ भगत ॥

विषय—गुरु की अंग उपदेश चितावनी को अंग कालचितावनी को अंग, आत्मा बिछोह को अंग, तृष्णा को अंग अधीर को अंग, बिस्वास को अंग, देह मलीन को अंग, नारी निन्दा को अंग, मनको अंग चाणक को अंग, बिपरीत ज्ञान को अंग, बचन बिबेक का अंग निरगुण उपासना को अंग, पतिव्रता को अंग, बिरह उराहने को अंग इत्यादि ३२ अंग वर्णन ॥

संख्या ९७० डी सुंदरविलास, रचयिता—सुंदरदास, कागज—साधारण पत्र—८२, आकार—८ × १२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६९०, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महावीरप्रसाद, ग्राम—बेनीपुर डाकघर—मानीगंज, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—अरु देत पुत्र धन कोऊ देत बहु धन, कोऊ देत राज साज देत जापि गुन्यो है। कोऊ देत जप ज्ञान कोऊ देत रस ध्यान, कोऊ देत विद्या ज्ञान जगत में गुन्या है ॥ कोऊ देत रिद्धि सिद्धि कोऊ देत नव निधि कोऊ देत और कछू ताते सीस धुन्यो है ॥ सुन्दर कहत एक दियो बिन राम नाम, गुरु सो उदार कोऊ दूज्यौ है न सुन्यो है ॥ २० ॥

अंत—बेद थके कहि तंत्र थके कहि ग्रंथ थके निसि बासर गाती। सेष थके सिव इन्द्र थके पुनि षोज कियो बहु भांति बिचारै ॥ पीर थके पुनि मीर थके पुनि धीर थके बहु बोल

गिराते । सुन्दर मौन गही सिद्धि साधक, कौन कहै उसकी मुष वातें ॥ १४ ॥ योगि थके कहि जैन थके ऋषि तापस थाकि रहे फल पाते । सन्यासी थके वन वासी थके जो उदासी थके वहु फेर फिराते ॥ सेषहु सालिक और हुलाइम थाकि रहे मन में मुसकाते । सुन्दर मौन गनी सिद्धि साधक कौन कहै उसकी मुष वातें ॥ १५ ॥ इति आश्चर्य को अङ्ग समाप्त ॥ इति सुन्दर दास जी कृत सुदर विलास ग्रथ समाप्त ॥

विषय—पृ० १ से पृ० ८ तक—गुरु देव को अग, गुरु का महत्त्व, उनके उपदेश से अद्वितीय लाभ, गुरुनाम.—"सुन्दर कहत कछू महिमा कही न जात, ऐसो गुरुदेव "दादू" मेरे मन मान्यो है" । पृ० ८ से १९ तक—उपदेश चिन्ता मणि को अग.—राम जप का उपदेश, नफ़्स (نفس) को वश में करने का उपदेश, "तत्त्व मास" सिद्धान्त का उपदेश, एक "तूही" का उपदेश, देह की अनुपमता और उसका प्रयोग, त्याग का उपदेश, अभिमान त्याग, चचला का चापल्य, कामादि ठगों से सतर्कता का उपदेश, इन्द्रियादि सुख को तिलांजलि देकर भगवद् भजन उपदेश, मनुष्य का पशुत्व और उसके त्याग का उपदेश, मोहादि त्याग उपदेश । पृ० १६ से पृ० २५ तक—काल चिन्ता मणि का उपदेशः—ससार की निस्सारता, काल की प्रचंडता, सबधों का मिथ्यावाद, भगवत भजन का उपदेश, ससार की नेत्र हीनता, मानवीय भूलें और उनसे छुटकारे का उपाय, काल की व्यापकता, सुकृति करने का उपदेश, झूठा प्राणी, ज्ञान द्वारा काल का विनाश, ब्रह्म विचार से काल का विनाश । पृ० २६ से पृ० ३० तक—देह और आत्मा के विछोह का अग—चेतन्य शक्ति के ही द्वारा लोगों का देह से सवध, चेतन्य के सवध से शरीर में रंग रूपादि का समर्ग, बोलते पुरुष के निकलने का किसी को पता न होना । पृ० ३१ से पृ० ३३ तक—तृष्णा के अग । तृष्णा का दिन ब दिन नवीन होना, संतोष का उपदेश, भूख का सबको नाच नचाना, तृष्णा त्याग का उपदेश । पृ० ३४ से पृ० ३७ तक—धीरज उलाहिने को अग । पेट पाने का खेद, पेट के सदैव खाली रहने का उपदेश, पेट ही के कारण अनेक पाप होना और इसी कारण परमात्मा को उपालभ, पृ० ३७ से पृ० ४३ तक—विश्वास को अंग, देहमलीनता का गर्व प्रहार का अग, "जिसने पेट दिया है वही खाने को देगा" इत्यादि वाक्यों द्वारा विश्वास की दृढ़ता, विश्वास का उपदेश, उतावला पन छोड़ भगवान पर विश्वास रखने का उपदेश, शरीर अपना नहीं, गर्व छोडने का उपदेश । पृ० ४३ से पृ० ४४ तक—नारी निन्दा को अग—नारी के अगों में वन और नर्क की उत्प्रेक्षा द्वारा उससे विरक्ति का उपदेश, पृ० ४५ से पृ० ४६ तक—दुष्टन को अग—दुष्ट स्वभाव वर्णन, उससे सब प्रकार की बुराइयों की आशंका । दुष्ट स्वभाव के तीन प्रकार, दुष्ट सगत की बुराई । पृ० ४७ से पृ० ५३ तक—मन को अग—मन की गति की अगम्यता, मन को अपराधी होना, मन की निर्लज्जता, मन की दगावाजी, मन की अधमता, मन का सब संसार के प्राणियोंको नचाना । मन को धिक्कार देकर भगवद् भजन, विविध उत्प्रेक्षाओं द्वारा मन की निरकुशता का कथन, मन का "मन" नाम पड़ने का कारण, मन के कर्म, उसके धर्म भ्रम ही का मूल "मन" होने का कथन, भ्रम विनाश के पश्चात् "मन" ही का "ब्रह्म" होना, पृ० ५४ से पृ० ६१ तक—चणाक को अग.—विना ज्ञान के साधु-वेषादि की

निस्सारता, अज्ञान के रहते सिद्धि का निवास नहीं, तीर्थादि में परमात्मा नहीं, गुरु उपदेश ज्ञान चक्षु की उत्पत्ति और परमेश्वर का पास ही मिलना, कुबुद्धि से हानि, बिना राम के सब क्रियाओं का निष्फल होना । पृ० ६२ से पृ० ६६ तक—विपरीत ज्ञान का अंग—संसार में ऊपरी ज्ञानी की महत्ता ऊपरी ज्ञानियों की कुछ क्रियाओं का दिग्दर्शन, मुख्य ज्ञानी के लक्षण । पृ० ६६ से पृ० ६८ तक—वचन विवेक का अंग—चतुर के आगे मूर्ख के वचन का मूल्य, वाणी के भेद, वचनों से ही बंधन और मोक्ष के होने का विधान सिंह और कटुवाणी का अन्तर । पृ० ६८ से पृ० ७० तक—निर्गुण उपासना का अंग—वेद एवं ब्रह्मादि सब को छोड़ केवल एक निरंजन के भजन का उपदेश, माया एवं ब्रह्म निरूपण । पृ० ७० से ७२ तक—पतिव्रता को अंग । देवी देव सब का परित्याग का आदेश, एक प्रभु के ध्यान का उपदेश, पृ० ७२ से पृ० ७३ तक—विरह जगाहने का अंग । विरह वेदना से महारस प्राप्ति में कठिनाई । पृ० ७३ से पृ० ७६ तक—शब्द सार का अङ्ग—आत्म विस्मृत, ज्ञान की परिभाषा, शूर, त्याग, तप, रत, और मत्त की परिभाषाएँ । संत इत्यादि के लक्षण । ज्ञान का क्रम विकास । पृ० ७६ से ७७ तक—भक्ति ज्ञान मिश्रित को अङ्ग । राम की व्यापकता का माहात्म्य । पृ० ७७ से पृ० ८६ तक—विपर्यय शब्द को अङ्ग । कुछ गूढ़ार्थक विपर्य्यय वचनों द्वारा मुक्तसार जानने के प्रश्न । रामनाम का उपदेश । पृ० ८६ से पृ० ९० तक—शूरातन को अङ्ग । रण के योग्य शूर के लक्षण, मुख्य शूर, शूर कर्म, मत्त शूर के लक्षण, साधु-संग्राम की महत्ता, साधु के वध्य शत्रु । मन हस्ती के वश में रखने को साधु के पास की सामग्री का वर्णन । पृ० ९० से पृ० १०० तक—साधु का अङ्ग । साधु संग का फल, सन्तों का प्रभाव, संतों के सुकर्म, संतों की गति जानने की असमर्थता का वर्णन । साधु के लक्षण, साधु महिमा, सठ की परीक्षा संत निन्दक की बुराई । संत अनुरागी की प्रशंसा । संतों के देव-देय के पदार्थ । पृ० १०१ से पृ० १०३ तक—ज्ञानी को अङ्ग । ज्ञानी की पहिचान, ज्ञानी को पहिचानने का अधिकारी, ज्ञान प्रकाश का काम, ज्ञानी के शुद्ध ज्ञान की घन से उपमा । पृ० १०४ से पृ० ११६ तक—सॉख्य ज्ञान का अङ्ग । तत्त्वों का वर्णन, इन्द्रियाँ तथा उनके कर्म, सृष्टि रचना वर्णन । इन्द्रियाँ रूप, देवादि के मिथ्यात्व का वर्णन । आत्म निरूपण । सांख्य का सार । पृ० ११७ से पृ० ११९ तक—अपने भाव को अंग प्रारंभ । अद्वैत भाव वर्णन, एक के ही अनेक रूपों का वर्णन, अपने भाव का प्रभाव । पृ० १२० से पृ० १२६ तक—स्वरूप विस्मरण को अंग । आत्म विस्मृति का कारण, मिथ्या ज्ञान, भेष बनाने की बुराई । पृ० १२७ से पृ० १३४ तक—विचार को अंग । द्वैत बुद्धि निवारणका उपदेश, विचार सम्पन्न बुद्धि की प्रशंसा । शुभा शुभ कर्म को विनाशादि के तीन प्रमाण । विचार द्वारा मिथ्यात्व संसार का मिथ्याभाव और ब्रह्म का प्रकाश । जीव—विचार । ब्रह्म की त्रिविधि-उपाधि । मुख्य जैन और मुख्य बाज का लक्षण । संकल्प विकल्प । पृ० १३४ से पृ० १३५ तक—ब्रह्म निष्कलङ्क का अङ्ग । संपूर्ण सृष्टि का ब्रह्म में होना, ब्रह्म का निष्कलङ्कत्व । पृ० १३५ से पृ० १०५ तक—आत्म अनुभव का अङ्ग । अनुभव, आत्मा को आत्मा ही जान हो सकने का कथन । पन्थादिक का वाद और अनुभव का फल । भ्रम विनाश का फल ।

आत्मा का लक्षण। ज्ञान के भेद, साक्षात्कार अनुभव प्रकाश, स्वरूप, पृ० १४५ से पृ० १४८ तक—ज्ञानी को अग। ज्ञानी और अज्ञानी का भेद, दोनों के कर्म, प्रवीण साधु का लक्षण, ज्ञान प्रकाश का फल, ज्ञानी के देखने के तीन प्रकार। ज्ञान के तीन भेद, ज्ञानी की पहुँच और बुद्धि पृ० १४९ से पृ० १५० तक—(निसंशय) को अङ्ग। ज्ञानी को निःशङ्क रहने का कथन। पृ० १५० से पृ० १५१ तक—प्रेमज्ञानी के अंग का वर्णन। द्वंद रहित परब्रह्म के प्रेम का कथन और प्रेमी की तल्लीनता। पृ० १५२ से पृ० १५८ तक—अद्वैत अंग। द्वैत के विनास का ज्ञान-विधान, ब्रह्म की व्यापकता। भिन्न भिन्न रूपादि दीखने का कारण। माया और ब्रह्म का एकी करण। पृ० १५६ से पृ० १६० तक—जगत मिथ्या का अग। ब्रह्म के विकाश में अज्ञान (माया) वृद्धि की बाधा। जगत् और ब्रह्म का एकीकरण। पृ० १६१ से पृ० १६५ तक—आश्चर्य का अंग। ब्रह्म के सबंध में ज्ञान दृढ़ता की कमी। "नेति" सिद्धात।

संख्या ४७० ई. वेदातसार, रचयिता—सुदरदास, कागज—साधारण, पत्र—८, आकार—५ × ३½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला पुरुषोत्तमदास, रईस व्यापारी, ग्राम—कालाकाकर, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—मेरो रूप भूमि है कि मेरो रूप आप है कि मेरो रूप तेज है कि मेरो रूप पौन है। मेरो रूप व्योम है कि मेरो रूप इन्द्रि है कि अंतहकरन है कि वैंठो है कि गौन है॥ मेरो रूप त्रिगुन कि अहंकार महत्तत्त्व प्रकृति पुरुष किधौं बोल है कि मौन है। मेरो रूप थूल है कि सुक्षि आहि मेरो रूप सुन्दर पूछत गुरु मेरो रूप कौन है॥

अंत—जीवन ही देव लोक जीवन ही इन्द्र लोक, जीवन ही जन तप मत्य लोक आयो है। जीवन ही विधि लोक जीवन ही सिव लोक, जीवन ही वैकुंठ लोक ज्यों अकुठ गीयो है॥ जीवन ही मोक्ष सिला जीवन ही भिस्ति माहिं, जीवन ही निकट परम पद पायो है॥ आतमा को अनुभव जिनको जीवन भयो, सुंदर कहत तिन संसै मिटायो है॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—शिष्य की निज रूप ज्ञान संबंधी शका, गुरु द्वारा उसका निवारण, ब्रह्म की स्थिति, जपतप सम्बन्धी रूपक तथा आत्मदेव की महत्ता, चैतन्य स्वरूप के भजन करने का विधान, जीव की व्याख्या, सब अवस्थाओं में जीवन का निवास स्थान। (२) पृ० ९ से पृ० १६ तक—निज स्वरूप वर्णन, ब्रह्म की अति सूक्ष्मता का वर्णन, आत्म अनुभव की महत्ता, ईश्वर और जीव के अभेद ज्ञान में द्वैत उपाधि के विनाश का वर्णन, शरीर तथा आत्मा का सम्बन्ध विचार कर प्रत्येक कार्य के सार रूप होने का कथन, जीते ही आत्मानुभवी को सब कुछ यहीं प्राप्त होने का विधान।

संख्या ४७१ प. अष्टपदी वनयात्रा, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—५, आकार—४½ × ३½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूबे, साहित्यान्वेषक, जिला—हरदोई,

आदि—यह ब्रजराज मेरे मन भाइ जू। श्री यमुना विश्राम महाप के नीके नैन दिखाई जू॥ यह ब्रजराज मेरे मन भाई जू। मथुरा देखी दर्शन करके महा प्रभु दर सावे जू। यह ब्रज राज० ॥ मधुवन ताल कुदर बहुलावन मोहन कुंड में न्हाई जू। राधा कुंड औ कृष्ण कुंड की महिमा वरनि आइ नू गुवरधन की है परिकरमा मानसि गंगा न्हाई जू। परमद्रता आदि महोबन सांकरी पोर में आई जू। यह ब्रज० ॥ श्यामा श्याम कामना पूरन यह पन अति सुखदाई जू। बरसाने बन नन्द गांव पै कोकिला दाहिन श्याइ जू। यह ब्रज० ॥ बंद मंकेत भिड़ बन बसि करि ठाम धाम सुखाई जू। मेप मान छाया हरि दर्शन जहां पाये अनुराई जू। यह ब्रज० ॥ लखत ब्रज औ चीर घाट पै नन्द घाट दरसाय जू बाल मग्न मांडरि सकल बन मान मताबर न्हाई जू०। यह ब्रज० ॥

अंत—करि विश्राम श्याह बन बसि करि बल दाऊ पर माथ जू। गोकुल और महाबन महिमा माता हूं ना पाई जू। यह ब्रज मेरे मन भाई जू पग पग मथुरा धन इंदावन बन्य जमोदा माई जू॥ जिनकी महिमा को कवि बरने प्रगटे कुंवर कन्हाई जू। यह ब्रज मेरे मन भाई जू॥ बारह बन चौबीस उपबन की छीला गाय सुनाई जू॥ सूरदास भगवंत मोसा चित चरनन में लाई जू॥ यह ब्रज मेरे मन भाइ जू॥ इति अष्टपदी बनयात्रा सम्पूर्णम्। ह० गणेशप्र० ॥ सं० १९३१ ॥

विषय—ब्रजयात्रा के गीत।

संख्या ४७१ बी. बांसुरी लीला, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०१ = १७४४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जगदेव सिंह, ग्राम—मंगा भवानी रैनी, डाकघर—मिश्रिख जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ बांसुरी लीला लिख्यते॥ बांसुरी दीजिये हो ब्रज नारि॥ १॥ कृष्ण बचन॥ कालिन्दी तीर कहि ईर बांसुरी भूमि बिसारी। ल जु गई तुम पास राह हम सुधी तुम्हारी। मादिन सुन्दर श्याम की बंसी हमरी रहु। हम आतुर हैं मांगही तुम नाहिं जु आहिं करा॥ सखी बचन॥ कं × कन्हैया बीर ताहि अब कौन पतीजै। हारि दिया कहि और × हमही का दीजै॥ तुम मन श्रृंगार मेलक मांगत हमसा छल कर चतुराई प्रभु छांडि के तुम बदा अचाचा हाय। कैसी बंसी है तुमारी हम नयन न देखी। बाप तुम्हारा साधु मान तुम पर बिने × रस गावन तुम फिरो कहिं मनसा बिसरि गई तेरी भी बाबा कर्ता हम मुरली नाहिं लई॥

अंत—सखी बंसी दया। ग्वालिन चतुर सुजान बांसुरी आतुरि दीन्ही माहन चतुर सुजान मोंहरे हंसि कर लीन्ही। मैं बंसी ग्वालिन मिली घूंघट बदन दुराय सूरदास प्रभु दासी है ग्वालिन प्रीति है अनुराग राय॥ श्री कृष्ण का मुरली बजाना॥ मैं बंसी अनुराग जाय जमुना तट लीन्ही। सुर तैतीसा आदि बड़ो सरबस जा लीन्ही। सब बालन सुखदायक राख नर को मान लिन मे तुम प्रभु आपु ही गुन गावत सूर सुजान॥ इति श्री

सूरदास कृत वसी लीला समास शुभ मस्तु लिपा राम वल त्रिपाठी स्वपठनार्थ संवत १८०३ चैत्र पक्ष शुक्ल नवमीयाम् ॥ राम राम ।

विपय—एक ग्वालिनी का श्री कृष्ण जी की वंशी चुराना ।

संख्या ४७१ सी वारहमासा, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—८ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री सूरत सिंह, ग्राम—मिचरा, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सूरदास कृत वारह मासा लिख्यते ॥ तकति रही मधुवन की डगरिया अव नहिं सूझि परै सजनी री ॥ लागत मास असाढ़ सपीरी जल में भरि गई ताल नदीरी । वैठी शोच करैं व्रज वाला कुवरीं सवतिया से नेह लगीरी ॥ सावन सव सपि चीर सवारैं चुनि चुनि मोतियन पाग भरीरी । अव तो कई हरि ऐसे व्रज में वीत गई छठ मास वड़ीरी ॥ भादौं मेह झमाझम वरसैं उमगि चली मथुरा की गली री । ढाढि विलोकैं राधा कुंज भवन में अजहुं न आये श्री कृष्ण धनीरी ॥ क्वार कुशल नहिं पावो सपीरी अव जिय सोच विरोग भरीरी । अव हरि आश नही मिलने की ना कोइ आइ कहै पतनीरी ॥ कातिक निरमल उगत चन्द्रमा निरपि रहैं ससार धनीरी । छिटिक रहे जैसे तारा गगन में चन्द्र चकोर से साँज लगीरी ॥ अगहन सव सपि चीर सवारैं अपने वलमुआ की सेज चलीरी । सोवैं वलमुआ के गर धर वहिया या सुप नाहिन जात कहारी ॥ पुसुवा उन्हे नहिं भावै सपीरी जाके वलम परदेश गयेरी । नित उठि कंत के कौन मनावै वरु मरि जैहों खाय कनीरी ॥ मघवा उनै भल भावै सपीरी जेकरा वलम नित घरही रहेरी । आली वसत के कौन मनावै दुख दै गये लै कंत नईरी ॥ फागुन के फरकै वाई अपिया अव कछु आगम जानि परीरी । चलहु सपी सव सगुन विचारैं अपने वलमुआ के आवन सुनारी ॥ चैइत सकल वन तजति राधिका चन्द्र सपी लै लाइ लहीरी । मज्जन करि सव देव मनावै पहिर पटोर भूपण अपनारी ॥ वैसखवै सवै सपि झारि विछावै छिरकत गध सुगध भरीरी । आवैंगे कंत सोवैं व्रजवाला तव यह तन की अगिन वुतारी ॥ जठवा में एक रथ हम देखोरी पवन के साथ में जात वहीरी । सूरदास वलि जाउ चरण की गावत मगल मृग नैनीरी ॥

अत—कौन उपाव करौं मोरी आली श्याम भये कुवरी वन जाई ॥ चैइत मास मोहि मदन सतावै वेसाप मास वहुत दुप पावै ॥ जेठ मास तन तपत धाम जो अंग चीर मोहिं एकौ न सुहाई ॥ असाढ़ मास वन घेरि आये वदरा सावन मास वहै पुरवाई । भादौं अगम पंथ नहिं सूझै जल से भरि गईं ताल तलाई ॥ क्वांर मास श्याम नहिं आये कातिक दियना अकाश वराई । अगहन अग्र सनेह श्यामवश को पतियां हमरी ले जाई ॥ पूस मास मोहिं शीत सतावत माघ विना पिय जाड़ न जाई ॥ फागुन फगुवा खेलव केकरे संग सूर स्याम अरु विनु जदुराई ॥ इति सूरदास कृत वारहमास ग्रंथ सपूर्ण समास सवत् १९१० वि० अगहन मासे शुक्ल पक्षे त्रियोदस्याम् । इति ॥ जै राम जी की ॥

विपय—विरहिन ने अपने वारह महीने किस प्रकार व्यतीत किये यह वर्णन ॥

संख्या ४७ श्री बिसातिन लीला, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५१, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९१२ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामनारायण, ग्राम—मसीरपुर, डाकघर—कासीमपुर जिला—खीरी।

आदि—अथ बिसातिन लीला लिष्यते ॥ श्री गणेशायनमः ॥ एक समय व्रज चंद नंद सुत मन में यही बिचारी। बनके भेष बिसातिन जी की छलिये राधा प्यारी ॥ कीन प्राव को लहंगा पहिरे अरुन जरकसी सारी ॥ अंगिया पास काल मंडम की अति छवि देत किनारी ॥ मोतिन की पहिर नक बेसर झालर दार बनाई ॥ मानो रति पति गली आप कर कहि न जात सुघराई ॥ करनफूल अति सोहैं माथ बीच बड़ाऊ। ता ऊपर अति लसत चंद्रमी मोतिन मांग भराऊ ॥ कंठ लसी दुलरी अरु तिलरी गज मोतिन के हारा। मानहु गिरि सुमेरु का विहाव करि धसी गंग की धारा ॥ गरे हमेल माल मोतिन को औ पहिरे बगवारे ॥ मानहु काम आपने कर से रुचि रुचि बीज संवारे ॥ बाजूबंद परम भल सो है बहियाँ का मुख नाहीं ॥ हरी धुरी पिच पटरा पहिरे उपमा की कोउ नाहीं ॥ हाथन में कंकन के चूरा मोहरी अधिक बनी है। उपमा ताहि कौन अब दीजे लागी कनी घनी है ॥ दसी अंगुरियन लसैं मुद्रिका हीरा जटित बनाई। को कहि सकै स्याम सुंदर की मैनम की सुघराई ॥ चंपकली पिवली पर सोहे रुचि रुचि मीकी बांधी। सुंदर स्याम मनोहर रूप सों तापर कोर्छी साधी ॥

अंत—पान दीजे मोहि बिदा की मैं अपने घर जैहौं ॥ तुम्हरी सील सुभाई राधे मथुरा में मैं कहिहौं। आनंद के कदम अनु मंदन अनु मंदन सुघरासी ॥ ऐसे रूप न धरिये माधौ मैं चरनन की दासी ॥ ये व्रज की नारी चवाइन मठ सुध जा पावें। घर घर घर करें मन मोहन बड़ो फसाद मचावें ॥ ताते आव भवन अपने को सुनिये मदन गुपाला। इनके सुमी अब भेद हो मथक कुंज में लाला ॥ अरस परस कैच सो लकै मैन सो मैन मिलावें ॥ नंद नंदन आनंद नाम के नंद गोव चलि आव ॥ जसुदा कही सुनो हो ल्यारन साय त्रिम कहां गवांये बाइन संग कलेवा करिके तब से फिरि अब आवे ॥ पेसत रहीं गुवालन संग बंसीवट की छांही। गेकुन जहां नंद लगाई जमुना तट के माहीं ॥ भली करी तुम प्रान पियारे अब चल करिये प्यारी ॥ परपे दर है तुम्हे बैसी परसी भरी है थारी ॥ नंद साय हरि सोजन कीन्हो बीरा मुख में दीन्हें। साये आप पलंग के ऊपर दरप मातु सुप दीन्हें ॥ जुग जुग जीवो कुंवर राधिका जुग जुग कुंवर कन्हाई सूरदास भगवान के सेवक जिन यह लीला गाई ॥ जो कोउ कृष्न बिसातिन लीला सुनै सुनावै गावै तरि वैकुंठ जाय सकल मनमानफल पावै ॥ इति बिसातिन लीला समाप्तम् ॥

विषय—श्री कृष्ण जी बिसातिन का भेष रच कर श्री राधिका जी के पास गए और अपने प्रेम का परिचय दिया॥

संख्या ४३१ ई० महादेव लीला, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०, पूर्ण, रूप—

नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामअधार मिश्र, ग्राम—ग्रामनगर, डाकघर —लखीमपुर, जिला—खीरी।

आदि—अथ महादेव लीला प्रारंभ ॥ श्री गणेशायनमः अब महादेव लीला लिप्यते ॥ मैं जोगी जश गाया रे बाबा मैं जोगी जश गाया। तेरे सुत के दर्शन कारण मैं काशी ते धाया ॥ पार ब्रह्म पूरण पुरपोत्तम सकल लोक जामाया। अलख निरंजन देखन कारण सकल लोक फिरि आया ॥ धनि धनि तेरो भाग्य जसोदा रानी जिन असा सुत जाया। गुणन बडे छोटे मत भूलो अलप रूप धरि आया। जो भावै सो लीजै रावर करो आपनी दाया। देहु असीस मेरे बालक को अविचल बाढ़े काया ॥ ना मैं लेहौं पाट पटंबर नामैं कंचन माया। मुप देखूं तेरे बालक को यह मेरे गुरू ने लखाया ॥ कर जोरे विनवै नद रानी सुन जोगिन के राया। काला पीला गौर रुप है बाघभर ओढ़ाया। कहुं डाकन की दृष्टि लगेगी बालक जात डिगया ॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यो जात डिठाया तीन लोक का साहिब मेरा तेरे भवन छिपाया ॥

अन—कृष्ण लाल को लाई जसोदा करि अचल मुप छाया। कर पसार चरण न रज लीन्हो शृंगी नाद वजाया। अलप अलप कर पाय छुवे है। हसि बालक किलकाया। पांच वेर परिकर्मा करके अति आनद वढ़ाया ॥ हरि की लीला हर मन अटक्यो चित नहिं चलत चलाया। अलप ब्रह्माड कोटि के नायक नदघरहि प्रगटाया। इन्द्र चंद्र सूरज सनकादिक सारद पारन पाया ॥ लागि श्रवण मंत्र दीन सुनाई हसि बालक मुसकाया ॥ कौन देश के जोगी हौ तुम कौन नाम घर धाया कहां वास यह कहत जसोदा सुन जोगिन के राया ॥ तुमही ब्रह्मा तुमही विष्णु तुमही ईस कहाया। तुम विश्वभर तुम जग पालक तुमही करत सहाया ॥ चिरजीवी सुत महरि तिहारो हौ जोगी सुप पायो सूरदास मिलि चल्यो रावरो शकर नास वताओ। इति श्री महादेव लीला संपूर्ण समाप्त ॥ श्री गौगेश की जै बोलो ॥ शिव ओंकारा ॥

विषय—शकरजी का कैलाश पर्वत से श्री कृष्ण जी के दर्शन को आना आदि वर्णन।

संख्या ४७१ एफ नागलीला, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०३ = १८४६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री अमरनाथ, ग्राम—दातारपुर, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नागलीला लिप्यते ॥ शुभ घरी शुभ दिन शुभ मुहूरत नद के लाला भयो ॥ लाइये ब्रजराज पंडित सुर नरन के दुख गयो ॥ धनि धनि जसोदा भाग्य तेरे गोकुला को सुप भयो। कस आज्ञा फूल कारण कृष्ण वनमाली भयो ॥ मारो गेद गिरो जमुना में कूदि कालीदह गयो। जहं नाग सोवै नगिन जागे कृष्ण पहुँचे जाइके ॥ कर जोरि विनती करत नागिनि जाहु लालन भागिके। नाग जागें हमैं लागें अव तो भागे ना बने ॥ होनि होइ सो होइ नागिनि नाग अव नाथे बने। कर जोरि विनती करत नागिनि असा लालन मति कहौ ॥ जाके सहस फन दो सहस जिम्या ताते सरि चरि मत लहौ। कंस के सग फस खेलै नाग को सहारि के ॥

अंत—करजोर विनती करत नागिनि मांगि पीतम पाइ हौं। अहिवात दे जसुदा के नंदन बंदि छोरि कहाइहीं। ये जी तब ही नागिनि से यों बोले अब तू विनती कौन करै॥ तेरो नाग छीनहिं सबै केउ चरन चिन्ह कला सरक सर मारि सिर अस कीन्ह संत सब सुप पावहीं॥ अब सूर के प्रभु नाग लीला रहस मंगल गावहीं॥ इति श्री नागलीला सूरदास कृत समाप्त॥ लिपतं बेनी माधो ब्राह्मण विसवां वासी माघ शुक्ल द्वादस्याम् संवत १९०१ वि०॥

विषय—श्री कृष्णजी का नाग नाथना।

संख्या ४७१ डी. राधाकृष्ण मंगल, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१, पूर्ण रूप—दीमक लगी हुई पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामअधार मिश्र, ग्राम—प्रामनगर डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ राधा मंगल लिख्यते॥ चौ०॥ बरसा में वृषभान दुलारी। चंद्र बदनि मृग लोचनि प्यारी पंकज बदु गुण रूप रसाला। जनम गाई है जहां नंदलाला॥ निरप रूप नंद जू की रानी। गोद उछाह भवन में आनी॥ छंद॥ गोद उछाह भवन में आनी आभूषण पहिराइयो। मांग मुक्ता पीत पट उर हार सुमन सुहाइयो॥ बिंदु भाल की दई कुमकुम भाल मनाइये। सूर के प्रभु साजि नप चप कुंवरि भरा पठाइये॥ चौ०॥ आवो मेरी प्राण जु प्यारी। मोतिहिं पेठन कहो जु सिंगारी कुम कुम माल तिलक किन्ह कीनो। किन मृग मदको बिंदा दीनो॥ छंद॥ बिंदा तो मृग मद दियो मस्तक निरषि ससि संसय पर्यो। एक सरद निसि की कला पूरण भाव मन गर्व हर्यो॥ हँसि हरि मुप सो कहत जननी अलक बेनी कै गुही। सूर के प्रभु मोह प्यारी लोचि कह मोहि माइ कही॥ चौ०॥ नंदजी के घरनी चक सो है। मेरो बदन तन फिरि फिर जो है। पेखत कोमल निकट बैसारी मन में आनंद लियो है भारी॥ छंद॥ आनंद मन में लियो भारी निरषि मुप चषि चषि गई। राधा जू को नाम लै लै तोहि हसि गारी दई। पायी तो परी संभारि भूषण गोद लै भरा भरी। सूर के प्रभु हर्षि हिय में बिधना सों बिनती करी

अंत—श्री कृष्ण मंगल॥ छंद॥ जनमे श्री कृष्ण मुरारि भक्त हित कारने। मथुरा लियो अवतार गोकुल झूले पालने॥ तिथि अष्टमी बुधवार भादौं वदि की करी। रोहिणी नक्षत्र आयी रात जनम लियो शुभ घरी। जनि देवकी वसुदेव जहां प्रभु अवतर। धन्य जसोदा बाबा नंद महर भर पग धरे॥ धन्य धन्य सुर नर मुनि सब जय जय करैं। दुंदुभि बजत अकास सुमन वर्षा करैं॥ ब्रजवासी गोरस भरि भरि करि ल्यावहीं। दधि कांदौं बाबा नंद सुबीथ मचावहीं॥ बाजत ताल मृदंग बीन औ बांसुरी। निरतत गोपी ग्वाल परम चित चावरी। जसुमति नीर पखारत अंग भई आरसनी। सुंदर बदन निहारि चहत भई भामिनी। श्री बलभद्र जी के बीर असुर दल नंदना। भक्त बत्सल महाराज आनंद कुल मंडना॥ संकर धरत है ध्यान सुरेन्द्र सिहावहीं। सो मुप चूमति माइ सु पलना झुलावहीं। श्री नंद जसुदा से नैन चरन चित ल्यावहीं। हरि गुन मंगल गाय गोविंद गुण गावहीं॥ इति श्री राधा कृष्ण मंगल समाप्त॥ श्री राधाकृष्णार्पण मस्तु शुभं भवतु।

विषय--श्री कृष्णजी का जन्म और राधाकृष्ण का प्रेम आदि का वर्णन।

संख्या ४७१ एच. राधामगल, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवविहारी, ग्राम—मिर्धोली, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ राधा मगल लिप्यते ॥ चौपाई वरपाने वृप भान दुलारी। चद्र वदनि मृग लोचनि प्यारी। पकज वपु गुण रूप रसाला। पेलन गई है जहा नंद लाला ॥ निरप रूप नद जी की राधी। गोद उठाय भवन में आणी ॥ छद ॥ गोद उठाय भवन में आणी आभूपण पहिराइयां मांग मुक्ता पांत पट कर हार सुमन सुहाइया ॥ विदु काजल की दई कुल देव मान मनाइये। सूर के प्रभु साजि नप चप कुवरि घरां पठाइयां ॥ चौ० ॥ आओ मेरी प्राण जु प्यारी। भोरहिं पेलन कहां जु सिधारी। कुम कुम भाल तिलक किन कीनो। किन मृग मद को विंदा दीन्हो ॥ छद ॥ विंदा तो मृग मद को दियो मस्तक निरप शीश संसय पन्यो ॥ एक शरद निशि की कला पूरण मान नभ गधर्व हन्यो ॥ हसि हेर मुप सों कहत जननी अलक वेणी के गुही सूर के प्रभु मोह व्यापे सांचि कह मोहि भई डही ॥

अत—दिन दस पाच हटक जब कीन्ही कुवरि कुवरि को कृष्ण डिपाई आन दीन्ही मुर्छि परी जब तनु न सभान्यो लाडली को डन्यो भुजगम कान्यो ॥ छंद ॥ लाडली को डन्यो भुजगम कान्यो गारडू हान्या सर्व नद नंदन मंत्र काजू यह विप डाप्या नहिं ढवे ॥ पठये सपी गोपाल काजे ल्यावो आनद कद को सूर के प्रभु लहर उतरै मिले ब्रज के चद को ॥ चौपाई ॥ कर मनुहार कृष्ण जब लाये। देपत ही विप दूर हो जाये ॥ उठ बैठी मन कियो है हुलासा। कीरति चली अपने पति पासा ॥ छंद ॥ कीरति चली अपने पति पासे प्रीति रीति वधारिये। व्याह का यक मत्र का जो सपियां मगल गाइये ॥ वृदा तो वन मे रच्यो स्वयवर कुज मडप ठाइये। सूर के प्रभु श्याम वन श्री राधिका वर पाइये। इति श्री ललित राधा मगल सूरदास कृत समाप्त श्री राधा कृष्णार्पण मस्तु शुभ भवतु ॥ लिपा शिवगिरि वैरागी महमूदावाद कार्तिक वदी २ संवत् १९४० वि० जो वाचे लिपे सुने सुनावे सो आनंद को पावे मगल गावे। सब सुप पावे गोद पेलावे प्रिय ललना ॥ जै राम जी की ॥

विषय—राधिका जी का व्याह वर्णन ॥

संख्या ४७१ आई. रामजी की वारामहा (बारहमासा), रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७८४ = १७२७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सीताराम सिंह, ग्राम—महाराज नगर, डाकघर—मैंगलगज, जिला—सीतापुर।

आदि—ॐ श्री रामायनमः ॥ अथ रामजी का वारामहा लिप्यते ॥ दोहरा ॥ डो

ऐतर चिंता चितवती फूक रही बन राई। दसरथ का मन मोह लिया राम सिंघासन पाई॥ पौडड़ी॥ ऐतर चंचल भई अपार राम की महिमा अपरपार॥ घर दशरथ के लिया अवतार। कंचन मुकुट विराजत बास॥ कुंडल झलक रहे कानों नाल। कि महिमा राम की॥ प्रभु के कमलों कैसे नैन। मुख से बोलें अमृत बैन राम वियोगी साजन सैन॥ प्रभु की सगत करौ दिन रैन मन तन अंत रहो वे चैन॥ कि राम अब सुमरोई॥ तिलक है बिन्दी जोत सवाई॥ घन बिच बिजली चमक दिखाई॥ पुरी अयोध्या राम सहाई दरसन करते चित लाई॥ बहुत धन कुसल्या माई॥ जिने प्रभु आया। घर दसरथ के मंगल गाया। तैंतीस करोड़ी मंगल गाया। ब्रह्मा महेश्वर दर्शन पाया॥ मेह अजुध्या नगरी आया। पूजा करते हित चित लाया॥ गोविंद जाव के राम अजुध्या नगरी आया॥ मन तन भई आनंद॥ संतारि देहु कास उपज्या उतर गए सब फंद। जिउकर चहु भमदे वरहा दरसन देख्या गोविंदा॥ जो कछु राम नाम तुमारा जस गावो। राखहु सरन मुकुंदा॥

अंत—फागुन॥ दोहरा॥ ओंकी राम प्रतिग्या सीता चपा चराई। सुर नर मुनि जै जै करी धन सिया रघुराई॥ पौडड़ी॥ कैसी रितु फागन की आई त्रिभुवन फूक रहे बन राइ। संतारि व हुलास बधाई॥ असवक्की के रघुराई। मारग ऊपर वैस जाई करो प्रभु आवदा॥ राम बिभीषण संत बुलाइया। उसनू सब विधि कहि समझाइया॥ पुपप विमान निर्मायण सिजाइया। सीता लछिमन संग चढ़ाइयां॥ देवते पै जैकार बोलाइया। प्रभु की कथा जीति सिधाइयां॥ असुर सिघारमे ज्यो कर फूली बाग बसंत। प्रभु जी सेना चली विअंत। हरि मोती लाल जवाहर देवे कमला कंत॥ नाल बिभीषण होइयां संत॥ सु प्रसन्न होइके घन मुहूरत घन बहार। प्रभुजी दयथी उतरे पार पवर होइयां भरथ कुमार। सुणि करि कीने दान अपार। पर की वासी सभ भई तयार अगो मिलने को॥ सुणि सुणि दरसन को सभ आवहिं। कचन मोती मणि लिआवहिं। प्रभु ता देख महा सुख पावहिं। उपै जावक चत्तर न आवहिं। का लेवहि राम नू॥ कौसल्या पुर विच मंगल गावहिं अग्रा- दिक सगले मन भावहिं। अधि भरे तै चाम न हाई। दुसमन दूत रहिया कोई॥ चौदा बरस मैसा भइया॥ राम अजुध्या बासा कधिया॥ माता मिल मर मल रोइया। प्रेम मन में ही॥ मैका राम भरथ दा भाइया॥ संसारोग सगल मिटि गयिया। राम केकई हीपै रोप लिया॥ देख मुनिया मन विगसदिया॥ प्रभु बिन कउन करसी दमिया॥ उधारे पतित को॥ राम कुसल्या मंदर आइया। माता आगे मथा निवाइया। कहि विसवर मुनि बिगसाबिया। किया सिंघासन राम बैठाइया॥ माथे तिलक वसिष्ठ लगाइया राजे राम द॥ गई तपीशर अपने घर को। प्रभु की आज्ञा पाई। हरि मोती लाल जवाहर दे कुसल्या माई। पुर विच जावक कत अन आई। दाम ले को पाई॥ दोहरा॥ जाचक भये सुमेर सि रंकन रहो ना कोई। सूर राम की विनती प्रभु दरस दिखायो होई। इति श्री राम जी की बारामहा संपूर्णम्॥ संवत् १७८४ वि०॥

विषय—रामचन्द्र जी का बनवास से लेकर राजगद्दी तक की बारामासी पंजाबी भाषा में वर्णन॥

संख्या ४७१ जे. रामजी का बारहमाह, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४७ = १७९० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामभूषण वैद्य, ग्राम—कामतापुर, डाकघर—इटौंजा, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ रामजी का बारा माह लिष्यते ॥ दोहरा ॥ चौं चैचर चिंता चित बने। फूल रहो बन राई। दसरथ का मन मोह लिया। राम सिंघासन पाई ॥ पउड़ी ॥ चैतर चचल चड़ी वहार रामजी की महिमा अपरपार, घर दसरथ के लिया औतार। कंचन मुकुट विराजत वाल। कुंडल छक रहे कानो नाल की महिमा राम की ॥ प्रभु के कमलों जैसे नैन मुख से वोलै अमृत वैन राम विजोगी साजन सैन ॥ प्रभु की भगत करो दिन रैन। मन तन अंत रहो वे चैन। कि राम जब सिमरोई ॥ तिलक दे चिंटों जोत सवाई। घन विच विजली चमक दिषाई ॥

अंत—दोहरा ॥ लीनी राम प्रतिज्ञा सीता वषाघराई। सुर नर मुनि जैं जैं करै छत्र सिया रघुराई ॥ पौडड़ी ॥ कैसी रितु फगन की आई त्रिभुवन फूल रहे वनराई ॥ सतारिंदे हुलास वड़ाई। भरथ उड़ी के रघुपति राई ॥ मारग ऊपर वैठा जाई ॥ कदे प्रभु आवदा राम विभीषन संत बुलाइ या ॥ उसनू सब विधि कहि समुझाइया। पुपप विमान विभीषन सिआइया ॥ सीता लछिमन संग चढ़ाइया ॥ देवतेया जैकार बुलाइया ॥ प्रभु जी लंका जीति सिधाइया। असुर असुर सिवारणों ज्यों कर फूली बाग वसंत प्रभु जी सेना चटी विअत हीरे मोती लाल जड़त। अचरज देषे कमला कत ॥ नाल विभीषन होइया संत ॥ स प्रमन होई कै धन महूरत धन वहार। प्रभु जी दधि धी उत्तरे पार ॥ पवर होइया भरथ दुआर ॥ सुनि करि कीने दान अपार ॥ पर की वासी सभ भई तैयार ॥ आगे मिलन को सुणि सुणि-दरसन को सब आवहि। कंचन मोती मनों लियावहिं। प्रभु तो देष महा सुप पावहिं। दये जाचक नजरन आवहिं। जो लेवहि दानन् ॥ कौसल्यापुर निच मंगल गावहि ॥ ब्रह्मादिक संग ले मन मोहहिं ॥ अधियारे ते चान न होई दुसमन दूत रहे न कोई ॥ चौंदा वरस में मेला भइया। राम अजुध्या वासा लइया। माता छगभर अ क रोयिया ॥ प्रेममन में वदी ॥ मेला राम भरथदा भइया। ससा रोग सकल मिटि गइया। राम कैकेई दी पाही पइया ॥ देष सुमित्रा मन विगसइया ॥ प्रभु विन कौन करसी दइया ॥ उधारे पतित को ॥ राम कुसल्या मंदिर अइया। माता आगे मथा निवाइया ॥ करहिं निछावरि मुनि विगुसाइया ॥ लिया सिंघासन राम वैठाइया ॥ माथे तिलक वसिष्ट लगाइया ॥ राजे रामदे ॥ गई तपीश्वर अपने घर को ॥ प्रभु की आग्या पाई ॥ हीरे मोती लाल जवाहर दे कुसल्या माई ॥ पर विच जाचक कर नजर न आवै दान ले जो पाई ॥ दोहरा ॥ जचक भई सुमेर सी रंक न रहो कोई। सूरदास की वीनती प्रभु दरसत्यहारो होई ॥ इति श्री राम जी को वारा महा सपूर्ण ॥ संवत १८४७ वि० ॥

विषय – श्री रामचंद्र जी की जन्म, वनवास और लंका जीतकर घर (अजुध्या) लौट आने तक की लीला का वर्णन ॥

संख्या ४७१ के. रामजी का बारहमासा (बारहमासा), रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मथुराप्रसाद तिवारी गंगापुर ग्राम—मिमिख, डाकघर—मिमिख, जिला—सीतापुर।

संख्या ४७१ एल. सूरसागर, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—१३४, आकार—१ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९६० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदीन वाजपेयी, ग्राम—औरंगाबाद, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सूरसागर लिष्यते ॥ राग केदारा ॥ बरनौं बालभेष मुरारि । पकित जित तित अमर मुनि गन नंदलाल निहारि ॥ केस सिर बिनु पिवन हरि के किरकि चहुँ दिसि डारि ॥ सीस परि धरि जटा मनु सिसु रूप किय त्रिपुरारि ॥ सदन रज तन स्याम सोभित सुभग इहि उनहारि ॥ मनहु अंग बिभूति राजित संभु सो मधुमारि ॥ तिलक ललित लिलार केसरि बिंदु सोभा करि तीय नयन तृतीय लोचन रह्यो रिपु तम जारि ॥ कंठ कठुला नील मनि मय माल रची संवारि नील गिरधर गरल मानौं लीलिषो मद बारि । कुटिल हरि नष हरै हरि के निरषि नारि ॥ ईस मनु रजनीस राष्यो सीस सैनु उतारि ॥ त्रिदस पति पति असनकी मों असन कौं करै मारि । सूरदास बिरंच जाको जपत अस मुषचारि ॥ १ ॥ राग बिभास ॥ प्रात समै उठि सोवत सुत को बदन उघार्‍यो नंद । रहि न सकै अति ही अकुलाने बैन निसा के दंद ॥ स्वच्छ सेज ते मुष जब निकस्यो गयो तिमिरि मिटि मंद ॥ मनु पय निधि माथ फेनुफारि करि गह दिषाई चंद । जागे चतुर चकोर सूर सुनिये सब सषा स्वछंद । रही न सुधि सरीर धरि मधु पिवत किरनि मकरंद ॥ २ ॥

अंत—राग कदारा बरनी ॥ ए मन निपटि निलज अति नीति ॥ जिअति का कहु कीन चाहै मरत विष तजनि प्रीति ॥ स्वाम कुंचित सुपथ कानौ श्रवन पुंछ बिहीन ॥ नागन माजन कंठ बिन्न मिर स्वामनी आर्दान ॥ निकट निमन कौं बिप आयुष करत तहिन धार ॥ अजा नाहक मग मडि तदपि बारंबार पिनक मदि इहि पेड दही दहै देषत लोग ॥ सूर हरि ते बिमुष है नर मती केसे भोग ॥ ४०९ ॥ राग सोरठ ॥ अजौं तू सावधान क्यौं न होही ॥ माया बिमुष भुवगन को बिनु उतर्‍यो आजहि ताहीं राम नाम सो मय सजीवन जिन जग मरता जिवाया ॥ बार बार साद श्रवन निकट हाइ गुर गार दपटायो ॥ जागि महा मैंड बिहबल बैराग गीत के गायो ॥ सूर मिटे अगयान मूरछा ग्यान मूर के पाये ॥ ४१० ॥ राग बिलावल ॥ ऐसी करुना सिंधु की बहत बनि आवै । कपट हेत पर सैन की जननी गति पावै ॥ वेद उपनिषद जसु कहै निरगुनहि बतावै ॥ सोई सगुन हाइ नंद के द्वारे बंधावै ॥ उग्रसेन की दीनता सुनि कै दुष पावै । कंस मारि राजा कियो आपनि सिर नावै ॥ जनमत बन गाने उपासी साप बराव ॥ नवै बास दिनु पेनु ज्यो सुमिरत उठि धावै ॥ जम सिंधु की बंदि कटी नृप कुल जस गावै ॥ सोक समुद्र ते उधरे पांडव सद आवै ॥ कलजुग नामा मगर है जाकी छाप्यहि छवावै । कहुन राप गनि सुर के ताते गहर लगावै ॥ ४११ ॥

इति श्री सूरदास कृत सूररत्न संपूर्ण शुभम् मिती अषाढ़ सुदी १५ संवत १६३० शहर बनारस ॥

विषय—सूरदास जी के भजन सूरसागर से छांट कर संग्रह किये गये हैं ॥

संख्या ४७१ एम. सूरसागर, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—२२४, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४८०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२७ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगाप्रसाद, ग्राम—कजरा, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गुरु गोविंदाय नम ॥ श्री व्रजवल्लभाय नमः ॥ अथ सूर सागर लिष्यते ॥ राग गंधार ॥ आज बन कोउ जनि जाय ॥ सब गायन बछा समेत लै आवहु चित्र बनाय । बालक है घर भयो नंद के कहत सुनाय सुनाय ॥ नृत्वत गावत करत कुलाहल आनद उर न समाय कत हो गहर करत वे काजे वेगि चलौ उठि धाय ॥ अपने अपने मन के चीत्यो नैनन देष्यो आय । एक फिरत दधि दूब देत सुप एक रहत गहिपाय ॥ येक बसन पसु देत बंधाये येक उठत हसि गाय बाल विरध नर नारिन के मन भयो चौगुनो चाय ॥ सूरदास प्रभु प्रेम मुदित अति गनत न राजा राय ॥ १ ॥ आजु बधायो नद के गोपी गावहि मगल चार । आय जु मंगल कलस ले कै ता ऊपर फल डार । अछत रोचन दूब दधि लै चली वहु विधि द्वार घर घरनि ते गावत चलीं व्रज वधू झुंड अपार । चली सब मिलि नद के वर देषन नद कुमार ॥ देषि मोहन आस पूरी सबै देति असीस । महर नंद के लाडिले तुम जियो कोटि वरीस । महरि दान जु बहु दियो अरु दीनो नंदराय । ऐसो सुप देषो सषी जन सूरदास कहै गाय ॥

अत—गूजरी ॥ सषीरी काहे को गहर लगावति ॥ कहति सुप मानि कै क्यों नाहीं उठि आवति ॥ आजु सुवात विधाता कीन्ही मनहु हती नित आवति । सुत की जनम जसोदा के घर ताघर तालगि तुमहिं बोलावति ॥ कनक थार दधि ओदन भरि वेगि चलहु मिलि ठकुराई ॥ महाराज रिषि राज सुरनवर देषत रहत लजाई ॥ निस्पृह देस राज ताको करि लोगन परम उछाह ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह सब भये चोर ते साह ॥ दिढ़ विस्वास कियो सिंहासन तापर बैठो भूप । हरि जसु विमल छत्र सिर सोहत राजत परम अनूप ॥ हरि पद पंकज प्रीति प्रिया वर ताही सो मन रातो मत्री ग्यान औसर पावे सकुचति कहत न वातो ॥ अरथ काम दोउ दूरि रहे दुरि धरम मोक्ष सिर नायो सुनि विवेकता द्वार पौरिया मर्म न कबहु पायो ॥ अष्ट महा सिद्धि द्वारे ठाढ़ी कर जोरे कए लीने । छरीदार वैराग विनोदी झिरकि बाहरे कीने । माया काल कछू नहिं ब्यापे पारके रीति सो जानै ॥ सूरदास प्रभु नर तन धरि कै गुरुप्रसाद पहिचानै ॥ जितना पाया उतना लिषा पुसालचद विसवा निवासी सवत १८२७ मिती ५ क्वारवदी ॥

विषय—कृष्ण जन्म से लेकर व्रज में रहने तक की लीलाओं का वर्णन ।

संख्या ४७१ एन. सूरसागर, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९२०, रूप—

प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दुर्गाचरण दीक्षित, ग्राम—सीकरी, डाकघर—हैदीर, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ सूरसागर लिख्यते। अथ विष्णु पद प्रारंभते॥ भगरवि चलो तुम कहं नंद बोलायो। जसुमति अम्मे कान्ह बेगि चलो गहरू जनि लावो। कियो वेद विधि दान॥ मैवत चली हाथ लिये हंसुवा गोपिन ग्वाल बोलायो। करते कीन्ह सुतिका छेपन जावक लाइ छोवायो अगमा माझ गरे बगरनि धरमा कनक पत्र बन्धवायो। पपर महिं दीन्ह बहुत कछ मारयो हरि जू को मार छिनायो। मार्यो रवनि मेह बढ पारुम मुइयां बकक लुहाजी। सूरदास वकि जाई परम की बचा जारमहिं पायो॥

अंत—बिन र गोपाल बैरनि भइ कुंजै॥ तब तो लागि कता तरु सीतल अब भई विषम अगिन की पंजै॥ वृथा बहै जमुना पग बोलै कहीं कहीं कमलन अलि गुंजै॥ सीत समीर नीर सम लागै दधि सुत किरन भानु भइ भुंजै॥ ये ऊधौ माधौ सन कहियो मदन मारि बिरहिन भइ लु जै॥ सूर स्याम प्रभु तुम्हरे दरस को मग जोवत अखियां भई पुंगै॥ अपियां करि रही अति भारि। सुन्दर स्याम पाहुने के मिलन आहिं दिन चारि॥ हाथ बके पाये रसे उठावत अब वर्षा अनुहारि॥ हाँ तबै स्याम स्याम करि टेरौं कालिन्दी के करारि॥ कमल बैदना ऊपर ही पवन चुवत है वे वारि। सूरदास दरसन बिन देखे सर्क न पंप पसारि॥ माधौ बकसि विदेस रहे॥ अमर राज सुत रमनि दिन विरपत नीर बहे। मारुत सुत पति नंद गोप सुत हरि मधु बचन कहे। जस रितु नाम बाम अब छागे काके मद्ध रहे॥ कुंती पति पितु तात मारि बरता अरि दह दहे। पट सुत रिपु तनया पति सजनी भामिन नेह निबहे। अप सा सुता तासु सुत वाहन बोलन आस सहे सूरदास भगवंत भजन बिनु सुखमा छीन रहे॥

विषय—श्री कृष्ण की महिमा तथा गोपियों के प्रति प्रेम गोपियों का विरह और ऊधो के हाथ संदेसा भेजना आदि।

संख्या ४७१ ओ बेनीमाधव की बारामासी, कागज—देशी, पत्र—२ आकार—६×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६ परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८१० = १७५३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगादीन मुराऊ ग्राम—श्री लछमनपुर डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ बेनीमाधव की बारामासी लिख्यते॥ कार्तिक किलोल करैं सब सखियां राधा विचार करैं मन मे रे॥ माधौ पिया को नाम मिलायौ नाहीं ती प्राण तजौं छिन मेर। हमको छांडि चले बेनी माधो राधा सोच करैं मन मेरे॥ १॥ अगहन नंद बनाय सांवरो जाय पैठे तट जमुना के रे। पैठत नंद गिरो जमुना में काली नाग नाथ्यो छिन में रे॥ हमको छांडि चले बेनी माधौ राधा सोच करै मन में रे॥ २॥ पूस माह हमसे छल कीनो आप चले सौतों मधुबन कूं रे। तुम नंदलाल कमल के कपटी हम सो कपट किन्हो मन में रे॥ हमको छांडि गये बेनी माधौ राधा सोच करै मन मेरे॥ ३॥ माह मास पिया चाही लगत है नींद न आवे मेरे नयनन को रे। हमको जोगिनि

कीनी माधौ जी घर घर अलप जगावन कू रे ॥ हमको छांड़ि गये वेनी माधौ राधा शोच करैं मन में रे ॥ ४ ॥ फागुन रंग बनाय सांवरे जाय खेलैं संग कुविजा के रे । फैंट गुलाल लीना पिचकारी मारत है तकि घूंघट मे रे ॥ हमको छाडि गये वेनी माधौ राधा सोच करैं मन मैं रे ॥ ५ ॥

अंत—भादौं भवन नींद नहिं आवै मोरवा वोलै वाहीं मधुवन में रे ॥ कोयल होय मैं वन वन ढूढ़ो सूखे ताल वृन्दावन के रे ॥ हमको छांड़ि गये वेनीमाधौ राधा विचार करैं मन में रे ॥ ११ ॥ वारा मास निर्मल भये चदा गोरी सोवैं अपने अगन में रे ॥ सूरदास तव आनि मिले हरि सुखी भई राधा मन में रे ॥ हमको छाडि चले वेनीमाधौ राधा सोच करैं मन में रे ॥ १२ ॥ इति वेनीमाधौ की वारामासी सूरदास कृत सपूर्ण समाप्त लिपत ज्ञानी राम वैश्य शिवपुर वडोद निवासी सवत १८१० वि० चैत्र शुक्ल रामनवमी ॥ जै गोपाल हरे जै जगदीश हरे ॥ राम राम राम ॥

विषय—श्री कृष्णजी का श्री राधिका जी को छोड़कर वाहर चले जाना और राधिका जी का उनके विरह और सोच में ११ माह व्यतीत करना और १२ वें मास में श्री कृष्ण जी का आना और राधिका जी का प्रसन्न होना आदि ।

संख्या ४७२. अरजुन गीत, रचयिता—सूरदास, कागज—साधारण, पत्र—९, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री व्रजभूषण सिंह, ग्राम—झुकवारा, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अरजुन गीत लिष्यते ॥ अरजुन पूछै कृष्ण जु कहै । भक्ती हेत परमारथ लहै ॥ कौन पाप ते वेटा मरि जाइ । सो कौन पाप वताउ मोहि कृष्ण कहै अरजुन सुनि लेउ, तुम सौं कहौं वेटा को भेउ । ब्राह्मण की वेटी जो घर में देही येटी जीवै वेटा मरि जाहिं ॥

अत—अर्जुन पूछै कृष्ण जो कहै । भक्ति हेत परमारथ लहै ॥ जैसी भगति हमारी करै । जातै स्मभवसागर तरै ॥ कृष्ण कहै अर्जुन सुनि लेउ । तुमसैं कहौं भक्ति को भेउ ॥ छाड़ि पाप साची जिय धरै । जो मैं कछू कपट नहिं राषै ॥ भगती करै औ चिता जाइ । सूरदास ताकी वलि जाइ ॥ इति श्री अरजुन गीत संपूर्ण १ समाप्त ७ मिती वेगहन सुदी ५ सवत् १९३९ सन् १२ ॥

विषय—विविध पापो के कारण तथा भक्ति सम्वन्धी कुछ उपदेश ।

संख्या ४७३ ए पोथी एकादशी (एकादशी माहात्म्य), रचयिता—सूरजदास, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—६३⁄४ × ५ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री भागवत लाल, डाकघर—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम. । श्री महावीर जी सहाय श्री पोथी एकादशी ॥ श्री लंवोदर गजवदन सदन वेद वुधि रास ॥ तौ सुमिरे अघ करत है होत वुद्धि परकास ॥

चपाई ॥ बरनौं गुर गन पति कर जोरी। बरनौं देव तैतिस कर जोरी बरनौं सुंदर चरन मुरारी। बरनौं ममरदेव त्रिपुरारी ॥ मात पिता अरु गुर की दाया। अछर मिलै देहु रघु राया। सत जुग सत आगे चलि गयऊ। तेहि पाछे पुनि त्रेता भयऊ ॥ सब राज हरिचंद प्रभु भारा। जो पंच प्रिममी कीन समारा। तेकर पुत्र भए रोहितामा। पसरा धरम पाप हुए नासा ॥ ताकर पुत्र रूप मंगल राजा। करत पुन्य हुए दालिद्र भागा ॥

अंत—मत धरमी घर सब हितकारी ॥ दोहा ॥ धन्य राजा रूप मंगल पावा, पद निरवान। चौदह भुवन सुचित भए तेगह कीन्हे अनना दान ॥ चोपाई जे फल परस देव के द्वारा। जे फल जगरनाथ जदेमारा जे फल भत मेघि के कीन्हे। से फल गाइ ब्राह्मन क दीन्हे से फल मबस तीरथ के कीन्हे। सोइ फल एक व्रती के कीन्हे दोहा। कोटि तीरथ जनु कीन्हे। गहने कीन्हे दान सोई साईं फल एकादसी गह पावई पद निरवान ॥ पोथी-संपूरन एकादसी महातम संबत १९१४ सन १२६४ फसली मिती सावन मासे शुकुल पछे तिथौ त्रिरोदसी वार सोमवार चंद्र बासरे ॥

विषय—एकादसी व्रत की उत्पत्ति और उसका फल वर्णन वंदना—पृ० १ त्रेता में हरिश्चन्द्र राजा के पुत्र रोहिताश्व और उसके रूप मंगल राजा का होना वर्णन। पृ० २ राजा के बाग में इन्द्र का अपनी अपसरा का फूल लेने के लिये भेजना उसका फूल लेकर विमान से चलना। बागवान की स्त्री का आना। भँडेड़े पौधों को रूधाना और उसके ६ मसै विमान का रुक कर पृथ्वी पर लौट आना तथा पुनः न उड़ना राजा का आकर कारण पूछना और एकादसी के माहात्म्य के महत्त्व से पुनः उड़ने का हाल सुन राज में कौड़ी पिर आना पाले में कोकिन के उपवास से एकादसी के महत्व की प्राप्ति सै उसका पुन्य देने से लेमात का उड़कर इन्द्र लोक को जाना परियों से एकादसी के फल का सुन राजा का राज्य भर में एकादसी के व्रत का प्रचार करना—पृ० ८-१२ मास के एकादसी व्रत का विधान और महत्व वर्णन—अयोध्या नगर महत्व वर्णन पृ० ८—१४ यम राजा का एकादसी के पुण्य फल का उत्कर्ष न सहन कर इन्द्र के पास जाना। इन्द्र का कोप करना, इन्द्र का यम को लेकर विष्णु के पास जाना। विष्णु का संकर के पास भेजना ॥ संकर का सब को लेकर ब्रह्मा के पास जाना ब्रह्मा का सब देवताओं को बुलाना और व्रत भंग का उपाय पूछना। सब का अपनी अपनी समस्यानुसार कहना। नारद के उपदेश से मोहिनी रूप स्त्री का भेजना, उसका बन में आकर माया रचना, राजा का उस पर मोहित होना, उसका राजा से वचन बद्ध होने की प्रार्थना पर पत्नि रूप से अयोध्या जाना। एकादसी के दिन राजा को एकादसी व्रत से पृथक (भ्रष्ट) होने के लिये हठ करना, उसका राजा से उसके बदले में उनके एक मात्र पुत्र का सर काट कर मांगना राजा का दुखित होना, रानी और कुमार की इच्छा से राजा का पुत्र को मारने के लिये उद्यत होना। भगवान का ब्राह्मण का वेष धर कर ब्राह्मण के पास आना। परीक्षा से प्रसन्न हो वर दान देने को कहना राजा का भगवान के साथ वैकुंठ का वर मांगना। भगवान का एवमस्तु कहना। देवताओं का अपने २ सौपों की खींच लेने से मोहिनी का गायब होना, राजा का वैकुंठ का दर्शन करना। एकादसी के फल की महिमा वर्णन पृ० १४—२२

संख्या ४७३ बी. रामजन्म, रचयिता—सूरजदास, कागज—साधारण, पत्र—३५, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, रूप—प्राचीन, पद्य। लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री माताफेर तिवारी, ग्राम—चटा, डाकघर—गड़वारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—पृष्ठ ५ —एक से एक महा रन बासा। सुष विलास इन्द्रासन पासा॥ ऐहि विधि राज करत दिन गयेऊ। आनद मंगल बहु विधि भयेऊ। एकै दिवस अहेर नृप गयेऊ। बन भूले पथ नहिं पायेऊ॥ बन अपार तहँ गये राई। दस फिरि पथ नहि पाई॥ सरवर एक राव तब देषा। भई साझ तह बसौ विसेषा॥ दो० .—सरवर निकट बैठिकैं, राजा करि अनुमान। आपु अकेले बैठि तहँ, हाथ लिये धनु बान॥ विधि सँजोग सरवन तहँ आये। मात पिता को तीर्थ कराये॥ अधी अन्ध रिषीसर ताही, क्षुधावंत सरवन सों काही॥ पुत्र आन मोहि पानि सो पिआउ। प्रान जात तुरत चलि आउ पीहैं नीर रहै प्रान हमारा सुनि सरवन मन कीन विचारा॥

अंत—घर-घर आनँद बधावने होंगे सो मगल चार। परजा लोग सब हरष सों, सब के राम अधार॥ सूरज दास कवि जो सुना राम जनम विस्तार। गुरु प्रताप को दास सो, सत्र कहा पुकार॥ राम जनम की पोथी पढ़ै सुनै मन लाए। सो नर नारी समेत सुष वैकुंठहि चलि जाए॥ इति श्री पोथी रामजनम कथा सपुरन समाप्ता सुभ सिती जेठ बदी ६ स० १९०९ मुकाम कानपुर कै छावनी॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १४ तक—राजा का मृगया को जाना, मार्ग भूल जाना, रात्रि को एक तड़ाग के तट विश्राम लेना, धोखे में श्रवण का राजा के बाण से मारा जाना, अन्धराज का दशरथ को श्राप देना। (२) पृ० १४ से पृ० ३२ तक—शृङ्गी ऋषि द्वारा यज्ञ कराया जाना, रामादि दशरथ के पुत्रों का जन्म, उत्सवादि कथन, यज्ञोपवीतादि संस्कार। विश्वामित्र आगमन, सहायता के लिये राम लक्ष्मण को मांगकर ले जाना। (३) पृ० ३३ से पृ० ५० तक—गङ्गा जी के भूमि पर आने का कारण, विश्वामित्र की आज्ञा से ताड़िका वध, राम का ऋषि के साथ जनकपुर गमन। (४) पृ० ५१ से पृ० ७० तक—धनुष भङ्ग, दशरथ के पास पत्र भेजना, बरात वर्णन, रामादि के विवाह का वर्णन, परशुराम संवाद, सबका अयोध्या में आगमन, अवध में उत्सव का मनाया जाना।

संख्या ४७४ ए. अमर चंद्रिका (बिहारी सतसई टीका), रचयिता—सूरतमिश्र (नादूला, जोधपुर), कागज—साधारण, पत्र—१५४, आकार—१२ × ८ इंच, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९४ = १७३७ ई०, लिपिकाल—सं० १९६८ = १९११ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बलवंतसिंह, ग्राम—लोलामऊ, डाकघर—सडीला, जिला—हरदोई।

आदि—१—मूल दो०—मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय। जातन की झांई परे स्याम हरित दुति होय॥ टी० दो०—प्रथम मंगलाचरण यह कवि की विनती ज.न।

प्रकट है निज भगमता अधिकाई ध्वनि भान ॥ जिनो अधम जितनी बढ़ी भव बाधा यह अध। यह हरिबे को चाहिये कोऊ बड़ो समर्थ ॥ भव बाधा को सुरहरत सुर बाधा महादि। महादिक की व्याधि का हरत जो श्याम अनादि ॥ अथवा राधाहितहिं श्याम क बाधा। रहत न कोप—याते मों बाधा हरो राधा नागरि नाम। जिनके यक क्षण विरह में श्याम विकल बिललात। भूमि तिन तन भाइ परे उह उठे जात। बाधा त्रिभुवन नाथ की हरन हारयो भाई—तई मोम अधम की बाधा हरो निवाहि यहि विधि सर्वोपरि परम इष्ट ध्वनि मुख कर्म याते इन्हीं को धरयो प्रथम मंगलाचर्न ॥ काव्यलिंग सामर्थता का रस बहुत प्रयोग। तो भव बाधा हरन का रस समर्थता कीन।

२—मू० दो०—सीस मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल यहि बानक मो मन बसौ, सदा बिहारी लाल टी०—दूजे दोहा में कहयो प्रभु रस रूप को ध्यान, याते इक क्षण में नहीं बिसरन पुन्द और यहाँ व्याप्ति अलंकार है—अक्षय दोही—व्याप्ति सो जैसो जासु को रूप कहै तिहि साज सा ह्याँ प्रभु बानक ज्ञ हा कहयो सोई कविराज।

अंत—मू० दो०—को कुपत जग कुटिलता, तजो न दीन दयाल। दुखी होहुगे सरल हिय बसत त्रिभंगी लाल ॥ टी० प्र०—यह कुटिलता राख्यो चाहत है तहाँ कुटिल विषेई स्वारथ भाषै अरु दीन दयाल सम्बोधन तो दीन होय सो कहै यह तों कुटिल है सु कुटिल दयाल प्रभु की आस नहीं अरु कुटिल दीन कैसे ॥ उ० ॥ कुब्जा को बचन—मेरी कुटिलाई को निन्दा जग क्यो तुम दीन दयाल हो तुमको मैं तजौं नहीं तहाँ अंगहीन को दीन जानिये। समालंकार—यथा योग्य की संग अरु काकूक्ति है काव्य लिंग कुटिलता को दृढ़ कियो।

मू० दो०—मोहिं तुम्हें बाढ़ी बहस को जीतै ब्रजराज। अपने अपने बिरद की दुहुन निबाहन लाज ॥ निज करनी सकुचाहि कत सकुचावति यहि चाल। मोहूँ से अति विमुख त्यों सम्मुख रह गोपाल। टी०—अनुगुन और परिकरांकुर को संकर। सकुच पै सकुच पै सकुच बढ़ायो यह अनुगुन गोपाल नाम साभि प्राय प्रभ्वी पाछे यह परिकरांकुर—

मू० दो०—तो अनेक अवगुन भर चाहै याहि बलाय। जो पति सम्पति हूं बिना यदुपति राखी जाय। अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय। ज्यों ज्यों बूड़ै श्याम रंग त्यों त्यों उज्जवल होय। टी०—विषमालंकार—कारन को रंग और है कारज को और रंग श्याम रंग परमित भया, रूपा विषम यहि ढंग रंग।

विषय—विषय के विवरण के सम्बन्ध में कोई विशेष उल्लेखनीय बात नहीं प्रतीत होती। क्योंकि बिहारी जी के मूल दोहे अन्य पुस्तकों में भी प्रकाशित हो चुके हैं। उपरोक्त पद्यात्मक टीका के कुछ नमूने नोट में दे दिये गये हैं।

संख्या ४७७ बी वैराग्य पचीसी रचयिता—सूरत कवि, कागज—देशी, पत्र—१०४, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२७५, पूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२१ = १७६६ ई०, प्राप्तिस्थान—गंगादीन गंगापुत्र ग्राम—बसीरपुर, डाकघर—नेरी, जिला—सीतापुर (अवध)।

संख्या ४७३ बी. रामजन्म, रचयिता—सूरजदास, कागज—साधारण, पत्र—७०, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६०, रूप—प्राचीन, पद्य। लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९०९=१८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री माताफेर तिवारी, ग्राम—वढ़ा, डाकघर—गड़वारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—पृष्ठ ५:—एक से एक महा रन धामा। सुष विलास इन्द्रासन पामा॥ ऐहि विधि राज करत दिन गयेऊ। आनद मंगल बहु विधि भयेऊ। एके दिवस अहेर नृप गयेऊ। बन भूले पथ नहिं पायेऊ॥ बन अपार तहँ गये राई। दस फिरे पथ नहिं पाई॥ सरवर एक राव तब देषा। भई साझ तह बसो विसेषा॥ दो०:—सरवर निस्ट बैठिकै, राजा करि अनुमान। आपु अकेले बैठि तहँ, हाथ लिये धनु बान॥ विधि संजोग सरवन तहँ आये। मात पिता को तीर्थ कराये॥ अधी ग्रथ रिषीसर ताहीं, पुधावंत सरवन सो नाहीं॥ पुत्र आन मोहि पानि सो पिआउ। प्रान जात तुरत चलि आउ पीहों नीर रहै प्रान हमारा सुनि सरवन मन कीन विचारा॥

अंत—घर-घर आनँद बधावने होगे सो मगल चार। परजा लोग सब हरष सो, सब के राम अधार॥ सूरज दास कवि जो सुना राम जनम विस्तार। गुरु प्रताप की दाआ सो, सत्र कहा पुकार॥ राम जनम की पोथी पढ़े सुनै मन लाए। सो नर नारी समेत सुष बैकुठहि चलि जाए॥ इति श्री पोथी रामजनम कथा सपुरन समाप्त सुभ मिती जेठ वदी ६ सं० १९०९ मुकाम कानपुर कै छावनी॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १४ तक—राजा का मृगया को जाना, मार्ग भूल जाना, रात्रि को एक तड़ाग के तट विश्राम लेना, धोखे में श्रवण का राजा के बाण से मारा जाना, अन्धराज का दशरथ को श्राप देना। (२) पृ० १४ से पृ० ३२ तक—शृङ्गी ऋषि द्वारा यज्ञ कराया जाना, रामादि दशरथ के पुत्रों का जन्म, उत्सवादि कथन, यज्ञोपवीतादि संस्कार। विश्वामित्र आगमन, सहायता के लिये राम लक्ष्मण को मागकर ले जाना। (३) पृ० ३३ से पृ० ५० तक—गङ्गा जी के भूमि पर आने का कारण, विश्वामित्र की आज्ञा से ताड़िका वध, राम का ऋषि के साथ जनकपुर गमन। (४) पृ० ५१ से पृ० ७० तक—धनुष भङ्ग, दशरथ के पास पत्र भेजना, बरात वर्णन, रामादि के विवाह का वर्णन, परशुराम संवाद, सबका अयोध्या में आगमन, अवध में उत्सव का मनाया जाना।

संख्या ४७४ ए. अमर चंद्रिका (बिहारी सतसई टीका), रचयिता—सूरतमिश्र (नादूला, जोधपुर), कागज—साधारण, पत्र—१५४, आकार—१२×८ इंच, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९४=१७३७ ई०, लिपिकाल—सं० १९६८=१९११ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बलवतसिंह, ग्राम—लोलामऊ, डाकघर—सढीला, जिला—हरदोई।

आदि—१—मूल दो०—मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय। जातन की झाईं परे श्याम हरित द्युति होय॥ टी० दो०—प्रथम मगलाचरण यह कवि की विनती जान।

कहा वर मांगो जब राजा ने हाथ जोड़ कर कहा महाराज यह कथा मेरी संसार में प्रसिद्ध हो। हर ने कहा जब तक चांद सूर्य पृथ्वी आकाश स्थिर हैं तब तक तेरी यह कथा प्रसिद्ध रहेगी और तू सब पृथ्वी का राज्य करेगा। इतना कह राजा हर अपने स्थान को गये राजा ने उन दोनों चोरों का ले लेक की कचाही में दण्ड दिया तब वह दोनों वीर आय पहुंचे। और कहन लगे हमें क्या आज्ञा है। राजा न कहा जब मैं याद करूं तब आना इस तरह से उनसे वचन ले राजा अपने घर आ राज करन लगा। ऐसा कहा है कि लड़का हो या जवान पंडित हो या मूरख जो बुद्धिमान होगा उसी की जय होगी। इति श्री बैताल पचीसी सूरत कवि कृत संपूर्ण समाप्त लिखतं सुखा पंडित संवत १८२३ वि० ॥

विषय—राजा विक्रमादित्य और बैताल की २५ कहानियां।

संख्या ४३७ सी. बैतालपचीसी, रचयिता—सूरतमिश्र, कागज—साधारण पत्र—२१०, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१८०, पूर्ण, रूप—अत्यंत जीर्ण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रतनसिंह, ग्राम—जयसिंहपुर, डाकघर—थाना, जिला—उन्नाव (अवध)।

संख्या ४३७ डी. बैतालपचीसी, रचयिता—सूरतकवि (आगरा) कागज—देशी पत्र—२४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०२, पूर्ण, रूप—जीर्ण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मातादीनप्रसाद अवस्थी ग्राम—बिरहिर, जिला—कानपुर।

संख्या ४३७ ई. बैतालपचीसी, रचयिता—सूरतमिश्र, कागज—देशी, पत्र—१०४ आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१२४, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—रामकृष्ण दूबे, ग्राम—मुबारकपुर डाकघर—लहरपुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

संख्या ४३७ एफ. जोरावर प्रकाश, रचयिता—सूरतमिश्र, कागज—देशी, पत्र—५२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२१०, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०० = १७४३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री हनुमानसिंह ग्राम—धापनी, डाकघर—जयसिंहपुर जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ जोरावर प्रकास लिख्यते॥ पदि मन बांछे आदि मान जग जाकी का पाद मेद गावत सुर सह सिद्धि गति का। परम कृपाल यह प्रनम कृपाल करै हिय में निवास है के आनंद सु अति दा॥ परम सरन जाकी सरन सनातन मुख सदन गौरा परे गनौं मनि का। हरु है सुदामन की बुद्धि के प्रकाशन औं विघन विनाशन का नाम गनपति का॥ दो०॥ पीतमनर प्रसिद्धि है अति पुर्णांनि सुभधाम॥ श्री लक्ष्मीनारायण जहां हुए परम अभिराम॥ सेव देव गज पवन की जहां करत चित चाह। देवि काल वर्षा जहां अनु दिन रहत सराह। सुर दरसी करसी सुन है करसी मानु प्रसिद्धि॥ सन सुभ का संपा जहां सदा धर्म की वृद्धि॥ श्री जोरावर सिंघ जू राज करत तिहि ठौर। सब विद्या में अति निपुन त्रिबिध समान न है और॥ विविध जानिक स्याम अरु कविता रस में लाल। निज कवि सूरत मिश्र पै कृपा सद अति लाल॥ यहु रिधि या सनमान करि कही

एक दिन वात । पोथी केसवदास की सवे कविन विख्यात ॥ तिनमे यह रसिकप्रिया अति गभीर है सोइ, तिहि टीका अंगी करी जो समुझे सब कोइ ॥ तब तिनके हित पद रच्यो अति विस्तार विलास । नाम धर्यो यह ग्रंथ को जोरावर प्रकास ॥ अथ वस वरनन ॥ प्रगटे सूरज वस मे जोध नृपति यहि नाम जिन्हो वसायो जोधपुर सुदर सुपद सुधाम ॥ तिनके सुत द्वादस भए तिनमे वीका राव । भए परम परसिधि जग पूरन पुहमि प्रभाव ॥ जिन दिसि दिसि महि जीति वहु लई सुबल समसेर नगर वसायो नाम निज नीका वीकानेर ॥ तिनके सुत प्रगटे सुपद लोन करन सुषधाम । राव जेतसिंह पुनि भए तिनके सुत अभिराम ॥ तिनके भये कल्यान मल राव कल्यान सरूप ॥ गृह सिध तिनके भए महादानी सु अनूप । सवा कोट को दान दिय रासो देन रघु और । तव तिय भरने मै दई चारन को नागौर ॥ नृसिंघ तिनके भये महा सूर गुनग्यान । कर्णसिंघ तिनके भये राजा कर्ण समान ॥ जस अनूप तिनके भये अनुप सिंघ इहि नाम । तिन के भये सुजान सिंघ सकल धर्म को धाम ॥ तिनकी कीरति गावही गुनि जन देस विदेस श्री जोरावरसिंघ सुत तिनके भऐ नरेस । सूरत कवि तिनके सु हित रच्यौ ग्रंथ सुपदाइ । जिनके ग्यान अरु दान को अति प्रभाव दर साइ ॥ जहाँ ग्यान तह दान नहि । जह दान नहि ग्यान । दोऊ रतन इकधे करे जोरावर इमिजान ॥ संवत सत अष्टादसे फागुन सुदी गुरवार जोरावर प्रकास को तिथी सप्तम अवतार ॥

अंत—श्री कृष्ण जू को बोधक हाव कवित ॥ सषि मोहन गोप सभामह गोविंद वैठे हुते दुति को धरिके । जनु केशव पूरनचद लसे चित चारु चकोरनि को हरि के ॥ तिनको उलटो करि आनंद यों किहु नीरजनीर नए भरिके कहि काहे ते नेक निहारी मनोहर फेरि दयो कलिका करिके ॥ टीका ॥ नीरज पानी सो भरिके उलटो करि आनि दियो यामें नायिका रुदन करति है यह जानी सव नायिका ने कली करिके या कमल को फेरि दियो यामें यह जतायो जव कमल मुदेगो राति को तव हम मिलि है प्रश्न नीर नए भरिके कहा नयो नीर को सो उत्तर जरा कहा नम्रता सो लाई सिर नीचो करे यहा हूं प्रश्न मे नेक निहारी के कली करि दियो नेक निहारि वोवा को प्रयोजन कहा उत्तर नायक हू ने अपनी प्रीति जताई कमल को देपि रहे यामें जनाई कि तुम्हारे नेत्र कमल हमारे नेत्र निसो वसत है सो कमल को देपि रहिवो सपी ने उहा जाद कह्यो यहा हू सूक्ष्मालंकार पूर्ववत ॥ दोहा राधा राधा रमन के कहे जथा मति दाव ढिढइ केशवराइ की छमियों कवि कवि राव ॥ इति श्री मन्महाराज जोरावरसिंघ जी विरचिते रसिक प्रिया विवरणे जोरावर प्रकासे हाव भाव वर्णने नाम षष्टमो विलास ॥ ६ ॥ अथ अष्ट नाइका दोहा ॥ ये सव जितनी नाइका वरनी मति अनुसार । केसव राइ वषानिये ते सव आठ प्रकार ॥ अपूर्ण ॥

विषय – रसिक प्रिया की टीका वर्नन ॥

संख्या ४७४ जी. रसगाहक चंद्रिका टीका (रसिक प्रिया), रचयिता—सूरति मिश्र (जोधपुर), कागज—आधुनिक, पत्र—५२, आकार—७ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१२, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—

सं० १६४८ = १५९१ ई०, लिपिकाल—सं० १७९१ = १७३४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बलवंत सिंह ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॐ श्री वृष सुन्दरी सिंह राम सुन्दर नन्द नन्द नाम नमः अथ सूरति मिश्र कृत रस ग्राहक चन्द्रिका टीका संयुक्त रसिक प्रिया प्रारम्यते । दो० रसिक सिरोमनि रसिक प्रिय—रस लीला चितचोर । रसा रास रसमय करौ जय जय जुगुल किसोर ॥ १ ॥ रसिक प्रिया टीका रची सूरति सुकवि प्रनाम । यहि रस ग्राहक चन्द्रिका नाँव धर्यो सुखधाम ॥ २ ॥ जिहि प्रकार यह ग्रंथ की रचना भयही आय । सो कारन सुनिये सकल कवि कोविद सुख दाय ॥ ३ ॥ तख्त जहानाबाद मैं श्री नसिरुल्लह खान । खान खान सिर पान लिखि यश जिहिं प्रगट जहान ॥ ४ ॥ कुकमा छंद ॥ बादशाह दिय नाम निजाम मुहम्मद खां जग जानें । रस गाहक यह नाम आपनो कबिताई में आनें । पंडित कवि जस गुनी अनेक सकल विधि जिन्हहिं सरातै । पूर पक्ष उत्तर चतुराई चमत्कार चित चाहै । दो० तिन्ह कवि सूरति मिश्र सो पोथी पढ़ी अनेक । विद्या गुन करि पूछियो अभिलाषा सविवेक । वाहन विविध मुवास बसु दिय किय बहु सन्मान । दान दिये हातिम करन विक्रम के अनुमान । मद कुल गुढ पदवी दई कह्यो वचन परसंस । सदा तुम्हार वंस का नामहि हमर वंस । नगर आगरे तें सुकवि सूरति युत अह्लाद एक समय आवन कियो तख्त जहानाबाद ।

मध्य—एक समय बैठे हुते खान सुयश अवदात, तिन कवि सूरति मिश्र सों कही आपु यह बात ॥ पाथी केशवदास की सबै कठिन मति धीर । तिहि में यह रसिक प्रिया महा अर्थ गंभीर । याकी टीका कीजिये प्रश्नोत्तर निरधार । जाहि पढ़त सब रसिक जन कहैं मोद संसार । यह सुनि तब रचना रची सुलहु सुकवि सिर मौर । बहुत प्रश्न बहु अर्थ कहो सकल हुकठौर ॥ सत्रह सै इकानवे माघ सुदी रविवार यह रस ग्राहक चन्द्रिका पुन्य प्रगत अवतार ॥

अंत—सं० मन्द मन्दन लगत हैं बस गात बसी छवि चन्दन के अक की । नृप भानु कुमारि बिलोकतिहीं रुचि चित्त मैं विभ्रम की झलकी ॥ गिरिजा तन आवत पान न खात बिरी कर पंकज के इक की । बिहँसी सब गोप सुता हरि कावन मूर्ति सरोज दगंचल की । विहित हाव = क० दो —बालक के समये विप बोलम देव न आय । विहित हाव तासों कहैं केसव कवि कविराय ॥ राधा को विहित हाव स०—मैरे कहे कहिये तुतठ फिर *प्रीयम ज्यों हठ काठ रहौगी । पैरिबो प्रेम समुद्र पराये कनाबे करे कित क्यों निबहौगी ॥* हीं समर्थ सजनी सिगरी कबहूं हरिसों हंसि बात कहोगी । पीवत ही चित्रसारी चली चित्र की पुतरी भई कैसी रहौगी । प्रश्न । चित्रसारी मैं जात ही चतुर तरुणि सखि जाब चित्र रीति कहियं नहीं हे ज के केशव भाव ॥ कृष्ण को विहित हाव ॥ स० केशव राय सों व्याह सखी वृषभानु कुमारि उराहनो दीन्हो गारी दई अब मांद दइ अर दिठगुन सीं मधु क हित हीनो सीरा दई मुख पाय कछू उर लाय सुगंध चढाय नवीनो । उत्तर देव को नन्द कुमार कछू सिर नीचे कै ऊंचो न कीन्हों ॥ प्रश्न ॥ प्रश्नसु केशव रामसों श्री वृषभानु कुमारि दीन्हो कहा उराहनो उत्तर कहो विचार ॥

विषय—प्रथम विलास.—गणेशस्तुति, ग्रन्थ रचना का क्रम। प्रकाश संयोग वियोग लक्षण, राधिका का प्रच्छन्न वियोग शृंगार। द्वितीय विलास—नायक के लक्षण :—अर्थात अभिमानी, त्यागी तरुण कोक कला में प्रवीण भव्य, क्षमी, सुन्दर, धनी, पवित्रता में रुचि रखने वाला और कुलीन आदि गुणों का होना। उनके चार प्रकार—अर्थात् अनुकूल-दक्ष-शठ और धृष्ट। चारों प्रकार के नायकों का वर्णन। तृतीय विलास—नायिका जाति अर्थात पद्मिनी, चित्रिनी हस्तिनी शंखिनी आदि स्त्रियों के प्रकार। स्वकीया और परकीया स्त्रियों के संबंध में वर्णन। चतुर्थ विलास—चार प्रकार के दर्शन—(१) नेत्रों से भली प्रकार देखना (२) चित्र दर्शन (३) स्वप्न दर्शन (४) श्रवण दर्शन। पंचम विलास—दम्पति चेष्टा वर्णन—प्रीति को प्रगट करने के लिये किये गए हुए उपायों को चेष्टा कहते हैं। राधिका की प्रच्छन्न चेष्टा और उनका कृष्ण से मिलन वर्णन इत्यादि। षष्ट विलास—भाव के लक्षण—मुख, नेत्र और वचन के द्वारा मन की बात जिस प्रकार प्रकट की जाय उसको भाव कहते हैं—भावों के पंचम प्रकार—विभाव अनुभाव, सात्विकी, स्थायी और संचारी—(यहाँ से लेखक ने लिखना छोड़ दिया है)।

संख्या ४७१ एच. रस रत्नाकर, रचयिता—सूरतिकवि, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६८ = १७११ ई०, लिपिकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्णबिहारी मिश्र, नयागाव माडल हाउस लखनऊ, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ रस रत्न लिख्यते ॥ दोहा कमल नयन कमलाद्विवर कमल नाभि कमलाय तिनके कमल चरण कों मो मन गुन गुन जाय ॥ १ ॥ नवरस आदि सिंगार पुनि हास करुण रुद्रवीर ॥ भय बीभत्स अद्भुत वरन सात परम गुनधीर ॥ २ ॥ सूरत सतत रहे जहां रति को पूरन अंग ॥ ताहि कहत सिंगार रस केवल मदन प्रसंग ॥ ३ ॥ सो यह रस सिंगार में वरनत कवि रस लीन ॥ प्रथम नायका नायकनि बहुरि क्रियानि प्रवीन ॥ ४ ॥

अंत—कवित्त ॥ सुक्रिया के त्रियोदस भेद सब जानों ऐसे मध्या प्रौढ़ा धीरादिक भेदनि सो ठानिये ॥ पुनि जे सठादि जोरे द्वादस ए मुग्धा एक परकीया द्विविधि सामान्या एक मानिये ॥ षोडश जे आठ जोरे एक सौ अट्ठाइस उत्तमादि जोरे तीन सौ चौरासी जानिये। सूरति सुकवि दिव्या दिव्य भेद कीने ऐसे ग्यारह सो बावन यो नाइका बखानिये ॥ २७ ॥ दोहा ॥ चौदह ये सब कवित है चौदह रत्न प्रमान ॥ याते नाम सो ग्रंथ को यह रस रत्न बखान ॥ २८ ॥ वसु रस मुनि विधि संवतहि माधव रीति दिन पाइ। रचौ ग्रंथ सूरति सुयह लहि श्री कृष्ण सहाइ ॥ २९ ॥ इति श्री सूरति कवि कृत रस रत्नाकर समाप्तम् ॥ संवत् १९१६ वैशाष शुक्ल चतुर्थी ४ भृगु समाप्ति शुभ मस्तु ॥

विषय—नारी भेद लक्षण (नायिका भेद)

संख्या ४७२ आई सतसई टीका, रचयिता—सूरतमिश्र, कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१६८,

रूप—गलित, पद्य, लिपिकाल—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९४, लिपिकाल—सं० १८४८, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाश सिंह जी मलनापुर जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—अथ ग्रंथ आरंभते दोहा। मेरी भव बाधा हरो राधा नागर सोइ। जातन की झाइं पर स्याम हरित दुति होय ॥ टीका ॥ प्रथम मंगला चरन में कवि की विनती जानि। प्रगटतु अपनी अधमता अधिक दलीनो आनि ॥ जिता अधम तितनी बड़ी भव बाधा यह अर्थ कहि हरिवे को चाहिये कोऊ बड़ो समर्थ ॥ भर ग्याधा को सुरहरत सुर बाधा महादि। महादिक की बाध को हरत जु स्याम अनादि ॥ अपि राधा तिन स्याम की बाधा हरति न कोइ। याते मो बाधा हरो राधा नागरि सोइ। जिन के इक छिन विरह में स्यामहू विकल लखात। दुति तिन तन झांई पर होत रह रहे गात ॥ (इसके आगे पढ़ा नहीं जाता क्योंकि पन्ने बड़े ठेढ दीमक ने कर डाले हैं)।

अंत—दो०। प्यासे दुपहर जेठ के थके सबै जल सोधि। मरु धर पाय मतीर हू मारू कहत पयोधि ॥ टीका ॥ प्यासे अवसर में पथिक पाय जु मधुर मतीर। तब दे मारू सों कहत पै पयोधि है तीर ॥ वार्ता पयोधि शब्द क्षीर सागर पर्याय यह है कि भूप प्यास पीड़ पथिकन की गई। याते पयोधि कह्यो। दोहा ॥ प्रश्न पथिक जाम्यो परत सम्र माहिं यदि ठौर। इहां कह्यो मारु कहत पै निधि अर्णव और। उत्तर। सब जल सोधि फिरे तहां मारु अपने वारि। वै तो जल जानत बचन याते पथिक उपाइ ॥ महा मास में विरस जल सोउ सबका हाय इहां देस की अहता दल मधुर जल सोइ ॥ द्वितीय प्रहर्षणालंकार ॥ है तहं अधिक मधुर मतीर समान ॥ दोहा ॥ दुमहं दुराति प्रजानि कै क्यों न बड़ दुप इंद। अधिक अंधेरो जग करी मिलि मास घर चंद ॥ दृष्टांतालंकार ॥ बसी बुराई जासु तम ताही को सनमान। भलो भलो कहि छोड़िये पाटे ग्रह जप दान ॥ दृष्टांत आक्षेपित ॥ दोहा ॥ कही यहै श्रुति सुमृति यह सयान लोग। तीन दबावत निकसही। पातक राजा रोग ॥ प्रश्न ॥ नृप पापी औ रोग सौं निकसि दबावति रीति। अब तौ सबनि दबावई सुरनर मुनि यह रीति ॥ जो पातक नृप रोग अद इहि कौ बखानि। तौ तद तीनि दबावई सम्र न बनै सुजान ॥

विषय—सतसई का टीका सूरत मिश्र द्वारा।

संख्या ४७४ ए. अमर कोश (उमराव कोश) रचयिता—सुवस शुक्ल (बिसवां), कागज—देसी, पत्र—१०८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९४४ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९४, लिपिकाल—सं० १९२६, प्राप्तिस्थान—श्री अर्जुन सिंह ग्राम—सठीला, डाकघर—मछरेहटा जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—सिद्धि श्री गनेशायनमः श्री सरस्वत्यै नमः अथ अमर कोष (उमराव कोश) लिख्यते ॥ दो० ॥ सिद्धि करन अमरन भरन हारिद हरन दयाल। मन भायक दायक सदा गी नायक गनपाल ॥ १ ॥ अथ पद पद छंद ॥ करत बाल किलोल केलि कम्मरन को करि करि। करन शुण्डा दंड मतिसा याको धरि धरि। मुण्ड न भय मुण्ड परत भावन ते झरि झरि ॥ मण्डि समय गहि कौन सुनै आनंद भर भरि भरि ॥ उरकाइ

ललिक चुम्बन वदन यह सुवश भाष्ये। परपि सुपदेव नृपति उमराव को उमा उमा नदन हरपि ॥ अथ राजस्थान वर्णन ॥ धनाक्षरी दडक ॥ जामें चारो वरन करन के समान देखे वे भरम चारों पाइ धरम हशत हैं ॥ देवी देवता से नर नारि नीति रीति गहे प्रीति देवता को दिन दिन सरसत है ॥ सुकवि सुवश कहै रतन अमोल जटे मानो भूमि भाल को विभूपण लसत है देश देश जाहिर नरेश यों वपान करे वेश आंध मंडल में विसवा वसत हैं ॥ दो० ॥ जाके उपवन कोकिला करती कलरव वेश । मनो मनो भव सों कहै रति की सपी सदेश ॥

अत—स्वनाम ॥ निज अरधन पुनि ज्ञानि गुनि जुत निन वस्तु सिहारि ए चारो स्वाकहि सुकवि सुवस वपानि ॥ कुकुदनाम ॥ अश मुख्य नृप चिन्ह त्रय इन्दैं कुकुद हैं नाम कुद कली तारा मघा मघा जुगल वुधि धाम ॥ सत नाम ॥ साधु सत्य पुनि श्रेष्ट गनि औं प्रसस्त मन पानि । ए चारों को सत कहत सुकवि सुवस विचारि ॥ चौं० ॥ वर्ग विशेप निध्न द्वै मित्र सहित अनेका अर्थ विचित्र द्वैसे छद सत्ततरि दढतर काड तीसरे में है वुधिवर ॥ सवत ॥ जुग इस वसु अरु निसापति सवत सरसु विचार माव कृष्ण प्रतिपदा को भयो ग्रय अवतार ॥ ग्रथ सख्या ॥ दो० ॥ वर्ग वीस एक काडत्रे क्षितिरस वसु ससि छद । भापे सुकवि सुवस कवि करिकें महा अनद ॥ इति श्री विश्वनाथ पुरा पड मडल धराधीस कायस्थ चोधरी सिवसिंह वशावतस उमराव सिंह कारिते सुवस कवि विरचिते उमराव को से त्रितीय काढे अनेकार्थ पुस्तक अमर कोप समाप्तं ॥ शुभमस्तु सवत १९२६ साके १७९१ फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वादस्याम रविवासरे लिपतं पं० रामप्रसाद पटनार्थ नृपति-सिंह कछवाहा ठाकुर अस्थान वीदर श्री राधा कृष्णायनम ॥

विपय—कोप छद चौपाई दोहा आदि में वर्णन ।

संख्या ४७५ वी. उमराव कोप, रचयिता—सुवसशुक्ल, कागज—देशी, पत्र—१६८, आकार—८×५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०२४, पूर्ण, रूप—जीर्ण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६५ ई०, लिपिकाल—सं० १८६३ प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाशसिंह, ग्राम—मल्लापुर, डाकघर—मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ उमराव कोप लिष्यते ॥ दोहा सिद्धि करन असरन सरन दारिद दरन दयाल । मन भायक दायक सदा गो गायक गणपाल । छप्पै ॥ करत वाल किल्लोल केलि कलरव को करि करि । फेरत सुंडा दड प्रति छाया को धरि धरि ॥ मुक्ता से श्रम वुद परत आनन ते झरि झरि सद्य सक्ति गहि लीन सुते आनंद उर भरि भरि । उर लाइ ललकि चूमति वदन यह सुवस भाष्यो परपि । सुपदेव नृपति उमराव को उमा उमानंदन हरपि ॥

अंत—सतनाम ॥ साधु सत पुनि श्रेष्ट गनि औ असस्त मन मानिये चारो को सत कहत सुकवि सुवंस वपानि ॥ चौं० ॥ गवे विशेप निध्न द्वै मित्र सहित अनेका अर्थ विचित्र द्वै सै छंद सत्ततरि डटर काढ तीसरे में है वुधिवर ॥ दो० ॥ जुग रस वसु अरु निसापति सवत वर्प विचारि माघ कृष्ण प्रति पदा कों भयो ग्रथ अवतार । ग्रथ संख्या ॥ वर्ग वीस यक

ग्रंथ ॥ तिथि रस वसु ससि छंद। मास सुक्र सुवंस कवि करिके मदा अनंद ॥ इति श्री विश्वनाथ पुरा चंद्र मंडल धराधीश चौधरी सिवसिंह अंसावतंस उमराय सिंह कारिते सुवंस विरचित उमराव कोस तृतीय कांड अनर्थार्थः ॥ संवत १८९३ फागुन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितीया गुर वासरे उमराव कोस अमरमत संपूरण समाप्त सम सस्तु

विषय—लगभग १५०० नामों के अनेक नाम

संख्या ४७५ सी. पिंगल, रचयिता—सुवंस कवि (बिसवाँ), कागज—देसी, पत्र—३३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६५, लिपिकाल—सं० १८९४, प्राप्तिस्थान—व्रजभूषण जी, ग्राम—रामपालपुर, डाकघर—सेंधार, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ पिंगल लिख्यते ॥ दोहा ॥ गणपति गौरि गिरीस गिरा गुरु गोसाईं ध्याय। कवि सुवंस उमराव को देत असीस बनाय ॥ छप्पै ॥ जब लगि गन पति गौरि गिरा गंगा गंगाधर। जब लगि गरुड़ गोविंद गगन गुरु कपति गिरिवर जब लग पवन रात पुरी अरु प्राग पुरंदर जब लगि सातों सिंधु सिंधु की सुता सुधाधर। कहि कवि सुवंस तब लगि सुथ चिरजीव सुखी संभु सुत तब लगि राज्य उमराय नृप करौ सकल सपति सुत ॥ अथ राज्य स्थान वर्णन। घनाक्षरी ॥ बसत परम चारु करत समा जामें ठाढ़ें हैं सुगंध पर नाहर अगर की। रमा को निवास बेद विद्या को प्रकास जामें सदा सरदा के प्रीति भांति के उजागर की। गली गली गेह गेह राग रंग होत जामें भौं न होति सूम्यो कबू घाया झगर की। देस ही धनि कर्हे सुकवि सुवंस कहै कहा भीं सराहीं नामा सिमदो नगर की ॥ दो० ॥ धर्म रूप तामैं भयो मालचंद अवनीस। जाको जग गावत चिरत चाहुं दिस सकल कबीस ॥ विप्र कुल मे प्रगट भी श्री वास्तव सुगात यस कर्मदस ते करयों प्रैगे पुर नारि सात ॥

अंत—अथ एक मिश्रक्षर प्रस्तारः ॥ दो० ॥ म्यारह पंद्रह बरन पै विरति अंत गुरु दाइ। गुर लघु नेम विहीन है छंद मन हरन माइ ॥ यथा ॥ पार्थ सो मित्रहिन की सीस पर महराज महराज पद दहरात छवि तन कौ कहै काछनी की सोभ दिये सरवारो भेष गोरे गुम नाम माला सौगुनी मदन है ॥ कर लसत कमल का सिरावत है सुकवि सुवंस कहै दंसन मनम ते। छंद को पतन सुर चंद है अनंद मंद मंद मंद आवत गुविंद वृन्दावन तै ॥ इति मन हरन। अथ द्वाविंसं त्यक्षर प्रस्तारः ॥ दो० ॥ सोरह सारह पै विरति गुद लघु है सममानि चलिन अक्षर अंत लघु छंद जन हरन जानि ॥ यथा ॥ अमपर सम स्याम तन अभिराम राजै अरु ठगुर पर चौगुनी साहै पिगात। काछनी कलित कटि तट में सुवंस कहै कर पतीम चाद गैर में मुकुर मान। मुंडल मकर क उदित मनि कानन में सीमि में किरिट अरु बनारि को पौरि मान। मर मन सर ध्या रन दिये धारी कहाँ बाहीं जाम गाराम गाराम गाराम ॥ हरि मौलिका ॥ अब लगि विधाता वेद है अर सेम हार जग को कहै। तब लगि दिन वसुधा विषै उमराव भूपा करत है ॥ उदित के पर्वे है भाम पिता धर वन की रचना कर कवि नाव द दिन में सुवंस कहै सदा गुन का भरे ॥ इति

विस्वनाथ। इति श्री सुकुल सुवंस विरचिते पिंगल ग्रंथ समाप्त। संवत १८९४ शाके १७५९ मार्ग मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमाया तिथौ भौम वासरे लिषतं गंगादीन पंडित ॥

विषय—पिंगल।

संख्या ४७५ डी. पिंगल, रचयिता—सुवंस शुक्ल, (बिसवाँ), कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३६, परिमाण (अनुष्टुप्) ९५०, पूर्ण, लिपि—नागरी, पद्य, रचनाकाल—सं० १८६५, लिपिकाल—सं० १८९४, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर, (अवध)।

आदि—अंत—४७५ सी के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है.—इति विस्वनाथ पुराधरा धीस मंडल चौधरी सिवसिंह वंसा वतंस चौधरी उमराव सिंह कारिते सुक्ल सुवंस विरचिते पिंगल ग्रंथ समाप्त ॥ लिषत महीन्द्र सिंह संवत १८९४ शके १७५९।

संख्या ४७५ ई रसमंजरी, रचयिता—सुवंस शुक्ल, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण अनुष्टुप्)—७०८, पूर्ण, रूप—जीर्ण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६५, लिपिकाल—सं० १८६५, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसमंजरी लिष्यते ॥ दोहा ॥ मंगल करन विघन हरन सिद्धि निद्धि के दानि। वंदौं गणपति के चरन अमल कमल गुन षानि ॥ कवित्त ॥ मारग चलत मैं विचारि श्रम सका हिए धरो निज पद भूमिनत औतग मैं। प्यारी फुलवारी मैं प्रवेस कैं सुपेद जाति स्वय कर ही सो तेरी सुमन उमग मैं। चरम हिरन की विछाय कै हरषि सेज भाग आपने सो सयन करै सुष संग मैं। प्रेम मार आलस सासि वाको सुवंस भाष्यो वाम जानि वाम ये न राष्यो वाम अंग मैं ॥ अथ नाइका लक्षन ॥ दोहा जाके जोहत ही हिए भरि आवत है मैंन। ताहि वषानत नाइका कवि कोविद करि चैन ॥ यथा ॥ चह चही चारु चितवनि सै चुरावै चित्त चंचल चषनि सों चकोर चूमि हारी है। लह लही अंगन लुनाई की लहरि उठै गह गही गहिरी गुराई यों सुहाई है मदा सुषकारी प्यारी सुकवि सुवंस कहै जोहतेही जरषै काहू पलकन पारी है। तोरति है लोक लाज पूरति मनोज साज मूरति वसी केरि नाइका निहारी है ॥ दोहा ॥ त्रिविधि नाइका सो कही प्रथम सुकीया नाम परकी याहै दूसरी तीजी गनिका वाम ॥ सुकीया निज पति की तिया परकीया हित नारि। वित्त हेत वहु पति कही गनिका ताहि विचारि ॥

अंत—अथ सात्विक। स्थंभ स्वेद रोमंच स्वर भंग कंप जिय जानि। विवरन अंसुवा प्रलै सात्विक आठ वषानि ॥ नवो सात्विक भाव है सभा जिय मैं जानि। आसम ते प्रगटे सबै कवि कर कहत वषानि ॥ यथा ॥ अंच सभ या सरीर उमगत श्रम नीर उठे रोम उमनि अषंड सुष धान्यो है ॥ कंठे तुत रात वात कंप अति करै गति विवरन आनन दृगन नीर ढान्यो है। इहां कौनि रोधा औ सुवंस कहै जमुहाति सात्वि भयो है तेरे प्यारी मैं सिहान्यो है ॥ चंद ते दुचंद सुष सद नद नद राजै ताकौ इंद सुषी तै निसंक ह्वै निहान्यो है ॥ अथ अद्भुत रस नवोरस ॥ दोहा ॥ विसमै थाइ भाव जह तंह रस अद्भुत मानि पीत

थान विधि देवता कथा सुबंस बखानि ॥ इम भाव सात्विक तहाँ बरनत सुकवि विभाव । कलमिर लाचन आदि दै तहाँ होत अनुभाव ॥ स्वंभादिक तई जानिया संचारी है मिन । रस प्रबल का मानि मत बरनत बुधि विचित्र प्रबंधा॥ बाल्हस्ता में सुबंस बखानत संकर को धनु तारि चलायो । भूमि सभी पर सीरम सी अरविन्द समान समुद्र बंधाया । रावन मारि कबूतर सा फिर आइ बसिष्ट का सीस नवाया । सीयपति का यह हरि चरित्र सदा विमर्श सब के मन भाया ॥ दो० ॥ सर पर वसु अरु ससि कर्यो संवत वर्ष विचारि सावनि सुदि तेरस गुरौ भया ग्रंथ अवतार ॥ इति श्री सुकवि सुबंस विरचितायो रस मंजरी ग्रंथ समाप्त सुभ मस्तु संवत १८६६ लिपतं महेंद्र सिंह ॥

विषय—नायक नायिका लक्षण, नवोंरस आदि का वर्णन ।

संख्या ४७५ एफ. रसतरंगिनी, रचयिता—सुबंस शुक्ल, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६ परिमाण (अनुष्टुप्)—११२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९१ लिपिकाल—सं० १८९१, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाशसिंह जी मल्लापुर स्टेट, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रस तरंगिनी लिष्यते ॥ सिद्धि सिद्धि मंगल सुभग श्री गौरिस के सथ । कवि भक्ति के दानी सदा वानी के पद पथ ॥ पानी के पद बादि कै महामाद मरम्याद । कवि सुबंस उमराव को देत असीस पसाद ॥ प्रथम प्रकासा कवित्तु ॥ रीझा जोर सा का रूपि हस्यो निगमन करि जीत जग जंगुम के । ताबु बीनदा वाइ कै ॥ प्रतिम को अवम प्रेम करि रस्यो है जा समर में रावनै सिहाव्या मार माइके मायन सुराइ जीत पाया है कवि है है रस ए समक्षम का दिया सीधी बाढवेत्ता देन मेघराका करि सिद्ध सुरम्य नाल सभी सा सुवन विभ्रमता करै उमराव का ॥ रस का कारन भाव है वाको प्रबपी नाहि रस अनुरूप विभाव सा भाव जानिया चाहि । हास अन्यथा भाव जो सा विभा रे कहि धीर । है विभाव हैं भाँति का मानस दुरन सरीर ॥ स्याई व्यभिचारी बहुरि दुविध भाव सा मानि । सात्विक हि सुबंस कवि सात्विक भाव बखानि ॥ अथ स्याई ॥ अंत सर्म को रिपर रद सो स्याई जिय जानि । हास भाव भाव्यु सदा आन भाँति का मासु ॥ रति हासी भय साक कहि क्रोध उछाह। जानि । अरु विदा विस्मै वह स्याई आठ बखानि ॥

अंत—रसकी ॥ माथे के सिखर पर सर्वे सो सुमाती राजै पुरान चारद मानु राजै चाद चंदरी । कान जुग वारी बंकारेर जुग राजत है चार ८ सुर चिच मैं गुपा है गुंदरी ॥ आरसी उगुन साम रावनि कलीम रवि हाटक उगुन सम आनंद के कंदरी । बदरी समान दरवाजी है जूर मद सलिता सहाइ सीजि चाति चालिवे अर्नदरी । दाहा ॥ दंबन रन कामक परिसम अनि सुचि अन । अनय हारमो धाम पटु रति विलास लिय रन ॥ अथ विश्रमी का कथा ॥ कमुनी सुन बैठिये है नम सूरम है दिपर्वे बहु भासय । राम मानी है दिपै चालीस सु प्रतिमिटि कै मारा नार भासय । कोकिल नैन नु देन सर्व बच स्याम अपरन है है तद भासदि ॥ अब संचिधी लक्षन ॥ दीपत बन स्वर्दि सिर पै सुमन्यान सुरन्दि सी छवि छोरे । सूरम है

तनु वठन तीक्षन और सुभाव सु है पिसुनारे ॥ सूक्षम श्री फल से कुच है सुच है अंगनि मैं गति मंद सुहारे ॥ कोर कसोर कठोर विराजत राम नपक्रत की दुतिभार । अथ हस्तनी लक्षन ॥ पीन पयोधर पीन सरीर लसै मन क्रूर सुलाज नहीं है पिंगल गंधित केस लसै कटु बोलत कधर थूल लही है ॥ विवहि से अधराल छिए तन में घरनी मम गधि रही है । राम कहैं बहु भोजन के सुप नेकु नहीं दुप भोग यही है ॥ इति उज्जीत प्रकास्यते श्री चौधरी उमरावसिंह कारिते सुवस सुकु विरचिते रस तरगिनी जव्य जनक धरिभाव रसाभाव वर्णन ससिरस अरु वसुमती सवत वर्ष विचारि कातिक सुदि गुरु तीन को भयो ग्रथ अवतार सवत १८९५ साके १७६० फालगुन मासे कृष्ण पक्षे सप्तमी ७ बुध वासरे लिपत महीद्रसिंह

विषय—नवोरस, नायिका नायक भेद और लक्षण वर्णन ।

संख्या ४७६ पाडवयशेंदु चद्रिका, रचयिता—स्वरूपदास, कागज—साधारण, पत्र—१४२, आकार—१२$\frac{1}{2}$ × ९ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुष्टुप्) २९२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८६६ ई०, प्राप्ति-स्थान—नागरी प्रचारिणी सभा बनारस ।

आदि—श्री गणेशायेनम ॥ श्री शारस्वतियेनम ॥ श्री गुरुवेनम. ॥ अथ रसाल्कृत बोधनी पाडव यसेंदु चद्रिका प्रारभ ॥ गुग लंकारिणो वीरो धनु स्तोत्र विचारिणो । भूभार हारेणो ॥ वदे नरनारायेण वभो ॥ १ ॥ दोहा: ॥ ध्यान करितन वदना ॥ त्रिविध मंगला चर्न ॥ प्रथम अनुष्ट पविच सोहै ॥ भस त्रिधा सुभ कर्न ॥ २ ॥ नमो अनंत माराट के सुर भूपन के शुभ ॥ पाउवयसेंदु चद्रिका ॥ वरनत दास स्वरूप ॥ ३ ॥ स्वामी के पीठे रहे ॥ आदि होत उचार ॥ नर नर नारायण शब्द कू दास स्वरूप वीचारि ॥ ४ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ रस रूप अल्कृत ग्रंथ में लिपे नाहि दृहि भासः ॥ समझहि वुधि जन विन लिपे ॥ अवुध लिपेन लपाय ॥ ५९ ॥ प्यंगल डिगल सस्कृत सब समझन के काज ॥ मिश्रित सी भाषा धर ॥ छिमा करहु कविराज ॥ ६० ॥ कलि जुग छाटे ग्रथ कूं लिपे पठे सब लोक ॥ ताते श्लोक हजार भय सर्व ग्रथ के ओक ॥ ६१ ॥ कविता रचना भई ॥ वाल छंद विच लीन ॥ नई उक्ति कवितान में कथा सँकोरन कीन ॥ ६२ ॥ नहि कविता को धर्म है नहि भारत की वात ॥ निक मैं पचलना करी ॥ करहु छिमा कवि पांत ॥ ६३ ॥ इति श्री पाडव ससेंदु चद्रिका स्वरूप दास विरचिते दस मयूप ॥ १६ ॥ चद्रिका संपूर्णम् ॥ समसा ॥ लिपि कृतं वै वेहनव रघुनाथ दास निरवाणी नग्र नां मच मध्ये ॥ श्री रामचद्र × × कै मदीद-समत ॥ १९२६ मीती माहा शुक्ल पक्ष १२ ॥ रविवासरे ॥ पटी नाथजाजी श्री लवजी ॥ ग्राम जायद मध्यध्ये सेठ भुगरसीग जी का राम श्री रस्तु ॥

विषय—पिंगल अलंकारा को वर्णन और महा भारत की संक्षिप्त कथा ।

संख्या ४७७. ज्ञान चंद्रोदय, रचयिता—डा० तेजसिंह (सेरिया जिला आगरा), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप्) २५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३० =

१८०३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० शिवनरेश सिंह, ग्राम—रामनगर, डाकघर—मस्कापुर, जिला—सीतापुर, (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ इस ज्ञान चन्द्रोदय प्रश्नावली के देखने की यह रीति है कि जो कोई आदमी पंडित के निकट आवे उस आदमी से इन अंको पर जो कि इस यंत्र में भरे हुए हैं यह कहकर उंगली धरवानी चाहिये। विघ्न हरन मंगल करन पूरन पुन्य प्रकास । नाम लेत गन्नेस का सभी काम हो रास ॥ और यह कहे कि ये शिव जी महाराज जो इस आदमी का काम सिद्ध होने वाला हो तो अच्छे अंक पर उंगली धराइयो ॥

फल (१ अंक का)

है प्रश्न करने वाले जो काम तैने अपने मन में साचा है बहुत जल्द परमेश्वर सिद्ध करेगा और कुछ रुपया भी हाथ लगेगा रोजगार भी किसी के वसीले से लगेगा और मतलब तुम्हारा सब पूरा होगा ॥ अगर एतबार न हो तो देख तो तुम्हारे मुंह पर तिल है अगर बन सके तो भैरों जी का पूजन कर और सभीश्वर के दिन काले कुत्ते को पेड़े खिला ॥

यंत्र यह है

५	४	३	२	१
६	७	८	९	१०
१५	१४	१३	१२	११
१६	१७	१८	१९	२०

अंत—यदि कनिष्ठका उंगली लेकर तर्जनी मूल पर्यंत एक रेखा परिपूर्ण जदन पर्व युक्त जाय परे तो जाना बड़ा उत्तम राजेश्वर का चिन्ह है ॥ यदि तर्जनी अंगुष्ठी के समीप उर्ध्वरेखा हो तो राजा का पूत और कनिष्ठका अगुली के मूल में यदि सात रेखा हों तो संसार में बड़ा सुखी धनवान पुत्रवान गुणवान हो ॥ और तीन रेखा हो तो तीन पदार्थ के लोक मध्य में भाग करने का चिन्ह है तर्जनी अंगुष्ट के मध्य से चलके पहुंचे में आ मिले वह रेखा माता की कहलाती है और पिता की रेखा अंगुष्ठ के मध्य से चल के आयु रेखा के नीचे हस्त में होती है और बहुत रेखा होने से दरिद्री होता है ॥ हस्त के नाम पाठ्यों डर के ज्ञान प्रतीत होता है। एक चक्र वाचाल दो चक्र गुणवंत तीन मित्र धन चार चक्र दरिद्री पांच सर्वांग विलास छठा रस काम सातवां बहु सुख अठवां रोगी नवां राज दसवां सिद्धि हो। एक संप नर सुखी कहाई दूजे संप दरिद्र का भाई तृतीय संप से निर्गुन जानो चार संप से बहु सुख माता पांच संप से निर्धन होई छठा संप आवे सब कोई। अथ नख लक्षण ॥ अरुण नख सुखी काला नख दुखी श्वेत नख रोगी पाप करे। पीत नख परदेश करे स्याम नख तेजवंत। हरित नख सदा दुखी पाप कर ॥ अथ कान लक्षण ॥ बड़े कान होने से भाग्यवान बड़े पैर होने से दरिद्री बड़ी भुजा होने से गुनी और सूरवीर होता है ॥ इति श्री ज्ञान चंद्रोदय प्रश्नावली ठाकुर तेजसिंह ग्राम न्यरिया सैराजन जिला भगरा निवासी कृत समाप्तः शुभ मस्तु ग्रंथ रचा संवत १९१० माघ की बसंत पंचमी ॥ शुभ राम राम राम ॥

विषय—सामुद्रिक, अंग लक्षण वर्णन ॥

संख्या ४७८ देवकीनंदन तिलक, रचयिता—ठाकुर कवि (असनी), कागज—आधुनिक, पत्र—१७५, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०००, रूप—पढ़ने में कठिन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९६३, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाश सिंह, मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—मूल। छिनकि उघारति छिन छुवति रापति छिनक छिपाय। सब दिन पिय खंडित अधर दरपन देपत जाय॥ तिलक॥ यामें सपी ने छिपिकर नायका को या भाव देष्यो है। सो सपी सो कहति है कि सुरत में याको अधर जो दंत सो पंडित भयो है फेरि छिनुकु छिपाय रापति है या भांति पिय सों जो पंडित अधर है ताहि दरपन में देषत याको सब दिन जाइ कहे वीतत है तो इत उत काहू को नहीं देषति तब उघारति है छुवति है काम तें फेरि लाज तें टराति है कोऊ आइ न जाइ जो देषे ताते छिपाय रापति है और नायक कृत छल है ताते देषे दरस सुष पावति है॥ छुवे स्परस सुष पावति है सो जानों तो लाजते नायक को दरस परसि पुलि कै नाहीं सकति याते काम ते नप छत में ऐसो करति है॥

अंत—कवि ठाकुर प्रसाद कृत दोहा॥ पर ब्रह्म श्री कृष्ण है परमानंद सुरुप। तासु सक्ति आल्हादिनी राधा परम अनूप॥ सब के मात पिता परम राधा कृष्ण दयाल। कलजुग आवत जानि ब्रज लीला करी रसाल॥ परकीया उपपति बने हैं तिय पुरुष अनादि। छल वल किये अनेक रस गोरस चोरी आदि। कलि जन ह्वै हैं पाप रत पैहैं अति दुष जानि। तिन कह यह लीला रची तरि है कहि सुनि मानि। कीन्ही लीला प्रगट ब्रज कृपा सिंधु यह हेत। अद्भुत अदूषन आदि हैं परमानंद समेत॥ लीला परमानंद सदा परमानंद की दानि। बनै लोक परलोक भजि भजै न अति जड़ जानि॥ ते विन बाधा विनहिं श्रम सदा सबै सुष लेत। जिन अब राधा परम हित राधा हरि को हेत॥ राधा हरि को यह भई अति सतसई पियारि। तत्व अरथ समुझत नतो कोउ जग ह्वै है विचारि॥ देवकीनंदन कियो तिनकी रथ पथ भूप। जेहि जेहि प्रगटे दोहा अरथ आसय सहित अनूप॥ हरि विचारि ज्यो सिंधु सो प्रगटे रतन सुरुप। त्यों सतसैया मे अरथ दोकी नंदन भूप॥ दोकी नंदन तिलक है याते याको नाम सतसैया वरनार्थ मत प्रगट करत अभिराम॥ लोक रीति गति नीति की परमारथ हरि प्रीति। जु चढ़े सु लहै समुझि भल तिलक अरथ पथ रीति॥ पुत्र सुकवि ऋषि नाथ को हो ह्वै ठाकुर नाम। असनी वासी मैं कयो या लपि नृप गुन धाम॥ लेष सवत १९६३ मिती भाद्र शुक्ल नौमी भौमवासरे॥ कवि ठाकुर प्रसाद पुत्र रिपिनाथ कृत सतसई तिलक समाप्त॥

विषय—विहारी सतसई की टीका।

संख्या ४७९ तिब्बरत्नाकर, रचयिता—ठाकुर प्रसाद, कागज—देशी, पत्र—२६०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०७५, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४३ = १८८६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामदुलारे मिश्र, ग्राम—रतनपुर, डाकघर—अलीगंज, जिला—खीरी।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ तिब्ब रत्नाकर लिष्यते॥ पहली फसल॥ जरूरी

औषधियों की क्रिया और खुश्की में ॥ चारों हालतों में ईश्वर ने ऐसी ज़िद बनाई है। कि गरमी के संग खुश्की और तरीके संग सरदी इकट्ठी नहीं हो सक्ती और इन चारों का एक एक बल प्राप्त किया है गर्मी और खुश्की में कर्ता और तरी और सर्दी में कर्म इन दोनो परा कर्मों के बिना किसी एक का बल मालूम नहीं हो सक्ता अर्थात जब ताई कर्म मौजूद न होय तब ताई कर्ता की क्रिया किस की सहायता से प्रगट हो सके। इस कारण से निश्चय होता है कि प्रत्येक औषधि में दो हालतें मौजूद हैं गर्मी के संग तरी तथा खुश्की के संग सरदी तथा तरी के तथा खुश्की के और औषधी काम में लाने से इन चारों हालतों में चार दरजा निकलते हैं ॥

अंत—बवासीर मस्सा ना ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि सहजना और गूगल बराबर लेके गोली बना के जितनी मुनासिब जाने उतनी खावे और लगाने से तुरंत अच्छी होती है ॥ मार्ग के अधिक चलने की थकावट और जोड़ों की अकड़ जाना और बंध जाना ये सब बलों पर कोई तेल लगावे और जाड़ों में गरम पानी और गरमी में शीतल पानी जांघ ताईं तथा ठीक उसी जगह तक भिगवाने से दूर होंय परंतु पानी बाकी शरीर पर पहुँचने पावे ॥ हाथ पाँवों को खुश्की नष्ट होती है। गरम पानी में नमक मिला के धो डाले तो खुश्की ज़रूर जाती रहेगी ॥ इति यूनानी हिक्मत ग्रंथ का भाषानुवाद अर्थात तिब्ब रक्षा कर ग्रंथ संपूर्ण समाप्तः फाल्गुन संवत १९११ वि॰ शुभ मस्तु ॥

विषय—यूनानी (हकीमी) चिकित्सा।

संख्या ४८० श्लेष प्रकाश, रचयिता—बानकवि, कागज—देशी पीला, पत्र—५९, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४९२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं॰ १८७८=१७२१ ई॰, लिपिकाल—सं॰ ११४६ = १८८९ ई॰, प्राप्तिस्थान—पं॰ कृष्णबिहारी मिश्र, माडल हाउस, लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ छप्पै ॥ जै लंबोदर शंभु सुवन अमोदन लोचन ॥ चर्चित चंदन चंद्रभाल वंदन रुचि रोचन ॥ सुख मंडल गंडासि गंड मंडित श्रुति कुंडल। वृंदारक वर वृंद चरन वंदत आखंडल ॥ वर अभय गदा अंकुश धरत विषम हरन मंगल करन ॥ कवि बान बनासी सिद्धि पर एक दंत जै सुभ सरन ॥ १ ॥ सरस्वती वर्णन ॥ हासन पै हासिनी परम हंस वाहिनी हो पोथी कर बीनासुर मंडल मढ़त है। आसन कमल अंग अंबर धवल मुख चंद सों धवल रंग धवल चढ़त है ॥ ऐसी मातु भारती की आरती करत बान जाको जस विधि ऐसे पंडित पढ़त है। ताकी कृपा कोटि काल पामर निरादर रहे सुख ते मधुर मंजु आखर कढ़त है ॥ २ ॥ गुर देव छप्पै ॥ श्री गनेस गुरु देव महा गुरु देव विधाता। रमारमन गुरु देव देव गुरु संकर दाता ॥

अंत—ग्रंथ श्लेष प्रकाश को पढ़ै गुनै चित लाय। वाचक व्यंजक अर्थ की शक्ति हाथ सुख पाव ॥ ८ ॥ राधा राधा रमन के वर्णन पद शृंगार। नाना भांति सुभाव गुन नाना भांति विहार ॥ ९ ॥ लहै समस्त कल्यान पद श्री संतन का संग बढ़ै श्लेष प्रकाश की बढ़ै सुमंगल रंग ॥ १० ॥ इति श्री कवि बान विरचिते प्रकाशे चित्र काव्य वर्णनो नाम एका

दशोल्लास ॥ ११ ॥ दोहा रस श्रुति निधि शशि वर्ष अरु आश्विन कृष्ण सुमास । दर्श कुजहि दिन पूर्ण भो सिंह दलेल प्रकाश ॥

विषय—यह ग्रंथ पिंगल एवं श्रृंगार रस का है।

संख्या ४८३ ए. समरविजय, रचयिता—तीर्थराज, कागज—साधारण, पत्र—३१, आकार—७×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २०,—परिमाण (अनुष्टुप्)—७५०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०७ = १७५० ई०, लिपिकाल—सं० १८२९ = १७७२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० अवधविहारी मिश्र, पुजारी कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ समर विजय लिख्यते ॥ दो०—श्री गणपति पद कमल बिन, तूँ छिन छिन छवि छीन । देख्यो स्याम रंग मे फिरत, मो मन मधुकर दीन ॥ १ ॥ छप्पै—जय जय जय गुण रूप भूप, जदुकुल वल मंडन । भक्त हेत सुष देत, दीह दानव दल खंडन ॥ करि करि विनय अनन्त, संत चितत उर धरि धरि । तासो सब ब्रज वाम, रूप पीवत दृग भरि भरि ॥ कहि राज कौन ब्रज राज बिन, भव बाधा संकट हरन । जय दीन बंधु गिर वर धरन, राधा वर वंदौ चरन ॥ २ ॥

अंत—समर सार भाषा कर्‌यो, समर विजय सुख देत । धरम धुरंधर जानिकै, अचल सिंह नृप हेत ॥ ५१ ॥ आशीर्वादः—जौलौं काम नरु की उदारता वषानै कवि, जौलौं भवसागर मैं कीरति सुहाती है । जौलौं पंच तत्त्व है विधाता के अखिल धनु, जौलौं कमला की कला कलि मैं अघाती है ॥ जौलौं वसुधा मे राम राम धाम धाम कहै, जौलौं वाम वाम अंग भव के बिभाती है ॥ तौलौं श्री अचल सिंह धरनी मैं राज करौ, धरम धुरंधर पुरंदर कौ नाती है ॥ ५२ ॥ विजय ॥ धारियै भूपति वंस समुद्र कला निधि श्री सुष अंक निकारियै । करियै आठ गुनौ पुनि ताहि सु एक ते लक्षनि हूँ लौं विचारियै ॥ चारियै जोरि के तीस गुनो करि राज कहै सुकलानिसों तारियै । तारियै शेष तिथीनि सौं श्री अचलेस की आयु समा निरधारियै ॥ ५३ ॥ इति श्री महाराज कुमार अचल सिंहाज्ञया तीर्थराज कृते—समर विजये छाया पुरुष दर्शन नाम ७ प्रकास समाप्त ॥ शुभ संवत् १८२९ वैशाष सुदि ३ शर्नी लि० तीर्थराज नागर ब्राह्मणेन ।

विषय—समरसार का भाषानुवाद ।

विशेष—राजवंश वर्णन.—निज वंस पालन रीति राहन सालि वाहन साहसी । जिन विक्रमानि सौं जीति विक्रम भाँति विक्रम सो जसी तिहि वंस में प्रगट्यो अनंद तिलोक चंद महीप है । जिन मारि अरि दल राखि दल किय राज जंबू दीप है ॥ ६ ॥ तिनकौ सुलक्षन द्वैज कैसो चंद पृथ्वीचंद है । जिहि स्वक्ष अक्षन लक्ष्य लक्षन नवत सीस नरिंद है ॥ पुनि देवराइ नरेस भौ जसु देस देसनि मैं भयौ, रिपु जीति रीति विवेक सौं भुवदेवराय मनौं भयो ॥ ७ ॥ पुनि भयौ भैरवदास भैरव पास जासुन दिन तजिय । अरु अरिन को भैरव लगे वर वर नरन कौं अरिन किय ॥ तात नय ताराचंद को कविचंद समान वषानियो । जस चन्द्रिका छिति छाइ निस दिन मंद चंदहु को कियो ॥ ८ ॥ पुनि भयौ राव संग्राम साहि संग्राम साहन सौं कियौ । गिर चरनि से अरि करि वरनि केहरनि ज्यों धरि

रूपरियाँ ॥ तिनके भये सुत जगत जाहिर, कमलसिंह नरेस हैं जासु गुन गन गनन को नहिं पार पावत सेस हैं ॥ ९ ॥ ता तनय पृथ्वीराज प्रभु ज्यों प्रजा पालन को भयौ। दान करि सनमान करि किरवान करि जिन जसु बयौ ॥ पुनि भौ पुरंदर सौं पुरंदर रच्यो विधि कलिकाल में। सुरपाल यह नरपाल यह तत्वमध्य किये दिय भाल में ॥ १० ॥ पुनि भये मारदनसिंह तिनकी कौन समसरि करि सकै। जन मुदर रंग करि कुरूपि छवि को पुरुष धीरज धरि सकै ॥ बरत रन मुख सत्रु समुख काज नहिं सर चाप सों। करवाल हीकर कापते दुर्दंड अरिदुमि दाप सों ॥ राव मारदन नंद आनद कंद पंच कुमार हैं। पंच वागन सहित मानहुँ पंचवान उदार हैं ॥ ११ ॥ दोहा—तिन में जबतल सरस सब गुन गन को दरियाउ। दान मान किरवान करि रीझे कवि कवि राउ ॥ १३ ॥ मरदन रैया राउ के बेटे और कुमार। जनम कृपा जबतेस पर मबक राग सिर मार ॥ १४ ॥ ईस बखसे एक बख बखो तन मन बस्यो बनाइ ॥ श्री जबतेस नरेस की विनति कही सुभाइ ॥ १५ ॥ (ख)—ग्रंथ निर्माणादि कारण—एक समै दरबार में, बैठे जबतल नरेस। गुन मंडित पंडित मकल सोहत मनो सुरेस ॥ १८ ॥ सोरठा—बैठी सभा सुदेस, सरनि को मजबूर सुनि। मान बचन नरेस, छे मन चतत सर्वदा ॥ १९ ॥ नृप उवाच—हार जीति यह कर्मगति, सन्मुख करिबो धर्म। सत्य सील साहस सहित, ए छत्रिन के कर्म ॥ २० ॥ भरी सुभावत समर मग, गगन चले इहि हेत। बिना भरी विधि हर हरी, भरी भीर तजि देत ॥ २१ ॥ यह कहि तीरथ राज सो, पुनि बोले नृप राइ। समर सार भाषा हमैं, दीजै ग्रंथ बनाइ ॥ २२ ॥ (ग)—ग्रंथ निर्माण कालः—संवत् मुनि⁷ नग उरग⁸ ससि¹, जेठ सुक्ल रवि तीज। कयौ सुजस फल लहन कौं, समर विजय को बीज ॥ २६ ॥

संख्या ४८३ ची. समर विजय, रचयिता—तीर्थराज, कागज—देसी, पत्र—२०, आकार—११ × ६३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)-११ परिमाण (अनुष्टुप्)—५००, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८०७ = १७५० ई०, लिपिकाल – सं० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कालिकाप्रसाद शुक्ल, ग्राम—गौरियारसूलपुर, डाक-घर—सिमरिख, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ बानी जू को सुमिरि कै कृपि सुतीरथ पंच धर्म बंत राजानि के अर्थ कीजियत ग्रंथ ॥ महा युद्ध मद युद्ध पुनि जुए युद्ध के काज। चारी मति चारी विषय वरनत सब कविराज ॥ दुहु विमिनाग कविचारि कै कहत विधी के हेत। ये विजान यह जानिये धर्मबंत करि पत ॥ सोरठा ॥ यह वर दायक ग्रंथ कवि से समर विचार हुइ। पढ़े पाउ मनुज राजन मे बढ़पंत नृप ॥ विजया ॥ कौरवो स्वारादय सौकर जू जद जानत वेई सर्व विधि धारन। काउ कहूं गुद सम पढे हित राजन के जग में जन कारन ॥ मीकै विचारि सरे मद एक अनेक अरिंदन मारत कारन। मानुन तं सब माइ परे ते उरे जिमि दीप पतंग हजारन ॥ त्रिभंगी ॥ दीजा कवि बचन गूढ़ मत रचन जो पै कथन हार बरसैं। सारंगहि कुमल में राय पच में काय अमल में व सरसैं ॥ ताते मनि सैतमि दीजी संतति प्रभु पर्गे ॥ विधा सुप सामी अकर कवामी सुरुष प्रकाशी जगु दरसैं ॥

दो० ॥ अव हौं कहत विचारि के सवै जया जय भेद सुभट श्रवण दै जो सुनै रहै न उर में पेद ॥

अत—४८१ ए के समान।

पुष्पिका—इति श्री मन महाराज कुमार अचलसिंह आज्ञा तार्थ राज कृते समर विजये छाया पुरुष दरशनं नाम षष्टम प्रकाशः समाप्तम् संवत १९०१ भादौ सुदी १५ गुरौ लिपतं विहारी लाल दुवे ग्राम झालरा पाटन मध्ये ॥

संख्या ४८१ सी. समर विजय, रचयिता—तीर्थराज, कागज देशी, पत्र—४४, आकार—११ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, पद्य, रचनाकाल—सं० १८०७ = १७५० ई०, लिपिकाल—सं० १९०९ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर चंद्रिका वक्स सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—अंत—४८१ ए के समान।

पुष्पिका—इति श्री समर विजय समाप्तं ॥ सम्वत १९०६ ॥ भाद्र मासे कृष्ण पक्षे द्वतीय भौम वासर लिप्यते ॥ मिदम पुस्तक देवी सिंह लिपा पोथी सुद्ध भौली ॥ जो प्रति देखा सो लिपा मम दोपो न दियेते ॥ श्री सीता राम राम सहाइ सदा ॥

संख्या ४८१ डी. समर विजय, रचयिता—तीर्थराज, कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०७, लिपिकाल—सं० १९३२, प्राप्तिस्थान—हुलाससिंह जी जमींदार, ग्राम—सडीला, डाकघर—मछरहट्टा, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—अंत—४८१ ए के समान।

पुष्पिका—इति श्री महाराज कुमार श्री अचल सिंह ज्ञयां तीर्थ राज कृते समर विजय वरनन छाया पुरुष दर्शन नाम सप्तमो प्रकाश समाप्त सुभंभूयात ॥ सवत १९३२ शाके १७९७ लिपतं गणेश कछवाहा अस्थान सढिला ग्राम भाद्र शुक्ल त्रयोदस्याम सोन वासरा चिताया ॥

संख्या ४८२. आत्मानुशासन भाषाटीका, रचयिता—टोडरमल, कागज—साधारण, पत्र—२०३, आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४८५, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान—जैनमंदिर, ग्राम—कटरा, डाकघर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्य ॥ अथ आत्मानुशासन ग्रंथ की भाषाटीका लिख्यते ॥ दोहा—श्री जिन शासन गुरुजमें, नाना विधि सुखकार। आतम हित उपदेशमै, करौं मंगल चार ॥ सवैया ॥ सोहै जिन शासन में आत्मानुशासन थत्ति जाकी दुखहारी सुखकारी साची सासना, जाकौ गुन भद्र कर्ता गुन भद्र जाको जाति भद्र गुन धारी भव्य करत उपासना ॥ ऐसे सारशास्त्र की प्रकाशैं अर्थ जीवनी को वनै उपकारना। नासै मिथ्या भ्रम वासना। ताते देश भाषा को अर्थ को प्रकाश करो जाते मंद कुबुद्धि हूकै होत अर्थ भाषना ॥

अंत—भावार्थ—जिनवर की सेवा के आचार्यों सब में मुख्य गण धर देव हैं जिनकी भक्ति विर्षे आसक्त चित्त जिनका ऐसे गणधि करि मान कहिये कल्याण रूप मुनि राज जैन के आचार्यों तिनका माना यह ग्रंथ है अथवा जिन समाचार्यों का शिष्य जो गुण भद्र का मान्या है ऐ दोऊ अर्थ प्रमाण हैं ॥

आगे कहैं हैं श्री रिषभ देव तुमकौं कल्याण के करता हैं।

अर्थ—जिन राज के पुत्र श्री ऋषभदेव तुम हूं महा कल्याण के निमित्त होहु जाके ज्ञान रूप चक्र विर्षे सकल जगत कमल तुल्य भासैं हैं ॥

इति श्री आत्मानुशासन ग्रंथ संपूर्ण समाप्तम् ॥

(१) पृ० १ से पृ० ५७ तक—मंगलाचरण। लक्ष्मी इत्यादि सूत्र दुःखात इत्यादि सूत्र, प्राज्ञादि संबंधी श्लोक समालोचक के लक्षण शास्त्र वक्ता के लक्षण, शिष्य के लक्षण, व्यसनिषेध करने के उपदेश आराधना के चार प्रकार सम्यक्त्व के भेद अर्थ आज्ञा इत्यादि संग्रह सूत्र सम्यक् भेदवर्णन साधन के लक्षण चारित्र आराधना वर्णन धर्म रक्षा का आदेश, धर्म फल वर्णन कैसा धर्म उपार्जन करना। विषयी जन की निन्दा, धर्म विनाशी कार्यों द्वारा पाप होने का कथन दृष्टान्त मृगयादि व्यसनों का त्यागोपदेश परिग्रहादि त्याग वर्णन उपकारी लक्षण संसारी माया का वर्णन धनादि लोभ छोड़ मोक्ष मार्गावलम्बी बनने का उपदेश इष्ट अनिष्ट कल्पनाओं के त्याग का उपदेश संसार की निस्सारता का वर्णन तृष्णा की व्यर्थता मोह आदिक निद्रा के त्याग का कथन संसार के दुःखों का घर बताना मनुष्य को उसमें रत देखकर ग्रंथ कर्ता का आश्चर्य और संसार त्याग का उपदेश शरीर का बन्दीगृह कथन करना। सब दुःख त्याग जैन धर्म का कथन।

(२) पृ० ५० से पृ० ८९ तक—अर्थ लक्ष्मी के त्याग का वर्णन मुनियों के गुणों की प्रशंसा, शरीर स्वांस तथा आयु इत्यादि की निस्सारता का वर्णन स्त्री की निन्दा और उसके शरीर का अकल्याणकारी बताना मनुष्य पर्याय के शरीर विर्षे विरला आत्मा कहा करी है ? उसका वर्णन वृद्धावस्था से प्रथम ही बुद्धि की दृढ़ता कर संसार को त्यागने का वर्णन कर वैराग्य उपजाना ॥

(३) पृ० ८७ से पृ० १६० तक—वैराग्य प्राप्त पुरुष को किसी भी प्रकार के फल की इच्छा न होने का कथन। शरीर की गर्भ स्थित का वर्णन सम्यग्दर्शन का काम सुख उपजाने वाली वस्तुएं काम जगाने को उद्यत हुए जीवों का कृत्य, उत्कृष्ट संपदा के त्यागियों का कथन लक्ष्मी त्यागने वालों के कार्य विवेकियों द्वारा लक्ष्मी के सदृश शरीर त्याग का कथन रागादिक त्यागने का कथन विवेकपूर्वक परिग्रह त्याग रूप मार्ग से मोक्ष पद प्राप्ति का आधार बताना त्यागी की प्रशंसा सम्यक्त्व आराधना का स्वरूप का अनुक्रम के अर्थ दुर्लभ इत्यादि सूत्र बारह प्रकार के तप विर्षे मुक्ति का निकट साधन ध्यान रूप तप उसके ध्येय आदिक वर्णन सब निरस व्यक्तियों की प्रशंसा, ज्ञान आराधना का अनुक्रम, ज्ञान आराधना का आराधक, चार प्रकार की आराधना वाले को मोक्ष की प्राप्ति, पकने विषय के तैंतीस उपद्रव आदि उपद्रव के कारणों में प्रवृत्तिका निषेध, स्त्री के अंगों की

अशुचिता का वर्णन दोष विवेचन ग्रहण त्याग विषै, दूषण, कारण सहित गुण और दोष जानने का विधान, विवेकी द्वारा हित की वृद्धि और अहित का नाश, सुगति के साधन धर्मारूप भावों की वृद्धि के कर्त्ता जीवों की गणना कम होने का कथन, आचार्यों की उपदेश न मानने वालों की सगति का अवरोध, याचना की तुच्छता, यात्रकता पर अयाचक की गति विशेष का वर्णन जीव के सम्य कर्म के कर्त्तव्य, तप त्याग की निन्दा, सयम विधान का उपदेश, मत विरोध का आदेश, शास्त्राभ्या स्त्री की महानता। (४) पृ० १६१ से पृ० तक—श्रुति ज्ञान भावना सम स्वभाव ज्ञान को पानेवाले फल वर्णन, भव्य अभव्यों को फल प्राप्ति, ध्यान की सामग्री, जीव की सधि, अनमोक्ष का करण विपयर पाय जीतने की विधि, सर्व अनर्थों का मूल कारण शरीर को बताना और तप द्वारा उसकी शुद्धता का विधान इन्द्रिय विग्रही गृहस्थ की अपूर्वता स्त्री तथा शरीरादि से विरक्त होने का उपदेश कपाय केवसीभूत होने वालों का उपहास, अहंकार के त्याग का कथन, माया चार के योग से जीवका अकल्याण लोग की जीविका से अकाज, अकल्याण कारी कपाय को जीतने का कथन, मुक्ति के हेतु धारण किये रत्न की रक्षा का आदेश, ज्ञानादि उपाय अंगीकार करने की शिक्षा, निवृत्ति के अभ्यास के कथन, प्रवृत्ति और निवृति का स्वरूप, हितकारी तथा अहितकारी वस्तु का ज्ञान शुभादि तीन हित का निषेध, निस्पृह की परिभाषा, बंधनाश, अनुक्रम, योगी का लक्षण, आश्रव का विरोध, महापुरुषों के संयम की हानि के कारण, शरीर और आत्मा का सयोग, कर्मों की निर्जला, साउगुण, पुरातन धर्म, निर्जला तथा नव्य कर्म सवर ग्रथ की आज्ञानुसार आचरण करनेवालों को फल। ग्रथकार गुरु का परिचय —

जिनसेनाचार्य पाद स्मरणी धनिचेतसा। गुणभद्र भदताना कृत्ति रामानुसासन ॥

संख्या ४८३. वकाक्षरी, रचयिता—तोमरदास (ताड़ीपुर, जिला रायबरेली), कागज—सफेद मोटा, पत्र—२५, आकार—८३/४ × ६३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—२७०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८५ = १८२८ ई०, लिपिकाल—स० १९८५ = १९२८ ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरेपरान पाड़े, डाकघर—निलोई, जिला—रायबरेली (अवध)।

आदि—छद—करतार करणा कंद कौशल चद दशरथ नदरे। अपराध अव गुण गेह मैं, अति पोच मति का मंद रे॥ जय राम अलख अनादि अज आर्चित पुरुप परंदरे। अघ ओघ विवनकु व्याधि हरु संशय सकल दुख ददरे॥ है भक्त वत्सल वानि प्रभु की करौं सत सौगंद रे। अरधान नाम पुकारते मन कटे यम के फदरे। निर्भय शरण नहि त्रास उर निशि रोज सदा दुर्चदरे। प्रभु दुलन चरण प्रताप तें जन तोमर मन आनद रे॥

अंत—एक आपन स्वारथी हरि और को केहि केर रे। हृदय समुझि विचारि मनुरे सुमिरु अबँहु सबेर रे॥ सगी सगेदिन चारि के, सपने क अस भढ मेर रे। बिछुरे न हेरे मिलै फिरि दहु कहाँ काहि बगेर रे॥ होत आखिर कूच-सब का अगरि कोउ अबेर रे। अवलंब एकै रामजिउ ते सबहि करहि निवेर रे॥ हित मीत नातन गोत कोइ यम दूत

कीन्ह धेर रे। सिमरौं सहायक सद्गुरु, प्रभु तुलसी नाम सुमेर रे॥ सरन सबहित भयक होमर रहत चरन म मेर रे॥

विषय—सम्पूर्ण व्यञ्जनों और स्वरों के क्रम से एक एक अक्षर पर एक २ पद राम नाम की महिमा आदि पर लिखा गया है।

संख्या ४८४ ए. रामायण आरण्यकांड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—देसी, पत्र—२१ आकार—३×७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२ रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८७५= १८१८ ई०, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर दूबे, ग्राम—सैदपुर, जिला—गाजीपुर।

आदि—श्लो० अति कृपालु रघुनायक सदा दीन पर नेहु। ता सुनु आइ कीन्ह छल मूरख अवगुन गेह॥ चौ० मरित मंत्र ब्रह्म सर धावा चला भाजि वायसमय पावा। धरि निज रूप गयो पितु पाहीं। राम विमुख सोइ राखा नाहीं। भा निरास उपजी मन त्रासा। जथा चक्र मय रिषि दुरवासा ब्रह्मधाम सिवपुरि सब लोका। फिरा स्रमित व्याकुल भय सोका काहू बैठन कहा न ओही। राखि को सकइ राम कर द्रोही। मातु मृत्यु पित समन समाना। सुधा होइ विषु सुनु हरिजाना। मित्र करै सत रिपु कै करनी॥ ता कह जग तेहि अवसह ते नाता। जो रघुवीर विमुख सुन भ्राता। श्लो० जिमि जिमि भागत सक्रसुत व्याकुल अति दुखदीन। तिमि २ धावत रामसर पाछे परम प्रवीन॥

अंत— सत्तम के लच्छन रघुवीरा। कहहु नाथ संजन भव भीरा। सुनुमुनि संतन के गुन कहउं। जिन्ह ते मैं उनके बस रहउं। खट बिकार जित अनघ अकामा। अचल अकिंचन सुचि सुखधामा। अमित बोध अनीह मितभोगी सत्य संध कवि कोबिद जोगी। सावधान मानद मद हीना। धीर भक्ति पथ परम प्रवीना। गुनागार संसार दुख रहित विगत संदेह। तजि मम चरन सरोज प्रिय जिनकहुं देह न गेह। निजगुन स्रवन सुनत सकुचाहीं। परगुन सुनत अधिक हरषाहीं। सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती सरल सुभाव सबहिं सन प्रीती। जप तप ब्रतदम संजमनमा गुरु गोविंद बिप्र पदप्रेमा। श्रद्धा छमा मैत्री दाया। मुदिता मम पद प्रीति अमाया। बिरति बिबेक बिनय बिज्ञाना। बोध जथारथ बेद पुराना। दंभ मानमद करहिं न काऊ। भूलि न देहिं कुमारग पाऊ। गावहिं सुनहिं सदा मम लीला। हेतु रहित परहित रतसीला।

विषय - राम चरित।

संख्या ४८४ पी रामायण अयोध्या कांड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—देसी, पत्र—११, आकार—९×१ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्) १७१, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१= १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८३७=१७८० ई०, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर दूबे, ग्राम—सैदपुर, जिला—गाजीपुर।

आदि—चौ०—कहहिं सप्रेम एक एक पाहीं। राम लखन सखि होहिं की नाहीं॥ बय बपु बरन रूप सोइ आली। सील सनेह सरिस सम चाली॥ बेषु न सोसपि सीय न

सगा। आगे अनी चली चतुरंगा ॥ नहिं प्रसन्न मुख मानस पेदा। सपि सन्देह होइ यहि भेदा ॥ तासु तरकतिय गनमनमानी। कहहिं सकल तेहि समन सयानी ॥ तेहि सराहि वानी फुर पूजी। बोली मधुर बचनप्रिय दूजी ॥ कहि सप्रेम सब कथा प्रसगू। जेहि विधि रामराज रस भगू ॥ भरतहि बहुरि सराहन लागी। सील सनेह सुभाय सुभागी। दो०—चलत पयादे पात फल पीतदीन्हु तजिराजु ॥ जात मनावन रघुवरहिं भरत सरिस को आजु ॥ २२३ ॥ चौं० ॥—भायप भगति भरत आचरनू। कहत सुनै दुप दुपन हरनू ॥ जो कछु कहब थोर सखि सोइ। राम बन्धु आस काहे न होई ॥

अंत—चौं० दोउ दिसि समुझि कहत सब लोगू। सब विधि भरत सराहन जोगू ॥ सुनि ब्रतनेम साधु सकुचाहीं। देपि दसा मनि राज लजाहीं ॥ परम पुनीत भरत आचरनू। मधुर मंजु मुद मंगल करनू ॥ हरन कठिन कलि कलुप कलेसू। महामोह निसि दलन दिनेसू ॥ पाप पुंज कुंजर मृगराजू ॥ समन सकल सन्ताप समाजू ॥ जनरंजन भंजन भव भारू ॥ रामसनेह सुधाकर सारू ॥ छन्द—सियराम प्रेम पियूप पूरन होत जनम न भरत को। मुनिमन अगम जमणेम। समदम विपय ब्रत आचरत को ॥ दुप दाह दारिद दम भूपन सुजससिसि अप हरत को कलिकाल तुलसी सठहि हठि राम सनमुप करत को। सोरठा—भरत चरित करिनेम तुलसी जे सादर सुनहि। सीयराम पदप्रेम अवसि होइ भवरस विरति ॥ इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुप विध्वंसने विमलसं पादिनी द्वितियो सोपानः समाप्त. शुभमस्तु सवत् १८३७ मिति फाल्गुन सुदि प्रति भद्रायां आदित्य सुत वासरे कास्या मध्ये लिप्यते रामदत्त ब्राह्मण। शुभ ॥ राम राम राम राम ॥

विपय—राम चरित।

संख्या ४८८ सी अयोध्याकांड, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१७२, आकार—१० × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४५१, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४०, प्राप्तिस्थान—स्वामी ब्रह्मचारी जी द्वारा बाबू लालताप्रसाद खजाञ्ची, ग्राम—सिधौली, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—मुदित मातु सब सपी सहेली। कलित विलोक मनोहर वेली। राम रूप गुन शील सुभाऊ। प्रमुदित होंहि देपि सुनि राऊ ॥ दो० ॥ सब के उर अभिलाप यह कहहिं मनाइ महेस। आप अछत युवराज पद रामहिं देहिं नरेस।

अंत—छंद ॥ सिय राम प्रेम पियूप पूरन होत जनम न भरत को। मुनि मन अगम नेम सम दम व्रत आचरत को ॥ दुप दाह दारिद दम दूपन सुजस निसि अपहरत को। कलिकाल तुलसी से स्ठहिं हठि राम समुप करत को ॥ सोरठा ॥ भरत चरित्र करि नेम तुलसी सादर जे सुनहि सीय राम पद प्रेम अवसि होइ भव रस विरति ॥ इति श्री द्वितिय सोपान अजोध्या कांड समापत सुभ मस्तु लिपतं गंगा गिरि गोसाईं संवत १८४० चैत्र शुक्ल द्वितीया ॥

संख्या ४८८ डी. रामायण अयोध्याकांड, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—३४४, आकार—९ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०९६, रूप—

प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८६२ = १८०५ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी ब्रजमोहन लाल साहब, ग्राम—रेवा जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—कोटि मनोज देपी छबि मोहा । सीता कर पानर पर सोहा । तेहि अवसर मुनि नारद आए । सुरहित लागी बिरंची पठाए । तेज पुंज तनु करतल बीना । हरि गुन गावत तब लीना । देषिराम सहसा उठि धाए । करत दंडवत मुनि उर लाए । सादर बिमल आसन बैठार । जनक सुता तब चरन पषारे ।

अंत—सोरठा । भरत चरित कर नेम ॥ तुलसी जे सादर सुनहिं । सिया राम पद प्रेम ॥ अवसि ते भव रस बिरत ॥ इति श्री राम चरित्रे मानस सकल कली काल कलुष बीघसनो नाम बिमल बैराग्य दुई ए स्तोपान अजोध्या कांड रामायन संपूरन संवत १८६२ वि० ॥

विषय—प्रथम पत्र खंडित है । ब्रह्मा द्वारा भेजा हुआ नारद का आना, राज्याभिषेक के लिये राजा का मनोरथ, देवताओं का सरस्वती की सहायता से मंथरा द्वारा कैकेयी से विघ्न उपस्थित करवाना । कद्रू विनता की कथा, दशरथ जी का कोप भवन में कैकेयी को देखना, कारण पूछना, वरदान मांगना, रामचंद्र जी का सबसे विदा मांग कर बन जाना । सीता और लक्ष्मण का साथ जाना, श्रृंगवेर पुर आना गुह से भेंट, सुमंत का विदा होकर वापस आना, गंगा पार होकर रामचंद्र जी का प्रयाग में आना, भरद्वाज के आश्रम में रहकर वाल्मीकि मुनि के आश्रम में आना, चित्रकूट में निवास, सुमंत का दशरथ से मिलना, दशरथ जी का विलाप, कौशिल्या जी से श्रवण के शाप की कथा कहना, राम वियोग में दशरथ जी का प्राण त्याग । वशिष्ठ जी का नाना प्रकार के उपदेशों से सब को सांत्वना, भरत का आना, मृतक संस्कार करना भरत का बन गमन, गुह से भेंट, प्रयाग होते हुए चित्रकूट में राम से भेंट, संवाद महाराज जनक जी का चित्रकूट आना । भरत जी का पादुका लेकर अयोध्या वापस आना आदि वर्णन ॥

संख्या ४८४ ई. अयोध्याकांड रामायण, रचयिता—गो० तुलसीदास (राजापुर), कागज—देशी, पत्र—२००, आकार—११½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०२०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८४ = १८२७ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चंद्रिका बक्ससिंह की जमींदार, ग्राम—कामीपुर, डाकघर—ताल्लुक बक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ४८४ एफ. अयोध्याकांड रामायण, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—देशी, आकार—८½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६ परिमाण (अनुष्टुप्)—१११२ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९७ = १८४० ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी शीतलाप्रसाद, ग्राम—रुपैला, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

संख्या ४८४ जी. बाहुक विनय, रचयिता—तुलसीदास गोस्वामी (राजापुर बाँदा) कागज—साधारण, पत्र—१२, आकार—६½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल सं० १९४५ = १८८८ ई०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा काशी ।

आदि—श्रीमते वायु पुत्राय नमः ॥ छप्पै ॥ सिंधु तरन सिय सोच हरन रवि बाल वरन, तनु भुज विशाल मूरति कराल कालहु को काल जनु, गहन दहन निर दहन लंक निः संक वंक भुव, जातु धान वलवान मान मद दवन पवन सुव, कहि तुलसि दास सेवत सुलभ सेवक हित संतत निकट, गुन गुन गनन नमत सुमिरत जपत समन सकल संकट विकट ॥ १ ॥ स्वर्ण......ल संका सकोटि रवि तरुण तेज वन, उर विशाल भुज दउ चढ नप वज्र वज्र तन, पिंग नैन भृकुटी कराल रसना दसनानन, कपि सकेस कर कसल गृल पल दल भल भानन, कहि तुलसि दास वस जासु उर मारुत सुत मूरति विकट, संताप पाप तेहि पुरुप कह सपनेऊ नहिं आवत निकट ॥ २ ॥

अंत—(सी)शीता पति (सा)शाहेब सहाय हनुमान नित हित उपदेस(श) को महेस(श) मानै गुर कै। मानस वचन काय सरण तिहारी पाय तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जानो सुरकै ॥ व्याधि भूत जनित उपाधि काहू पलकी समाधि कीजे तुलसी को जानि जन फुरकै। कपिनाथ रघुनाथ मोरा नाथ भूत नाथ रोग सिंधु क्यों न ढारियत गाय पुरकै ॥ ४४ ॥ कहा हनुमान सों सुजान राम राम सों कृपानिधान सकर सो सावधान सुनिये। हरप विपाद राग दोप गुन दोप मई विरची विरचि सव देपियत दुनिये ॥ माया जीव काल के कर में सुभाय के करैया राम वेद कहैं सांची मन गुनिये। तुमते कहा न होय हा हा सो वुझाय मोहि हौं हू रहौं मौन ही वयोशो जानि लुनिये ॥ ४५ ॥ इति श्री गोसाई तुलसी दास कृत वाहुक विनै समाप्त शुभ भूयात। संवत् १९४५ चैत्र शुक्ल एकादश्या रविवासरे ॥ श्रीः श्री· श्रीः

विपय—इस पुस्तक में हनुमान जी की स्तुति ४५ छंदों में की गई है।

संख्या ४८४ यच. वजरग वाण, रचयिता—तुलसीदास, कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार—५ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० जगन्नाथ प्रसाद, डाकघर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—निश्चै प्रीति प्रतीतिते। विनै करयो सनमान। तेहि के कारज सकल सिद्धि। सुरत करयो हनुमान ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ जै हनिमत संत हितकारी। सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी ॥ जन के काम विलंव न कीजै। आतुर दवरि महा सुख दीजै ॥ २ ॥ जैसे सिन्धु कूदि वहि पारा। सुरसा के हनि मुष्टिक मारा। आगे जाय लंकिनि रोका। मारेउ लात गई सुरलोका ॥ ३ ॥ जाय विभीपण का सुख दीन्हा। सीतहिं निरखि परम पद लीन्हा। वाग उजारि सिन्ध में वोरा। अति आतुर जम कातर तोरा ॥४॥ अछे कुमारहिं मारि सघारा। लूम लपेटि लंक का जारा ॥ लाह समान लंका जरि गई। जै जेधुनि सुर पुर मा भई ॥ ५ ॥ अव विलंव केहि कारण स्वामी। कृपा करौ उर अन्तर जामी ॥ जै लक्ष्मण प्राण के दाता। आतुर है दुख करौ निपाता ॥ ६ ॥

अंत—उडु चलु तोहि रामद्रोहाई। पाँय परौं करि जोरि मनाई ॥ चं चं चं चं चपल चलता। हनु हनु हनु हनु हनु हनुमता ॥ १६ ॥ हं ह हांक देत कपि चचल। सं सं सहमि परावे खलदल ॥ अपने जनका काहे न उवारो। सुमिरत होत अनंद हमारो ॥ १७ ॥

पुनि बजरंग बान जो मारै । ताकों भूत प्रेत सब जारै ॥ पाठ करै बजरंग बान का । हनिमत रक्षा करै प्रान का ॥ १८ ॥ यह बजरंग बान जेहि मारै । ताहि कहौ फिरि कवन उबारै ॥ धूप देइ अरु जपै हमेसा । ताके तन नहिं रहै कलेसा ॥ १९ ॥ प्रेम प्रीति करि कपि भजै । सदा धरै उर ध्यान । तेहि कर कारज सकल विधि । सिद्धि करैं हनुमान ॥ २० ॥

इति श्री बजरंग बान तुलसी दास कृत ॥ सम्पूर्णम् ॥

विषय—हनुमान जी की प्रशंसा करते हुए उनसे रक्षा की विनय करना । भूतादि से बचाने तथा अभय देने की प्रार्थना । इस बजरंग बान नामक मंत्र के प्रयोग का फल ।

संख्या ४८४ आई. बजरंग साटिका, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी पीला, पत्र—१०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५० पूर्ण, रूप—प्राचीन कमजोर पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९३ = १८३६ ई०, प्राप्तिस्थान—चंद्रिका बखस सिंह, ग्राम—सालीपुर, डाकघर—तालाब बकसी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ४८४ जे. रामायण बालकांड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—४७०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—मनमोहन लाल, ग्राम—टेवा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

संख्या ४८४ के. रामायण बालकांड, रचयिता—गो० तुलसीदास (राजापुर), कागज—देसी, पत्र—३०, आकार—५½ × ३½ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर दूबे सैदपुर, जिला—गाजीपुर ।

संख्या ४८४ एल. बालकांड रामायण, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर, बाँदा), कागज—देसी, पत्र—१७१, आकार—९ × ६½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६६२, रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—शीतलाप्रसाद, जिला—प्रतापगढ़ ।

संख्या ४८४ एम. बरवै रामायण, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर बाँदा), कागज—देशी पत्र—४, आकार—९½ × ६½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८ पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७९७ = १७४० ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री रामो जयति श्री राम सीता । श्री गणेशायनमः । राग पिरवै । सीय राम अरु लखन चले मग जाहि । ग्राम नारि नर निरषत रूप सुभाहि । सकल नयन तन पुल-

कित गद गद बैन। कहहिं निछावरि करिये कोटिक मैन ॥ जहि जेहि गाऊ गोइडवां निकसहिं जाइ। देप वैन्ह के मनहि लेहि संग लाइ ॥ सोभा कहि नहि सकहि देपि मन्मोह। जनु वसंत रति सहित मदन वनु मोह ॥

अंत—सुमिरत राम सुलभ फल चारि। वेद पुरान पुकारत कहत पुकारि ॥ राम नाम पर तुलसी नेह निवाहु। येहि ते नहीं अधिक कछु जीवन लाहु ॥ दोप दुरित दुप दारिद दाहक नामह। सकल सुमंगल दायक तुलसी राम ॥

विषय—वरवा छंद में रामायण की कथा।

संख्या ४८४ पन धरमराय की गीता, रचयिता—तुलसीदास, कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रमाकांत शुक्ल, ग्राम—पुरवा गरीबदास, डाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ धरम राय की गीता लिख्यते धरमराय के दूत वडा महा रूप विकराल। मन वच कर्म विचारिये। हैं पापिन के साल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ धरम राय के दूत अनेरे। जिनकौं डरपतु रहिमन मेरे ॥ दीरघ महा भयानक अंगा। कजल वरन सनैन सुरंगा ॥ ठाढे केसनि लम्बी पैंचें। मानौं देह निरदई जल सींचें ॥ दुष्टन देखि धरैं नहि धीरा। करैं सहस्र वीचिन की पीरा ॥ तीछन दंत नैन गडि रहे। दैन दड दुष्टनि कों गये ॥ मुदगर लीनें कीनें क्रोधा। लेत फिरैं पापिन के सोधा ॥ जोरि अंजुली जम के आगे। मृत मंडल कों आया मागे ॥ जव जमराज देत हैं सिच्छा। तुम जिमि विचरौ अपनी इच्छा ॥५॥ तीनि लोक सोधौ तुम जाई। करौ साधना साफल तहं पाई ॥ साधनि ते नहीं कीजै दीठी। देपि दूरि ते दीजै पीठी ॥ ६ ॥ मदिर वासे करैं रसोई। तहां तिहारो डेरा होई ॥ उपटौ विरछु जहां जु मसानु। तहां जाइ लीजौ विश्रामु ॥२२॥ × × सुन्दर नारि देहि जे त्यागि। वन में जाय लगावें आगि। रितु मेटे सुप मिथ्या वोलें जहां जाउ जय अंतन डोलै ॥ ४ ॥ × × यहि कहि मौनु भय रवि नदु। उपजौ दूतनि कों आनदु ॥ ताते सावधान है रहौं। छाँडौ दोप धर्म पथ लहौं ॥ ४३ ॥ धर्म राय की गीतिका, गाई तुलसीदास। संत चरन उर में वसै, पावै हरि पुरवास ॥ ४४ ॥ इहि विधि जमकी गीतिका, कहै सुनै चितु लाइ। कवि कोविद लो ऊचरैं। सो नर नरकन जाइ ॥ ४५ ॥ इति श्री धरमराय की गीता सपूर्ण ॥ शुभं मस्तु ॥ धर्मर्पण मस्त संवतु १८९२ मिती मारग सुदी १ मगलवार ॥ दसकत देवीसींघ जाट ॥

विषय—पृ० १ से पृ० १० तक—धर्मराय के दूतों के स्वरूप का वर्णन नर को यम पुर लाने के विषय में दूतों के प्रश्न तथा धर्मराय के दिए हुए उत्तर।

संख्या ४८८ ओ. दोहावली, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर, बाँदा), कागज—देसी प्राचीन' पत्र—२५, आकार—९$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण

(अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७९७ = १७४० ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय, प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री रामायनमः । अथ दोहा । गुसाईं तुलसीदास कृत । राम नाम रिति आमकी लषन दाहिनो ओर । ध्यान सकल कल्यान मय सुर तरु तुलसी तोर ॥ १ ॥ सीता लषन समेत प्रभु सोहत तुलसी दास । हरषत सुर बरषत सुमन सगुन सुमंगल बास ॥ २ ॥ पंच बटी बर बिटप तर सीता लषन समेत । सोहत तुलसी दास प्रभु सकल सुमंगल देत ॥ ३ ॥ चित्र कूट सब दिन बसत प्रभु सिय लषन समेत । राम नाम जप जाप कहि तुलसी अभिमत देत ॥ ४ ॥ पयगहाइ फल पाइ जपु राम नाम पट मास । सकल सुमंगल सिद्धि सब करतल तुलसीदास ॥ ५ ॥ राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार । तुलसी भीतर बाहिरहु जौं चाहहुसि उजियार ॥ ६ ॥

अंत—इकल जलक प्रबंध ॥ ७०३ ॥ सोरठा । कलि पाषंड प्रचार प्रबल पाप पावर पतित । ऋभय अपार राम नाम सुर सरि सलिल ॥ ७०४ ॥ रामचंद्र मुख चंद्रमा चित चकोर जब होइ ॥ ४७५ ॥ बीज राम गुन गन नयन जल अंकुर पुलकालि । सुकृती सुतनु सुखेत बर बिलसत तुलसी सालि ॥ पुरुषारथ स्वारथ सकल परमारथ परिनाम । सुलभ सिद्धि सब साहिब हिं सुमिरत सीता राम ॥ ४७७ ॥ मनि मय दोहा दीप जहँ उर घर प्रगट प्रकासु । तहन मोहतम पत मत मि कलि कछु कीन्ह बिलासु ॥ ७७८ ॥ इति श्री गोसाईं तुलसी दास कृत दोहा समाप्तं, शुभ मस्तु संवत १७९७ ।

विषय—नीति वैराग्य प्रेम और भक्ति परक के दोहे वर्णन ॥

संख्या ४८८ पी. दोहावली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर, बाँदा), कागज—साधारण, पत्र—६२, आकार—११$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६८, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९२ = १८३५ ई० प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस ।

आदि—लि ॥ तुलसी हठी की आलसी गये आलु की काहि ॥ १० ॥ राम राम अवर्दनि बिनु परमारथ की आस ॥ तुलसी बाहत बरस गति बारिद बूंद अकास ॥ ११ ॥ राम सनेही राम गति राम चरन रति जाहि । तुलसी फल जग जन्मको दियो बिधाता ताहि ॥ १२ ॥ राम नाम औराधिबो तुलसी बादिन जाइ । लरिकाईं को पैरिबो आगे होत सहाइ ॥ १३ ॥ आसो सुभ बसि तन तजै हठि जब तजै प्रयाग । तुलसी जो फल सो सुलभ राम नाम अनुराग ॥ १४ ॥ बीदह चारि अबलाहो मन पद बरि कर तौल । तुलसी प्रभु बीन्हे बिना ज्यों पसी चरीक ॥ १५ ॥

अंत—जाति हीन अघ जन्म महि मुक्ति कीन्ह असि नारि ॥ महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥ ५९ ॥ तुलसी संपति के सखा परत बिपति में चीन्ह ॥ सज्जन कंचन कसन को बिपति कसौटी कीन्ह ॥ ६० ॥ रोगनसी तन जस्ति जन तुलसी संग कुजोग ॥ राम कृपा बिधि पाइहिं सब बिधि पावन जोग ॥ ६१ ॥ जिव जरनी मनसे तजी भ्रमस्म नदी बहाय ॥ तुलसी रघुबर जन सुपद नाम देहि मिटन न जाय ॥ ६२ ॥ मक्षिन पवन न मिटन ही मन मातंग मिलाय ॥ तुलसी जल चित फिर बचे मम आतम दूर

साय ॥ ६२ ॥ इति श्री राम चरित दोहावली समाप्त ॥ समत १८९२ मिती वैसाप वदी ५ ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

संख्या ४८४ क्यू. दोहावली, रचयिता—गो० तुलसी दास जी, (राजापुर) कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ X ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्) ३१, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर दूबे, सैदपुर, जिला – गाजीपुर।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ दोहावली लिख्यते। दो० अपने २ कर थपैं लिपि पूजत तिय मीत। सुफल फलै मन कामना तुलसी प्रेम प्रतीत तुलसी जहां विवेक नहिं तहां न कीजैं वास। सेत सेत सब एक हैं करर कपूर कपास। राम नाम आराधनो तुलसी वृथा न जाय। लरि काई को पैरिवौ आगे होत सहाय।

अंत—जब लगि अंकुस देह में तव लगि निर्मल देह। तुलसी अकुस वाहिरे सिर पर डारत पेह। तुलसी काया वीज है मनसा भयो किसान। पाप पुन्य दोउ वीज है वुवै सु लुनै निदान। याक घडी आधी घडी आधी हू में आध। तुलसी सगत साधु की हरै कोटि अपराध। स्वामी तें सेवक वडो जेहि निज धर्म्म समान। राम वाधि उतरे जलधि कूद गये हनुमान स्वामी को सेवक घने सेवक को प्रभु एक। तुलसी दोमें सो वड़ो जाके मन में टेक—

संख्या ४८४ आर. गीतावली, रचयिता—तुलसी दास जी, (राजापुर, वाँदा) कागज—देशी, पत्र—२२४, आकार—९½ X ६½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्) १६४८५, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७६७ = १७४० ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय, प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनम.। श्री जानकी वल्लभो विजयते। नीलांवुज स्यांमल कोमलाग सीता समारो पित वाम भांग पानौ महासऐक चारू चापं नमामि रामं रघुवंश नाथं ॥ ११ ॥ राग करना घरी। आज सुदिन सुभ घरी सुहाई। रूप सील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भै आई ॥ अति पुनित मधु मास लगन ग्रह वार जोग समुदाई। हरपवत चर अचर भूमि तरू तन रूह पुलकि जनाई। वरपहि विवुध निकट कुसमावलि नभ दुदभी वजाई। कौंमिल्यादि मातु सन हरपित यह वरनि न जाई ॥ सुनि दसरथ सुत जनम लियौ मव गुरू जन विप्र वोलाई ॥ वेद विदित करि कृपा परम सुचि आनंद उर न समाई ॥

अत—इति श्री राम गिता वल्प स्वामी तुलसी दास कृत भाषा संपूर्ण समाप्त। सुभ मस्तु ॥ सवत १७०७ मिती जेष्ट सुवादि तृतीता। वार सनिश्चर को पोथी लिखा प्रतापगढ़। दोहा। लिपित सिवनी प्रान नाथ सुकथ जथा मति देपि। सुद्ध असुद्ध विचारि चित पढ़ित पढ़िहहिं विशेष ॥

विषय—राम की कथा विविध रागों में वर्णन ॥

संख्या ४८४ यस. गीतावली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—देशी, पत्र—७०, आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ५०, परिमाण (अनुष्टुप्) २२५०,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १८९१, प्राप्तिस्थान—पं० संकठा प्रसाद अवस्थी, ग्राम—कटरा, तहसील—बिसवाँ, डाकघर—कटरा, जिला—सीतापुर, (अवध)।

आदि—अंत—४८४ ए के समान।

पुष्पिका—इति श्री गीतावली तुलसी कृत सातो कांड समाप्त संवत १८९१ कुमार वदी ११ लिख्यतं कुम्न पांडे मेहदी वाले ॥

संख्या ४८४ टी हनुमानबाहुक, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, (राजापुर), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६ = १८३९ ई, प्राप्तिस्थान—ठा० बलदेवसिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर डाकघर—ताल्लाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ बाहुक लिख्यते। कवित ॥ कृपा की पीठि जाकी गीधन की गादि हाथ नाथ कैसो भाजन भयो अष्टसिधि जन्मो ॥ जातु जाम वचन प्रमान को हरण भयो महामीन जानीतसि नाम को पुष्कल मो ॥ कुंभ करण रावण पयोधुन नई मन मो तुलसी प्रताप जाके प्रबल अनल सो। भोपथ कहत मेरो जसमान हनोमान सेसो त्रिकाल मानि लोक बड़ो बाल सा। दूत राम राय को सपूत पूत पवन को तु अंजनी की नन्दन के प्रताप भूरि भान सो सिय सोक हरण दुरित दाप दरन शरण आये अवन लपन प्रिय प्राण सो। दस मुख दुसह दरिद्र दरिबे को भयो प्रगट त्रिलोक ओक तुलसी निधान सों।

अंत—सिन्धु तरण सिय सोक हरण रवि बरन बाल तनु उर विसाल मूरति कराल कालहु के काल जनु। गहन दहन निर्दहन लंक मिह संक बंक भुव। जातु धान बलवान मान मद दमन पवन सुत कहत है कर मेरिह बार की बार न लाया ॥११ ॥ धरन सपक संकास कोटि रवि तरुन तेज घन उर विसाल भुजदंड चंड नख वज्र वज्र तन। पग नयन भृकुटी कराल रसना दसनानन। कपि सकेस कर कस मधुर वाद वृष बक मानत। कहत तुलसी दासु बसु जासु मन मारुत सुत मूरति धाम सेवत सुकम मारुत सुत मूरति विकट सुर गुनन गनत सुमिरत बत तसमन सकल संकट विकट ॥ ४१ ॥ इति श्री हनुमत गुणानुवाद तुलसीदास कृत सम्पूर्णम समाप्तं ॥ सवत १८९८ वैसाप मासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां भौम वासरे लिखित मिश्र पुस्तकं रामदीन महा पात्रेण ॥

विषय—हनुमान जी की स्तुति ॥

संख्या ४८४ यू हनुमान बाहुक, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (तारी, बाँदा), कागज—साधारण, पत्र—१४, आकार—१० × ६½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण (अनुष्टुप्)—२२५, खंडित रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१० = १८५३ ई० प्राप्तिस्थान—पं० रघुनंदन मिश्र मेई बाजेपुरा, जिला—आगरा।

संख्या ४८४ वी हनुमान बाहुक, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर , कागज—देशी पुराना, पत्र—१८, आकार—१०½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९ परिमाण (अनुष्टुप्)—१४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९१२ = १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—भागवत दास, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

संख्या ४८३ डब्ल्यू. हनुमान वंदीमोचन, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—साधारण, पत्र—२१, आकार—५ x ३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० जगन्नाथ प्रसाद, ग्राम—अजगरा खुर्द, डाकघर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ वीर वखानु पवन सुत, जानत सकल जहान। धन्य धन्य अजनी तनय। सकट हरो हनुमान ॥ चौपाई ॥ मगल मूरति मारुत नदन। सकल अमंगल मूल निकंदन ॥ जै जै हनुमान अणगी। जै जे महावीर वजरगी ॥ २ ॥ जै कपीस जै पवन कुमारा। जै जगवदन सील अगारा ॥ जे अदभुत अमल अधिकारी। अरि मरदन जै जै गिरधारी ॥ ३ ॥ अंजनि उदर जन्म तुम्ह लीन्हा। जै जै कार देवतन्ह कीन्हा ॥ वजी दुदभि गगन गभीरा। सुर मुनि हरखे असुरतन पीरा ॥ ४ ॥ कॉपै सिन्धु गढ़ लंक सकाने। छूटि वदि देवतन जाने। आखि समूह निकट चलि आए। पवन तनै के पगु सिर नाए ॥ ५ ॥

अत—जैयति जैयति जै जै जग स्वामी। समर पुरुप तुम अतर जामी ॥ अजनि तनै नाम हनुमाना। सो तुलसी के कृपा निधाना ॥ दोहा ॥ जै कपीस सुग्रीव की। जै अगद हनुमान। राम लखन जै जानकी। सदा करहि कल्यान ॥ वधि मोचन नाम यह। भूम्य वार परमान। ध्यान धरै नर निश्चै, पावै पद निरवान ॥ जो यह पाठ पढ़ै नित, तुलसी कहय विचारि। परै न सकट ताहि तन, साखी हैं त्रिपुरारि ॥ इति श्री तुलसी दास जी कृत हनुमान वधि मोचन ॥ सम्पूर्णम् ॥

संख्या ४८४ एक्स. हनुमान चालीसा, रचयिता—गो० तुलसीदास, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१६, आकार—८ x ३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ६, परिमाण (अनुष्टुप्) ६६, पूर्ण, रूप—साधारण नया, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०२ = १८४५ ई० प्राप्तिस्थान—ठा० रणधीर सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव-वक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गनेशाय नम ॥ वुधि वला जानिकै। सुमिरो तनै शभिर वल वुद्धि विद्या देहु मोहिं पति सहित शरीर. ॥ जयै हनुमान ग्यान गुन सागर। जयै कपि सिक्तिढ लोक उजागर ॥

अंत—दिग गए जीव कहा समाई। हरि चले पछताऊ सोई ॥ तन जान कहि नाम वड़ाई ॥ जाहि जपे भव फद कटे यमथशोई तुम देहु देखाई ॥ एहि जग जीवन जम थोरे के दिम का करि तारा जराई। कह कहो कल उवेवरा। करे छल छदिम पुनि जम गावई ॥ रे मन चोर अघोर जपो। अव का करि है जसुज्जारि। शम जिवद अकह पुनिशा। ध्रुव केशधति पैं है श्रम पथ पुनि लोक वड़ा। एति श्री अरतुति महाविर चरितृ समापतम् ॥ जो प्रति देपी शो लिखी मम दोस न दीयते। संमत १९००२ ॥ मिति चैत्र शुदी ॥ १० ॥ गुरु वासरे ॥ लिखी राम जीवन पंडित छावणी नीमच की मधे ॥ पठनार्थ ईसरी परसाद दूवे। पलटण गायत्री कंपनी लैट। शुभ मस्तु ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ श्री ॥

संख्या ४८५ ए. हनुमान चालीसा, रचयिता—तुलसी दास जी, (राजपुर), कागज—देसी पीला, पत्र—८ आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ७, परिमाण (अनुष्टुप्) १८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० बलीसिंह जमींदार, ग्राम—रानीपुर मजरी डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

संख्या ४८५ बी. हनुमान साठिक, रचयिता—तुलसीदास जी, कागज—साधारण पत्र—१४, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी कैथी मिश्रित, लिपिकाल—सं० १९०७ = १८५० ई०, प्राप्तिस्थान—चौहरिप्रसाद, ग्राम—नयागंज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ जै जै जै हनुमान अडंगी। जै जै महावीर बजरंगी ॥ जै कपीस जै पवन कुमारा। जै जग बंदन सील अगारा ॥ जै आदित्य अमर अविकारी। अरि मर्दन जै जै गिरधारी। अंजनि उदर जन्म तुम लीन्हा। जै जै कार देवतन कीन्हा ॥ बजी दुंदभी गगन गंभीरा। गिरा सुरा भे हरषित असुरा।

बाद छा सुह निकट बढि आए। पवन तनय के पद सिर नाए ॥ बार बार असुति ताकर ठाना। अगमक नाम धरा हनुमाना ॥

अंत—जय कपीस सुग्रीव की, जै अंगद हनुमान ॥ राम लछिमन जानकी, सदा करहिं कल्यान ॥ १ ॥ बंदी मोचन नाम पुनि, भौमवार परमान। जो नर सिद्धि साधहीं, पावइ पद निरवान ॥ २ ॥ जो इह पूरन कै पढ़इ तुलसी कहै विचार। परइ न संकट ताहि तन, सुखी होइ त्रिपुरारि ॥ ३ ॥ इति श्री हनुमान साठिक संपूर्णम् ॥ जेठ कृष्ण दसम्यौं गुरौ संवत् १९०९ श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम ॥

विषय—पृ० १ से पृ० १४ तक—हनुमान जन्म, उनकी गुणों सहित विरदावली का वर्णन तथा पुस्तक के पठन-पाठन का फल।

संख्या ४८४ ए.[1] हनुमान स्तोत्र, रचयिता—तुलसीदासजी कागज—साधारण, पत्र—९, आकार—६½ × ७½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७ परिमाण (अनुष्टुप्)—२२, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान - पं० गजाधर चौबे, ग्राम—बोझा, डाकघर—गड़वारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री राम जी सहाय ॥ जै अंजनी लालं देव बिसालं तेज प्रभु जालं सुप हालं ॥ दीन दयालं सदा कृपालं जन प्रन पालं अरिसालं ॥ विकराल स्वरूपं उदित अनूपं मरकट रूपं रनरंगं ॥ जै जै हनुमंतं रघुवर संतं ज हनुमंतं बजरंगं ॥ १ ॥ ये मकरंद रूपं सिर सिंदूरं छबि भरि पूरं बल पूरं ॥ बड़ बिरी मिल गुर्द सुरपन पुर पग पग पूरन बल रूरं ॥ श्रीराम प्रताप हरि रिपु रूपं रन धीरं जै जै हनुमंतं रघुवर सन्तं जै जै हनुमंतं बजरंग ॥ २ ॥

अंत—जै जै मनधीरं ज रनधीरं हरजन पीरं सुखदाता ॥ अंजनी नंदन दुख निकंदन मुनिजन बंदन जग त्राता ॥ आदि सुदर्न सुरमन मर्न सहतत भेदं मिटु मंगं ॥ भगत महिर्षे कहत भरत्थं तुम समरत्थं भति धीरं ॥ जै जै हनुमंतं रघुबर संतं ज हनुमंत बजरंग ॥ ११ ॥ सुत सेत लंका सुर्मरन सरन तेज छन छन बिसालं ॥ भुज दंड पताल बज्रन उरं बपू तन सिंगार मन मृकुटी बिसालं ॥ रमनौं तन आसन करि सुर्मर फटकमिक गुर पन दृढ़ बल

आननं । कहि तुलसीदास उर जासु वस मारुत सुत सूरत विकट तापसोक तिहूं पुरस कौं सपनेहुं नहीं आवत निकट ॥ १ ॥

विषय—पृ० १ से पृ० १२ तक—हनुमान स्तोत्र ।

संख्या ४८४ बी.[1] जानकीमंगल, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० शिवरतनसिंह, ग्राम—श्रीनगर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ जानकी मंगल लिष्यते प्रथम सुमिरि गुरुदेव गणेश मनाइये । शारद को सिर नाय राम गुण गाइये ॥ प्रभु गुण सिंधु समान कौन वर्णन करै । जेसी जाकी बुद्धि तैसि हृदय धरै ॥ तब बोले रिषि राज अवधपुर गाइये । राम भये अवतार जग्य हित लाइये ॥ करि सरजू अस्नान नृपति गृह आइये । बहु विधि पूजा करि सिंघासन बैठाइये ॥

अंत—रघुवंसी महराज श्री दशरथ राय के । महा सुभट रणधीर दोऊ गुण लायके । नारी नर यों कहैं ये दोऊ वय किशोर हैं ॥ शिव धनु कठिन कठोर कैसे का तोरिहैं ॥ ये छवि श्यामल गौर हरषि निरषि कर लीजिये । वारैं काम कोटि स्वरूप सुंदर नयन भरि भरि पीजिये ॥ अष्ट सौ मल कष्ट करिके धनु सभा मध्य आनियो । लागे हैं बड़े बड़े भूप जोधा धनुष काहु न तानियो ॥ कहत सिया सुन तात धनुष प्रणता जिन करौं ॥ नातरु तजिहौं प्राण के जेई वर मैं वरौं ॥ करुणा सागर राम जीय को जानिये । पीतांबर कटि बांधि धनुष लै तानिये ॥ जय जय कार भई तिंहु लोक भूप सबे मुरझाइये । श्री रामचंद्र मुष निरषि सिया ये सुमन माल पहिराइये ॥ सोहत सीताराम कंचन मंडप तरे । सिर सोने को मुकुट मंजु मुक्ता गरे ॥ राजत अमल कपोल कि मुक्ता मोल के । सुंदर लोचन लोल कमल जनु भोर के । सुरंग चूनरी निपट पीत पट छा रही । मानो अरुण घनश्याम चपलता ह्वै रही ॥ यह भूषण प्रति विंब राम छवि उर धरै । मानौ जमुना जल मध्य दीख दीपक जरै ॥ राम भुजा के निकट सिया भुज यों लसै ॥ मरकत मणि के खंभ मनो कंचन कसे ॥ राम भये तनु गौर सिया भई सांवरी । सादर सो बुधिवत वधू भई बावरी ॥ राम भये घनश्याम सिया भई दामिनी । मुनि भए चंद्र चकोर चकृत भई भामिनी ॥ पुष्पन वर्षत मेघ मुनि सब थर हरैं । होत जनकपुर व्याह राम भामरि करैं ॥ राम सिया को ध्यान सदा शंकर करैं । ब्रह्मा रूप निहार इंद्र पूजा करैं । सुर नर मुनि आनंद सुमन वर्षा करैं । ब्रह्मा आदि सब देव मुदित जय जय करैं ॥ तुलसी सीताराम सहित उर आनिये । राम भजन विनु जन्म सुमिथ्या जानिये ॥ इति श्री जानकी मंगल श्री गो० तुलसी दास कृत संपूरण समाप्त. संवत् १८९० वि० ॥ राम राम राम राम राम राम राम ॥

विषय—रामजन्म से उनके विवाह तक वर्णन ।

संख्या ४८४ सी.[1] जानकीमंगल, रचयिता—तुलसीदास जी, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—पं० बद्रीप्रसाद शुक्ल, ग्राम—सिसवांव, डाकघर—हरगांव, ज़िला—सीतापुर।

संख्या ४८४ डी [१] कवितावली रामायण, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर, बाँदा), कागज़—देसी प्राचीन, पत्र—८२, आकार—९३/४ × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६५१, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७९७=१७४०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय प्रतापगढ़, (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ मत्तगयंद॰ ॥ ओधनामिराम अवधधाम राम रूप सिंधु सखी कहै सखी सो सुप्रेम पय पाली री। बालक नृपाल जू के ब्याल ही पिना क तो रयौ मंडली कर्मकही प्रताप दाप दाली री। जनकी सियकी हमारो तेरो तुलसी को सब को भावती है है मैनू कहीं कपिली ॥ केसिख्या कि कोपि परतोषित ना पैरी राय दसरथ की बढाई बीर्यी आको री ॥ १ ॥ दूब दधि रोचन कनक धार भरि भरि आरती सवारि बर नारी चली गावती ॥ कन्हे जय माल करकंज सी है जानकी के पहरी पी रायी की की सहेली सिपावती। तुलसी मुदित जनक नगर जन ओकति झरोखा लागी सोभा रानी पावती। मानहु चकोरी चारु बैठी निज निज नीड़ पीवत चंद्र कि पिनि पसके न लागती ॥ २ ॥

अंत—दुखनों न मारिय गाढ़ पुर को ॥ २४२ ॥ कहो हनुमान सोजाम राम राम सो कृपा निधान संकर सो सावधान सुनिये। हरष विषाद राम रोग गुन दोष मई विरंचि सब देषियत दुनिये। माय जीव काल के करम के सुभाय के करैया राम बेद् कहै साची मनु गुनिये। तुमते कहान होइ कहो सो बुझाइ मोही। होइर हो मीन ही बयो सो जानि सुनिये ॥ १४२ ॥ इति श्री गुसाईं तुलसी दास कृत श्री राम चरित्र कवित्त समाप्त ॥ संवत १७९७ लिखितं आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे वार मंगलको पोथी सैवारी मैं जो देपा सो लिपा मम दोषो न—दीयते सोअमम ठीवदस मगनी मानिकपुर सूबे प्राय लिपा] परतावगढ़ मह र्निर्लेतिन के बर मह पोथी लिपा ता रूप कुमरि साहेब पोथी का नाम तुलसी सागर जो बाँचे ताको पुन्य बहुतिक होइ। लिपितं सिवनी प्रान सुत कवा बथा मति देपि। सुद्ध असुद्ध बिचारि चित पंडित पड़हि बिसपि ॥ १ ॥ श्री राम श्री राम श्री राम।

विषय—कवित्तों में राम चरित ॥

संख्या ४८४ ई [१] कवितावली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर), कागज़—देसी, पत्र—११ आकार—७ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११६, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर, सैदपुर, ज़िला—गाज़ीपुर।

संख्या ४८४ एफ. [१] कवित्त रामायण, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, (राजापुर, बाँदा), कागज़—मूली, पत्र—१०२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९००=१८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—बरगदिया बाबा, मु० ग्राम—दिंडोलने का बाग़, डाकघर—लालगंज (अवध)।

संख्या ४८३ जी.[1] किष्किंधाकांड रामायण, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर, बाँदा), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—३२, आकार—११ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी (अशुद्ध), लिपिकाल—सं० १९०५ = १८४८ ई०; प्राप्तिस्थान—ठा० चंद्रिका बक्स सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्शी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्रीः गणेसाये नम ॥ सोरठ ॥ मुक्ति जन्म महि जान ग्यान षानि अघ हानि कर। जहँ बसि सभु भवानि सो कासी सेइये कसन ॥ १ ॥ जरत सकल सर वृन्द विसम गरल जिन्ह पानि किये। तेहि न भजसि मति मंद को कृपाल शंकर सरिस ॥ २ ॥ चौपई ॥ आगे चले बहुरि रघुराये। रिषि मुक पर्वत नियराये। तह रह सचिवा सहित सुग्रवा। अवत देषि अतुल बल सीवा ॥ अति सभीत कह सुनु हनुमाना पुरष जुगुल बल रूप निधाना ॥ धरि वट रूप देषु तैं जाई कहे सुजान जिया सैन बुझाई ॥ पठया बालि होइ मन मैला। भजौं तुरत तजौं यह सैला ॥ विप्र रूपा धरि कपि तह गयेऊ। माथा नाइ पुछत अस भयेऊ ॥ को तुम स्यामल गौर सरीरा। छत्री रूपा फिरौ बन वीरा ॥ कठिन भूमि कोमल पद गामी। क्वन हेतु बन विचराहु स्वामी ॥

अंत—जामवंत मैं पूछहु तोही। उचित सिषापन दीजे मोही ॥ येतना करहु तात तुम जाई। सीतहि देषि कहौ सुधि आई ॥ येहि ते अधिक सिपावन नाहीं वेगि करऊ तुम धरि मन माही ॥ तब निज भुजबल राजिव नैना। कौतुक लागि संग कपि सेना ॥ छंद ॥ कपि सपने सध सीधारि निशिचर राम सीतहि आनि है। त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि वषानिहैं। जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावहीं रघुवीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावही ॥ दोहा ॥ भये सेपज रघुनाथ जसु सुनहि जे नर अरु नारि। तिनके सकल मनोरथ सिद्धि करहि तिपुरारि ॥ नील जलद तन स्याम, काम कोटि सोभा अधिक। सुनिये तासु गुण ग्राम जासु नाम अघ षग बाधक ॥ इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने। विमल वैराग्य भक्ति सपादीनी नाम चतुर्थ सोपान किष्किन्धा कांड समाप्त ॥ पूस मासे सुकुल पक्षे ॥ सगर दीन। क्रिकध कड समपित ॥ सवतु १९०५ ॥ सन १२५६ ॥ राम लछिमन भरत शत्रोहन जानुकी सोधी करहि। राम राम

विषय—तुलसी कृत रामायण किष्किंधा काण्ड की कथा का वर्णन।

संख्या ४८४ एच.[1] श्री कृष्ण गीतावली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजपुर, बाँदा), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१९, आकार—९½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७९७ = १७४० ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कृष्नायनम ॥ अथ श्रीकृष्न चरित तुलसीदास कृत। राग विलवल। माता लै उछग गोविंद मुष वारवार निरषे। पुलकित तन आनंद घन छन छन मन मद हरषे। पूछत तो तुतरात वात मानहि जदु राई ॥ अति सै सुष जो तो तोहि मोहि कछु समुझाई ॥ देषत तो वदन कमल मम आनंद होई। कहै कौन सरन मोनु जानै

कोइ कोई ॥ सुंदर सुप सोहि रघा उइका कवि भारे ॥ मम समान दुम्ख पुंज नायक नहीं तोरे । तुलसी प्रभु प्रम बस्य मनुज रूप धारी बाल कलि लीला रस प्रज चवहित कारी ॥१८

अंत—गह गह गगन दुंदुभी बाजी । बरषि सुमन सुरगन गावत जस हरष मगन मुनि सुजन समाजी । सानुज सगन ससंत सिवली धन मन सुप मलिम धार पढ धाजी । साज गाम डलि बलि कुचालि कलि परी पराइ कहू कहू गाजी ॥ प्रीति प्रतीति सुपद तमसा की मसी सूरि मैं समरि न भाजी । कहि पारव सारथिहि सराहत गाइ बहोरि गरीब नवाजी सिथिल सवइ मुनित सम ही मम बसन बीच विच वधू बिराजी, समा सिंधु जदपति जय मय सनु रावा प्रगट विधु भव मे आजी । जुग जुग जग साक कै सब के समन कम्पस कुमाव सु साजी । तुलसी कौन होइ सुनि कीरति कृष्ण कृपाल भगति पथ राजी ॥ १० ॥ इति राम गीता बस्या कृष्ण चरित अथर गीता समाप्त शुभं मस्तु ॥ संवत १७१७ वि० लिपित अषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे वार शुक्रवार का पामी हिसारी मैं लिपा मिश्री कायस्थ जगदीश दास कर नाती प्रागनाथ को सुत लिखाया—जो दृषा सो लिपा मम दोष न दीयते ॥ राम ॥

विषय—विविध रागों में श्री कृष्ण चरित्र वर्णन ॥

संख्या ४२४ आई [1] रामायण लंकाकांड, रचयिता—तुलसीदास जी, कागज—देसी, पत्र—१८, आकार—१०×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८३०, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४४, प्राप्तिस्थान—पं० दुर्गादीन जी दीक्षित, ग्राम—सीकरी, डाकघर—संदीर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—दोहा श्री रघुवीर प्रताप ते सिंधु तर पापान। ते मति मंद जे राम तजि भजहिं आइ प्रभु आन ॥ चौ० ॥ पांचि सैनु अति सुदिढ बनावा देपि कृपानिधि क मन भावा ॥ चला कटक कुछ बरनि न जाई। गर्जहिं मर्कट भट समुदाई ॥ सेत बंधि ढिग चढि रघुराई। चितवहिं कृपाल सिंधु रघुराई ॥ देषन चढ़े प्रभु करुना कंदा। प्रगट भए सब जलचर बृन्दा ॥ नाना मकर नाक झप ब्याला। सत जोजन तन परम बिसाला ॥ ऐसेउ एक तिन्हहिं धरि पाहीं। एक न डर एक डराहीं ॥ प्रभुहिं बिलोकहिं टरहिं न टारे मन हर्षित सब भये सुखारे ॥ तिन्ह कार न दृषिय बारी मगन भए सब रूप निहारी ॥ चला कटक कछु बरनि न जाई। को कहि सक कपि दल बिपुलाई ॥ दो० ॥ सेत बंध भइ भीर अति कपि नभ पंथ उडाहिं। अपर जल चरन ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहिं जाइ ॥

अंत—प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई। धरि बटु रूप अवधपुर जाई ॥ भरतहिं कुसल हमारि सुनायहु। समाचार लै तुम चलि आयहु ॥ तुरत पवन सुत गवनत भयऊ। तब प्रभु भरद्वाज पहं गयऊ ॥ नाना बिधि मुनि पूजा कीन्हा। अस्तुति कै पुनि आसिष दीन्हा ॥ मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी। चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी ॥ इहाँ निषाद सुनउ प्रभु आये। नाव नाव कहि लोग बोलाये ॥ सुरसरि नाघि जान जब आया। उतरया तट प्रभु आयसु पाया ॥ तब सीता पूजी सुरसरी। बहु प्रकार पुनि चरनन परी। दीन्ह असीस हरषि मन गंगा। सुन्दरि तव अहिवात अभंगा ॥ सुनत गुहा धाय परमाकुल ॥ आय निकट परम सुंदर कुल। प्रभुहिं बिमाहि सहित बैदेही। परो चरन तन सुधि नहिं तेही ॥ प्रीति

परम विलोकि रघुराई । हरिषि उठाइ लीन उर लाई । छंद ॥ लिए हृदय लगाइ कृपा नि
अति हित राम रमा पति बैठारि परम समीप पूछी कुसल कुसल छमा पती । अब कुसल
पंकज विलोके जे चरन संकर सेवने । सुखधाम पूरन काम राम नमामि राम रमापते सब
अधम निषाद सो जिमि भरत ज्यों उर लाइयो मति मंद तुलसीदास यों प्रभु मोह बस
गाइयो यह राम रावन चरित पावन करहि सठ रत प्रद सदा । कामादि हर विज्ञान क
सिउ मुनि गावहिं मुदा । दो० ॥ समर यह रघुबीर के चरित जो सुनहि सुजान । वि
विवेक विभूत अति तिनहिं देइ भगवान । यह कलि काल मलार तन मन करि देखु वि
श्री रघुनायक नाम तजि नहि कुछ आन अधार ॥

इति श्री राम चरित्रे मानसे सकल कलि कलपु विध्वंसने उमा महेश्वर सम्वादे वि
वैराग्य संपादिना नाम षट मो सोपान लंकाकांड समाप्त शुभमस्तु १८४४ माघ मासे
द्वादस्यां चन्द्रवासरे शुक्ल पक्षे ।

विषय—लंकाकाण्ड रामायण ।

संख्या ४८४ जे.[1] लंकाकांड रामायण, रचयिता—गो०, तुलसीदास जी (रा
बाँदा), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१३२, आकार—१३ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ
९, परिमाण (अनुष्टुप्)—९४८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिका
सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चंद्रिका बक्स सिंह जी जमींदार, ग्रा
खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ४८४ के.[1] लंकाकांड, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजा
कागज—देशी, पत्र—१००, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, प
(अनुष्टुप्)—६७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—तिलंगान, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर, मै
जिला—गाजीपुर ।

संख्या ८८४ एल.[1] रामशलाका, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, काग
देशी, पत्र—२२, आकार—६ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्
५१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६५५, लिपिका
सं० १८५०, प्राप्तिस्थान—देवसिंह, ग्राम—छोटागाँव, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम शलाका लिख्यते ॥ अथ प्रथम स
प्रथम सप्तक ॥ बानि विनायक अंबु रवि गुरु हर राम रमेस । सुमिरि करहु सब काज
मगल देस विदेस ॥ गुर सुर श्री सिंदुर बदन सासि सुर सरि पुर गाइ । सुमिरि
मंगल मुदित होइहि सुकृत सहाय ॥ गिरा गौरि गुन गनपहर मंजुल मगल मूल । सु
कर तल सिद्धि सब होइ ईश अनुकूल ॥ भरत भाइ रिति रिपुदमन गुरु गनेस बुध
सुमिरत सुलभ सुधर्म फल विद्या विनय विचार ॥ सुर गुर गुर सिय राम गुर राउ
उर आनि । जो कुछ करिय सो होइ सुभ पुंज सुमंगल पानि ॥ सुक सुमिरि गुर स
गनपत पन हनुमान । करिय काज सुभसाज भल निपटहि नीक निदान ॥ तुलसी तुलसी
सिय सुमिर लषन हनुमान कान विचारहु सो करहु दिन दिन बड़ कल्यान ॥ अथ
सर्ग की द्वितीय सप्तक ॥ दशरथ राज न ईतिमय नहिं दुष दुरित दुकाल । प्रमुदित

प्रगत्र सब सब सुप सग्रा सुकाल ॥ कँासिला पद नाइ सिर सुमिरि सुमिया पाइ । करिय काज मंगल कुशल विधि हरि संभु सहाय ॥

अत—छपन राम सिय बसत बन विरह बिकल पुर लोग समी सगुन कह कर्म बस दुप सुप जोग वियोग ॥ तुलसी लाइ रसाल तट निज कर सींचत सीप । कपी सुफल मक सगुन सुम सभी कहत कमनीय ॥ अब सप्तम सर्ग की सप्तम सप्तक ॥ सुदिन साधि पोथी नेवित पूजि प्रमात सप्रेम । सगुन विचारव चाह मति सादर सुमति सुनेम ॥ मुनि गनि त्रिम गनि बार गनि दोहा देपि विचारि । दस कर्म करता बचन सभी सगुन अनुहारि ॥ सगुन मत्त ससि नयन गुनि अवधि अधिक नैमचाल । होइ सुफल सुम जासु की प्रीति प्रतीति प्रमान गुर गनेस हर गौरि सिय राम छपन हनुमान । तुलसी सादर सुमिरि सब सगुन विचार विचान ॥ हनुमान सानुज भरत राम सिय उर आनि छपन सुमिरि तुलसी कहत सगुन विचार बपान ॥ जो जहि काज अमुहरै सो दोहा जब होइ । सगुन समय सब भाँति फल कहत राम मत सोइ । गुन बिस्वास बिचित्र मनि सगुन मनोहर हार । तुलसी रघुबर भगत उर बिलसत बिमल बिचार ॥ इति राम सत्ताकार्या सप्तम सर्ग की सप्तम सप्तक समाप्त ७ ॥ शुम मस्तु ॥ समत नाम वैसाप शुक्ल पूर्णमास्या ११ चन्द्र वासरे फकीर चन्द्रेरक लेपि अष्टोत्तर सत कवल फल मूठि तीनि परिमान भागु सप्त दै जो रहै ताको मन अनुमानि प्रथम सर्ग को लैप रह पूजे सप्तक होइ तीजे दोहा जानिए सगुन विचारब सोइ ॥ श्री राम चंद्राय नमः संवत १८२० ॥ विक्रमीय

विषय - शुम अशुम फल जानने की रीति का वर्णन ।

संख्या ४८४ एम [1] राम सलाका, रचयिता—गो० तुलसी दास जी (राजापुर बाँदा), कागज—देसी, पत्र—२६, आकार—९½ × ६½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७९७ = १७४० ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय प्रतापगढ़ (अवध) ।

संख्या ४८४ एन [1] राम सलाका सगुनावली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर बाँदा), कागज—देसी पीला रंग, पत्र—१७, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० बाली सिंह जी जमींदार, ग्राम—गाजीपुर, डाकघर—ताखाव बकसी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ४८४ ओ [1] रामायण छः भाग प्रयोध्याकांड के अतिरिक्त रचयिता—तुलसी दास जी, कागज—देसी, पत्र—३१०, आकार—१० × ७ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—५११२, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३६, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर दूबे, सैदपुर, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री महावीर जी सहाय श्री पोथी बाला काण्ड लिप्यते । जेही सुमिरे सीधी होइ गननायक करी बर बदन करहु अनुग्रह सोइ बुधी रासी सुभ गुन सदन । मूक होइ बाचाल पंगु चर्ह गिरिवर गहन जासु कृपा सुदयाल द्रवहु सकल कलि मल दहन नील सरोहर स्याम तरुन अरुन बारिज नयन करहु सो मम बास सदा छीर सागर सयन । कुंद इंदु सम देह उमारमन करुन सो मम उर । जाही दीन पर नेह करहु कृपा

मरदन मएन । वदौं गुरुपद कंज क्रिपा सिंधु नररूप हरि । महा मोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर । चौ० वदौं गुरु पद पदुम परागा । सुरसी सुवास सरस अनुरागा अमीअ मुरी मए चूरन चारू । समन सकल भव रुज परवारू सुकृत संभुतन विपल विभूती । मजुल मंगल मोद प्रसुती । जनमन मंजु मुकुर मल हरनी । कीए तिलक गुन गन वस करनी श्री गुरुपद नख मनिगन जोती । सुमिरत दीव्य दृष्टि हिय होती ।

अंत—पाई न गति केहि पतित पावन राम भजु सुनु सठ मना । गनिका अजामल गिध व्याधि गजादि पल तारे घना । आभिर जमन किरात खग सुपचादि जे अघरूप ते । कहि नाम वारकतेपि पावन होइ राम नमामि ते रघुवश भूपन चरित एहि नर सुनै जे सादर गावही । कलिमल मनोमल धोइ विनश्रम राम धाम सिधावही । सतपच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै । दासन अविद्या पय जनित विकार श्री रघुवर हरै । सुदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर करि प्रीति को सो एक राम अकाम प्रिअ निर्मान सम पद आन को । जा की कृपा लवलेस ते मति मद तुलसी दास हू । पाएहु अचल विश्राम राम समान प्रभु कहु आन हूं ।

दो०—मो सम दीन न दीन हित तुम समान रघुवीर अस विचारि रघुवशमनि हरहु विपय भव भार । कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि जिमि प्रिय दाम । तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागह श्री राम । इति श्री उत्तर काड समाप्त सुभमस्तु मिती का० वदी १४ रविवार स० १८९३ ।

विपय—राम चरित्र ।

संख्या ४८४ पी [1] रामायण, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—देशी, पत्र—३१२, आकार—१०½ × ७½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—५६१६, खडित, रूप – प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, वनारस ।

सख्या ४८४ क्यू [1] सगुन माला, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर, बांदा), कागज—देशी, पत्र—२१, आकार—१० × ४ इंच; पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५६ = १७९९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० हनुमानसिंह, ग्राम—गोधनी, डाकघर—जतीपुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ श्री जानकी वल्लभो विजयते । दो० ॥ वानि विनायक अव रवि गुरू हनु रमा रमेस । सुमिरि काहु सुभ काज सव मगल देस विदेस ॥ १ ॥ गुरू सरसइ सिंधुर वदन ससि सुरसरि सुर गाइ ॥ सुमिरि चलहु मन मुदित मन होइहि सुकृत सहाइ ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुर गणप हनु मगल मगल मूल । सुमिरत कर-तल सिद्धि सव होइ ईस अनुकूल ॥ ३ ॥ भरत भारती रिपु दवन गुरू गणेसु वुध वाह । सुमिरत सुलभ सुधरम फल विद्या विनय विचारू ॥ ४ ॥ सुर गुर गुर सियराम गन राउ गिरा उर आनि । जो कछु करिय सो होइ सुभ पुलहि सुमंगल पान ॥ ५ ॥ सुक्त सुमिरि गुरु सारदा गनपु लपन हनुमान । कहिय काजु सव साजु भल निपटहिं नीक निदानु ॥ ६ ॥

तुलसी तुलसी राम सिय सुमिरि लषन हनुमान ॥ समुझ बिचारेहु जा करहु दिन दिन बड़ कल्यान ॥ इति प्रथम सप्तम ॥

अंत—अथ पंचम सप्तम । उदवस अवध नरेस बिनु । देव दुखी नर नारि । राज भंग कुसमाज बड़ गत भइ चालि बिचारि ॥ १ ॥ अवध नरेस अनंद बड़ सगुन सुमंगल मोल । राम तिलक अवसर कहब सुप संतोष सुकाल ॥ २ ॥ राम राज बाधक बिबुध कहब सगुन सति भाउ देखि देव कृत दोष दुख कीजिय उचित उपाव ॥ ३ ॥ मंद मंथरा मोह बस कुटिल कैकई कीन । ब्याधि बिपति सब देव कृत समय सगुन कहि दीन्ह ॥ ४ ॥ राम बिरह दसरथ दुखित कहत कइ कर्क कछु । कुसमय आय उपाय सब केवल करम बिपाक ॥ लखन राम सिय बसत बन बिरह बिकल पुर लोग । समय सगुन कहि करम बस दुख सुख जोग बियोग ॥ तुलसी लाइ रसाल तरु निज कर सींचति सीय । कुची सफल सब सगुन सुभ समउ कहब कमनीय ॥ ७ ॥ अथ षष्ठम सप्तक ॥ सुदिन सोध पोथी नेवति पूजि प्रभात समेत । सगुन बिचारब चारु मति सादर सत्य सनेह ॥ १ ॥ मुनि गनि दिन गनि धातु गनि दोहा देखि बिचारि देस करम करता बचन सगुन समय अनुहारि ॥ २ ॥ सगुन सत्य ससि नयन गनि अवधि अधिक नयवान । होइ सुफल सुभ जासु जसि प्रीति प्रतीति प्रमान ॥ गुरु गनेस हनु गौरि सिव राम लषन हनुमान । तुलसी सादर सुमिरि सब सगुन बिचारि बिधान ॥ ४ ॥ हनुमान मातुल भरत रामु सिय उर आनि । लषन सुमिरि तुलसी कहत सगुन बिचारु बखानि ॥ ५ ॥ जो जेहि काजहिं अनुहरइ सो दोहा जब होई । सगुन समय सब सत्य फल कहब राम गति जोइ ॥ ६ ॥ गुन बिस्वास बिचित्र मनि सगुन मनोहर हारु । तुलसी रघुबर भगत उर बिलसत बिमल बिचारु ॥

सर्ग							सप्तक							दोहा						
१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७

कमल बीज सत कहें गीन तीन सुटिकरि लेब । सुनि गुनि दिन गुनि धातु गुनि सगुन सत्य कहि देब ॥ इति श्री तुलसीदास कृतौ सगुन माला या सप्तमः सर्ग शुभ मस्तु ॥ संवत १८९६ वि० आश्विन शुक्ल द्वादसी गुरु वासर लिखतं रामबकस कायस्थ सीता रामपुर मध्ये ॥

विषय—सगुन असगुन का विचार वर्णन ॥

संख्या ४८४ भार.[1] संकट मोचन, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर बाँदा), कागज—आधुनिक मीसा, पत्र—२ आकार—११ × ५½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ = १८०० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चंद्रिका बक्स सिंह जी, जमींदार ग्राम—पालीपुर, डाकघर—लालगंज बसनी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ कबित गर्भपा संकट मोचन ॥ गुसाईं तुलसी दास कृत लिख्यते ॥ बाल समै रबि भक्ष लियो तब तीनहु लोक भयो अंधियारो । ताहि ते जग त्रास भई सबसे अति संकट काहु ते जात न टारो । देवन आय करी बिनती तब छांडि दियो रबि कष्ट निवारो । को नहि जानत है जग में प्रभु संकट मोचन नाम तिहारो ॥ १ ॥

वालिको त्रास कपीस वसे गिरि जात महा प्रभु पथ विचारो चौंकि महामुनि श्राप दयो तव चाहिय कौन विचार विचारो। कै द्विज रूप लै आयो महाँ प्रभु सो तुम दासको सोक निवारो। को नहि जानत है जगमों प्रभु संकठ मोचन नाम तिहारो ॥ २ ॥ अंगद के सग कीश अनेक गये सिय पोज कपीस अपारो। जीवत हानि वचो हमहूं सो विन सुधि लिये इनको पगु धारो। हेरि थके टट सिध सबै तव लै सिय। सुद्धि सो प्राण उवारो। को नहि जानत है जगमें प्रभु सकट मोचन नाम तिहारो ॥ ३ ॥ रावन त्रास दई सिय को तव रक्षस सो कहि सोक निवारो। ताहि समैं हनुमान महाप्रभु जाइ तहां रजनिश्चर मारो। चहत सिया असोकते आगि तबै दीन्ह सु मुद्रिक डारो। को नहिं जानत है जगमो प्रभु संक्ट मोचन नाम तिहारो ॥ ४ ॥ सुत रावण जुद्ध अचानक कीन्ह सो नागकी फाग सबै सिर डारो। श्री रघुनाथ समेत भयो दलमो अति ही अति सकट भारो। आनि पगेसहि को हनुमान सो वंधन छोडिके फाश निवारो। को नहि जानत है जगमो प्रभु सकठ मोचन नाम तिहारो ॥ ५ ॥ वान लगो उर लक्षन के पौन तनय सुत रावन मारो। ले गृह ईद सुपेन समेत सुपी गिरि द्रोण सो वीर उवारो।

अत—आनि सजीवन हाथ दई तव लक्षणके तुम प्राण उवारो। को नहि जानत है जगमो प्रभु सकठ मोचन नाम तिहारो ॥ ६ ॥ वधु समेत जबै महि रावन लै रघुनाथ पताल सिधारो। देविहि पूज भली विधि सों तव दानव दो प्रभु मत्र विचारो। जाइ सहाइ भयो तहँवाँ महिरावन सैन समेत सँघारो। को नहि जानत है जगमो प्रभु सकठ मोचन नाम तिहारो ॥ ७ ॥ काज कियो वड लोगन के तुम वीर महा प्रभु देपि विचारो। कौन सो सकठ मोहिं गरीव को जो तुम सों नहि जात है टारो। वेगि हरौ हनुमान महाप्रभु जो कछु संकठ होइ हमारो। को नहि जानत है जगमों प्रभु संकठ मोचन नाम तिहारो ॥ ८ ॥ इति श्री गुसाईं कृत सङ्कठ मोचन सामाप्त सुभ्म् मयात् अस्वनि मासे सुक्क पक्षे तिथौ ५ संवत १९३४ ॥ पोथी लिपा वद्री सुपाठनार्थे राधा कृष्ण हरे शिव शिवा शिव राम जानुकी ॥

विषय—हनुमान की प्रशसा।

संख्या ४८४ एस. सत्त भक्त उपदेश, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर वादा), कागज—आधुनिक, पत्र—४२, आकार—८ × ४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन फटी, पद्य, लिपि—नागरी, लिपि-काल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० वद्रीसिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ भक्ति मुक्ति श्री पति सिया पति कछु अटक तह नाहिं। पासहि तंदुक दास धर सो प्रभु देपि सुपाहि ॥ १ ॥ दुरा धर्त्त्व महाराज वद इन्द्रादिक भय लेत से रघुवर निज दाम को चूक परे हँसि देत ॥ २ ॥ प्रथमै नुग्रह राम की या सिप मातु नवाहि। पुनि तुहि राम हि छाडित है जथा अवल भागादि ॥३॥ साधु गुरु द्विज धेनु को सदा सेउ चित चाउ ॥ जधपि औगनहूं दूसेतदपि मानु हरि भाऊ ॥ ४ ॥ क्रोध हिंसके लालची विखई निंदक वेद। एसहु होइ तो सेइए मानस करिये न खेद ॥ ५ ॥ नर हरि वामन परसुधर कृश्न वुद्ध इव जान ॥ तुलसी ऐसे भाव ते होत सदा

कल्यान ॥ ९ ॥ हरिजन माया सो एक जन पद होत न ग्राम। पवन पाइ मडु सुमि गये मिरिड न दीपक नाम ॥

अंत—नाम पढ़ा सो सब पढ़ो सकल शास्त्र को भेद ॥ नाम बिना भरकत फिरै पढ़ि पढ़ि चारिउ बेद ॥ ५० इति श्री गुसाईं तुलसीदास सत शक उपदेश समाप्तम्। बैसाख मासे शुक्ल पक्षे परवार्यां रविवासरे संवत १९११ लिपा कृष्णी जन श्री तुलसीदास गुसाईं कृत पोथी समाप्त भई है इस पोथी की बराबरी औरे मे ज्ञान नहीं है। श्री रामचन्द्रायनमः ॥

विषय—तुलसीदास के सदुपदेश के ५० दोहे ॥

संख्या ४८४ टी[1] सीतास्वयंवर, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—साधारण, पत्र—११, आकार—१२ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८०, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महंत मोहनदास वर्तमान—स्वामी पीतांबर दास, ग्राम—ओझा मठ, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री जानकी वल्लभायनमः ॥ अथ सीतास्वयंवर लिख्यते ॥ गुरु गणपति गिरजापति गौरी पति गिर पति। नारद सेष सुकवि सुभुति संत साक मति ॥ हाथ जारि करि बिनय सबहि सिर नावउ। सिय रघुबीर बिवाह यथा मति गावउ ॥ सुभ दिन रचिउ स्वयंवर मंगल दायक। सुनत श्रवण हिय बसहि सीय रघुनायक ॥ देस सुहावन पावन बेद बखानिए। भूमि तिलक समति रहति त्रिभुवन जानिए ॥ तहँ बसी नगर जनकपुर परम उजागर। सिय लरि जहँ प्रगटी सब सुप सागर ॥ जनक नाम तिहि नगर बसहि नर नाइक। सब गुन अवधि न दूसर पटतर लाइक ॥ भयउ न होइहि है न जनक सम नर पई। सीय सुता भइ जासु सकल मंगल मई ॥ नृप करि कुँवरि सयानि बोलि गुरु परिजन। करि मति रचेउ स्वयंवर सिव धनु धरि पन ॥

अंत—मंगल बिटप मंजुल बिपुल दधि दूब अक्षत रोचनी। भर थारि आरति सजहि सब सारंग सावक लोचनी ॥ भुवन मुदित कौसल्या सुमित्रा सकल भूपति भामिनी। सजि साज परिछन चली रामहि मत्त कुंजर गामिनी ॥ मंधुन समेत चारि सुत मातु निहारहीं। बारहि बार आरती मुदित उतारहीं ॥ करहि निछावर छिन छिन मंगल मुद भरी। दूलह दुलहिन देषि प्रेम पायम परी ॥ देत पावँड़े अरघ चली लै सादर उम ... ।

विषय—(१) पृ० १ से पृ० २२ तक—मंगलाचरण प्रस्तावना, स्वयंवर शाला का सूक्ष्म वर्णन विश्वामित्र अयोध्या गमन, राम लक्ष्मण को दशरथ जी से माँगकर लाना, ताड़कादि वध, अहिल्योद्धार, राम जनकपुर गमन, जनक का राम परिचय राजाओं का समारोह और उनमें कोप का न चढ़ना। (२) पृ० २२ से पृ० ३१ तक—राम द्वारा धनुष भंग, जनकपुर वासियों का हर्ष प्रकाश, सीता का राम के गले में जयमाल डालना, जनक का अयोध्या को सूचना देना, राजा दशरथ का बरात सजाकर जनकपुर आना। बन बारे इत्यादि का वर्णन। राम का विवाह तथा विविध वैवाहिक संबंधी कृति, स्त्रियों का प्रेममय गाली प्रदान तथा मनोरंजन, अन्य तीनों भ्राताओं के विवाह। ज्योनारादि वर्णन।

(३) पृ० ३४ से पृ० ३६ तक—बरात विदा के समय जनक का मोह और दोनों समधियों का प्रेम वर्णन। बरात विदा, मार्ग में परशुराम का मिलना और क्रोधित होना। राम के परितोष देने पर उनका सारंड देकर चला जाना और बरात का अवध प्रवेश। अवध उत्सव, वधूयुक्त पुत्रों को निहार कर रानियों का हर्ष।

संख्या ४८४यू.[1] रामायण सुंदरकांड, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर), कागज—देशी, पत्र—२९, आकार—९३/४ × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर दूबे सैदपुर, जिला—गाजीपुर।

संख्या ४८४ व्ही.[1] उत्तरकांड रामायण, रचयिता—तुलसीदास जी (राजापुर), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१४१, आकार—१०×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—११९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२४ = १७६७ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चंद्रिका बक्ससिंह जी जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ।

संख्या ४८४ डबल्यू.[1] विनय दोहावली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर), कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३५ = १५७८ ई०, लिपिकाल—सं० १८४० = १७८३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ मिश्र, ग्राम—इमलिया, डाकघर—सदारपुर, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विजय दोहावली लिष्यते दो० ॥ सोरह सौ पैंतीस को संवत है सुष रास। राम विजय दोहावली वरणी तुलसीदास ॥ विजय राम दोहावली जाने जे नर कोय। गुप्त अर्थ रामायणं प्रगट कीजिये सोइ ॥ सो० ॥ मूक होइ वाचाल पंगु चढ़े गिरिवर गहन ॥ दो० ॥ नहीं मेघ के कट गति नही अरुन के पाइ। वास करैं आकास में रविरथ चढ़िगे धार ॥ चौ० ॥ नाम रूप दुइ ईस उपाधी। अकथ अनादि सो समुझहिं साधी ॥ दो० ॥ नाम जपति शंकर थके शेष न पायो पार। सब प्रकार सो अकथ है महिमा अगम अपार ॥ चौ० ॥ भाव कुभाव अनप आलस हू। राम जपति मंगल दस दिसहू ॥ दो० ॥ भाव सहित संकर जप्यो कहि कुभाव मुनि वाल। कुंभकरण आलस जप्यो अनप जप्यो दस भाल ॥ छंद ॥ दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अय ॥ दो० ॥ अभय घरी सुर लोक में ब्रह्म लोक दुइ दंड। रह्यो भुवन में दिवस निसि व्याप्यो मदन प्रचंड ॥

अंत—चौ० ॥ उलटा नाम जपत जग जाना। वाल्मीक भये ब्रह्म समाना ॥ दो० ॥ एक चोंस वध पाय यहि भरी तुम्हारी देह। महि मारौं तौ ना मरै तुलसी चरण सनेह ॥ पाच भुजा कैलास को द्वै पठये रघुवीर। दस दस हृदय गयाल को पाच सिंधु के तीर ॥ चोला छांड्यो स्वय मनु देवन धन्यो उठाइ। जबहिं निपाते लंक पति दसरथ प्रहिरे आइ ॥ रही दरस की लालसा राम लषन सिय नेह। आये रण की भूमि में स्वयम् मनु की देह ॥ तुलसी कहत पुकारि के चित सुनि हित कर मान ॥ हेम दान गज दान ते बड़ो दान सन-

नाम ॥ तुलसी या संसार में पांच रतन हैं सार साधु मिलन अरु हरि भजन दया दान उप कार ॥ और यत्नों से सर्ग सह सन नाम अपार । तुलहा तुलही से सग एक रकार मकार ॥ तुलसी रा के कहत ही निकसि सर्व विकार । फिर आवन को कहत है रत मकार किवार ॥ इति श्री गुसाईं तुलसीदास कृत विनय दोहावली संपूर्ण समाप्त लिपतं शालीराम मिश्र संवत १८४० वि० पौष शुक्ल ११ यथीयं दृष्टं पुस्तकं दृष्टा ता दृष्टं लिपतं मया यदि शुभम् शुभम् वा मम दोषो न दीयते ॥ इति श्री विनय दोहावली संपूर्ण लिषी ॥

विषय—तुलसीदास के रामायण के दोहों चौपाइयों और छंदों के गूढ़ अर्थ ।

संख्या ४८४ पपस [1] विनय दोहावली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—मूली, पत्र—१२, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३५, लिपिकाल—१७४१, प्राप्ति स्थान—पं० मथीलाल तिवारी गंगापुर, ग्राम—मिश्रिख, डाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर ।

संख्या ४०४ घाई [1] विनय पत्रिका, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—देसी, पत्र—१९९, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८७५, रूप—प्राचीन जीर्णशीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १०६० = १७०३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० शिवरतन सिंह, ग्राम—धौ नगर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी (अवध) ।

आदि—राग रामकली ॥ गाइये गिरिजा पति कामी ॥ जासु भवन अति मादिक दासी ॥ अवसर दानि दमनि सुनि थोरे । सकृत न दीन देखि कर जोरे । सुख संपति मति सुगति सहाइ । संक सुगम शंकर सेवकाई ॥ गए हैं सरण आरत के लीन्हे । निरपि निहाल निमिषि मंद कीन्हे ॥ तुलसी दास जाचक गुन गावें विमल भक्ति रघुपति की पावें ॥

अंत—राम राय बिनु रावर मेरे को हितु सांचो स्वामी सहित सबनों कहो । मुनि सुनि बिसेषे काऊ रेप दूसरा मांचों । देह जीव जोग के सखा मृगा कंचन सांचो ॥ किये विचार सार कदली जो मनि कनिक संग लघु असत बीचबिच कांचो ॥ विनय पत्रिका दीन की बाप आपही बांचा ॥ हिए हेरि तुलसी लिखी सो सुभाय सही करि बहुरि पूँछि अहि मांचा ॥ १ ॥ पवन सुवन रिपु दवन भरत लाल लखन दीन की निज निज अवसर सुधि किए बलि जाउं दाम आस पूजि है दास तीन की ॥ राम हार मको सप कई साधु सभी चीन की ॥ सुख्य सुजन साहेब कृपा स्वारथ परमारथ गति भई गति विहीन की ॥ समय तुम्हारि सुधारिन तुलसी मलीन की । प्रीति रीति समुझाई प्रनत पाल कृपालुहि परमिति पराधीन की ॥ मारुत मन रुचि भरत की लखि लखन कही है ॥ कलि कालहु नाम नाम मा प्रतीति प्रीति एक किंकर की निबही है ॥ सकल सभा सुनि लै उठी जानि रीति रही है कृपा गरीब निवाज की देखत गरीब का साहमा बांह गही है ॥ बिहंसि राम कह्या सत्य है सुधि मोह रही है मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ की परी रघुनाथ सही है ॥ इति रामचन्द्र प्रभु पांव अयोध्या करि मन मोहे उदर बन्यो आरण्य रूप किष्किंधा मा ह सुंदर ग्रीव सुभागिर संग्राम कहि गावे जेहि मा रावन आदि निशाचर सभी समाये मस्तक उत्तर कांड

हरि सहि विधि तुलसी दास न आदि अंत लौं देखिए रामायण श्री राम तन ॥ इति श्री महोसाई तुलसीदास कृत विनयपत्रिका सपूर्ण समाप्तः संवत १७६० वि० मार्ग शीर्ष तिथि पचम्याम लिखतं पृष्टे शुभही ॥ राम राम राम राम राम

विषय—रामचन्द्र जी व शंकरजी की स्तुति भजनों में।

संख्या ४८४ जेड[1]. विनय पत्रिका, रचयिता—तुलसीदास जी, कागज—देशी मोटा, पत्र—७८, आकार—१० × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) - १२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११७०, रूप—प्राचीन, पद्य। लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८७६ = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शालिग्राम दीक्षित, ग्राम—जामू, डाकघर—सडीला, जिला—हरदोई,

संख्या ४८४ ए[2]. विनय पत्रिका, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—४ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२६ ई०, प्राप्ति-स्थान—रमाशंकर सैदपुर, जिला—गाजीपुर।

संख्या ४८४ बी.[2] विनय पत्रिका, रचयिता—गो० तुलसी दास जी (राजापुर, बाँदा), कागज—देशी, पत्र—९६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८७५, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०३ = १८४६ ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य रामभूषण, ग्राम—धनकौली, डाकघर—मवई, जिला—उन्नाव (अवध)।

संख्या ४८४ सी[2]. विनय पत्रिका, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—देशी, पत्र—९६, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६५०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१८, प्राप्तिस्थान—ठा० राम करन सिंह, ग्राम—ढकवा, डाकघर—ओयल, जिला—खीरी, (अवध)।

अंत—राजद्वार भलो सब कहैं साधु समी चीन की। सुकृत सुजस साहेब कृपा स्वारथ परमारथ गति भई मति विहीन की समय सम्हारि सुधारिबो तुलसी भलनि की प्रीति रीति समुझाइ प्रणत पाल कृपालहि बरनि तियराधीन की ॥ २७९ ॥ मारुत मन रुचि भरत की लपि लपन कही है ॥ कलि कालहु नाथ नाम सों प्रतीति प्रीति एक किंकर की निवही है ॥ सकल सभा सुनि लै उठी जानि रीति रही है कृपा परीव निवाज को देपत गरीव को सहसा वाह गही है ॥ विहंसि राम कह्यो सत्य है सुधि मोह लही है मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ की परी रघुनाथ सही है ॥ २८० ॥ इति वालकांड प्रभु पाय अयोध्या कटि मन मोहै उदर वन्यो आरन्य हृदय किष्किंधा मोहै ॥ सुंदर ग्रीव सुपार विंद लंका कहि गाये। जेहि मो रावण आदि निशाचर सभी समाए। उत्तर भरत रु कांड हरि सहि विधि तुलसीदास न आदि अंत लौं देपिए रामायण श्री रामतन ॥ इति श्री महोसाई तुलसीदास कृत विनै पत्रिका संपूर्णम् संवत १९२८ शुभ स्थान राजघाट काशी ॥

विषय—श्री राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, हनुमान, महादेव गंगा, आदि की स्तुति और विनय।

संख्या ४८४ डी* वैराग्य संदीपिनी, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर) कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—८ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८ परिमाण (अनुष्टुप्)—८८, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८६ = १८२९ ई०, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर दूबे सैदपुर, जिला—गाजीपुर।

आदि—श्री गणेशायनमः—विराग संदीपनी लिष्यते। दो० राम नाम मनि दीप धरु जीह दहरी द्वार। तुलसी बाहर भीतरै जो चाहे उजियार। राम नाम तोसि जानुकी कमल दाहिनी ओर। ध्यान समय कल्यान मय तुलसी सुर तरु तोर। तुलसी मिटे न मोह तम किये कोटि गुन गाम। हृदय कमल फूले नहीं बिन रवि कुल रविराम। सुनत लखत श्रुति नयन बिन रसना बिन रस लेत—बासु नासिका बिनु करे परसत बिना निकेत। सोरठा—अज अद्वैत अनाम अलख रूप गुन रहित जो। माया पति सोइ राम दास हेत नरतन धरेऊ। दो० तुलसी यह तनत कहु तपत सदा मे ताप सांत होइ जब सांत पावै राम प्रताप। तुलसी वद पुरान मत पूरण साख विचार। यह वैराग्य संदीपनी अखिल ज्ञान को सार॥

अंत—अमल अनूप सांति पदसार। सकल कलस करत प्रहार। तुलसी नाहि परै जो कोई। रहे अनन्दसिन्धु महं सोई। त्रिबिधि ताप संभव अतापा। मिटे दोष दुख दुसह कलापा। पारमसांत सुप्त रहो सांई। ताको ताप न भेदै भाई। तुलसी ऐसे सीतल संता। सदा बसत यहि भांति परंता॥ कीन्हे गरल सिला ज्यों अंग। कहा करैपक छोग भुजंग। दो० अति सीतल तिहि सुपद सकल कामना हीन। तुलसी ताहि अती गनि सांति वृत्ति जब लीन। चौ० जो कोउ कोप करै मुख बैना। सन्मुख हते गिरा सर पैना। तुलसी तऊ लेस रिस नाहीं। सो सीतल कहिये जगमाही। दो० तुलसी सहदीप भी चंद की तीन लोक जग नाहिं सान्त समान सुख और दूसरो नाहि। जहां सांत सतगुरु की दई। तहां क्रोध की जर जर गई। इति श्री वैराग्य संदीपनी महामोह विध्वंस तुलसीदास कृत कवार शुक्ल १३ सोमवासरे सं० = १८८६॥

विषय—प्रथम प्रकाश:—राम नाम महिमा, संत सुभाव वर्णन। द्वितीय प्रकाश—संतों की महिमा वर्णन। तृतीय प्रकाश:—शान्ति भाव की प्रशंसा काम क्रोधादि विकारों का दूर भागना।

संख्या ४८५ ए. भरतविलाप, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—१० × ५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी नागरी मुडा मिश्रित, प्राप्तिस्थान—पं० शालिग्राम दीक्षित, ग्राम—जामू डाकघर—संडीला, जिला—हरदोई।

आदि—अथ भरत मीलाप श्री गनेश जी सहाय। श्री सरोसती जी सहाय। श्री पोथी भरत विलाप कथा॥ चौ०:—श्री राम चंद्र के चरन मनावों। जेहि ते आदि अन्त छब गावो॥ गुरु गनेस सदा मन लावों। जीव प्रसाद अछर सुधि पावों॥ नारद के सै

चरन मनावों । तब श्री राम अथ गुन गावों ॥ कहै विचित्र कथा विसतारा । कवि कोविद मुनि लेउ सुधारा ॥ जस आश्रम पसु बचे न मीता । बैठे दसरथ बानी सम जुगुता ॥ विधि वसी तहा सरवन दीर आवा । मात पिता कह तीरथ पराना ॥ अंधरीपी अपनी ही मोह। कहहि पुत्र जल भीपा होई ॥ श्रीगा धोसे मरो तुम सुतमाय । मरो अपराधी ऋषी तुम्हारा ॥ मोहिहो ऐसो करो विचारा। मरो अपराधी शीष तोहारा ॥ पीआहु नीर रहै प्रान तोहारा । जस जानहु तस करहु विचारा ॥ पुत्र धाव जब मुनि के स्राप नृपति कह दीना । जो गति भई हमारी सुन वियोग जो कीन ।

अत—चौ० बार बार समुझावे रघुराई । सो कह अवध जो दीन पठाई । जब मोहि अवधहि दीन पठाइ तब हम रहवे धरतीग माई । बारह बरष राम बन पठई ॥ तब लागि सुपु अथ नहि करई (२) पऊ आ पूजि अथ मन लावा निस दिन पाँवा नावहि माया ॥ तीस दिन पाँवा नावहिं माया। सुमिरि हदै रामहि रघुनाथा ॥ धन अथ जीवन जग माहीं । सब कोउ कहा प्रीति अस आही ॥ कहे लोग सब प्रीतम जानी । ऐसी विधि अथर है मन जानी ॥ अथ कथा तीनि लोकहिं गाई । ताकर पाप तुरत छुटि जाई ॥ अथ कथा हव मत पर भाऊ । महा महा मुनि से मन भाऊ ॥ दोहा—तीस दिन पूजहिं पाँ आ राम लषन मन लाये । तुलसीदास सन मीत्र भक्ति करै मन लाये ।

श्री पोथी अथ वीलाप सप्रग्न समापतः

विषय—प्रथम से तृतीय दोहे तक श्रवण की कथा, उसका राजा दशरथ द्वारा तीर से मारा जाना और श्रवण के पिता का राजा दशरथ को श्राप देना तीसरे से पाचवें दोहे तक श्रृंगी ऋषि द्वारा राजा दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ कराना पुत्रोत्पत्ति १६ वर्ष की अवस्था में राम का विश्वामित्र के साथ जाना, ताड़का वध इत्यादि । पांचवें से सातवें दोहे तक मथरा द्वारा कैकेयी का बुद्धि परिवर्तन और राम को वनवास देने का वर्णन ।

सातवें से नवम दोहे तक सुमित्रा का लक्ष्मण को रामचन्द्र के साथ वन जाने का उपदेश। सीता और लक्ष्मण के साथ राम को वन के लिये पयान । पुनः सुमत्र का उन्हें पहुंचाकर आना और राजा दशरथ से यह समाचार कहना । राजा दशरथ का प्राण त्याग । भरत का बुलवाया जाना । उनका नगरवासियों दशरथ तथा पिता माता रामचन्द्र आदि के विषय में समाचार पूछना । रामचन्द्र के विना नगरवासियों की हीन दशा देख कर भरत का विलाप करते हुए राज भवन में प्रवेश करना । कैकेयी द्वारा सब समाचार सुनकर भरत का मूर्छित हो जाना और नाना प्रकार से विलाप करना और पुन कैकेयी को धिक्कारना । राजा दशरथ की दाह क्रिया, राम से मिलने के लिये भरत का सपरिवार वन को प्रस्थान । लषमण का दूरही से धूल उड़ती हुई देखना और धनुष वाण का संधान करना । भरत का समीप आना और रामचद्र से मिलाप ।

संख्या ४८५ वी सूर्य पुराण, रचयिता—तुलसीदास जी, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७०, प्राप्तिस्थान—ठा० शिवसिंह, ग्राम—विक्रमपुर, डाकघर—ओयल, जिला—खीरी (अवध)।

आदि—श्री गणेसायनमः ॥ अथ सूर्य पुराण लिष्यते । सूर्य पुराण प्रारंभो ॥ दो० ॥ बंदौं चरण हृदय धरि भक्ति प्रेम कमसीस महिमा अगम अपार है सो बहु ज्ञान प्रवीन ॥ बंदौं चरणन जोरि करि श्री पति गौरि गनेस तुलसिदास अति प्रेम से बर्णत कथा बिसेस ॥ २ ॥ चौ० ॥ सूर्य देवता सुमिरौं तोही । सुमिरत ज्ञान बुधि दे मोही जोति रूप आदित बखाना । तेज प्रताप सु अग्नि समाना ॥ तुम आदित परमेश्वर स्वामी । अरूप निरंजन अंतर जामी । बर्नि जाइ जाति की लीला । धर्म धुरंधर परम सुसीला ॥ जोति कथा चहुं धार बिराजै । जगमग कानन कुंडल छाजै । नील वर्ण छवि हय असवारी । ज्ञान निधान धर्म व्रत धारी । परम पुनीति आदित अविनासी । अजसु अनादि सकल घट वासी । जासु कथा मैं करौं बखाना । मा पुरुष है अग्नि समाना ॥ महिमा आदित अगम अपारा । तीनहुं लोक जोति उजियारा ॥ दो० ॥ आदित कथा पुनीति है गावहिं संभु सुजान । तीन लोक छवि उदित है करहिं प्रताप बखान ॥

अंत—अथ व्रत विधान लिष्यते ॥ चौ० ॥ कार्तिक मास जो प्राणी रहई । तीन पत्र तुलसी दल लहई । अगहन मास ध्यान धर धरई । धनकर धारि के भोजन करई ॥ पूस माह जो प्रानी रहई । तीन दूध के भोजन करइ ॥ माघ मास कै सुनहु बिचारा तिल पत्री को करै अहारा ॥ फागुन मास जो यहि विधि रहई दधि पंची के लिंग हो रहई । चैत्र मास को सुनहु बिचारा । घृत गंडूष भरि करै अहारा ॥ बैसाख मास जो प्राणी रहई । अमिय ताम धारि सो रहई ॥ जेठ मास कर सुनहु बिचारा । तीनि अंजल जल करै अहारा ॥ आसाढ़ मास जो प्राणी रहई । तीनि मिरच को भोजन करई ॥ सावन मास यही व्यवहारा कपिला मूत्र गंडूष अहारा ॥ भादौं मास जो यहि बिधि रहई । गोबर पंचि के लिंग हो रहइ । कुंवार मास को सुनहु बिचारा । पंचम पंचि के करै अहारा ॥ इति सूय महातम महा पुराने व्रत महात्म्यं समाप्तम् ॥ इति श्री सूर्य पुराण संपूर्णम समाप्तं लिषतं गंगाराम बैद पैतेपुर बासी संवत १८७० दिन बुध बासरं भाद्रपद शुक्ल पक्ष ॥ सीता राम की जय ॥

विषय—सूर्य भगवान की कथा और व्रत का वर्णन ।

संख्या ४८१ सी सूर्य पुराण, रचयिता—तुलसीदास जी (राजापुर, बाँदा), कागज—प्राचीन देशी, पत्र—५०, आकार—७½ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल— सं० १८०६=१८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—रामेश्वरप्रसाद, देवा जिला—प्रतापगढ़, (अवध) ।

आदि—श्री गणेसायनम बंदौं चरण जोरी कर ॥ श्री पति गौरी गनेस ॥ तुलसी दास करते सुजस ॥ बरनी कथा बिसेष ॥ १ ॥ एक समै गिरिजा सहित । प्रभु रहे कैलास । अपजा उर अनुराग दीन्ह ॥ सुजस कथा परगास ॥ २ ॥ भाखी भवानी संकर हि पुछा प्रेम दीढाई ॥ सुभ चरित जो कथा है ॥ मोहि कहहु समुझाइ ॥ चौपाई ॥ श्री सूर्ज देवता सुमिरौं ताहि ॥ सुमिरत ज्ञान बुध्दि दे मोही ॥ जोति स्वरूप आदीत बखाना । तेज प्रताप छवी अगिन समाना ॥ तुम आदीत परमेस्वर स्वामी ॥ अरूपी रंजन अंतर जामी ॥

वरनी न जाइ जोती कै लीला ॥ धरम धुरधर परम सुसीला ॥ जोती कला चहु ओर विराजै ॥ जग मग कान न कुडल साजै ॥ नील वरन छवी तुरंग सवारी । ग्यान निधान धरम व्रत धारी ॥

अत—रोग सकल तन ते मिटी जाई ॥ तेज मान रवी प्रवसहि आई ॥ पुत्र पवोत्र सम्रदाहि पाई ॥ सो वीसेष्यो कै सुनी अस गावै ॥ भागुवी भौटीन दीन अधीकावै ॥ तापर आदीत होइ सहाई ॥ सुर दुर्लभ जग वीवीधी भोग करी ॥ अंत अस्था सुजदेह धरी ॥ रांष्यी पुर वास ताहि कर होई ॥ रवी कर भग्ती जान नर मोई ॥ कह लगि कहौ सुज प्रभुताई ॥ सहसौ मुख से वरनी न जाई ॥ दोहा ॥ ऐह इतिहास पुनीत अती ॥ टमहि कहेउ समुझाइ ॥ वरत की नाम ही लीऐ । मो सुर लोकहि जाई ॥ इति श्री पदुम पुराने ॥ सुज महातमे सीव उमा सवादे द्वादस मों अध्याय ॥ १२ ॥ सुज पुरान समाप्त संवत १८७६ मिती माघ वदी ॥ १५ ॥ आमावस रोज अतवार जो देखा सो लीपा मम दोसो न दीअते ॥ दसषत लाला सीटदीन कायस्थ का ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६

विषय—पद्म पुराणान्तर्गत सूर्य्य माहात्म्य की कथा और व्रत फल विधि आदि ॥

संख्या ४८५ डी. सूरज पुराण, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९२ = १८३५ ई०, प्राप्तिस्थान—रामप्रसाद मुराऊ, ग्राम—पुरवाविश्रामदास, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—वंदौ चरन उर धारि भक्ति प्रेम लवलीन । महिमा अगम अपार है साहिव ग्यान प्रवीन ॥ १ ॥ गनपति फनपति देवपति रवि ससि पवन कुमार । करौ मनोरथ सकल तुम महिमा अगम अपार ॥ २ ॥ सूरज देवता सुमिरौ तोहीं । सुमिरत ज्ञान वुद्धि दे मोही ॥ ३ ॥ जोति रूप अदित वलवाना । तेज प्रताप तुव अगिन समाना ॥४॥ तुम अदित परमेश्वर स्वामी । अलप निरजन अंतरजामी ॥ ५ ॥

अंत—नेम धर्म करि हैं वहु भांती । धर्म कथा हुइ है दिन राती ॥ विप्र जिवाइ आयु जव जै हैं । निसि दिन नाम सूरज को लै हैं ॥ लछिमी घर घर लेइ अवतारा । धर्म कथा हुइ है विस्तारा ॥ मिथ्या वचन न कोऊ भाषै । निस दिन टेक सुरज पर राषै ॥ धर्म विचार सुरज जव करि हैं । द्वादस कला जोति विस्तरिहैं ॥ दो० :—द्वादस कला जो उगि है । आदित जवहीं आइ । पूरव जन्म के पाप सव । कथा सुनत छै जाइ ॥ इति श्री सूरज पुरान महात्मे द्वादशमोध्याय ॥ संपूरन समाप्तं ॥ मिती मारग सुदी ५ मंगलवार संवत १८९२ प्रति देषी तैसी लिपी मम दोष न दीए ॥ करत न महातेजत्रिं पाप छिन्मं करते परते परभोत रवि दरसन ॥

विषय—वांझ को पुत्र प्राप्ति कथा माहात्म्य । व्रत विधान एवम् फल कथा का विधान । परीक्षित की कन्या तथा नारद की कथा पंपासुर की कथा, सूर्य स्तुति ॥ कथा

प्रथम फल, नारद को शिक्षा, नारद का शाप मुक्ति होना । नारद का यज्ञ करना । कथा तथा महातम्य फल ।

संख्या ४८४ ई सूर्य पुरान, रचयिता—गो॰ तुलसीदास जी, कागज—देशी प्राचीन मोटा, पत्र—२१, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६१, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं॰ १९०५=१८४८ ई॰, प्राप्तिस्थान—ठा॰ बद्रीसिंह जमींदार, ग्राम—शामीपुर, डाकघर—छाउनी बख्शी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री पोथी सूरज पुराण को लिख्यते ॥ दोहा ॥ बंदौ चरण सरोज कर ॥ श्री पति गौरि गणेश ॥ तुलसी दास कहते सुजस ॥ बरनै कथा दिनेश ॥ १ ॥ बंदौं चरण हृदय धरि ॥ भक्ति प्रेम लवलीन ॥ महिमा अगम अपार है । गोविंद ज्ञान प्रवीन ॥ २ ॥ एक समय गिरिजा सहित ॥ शिव रहे कैलाश ॥ उपजा मन अनुराग इक ॥ सूरज कथा पर नास ॥ ३ ॥ आदि भवानी शंकरहिं ॥ पूछहि प्रेम बढ़ाई ॥ श्री सूरज प्रताप जो कथा है ॥ सो मोहि कहो बुझाई ॥ ४ ॥ श्री सूरज की महिमा संकर बरनै लीन ॥ आदि विप्र बुलाई कर कंचन दक्षिण दीन ॥ ५ ॥ चौपाई श्री सूरज देवता सुमिरौं तोहीं । सुमिरित ज्ञान बुधि दे माहीं ॥ जोति सरूप आदित बलवान ॥ तेज प्रताप तुम अगिन समान ॥ तुम आदित परमेश्वर स्वामी । अरूप निरंजन अंतर यामी ॥ बरनि न जाई जाति की लीला । धरम धुरंधर । परम सुसीला ॥

अंत—अब सुनि उमा कहो अस्थान ॥ पाठ जोग पूजा कर जान ॥ विविधि नदी या सरजू तीरा ॥ बसिष मंदिर उत्तम नीरा । अथवा पीपर बट तरछाया । चरन करी रवि पाठ कहाया ॥ रोग सकल तन ते टर जाई । तेजु नाम रवि प्रविशहि आई ॥ पुत्र पौत्र संपदा सो पावहि । साथि सेम करहि स्तुति सब गावहि ॥ भाग्य विमल दिन दिन अधि काई । तापर आशिष रहहि सहाई ॥ सुर दुरलभ जग विविधि भोग करि । अंत अवस्था सुर न देह धरि ॥ सुर पुर बास ताहि कर होई । रवि की भक्ति करै जो कोई ॥ दोहा ॥ जो यह कथा मन लाइके दृढ़ धरै मन ध्यान ॥ जोई इच्छा करि पढै नर सोई सुखी समधान ॥ यहि प्रकार शिव उमा कहि बार बार समुझाई । जै जै सीता राम कहि, दीन्ह कपार क्याई ॥ इति श्री सूर्य महातमे महा पुराणे शिव पारवती सम्वादे पूजा पाठ विधान नाम द्वादशो अध्याय ॥१२॥ मिति जेष्ठ बदी ९ रविवासरे सम्वत १९०५ लिष्यते श्री पैरुसिंघ जी जोग हरि भक्ति मन लिषते जो पंडित केसव देव को जोड़ हरिदास दासाय ।—॰राम—॰राम ॥

विषय—सूर्य की कथा ॥

संख्या ४८४ एफ. सूरज पुरान, रचयिता—गो॰ तुलसीदास जी, कागज—साधारण पत्र—४४ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं॰ १९१९=१८६२ ई॰ प्राप्तिस्थान—पं॰ शिवरतन पांडे, ग्राम—सिठारी, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

संख्या ४८४ जी सूर्य पुराण, रचयिता—तुलसीदास जी कागज—देशी, पत्र—३१, आकार—९×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२५ = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—शिवधारी लाल, ग्राम—ममरेजापुर, डाकघर—बेनीगंज, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशायनमः। अथ सूर्य पुराण लिष्यते। श्री गणेशायनमः। दो०—वंदि कंज पद जोरिकर श्रीपति गौरि गणेश। तुलसीदास करते सुजश वरनौं कथा दिनेश। वंदौ चरणन हृदै भरि प्रेम भक्ति मन लाई। महिमा अगम अपार है साहेब ज्ञान सिवाइ। २॥ सूर्य्य देवता सुमिरौं तोही। स्मृति ज्ञान बुद्धि दे मोही। ज्योति स्वरूप भानु बलवाना। तेज प्रतापी अग्नि समाना। तुम आदित परमेश्वर स्वामी। अलख निरजन अंतरयामी। वरणि न जाइ ज्योति कै लीला। धर्म धुरंधर धर्म्म सुशीला। ज्योति सकल चहु ओर विराजे। जगमग कानन कुंडल छाजे। नील वरण वरहम असवारी ज्ञान निधान धर्म्म वृतधारी॥

अत—जेठ मास की भाव विपाटी। तीनि अंजुली जल अभ्यादी मास आसाढ़ वरत कहं धरई। तीनि मिरिच आलवन करई सावन मास वरत रवि जी का। पाठ तीनि फल है सवही का। भादौं मास अमित सुखदाई। भै अंजुलि गोमू तहिं खाई आश्विन मास वरत शुभ आनै। फल कदली के तीनि बखानै कातिक मास वरत रवि करई। भै फल दूध आनि कै धरई। दो०—विधि यह वारह मास लगि। विधि विधान के लीन। रविपूजा विधि व्रत सहित मुनि दुर्लभ सो दीन॥

संख्या ४८५ एच सूर्य पुरान, रचयिता—गो० तुलसीदासजी, कागज—आधुनिक, पत्र—८०, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४१ = १८८४ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ सूर्य्य पुराण लिष्यते। दोहा। वदि कमलपद जोरि करि श्रीपति गौरि गणेश। तुलसी दास करते सुयस वर्णै कथा दिनेश। वन्दो चरन हृदय धरि प्रेम भक्ति मन लाय। महिमा अगम अपार है साहव राम सिवाय। चौपाई। सूर्य्य देवता सुमरों तोही। सुमिरत ज्ञान वुद्धि दे मोहीं ज्योति स्वरूप भानु वलवाना। तेज प्रतापी अग्नि समाना। तुम आदित प्रमेश्वर स्वामी। अलख निरंजन अतरयामी। वरणि न जाइ जोति कै लीला॥ धरम धुरधर परम सुशीला जोति कला चहुं ओर विराजै। जग मग कानन कुडल छाजे॥ नील वरण वर है असवारी। ज्ञान निधान धर्म वृत धारी॥

अत—सवत विचारि नित। सन्म सो प्रगटे आइ॥ अव जो कछु कहियो उमा। सो वर्णौ हरषाय। इति श्री म० सू० निधान वर्णन नाम एक दशो अध्याय॥ ११॥ चौ० सो सुनि उमा हर्ष अति भई। माया मोह कथा सव गई॥ धन्य धन्य सुन संकर स्वामी। कथा कह्यो हर्षित निज गामी॥ जो कर जोरि पूजत है लोगा। करहि अनन्द मिलै सव भोगा॥ कथा और कछु कहो गोसाईं। कराह अनन्द लोक सुखदाई॥ इति सूर्य्य मा० उमा महेश्वर सवादे द्वादशोऽध्याय॥ १२॥ समाप्तम्। मिति मार्ग सीर्ष शुक्ल १४ शशि वासरे सवत १९४१ हस्ताक्षर कुंज विहारी मिश्र॥

संख्या ४८५.आई. सूर्य पुरान भाषा, रचयिता—गो० तुलसीदास, कागज—देशी पीला, पत्र—१४, आकार—९×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—

२४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० कृपानारायण शुक्ल, ग्राम—मुंसीगंज कस्बा, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ।

संख्या ४८६. सगुन बिलास, रचयिता—उदयनाथ (रतौली), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—११ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१९, प्राप्तिस्थान—मूलचंद तिवारी, ग्राम—सासर, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सगुनावली लिख्यते ॥ दोहा ॥ प्रनमत सरोरुह गुर चरन ध्याइय सर्व तजि काम। राम दाहिने होहिं जेहिं नित प्रति हित तेहि नाम ॥ चौ० ॥ गुरु पद सुमिरहु गुरुतर जोरी। देहु मनीषा कहहुं निहोरी ॥ बिन गुरु मुकि होइ नहीं कोई सुमत बिचार कहहिं मुनि जाई ॥ दोहा ॥ गुरु दयाल हरि भक्त सुख धाम मोह तजि काम। जैसे गुरु नित पूजिये कहइ सिष्य सुरधाम ॥ जेहि के उर गुरु भक्ति पसारा। तिन्हहिं न दुर्लभ कछु संसारा। जगत जननि गिरि जहिं सुमिरि बार बार सिर नाइ। दापहु प्रभु अनु जानि करि कहिते संसै जाइ ॥

अंत—॥ छंद ॥ श्री कृष्ण ध्यान धुति ममित मानस कमल कुलपति के हृन मे। गावत बेद महेस मुनिवर सेस नित कृति बंदनं ॥ कुंडल प्रभव कपाल राजत बंसिवारे अति सुंदरं। कटि किंकनी धनमाल सोभित पीत पट सिरे सुंदरं ॥ अधर नाक धुति चिबुक राजति कंज सुप कर मोहनं ॥ भ्रकुटी कुटिल बन कंज लोचन नील घन तन सोभित ॥ ब्रज मीत कैपि अमीत कीन्हो अनेक भय हरि मंदरं ॥ प्रम पंथ कीन्हेउ बसन को यकि अकधि में अति मधरं ॥ पोतना पय पान करि गति दिया त्रिभुवन पावनं। देवकी मद कंस मर्दन संत धर्म धर्म बसुधी धापनं ॥ ललित सो अति रचन राजित कंज पद दुख भंजनं। उदयनाथ गावै प्रेम सुत कलुषादि पद दल भंजनं ॥ कमर आदि उकार अनु दाहा अस्तुति छंद। हरि रस कीरति गावहिं ईस पराहिं भव फंद ॥ इति श्री उदयनाथ कृते हरि चरित्र भाषा सारा चरित्र समाप्त शुभमस्तु शुभमभूयात श्री संवत १९१९ श्री राम श्री राम श्री राम।

विषय—ग्रंथ विषय सगुनावली और कृष्ण जी की महिमा।

संख्या ४८७ श्री भगवद्गीता भाषा, रचयिता—उदयराज दास, कागज—देशी मोटा, पत्र—६८, आकार—१२ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—११०५, पूर्ण, रूप—अत्यंत प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १७७१ = १७१४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृपानारायण शुक्ल, ग्राम—मुंसीगंज कस्बा डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ।

आदि—सिद्धि श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री भगवद्गीता लिख्यते ॥ द्विरद बदन रदन एक देह सुचि सूक्ष्म बुधि बिधि लम्बोदर असरन कृपाल सुमिरत प्रतिष्ठ सिधि ॥ मधुप निकर सेवित कपोल मंडन मधुलि भय ॥ परमानंद सुमति करत निर्भय गुंजारव ॥ अभिमत फल दातार प्रभु अपत नाम सुर असुर नर ॥ गवरी सिव संभव नमी गन नाइक बर विघ्नहर ॥१॥ छप्पै छंद उज्जल कृपा कलित मंडित कर बानी बिमल बिलास प्रकास तिरमन भूम्बर ॥

आसन स्वेत सरोज दुरित जड़ता अपहारनि ॥ देवी सुरवंदिग्ता आनंदित सुम जन कारनि ॥ हरि गुन गन वरनव रहे ॥ उदैराज जन की कृपा ब्रह्म सुता कीरति जुताहस वहिनी करि कृपा ॥ २ ॥

अंत—सजय उवाच ॥ यह मैं वासुदेव अर्जुन कौ ॥ महत आन माया पत गुन कौ ॥ ७६ ॥ अति अद्भुत सवा दुजु नीकौ ॥ रोम प्रहर्षन भायो जीकौ ॥ व्यास प्रसाद सुन्यो मतु दुन्यौ ॥ जोग परम पद सीजौ जुन्यो ॥ ७७ ॥ जोगा धीस कृस्न को कह्यौ ॥ सो मेरे उर अंतर रह्यौ ॥ वह हरि कौ अति अद्भुत रूप ॥ सुमिरि सुमिरि नृप परम अनूप ॥ ७८ ॥ विस्मय महाराजसो हियो ॥ हरषित रोम पुलकित न कियौ । ताहि सम्हारि सम्हारि महीपति केशव अर्जुन की जु विमल मति ॥ ७९ ॥ रोम हर्ष मेरे तन होही ॥ वारंवार वेई समिरौही ॥ जहा कृस्न प्रभु जोगा धीश ॥ धनुष धरन अर्जुन उर्वीश ॥ ८० ॥ तहा विभूति विजै श्री वसै ॥ यह विचारु निजसो मति लसै ॥ ८१ ॥ इति श्री भगवद्गीता सूपनिषसु ब्रह्म विधाया योग शास्त्रे श्री कृस्नार्जुन सवादे उदैराज दासेन कृतभाषाया चतुर्वर्नकर्म कथन नम् अष्टादशोध्याय = ॥१८ = शुभ ॥ सवत १७७१ शाके १६३६ वर्षे प्रथम आषाढ़ सुदि ४ शनौ लिषितय भाव सिंह मिश्रेण ॥ शुभ भवता लेषक पाठकयो ॥ शुभं ॥

संख्या ४८८ अध्यात्म रामायण टीका, रचयिता—उमादत्त, कागज—आधुनिक, पत्र—७८०, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३९६०, पूर्ण, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवदुलारे वाजपेयी, ग्राम—भीषमपुर, डाकघर—नेमगाँव, जिला—खीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ अध्यात्म रामायण लिष्यते ॥ सूत उवाच ॥ अप्रमेयेति नहीं जिसका प्रमाण हो सके अर्थात् इतना है ऐसा जो मन मे न आ सके उसको अप्रमेय कहते हैं ऐसा जो तीन गुणों से परे जो निर्मल ज्ञान अर्थात् माया रूप मल जिसमें न होवे । ऐसा जो शुद्ध ज्ञान वही है मूर्ति स्वरूप जिसका औ इसी से मन और वाणी इनसे दूर अर्थात् इनके विषय न हो सके ऐसे जो दक्षिणा मूर्ति सदा शिव तिनके अर्थ मेरा नमस्कार है इसका अभिप्राय यह है कि जो त्रिगुग पदार्थ है वही मन और वाणी का गोचर हो सक्ता है सदा शिव तो ब्रह्मरूप होने से मन और वाणी इनके अगोचर है अथवा अप्रमेय प्रमाण करने की अशक्य जो त्रय नाम माया जीव ईश्वर इनको अति क्रमण करने वाला जो निर्मल ज्ञान शुद्ध ब्रह्म वही स्वरूप जिसका ऐसे जो दक्षिणा मूर्ति सदा शिव तिनको नमस्कार है अब सूत जी सौनकादि ऋषियों से कथा कहते है ॥ किसी समय में जोगाभ्यास में तत्पर ऐसे जो नारद जी सो जीवों के कल्याण की इच्छा करिके सब लोकों में विचरते सत्य लोक में आते हुए सत्यलोक भी ब्रह्म लोक के अतरगत है ।

अत—यह भविष्यदर्थयुक्त अर्थात् होनेवाला जो उत्तर राम चरित्र तिस करके युक्त आदि से लेके सपूर्ण अध्यात्म रामायण रूप राम चरित्र कहा तसको सुनके राम प्रसन्न होते हैं ॥ अर्थात सर्व व्यापक जो राम तिसको यह रामायग हम सुनाते हैं ऐसे मन मे सकल्प

करके जो राम की प्रीति के अर्थ जो संपूर्ण रामायण को बांचता उसके ऊपर राम प्रसन्न होते हैं। और श्री महादेव जी ने पार्वती के अर्थ कहा जो परम पुण्य का देनेवाला उत्तम काव्य अध्यात्म रामायण तिसको भक्ति से जो सुनता है सो सैकड़ों जन्मों के पापों से छूट जाता है और जो अध्यात्म रामायण को नित्य पढ़ता है अथवा जो कोई भक्ति करके सुनता है अथवा जो कोई लिखता है तिसके ऊपर राम अति प्रसन्न होकर सदा समीप वास करते हुए लक्ष्मी का विस्तार करते हैं अर्थात उस पुरुष का कभी लक्ष्मी परित्याग नहीं करती। ब्रह्मादि देवों करके अस्तुति किया गया और मनुष्यों के मन को हरन वाला ऐसा जो अति उत्तम आदि काव्य रामायण तिसका अर्द्ध युक्त जो पुरुष नित्य पढ़ता है अथवा सुनता है सो शुद्ध चित्त होके विष्णु के लोक को प्राप्त होता है ॥ इति श्री मदध्यात्मे रामायण उमा महेश्वर संवादे उत्तर कांडे श्री मद् रुक्मिणी गर्भज तुप तुलाराम सूनु त्रिपाठी उमादत्त कृता भाषा टीकायां नवमा सर्गः समाप्तः ॥ श्री राम जी की जै ॥

विषय—अध्यात्म रामायण की कथा का वर्णन।

संख्या ४-६ ए. बारहमासा, रचयिता—बहाव, कागज—साधारण पत्र—११, आकार—९¾ × ६½ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य लिपि—फारसी, लिपिकाल—१८४८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० बाबूराम बिथरैया, ग्राम—सिरसागंज, जिला—मैनपुरी (यू० पी०)।

आदि—या फत्ताहुल हकीकी ॥ बारह मासा हजरत बहाव—बिसमिल्ला उल रह माने रहीम। सखी विप्रुरन कहानी मैं सुनाऊँ। कि बारह मास पिय बिन क्यों गँवाऊँ सुनत ही आँसु भर आवे नयन में। जिन्हें बेदम बिरह की होय तन में ॥ माह असाढ़ असाढ़ अब साज के दल सुलझी मेरा। कहे घनश्याम से को हाल मेरा ॥ नक्कारे मेघ के बाजें गगन में। मदन की चोप लागी मुझ बदन में ॥ उठी है फौज कारी सी पसारी। पचारी का नहीं घर में मुरारी ॥ चहुँ दिशि श्याम बादर घेर आए। जो होते कंत घर लगते सुहाए ॥ गगन में मेघ क्यों घोड़े मिलाए। अभी मन-मस्त ने हाथी बढ़ाए ॥ × × × चाहा मैं दिल में उनके पास जाऊँ। मली आँखों से आँखें मैं लगाऊँ ॥ गिने नाहीं कि दस था बीस कैस। सजन से चंद से तार से सब थे ॥ गली उनकी मैं पैरों से बुहारूं। सली पलकों न उनके पाँव झाडूं ॥ नमीबों में मेरे इतना कहाँ था। कि पाऊँ उस गली प्यारा जहाँ था ॥ यकायक आँख मेरी खुल गई री। न देखा कुछ बहुत हैरान हुई री ॥ सखीरी आँख मैंने फिर मलाई। उठी देखा सखी कोई न कोई ॥ नसीब अपना सखी पाया मैं हूँडा। कि इतनों पर मुझे साईं न ढूँढा ॥ भरोसा है मुझे साईं का अपन। दिन के तार से देखा मैं सपने ॥ वही साईं मुझे पिउ से मिलाया। वही साईं ने पापों से बचाया ॥ मेरी बंधन होगा पीउ मेरा। लगा देगा मन्नीरी पार बेड़ा ॥ कहे बहाव सखि मारि बिरहन। का आगे पिउ के बिछुरी न जीहन ॥ तमाम शुद। × × × बंदा मथुरा प्रसाद व तारीख दिसम्बर माह दिसम्बर सन् १८७८ ईस्वी। दुनिया हरकाम— याफ्त दर मुकाम जीदा ॥

विषय—किसी विरहाँगना की बारह मास की विरह वेदना का वर्णन। स्वप्न दर्शन आदि वर्णन॥

संख्या ४८६ बी. बहाव का बारहमासा, रचयिता—बहाव, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६=१८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवकंठ तिवारी, ग्राम—वरगदिया, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि-अंत—४८९ ए के समान।

पुष्पिका.—इति बहाव का बारहमासा समप्तः॥ लिषत शिवदयाल कायथ महीना सावन सुदी १० मी वार सवत् १९१६ वि०

विषय—एक विरहिनि ने १२ महीने अपने पति के वियोग में व्यतीत किये उसी की विरहव्यथा इसमें वर्णित है।

संख्या ४८६ सी बहाव का बारहमासा, रचयिता—बहाव, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२७, प्राप्तिस्थान—लाला दिलसुखराय, ग्राम—महोली, जिला—सीतापुर (अवध)।

४८९ ए के समान।

पुष्पिका—इति श्री बहाव का बारहमासा समाप्तम् लिखा मन्नूलाल ने संवत १९२७ वि० महीना सावन सुदी १० वार सनीवार॥ श्री राम श्री राम श्री राम॥

संख्या ४९०. वल्लभरसिक वाहमी, रचयिता—वल्लभ रसिक, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६=१८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—राधा वल्लभ, ग्राम—सैंगवाद, डाकघर—राजेपुर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—पानन सो आनन रचे हैं नैन काननि सों रूप रस पानन सो नेक न अघात है॥ प्रानन सों प्रान एक मैं कह्यो न आन रहे मन की सिंहासन पंच सर सरसात हैं॥ वल्लभ रसिक रीझ आनन मिलानन में तानन में हानन में चैन दरसात हैं॥ भृकुटी कमानन कटाक्ष नैन बानन चढे सुनेह साननि सान वेध जात है॥ १॥ चली उठि पलिका ते अलिका हूं भाति भली कटकि लटकि पिय पर अलसान की॥ लाई लाई वदन मदन उपजाई लेत ज्याइ लेति जियहि सुरनि सुर वानि की॥ वल्लभ रसिक को विकाहीं की वानपरी वार परी धारी तेहि सुर मुसकान की॥ २॥

अंत—तन थिर मान धरें मन थिर मान तान जूर कला गी सों थिरमान कों॥ कुरती इजार लेत कुल तीनों कुल तीके अधिक राती सौं लपि भरत सुप मानकों वल्लभ रसिक वलि मामों वलि मान करौं वल माहि लपत भजों वलि मान मान कों॥ २१॥ पागन के पेंच मैं भाग सपेचन मैं लागि कटि पेंचन मैं वेलि कटाव लह्यो॥ दुत्तही इंजार दुतही

धार कुरती पै बधि रूप्या दाम बड भई रसिक भक्ति थयो है ॥ देखि रूप्य सम रीत्य गिरमा पै कुरती क रंग रस सचम तरम फूकि गया है ॥ आगे आनि देपि होठ बाजे आनि बैठे सखी बार्गो बनि रहे किसौ बाग बनि रह्यो है ॥ इति बहुमरसिक बाइमी संपूर्ण समाप्त संवत १८९९ वि० चैत बदी तेरस ॥

विषय—२१ कवित्त सवैयों में शृंगार रस वर्णन ॥

संख्या ४६१ नरसी महता, रचयिता—नरसी, कागज—देसी, पत्र—१२, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७१, प्राप्तिस्थान—पं० राम स्वरूप शुक्ल सुमानपुर, वर्तमान ग्राम—सरैया, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री राधा रमन जी सहाय ॥ अथ नरसी महता लिख्यते ॥ गनपति को आग्या पाइ हरि भक्तन को जस गाऊं व उत्तम कुल गुजराती। वे जूनागढ़ के बासी। वे हरि ही हरि को धावें। जल सौं अस्नान करावैं वे पत्र बलि ही चढ़ावैं। चावर चंदन चर चावैं। निहचै करि ध्यान लगावैं व ठाढ़े गाल बजावैं। जब रीझे है शिव राजा। कहीं कहा विहारो काजा। अब बोले महादेव जी स्वामी। हम तुम्हरे मन की जामी। तुमसौं मांगो सो दिहिंगे। तुमसौं नहिं नाहिं करेंगे। हमें और कछु ना चाहिये श्री राधा कृष्ण दर्से मे। तुम बड मागे है भारी। भनि नरसी बुद्धि विहारी ॥ राग पिंगला समापिता ॥ जाय पहुँचे गऊ लोक वृन्दा बन हरि जूले रहस रचाये हैं। गोपी रूप धर्यो गोपेस्वर नरसी सखा बनाए हैं। बाजत ताल मृदंग मधुर मुरली धुनि झांझरिया झर लाये हैं। बह पिय प्यारी निरत करत नित निरखि निरखि सुख पाये हैं। मन मोहन कृपा करि बोले शिवजी भक्त कहाँ ते लाये हैं ॥ ये सेवक हमरा कहिये है तुम शरणागत आये हैं। मांगि मांगि नरसी सांवलिया जो तेरे मन भाये हैं। हमें और कछु ना चाहिये त्रिबकर दरप दिखाये हैं ॥ मन मोहन कृपा करि दीयी राग केदुरो गाये हैं ॥

अंत—राग पर्जे। नदमी सिरही समधी की सा की सींपत आई है ॥ टेक ॥ काहे की हम बहिन तुम्हारी काहे का तू भाई। एक को मासू सारी पहिराई एक न साल उढाई ॥ १ ॥ हमरी बेर तू मूछि गये तुम तेरी मति बौराई ॥ कहाँ गयो वह नरसी मेहता हमई बेर बताई ॥ २ ॥ आऊगी साऊंगी उन सौं मोई राम दुहाई है कोस भरे लौं जाय न दई ता बाबा की जाई है ॥ ३ ॥ राग सोरठि ॥ तमक तू लौं कहाँ रहिरे नरसी मेहता दौरि दौरि तो कू हरनि आऊं एक बात सुनि जामाया बहुत सुनाई है तुमने हमको कहें कहा ॥ तमकत ॥ १ ॥ तुमसौं तो मैं कछु न कहूंगी कहूंगी सांवल साह सेठ जाय जांगी हूं की हम हूं दे के तू घर जा ॥ तमक ॥ २ ॥ नरसी मेहता ताल बजाई होय रूपी ए बरषा किन कथा पत्नीन के बरषे एक ही लियो छै उठाय ॥ तमक ॥ ३ ॥ भक्तन के प्रभु कारन येही आप आये हैं हरि राय भक्त वर्णत सुनि प्रम पियारे भले ही लियो छै निर माय ॥ तमक तोहू ॥ ४ ॥ जो नरसी कौ गाये बसि बढ़ैं पहुरि भक्ति आवै। जो नरसी को सुनि है ताकर भारि जन की सुनि है ताकी भक्ति दिन दिन बाढ़े ताके पाप रहै नहिं ठारे

भक्तन में प्रेम पियारे सव मिलि सवते हैं न्यारे। ताकी महिमा अगम अनंता चरनन की सरन वसंता ।। इति श्री नरसी मेहता सम्पूर्णम् शुभ लिपतं व्रजलाल स० १८७३ वि०

विषय—नरसी मेहता का शिवजी की उपासना, और राधाकृष्ण के दर्शन का शिव जी वरदान पाना। श्री कृष्ण जी का मेहता की पुत्री के विवाह के समय सहायता पहुँचाना ॥

संख्या ४९२ ए. कार्तिक महात्म, रचयिता—वसंतराम (कोयला, अलीगढ़), कागज—देशी, पत्र—१४०, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२५ = १८६८ ई०, लिपिकाल—स० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवदुलारे, ग्राम—लखनपुर, डाकघर—मगरैर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कार्तिक महात्म लिप्यते ॥ दो० ॥ गुरु पद सीस नवाय के वंदौ चरन गनेस चतुरानन सिर नाई के सुमिरौ चरन महेस ॥ सव देवतनि की करि विनय वदौ पद गोविंद। सव देवन के देव हैं पूरन परमानद ॥ जिनके चरन सरोज से वही सुरसरी धार। सो मस्तक धारन करी शंभू जटा पसार ॥ जाके चरन प्रताप ते मूक होय वाचाल। पगुल गिरि लघन करैं जासु कृपा ततकाल ॥ जासु कृपा करि अध को सव दरसै जग माहिं। जासु कृपा करि रंक सिर छत्र फिरै छिन माहि ॥

अत—सवते अधिक कृश्न को प्यारो। कलि के फल मप नाश्न हारौ ॥ पुत्र पौत्र धनदायक जानौ कामधेनु समदाता मानौ ॥ कार्तिक अस्नान करै चितलाई। कहा करै वह तीरथ जाई ॥ सुनै सुनावै यह कथा जो जन थिर चित होइ। फल प्राग वद्राकाश्रमहि तिनकौ प्रापति जोइ ॥ इति श्रीपद्मपुराणे कार्तिक महात्मे कार्तिकेय ईश्वर सवादे वसंत कृत भाषाया शालिग्राम शिला महात्मे नाम त्रिंशोध्याय ॥ दो० ॥ जिन वसंत भाषा विषे कीनी कथा प्रकास जिले अलीगढ़ कोल में ताको रहै निवास ॥ पढ़ो न पुस्तक में कछू सुनो न वेद पुराण हरि गुरु चरन प्रताप ते कीनो कथा वषान॥ पढ़ै पढ़ावै यह कथा जो जन संत सुजान ॥ करौ निवारन चूक को दास आपनो जान ॥ एक सहस्र प्रथमहि गिनौ नौ सै अधिक प्रमान विंश पंच ताते अधिक लीजै सवत जान ॥ शुक्ल पक्ष वैसाख में पूर्नो शुभ तिथि जानि। करी समापत यह कथा सुमिरि चरन भगवान ॥ मिती प्रथम वैसाख वदी ९ संवत १९२६ वि० लिपत मिश्र पूरन चंद पठनार्थे श्रीवसत राय जी वासी कोल ॥ जै राम जी की ॥

विषय—प्रथम ईश्वर वदना आदि के कार्तिक महात्म वर्णन ॥

संख्या ४९२ बी. कार्तिक महात्म्य भाषा, रचयिता—वसतराय (कोयल, अलीगढ़), कागज—देशी, पत्र—१४०, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२५ = १८६८, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० वलदेव प्रसाद तिवारी, ग्राम—अंता, डाकघर—ककवन, जिला—कानपुर।

संख्या ४९२ सी. वसंत राज शकुनावली, रचयिता—वसतराज, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्) ६६,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०५ = १८४८ ई०, प्राप्ति स्थान—पं० रामभरोसे मिश्र, ग्राम—बर्तोली डाकघर—बेनी जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शकुन बसंत राज कृत लिप्यते ॥ दो० ॥ पापस महामी सिवा चरित गिरारिग छतु। पन घरि पहर दिवस में आवहिं मवे दुग ॥ दो० ॥ शुभ अरु अशुभ समास में निर्णय सगुन प्रमान। निश्चय करिके जानिये संवत राज परि मान॥ पू० ई० ऊ० वा० मे० द० म० दिग सप्त रा० रा० र० चं० मं० बु० गु० शु० केतु ॥

अंत—भृगु पर तिथि पति जो पुनि दर्सी। पुत्र विवाह अर्थ बहु लेत ॥ भृगुपर भू सुत आयो हाई। तौ मकरा सिद्धि हैं हतु कोई॥ मार्गव मह बिदु सुत को पंत। मुद्रा गम की मया अनंद ॥ भृगु मह वाचस्पति का छतु। हानि मतेद्रादि होइ निमैपि ॥ हानि उपद्रव कल्ह दुख दधिर आगि दुख चार। राहु के घर में अशुभ मय वचन पंडवन केर ॥ चौ० ॥ राहु होइ तह नाहीं नीका। जामीं अनि पीके ते फीका ॥ दो० ॥ या अमगुन के हाल ही बाग करू जा कोई। निश्चै करिके जानिये आठै तें बहु होई ॥ इति सकुन परीक्षा वसंत राज कृत संपूर्ण समाप्ता लिख्यते लिखपर पंडित सीताराम संवत् १९०५ वि० ॥

विषय—सकुन परीक्षा ॥

संख्या ४६० डी शकुनविचार, रचयिता—धर्मराज, कागज—देसी, पत्र—८, आकार—८ × ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० विष्णु मराठे, ग्राम—बेमामऊ, डाकघर—अजगैन, जिला—उन्नाव।

संख्या ४६१ विज्ञान प्रकाश, रचयिता—वासुदेव (कदिहारी, कानपुर), कागज—देसी, पत्र—८०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०८, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७०, लिपिकाल—सं० १९५७ = १९००, प्राप्तिस्थान—पं० रामभद्र पुजारी, ग्राम—कलावपा, डाकघर—मउरावाँ, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दुमादु ॥ वासुदेव मई मगया मम मूषी नमेदत्ता मुमुक्षु का हिताय प किंचित मात्र प्रयपते ॥ सुपद ॥ प्रथम पूज गौरीदास ॥ ब्रह्मा पूर्व विदु पूर्व आर पूज चंद्रभास ॥ १ ॥ सक्ति पूर्व ब्रह्म पूज और पूर्व मंदवान ॥ २ ॥ इंद्र पूज क्षेत्र पूर्व और पूर्व दिसम्पाल ॥ ३ ॥ गंगा पूज सिंधु पूर्व आर पूर्व ब्रह्म काल ॥ ४ ॥ वासुदेव स्वामी मातु पितु पूर्व राम पूर्व नयपाल ॥ ५ ॥

अंत—रितु आई बसंत विधु मंदस्मम ॥ पतिहा के काम मनि सगल काल ॥ १ ॥ फूल फूले सकल तरु मजरी कायम कुहू कुहू पुनि कारी दयाम बिना जबु मीत आम ॥ २ ॥ मास मोर पाई अब मचार्व। भ्रमर भीर गुंजत करते रमुना फूले लाल लाल ॥ ३ ॥ फूला गुलाब चमली फूली मंद मंद बायु मनि धाई कृष्ण बिना मम दुरत भाल ॥ ४ ॥ वासुदेव स्वामी विकल अति अपा कत न पों कहीं पर दिन आपा है कवार अनुपर को काल ॥ ५ ॥ रितु आई बसन लिन रद म्याम ॥ रंग राग ॥ चतुरन रस का ना सुमाई ॥ गर्ग

सब संतन के आगे भला गाऊ सब सतन के आगे अपने गुरु को सीस नाऊं ॥ १ ॥ धिनकट धिनकट धिकट धिकट धा धा ताधिनक ताधिनक धिन सुनाऊ ॥ २ ॥ दिर्दा ताना दिर्दा ताना तादि अम दीं दीम दीम तादीम तादीम ताल सुनाऊ ॥ ३ ॥ छम छम छम छम छ ना ना ना ना ना ना ना कृष्ण नाच लखि दृग रिझाऊ ॥ ४ ॥ वासुदेव स्वामी श्याम वंसिया वजावै गावै देखि ललित छवि हिय वसाऊ । ५ । चतुरंग रस को गा सुनाऊं ॥ वसंत पहिले अक सप्त धरि लीजे उपर नयन तासु करि दीजै रुद्र लिखौं तिहि ऊपर जाई तेहि पर चद्र वच वहु भाई यहि विधि अंक सीस सो लीजै सग्या तिन अंको की कीजै ॥ गणना तिन अंकों की होई सवत शुभ जानौं सव कोई ॥ इति श्री मान्य महाराज परम हंस परिव्रजका चार्य श्री स्वामी वासुदेव आश्रम कृत विज्ञान प्रकाश सपूर्ण समाप्त. ॥

विषय—श्री कृष्ण राधिका के पद ब्रह्म के पद आदि वर्णन।

संख्या ४६४ आतम प्रवोध, रचयिता—विकटेश स्वामी, कागज—साधारण, पत्र—२०, आकार—६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य। लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रघुराज सिंह, ग्राम—मादर भामोन, डाकघर—जिठवारा, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशाय्नम. आतम प्रवोध विस्वसारो। उधार लिख्यते श्लोक अध्याय पाप वाधा आप. निस पचते सिशानाम वोधाग्निध्यर्थ तत्त्व इय कत्त्त' क त्र यात गिग उवाच हे स्यामी जी आप कहाँ के परमातम ॥ निह प्रपच है ॥ अरु वेहु प्रपच रूप है। सो मोकौ याकौ वड़ो सदेह होत है ॥ या ससार में अनेक शास्त्र है ॥ ते अनेक मत हैं सो एसौ जान कै ॥ मोकौं भ्रम होतु है ॥ किमि ॥ कै परमातमा तौ निराकार हो ॥ सो कैसे एकते अनेक भयो और अनेक तै एक कैसो भयौ। या कौ निराधार मोसौं ॥ परम कपाल होइ कहियै ॥ आप ईश्वर ॥ सरवग्य है ॥ आपके अनुग्रह तै ॥ कोउ सदेह नहीं रहैगो ॥ तासैं हे देव ॥ अव मोसौं पर्म दयाल होहिकरि कहौ ॥

अन—अध्यात्म आदि भूतिक आदि दैविक सो जो आत्मा कौ स्वरूप है ॥ अपने सरूप मैं मिलि कै आनद करतु रहतु है। अरु अपुन कछु न्यारी वस्तु नाही है सो ऐसे कर जानौ सो आत्मा आनंद रूप कहावै ॥ अरु ऐसो आत्मा विवेक करै तै जो माया प्रपंच मरीच का ऐसो दिपात है ॥ सो ऐसो विचार करिकै सर्व-मिथ्या कर जानै लै अद्वैत ज्ञान उपजै सो ज्ञान उपजै तै अज्ञान जाय ॥ अज्ञान के गये तें अविवेक जाय। अहंकार के गये तें दोष जाय ॥ दोष गये तैं राग जाय॥ राग गये तें कर्म छूटै ॥ कर्म छूटै ते देह अभिमान जाय ॥ देह अभिमान छूटै तै ज्ञान उपजै। ज्ञान तै अज्ञान छूटै सो अज्ञान कल्पित कर द्वैत भाव रहतु है सो अव निर्मल ज्ञान भयो तव आपुको ईश्वर को दोई एककर जानत है ॥ × × × इति श्रीपिपु श्रदेर्य चीकरते गौरी ईश्वर संवादे रचीमी विकटेश विरचि द्वितियौ वद्ग ॥२॥

विषय—पृ० १ से पृ०—१६ तक—आत्मा की सत्ता का रूप, माया अध्यात्म क्रिया, इन्द्रिया। अन्तष्करण चतुष्टया पच डाला (पंची करण) पंच काषु। षट् प्रकार के लक्षण। षट् उर्मी ते लक्षण। चौवीस तत्त्व। चौवीस तत्वों की उत्पत्ति। विराट के नाम। पथम अध्याय।

(२) पृ० १६ से पृ० ४० तक—पिंड ब्रह्मांड उपज । षट् समाधि लक्षण । पंच महा भूत का कारण । तीन शरीर का लक्षण सूक्ष्म शरीर । कारण शरीर । पंचतत्व के गुण । पंच महा भूत को रूप । तीनों गुणों का वर्तमान । पंच भूत से चौदह लोकों की उत्पत्ति । पिंड अंड की उपज का विचार । गमागाम वर्णन । षट् चक्र के नाम देवता आदि । पंच कोष का लक्षण । आत्मा का स्वरूप । ज्ञान सिद्धि का उपाय । द्वितीयो अध्याय ॥

संख्या ४९५ पुलक सुधा, रचयिता—विद्यारण्य स्वामी, कागज—साधारण, पत्र—९९, आकार—८½ X ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९८ = १८४१ ई०, लिपिकाल—सं० १८९८ = १८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नूलाल पुस्तकालय, सुरासपुर गया जिला—गया ।

आदि—अथ स्याम सुधा ॥ कवित्त ॥ स्याम चरित है रंग रंगीलो ॥ जामें पूरन झलक रहा है पुरुष पुरातन छैल छबीलो ॥ १ ॥ राम चरित याही संपूरन होत दिवस दिन वसत रंगीलो ॥ जैसे भारत से मुक्ति को रस सुकृत प्रकासत गहन गंभीलो ॥ २ ॥

अंत—बसंत—मंगल नाम रूप जग मंगल गुन गन मंगल धाम । मंगल चरित भावुकन मंगल जग हित कारक पूरन काम ॥ मंगल श्री वसुदेव देवकी नन्द जसोदा गोकुल ग्राम । मंगल मथुरा मंगल हू के मंगल सुन्दर स्यामा स्याम ॥ २०१ ॥ होरी—आजु दिन बजत बधाई, श्री राम जनम की । हादिन कृष्ण सुधा पूरन भई, संतन की प्रभुताई । × ×

इति विद्यारण्य तीर्थकृता पुलक सुधा ॥ संवत् १८९८ ॥

विषय—१) पृ० १ से पृ० १०८ तक—मंगलाचरण, जन्मोत्सव वर्णन, राधा का जन्मोत्सव, राधा मंगल नाम, पूतना चरित्र, शकट भंजन, तृणावर्त चरित्र, विश्वरूप दर्शन, नाम करण दामोदर चरित्र, वत्सासुर लीला, बक वध, अघासुर वध, धेनुक वध, कालिया-दमन, दावानल, प्रलंब चरित्र चीर हरण दीक्षित नारी चरित्र, गोवर्धन धारण, रस क्रीड़ा, वृषभासुर वध, व्योम चरित्र, रजक चरित्र, धनुर्भंग, गजवध मुष्टिक वध, कंस वध, स्याम उत्थापन प्रकार, ध्यान भेद, पूजा प्रकार, मीर मुकुटादि वर्णन, मुरली वर्णन, गो चारण, सुख शोभा गाय चरा कर लौटते समय, ऋतुओं का वर्णन, गंगा सप्तमी, नृसिंह जन्म बसंत का ध्यान ग्रीष्मादि का ध्यान । रथ-यात्रा, हिंडोला । ऋषि पंचमी, वामन का अवतार । बरषा ध्यान

(२) पृ० १०९ से पृ० तक—ऋतुओं का कुछ और वर्णन, नवधा भक्ति माधव तथा उद्धव संवाद, गोपिका प्रेम वर्णन साधुओं के लक्षणादि वर्णन के साथ कुछ भक्ति मय पद, ऋतुराज के संबंध से भक्ति के पद, जीवन की असारता तथा भक्ति महत्व । दास की इत्यादि के ध्यान का वर्णन ।

ग्रंथ निर्माण काल :—संवत आठ[८] अंक[१] अष्टदश[१८] ॥ १८९८ ॥ बार परी शुभ आई । रामस्याम में भेद नहीं कछु भाषि भक्ति गुनन सिखाई ॥

ग्रंथ निर्माण कारण :—श्री मद् भक्ति राज के प्यारे ज्ञान बुद्धि अति पाई । बाबू राम प्रसन्न सिंह के यह रुचि हेतु बनाई ॥

संख्या ४९६ विक्रम सतसई, रचयिता—महाराजा विक्रमाजीत विजयबहादुर (चर्खारी), कागज—साधारण, पत्र—१२०, आकार—२२ X १६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—देव नागरी।

आदि—श्री गनेसजू श्री सर सुती जू श्री परम गुरभे नम' दोहा—तो पद पकज लाल कवि वंदत वारहिं वार। लंबोदर कीजे कृपा दीजे बुद्धि उदार ॥ १ ॥ बुद्धि सदन करिवर वदन दीजे बुधि वर सोइ ॥ जाते विक्रम सत सई ठीकों नीकों होइ ॥ २ ॥ वदौ स्यामा स्याम के सुदर पद अर विंद। मुकत मधुर मधु लोभ जहँ मुनि मन भुमत मलिंद ॥ ३ ॥ मन मुख तिनके होत ही सुख समूह सर साद। तपन ताप तम के हरन राधा प्रिय के पाद ॥ ४ ॥ अथ राज वंस वरनन ॥ गहिर वार सुभ वस यह हस वंस अवतंस ॥ जामे भूपति अवतरे महावीर प्रभु अस ॥ ५ ॥ उदित भये तेहिं वंस मे उदयाजित महि पाल। ति जाहिर जग में करी जग जीत करवाल ॥ ६ ॥ सुत उदया जिन के भये प्रेम चद कुल चद। कृति चांदनी सों कियों तिंन सब जग सानंद ॥ ७ ॥

अंत—कठिन भूमि पांयन चलत सिस कन कोमल वाल मूल भटक मारग यहै गहैं लाल की चाल ॥ ७२८ दोहा—लखी लाल कर नारगी सुवर नंद मुसकाय। मुख मिलाय रजनी रही अगुरी हिये लगाइ ॥ ७२९ ॥ इति नायक वर्णन अथ विनय ॥ दोहा ॥ जब जान्यों या जीव कौं कहुं नहिं विश्राम सुन माके जग चार के तातें ताके राम ॥ ७३० ॥ जो कवि मति मैं आदरत साहित रीति विचार सो निहार लप करि करयों निज के अनुसार ॥ ७३१ ॥ गनत सात मै मैं कहे होर परम प्रवीन। ताको नाम प्रसिद्ध जग स०...

विषय—नायिका भेद तथा ऋतुओं आदि का वर्णन।

संख्या ४९७. उड्डीश, रचयिता—वीरभद्र, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६½ X ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, रूप—नवीन, गद्य। लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० श्यामचरण ज्योतिषी द्वारा पं० आदित्य प्रसाद पांडेय, ग्राम—करौंदिया, डाकघर—हलिया, जिला—मिर्जापुर।

आदि—। ४ ॥ ॐ नमः ॥ एहि मत्र करिकैं नीके प्रकार ते जप करैं तौ सर्व पाप दूरि होइ खेचर तुल्य होइ ॥ ५ ॥ ॐ हि ह्रः ह्री नम एहि मत्र का भक्ति पूर्वक जपै तौ बहु काल करिकैं खेचर होइ ॥ ६ ॥ ॐ छकाली कर्ष यामि छं छ फट् एहि मंत्र एक पद स्थित होइ के जपै जल विषैं एक सौ आठ वार अजा के मास कै वलि देइ रक्त पुष्प समेत तो छ. महीना मा मनुष्य सिद्धि का प्राप्त होइ जो जो वस्तु का इच्छा कर्यना करै सोइ प्राप्त होइ अस स्से ॥ ७ ॥

अत—कुंठ. एहि मत्र ते सुकर का हाड तेही का कीलक हजार मत्र ते मत्रित करिकैं जेहि के ग्रीह मा लिखै तेहि का समस्त धन चोरी जाइ उचारि डारै फिरि मिलै ॥ ह्रो ह्री आकर्षय कु ठंठ' एहि मंत्र ते सा कोट शी होर ग्रीछ का काष्ट का कालक दश अगुल एक हजार मंत्र ते मंत्रित करिकैं जेहि के गृह विषै तेहि का सर्व कार्य्य सिद्धि होइ ॥ १८ ॥ हु फट् मंत्र ज ठठ ह. एहि मत्र ते भेड़ा के हाड़ का कीलक हजार मंत्र ते मत्रित करिकै

बहि के मह मग्प सिर्मै तिहि का संपूर्ण बस्तु अनेमह आव ॥ ११ ॥ इति उड्डीशे पिरभद्रे तृतीय पटले स परिकरं समाप्त मगमत् ।

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—प्रथम पटल । वशीकरणादिक मंत्र संग्रह । (२) पृ० ५ से पृ० ७ तक—द्वितीय पटल । वशीकरण, मारणादि संबंधी मंत्र तथा विधि, (३) पृ० ७ से पृ० १० तक—तृतीय पटल । मंत्र तथा उनकी विधियाँ ।

संख्या ९६८ ए. रुक्मिणी मंगल, रचयिता—विष्णुदास, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—६ × ५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६=१८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० गनपत लाल दूबे ग्राम—गढ़वापुर, डाकघर—मिसिरिख, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भाषा विष्णुदास कृत रुक्मिणी मंगल लिष्यते ॥ श्री राग दोहा ॥ रिध सिध सुष सकल निधि भव निधि के गुन ज्ञान ॥ गन मन सत पत पाइयत गणराज को करि ध्यान ॥ जाके चरण प्रताप ते दुख सुख परै नाहिं पीठ । ता नम सुख सुख करण की सरस अक्षर दीठ ॥ पद ॥ प्रथम ही गुरु के चरण बंधत गौरी पुत्र मनाइये । आदि है विष्णु अगाध है ब्रह्मा संकर ध्यान लगाइये ॥ गुरु पूजकर वर मागत बुध की ज्ञान दिवाइये ॥ ताते अति सुख होय अंबे आनंद मंगल गाइये ॥ गोरा लक्ष्मी सुरदा सारस्वति तिनके सीस नवाइये । चंद्र सूर्य धाऊ गंगा जमुना तिनको ते अति सुख पाइये ॥ संत महंत की पगरज से मस्तक तिलक चढ़ाइये । विष्णुदास प्रभु प्रिया प्रीतम को रुकमणी मंगल बनाइये ॥ राग गौरी । गुन गाऊं गोपाल के चरण कमल चितलाय ॥ मन इच्छा पूरण करो जो हरि होय सहाइ । भीषम नृप की लाडली कृष्ण ब्रह्म अवतार जिनकी अस्तुति कहत हौं सुन लीजो नर नार ॥ पद ॥ गुण मत मारी नारी सी भौराई भाषा कथाय बनाई । रोम राम रसना जो पाऊं महिमा बर्ने नहि जाई ॥ सुर नर मुनि जन ध्यान धरत हैं गति किन्हूं नहि पाई लीला अपरंपार प्रभू की का करि सकै बड़ाई बिन समान गुण गाऊं स्याम के हृदा करी आतोराई । जो कोई भरम परे है रावरे की रुचि जग में छाई । विष्णुदास मन जीवन उनके प्रभु जी स प्रीति लगाई ॥

अंत—रागनी पूर्वी दोहा ॥ विदा होय घनस्याम जू तिलक करे कुम मारि । तात मात रुकमन मिली अँसियन आंसू डारि ॥ मोहन रुकमिन ल चले पहुँचे द्वारका जाय । माणिक चौक पुरुष के किरी आरती माय ॥ अरज बधाई बाज माहिं बसुदेव के दरबार । मन मोहन प्रभु ब्याह कर आपे पुरी द्वारका राजै अति आनंद भयो है नगर में घर घर मंगल गाई ॥ अंग प तन में भूषण पहिर सब मिलि करत समाज । बाजै बाजत कानन सुनियत गाँवत घन ज्यूं बाज ॥ नर नारिन मिलि देत बधाई । सुख उपजे दुख भाज । न्याचत गावत मृदंग बाज रंग बसावत आज । विष्णुदास प्रभु की ऊपर कोटिक मन्मथ लाज । रागिनी धनासिरी दोहा ॥ पूजत देवी अंबिका पूजन और गनेश चंद्र सूर्य दोऊ पूज के पूजन करत महेस ॥ कुल की सति मनु आइके बहुत करी जस सेव । मोहन रुकिमन साथ के और पूजी कुल देव ॥ पद ॥ मोहन महल करत बिलास । कनक मंदिर में केलि करत हैं और कोउ नहिं पास । रुकमिन चरन सिराव पिय के पूजी मन की आस ॥ जो चाहा सो अंब पायो

हरि पत देवकी साथ । तुम विन और न कोऊ मेरो धरणि पताल अकाग ॥ निसदिन सुमिरन करत तिहारो सव पूरन परकाग । घट घट व्यापक अतर जामी त्रिभुवन स्वामी सव सुखदास । विष्णुदास रुकमन अपनाई । जनम जनम की दाग ॥ इति श्री रुकमनी मगल गोसाईं विष्णुदास कृत समाप्तं सन् १९१६ वि लिखा वल्देव ने अपने पटनार्थ ॥

विषय·--श्री कृष्ण और रुक्मिणी जी का व्याह ।

सख्या ४६८ बी. रुक्मिणीमगल, रचयिता—विष्णुदास, कागज---देसी, पत्र—२०, आकार---१२×८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)---४२, परिमाण (अनुष्टुप्)---५६०, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल—स० १६४०, प्राप्तिस्थान—प० रामनाथ शुक्ल, ग्राम—सेदवा, डाकघर—मिहोली, जिला—सीतापुर (अवध) ।

संख्या ४६६. सनेह लीला, रचयिता—विष्णुदास, कागज—साधारण, पत्र—४, आकार—९½ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६४ = १८०७ ई०, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा वनारस ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ एक समैं ब्रज वास की सुरति मई हरिण निज जन अपनो जनि के उधव लिये वुलाय १ श्री कृश्न वचन असें कंई ऊधव तुम सुनि लेऊ नंद जसोदा आदि दे ब्रजहि जाय सुप देऊ २ ब्रज वासी वल्लभ सदा मेर जीवन प्रान तिनकुं नाहिन विसरू मोहि नंद राम की आसा ३ मै उनसे अस कह्यो आवगे रिपु जीति अब तोरे कसे वने पिता मात सुप्रीति ४ उधो वे ब्रज जोपिता उनके मेरो ध्यान तिनहि जाय उपदेश घो पूर्न सु ब्रह्म जान ५ वागे अपनो अगको कीट मुकुट पहराण सुरत कुमल माला दई अपनो वित वपाग ६ अरु अपनो रथ साजि के सूत स्वारथी दीन उधव चले प्रणाम करि उधव चले प्रणाम करि रथ आपे इन कीन ७

अत—तव उधो आये यहाँ श्री कृश्न चंद के धाम, पाय लागि वदन कीयो । वोलत ले ले नाम १०९ ग्वाल वाल सव गोपिका. ब्रज के जीव अनन्य तुमही पाय लागन कह्यो सुनो देव ब्रह्मन्य ११० नद जसोदा हेत की कहींये कहा वनाय. धै जाने कै तुम भलैः मो पै कहो न जाय १११ वे चित ते टारत न्ही स्याम राम की जोर मधि नामक मुरली ग्रहैः मूरलि मधुर किसोर ११२ अरु गोपिन के प्रेम की महिमा कछु अनत. मैं पूछी पट मास लो तउन भायो ग्रंत ११३ देह ग्रह सव छामि कीं' करत रुप को ध्यान. वनको भजन विचारिये तो सव फीको ग्यान १४ संत भक्ति भूतल विषैः वै सव ब्रज की नारि चरण शरण रही सदाः मिथ्या जोग विचारिः ११५ उनके गुण नित्त गइये करि करि उत्तम प्रीतिः मै नाहिन देपी कहुं ब्रज वासन की रीति ११६ तव हरि उधो सों कह्यो हूं जानत सव ग्रंग हौ कवहु छाड्यो न्हीः वासिन्ह को संग ११७ ब्रज तजि अनत न जाय हौ मेर तो या टेक. भूतल भार उतारि हो. धरि हो रुप अनक ११८ या लीला ब्रज वास की गोपी कृश्न सनैह जन मोहन जे गावही ते पावत नर देह १२० जो गाव सीप सुनै . भाव भक्ति करे हेतः रसिक राम पूण कृपा मन वाछित फल देत १२१ इनेह लिला सपूर्णम् ॥ संमत १८६४ पोस सुदी ५ गुरे ॥ लिपितं वेणी दतेन ग्राम वसी मध्ये लिखिः ।

विषय—श्री कृष्ण का उद्धव को नंद यशोदा तथा गोपियों को ज्ञानोपदेश देने के लिये ब्रज भेजना। उद्धव का उन्हें ज्ञानोपदेश देना, प्रत्युत्तर में गोपियों का कृष्ण के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को प्रकट करना। उद्धव का कृष्ण के निकट लौटकर आना और ब्रज की अवस्था का वर्णन॥

संख्या ४०० बसंत विलास, रचयिता—विष्णुदत्त (नसरथपुर) कागज—साधारण, पत्र—२५, आकार—११ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७ परिमाण (अनुष्टुप्)—७९०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८६६ = १८०९ ई०, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह रईस, तालुकेदार कालाकांकर जिला—प्रतापगढ़ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ मंगला चरण॥ मंगल करन पाप ताप को हरन गुन धारिद वरन पूजा परम धरन है। मीठर दरस करै चारिक फरन रासी पन को परन सो है सोम आभारन है॥ देम का तरन दानव वारि का हरण सुधि बुधि का धरण सिधि करण करण है। वारन बदन घन मारन मरन असरण के सरण श्री गणेश के चरन हैं॥ १॥

अपरंच दोहा—श्री रघुपति का पदकमल बन्दौं बारहिं बार। जासु कृपा ते सिंधु में बोहित भए पहार॥ २॥ अन्यच—गुरु को पद बन्दन करौं, कृपा सिन्धु भगवान। जाके सुमिरत ही मिटै, माया कृत अज्ञान॥

मध्य—पृ० ८१ से—उड़त केतकी कुसुम रज चहुँदिसि पाइ समीर। जनु बसन्त लिय तियनि पर डारत आपु अबीर॥ ४४॥ सवैया छंद—पावक भेस पलास का फूलनि सूक सी केतकी धूप सोहायो। छोप विचित्र वर्यवर मो सिर गंग तरंग सी कुन्द बनायो॥ घोर बिभूति परागन की मन मोह सो भुंगन को गन गायो। ताक कपाल सुकंग लिखी भुजंग लिखी रितुराय के ब्याज ते शंकर आयो॥ ४४॥ (पृष्ठ १००) तीर तमालन की अवली कता कुंज विताल बनी है। पाग करै मुनि मित्र जहाँ तहाँ उज्जल वारि की धार धसी है॥ चन्दन मालू मराठन के गन माइत कंठ कली विकसी है। ताही को कम्प बड़ो जिनके उर गंग की मूरति मंजु बसी है॥ ४५॥ (पृष्ठ १०९) चारिहु वेद पढ़ै विधि सों त्यों पुराण अठारह का नित गावै। मुक्ति के कारन पुन्य पहार दसासन बर्ष समाधि लगावै॥ कंचन दान सुमेर समान बड़ी मत संगति मैं चित लावै। हाय उदाम कहाँ सब सों तबहू रघुनाथ को भेद न पावै॥ (पृ० १०५–१०६) यदपि विविध उपाय, बद पुरानहू कही। मोर मत दृढ़ाय। राम नाम पद मुक्ति पद। इति श्री बसन्त विलासे महाकाव्ये परिहार वंशावतंस श्री सरनाम सिंह कृपा शान्त रस वर्णनो नाम चतुर्थ विलासः ४॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १४ तक—प्रथम विलास प्रस्ताविक वर्णन। मंगला चरण, देश तीर्थ क्रमशः—मकर पृश को मुक्ति मति, मध्य देश अभिराम। तीरथ राज प्रयाग तहँ सकल सुमंगल धाम॥ तीर्थराज वर्णन—अलंकार-रूपक अग्र, अठौर की विमिला सित चंवर निरासत सविच विवक-विराग, याग संयम मद गाजत॥ बन्दौं विमल पुराण, हार परिख मुनि चारी। मध्य पुरी अभिराम, सदा जाको त्रिय नारी॥ धर्माधिकार

आचार सुत, सिंहासन पट कुल भनि । इन्द्रादि देव भूपित सभा, जय प्रयाग भूपाल मनि ॥
परिगन कथन.—परिगन सुभग सिकन्दरा, जहा धर्म की रीति पतित सूर पतिव्रता, धनिक परस्पर प्रीति ॥

ग्राम कथन —सुरसरि उत्तर भाग में नगरथपुर शुभ ग्राम । चारि वर्ण आश्रम जहां, विलसत आठों जाम ॥ वन उपजत नाना विहँग, बहु विधि करत विलास । विमल सरोवर में कमल, फूलि रहे चहु पास ॥

वंश वर्णन —सेरसाह भूपति जहा तेगसाह परिहार । जो अखंड भुज दंड में धरे-धरणि को भार ॥ ताको पुत्र प्रसिद्ध जग, इन्द्रजीत नृपवीर । याहि विलोकत समर में, रिपुगण धरत न धीर ॥ ताको सुत अह्लाद नृप, महावीर सिरताज । जाको दान कृपाण जस, वर्णत सुकवि समाज ॥ तासु कुमार उदार मति, जेठो नृप सरनाम । लघुरो श्री अभिराम जू, शील सिंधु वलधाम ॥ कमलासन अति जतनसों, सब गुग करि एक ठौर ॥ श्री सरनाम नरेस को, विरचे नृप सिरमौर ॥

ग्रथ निर्माण काल—श्री सरनाम महीप मणि, पूरित हिये हुलास । विष्णुदत्त कवि सों कह्यो, करौ वसत विलास ॥

ग्रथ निर्माण काल —रस रत्न वसु रजनीश, मित सम्वत सुर गुरु वार । भादौं कृष्ण त्रियोदशी, भयो ग्रथ अवतार ॥ ग्रथोपक्रम, अतिशयोक्ति अलकार, प्रतीप मुक्ति अलंकार भ्रमरादि की व्याज से, उपमालंकार, प्रकृति कथन, समुच्चय अलकार, प्रेम प्रसंग, दृष्टात अलंकार, गुरजन स्वभाव वर्णन, काव्य लिगोलकार, पूर्ववदलंकार, अनुप्रासलंकार, शकरलकार, समुच्चयानुप्रासलकार, व्याधप्रतीयालकार ।-

(२) पृष्ठ ३५ से पृ० ६३ तक—द्वितीय विलास—श्रंगार वर्णन । मुख वर्णन, कोमलता वर्णन, प्रोषित नायका दशा स्मरण, कुच वर्णन, कपोल वर्णन, केश वर्णन, अभिलाप दशा, स्मरण दशा, स्वकीया खडिता, आगत पतिका, धृष्ट नायक, क्रिया विदग्धा, प्रेम प्रसग, विश्रब्ध नवोढा, प्रोषित पतिका, खडिता, मानिनी नायिका, व्याधि दशा, स्मरण दशा, प्रमोदा लिंगन, सुरति, नवोढ़ा, प्रथम समागम, चेटक, स्वकीयाभिसारिका, प्रवत्स्य प्रेयसी, माननी प्रति दूती वचन, गुरु मानिनी, कलहान्तारिता, अनुशयना, अनुकूल नायक, हास्यरस वर्णन, करुण रस, रौद्ररस, वीर रस, भयानक रस, वीभत्स रस, अद्भुत रस, शांत रस, षोडष श्रृगार ।

(३) पृ० ६४ से पृ० ८३ तक—तृतीय विलास—वसत-वर्णन वसंत वैभव, संयोग सुख, समीरादि वर्णन, मान भग, वसतमें विरहावस्था, वसत मे मोह व कामोद्दीपन वर्णन ।

(४) पृ० ८४ से पृ० १०९ तक—चतुर्थ विलास—शातरस वन वनादि के वर्णन के साथ भक्ति रस वर्णन, भक्ति न होने पर निन्दा, भक्ति की सर्वोपरिता, भवसिंधु की दुर्गमता, अम्बिका की प्रशसा, भक्ति संबधी उपदेश, गंगा वर्णन, भक्ति से कुटिल स्वभाव सुधार, वर माँगना ।

कवि वश परिचय—कवि नरहरि को कुमार हरिनाथ भयो हरिवंश ताको सुनु परम प्रवीनो है । ताको घनस्याम श्रीगोविंद नाम ताको तनै जाको पाय वदन दिली को पति

कीन्हों है ॥ ताके तारानाथ तारानाथ सो करित भयो ताकैं रामबकस सुजस छोक भीमा है ॥ ताके सुत पूरण अनन्द रामदत्त ताके ताके विष्णुदत्त सो विमल ग्रंथ कीन्हो है—मंगलाचरण।

ग्रंथ लेखन काल—अम्बर आदि पर्मी रहमीकर सम्वत् माघ मनोरम मास है। स्यामल पक्ष तिथी बुधवार जमी तिथि सप्तमी योग विक्रम है ॥ हस्त नक्षत्र सुमंगल मूक दिवाकर उत्तर जमी प्रभ्रस है। श्री अवतार महीप किले मित्र पाठ के हेत बसंत विकास है ॥

संख्या ४०१ वृद्ध चाणक्य राजनीति भाषा, रचयिता—विष्णु गिरि, कागज—देसी, पत्र—२०, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० सिवबरा शुक्ल, ग्राम—जयतीपुर, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ ॐ तत् सत् ॥ अथ वृद्ध चाणक्य मुनि कृत राज नीति भाषा विष्णु गिरि कृत लिख्यते ॥ तीनि लोक अधि पति प्रभु विष्णु प्रणम्य सिर नाय। नीति शास्त्र चाणक्य को सकल शास्त्र ते पाय ॥ १ ॥ मानव पढिया शास्त्र को जानै गो सब तत्व काज अकाजरु शुभ अशुभ धर्म सिपाबन मत्त ॥ सौ हौं नीके कहत हौं सब नर को हितकार। जिहूं के जाने मात्रते हूं सर्वज्ञ प्रकार ॥ मूर्ख सिष्य उपदेस करि दारा दुष्ट बसाय। दैरी के पानै परै पंडित हूं सीदाय ॥

अंत—अमर द्विज सत पुरुष मे लुटै हैं सतभाव। और दाम पाय तै पंडित वाक्य प्रभाव ॥ उत्तम को प्रणिपात करि सूर भेद करि जीति। नीच अल्प ही दाम करि मित्र तुल्य पौरुष रीति ॥ अग्नि तृप्त नहिं काठ सें उदधि नदी वारि। काल तृप्ति नहिं जीवसे नरतै तृप्ति न नारि ॥ नभ के नागी पुष्प में सोभा पावै हंस। पंडित वरिष्ठ दूर करि त्यो सज्जन मन संत ॥ सुत बिन घर सूनो कुमित बिन बांधव पुन दैस। मूरख को सूनो हृदय निर धन सून्य जग सैम ॥ नारि केस आकार नर दिसै जग मैं कोइ। पदरी फल आकार बहु ऊपर मीठे होइ ॥ जिसके सुत पंडित नहीं भक्ति नहिं नहि सूर। अंधकार कुल जाम ज्यों बिन ससि निशाकरूर ॥ निशि दीपक ससि देखिये रवि दिन दीपक याम। धर्म दीप तिहुं लोक को कुल दीपक सुत जाम ॥ तृष्णा पानि अगाध है नहिं भरिये तब सीर। जो जिस दिन ही मरन सें दपती जाय गंभीर ॥ जिन जिवत भौ हुवो मित्रक बांधव कोइ ताको जीवन सफल मित उदर भरो सब कोइ ॥ राजनीति चाणक्य को सप्तम वृद्ध अध्याय दोहा भाषा करि रच्यो कवि गिरि विष्णु बनाय ॥ इति श्री वृद्ध चाणक्य राज नीति शास्त्र गो० विष्णु गिरि कृते भाषा यां संपूर्ण समाप्तः संवत १९०८ पि० राम राम राम राम राम राम राम ॥

विषय—राज नीति ॥

संख्या ४०२. स्वरोदय, रचयिता—श्री विसुंभर, कागज—साधारण, पत्र—२५, आकार—१२ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८८, खंडित। रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० रणधीर सिंह वर्मा दार, ग्राम—खाजीपुर, डाकघर—साखाम बकसी जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री विसुंभर कृत श्रोदै लिष्यते । श्री मह देव पारव्ती मवेदे ॥ पवन वीज पुस्तक, तहा पिंड वृह्मंड वखान । तत्व ग्यान सुर भेद सो निवृति प्रवृति सुपहान ॥ पिंडे सोब्रह्मडे अथ प्रथम तत्त्व फेरि दूनो सुरसों पाच तत्व पहिचानों। पाच तत्वके पाच पाच भेद जानों ॥ तुचा १ रोम २ अस्तिन ३ नस ४ माश ५ ॥ पृथ्वी तत्वके गुन । वीर्ज १ मूत्र २ रुधिर ३ लार ४ मल ५ ॥ ए जल तत्वके गुण (न) जानों । क्षवि १ भप २ प्यास ३ निद्रा ४ आलस्य ५ ॥ ए तेजके गुन । वानी १ नेहचौ २ आनद ३ गध ४ गवन ५ ॥ ये वायुके गुन । दोश १ मोह २ राग ३ भय ४ लज्या ५ ॥ ए आकाश के गुन जानों ॥ जेहि तत्व मय जाका वास है सो शिव जी कहत हैं घूटेंमें जांवमें पृथ्वी को वाश है । चरन में जलको वासु है । दोट कधनमें अग्निको वासु है ॥ पांच तत्वको पाच प्रकार करि जानिये ॥

अत—अथ माश ॥ १ ॥ अ० दोउ सुर निरतर चलै माश ॥ अथ दिन ज्ञान तुह दिन सूर्ज सुर चलै तो दिन भग अ० पाच राति दिन सूर्ज सुर चलै तो वर्ष ॥ १ ॥ दश राति दिन सुरज सुर चलै तो ॥ ६ ॥ माग अ० वीश राति दिन सूर्ज सुर चलै तो माश ॥ १ ॥ अ० अटाहस दिन राति सूर्ज सुर चलै तो दिन ॥ १५ ॥ तीश दिन रात सूर्ज सुर चलै तो दिन ॥ १० ॥ वतिस दिन राति सूर्ज सुर चले तो दिन १ ॥ अ० जादिन दोनों सुर चलै तो छिन भगी मृत्यु आवै आयु दिन प्रवान मूत्र दिष्टि सकरमें छूटै और कानकी लौर हालै काप नेत्र अगुरिन में वीर चलै तो दिन दस ॥ १० ॥ अ० एक आपी वैठि जाइ तव दोउ आपिन में धूधी छावै लिलाट की लगी मिट जाइ तव दिन ॥ १ ॥ अ० आप जीभ्या नही दीसै तो दिन ॥ १ ॥ जीवै अपनी भौह नही दीपै तो दिन ॥ ७ ॥ अ० आपनी नासिका को अग्रभाग नही दीशैं तो दिन ॥ १ ॥ जी अै अनहद नान सुनै तो दिन ॥ ५ ॥ जीवै ॥ × × × ×

विपय—यह स्वरोदय शास्त्र श्री विशभर द्वारा रचित है। इसमें निम्न लिखित विपय हैं :—

(१) तत्व ज्ञान (२) स्वर पहिचान (३) स्वर साधना (४) इडा पिंगला का ज्ञान (५) स्वर भेद (६) भूपन वस्त्र द्वन्द विवाद (७) ठाकुर सेवा स्वामी मत्र देवता दर्शन विधि (८) जंत्र मंत्र (९) गवन विधि (१०) भोग विधि (११) श्राप विधि (१२) वार, तिथि पक्ष आदि का वर्णन (१३) नक्षत्र आदिका वर्णन (१४) रात दिनका वर्णन आदि २ विपय वर्णित हैं । पुन्तक अपूर्ण है । भापा दूपित है ।

संख्या ५०३ ए. शान्त शतक, रचयिता—महाराजा विश्वनाथ सिंह (रीवा), कागज—साधारण, पत्र—७३, आकार—९३/४ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६००, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०६ = १८४९ ई०, प्राप्तिस्थान—कुटी मानिकपुर, गगातट ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ शान्त शतक लिप्यते ॥ दोहा ॥ सिय रघुनंदन सरस्वती, गौरि शभु गन ईस । हनूमान हरि गुरु प्रिया, दास चरन धरि सीस ॥ १ ॥ टीका —मुक्ति प्रदीपिका करत अहै विसुनाथ । गुरु सुप सुनि यही विधि करहि पॉच मुक्ति

देहिं हाथ ॥ २ ॥ कविता—नयनि मयन करि केहरी कपाट उर भुजनि भुजंग वारौं किस है कान में। वदन में बिधु वारौं मैन लाखिन वारौं मत्त मंजरीक वारौं कुंचित कचन में॥ नाथ विस्वनाथ क समस्त राम रामचंद्र जगत के नाथ वारौं आप गुनगन में। काल दग्ध जुकता में विधि वेद बिज्ञता में वारौं बिस्त वार बार काम सरन में॥ १ ॥ तिलक—यह कवित्त में जौ प्रतिपा संघार किये ताते रघुनंदन के अगम की अनिर्वचनी माता व्यंजित भई अरु काल दग्ध जुकता में को वारयो तातें काल दग्ध जु जा है कै भस्म मात्र करि देत है। श्री रघुनंदन मुक्ति हू दइ है यह व्यंजित भयो ताते इनकी अंघ्री और देव साकी प्रसन्नता ते अधिक है यह व्यंजित भयाँ अरु विष्णु को सरन करन में जो वारयो तातें विष्णु को सत्रु को सरन राखिबो नहीं वारयो श्री रघुनंदन जद्यपि अल्प गदु कियो को बिना राक्षस की पृथ्वी कर्ता तऊ बिभीषन को सरन राखिबेई कियो अरु बार बार वा कह्यो ताको महा बैकुंठ छीर सागर साई श्री महारायण मूमादिक जो विष्णु क रूप तिनको ग्रहन आयो अरु श्री महारायण सरन आये जे दुर्बासा हैं तिनकी सरन ना राख्यो अम्बरीषं क पास पठाइ दिये भागवतापराधी जानि कैं और श्री रघुनंदन साक्षात् श्री जानकी जी के पूँछ हू जयंत को सरन में राखि कियो अरु आवांकित करी दियें ताते आगे जो पाप हैं ते जरि गये अब कबहूं ना करैगो यादि वनी रहैगी आपी किये तो कृष्ण कियो यह व्यंजित भयो अरु विधि वेद बिज्ञता में जा लिख्यो सो जैसो जैसो काल दग्ध संसार में है और श्री महारायण सरन राखन में है तैसे ब्रह्मा जी की बरोबरि वेद को जानन वारो नहीं है ताते वेद का यथार्थ अर्थ नहीं के मत में है, यह व्यंजित भयो ताते कवि की ग्रन्थ संप्रदाय व्यंजित भई ॥ १ ॥

अंत—बहुत वेदांतन सार विविधि संतन मत लीन्हे। गुन महान प्रगल्भ हित सांत सतक मय कीन्हे ॥ ६कडु कवितें करि अभ्यास यहि रीति जो करि है। भव भव पारा वार आसु गोपद सम तरि है॥ यह पाठ करि है जो पुरुष अरथ समुझि चित मैं धरहि। सो कछु दिन में अज्ञान तजि बिरति ज्ञान भक्तिहु लहहि ॥ १२ ॥ बहुत जे हैं वेदान्त तिनको अभ्यास करिकै औ बहुत जे हैं संत तिनके संग करि तिनके ते बहुत मत है तिनको कै कै या सार सतक मैं बनायो है ये में संतन के जो गुन भावना है औ जे सास्त्रन के मत के सार है ते धरि दियो ६ ये की कविता का अभ्यास करि कै याकी रीति जो करि है सो या संसार समुद्र जो है ताको सीघ्र ही गो पद सम उतरि जै है अरु जो या भक्ति को कोई साधन ना करिकै गो औ याको पाठ मात्र करैगो मूल तिलक को अर्थ समुझि कै चित धरैगो ताके बैराग्य ज्ञान भक्ति होवई करैगी जैसी भांति मो थोरो बहुत अभ्यास करैगो तात याकी परिक्षा करि लव यह उपदेश व्यंजित भयो ॥ १२ ॥

इति श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा बहादुर सीता रामचन्द्र कृपापात्राधिकारी विश्वनाथ जू देव कृत मुक्ति मद शांत सतक समाप्तः शुभ मस्तु जेठ बदि सं० १९०१ के।

विषय—(१) पृ० १ स पृ० ५१ तक—मंगला चरण इष्ट देव तथा गुरु आदि की वन्दना। संसार की निस्सारता समझाकर राम नाम का उपदेश। राम बिना सब वैभव की व्यर्थता। राम नाम सार की श्रेष्ठता। जप तपादि से राम भक्ति की प्रधानता। राम

के समान कोई दाता नहीं। पुत्र कलत्रादि नाते का मिथ्यात्व और भक्ति की सत्यता। काम क्रोधादि रूपी चोरों से बचने का उपदेश। विषय वासनादि से मुक्ति का अवरोध। झूठी इच्छाओं की निस्सारता। इन्द्री विषयो को त्याग भक्ति ग्रहण का उपदेश। आनंद कद ही में आनद का निवास। वासनाओं के मिटाने से भक्ति का ग्रहण। अन्यमन्यता को दोष बताना। माया की प्रबलता और सीताराम की भक्ति से उसका विनाश। अच्छा ज्ञान पात्र होने के लिये मार्ग निदर्शन। भक्ति खड सम्पूर्ण।

(२) पृ० ५२ से पृ० १०१ तक—न्याय मतादि का खडन कर ग्रंथ कर्त्ता का अपना ही ब्रह्म होना सिद्ध करना। ब्रह्म ही का विश्व का कारण कथन। ज्ञान के कृशानु से मोह को जलाकर भक्ति के आनद देने का कथन। कुभकादि से यदि समाधि होती और समाधि में सुख होता तो समाधि छूटने पर माया क्यों भरमाती ? जीवादि निरूपण। कालादि में भी राम की प्रबलता। राम की महिमा, कर्म को छोड़ परमात्मा को पाने का वर्णन। आत्मा के गुण। जीव-शरीर तथा इन्द्रियों से उसकी पृथक्ता। ब्रह्म की व्यापकता उनको न चीन्हने से दुख की प्राप्ति। आत्मा का रूप। परमात्मा को पाने का विधान। राम कोही सर्वत्र मानने में सुखोद्भव। रकार और मकार की प्रशंसा। मन चित्त अहकार के त्याग के पश्चात् राम द्वारा विशुद्ध शरीर पाने का कथन। ज्ञान काड सपूर्ण॥

(३) पृ० १०२ से पृ० १४५ तक—नवधा भक्ति के भेद। उनके साधन। भक्ति योग वर्णन। प्रेमाभक्ति वर्णन। ध्यानादि विधान। पूजन तथा आर्ती आदि का विधान। रामनाम जप विधान। रति के लक्षण, भाव प्रेमा भक्ति। प्रेमा के पाच मुख्य और पांच गौण भेदों का वर्णन। सुधा, दास्य, सख्य, वात्सल्य, प्रियता के लक्षण। इन पांचो को पांच रसों का स्थाई भाव बताना और पांचो रसो में शृगार रस की प्रधानता। दम्पति मूर्ति सेवा विधान। दम्पति-ध्यान रखने वाले संतों की महत्ता। शांत शतक बनाने का अभिप्राय। इसके पाठादि करने वालों को फल प्राप्ति॥

संख्या ५०३ बी. शात शतक, रचयिता—महाराजा विश्वनाथ सिंह (रीवा), कागज—साधारण, पत्र—१४०, आकार—१० × ६३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०७=१८५० ई०, प्राप्तिस्थान—चौबे लक्ष्मीचद कोर्ट आव वार्ड चंद्रपुर, डाकघर—कमतरी, जिला—आगरा।

संख्या ५०४. भाव पंचाशिका, रचयिता—वृंद कवि (औरगाबाद), कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—७ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७४३, लिपिकाल—सं० १८२६, प्राप्तिस्थान—ठा० गगासिंह जी, ग्राम—देवरिया, डाकघर—बसोरा, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री गुरुभ्यो नम.॥ अथ भाव पचासिका लिख्यते॥ दो०॥ अद्भुत अमित अनत अति अगम अपार अनूप॥ व्यापक दृश्या दृश्य मय जय जय

ज्योति स्वरूप ॥ कवि लोचन के भाव सुनि कछुक भया चित चाव ॥ कही भाव पंचासिका वृन्द सुकवि धरि भाव ॥ भाव सहित सोभा लहै पूजा जप तप मित्र ॥ याते वृन्द विचारि कै कीने भाव कवित्त ॥ सत्रह सै बयालीस सुदि फागुन मंगळ वार पाँचि भाव पंचासिका अवनि भयो अवतार ॥ रुचि युक्ति करिकै कवित कीन्हे भाव दुराइ । तैसे भाव प्रकासिकौ दोहा किये बनाइ ॥ सवैया ॥ बाजत ताल मृदंग उपंग महा धुनि तीनहु लोक छई है । इंद्र कहै सुर किंनर भूत पिसाच पै जस युक्ति नई है नाचत गौरि के हेत लिये सिव कंठ लिये अनुराग भई है ॥ चारहु ब्योर बराबर ऊपर भय बिना यक दृष्टि भई है ॥ दो० ॥ गति अनेक नाचत तहाँ भी सिव कंठ समीर भ्रमरी गति की छत ही प्रसन्यो गंगा नीर ॥ सवैया ॥ नाचत है जड़ न्हावत है नर पावत देह हरी हर की जो । तारनि तीनहु लोक निहारनि पाप निवारनि वंछित दीजो ॥ वृन्द कहै सु विवेक विचारि कै मेरी यहै विनती सुनि लीजो ॥ केसव मोहि कहाँ जिन गंग कृपा करि माहि सदा सिव कीजो ॥

अंत—पिय उदासन कोमल हास उसास भरै मुख कीने रहै मत ॥ धीम सपीन के संग न बैठति देखिये दीन कहै न सुनैवत ॥ वृन्द कहै यह भाव कह्या अति निंदित है विधि की अपने मत ॥ याको न रोगन पी को वियोगन योग कलंस को पंसी मुसारुख ॥ दो० ॥ करि है दिन द्वै चार में पिय परदेस पयान सुनत भई कैसो दसा सखुसन भाव सयान ॥ सवैया ॥ प्रान पती के पयान सुनी अति व्यग्र भरी दुहरी हिय मैं घन । क्यों हिय धीरज कौं धरि है ए कहा करि है उपचार सबी जन । वृन्द कहै घनघोर उठे करि सोर उठे पिक मोहन के मन । चौंतकि संक निसंक भई पुनि मौंघि दियो मन मोहन को मन ॥ दो० ॥ प्रिय मन कीनो पीय को जब ही कियो पयान । जब टर कहा मनोज को सखुसखु बुधि निधान ॥ सं० ॥ कीन कवित्त मनूरुष रावरि तामैं जवाहर भाव भरे हैं ॥ सुच्छम देस सुलच्छम पोपि महानिरवाप परे सुधरे है ॥ ताके दुराव के ताला दये समुझे बुधिवान दुराइ धरे हैं ॥ वृन्द कही पुनि ताके प्रकासको कूंची समान के दोहा करे हैं ॥ दो० ॥ रची भाव पंचासिका वृन्द भाव सुविचार भूलि चूक कछु होय सो कीजो सुकवि सुधार ॥ गुन[३] सागर[४] भुप[७] सोम[१] सम[३४] ब्रगु[२] बाहु[३४] निधि[९] बाद भई भाव पंचासिका यह औरंगाबाद ॥ इति श्री भाव पचासिका वृन्द कवि कृत संपूरण सुभ मस्तु लिपतं विहारीलाल मिश्र संवत १८२६ जेठ शुक्ल दुवादस (दसमी) श्री राम जी सहाय ॥

विषय—नायिका के भाव वर्णन ।

संख्या ३०५. ज्योतिषसार, रचयिता—हरदास कागज—देसी, पत्र—१०, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप)—१७७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०० = १८१२ ई०, प्राप्तिस्थान—मथियन मिश्र मैप गाँव सुमायपुर लहरपुर । वर्तमान ग्राम—गोंगापुर डाकघर—लहरपुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ज्योतिष सार भाषा लिख्यते । शालिवाहन के शाक में १२ मिलावे और ६० का भाग देवे शेष रहे तो प्रभवादिक संवत का नाम जानना ॥

शालिवाहन के शाका में १३५ एक सौ पैंतीस मिलाये तो रेवा नदी के उत्तर के किनारे पै वसै जो विक्रम राजा जिसका संवत सर जानना ॥ सवत सरो के नाम ॥ प्रभवः विभवः शुक्ल. प्रमोद' प्रजापति अंगिरा श्री मुप भाव युवा धाता ईश्वर बहुधन्य, प्रमाथी विक्रम वृष' चित्रभानु, सुभानु, तारण पार्थिव, व्यय सर्वजित, सर्वधारी, विरोधी विकृति खर. नदनः विजय जय' मन्मथ. दुर्मुप., हेम लंब, विलंब, विकारी, सर्वरी, प्लव, शुभ, कृत, शोभन', क्रोधी', विश्वावसु, पराभव, प्लवग, कीलक सौम्य. साधारण विरोधकृत्, परिधावी प्रमादी, आनंद राक्षस, वल., पिंगल, कालयुक्त., सिद्धार्थी, रौद्र, दुर्मति दुदुभी, रुधिरोद्गारी, रक्ताक्षी, कोधन' क्षय ये ६० संवत सर हैं ॥ सवत सर फल ॥ प्रभवादि सवत सरों में वर्तमान सवत तिसै दूना करै और तीन उसमें से घटाय दे और सात का भाग दे शेष रहे तो शुभाशुभ जानना १।४। बचे तो महगा कहना २ ५। बचे तो सस्ता कहना ३।६ बचे तो सम जानना और सून्य बचे तो पीड़ा जानना ॥

अत—अतरग वहिरग नक्षत्र। सूर्य नक्षत्र से चार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इस प्रकार वर्तमान नक्षत्र तक वारंवार गिने तो क्रिकम से अतरंग वहिरंग सज्ञक होते हैं उनमें लाना व पठवाना आदि कर्म करै मृतिका स्नान हस्त जेष्टा पूर्वा फाल्गुनी स्वाति धनिष्ठा रेवती अनुराधा मृग अश्वनी और तीनों उत्तरा रोहिणी इन नक्षत्रो में प्रसूता स्त्री का स्नान शुभ कहा गया है परतु रिक्ता तिथि मे न करै ये मुनींद्रों का कथन है ॥ अथ पूर्णिमा हुताग्निनी फलम् ॥ फाल्गुन सुदी पूर्णमा में जो होली की लौ पूर्व जाय तौ प्रजा को और राजा को सुप जानिये ॥ और दक्षिण को जाती हो तो प्रजा भाग जाय, और अकाल पड़े निश्चय करके जानना और जो पश्चिम को लौ जाती होय तौ तृण वढ़ै सपति होय जो उत्तर को जाय तो अन्न वढ़ै और आकाश को जाय तौ राजा गढ़ में जाय वैठे और विग्रह होय ॥ धूल वर्षा फल ॥ जो धूल की वर्षा होय तौ क्षय करै और जो कुहर पड़ै तौ भयकर लोक में जानिये। जो विजली पात होय तौ अग्नि चारो ओर में लगै और जो वज्र पात होय तौ राजा का भय जानिये, और जो झनझन शब्द करती प्रचड पवन चलै तौ चोरन का भय जानिये, और जो ग्रहन में जुद्ध हो तौ राजान मे जुद्ध जानिये, जो केतु उदय दीपै तौ जुद्ध का भय जानना चाहिये और जो ग्रह के अत में वर्षा होय तौ सर्व दोषों को दूर करै ॥ इति श्री शुकदेव जी विरचिते जोतिप सारे वृन्दावन कृत भापा टीका सपूर्ण शुभम लिपतं वनवारी लाल १८७० सन ई० ॥

विपय—ज्योतिप वर्णन ॥

संख्या ५०६ ए भूगोल, रचयिता—व्यास, कागज—देशी, पत्र—२९, आकार—१३ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६। परिमाण (अनुष्टुप्)—१७५, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य। लिपि—नागरी। प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह जी साहब, रईस व तअल्लुकेदार, कालाकाँकर प्रतापगढ़—अवध।

प्रारम्भ—श्रीमते रामानुजाय नम'। अथ भूगोल लिप्यते भापा कथयामि। पहिले आकाश उपजा। आकाश से वायु उत्पन हुआ। वायु से तेज भा। तेज से जल भा। जल

से महांड भा। सो महांड इश्वर की कृपा से फूटि आयाना। महांड के मध्य में कमल बिंब व विष्णु उत्पन्न भा। ता परमेश्वर के नाभी कमल में ब्रह्मा उत्पन्न भे। ब्रह्मा भे पृथ्वी को परम भीम ऊँचास४९ कोटि जोजन को प्रमाण है। ताके मध्य में सुमेर पर्वत है। चौरासी लक्ष योजन ऊँचा ताके सोरह हजार जोजन पृथ्वी में गहिरा। बीस हजार जोजन मध्य में चकला। जब का दाना जैसा तैसा मध्य में मोटा। तहां भला पतला सुमेरु पर्व है।

अंत—कलयुगव्यवस्था—चार लाख बतिस हजार कलजुग प्रमाण। आयुष्य प्रमाण हस्त॥ १॥ सूर्य पर्व एक हजार। चन्द्र पर्व ७ हजार। तीर्थ गंगाजी। दृषी चार्युंश पाप। १८। पुन्य। २। श्री प्रसूतिवार। २१॥ आयुष्यार्बल। १२०। बीस योजन बार॥ १॥ हस्त। १॥ आन कड पद। राज काति बाहन। ताके पुत्र। कुमार। ताके पुत्र ईर्पु॥ ताके पुत्र ब्रह्मा। × × × × चारिड बरन तुरुक ठकुराई। भली वस्तु महँगी। बुरा वस्तु सस्ती। धर्म करने वाले दुखी। पापी क्रोधी लंपट चुगुल इनसो सबनों प्रीति। जैसा कलजुग में परमेश्वर की भक्ति पुण्य मनुष्यन का बाबा पार होवैं। परिणाम में धैर्य सदा सहाय है। इति कलयुग बरनन भूगोल संपूरनम्। मिती चैत्र नवम्यां। रविवासरे।

विषय—१—पृष्ठ १ से पृ० ५ तक—पृथ्वी इत्यादि की उत्पत्ति, पृथ्वी के नव खंड; सात द्वीप। २—पृ० ६ से पृ० ९ तक—पाताल कूर्म विचार; पृथ्वी का कूर्म, पृथ्वी के आठ पर्वत, चौदहो यमों के नाम। ३—पृष्ठ १० से पृष्ठ १२ तक—आकाश प्रमाण, ग्रह नक्षत्र विचार ईश्वर के स्थान निरूपण। ४—पृ० १३ से पृ० १९ तक—चौरासी। देश विचार। ५—पृ० २० से पृ० २७ तक—सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग की व्यवस्था।

संख्या ४०६ बी भूगोल पुराण, रचयिता—व्यास जी, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—९×५३ इंच पृष्ठ—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१४ पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बा० राम मनोहर जी बिलपुरिया, पुरानी बस्ती कटनी मुहल्ला, जयपुर (सी पी)।

प्रारम्भ—भूगोल पुरान लिख्यते। तत्रादि पदि ऐसा एक महांड बीज बरनं॥ महांड बिम्ब सिष पातपी पव॥ आकास ते वायु उतपति भई ते तेज उतपेति तेजते॥ महांड फूटि फूटि की भये। ताका मधे विष्णु रहे है। विष्णु के नाभि कमल के विषैं ब्रह्मा रहे है। सो महांड कोट कीप हैं। पचास कोटी जोजनं उचांहैं॥ सोरह सहस्र जोजनं धरती मधे गहों है। बीस सहस्र जोजनं उपर विस्तार है। तरवा के अर्धाकार सुमेरु पर्वतु है॥ ता सुमेर पर्वत की भरत अंग है मामली अंग सीक अंग मालिवंती अंग जामवंती अंग। भप सिधि अंग॥ उत्पमाल अंग महाभग। पर्व सदर अंग है। ऐक ऐक अंग कितना अंतर है ऐक ऐक लख जोजनं आपन मधें कुम्भांमय अंतर है॥ × × ×

अंत—कौन कौन राजा भए। राजा सरि बाहन॥ १॥ राजा सन्धि कुमार॥ २॥ राजा हरि ब्रह्म॥ ३॥ राजा अर्जुन॥ ४॥ राजा महस्न॥ ५॥ राजा इंद्र॥ ६॥ राजा अजैपाल॥ ७॥ राजा महीपालि॥ ८॥ राजा गंभ्रव सेनि॥ ९॥ राजा विक्रमा जीत

॥ १० ॥ राजा मही फलु ॥ ११ ॥ राजा चित्रक ॥ १२ ॥ राजा हरि पु ॥ १३ ॥ राजा विक्रमा चक्रु ॥ १४ ॥ राजा भोज ॥ १५ ॥ ता उपरांत नभ वती इती पतसाही कोन कोन ॥ गोरी स्यबुदीन ॥ १ ॥ अलावुद्दीन । २ ॥ नसीरउद्दीन । ३ ॥ लोहठाम महेमूद ॥ ४ ॥ वडो महमूद ॥ ५ ॥ सूर्ज साही ॥ ६ ॥ तिमिर लिंग पातसाही । ७ । बबरसाही ॥ ८ ॥ हिमाउ साहि ॥ ९ ॥ अकवर साहि ॥ १० ॥ जहागीर ॥ ११ ॥ साहि जिहा ॥ १२ ॥ औरंगजेव ॥ १३ ॥ श्री वेदव्यास भाम्पित भोगोल पुरान समास ॥

संख्या ५०६ सी. पृथ्वी भूगोल प्रमाण, रचयिता—व्यास, कागज—देशी पुराना, पत्र—७, आकार—१० × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० चन्द्रिका सिंह जी जमीदार, ग्राम—खानीपुर, डा०—बक्सी तालाव, जिला—लखनऊ।

प्रारम्भ—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पृथ्वी भूगोल प्रमाण लिग्यते । यथा आकाश ते वायु उत्पन्न वायु ते तेज उत्पन्न पानी पृथवी अणु उत्पन्न ब्रह्माड धारि द्विखण्ड भये तेहि जल मध्ये विश्नु रहत हैं विश्नु की नाभि कमल मध्य ब्रह्मा उत्पन्न भये सो ब्रह्मा उचाम किये हैं पचास कोटि योजन पृथ्वी प्रमाण है पृथ्वी मध्ये सुमेरु परवत है चौरासी योजन उच्च है सोरह योजन पृथ्वी मध्य गढी है विस सहस्र योजन विव विस्तार है सेर वाकी आकार सुमेरू है ता सुमेरू के अष्ट श्रृंग है । कवन कवन श्रृंग है हेमवंत श्रृंग १ नील श्रृंग २ श्वेत श्रृंग ३ उच्च श्रृंग ४ मालिवत श्रृंग ५ गंध महन श्रृंग ६ महा श्रृंग ७ एव अष्टागति पर्वत एक ऐक श्रृंग कीतना ग्रतर हैं अपनाते ऐक ऐक लक्ष योजन अंतर हैं ता सुमेर मध्ये पर्वत सुवर्ण मय है आकाश मदिर है वैदुर्य मणि मुक्तय यहं महागण गधर्व पक्ष मुनि परिजात है मालि मान राजा वैठे हैं वैकुठ यहा पुण्य प्रधान प्रदायक है; इति सुमेर विषे अग है ।

अंत—एक लक्ष्य योजन ७००००० वृहस्पति लोक है । अठासी सहस्र योजन ८८००० वृहस्पति लोक को विंवसार है वृहस्पति मंडल को परि एक लक्ष योजन ७००००० वुध मडल है तीस सहस्र योजन ३०००० वुध मंडल को बिम्ब विस्तार है वुध मंडल परि-एक लक्ष्य योजन ७००००० शनि मगल है अट्ठासी सहस्र योजन ८८००० शनि मंडल को विंव विस्तार है शनि मडल ऊपर येक लक्ष्य योजन ७००००० राहु मडल है अठासी सहस्र योजन ८८००० राहु मडल को विव विस्तार है राहु मंडल ऊपर एक लक्ष योजन १००००० केतु मडल है येक सहस्र योजन १००० विम्ब विस्तार हैं केतु मडल को शनि मडल कृश्न वर्ण ताते राहु नाही देपि परत है केतु मडल ऊपर येक लक्ष योजन १००००० सप्तऋपिन को मडल है भिन्न भिन्न सातो ऐक ऐक लक्ष योजन १०००००० अपना अपना मा अंतर है तीस सहस्र योजन ३०००० विंव विस्तार है सप्त ऋपि मंडल को। राम राम कृश्न राम राम कृश्न राम राम

विषय—आकाश, वायु, तेज, पानी आदि की उत्पत्ति ब्रह्माण्ड ब्रह्मा, पृथ्वी आदि की उत्पत्ति पृथ्वी में सुमेर पर्वत और उसके श्रृगों के नाम व जबूवृक्ष आदि वर्णन पृथ्वी खड

द्वीप, सप्त द्वीप प्रमाण ७ समुद्र पृथ्वी के रसपाताल, अमरावती का विस्तार, यमपुरी यमधाम कुबेर पुरी कुबेर नाम सूर्यलोक चन्द्रलोक नक्षत्र लोक उनका विस्तार विश्व विस्तार दूरी आदि आदि वर्णित है।

संख्या ४०६ डी शगुनावली, रचयिता—व्यास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८×४ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२७ वि०, प्राप्तिस्थान—बिसवाँ आनंद भवन पुस्तकालय, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्रीगणेशायनमः अथ सगुनौती व्यास कृत लिख्यते। वासतिपुर बात कही दिन चारी ॥ (१६) भइ वियोग देवापहु नारी (९) आगम बेद जो पचरि जनावा (४) पंडौ नाम बनि बसि आवा (५) संध्या तीनि कहं कब आनी (३) पटामंद तम कहा पयानी (६) लिपि लिखेपि अर्द्ध विरमायी (१५) रावन नाम होहि चित पायी (१०) बहु विधि काम देषत मारा (१३) सुर सबी भी इसहिं चोरा (१२) अगहपा इन्द्र येगि बसि आवा (१) असुर नाग सो मर्म जनावा (८) गंजन पंचम विविध घर बसे (२) अपर विरोधा सापर पसे (७) सुवन चतुरदस कुसल सुनावा (१४) ग्यारह रुद्र बेगि चलि आवा (११)

१६	६	४	५
३	९	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

अंत—गये चिंता होइहि (२५) आहु काज होइहि (२६) अनि डरौ काज होइ (२७) डरौं न छिपा करौ (२८) काज अवसि होइ (२९) कछ मन के हाहि। (३०) भला होइ भलो न (३१) काज होइ बहु दिन में (३२) दिन सही चिंता नाहिं। (३३) काज होहि अवसि (३४) यह बात सुभ है (३५) काज न होइहि (३६) काज होइहि भल (३७) समागम पाव है। (३८) मनसा जनि करौ (३९) यहि दिन कसल (४०) गये कछ होइहि (४१) बात मन गम है (४२) मनसा पूर्व अवसि है (४३) मन दुखी क्या हील (४४) काज सुभ्य है फल न (४५) कारजवनि है भल (४६) काज अस्य डरौ न (४७) काज सुभ्य करौ (४८) सुयुध कछ होइ (४९) निरफल हो न देउ देषौं (५०) मन चिंता कछ होइ (५१) काज होइहि मन (५२) आसा पूजहि अब (५३) गये कछ होइहि (५४) काज नयना के होइ (५५) जबहीं बैठ रहहु (५६) गये कछ होइहि (५७) चितमद होइ गो करौ डरौं न (५८) काज सुभ्य है बहहु (५९) काज सुभ्य है सब (६०) काज सुभ है; अवसि के इति श्री सगुनौती समाप्त संवत् १८२७ कुवार बदी अष्टमी बुधवार दस्तगत पुस्तक चंद क।

विषय—शुभ अपशुभ जानने की रीतें।

संख्या ४०७ सामुद्रिक, रचयिता—काशी यदुनाथ, कागज—साधारण, पत्र—

३९, आकार—६ × ५३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—८७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०३ = १७४६ ई०, लिपिकाल—१९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्णपाल सिंह, ग्राम—तिवारीपुर, डाकघर—सागीपुर, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ सामुद्रक ॥ श्री शार्ङ्गी यदुनाथो जयति अथ सामुद्रिकं ॥ इस ग्रंथ के देखते सों सम्पूर्ण जन्म का हवाल ज्ञात होगा। आयु ज्ञान होगा जितना वर्ष जीवन होगा सो ज्ञान होगा जो जो सुख किम्वा दुःख होनेवाला जो जो वर्ष सों होने वाला है सो ज्ञान होवेगा जितना जिसका पुत्र होगा किम्वा कन्या होगी किम्वा नपुंसक होगा वन्धा होगा सो सब हाल लिखा ज्ञान होगा जितनी स्त्री सों भोग होगा सो हाल मालूम होगा राजा होने का चिन्ह। चोर होने का लक्षण सुखी दुखी पापी पुण्यात्मा होने का सब हाल मालूम होने के वास्ते नाना प्रकार के सपूर्ण चिन्ह का हाल लिखा जो है सो जानवे वास्ते वड़ो परिश्रम करके यह ग्रंथ सग्रह हो गया है। इह ग्रंथ वड़ो दुर्लभ है सो सपूर्ण प्राणियों के ज्ञान होने के वास्ते प्रगट हुआ है। इस ग्रंथ से वड़ा उपकार ज्ञान होगा सोइ वृत्तान्त के श्री ब्रह्मा जू श्री हरि भगवान सों प्रश्न करें हैं कि हे प्रभु पुरुष का लक्षण, स्त्री का लक्षण यथोचित आप कृपा करके हमसों कहो ॥

अंत—इदद्रिक शास्त्र विष्णुणा परिभाषितं। श्रुत्वाधत्वा यदि ग्याचशोकान जहति पंडितः ॥ अर्थ ॥ श्री महादेव जी श्री पार्वती भगवती जी सों कहैं हैं कि हे गिरिराज नन्दिनी प्रिये यह सामुद्रिक शास्त्र तो श्री विष्णु भगवान जू श्री ब्रह्मा जू सों कहा है। यह सामुद्रिक शास्त्र को यदि कोई प्राणी श्रवण करे याके अर्थ को धारण करे याको पढ़े पढ़ावे तौ यह सामुद्रिक शास्त्र के जानने सो वा प्राणी बुद्धिमान पंडित होके सपूर्ण ससार के मध्ये नाना प्रकार की चिन्ता को त्याग करके सुखी होगा ॥ सपूर्ण कामना को पावेगा ॥ इति श्री तत्र सामुद्रे हर गौरी सवादे संपूर्ण स्त्री-पुरुष लक्षण शुभाशुभ कथन समाप्तम् ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ३२ तक—भूमिका, हस्त के चिन्ह के प्रकार, दाहिने हाथ में पुरुष के और बायें हाथ में स्त्रियों के देखने का आदेश, मीन, तुला, ध्वजा, पद्म-पत्र, धनुषादि चिन्हों के फलाफल, अंगुष्ट चिन्ह विचार, अँगुलियों के मूलादि के चिन्हों का विचार चिन्हो द्वारा आयु विचार, माता पिता का विचार, बहु रेखा विचार। शंख-पद्म विचार। द्वीप का विचार, नख के विचार, हस्त के विचार।

(२) पृष्ठ ३२ से पृ० ७८ तक.—लिङ्ग लक्षण, लिङ्ग के प्रकार, ललाट वर्णन, योनि लक्षण एवं उसके प्रकार, योनि के फलाफल, कोख लक्षण और उसके फलाफल, भुजा लक्षण, जंघ लक्षण चरण लक्षण, गुदा लक्षण, सर्वाङ्ग लक्षण। स्त्रियों की नाभि, उदर, कुच, इत्यादि के चिन्हों का विचार। शरीर के वर्ण के संबध से फलाफल, मुखाकार के विचार से, रोम के सबध से विचार, नारी की चाल के विचार से फलाफल, भाग्यवती स्त्री के लक्षण, प्राणी के चरणादि के आकार-प्रकार के अनुसार शुभाशुभ लक्षण। वीर्य तथा मूत्र की गंध तथा धार के विचार। सामुद्रिक के पठन पाठन का फल।

ग्रंथ निर्माण-काल—रामा कासइ चन्द्रमा बदे, मार्ग शीर्ष सिते दके। हादस्याँ चारवी श्री मद् पदुमाये भनो दिव में ॥

संख्या ५०८. युगुलछत्र, रचयिता—युगुलकिशोर, कागज—आधुनिक, पत्र—८६, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री संकटाप्रसाद अवस्थी, ग्राम—कीरत, जिला सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः। अथ युगुल छत्र लिख्यते ॥ माधुरी छवि अधिक लसी है। ऐसीरी या बीच अलौकिक माधुरी बाटिका बीच बसी है ॥ कटिपर कलित काछनी काछे पीत पिछौरी मनि कसी है। तापर बेनु विधान विराजत ता ऊपर जो रोम रसी है। मुक्तमाल बनमाल रही कवि कवि उपमा कहै कौन ऐसी है मरकत मंदिर ते मंदाकिनि युग धारा धुग धारबसी है गोपवंस अब हंस अलौकिक सेत मात रज गात बसी है। बाढ़ा नीर नीर सोभा को बहल बिलोकि लाजत ससी है ॥ कुंडल मकर निकर मकरंद मृत अधर मधुर मृदु मंद हंसी है। किधौं है चीरत रस त्रिभुवन को बसन दमक बरसात दमी है ॥ युगुल आदि अनुराग न या छवि ताहि स्याम सुख लाइ मसी है ॥

अंत—राजत राकेस बंस सेवत पद परम हंस बहुकुल अवतंस अंस भानु सहित प्यारी ॥ वृन्दावन अति अनंद फूले तरु विविधि वृन्द लतिक छविद लता देखि सब चित्त सुख भारी ॥ तावत वे द्रुम नवीन परम रम्य सोभनीय तपनि तमय मोह नीय सोभा सुठ प्यारी। हलक मनि जटित भाँति रुचिर सुचिर भाँति तौनि बग मग मग होति ज्योति जगत उजियारी ॥ विहरत नित नव किशोर रूप रासि चित के चोर बाम अंग राजत वृषभानु की दुलारी। सुभ्र सुभ्र सुमति कोटि ललित कलित कर कपोल मुकुर मंदार हार भूषन तन धारी निरतत कर मधुर भाव बाल भाव सेव बाबु बाजत मृदंग संग मुरलि तान तारी। चोलत तत थेइ थेइ कोकिल मुख मंजु सेइ हंसन बसन दसन देखि दामिनि दुतिवारी चित चित में रसिक अरुन चित चित नव छविले लाल मरकत मनि हूं दुमाल मानिये संवारी ॥ माथो नव करित करत चमक चमकत पीत परम झलकन्त बिंदु आनन पर अलकन घुंघुरारी ॥ कुंडल की चटक मटक नये नये सोह मुकुट लटक चारु पगरी पटक पायल की लटक झटक सुधि चमक संभारी कंकन मंजीर झनक किंकिन नूपुर की झनक च्योम आन सुर सुजान सेव सुधि संभारी ॥ दूरत सिर मुकुट माल पुष्प प्रेम वारिमाल पोपक हंसि मंदलाल परी सुप सुधारी। पुलकति ममादि देपि लाजत मदि निज निमेषि भासि चपि नवलाल कहत लोचन लाल भारी। चमक परत बसन भाग सुभूमि सुठमि पर प्रभास डारयो बतु मुकित रास गिर पत मधिमारी। सब विधि मतिमंद जासु बरनत कवि युगुलदास धीरे रति रसिक रास आन आस धारी ॥ कृपा श्री बाली जू श्री कृपा दया सुरेस कृपाल। मध्य समाप्ति यह युगुल कृति सुमता लाहिली लाल ॥

विषय—राधा कृष्ण का प्रेम लीला और क्रीड़ा आदि भजनों में वर्णन।

संख्या ५०९. श्री कृष्ण फाग, रचयिता—जवाहरसिंह, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, रूप—

बिल्कुल फटी, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला दीनदयाल, ग्राम—देवरिया, डाकघर—धानी खेड़ा, जिला—उन्नाव।

आदि—कान्हा भयोरी ब्रज औतारी ॥ टेक ॥ हाट बाट में बदियां मतकत है बांसुरी में देवे गारी। ग्वाल बाल सबही संग लीने खैंचत चीर हजारी ॥ कान्हा ॥ १ ॥ होरी के दिन आमन दे सांवरे बोरि दीजो रंग शारी जाहर की तो अर्ज यही है सुनो हो कृष्ण मुरारी ॥ कान्हा ॥ २ ॥ कान्हा। भयोरी होरी को खिलारी ॥ टेक ॥ कोठे चढ़ तो कींचहि मारै जमुना जांऊ पिचकारी, गोकुल जाऊ तो रंगही में बोरे ऐसी करत मोह बोरी ॥ कान्हा ॥ बिन बोलिन मोकू चैन न आवत काहे को करत बरजोरी। जाहर पिया से बिनती करत है जान देव गिरधारी ॥ कान्हा ॥ पिय आयोरी आज हमारो ॥ टेक ॥ सुनियोरी मोरी संग की सजनी सबही करो सिंगारो। पिया संग चलि होली जु खेलों करि देव वाम मत वारो ॥ पिंग ॥ बहुत दिना पाछे पिया जु आयो मोसे रहत निआरों। अब के पिया से ऐसी मिलूगी जैसे गगन बीच तारो ॥ अब के फाग में पिया जु आयो सबही दुख विसारो। जाहर पियासे ओही कहत है तुम गाओ मंगल चारो ॥

अंत—इतनी कोइ कहियो हमारी ॥ नंदनंदन ब्रज राज साबरे से ऐ हो नारी ॥ पांय परसि कर बिनती करियो औ करि जोरि के ढाढी ॥ ता पीछे इतनी कहि दीजो पिय मोहिं काहे को बिसारी सुधि लीनी न एको बारी ॥ मोय गुलाल लाल बिन तेरे भई है रैनि अंधियारी। असुवन को मैंने रंग बनायो नयनन की पिचकारी पिया मोही आस तिहारी ॥ वृन्दावन की कुंज गलिन में ढूढ ढूढ मैं हारी ॥ देव दरस पिय अपनी मौज से ऐहो कृष्ण मुरारी ॥ अर्ज सुनि लीजो हमारी ॥ लावनी० ॥ चलो यार कहीं सैर करेंगे बाग चमन गुलजार हुआ नहीं किसी से काम हमारा दिल तेरे अखतयार हुआ ॥ सबज ऐश और बीच में बगला नशे बीच सरसार हुआ ॥ एक पलग पर ऐस करेंगे अब पूरा इकरार हुआ ॥ खिला मोतिया रायबेली और चमेली पर क्या प्यार हुआ ॥ गुल चीनी और गुलाब हुआ हो चटक चटक लाचार हुआ ॥ गुल दौसन नव खिला बबूना मौर सिरी गल हार हुआ ॥ चमक चादनी मुख पे तेरे चम्पा चौकीदार हुआ ॥ करलेना एक फेरा मुझको फिरता हू हुसियार हुआ ॥ सोन जुही के कबे कान में गुल तुर्रा पुर कार हुआ ॥ मर बाढे तू गरदन मुझको मै तेरा ताबेदार हुआ ॥ कर बाले तू ताबेदारी मन राजा मुखतार हुआ ॥ नही हुसन तेरा खिला केवडा जीवन थानेदार हुआ ॥ नरगस सी बनरही कामनी गुल देस गुलदार हुआ ॥ है दीवानो सूंढ फूल हजारा गेंदा से तकरार हुआ ॥ गुल मेहदी से लड़ी कामनी इनका यही इजहार हुआ ॥ केला कहै अकेला तुझबिन इन बातों में खार हुआ ॥ कहीं मालती माल गीर तुम में देख तैयार हुआ ॥ महक केतकी रही बजे से कमर सोर गुल जार हुआ ॥ मरे दुष्ट अज्ञान बहुत से जब कोड़ा तैयार हुआ। गुरु नत्थन सिंह कहैं हमरे से मिल हमारा दर हुआ ॥ चलो यार कहीं सैर करेंगे बाग चमन गुलजार हुआ ॥ दो० ॥ रितु बसत को देख कर मन हुलस्यो अति अंत। होली की चरचा यहै मित्रों के सत संग ॥ जो जन याको देखि हैं सबते बिनती मोर। भली प्रकार विचारि कै सुद्ध करैं मोंखोर ॥

इति श्री कृष्ण भाग चाहर सिंह कृत सपूरन समाप्तः ऐम सुदी रामनौमी संवत १९३२ वि० ॥ लिखा रामसिंह ठाकुर बैसवारा वार मे श्री राम जी की ॥

विषय—वार्ता वर्णन ।

संख्या २१० ए. शनीश्वर देव की कथा, रचयिता—औरावरमल (नागपुर), कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—६×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२४ = १७६७ ई०, लिपिकाल—सं० १९२५=१८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन सिंह, ग्राम—शाहपुर, डाकघर—मेरी, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शनीश्वर देव की कथा लिष्यते ॥ सुरसुति सुमिरौं माई माय । गनपति लागू चार पाय ॥ ए सुमिरजें सुष संपति थाय । गौरी सुत मोहि बुधि बताय ॥ गुरु प्रनाम करि सीस नवाऊं । सूरज सुत गाथा गुण गाऊं ॥ गुरु की आज्ञा जो मैं पाऊं । शनी देव को ग्रंथ बनाऊं ॥ कथा कहूं शनि देव की भाषा सरस बनाय । गुरु की आज्ञा पाइके मन में किया विचार । अपप जोरी अस्तुत सों कथा करी विस्तार ॥ चौ० ॥ सुमिरौं देव शनीश्वर राजा ॥ मन वांछित सारे सब काजा ॥ सांचौं देव शनीश्वर कहूं । ताके पंथ सदा मैं रहूं ॥ सुर तैंतीस मुनीश्वर ध्यावें । ब्रह्मा विष्णु महेश मनावें ॥ सब सूं सिरै गिरै अति भारी । निस दिन ध्यान धरै नर नारी ॥ सुमिरै ताकू सदा सुष कारी भूलै ताकी करै पुवारी ॥ सूरज सुत छाया को पूत । जाकी माया है अद्भूत ॥ सुर नर मोसूं कोई न छानै । सदा नर्बदा थाई मानें ॥ याकी कथा सुनें चितलाय । विघन टरै सुष संपति थाय ॥ गौड़ ग्रह सदा सुष दाई । एक समै सिद्धि सभा बनाई ॥ अस्तुत सभा देपि मन हरषी । ताकी छबि मैं कहां लौं बरणी ॥

अंत—शनि देव मोटो है सिरै । गौड़ ग्रह में सब सौं सिरै मैं इनको अपमान कर्यो हो ॥ तो मैं इतनो दुख पायो हौं ॥ दुख संकट सबही मैं सह्यो । अपनो सब विरतांत सु कह्यो राजा कहै बहुत दुख पायो । मेहर भयो तब तुम पै आयो ॥ सबही शनि की पूजा करै । अपनो संकट गयो है परै ॥ सारे शहर मैं डोंडी फिरवाई । पूजा करिबो शनि की आई ॥ सारे शहर में पूजा करी । राजा कहै सा बात है परी ॥ ऐसी काम शनि जी ने कियो । प्रसन्न है कै राजा फिर दियो ॥ राजा बचन सदा सत कह्यो । बहुत बरष लग सुखी रह्यो ॥ निस दिन ध्यान शनी को करसी । मनवांछित कारज सब सरसी ॥ अपप माथुर मीत कुल नगर नागपुर बास । निस दिन ध्याव शनी को पूरे मन की आस ॥ आरावर मल नाम है कुकमराय सुत जान । जाको जोवनदास है ताकी गोद बखान ॥ परम धरम बत्तीस की ग्रंथ किया कविराज । कलदायक शुभ सवन दूं पढ़न सुनन के काज ॥ शनी कथा सनेह सू पढ़ै सुनै नर नारि । अष्ट सिद्धि ताको मिलै निहचै चित में धारि ॥ सुनै सुनावै शनि कथा मन में प्रीति बढ़ाय । सत्य बचन शनि जी कहत ताको संकट जाय ॥ अपनी मति अनुसार यह कथा कही ततसार । भूल चूक जो होय सो लीजो कवी सुधार ॥ जो मै दै सवन करी तीमें झूठ न मूर । विक्रम भूप इतिहास की भई कथा भरपूर ॥ संवत् पुराण

बीस है तापर वेद वपाण । सोमवार सुदि पचमी जेष्ट मास्म की जाण ।। इति श्री शनीश्चर देव की कथा संपूर्णम् सवत् १९२६ में लिखी ।।

विषय विक्रमादित्य राजा की जो दशा शनिश्चर देव के क्रोध से हुई थी उसका वर्णन ।।

संख्या ४१० बी. शनिश्चर की कथा, रचयिता—जोरावरमल (रामपुर), कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२४ = १७६७ ई०, लिपिकाल—सं० १८२६ = १७६९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदीन जोशी, ग्राम—पतरामा, डाकघर—खैराबाद, जिला—सीतापुर ।

तृतीय परिशिष्ट

अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ



तृतीय परिशिष्ट

अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	विषय	रचनाकाल ईसाई संवत्	लिपिकाल ईसाई संवत्	विशेष
१	अनरिया देव की कथा	कथा जिसके पाठ से पारी का ज्वर छूट जाता है		१८२६	
२	अष्ट पद	शकुन विचार		१८१७	
३	अर्घ	फलित एवं गणितज्योतिष	..		
४	अष्टावक्र वेदांत की भाषा	दार्शनिक अष्टावक्र गीता का पद्यानुवाद		१८६१	
५	अश्वमेध पचेटिका	अश्वशक्ति विषयक निरात्मक पद्य		१८७७	
६	इंद्रजाल	जादूगरी			तीनप्रतियाँ
७	एकादशी माहात्म्य	एकादशी व्रत का माहात्म्य	..		
८	ओनामासी पचपदी आदि	प्राचीन ढंग से हिंदी वर्णमाला सिखाने का नवविधान		..	
९	औषधियों की पुस्तक	वैद्यक		..	तीनप्रतियाँ
१०	औषधि संग्रह	„			दो प्रतियाँ बृहद् ग्रंथ
११	औषधिदीप	„			
१२	कच्छदेश में श्री महादेव का विवाह	शंकर-विवाह का पद्यबद्ध वर्णन अकारादि क्रम से		१८९८	
१३	कथा संग्रह	हास्यपूर्ण सौ कहानियों का संग्रह			
१४	कलिकाल-वर्णन	कलियुग वर्णन		..	
१५	कवितावली भागवत	पद्यावली			
१६	कवित्त	„	..	..	
१७	कवित्त संग्रह	„	..		दो प्रतियाँ
१८	कवित्त सार	„		..	
१९	काल चक्र	मृत्यु का ठीक भविष्य कथन के ढंग	..		
२०	केरल मत दिवाकर	ज्योतिष	..	..	दो प्रतियाँ
२१	खेल	राधा-कृष्ण संबंधी गंवारी दोहे	..	..	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	विषय	रचनाकाल ईसवी संवत्	लिपिकाल ईसवी संवत्	विशेष
२२	गनेश मत कथा	गणेश मत की कथा	...	१८१३	
२३	गरुड़ पुराण	पुराण	१८४७	...	तीनप्रतियाँ
२४	गर्भगीता	पुनर्जन्म-सिद्धांत गद्य में	१७१०	१७१०	तीनप्रतियाँ
२५	गीतागद्यानुवाद	गीता का गद्य में अनुवाद	...	..	
२६	ग्रहण की पोथी	सूर्य और चंद्र-ग्रहण	१८७१	१८७४	२ प्रतियाँ
२७	घोड़ों का इलाज	पशु विषयक	...	...	
२८	चर्चास्फटिक(महावीरपुराण)	ज्ञान दर्शन	...	...	
२९	चित्रकूट माहात्म्य	चित्रकूट तीर्थ का माहात्म्य	...	...	
३०	चौदह विधान	शृंगारी	..	१८३५	
३१	जत्र मत्र	झाडफूँक	...	...	
३२	जत्रावली	"	...	...	
३३	जोगिनी दस को विचार	ज्योतिष	...	...	
३४	ज्योतिष	"	...	...	
३५	टिकारी राज्य का इतिहास	टिकारी राज्य का इतिहास	...	...	
३६	दश अवतार	भगवान के दश अवतारों का वर्णन	... ...	...	
३७	दान लीला	राधा-कृष्ण विषयक शृंगारी काव्य	...	...	
३८	दृष्टांतसार	आदर्श उपदेश	...	१८३४	
३९	दोहासार	विभिन्न कवियों कृत उपदेशात्मक दोहों का सग्रह	...	१८५६	
४०	द्वादश राशि विचार	ज्योतिष	..	...	
४१	धर्म सवाद	दो मुनियों का पौराणिक सवाद	...	१८४०	पाँचप्रतियाँ
४२	नक्षत्र प्रकाश	ज्योतिष	१८२६	१८२८	
४३	नाडी प्रकाश	नाडी-गति-विज्ञान (वैद्यक)	..	...	
४४	नामराशि लक्षण	ज्योतिष	...	...	
४५	पंचयज्ञ विधि	पाँच बलियों का विधान	. .	...	
४६	पंचागदर्पण	ज्योतिष	...	...	
४७	पदमावत	रानी पदमावती की कथा	...	...	उच्चउर्दूमें
४८	पियूष प्रवाह	पशु-चिकित्सा और वैद्यक	...	...	इसमें हाथी घोड़े, ऊंट, कुत्ते, बिल्ली पक्षी, गो चिकित्सा तथा अंतमें मानव चिकित्साके नुसखे ।

संख्या	ग्रंथ नाम	विषय	रचनाकाल ईसाई संवत्	लिपिकाल ईसाई संवत्	विशेष
४९	पूतना विधान	स्त्रियों एवं बालकों की चिकित्सा		..	दो प्रतियाँ
५०	पोथी प्रश्न	ज्योतिष		१८११	
५१	पोथी रमल	”		..	
५२	पोथी सर्वगुण	वैद्यक		१८१७	
५३	प्रश्न चाल	ज्योतिष			
५४	प्रश्न चौर	”		१८८८	
५५	प्रश्न सब कारज	”		१८१५	
५६	प्रेम बोध	हिंदू ग्रंथों के आधार पर भगवद्भक्ति वर्णन	१६६१		
५७	प्रेम प्रबोध	ध्रुव की आदर्श भक्ति		१७२१	
५८	फीलनामा	गज चिकित्सा		१८८२	
५९	बारह राशि फल	आयु पर राशियों का प्रभाव	१८०१	१८०९	
६०	बिहारी सतसई की टीका	बिहारी कृत सतसई की टीका			
६१	बैताल पचीसी	पचीस कहानियाँ	१७२५		
६२	भगवद्गीता की भाषा भाषिनी टीका	गीता का पद्यानुवाद		१८१०	
६३	भगवान दसो अवतार	भगवान के दसो अवतारों का वर्णन			
६४	भजन संग्रह	धार्मिक गीतों का संग्रह	...		
६५	भरत मिलाप	भरत की राम से भेंट का भव्य वर्णन			
६६	भूगोल प्रमाण	पुराने ढंग का प्रारंभिक भूगोल			
६७	मंत्र	झाड़फूँक			
६८	मंत्र की पुस्तक	चमत्कार के मंत्र			दो प्रतियाँ
६९	मंत्र प्रयोग	” ”			
७०	मंत्र संग्रह	” ”	..	..	दो प्रतियाँ
७१	मनिहारिन भेष	कृष्ण की शृंगारी लीला			
७२	मनोहर कहानी	चमत्कारपूर्ण कहानियों का संग्रह	१८१९		
७३	महादेव विवाह	शिव के विवाह का बयान		१८१६	
७४	मुष्टिका प्रश्न	ज्योतिष		१८२७	
७५	मुहूर्त विचार	शुभ घड़ियों की ज्योतिषानुसार गणना		..	
७६	मोती बिनौले का झगड़ा	मोती और रुई के बीच का परस्पर उपयोगिता वाद विवाद	..	१८७६	

संख्या	ग्रंथ नाम	विषय	रचनाकाल ईसवी संवत	लिपिकाल ईसवी संवत	विशेष
७७	यंत्रावली	झाड फूँक	..	...	तीनप्रतियाँ
७८	युद्ध दीपक	राम-रावण-युद्ध	...	...	
७९	रंभाशुक संवाद	शुक और रंभा का संवाद	...	..	
८०	रमल	ज्योतिष	..	...	
८१	रमल प्रश्न	"	...	...	
८२	रमल सकुनावली	ज्योतिष	...	...	
८३	रमल सगुन	"	...	...	
८४	रमलसार प्रश्नावली	"	१५७६	१५७६	दो प्रतियाँ
८५	रमलसार-फलनामा	"	...	...	यह फारसी से अनूदित प्रतीत होती है।
८६	रवि कथा	कोटिध्वज के पुत्र रवि की कथा तथा पार्श्वनाथ की भक्ति का उपदेश	..	...	
८७	रसनिरूपण	काव्य रस का विवेचन	...	..	
८८	राजुल पचीसी	नेमिनाथ विवाह की कथा	...	...	
८९	राधानाममाधुरी	श्रृंगार रस	....	१८१६	
९०	राधा स्वामी	राधास्वामी सम्प्रदाय के सिद्धांत	..	..	
९१	रामगीता की टीका	अध्यात्म रामायण के दार्शनिक संवाद	...	...	
९२	रामचंद्र की बारहमासी	वनवास में राम की वर्ष-चर्या का विवरण	...	१८७१	
९३	लेख पहाड़ा	पुराने समय का आरंभिक गणित	...	...	
९४	वंदीमोचन कथा	नंदी देवी की स्तुति	...	...	
९५	विधवा विवाह	प्राचीन धर्मशास्त्रानुसार विधवा-विवाह खंडन	...	...	
९६	वृंदावन साहस	कृष्ण की प्रेम लीला	...	१८३३	
९७	वेदांत के प्रश्न	दार्शनिक गुत्थियों के सुलझाव	..	...	
९८	वैद्यक	वैद्यक	...	...	दो प्रतियाँ
९९	वैद्यक फराँसीस	फ्राँसीसी वैद्यक	...	१७८३	
१००	वैद्यक संग्रह	वैद्यक	...	...	
१०१	वैद्यक सार	"	...	१८३४	
१०२	व्यवहार दर्पण	न्यायालय-विधान	..	१८४७	
१०३	संग्रह	पद्यावली	...	...	

सख्या	ग्रंथ नाम	विषय	रचनाकाल ईसाई संवत	लिपिकाल ईसाई संवत	विशेष
१०४	सकुन कुसकुन परीक्षा	अच्छे और बुरे लक्षणों की परीक्षा			
१०५	सगुन नव दिशा	ज्योतिष			
१०६	सगुनावली	झाड़ फूंक			
१०७	सगुनौती	ज्योतिष			
१०८	सतसंवत्सर-फल	सौ वर्षों का ज्योतिषा नुसार फल	१७१२	..	
१०९	समरसार	ज्योतिष	१७३६	१७६९	
११०	सार्मवसार वचनावली	कतिपय धार्मिक विषय		१८६६	
१११	सामुद्रिक	हस्तरेखा		१८१८	
११२	सारंगधर संहिता	वैद्यक		..	
११३	सार गीता	वेदांत दर्शन		१८१५	तीनप्रतियाँ
११४	सार संग्रह	वैद्यक			
११५	साबर मंत्र शास्त्र	झाड़ फूंक	..		
११६	सिक्षा सतार्थ	उपदेश के दोहे			
११७	सिद्धांत	गुरु रामदास के सिद्धांत		..	
११८	सुक बहत्तरी	बहत्तर रोचक कहानियाँ	१८०१		
११९	सुभाषित	शिक्षाप्रद पद्य	१८६०		
१२०	सोधकपच्छ	झाड़ फूंक और ज्योतिष	..	..	
१२१	स्वरोदय	श्वास द्वारा शुभाशुभ विचार	..	१८६०	
१२२	स्वर्गारोहणी	मोक्ष			
१२३	हरवाल सोधन	विष-विज्ञान			
१२४	हस्तरेखा विचार	हस्तरेखा			
१२५	हितोपदेश	राजनीति एवं शिक्षाप्रद कथाएँ	..		
१२६	हृदय प्रकाश	आत्मविद्या तथा सृष्टि रहस्य	१७१२		
१२७	होरी	होरी के गीत	..		
	अज्ञातनामा ग्रंथ	वैद्यक		..	दो प्रतियाँ



चतुर्थ परिशिष्ट

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय एवं सन् १९२८ ई० तक प्रकाशित
खोज-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

चतुर्थ परिशिष्ट

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय एवं सन् १९२८ ई० तक प्रकाशित खोज-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
१	अग्रदास	१ रामध्यान मंजरी	१८९४ (खो॰ वि॰ १९०० सं॰ ७७), (खो॰ वि॰ १९०६-८ सं॰ १२१ ए), १८९६(खो॰ वि॰ १९२०-२२, सं॰ १ बी.), (खो॰ वि॰ १९२३ २५ सं० ४), १८५० (खो० वि॰ १९२६ २८ सं॰ ४ ए. पी. सी)	
		२ हितोपदेश उपाख्यान	१९९९ (खो॰ वि॰ १९०१ सं॰ ६०), (खो॰ वि॰ १९०६-८ सं॰ १२१ ए), १८३४ (खो॰ वि॰ १९२० २२ सं॰ १ ए.)	इस ग्रंथ का नाम अग्रदास की कुंडलिया भी है।
२	अनन्य रसिक उपनाम भगवती रसिक	१ नित्य विहारी युगलध्यान	खो॰ वि॰ १९२३ २५ सं॰ २०), (खो० वि॰ १९०० सं॰ २६)	
		२ निर्विरोध	(खो॰ वि॰ १९०० सं॰ ३३)	
		३ प्रेमदीपिका	(खो॰ वि॰ १९२६ २८ सं॰ १४ बी. सी डी.)	
३	कबीरदास	१ अमरमूल	१८०९ (खो॰ वि॰ १९०६-८ सं॰ १७७ जे)	
		२ अनुराग सागर	१८६३ (खो॰ वि॰ १९०६-८ सं॰ १७७ के), १७९० (खो॰ वि॰ १९०९ ११ सं॰ १४३ एफ) (खो॰ वि॰ १९२३-२५ सं॰ १९८)	
		३ अयनामा कबीर का	(खो॰ वि॰ १९०९ ११ सं॰ १४३ बी.)	
		४ अलिफनामा (प्रथम और द्वितीय)	(खो॰ वि॰ १९०९ ११ सं॰ १४३ डी, ई,)	

संख्या	रचयिताओं के नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		५ आरती कबीर कृत	(खो० वि० १६०६-११ स० १४३ एच)	
		६ उग्रगीता	१७७६ (खो० वि० १६०६-८ स० १७७ एच.) (खो० वि० १६२३-२५ स० १६८ ई.)	
		७ उग्र ज्ञान मूल सिद्धांत दसा मात्र	१८६१ (खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ एल.)	
		८ कबीर अष्टक	(खो० वि० १६०६-११ स० १४३ डब्ल्यू.)	
		९ कबीर का बीजक	(खो० वि० १६०६-११ सं० १४३ एल.), १८५६ (खो० वि० १६२०-२२ संख्या ७४ ए.), (खो० वि० १६२३-२५ स० १६८ डी.)	
		१० कबीर की रामायण	(खो० वि० १६०२ सं० १८५)	
		११ कबीर के दोहे	(खो० वि० १६०२ सं० ५४)	
		१२ कबीर की बानी	(खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ ए.), १७६७ (खो० वि० १६०६-११ स० १४३ एम)	
		१३ कबीर गोरख गोष्ठी	१७५३ (खो० वि० १६०६-११ सं० १४३ यू पी.	
		१४ कबीर जी का कृत	(खो० वि० १६०२ स० १८८)	
		१५ कबीर जी का पद	(खो० वि० १६०२ सं० ५२, स० १८२)	
		१६ कबीर जी की साखी	१७६४ (खो० वि० १६०१ स० ८५); (खो० वि० १६०६-११ स० १४३ बी.), (खो० वि० १६०२ सं० ५५, १८६, १८७)	
		१७ कबीर धर्मदास की गोष्ठी	(खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ आई.	
		१८ कबीर परिचय की साखी	१८८५ (खो० वि० १९०६-०८ सं० १७७ ओ)	

संख्या	रचयिताओं के नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		१९ कबीर साहिब की बानी	(खो० वि० १९०९ ११ सं० १४३ एम)	
		२० काया पंजी	(खो० वि० १९१७-१९ सं० ९२ पी)	
		२१ ज्ञान गुदड़ी	(खो० वि० १९०९ ११ सं० १४३ आर.)	
		२२ ज्ञान चौंतीसा	(खो० वि० १९०९ ११ सं० १४३ क्यू.), (खो० वि० १९२० २२ सं० ७४ बी.)	
		२३ ज्ञान सरोदय	(खो० वि० १९०९ ११ सं० १४३ टी),(खो० वि० १९२३-२८ सं० २१४ बी.)	
		२४ ज्ञान सागर	१७९० (खो० वि० १९०९ ११ सं० १४३ एस)	
		२५ नाम माहात्म	(खो० वि० १९०९ ११ सं० १४३ ए. बी.)	
		२६ निर्भै ज्ञान	१८८८ (खो० वि० १९०९ ११ सं० १४३ ए.) (खो० वि० १९०६-८ सं० १७७ आर)	
		२७ ब्रह्म निरूपण	१८६१ (खो० वि० १९०६-८ सं० १७७ एम)	
		२८ मोहम्मद बोध	(खो० वि० १९०९ ११ सं० १४३ जेड)	
		२९ रमैनी	(खो० वि० १९०६-८ सं० १७७ ई) (खो० वि० १९०९ ११ सं० १४३ बी बी.) (खो० वि० १९२३ २५ सं० १९८)	
		३० रामरक्षा	१८४९ (खो० वि० १९०६ ८ सं० १७७ एस)	
		३१ रामसार	(खो० वि० १९०१ सं० १०८)	
		३२ विचारमाला	(खो० वि० १९१७-१९ सं० ९२ ए.)	
		३३ विवेकसागर	(खो० वि० १९१७-१९ सं० ९२ सी)	
		३४ शब्द नाम	(खो० वि० १९०९ ११ सं० १४३ बी)	
		३५ मुहर्रमनामा	१७१७ (खो० वि० १९०६-८ सं० १७७ जी)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		३६ सब्दावली	१८०४ (खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ पी.)	
		३७ सुरति-सवाद	१८६७ (खो० वि० १६२०-२२ सं० ७६ बी)	
		३८ स्वास गुंजार	१८४६ (खो० वि० १६०६-११ सं० १४३ जे.)	
		३६ हंस मुक्तावली	१८६१ (खो० वि० १६०६-८ सं० १७७एन.)	
		४० हिंडोरा व रिखता	(खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ टी), १६०४ (खो० वि० १६०६-११ सं० १४३)	
४	कालीदत्त नागर	१ छविरतन	(खो० वि० १६२६-२८ सं० २१५ ए.)	
		२ रसिक विनोद	(खो० वि० १६२६-२८ सं० २१५ बी. सी)	
५	कालीदास त्रिवेदी	१ जंजीरा	(खो० वि० १६०४ सं० ५), (खो० वि० १६०६ ८ सं० १७८ डी), (खो० वि० १६२३-२५ सं० २००)	
		२ वधू विनोद	१७६१ (खो० वि० १६०१ सं० ६८), १८१० (खो० वि० १६०६ ८ सं० १७८बी.), १८८३(खो० वि १६२०-२२ सं० ७५), (खो०वि० १६२३-२५ सं० २००)	इस ग्रंथ का नाम 'राधा-माधव मिलन वधू विनोद' भी है।
६	कुलपति मिश्र	१ दुर्गा भक्ति चन्द्रिका	१७५८ (खो० वि० १६१७ १६ सं० १००)	
		२ द्रोण पर्व भाषा	१८१५ (खो० वि० १६०० सं० ७२)	
		३ नखशिख	१८५८ (खो० वि० १६०६-८ सं० १८५ बी.)	
		४ युक्ति तरंगिनी	(खो० वि० १६०६-८ सं० १८५ ए.)	
		५ रस रहस्य	१६७० (खो० वि० १६०३ सं० ५१), १८०२ (खो० वि० १६०६-११ सं० १६०), (खो० वि० १६२०-२२ सं० ८९ ए बी), (खो० वि० १६२३-२५	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उसका समय	विशेष
			सं० २२८), (खो० रि० १९२६ २८ सं० १५० ए. बी सी)	
७	केशवदास	१ कविप्रिया	(खो० रि० १९०० सं० ५२), (खो० रि० १९०२ सं० १८३), (खो० रि० १९०४ सं० १२५, १२६), १७९१ (खो० रि० १०६ सं० ६१ ए.), (खो० रि० १९२० २२ सं० ८२ ए बी.), (खो० रि० १९२३ २५ सं० २०७), खो० रि० १९२६ २८ सं० २११ बी. सी. डी)	
		२ नखशिख	१७९६ (खो० रि० १९०३ सं० २१)	
		३ रसिक प्रिया	(खो० रि० १९०१ सं० ८६), १८१४ (खो० रि० १९०४ सं० १२८), (खो० रि० १९१७-१९ सं० ९१ बी), १७१७ (खो० रि० १९२० २२ सं० ८९ बी), (खो० रि० १९२३ २५ सं० २०७), (खो० रि० १९२६ २८ सं० २११ एन., बी.)	
		४ राम चंद्रिका	१८२५ (खो० रि० १९०२ सं० १५२), १९११ (खो० रि० १९०३ सं० २१), (खो० रि० १९२३ २५ सं० २०७), (खो० रि० १९२६ २८ सं० २११ ई)	
		५ विज्ञान-गीता	(खो० रि० १९०० सं० ५५), १८८६ (खो० रि० १९०४ सं० १२७), १८८१ (खो० रि० १९२० २२ सं० ८९ बी), (खो० रि० १९२३ २५ सं० २०७), (खो० रि० १९२६ २८ सं० २११ एफ जी)	
८	भगवन्तसिंह	१ अनुराग पुना वली	(खो० रि० १९२३ २५ सं० २३७)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		२ रामगीता माला	(खो० वि० १९२३-२५ स० २२७)	
		३ राम चरित्र वृत प्रकाश	(खो० वि० १९२३-२५ सं० २२७)	
९	ग्वाल	१ अलंकार	(खो० वि० १९०५ सं० १२)	
		२ अलकार भ्रमभंजन	(खो० वि० १९१७ १९ स० ६५ ए)	
		३ कवि दर्पण	(खो० वि० १९१७ १९ सं० ६५ सी)	
		४ कवि हृदय विनोद	१८३१ (खो० वि० १९२०-२२ स० ५८ सी.), (खो० वि० १९२३-२५ स० १४६)	
		५ कृष्ण जू को नखशिख	१८२२ (खो० वि० १९०१ स० ८९), (खो० वि० १९२०-२२ सं० ५८ डी.), (खो० वि० १९२३-२५ स० १४६), (खो० वि० १९२६-२८ सं० १६१ सी)	
		६ गोपी पचीसी	१८८२ (खो० वि० १९०१ स० ९०) १८६२ (खो० वि० १९२०-२२ स० ५८ ए.), (खो० वि० १९२३ २५ स० १४६), (खो० वि० १९२६-२८ स० १६१ ए.)	
		७ जमुना लहरी	१८२२ (खो० वि० १९०१ सं० ८८), (खो० वि० १९२०-२२ स० ५८ बी.)	
		८ दूषण दर्पण	१८३४ (खो० वि० १९०९-११ स० १०२)	
		९ बसी बीसा	(खो० वि० १९१७ १९ स० ६५ डी.)	
		१० भक्त भावन ग्रंथ	१८९७ (खो० वि० १९०५ सं० १४), (खो० वि० १९१७-१९ स० ६५ बी.)	
		११ रस रग	१८९७ (खो० वि० १९०५ स० ११)	
		१२ रसिकानंद	१८९३ (खो० वि० १९०० सं० ८४), (खो० वि० १९२६-२८ सं० १६१ बी)	
		१३ हम्मीर हठ	१८८८ (खो० वि० १९०५ स० १३)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
१०	बख्तावार	पुरुषार्थ सभा	१८९१ (खो० रि० १९०० सं० ४, (खो० रि० १९०० सं० ६२), १५८८ (खो० रि० १९०० सं० ६१) १८२२ (खो० रि० १९०१ सं० १८), १९९८ (खो० रि० १९०१ सं० ४७) (खो० रि० १९०२ सं० ८१, सं० २७५), (खो० रि० १९०४ सं० ११६), (खो० रि० १९०६-८ सं० १४६, १४७), (खो० रि० १९१७-१९ सं० १५) १७६० (खो० रि० १९२०-२२ सं० १५ ए.), (खो० रि० १९२३-२५ ए. बी), १८५७ (खो० रि० १९२६-२८ सं० ७५ ए. बी)	
११	बालदास	१ अनेक प्रकार	१७२४ (खो० रि० १९२०-२२ सं० १० ए), (खो० रि० १९२३-२५ सं० ७४)	
		२ अमरबोध [illegible]	(खो० रि० १९०६-८ सं० १४७ ए.) (खो० रि० १९१७-१९ सं० १८ ए), (खो० रि० १९२३-२५ सं० ७८ ए)	
		३ अष्टांग योग	१८८४ (खो० रि० १९०५ सं० १७), (खो० रि० १९१२-१४ सं० १६)	
		४ ज्ञान स्वरोदय	१८११ (खो० रि० १९०१ सं० ७०), १८१५ (खो० रि० १९०२ सं० ११५), (खो० रि० १९०६-८ सं० १४७ ई), (खो० रि० १९१७-१९ सं० १८ ई) (खो० रि० १९२०-२२ सं० २९ डी), खो० रि० १९२३-२५ सं० ७४), (खो० रि० १९२६-२८ सं० ७८ बी)	
		५ [illegible]	१८१७ (खो० रि० १९०५ सं० १८ (खो० रि० १९२०-२२ सं० ३१ सी)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		६ ब्रह्मज्ञान सागर	१८५८ (खो० वि० १९१२-१६ सं० ३६ सी) (खो० वि० १९२६-२८ स० ७८ डी. ई० एफ जी.)	
		७ भक्ति पदारथ	(खो० वि० १९०६ ८ सं० १४७ डी.), (खो० वि० १९१७ १९ स० ३८ बी.), (खो० वि० १९२३-२५ सं० ७४)	
		८ भक्ति सागर	१७८२ (खो० वि० १९१२ १६ स० ३६ ए), (खो० वि० १९२६ २८ स० ७८ बी. सी)	
		९ राम माला	१८४९ (खो० वि० १९०६-८ स० १४७ ए)	
		१० सदेह सागर	१८८३ (खो० वि० १९०५ सं० १९)	
		११ शब्द	(खो० वि० १९०६ ८ स० १४७ सी.), (खो० वि० १९१७-१९ स० ३८ डी.), (खो०वि० १९२३-२५ स०७४)	
१२	चिंतामणि	१ कवि कुल कल्पतरु	(खो० वि० १९२३ २५ स० ८०), (खो० वि० १९०० सं० १२७), (खो० वि० १९०३ सं० १३७), (खो० वि० १९०४ सं० ११८)	
		२ पिंगल	१८९९ (खो० वि० १९०३ स० ३६),१८१७ (खो० वि० १९०४ स० ११९), १७८२ (खो० वि० १९०६-८ स० १५१ ए.), (खो० वि० १९०९-११ स० ५०), (खो० वि० १९२१-२२ सं० ३०)	
१३	जगतसिंह द्योता के	१ अलकार सठि दर्पण	(खो० वि० १९२३-२५ स० १७९ डी.)	
		२ नखसिख	(खो० वि० १९२३-२५ सं० १७९ जे.)	
		३रसिक प्रिया तिलक	(खो०वि०१९२३-२५ सं० १७९ बी.), (खो० वि० १९१६-२८ स० १६२ ए.)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		४ साहित्य सुधा निधि	(खो० वि० १६२३ २५ सं० १७६), (खो० वि० १६२६ २८ सं० १६२ बी.)	
१४	जसवंतसिंह, (महाराज)	१ अपरोक्ष सिद्धांत	(खो० वि० १६०१ सं० ७१), १७२७ (खो० वि० १६०२ सं० १४) (खो० वि० १६२६ २८ सं० २०१ ए)	
		२ भाषा भूषण	(खो० वि० १६०२ सं० ४७), १८०१ (खो० वि० १६०१ सं० १४४), (खो० वि० १६०६-८ सं० २५१), १८६० (खो० वि० १६२० २२ सं० ७०), १७८८ (खो० वि० १६०६-८ सं० १७६), (खो० वि० १६२३ २५ सं० १८३) (खो० वि० १६२६-२८ सं० २०१ बी., सी., डी., ई)	
१५	जीवराजसिंह विमुन	१ प्रेम पचीसी	१८७२ (खो० वि० १६२३-२५ सं० १६७)	
		२ मोहनिसि दीपिका	(खो० वि० १६२३ २५ सं० १६७)	
१६	टोडरमल, जयपुर के	१ गोमाधर सम यान चंद्रिका	(खो० वि० १६२३ २५ सं० ४२६)	
		२ त्रिलोक सार	(खो० वि० १६२३ २५ सं० ४२६)	
		३ मोक्षमार्ग प्रकाश	(खो० वि० १६२३ २५ सं० ४२६)	
१७	ठाकुर	१ कूट कवित्त	(खो० वि० १६२३ २५ सं० ४३६)	
		२ सतसैया वर्णार्थ	१८५१ (खो० वि० १६०४ सं० १८)	
१८	तुलसीदास (गोस्वामी)	१ उपदेश दोहा	१८६० (खो० वि० १६०६ ११ सं० ३२१ जे)	
		२ कवित्त रामायण	१६६६ (खो० वि० १६०१ सं० १२५), १८७६ (खो० वि० १६२०-२२ सं० १६८ एफ.) (खो० वि० १६२३ २५ सं० ४३२), (खो० वि० १६२६ २८ सं० ४८२ ई एफ.)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		३ कृष्ण गीतावली	१८०२ (खो० वि० १६०४ सं० १०७), १८३५ (खो० वि० १६०६-११ स० ३२३ सी.), (खो० वि० १६२०-२२ सं० १६८ जी.), (खो० वि० १६२३-२५ स० ४३२), (खो० वि० १६२६-२८ स० ४८२ एच)	
		४ गीतावली	१८०२ (खो० वि० १६०४ सं० ६०), १८६७ (खो० वि० १६०६-११ स० ३२३ जी.), (खो० वि० १६१७-१६ सं० १६६ सी.), १८२४ (खो० वि० १६२०-२२ स० १६८ एच.), (खो० वि० १६२३-२५ स० ४३२), (खो० वि० १६२६-२८ सं० ४८२ आर. एस)	
		५ छप्पय रामायण	१८७१ (खो० वि० १६०६ ८ स० २४५ एच)	
		६ जानकी मगल	(खो० वि० १६०३ सं० ७६), १८१७ (खो० वि० १६०६-८ स० २४५ एफ.), १५७५ (खो० वि० १६२०-२२ स० १९८ ई.), (खो० वि० १६२३ २५ सं० ४३२), (खो० वि० १६२६-२८ सं० ४८२ बी सी डी.)	
		७ ज्ञान दीपिका	(खो० वि० १६०५ सं० २१), १६०१ (खो० वि० १६०६-११ स० ३२३ सी), (खो० वि० १६२३-२५ स० ४३२)	
		८ तुलसीदास जी की बानी	१७६६ (खो० वि० १६०६-११ स० ३२३ जे)	
		६ दोहावली	(खो० वि० १६०४ स० ६२), १८४४ (खो० वि० १६०६-८ स० २४५ सी), १८३६ (खो० वि० १६०९-११ सं० ३२३ बी), (खो० वि० १६२०-२२ स० १९८ बी.सी.)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उसका समय	विशेष
			(खो० वि० १९२३ २५ सं० ४१२) (खो० वि० १९२६ २८ सं० ४८२ डी. बी. सी)	
१९	तुलसीदास [illegible]	१० बरवै रामायण	१८१९ (खो० वि० १९०१ सं० ८०), १८९० (खो० वि० १९०६-८ सं० २४५ ए), (खो० वि० १९१७ १९ १९६ बी)	
		११ बाहुक सटीक	१८२५ (खो० वि० १९०२ सं० ११)	
		१२ मंगल रामायण	१८७६ (खो० वि० १९०९ ११ सं० १२१ एफ) (खो० वि० १९२३ २५ सं० ४१२)	
		१३ [illegible]	१८०१ (खो० वि० १९२० २२ सं० १९८ एफ)	
		१४ रामचरित मानस	१६४७ (खो० वि० १९०० सं० १), १७०४ (खो० वि० १९०१ सं० ३२), १७०८ (खो० वि० १९०१ सं० ५८) १७६७ (खो० वि० १९०२ सं० १६७ १६८, १६९), १८१८ (खो० वि० १९०४ सं० १४४) १७०४ (खो० वि० १९२० २२ सं० १९८ ए), (खो० वि० १९२३ २५ सं० ४१२), (खो० वि० १९२६ २८ सं० ४८२ ए बी सी डी ई एफ, जी, एच आई जे के)	
		१५ राम सतसई	१८०२ (खो० वि० १९०२ सं० ६७), (खो० वि० १९२३ २५ सं० ४१२)	
		१६ [illegible]	१७५५ (खो० वि० १९०३ सं० ८७, ९८) (खो० वि० १९०९ ११ सं० १२१ डी), १८३४ (खो० वि० १९ [illegible] ११ सं० ३१२ एच), (खो०	

संख्या	रचयिताओं के नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
			वि० १६२३-२५ सं० ४३२), (खो० वि० १६२६-२८ स० ४०४, ४८२ ए.अ. एम.) एन, ओ, पी, क्यू)	
		१७ विनयपत्रिका	१८२७ (खो० वि० १६०६-८ सं० २४५ जी), १८२२ (खो० वि० १६०६-११ सं० ३२३ एल.), (खो० वि० १६१७ १६ स० १९६ एफ.) (खो० वि० १६२०-२२ सं० १६८ के.), (खो० वि० १६२३-२५ स० ३३२),(खो० वि० १६२६ २८ ४८२ ए[२] बी[२] सी[२])	
		१८ वैराग्य सदीपनी	(खो० वि० १६०० सं० ७), (खो० वि० १६०३ स० ८१), १८२६ (खो० वि० १६०६ ८ सं० २४५ ई०), १८०० (खो० वि० १६०६-११ स० ३२३), (खो० वि० १६१७-१६ स० १६६ डी.), (खो० वि० १६२०-२२ सं० १६८ जे), (खो० वि० १६२६-२८ स० ४८२ डी.)	
		१६ हनुमान बाहुक	१८०२ (खो० वि० १६०१ स० ६०), (खो० वि० १६०३ स० १७०), १८७१ (खो० वि० १६०६ ८ स० २४५ बी. सी), १८६० (खो० वि० १६०६-११ सं० ३२३ डी, ८५०), (खो० वि० १६२० २२ स० १६८ डी.), (खो० वि० १६२३-२५ सं० ४३२), (खो० वि० १६२६-२८ स० ४८२ टी, यू, वी.)	
२०	तोपनिधि	१ दीन व्यंग सत	१८६३ (खो० वि० १६१२-१६ सं० १८९)	
		२ रति मजरी	१७८६ (खो० वि० १६२०-२२ सं० १६६)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		२ सुधानिधि	१८६१ खो० वि० १६०६ ११ सं० ११६)	
२१	वूधनदास	साखी या दोहावली	खो० वि० १६२३ २५ सं० १०६, खो० वि० १६०६ ११ सं० ७८, खो० वि० १६२० २२ सं० ४६	
११	बूधर	कविकुल कंठाभरन	खो० वि० १६०१ सं० ४१, खो० वि० १६०६-८ सं० १६२ १८७१ (खो० वि० १६०६ ११ सं० ७७), १८५७ (खो० वि० १६२० २२ सं० ४५ ए०, बी) (खो० वि० १६२३-२५ सं० १०७)	
२१	देवदत्त (देव)	१ अष्ट याम	(खो० वि० १६०० सं० ५१), (खो० वि० १६०२ सं० १११), १७५७ (खो० वि० १६०३ सं० १३८), (खो० वि० १६०४ सं० १९०), १८२० (खो० वि० १६२० २२ सं० ३८ बी), (खो० वि० १६२३-२५ सं० ८१), (खो० वि० १६२६-२८ सं० ६५ ए.)	
		२ काव्य रसायन	(खो० वि० १६०५ सं० ९८), (खो० वि० १६०६-८ सं० १५६) १८६८ (खो० वि० १६०६ ११ सं० ६४ सी), (खो० वि० १६२० २२ सं० ३६ ई), (खो० वि० १६२३ २५ सं० ८२), (खो० वि० १६२६-२८ सं० ६८ ए.)	
		३ कुशल विलास	१८३६ (खो० वि० १६०४ सं० ३७)	
		४ प्रेम तरंग चंद्रिका	१८८० (खो० वि० १६०३ सं० २८), (खो० वि० १६०४ सं० १११), (खो० वि० १६०६ ११ सं० ६४ बी), (खो० वि० १०२३ २५ सं० ८२), (खो० वि० १६२६-२८ सं० ६५ एफ)	

संख्या	रचयिताओं के नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
२४	नंददास	५ प्रेम दर्शन	१६०४ (खो० वि० १६०६-११ स० ६४ ए.), १८४१ (खो० वि० १६२० २२ स० ३६ एफ.)	
		६ भाव विलास	१८०० (खो० वि० १६०३ स० ४१), (खो० वि० १६०४ स० १२१), १८८८ (खो० वि० १६०६-११ स० ६४ एफ.) १८४८ (खो० वि० १६२०-२२ स० ३६ ए.). (खो०वि० १६२३-२५ स० ८६),	
		७ सुखसागर	१८९८ (खो० वि० १६०६-११ स० ६४ ए), १८४१ (खो० वि० १६२०-२२ सं० ३९ डी.), (खो० वि० १६२३-२५ स० ८३)	
		८ सुजान-विनोद	१८०० (खो० वि० १६०३ सं० १०८)	
		१ अनेकार्थ मजरी	(खो० वि० १६०२ सं० ५८), १८०२ (खो० वि० १६०३ स० १५३), १८०६ (खो० वि० १६०६-११ स० २०८ डी), १८०१-१८४६ खो० वि० १६२० २२ स० ११३ डी ई०), (खो० वि० १६२३ २५ सं० २६४), (खो० वि० १६२६-२८ स० ३१६ ए, बी, सी, डी, ई, एफ, जी.)	
		२ जोगलीला	(खो० वि० १६०६-८ सं० २०० डी)	
		३ दसम स्कंध भागवत	१७७६ (खो० वि० १६०१ सं० ११), (खो० वि० १६०६ ८ सं० २०० बी. सी) १८४७ (खो० वि० १६०६-११ स० २०८ बी) १८०१-१८४६ (खो० वि० १६२०-२२ सं० ११३ ए., बी), (खो० वि० १६१७-१६ स०	

संख्या	रचयिताओं के नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका नाम	विशेष
			११९ ए.), (खो० वि १९२३ २५ सं० २६४)	
		५ नासकेत पुराण	१७८६ (खो० वि० १९०९ ११ स० २०८ ए)	
		६ पंचाध्यायी	१७६१ (खो० वि० १९०१ सं० ६९), १८१५ (खो० वि० १९०६-८ सं० २०० ए), १७२७ (खो० वि० १९१७-१९ सं० ११६ सी.)	
		७ विरह मंजरी	(खो० वि० १९०९ ११ स० २०८ एफ)	
		८ भरमर गीत	१८६६ (खो० वि० १९२० २२ सं० ११३ एफ.)	
		९ मान मंजरी	(खो० वि० १९०२ सं० २०९), (खो० वि० १९०३ सं० १५८), १८०६ (खो० वि० १९०९ ११ सं० २०८ बी.) (खो० वि० १९२६ २८ सं० ३१६ एन)	इस ग्रंथ का नाम नाम माला भी है
		१० रस मंजरी	(खो० वि० १९०९ ११ सं० २०८ ई०)	
		११ स्याम सगाई	(खो० वि० १९०६ ८ सं० २०० इ०), (खो० वि० १९१७-१९ सं० ११६ सी.)	
२५	नरोत्तमदास	कथा सुदामा	१८१४ (खो० वि० १९०० सं० २२), १८३० (खो० वि० १९०६ ८ सं० २०१), (खो० वि० १९१७-१९ सं० १२४), (खो० वि० १९२० २२ सं० ११७), (खो० वि० १९२३ २५ सं० ३००), (खो० वि० १९२६ २८ सं० ३२४ ए. बी. सी)	
२६	नानकगुरु	१ सतनाम	(खो० वि० १९२३-२५ सं० २९३)	
		२ सत सुमिरिनी	(खो० वि० १९२३ २५ स० २९३)	
		३ साखी ज्ञान बोध	(खो० वि० १९२३ २५ सं० २९३) (खो० वि० १९२६ २८ सं० ३१५)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		५ पद्माभरण	१८६६ (खो० वि० १९०५ सं० ४४) १८२१ (खो०वि०१९०६-८ सं० ८२ बी.), (खो० वि० १९२३ २५ सं० १०७)	
		६ प्रबोध पचासिका	(खो० वि० १९०९-११ सं० ११० ए.)	
		७ राम रसायन रामायण	१८१७ (खो० वि० १९०१ सं० १, २, ३, ४, ५, ६)	
		८ विरदावली	(खो० वि० १९०६-८ सं० ८२ डी)	
१०	पहलवान दास	१ [illegible]	(खो० वि० १९२६-२८ सं० १४० ए.)	
		२ उपास्यान विवेक	(खो० वि० १९२६ २८ सं० १४० सी.)	
		३ मुक्तिज्ञान	(खो० वि० १९२६-२८ सं० १०० बी)	
		४ विरहसागर	(खो० वि० १९२६-२८ सं० १४० डी)	
११	पोहकर	रस रतन	१८३५ (खो० वि० १९०५ सं० ४८), १८०८ (खो० वि० १९०६-८ सं० २०८), १८३५ (खो० वि० १९१७-१९ सं० १४०), (खो० वि० १९२०-२२ सं० १२८)	
१२	माननाथ	१ अंगीर रस	१८८३ (खो० वि० १९२०-२२ सं० १२६) (खो० वि० १९२३ २५ सं० ११८)	
		२ धनी जी के खालेकी चौपई	(खो० वि० १९२६ २८ सं० १४८ ए.)	
१३	प्रियादास	१ भक्त प्रभा की सुबोधनी टीका	१८१२ (खो० वि० १९१० १२ सं० १३२ ई०)	
		२ भक्तमाल रस बोधिनी टीका	(खो० वि० १९०१ सं० ५५), १७७८ (खो० वि० १९०२ सं० ११६), १७८४ १८०७ (खो० वि० १९०४ सं० ११६ ११७), (खो० वि० १९१७-१९ सं० १३८) १८४२ १८३१ (खो० वि०	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
३४	बिहारीलाल	सतसई	१९२०-२२ स० १३५ ए बी.), (खो० वि० १९२३-२५ सं० ३२३), (खो० वि० १९२६-२८ स० ३६१ ए बी) (खो० वि० १९०० स० ११५), १७१८ (खो० वि० १९०१ सं० १७), १७८० (खो० वि० १९०१ सं० ५२,७५), १७६६-१७४६ (खो० वि० १९०२ स० ८), १७८२ (खो० वि० १९०३ स० १३३-१३५), (खो० वि० १९०६-८ सं० ३ ए.), १७९३ (खो० वि० १९०६-८ सं० ९९ ए), १७१७ (खो० वि० १९२०-२२ स० २० ए), १८०५ (खो०वि० १९२०-२२ सं० २० बी) (खो० वि० १९२३-२५ स० ६२ ए. से जे. तक), (खो० वि० १९२६-२८ सं० ६८ ए. से ई तक)	
३५	भिखारीदास	१ काव्य निर्णय	१८१४ (खो० वि० १९०३ सं० ६१), १८६२ (खो० वि० १९२०-२२ सं० १७ ए), १८९६ (खो० वि० १९२०-२२ सं० १७ बी.) (खो०वि० १९२३-२५ सं० ५५ डी. ई.), (खो० वि० १९२६-२८ सं० ६१ ई से आई. तक)	
		२ छंदार्णव पिंगल	(खो० वि० १९२०-२२ सं० १७ सी)' (खो० वि० १९०३ सं० ३१), (खो०वि० १९२३-२५ सं० ५५ ए, बी., सी.), १९१४ (खो० वि० १९२६-२८ स० ६१ सी.)	
		३ रस सारग	१७८६ (खो० वि० १९०४सं० २१) (खो० वि० १९२३-२५ स० ५५ एफ., जी),(खो० वि० १९२६-२८ सं० ६१ जे. से एन. तक)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
१६	भूषण	शिवराज भूषण	१९०२ (खो० वि० १९२३ २५ सं० ६१ ए., बी. सी.,), (खो० वि० १९०३ सं० ५८) (खो० वि० १९१२ १४ सं० २४), (खो० वि० १९२६-२८ सं० ६७ ए., बी)	
१७	मतिराम	१ रसराज	१६८२ (खो० वि० १९०० सं० ४०), १७६१ (खो० वि० १९०१ सं० ६७), १८११ (खो० वि० १९०६ ८ सं० १९६ ए.), (खो० वि० १९२०-२२ सं० १०५ बी.), (खो० वि० १९२३-२५ सं० २७१) (खो० वि० १९२६ २८ सं० १०० डी. से के. तक)	
		२ ललित शृंगार	१९२२ (खो० वि० १९०६-८ सं० १९६ सी)	
		३ ललित ललाम	(खो० वि० १९०३ सं० ३७), १७८१ (खो० वि० १९०४ सं० ११२), (खो० वि० १९२३-२५ सं० २७६),(खो० वि १९२६ २८ सं० १०० ए., बी., सी)	
		४ वृत्त कौमुदी	१८६६ (खो० वि० १९२० २२ सं० १०५ ए.)	
		५ साहित्य सार	१८३७ (खो० वि० १९०६-८ सं० १९६ बी)	
१८	मोतीलाल	१ गणेश पुराण	(खो० वि० १९२३ २५ सं० २८२), (खो० वि० १९०१ सं० ७९), (खो० वि० १९०९ ११ सं० २००), (खो० वि० १९२६ २८ सं० ३०९ ए., बी., सी , डी)	
		२ गणेश कथा	खो० वि० १९२३-२५ सं० २८१)	
		३ गणेश महात्म्य वृत्त	(खो० वि० १९२३ २५ सं० २८३)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		१२ छर्दपचाशिका	१८१३ (खो० वि० १९०६ ११ सं० २४५ बी.), (खो० वि० १९२६ २८ सं० १७७ डी.)	
		१३ सेवा विधि	१८७१ (खो० वि० १९०६ ११ सं० २४५ एफ.), १८०४ (खो० वि० १९२०-२२) सं० १४५ बी.)	
४१	सोकीदास	१ प्रह्लाद चरित	(खो० वि० १९२३-२५ सं० २४८)	
		२ भक्ति प्रकाश	१८०१ (खो० वि० १९२३-२५ सं० २४८)	
		३ भागवत गीतावली	(खो० वि० १९२३ २५ सं० २४८)	
४२	व्यास जी	१ पदावली	१८४६ (खो० वि० १९०६ ११ सं० ३३२ बी.)	
		२ रागमाला	१७९८ (खो० वि० १९०६-८ सं० ११८ बी)	
		३ व्यासजी के रास पद	१८५८ (खो० वि० १९०६ सं० ११८ बी.)	
४३	शंभुनाथ मिश्र	१ अलंकार दीपिका	१८०२ (खो० वि० १९०४ सं० २७), १९०१ (खो० वि० १९०६-८ सं० २३३), (खो० वि० १९१७-१९ सं० १६७)	
४४	सदाराम	१ अखंड प्रकाश	१८१६ (खो० वि० १९०९ ११ सं० २७२ ए.)	
		२ अनुभव आनंद सिंधु	(खो० वि० १९०९ ११ सं० २७२ सी.)	
		३ नायक दीपिका	(खो० वि० १९०९ ११ सं० २७२ डी	
		४ बोध विलास	(खो० वि० १९०९ ११ सं० २७२ बी.)	
४५	सबल सिंह चौहान	महाभारत (१० पर्व)	(खो० वि० १९२३ २५ सं० ६३), (खो० वि० १९२६ २८ सं० ४११ बी, सी, डी, आदि)	
४६	सरदार कवि	१ काशिराज प्रकाशिका	१८७५ (खो० वि० १९०४ सं० ५६)	कविप्रिया टीका
		२ रामायण रत्नाकर	१८७६ (खो० वि० १९०४ सं० ४६)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		३ वियग विलास	१८६६ (खो० वि० १९०९-११ सं० २८३ बी०)	
		४ सुख विलासिका	१८४६ (खो० वि० १९०४ स० ५७)	
		५ सिंगार संग्रह	१८७५ (खो० वि० १९०९-११ सं० २८३ ए)	
४७	सहजो बाई	'सहज प्रकाश बहु अंग	(खो० वि० १९०० सं० १२९), (खो० वि० १९०३ सं० १६२), १८१९ (खो० वि० १९०६-८ सं० २२६), (खो०वि० १९२०-२२ स० १७१), (खो०वि० १९२६-२८ सं० ४१५)	
४८	सीतल प्रसाद	गुलजार चमन	१८९० (खो० वि० १९०९-११ स० २९२), (खो०वि० १९१७-१९ सं० १७२), (खो० वि० १९२०-२२ स० १७९)	
४९	सुंदरदास	१ ज्ञान समुद्र	१७७३ (खो० वि० १९०२ सं० १६५), १८०० (खो० वि० १९०३ स० ३४), १८६३ (खो० वि० १९०६-८ सं २४२ बी.), १८७८ (खो० वि० १९०९-११ स० ३११ ए.), (खो० वि० १९२३-२५ स० ४१५)	
		२ पंचेन्द्रिय निर्णय	१८४३ (खो० वि० १९१२-१६ स० १८४ ए.)	
		३ विचारमाला	१८७८ (खो० वि० १९०९-११ स० ३११ सी.)	
		४ विनयसार	१८७० (खो० वि० १९०२ सं० ८८)	
		५ विवेकचिन्तामणि	(खो०वि० १९०९-११ सं०३११)	
		६ सवैया	१७७३ (खो० वि० १९०२ स० २५, २६), १८७० (खो०वि० १९०६-८ स० २४२ ए०), १८३४ (खो०वि० १९१२-१६ सं० १८४ बी.) (खो० वि० १९२३-१५ सं० ४१५), (खो० वि० १९२६-२८ स० ४६६ बी०सी०डी०)	

संख्या	रचयिताओं के नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		७ सुन्दर दास की बानी	१७२५ (खो० वि० १९०९ ११ सं० ३११ बी.)	
		८ सुंदर विलास	१८७० (खो० वि० १९०६ ८ सं० २४१ सी.), (खो० वि० १९२३-२५ सं० ४१५)	
५०	सुखदेव मिश्र	१ अध्यात्म प्रकाश	१८८८ (खो० वि० १९०५ सं० ६७, १८११ (खो० वि० १९०६ ८सं० २४०सी०) (खो० वि० १९१७ १९सं० १४१ए) (खो०वि० १९२० २२सं १८० ए बी), (खो० वि० १९२३ २५ सं० ४१२), (खो० वि० १९२६ २८ सं० ४६४ ए.बी	
		२ वृत्त विचार	१६११ और १७९१ (खो०वि० १९०६ ८ सं० २४० ए.), (खो० वि० १९१७-१९ सं० १८३ बी), (खो० वि० १९२०-२२ सं० १८० ई०), (खो० वि० १९२३ २५ सं० ४१२), (खो० वि० १९२६ २८ सं० ४६४),	
		३ पिंगल	(खो० वि० १९०१ सं० १२१), (खो० वि० १९०६-८ सं० २४० बी) १८८१ (खो०वि० १९०९ ११ सं० ३०७ बी) (खो० वि० १९१७ १९ सं० १८३ सी), (खो०वि० १९२० २२ स० १८० सी.), (खो० वि० १९२३ २५ सं० ४१२), (खो० वि० १९२६ २८ सं० ४६४ एफ बी)	
		४ फाजिलअली प्रकाश	१८६२ (खो० वि० १९०९ ११ सं० ३०७ ए.), (खो० वि० १९१७-१९ सं० १८३ सी) १८६९ (खो० वि० १९२० २२ सं० १८७ सी.), (खो० वि० १९२३-२५ स० ४१२), (खो० वि० १९२६ २८ सं० ४६४ जी है),	
		५ मैदान रसार्णव	१८०२ (खो० वि० १९०१ सं० १२४), १८१४ (खो० वि०	रसरसार्णव नाम से

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
			१६०४ सं० ३३), १७४६ (खो० वि० १६२०-२२ सं० १८७ डी.), (खो० वि० १६२३ २५ स० ४१२)	
		६ सिखनख	१८८५ (खो० वि० १६०६-११ सं० ३०७ सी०)	
५१	सुवस शुक्ल	१ उमराव वृत्ताकार	(खो० वि० १६२३-२५ स० ४२२)	
		२ राम चरित्र	(खो० वि० १६२३-२५ सं० ४२२)	
		३ स्फुट काव्य	(खो० वि० १६२३-२५ स० ४२२)	
५२	सूरतिमिश्र	१ अमर चंद्रिका	१८१० (खो० वि० १६०६-८ स० २४३ सी.), (खो० वि० १६०६-११ स० ३१४ सी.), (खो० वि० १६२६-२८ स० ४८२ ए)	
		२ अलकार माला	१७५६ (खो० वि० १६०३ सं० १०४)	
		३ कविप्रिया सटीका	१७६६ (खो० वि० १६१२-१६ स० १८६)	
		४ रस गाहक चंद्रिका	१८१२ (खो० वि० १६०६-८ स० २४३ ए) १७८५ (खो० वि०१६०६ ११ स०३१४ ए.) (खो० वि० १६२६-२८ स० ४७२ जी.)	
		५ रस रत्न	१८३० (खो० वि० १६०१ सं० ८६), (खो० वि० १६०६-८ स० २४३ डी.) (खो० वि० १६२०-२२ स० १६०), खो० वि० १६२६-२८ सं० ४७२ एच.)	
		६ रसिक प्रिया टीका	१८३० (खो० वि० १६०६-८ सं० २४३ डी) १७७५ (खो० वि० १६०६-११ स० ३१४ सी.) (खो० वि० १६२३-२५ सं० ४१६)	जोरावर प्रकास के नाम से भी प्रसिद्ध है

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		७ सरस रास	१८६७ (खो० वि० १९०९ ११ सं० ११४)	
५३	सेनापति	कवित्त रत्नाकर	१८८१ (खो० वि० १९०९ ११ सं० २८७), (खो० वि० १९२३ २५ सं० ३७९), (खो० वि० १९२६-२८ सं० ४१२ ए, बी.)	
५४	सेवादास महंत	१ दयाबोध	(खो० वि० १९२३-२५ सं० ३८२)	
		२ सत्रिपुराण	(खो० वि० १९२३ २५ सं० ३८१), खो० वि० १९२६ २८ सं० ३२३)	
५५	सेवादास	१ भ्रमरगीत	(खो० वि० १९२३-२५ सं० ४११)	
		२ रुक्मनी बिवाह	खो० वि० १९२३-२५ सं० ४१६), (खो० वि० १९२६ २८ सं० ४०७ एच)	
		३ विष्णु पद	(खो० वि० १९२३ २५ सं० ४१६)	
		४ सुखसागर	(खो० वि० १९२३ २५ सं० ४१६), (खो० वि० १९२६ २८ सं० ४०७ एस एम. एन	
५६	श्रीपति	अनुप्रास	१८१७ (खो० वि० १९०९ ११ सं० ३०४ बी.)	
		२ कयापर्व	१८६१ (खो० वि० १९२०-२२ सं० १८६)	
		३ काव्यसुधाकर	(खो० वि० १९२३-२५ सं० ४०४)	
		४ विनोद-काव्य सरोज	(खो० वि० १९०४ सं० ४८), १८५४ (खो० वि० १९०९ ११ सं० ३०४ सी) (खो० वि० १९२३ २५ सं० ४०४)	
		५ हिम्मत प्रकाश	१८७८ (खो० वि० १९०६-८ सं० २१८)	
५७	हंसराज	१ सुमिहारिन मेर	खो० वि० १९२६ २८ सं० १६५ ए)	
		२ विरह विलास	(खो० वि० १९२६-२८ सं० १६५ बी.)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		२ सनेह सागर	(खो० वि० १६२६ २८ सं० १६५ बी)	
५८	हरिचरनदास	१ कविवल्लभ	१८४३ (खो० वि० १६०६-८ २५५ ए)	
		२ कवि प्रियाभरन	१७८० (खो० वि० १६०४ सं० ५३), १८८० (खो०वि० १६०६-११ सं० १०८)	
		३ भाषाभूषण टीका	१८८३ (खो० वि० १६२०-२२ सं० ५६ ए.)	
		४ सभा प्रकास	१८३६ (खो० वि० १६०६ ८ स० २५५ बी) १८४६ (खो० वि० १६२०-२२ स०५६)	
		५ हरिप्रकास टीका (सतसई)	१८२४ (खो० वि० १६०४ स० ४), (खो० वि० १६१७-१६ सं० ७१), (खो० वि० १६२३-२५ स० १५३)	

ग्रंथकारों की अनुक्रमणिका

ग्रंथकारों के सामने की संख्याएँ परिशिष्ट १ और २ में दी गई क्रमसंख्याएँ हैं।

ग्रंथों की अनुक्रमणिका

ग्रंथों के सामने की संख्याएँ परिशिष्ट १ और २ में दी गई क्रमसंख्याएँ हैं।

———